Digitized by Google

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112581

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सी० पी०, बिहार, उड़ीसा आदि के शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत

बाल-विनोद

[बच्चों के लिये सर्वश्रेष्ठ सचित्र मासिक पत्र]

भारत के प्रत्येक बालक-बालिका को

जरूर पढ़ना चाहिए ।

क्योंकि—

१. बाल-विनोद के अक्षर-अक्षर में बालकों के लिये नवयुग का संदेश भरा रहता है ।

२. बाल-विनोद की कविता-कहानी पढ़कर बालक लोट-पोट हो जाते हैं, और अंत तक पढ़े विना रह नहीं सकते ।

३. बाल-विनोद बच्चों को देश, विदेश, विज्ञान और भूगोल आदि का ज्ञान सीधी, सरल कहानियों ही में करा देता है ।

४. बाल-विनोद के विशेषांक एक नई चीज़ बालकों के लिये सुलभ कर देते हैं ।

५. बाल-विनोद की प्रशंसा समस्त हिंदी-संसार ने मुक्त कंठ से की है ।

संपादक

श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट

इसका अगला विशेषांक

नटखट-अंक

१५ जुलाई, सन् १९४० को प्रकाशित हो जायगा ।

पृष्ठ-संख्या लगभग १००; चित्र-संख्या ६० !

दुरंगी स्याही से छपा हुआ !!

बाल-लेखकों द्वारा लिखा हुआ !!!

यह अंक बच्चों के सब पत्रों में बेजोड़ होगा ।

मूल्य १), अभी से ग्राहक बनें और मुफ़्त लें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112-581

स्थायी ग्राहकों तथा लाइब्रेरी-संस्थापकों

HL

SUDHA
RT-0174
1940

G.K.V.
Lib.
HARDWAR

आप गंगा-पुस्तकमाला ... प्रतएव आज हम आपकी सेवा में, इस सूचन ... प्रत होना चाहते हैं। ये सब आपको १ जुला ... जिन पुस्तकों को न लेना चाहें, उनके बारे में ... केट में उन्हें हम शामिल न करें। और, यदि ... भी सूचित करें। किंतु पुस्तकों की वी० पी० ... नि होगी, और आपको कोई लाभ न होगा ... को हमने अपना लाइब्रेरी-संस्थापक बना लि ... ६) की लेने पर आपके लिये डाक-व्यय माप्र ...

-कार्यालय

१—वीर-ज्योति (ऐति ... ॥)
२—नादिरा (सामाजि ... ॥)
३—नक्षत्र-मंडल (कह ... ॥)
४—सेगाँव का संत (... ॥)
५—कांग्रेस-राज्य में (... ॥)
६—एक दिन (गद्य-प ... ६)
... ॥)

वीर-ज्योति

लेखक, साहित्याचार्य श्रीपं० लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी साहित्यरत्न। प्रस्तुत पुस्तक एक ऐतिहासिक नाटक है। इसमें महेबा (बुंदेलखंड) के राजा वीर-शिरोमणि महाराज चंपतराय और उनकी वीरात्मा रानी सारंधा का चरित चित्रण किया गया है। कथा-प्रसंग से इसमें अन्य बुंदेला-सामंतों तथा अनेक मुग़ल सरदारों के भी चरित चित्रित किए गए हैं। कई एक बुंदेला स्त्रियों ने भी इस नाटक में भाग लिया है। मुग़लों की ओर से केवल जहाँनारा (शाहजहाँ की लड़की) रंगमंच पर आती है। इस नाटक में इतिहास की बहुत कुछ रक्षा की गई है, और कल्पना से केवल आवश्यक काम लिया गया है। पुस्तक की रचना सामयिक है, क्योंकि आजकल हिंदू लोग अपने प्राचीन गौरव और पूर्वजों की सुकृतियों से प्रभावित हो रहे हैं। बुंदेलखंड-वासियों के लिये तो यह नाटक एक प्रकार का पुराण है। मूल्य सादी १॥), सजिल्द १॥।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

581

स्थायी ग्राहकों

आप गंगा-पुस्तकमाला के अनुग्राहक स्थायी ग्राहक तथा लाइब्रेरी - संस्थापक हैं। अतएव आज हम आपकी सेवा में, इस सूचना-पत्र के अनुसार, नीचे-लिखी छ नवीन पुस्तकें लेकर उपस्थित होना चाहते हैं। ये सब आपको १ जुलाई को ४॥) की वी० पी० से भेजी जायँगी। आप इनमें से जिन पुस्तकों को न लेना चाहें, उनके बारे में लौटती डाक से कृपा कर सूचना दे दें, जिसमें वी० पी०-पैकेट में उन्हें हम शामिल न करें। और, यदि किसी कारण कोई भी पुस्तक इस समय न लेना चाहें, तो भी सूचित करें। किंतु पुस्तकों की वी० पी० पहुँच जाने पर उसे कदापि न लौटाएँ। कारण, इसमें व्यर्थ हानि होगी, और आपको कोई लाभ न होगा। जैसा हम आपको पिछली बार सूचित कर चुके हैं, आपको हमने अपना लाइब्रेरी-संस्थापक बना लिया है। अतएव नियमानुसार हमारी प्रकाशित पुस्तकें इकट्ठा ६) की लेने पर आपके लिये डाक-व्यय माफ़ होगा। कमीशन जो दिया जाता था, वही दिया जायगा।

भवदीय—
प्रबंधक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

१—वीर-ज्योति (ऐतिहासिक नाटक)	१॥)
२—नादिरा (सामाजिक उपन्यास)	१॥)
३—नक्षत्र-मंडल (कहानी-संग्रह)	१)
४—सेगाँव का संत (गांधीजी के जीवन के रोचक संस्मरण)	॥।)
५—कांग्रेस-राज्य में (राजनीतिक)	॥।)
६—एक दिन (गद्य-पद्यमय काव्य-संग्रह)	॥।)
	६)
कमीशन २५%	१॥)
कुल	४॥)
डाक-व्यय माफ़	

वीर-ज्योति

लेखक, साहित्याचार्य श्रीपं० लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी साहित्यरत्न। प्रस्तुत पुस्तक एक ऐतिहासिक नाटक है। इसमें महेबा (बुंदेलखंड) के राजा वीर-शिरोमणि महाराज चंपतराय और उनकी वीरात्मा रानी सारंधा का चरित चित्रण किया गया है। कथा-प्रसंग से इसमें अन्य बुंदेला-सामंतों तथा अनेक मुग़ल सरदारों के भी चरित चित्रित किए गए हैं। कई एक बुंदेला स्त्रियों ने भी इस नाटक में भाग लिया है। मुग़लों की ओर से केवल जहाँनारा (शाहजहाँ की लड़की) रंगमंच पर आती है। इस नाटक में इतिहास की बहुत कुछ रक्षा की गई है, और कल्पना से केवल आवश्यक काम लिया गया है। पुस्तक की रचना सामयिक है, क्योंकि आजकल हिंदू लोग अपने प्राचीन गौरव और पूर्वजों की सुकृतियों से प्रभावित हो रहे हैं। बुंदेलखंड-वासियों के लिये तो यह नाटक एक प्रकार का पुराण है। मूल्य सादी १॥), सजिल्द १॥।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-संसार में नई चीज !!

नादिरा

लेखक, श्रीगिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' बी० ए०। नादिरा एक नवाब की लड़की है। उसके पिता ने उसकी शादी इकरामहुसैन-नामक व्यक्ति से करना निश्चय किया था, लेकिन नादिरा का प्रेम प्रेमकुमार-नामक एक अध्यापक से हो गया था। इसी आधार पर सामाजिक कुरीतियों का दिग्दर्शन कराते और हिंदू-मुसलिम एकता पर जोर देते हुए इस पुस्तक की रचना की गई है। भाषा सरल, सरस और मुहाविरेदार है। पढ़कर तबियत फड़क उठती है। एक बार हाथ में लेने पर विना समाप्त किए जी न मानेगा।

यदि आप भारतीय समाज के भावी विकास-पथ को समझने के लिये प्रकाश चाहते हैं, तो फ़ख़रुल्ला, नादिरा, नवाब महबूब और नसीरअहमद आदि चरित्र-नायकों के रूप में भारतीय राष्ट्रीयता की शक्ति और दुर्बलता का सजीव चित्र उपस्थित करनेवाले इस सामाजिक उपन्यास को अवश्य पढ़िए। मूल्य सादी १॥), सजिल्द २)

नक्षत्र-मंडल

अनुवादक, स्व० श्रीरमाशंकर जैतली। इस पुस्तक में विविध देशों के विख्यात कहानी-लेखकों एवं कलाकारों—जैसे महात्मा टॉल्स्टॉय, मैक्सिम गोर्की, जान गाल्सवर्दी आदि—की सर्वश्रेष्ठ ११ रचनाएँ संगृहीत हैं। सभी कहानियाँ एक-से-एक बढ़कर शिक्षा-प्रद हैं, जिनके द्वारा उन कलाकारों के सिद्धांतों का प्रचार बड़ी सुंदरता से होता है। कहानियों द्वारा केवल मनोरंजन ही नहीं होता, बल्कि उनसे सुंदर संदेश प्राप्त होते हैं, जिनके अनुकरण से सर्वसाधारण व्यक्ति भी विशेष लक्ष्य की ओर अग्रसर हो जाता है। इस पुस्तक में वे ही कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं, जो अभी तक हिंदी-भाषा में अनुवादित नहीं हुई थीं। इन कहानियों को पढ़कर पाठक यह अवश्य अनुभव करेंगे कि हिंदी की आधुनिक कहानियों से ये कहानियाँ भिन्न हैं। कहानी-लेखकों को भी इन्हें पढ़कर हिंदी में ऐसी ही कहानियाँ लिखने का प्रयत्न करना चाहिए। साहित्यिक दृष्टि से भी यह पुस्तक अत्यंत महत्त्व-पूर्ण है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को यह पुस्तक मँगाकर अवश्य पढ़ना चाहिए। भाषा बहुत ही सरस एवं सुंदर है। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेगाँव का संत

लेखक, श्रीयुत श्रीमन्नारायण अग्रवाल एम्० ए०। देश के प्राण, राष्ट्र के अप्रतिम नेता महात्मा गांधी की जीवनी के कुछ रोचक संस्मरण। उपन्यास से भी रोचक। नाटक से भी सजीव। काव्य से भी मधुर। आख्यायिका से भी सुंदर। सत्य घटनाओं का विस्तृत विवरण। एक अनुपम कलाकृति, जिसकी प्रत्येक पंक्ति आपके हृदय में असाधारण स्फूर्ति पैदा कर देगी। त्याग, तपस्या, स्वदेश-सेवा का व्रत लेनेवाले देश-सेवक 'बापू' की उपदेशप्रद और अनुकरणीय जीवन-कथा का एक सुंदर अंश देखना हो, तो इसे अवश्य ही पढ़ें। मूल्य अजिल्द ॥।), सजिल्द १।)

कांग्रेस-राज्य में

अर्थात्

संयुक्त प्रांत में कांग्रेस-शासन के अट्ठाईस महीने

लेखक, श्रीगोपीनाथजी श्रीवास्तव एम्० एल्० ए०। इस पुस्तक के अँगरेज़ी-संस्करण का अच्छा स्वागत हुआ, जिससे हिंदी-संस्करण की भी माँग बढ़ती गई। अतएव प्रोत्साहित होकर हमने इसे जनता के लाभार्थ हिंदी में प्रकाशित किया है। इस पुस्तक द्वारा हमें यह अच्छी तरह विदित हो जाता है कि कांग्रेस-शासन ने, अपने कुछ दिनों के अस्तित्व में, लोक का कितना कल्याण किया। पुस्तक में कुल बारह अध्याय हैं, जिनमें कांग्रेस-गवर्नमेंट ने निम्नांकित विषयों-संबंधी जो-जो सुधार अथवा कार्य किए, उनका पूर्ण दिग्दर्शन कराया गया है, जैसे—नागरिक स्वतंत्रता, हरिजन, दरिद्रता और जायदाद, काश्तकारी, ग्राम-सुधार, घरेलू उद्योग-धंधे, मज़दूर, शिक्षा, आबकारी, सिंचाई और सरकारी इमारतें, स्थानीय शासन और स्वास्थ्य, जेलख़ाने, राजस्व, सांप्रदायिक स्थिति, स्पीकर और विधान।

उपर्युक्त सभी कार्यों की सुव्यवस्था में कांग्रेस-मंत्रिमंडल ने, यू० पी० में, जिस महान् व्यवहार-कुशलता का परिचय दिया, और इसका जो प्रभाव प्रांत की जनता पर पड़ा, उसे यहाँ लिखना असंभव है—उसे तो आप इस पुस्तक के पढ़ने पर ही भली भाँति जान सकेंगे।

राष्ट्रीय तथा राजनीतिक विचारवाले प्रत्येक स्त्री-पुरुष को इसे मँगाकर अवश्य पढ़ना चाहिए। पुस्तक की भाषा तथा छपाई-सफ़ाई का तो कहना ही क्या! मूल्य सादी ॥।), सजिल्द १।)

एक दिन

लेखक, बाबू भगवतीचरण वर्मा। आप हिंदी के प्रसिद्ध और प्रतिभावान् कवि हैं। आपकी उत्कृष्ट रचनाओं से हिंदी-प्रेमी भली भाँति परिचित हैं। उपन्यास और कविता से आपको विशेष रुचि है, और इन क्षेत्रों में आपने जो क्रांतियाँ उपस्थित की हैं, वे साहित्य के इतिहास में युगांतरकारणी हैं। 'एक दिन' भी आपके ही गद्य-पद्यमय काव्य का संग्रह है, जिसमें कवि के जीवन-संबंधी विचार हैं, जो भारत के उच्च-से-उच्च दार्शनिक सिद्धांतों से समता कर सकते हैं। इस पुस्तक में जीवन के सच्चे और गहनतम विचार सरल, सुबोध और सरस ढंग से वर्णन किए गए हैं। पुस्तक सांस्कृतिक शिक्षाओं से ओत-प्रोत है। पाठकों को यह उच्च कोटि की रचना भी मँगाकर अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य सादी ॥।), सजिल्द १।)

पता—मैनेजर गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत-गीत
(द्वितीयावृत्ति)

लेखक, स्व० कवि-सम्राट् पं० श्रीधर पाठक। पाठकजी खड़ी बोली के आचार्य माने जाते थे। आपने समय-समय पर देश-संबंधी जो उपयोगी और उत्तम कविताएँ लिखी थीं, उन्हीं का यह सुंदर संग्रह है। यह आधुनिक हिंदी-काव्य का हरा-भरा बग़ीचा और अनेक क्लांत रसिकों की सुख-सामग्री है। मूल्य ।।।=), सजिल्द १।=)

पद्य-पुष्पांजलि
(द्वितीय संस्करण)

लेखक, हिंदी-साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान् लेखक और समालोचक 'मिश्रबंधु'। इसमें इनके समय-समय पर लिखे हुए साहित्यिक और आलोचनात्मक लेख और कविताओं का अपूर्व संग्रह है। पुस्तक साहित्यिक है; पर पढ़ने बैठिए, तो बराबर पढ़ते ही चले जाइए। उपन्यास का-सा मज़ा आता है। कलकत्ता-विश्वविद्यालय में बी० ए० में कोर्स-बुक। मूल्य १॥), सजिल्द २)

रमा काव्य-श्री

आत्मार्पण
(द्वितीयावृत्ति, सचित्र)

लेखक, श्रीद्वारकाप्रसाद गुप्त 'रसिकेंद्र'। प्रस्तुत ग्रंथ एक ऐतिहासिक खंड काव्य है। इसका कथानक टॉड-राजस्थान और मेवाड़ के इतिहास से लिया गया है। राणा राजसिंह, प्रभावती या चंचल कुमारी और वीर चूड़ावत सरदार के अपूर्व चरित्रों के आधार पर अत्यंत रोचक, उत्कंठा-वर्द्धक और कवित्व, स्वदेश-प्राणता, निस्स्वार्थता, पवित्रता, सहानुभूति और क्षमा आदि सभी गुणों में आदर्श काव्य की रचना हुई है। मूल्य ॥।), सजिल्द १।)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय,

३६, लाटूश रोड

लखनऊ

उषा

लेखक, स्व० श्रीयुत शिवदास गुप्त 'कुसुम'। छ सुंदर चित्रों से सुशोभित मनोहर खंड काव्य। अनुप्रास-हीन नई शैली की रुचिर रचना। चित्ताकर्षक चरित्र-चित्रण। भव्य भावों की भरमार। मनोरंजक, ओजस्वी वर्णन। बाण-नंदिनी उषा और कृष्णचंद्र के पौत्र अनिरुद्ध के प्रणय-परिणय की पौराणिक कथा। पढ़कर परम प्रसन्नता प्राप्त होगी। मूल्य ॥=), सजिल्द ॥।)

परिमल
(द्वितीयावृत्ति)

लेखक, हिंदी-संसार के प्रसिद्ध छायावादी कवि श्रीयुत पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'। आपकी युगांतर-कारिणी कविताओं का मज़ा समय-समय पर हिंदी-पाठकों को मिलता है। इनकी लिखी हुई उत्कृष्ट कविताओं का अनुपम संग्रह है। छंदोबद्ध कविताएँ, मुक्त संगीत, स्वच्छंद छंद, तीनों प्रकार की कविताएँ संगृहीत हैं। 'यमुना', 'स्मृति', 'महाराज शिवाजी का पत्र', 'गीत' आदि एक-से-एक बढ़कर कविताएँ छपी हैं। रहस्यवाद की भावपूर्ण कविताओं का रसास्वादन करना हो, तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए। मूल्य १॥), सजिल्द २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापार की चाभी
विज्ञापन छपाना
: : है : :

आपके
लाभ
की
बात

व्यापार की मंदी होने पर भी

१. ठीक-ठीक लिखे हुए
२. उपयुक्त माध्यम में दिए गए **विज्ञापन**
३. सुंदरता से छपे हुए

हमेशा रुपया खींचते हैं

सुधा

१. में दक्ष मनोवैज्ञानिक विज्ञापन-लेखक नियुक्त हैं।
२. विज्ञापन देने के लिये सर्वोत्तम माध्यम है।
३. उसकी टाइपोग्रैफी कला-पूर्ण है।

इसीलिये

सुधा में विज्ञापन छपाइए

साधारण विज्ञापन की दर

	प्रतिमास
१ पृष्ठ की छपाई	२५)
½ " " "	१५)
¼ " " "	१०)
⅛ " " "	६)

सुधा में जितने विज्ञापन छपते हैं, उतने किसी भी हिंदी-पत्रिका में नहीं छपते !

मैनेजर 'सुधा'
[विज्ञापन-विभाग]
नं० ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा के नियम

[सुधा के २ संस्करण निकलते हैं—(१) राजसंस्करण, (२) साधारण संस्करण]

मूल्य

'सुधा' के राजसंस्करण का डाक-व्यय-सहित वार्षिक मूल्य १२), छ मास का ६) और प्रति संख्या का १) है। साधारण संस्करण का वार्षिक ६), छ मास का ३) और एक प्रति का ॥) है। वी० पी० से मँगाने में ≡) रजिस्ट्री के और देने पड़ेंगे। इसलिये ग्राहकों को मनीऑर्डर से ही चंदा भेज देना चाहिए। भारत के बाहर सर्वत्र वार्षिक मूल्य वही है, जो भारत में। सुधा की यह भी एक विशेषता है। वर्षारंभ श्रावण (अगस्त) से होता है। सुधा अँगरेज़ी मास के प्रथम सप्ताह प्रति मास प्रकाशित हो जाती है। लेकिन ग्राहक चाहे जिस संख्या से बन सकते हैं।

अप्राप्त संख्या

अगर कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे, तो उसी महीने के अंत तक कार्यालय को सूचना मिलनी चाहिए। लेकिन हमें सूचना देने के पहले स्थानीय पोस्ट-ऑफ़िस में उसकी जाँच करके डाकख़ाने का दिया हुआ उत्तर सूचना के साथ आना चाहिए। उन्हें उस संख्या की दूसरी प्रति भेज दी जायगी। लेकिन उक्त तारीख़ के बाद सूचना मिलने से उस पर ध्यान नहीं दिया जायगा, और उस संख्या को ग्राहक १) या ॥) के टिकट भेजने पर ही पा सकेंगे।

पत्र-व्यवहार

उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिए। अन्यथा पत्र का उत्तर विलंब से दिया जा सकेगा। पत्र के साथ ग्राहक-नंबर का भी उल्लेख होना चाहिए। मूल्य या ग्राहक होने की सूचना मैनेजर सुधा, नं० ३६, लाटूश रोड, लखनऊ के पते से आनी चाहिए।

पता

ग्राहक होते समय अपना नाम और पता बहुत साफ़ अक्षरों में लिखना चाहिए। दो-एक महीने के लिये पता बदलवाना हो, तो उसका प्रबंध डाक-घर से ही कर लेना ठीक होगा। अधिक दिन के लिये बदलवाना हो, तो संख्या निकलने के १५ दिन पेश्तर उसकी सूचना देनी चाहिए।

लेख आदि

लेख या कविता स्पष्ट अक्षरों में, काग़ज़ की एक ओर, संशोधन के लिये इधर-उधर जगह छोड़कर, लिखी होनी चाहिए। क्रमशः प्रकाशित होने लायक़ बड़े लेख संपूर्ण आने चाहिए। किसी लेख अथवा कविता के प्रकाशित करने या न करने का, उसे घटाने-बढ़ाने का तथा उसे लौटाने या न लौटाने का सारा अधिकार संपादक को है। जो नापसंद लेख संपादक लौटाना मंज़ूर करें, वे टिकट भेजने पर ही वापस किए जा सकते हैं। यदि लेखक लेना स्वीकार करते हैं, तो उपयोगी और उत्तम लेखों पर पुरस्कार भी दिया जाता है। सुधा में प्रकाशित पुरस्कृत लेखों और कविताओं को पुस्तकाकार या किसी संग्रह में निकालने का अधिकार सुधा के अध्यक्ष को रहेगा। अपुरस्कृत रचनाओं पर लेखकों और सुधा-अध्यक्ष, दोनों का अधिकार होगा। सचित्र लेखों के चित्रों का प्रबंध लेखकों को करना चाहिए। चित्र प्राप्त करने के लिये आवश्यक ख़र्च प्रकाशक देंगे।

लेख, कविता, समालोचना के लिये पुस्तकें और बदले के पत्र इस पते से भेजने चाहिए—

श्रीदुलारेलाल
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
कवि-कुटीर, लखनऊ

विज्ञापन

किसी महीने में विज्ञापन बंद करना या बदलवाना हो, तो एक महीने पहले सूचना देनी चाहिए।

अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। छपाई पेशगी ली जाती है। विज्ञापन की दर नीचे प्रकाशित है—

साधारण	१ पृष्ठ या २ कालम की छपाई	२५)	प्रति	मास
,,	½ ,, या १ ,, ,, ,,	१५)	,,	,,
,,	¼ ,, या ½ ,, ,, ,,	१०)	,,	,,
,,	⅛ ,, या ¼ ,, ,, ,,	६)	,,	,,

कम-से-कम आधा कालम विज्ञापन छपानेवालों को सुधा मुफ़्त मिलती है। विज्ञापनदाता द्वारा छपे हुए सुधा-साइज़ के ८ पृष्ठ के क्रोड़ पत्र की सिलाई, बटाई तथा चार्जेज़ ६०), ४ पृष्ठ के ३५) और २ पृष्ठ के २०) लिए जाते हैं।

सुधा में विज्ञापन छपाने से बड़ा लाभ रहता है। कारण, इसका प्रत्येक विज्ञापन लाखों पढ़े-लिखे, धनी-मानी और सभ्य स्त्री-पुरुषों की नज़रों से गुज़र जाता है। सब बातों में हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका होने के कारण इसका प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ रहा है।

कृपया शीघ्र ही अपना विज्ञापन सुधा में छपाकर लाभ उठाइए। कम-से-कम एक बार परीक्षा तो कर लीजिए।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

	पृष्ठ
१. गीत (कविता)—[लेखक, श्रीसोहनलाल द्विवेदी एम्० ए०, एल्-एल्० बी०	४८१
२. मा की साध (कविता)—[लेखक, श्रीश्रीनिधि द्विवेदी	४८२
३. बिहार और हिंदुस्तानी—[लेखक, श्रीपांडेय रामावतार शर्मा एम्० ए०, बी० एल्०, साहित्यशिरोमणि	४८३
४. वेदों का नया साहित्य—[लेखक, श्रीयुत वासुदेवशरण अग्रवाल एम्० ए०, एल्-एल्० बी०	४८९
५. अकस्मात (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०	४९४
६. भू-स्वर्ग स्विट्ज़रलैंड (सचित्र, भ्रमण)—[श्रीसूर्यनारायण व्यास ज्योतिषाचार्य	४९९
७. प्रेमी रावण (कविता)—[लेखक, श्रीयुत हरिकृष्ण 'प्रेमी'	५१०

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सरदी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉक्स नं० ६८२५

[ई० सन् १९०१ में स्थापित]

च्यवनप्राश-३) सेर अध्यक्ष मथुरा बाबू का मकरध्वज-४) भरी

शक्ति औषधालय-ढाका

आयुर्वेदिक संसार में युगांतर उपस्थित कर दिया है।
कारखाना और हेड ऑफ़िस ढाका, बंगाल। तार का पता "शक्ति" ढाका।
कलकत्ता हेड ऑफ़िस—५२। १, वीडन स्ट्रीट। चौरंघी

बंगाल से बाहर की शाखाएँ—देहली, कानपुर, इलाहाबाद, पटना, भागलपुर, गया, बनारस, गोरखपुर, बुलानाला, जमशेदपुर, गौहाटी, तिनसुकिया (आसाम), मदरास, कटक, रंगून, बेसिन, मांडले (बरमा), बंबई, लखनऊ ब्रांच—२, श्रीराम रोड, लखनऊ आदि।

ब्रांच भारतवर्ष में सर्वत्र और बरमा में

मृतसंजीवनी सुरा (गवर्नमेंट से लाइसेंसशुदा) भारतवर्ष और बरमा में हमारी सभी ब्रांचों में मिलती है।

अध्यक्षगण—श्रीमथुरामोहन, लालमोहन, फणींद्रमोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती।

प्रोप्राइटर्स—श्रीमथुरामोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती बी० ए०

हिंदू केमिस्ट और फ़िज़िशियन

पत्र और मनीऑर्डर आदि मथुरा बाबू मैनेजिंग प्रोप्राइटर के नाम भेजिए। (एम्०)

आयुर्वेदीय चिकित्सा-प्रणाली-संबलित सूचीपत्र मुफ़्त मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri.

	पृष्ठ
८. आधुनिक शिक्षा-प्रणाली का प्रभाव—[लेखक, श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा (अष्ठाना) विशारद, बी० ए०, एल्० टी०	५१४
९. भारतवर्ष में शक्कर का व्यवसाय—[लेखक, श्रीयुत ज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०	५२०
१०. बेकार का भाग्य (कहानी)—[लेखक, श्रीपं० हरिस्वरूप उपाध्याय ...	५२३
११. उपभोग का आदर्श—[लेखक, प्रो० दयाशंकरजी दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी०	५२७
१२. दोहे (कविता)—[लेखक, श्रीयुत तेजनारायण काक एम्० ए० ...	५३१
१३. गीत (कविता)—[लेखिका, कुमारी विद्याकुमारी भार्गव	५३२
१४. छिन्नपत्र (कहानी)—[लेखक, श्रीपं० सुंदरलाल त्रिपाठी	५३३
१५. गद्य-गीत—[लेखिका, श्रीकुमारी दिनेश-नंदिनी चोरड्या	५३९
१६. संतान के प्रति कृतज्ञता—[लेखक, श्रीपं० आत्मस्वरूप शर्मा	५४०
१७. भगवान् बुद्ध के प्रति (कविता)—[लेखक, श्रीपं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	५४५
१८. चयन—लेखकगण, श्रीयुत 'करुण' साहित्य-विशारद, श्रीयुत गंगाप्रसाद 'कौशल', श्रीयुत बालचंद श्रीवास्तव 'बाल', श्रीयुत रमावल्लभ चतुर्वेदी, श्रीयुत राजाराम श्रीवास्तव 'पुनीत', श्रीयुत मुकुटविहारीलाल श्रीवास्तव 'मुकुट' बी० ए० श्रीयुत क़ाज़ी अशरफ़ महमूद और श्रीयुत शंभुनाथ मिश्र	५४६
१९. परिचय—[लेखकगण, श्रीयुत पं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश', श्रीयुत गोविंदवल्लभ पंत, श्रीयुत श्रीदत्त अवस्थी और श्रीयुत रामदत्त शुक्ल एडवोकेट ...	५५७
२०. कुसुम...	५६१
२१. धारा	५६२

विशुद्ध आयुर्वेदिक औषधें

आपको

सुख-संचारक कंपनी, मथुरा ही में मिल सकेंगी। युक्त प्रांत भर में सबसे बड़ी बिजली की मशीन से चलनेवाला यही एकमात्र कारखाना है।

बड़ा सूचीपत्र मँगाकर देखिए।

पता—सुख-संचारक कंपनी,

मथुरा, यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

	पृष्ठ
(क) रंगीन	
१. कुटिया की ज्योति—[चित्रकार, श्री-कमलाशंकर सिंह	४८१
(ख) सादे	
२. श्रीपांडेय रामावतार शर्मा एम्० ए०, बी० एल्०, साहित्यशिरोमणि ...	४८३
३. श्रीसूर्यनारायण व्यास	४९९
४. बडगे स्टाइन (आस्ट्रिया) का होटल	५००
५. पर्वतीय सौंदर्य	५०१
६. झूरिक की प्राकृतिक सुषमा... ...	५०२
७. झूरिक की एक सुंदर सड़क	५०३
८. झूरिक का एक विहंगम दृश्य ...	५०३
९. झील के तटवर्ती झूरिक का एक मनोरम दृश्य	५०५
१०. झूरिक की अडोरा-शॉप	५०७
११. श्रीमती लिलि पेंटर	५०८
१२. अडोरा की सुंदर सेल्स गर्ल ...	५०८
१३. मिस्टर वाल्टर पेंटर	५०९
१४. श्रीपं० आत्मस्वरूप शर्मा	५४०

स्वप्नदोष

बिना किसी औषधि, तेल, व्यायाम, मेशीन, रिंग, इलेक्ट्रिक बेल्ट तथा पथ्य के पहिली ही रात्रि से सर्वथा असम्भव। प्रमेह आदि की भी चिकित्सा की जाती है। मेरी अद्भुत चिकित्सा प्रणाली से आप आश्चर्यान्वित हो जायेंगे। पत्र व्यवहार गुप्त रखा जाता है। उत्तर के लिए एक आने की टिकट भेजें।

डाक्टर योगेश चन्द्र लाहौर। DR. YOGESH CHANDER, LAHORE.

University Degrees

Read Prospectus of new type degrees in Hindi (Indian) English and Psychology of Lahore University (Govt. Regd.) (not Pb. University) Easy terms. Send 4 anna stamps for 'Rules & Regulations' & 'Revolution in Medical World' (of 30 pages). गवर्नर लाहौर यूनीवर्सिटी

Governor, Lahore University.

'Revolution in Medical World' (of 30 Pages) free.

लिकोरिया श्वेतप्रदर

अत्यंत ही भयानक रोग है, जो खून की कमी, गर्भाशय की कमज़ोरी, मासिक धर्म के कुसमय और अनुचित यात्रा (समय के पूर्व या पश्चात् कम या अधिक मात्रा) में आने इत्यादि से उत्पन्न होता है। आजकल ९० प्रतिशत स्त्रियाँ इस रोग की शिकार पाई जाती हैं, जिसके प्रभाव से स्त्रियों का शरीर अंदर-ही-अंदर घुलता रहता है, निर्बल और कांति-हीन हो जाता है। भूख कम लगती है कमर और पेड़ू में दर्द तथा काम में अरुचि रहती है।

लि को रौ ल (Likorol)

इस भयंकर रोग की एकमात्र और अनुभूत औषधि है, जिसके यथाविधि ३१ दिन सेवन-मात्र से स्त्रियों का लाल, पीला, श्वेतप्रदर (धातुस्राव, रक्तस्राव इत्यादि), ऋतुकाल में ऋतु का असमय होना, गर्भाशय या कमल के ऊपर की सूजन, कमर, पेड़ू, सिर-दर्द, सिर में चक्कर आना या ऋतु के समय कमर और पेड़ू में दर्द होना इत्यादि दूर होकर शरीर सुंदर और सुडौल हो जाता है। लिकोरौल की एक शीशी का मूल्य केवल ५।।।≡) है डाक-व्यय अलग। सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स—

केय ब्रदर्स, बंबई नं० २

Kaye Brothers, Bombay No. 2.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिकों का सखा आलोचना-प्रधान

साहित्य-संदेश

क्यों पढ़ना चाहिए ?

इसलिये कि

(१) हिंदी की साहित्यिक और विशेषकर आलोचनात्मक जागृति का यह अग्रदूत है।

(२) साहित्य-संदेश हिंदी के प्रमुख विद्वानों के विचारों का माध्यम है।

(३) साहित्य-संदेश आलोचना-साहित्य का सर्वश्रेष्ठ मासिक है।

(४) हिंदी में प्रकाशित पुस्तकों को जल्दी-से-जल्दी निष्पक्ष आलोचना प्रकाशित करना इसका मुख्य उद्देश्य है।

(५) साहित्य-संदेश अपने पाठकों में आलोचना के नाम पर थोथे विचार, पक्षपात और दलबंदी का प्रचार नहीं करता, वरन् हिंदी-साहित्य में ठोस और गंभीर समीक्षा-शैली तथा सुरुचि एवं प्रगति के संस्कारों को जाग्रत् करता है।

(६) यह होनहार विद्यार्थियों को साहित्य के पथ पर अग्रसर करता है।

(७) लेखकों को प्रोत्साहन देकर, उनकी कृतियों को लोकप्रिय बनाता है।

(८) यह रहस्यवाद, छायावाद, प्रगतिवाद और प्राचीन तथा अर्वाचीन साहित्य की सभी प्रवृत्तियों एवं हिंदी के सभी लब्ध-प्रतिष्ठित साहित्यिकों पर नियम-पूर्वक अध्ययन-पूर्ण सामग्री प्रस्तुत करता है।

(९) यह हिंदी के विद्यार्थियों के लिये, विशेषकर सम्मेलन की परीक्षाओं, प्रभाकर, विशेषयोग्यता तथा स्कूल-कॉलेजों में हिंदी पढ़नेवालों के लिये बहुत उपयोगी है।

(१०) हिंदी-पत्रों में यह पत्र सबसे सस्ता और उपयोगिता की दृष्टि में सबसे अधिक मान्य है।

(११) इस पत्र में दवा-दारू, विदेशी वस्तु, प्रतियोगिता आदि के तथा अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। साहित्य-संबंधी विज्ञापन छापना ही इसे अधिक अभीष्ट है।

संपादक—श्रीगुलाबराय एम्० ए०, श्रीमहेंद्र

यह पत्र यू० पी०, सी० पी०, बिहार आदि की प्रांतीय सरकारों तथा ग्वालियर, जयपुर आदि कितने ही देशी राज्यों द्वारा स्वीकृत है। मूल्य ३) वार्षिक। विद्यार्थियों तथा शिक्षा-संस्थाओं से २) मात्र। आज ही मनीऑर्डर भेजकर ग्राहक बनिए।

नमूना मुफ़्त मँगाकर देखिए

पत्र-व्यवहार का पता—साहित्य-संदेश-कार्यालय, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त-प्रांत, मध्यप्रदेश, इंदौर, धार आदि के शिक्षा-विभागों

तथा बड़ौदा-राज्य के पुस्तकालयों के लिये स्वीकृत

प्रकाशक
मध्य-भारत-हिंदी-
साहित्य-समिति
इंदौर

वीणा

संपादक
श्रीकालिकाप्रसाद
दीक्षित
'कुसुमाकर'

पुरातत्त्व-शास्त्र के सुप्रसिद्ध विद्वान् तथा बड़ौदा-राज्य-पुरातत्त्व-विभाग के अध्यक्ष

डॉक्टर हीरानंद शास्त्री

(एम्० ए०, एम्० ओ० एल्०, डी० लिट्०)

लिखते हैं—

"मुझे वीणा से अच्छा परिचय है। मैं इसे हिंदी का एक उत्तम मासिक पत्र मानता हूँ। इसमें अच्छे लेख निकला करते हैं। इसके संपादक एक योग्य लेखक हैं, और इनकी आलोचनाएँ उच्च कोटि की होती हैं। 'वीणा' से हिंदी-भाषा को बहुत लाभ हो रहा है।"

ता०—१—१२—३६।

आगामी विशेषांक—

(१) एकांकी नाटक-अंक

(२) ग्राम-सुधार-अंक

वार्षिक मूल्य ४), एक प्रति का ।=)

मिलने का पता—

व्यवस्थापक 'वीणा',

इंदौर C. I.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चिंत रहिए—

"कोई बीमारी कभी न उभरेगी,

हठयोग

अर्थात्

शारीरिक कल्याण

योगी रामचारकदास-लिखित अँगरेज़ी-पुस्तक का अनुवाद

अनुवादक

ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०। इसमें ऐसे सरल अभ्यास हैं, जिन्हें आप हर समय कर सकते हैं। थोड़े ही अभ्यास से आपकी शारीरिक उन्नति और मनःशक्ति-प्रबलता उस मात्रा तक पहुँच जायगी, जिसका आपको स्वप्न में भी ख़याल न होगा।

बल्कि हमेशा के लिये दूर हो जायगी।"

इस पुस्तक को पढ़कर अभ्यास शुरू कीजिए; बड़ा लाभ होगा!

पृष्ठ-संख्या २६४, बढ़िया काग़ज़ और छपाई, मूल्य १।), सजिल्द १॥।)

प्रथम संस्करण हाथोंहाथ बिक गया। दूसरा तैयार है।

आज ही मँगाइए—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा

कुटिया की ज्योति

[चित्रकार—श्रीकमलाशंकरसिंह]

मम ही, तम हरि, जगमगै पीतम-रूप-उदोत,
ताकी ही प्रतिबिंब तू, मम कुटिया की जोत।

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११२५४

राजसंस्करण १२) १)
साधारण संस्करण ६) ॥)

प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

वर्ष १३ } आषाढ़, ३१७ तुलसी-संवत् (१९९७ वि०)— { संख्या ६
खंड २ } जुलाई, १९४० { पूर्ण संख्या १६८

गीत

(वसंत—झपताल)

[श्रीसोहनलाल द्विवेदी एम्० ए०, एल्-एल्० बी०]

अब मत रहो दूर!
देखो, किरण पोंछती फूल के आँस;
वह खिल उठा, वह उठी है सुरभि साँस।
तुम मत बनो क्रूर;
अब मत रहो दूर!

पोंछो अरुण नैन के ये करुण बिंदु,
शीतल करो प्राण-मन हे शरद-इंदु!
अब मत रहो दूर!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मा की साध

[श्रीश्रीनिधि द्विवेदी]

उमड़ रहा है रोम-रोम के कानों में स्वर का सम्मोहन ;
कोमल किलको, बोलो-बोलो, कुछ तुतली बोली में मोहन !
लेकर सार सुधा का किस दिन मेरे नन्हे ! 'मा' कह दोगे ?
उत्सुकता पागल है मेरी, पहले-पहले क्या कह दोगे ?
कोपल-तन में तज काँटों को मिला मृदुल पाटल को खिलना ;
बनना पड़ा समाकर तुममें उनके विकल विरह को मिलना ।
अरमानों के तूफ़ानों को कर डाला मलयानिल तुमने ;
दी आभा मेरी प्राची को किरणों के कंचन कुंकुम ने ।
आज मिलें जो तारे मुझको, गूँथूँ, पलने पर लटका लूँ ;
मिले सार पिक-कुल-कूजन का, जी-भर मोह-लोरियाँ गा लूँ ।
एक किलक पर अखिल अबोले कुसुमों को न्योछावर कर दूँ ;
मेरी चले, खिलौने तेरे हाथों में रवि-शशि के धर दूँ ।
मौन, अधीर तरसता आँगन, कब रक्खोगे पैयाँ भू पर ?
दौड़ पड़ूँगी कब भीतर से लेने लाल ! बलैयाँ भू पर ।
पूरण शशि, प्रभात मेरे तुम, तुमसे पूनम, प्रात लजाते ;
मेरे मोद-विनोद ! न बोलो, चुप में भी तो मन बहलाते ।
किलको, खेलो, हँसो खुशी से, जिससे तुरत बड़े हो जाओ ;
रख तन-मन आँखों पर देखूँ जब तुम स्वयं खड़े हो जाओ ।

सफ़ेद बालवालो ! खिज़ाब छोड़ो

हज़ारों आदमियों द्वारा परीक्षित तथा सत्य प्रमाणित खिज़ाब नहीं, एक तेल है। पका बाल खूँटी से काला पैदा होकर यदि स्थायी काला न रहेगा, तो दूना दाम वापस की शर्त। दाम ५) रु० ४० से ऊपर उमर के लिये ठीक।

बाल काला-स्टोर्स, पो० कन्सी सिगरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार और हिंदुस्तानी

[श्रीपांडेय रामावतार शर्मा एम्० ए०, बी० एल्०, साहित्यशिरोमणि]

यह ठीक है कि हिंदुस्तानी-नामक एक अद्भुत और अस्वाभाविक भाषा की सृष्टि के ही लिये नहीं, उसके ज़ोरदार प्रचार के लिये भी बिहार दोषी ठहराया गया है, और सम्मेलन के प्रस्ताव द्वारा भी केवल बिहार ही अपराधी क़रार दिया गया है, पुनः श्रीवेंकटेश-नारायण तिवारी के लेख और श्रीचंद्रबली पांडेय की पुस्तक में भी हिंदुस्तानी - भाषा के लिये दोषी माना गया है बिहार ही । किंतु इस अभियोग की समीक्षा में दोष भी हठ-पूर्वक गुण नहीं घोषित किया जा सकता, न कोरे वाद-प्रतिवाद के सिलसिले में स्वाभिमान का पल्ला पकड़ तथ्य पर ही परदा डाला जा सकता है । यदि हिंदी राष्ट्र-भाषा है, तो वह भारत के सभी प्रांतों की चीज़ है, सिर्फ़ बिहार या यू० पी० ही उसकी तरक़्क़ी का ठेकेदार नहीं । किसी भी प्रांत में हिंदी-हित को धक्का पहुँचने पर सभी हिंदी-भाषियों को उसके खुल्लमखुल्ला विरोध का पूरा हक़ हासिल है । इस नाते यदि सम्मेलन या किसी हिंदी-हितैषी अथवा साहित्यिक ने बिहार के विरुद्ध यह अभियोग लगाया कि हिंदुस्तानी-भाषा की सृष्टि का दोष बिहार के मत्थे है, और यदि वह अभियोग सर्वथा निर्मूल भी नहीं, तो बिहार बुरा क्यों मानने लगा । बल्कि योग्य और स्वाभिमानी बिहारी सज्जनों को तुरत ही तत्पर होकर अपने उत्तरदायित्व पर विचार करना चाहिए, और अन्य हिंदी-भाषी प्रांतों के सामने अपनी कमी या ग़लती स्वीकार करते हुए उसे दूर कर हिंदी को बल पहुँचाना चाहिए । वैसा न कर यदि बिहार के हिंदी-सेवी तू-तू-मैंमैं पर कटिबद्ध हो जायँ, और ग़लती को भी सही सिद्ध करने का सिलसिला चालू कर दें, तो यह निस्संदेह बिहार और बिहार के हिंदी-सेवियों के लिये कलंक की बात होगी । यह तो साधारण व्यक्ति भी मानते हैं कि हिंदुस्तान में हिंदी का प्रचार है, और लोगों ने उसे राष्ट्र-भाषा कहकर भी सम्मानित किया है । हिंदुस्तानी तो आज गढ़ी जा रही है,

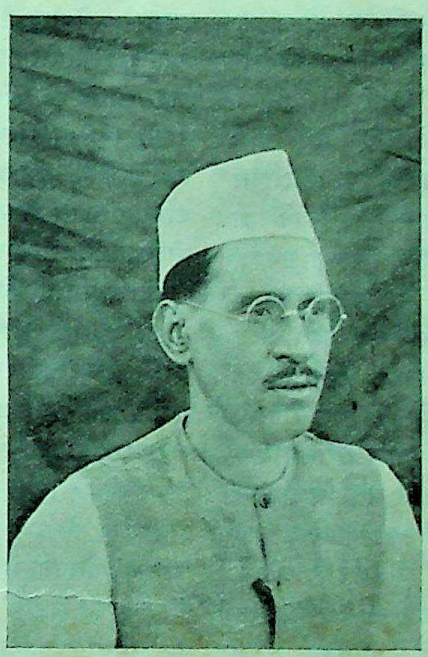

श्रीपांडेय रामावतार शर्मा एम्० ए०
बी० एल्०, साहित्यशिरोमणि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह भी अस्वाभाविक ढंग से, हिंदुओं और मुसलमानों में ऐक्य स्थापित करने के ध्येय से। यह नई हिंदुस्तानी ग्रहण करेगी हिंदी की ही जगह, तब वह हिंदी के लिये घातक क्यों न मानी जाय? यह तो साधारण-सी बात है, जिसे हर कोई स्वीकार कर सकता है। ऐसी दशा में यदि बिहार हिंदुस्तानी के प्रचार पर कमरबस्ता हो जाता है, और जिस ढंग से उसका मान बढ़ाया जा रहा है, उसे जारी रखता है, तो बिहार में हिंदी का भारी अहित अवश्यंभावी है। इसी ख़तरे की ओर अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का ध्यान है, और पांडेयजी एवं तिवारीजी ने इसी आशंका से प्रेरित होकर बिहार के मत्थे दोष मढ़ने का भी साहस किया है। ऐसे प्रयास को व्यंग्य-बाण या धिक्कारवाद समझकर हिंदुस्तानी के प्रचार का समर्थन करना किसी भी हिंदी-प्रेमी के लिये शोभा-जनक नहीं हो सकता। अतः विद्यापति-हिंदी-सभा द्वारा 'बिहार और हिंदुस्तानी' नाम की पुस्तक का प्रकाशन कदापि वांछनीय नहीं समझा जा सकता, उस पर भी जब इस पुस्तक का उद्देश्य लगाए गए लांछन को निर्मूल सिद्ध करना नहीं, बल्कि समूची पुस्तक में यही प्रमाणित करना है कि बिहार ही नहीं, हिंदुस्तानी के लिये युक्त प्रांत भी दोषी है। साथ ही यह भी कि श्रीरामलोचनशरणजी 'बिहारी' ने हिंदी की बड़ी भारी सेवा की है, और उन्हीं पर दोषारोपण भी किया गया है। यह न कोई युक्ति-संगत प्रतिवाद है, और न इससे बिहार का कलंक ही दूर होता है। इस चेष्टा से कहीं अच्छा था हिंदुस्तानी से होनेवाले अहित पर प्रकाश डालना, और विवेचनात्मक लेखों द्वारा बिहार के हिंदी-प्रेमियों को हिंदी-सेवा के लिये कटिबद्ध करना। 'बिहार और हिंदुस्तानी' के लेखक 'बिहार के कुछ साहित्य-सेवी', चाहे वे अँगरेज़ी-साहित्य के सेवक हों या उर्दू-साहित्य के, तथ्य पर पुनः विचार करें, और हिंदुस्तानी के काल्पनिक स्वरूप से होनेवाले हिंदी-अहित पर भी ध्यान दें।

यू० पी० में हिंदी की बुराई शुरू हुई, इसलिये बिहार में भी वह जारी की जाय, यह कोई दलील नहीं। शाबाशी तो इसमें है कि बिहार में हिंदी-सम्मान की रक्षा करते हुए यू० पी० में भी उसकी प्रतिष्ठा पूर्ववत् क़ायम की जाय। इस कथन में कि यू० पी० के कुछ अभिमानी लेखक बिहारी लेखकों का अपमान करते हैं, कुछ सत्यता है निश्चय, लेकिन इससे बिहारियों के क्षुब्ध होने का भी समुचित कारण नहीं। कारण, अपमान करनेवाले अभिमानियों का प्रयत्न सूर्य पर कीचड़ उछालने की तरह है। जब बिहारियों की हिंदी-सेवा हिंदी-संसार पर प्रकट है, वैसी कुचेष्टा के लिये सारा यू० पी० बदनाम नहीं किया जा सकता। सभी संस्थाओं में, सभी समाज में, सभी दलों में भले और बुरे दोनो ही रहते हैं; अभिमान और अपमान भी मनुष्य-स्वभाव के भीतर ही है, और इसी कारण सहसा 'शठं प्रति शाठ्यं समाचरेत्' को ही चरितार्थ करना कभी उचित नहीं। हमारी दृष्टि औचित्य की ओर जानी चाहिए, हमें किसी राय की उपयोगिता पर विवेचन करना चाहिए। श्रीचंद्रबलीजी या श्रीवेंकटेशनारायणजी बिहार को कुछ भी न समझें, किंतु बिहार को तो हिंदी का गौरव समझना है, और इस ध्येय से उसे यह अवश्य देखना है कि 'रोशनी' और 'होनहार' हिंदी को किधर ले जा रहे हैं। 'महमूद-सीरीज़' की भाषा से हिंदी-परंपरा नष्ट गौरव तो नहीं हो रही है। ऐसा न कर बदनामी की टोकरी देखादेखी अपने सिर उठा लेना बिहारियों के लिये बुद्धिमानी की बात नहीं मानी जा सकती।

हिंदुस्तानी के समर्थन में महात्मा गांधी, डॉ० राजेंद्रप्रसाद और पं० जवाहरलाल नेहरू की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुहाई भी उक्त पुस्तक में दी गई है। और, पृष्ठ तीन में हिंदुस्तानी नाम के संबंध में दलील पेश की गई है—"राष्ट्र-भाषा का नामकरण भी एक तरह से हो चुका है।...यह नाम चुना गया है 'हिंदुस्तानी'। अधिकांश नेताओं ने इस नाम को पसंद किया है, और अब तो यह नाम काफ़ी चालू हो चुका है।" यदि यही ठीक है, और हिंदी के स्थान में हिंदुस्तानी ही राष्ट्र-भाषा-पद पर बिठाई जा चुकी है, तो आगे हिंदी नाम के व्यवहार का तात्पर्य ? अभी तक उत्तर में हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, दक्षिण में हिंदी-प्रचार-सभा, प्रांत-प्रांत में प्रांतीय हिंदी-सभाओं और स्थान-स्थान पर हिंदी-परिषदों के नाम भी अहर्निश-वंद्य नेताओं की राय के अनुसार क्यों नहीं बदल दिए जाते ? ख़ैर, यह दूर की बात हो सकती है, किंतु 'विद्यापति-हिंदी-सभा' और 'हिंदी-पुस्तक-भंडार' से तो 'हिंदुस्तानी' नामकरण के बाद हिंदी को लुप्त हो जाना चाहिए था। पर हो कैसे, हिंदुस्तानी तो व्यापारिक दृष्टि से प्रकाशकों और स्वार्थ-वश लेखकों द्वारा अपनाई गई है, अन्यथा हिंदी हिंदी ही है, और उसका पद वस्तुतः जो है, वही रहेगा भी। इसे 'बिहार और हिंदुस्तानी' के 'साहित्य-सेवी' भी अवश्य स्वीकार करेंगे, क्योंकि यह उनका ही उद्गार है। पृष्ठ एक पर उनके अंतस्तल से आप प्रकट हो रहा है—"देश के बड़े-बड़े मनीषियों ने मुक्त कंठ से स्वीकार किया है कि हिंदी ही एक-मात्र भाषा है, जो इस सिंहासन पर बैठाई जा सकती है। अटक से कटक तक, कैलास से कुमारी तक जो बीसियों भाषाएँ और उप-भाषाएँ प्रचलित हैं, उनमें हिंदी ही ऐसी है, जो सब जगह सुगमता-पूर्वक चलाई जा सकती है। बंगाली और पंजाबी, बिहारी और मद्रासी, गुजराती और नेपाली, मराठी और काश्मीरी के बीच हिंदी-भाषा ही माध्यम का काम कर सकती है।" जादू वह, जो सिर पर चढ़कर बोले। हिंदी की यह महत्ता हिंदुस्तानी कदापि नहीं पा सकती। वे नेता भी, जो अभी राष्ट्र-हित के भ्रम में काल्पनिक वस्तु को तथ्य समझकर मृग-मरीचिका से पिपासा शांत करने का उपदेश दे रहे हैं, जल्द ही समझेंगे कि अस्वाभाविक हिंदुस्तानी द्वारा हिंदी-हित को धक्का पहुँचाकर भी हिंदू-मुस्लिम-ऐक्य स्थापित नहीं किया जा सकता।

हिंदू-मुस्लिम-ऐक्य के लिये भी तो हिंदी ही की हत्या नहीं की जा सकती। सभी हिंदू हिंदी ही नहीं बोलते, हिंदुओं के भीतर बँगला, मराठी, पंजाबी, नेपाली, गुजराती, तेलगु आदि अनेक भाषाएँ बोलनेवाले हैं। तब उर्दू उन सबों के साथ क्यों नहीं जोड़ दी जाती ? हिंदुस्तानी में तो हिंदी और उर्दू, दो भाषाएँ ही एकाकार (पृ० ३) होती हैं। निराली सूझ है ! इस प्रकार राष्ट्र-हित की वेदी पर यदि भाषा, संस्कृति, आचार और सामाजिक कृत्य का बलिदान जारी रहा, और पूज्य नेताओं की दूरदर्शिता उसे ज़रूरी समझती रही, तो सचमुच निराली आज़ादी हमें हासिल हो जायगी। 'न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।' बिहारप्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की राँचीवाली बैठक में हिंदी-भाषियों के समक्ष ऐसी ही समस्या उठ पड़ी थी, जब 'रोशनी' के एक दीवट, मेरे प्रिय मित्र, प्रो० धर्मेंद्र ब्रह्मचारी ने महात्माजी का नाम सुमिरन कर हिंदुस्तानी की आवश्यकता समझना शुरू किया था। पश्चात् लाचार उत्तर में मैंने उनसे यह निवेदन किया कि हिंदी-संसार के सुपरिचित ब्रह्मचारीजी 'रोशनी' अख़बार द्वारा बिहार-सरकार पर ज़ाहिर करें कि हिंदी और उर्दू-डिपार्टमेंट हटाकर सिर्फ़ हिंदुस्तानी-विभाग क़ायम किया जाय, और सरकारी विज्ञप्ति द्वारा प्रांत में हिंदी के स्थान में 'हिंदुस्तानी' का व्यवहार अनिवार्य कर दिया जाय, और बिहारप्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सामने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी आज वह हिंदी के बदले हिंदुस्तानी के व्यवहार का प्रस्ताव उपस्थित करें। तुंबाफेरी की भी कोई सीमा है! अंत में 'रोशनी' और 'होनहार' के विरुद्ध लाया गया प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकृत किया गया। ऐसा रुख़ साफ़ प्रकट करता है कि बिहार के हिंदी-प्रेमी हिंदुस्तानी-प्रचार के प्रयास का हृदय से स्वागत नहीं करते, परंतु नेताओं की चिंता उनके सच्चे भाव को भी दबा रही है। यह नैतिक कमज़ोरी का चिह्न है। सत्य नारायण-स्वरूप है, और सिद्धांत में मतभेद हुआ ही करता है। हमारे पूज्य नेता बिहार में ही नहीं, उसके बाहर भी हैं, किंतु उनका क्या दोष। बिहार का दुर्भाग्य है कि हिंदी के साथ यहाँ इसी प्रकार अन्याय हुआ करता है, और स्वार्थ किसी का विरोध करने नहीं देता। नेता-युग के पहले भी उर्दू-फ़ारसी के ग्रेजुएट और संस्कृत के पंडित बिहार के हिंदी-बोर्ड के भाग्य-विधाता बनते रहे हैं, और आज भी हिंदी-संबंधी प्रश्न अधिकांश में उन्हीं के द्वारा हल किए जाते हैं, जिन्होंने जीवन-भर उर्दू पढ़ी है। और, महान् आश्चर्य तो यह है कि वे जनता के सामने पूरे असंतोष के साथ हिंदी न समझने की अपनी अल्पज्ञता प्रकट करते हुए भी शैली को ही दोषी बताया करते हैं। इसके विरुद्ध कौन बोले, किसके सिर भूत सवार है। हाल में एक कमेटी क़ायम हुई। उसका नाम रक्खा गया 'हिंदुस्तानी-विरोधी कमेटी'। पर क्षमता की प्रेरणा कि वह नाम भी बदलना पड़ा, फिर नाम दिया गया 'हिंदी-हिंदुस्तानी-रक्षा-समिति'। जहाँ इस प्रकार के वीर हिंदी-रक्षक विद्यमान हैं, वहाँ यदि कृपानाथजी और ब्रह्मचारीजी ने 'रोशनी' का संपादन स्वीकार ही किया, तो क्या विस्मय! 'जिसका खाना, उसका गाना'। यह भी तो एक बात है। इसके सामने धर्मज्ञ भीष्म तक मौन रह गए थे। लेकिन सत्यतः उन महाशयों के खाने के दाँत और और दिखाने के और हैं, उनकी शैली कदापि 'रोशनी' या 'होनहार' की शैली नहीं, न उस शैली में वे कभी बोल या लिख सकते हैं। आज शिक्षा-विभाग हिंदी की स्वतंत्र गति को मान ले, फिर देखिए, 'रोशनी' के सुयोग्य हिंदी-लेखक किस हिंदुस्तानी का प्रयोग करने लग जाते हैं। इस कारण उनकी चेष्टा हिंदुस्तानी अपनाने का प्रमाण नहीं बन सकती। स्वतंत्र साहित्यिक यदि सचमुच हिंदी को अपने पुराने स्वरूप में जीवित रखना चाहते हैं, तो उन्हें बेतुकी रायों से अलग बिना किसी ननु-नच के हिंदी-रक्षा करनी चाहिए।

बिहार के जिन कुछ साहित्य-सेवियों ने प्रतिवाद-स्वरूप हिंदुस्तानी की सृष्टि के संबंध में बहुत कुछ लिखने का कष्ट उठाया है, उनके नाम तो पुस्तक पर अंकित हैं नहीं, पर वे कोई भी हों, यदि वे उसी तरह के साहित्यिक नहीं, जिस तरह के भंडार, खड्गविलास और बाल-शिक्षा-समिति की पुस्तकों पर कभी-कभी अकस्मात् प्रकट हो पड़ते हैं, तो उनका ध्यान भाषा की स्वाभाविक गति की ओर जाना चाहिए। वे भी, यदि मोल लिए गए साहित्य-सेवी नहीं हैं, अवश्य स्वीकार करेंगे कि हिंदुस्तानी न बोलचाल की भाषा हो सकती है, और न उपयोगी साहित्य की, फिर उससे न हिंदी को लाभ हो सकता है, न उर्दू को; राष्ट्रीय ऐक्य भी उससे संभव नहीं। ऐसी दशा में बिहार को हिंदी-सेवा में संलग्न करना उनका भी कर्तव्य है। प्रकाशक बिहार के या बाहर के, पाठ्य-पुस्तकों के लेखक यू० पी० के या पंजाब के, सभी स्वार्थ-वश, व्यापारिक दृष्टि सामने रखकर, सिद्धांत की भी हत्या किया करते हैं। तदनुकूल श्रीरामलोचनशरणजी भी स्वलाभ पर अवश्य ध्यान रखते और समय से लाभ उठाना चाहते ही हैं, किंतु औरों का दृष्टिकोण भी वैसा ही संकीर्ण नहीं होना चाहिए। बिहारीजी को उनकी सेवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का प्रशंसा-पत्र देने से ही हिंदी-हित नहीं हो सकता। वस्तुतः श्रीरामलोचनशरणजी ने अब तक हिंदी-पुस्तकों का प्रकाशन स्वार्थ-वश ही किया है, न सैनिक बनकर, न सेनापति की आज्ञा से। और, आज वह हिंदुस्तानी की सेवा में भी इसी कारण टूट पड़े हैं, और व्यय करते जा रहे हैं *।

एतदर्थ सेवा नाम से उनकी प्रशंसा में पुस्तक लिखकर हिंदुस्तानी-प्रचार को प्रशंसनीय बताना कहाँ तक उचित है, इसे कुछ साहित्य-सेवी ही समझें। मेरे विचार में तो यह भी उन्हीं की माया है, जिन्हें प्रशंसा-भूख से परे कहा गया है, किंतु ऐसे सुलभ यत्न का मूल्य ही क्या?

साफ़ बात है कि हिंदुस्तानी के प्रचारार्थ की गई चेष्टाएँ न तो स्तुत्य हैं, न अनुकरणीय, व्यवसाय के दृष्टिकोण से चाहे उनका जो भी मूल्य हो। हिंदुस्तानी की पुस्तकें लिखना या प्रकाशित करना कोई मौलिक सूझ नहीं। और, इस प्रयास के लिये नेताओं द्वारा प्राप्त बधाइयाँ भी बजवाई नहीं जा सकतीं। इस कथन पर संदेह करनेवाला २८ दिसंबर, १९३९ ई० के 'सर्च लाइट' में प्रकाशित छविनाथजी पांडेय की चिट्ठी पढ़ सकता है। बधाइयाँ तो आजकल एक अदना व्यक्ति भी पूज्य नेताओं से प्राप्त कर लिया करता है। यदि श्री-बिहारीजी-ऐसे चतुर व्यक्ति और निपुण व्यवसायी ने 'होनहार' और 'महमूद-सीरीज़' निकालकर हासिल कीं, तो क्या आश्चर्य* !

लेकिन हिंदी-सेवा का दावा रखते हुए भी जिस मौलिक प्रयोग का उन्होंने आश्रय लिया है, वह प्रशंसाओं के लिबास में आदर्श और सराहनीय नहीं स्वीकार किया जा सकता, उस पर भी इस दावे के साथ कि 'बिहारीजी' बिहार के इने-गिने हिंदी-लेखकों में से हैं, और उन्होंने हिंदी की अपूर्व

*Chhabinath Pandeya: "Regarding Babu Ram Lochan Saran's services to Hindi Language, I have no quarrel with Anugrah Babu. But it should also be remembered at the same time that his primary object has always been to earn money and the books in question are also illustrations of what he can do to serve this end." The Searchlight, December 28, 1939.

*Chhabinath Pandeya: "Anugrah Babu may give any number of certificates to Babu Ram Lochan Saran but their worth is not more than the certificate given to Pandit Ramnaresh Tripathi by Mahatma Gandhi for his commentary on the Ramayan. The true fact is that Babu Ram Lochan Saran has done the greatest harm to Hindi Language by these publications. I am confident that Anugrah Babu has not made a thorough study of these booklets as a critic. ..... Our allegation against Babu Ram Lochan Saran is very serious. We say that with a view to please the Mohammadan Minister he has knowingly spoiled the language and style of the Hindi Language." ..... It is a pity that our leaders are so soft-hearted as to grant certificates even to those who deserve censure. The Searchlight, December, 1939.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवा की है। यही सही, पर इस पर क़ायम रहकर वह राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिंद' नहीं बन सकते। 'भारतेंदु' का आदर्श ले सकते और राजा लक्ष्मण-सिंह की कोटि में उतर सकते हैं। हिंदुस्तानी नाम आज से वर्षों पहले भी प्रयोग में आया था, किंतु उनके द्वारा, जो हिंदी और उर्दू में भेद नहीं जानते थे, और उस युग में, जब दोनो की आज-सी दो पृथक्-पृथक् गतियाँ नहीं थीं। भिन्न-भिन्न रीडरों में भिन्न-भिन्न शैलियों के भी जो उदाहरण रहते हैं, वे भाषा-विकास-क्रम-ज्ञान के लिये, इसलिये नहीं कि आज भी ज़रूर ही लल्लूलालजी की या सितारेहिंद की हिंदी लिखाई जाय। इस कारण रीडरों से उनके उद्धरण की बात कृत्रिम हिंदुस्तानी की कोई सहायता नहीं करती। प्रांतीयता के मर्ज़ का शिकार बिहार का न होना ही ठीक है, वह तो स्वयं वर्षों से जातीयता की बीमारी से लाचार हो रहा है। अतः बिहारियों को मुनासिब है कि वे हिंदी-रक्षा के लिये तत्पर हो जायँ। उसकी शैली बदली भी जाय, तो सावधानी के साथ, ज़रूरत के मुताबिक़, परंपरा की मर्यादा रखते हुए। यहाँ के जो प्रसिद्ध लेखक और कवि हैं, सभी बिहारीजी ही नहीं, न उन्होंने अपनी ख्याति हिंदुस्तानी की सेवा से पाई है। उनके मस्तिष्क से कुसंस्कार के कीटाणुओं का दूर रहना ही उत्तम है। भूल और दोष सबों में मिल सकते हैं, और उनकी खोज के पीछे पागल बनने से सहज में गाली-गलौज के लिये काफ़ी मसाले भी हाथ लग सकते हैं। पर इससे क्या? बदलते समय के अनुसार तथा लेखक की योग्यता के अनुकूल शैली एवं प्रयोग में तो अंतर हुआ ही करता है, यह भाषा की एक विशेषता है। अच्छे और बुरे लेखक सभी प्रांतों में हैं, किंतु बुराई बुराई ही है, और अच्छाई अच्छाई; लोक-संग्रह सच्चाई, अच्छाई और गुण की ओर ही प्रधावित होता है। और, संस्था या समाज को लाभ भी उन्हीं से संभव है। अतः अनौचित्य-पूर्ण उत्तर-प्रत्युत्तर का अंत कर प्रत्येक हिंदी-भाषी को हिंदी-सेवा में लीन होना चाहिए। देखना चाहिए कि किसी अनुचित प्रयत्न से उसके साहित्यिक विकास को कोई क्षति न पहुँचे। यह तो हिंदी का दुर्भाग्य है कि उसकी उन्नति के मार्ग में तरह-तरह के अड़ंगे, उसकी ही जन्मभूमि में, उसके प्रेमियों द्वारा ही, खड़े किए जायँ। यह भी एक मनुष्य-लीला है, और मानव-स्वभाव का साथ स्वार्थ की धींगाधींगी छोड़ भी नहीं सकती। तथापि भाषाविद् अपनी मातृभाषा की सेवा में सर्वदा सतर्क रहा करते हैं, और ऐसी ही चेष्टाएँ करते हैं, जिनसे भाषा-भांडार की समुन्नति होती रहे। 'बिहार और हिंदुस्तानी' के साहित्य-सेवी ऐसी ही दृष्टि से हिंदी की मान-रक्षा को तत्पर होने का यत्न करेंगे, ऐसी आशा है। स्वार्थ को जहाँ जगह है, वह वहीं रहे, उससे आगे सार्वजनिक क्षेत्र में उससे भारी अहित हो सकता है। हिंदी और उर्दू, संस्कृत एवं फ़ारसी-अरबी के विद्यमान रहते ऐसी कोई भाषा हिंदुओं और मुसलमानों के लिये कदापि गढ़ी नहीं जा सकती, जिसे दोनो, कम पढ़े-लिखे भी, आसानी से बोल-लिख सकें। हाँ, एक आँधी चल रही है, वह भी उसी तरह निष्फल जायगी, जिस तरह हिंदू-मुसलमान-ऐक्य की शिक्षाएँ। बिहारी सज्जन मुँह खोलें। अवश्य, परंतु 'बिहारी और हिंदुस्तानी', ऐसी पुस्तकों की रचना और प्रचार के लिये नहीं, हिंदी-सम्मान के लिये, हिंदी-साहित्य-क्षेत्र के विस्तार के लिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदों का नया साहित्य

[श्रीयुत वासुदेवशरण अग्रवाल एम्० ए०, एल्-एल्० बी०]

वैदिक विज्ञान भारतीय संस्कृति का मस्तिष्क है। वेद के विना भारतीय सभ्यता केवल कबंध-मात्र है। एतद्देशीय समस्त विद्या के आचार्यों एवं ज्ञान-गुरुओं ने आर्ष पद्धति से प्राप्त होनेवाले प्रातिभ ज्ञान एवं ऋतंभरा प्रज्ञा में प्रस्फुरित होनेवाले विज्ञान की अक्षय निधि वेदों के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की है। भारतीय सभ्यता वेद-रूपी महान् अश्वत्थ की छत्र-च्छाया में फूली-फली है, इसमें तनिक भी अत्युक्ति नहीं। भगवान् वेदव्यास ने जो ज्ञान-मय प्रदीप (महाभारत) प्रज्वलित किया, उसके लिये भी स्नेह-सामग्री का स्रोत वेद ही थे। भगवान् मनु ने आर्य महाप्रजाओं की सनातनी मर्यादाओं को व्यवस्थित करते समय वेद को ही सब धर्मों का मूल बताया है।

वेदों की यह महती प्रतिष्ठा हमारी जाति के समस्त कार्य-कलापों में सदा से ओत-प्रोत रही है। इस श्रद्धा को लेकर हम आज भी अपने भावों को उदात्त कहते और समझते हैं।

आज पश्चिम से आनेवाले ज्ञानालोक ने हमें चुनौती दी, और इस बात की पड़ताल करने पर विवश किया कि क्या वेद-ज्ञान के प्रति यह श्रद्धात्मक भाव आज भी मान्य है। हमारी समाज के अनेक व्यक्ति वैदिक रहस्य-मय अर्थों के ठीक-ठीक प्रकाश में न आने से व्यामोह को प्राप्त हो रहे हैं। पश्चिमीय संस्कृतज्ञ पंडितों ने वैदिक साहित्य की ओर कुतूहल-पूर्ण दृष्टि से देखा। मानव-जाति के आदि ग्रंथ होने के नाते उनका अर्थ करने का भार उनके कंधों पर आया। उनमें से बहुसंख्यक विद्वान् इस ओर कृतप्रयत्न हुए, और यह परंपरा आज तक चली जाती है। भारतीय दृष्टि से वेदों के अगणित रहस्यों और मर्मस्थलों का व्याख्यान ब्राह्मणग्रंथों में है। स्थिति तो ऐसी है कि जिन्हें ब्राह्मणग्रंथों का अर्थ नहीं समझ पड़ा, उन्हें वेदों का भाव कभी स्पष्ट हो सकेगा, इसमें संदेह है। परंतु वेद और ब्राह्मणों के इस घनिष्ठ संबंध को अनादर की दृष्टि से देखने-वाले विद्वानों को ब्राह्मणग्रंथ और उन्हीं के समान रहस्यों के प्रतिपादक आरण्यकग्रंथ भी व्यर्थ का बखेड़ा जान पड़े। वेदों के नवीन अध्ययन की पश्चिमीय प्रणाली में जान डालने-वाले, जगत्-प्रसिद्ध विद्वान् मैक्समूलर ने आरंभ में ही इस उलझन को महसूस करके अपने संस्कृत-साहित्य के इतिहास के पृष्ठ ३८९ पर साहस के साथ निम्न-लिखित वाक्य लिखे—

"The Brahmanas represent no doubt a most interesting phase in the history of Indian mind, but judged by themselves as literary

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

productions, they are most disappointing. No one would have supposed that at so early a period, and in so primitive a state of society there could have risen up a literature which for pedantry and downright absurdity can hardly be matched anywhere. There is no lack of striking thoughts of bold expressions, of sound reasoning and curious traditions in these collections. But they are only like the fragments of a 'torso', like precious, gems set in brass and lead. The general character of these works is marked by shallow and insipid grandi-loquence, by priestly conceit and antiquarian pedantry. .....These works deserve to be studied as the physician studies 'the twaddle' of idiots and the raving of madmen."

सारांश यह कि मैक्समूलर की राय में ब्राह्मणग्रंथ पंडितों की गपाष्टक, ऊल-जलूल और पागलों की बकवाद हैं। ये वाक्य मैक्समूलर ने कुछ सोच-समझकर ही लिखे होंगे, अथवा ये उस परेशानी के उद्गार हैं, जिसमें ब्राह्मणग्रंथों को पढ़ने के बाद वह पड़ गया था। ब्राह्मणग्रंथों पर किया गया यह आक्षेप एक तरफ़ तो ऊपर जाकर वेदों तक की ख़बर लेता है, और दूसरी तरफ़ नीचे उतरकर आरण्यक और उपनिषद्-ग्रंथों तक, जो ब्राह्मण-साहित्य के ही अवांतर भाग हैं, लागू होता है। यदि मैक्समूलर की बात सच है, तो अर्वाचीन भारतवर्ष के बच्चे जितनी जल्दी अपने इस बोझ से छुट्टी पा जायँ, उतना ही मानव-जाति का हित है। हमारे देश में वेदों के जो विद्वान् हैं, उन्हें भी दबी ज़बान से मैक्समूलर की हाँ में हाँ मिलाते हुए ही देखा जाता है। अँगरेज़ी पढ़े-लिखे किसी विद्वान् ने अभी तक ब्राह्मणों के अर्थों को प्रकट करने की अपनी स्वतंत्र शैली का परिचय नहीं दिया। शेष पश्चिमीय विद्वानों के भाव तो मैक्समूलर के ही शरणापन्न हैं। श्रीयुत कीथ ने ऐतरेय और कौषीतकी के अँगरेज़ी-अनुवादों में तथा ऐगलिंग ने शतपथब्राह्मण के बृहत्काम अनुवाद में 'मक्षिकास्थाने मक्षिका'वाली परिपाटी का ही आश्रय लिया है। उन अर्थों में पदे-पदे हमारी बुद्धिगत उलझन सामने आती है।

हमने जब से वेदार्थ पर विचार करना प्रारंभ किया, यह विप्रतिपत्ति हमारे सामने बड़े कड़े रूप में उपस्थित हुई। क्या वस्तुतः मैक्समूलर का कथन सत्य है, अथवा क्या ब्राह्मणभाग के परोक्षप्रिय वाक्यों के पीछे सचमुच कोई युक्ति-संगत अर्थ छिपा हुआ है। इस उधेड़-बुन के समाधान की दिशा सर्वप्रथम हमें जयपुर के श्रीपं० मधुसूदनजी ओझा के व्याख्यानों में दिखाई दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित मधुसूदनजी का विशेष परिचय तो पृथक् वर्णन का विषय है, पर यह सच है कि उन्होंने अपूर्व प्रतिभा के उन्मीलित चक्षु से वेदार्थ के उपबृंहण में एक ऐसी सूक्ष्म गति प्राप्त की, जो कई सहस्र वर्षों से अश्रुतपूर्व थी। विश्व के प्रज्ञान की शक्ति बड़ी अप्रतिहत है। उसमें भी यदा-कदा बड़े आश्चर्यकारी बवंडर आया करते हैं। मनीषी और धीर मनुष्य ही विचार-जगत् के इन परिवर्तनों का साक्षात्कार कर सकते हैं। निदान मधुसूदनजी ने अपने जीवन में ज्ञानमय तप की साधना से वेद-पदार्थ का बहुत गूढ़ मनन किया, और विलक्षण साहित्यिक शक्ति का परिचय देकर लगभग सौ ग्रंथों की संस्कृत में रचना की। उनमें से केवल नासदीय सूक्त पर ही दस वादों—अहोरात्रवाद, सदसद्वाद, अंभोवाद, रजोवाद, व्योमवाद, अमृतमृत्युवाद आदि—का प्रतिपादन करनेवाले गंभीर ग्रंथ हैं। पंडित मधुसूदनजी के जीवन-काल में इनमें से कुछ ही छपकर जनता के सामने आ सके।

हमें तीन बार मधुसूदनजी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रत्येक बार हमने उन्हें ग्रंथ-प्रकाशन के संबंध में अत्यंत चिंतित देखा, और हमारे अंतःकरण को इससे मार्मिक कष्ट पहुँचा। अभी पिछले सितंबर-मास में मधुसूदनजी का शरीर-पात हो गया! उनके वे संस्कृत-ग्रंथ अप्रकाशित रह गए। अब भविष्य में कभी मनुष्य-जाति के सामने वे आएँगे, यह निश्चय नहीं कहा जा सकता।

यह दुःखदायिनी स्थिति सामने होते हुए भी एक प्रकाश की रेखा संतत हमारे मन में थी। वह यह कि पंडितजी के जीवन-काल में लगभग १५ वर्षों तक अथक परिश्रम करके जयपुर-निवासी पं० मोतीलालजी शास्त्री ने, वह तेजस्वी ज्ञान अपनी अगाध बुद्धि में आत्मसात् कर लिया। शास्त्रीजी ने मधुसूदनजी के चरणों में बैठकर जिस विलक्षण सफलता के साथ अपने को कृतविद्य बनाया, उसका परिचय विद्वानों को उनके लेख और व्याख्यान, दोनो से प्राप्त होता है। पं० मोतीलालजी शास्त्री के हृदय में मधुसूदनजी के वेद-ज्ञान का बहुत ही स्पृहणीय विस्तार हुआ है। हमारे राष्ट्र के साहित्यिकों की यदि आज कोई शिरोमणि परिषद् प्राचीनों की पांचाल-परिषद् के समान जीती-जागती होती, तो अवश्य ही उसके दिग्गज आचार्य जयपुर में घटित हुई इस साहित्यिक घटना का उचित मूल्य आँककर उसकी भेरी संपूर्ण देशों में बजा देते। परंतु जैसा यहाँ सब क्षेत्रों में हो रहा है, वैसे ही वास्तविक योग्यता को भी दिगंतव्यापी होने के लिये कुछ अड़चनों का पार करना आवश्यक है।

पं० मोतीलालजी अपने पूज्य आचार्य के कार्य को विश्रुत करने के लिये इस समय वैसे ही प्रयत्न में संलग्न हैं। ईश्वर-कृपा से उन्हें देश के विद्वान् और श्रेष्ठिजनों का ध्यान खींचने में कुछ सफलता मिल रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० मोतीलालजी ने अभी तक हिंदी-भाषा में, शतपथब्राह्मण के भाष्य के रूप में, १२०० पृष्ठों का साहित्य प्रकाशित कराया है। ईशोपनिषद् का विज्ञान भाष्य भी ८०० पृष्ठों में प्रकाशित हुआ है। इसके अतिरिक्त गीता-विज्ञान-भाष्य-भूमिका, मांडूक्योपनिषद् आदि मिलाकर ५०० पृष्ठ और छपे हैं। उन्होंने जिस विशाल साहित्य का निर्माण किया है, उसका अधिकांश अभी तक प्रकाशन की प्रतीक्षा कर रहा है—उदाहरणार्थ गीता-भाष्य के अंतरंग-परीक्षा-नामक द्वितीय खंड के १,००० पृष्ठ, जिसमें आत्मपरीक्षा, ब्रह्म-कर्म-परीक्षा, ज्ञान-योग-परीक्षा एवं कर्म-योग-परीक्षा सम्मिलित हैं, गीता के तृतीय खंड के १,५०० पृष्ठ, जिसमें भक्तियोग, बुद्धियोग अर्थात् प्रज्ञायोग एवं गीता-सार-परीक्षा सम्मिलित हैं, एवं गीताचार्य खंड के १,४०० पृष्ठ, जिसमें नौ प्रकार से कृष्ण-तत्त्व-निरुक्ति सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त गीता पर श्लोक-क्रमानुसार चौबीस वैदिक उपनिषदों का निर्वचन लगभग ३,००० पृष्ठों में संपन्न होगा। इसी प्रकार दसो उपनिषदों पर भी पृथक्-पृथक् भाष्य संपन्न हुए हैं, जो प्रकाशनापेक्ष हैं। इस प्रकार इस साहित्य का अतुलित विस्तार है। इस कार्य को प्रकाश में लाने के लिये पं० मोतीलालजी यथाशक्ति प्रयत्न कर रहे हैं। इसमें सफल होने के बाद साक्षात् वैदिक सूक्तों पर मार्मिक विवेचन रचने का कार्य भी अभी करना है। आशा है, पंडितजी को अपने इस कार्य में सफलता मिलेगी।

इस साहित्य की एक विशेषता यह है कि यह किसी मतवाद का समर्थन न करके प्रायः विशुद्ध विज्ञान और बुद्धिवाद या उत्कृष्ट प्रजावाद का पोषक है। इसी दृष्टि से हमारी विशेष सहानुभूति इसके साथ है। जिन वैदिक परिभाषाओं का रहस्योद्घाटन किन्हीं ग्रंथों में देखने में नहीं आता, उनका बुद्धिग्राह्य विवेचन इस साहित्य में मिलता है।

पंडितजी के द्वारा इन ग्रंथों में अब तक अनेक परिभाषाओं का निरूपण और विवेचन हो चुका है, उनमें से कुछ ये हैं—

वितानपाक आदि भेदों से यज्ञों का रहस्य-प्रतिपादन, यज्ञांतर्गत ग्रहस्तोत्र-शास्त्र का विचार, यज्ञाधिष्ठाता, मनोमय, प्राणमय, वाङ्मय आत्मा का निरूपण, अमृत, मृत्यु, प्रजापति, चंद्रसोममयी श्रद्धा, अन्न-प्राण-मन का संबंध, स्वयंभू, परमेष्ठी, सूर्य-चंद्रमा, पृथिवी, पंचाक्षर आत्माओं का विचार, सप्तऋषि, तेंतीस देव, मन, प्राण, वाक्, चक्षु, श्रोत्र पंच वैदिक विज्ञान-निरूपित इंद्रियाँ, विज्ञानात्मा (बुद्धि), प्रज्ञानात्मा (मन) का परिचय, स्थिति गति द्वारा ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र, अग्नि, सोम, इन पाँच अक्षरों का निरूपण, विष्णु, इंद्र की स्पर्धा, हृदयविद्या या केंद्रविद्या, षोड़शी पुरुष, व्याहृति-रहस्य, वषट्कार, भृगु, अंगिरा, अत्रि का निरूपण, पंचाग्निविद्या, कश्यप-स्वरूप, सविता-सावित्री-गायत्री-भेद, योषा वृषा प्राण, हिरण्यगर्भ प्रजापति, अग्नि, सोम, दशाक्षरा विराट,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्ताश्व सूर्य, छंद-स्वरूप, वाक्तत्त्व, सत्या आंभृणी सरस्वती, बृहती-अनुष्टुप् भेदवाली वाक् का निरूपण, लोक-गायत्री, ब्रह्म और सुब्रह्म या त्रयीवेद और अथर्व का रहस्य, देवयान, पितृयाण, यम-पाश, सौर पार्थिव प्राण, सूर्यमूला अदिति, पृथिवीमूला अदिति, नक्षत्रमूला अदिति, कूर्मप्राण, वराह, दधि, मधु, घृत या मधुपर्क विद्या, स्तोम-निरूपण, सैषात्रयीविद्या, तपति का रहस्य, एक सहस्र गौ-विवेचन, पुरोडाश-विज्ञान, प्राण-लक्षण, अध्यात्मयज्ञ, वैश्वानर, वामन, ध्रौव, सौम्य, ऐंद्र, विद्युत्, अत्ता, आद्य, कुमेरु, सुमेरु, वेद, सूत्र, नियति, इडा, ऊर्क्, भोग, ज्योति, गौ, आयु, रेतः, श्रद्धा, यश, वाक्, मायाबल, आभु, अंब, स्वाहा, स्वधा, पृष्ठविद्या, खं ब्रह्म, कं ब्रह्म, रं ब्रह्म, शं ब्रह्म, पंचज्योति, पुष्करपर्ण, सरस्वान, सरस्वती, मन, वाक्, अथर्वांगिरा, समुद्र, व्योम, शिववायु, यमवायु, मातरिश्वा, अश्वत्थ, शिपिविष्ट प्रजापति, काम, कर्म, शुक्र, महासुपर्ण, हिरण्य-अंड, स्वर्गवरुण, मित्र, वरुण, इंद्रियमन, श्वोवसीयस-मन, वृषाकपि, वैवस्वत, ऋत, सत्य, ऋषिप्राण, बालखिल्य आदि सहस्रों परिभाषाओं पर एक-दम नया प्रकाश डाला गया है। इस साहित्य को हम आपाततः वैदिक विज्ञान की गूढ़ और जटिल परिभाषाओं का एक महाकोष कह सकते हैं। इस प्रकार का विलक्षण विशदीकरण हमें अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं हुआ। वेद के अनुसंधान में निरत, सत्य के जिज्ञासु विद्वान् ही इस बात का महत्त्व जान सकते हैं कि पं० मोतीलालजी द्वारा इन प्राचीन शब्दों पर कितना मौलिक प्रकाश डाला गया है, और वह भी ब्राह्मणों के परंपरागत निरुक्त की रक्षा करते हुए। वैदिक तत्त्वज्ञान एक वस्त्र है, धागा नहीं। एक सूत्र को पकड़ते ही सारा पट सामने आ जाता है। विषय की यह निजी कठिनाई ही व्याख्याता की कठिनाई है। फिर भी शास्त्रीजी ने अपना कार्य बड़ी सफलता के साथ पूरा उतारा है। ब्राह्मण-ग्रंथों के जो निगम वाक्य हैं, उनका भी समीचीन विशदीकरण हमें प्राप्त होता है। प्रत्येक ग्रंथ पर उसके लेखक की प्रातिस्विक छाप रहा करती है, वह इन ग्रंथों में भी है, परंतु यह निश्चय है कि विद्वान् लेखक ने यथासंभव अपने आपको वैदिक परंपरागत विज्ञान के दिव्य मार्ग से स्खलित नहीं होने दिया है। वेद के विज्ञान-रूपी महासागर को पार करने के लिये शास्त्रीजी के ग्रंथों से काफ़ी सामग्री मिल सकती है। इस साहित्य का परिचय अँगरेज़ी के माध्यम द्वारा भी जितना शीघ्र संसार के सामने रक्खा जा सके, उत्तम होगा। इस कार्य का केंद्र शतपथब्राह्मण-विज्ञान-मंदिर, बालचंद्र-प्रेस, जयपर में स्थापित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकस्मात्

[श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०]

(१)

उस दिन—

खेत के किनारे, आम के एक घने वृक्ष की छाँह में, पत्तों का घर बनाकर मंगला ने कहा—"रघु ! देख, मेरा घर कितना सुंदर है !"

रघु ने देखा, देखकर हँसा, हँसकर मंगला को मुँह चिढ़ाते हुए बोला—"बड़ा सुंदर है—हुँः !"

मंगला कुछ उदास हो गई। मानिक उसकी ओर देख रहा था, उसे हँसी न आई। वह भी दुखी हो गया, और सिर नीचा करके मिट्टी का घिरौंदा बनाने लगा। मंगला ने कुछ ठहरकर पूछा—"मानिक ! क्या तुम्हें भी मेरा घर अच्छा नहीं लगा ?"

मानिक नीचे देखते-देखते बोला—"अरी, कहने दे रघु को। उसे समझ ही नहीं, निरा जंगली है। तेरा घर सौ में अच्छा, हज़ार में अच्छा, लाख में अच्छा, और देख इधर—यह घिरौंदा घर के आगे फुलवारी लगाने को बनाया है, समझी ?"

मंगला हर्ष से फूल उठी। रघु गुस्से से मानिक की ओर देखता हुआ उठ खड़ा हुआ। पैर पटककर उसने कहा—"जा-जा, बड़ा आया कहीं का शहरुआ ! मैं इससे अच्छे-अच्छे हज़ार घर बना सकता हूँ।"

मुँह फेरकर मंगला बोली—"दिखाया नहीं एक भी बनाकर कभी।"

जलती आग में मानो घी पड़ गया ! रघु ने कड़ककर जवाब दिया—"नौकर हूँ तेरे बाप का। मुझे क्या ग़रज़ पड़ी है, जो तेरा घर बनाऊँ।"

हवा के एक तेज़ झोंके ने अचानक मंगला का बनाया हुआ पत्तों का घर गिरा दिया। सब पत्ते हवा में इधर-उधर उड़ चले।

मंगला चिल्ला उठी—"अरे मेरा घर !" मानिक दौड़-दौड़कर उन उड़ते हुए पत्तों को इकट्ठा कर रहा था। और रघु—रघु खड़े-खड़े ठठाकर हँस रहा था।

(२)

दस बरस बीत गए।

विधाता के विधान के अनुसार मंगला का ब्याह रघु के साथ हो गया था। रघु के जीवन में इस तरह आकर क्या मंगला सुखी थी ? रघु सयाना होकर अब समझदार हो गया था। मंगला से अब वह लड़ता न था—उसे प्यार करता था। गाँव की छोटी-मोटी खेती से उसका गुज़र चलता और समय से खेलता हुआ वह चैन से अपने दिन बिताता था। और, उसका बचपन का साथी मानिक—मानिक ने अपने मित्र के सुख में अपना सुख समझकर जीवन की पहली चोट हँसते-हँसते सह लेने के बाद अपने को रघु के हाथों में अर्पित कर दिया था। अब रघु से उसकी लड़ाई न होती थी—दोनो में स्नेह का उफान था। और, दो हृदयों के लक्ष्य पर आनेवाली मंगला का जीवन मानिक के लिये और तथा रघु के लिये और था। 'भौजी'-जैसे प्यारे संबोधन से आनंद-विभोर हो जानेवाली वह स्नेहमयी आत्मा कुछ और ही थी। उनका वह छोटा-सा संसार इस संसार से अलग न होकर भी अलग था। इसे वे तीनो अच्छी तरह जानते थे—अनुभव करते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसंत-पंचमी के दिन—

साथ-साथ भोजन करते-करते मानिक बोला—"भौजी! आज आलू की तरकारी बड़ी स्वादिष्ट बनी है!"

मंगला ने कहा—"हाँ-हाँ, ऐसे ही हँसी उड़ाई जाती है भैया! नमक ज़्यादा होगा न?"

रघु बोल उठा—"मानिक! तुम तारीफ़ न किया करो, इन्हें बुरा लगता है।"

मंगला तिनककर कह उठी—"लड़ाई लगाने को कोई इनसे कह दे—सुन रहे हो भैया! इनकी बातें।"

मानिक ने उत्तर दिया—"कहने दो भौजी! इनकी बात सुनता ही कौन है।"

"न सुनो बाबा, तुमसे कौन माथा-पच्ची करे। दुलारे देवर की दुलारी भौजी! मुफ़्त में बदनाम हूँ मैं—ख़ामख़ाह।" रघु कह गया।

मंगला ने मुस्कराकर मानिक की थाली में दो पूरियाँ डालते हुए उसकी तरफ़ देखा। मानिक भी मुस्कराने लगा।

रघु की थाली में पूरियाँ डालते वक्त रघु ने मना कर दिया। मंगला बोली—"क्यों? अभी खाया हो क्या है?"

"खा चुका।" रघु उठकर हाथ-मुँह धो रहा था।

(३)

एक, दो, तीन, चार साल बीत चुके।

सूखा, अकाल और फिर अनावृष्टि! खाने तक का गाँव में ठिकाना न रहा। मवेशी और मनुष्य, सभी भूखों मरने लगे। और, वह छोटा-सा परिवार—रघु पर क़र्ज़ हो गया—ज़मींदार और महाजन, दोनो का। मानिक के खेत भी उसके हाथों से निकल गए, और निकल गए उसके माता-पिता सदा के लिये उसके संसार से! काल-चक्र का वह फेरा उसे संसार में अकेला छोड़ गया। केवल रघु और मंगला के साथ उसके जीवन की घड़ियाँ जैसे-तैसे कटने लगीं।

फिर एक दिन—

दोपहर के समय नदी के किनारे बैठे बैठे रघु ने उससे कहा—"मानिक!"

मानिक ने देखा—रघु की आँखों में आँसू भरे हुए थे। वह बोला—"तुम रोते हो भाई?"

अपनी फटी हुई धोती के छोर से आँखें पोंछते हुए रघु ने उत्तर दिया—"नहीं मानिक! मैं रोता नहीं हूँ।"

"बहाना न करो भाई! क्यों दुखी हो?"

"तुमसे एक बात कहनी थी, मानोगे?"

मानिक कुछ सोचने लगा। रघु ने फिर पूछा—"मानोगे मेरा कहना मानिक?"

मंत्र-मुग्ध-सा मानिक कह गया—"मानूँगा।"

"अच्छा देखो, घर में अब खाने का ठिकाना नहीं रहा। जो कुछ है भी, वह मंगला के काम आएगा। अकेली वह महीनों गुज़र कर सकेगी, मगर तीन प्राणियों के लिये वह पूरा न पड़ेगा।"

'फिर? क्या करना होगा भाई?"

"कल लंबरदार के आदमी कह रहे थे कि शहर में कपड़े की मिल है, वहाँ मज़दूरों की भरती हो रही है। मैं सोचता हूँ, हम दोनो चलकर वहीं नौकरी कर लें, फिर मंगला को भी बुला लेंगे कुछ दिनों बाद।"

"मानिक फिर किसी सोच में पड़ गया। वह बोला—"मगर भौजी जाने न देंगी।"

"कहने की ज़रूरत ही क्या है। वहाँ जाकर तुम उसे चिट्ठी लिख देना, सब ठीक हो जायगा। समझे?"

"लेकिन भौजी अकेली रहेंगी गाँव में?"

"रहना ही होगा मानिक! भगवान् उसकी भी सुध लेते रहेंगे···सोचो ज़रा, और इलाज ही क्या है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानिक चुप था। रघु ने अपने दिल पर क्या पत्थर रख लिया था ?

(४)

कपड़े की मिल में नौकरी करते हुए पंद्रह दिन बीत चुके थे।

शाम को—

रघु जब अपनी कोठरी में दाख़िल हुआ, तब उसे बड़े ज़ोर का बुख़ार चढ़ा था। मानिक ने उसके माथे पर हाथ रक्खा। रघु बोला—"पानी···"

मानिक ने पानी दिया। रघु चुपचाप बिछौने पर जा गिरा, और आँखें बंद कर लीं। मानिक उसके पास बैठा हुआ था।

आधी रात बीतने पर रघु ने आँखें खोलीं, और पुकारा—"मानिक ! मानिक !"

ऊँघता हुआ मानिक जल्दी से उठ बैठा, और रघु के माथे पर हाथ फेरते हुए बोला—"कैसा जी है भाई ?"

रघु ने धीरे से कहा—"अच्छा है···प्यास लगी है।"

मानिक ने पानी पिलाया। कुछ स्वस्थ होकर रघु ने कहा—"उसे एक चिट्ठी लिख दो।"

"अच्छा, कल लिख दूँगा।"

"कल ?"

"हाँ, ज़रूर लिख दूँगा कल। तुम सो जाओ अब।"

"सो जाऊँ ?"

"हाँ, सो जाओ अब, तबियत ठीक हो जायगी सबेरे तक।"

"नहीं मानिक ! तुम झूठ बोलते हो। मेरी तबियत अब ठीक न होगी। तुम उसे बुला लाओ, तुम चले जाओ सबेरे।"

"चला जाऊँ ? तुम्हें इस हालत में छोड़कर ?"

"हाँ मानिक ! बड़ा जस मानूँगा तुम्हारा। बोलो, जाओगे कल ?"

"जाऊँगा।"

रघु ने एक ठंडी साँस ली, और आँखें मीच लीं।

मानिक सोचने लगा—अब क्या करना चाहिए ? रघु को ऐसी हालत में बेसहारे छोड़ देना क्या ठीक होगा ? उसकी देख-भाल कौन करेगा ? कोई उसे एक घूँट पानी देनेवाला भी तो नहीं ! और मंगला—

मंगला के कोई समाचार अब तक नहीं मिले। कैसी होगी वह ?

उसे गाँव से ले आना ठीक होगा या नहीं ? अगर उसे न लाऊँगा, तो रघु अपने मन में क्या कहेगा ?

भगवान् न करे, कहीं रघु की तबियत ज़्यादा ख़राब हो गई, तो ? नहीं, रघु को छोड़कर जाना ठीक नहीं। मानिक ने निश्चय कर लिया।

(५)

पूरे बीस दिन और बीस रातें बीत चुकी थीं।

मानिक की सेवा और दवा-दारू की बदौलत रघु अच्छा होकर फिर नौकरी पर जाने लगा था, मगर वह ज़्यादातर चुप रहता। मानिक से भी कम बोलता।

उसी दिन—

मिल के हाज़िरी के दफ़्तर में टँगे हुए फ़ैक्टरी-ऐक्ट के चार्ट को वहीं का एक क्लर्क पढ़कर एक मज़दूर को सुना रहा था। रघु भी खड़ा-खड़ा, बीड़ी पीता हुआ, दरवाज़े के पास से सुन रहा था।

मज़दूर ने पूछा—"बाबू साहब ! अगर काम करते वक़्त चोट-चपेट आ जाय, और हम नाक़ाबिल होकर काम न कर पाएँ, तो ?"

क्लर्क ने जवाब दिया—"तो तुमको पाँच सौ रुपया हर्जाना मालिक की तरफ़ से मिलेगा।"

रघु सोचने लगा—पाँच सौ रुपया !

मज़दूर ने पूछा—"अच्छा बाबू ! अगर हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिल में काम करते हुए ऐसी चोट खा जायँ, जिससे मौत हो जाय, तो क्या मिलेगा ?"

क्लर्क बोला—"मौत हो जाने पर तुम्हारे बाल-बच्चों को मिल के मालिक दो हज़ार रुपया देंगे, बशर्ते, काम करते वक़्त ऐसी दुर्घटना हुई हो, तो।"

रघु सोचने लगा—"दो हज़ार रुपए! यह तो बहुत बड़ी रक़म है।"

इतने में जमादार ने बाहर से आकर उसे घूर-कर देखा, और कहा—"क्यों जी, तुम क्या कर रहे हो यहाँ ?"

रघु कुछ सकपकाकर बोला—"कुछ नहीं, ज़रा बीड़ी पी रहा था।"

"बड़े लाट साहब के बच्चे आए—बीड़ी पी रहे थे। जाओ यहाँ से—काम करो—चलो।"

रघु ने जमादार की तरफ़ देखा, और चुपचाप भीतर चला गया। बिनाई की मशीन पर मानिक काम कर रहा था। रघु भी वहीं जाकर काम करने लगा। मानिक ने पूछा—"कहाँ गए थे ?"

रघु कुछ न बोला।

मानिक ने फिर उसकी तरफ़ देखा। रघु के माथे पर पसीना आ रहा था। मानिक ने कहा—"कहाँ गए थे ?"

रघु ने कुछ जवाब न दिया। वह सोच रहा था—दो हज़ार रुपए!

(६)

अगले दिन—

रघु ने कहा—"मानिक! चले जाओ गाँव, उसे ले आओ—मेरा जी बड़ा घबरा रहा है कई दिनों से।"

मानिक बोला—"चला जाऊँगा। मगर वहाँ महाजन लोग घेर लेंगे, तब क्या करूँगा ?"

रघु उठा, उठकर कोठरी का कोना टटोला, और मिट्टी हटाकर कुछ निकाला। एक मैले कपड़े की छोटी-सी पोटली उसने मानिक के हाथ पर खोल दी। पाँच रुपए और छ या सात आने पैसे थे।

मानिक ने कहा—"इतने से क्या होगा रघु भाई ? यह तो किराए-भर को ही पूरा पड़ेगा।"

रघु बोला—"फिर ? जानते हो, यही तो हम दोनो की कमाई में बचा है।"

"तो अभी कुछ दिन और ठहर जाओ, ज़्यादा रुपए होने पर—"

बात काटकर रघु ने कहा—"ज़्यादा रुपए होने पर!"

वह किसी गहरे सोच में पड़ गया। कुछ ठहर-कर बोला—"और, अगर तुम्हें ज़्यादा रुपए मिल जायँ, तो जाओगे ?"

"जाऊँगा।"

"ज़रूर चले जाओगे ? मेरी क़सम खाकर कहो।"

"तुम्हारी क़सम, मैं तुरंत चला जाऊँगा, मगर रुपए मिलेंगे कैसे ?"

रघु ने अपने सीने पर हाथ मारकर कहा—"मैं दूँगा रुपए—तुम्हें तो मिल जायँगे। बस।"

"तो मैं चला जाऊँगा ज़रूर।"

"हाँ, चले जाना भैया! तुम्हें जाना ही पड़ेगा। सब महाजनों को देना होगा।"

रघु चुप होकर कुछ सोचने लगा। मानिक ने कहा—"चलो, दाल बन गई है, अब खाना खा लो।"

रघु ने कहा—"अच्छा चलो, आज हम-तुम एक ही थाली में खायँगे।"

"जैसे छोटे पर खाया करते थे ?"

"हाँ, वैसे ही—बिलकुल वैसे ही।"

दोनो साथ-साथ भोजन करने बैठे। रघु की आँखों में जाने क्यों आँसू आ गए। मानिक ने देख लिया। वह बोल उठा—"अजीब आदमी हो, जब देखो, तब रोना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रघु ने जवाब दिया—"आज मन चाहता है रोने को, इसलिये रोता हूँ। मानिक! तुमने मेरे लिये बड़े दुख उठाए हैं।"

मानिक कुछ न समझ पाया।

(७)

शाम को साढ़े पाँच बजे—

काम करते-करते रघु ने कहा—"मानिक! ज़रा पानी पिलाओगे?"

मानिक पानी लेने चला गया। रघु ने इधर-उधर देखा—सभी मज़दूर और कर्मचारी अपने काम में व्यस्त थे। उसने जल्दी से आगे बढ़कर मशीन की दाहनी ओर घूमता हुआ लोहे का चाक पकड़ लिया। छूते ही वह उसमें लिपट गया, और घूमते हुए चाक ने उसे उठाकर क़रीब बीस फ़ीट की दूरी पर, दूसरे बड़े चाक के ऊपर, फेंक दिया। रघु की हड्डी-हड्डी चूर हो चुकी थी।

सभी काम करनेवाले सेकेंड-भर में होनेवाली इस दुर्घटना को देखकर आश्चर्य में पड़ गए। मशीनें बंद हुईं। सब काम करनेवालों और मज़दूरों की भीड़ लग गई।

मानिक जब पानी लेकर लौटा, तो उसने देखा—रघु का टुकड़े-टुकड़े कटा हुआ शरीर ज़मीन पर पड़ा था!

एक चीख़ उसके मुँह से निकली, और वह बेहोश होकर उस लाश पर गिर पड़ा।

सैकड़ों आँखें उसकी ओर देख रही थीं।

सैकड़ों मुँह यही कह रहे थे—"बेचारा ग़रीब मज़दूर!"

जीते-जी किसी ने उस पर तरस न खाया था, और मरने के बाद—

❀ ❀ ❀

एक अपराधी की भाँति गाँव में पहुँचकर मानिक मंगला के आगे चुपचाप खड़ा था।

मंगला ने पूछा—"क्यों? ख़ैर तो है भैया?"

जवाब में अपने कुरते की जेब से हरे-हरे बीस नोट निकालकर मानिक ने मंगला के हाथ में रख दिए।

मंगला का हृदय काँप उठा—घबराकर वह बोली—"और वह कहाँ हैं?"

मानिक का गला भर आया। उसने धीरे से कहा—"अकस्मात्—"

मानिक धम से उसी जगह गिर पड़ा! मंगला ठगी-सी चुपचाप उसके पास बैठ गई। उसके सिर से ओढ़नी खिसककर गिर रही थी। हाथ की मुट्ठी खुली थी, और वे हरे-हरे काग़ज़ के टुकड़े हवा में उड़-उड़कर इधर-उधर बिखर रहे थे।

बच्चों को प्रति दिन ज़रा सी
हकीम तुलसी प्रसाद अग्रवाल की
असली-मीठी
रजिस्टर्ड
बाल जीवन घुट्टी
चटा देने से
बच्चे कभी बीमार नहीं होंगे
और उनके प्रत्येक रोग दूर होकर
निर्बल बच्चे बलवान बन जावेंगे
सब जगह बिकती है
मुफ़्त लो
१० प्रतिष्ठित लोगों के नाम व पूरे पते भेजने पर स्वास्थ्य साधन पुस्तक मुफ़्त भेजेंगे
पता: बालजीवन कार्यालय अलीगढ़ यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भू-स्वर्ग स्विट्ज़रलैंड

(ज़ूरिक Zurich)

[श्रीसूर्यनारायण व्यास]

मैं ने अपनी योरप-यात्रा में आस्ट्रिया, स्विट्ज़रलैंड और इटली के बहुत-से प्रदेशों की सैर मोटर द्वारा की थी। इटली से स्विट्ज़रलैंड और आस्ट्रिया से स्विट्ज़रलैंड की यात्राएँ तो चिरस्मरणीय बनी रहेंगी।

आस्ट्रिया के मनोहर एवं कलाविदों के नगर सेल्सबर्ग से विदा होकर, दोपहर के लंच के समय, मैंने एक छोटे-से गाँव में आकर विश्रांति ली। यह झील और पर्वत पर बसा हुआ, सघन लता-कुंजोंवाला, तिकोना ग्राम था। यह एक प्रकार से आस्ट्रिया का 'कटि-तट' ही था।

आकाश को छूनेवाले पर्वतों से उतरकर भू-स्तर से कुछ ऊपर उठे हुए शैल-शिशु-समुदायों (टीलों-पहाड़ियों) के बीच हमारी कार लुका-छिपी करती हुई सावधानी से बढ़ रही थी। यह छोटी-छोटी, किंतु हरित परिधानमयी गिरि-मालिका भी बहुत नयन-रमणीय थी। कार की गति-विधि भी बड़ी सुहावनी मालूम हो रही थी। कभी वह एक पहाड़ी के सिर पर सैर कर नीचे सरपट भाग आती थी, तो कभी उसे एकाध टीले की प्रदक्षिणा लगाकर सम भू-भाग पर उतर आना पड़ता था। ऊपर खड़े हुए विशाल, समुन्नत शैल अपने नन्हे-नन्हे शिशुओं—टीलों—के साथ मोटर का यह खिलवाड़ देख रहे थे।

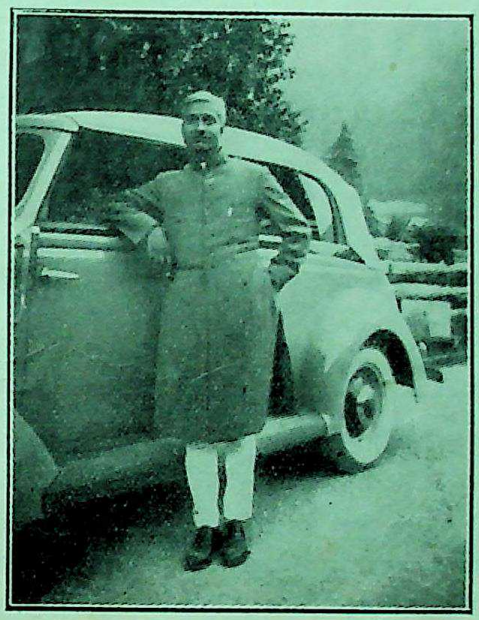

श्रीसूर्यनारायण व्यास

[इटली से स्विट्ज़रलैंड के पथ पर मोटर से यात्रा करते हुए।]

रश्मिमाली का यौवन ढल चुका था। सांध्य अरुणिमा ने गगन पर अपनी आभा फैलाई, और हमारी कार ने स्विट्ज़रलैंड की प्रवेश-सीमा पर आकर विश्रांति ली। यहाँ से फिर चढ़ाई शुरू होनेवाली थी। मार्ग भी संकुचित हो गया था। इस सीमांत पर हमें नए राष्ट्र में प्रवेश पाने की स्वीकृति लेना आवश्यक था। एक ओर स्वीस-सैनिक संगीन लिए खड़ा था, और सामने का लौह-द्वार भी बंद था।

गाड़ी रुकते ही सैनिक ने निकट आकर स्मितवदन और विनय के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ हमसे पासपोर्ट की माँग की। पासपोर्ट लेकर वह ऑफ़िस में गया, और १०-१५ मिनट में वापस आकर हमें पासपोर्ट (मुहर लगे हुए) लौटा दिए। सामने का दरवाज़ा खोलकर फिर स्मित मुद्रा से 'गुडबॉय' की।

दरवाज़े से बाहर निकलते ही सर्वप्रथम जो ग्राम हमें दिखाई दिया, वह यद्यपि बहुत छोटा था, परंतु प्रकृति ने उसे इतनी सुंदरता से सजाया था कि मन को बरबस आकर्षित कर लेता था। अब आस्ट्रिया के रूखे-सूखे पर्वत नहीं रहे थे, स्विड्झरलैंड की प्रकृति-सुषमा का पद-पद पर दर्शन हो रहा था। जिस ओर हम मुड़े, उसी ओर सुंदर, सुसज्जित उद्यान और छोटे-बड़े, कला-पूर्ण भवनों का ही दृश्य सामने आता था।

ग्राम से बाहर होते ही मार्ग के दोनो ओर अधिकांश भूमि पर अंगूर की लताओं के मंडप दिखाई देने लगे।

कहीं-कहीं जलाशय और हरे-भरे खेत उन पर्वतों के कटि-प्रदेश में, लताओं से घिरे हुए, बड़े सुहावने लग रहे थे। मार्ग के छोटे-छोटे ग्रामों और पहाड़ियों को लाँघती हुई हमारी कार फिर एक समुन्नत पर्वत-शिखर पर चढ़ने को कटिबद्ध हुई। दोनो ओर पर्वत की चोटियाँ गगन स्पर्श करना चाहती थीं। हमारा रास्ता इनके बीच होकर जा रहा था, इसलिये दोनो ओर के अन्य दृश्य नेत्र से ओझल हो गए थे। अभी तक जिन आँखों ने विस्तृत प्रांगण में स्वैर विहार कर प्रकृति का फैला हुआ लावण्य निहारा था, वे अब रूखे पत्थरों से टकराकर संकुचित दायरे में अटपटापन अनुभव कर रही थीं। सांध्य वेला, पहाड़ों के बीच का संकुचित पथ, ऊँचे-ऊँचे पेड़ और ख़ंदकें, बड़ा भयावह दृश्य उपस्थित हो गया था। कार भी समस्त शक्ति संचय करके इस दुर्धर्ष मार्ग को काट रही थी। वह जितनी ऊपर जा रही थी, अँधेरा बढ़ रहा था। जी घबराने लगा कि कब यह खुले आकाश और स्वैर समीर की सैर करेगी। डेढ़ घंटे का यह अनवरत क्रम इस तिमिराच्छन्न मार्ग में भय का संचार कर रहा था। किंतु ज्यों ही कार

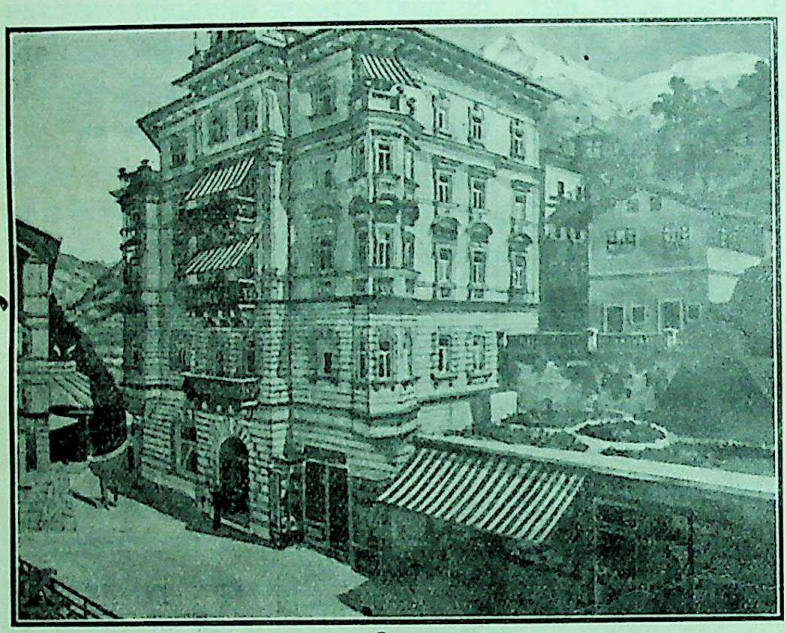

बडगे स्टाइन (आस्ट्रिया) का होटल

[यह पहाड़ पर बना हुआ सुंदर होटल है। लेखक ने यहीं निवास किया था।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस भयावह, दुर्गम मार्ग को पार कर गिरि-शृंग पर पहुँची, और वहाँ का विस्मयकारी दृश्य सामने आया, त्यों ही उस भीषणता का आतंक स्मृति-पट से क्षण-मात्र में विलीन हो गया। इस बार हम वास्तव में सुरलोक पहुँच गए थे।

कई हज़ार फ़ीट उँचाईवाले इस नयन-रम्य गिरि-शिखर पर अनेक रम्य निवास-भवन, उद्यान और विस्तृत, बिजली की चकाचौंध में आइने की तरह चमकनेवाली सड़कें, फ़ुटपाँथ पर लता-मंडप और सुंदर, विविध सुमनों से अलंकृत वृक्षों की क़तारें, रंग-बिरंगे पुष्पों की कलामय क्यारियाँ और हज़ारों अलग-अलग रंग और क़िस्मों की बिजली की बत्तियाँ रात में भी दिन का भुलावा दे रही थीं। उस समय रिमझिम-रिमझिम रस-फुहियाँ बरस रही थीं। वृक्ष-लताओं के वर्षा और विद्युत्प्रकाश से सद्यःस्नात पत्र-पुष्प नयनों का रंजन कर रहे थे। हरे रंग की चिकनी और धुली हुई सड़क, जो इन शोभाओं तथा कार को प्रतिबिंबित कर रही थी, इतना सुंदर एवं मोहक दृश्य उपस्थित कर रही थी कि वर्णन करते नहीं बनता। अब तो अनेक मार्गों में ट्राम और बसों का भी आवागमन दिखाई दिया। कॉफ़े, रेस्टारेंट आदि की चहल-पहल, संगीत की मधुर ध्वनि भी किसी-किसी भवन से समीर के साथ बहकर चली आ रही थी।

मार्ग पर्वत के मध्य में ही अब तक जा रहा था, और १०-५ मील के बाद पर्वत के एक छोर पर हो गया था। अब तक मध्यवर्ती मार्ग होने के कारण पर्वत के निम्न भाग की कल्पना नहीं हो सकती थी, किंतु एक छोर पर आते ही इस गगन-चुंबी पर्वत के निम्न स्तर से बहनेवाली स्वीस की निर्मल-सलिला झील का अपूर्व दृश्य सामने आ गया। हम जिस पर्वत के शृंग पर

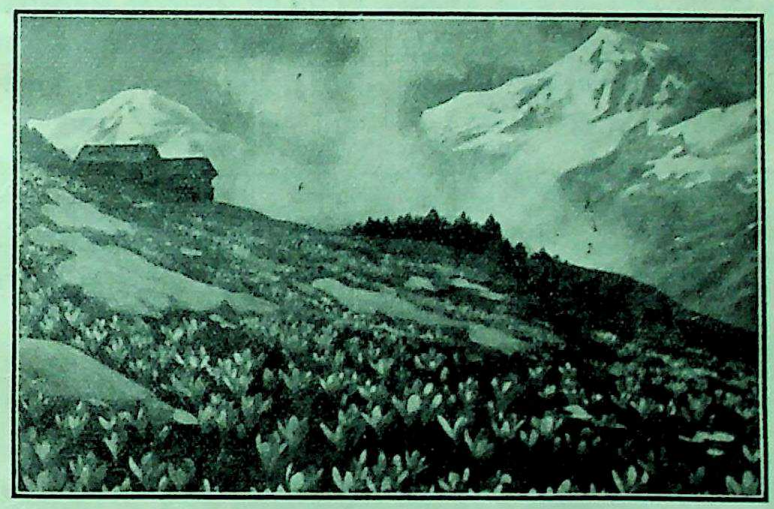

पर्वतीय सौंदर्य

[यह देश प्रकृतिक दृश्यों के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ चारो तरफ़ पहाड़ और बीच में बर्फ़ से भरा हुआ तालाब है। जैसे-जैसे धूप पड़ती है, बर्फ़ गलती जाती है। यह जगह ख़ासकर खेल-कूद के लिये है। यहाँ जाड़ों में बाहर से दस-बारह हज़ार आदमी आते हैं।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बसे हुए नगर से मार्ग-क्रमण कर रहे थे, ठीक उसी तरह झील के उस पार भी उन्नत गिरि-शृंग-माला लगातार कई मील तक चली गई थी। उन पर्वत-मालाओं पर भी वही प्रकृति की अभिरामता का स्वर्गीय दृश्य उपस्थित था। लक्षावधि बिजलियाँ, सुंदर, घनी हरियाली और विविध रंग के बड़े-छोटे भवन बने हुए थे। यह हिम-मंडित, मुकुट-धारिणी आल्प्स-पर्वत-मालिका हरित वनराजि में ऊपर से नीचे तक सहस्रों वास-भवनों को अपने हृदय-प्रदेश में नगीनों की तरह जड़े हुए है। और, रात में तो आकाश का समस्त नक्षत्र-समूह मानो इनसे होड़ लगाने इस जगह उतर आता है।

प्रकृति-रमणी अपने वैभवोन्माद से पूर्ण यौवन का निखरा हुआ लावण्य निर्मल-धवल-सलिला, विस्तृत झील के आइने में निहारा करती है। अपने मोहक रूप और सौंदर्य की सुषमा देखने के लिये ही प्रकृति-रानी ने तटिनी के तीर पर अपना सौभाग्य-शृंगार-सहित वास्तव्य किया है। और, उस झील के प्रतिबिंब का तो कहना ही क्या ?

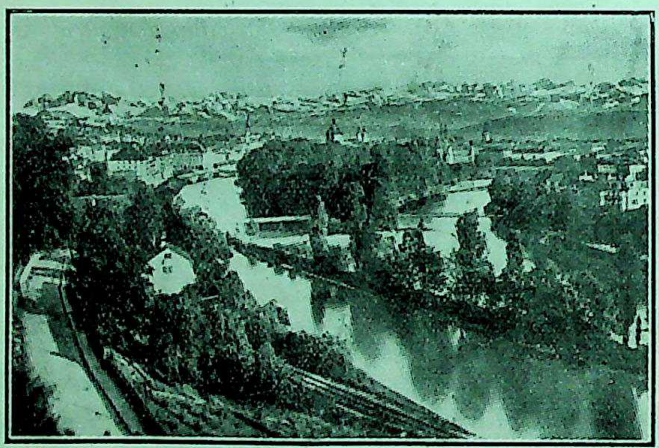

झूरिक की प्राकृतिक सुषमा

आकाश के समस्त नक्षत्र और चंद्र को झील अपने हृदय में बिठला लेती है, और इधर सजी हुई सौध-रमणियों का चित्र भी हृदय पर अंकित कर लेती है, तब उन मंद-मंद लहरों पर एक अजीब-सा दृश्य बन जाता है। मैं अपना आपा भूलकर अतृप्त नयनों से वह दृश्य निहारता हुआ एक विचित्र आनंद-लोक में विचरण कर रहा था।

पृथ्वी पर यदि स्वर्गीय सुषमा के दर्शन करना हो, तो मानव को इस सौध-रमणी का स्वर्गीय आतिथ्य ग्रहण करने एक बार अवश्य आना चाहिए।

मील की संख्या दिखलानेवाले कई पत्थर पीछे छूट गए। हमारी कार उसी तरल वेग से अपने उद्दिष्ट मार्ग पर बढ़ी चली जा रही थी। मैं आत्म-विभोर हो, सुधि भूला-सा, कभी नील गगन में जटित नक्षत्रों की कमनीय कांति और कभी पर्वतीय वनराजि से झाँकती हुई मानव-वास की शोभा, गिरजाघरों पर प्रकाश का स्नान कराती हुई लक्ष-लक्ष रंग-बिरंगी विद्युल्लताओं की आभा तथा निर्मल स्रोतस्विनी की प्रतिबिंबमयी नगरी निहारता हुआ, पुनश्च मार्ग में आनेवाले ग्रामों-नगरों की चकाचौंध, उद्यान-पुष्प-पल्लवों की सुभग योजनाओं को अपलक नयनों से पान करता हुआ बढ़ा चला जा रहा था। यह शोभा लेखनी से अंकित करने का विषय नहीं, हृदय से अनुभव करने की वस्तु है।

इस प्रकार उस स्वर्गीय सुषमा की झाँकी लेता हुआ अपने मन-ही-मन आत्मतृप्ति का अनुभव कर रात को साढ़े दस बजे स्विड्झरलैंड के सुंदर नगर झूरिक में आ पहुँचा। यहाँ के सर्वश्रेष्ठ और कला-वैभव-पूर्ण होटल बोरोलॅक में आकर हमने विश्रांति ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज मुझे न तो भूख थी, न प्यास। मेरे हृदय पर आज इस भू-स्वर्ग के अद्भुत एवं मनोहारी दृश्य की अमिट छाप लगी हुई थी। उसे बार-बार अपने नयनों के समक्ष लाते हुए निद्रा की गोद में पड़ गया।

इसमें संदेह नहीं कि यह प्रकृति-रम्य स्विट्ज़रलैंड समस्त योरप का हृदय-प्रदेश है। ठीक मध्य योरप में होने के कारण यद्यपि हृदय की उपमा वास्तविक है, तथापि वैसे सृष्टि-सौंदर्य के कारण भी वह योरप में हृदय का स्थान प्राप्त किए हुए है। यह प्रदेश योरप में सबसे छोटा है। समस्त स्वीस की जन-संख्या ४० लाख के लगभग है—भारत के गोरखपुर-ज़िले या ग्वालियर-स्टेट के बराबर।

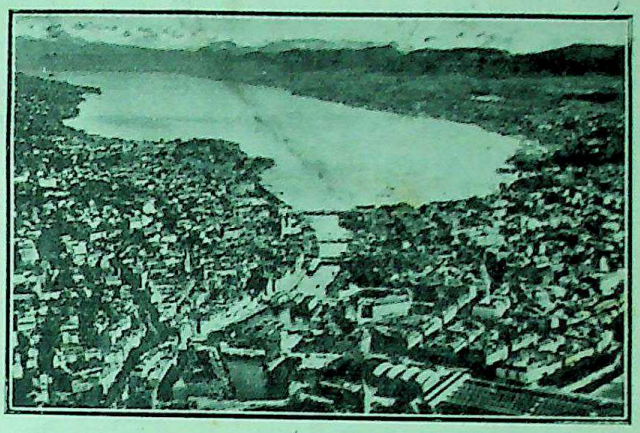

झूरिक का एक विहंगम दृश्य

झूरिक की एक सुंदर सड़क

स्विट्ज़रलैंड एकदम पहाड़ियों और पर्वतों पर ही बसा हुआ राष्ट्र है, जहाँ व्यवसाय के कोई साधन प्राप्त नहीं हो सकते। इसलिये जगत् स्विट्ज़रलैंड को 'होटलों का देश' कहकर संबोधित करता है। यह स्वाभाविक भी है। वास्तव में देखा जाय, तो एक स्विट्ज़रलैंड शहरों में बसा हुआ है, जहाँ केवल यात्रियों के आवागमन जारी रहने से होटलों का रोज़गार बना रहता है। निरंतर स-धन यात्रिगण, शांति की आराधना के लिये, स्वीस-प्रकृति के अंचल में आकर बसेरा करते हैं। हज़ारों जर्मन, फ्रेंच और इँगलिश जन केवल पहाड़ियों में बने हुए एकांत, रम्य होटलों में अपना वास्तव्य बना लेते हैं, इसलिये स्वीस-वासियों की प्रमुख उपजीविका का साधन होटल हो, तो आश्चर्य ही क्या? इन होटलों की साधन-पूर्ति के लिये दूसरे स्विट्ज़रलैंड की आवश्यकता अनुभूत होती है। वह स्विट्ज़रलैंड ग्रामों, पर्वत के एकांत स्थलों और झील के कटि-तटों पर बसा हुआ है, जहाँ ज़रा-ज़रा-से हरित टीलों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुविधा पाकर उन पर कुछ खाद्य पदार्थों का उत्पादन करता, एवं गाएँ और बकरियाँ रखकर दूध और मक्खन उत्पन्न करता है। इसी प्रकार पर्वत की ढालू भूमि पर, अंगूर के लता-कुंजों में, बसकर इन्हीं वस्तुओं द्वारा उपजीविका-उपार्जन करने के लिये नगर में बसे हुए धनिक स्वीस में आवागमन रखते हैं। इसीलिये मैंने इस देश को दो भागों में विभाजित करने की कल्पना की है। स्वीस-यात्री इस बात को प्रत्यक्ष कर सकते हैं कि नगर के स्वीस कितने संपन्न, सभ्य, सुथरे और अप-टु-डेट हैं, और ग्रामीण स्वीस, जो नगर के ओर-छोर पर ही बसे हैं, कितने पुरातन, सीधे-सादे, साधन-विहीन और ग़रीब-से मालूम होते हैं। इस ग्रामवासी स्वीस-विभाग की भी भारत के कृषि-जीवियों की-सी दशा है।

कुछ समय तक ये कृषि करते हैं, और कुछ समय इन्हें भी ख़ाली बिताना पड़ता है। जब बर्फ़ पड़ने लगती है, तब उसे हटाने और अपने पशुओं को सँभालने के सिवा इन्हें कोई काम रहता ही नहीं।

अधिकांश ग्रामीण और शहराती लोग स्वीस-होटलों में सर्विस कर लेते हैं। यह ज़रूर है कि समस्त स्वीस बहुत विनम्र, स्वस्थ, सुंदर, मृदु-भाषी तथा निरंतर परिश्रमशील होते हैं। प्रकृति की निरंतर समाराधना में उनका स्वास्थ्य भी सुथरा रहता है, और सुंदरता तो उनके लिये ईश्वरीय देन है। वैसे ही सारा स्वीस योरप का स्वर्ग-खंड है, और आल्प्स-पर्वत-माला तथा झील के तट पर होने के कारण उसकी शोभा सोने में सुगंध की तरह हो गई है, तथापि स्वीस-जनता में सौंदर्यानुराग और कला-प्रियता भी है। उन्होंने स्वीस की कृत्रिम शोभा सँवारने में भी इतना श्रम किया है कि निःसंदेह वह पृथ्वी का सुरपुर बन गया है। स्वीस-जनता बहुभाषा-प्रवीण है। वैसे उनकी राष्ट्र-भाषा स्वीस है, परंतु उत्तर-प्रदेश के अधिकांश स्वीस लोगों की भाषा जर्मन है, और दक्षिण-प्रदेश की जनता फ्रेंच अधिक प्रयुक्त करती है। सीमांतवर्ती जनता उस सीमांत-प्रदेश के राष्ट्र की भाषा भी व्यवहृत करती है। जैसे लुगानो आदि के लोग इटैलियन भाषा उपयोग में लाते हैं। स्वीस-भाषा अधिकांश में जर्मन से मिलती-जुलती है। फिर स्वीस लोग निरंतर प्रवासियों के संपर्क में आते रहते हैं, इसलिये वे इँगलिश आदि भी ख़ूब जानते हैं। पर्वतवासिनी जनता में प्रकृति से अनुराग स्वाभाविक होता है। इसलिये वे स्वतंत्रता-प्रिय भी उतने ही होते हैं। वे कुसुम-कोमल हैं, तो वज्र-कठोर भी हो सकते हैं। वे जितने सुंदर, सु-गठित-शरीर और आरक्त-कपोल हैं, उतने ही साहस के कार्यों में भी तप्त-लोह-से हैं। उनका बर्फ़ पर स्केटिंग वग़ैरा कार्य जान की बाज़ी लगा देने का ही है। स्वीस-राष्ट्र दुनिया में बेजोड़ राष्ट्र है। उसकी शासन-शैली—जिसे 'फ़ेडरल-रिपब्लिक' कहते हैं—आदर्श मानी जाती है। जनता को राज्य-कार्य में भाग लेने का अवसर प्राप्त है। उसकी निर्वाचन-प्रणाली की यह विशेषता है कि एक-न-एक समय नागरिकों को शासन-तंत्र में सहयोग देने का अवसर प्राप्त हो ही जाता है, और प्रत्येक प्रांतीय विभाग को अपने आंतरिक मामलों में पूरी स्वतंत्रता उपलब्ध है। इसलिये योरप में स्वीस-शासन-तंत्र को आदर्श माना जाता है। १५वीं शताब्दि से, जब अंतिम बार आस्ट्रिया के शासन के पंजे से यह देश स्वाधीन हुआ, लगातार अन्य राष्ट्रों ने भी इसकी सुंदरता अपहरण न करने की दृष्टि से इसे सर्वथा 'तटस्थ' मानकर इसे अस्पर्श ही रख छोड़ा है। युद्धों की पाशविकता से बचकर यह प्रदेश प्रकृति की निरंतर कृपा का पात्र बना रहा और अपना सौंदर्य अक्षुण्ण रख सका है।

प्रकृति के मौलिक स्वरूप के समाराधक होने के कारण स्वीसों में जितनी साहसिकता, वीरता, श्रम-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीलता, सुंदरता और विनय-शालीनता है, उतनी ही धार्मिक भीरुता भी। प्रत्येक ग्राम और नगर गिरजाघरों और आराधना के समय घंटा-रव के साथ मानव-समूहों से भरा रहता है। भोजन और आतिथ्य में तो स्वीस जनता का स्थान श्रेष्ठ है। इस दृष्टि से इन्हें भारत के गुर्जर-प्रदेश के साथ रक्खा जा सकता है। पौष्टिक भोजन, दूध, फल और मक्खन तथा दूध से बने हुए पदार्थों में इस राष्ट्र की समानता दूसरा योरपीय राष्ट्र शायद ही कर सके। परंतु होटलों की महँगी भी वैसी ही है। यही एकमात्र इनका व्यवसाय होने के कारण इस क्षणिक आय पर ही अनेक स्वीसों की जीवन निर्भर रहता है। वस्तुओं के उत्पादन और उनके आवागमन की कठिनाई की हम कल्पना करें, तो यह महँगी भी हमारी समझ में आ सकती है। स्वीस लोगों की दूसरी वस्तु, जो समस्त भू-मंडल में प्रसिद्ध है, घड़ी है। घड़ी का रोज़गार भी यहाँ बहुत बड़ा होता है। लूसर्न, लुगानो, जिनेवा आदि में अनेक कारख़ानें हैं, जहाँ विपुल परिमाण में घड़ियाँ बनती हैं, और दुनिया में 'स्वीस-मेड' के नाम से विख्यात हैं।

स्विट्ज़रलैंड की राजधानी बर्न है, परंतु यह झूरिक की तरह बड़ा नहीं। झूरिक इस देश का भव्य और विशाल नगर है। झील के तट पर सुंदरता के साथ बसा हुआ। सामने पर्वत-मालिका हिम का शुभ्राभरण धारण कर लेती है, तब इस नगरी की सुषमा बहुत नयन-मनोहर हो जाती है। यहाँ के सुप्रसिद्ध स्थानों में बोरोलक और डोल्डर-होटल अपनी जोड़ नहीं रखते। बोरोलक नगर के अंदर, झील के सम्मुख है, और डोल्डर पहाड़ी के शृंग पर स्थित है। दोनों की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं, तथापि बोरोलक ऐसा सुसज्जित और कला-वैभव से परिपूर्ण है कि बड़े-बड़े राज्य-श्री-संपन्न सज्जनों को भी चकित कर देता है!

इस नगर में सभी साधन सुलभ हैं, व्यवसाय विविध प्रकार के हैं, और विद्या-वैभव-साधन-संपन्न जनों का आवास अधिक है। यहाँ का नेशनल म्यूज़ियम, ओरियंटलिस्टों की संस्था, पुरा-

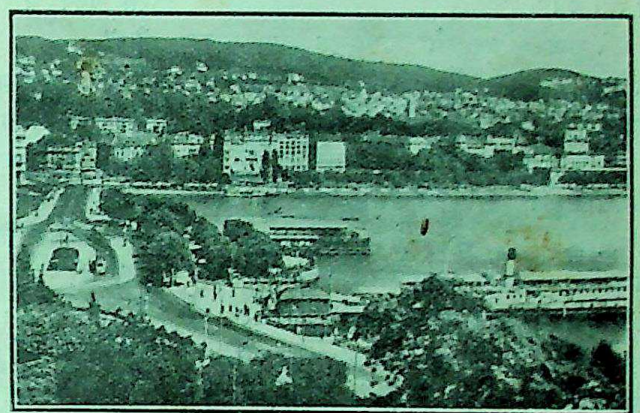

झील के तटवर्ती झूरिक का एक मनोरम दृश्य

तत्त्व-विभाग और नेशनल आर्ट-गैलरी तो अवश्य दर्शनीय हैं। एक रोज़ हम सेंट्रल लाइब्रेरी चले गए। यहाँ कई भाषा के पत्र और संस्कृत-इँगलिश की पुस्तकों का समूह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। यहाँ एक 'ऑब्ज़र्वेटरी' भी है, जिसमें अभिनव नक्षत्र और क्रांति-निरीक्षण के विशाल यंत्र लगे हुए हैं। संध्या-समय, ऑफ़िस बंद हो जाने के कारण, कोई दर्शक महाशय यहाँ नहीं थे।

झूरिक में चहल-पहल ख़ूब बनी रहती है। अनेक होटलों में डांस के अनेक प्रोग्राम होते रहते हैं। डांस की शिक्षा देने के कई स्कूल भी चलते हैं। हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होटल के पास ही एक सज्जन युवतियों को नृत्य-कला सिखलाया करते थे। उनसे परिचय हो गया। प्रौढ़ व्यक्ति थे। उन्हें भारत की नृत्य-कला से विशेष अनुराग था। उन दिनों (१४।८।३७) मिस मेनका के भारतीय कला-नृत्य के प्रोग्राम झूरिक में हो रहे थे। इस विषय पर चर्चा करते हुए वह कहने लगे—"अंग-भंगिमा के विषय में मैं कुछ ज़्यादा नहीं समझ सका। हाँ, मुझे आनंद ज़रूर आ रहा था, और मैं यह भी समझ रहा था कि कुछ भावाभिव्यक्ति इन अंग-प्रत्यंगों की कला-पूर्ण स्थिति से हो रही है।"

मैंने कहा—"यह तो आप एक बार भारत आएँ, और प्राचीन मूर्तियाँ तथा अजंता-एलोरा और पांडवों की गुफाएँ देखें, तो सहज ही आपकी समझ में आ जायगा। इस कला में यद्यपि मेनका तथा उदयशंकर में पाश्चात्य सम्मिश्रण हुआ हमें दिखाई देता है, परंतु इनकी आधार-भित्ति तो भारत की पुरातन कला ही है। आपने शिव-तांडव-नृत्य या नृत्य-विषयक साहित्य देखा हो, तो इसका आनंद आपको अधिक आएगा। जब मेनका, अजूरी, सिमकी या उदयशंकर कोई प्राचीन कला-पूर्ण नृत्य का अभिनय करते हैं, तब वे हमारे सामने उस काल की एक मूर्ति उपस्थित कर देते हैं। सैकड़ों - हज़ारों वर्ष पूर्व की हमारी गौरव-पूर्ण संस्कृति का चित्र स्मृति-पट पर अंकित कर देते हैं, और प्रत्यक्ष प्रतिकृति भी।"

मेरी बातों से वह अध्यापक महाशय बहुत संतुष्ट हुए, और कई पुस्तकों तथा इन गुफा-चित्रों के प्राप्ति-स्थान नोट कर लिए। मुझे भी उनसे कुछ पूछ लेने की इच्छा हुई। "लेकिन मैं यह न समझ सका कि आप तो पुरुष हैं, नृत्य-कला की दीक्षा प्रायः स्त्री-जाति को देते हैं, जिसमें उस जाति का अधिकार होना ही चाहिए। क्या स्त्रियाँ स्त्री-जाति को यह नहीं बतला सकतीं ?" मैंने हँसकर पूछ लिया।

वह हँसे, और कहने लगे—"आप ठीक कहते हैं। पर एक बात हमारे यहाँ यह है कि योरपीय नृत्य में स्त्री तो पुरुष की केवल सहयोगिनी है, प्रमुख नर्तिका नहीं होती। पुरुष को ताल आदि का ध्यान रखना पड़ता है, वह तो पुरुष के संकेत-मात्र पर शरीर हिलाती और अंग-निक्षेप करती है। अतएव स्त्री के नर्तन-कौशल का बहुत-सा भार पुरुष पर अवलंबित है। यही कारण है, स्त्री पुरुष से ही यह विशेषता जान सकती है।"

फिर एक रोज़ उन्होंने मुझे अपने साथ ले जाकर ट्रेनिंग देते समय सकारण अपना मत समझाया। तब मैं समझ सका कि इनका नृत्य पुरुष-विशिष्ट है। हमारे नृत्य में स्त्री-प्रधानता है। इसलिये यह कला योरप में जितनी पुरुष-प्रिय है, उतनी भारत में नहीं हो सकती। यहाँ अब भी नृत्य में स्त्री ही विशिष्ट है। शिक्षा लेने के लिये आई हुई अनेक युवतियाँ मुझे बड़े विस्मय से देख रही थीं। अंत में वे अपना भाव दबा न सकीं, और अपने शिक्षक से मेरा परिचय पूछ बैठीं। फिर एक-एक करके मुझसे 'शेक हैंड' करती गईं। बड़े विनीत और आदर-भाव से उन्होंने मुझसे अपने हस्ताक्षर देने की प्रार्थना की। मैंने उनसे कहा कि मैं हस्ताक्षर अपनी देश-भाषा में करूँगा, आप मेरा नाम चाहे इँगलिश में लिख लें। उन्हें मेरी यह शर्त मंज़ूर हो गई। वह शिक्षक महाशय तो मेरे पीछे पड़ गए कि अवश्य ही भारतीय अभिनय-शास्त्र पर आपका अधिकार है। मुझे आप कुछ बतलाइए। मैंने मुश्किल से उनसे पीछा छुड़ाया। अब उन्हीं के साथ मैं कम्फीनो, कोर्सो (म्यूज़िक हॉल) और अपेरा देखने गया। झूरिक की युनिवर्सिटी भी देखने की चीज़ है। वैसे तो टेकनिकल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाईस्कूल, टोन हॉल (कन्सर्ट), प्ले-होसे, बोटानिकल गार्डन, केथोड्रल, सेंट-पेटर्स चर्च, फ्रेंच और इँगलिश चर्च, एक्सचेंज-ऑफ़िस, बैंक, सिटी हॉल, टाउन ऐडमिनिस्ट्रेशन और स्टेट-ऐडमिनिस्ट्रेशन के ऑफ़िसेज़, ब्रिटिश कौंसिल, डच, फ्रेंच, जर्मन, इटालियन, अमेरिकन आदि राज-दूतों के आवास-भवन भी बड़े सुंदर हैं। छोटे होटलों में मुझे नेपचुन-होटल बहुत पसंद आया। वहाँ की शान-शौकत और सुविधाएँ, सभी सुंदर और किराया कम। गलियों की यहाँ कमी नहीं। विस्तृत राजमार्ग और उद्यानों के साथ ही गलियाँ भी नगर की पुरातनता का स्मरण कराती हैं। स्विट्ज़रलैंड के विषय में मैं पहले ही बतला आया हूँ कि यहाँ कृत्रिम सुंदरता की ज़रूरत नहीं। प्रकृति की ईश्वरीय देन से ही नर-नारी सहज-सुंदर, सुगठित और लाल सुर्ख़ बने हुए हैं। यहाँ की स्त्रियाँ चेहरे पर पाउडर पोतकर, लिपस्टिक लगाकर अपनी स्वाभाविक सुंदरता विकृत नहीं करतीं। वे ईश्वर-प्रदत्त शोभा-भार से ही विनत-वदना बनी रहती हैं। यहाँ और जगहों की तरह चारित्रिक कमज़ोरी भी कम ही मानी जाती है।

स्विट्ज़रलैंड अधिकतर प्रवासी जनों का आरामगाह या रैन-बसेरा है, इसलिये यहाँ सिक्कों का बड़ा झमेला रहता है। हर देश के व्यक्ति अपने सिक्कों का परिवर्तन कराने में प्रायः उलझे रहते हैं। 'स्वीस-फ्रेंक' में उसे किए बिना यहाँ गति नहीं।

यहाँ के रत्नाभरणों की सुरुचि और कला-पूर्ण रचना अनेक युवतियों के कंठ में देखकर मेरी इच्छा हुई कि अपनी दोनो बालिकाओं और अनुज-वधुओं के लिये भी कुछ संस्मरणीय समझकर ले लिया जाय।

मैं अपने साथी के साथ झूरिक के एक सुप्रसिद्ध रत्न-विक्रेता की दूकान पर गया। यह नगर के मध्य में अवस्थित है। दूकान अडोरा के नाम से प्रसिद्ध है। मैं अपने स्वभावानुसार एक कुरसी

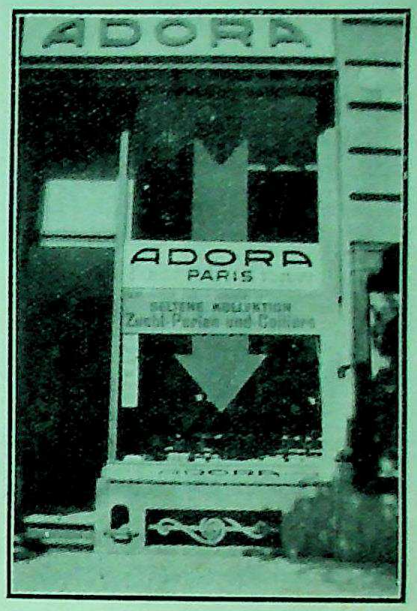

झूरिक की अडोरा-शॉप

पर मौन बैठ गया। मेरे साथी महाशय ने, जो व्यवसाय में, भाव-ताव में कुशल हैं, दूकान की मालकिन से बातें शुरू कीं। क्षण-भर में मालकिन और उनकी सुंदर 'सेल्स गर्ल' ने रत्नों की बहुमूल्य कला-कृतियाँ मेरे सामने रख दीं। मैं किसे पसंद करूँ, किसे न करूँ? असमंजस में पड़ गया। वह मालकिन बड़ी स्मित-मधुर-भाषिणी और व्यवसाय-चतुरा थी। वह मेरी स्थिति ताड़ गई कि यह अनेकों में से अपने मन की वस्तु ढूँढ़ने की उलझन में हैं। उसने अपने 'सजेशन' देना शुरू किए। परंतु मेरे मना कर देने पर कि आप यह मुझ पर ही छोड़ दें कि मैं क्या पसंद करता हूँ, यह मेरी रुचि का विषय है, वह हँसकर, क्षमा माँग अलग जा खड़ी हुई। हमने चार वस्तुएँ प्लेटिनम की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

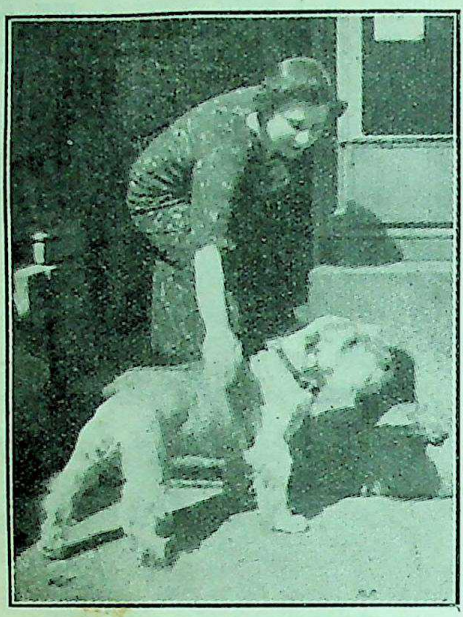

श्रीमती लिलि पेंटर

[आप अडोरा-शॉप की स्वामिनी हैं ।]

बनी हुई हीरों की पसंद की, और उस श्रीमती से क़ीमत बतलाने को कहा । उसने हमारी सुरुचि की दाद दी, और अनाप-सनाप क़ीमत कह दी । मैं मुस्काया, पर मेरे साथी ने उन्हें बनाना शुरू किया । अब बातें बढ़ गई थीं, किंतु उन विक्रेताओं की सभ्यता, विनयशीलता देखने ही योग्य थी । भाव-ताव में मेरे साथी ने उन्हें ज़रा तंग कर डाला । इधर मैं मौन रहकर उनके विवाद का मज़ा ले रहा था । वह मालकिन बार-बार मेरे पास आकर समझाती और कहती कि हमें इसमें अब सुविधा नहीं । वह समझ रही थी कि यह वस्तु ले रहा है, और भला आदमी है, पर यह साथी महाशय नाहक़ तंग कर रहे हैं । बीच-बीच में वह अपना 'भारतीयता का ज्ञान' भी बतलाती जाती थी । उसने एक बात बड़ी उत्सुकता से पूछी—"क्या यह सच है कि बादशाह जॉर्ज षष्ठ के राज्यारोहणोत्सव पर बैल मारे जाने के भय से अनेक हिंदुस्तानी लोगों ने विरोध किया था ?" मुझे उसके इस कुतूहल पर आश्चर्य हुआ । वह अपने हाथ में मारवाड़ी ढंग की पीतल की ठप्पेदार चौड़ी चूड़ी (बंगड़ी) पहने हुए थी । उसने बड़े गर्व से कहा—"यह देखो, मुझे भी भारतीय वस्तु से अनुराग है ।" मैं उसके इस अनुराग पर हँस पड़ा । वह थोड़ी झेंपी, और मेरे हँसने का कारण पूछने लगी । मैंने बतलाया—"यह भारत के अज्ञान-काल की निशानी भले ही हो, या ग्रामीण, असंस्कृत नारी की नक़ल, परंतु सुधरे हुए भारत का यह प्रतीक नहीं ।" उसे अपने ग्रामीणालंकार-रुचि पर लज्जा आ गई ।

अडोरा की सुंदर सेल्स गर्ल

एक ओर उसके पति महाशय तथा मि० वाल्टर पेंटर खड़े थे । वह अब तक तटस्थ-से थे, और अपनी पत्नी मिसेज़ लिलि पेंटर के साथ सौदा तय करने में सहयोग देने लगे । मेरे साथी से तंग आ जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर अंततः हमने समझौता कर लिया, और वे चार वस्तुएँ ख़रीद लीं। एक-डेढ़ घंटे की इस मुलाक़ात

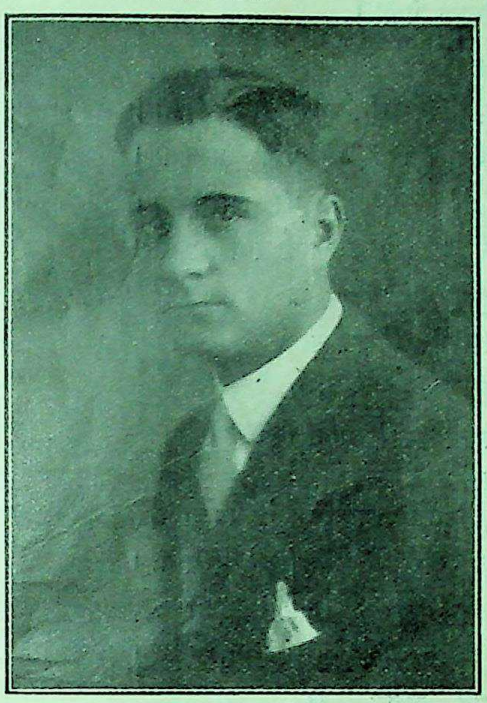

मि० वाल्टर पेंटर

[आप अडोरा शॉप के स्वामी हैं।]

में उन पेंटर-दंपति ने विनयशीलता का, व्यवहार-चातुर्य का ख़ूब परिचय दिया। अब हमारे पास इँगलिश पौंड थे, उन्हें स्वीस-फ्रैंक में देना था। उनके यहाँ एक यंत्र लगा हुआ था। तुरंत उन्होंने स्वीस-फ्रैंक के कितने इँगलिश पौंड चाहिए, यह हिसाब बातों में ही, यंत्र द्वारा, जमा लिया। हमने भी काग़ज़-पेंसिल लेकर मग़ज़-पच्ची की, ठीक बैठा। इन यंत्रों से योरप के किसी भी देश के सिक्के का एक्सचेंज (परिवर्तन) सहज ही ज्ञात हो जाता है। अगर स्विट्ज़रलैंड में यह न हो, तो बड़ी कठिनाई पड़े। 'अडोरा'-शॉप से इतनी देर में गाढ़ा परिचय हो गया। अब हमने उस दंपति से सस्नेह विदा ली।

इसी प्रकार स्वीस-घड़ियों के विख्यात व्यवसायी ई० गुबलिन की दूकान से कुछ बहुमूल्य, सुंदर घड़ियाँ ख़रीदीं। इनका सौजन्य और सचाई भी हमें बहुत पसंद आई। भारत में आकर मैंने घड़ी के विषय में इनसे कुछ और काम भी लिया। उस दूकान की प्रतिष्ठा के अनुरूप ही उनका व्यवहार प्रशंसनीय रहा।

ज़ूरिक के अतिरिक्त स्विट्ज़रलैंड के अन्यान्य प्रसिद्ध, सुंदर-सुरम्य नगर-ग्रामों की सैर की। लूसर्न, बर्न, लुगानो, जिनेवा, लोजान, इंटर लॉकेन आदि स्थानों की सौंदर्य-सृष्टि का निरीक्षण कर आत्मतृप्ति लाभ की। यथावसर हम इन स्थानों का भी वर्णन करेंगे।

अशक्ति का कट्टर दुश्मन

* आतंक-निग्रह गोलियाँ *

शरीर में खरा जोश पैदा करके कैसा भी अशक्त पुरुष हो, उसे नौजवान बना देती हैं। ३२ गोलियों की डिब्बी की क़ीमत १)

आतंक-निग्रह-औषधालय
जामनगर, काठियावाड़

लखनऊ-एजेंटः—
मेसर्स इंदरचंद ऐंड कंपनी, चौक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमी रावण

[श्रीयुत हरिकृष्ण 'प्रेमी']

(१)

क्या कहती हो—"भोले रावण, मेरी दुनिया में मत आओ;
रूप-शिखा की ज्वाला में जलकर मत उजले पंख जलाओ।
मेरी यह उजली दुनिया है भरी प्रेमियों की लाशों से;
मैंने कितने हृदय जला डाले अपनी जलती श्वासों से।

है लंकेश, तुम्हें दुनिया के
आँगन में रण-वाद्य बजाना;
मेरी सीमा में बँधकर तुम
भूलो नहीं विजय का गाना।"

(२)

ओ दीवानी दीप-शिखा, क्या तुमने मुझको है पहचाना?
अब आई है दया तुम्हें, जब राख हो चुका है परवाना।
हाड़-मांस का जो रावण था, वह कब का निश्शेष हुआ है;
बचा भावनाओं का पक्षी, ज्वाला जिसका देश हुआ है।

मुझे डराओ मत जलने से,
मैं तो चुगता हूँ अंगारे;
हमें न खा ले, इस भय से हैं
नभ में भागे फिरते तारे।

(३)

फूल चुराकर देवि, तुम्हारे मैंने पहनी थी वरमाला;
जला रखी है मैंने उसके फूलों में अब अक्षय ज्वाला।
उन फूलों की चकाचौंध से जग की आँखें हैं चकराती;
पाए रत्न कहाँ से इतने, दुनिया नहीं समझने पाती।

तुम क्या जानो, सीते! मेरे
प्राणों में जो बल है आया;
वह अनजान तुम्हारी स्मिति ने
मेरे अंतर में बरसाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४)

देवि, तुम्हारी स्मृति ने मेरी शय्या पर जो फूल बिछाए,
उनको अमर कर लिया मैंने, वे न कभी मुरझाने पाए।
फूलों के शूलों पर सोए बिना न नींद मुझे आती है;
जिसको जगत नींद कहता है, मुझको जागृति बन जाती है।

मैं जागृति में स्वप्न देखता,
इसीलिये जगना है सोना;
मैं मिट-मिटकर बनता रहता,
इसीलिये मिटना है होना।

(५)

मुझे पिलाओ इतनी मदिरा, मुझमें 'अहम्' न रहने पावे;
रावण का अस्तित्व तुम्हारी आँखों के नभ में खो जावे।
ज्यादा पीकर मर जाऊँगा, ऐसी करो नहीं आशंका;
सीता बिना शून्य है मेरी देखो, यह सोने की लंका!

त्रेता के रावण को तुमने
बाणों का शिकार कर डाला;
पर कलियुग के रावण को तुम
पहनाओगी शुचि वरमाला।

(६)

धनुष-यज्ञ के पहले ही मैं यह मनुहार लिए आया हूँ;
प्रिये, राम का सत्य नहीं, रावण का प्यार लिए आया हूँ।
जिस रावण ने तुम्हें पास पाकर भी छुआ नहीं जीवन-भर;
क्यों कलंक की छाप लगी है ऐसे उच्च-हृदय मानव पर?

प्राण, तुम्हारे चरणों पर मैं
दस-दस शीश झुकाने आया;
तुम काटे जाओ, मैं उनको
एक - एक कटवाने आया।

(७)

शिव का धनुष वस्तु ही क्या है, अखिल विश्व को तोड़-फोड़ दूँ,
पर यह संभव नहीं कि बरबस किसी हृदय का तार जोड़ दूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसके लिये कीर्ति है प्यारी, जिसको प्रेम अकिंचन रज-कण,
उसी राम से तुम चाहो, तो फिर से आज मिलाओ चितवन!

स्वयंवरा, तुम कह दो फिर से
आज होड़ से मैं हट जाऊँ;
पर डर है, मैं पंचवटी से
तुमको फिर न उठाकर लाऊँ।

(८)

यही खेल चल रहा युगों से राम और रावण - सीता का;
राम व्यर्थ कहता रहता है, सीता को क्यों तुमने ताका।
मेरी छाती बहुत बड़ी है, वह अपनी सेना ले आवे;
सीता को जो पा न सका है, वह गरीब जीकर क्या पावे?

मेरा मरना प्रेम - साधना
की सीढ़ी है, तुम क्या जानो;
मैं उससे फिर युद्ध करूँगा,
सीते, तुम यह निश्चय जानो।

(९)

मैंने वेद पढ़े हैं सारे, मैंने तत्त्व विश्व का जाना;
पाकर भी अमरत्व मुझे प्रिय, प्रेम-युद्ध में जान गँवाना।
जो इतिहास लिखें, वे लिख लें, रावण का आनन काला था;
प्रेमी तो यह समझ सकेंगे, उसके उर में उजियाला था।

चढ़ा दिया छवि पर निज जीवन,
उसका जीवन क्या छोटा था;
छुआ नहीं जिसने सीता को
उसमें बोलो, क्या खोटा था?

(१०)

शिव का धनुष उठा सकती थी, उस अबला में कितना बल था?
रेखा लाँघ आ गई भिक्षा देने, यही प्रेम का बल था।
भूल गई अपने बल को, जो बैठ गई पुष्पक में जाकर;
यही साधना का जादू है, भूले वाल्मीकि बन ऋषिवर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनकपुरी में, पंचवटी में
या अशोक-वन में, हे सीते!
वाल्मीकि ऋषि के आश्रम में
व्यर्थ तुम्हारे दिन हैं बीते।

(११)

जगत प्रेमियों को युग-युग से रावण की संज्ञा देता है;
यश-अपयश से दूर सिंधु में प्रेमी द्वीप बसा लेता है।
आवे महावीर भी चाहे, और जला जावे यह लंका;
किंतु यहाँ तो सदा बजेगा देवि, प्रेम की जय का डंका।
मुझको असुर कहेगी दुनिया,
रामायण वह नित्य रचेगी;
किंतु प्रेम की छवि-ज्वाला से
जलने से वह नहीं बचेगी।

स्त्रियों को कौन-सा ग्रंथ सुखी कर सकता है?

चिकित्सा-चंद्रोदय पाँचवाँ भाग

पृष्ठ-संख्या ६७०, मूल्य २॥), डाक-महसूल १)

इस ग्रंथ में स्त्रियों के सभी रोग जैसे प्रदर-रोग, सोम-रोग, प्रसूता के रोग आदि पर विस्तार से लिखा गया है।

बाँझ बनानेवाले और पुत्रवती करनेवाले नुसखे विस्तार से लिखे गए हैं। आजकल इसी ग्रंथ के नुसखे, जो चार पैसे में बन सकते हैं, लोग दो-दो और चार-चार रुपए में बेचकर मालामाल हो रहे हैं। आप इस पुस्तक को खरीदकर खुद ही क्यों नहीं घर में नुसखे तैयार कर लेते? इसी भाग को देखकर अनेकों नारियाँ 'वैद्या' बन बैठी हैं।

पता—हरिदास ऐंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक शिक्षा-प्रणाली का प्रभाव

[श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा (अष्ठाना) विशारद, बी० ए०, एल्० टी०]

आधुनिक शिक्षा-प्रणाली का प्रभाव स्त्रियों के स्वास्थ्य पर बहुत बुरा पड़ता है। इस संबंध में बड़े-बड़े डॉक्टरों और शरीर-तत्त्व-विशारदों ने बहुत जाँच-पड़ताल की है। उनका कहना है, लड़कियों को लड़कों के समान शिक्षा देना हानिकारक है, और विशेषकर कॉलेज की उच्च शिक्षा तो उनके स्वास्थ्य के लिये अत्यंत ही घातक है। वे कहते हैं, स्त्रियों का शारीरिक गठन पुरुषों के शरीर की अपेक्षा भिन्न होता है, और किशोरावस्था में अधिक मानसिक परिश्रम करना उनके स्वास्थ्य को ले डूबता है। स्त्री और पुरुष में उक्त भेद ख़ासकर मासिक धर्म के कारण है। अधिकांश शरीर-शास्त्र-वेत्ताओं का मत है कि मासिक धर्म के प्रारंभिक तीन दिनों में स्त्रियों की कार्य-शक्ति अधिक क्षीण हो जाती है। इसीलिये उस समय किसी प्रकार का भी परिश्रम करने से उनके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। अस्तु।

जो नवयुवतियाँ स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ती हैं, उन्हें प्रायः परीक्षाओं में भी सम्मिलित होना पड़ता है, और उस दशा में वे इन नियमों का पालन बहुत कम कर पाती हैं, क्योंकि उन्हें अन्य विद्यार्थियों के समान सदा अपना नियमित कार्य पूरा करना और प्रायः बड़ी रात तक जागकर अध्ययन करना पड़ता है। इसका परिणाम बड़ा ही घातक सिद्ध होता है। इसी के संबंध में सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉ० जे० टी० विल्सन के शब्द पढ़ने योग्य हैं—

"स्कूल की छात्राओं में मासिक धर्म-संबंधी जो शिकायतें पाई जाती हैं, उन्हें देखते हुए हमारा यह कर्तव्य है कि रजोदर्शन के पूर्व हम लड़कियों की शारीरिक उन्नति पर विशेष रूप से ध्यान दें। मुझे आश्चर्य के साथ कहना पड़ता है कि अमेरिका के स्कूलों में पढ़नेवाली छात्राओं में क़ब्ज़, सिर-दर्द, वर्ण-हीनता, मुहासे, प्रदर, अनिद्रा, भूख की कमी, अजीर्ण, थकावट आदि ख़राबियाँ बहुत अधिक देखने में आती हैं। अतः जिस समय उन्हें माता बनना चाहिए, उस समय तक वे अपाहिज बनने लग जाती हैं, और मातृत्व को अत्यंत भय की दृष्टि से देखने लगती हैं।"

यही नहीं, शरीर-तत्त्व-वेत्ताओं का तो यह भी कहना है कि रजोदर्शन के एक साल पहले और दो साल बाद में कन्याओं के शरीर-गठन में महत्त्व-पूर्ण परिवर्तन होता है, और उस समय वे किसी भी कठिन तथा नियमित कार्य करने के अयोग्य होती हैं। परंतु होता यह है कि इसी आयु में कन्याओं को शिक्षा प्राप्त करने और परीक्षाएँ पास करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये कठिन परिश्रम करना पड़ता है। वे स्वयं स्वास्थ्य के नियमों से अनभिज्ञ होने के कारण अपने पैरों में आप कुल्हाड़ी मारती हैं। उनके माता-पिता भी इसे बड़े गौरव का विषय समझते हैं कि उनकी कन्याएँ शीघ्र-शीघ्र परीक्षाएँ पास करती चली जाती हैं। किंतु यह नहीं समझते कि मानसिक उन्नति के साथ-साथ कन्या के शारीरिक स्वास्थ्य को ऐसी स्थायी हानि पहुँचती है, जिसका सुधार असंभव हो जाता है।

कुछ समय हुआ, एक प्रसिद्ध चिकित्सिका ने अमेरिका की २,००० छात्राओं की जाँच की थी। उसकी रिपोर्ट के अनुसार उनमें से ७५ फ़ीसदी छात्राएँ मासिक धर्म-संबंधी दोषों से और ६० फ़ीसदी प्रदर-रोग से पीड़ित थीं। एक दूसरी लेडी डॉक्टर—मेरी रिटर—ने, सन् १९३० ई० में, कोलंबिया-युनिवर्सिटी की ६६० छात्राओं की जाँच की। इनमें ६७ प्रति सैकड़ा मासिक धर्म की ख़राबियों से, २७ प्रति सैकड़ा सिर-दर्द से, २० प्रति सैकड़ा कमर के दर्द से और २९ प्रति सैकड़ा क़ब्ज़ से पीड़ित थीं। केवल २३ प्रति सैकड़ा छात्राएँ ऐसी थीं, जो जननेंद्रिय की ख़राबी के कारण उत्पन्न होनेवाली शिकायतों से मुक्त थीं। Scientific basis of the women's education-नामक पुस्तक से इसी प्रकार की और बहुत-सी बातें जानी जा सकती हैं।

इस आधुनिक शिक्षा-प्रणाली का कुप्रभाव संतानोत्पत्ति के संबंध में भी कम देखने में नहीं आता। हर्बर्ट स्पेंसर-सरीखे विद्वान् क मत है कि अतिरिक्त मानसिक परिश्रम करने से स्त्रियाँ पूर्णतया अथवा कुछ अंशों में वंध्या हो जाती हैं, क्योंकि उनकी जननेंद्रियाँ बहुत समय तक बेकार रहने से निकम्मी हो जाती हैं। उपर्युक्त कथन अधिकांश में सत्य है। क्योंकि शिक्षिता स्त्रियों में जननेंद्रिय-संबंधी दोषों की अधिकता का मुख्य कारण प्रायः यही होता है कि किशोरावस्था में उनकी जो शक्ति जननेंद्रिय की वृद्धि और पुष्टि में लगनी चाहिए, वह मस्तिष्क की वृद्धि और विकास में लग जाती है। यह शोचनीय दशा देखकर पश्चिमीय शरीर-शास्त्रवेत्ता भविष्य के संबंध में बड़ी दुर्भावनाएँ प्रकट कर रहे हैं। वे कहते हैं, यदि अधिकांश स्त्रियाँ आधुनिक उच्च शिक्षा की अनुगामिनी बन गईं, तो मनुष्य-जाति की समाप्ति में देर नहीं।

इन सब दोषों के अतिरिक्त आजकल हमारी शिक्षा-प्रणाली में एक और दोष आ गया है, जिसका विरोध विद्या-विशारदों को ज़ोर से करना चाहिए। वह दोष है सह-शिक्षा (co-education) का। हम मानते हैं, परतंत्र और दास होने से अनेक हानियाँ हैं, किंतु सबसे बड़ी हानि यह है कि परतंत्र जाति अपने शासकों के सद्गुणों को ग्रहण न कर उनके दुर्गुणों को अपनाने लगी है। शिक्षा का उद्देश्य तो बुरी प्रवृत्तियों को दबाना और अच्छी प्रवृत्तियों को विकसित करके मनुष्य को समाजोपयोगी बनाना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो शिक्षा यह काम नहीं करती, वह शिक्षा नहीं, कुशिक्षा है। सह-शिक्षा जिन-जिन देशों में प्रचलित हुई, वहाँ हानि के अतिरिक्त लाभ नहीं हुआ। इसीलिये जापान में सह-शिक्षा नहीं। जर्मनी, इटली तथा अन्य देशों में भी इस पर रुकावटें लगा दी गई हैं। नाज़ी सरकार की घोषणाओं के अनुसार नए राष्ट्रीय और सामाजिक नियमों के प्रचार के साथ-साथ जर्मन-विश्वविद्यालयों में पढ़नेवाली छात्राओं की संख्या में बहुत बड़ी कमी हो गई है। नाज़ी सरकार का मत है कि महिलाओं को उच्च शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं, बल्कि उन्हें गृह-कार्य की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए। मैंचेस्टर गार्जियन के बर्लिन-स्थित संवाद-दाता ने लिखा है—"विश्व-विद्यालय के कुछ विभागों में महिलाओं की संख्या आधे से भी कम हो गई है।" यदि हम सन् १९३२ और ३३ की संख्याओं का मुक़ाबिला १९३३-३४ की संख्या से करें, तो मालूम होता है कि मेडिकल विभाग, क़ानून-विभाग, फ़िलॉसफ़ी, व्यापार-शिक्षा, अर्थशास्त्र, रसायन-शास्त्र, भौतिक शास्त्र और भूगोल आदि विभागों में छात्राओं की संख्या में भारी कमी हो गई है।

सह-शिक्षा का इस समय सबसे अधिक ज़ोर अमेरिका में है। जज लिंडसे की 'रिवोल्ट ऑफ़ यूथ' आदि पुस्तकों के पढ़ने से पता लगता है कि इससे कितनी हानि हुई है। न्यूयार्क की एक मैगज़ीन में जॉन हाइड-नामक एक महाशय लिखते हैं—"इस बात का पता लगाने के लिये कि हमारे कॉलेजों में पढ़ने-वाली युवतियों में कितनी ऐसी हैं, जिनके पास वह रहस्यमयी वस्तु सुरक्षित है, जिसे कौमार्य कहते हैं, अमेरिका के कुछ बड़े-बड़े संभ्रांत कॉलेजों में लड़कियों की गुप्त रूप से परीक्षा की गई, तो मालूम हुआ कि कुमारी लड़कियों की संख्या असाधारण रूप से बहुत कम है। अमेरिका ऐसी अविवाहित लड़कियों से भरा पड़ा है, जिन्हें लोग १८ वर्ष के बाद या उससे पहले भी केवल सौजन्य से ही कुमारी कहते हैं।" भारत में भी ऐसा ही हो रहा है। परंतु उतना नहीं, जितना अमेरिका में है। अमेरिका-निवासी यदि सदाचार में कम हैं, तो उनमें देश-भक्ति, कर्तव्य-निष्ठा, भ्रातृभाव और परस्पर सहायता आदि ऐसे सद्गुण हैं, जो उसे दबा देते हैं, किंतु हमारे अवगुण-गृह से तो अब सदाचार भी जा रहा है। यह हमें ले डूबेगा। फिर भी अमेरिका में यह प्रयत्न हो रहा है कि सह-शिक्षा रोकी जाय। कुछ समय पूर्व पंजाब-युनिवर्सिटी ने एक जाँच-कमेटी नियुक्त की थी। उसकी रिपोर्ट से मालूम होता है कि विद्यार्थी विलास-प्रियता की ओर ज़ोरों से दौड़ रहे हैं। बंबई में सह शिक्षा पर व्याख्यान देते हुए एक लड़की ने कहा था कि लड़कों से अलग रहकर जीवन नीरस हो जाता है। सह-शिक्षा के पक्षपातियों का कहना है कि धन-हीन भारत में लड़कियों को उच्च शिक्षा देने के लिये अलग कॉलेज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं खोले जा सकते। अतः यह अनिवार्य है कि हम उन्हें लड़कों के साथ रक्खें*। इस संबंध में एक बंगाली विद्वान् के शब्द पढ़ने योग्य हैं—

"सामाजिक रूप से स्त्रियों का कर्म-क्षेत्र अंतःपुर तक ही परिमित है। वंश-परंपरागत कर्म-धारा के अनुसार संतान को गर्भ में धारण करना और उसका पालन-पोषण करना ही स्त्री का मुख्य कार्य है। इसी कर्म के योग्य उसके शरीर का गठन भी है। ..... पुरुष और नारी-जाति के कर्म-क्षेत्र और उनके विकास के मार्ग भिन्न हैं। अतएव उनकी शिक्षा-दीक्षा की धारा भी एक दूसरे से भिन्न है। ....."

आधुनिक सुधारकों में स्वामी दयानंद का आसन बहुत ऊँचा है। वह सच्चे देश-भक्त और दूरदर्शी महात्मा थे। उन्होंने देश और संस्कृति (culture) की उन्नति के लिये जिन सिद्धांतों की ओर संकेत किया, आज संसार किसी-न-किसी रूप में उन्हीं बातों को स्वीकार कर रहा है। स्वामीजी सह-शिक्षा के पूर्ण विरोधी थे। उन्होंने अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'सत्यार्थप्रकाश' के तृतीय समुल्लास में जो शब्द लिखे हैं, वे ध्यान देने योग्य हैं—"आठ वर्ष के हों, तभी लड़कों को लड़कों की और लड़कियों को लड़कियों की पाठशाला में भेज देवें। ..... विद्या पढ़ाने का स्थान एकांत देश में होना चाहिए, और वे लड़के और लड़कियों की पाठशालाएँ एक दूसरे से दो कोस दूर होनी चाहिए। जो वहाँ अध्यापिका और अध्यापक पुरुष वा भृत्य, अनुचर हों, वे कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहें। स्त्रियों की पाठशाला में ५ वर्ष का लड़का और पुरुषों की पाठशाला में ५ वर्ष की लड़की भी न जाने पावे। अर्थात् जब तक वे ब्रह्मचारी वा ब्रह्मचारिणी रहें, तब तक स्त्री पुरुष का दर्शन, स्पर्शन, एकांत-सेवन, भाषण, विषय-कथा, परस्पर क्रीड़ा, विषय का ध्यान और संग, इन आठ प्रकार के मैथुनों से अलग रहें। और, अध्यापक लोग उनको इन बातों से बचावें, जिससे उत्तम विद्या, शिक्षा, शील-स्वभाव, शरीर और आत्मा से बल-युक्त होके आनंद को नित्य बढ़ा सकें।" सह-शिक्षा के विरोध में इनसे कड़े नियम और क्या हो सकते हैं। अतः इन बातों को ध्यान में रखते हुए हम इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि हमारी आधुनिक शिक्षा-प्रणाली में सह-शिक्षा एक महान् व्याधि है।

* शिक्षित, किंतु अनुभवहीन, भोले माता-पिता पहले अपनी लड़कियों को लड़कों के साथ पढ़ने और सैर-सपाटा करने देते हैं, और जब वे किसी युवक से प्रेम करने लगती हैं, तब उनकी आँखें खुलती हैं। बात यह है कि कन्याएँ और स्त्रियाँ सदा रक्षित हैं, चाहे वे अध्यापन-कार्य करें या डॉक्टरी वग़ैरह धंधे। माता, पिता, भाई, भौजाई, बहन के साथ ही उन्हें घर के बाहर पैर रखना चाहिए। नौकर-चाकर और इष्ट-मित्र के साथ भी नहीं।—सुधा-संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका आशय यह कदापि नहीं कि कन्याओं को उच्च शिक्षा दी ही न जाय। अनुभवी, शरीर-रचना-विशारद डॉक्टरों की राय है कि १६ वर्ष की आयु के पश्चात् कन्याओं की शारीरिक अवस्था स्थायी हो जाती है। अतः उसके पूर्व उन्हें ऐसी शिक्षा न दी जानी चाहिए, जिसके प्राप्त करने में उन्हें लड़कों के साथ प्रतियोगिता करने के लिये बाध्य होना पड़े, और प्राकृतिक शक्ति की अपेक्षा अधिक परिश्रम करना पड़े। १६ वर्ष की आयु तक कन्याओं को साधारण पढ़ने-लिखने, गृह-संबंधी कार्य और शिशु-पालन आदि की शिक्षा दी जानी चाहिए। इसके बाद ऐसी कन्याएँ, जो वास्तव में उच्च शिक्षा की अभिलाषिणी हों, और शारीरिक तथा मानसिक शक्ति की दृष्टि से योग्य हों, कॉलेज आदि में प्रविष्ट हो सकती हैं। यदि ऐसा न किया गया, और जिस शक्ति को आंतरिक अवयवों की उन्नति, पुष्टि और विकास में लगना चाहिए, उसे विद्याध्ययन और कला-कौशल-संबंधी उच्च शिक्षा प्राप्त करने में लगाया गया, तो इसका परिणाम स्वास्थ्य और सौंदर्य की दृष्टि से कभी उत्तम नहीं हो सकता।

इसी लक्ष्य को सामने रखते हुए एक विदुषी महिला ने एक बार 'महारथी'*-नामक मासिक पत्रिका में स्त्री-शिक्षा का एक प्रोग्राम दिया था, वह बहुत महत्त्व-पूर्ण और ध्यान देने योग्य है। उनकी राय में प्रत्येक कन्या को निम्न-लिखित ढंग से शिक्षा दी जानी चाहिए—

(अ) प्रारंभिक शिक्षा—अर्थात् आगामी शिक्षाओं को ग्रहण कर सकने योग्य हिंदी और संस्कृत का बोध। इसका समय ५ वर्ष की आयु से लेकर ८ वर्ष की आयु तक होना चाहिए।

(ब) धार्मिक शिक्षा—जिसमें नैतिक शिक्षा भी शामिल है। यह किसी वयोवृद्ध का काम नहीं, बल्कि यह तो वह शिक्षा है, जो बाल्य-काल ही से माता-पिता द्वारा, धार्मिक पुस्तकों के आधार पर, कन्याओं को दी जानी चाहिए। यदि उन्हें परिश्रमशील तथा तगड़ा बना दिया जाय, और साथ ही धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन द्वारा कर्तव्य का ज्ञान करा दिया जाय, तो यह असंभव है कि समय आ पड़ने पर वे आततायी का मुँह तोड़कर अपने सतीत्व की रक्षा न कर सकें। इस शिक्षा का समय ८ वर्ष से लेकर १० वर्ष तक की अवस्था तक होना चाहिए।

(स) औद्योगिक शिक्षा—इसके अंतर्गत क़सीदा काढ़ना, थोड़ा-बहुत व्यायाम, दस्तकारी, चक्की, चरखा चलाना आदि हैं। इसका समय १० वर्ष से १२ वर्ष तक होना चाहिए।

(द) गृह-चिकित्सा—धात्रीशिक्षा, आरोग्य-विज्ञान, पाक-शिक्षा और थोड़ा-बहुत गणित।

* यह पत्रिका 'महारथी-प्रेस', दिल्ली से, पं० रामचंद्र शर्मा बी० ए० के संपादकत्व में, निकलती थी; संचालिका थीं श्रीमती चंद्रदेवी। अब यह पत्रिका बंद हो गई है।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस शिक्षा का समय १२ से लेकर १५ वर्ष तक होना चाहिए।

फिर वह लिखती हैं कि इन शिक्षाओं को इसी क्रम से प्राप्त करने के पश्चात् कन्या विवाह-योग्य हो जाती, और एक आदर्श गृहिणी बन सकती है। इसके उपरांत अन्य भाषाओं की उच्च शिक्षा का समय आता है, किंतु यह कन्या के पति की रुचि पर निर्भर होना चाहिए।

निस्संदेह यह प्रोग्राम, थोड़े हेर-फेर के साथ, कन्याओं के लिये अत्यंत उपयोगी हो सकता है।

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्यजनक ईजाद ! याने—

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात 'गोनोकिलर' रजिस्टर्ड

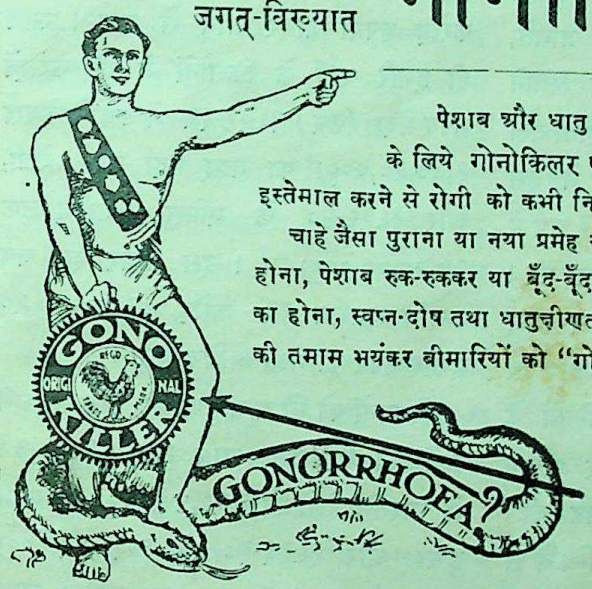

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने व निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर एक ऐसी ही आश्चर्यजनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश होना ही नहीं पड़ता।

चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन का होना, स्वप्न-दोष तथा धातुक्षीणता और औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को "गोनोकिलर" जड़ से नष्ट कर देता है।

नक़ली से सावधान !
ख़रीदने से पहले
दवा का नाम गोनोकिलर
और मुर्ग़ा छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए

मूल्य ५० गोलियों की शीशी का ३) रु०, वी० पी० डाक-व्यय आठ आना अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी S.L. गिरगाँव, बैंक रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ-स्टाकिस्ट—किंग मेडिकल हाल, अमीनाबाद-पार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष में शक्कर का व्यवसाय

[श्रीयुत ज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

लगभग दस वर्ष हुए, जब भारतीय सरकार ने जावा तथा अन्य विदेशी शक्कर पर संरक्षण-कर लगाया था। ब्रिटिश सरकार भारतीय व्यवसाय बढ़ाना चाहती थी, और उसके इस कर से इस उद्योग को अपने पैरों पर खड़े होने का अवसर मिला। भारतीयों के ऊपर में जो लोग यह दोष लगाया करते थे कि ये व्यापार करना नहीं जानते, अथवा बड़े उद्योगों में अपना रुपया लगाने का साहस नहीं करते, वे दाँतों-तले उँगली दबाकर रह गए! भारतीयों ने इस संरक्षण-कर से इतना लाभ उठाया कि ३ वर्ष में ही लगभग १०० बड़े-बड़े कारखाने खुल गए। इस उद्योग से देश को करोड़ों रुपए का लाभ हुआ। भारतीय राजा-महाराजों, व्यापारियों और मुख्य कर साधारण और मध्य श्रेणियों के लोगों ने इसमें अपना दिमाग़ और अपना रुपया लगाया, और जी-जान से मेहनत की। परिणाम यह हुआ कि समय की परिस्थिति से भारतीय शक्कर के कारखानों ने अत्यधिक लाभ उठाया, १-२ वर्ष में ही ५ लाख के १० लाख हो गए, और धड़ाधड़ नई फ़ैक्टरियाँ खुलने लगीं! बिहार और युक्त प्रांत में साधारण श्रेणी के लोगों का लगभग पूरा रुपया इस व्यवसाय में लग गया। इस तरह, सरकार से किसी भी प्रकार की सहायता के बिना, यह उद्योग अपने पैरों पर खड़ा हुआ।

इस उद्योग से हम देश का लाभ तब समझते हैं, जब हमें यह मालूम होता है कि १९२९-३० में हमारे देश में बाहर से १५,६०,६४,८०२) की शक्कर आई थी (यही आगे चल कर १९३७-३८ में कुल १४,५७,३३३) की ही आई), अर्थात् प्रतिवर्ष भारत का १५१ करोड़ रुपया बाहर जाने से रुका। साथ ही हमारे यहाँ के किसानों ने भी करोड़ों रुपए पैदा किए। १९३१-३२ में उन्होंने केवल १,७७,५०,०००) का गन्ना पैदा करके बेचा, और १९३९-४० के एप्रिल - महीने तक १५,५०,००,०००) का। इस प्रकार इस वर्ष उन्होंने लगभग १३ करोड़ ७२ लाख ५० हज़ार रुपए का गन्ना अधिक बेचा।

किसानों को तो लाभ हुआ ही, परंतु सरकारी रेलों को भी काफ़ी लाभ हुआ। १९३२-३३ में भारतीय रेलों को १,२९,४७,२००) का लाभ हुआ, और १९३६-३७ में २,३०,६६,९००) का, अर्थात् १,२१,१९,७००) का अधिक लाभ हुआ। भारतीय सरकार को अपने टैक्स से और प्रांतीय सरकारों को अपने टैक्सों से भी जो रुपया मिला है, वह कम नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्कर पर भारतीय सरकार को

आबकारी-कर से आमदनी	४,२२,००,०००)
प्रांतीय गन्ने पर कर से	
आमदनी	५०,००,०००)
इनकम-टैक्स	
से आमदनी	४०,००,०००)
कुल	५,१२,००,०००)

इस उद्योग ने हमारी राष्ट्रीय संपत्ति में कितनी वृद्धि की है, यह ऊपर के आँकड़ों से मालूम हो जाता है। इस समय इस व्यवसाय में १,२०,००० मज़दूर काम करते हैं, और लाखों अन्य व्यापारी तथा हिस्सेदार इसमें लगे हुए हैं।

यद्यपि यह सच है कि शुरू के ५-७ वर्षों में धनी मिल-मालिकों ने इस व्यवसाय से अत्यधिक लाभ उठाया, जो नहीं उठाना चाहिए था। उन्होंने ग़रीब किसानों से गन्ना बहुत सस्ता खरीदा, और तौल में भी अंधा-धुंध कमी की। किसान बेचारे चुसकर रह गए। तब रेट लगभग ≡) मन था, जो किसान की लागत-मात्र था। परंतु कांग्रेस-शासन के आते ही गवर्नमेंट ने गन्ने के दाम स्थिर कर दिए, और समय पर स्वयं उसे बदलने का अधिकार अपने पास रक्खा। इस प्रकार गन्ने के मूल्य में जो वृद्धि हुई, वह इस प्रकार है—

१ दिसंबर से १५ दिसंबर तक	॥)॥। मन
१६ दिसंबर से ३१ दिसंबर तक	॥-)॥। ,,
१ जनवरी से १५ जनवरी तक	॥≡)॥। ,,
१६ जनवरी से ३१ जनवरी तक	॥≡)। ,,
१ फ़रवरी से १५ फ़रवरी तक	॥≡) मन
१६ फ़रवरी से २ मार्च तक	॥-)॥। ,,
३ मार्च से ३१ मार्च तक	॥-) ,,
गन्ने पर प्रांतीय आबकारी-कर	)॥ ,,

ऊपर के आँकड़ों से मालूम होता है कि प्रांतीय कर देकर भी किसानों को काफ़ी रुपया मिला, और उन्होंने और सब अन्न बोना छोड़कर शक्कर मिलवाले स्थानों पर गन्ना बोना ही अपना मुख्य व्यवसाय बना लिया।

कांग्रेस-शासन द्वारा गन्ने की क़ीमत स्थिर किए जाने के कारण शक्कर के दाम भी बहुत बढ़ गए, और शक्कर खानेवाली जनता को नुक़सान अवश्य पहुँचा, परंतु वह अधिक संख्या का लाभ देखते हुए नगण्य है। मिल-मालिकों को भी लाभ कम होने लगा है। नीचे के आँकड़ों से मालूम होगा कि आजकल के भाव के अनुसार मिल-मालिकों को कितना लाभ होता है—

शक्कर का मूल्य	मिल-मालिकों का मुनाफ़ा, जिनका मिलों में औसत १८ लाख रु० लगा है।
१०॥।≡)॥	३.२६ प्रतिशत
११≡)॥	२.६४ ,,
११।-)॥	२.७४ ,,
११॥)॥	२.८४ ,,
११॥।≡)॥	२.९४ ,,
११॥।।≡)॥	२.३० ,,

भारतीय गवर्नमेंट का आबकारी-कर, जो १९३४ में १।-) था, इस समय ३) मन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ जुलाई, १९४० से युद्ध के कारण एक नया कर, अधिक आमदनी होने पर, लग जायगा, जिससे लगभग ३० लाख रुपए इस उद्योग को और देने पड़ेंगे। इस समय भारत में निम्न लिखित हिसाब से शक्कर बन रही है—

युक्त प्रांत और बिहार में	१०,००,००० टन
अन्य प्रांतों तथा देशी राज्यों में	२,००,००० ,,
गुड़ से बनाई गई शक्कर	२०,००० ,,
खाँडसारी शक्कर	१,३०,००० ,,
कुल	१३,५०,००० टन
भारत-भर में ख़र्च	१०,००,००० ,,
बचत	३,५०,००० टन

यह ३ लाख ५० हज़ार टन शक्कर बाहर भेजी जा सकती है। लेकिन शक्कर का उद्योग इस समय विकट परिस्थिति में है। इसमें लाभ बहुत कम हो रहा है। साथ ही ३½ लाख बचत की शक्कर के कहीं निकास का रास्ता नहीं। केवल भारतीय सरकार ही इस समय सहायता कर सकती है, यदि वह बर्मा अथवा दक्षिण-आफ्रिका, अफ़ग़ानिस्तान आदि में इस शक्कर को भेजने का इंतज़ाम करे, और बाहर भेजी जानेवाली शक्कर पर हर प्रकार के कर उठा ले, जिसमें यहाँ की शक्कर विदेशी शक्कर से टक्कर ले सके। क्या सरकार ऐसा करेगी ?

साथ ही मिल-मालिकों का भी कुछ कर्तव्य है। उन्हें अपनी मिलों में वैज्ञानिक खोजों के लिये प्रबंध करना चाहिए, जिसमें वे कम-से-कम ख़र्च से उम्दा-से-उम्दा शक्कर बना सकें। गन्ने की उपज में भी उन्हें प्रति-वर्ष काफ़ी रुपया ख़र्च करना चाहिए, जिसमें यहाँ के गन्ने भी जावा के गन्नों के बराबर बड़े-बड़े, रसदार हों, और ज्यादा मिक़दार में शक्कर पैदा कर सकें। यदि इस उद्योग में अभी से यह सब प्रबंध न हुआ, तो भविष्य चिंता-जनक है, क्योंकि १९४३ में बाहर से आनेवाली शक्कर पर कर हटते ही जावा की शक्कर हमारे इस उद्योग को ख़त्म कर सकती है। क्या मिल-मालिक और सरकार इस पर ध्यान देंगे ?

ESTABLISHED 1899

TELEPHONE:— 2 & 2 A

BHOLA NATH & CO.

LUCKNOW

MANUFACTURE RUBBER STAMPS, BRASS & METAL BADGES, BRASS SEALS, BRASS & IRON PADLOCKS, THUMB IMPRESSION OUTFITS, MILITARY BADGES, TURBAN MONOGRAMS, FILE LACES, EMBOSSING MACHINES, INKS Etc., Etc.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेकार का भाग्य

[श्रीपं० हरिस्वरूप उपाध्याय]

मेरे गर्दिश के दिन थे। कहीं भी कुछ न सूझता था। जिस प्रकार मस्तूल के पक्षी को सिवा चारो ओर फैले हुए समुद्र के कुछ दिखलाई नहीं देता, वैसा ही मेरा हाल था। उस पर मज़ा यह था कि मैं अकेला था—न कोई आगे, न कोई पीछे। लोग कहते हैं, अकेला जीवन बड़ा सुखी होता है, पर वे ज़रा अकेले रहकर देखें, तब उन्हें सब मज़ा मिल जायगा। मेरी तो ईश्वर से यही प्रार्थना है कि हे ईश्वर! तू मुझे लूला, लँगड़ा, कुबड़ा, अपाहिज बनाता, मेरे पास धन न होता, मुझे कुछ दरकार नहीं, परंतु कभी अकेला न बनाता। बड़ी कठिनाइयों से ले-देकर मैट्रिक, फिर इंटर पास किया। अब आगे बल्ली थाह न खाती थी, परंतु पढ़ने की इच्छा हृदय में ठीक उसी प्रकार थी, जिस प्रकार किसी ज्वालामुखी पहाड़ के अंदर सदा आग रहती है। कंगाल के मनोरथ बड़े ऊँचे होते हैं। वह एक टिमटिमाते दीपक की शिखा में सर्वलोक के प्रकाश की अजनबी दुनिया का सृजन किया करता है। वह अपनी टूटी-फूटी खाट पर करवटें बदलता-बदलता न-जाने कितने भू-स्वर्ग, जिसे कवि की कल्पना में स्वप्न लोक कहा जाता है, अपने हृत्पटल पर, मनोरथों की तूलिका से, रंग-बिरंगे रंगों में बनाया करता है। आह! वे रंग कितने सुंदर होते हैं, इसे कवि की कल्पना क्या समझे। बस, यही कंगाल की दुनिया मेरे पास थी। तब फिर क्या कहना था। न-जाने कितने सुंदर संसार मैंने बनाए, परंतु मानवता की सह-चारिणी, मनुष्यत्व की अनुगामिनी, जीवन की चिर-संगिनी, भूतों की सहचरी आग का, जो निरंतर मनुष्य के अंदर जला करती है, और जिसे जीवन-विज्ञान-वेत्ता क्षुधा नाम से पुकारते हैं, जब ध्यान आ जाता था, तो वे सारे संसार झट ग़ायब हो जाते थे। कल्पना की स्याही लुढ़क पड़ती थी। मनोरथों की तूलिका टूट जाती थी। स्वर्ग के सपने हिरन हो जाते थे। आँखों के सामने एक विराट् रूप—श्रीकृष्ण के उस विराट् रूप से कुछ मिलता-जुलता, जो उन्होंने अर्जुन को दिखाया था—क्षुधित, आर्तनाद करता हुआ, पीड़ित तथा चीत्कार करता हुआ दिखाई पड़ने लगता था, मानो स्वयं क्षुधा पीड़ा, व्रीड़ा आदि रूप धरकर जैसे मुझे निगलने आ रही हो। कवि के गान और प्यार तो कल्पना-लोक में सिहरते हैं, मेरे तो स्वयंभू भगवान् प्राणदेव ही सिहर उठते थे।

वियोग की पीड़ा बड़ी मीठी होती है। एक मीठा-मीठा दर्द होता है हृदय में, परंतु मेरे तो हृदय में बड़ा कड़ुआ ज़हर, हलाहल के समान—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओह ! उस दर्द के मारे कहना भी हराम हो रहा है—उठा करता था। जी तो चाहता था कि इन मीठे दर्दवालों को ज़रा इस दर्द का स्वाद तो चखाऊँ, तब मालूम पड़ेगा कि मीठा दर्द होता है या कड़ुआ। इस दर्द के मारे कभी-कभी तो इतनी बेचैनी बढ़ जाती थी कि सुबह से शाम तक ट्यूशन और नौकरी की तलाश में ठीक उसी तरह जिस तरह कुत्ता हड्डी की खोज में डोला करता है, मैं भी घूमा करता था। घर आकर जब सोता था, तो जिधर नज़र डालता था, उधर ही उस सुनसान घर में काले-काले भूतों की-सी शक्लें दिखाई देने लगती थीं। मैंने इस दर्द का इलाज जान लिया था। उस दवा के बीज अपने सिरहाने रखकर सोता था। वह दवा इस दर्द से भी अधिक कड़ुवी, मृत्यु से भी अधिक कठोर, क्रोध से भी अधिक उतावली, प्रेम से भी अधिक ज्वालामयी थी। उसका नाम वैद्यवर लुहार ने छुरी मिक्श्चर रख छोड़ा था। आह ! जब उसे मैं हाथ में लेकर देखता था, तो उसकी धार किसी प्रेयसी की नज़र से भी अधिक नुकीली, उसकी सफ़ेदी सित-ज्योति, फेनोज्ज्वल और राका से भी अधिक सफ़ेद दिखाई पड़ती थी। उसे पाकर मैं धन्य हो उठता था। वह मुझ ग़रीब का कवच, मुझ कंगाल की निधि और मुझ वाक्शूर का अमोघ अस्त्र थी।

एक दिन की बात सुनिए। मैं प्रातः ही एक वकील साहब से मिलने गया। शायद वह बड़ी अच्छी सायत थी। वकील साहब बोले—"मास्टर साहब, एक ट्यूशन है। आप कर सकते हैं ? दसवें को हिंदी पढ़ानी है।"

मेरा मन एक-एक शब्द के साथ बाँसों उछलता जाता था। ख़ुशी के मारे यही नहीं बन पड़ा कि क्या कहूँ। झटपट एक सोने का संसार कल्पना के लोक में बन गया, और कहाँ, कब, किसकी और क्या देखा, आदि शब्द एक साथ ही निकल पड़े।

वकील साहब बोले—"एक ईसाई महिला हैं। हिंदी पढ़ना चाहती हैं। ५) माहवारी दे देंगी। पर ट्यूशन अच्छी है।"

मैं झटपट राज़ी हो गया, और वकील साहब का लिखा हुआ पुरज़ा लेकर मैं फ़ौरन् साहब के बँगले पर पहुँचा। साहब वकील थे। मेरे पहुँचते ही बड़े सौजन्य से प्रणाम कर मुझसे बैठने को कहा। बेचारे क्या समझे कि कोई मुवक्किल आ फँसा। मन-ही-मन बड़े ख़ुश थे। परंतु जब मैंने वह लिखा हुआ पुरज़ा हाथ में दिया, तो पढ़ते ही उनकी प्रसन्नता के नंदन-कानन में तुषार-पात हो गया। फिर भी मुस्किराकर कहने लगे—"आइए, अंदर आ ....." मैं तुरंत अंदर पहुँच गया। अंदर पहुँचते ही एक अधेड़, गोरी, भूरी, मेम साहबा के कुर्सी पर विराजे हुए दर्शन हुए। अभिवादन के बाद वह बोलीं—"मैं हिंदी पढ़ना चाहती हूँ। मैट्रिक को आप पढ़ा सकेंगे ?"

मैं—"जी हाँ. पढ़ा दूँगा।"

मेम—"हम ५) देते हैं, वही आपको देंगे।"

मैं—"बहुत अच्छा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेम—"मैं सुबह सात बजे से आठ-सवा आठ तक पढ़ूँगी। आप सात बजे आ सकते हैं, और बल्कि ७ बजे से १०-५ मिनट पहले ?"

मैं—"जी हाँ, आ जाऊँगा।"

मेम—'अच्छा।" तो अभी तो हमारे छमाही इम्तहान हो रहे हैं, आप छ रोज़ बाद आइए। यानी शुक्रवार को।"

मैं—"बहुत अच्छा।" कहकर वहाँ से चल दिया। अब रास्ते में सोचने लगा कि ट्यूशन तो बहुत की हैं, परंतु ऐसी नहीं की। सुबह सात बजे तो दिन भी नहीं उगता; फिर हमें तो नहा-धोकर आना है। जाड़े के दिन हैं, क्या किया जायगा। अच्छा, ख़ैर, देखा जायगा। भइ, यह एक तपस्या ही सही। चिड़िया फंदे में तो आए। इसी उधेड़-बुन में मैं घर पहुँचा। अब जल्दी शाम आए, इसका इंतज़ार करने लगा। रात में सो जाऊँ, तो सोचूँ कि रात क्यों इतनी लंबी हो गई। न-जाने कब सवेरा होगा। एक-एक दिन पहाड़-सा मालूम होने लगा। बहुत ही बड़े दिन—लोहे के चने से भी कड़े—मालूम पड़ने लगे। आख़िर कई कल्प-से बीत जाने के बाद वह दिन भी आया। नहा-धो, साफ़ कपड़े पहन साहब के घर पहुँचे। साहब ने फिर उसी सभ्यता से अंदर पहुँचा दिया। मेम साहब मुझे देखकर बोलीं—"अच्छा, आप आ गए। ओहो, आज तो बड़ी देर से आए। आज तो मैं न पढ़ सकूँगी। अच्छा, कल आइए। सुबह सात बजे से पहले। अच्छा एक बात और भी सुनिए। मैं—आज कौन तारीख़ है—९ से २२ तक पढ़ूँगी, फिर जनवरी में शुरू करूँगी।" क्योंकि वह दिसंबर का महीना था।

मैं "अच्छा।" कहकर, झुँझलाकर उठ बैठा, और सीधे घर की राह ली। रास्ते में बड़ी झुँझलाहट आ रही थी। अपने पेट को कोसने लगा—रे अभागे, पापी, नीच, अधमाधम, हत्यारे, ख़ूनी, ज़ालिम, तू कितना दुष्ट है। अब क्या मुझे खाकर चैन लेगा। ले खा डाल, कह-कर चट दाँत से अपनी बाँह चबा डाली। ग़ुस्से में यह ध्यान भी न रहा कि बाँह में ख़ून बह रहा है। मन-ही-मन खीझता, क्रोधित और बड़बड़ाता हुआ अपनी कॉलेजवाली सड़क से घर आ रहा था। रास्ते में एक गधे से टकरा गया, और बोला—"माफ़ करना महाशय !" जब सिर उठाकर ऊपर देखा, तो गधे को सामने पाया। इसने और जले पर नमक छिड़क दिया। लगा मन-ही-मन गधेवाले को गालियाँ देने। "साले यों ही छोड़ देते हैं, मानो बाप की सड़क है" इत्यादि। इसी बीच में एक कॉलेज की कन्या से टकरा गया। अब तो क्रोध का पारावार न रहा। लगा बकने—"साले बार-बार सामने आ जाते हैं। ज़रा भी तमीज़ नहीं। ठहरे आख़िर गधे ही। जब सामने एक सुंदर, सलोनी कन्या को बग़ल में पोथी दबाए देखा, तो सारा नशा हिरन हो गया। क्रोध बादलों की भाँति झट विलीन हो गया। लगा विनीत भाव से कहने—"क्षमा करना देवीजी, बुरा न मानना। मैं आपे से बाहर था। क्रोध का सताया हुआ था। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दुखी हूँ, दरिद्र, कंगाल, बेकार, निकम्मा, तुच्छ। मेरा जन्म संसार में व्यर्थ ही हुआ। ईश्वर ने मेरे बनाने में व्यर्थ ही परिश्रम किया। मेरे गिड़गिड़ाने का, मेरे हाहा खाने का, मेरी मिन्नतों का, मेरी खुशामदों का इस दुनिया में कोई मोल नहीं। मेरा कुछ भी मूल्य नहीं देवीजी। आपकी बग़ल में दबी हुई इन किताबों का कितना मूल्य है—कोई २) की है, कोई ४ की। उस पर भी आपकी कोमल बग़ल में दबी होने से इनका मूल्य और भी बढ़ गया है।" वह कन्या थी, सुंदरी थी—भीतर से भी सुंदर। झट मेरी बाँह देखकर बोली—"आपकी दशा ठीक नहीं मालूम होती। आपकी बाँह से रक्त बह रहा है। मैं आप पर कुपित नहीं। आप दया के पात्र हैं। चलिए, मेरे घर पर आप शांत हूजिए। विश्राम कीजिए।"

मैं ऐसे मीठे वचन सुनकर सचेत हो गया, और बोला—"ना देवीजी ना! मैं आपकी सहानुभूति की हृदय से प्रशंसा करता हूँ। लेकिन क्या मैं इस दुनिया में सहानुभूति का पात्र हूँ। ओह! तुम्हारी यह सहानुभूति कितनी मीठी, कितनी कोमल, कितनी स्निग्ध, कितनी सरल और सहज है। क्या मैं इसका मूल्य चुका सकूँगा। शायद ही। काश मैं ऐसा कर सकता।" मैंने अपने को बहुत रोका, परंतु रोक न सका। जिस प्रकार वैद्य या डॉक्टर के सामने रोगी अपना सब हाल बता देता है, उसी तरह मैं भी उसे अपना सब हाल बता देना चाहता था। लेकिन असमर्थ था। जब उसके सामने से चलने लगा, तो अंतिम बार मेरी-उसकी चार आँखें हो गईं। मानो जीवन की संध्या में सूर्योदय हो गया हो, मानो तालाब में कमल खिल उठा हो। कितनी चुभन थी उनमें।

दूसरे दिन बहुत ही सुबह नहा-धोकर फिर स्टेशन पर ७ बजे से प्रथम ही पहुँच गया। जब बँगले पर पहुँचा, तो उन मेम साहबा का लड़का सामने आकर बोला—"मास्टर साहब, आप ३ जनवरी से आइए। मदर ने कहला भेजा है।" अभिवादन करके मैं चल दिया। आज मन में क्रोध न था, झुँझलाहट न थी। कोई चिंता न थी। कोई विचार न था। बस, वही 'आप घर चलिए' शब्द कानों में गूँजने लगे। दोनो सफ़ेद और श्याम आँखें सामने आ गईं। मेरे भी मीठा-मीठा दर्द उठने लगा। आज जीवन में अकेलेपन का अनुभव हुआ, और अब मैं अपने को दुकेला समझने लगा। मेरे पास कुछ नहीं है, केवल उसकी वह चितवन—जो चलते समय मुड़कर दे गई थी—है, जो बड़ी तपस्या के बाद मिली थी। मेरा ऐसा ही भाग्य था। आज मैं कवि हो गया हूँ। कविता करने लग गया हूँ। सरस्वती के चरणों में बैठकर नहीं, सरस्वती से टक्कर खाकर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपभोग का आदर्श*

[प्रो० दयाशंकरजी दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी०]

"आज मैं एक उलझन में हूँ। आपने उस दिन बतलाया था कि उपभोक्ता का मुख्य ध्येय सुख और संतोष की प्राप्ति है, पर संसार में कभी कभी हमें इसके विपरीत उदाहरण भी मिलते हैं। कल मैंने सुना, पंडित केदारनाथ अपने स्वर्गवास के कुछ घंटों पूर्व एक दान-पत्र लिख गए हैं। क़रीब तीन लाख रुपए उनके कई बैंकों में जमा थे। पर मरते दम पता चला कि सिर्फ़ पचास हज़ार ही रह गए हैं। पचीस-तीस हज़ार रुपए सालाना मुनाफ़े की उनकी रियासत है, सो अलग। बाल-बच्चा उनके कोई था नहीं। चचेरे भाई थे, सो अलग रहते थे। पर अंत में थे तो उनकी संपत्ति के अधिकारी ही। आजकल रियासत से मुनाफ़े की निकासी तो पूरी हो नहीं पाती। जिनके पास नक़द रुपए रहते हैं, सच पूछिए, वे ही समाज में सबसे अधिक सुखी और प्रतिष्ठित समझे जाते हैं। पर नक़द रुपया उन्होंने अपने भाई-भतीजों के लिये नाम-मात्र को छोड़ा है। दो लाख रुपया एक औद्योगिक विद्यालय के लिये वह पहले ही दान कर चुके हैं, और पचास हज़ार अपने ज़िले-भर के गाँवों में एक बड़े चलते-फिरते पुस्तकालय के लिये। इस तरह सिर्फ़ पचास हज़ार रुपया ही उन्होंने नक़द ऐसा छोड़ा है, जिसे उनके भाई-भतीजे पा सकेंगे। गाँव में और चारो ओर अक्सर लोग कहते हैं कि मरते दम तक वह भाई-भतीजों के लिये बराबर ऋण ही रखते रहे। उनसे इतना भी न हो सका कि जीवन-भर में जो वैमनस्य रक्खा, सो रक्खा, पर मरते दम तो उसे भुलाकर उनके आँसू पोंछ जाते। माना कि उनके लिये वह रियासत छोड़ गए हैं, पर नक़द रुपए तो उन्होंने उनके लिये दरअसल बहुत कम छोड़े। सुनते हैं, इतने रुपयों से तो उन लोगों का क़र्ज़ भी अदा न हो सकेगा। क्या यह उनका अन्याय नहीं? माना कि जनता के हित जो दान किया जाता है, उसकी बड़ी महिमा है, पर आख़िर कुटुंबियों का भी तो कुछ ख़याल उन्हें करना चाहिए था। अब उनका शांति-कर्म जो वे लोग ठीक तरह से न करें, तो उनकी आत्मा को अंतिम सुख और संतोष भला क्या प्राप्त होगा!"

राजाराम इतनी बात कहकर चुप हो गया।

बिहारी बोला—"सच पूछो, तो पंडित केदारनाथ ने किसी के साथ अन्याय नहीं किया। उपभोग का जो सच्चा और उच्च आदर्श होना चाहिए, उसी का उन्होंने निर्वाह किया है। और, मैं कहूँगा, बहुत अच्छे ढंग से किया है। उन्होंने मरते दम जो संपत्ति छोड़ी, उसका उपार्जन उन्होंने स्वयं अपने ही बल-विक्रम से किया था। रियासत देखने के पश्चात् उनका सारा समय भगवद्भजन और ईश्वराराधन में व्यतीत होता था। मरने से कई वर्ष पहले उनकी भार्या का देहांत हो चुका था। अब उन्हें कोई ऐसा काम न रह गया था, जिसके लिये वह चिंता करते। संतान न होने का उन्हें दुःख था, चम उन्होंने कभी किसी पर उसे प्रकट नहीं किया। आव-तरह से वह इस दुःख को भूले रहते थे। संप है। हम एक-एक पाई की बचत पर उनकी दृष्टि रहे टे उनके

* अप्रकाशित 'अर्थशास्त्र की रूप-रेखा' का एक अध्याय।—सुधा-संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। कभी उन्होंने कोई अपव्यय नहीं किया। दीन-दुखियों की उन्होंने सदा सहायता की। जीवन उनका बहुत सादा था। मोटे, स्वदेशी कपड़ों को छोड़कर बढ़िया, क़ीमती या विदेशी कपड़े पहनना उन्होंने कभी जाना ही नहीं। नौकर-चाकर तक उनकी साधु प्रकृति और उदारता के क़ायल हैं। ऐसा निरभिमान, मिष्टभाषी, लोकोपकारी, साधु पुरुष तो, सच पूछो, हमारे प्रांत में, इधर हमारी सुधि में, हुआ ही नहीं।"

राजाराम—"लेकिन सुनते हैं, जब भाई-भतीजे अंतिम समय से कुछ पूर्व उनके पास आए, तो उन्होंने बड़े खेद के साथ कहा था—'मैं तुम लोगों को कुछ दिए नहीं जा रहा हूँ। जो शेष है, मैं जानता हूँ, वह तुम्हारी आवश्यकताएँ देखते हुए कुछ भी नहीं!' इन सब बातों पर विचार करने से तो हमें इस परिणाम पर पहुँचना पड़ता है कि उन्हें अपने उपभोग से, अंतिम समय, वह सुख और संतोष नहीं मिला, जो उनके-जैसे सत्पुरुष को मिलना चाहिए था। और, इसका कारण है, अगर आप बुरा न मानें, तो मैं कहूँगा—परोपकार-वृत्ति। अगर मैं अर्थशास्त्री की हैसियत से बात करूँ, तो मुझे विवश होकर कहना पड़ेगा कि उन्होंने उपभोग के आदर्श का पालन नहीं किया।"

बिहारी—"यहीं पर तुम भूल कर रहे हो। उपभोग का आदर्श तुमने क्या समझा है, ज़रा बतलाओ तो सही।"

राजाराम—"उपभोक्ता की चरम सुख संतोष की प्राप्ति को ही मैं तो उपभोग का आदर्श मानता हूँ।"

बिहारी—"लेकिन सुख-संतोष ऐसे शब्द हैं, जिनके विषय में तब तक निश्चय-पूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता, जब तक यह न प्रकट हो जाय कि [illegible] की प्रकृति, स्थिति और संस्कृति का उस व्यक्ति [illegible]थ क्या संबंध है। सुख-संतोष तो मानसिक [illegible] पर बहुत कुछ निर्भर है। सुख-संतोष का जो क्षेत्र राजाराम के लिये है, वही रामाधीन के लिये भी होगा, कौन कह सकता है? पंडित केदारनाथ का जीवन जिस प्रकार आदर्श था, उसी प्रकार उनका सुख संतोष भी बहुत ऊँचे दरजे का था। गाँव के लोग सोचते हैं कि अगर वह अपने कुटुंबियों के लिये सारा रुपया छोड़ जाते, जिससे वे गुलछर्रे उड़ाते, और गाँव में नाच, गान, रास-लीला और नौटंकी का दौरदौरा रहता, तो बड़ा अच्छा होता। जो लोग उनके भाई बद्रीनाथ की दरबारदारी करते हैं, उन्हें खलता है कि अगर वह सब रुपया बद्रीनाथजी को मिल गया होता, तो ज़िंदगी-भर के लिये भाँग-बूटी का ही प्रबंध हो गया होता। इस प्रकार लोग अपना दुर्व्यसन और शौक़ पूरा होने का अवसर हाथ से जाता देख इस तरह की बातें फैलाते हैं। मैं देखता हूँ, उन्हीं लोगों के वर्ग के तुम भी हो। तुम्हारा भी यही ख़याल है कि पंडित केदारनाथ ने जो कुछ किया, वह बहुत अच्छा नहीं रहा। किंतु मैं साफ़ शब्दों में यह कहना चाहता हूँ कि उन्होंने अपनी संपत्ति का सदुपयोग ही किया है। और, सच पूछो, तो यह जो जायदाद वह इन लोगों के लिये छोड़ गए हैं, साथ ही पचास हज़ार रुपया नक़द, यह भी केवल अपने इन कुटुंबियों की अप्रसन्नता और ग्रामीण लोकमत के भय के कारण। नहीं तो, चाहिए तो यह था कि इन लोगों के लिये वह एक पाई न छोड़ जाते। ऐसे ये लोग नासमझ, नालायक़ और पतित हैं।"

राजाराम—"तो उन्होंने अपनी फ़िज़ूल-ख़र्ची के लिये बद्रीनाथ के सामने दुःख क्यों प्रकट किया? क्यों उन्होंने कहा कि मैं तुम लोगों को दरअसल कुछ भी नहीं दिए जा रहा हूँ, और इसका मुझे दुःख है?"

बिहारी—"यह क्षणिक भावोद्रेक की बात है। जो काम उन्होंने उससे पूर्व किए हैं, वे बहुत सोच-समझकर किए हैं; उनसे उन्हें संतोष और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शांति मिली है। औद्योगिक विद्यालय तथा ग्राम-सुधार-पुस्तकालय की इमारतें बन रही हैं, और इसी वर्ष के भीतर उनकी योजना के अनुसार काम प्रारंभ हो जायगा। गाँवों के वे बच्चे, जो शिक्षा के बिना, आजीविका के बिना आज दर-दर मारे-मारे फिरते हैं, जब तीन और पाँच वर्ष के शिक्षा-क्रम को पूर्ण करके निकलेंगे, तब कितने सुखी और संतुष्ट होंगे। कारीगरी और उद्योग-धंधों के काम में पड़कर वे समाज और देश की पूँजी, उत्पत्ति और श्री-समृद्धि बढ़ाने में कितने सहायक होंगे, कभी तुमने यह भी सोचा है? अगर उनका ध्यान अपने उन कुटुंबियों के ही स्वार्थ-साधन की ओर होता, जो आज सर्वथा अयोग्य और दुर्व्यसनी हैं, जो संपत्ति की रक्षा करना नहीं जानते, और अशिक्षित होने के कारण समाज-सेवा-जैसे महत्त्व-पूर्ण कार्यों के प्रति प्रेम रखना तो दूर, उपेक्षा का भाव रखते हैं, तो मैं कहना चाहता हूँ कि यह सदुपभोग न होकर उलटा दुरुपभोग ही होता। और, मुझे तो अब भी इसमें पूरा शक है कि उन्होंने बद्रीनाथ से ऐसी बातें कही है, जैसी तुम कह रहे हो। मैं उनसे कभी ऐसी आशा नहीं करता।"

राजाराम—"लेकिन बद्रीनाथ की तुम चाहे जैसी निंदा करो, मैं तो कहूँगा कि आदमी वह भी एक नंबर का है। पास बैठो, तो तबियत ख़ुश हो जाय। घंटे-भर में चार बार तो पान-इलायची, तंबाकू-सिगरेट आएगी। कभी जो साथ में ताश तथा शतरंज खेलते हुए देर-सबेर हो जाय, तो समयानुसार चाय तथा जल-पान भी सबके लिये बराबर आएगा। मुझे एक-आध बार रात ज़्यादा हो गई। मैंने देखा, उनके पीने के लिये जो दूध आया, तो उन्होंने फ़ौरन् मेरे लिये भी मँगवाया, हालाँकि मैं 'नहीं-नहीं' करता ही रह गया। हर साल नौटंकी वग़ैरह में कितना ख़र्च करते हैं! पर हाँ, आप तो इन खेल-तमाशों से नफ़रत करते हैं, यह मैं भूल ही रहा हूँ। ख़ैर, मेरा कहना यह है कि बद्रीनाथ भैया भी काफ़ी उदार प्रकृति के हैं।"

बिहारी—"जितने भी गुण तुमने उनके इस समय बतलाए, उनमें अतिथि-सत्कार को छोड़कर शेष सभी दुरुपभोग-संबंधी हैं। वे उपभोग के आदर्श के विरुद्ध पड़ते हैं।"

राजाराम—"भाँग-बूटी, सिगरेट आदि हमारे लिये वर्जित हैं, यह तो हम मानते हैं, क्योंकि हमारी इतनी आमदनी नहीं कि हम इनका ख़र्च बरदाश्त कर सकें, पर राजा-रईस लोगों की तो ये सब चीज़ें एक तरह से शोभा ही कही जायँगी।"

बिहारी—"यह सरासर भूल है। जो वस्तुएँ कृत्रिम आवश्यकता-संबंधी तथा विलासिता की वृद्धि करनेवाली हैं, उनका उपभोग ऐसे लोगों के लिये दुरुपभोग ही है, जिनकी आर्थिक स्थिति बिगड़ी हुई है, और जिन पर अपनी मान-मर्यादा की रक्षा का भार है। अगर ये सब आदतें बद्री बाबू एकदम छोड़ दें, तो वह बहुत जल्दी अपने ऋण से मुक्त हो सकते हैं। जो व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं का नियमन नहीं कर सकता, जो अपना दुर्व्यसन त्याग नहीं सकता, जो विलासिता में डूबा रहता है, अर्थशास्त्र की दृष्टि से वह समाज के लिये सबसे अधिक अहितकर प्राणी है।"

राजाराम—"तो आप यह चाहते हैं कि वह अपनी सारी इच्छाओं का दमन करके बिलकुल साधु-संन्यासी का-सा जीवन व्यतीत करने लगें? पर मैं कहूँगा कि इससे और चाहे जो हो, किंतु संतोष और सुख की प्राप्ति उन्हें नहीं हो सकती।"

बिहारी—"यह तुम्हारी भूल है। यह पश्चिम की अंधी नक़ल है कि हमने अपनी कृत्रिम आवश्यकताओं को इतना अधिक महत्त्व दे रक्खा है। हम इच्छाओं को वश में करना तो दूर रहा, उलटे उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख़रीदे हुए ग़ुलाम हो गए हैं। शांति और संतोष का पल्ला छोड़कर हमने रात-दिन 'हाय रुपया! हाय रुपया!' की माला जपना शुरू कर दिया है। यह हमारा पतन है! हमारा पुरातन आदर्श यह कभी नहीं था। हम तो सदा परोपकार, पर-दुःख-निवारण को ही जीवन का पवित्र उद्देश्य मानते थे। थोड़े में हमें संतोष था। जो हमें प्राप्त था, उसी को भगवान् की महती कृपा के रूप में भोग-कर आनंद से ज्ञान-चर्चा में निरंतर लीन रहते थे। पर आज की नवीन सभ्यता ने हमारे सामने व्यक्तिवाद का आदर्श उपस्थित कर दिया है। हरएक व्यक्ति आज ऐसे स्वप्न देखने लगा है, जिसे वह जीवन-भर कभी चरितार्थ कर नहीं सकता, और निरंतर असंतोष तथा अशांति की ज्वाला में जल-जलकर अंत में चिंता-रूपी चिता में भस्म हो जाने को तत्पर हो गया है। यह ठीक है कि अगर आदमी थोड़े में संतुष्ट हो जाय, तो वह उन्नति नहीं कर सकता। पर इसका यह अर्थ नहीं कि हम द्रव्योपार्जन की धुन में पड़कर अपने आदर्श को ही भूल जायँ—अपनी आदर्श संस्कृति के उच्चतम ध्येय से ही च्युत हो जायँ। धर्म-पूर्वक, ईमानदारी तथा परिश्रम से द्रव्योपार्जन करके, सादा जीवन और उच्च विचार के आदर्श के अनुसार, परोपकार में ही द्रव्य का सदुपयोग हमारे लिये जीवन का सबसे बड़ा सुख और संतोष होना चाहिए। वास्तव में यही उपभोग का आदर्श है। और, इस दृष्टि से पंडित केदारनाथ का जीवन धन्य है।"

ये बातें अभी समाप्त हो ही रही थीं कि राजाराम ने देखा, एक खद्दरधारी पुरुष एक पुस्तक लिए सामने खड़े हैं।

राजाराम ने पूछा—"आप किसे चाहते हैं?"

नवागंतुक ने कहा—"क्या आपका नाम राजाराम है?"

राजाराम—"हाँ, कहिए।"

नवागंतुक—"पंडित केदारनाथजी ग्राम-सुधार-पुस्तकालय की जो व्यवस्था कर गए हैं, उसी के संबंध में आज शाम को देवी-मंदिर में एक बैठक होगी। उसमें आप अवश्य पधारने की कृपा करें। इसी आशय की यह विज्ञप्ति है। इसमें कृपा करके हस्ताक्षर कर दीजिए, बात यह है कि अब यह कार्य जल्द-से-जल्द प्रारंभ कर देना है।"

---

२४ घंटे की साथिन नक़ली घड़ियों से सावधान!

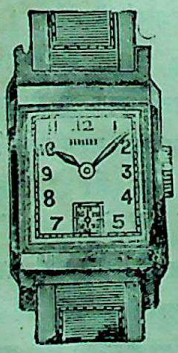

ये आला दरजे की बिलकुल सच्ची और ठीक समय देनेवाली लीवर मशीनरी निहायत ख़ूबसूरत घड़ियाँ जो एक बार ख़रीद लेता है, उसको ज़िंदगी-भर दूसरी घड़ी ख़रीदने की ज़रूरत नहीं पड़ती। ५ साल तक घड़ी का एक पुरज़ा भी ख़राब नहीं हो सकता। गोल हाथ की घड़ी चमड़े रेशम के फ़ीते के साथ २॥।≡), सेकेंड की सुईवाली सुपीरियर रिस्टवाच ३॥।), सोने के-से रंग-वाली घड़ी ४), रेडियम ५॥), रेक्टेंगुलर सुनहरी ७॥), रेक्टेंगुलर क्रोमियम ६), लीवर पाकेट वॉच २।), बी० टाइम पीस १॥।≡), एक साथ ३ घड़ी ख़रीदनेवाले को पैकिंग और पोस्टेज माफ़।

एम्० एल्० वॉच कंपनी (S. L.) १०८ काटन स्ट्रीट, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहे

[श्रीयुत तेजनारायण काक एम्० ए०]

अँधियारी - सारी पहिरि निसा - नवेली - नार—
बादर - पट ढकि चंद - मुख चली करन अभिसार ॥ १ ॥
दीठि - बान भ्रू - धनुष धरि, देह - लता कै आर—
बेधत बेझो रसिक - चित चतुर अहेरी मार ॥ २ ॥
पिय-हिय - सरसी - स्नेह - जल - बिंबित-तिय - मुख-चंद
सवति - समीरन भंग करि हर्‌यौ सकल आनंद ॥ ३ ॥
रहैं बूड़ि, बिलसैं, लसैं, छिनु बिछुरैं अति दीन ;
मृग - नैनी - नैना भए हरि - छबि - जल कै मीन ॥ ४ ॥
सकुचि, सिमटि, झुकि, ढकि बदन, कुच-कलि अंचल-पात
सिहरि उठी नव - बल्लरी, पुरवा परस्यो गात ॥ ५ ॥
कली बन्यौ, फूल्यौ इतै, झूम्यौ याही डार ;
यही ठौर मुरझ्यौ चहै, मिलनों याही छार ॥ ६ ॥
सखि, जीवन चौसरि - सरिस, नर - नारी मनु सारि,
पुरुष - प्रकृति खेलैं समुद नियति - सुपासा डारि ॥ ७ ॥

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूर-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से—जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से—बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुखार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सर्दी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुखार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।), डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥।-) }
२५ " " " ५≡) } श्रीसीताराघव वैद्यशाला—मैसूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत

[कुमारी विद्याकुमारी भार्गव]

न हो रे मानव ! आज हताश।
चोट लगे, सह ले धरती बन,
कर न तनिक - सी आह ;
कोलाहल पर कान लगाकर
खो न हृदय की चाह।
प्रात हुआ, दोपहर आई,
आवेगी अब शाम ;
होता है विरले मानव का
मरकर भी फिर नाम।
है जो कुछ, उतना क्या कम है,
है अंतर के पास ;
रोदन यह ऊपर से जँचता
हृदय - बीच तो हास !
न हो रे मानव ! आज हताश।

गरमी और बरसात में सेवन करने योग्य धातु पौष्टिक दवा—

* सुधावलेह *

विश्वास करें, यह ओषधि इस भूतल का अमृत है। खाने के २४ घंटे बाद अपना गुण दिखाती है। इसके सेवन से धातु बढ़ती, पतली गाढ़ी होती, कामेच्छा बढ़ती, दिल-दिमाग़ में तरी और ताक़त आती है। दिल की धड़कन, सिर की कमज़ोरी, याद न रहना, आँखों के आगे अँधेरा आना, चक्कर आना, सिर घमना, हाथ-पैर के तलवे जलना, खुल-कर भूख न लगना वग़ैरा आराम होकर मनुष्य का जीवन नवीन हो जाता है। जिन्हें गरमी के कारण स्वप्नदोष होते हैं, मैथुनेच्छा नहीं होती, वे इस अमृत को गरमी के चार महीने ज़रूर खावें। क़ीमत १०) सेर है, पर ग़रीब भी लाभ उठा सकें, इसलिये ५) सेर दिया जायगा। महसूल डाक, पैकिंग १-), कुल ६-) में दवा का फल देखो।

बेलाग प्रशंसा-पत्र

नोंकझोंक-संपादक श्रीदामोदरदासजी चतुर्वेदी महोदय लिखते हैं—

"आपके सुधावलेह ने मेरे लिये तो अमृत का-सा गुण दिखलाया। आज दवा ली और कल से ही सब शिकायतें दूर होकर मेरे जीवन में एक नए वसंत का आगमन आरंभ हो गया। वस्तुतः आपका सुधावलेह सुधा की वह सुंदर स्रोतस्विनी है, जिसका आश्रय लेकर अनेक निराश और निर्बल व्यक्ति नवजीवन तथा नई शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। रोग-संतप्त प्राणियों के उपकार के लिये आपने इस अवलेह का निर्माण कर अत्यंत अनुग्रह किया है। ईश्वर इस जन-सेवा के लिये आपको अखंड यश प्रदान करें।"

पता—हरिदास एंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छिन्नपत्र

[श्री पं० सुंदरलाल त्रिपाठी]

रायपुर (मध्य-प्रदेश)
२१ । ७ । १९३९

चाय मेरे पत्र में नैमित्तिकी है, और 'दैनंदिनी' (डायरी) नित्य मैं लिख नहीं पाता। चाय मैंने कल दिन-भर में लगभग पाँच कप पी, और एक दिन की 'दैनंदिनी' नहीं लिख सका। उसे आज लिख रहा हूँ।

प्रातः साढ़े छ के लगभग उठा। मेरे मेहमान 'त' चाचा एकाक्ष हैं। प्रथम दर्शन मैंने उनका नहीं चाहा—यह संस्कार मेरे मन में जाग्रत् क्यों है? एकाक्ष को अतिक्रम करके मानव तक मैं क्यों नहीं पहुँच पाता? पूजनीय 'म' की भी तो एक आँख अमुक की बर्बर सनक और अमुक की भयानक असावधानी के कारण खो गई है। मानव द्वारा ग़लती स्वाभाविक है—कलंक और अशोभन रूप, किंतु पूजनीय 'म' के सनकी अमुक और असावधान अमुक हैं। यों दोनो अमुक के प्रति मेरे मन में ममता मानव की है, और 'म' तीर्थचरण वसुंधरा के अनुरूप शुभ-शोभन दर्शन मेरे पक्ष में हैं।

नौ के लगभग चाय पी सका, और दस के बाद बैठा 'त' चाचा की ओर से अमुक महाराज और उनके अमुक मैनेजर के लिये पत्र का मज़मून बनाने। अजीब चाचा हैं लेकिन यह। मज़मून बनाकर 'दैनंदिनी' लिखने बैठा नहीं हूँ कि ताँता शुरू कर दिया है इन्होंने। 'दैनंदिनी' मेरी रुकवाए दे रहे हैं। कहते हैं—"झूठी डायरी यह अपनी लिख रहे हैं आप।—जयकरन, भाँग तौ भिजइ देव पंडितजि ते लैकै थोरी। गोलि ही लइ ल्याव तनिकि।—पंडितजी, आप हमारा काम कीजिए। 'डायरी' फिर लिख लीजिएगा।" सच कहते हैं आप चाचा। लेकिन 'डायरी' का सत्य अभ्यंतर देखने पर ही तो जान सकिएगा?—सो लेकिन आपके पक्ष में संभव नहीं है महाराज! लेकिन लिखने 'चाचाजी' ये मेरे नहीं देंगे आज, जान पड़ रहा है। अपनी चिंता, अपनी बात—"टाइम-टेबिल देखना अभी रह गया है पंडितजी! टाइम-टेबिल देख लेना ज़रूरी है। कानपुर तक हम पहुँच जायँ सत्तावन रुपयों में इंदौर होकर, ऐसा बताइए।" अच्छा महाराज, अच्छा। बैठो तो शांत होकर लेकिन अब।

वर्षा, लघुशंका, मक्खियाँ, चाचाजी का निर्बाध निर्देश-पुंज, सब तो बाधक हैं मेरे इस समय। दोपहर होने को है—भोजन की तजवीज़ चलेगी अब। घर में कोई है नहीं, और पाचिका से धर्म-वितंडा लगने का भय जो है। लेकिन मैं कल की 'दैनंदिनी' पहले लिख लूँ। दूसरे दिन लिखने का कलंक लगा मेरे लेखन में।—चंद्रमा का-सा कलंक वह रहा आए देवि वीणापाणि! मैं किंतु पातक से डरकर नित्य लिख लूँ वैष्णवी महाबले—जयंती पापनाशिनी।

मुझे जाना था कचहरी। परेशानी में पत्रों के मज़मून बनाने का दायित्व पूरा करके भागा। आधे मील का मार्ग काटे नहीं कटना चाहता था। संयोग-वश मार्ग में मिल गए गँवई-गाँव के रहवैया एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाई—जा रहे थे कचहरी, प्रतिवेशी कन्या-पक्ष की ओर से छत्तीसगढ़ी वर-पक्ष के प्रतिकूल गवाही देने। कन्या का द्विरागमन नहीं हुआ। गवाह वादी की ओर से कहेगा—"डैकी बना डारे हे दूसर। धरम-चलन के रस्ता ले गवन काबर नहँ करावै बिहाती के १ गवना बर आतिस ते जान-तेन नहँ हम मन १ ससुरे के डेहरी ला खुँदा दय पहिली, फेर लेजै जहाँ पावै तहाँ ले,—ओकर तो माल अय।"—वर को कन्या-पक्ष पसंद नहीं करता शायद। कन्या वह अपनी वर के साथ बिदा नहीं करेगा। वर ने शायद दूसरी नारी रख ली है। वर शायद कहता है, मार्ग में कहीं पा जायगा, तो पाणिगृहीता पत्नी को पकड़ ले जायगा। छत्तीस-गढ़ की अल्पाधिक प्रचलित प्रथा के अनुसार कन्या दूसरे को पति-रूप में स्वीकार कर ले शायद। किंतु द्विरागमन के अवसर से वंचिता, सिंदूर-रंजिता, स्वभावतः मुकुलिता, विमुग्धा वधू मेरा मन आकृष्ट करके गँवई भाई से अधिक निकट-निकट मेरे मानसलोक के साथ हो ली। दुर्भाग्य वर भी अवश्य मेरे मानसिक मार्ग में आया। कल्पना-लोक की निमीलिता श्यामला, सौष्ठवा यौवना के सहित शीघ्र ही मैं कचहरी पहुँच गया, और लजीली सुंदरी यौवना आयत, काजरी लोचनों से वेदना में भी एक बार मेरी ओर मुसकिराकर अदृश्य हो गई।

कचहरी की बेंच पर तमाम देर बैठे रहने के बाद चपरासी ने सीधे नाम लेकर पुकारा—'ब' 'स' हाज़िर है—'ब' 'स' !—कहाँ का आदर-प्रदर्शन और कैसा शिष्टाचार? यह है न्यायालय—सत्य हैं वादी-प्रतिवादी 'ब' 'स'। गौण यहाँ उल्लेख्य नहीं है।

जज ने किसी ओर देखे बिना सूचना की सार वाणी में निर्देश किया—'मुक़दमा ख़ारिज हो गया।'—सत्यमेव जयति नानृतम्। 'ब' की मिथ्या लिप्सा निभ नहीं सकी। वह कष्ट से अभि-भूत न्यायालय से निकले।

घर आकर 'त' चाचा के साथ तुरंत गया पोस्ट-ऑफ़िस। छत्तीसगढ़ के बाज़ार का विचित्र, अनुपम रूप-सौंदर्य दिखाता हुआ वहाँ से फिर लौटा घर। मैं समझता था, 'त' चाचा बेंड़े स्वभाव के वितंडावादी मानव हैं, और धर्म वस्तु के आडं-बर में आचार को आलिंगन किए बैठे हैं, वास्तव धर्म किंतु उनका कुंठित है। परंतु अपनी भांति से मैं सचमुच संकुचित और लज्जित हुआ। मानव मानव को जिस दिन पहचानेगा, उस दिन विश्व-कवि रवि ठाकुर के शब्दों में एक बार उन्माद के स्वर से वह सारे विश्व के प्राणों को नर्तन-मुखर कर देगा—'सबार उपरे मानुष, ताहार उपरे नाईं।' 'त' चाचा के 'सबार उपरे मानुष' ने मेरे प्राण का उत्स उस क्षण जगा दिया। भोजन मैंने शाम को स्टोव और अँगीठियों के उपयोग से स्वतः बनाया, और 'त' चाचा के साथ बैठकर मधुर संलाप के सहित राजप्रासाद के सुमिष्ट, सुस्वादु व्यंजन के समान चाव से उसे पाया।

रात तो अधिक नहीं हुई थी, लेकिन मेरे दाहने पैर में सायेटिका की पीड़ा थी, और शाम को 'त' चाचा के सनिर्बंध अनुयोग से थोड़ी-सी बढ़िया 'विजया' पी गया था मैं। अतः शरीर और मन की सुखद, मृदुल वेदना-स्पर्श से कौन जाने कब निद्रित हो गया।

❀ ❀ ❀

रायपुर
२६।७।१९३९

प्रातः साढ़े सात के लगभग उठा—स्वतःप्रवृत्त होकर नहीं, गोपबाला दासी के जगाने पर। तमाम देर उसके पश्चात् अलस बैठा रहा। पैर में वात-व्याधि थी—'गृध्रसि' संस्कृत में जिसकी आख्या है। आठ बजे के पश्चात् शौच गया। शौच से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवृत्त होकर चाय बनाई मैंने। मकान यह छोड़कर माननीय प्रधान सचिव के निवास-भवन में जा रहा हूँ। गोपबाला दासी अपने निरीक्षण में चाय बनाने की सामग्री के अतिरिक्त सब ले जा चुकी थी वहाँ। तीन कप चाय पी गया मैं। कुल दो आने पैसे थे मेरे पास। दो पैसे की चीनी आई, दो पैसे का दूध दे गई ग्वालिन—चार पैसे बच रहे।

चाय के ही स्टोव में पानी गरम करके 'यादवपुर-सोप वर्क्स' के 'अंगराग' साबुन तथा 'बंगाल-केमिकल' के 'तिल-तैल' के सहयोग से स्नान किया मैंने। एक दिन पिक्चर में 'बंगाल-केमिकल' का चलचित्र-प्रदर्शन देखा था और सुना था कि श्रीयुत प्रफुल्लचंद्र राय ने शायद 'बंगाल-केमिकल' में पहरेदारों के अतिरिक्त अबंगाली कोई चाकर नहीं रक्खा है। मेरे मन में एक निमेष के लिये वितृष्णा उत्पन्न हो गई थी—मैंने सोचा था, आज से 'बंगाल-केमिकल' के किसी प्रसाधन-द्रव्य का उपयोग नहीं करूँगा। किंतु दूसरे ही निमेष मेरे सम्मुख विशाल कलकत्ता नगर का मारवाड़ी-वैभव जैसे नाच उठा। मैं जानता हूँ, मारवाड़ी उदात्त भी हैं, किंतु बंगाली शरच्चंद्र हैं, रवि ठाकुर हैं, चंडीदास हैं, मधुसूदन हैं, बंकिम बाबू हैं, गिरीश घोष हैं, चारु बाबू हैं, परशुराम हैं, निरुपमा, अनुरूपा सब तो हैं। इनमें से अनेक चट्टोपाध्याय, वंद्योपाध्याय आदि हैं, सब सार्वभौम शाश्वत बुद्धि-वैभव के अधिकारी हैं, सब ब्राह्मण हैं—सब कवि, कांत, कोमल, प्रेमिक हैं—सब मेरे हैं। और, मारवाड़ियों से मैं क्या नहीं ख़रीदता, अस्थि-मज्जा के तत्त्व का मूल्य देकर अन्न, वस्त्र, लवण, निवास, सबके लिये तो उनके द्वार तक जाता हूँ। लेकिन स्वतः मैं तो कुछ नहीं हूँ—अवश्य मानव मैं हूँ, और मानव मारवाड़ी भी हैं, और बंगालियों के प्रति तो मेरी आस्था स्वभावतः प्रकट ही हो चुकी है,—और मैं कहता हूँ, पूँजी-वाद के अभिशाप का आरोप और अपनी प्रीति-प्रतीति आख़िर मैं मारवाड़ी बंगाली में क्यों विभाजित करूँ—अभिशाप का नाम लेकर गंगा-स्नान करना पड़ेगा मुझे शायद, और अपनी प्रतीति-प्रीति—उसे मैं मानव भगवान् को अर्पित करता हूँ। अनिवार्य वस्तु परिस्थिति के अनुकूल संक्षिप्त देश की और देशी मानव के हाथों की सब से मुझे ख़रीदनी होगी, क्योंकि मानव के प्रत्युत्पन्नमतित्व को दूसरे ही निमेष जो मैं प्राप्त हो गया।

आयुष्मान् विद्यापति के संबंध में उनकी जननी को पत्र लिखा, उसके बाद मैंने—हज़ार ख़र्च बंद करके 'विद्यापति' के सुख और सुविधा की चिंता रक्खो। जानती हो—राजा है वह, वह कवि। देखो उसका उन्नत ललाट, प्रशस्त उसका मुखमंडल—आयत उसके लोचन-युगल। कष्ट उससे सहा नहीं जायगा। आदि *

* 'विद्यापति' महाराज शैशव में ही अपनी कांति, कोमलता, अपने कवित्व और अपने प्रेम का परिचय देकर पंद्रह एप्रिल की पुण्य तिथि को यह भव-सिंधु पार कर गए। इच्छामयी की इच्छा! २४। ६। १९३९ की अपनी 'दैनंदिनी' में उनकी आख्या के पहले 'चिरजीवी' शब्द लिख जाने पर मेरी 'सरस्वती श्री' मेरे सत्य की रक्षा करने के लिये मेरे अचेतन में ही जाग्रत् हो गई, और 'अचेतन' के अभ्यंतर के सत्य का आश्रय पाकर उँगलियों ने चिरजीवी शब्द पर खंडित रेखा खींच दी। मेरे प्राण उसी निमेष एक वज्रपात की आशंका से सिहर उठे थे! मिथ्या संबल का प्रयोग करके, किंतु मैंने अपने 'द्रष्टा' का संकेत उपेक्षित कर दिया। मैं क्या जानता था कि उसी निमेष हमारे 'विद्यापति' के अंतस्तल में महान् एक गान की ध्वनि उठी थी—

जनम अवधि हम रूप निहारनु,
नयन न तिरपित भेल;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक बज चुका था तब तक। प्रकृति और पाचक के विपर्यय में विवश मैंने 'श' बंधु के घर भोजन किया, और नीचे आकर, वायुतरंग आयत करके 'रेडियो' से लखनऊ का ब्राडकास्ट सुनने लगा—

'''टोरिया'वाला रुपिया जौन चलत है, सरकार ओहिका बंद नाहीं किहिस। एहते ओहिका जो कोऊ देय, तौ लइ ल्यावा चही। इनकार न करा चही। सरकार चहति है कि 'टोरिया'वाला

लाख-लाख जुग हिये हिया राखनु,
तऊ हिया जुड़ल न भेल।
साध न फुराय जतो देखि ततो,
हिया तऊ न जुड़ाय गो—

'विद्यापति' अपने गिरिधारीलाल से सम्मति लेकर हम लोगों में 'प्रेम' और 'पीड़ा' का प्रचार करने जो आ गए थे, और कार्य संपन्न होते देख कर उनका अंतर गा जो उठा था—

सजल नयन करि तारे एक दिन ना हेरिले,
जेनो शत जुग मने हय।

इसीलिये—केवल इसीलिये 'विद्यापति' की महाभागा जननी! अंतिम आह्वान के दिन माधव स्वतः अपना रथ सजाकर आ गए एक दिन—और सारथि माधव के प्रति आत्मनिवेदन की ध्वनि नहीं सुनी तूने अपने स्तन्यांतर के परिपूरक 'विद्यापति' की—

माधव, बहुत मिनति करि तोय।
दए तुलसी तिल देह समर्पिनु,
दया जनि छाड़बि मोय।
गनइते दोष-गुन लेश न पाओबि,
जब तुहुँ करबि विचार।
तरइते इह भव-सिंधु
तुअ पद-पल्लव करि अवलंबन
तिल एक देह दिनबंधु।

स्तन्य-पान के अपराध-मार्जना-स्वरूप ही तो उसके अंतर की करुण रागिनी बज उठी थी—सपना नहीं सुना तूने अपने 'पुतुआ' के मुख-अरविंद से शेष-प्रभात में और छलना नहीं जानी उसकी वाणी से मातृममतावश स्तन्यदायिनी होकर बहनरे—मायावी वह संबोधन देकर छल गया तुझे कि उसने अपने मुरारी को मार भगाया—रक्त बह उठा मुरारी के—क्यों? तू ही जान जननी—तेरी ममता एक दिन मुरारी को भी तेरे 'विद्यापति' के द्वारा शायद शासित, प्रतारित कर बैठी हो उसे। तू भी तो मायामयी, ममतामयी है। लेकिन तू तो छली गई उस दिन—

तुलसिदास चंदन घिसत,
तिलक देत रघुवीर।

और, 'तुलसीदास' देखकर भी नहीं देख पाए—और तूने अतृप्त, अनिमेष उसे वक्ष पर रखकर भी नहीं पहचान पाया? किंतु अब तो संतोष कर जननी! जानती नहीं, पतितपावनी गंगा को अपनी काया समर्पित करके पुण्यप्रणय, पुण्यस्नात तेरा 'विद्यापति' अपने मुरारी के सहित चला गया उनके चिर-लीला-निकेतन नंदन-लोक में।—अब तेरा कलेजा क्यों टूक हुआ जा रहा है। कोमल अपने कर-पल्लवों से दबा उसे। अरे, यह कर्मभूमि है, कर्ममुखर बन अब तू। फिर भरने को जो है तेरी गोदी! ले, गा अब एक बार करुण कंठ से विगलित करके करुण रागिनी—

हे निठुर! तो माते नहिं आशार आलो,
ताई कि तोमार रूप कृष्ण कालो?
तुमि त्रिभंग ताई तव सकलि द्याखा,
चोखे तव काजलेर छलना माथा
निषादेर हाते बाँशी सेजेछे भालो।

हे निठुर—

—और उस दिन को स्मरण करके फिर गा—

सजनि, आज शमन दिन हय।
तेरा दुख भूल जायगा।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपिया धीरे-धीरे नए सिक्कन म बदलि जाय। मुला चलन ओहिक्यार बजार म जारी किहे है। एहि ते चाँदी जौ नीकि होय, रुपिया बाजत होय, तौ लइ ल्यावा चही—इन्कार न करा चही। सुन्यौ पंचौ? जो कोउ रस्ता म तुमका मिलै, ओहि ते कहि दीन्ह्यो—टोरियावाला रुपिया, विक्टोरिया का सिक्का लइ लेवा चही—इन्कार न करा चही।"—इसी तरह का कुछ था।, याददाश्त के बिरते पर लिख रहा हूँ।—और, यह तो विज्ञापनीय है ही। रेडियो वस्तु और 'टोरिया-वाला रुपिया जातीय' विज्ञापन देश के काम की बात है।—बुद्धि-निर्देश भी जो उससे होगा।

डाकघर की ओर चला उसके बाद। आगे बढ़ते हुए मार्ग में मैंने देखा—स्वर्गीय प्रिय 'चंद्रिका' की मा-बहन बिस्तर-सामान बाँधे किराए के मकान में बैठी थीं। एक कोई युवक भी बैठा था एक ओर। मैंने सुना, 'चंद्रिका' की बहन ने अपनी मा से कहा—"त्रिपाठीजी जा रहे हैं।" शिष्टाचार के मिलन के लिये मैं लौट पड़ा।—विदग्धा रो पड़ी मा उनकी। विधवा अपनी जननी की अकेली पुत्र संतति थे 'चंद्रिका'। राजा लाड़ले चंद्रिका का लाड़-प्यार मा ने अतुल किया होगा। किंतु सपत्नी नियति को निर्दय सौतेला डाह जो उत्पन्न हो गया। संख्यातीत संतति है नियति की। 'चंद्रिका' की मा, किंतु सही नहीं जा सकीं उसके द्वारा। रोओ मत, किंतु जननी! अपने 'प्रिय' को तुम छिपा नहीं सकीं—आदर, आग्रह, अपत्य किंतु तुम्हारा व्यर्थ नहीं गया है। देखो तो उसका दुलार! संख्यातीत, कल्पनातीत में से एक तुम्हारे लाड़ले को प्यार किया है उसने। अकाल मृत्यु का कलंक धुल गया उसका!—भव-बाधा उसकी मिट गई। भूल नहीं सकेगी जननी तू प्रसव-वेदना? बलिष्ठ हाथ तेरे दबा नहीं सकेंगे टूक कलेजा तेरा?—किंतु तेरा लड़का तो राजा हो गया नारी,—विश्वजयी वह तेरा चंदा! तेरे पास कैसे आएगा अब वह? सपत्नी नियति भगवती ने स्वतः अपने दक्षिण अंगुष्ठ से राजतिलक लगाया है उसके। देख नारी देख!—कैसा तेरा लड़का? भूल उसे। सपत्नी की पूजा कर—विश्व की अधिष्ठात्री देवी की। तेरे दिन कट जायँगे।

डाकघर से लौटते समय 'ल' प्रेस गया। उनकी क़लम की सुंदर रेड-इंक जो निब मैं ले आया था, उसकी नोक एक दूसरे पर चढ़ गई थी, अतः मैंने दूसरी निब से बिना कहे उसे बदल लिया।

क़लम मेरी 'पेलिकन' आजकल मेरे पास नहीं है। नरेंद्र की 'प्रभात-फेरी' (पुस्तक) लिए एक दिन फिर रहा था। 'प्रभात-फेरी' नरेंद्र की होते हुए भी दाय की वस्तु है वह सबकी। और, पुस्तक 'क' की होते हुए भी 'प्रभात-फेरी' का अधिकारी, मैं समझता हूँ, मैं अधिक हूँ। पुस्तक 'क' से ले लेने का अधिकार न्याय-नीति की दृष्टि और प्रत्यय की दृष्टि से भी एकांत मुझे है। इसीलिये 'प्रभात-फेरी' मैंने 'क' को नहीं दी, और बदले में वह चोरी के विनोद के साथ मेरी क़लम लेकर अन्यत्र चले गए। इसीलिये तो मुझे रेड-इंक निब की चिंता करनी पड़ी। किंतु लिख मैं फिर नहीं सका।

❀ ❀ ❀

रायपुर
२१।१।१९४०

कई दिनों से भावना मन में पोषण किए चला आ रहा हूँ कि यह माघ-मास है, और फागुन अब आया। मानसिक कष्ट के दिनों में भी रँगीले फागुन की ममता से रात की चाँदनी में दो-चार बार मैं सुखानुभव कर चुका हूँ। लेकिन मुझे अब पता चला कि यह माघ नहीं, अभी पौष है। अतः अपनी 'दैनंदिनी' से मुझे माघ काटकर पौष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना पड़ा। एक मास जीवन का अधिक व्यतीत करके जीवन का एक मास माघ होता, तो मैं बढ़ा लेता—और दुःख और कष्ट मेरे फागुन की वेदना-मधुर स्मृति में फीके पड़ जाते। धैर्य-धारण के अतिरिक्त अवलंब और किंतु कुछ नहीं है—सारा माघ सिर पर मँडरा रहा है, और अभी तो यह पौष ही है।

सबेरे साढ़े सात के लगभग ही उठा होऊँगा। चाय पीकर बैरिस्टर से मिलने गया। साढ़े दस बजे वापस आ सका। एक कुरता, एक बनियाइन, एक धोती और एक अंडरवियर साबुन-से अपने हाथ से धोकर सुखाया मैंने। पाख़ाने में दो बालटी पानी डालकर मेहतरानी को पाख़ाना धोने में मदद दी, और स्नान किया। रेशम के सुंदर वस्त्र पहनकर भोजन करने गया 'श' के घर। डाकघर गया उसके बाद। रास्ते में 'ल' प्रेस में बैठकर, प्रेस के संचालक की भानजियों से माँगकर बेर खाता रहा, और गुजराती-विनोद की बातें पूछता रहा।

तीन के लगभग आवास-स्थल पर आया। चाय पीकर और कष्ट और उद्वेग के दो पत्र लिखकर साहित्य पढ़ता रहा।

शाम को साढ़े सात के लगभग भोजन करने चला। मार्ग में छाया और प्रकाश की धूमिलता में स्थिर, दंडायमान वृक्ष देखकर भावना में पड़ गया। नगर की निर्ममता प्रकृति के विपर्यय के अतिरिक्त अधिक वृक्ष सहते हैं। शाखाएँ उनकी बिजली-विभाग द्वारा कटवा डाली गई हैं—सहिष्णु और प्रशांत, किंतु वे स्थिर और दंडायमान हैं।—मेरा तुलना मूक इन वृक्षों के भी अनुरूप नहीं है। मेरा मन अत्यंत विवश और अशांत है।

साढ़े आठ के लगभग बैरिस्टर के बँगले गया। साढ़े ग्यारह तक उनसे मनोविनोद की बातें करता रहा। उसके बाद वापस आया, और पंद्रह-बीस मिनट लिखकर सो गया।

❀ ❀ ❀

रायपुर

१२, पौष-शुक्ला, १९९६

रात एक बजे—

अनुक्षण मैं व्यस्त हूँ,—अनुक्षण चेष्टानिरत और चिंताकुल। अवकाश मेरे निकट नामगंध को नहीं है। अनेक मेरे मन में नव-भावनाएँ हैं, और अनेक मेरे दायित्व के काम हैं।—

मन! चल, बस प्रेम-नगर में।
.....
प्रेम-नगर अति सुंदर कहिए,
.....
मन! चल, बस प्रेम-नगर में।
.....
प्रेम हि ठाकुर, प्रेम पुजारी—

रिकार्ड बज रहा है, और मैं 'दैनंदिनी' लिखने की चेष्टा कर रहा हूँ।—नित्य-कर्मों से निवृत्ति के अतिरिक्त दिन-भर शिक्षा-संबंधी लेखन में लगा रहा हूँ।

किसने जहाँ में सुख देखा है,.....
किसे जीवन में ग़म ने जलाया नहीं?

रिकार्ड अपनी गति से बज रहा है। चाय बनाई जा रही है। पाचक यंत्र की गति से स्टोव को पंप कर रहा है।

चाय पीकर और रिकार्ड बजाकर सो गया मैं।

❀ ❀ ❀

जगदलपुर (ईस्टर्न स्टेट्स, एजेंसी)

१७। ४। १९४०

सवा पाँच, संध्या—

जीवन के मेरे दिन शायद इसी प्रकार बीत जायँगे, और मैं जीवन में कुछ कर नहीं सकूँगा। 'दैनंदिनी' प्रीति की मेरा मधुर-मधुर उपादान है—'दैनंदिनी' भी, किंतु मैं नियम-पूर्वक नित्य लिख नहीं पाता, और साधना मेरी अधूरी रह जाती है। लोग कहते हैं, शाप-भ्रष्टों का जीवन शाप के कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुःख में, पीड़ा में अकारथ जाता है; मैं किंतु कह सकता हूँ कि मेरे जीवन में दुःख और पीड़ा शाप-भ्रष्टों की अपेक्षा कहीं—कहीं अधिक है, किंतु पीड़ा मेरी मधुरतम ही मेरे पक्ष में नहीं है—प्राणवंत और मुखर भी है।

मुखर और प्राणवंत कहीं शाप से संयुक्त होता है? मैं—मैं जानता हूँ कि शाप-भ्रष्ट मैं नहीं हूँ। मेरी पीड़ा प्राणवंत और मुखर जिस प्रकार है, उसी प्रकार पीड़ा के मेरे उन्नायक—गिरिधर गोपाल से भी संयुक्त है। और, इसीलिये मैं कह सकता हूँ कि मेरा जीवन अकारथ नहीं जायगा।

लोग कहते हैं, लोगों के सामने जो कुछ कर नहीं जाता, लोग जिसे जीवन के पश्चात् पहचानने को जीवित नहीं रहते, जिसके कृतित्व नहीं होता, संसार नहीं होता, उसका जीवन अकारथ जाता है। इस मानी में अनेकांश मेरा जीवन अकारथ जायगा, यह मैं जीवन के अपने आधे वयस के आज के इस संध्या-काल में चरम विश्वास और चरम सत्य के समान लिख रहा हूँ।—लोगों के सामने मैं कुछ कर नहीं जाऊँगा, कर नहीं जा सकूँगा; जीवन के पश्चात् लोग मुझे पहचानने को जीवित नहीं रहेंगे, मेरे न कृतित्व है, न कृतित्व होगा; किंतु मैं कह सकता हूँ कि जीवन मेरा अकारथ नहीं जायगा—निभृत का, एकांत का, व्यथाजनक, पीड़ा-मूलक, मुखर और प्राणवंत जीवन में यदि अस्तित्व-मय है, तो निभृत में, एकांत में व्यथा, पीड़ा मेरी मुखर और प्राणवंत मेरे जीवन के बाद चिरजीवित रहेगी—और अकारथ मेरा जीवन जा नहीं सकेगा।

आज मेरे सुख की सीमा नहीं है। ये पंक्तियाँ ही आज मेरी 'दैनंदिनी' की पूरक हों।

गद्य-गीत

[श्रीकुमारी दिनेशनंदिनी चोरड्या]

रजनी मधु से नहाई, और मोतियों से शृंगार किया। यौवन की विस्मृति पाल-कर फूलों ने आसव-पान किया। जीवन की साधना ने झाँक-झाँककर अस्फुट अधरों से प्रकृति के सुहाग की सराहना की। मृत्यु ने आशा को बाँधकर तुम्हारा आह्वान किया।

प्रतीक्षा स्तब्ध रही।

सपने बिखर गए, मनुहार मुर्झा गई, तुम न दिखे। रोएँ रो-रो उठे, किंतु .....!

मोहक रजनी ने मधु से नहाकर मोतियों का शृंगार किया!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संतान के प्रति कृतज्ञता

[श्रीपं० आत्मस्वरूप शर्मा, संपादक दैनिक हिंदी-मिलाप, लाहौर]

अपनी ही बात कहूँ। मेरी आयु इकतालीस वर्ष की है। बीस वर्ष से भी कुछ ऊपर हुए, मेरा विवाह हुआ था। इस काल में मेरे दस के क़रीब बच्चे हुए, जिनमें से छ जीवित हैं। अब छओ बच्चे बड़े-बड़े हैं। सबसे छोटे बालक की उमर साढ़े पाँच साल की है। परमेश्वर ने शुरू में लड़कियाँ ही दीं। अब गेहूँ के आटे में थोड़ा-सा बेसन मिल गया, अर्थात् दो बालक हो गए, तो चपाती का स्वाद बदल गया। मुझे याद है, पहला बच्चा जब ज़रा होशमंद हुआ, तो चाव का कोई ठिकाना न था। ज़रा बोलने लगा, तो वह घर का खिलौना और दिल-बहलाव की एक अत्यंत आकर्षक वस्तु बन गया। उससे तोतली बातें कर बड़ा आनंद होता और जी चाहता कि घंटों बच्चे की भाषा में बातें किए जायँ। बच्चा चारपाई पकड़कर खड़ा होने लगा, तो अपार हर्ष हुआ, और आशा बँध गई कि वह थोड़े ही दिनों में हमारी उँगली पकड़कर चलने लगेगा, तब हम उसे अपने साथ बाज़ार ले जाया करेंगे, उसे खाने को ले दिया करेंगे, जिससे वह ख़ुश होगा, और हम उसे देख गद्गद हुआ करेंगे। यह बच्चा आयु की सारी मंज़िलों से गुज़र गया—अब हमारे सामने वह एक १८-१९ वर्ष की कन्या के रूप में मौजूद है। बचपन में बच्चा जितनी ख़ुशी देता था, अब नहीं देता। यद्यपि कहनेवाले तो यही कहते हैं कि बच्चा माता-पिता के लिये हमेशा बच्चा और वैसा ही प्यारा बच्चा रहता है। अनुभव से यह बात सत्य नहीं मालूम होती। बच्चा जब तक हम पर निर्भर है, हम उसके साथ विशेष प्यार और लगाव अनुभव करते हैं, और हमें उससे कुछ समय के लिये जुदा होना भी दूभर होता है। मगर बच्चा ज्यों-ज्यों बड़ा होता है, हमारी उसके संबंध में उदासीन रहने की हिम्मत में वृद्धि होती चली जाती है, यहाँ तक कि आख़िर हम उसे अपने से एक लंबे समय के लिये भी जुदा कर सकते हैं, उसे पढ़ाई के लिये किसी बोर्डिंग में रख सकते हैं, और बाद में वर्षों के लिये विदेश भी भेज सकते हैं। केवल इतना ही नहीं, विवाह हो जाने के

श्रीपं० आत्मस्वरूप शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद हमें यह भी गवारा होता है कि हमारा बच्चा या बच्ची हमसे हर तरह अलग रहे, और हम केवल उसकी 'ठंडी पवन' अर्थात् सुखी जीवन की ख़बरें पाकर ही संतुष्ट हो जाया करें। माता-पिता के बच्चों के साथ संबंध में यह एक अद्भुत परिवर्तन है, जो धीरे-धीरे बराबर आता चला जाता है, और इसमें एक मंज़िल वह भी आ जाती है, जब हम अपने बच्चों से डाह और ईर्ष्या करने लगते हैं। जिन लड़कों का विवाह हम इतने चाव से करते हैं, जब वे घरवालियाँ ले आते हैं, और स्वभावतः उनके साथ घुल-मिल जाते हैं, तो ऐसे भी माता-पिता हैं, जो इस दृश्य को सहन नहीं कर सकते। माएँ कहती हैं—"बहू क्या आई, उसने मेरे बेटे पर जादू डाल दिया—अब वह मा-बाप को कब पहचानने लगा?" ऐसा कहनेवाली माएँ बहुत मनचली हों, तो 'भेद-नीति' से काम लेने की कोशिश करती हैं—बेटे के कानों में बहू के विरुद्ध विष डालती हैं, जिससे पहले अनमेल और फिर जूती-पैज़ार तक नौबत पहुँचे। पिताजी का अपने दिल की जलन मिटाने का और ढंग होता है। वह बेटे और बहू के तौर-तरीक़े पर सामयिक और असामयिक, दोनो प्रकार की टिप्पणी करते हैं। कहते हैं—"आजकल के लड़कों और लड़कियों की निर्लज्जता चरम सीमा को पहुँच गई है। इन्हें माता-पिता का भी लिहाज़ नहीं। ये हमारे सामने इतनी आज़ादी से रहते और बातें करते हैं कि इन्हें देखकर हमें तो शर्म आ जाती है, मगर इन्हें नहीं आती!" ये सब बच्चों से माता-पिता की ईर्ष्या और डाह के नमूने हैं। माता-पिता प्रायः अपना समय भूल जाते हैं, और साधारणतः बच्चों के प्रति उनके व्यवहार में बड़ा दोष भी यही है कि वे अपना दृष्टि-कोण उन पर ठूँसना चाहते हैं। उन्हें इस बात का ख़याल नहीं रहता कि वे किस ज़माने में पैदा हुए हैं, और उनके बच्चे किस ज़माने में।

यह बात मानने योग्य नहीं कि माता-पिता को बच्चे हमेशा एक-से प्यारे रहते हैं। सब बच्चों से माता-पिता का एक-सा व्यवहार नहीं होता, और न सब बच्चों के प्रति एक-सा प्यार ही होता है। प्रत्येक बच्चे के प्रति माता-पिता का रुख़ जुदा-जुदा रहता है। यह प्रत्यक्ष देखा जा सकता तथा माता-पिता होते हुए अपने व्यवहार से अनुभव भी किया जा सकता है।

ऐसा क्यों है कि बच्चों के प्रति हमारे व्यवहार में धीरे-धीरे अंतर आ जाता है? इस विषय पर मेरा अध्ययन तो यही है कि माता-पिता और संतान के संबंध में भी अन्य संबंधों की तरह स्वार्थ का भाव काम करता है। जब तक संतान से स्वार्थ-पूर्ति होती है, वह प्रिय मालूम होती है, और ज्यों-ज्यों स्वार्थ की तृप्ति की मात्रा कम होती जाती है, त्यों-त्यों प्यार भी कम होता जाता है, और उसका जो रूप अंत में रह जाता है, वह आरंभ के प्यार से बिलकुल भिन्न प्रकार का होता है। पूछनेवाले पूछ सकते हैं कि छोटे बच्चों से हमारी क्या स्वार्थ-पूर्ति होती है? यह सवाल प्रत्येक माता-पिता के अपने जवाब देने का है। हम पूछते हैं, क्या बच्चा घर का दीपक और सुनसान दुनिया की रौनक़ नहीं? उससे जो ख़ुशी मिलती है, उसकी क़ीमत तो माता-पिता किसी भी प्रकार अदा नहीं कर सकते। क्या हम अपनी संतान पर दया करते हैं, जो उन्हें पालते हैं? कोई इन प्यारी वस्तुओं को न पालकर तो दिखाए। मनुष्य तो क्या, पशु भी अपनी संतान से स्वाभाविक स्नेह रखता है, और उसे वह अपने लिये और अपनी ही तृप्ति के लिये पालता है—उसके लिये नहीं। इस वस्तु-स्थिति के समक्ष माता-पिता का संतान को पालने और बड़ा करने में क्या और कितना उपकार है, यह भले प्रकार जाँचा जा सकता है। बच्चे उस हर्ष और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनंद के रूप में, जो उनसे प्राप्त किया जाता है, माता-पिता को उस कष्ट की क़ीमत कईगुना अधिक अदा कर देते हैं, जो स्नेह-वश वे संतान के लिये उठाते हैं। बच्चों को प्रसन्न देखकर चित्त को तृप्ति और संतोष होता है, और माता-पिता होते हुए यही समझ में आता है कि हमने अपना कर्तव्य अपने लिये पालन किया।

यहाँ माता-पिता के बच्चों के साथ प्यार के भिन्न रूप धारण कर लेने के एक और कारण पर विचार कर लेना भी उचित होगा। एक कारण—स्वार्थ—तो हम ऊपर बता आए। छोटे की अपेक्षा बड़े बच्चे में प्यार की मात्रा के कम होने तथा उसके एक भिन्न रूप धारण करने का दूसरा कारण यह भी है कि मनुष्य स्वभाव से दूसरे को अपने अधीन तथा अपने ऊपर निर्भर देखने का अभ्यासी है, और इससे उसे प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष प्रसन्नता होती है। मनुष्य होते हुए माता-पिता भी इस साधारण नियम की छूट में नहीं। जब तक बच्चा अबोध और निर्बल होता है, नामालूम तौर पर उपर्युक्त प्रकार के स्वभाव की तृप्ति होती रहती है, और माता-पिता बच्चों से प्रसन्न रहते हैं, पर ज्यों-ज्यों संतान न केवल माता-पिता के आश्रय से मुक्त होती जाती है, बल्कि उसे आमने-सामने होकर उनसे गुस्ताख़ी करने में भी संकोच नहीं होता, माता-पिता के मोह में अंतर आ जाता है। और, चूँकि आयु के साथ बच्चे स्वावलंबी और माता-पिता से लापरवाह होने लगते हैं, इसलिये संतान और माता-पिता के संबंधों की मिठास में भारी अंतर आ जाता है। जिन्हें हम आज्ञाकारी संतान कहते हैं, और जो माता-पिता की स्नेह-भाजन बनी रहती हैं, वास्तव में वे माता-पिता के भीतर के मनुष्य के दूसरे को अधीन रखने के स्वभाव को तृप्त करने की सामग्री हैं। इसीलिये यह निर्णय करना कि संतान की 'अधीनता' कहाँ गुण-रूप में विद्यमान है, और कहाँ केवल माता-पिता की 'मनुष्य-प्रकृति' के संतोष के रूप में—कुछ कठिन ही बात है।

अब देखना यह है कि संतान को जन्म देने में माता-पिता का उपकार कितना और कहाँ तक है? एक पिता के रूप में मैंने इस प्रश्न पर जितना भी सोचा है, मुझे कोई ज्योति प्राप्त नहीं हो सकी। मैं यह समझने में बिलकुल असमर्थ हूँ कि मैंने अपने बच्चों के इस संसार में आने का कारण बनकर उन पर कोई उपकार किया है, जिसके लिये उन्हें मेरा आभारी अनुभव करना चाहिए। माता और पिता, दोनो के संतान के साथ संबंध में माता का दर्जा प्रत्येक अवस्था में पिता से ऊँचा है। मा की ममता और स्नेह में निःस्वार्थता का कुछ अंश मौजूद है। उसका संतान से स्वाभाविक स्नेह अद्वितीय है, और शुद्धता एवं पवित्रता की दृष्टि से संसार का अन्य कोई स्नेह उस तक पहुँच नहीं सकता। मा निश्चय संतान के लिये कष्ट उठाती है, और उसे कई हालतों में मा बनने के लिये विवश किया जाता है। बच्चा उसके रक्त से बनता और दूध के रूप में उसके रक्त ही पर पलता है। स्थूल आकार में मा के शरीर का अंश होने के कारण माता यदि बच्चे से अथाह प्यार करती है, तो इसमें आश्चर्य क्या? इसकी तुलना में पिता का संतान को पैदा करने में भाग क्या है?—यह प्रत्येक पिता अपना हृदय टटोल-कर मालूम कर सकता है। पिता किसी धर्म-भाव से प्रेरित होकर संतान के जन्म का कारण नहीं बनता। इसमें निज विषय-वासना की तृप्ति का अंश अधिक ही नहीं, प्रधान है। यह विस्तार से कहने की बात नहीं—कोई भी विवाहित पुरुष इस कथन की सत्यता से परिचित है। जो पिता संतान से कभी यह कहता है कि हमने तुम्हें जन्म दिया, पाला-पोसा, और इतना बड़ा किया—पिता की पोल से परिचित होते हुए मेरा उसकी इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डींग पर हँस देने को जी चाहता है। एक किसी पिता के रोज़-रोज़ के ऐसे तानों से तंग आकर एक पुत्र ने एक बार कह भी दिया था—"दिखाइए वह दरख़्वास्त, जो मैंने आपके हुज़ूर में दी थी कि आप मुझे पैदा करें।" पालना और पोसना संतान पर कोई मेहरबानी नहीं। बच्चे इतनी प्यारी चीज़ हैं कि हम उन्हें पाले-पोसे बिना रह ही नहीं सकते। पालने-पोसने की डींग तो तब हाँकी जाय, यदि पाले-पोसे बिना भी कभी काम चला या चल सकता हो। जो अनिवार्य कर्तव्य हमें पालन करना ही है—चाहे स्नेह से, चाहे लोक-लज्जा से—उसमें संतान पर उपकार की कोई बात नहीं रह जाती। जिस संबंध को निभाए बिना हमारा गुज़ारा ही नहीं, उसे निभाने में भला हमारी क्या बहादुरी है!

हम भाग्य और परमेश्वर की इच्छा की ओट में अपने निजी दोषों और अपराधों को छिपाना चाहें, तो और बात है, नहीं तो बच्चों को अपने स्वार्थ के लिये इस संसार में लाने और दुःख-सागर में धक्का देने की सारी ज़िम्मेदारी माता-पिता ही की है। कुरूप और अपाहिज बच्चे पैदा करने का उत्तरदायित्व बहुत कुछ माता-पिता का है, और ऐसे बच्चों को संसार में प्रवेश के अनंतर जिन कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना होता है, उसके दायित्व से भी क्या माता-पिता इनकार कर सकते हैं? कितने ही माता-पिता कुकर्म और सट्टे बाज़ियों में और कुछ आत्म-त्याग की लटक में भी धन और बड़ी-बड़ी संपत्तियाँ बरबाद कर देते हैं, और संतान को कई हालतों में इसका भुगतान पीढ़ियों तक भुगतना पड़ता है। हमारी ग़रीबी और जीवन में निजी असावधानियों की सज़ा भला हमारे बच्चों को क्यों मिलनी चाहिए? बुरी दशा और स्थिति में भी यदि हम संतान को इस संसार में लाने के लिये गर्व अनुभव करते हैं, तो ऐसा गर्व झूठा ही नहीं, निष्ठुरता-पूर्ण भी है। और, यदि हम आशा रखते हैं कि हमारे बच्चे ऐसी दशा में भी हमारे प्रति कृतज्ञता का अनुभव करेंगे, तो ऐसी आशा पूर्ण रूप से अनुचित है। हमें तो उल्टे अपनी संतान के प्रति कृतज्ञ होने की आवश्यकता है, जिन्हें हम केवल अपनी इच्छा से और अपने ही स्वार्थी उद्देश्यों के लिये संसार में लाते हैं।

माता-पिता ज़रा होश की हालत में होकर विचार करें, तो उन्हें मालूम हो कि बच्चों के प्रति उनका आरंभ से अंत तक सारा व्यवहार ही अन्याय से भरा है। हमारे क्रोध, हमारे दंड और हमारे दिल और दिमाग़ की दुर्बलताओं का सारा नज़ला हमारी असहाय औलाद पर गिरता है, और बच्चे उसे धैर्य से सहन करते हैं। कोई भी विवेकी पिता और माता बच्चों के प्रति अपने व्यवहार का विश्लेषण कर देख सकेंगे कि वे कितने अन्यायकारी और अपने बच्चों से अनुचित प्रकार के लाभ उठाने के अभ्यासी हैं। हम अपनी मनमानियों को मुख्य रख बच्चों के साथ कठोरता का व्यवहार करते हैं। उनसे वह करवाते हैं, जो हम स्वयं करना पसंद नहीं करते। हमें अपना बचपन भूल जाता है, और यदि याद भी रहता है, तो हम उस पर अति-शयोक्ति और कई हालतों में ग़लत-बयानी का परदा डालकर बच्चों के सामने अपनी झूठी डींगें हाँकते हैं। हम स्वयं जो कुछ भी चाहें, करना अपना अधिकार मानते हैं, क्योंकि हम उमर में बड़े हैं, पर अनावश्यक टोका-टाकी से बच्चों का नाक में दम किए रहते हैं। बच्चों के साथ प्रतिदिन के व्यवहार में हम कितने युक्ति-शून्य और अन्याय-कारी हैं, यह जानना कठिन नहीं। लेकिन हमारी तमाम बेहूदियों को हमारी संतान केवल इसलिये सहन करती है कि उसे हमारे आश्रय की आव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्यकता है, और वह हमारे अन्याय को अन्याय अनुभव करते हुए भी मुँह से कह नहीं सकती। यह इसलिये कि हम आयु में बड़े हैं, और हमें अन्याय करने के पूर्ण अधिकार प्राप्त हैं। इस असहनीय अवस्था में भी यदि माता-पिता यह आशा रखते हैं कि उनकी संतान उनके प्रति कृतज्ञता अनुभव करेगी, और उन्हें अपना उपकारी मानकर उनकी पूजा किया करेगी, तो यह कोरी ज़बर्दस्ती और बच्चों से एक अयुक्त बात की आशा है।

सत्य का तक़ाज़ा तो यह है कि माता-पिता अपनी संतान के प्रति आभारी और कृतज्ञता अनुभव करें, और यदि संभव हो, तो उनके पैर पकड़कर फूट-फूटकर रोएँ, और कहें—

"ऐ बच्चो ! विषय-लिप्सा और स्वार्थ के लिये हमने तुम्हें जन्म दिया। अपने स्वाभाविक मातृ और पितृस्नेह के वश हो हमने तुम्हें पाला-पोसा, और इस प्रकार अपना कर्तव्य पालन किया। तुम्हारे शैशव-काल में हमने घर की रौनक़ और अपने दिल के अपार हर्ष के रूप में तुमसे इतना प्राप्त किया कि इसका बदला हम किसी प्रकार चुका नहीं सकते। तुम हमारी प्रसन्नता का कारण बने, मगर हम तुम्हें उसके बदले में बहुत कम प्रसन्न रख सके। हमने तुम्हारे साथ बहुत बार अन्याय किए, और अन्याय करते ही रहे, पर तुमने मूक रहकर सब सहन किया, तुम हमारा सम्मान करते ही रहे। संभवतः इसलिये कि तुम भोले थे। अन्यथा हम उस सम्मान के अधिकारी न थे, जो तुमने हमारे प्रति प्रदर्शित किया। तुमने हमारे साथ निरंतर सहानुभूति की। तुम अपनी बालक-बुद्धि से भी घर की परिस्थितियाँ और माता-पिता की हालत समझकर हमारे साथ महान् सहानुभूति प्रकट करते रहे। तुमने कई मौक़ों पर हमारे लिये त्याग भी किया। तुम जानते थे कि घर में पैसे की तंगी है, इसलिये तुम अपनी कितनी ही इच्छाओं और आकांक्षाओं को दबा लेते रहे कि कहीं तुम्हारे माता-पिता को तुमसे कष्ट न हो। हमारी ग़रीबी के तुम सहर्ष हिस्सेदार बने, और तुमने दूसरों की चुपड़ी देखते हुए भी हमारे साथ रूखी खाना स्वीकार किया। तुमने वही कुछ खाया, जो हमने तुम्हारे सामने रक्खा, और वही कुछ पहना, जो हमने तुम्हें पहनने को दिया। हमने तुम्हें जिस-जिस प्रकार की दशा में रक्खा, तुम रहे, और आख़िर वही कुछ बने, जो हम तुम्हें बना सके। तुम गीली मिट्टी की एक गोली की तरह हमारे हाथों में रहे कि हम तुम्हें जिस तरह भी चाहें, दबा लें। हमने तुम्हें दबाया, और पिचकाया भी, मगर तुमने उफ़् नहीं की। हमने तुम्हें अपनी बुद्धि के अनुसार और प्रायः केवल अपनी ही रुचियों को मुख्य रख विवाह-बंधन में जकड़ दिया। तुम हमारे निर्णय पर संतुष्ट रहे, और तुमने विवाहित जीवन में भी हमारी ख़ुशी ही मुख्य रक्खी, चाहे हमारा फ़ैसला तुम्हारे अनुकूल था या प्रतिकूल। अब तुम सुखी हो, तो अपने भाग्य से। और, इसकी हमें ख़ुशी है, लेकिन यदि तुम संसार में ठोकरें खा रहे हो, तो हमें इसका दुःख है, क्योंकि तुम्हें इस संसार में लाने का कारण हमीं हैं।" प्रभु ने मानवीय संबंधों में यह संबंध भी क्या अद्भुत बना दिया है।

लाई हयात, आए, क़ज़ा ले चली, चले;
अपनी ख़ुशी न आए, न अपनी ख़ुशी चले।

एक मनुष्य का बच्चा यही शेर पढ़ता हुआ अपनी जीवन-लीला समाप्त कर आख़िर इस दुनिया से बिदा हो सकता है, लेकिन आंतरिक सत्य यही है कि माता-पिता को बच्चों के प्रति कृतज्ञ होने की आवश्यकता है, बच्चों को माता-पिता के प्रति नहीं। यह एक कृतज्ञ पिता का अंतःकरण बोल रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर-वधुओं को भेट में देने योग्य पुस्तकें

१—दांपत्य जीवन

लेखक, श्रीरामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०। यह नव-विवाहित दंपतियों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इस ग्रंथ में विवाह के उपरांत के गहन प्रश्न—आलिंगन, चुंबन तथा सहवास आदि—पर बहुत ही मार्मिक एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली यह राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। जो लोग ठगों के कारण काम-शास्त्र को एक अश्लील एवं गंदी पुस्तक बताकर सदैव उसकी निंदा किया करते हैं, नाम सुनकर घृणा करते हैं, वे ही इसे पढ़कर सहर्ष राष्ट्र के भावी कर्णधारों के हाथ में देने को तैयार हो जायँगे। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

२—काम-विज्ञान

रचयिता, उदीयमान लेखक पंडित दीनानाथ व्यास विशारद। यह नव-विवाहित नवयुवकों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इस विषय पर हिंदी-भाषा में इने-गिने ग्रंथ हैं, किंतु उनमें वैवाहिक समस्याओं को समझाने की चेष्टा तक नहीं की गई। वैवाहिक शिक्षण, विषय का नैतिक धरातल, वैषयिक उत्कंठा, दांपतिक साम्य, सच्चा वैवाहिक जीवन आदि इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। प्रत्येक घर में इसकी एक प्रति रहनी चाहिए। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

३—फूलों की सेज

लेखक, श्रीविजयबहादुरसिंह बी० ए०। इस अपूर्व पुस्तक में वयस्क युवक-युवतियों एवं नव-विवाहित वर-वधुओं के हित की बातों का बड़ा ही मार्मिक वर्णन हुआ है। इसके मुख्य-मुख्य विषय ये हैं—यौवन, स्त्री-पुरुष के कर्तव्य, स्तन, ऋतु-धर्म, शय्या, समागम, अप्राकृतिक गमन, ऋतु-बाधा, प्रदर, हिस्टीरिया, वीर्य और आर्तव, गर्भाधान, वंध्यात्व, गर्भावस्था-समय, गर्भ रहने के लक्षण, दौर्हृद, गर्भ-स्राव और गर्भ-प्रसव इत्यादि। पुस्तक तरुणियों के लिये जीवन-प्रदीप है, और प्रत्येक स्त्री के लिये आवश्यक ज्ञान की वस्तु। इसमें अश्लीलता, अभद्रता एवं कामासक्तता का लेश-मात्र भी समावेश नहीं, अतएव इसे शिक्षित माता-पिता निस्संकोच भाव से अपने पुत्र-पुत्रियों और वधुओं के हाथों में दे सकते हैं। मूल्य सादी २), सजिल्द २॥)

४—आदर्श पत्नी अर्थात् इंदिरा के पत्र

लेखक, श्रीरामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०। प्रस्तुत पुस्तक में इंदिरा ने अपनी अभिन्न-हृदया सहेली शांता के लिये पत्रों के रूप में विवाहित जीवन को सफल एवं सुखी बनाने के लिये बड़ी अमूल्य सीख दी है। इस पुस्तक में नारी-हृदय और पुरुष-हृदय की ऐसी रहस्यमयी बातें बतलाई हैं कि जिनके समझे विना दांपत्य विवाहित जीवन सुखी नहीं बन सकता। इसमें केवल-मात्र सिद्धांतों (Theories) का विवेचन नहीं है, प्रत्युत क्रियात्मक रूप से प्रत्येक विषय पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक सर्वथा शिष्ट, संयत और सुंदर भाषा में लिखी गई है, जिससे प्रत्येक साधारण पाठिका आसानी से समझ सकती है। प्रत्येक विवाहिता स्त्री को हर समय इसकी एक प्रति अपने पास रखनी चाहिए। मूल्य १), सजिल्द १॥)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५—सुखी जीवन

लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री। प्रस्तुत पुस्तक में आचार्यजी ने अधिकार-पूर्ण सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। ग्रामीण और नागरिक स्त्री-पुरुषों तथा विशेषकर स्त्रियों के लिये पुस्तक अत्यंत लाभदायिनी है। स्त्रियों का बचपन, उनका गार्हस्थ्य जीवन, उनकी तंदुरुस्ती आदि विषयों की जानकारी प्राप्त कर लेने पर स्त्रियाँ अपना जीवन निस्संदेह सुख-पूर्वक बिता सकती हैं। पुस्तक प्रत्येक स्त्री के हाथ में जाना अत्यंत आवश्यक है। मूल्य सादी ।॥), सजिल्द १।)

६—शिशु-पालन

लेखक, वैद्यराज श्रीअत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार। भारतवर्ष में आज दिन बच्चों की दशा कितनी शोचनीय है, यह किसी भी शिक्षित मनुष्य से छिपा नहीं। आपको किसी विरली ही सौभाग्यवती माता की ऐसी गोद मिलेगी, जिसके दो-एक अमूल्य लाल बाल-अवस्था ही में काल-कवलित न हो गए हों। जब हम दूसरे देशों से अपने देश की तुलना करते हैं, तो हमें भले प्रकार ज्ञात हो जाता है कि हमारे ही देश में सबसे अधिक बच्चों की मृत्यु होती है; और जो जीते भी हैं, उनमें अधिकांश रोगी, निर्बल और कम आयुवाले होते हैं। इस शोचनीय स्थिति में भारत के जातीयता-रूपी महल को सुदृढ़ बनाने के लिये यह परमावश्यक है कि उसकी नींव को सुदृढ़ बनाया जाय। प्रत्येक जाति की नींव उसके बच्चे हैं, और उन्हीं पर देश तथा समाज का भविष्य निर्भर है।

इस पुस्तक में शिशु-पालन-संबंधी समस्त ज्ञातव्य बातों का, बड़ी ही सरल भाषा में, वर्णन किया गया है, कोई बात छोड़ी नहीं गई। पुस्तक माताओं के बड़े काम की है। अनेकों रंगीन तथा सादे चित्र भी हैं। मूल्य २), सजिल्द २॥)

७—धात्री शिक्षा

लेखक, वैद्यराज श्रीअत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार। पुस्तक के नाम से ही उसका महत्त्व समझ लीजिए। अब तक हिंदी-संसार में कोई ऐसी पुस्तक न थी, जिससे धात्री (Nurse) लाभ उठा सकें। लेखक ने इस पुस्तक को लिखकर एक बहुत उपयोगी विषय की पूर्ति की है। पुस्तक में प्रसव-संबंधी सभी विषयों पर अच्छी तरह प्रकाश डाला गया है, और कठिन स्थलों पर आवश्यकीय अनेक चित्र देकर विषय को सबके समझने योग्य बनाने में कोई बात उठा नहीं रक्खी गई है। १९ हाफ़टोन और ३१ रेखा-चित्र। मूल्य सादी २), सजिल्द २॥)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् बुद्ध के प्रति*

[श्रीपं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला']

आज सभ्यता के वैज्ञानिक जड़ विकास पर
गर्वित विश्व नष्ट होने की ओर अग्रसर
स्पष्ट दिख रहा; सुख के लिये खिलौने - जैसे
बने हुए वैज्ञानिक साधन; केवल पैसे
आज लक्ष्य में हैं मानव के ; स्थल-जल - अंबर
रेल, तार, बिजली, जहाज़, नभयानों से भर
दर्प कर रहे हैं मानव, वर्ग से वर्गगण
भिड़े राष्ट्र से राष्ट्र, स्वार्थ से स्वार्थ विचक्षण ;
हँसते हैं जड़वाद - ग्रस्त, प्रेत ज्यों परस्पर ,
विकृत - नयन - मुख, कहते हुए—अतीत भयंकर
था मानव के लिये, पतित था वहाँ विश्वमन—
अपटु, अशिक्षित, वन्य हमारे रहे बंधुगण !—
नहीं वहाँ था कहीं आज का मुक्त प्राण यह—
तर्क - सिद्ध है—स्वप्न एक है विनिर्वाण यह !

वहाँ, बिना कुछ कहे, सत्य - वाणी के मंदिर
जैसे उतरे थे तुम, उतर रहे हो फिर - फिर
मानव के मन में,—जैसे जीवन में निश्चित ,
विमुख भोग से, राजकुँवर, त्याग कर सर्व स्थित,
एकमात्र सत्य के लिये, रूढ़ि से विमुख, रत
कठिन तपस्या में, पहुँचे लक्ष्य को, तथागत !
फूटी ज्योति विश्व में, मानव हुए सम्मिलित ,
धीरे - धीरे हुए विरोधी भाव तिरोहित ;
भिन्न रूप से भिन्न-भिन्न धर्मों में संचित
हुए भाव, मानव न रहे करुणा से वंचित ;
फूटे, शत-शत उत्स सहज मानवता-जल के
यहाँ - वहाँ, पृथ्वी के सब देशों में छलके ;
छल के, बल के पंकिल भौतिक रूप अदर्शित
हुए तुम्हीं से, हुई तुम्हीं से ज्योति प्रदर्शित ।

---

* बुद्ध-जयंती को बुद्धपुरी, कानपुर, में सभापति-पद से पठित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

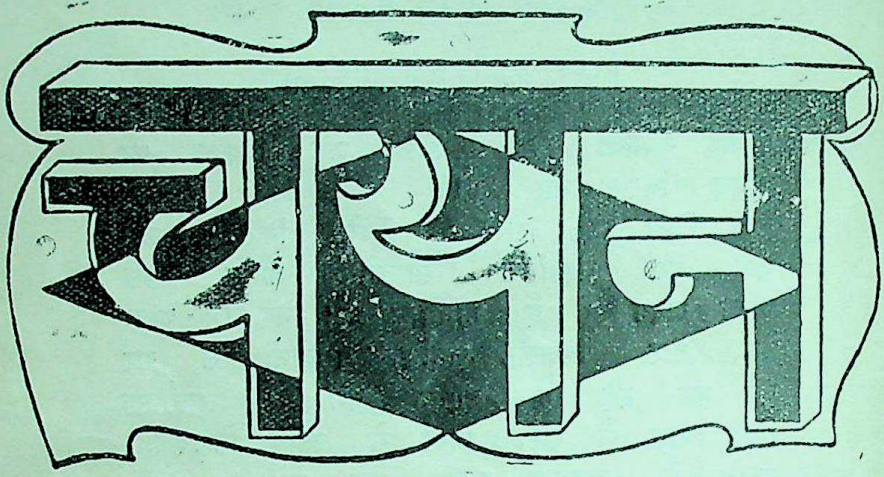

१. गीत

प्रिये ! दो पल प्राणों का मेल,
प्रिये ! बेकल प्राणों का मेल।
मिलन की स्वर्णिम वेला मूक
लिए थी आहों का उत्पात ;
अधर जाते अधरों के पास,
किया था किसने वज्राघात ?
उषा में मेरा संध्या-गीत,
निशा में जीवन - स्वर्ण - प्रभात ;
स्वप्न भी खोज रहे अनजान
विकल-उन्मद नयनों का खेल।
खिंची धूमिल रेखा दृग - बीच
छिपा प्रतिबिंबित निद्रा-भास ;
बढ़ाती सरिता की मृदु चाल
प्रिये ! मेरे अंतर की प्यास।
गीत लिखतीं नयनों की कोर,
मधुर धड़कन मेरा इतिहास ;
घिरा नौका पर झंझावात
चली नौका झंझा को झेल।
प्रिये ! दो पल प्राणों का मेल,
प्रिये ! बेकल प्राणों का मेल।

'करुण' (साहित्य-विशारद)

× × ×

२. कैसा फैला रवि-किरण-जाल !

(१)

कैसा फैला रवि-किरण-जाल,
यह लाल-लाल, यह लाल-लाल !
सोने की है स्वर्णिमा भरी,
यह तम-राक्षस का महाकाल।
चकवा से चकवी मिली समुद,
खिल रहे कमल हैं ताल-ताल ;
यमुना के तट की ओर बढ़े
हिल-मिलकर सारे ग्वाल-बाल।
चिड़ियाँ मदमत्त फुदकती हैं
पेड़ों, पत्तों पर, डाल-डाल ;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसा फैला रवि-किरण-जाल,
यह लाल-लाल, यह लाल-लाल!

(२)

कुछ मुग्धाएँ मटकी लेकर
चल दीं पनघट को खोल बाल;
नाते में जो उनके जीजा
हँस पड़े देख वे ग्वाल-बाल।
वे उन्हें चिढ़ाने लगे, और
वे चल दीं उनकी बात टाल;
उस रोज़ मराली विस्मित थी,
वह कभी न ऐसी चली चाल।
रवि की किरणों से चमक उठे
ललनाओं के वे लाल गाल;
कैसा फैला रवि-किरण-जाल,
यह लाल-लाल, यह लाल-लाल!

(३)

सरसी में नलिनी के पत्ते
थे खड़े किए कुछ उच्च भाल;
कुछ ओस-बिंदु, उनके ऊपर
पड़ती थीं किरणें लाल-लाल।
कुछ दूर इन्हें ही देख रहा
था खड़ा हुआ नव शिशु-मराल;
मोती समझे, झपटा झटपट,
पर हुआ वहाँ कुछ और हाल!
खिसियाकर कमल-कली खाई,
मुँह था गुस्से से लाल-लाल;
कैसा फैला रवि-किरण-जाल,
यह लाल-लाल, यह लाल-लाल!

गंगाप्रसाद 'कौशल'

× × ×

३. अपनी धुन

जग हँसता है, तो हँसने दे,
हँसकर मेरा क्या कर लेगा?
खारे पानी की दो बूँदें
कह दें मेरी सरस कहानी।
उर की दबी वेदनाओं को
उकसाने से हृदय हिलेगा;
आशा है, उजड़ी बस्ती में
फिर खेलेंगे राजा-रानी।

❀ ❀ ❀

मैंने अपना प्यार लुटाया
अरे, इसी सूनी दुनिया में।
ओ सूने अंबर के अंतर,
ओ हँसती ऊषा दीवानी!
उन मदमाती लघु लहरों पर
जीवन से होली खेला था,
तुमने सूनेपन में देखी,
मेरे हाथों की शैतानी।
तरुणावस्था लेती थी जब
अपने जीवन में अँगड़ाई,
आई थीं तब मयखाने से
यौवन की लहरें तूफ़ानी।
मैंने अपना शैशव खोया,
अपनेपन में प्यास बुझाई;
झूमी थी जब इन आँखों में
हाला - मधुबाला अनजानी।
संसृति की उस नीरवता में
जब आया था सूखा पतझड़,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धू-धू के धूमिल शोलों ने
दिखला दी थी प्रलय-निशानी।
तब मैंने अपने को जाना,
अपनेपन को पहचाना था;
तब सूना नभ गूँज पड़ा था,
गूँजी थी तब शून्य बनानी।
देख हमारा मतवालापन
फूल उठा था सारा उपवन;
अब भी मेरा गिरना लखकर
हँसती है दुनिया अज्ञानी।

❀ ❀ ❀

जग हँसता है, तो हँसने दे,
हँसकर मेरा क्या कर लेगा?
खारे पानी की दो बूँदें
कह दें मेरी सरस कहानी।

बालचंद श्रीवास्तव 'बाल'

× × ×

४. मुसहर

बिहार की खेती के प्राण मुसहरों को, जिनकी संख्या बिहार में, १९३१ की गणना के अनुसार, ७,२०,०५१ है, मर्दुमशुमारी की रिपोर्ट में दलित श्रेणी का हिंदू माना गया है। छोटा नागपुर के कुछ ज़िलों को छोड़ सारे बिहार में इनकी आबादी है। मुसहर बिहार के आदि निवासी हैं, जो अब पूरी तरह हिंदू बन गए हैं। आर्थिक दृष्टि से बिहार की यह एक बहुत महत्त्व-पूर्ण जाति है, क्योंकि प्रायः सारे बिहार में खेत-मजूर मुख्य रूप से मुसहर ही हैं। और, इस प्रांत में, जहाँ ऊँची कही जानेवाली जाति के लोगों में हल जोतने की सामाजिक रोक है, खेत-मजूरों की अनिवार्य महत्ता मान लेने की चीज़ है।

ये चूहे पकड़ने में सिद्धहस्त हैं। चूहों को तिलस्मी बिलों से खोदकर निकालना, उनके भांडार से खेतों से चुराई अन्न की बालों को बरामद करना फ़सल के दिनों में इनका पेशा है, खेल है, दिल-बहलाव है। ये लोग चूहे बड़े स्वाद से खाते हैं, शायद इसीलिये इनका नाम मुसहर है।

मुसहर बिहार के अलावा युक्त प्रांत के मिर्ज़ापुर-ज़िले के कंतित परगने में भी हैं। इनकी कई उपजातियाँ हैं, जैसे रज़वार, चौरवार, चौठाहा, धाँगड़, मगहिया आदि। पर इनमें आपस में किसी तरह का संबंध नहीं होता, यद्यपि ये सभी अपने को 'रिखि-मुनि' की संतान रिखियासनवंश या रिखि-बालक कहते हैं। यहाँ मुंगेर के मगहिया मुसहरों के बारे में कुछ लिखा जायगा।

बिहार के असली खेतिहर (actual tiller of the soil) यद्यपि मुसहर ही हैं, पर इतने ग़रीब और इतने भूखे शायद ही कोई और लोग हों। मि० लॉकउड ने अपनी 'नेचुरल हिस्टरी'-नामक पुस्तक में लिखा है—

"Mushirs or mousers as they may be called.....are half starved even in times of plenty."

अर्थात् मुसहर बहुतायत के दिनों में भी आधे भूखे रहते हैं। इन्हें दिन-भर की मज़दूरी में ३ से ४ सेर तक अन्न मिलता है।

इनकी एक दंत-कथा है, जिसके अनुसार इन्हें शाप है कि इनकी दिन-भर की कमाई ३ सेर अन्न से अधिक न होगी। इस अकिंचनता के लिये दोष संपन्न समाज का तो माना ही जायगा, पर जहाँ तक मेरी जानकारी है, मुसहर स्वयं भी इसके लिये दोषी हैं। फ़सल के दिनों में जब इनके पास कुछ संचय हो जाता है, तब ये उस 'कुछ' को इतना मान लेते हैं कि ताड़ी पीने-पिलाने में अपनी पूरी फ़ैयाज़ी दिखाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और, जितने दिनों तक यह 'कुछ' रहता है, इन्हें इतनी मस्ती रहती है कि जब तक सब कुछ निबट न जाय, कुछ काम नहीं करते।

हर गाँव में, चाहे वह छोटी कही जानेवाली जाति का ही क्यों न हो, साधारण बस्ती से अलग, गाँव के आकार-प्रकार के अनुसार, मुसहरों का एक मुहल्ला होता है, जिसे 'मुसहड़ी' कहते हैं। एक तो हमारे गाँव (शहर भी) यों ही गंदे रहते हैं, उनमें मुसहड़ी की गंदगी हमारे लिये और भी शर्म की चीज़ है। मुश्किल से आदमी की उँचाई से छोटे, मिट्टी और फूस के झोपड़े में इनका बहुजन-संकुल परिवार रहता है। मि० लॉकउड के शब्दों में ही—

"They.....receive their scanty wages in course grain which they flavour with rats, mice, snails and jungle roots whilst living in hovels which an English pig would consider poor accomodation."

अर्थात् इन्हें मोटे अनाज मजूरी में मिलते हैं, उसे ये चूहे, घोंघे और जंगली कंद-मूल के साथ स्वाद से खाते हैं, और ऐसे घरों में रहते हैं, जिन्हें अँगरेज़ी सुअर भी बुरी जगह बतावें।

पर जिन्हें अँगरेज़ी सुअर आराम का घर न मानेंगे, उन्हीं घरों में हिंदोस्तान के ये सुअर चराने-वाले सिर्फ़ रहते ही नहीं, बल्कि उसके एक भाग में सुअरों के रहने की जगह—'बखोर'—भी बनाते हैं।

अँगरेज़ी सुअर की नापसंदगी के इन घरों में काँसे के भद्दे लोटे और थाली (जो मुसहरी डिज़ाइन के ही बनते हैं) के सिवा कोई मूल्यवान् वस्तु नहीं होती। अब सस्ते एलमोनियम के लोटे भी देखने में आते हैं। भोजन बनाने के लिये मिट्टी की हाँडी होती है। वह अशौच होने पर या ख़ास-ख़ास पूजा या त्योहारों में बदली जाती है। इनके घरों में कलछुल, चमचे की भी कोई आवश्यकता नहीं। हाथ-भर के बाँस को छीलकर हाँडी के अन्न को चलाने का काम ले लिया जाता है। पानी भरने के लिये मिट्टी का घड़ा होता है। हाँ, अब कोयले की खान या जूट-मिलों से कमाकर लौटनेवाले एक-आध छोटी-मोटी बालटी साथ लटकाते आते हैं। टाँगी (कुल्हाड़ी) और फ़सल काटने का हँसुआ, यह इनका ज़रूरी सामान है। किसी-किसी पेशेवर के पास सेंध काटने का औज़ार 'सिंधकाठी' भी होता है। 'उखड़ी-समाट' (ऊखल और मूसल) नित्य धान कूटने के लिये ज़रूरी सामान में से है। 'लूट लाओ, कूट खाओ।' यह इनकी रीति है। सुअर और मुर्ग़ी इनके ज़रूरी मवेशियों में से हैं। यों कोई बैल, गाय और बकरियाँ भी पाल लेते हैं।

मर्द लँगोटी लगाते या सुबीता होने पर घुटने तक नीची हाथ की बनी धोती पहनते हैं। एक अँगोछा भी रहा करता है। अपने 'किसान' (मालिक को किसान कहते हैं) से प्राप्त फटा-पुराना कुरता-कोट भी कभी इनकी शोभा बढ़ाता है, या कभी-कभी कुछ पैसे ख़र्च कर कोई कपड़ा सिलवा भी लेते हैं। मर्द कोई गहना नहीं पहनते, पर कमर में खैनी (तंबाकू) और चुनौटी की थैली प्रायः खोंसे रहते हैं। स्त्रियाँ हाथ की बनी मोटी, ईंट के गहरे रंग की, ऊँची साड़ी पहनती हैं। कुरता या झूला (जैसा बिहार में ऊँचे दर्जे की भी महिलाएँ पहले पहना करती थीं) पहनती हैं। गले में नक़ली मूँगा और काच की गुरियों की माला, जिसे 'हरवा-डोरवा' कहते हैं, पहनती हैं। हाथ-पैर में काँसे और लोहे के कई गहने पहनती हैं। कितनों के कान में कर्ण-फूल, झुमका भी देखा जाता है, नहीं तो साधारण तौर पर लाह के बने गहने कान की शोभा बढ़ाते हैं। गले में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हँसुली पहनी जाती है। शरीर की शोभा बढ़ाने के लिये सारे शरीर में गुदना गुदाना ज़रूरी है।

मि० लॉकउड कहते हैं—"One would imagine that such persons (ग़रीब) must find difficulty in getting wives but contrary is the case, for bachelors and spinsters are unknown."

अर्थात् कोई समझेगा कि ऐसे (ग़रीब) लोगों का ब्याह होने में बड़ी दिक़्क़त होती, होगी, पर बात इसके विरुद्ध है, क्योंकि कुँआरे और कुँआरी मिलते ही नहीं। १० से १२ वर्ष की उमर होने पर इनका ब्याह हो जाता है। लड़के या लड़की के बाप वर या वधू की तलाश में निकलते हैं। पात्र पसंद होने पर इनका ब्राह्मण-पुरोहित (मिसिरजी) 'रास-बरग' (राशि-वर्ग) बैठाता है। बैठ जाने से लड़का या लड़की पक्की हो जाती है। मिसिरजी के लगन बनाने पर ब्याह की तिथि ठीक होती है, और वर-पक्ष के लोग कन्या के घर आते हैं। बरात में एक आदमी लाल मगजी और नीले कपड़े का लंबा-सा लबादा पहनकर, सिर पर ख़ास तरह की पगड़ी बाँधकर 'नटुआ' बनता है। और, दूसरे लोग 'माँदर'-नामक मृदंग बजाते और गाते हैं, तथा नटुआ नाचता है। यों नाचते-कूदते लड़की के घर पहुँचते हैं, जहाँ उनकी ख़ातिरदारी में सुअर मारा जाता है। ताड़ी भी पी जाती है। पितरों की पूजा करके वैवाहिक विधान होते हैं, जिसमें पुरोहित और नाई को १।)-१।) मिलते हैं। बहुत पुराने समय से ज़मींदार लोग ॥) प्रति लड़की के हिसाब से ब्याह के समय ग़ैर-क़ानूनी और अनैतिक कर (आबवाब), जिसे 'धिंगाना' कहते हैं, वसूल करते हैं। दूसरे दिन बरात बहू को लेकर नाचती-कूदती बिदा होती है। ब्याह के समय वर अपनी सास को ६ गज़ कपड़ा और ५ सेर 'खवौनी' (आटे की बनी एक मिठाई), जिसे 'बेटिऔरी' कहते हैं, भेंट करता है।

स्त्री या पुरुष एक छोड़ दूसरा ब्याह भी कर सकते हैं, जिसे सगाई या 'चुमौना' कहते हैं। ब्याही औरत से चुमौना करनेवाले को 'बिधहुआ' पति (पूर्व पति) को १२) ब्याहदानी देनी होती है।

मरने पर इनके मुरदे जलाए जाते हैं। १० दिन पर सिर मुड़ाकर शुद्ध हो जाते हैं। पितरों की पूजा होती है, और बिरादरी का एक बड़ा भोज होता है। मृतक को शादी-ब्याह की पूजा के समय या आषाढ़ में होनेवाली आषाढ़ी उत्सव के समय घर के कोने में पितृवेदि 'सींरा पींरा' में सेंदुर का एक निशान लगाकर स्थापित कर दिया जाता है। यह श्राद्ध-कर्म नाई ही करा लेता है, ब्राह्मण की ज़रूरत नहीं होती।

इनके कई त्यौहार हैं, जिनमें आश्विन-कृष्ण की अष्टमी 'जितिया' पितरों का पर्व है। इस दिन पितरों के निमित्त माँड़ दिया जाता है। भादों के महीने-भर इनके विशेष आनंद का समय रहता है। रात-भर औरत-मर्द माँदर बजाकर साथ-साथ नाचते जाते और झूमर खेलते हैं। इनके इस गाने और बाजे की आवाज़ दूर से बरसात की रात में बड़ी भली लगती है।

मुसहर ज़मींदार की ज़मीन में रहते और बदले में ज़मींदार को बेगार देते हैं। ब्याह के समय किसानों को दस्तावेज़ लिखकर रुपए लेते और भोज-भात करते हैं, तथा बदले में सदा के लिये उनकी ग़ुलामी, जिसे 'हड़ौरी', 'हलवाही' इत्यादि कहते हैं, क़बूल करते हैं। और, दिन-भर का ३ सेर अन्न लेकर अपने किसान की मज़दूरी करते हैं। हाँ, फ़सल काटने और मलने के लिये मज़दूरी नहीं लेते। जितने बोझ काटते हैं, उसमें १०० में १२ से १७ तक हिस्सा लेते हैं, जिसे 'दीनी' कहते हैं। सावन-भादों में मुसहरनियाँ धान के पानी-भरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेत में रोपा करती और सब मिलकर पतली, तेज़ आवाज़ में गाती हैं। वह ध्वनि आकर्षक, उत्तेजक और उल्लास-भरी होती है। इनके गाने और कहानियाँ फिर कभी दूसरे लेख में दी जायँगी।

हिंदू होने के कारण हिंदुओं के देवी-देवता, गंगा-गौर, सभी को मुसहर भी मानते हैं। पर अपनी आदि वासियों की भूत-पूजा इन्होंने अभी तक नहीं छोड़ी। कई तरह के भूत और 'डायनें' (डाकिनियाँ) होती हैं, जिन्हें ये ब्याह-काज या और समय भी पूजते हैं। इन भूतों की पूजा के लिये 'चटिया' (पुजारी), 'ओझा', 'सोखा' इत्यादि होते हैं। जादू-टोना करनेवालों में प्रधान 'डायन' और 'डोकली' कहे जाते हैं। इनके बारे में भी किसी और लेख में लिखा जायगा। इनका सबसे बड़ा भूत 'जख' या 'जखराज' (यक्षराज) होता है। हरएक हानि, रोग या मृत्यु के लिये ये भूत ही ज़िम्मेवार माने जाते हैं।

रमावल्लभ चतुर्वेदी

× × ×

५. मृत्यु-गीत

नव सुख देने कब सदय मृत्यु आएगी ?
देखा जग का सुख और दुःख भी देखा,
कुछ समझ न पाई पाप-पुण्य की रेखा,
लिख सका न जीवन-भर जीवन का लेखा,
मम जटिल प्रश्न क्या दुनिया सुलझाएगी ?
नव सुख देने कब सदय मृत्यु आएगी ? ॥१॥
कितने अभाव, कितनी पीड़ा, करुणामय !
क्या ही अनेक बीभत्स दृश्य-कृति सामय,
कितनी आशा, कितनी चिंता, कितने भय,
यह दृश्य-राशि कब तक देखी जाएगी ?
नव सुख देने कब सदय मृत्यु आएगी ? ॥२॥
कब तक पीवें हम खार दृगों का पानी,
कब तक भटकें कंटक-वन में अज्ञानी,
कब तक सोचें भव-स्वप्न और नादानी,
कब तक यों बुद्धि विफल चक्कर खाएगी ?
नव सुख देने कब सदय मृत्यु आएगी ? ॥३॥
मैं ऊब गया हूँ जीवन-जगत-विषय से,
भर गया चित्त है वंचक प्रेम-प्रणय से,
अब मिल न सकेगा हृदय किसी सहृदय से,
आशा अब मोहक रंग न दिखलाएगी ?
नव सुख देने कब सदय मृत्यु आएगी ? ॥४॥
होगी समाप्त कब अवधि शाप की मेरे,
यह धरा परिधि है पाप-ताप की मेरे,
होगी कब रजनी प्रिय-मिलाप की मेरे,
भव-कारा से कब देह मुक्ति पाएगी ?
नव सुख देने कब सदय मृत्यु आएगी ? ॥५॥
चुपके से प्रिय की शांत दूतिका सुंदर—
काली चादर ओढ़े मेरे घर आकर—
सुठि वायु-यान पर सादर, समुद बिठाकर—
कब मुझे अहो ! प्रिय के गृह पहुँचाएगी ?
नव सुख देने कब सदय मृत्यु आएगी ? ॥६॥

राजाराम श्रीवास्तव 'पुनीत'

× × ×

६. जीवन-चरित-लेखन में क्रांति

जीवन की घटनाओं, विचारों, भावों एवं चिंतन आदि का इतिवृत्तात्मक (Matter of fact) चित्रण करने के दो प्रधान साधन हैं – पहला जीवन-चरित-लेखन (Biography) और दूसरा आत्म-चरित-लेखन (Auto-biography)। आत्म-चरित-लेखन या आत्मकथा में अपने गुण और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेषकर दोषों एवं अप्रिय, असामाजिक घटनाओं, विचारों एवं भावों का चित्रण सर्वथा लेखक के आत्मबल एवं लोक-प्रसिद्धि अथवा लोकापवाद के प्रति उदासीनता पर निर्भर है। महात्मा गांधी की तरह सभी आत्मकथा-लेखक अपने जीवन की निम्न-से-निम्न घटनाओं का दिग्दर्शन नहीं करा सकते।

जीवन-चरित-लेखन में यह सब लेखक के दृष्टि-कोण पर निर्भर रहता है। लेखक चाहे, तो नायक के सिर्फ़ गुणों का ही दिग्दर्शन करा, लोक-मत को नायक के पक्ष में कर उसकी प्रसिद्धि का प्रसार कर सकता अथवा उसमें सहायक हो सकता है, या दोषों को व्यंजित कर जनमत को उसके प्रति घृणा के भावों से पूर्ण करने में समर्थ हो सकता है। जीवित महापुरुषों के जीवन-चरित लिखते समय उसका लेखक एकांत निष्पक्ष नहीं हो सकता। महा-पुरुष की महत्ता, बहुसंख्या द्वारा प्रदर्शित सम्मान, स्वयं लेखक की श्रद्धा उसके दोषों को प्रकट नहीं करने देती। इसीलिये उत्तम जीवन-चरित नायक की मृत्यु के बाद ही लिखे जा सकते हैं। मृत्यु पुरुष के अच्छे-बुरे स्वभाव को प्रकाश में लाती है। लोग बेखटके अपनी भावनाएँ और विचार प्रकट करते हैं।

आदर्शवादी भारत में, साहित्य की प्रायः प्रत्येक शाखा में, आदर्श की स्थापना का प्रयत्न दृष्टिगोचर होता है। इस आदर्श की लगन के कारण कहीं-कहीं अस्वाभाविकता को भी आश्रय मिल गया है। जीवन-चरित-लेखन इसका अपवाद नहीं। क्या पूर्व और क्या पश्चिम, दोनो जगह जीवन-चरित-लेखन में आदर्श-स्थापन की ओर प्रयत्न दिखाई देता है। मैं यह नहीं कहता कि आदर्श-स्थापन कोई बुरी चीज़ है। जिस तरह ठेठ यथार्थवाद (Realism) उत्तम साहित्य की श्रेणी में नहीं आ सकता, तथा बुराइयों का हल नहीं दे सकता, उसी तरह निरा आदर्शवाद (Idealism) सिर्फ़ मस्तिष्क की चीज़ रह जाता है, जिससे कौतूहल आदि का सृजन हो सकता है, जीवन को कोई लाभ नहीं हो सकता। दोनो 'वादों' का संतुलन समीचीन है। यदि किसी महापुरुष का चरित इस ढंग से लिखा जाय कि उसमें ईश्वरीय गुणों का ही आरोप हो, तो उस जीवन-चरित से हमें विशेष लाभ की आशा न करनी चाहिए। ऐसे चरित हमारी श्रद्धा एवं कौतूहल के भाजन होंगे, समवेदना के नहीं। हम उन्हें प्राकृतिक पुरुष न समझ सकेंगे। उनकी पूजा होगी, उनका भय होगा, पर वे मंदिर के देवता रहेंगे, गृह के स्वामी नहीं।

मृत पुरुषों की आलोचना करना अभी कुछ दिनों पहले तक पश्चिम में भी बुरा माना जाता था। वहाँ के साहित्य में सैकड़ों वाक्य, कहावतें ऐसी हैं, जो मृतक पुरुषों की आलोचना करने से मना करती हैं। हम अँगरेज़ी के प्रसिद्ध साहित्य-कार रॉबर्ट लुई स्टिवेंसन के Kidnapped-नामक उपन्यास में एक शराबी कप्तान की मृत्यु पर, एक नाविक द्वारा उसकी निंदा किए जाने पर, एक पात्र के मुँह से सुनते हैं—"Do not talk ill of him ; he is no more." अर्थात् उसके बारे में कुछ बुरा मत कहो। कारण, अब वह नहीं है। निंदा, अपवाद आदि सभी का ऋण मृत्यु चुका देती है—"Death pays all debt". फिर मृत पुरुष की क्यों आलोचना करना ? प्रसिद्ध कलाकार थैक्रे भी कहता है—"De Mortius Nil nisi bonum." अर्थात् जो मर चुका है, उसके विरुद्ध बुरी बात मत कहो। यह सब आदर्श-स्थापना की भावना का फल है। 'वीर-पूजा' (Hero-worship) होनी चाहिए, पर याद रखने की बात है कि ये वीर हमारे मानव-समाज के ही प्राणी हैं, उनके भी हृदय है, उनमें भी मानव-स्वभाव-सुलभ कमज़ोरी है, कमी है। जीवन-चरित लिखते समय सिर्फ़ गुणों को देखना उसकी मान-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वता के साथ अन्याय करना है। मानवता गुण और अवगुण, दोनो को लिए है। मानवता में जब तक देवत्व और पशुत्व है, तभी तक वह मानवता है। पशुत्व के एकदम नाश के साथ ही हमें दूसरी संज्ञा 'देवत्व' देनी होगी।

जब किसी महापुरुष के जीवन-चरित की महान् भावनाओं को देखते हैं, उसके ऊँचे विचारों के बारे में पढ़ते हैं, उसकी सेवा एवं त्याग के दृष्टांतों पर दृष्टि-निक्षेप करते हैं, तो हम अपने को अति नीचा पाते हैं; पर ज्यों ही हम देखते हैं कि उसमें हमारी-जैसी कमी है, उसने भी हमारी-जैसी भूलें की हैं, उसने भी पशुत्व के साथ युद्ध किया है, तो हममें भी साहस, उत्साह का स्फुरण होता है। हम भी उस महत्ता को प्राप्त कर सकते हैं। एकांत आदर्शात्मक शैली के प्रति पश्चिम में क्रांति हो चुकी है। प्रसिद्ध अँगरेज़ जीवन-चरित-लेखक लिटन स्ट्रैचे ने इस दिशा में बड़े साहस-पूर्ण पथ-प्रदर्शन का कार्य किया है। Eminent Victorians आदि पुस्तकों के अध्ययन से लिटन स्ट्रैचे की शैली का पता चल सकता है। स्थानाभाव के कारण उसकी व्यंग्योक्तियों (irony), मीठी चुटकियों के उदाहरण नहीं दिए जा सकते।

हिंदी-साहित्य में इस शैली में लिखे जीवन-चरित शायद नहीं के बराबर हैं। जिस तरह हिंदी-साहित्य ने पाश्चात्य कहानी-कला को अपनाया, उसी तरह उसे इस जीवन-चरित-लेखन की व्यंग्य-पूर्ण पाश्चात्य शैली को भी अपनाकर क्रांति उपस्थित करनी चाहिए। इस ढंग पर लिखे जीवन-चरितों से पाठकों को लाभ होगा।

मुकुटविहारीलाल श्रीवास्तव 'मुकुट'
(बी० ए०)

× × ×

७. अंतिम आशा

आह! आज मेरे उपवन में सखि! यह पवन अग्निवाला
किस वियोगिनी बाला की फिर लेकर आया विष-ज्वाला?

कलियों के कोमल प्राणों में किसने विरह-गीत गाया?
हा! वसंत आने के पहले कैसा यह पतझड़ आया?

विश्व-मोहिनी देवी की है आज विपिन में आगमनी;
अरे, प्राण में जाग उठी है फिर यह कैसी पीर घनी?

मन्मथपुर के पथ-पथ में है आज मिलन का नव मेला;
हा दुर्भाग्य! एक मैं ही क्यों रोता हूँ फिर इस वेला?

आह! न पूछो मुझसे, अब मैं रहता हूँ क्यों एकाकी;
अरे, मरण के सिवा रहा अब और जगत में क्या बाक़ी?

पीर न होती उर में, तो क्या प्रेम न जग में पल पाता;
अश्रु विना क्या इस जीवन का आशा-उपवन जल जाता?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगिनि ! फिर क्या सपने में तू आई थी ले मद-प्याला,
विना पिए ही सुलग उठी है उर में जिससे यह ज्वाला ?

रे दुर्दिन ! तू लेकर किसकी आज दुराशा फिर आया ;
अरे, मिलन के दिन ही क्यों इन आँखों में यह जल लाया ?

प्राण-पथिक ! तुम इस पथ में अब किसकी बाट निहार रहे ;
व्यर्थ विपिन के बीच खड़े यों विह्वल किसे पुकार रहे ?

आह ! न पूछो मुझसे कोई, रहता हूँ क्यों मन मारे ;
स्वप्नों-से ही टूट रहे हैं जीवन के बंधन सारे।

इन मेरे प्यासे नयनों को अपना हृदय-रक्त पीते
विषम पिपासा में हा ! कितने दारुण-दुखद वर्ष बीते !

इस असह्य, विच्छेद्य विरह का सजनी ! आखिर अंत कहाँ,
जिसके उर हो सावन बसता, उसके भाग्य वसंत कहाँ ?

उस निठुरा का वह मुख जब आँखों के सम्मुख आ जाता,
क्या जाने तब प्राणों में क्या सागर-सा है उफनाता।

इस विद्रोही, विरही मन को अब मैं कैसे बहलाऊँ ?
रोऊँ भी, तो कितना रोऊँ, गाकर भी क्या समझाऊँ ?

अरे, मिलन की आशा में ही फिर क्या सारी रात गई;
विना प्रिया को उर में पाए प्राणों की कब प्यास गई ?

उस स्वरूप-रानी को अब मैं क्षण-भर भी यदि लख पाता,
अरे प्राण ! मत रो, उसके ही पद पर तुझको रख जाता।

जीवन के इस अंतिम क्षण में विरह-विमूर्च्छित हो-होकर,
आज पीर से माँग रहे हैं प्राण विदाई रो-रोकर।

किस वन को उड़ चले प्राण-खग गाते अब यह गान प्रिये !
"इस रजनी के बाद न होगा फिर क्या और बिहान प्रिये !"

क़ाज़ी अशरफ़ महमूद

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८. भारतीय शिल्पकला का उद्देश्य और विज्ञान

डॉ० आनंदकुमार स्वामी कला के बड़े विशेषज्ञ माने जाते हैं। उन्होंने लिखा है—"भारतीय शिल्प-कला के जो नमूने अब तक देखने में आए हैं, उनसे दो हज़ार वर्ष पूर्व से भी अधिक समय के भारतीय इतिहास का पता लगता है। या यों कहिए कि दो हज़ार वर्ष से भी अधिक काल तक जो उन्नति भारतीय शिल्प ने की है, उसका पता इनसे लगता है। इस अरसे में भारत में नाना प्रकार के विचारों एवं दर्शन-शास्त्रों का प्रचार हुआ। कई जाति के लोगों ने उत्तर से चढ़ाई की। इन आक्रमणों का फल यह हुआ कि देश में कई प्रकार के विचारों का संघर्ष हो गया। असंख्य राजघरानों ने राज्य किया, और समाप्त हो गए। भिन्न-भिन्न जाति के लोगों के विचार, भाव, उद्देश्य, आदर्श, विश्वास और आकांक्षाएँ चित्र-कला तथा शिल्प के विद्यमान उदाहरणों में अंकित हैं। अतएव सरसरी तौर पर देखने में अनैक्य और भिन्नता मालूम होगी, किंतु जैसे हिंदुओं के रूप, दर्शन, शास्त्र और धार्मिक भावों की प्राणवायु (एकमात्र आदर्श) वेद और उपनिषदों के सिद्धांत हैं, वैसे ही भिन्न प्रकार की चित्र-कला में एक ऐसी बात पाई जाती है, जिससे सब प्रकार की शिल्पकलाओं में ऐक्य-भाव स्पष्टता से दिखाई पड़ता है। इस ऐक्य-भाव का एकमात्र उद्देश्य भारतीय चित्र-कला का आदर्श भाव है। इसे अँगरेज़ी में Idealism कहते हैं। इसका विपरीत शब्द Realism (वास्तववाद) है। इसके लिये एक शब्द आदर्शता व आदर्श-वाद हो सकता है। हिंदू-चित्रकारों ने बहुधा आदर्श मूर्ति और चित्र बनाने का ही यत्न किया है, क्योंकि हिंदुओं की प्रवृत्ति सभी बातों में आदर्शता की ओर दिखाई पड़ती है।

भारतवर्ष का बड़प्पन और श्रेष्ठता किस बात में है? इस बात में कि ज्ञान, सत्यता अनादि, अनंत, अनिर्मित है, चाहे जो विज्ञान और सत्यता अपना सकता है। अभी कई बातें ऐसी हैं, जिनका हमें पता नहीं। इस ज्ञान की प्राप्ति का मार्ग केवल-मात्र बुद्धि नहीं। यह ज्ञान अपने आप अनायास बुद्धि में प्रवेश करता है। भगवान् बुद्ध को यह ज्ञान एक रात को, जब वह विचार-समाधि में निमग्न थे, प्राप्त हुआ था, और क्रमशः वह सब बातें जान गए। ऐसी घटना प्रायः थोड़ी-बहुत सभी लोगों के जीवन में होना संभव है। कवि को उत्तेजित करनेवाली यही बात है। चित्रकार और दार्शनिक की कल्पना का मूल भी यही है।

विज्ञान और चित्र-कला

विज्ञान और चित्र-कला के उद्देश्यों में बहुत कुछ समता है। कल्पना-शक्ति की आवश्यकता दोनो में है। दोनो ही यह बात सिद्ध करने की चेष्टा करते हैं कि प्रकृति की प्रवृत्ति एकता की ओर है, मानव-बुद्धि भी स्वभावतया एकता की ओर ही प्रवृत्त है। वैज्ञानिक या शिल्पीय कल्पना का उद्देश्य यह है कि वह उस वस्तु की खोज करे, तथा ऐसा काल्पनिक चित्र बनावे, जिसका लोगों को पता न हो, या जिसे वे भूल गए हों। अर्थात् नवीन वस्तु का निर्माण करना शिल्पीय और वैज्ञानिक शक्ति का मुख्य उद्देश्य है, अतएव आदर्श शिल्प तथा चित्र कृत्रिम होने के बदले आध्यात्मिक आविष्कार है।

चित्रकार के लिये नियम बने हुए हैं कि वह कैसे अपने मन में कल्पित चित्र बना सकता है। चित्र और मूर्ति का प्रतिबिंब मन में स्पष्टतया लाने के हेतु चित्रकार को समाधि लगानी चाहिए, अर्थात् एकाग्र होकर मूर्ति का ध्यान करना चाहिए—

ध्यानयोगस्य संसिद्ध्यै प्रतिमालक्षणं स्मृतम्।
प्रतिमाकारको मर्त्यो यथाध्यानरतो भवेत्।
तथा नान्येन मार्गेण प्रत्यक्षेणापि वा खलु।
(शुक्रनीतिसार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि केवल-मात्र प्रकृति (बाह्य पदार्थ) का चित्र अंकित करना हिंदू-चित्रकार का कभी उद्देश्य नहीं रहा। भारतीय चित्र-कला ने लौकिक दृश्य और जीव-जंतु आदि के स्वाभाविक चित्र बनाने की चेष्टा नहीं की। वह नमूने के लिये कुछ न रखता हुआ केवल अपनी मानसिक शक्तियों से काम लेता था। वह मानो उस तत्त्व का चित्र द्वारा संकेत करता था, जो असली चित्रों का मूलाधार है। प्राकृतिक और वास्तविक आकार से उसका उतना संबंध नहीं था। उसे वह माया मानता था। उसके क़रीब वास्तविक रहस्य-विचार और तत्त्व था। हिंदू के समीप प्रकृति तो एक पर्दा और माया है, जिसके पीछे असली तत्त्व है। चित्रकार का काम है कि वह अपने चित्र और मूर्ति द्वारा उस वास्तविक वस्तु को दिखलावे, जो प्रकृति-रूपी मायामय पर्दे से ढकी है। हिंदू-चित्रकार के इस उद्देश्य की पुष्टि में गीता का हवाला देना होगा। श्रीकृष्ण भगवान् ने कहा है—

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥ २४ ॥
नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः।
मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् ॥२५॥
(गीता, अध्याय ७)

अर्थात् मेरे परम अविनाशी और अनुपम स्वरूप को न जाननेवाले बुद्धि-हीन लोग मुझ इंद्रियों से अतीत को इंद्रियगम्य मानते हैं। अपनी योग-माया से ढका हुआ मैं सबके लिये प्रकट नहीं हूँ। यह मूढ़ संसार मुझ अजन्मा और अव्यय को भली भाँति नहीं पहचानता।"

डॉक्टर आनंदकुमार स्वामी के कथन से यह सिद्ध होता है कि शिल्प तथा चित्र-कला वैज्ञानिक और आध्यात्मिक आविष्कार हैं। विज्ञान का उपयोग भौतिक और आध्यात्मिक, दोनो ही संसार में समान रूप से होता है। मानव-जाति ने जितनी भी वस्तुओं का निर्माण किया है, उनका मूल-कारण प्रकृति ही है, क्योंकि प्रकृति और मनुष्य द्वारा निर्मित यंत्र, दोनो के नियम एक ही हैं, जैसे पेड़, पर्वत, नदी, सूर्य, चंद्र, ग्रह, तारे और मनुष्य आदि प्रकृति के वैज्ञानिक यंत्र हैं, वैसे ही रेलगाड़ी, जहाज़, कपड़े तथा टेक्सटाइल की मशीनें, मिलों की मशीनें, घड़ी, मोटर, बिजली की मशीनें आदि सभी प्रकार की कलें मनुष्य द्वारा निर्मित वैज्ञानिक यंत्र हैं। दोनो के नियम तथा फल में भी समानता है, जैसे पेड़ से फल, सूर्य से ज्योति प्राकृतिक यंत्रों के फल हैं, वैसे ही कपड़ा, बर्तन और जीवन की अन्य सुविधाओं की वस्तुएँ मनुष्य-निर्मित विज्ञान का फल हैं। दोनो के संचालन में स्वच्छता ज़रूरी है।

जिस प्रकार मनुष्य-रचित विज्ञान एक-एक डिग्री तथा ऐंगिल का ख़याल करके बनाया गया है, ठीक वही नियम प्रकृति का भी है। तनिक-सा अंतर होने पर संचालन का कार्य नहीं हो सकता।

दोनो के वैज्ञानिक आदर्श एक ही हैं, पर अंतर केवल जड़ता और जीवन का है। इन मशीनों का उपयोग तभी है, जब तक ये चलती रहें। यह चलना ही रहस्य है, अर्थात् यहाँ संचालन करनेवाला ही सर्वस्व है। मशीनों का संचालन विना मनुष्य के नहीं हो सकता। इसलिये मनुष्य सारे जड़विज्ञान तथा मशीनों का रहस्य तथा वही जानने योग्य है। किंतु ज़रा यह भी देखना चाहिए कि मनुष्य-रूपी मशीन का संचालन कौन करता है? जो मानव-विज्ञान तथा प्राकृतिक विज्ञान, दोनो का रहस्य है। ऐसी दशा में यह निश्चय होता है कि मानव-मूर्ति, जड़मूर्ति तथा मनुष्य-विज्ञान का मूल-आविष्कर्ता ज्ञान ही सबका कारण है। या यों कहना चाहिए कि अध्यात्म ज्ञान है, अथवा आध्यात्मिक आविष्कार ज्ञान का आविष्कार है।

शंभुनाथ मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

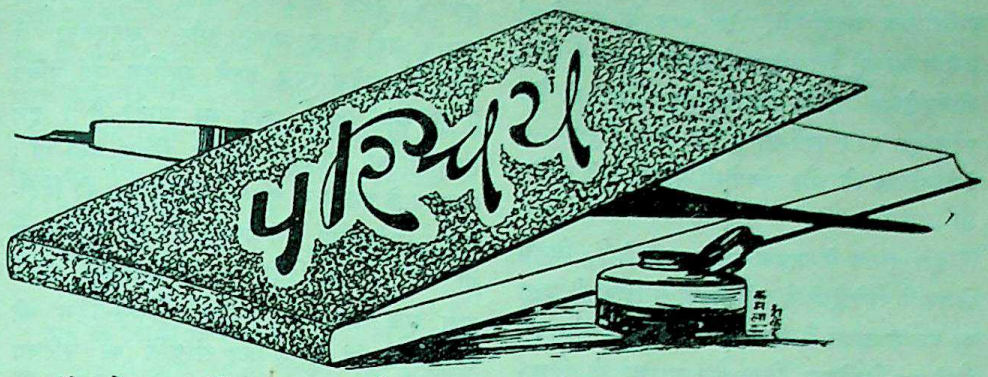

दुर्गे—लेखक, श्रीविश्वनाथलाल 'शैदा' बी० ए०, एल्-एल्० बी०, आज़मगढ़; प्रकाशक, श्रीश्यामबहादुरलाल, मंत्री नगर-कांग्रेस-कमेटी, आज़मगढ़; मूल्य ।।।)

इस पुस्तक में ३६ राष्ट्रीय कविताएँ संकलित हैं। कविताओं में जान है। कहीं-कहीं छापे की ग़लतियाँ रह गई हैं। वैसे पुस्तक अच्छी और पढ़ने लायक़ है। भाषा उर्दू-मिश्रित हिंदी है। पढ़कर देखें, पुस्तक पाठकों को पसंद आएगी।

× × ×

द्विवेदी-मीमांसा—लेखक, श्रीप्रेमनारायण टंडन; प्रकाशक, इंडियन-प्रेस, इलाहाबाद; मूल्य १।।)

इस पुस्तक का ध्येय 'स्वर्गीय आचार्य पंडित महावीरप्रसादजी द्विवेदी की हिंदी-सेवा की परिचयात्मक आलोचना' करना है। हमारी समझ में इसका मूल दोष यह है कि इसमें परिचय अधिक है, और आलोचना कम। और, द्विवेदीजी की हिंदी-सेवाओं से कौन हिंदी-भाषी अपरिचित है?

फिर भी इस पुस्तक की आवश्यकता थी, और इसने एक कमी पूरी की है। हिंदी में द्विवेदीजी-सरीखे साहित्यिक पर दस-पाँच पुस्तकें निकलना तो साधारण बात होनी चाहिए। टंडनजी ने द्विवेदीजी पर पहली पुस्तक लिखी है, उनका कार्य तो इसीलिये स्तुत्य होना चाहिए। जैसे कुछ लोग राम-चर्चा सुनते नहीं अघाते, उसी प्रकार हिंदी-प्रेमी अपनी भाषा के लिये तन-मन से साधना करनेवाले तपस्वियों की कथा पढ़ते कभी तृप्त नहीं होते। इससे हमें अपने इतिहास पर ही गर्व नहीं होता, भविष्य के लिये कटिबद्ध हो कार्य करने का साहस भी मिलता है। टंडनजी की सहृदयता इस पुस्तक के अध्यायों में भली भाँति व्यंजित है, और इससे उनकी द्विवेदीजी की हिंदी-सेवा का परिचय देने की योग्यता भी सिद्ध है। पुस्तक की प्रस्तावना पढ़कर विश्वास होता है कि द्विवेदीजी का जीवनादर्श हिंदी-भाषियों के भीतर जाग्रत् है; लेखक ने अनेक कठिनाइयों के होते हुए भी तीन वर्ष परिश्रम कर इस पुस्तक की रचना की है।

द्विवेदीजी के व्यक्तित्व के संबंध में सरस्वती के द्विवेदी-स्मृति-अंक में यथेष्ट सामग्री प्रकाशित हो चुकी थी। लेखक के लिये उस ओर कोई विशेष बातें कहने का अवसर न था। द्विवेदीजी की प्रशंसा भी अनेक लेखकों द्वारा उनके स्थलों पर हो चुकी है। यहाँ उन शब्दों की पुनरावृत्ति-मात्र के लिये अवकाश न होना चाहिए था। अंतिम अध्याय 'महत्त्व' में हम आशा करते थे कि लेखक स्वयं द्विवेदीजी के कार्य की माप कर इतिहास में उनके स्थान का निर्देश करेंगे। परंतु अपनी बात उन्होंने थोड़े शब्दों में कहकर और वह भी भावुकता-पूर्ण,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशंसात्मक शब्दों में, शेष भाग में सम्मतियाँ उद्धृत कर दी हैं। श्रीसवाई ओरछा-नरेश से लेकर श्रीचंद्रशेखर शास्त्री तक की सम्मतियाँ दी हैं। परंतु इस २९६ पृष्ठों की पुस्तक में इन्हें स्थान न देकर लेखक को और उपयोगी सामग्री देनी चाहिए थी।

इस पुस्तक के महत्त्व-पूर्ण अध्याय वे हैं, जिनमें लेखक ने द्विवेदीजी के पूर्व हिंदी-साहित्य की दशा पर प्रकाश डाला है, तथा द्विवेदीजी की आलोचना-शैली का विश्लेषण किया है। साहित्य के विद्यार्थियों के लिये ये अत्यंत उपयोगी सिद्ध होंगे। कहीं-कहीं 'पूर्व रूप' का चित्र खींचते हुए लेखक ने चलतू बातें-सी कह दी हैं, जैसे "कुछ लोग समालोचना का नाम अवश्य सुन चुके थे, पर वे उसके वास्तविक अर्थ, उद्देश्य और आदर्श से अनभिज्ञ थे।" अधिक अच्छा होता, यदि पुस्तक के अन्य अंशों को छोटा कर इस भाग को लेखक विशेष विस्तार से लिखते। द्विवेदीजी की महत्ता मूलतः ऐतिहासिक है, इसलिये उनके पूर्व के इतिहास पर समुचित प्रकाश पड़ना आवश्यक था।

द्विवेदीजी पर पुस्तक लिखना एक युग के साहित्य का इतिहास लिखना है। इसलिये यह कार्य वैसे भी कठिन है। लेखक ने उनके साहित्यिक कार्य के प्रायः सभी अंगों पर जो प्रकाश डाला है, वह प्रशंसनीय है। हमें विश्वास है, अन्य संस्करणों में यह पुस्तक और भी महत्त्व-पूर्ण हो जायगी।

'उमेश'

× × ×

श्यामू की मा—लेखक, श्रीयुत पांडुरंग सदाशिव साने एम्० ए०; अनुवादक, श्रीयुत गोपीवल्लभ उपाध्याय; प्रकाशक, अनाथ-विद्यार्थी-गृह, ६२४, सदाशिव-पेठ, पूना २; पृष्ठ-संख्या २८८; मूल्य १); स्टिफ़ कवर।

मूल-पुस्तक का मराठी-भाषा में ख़ूब आदर हुआ है। इसमें लेखक ने माता की महिमा का प्रदर्शन बड़ी करुण भावना और सहृदयता से किया है। अनेक स्थल इतने मार्मिक एवं पवित्र हैं कि आँखें अपने आप भर आती हैं। इन संस्मरणों का अधिकांश जेल में लिखा गया था। प्रकाशक के वक्तव्य के अनुसार इस पुस्तक को हिंदी-भाषा—राष्ट्र-भाषा—में प्रकाशित करने का उद्देश्य भी यही है कि हिंदी-भाषा-भाषी समाज इसके द्वारा मूल महाराष्ट्र अर्थात् कोंकण-प्रदेश की पारिवारिक एवं पुराण-प्रिय संस्कृति का परिचय प्राप्त कर उस समाज से भली भाँति परिचित हो सके, क्योंकि इस समय देश में राष्ट्रीय भावना को पुष्ट करने का एकमात्र साधन यही हो सकता है कि प्रत्येक भारतीय यथासंभव निकटवर्ती एवं दूरस्थ प्रांतों की संस्कृति का अध्ययन कर उनके साथ तादात्म्य करने के लिये यत्नशील हो। आशा है, हिंदी-जगत् में इस पुस्तक का समुचित आदर होगा।

× × ×

भारतेर शिल्प-कथा—लेखक, श्रीअसितकुमार हालदार; प्रकाशक, कलकत्ता-विश्वविद्यालय; पृष्ठ-संख्या २५३, मूल्य लिखा नहीं; छपाई-सफ़ाई उत्कृष्ट; सजिल्द।

भारतीय भाषाओं में हमारी शिल्पकला के संबंध की पुस्तकों की बहुत बड़ी कमी है। बँगला में लिखी गई प्रस्तुत पुस्तक उस अभाव की ओर एक सत्प्रयास है। इसे लखनऊ के गवर्नमेंट चारु तथा कारु शिल्प-विद्यालय के प्रिंसिपल सुप्रसिद्ध कलाकार श्रीअसितकुमार हालदार महोदय ने परिश्रम-पूर्वक लिखा है। आपने इसमें भारतीय स्थापत्य कला, भास्कर्य कला और चित्रकला का इतिहास, प्रागैतिहासिक युग से आधुनिक युग तक का, संक्षिप्त रीति से दिया है। भारतीय कला में विदेशी प्रभाव की भी चर्चा की गई है, तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष की कला का जो प्रभाव अन्य देशों पर पड़ा है, उसका भी वर्णन है। पुस्तक में कुछ रेखा और हाफ़टोन चित्र भी दिए गए हैं। लेखक महोदय यदि हिंदी में भी इस पुस्तक को प्रकाशित करा देते, तो हिंदी-भाषा-भाषी कला-प्रेमियों का भी उपकार होता।

गोविंदवल्लभ पंत

× × ×

वाह री परीक्षा—लेखकत्रय, श्री'हरिदास', पं० श्री'कृष्णदत्त' भट्ट शास्त्री और पं० श्रीगणेशप्रसादजी नायक ; प्रकाशक, पुस्तक-भवन, बनारस सिटी ; मूल्य १)

प्रस्तुत पुस्तक में ५ कहानियाँ हैं—परीक्षा और भूल, आकर्षण का फल, विनाश की ओर, रिज़ल्ट और विवाह की वेदी। ये सभी कहानियाँ सरस, सरल, शिक्षाप्रद हैं। आशा है, हिंदी-संसार इस पुस्तक का यथेष्ट आदर करेगा।

× × ×

बाल-मनोरंजन (दूसरा भाग)—प्रणेता, श्रीज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' ; प्रकाशक, पुस्तक-भवन, बनारस सिटी ; मूल्य ।)

इस पुस्तक में आठ बालोपयोगी, शिक्षाप्रद तथा मनोरंजक कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ कविता-रूप में दी गई हैं। बालक इन्हें पढ़ते-पढ़ते आनंद-विभोर हो जायँगे। बालकों का इससे अच्छा मनोरंजन हो सकता है। आशा है, इस पुस्तक से बालक-वृंद लाभ उठाएगा।

श्रीदत्त अवस्थी

× × ×

व्यक्ति और राज—लेखक, श्रीसंपूर्णानंदजी ; प्रकाशक, हिंदी-पुस्तक-एजेंसी, ज्ञानवापी, काशी ; मूल्य १=) ; पृष्ठ १३५।

प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान् लेखक ने भूमिका के अतिरिक्त १२ प्रकरणों में अपने प्रतिपाद्य विषय का अत्यंत संक्षेप में विवेचन किया है। विषयसुख, अध्यात्मवाद, द्वंद्वात्मक प्रधानवाद, फ़ासिस्टवाद और नात्सीवाद, अफ़लातून का मत, कुछ स्फुट मत, सुख की खोज, स्वाधीनता (क), (ख), (ग), तत्परता की सीमा और राज और आत्मज्ञान, ये पुस्तक के प्रतिपाद्य स्तंभ हैं। पाठक भली भाँति जानते हैं कि विद्वान् लेखक एक विख्यात समाजवादी (Socialist) हैं, और पुस्तक के अंतिम भाग से यह भी प्रकट होगा कि आप भारतीय अद्वैत ब्रह्मवाद के भी माननेवाले हैं। ऐसी अवस्था में एकांततः जड़वादी (Materialist) मार्क्स (यहूदी) और एकांततः ब्रह्मवादी (Spiritualist) शंकर (आर्य) के समन्वित सिद्धांतों की आधार-शिला पर आप भारत के भविष्य का निर्माण श्रेयस्कर समझते हैं। पुस्तक के आरंभ में आपने अति संक्षेप में राज की परिभाषा करते हुए उसकी उत्पत्ति का स्वल्पतर प्रतिपादन किया है। आपके मत में मात्स्य न्याय को रोकने के लिये राज की उत्पत्ति हुई, और शनैः-शनैः उसमें अन्यान्य देशकालिक समस्याओं का समावेश होता गया। साथ ही वैयक्तिक स्वाधीनता पर भी राजसत्ता को सुदृढ़ बनाए रखने के लिये अनेक व्याजों से अनेक अनुचित और अन्यायोचित नियंत्रण लगाए गए। परिणाम में अध्यात्मवाद, द्वंद्वात्मक प्रधानवाद, फ़ासिस्टवाद और नात्सीवाद आदि की उत्पत्ति हुई। इन सबको सदोष और अव्यवहार्य दर्शाने की चेष्टा लेखक ने अपने दृष्टिकोण के अनुसार की है। अंत में आपने समाजवाद के द्वारा ही शोषक-शोषित-न्याय का निराकरण बतलाया है, और इसी की स्थापना से शांति-सुख का चिरस्थायी होना संभव माना है। किंतु विद्वान् लेखक की दो बातें समझने में कदाचित् साधारण पाठकों को कठिनाई होगी। एक तो यह कि श्रमजीवी कृषकादि उपभोग्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थों के उत्पादक बहुसंख्यक हैं, इस कारण अल्पसंख्यक पूँजीपति और भूमिपति उनका शोषण करते रहते हैं, पर यदि राज बहुसंख्यक श्रमजीवियों के अधीन होगा, तो वे ऐसा न करेंगे, क्योंकि अधिकसंख्यक अल्पसंख्यकों पर अत्याचार का व्यवहार कर ही नहीं सकते। इस युक्ति की पुष्टि में आपने वन्य सिंह का उदाहरण भी दिया है। वस्तुतः मनुष्य-स्वभाव की विचित्र प्रवृत्तियों का मनोवैज्ञानिक परिचय रखनेवाले तो केवल संख्यावाद (Force of Number) को सांख्यवाद (Philosophy of Wisdom) के स्थान में न्याय और सदाचार का मान-दंड किसी प्रकार नहीं मान सकते। फिर किस प्रकार यह कहा जा सकता है कि स्वार्थपरता से प्रेरित होकर पूँजीवादी (Capitalist) तो राजसत्ता से श्रमजीवियों का शोषक बन जाता है, किंतु श्रमजीवी उसी सत्ता को पाने पर स्वार्थपरता से कभी प्रभावित न हो सकेगा, और न पूँजीपति आदिकों के प्रति शोषक बन सकेगा। दूसरे, एकांततः अचेतनवादी यहूदी मार्क्स के जड़वादात्मक समाजवाद के साथ आर्य शंकर के विशुद्ध ब्रह्मवाद का अभूतपूर्व ग्रंथि-बंधन आप किस प्रकार संभव समझते हैं? आपकी इस सूझ को स्वीकार करने पर भी जो अव्यवहार्य बाधाएँ अफ़लातून की दार्शनिक राजप्रणाली में आना संभव हैं, वे सब बहुगुणित होकर आपके देव-पशु राज में आना संभव हैं, अन्यथा वर्तमान समय के मानव-समाज में कैसे और कब निष्काम, वीतराग, लोकसंग्रही, श्रेष्ठ पुरुषों की बहुसंख्या आपको समाजवादात्मक राज बनाने के लिये प्राप्त हो सकेगी? नीत्से के आदर्श पुरुष (Superman) की आलोचना करते हुए भी कैसे आप अपना अनोखा समाजवादात्मक राज स्थापित कर सकेंगे? अन्यथा "विनायकं प्रकुर्वाणो रचयामास वानरम्!" की उक्ति ही चरितार्थ होना अधिक संभव होगी।

तथापि पुस्तक पठनीय है, किंतु मूल्य अधिक है। अच्छा होता, यदि विद्वान् लेखक विशुद्ध आर्ष राजपद्धति के 'राज और व्यक्ति' पर विशद रूप से कोई ग्रंथ लिखते। भारतीय होने के कारण जैसे अति मृदुल, सुकोमल और अल्प मूल्य का विदेशी वस्त्र हमारे लिये हेय है, किंतु असुंदर, कठोर खद्दर महँगा होने पर भी सर्वथा उपादेय है, इसी प्रकार भारतीय अध्यात्मप्रधान "प्रकृतिरञ्जनाद्राजा" "क्षत्राय राजन्यम्" के आधार पर सुसंगठित राज ही हम भारतीयों के अनुरूप हो सकता है।

रामदत्त शुक्ल

संस्थापक—
देश-पूज्य राजेंद्रप्रसाद

देश

संपादक—
रामचंद्र त्रिवेदी

(युग-प्रवर्तक, राष्ट्रीय साप्ताहिक)

पढ़िए और विज्ञापन दीजिए!

वार्षिक मूल्य ३॥)

नमूना मुफ़्त मँगाइए।

मैनेजर 'देश', कदमकुआँ, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'संस्कार' (उपन्यास)—लेखक, श्रीरघुनाथसिंह ; मूल्य २।)

(२) 'स्वामी दयानंद' (जीवन-चरित्र)—लेखक, श्रीरमाकांत त्रिपाठी 'प्रकाश' ; मूल्य ।)

(३) 'हिंदी-साहित्य की भूमिका' (इतिहास)—लेखक, श्रीहज़ारीप्रसाद द्विवेदी ; मूल्य २)

(४) 'झंकार' (काव्य)—लेखक, श्रीसुदर्शन ; मूल्य ॥)

(५) 'ग्रामीण आदर्श' (उपन्यास)—लेखक, श्रीबैजनाथ केडिया ; मूल्य १)

(६) 'साहित्य-सर्जना' (निबंध)—लेखक, श्रीइलाचंद जोशी ; मूल्य १)

(७) 'महापुरुषों की जीवन-झाँकी' (जीवनी)—लेखक, श्रीप्रभुदयाल विद्यार्थी ; मूल्य ॥=)

(८) 'वैदेही-वनवास' (महाकाव्य)—लेखक, श्रीअयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ; मूल्य २।)

(९) 'कंपनी के काले कारनामे' (व्यापार)—लेखक, श्रीबलदेवप्रसाद गुप्त बी० ए०; मूल्य १)

(१०) 'तुलसी-मंजरी' (काव्य-संकलन)—लेखक, प्रो० श्रीधर पंत ; मूल्य १।)

(११) 'रूस पर रोशनी' (राजनीतिक)—अनुवादक, का० न० रामचंद्र शास्त्री ; मूल्य ॥)

(१२) 'करुणा' (काव्य)—लेखक, पं० हृदयनारायण पांडेय 'हृदयेश' ; मूल्य ॥)

(१३) 'मधुरिमा' (काव्य)—लेखक, पं० हृदयनारायण पांडेय 'हृदयेश'; मूल्य ।॥)

(१४) 'नागरिक कहानियाँ'—लेखक, प्रो० सत्येंद्र एम्० ए०; मूल्य ॥=)

(१५) 'सम्मोहन-विद्या' (विज्ञान)—लेखक, श्रीपी० सी० सरकार ; मूल्य ।॥)

(१६) 'अनमोल कहानियाँ'—लेखक, श्रीयुत शौकत उस्मानी ; मूल्य ।॥)

(१७) 'सरल अर्थशास्त्र'—लेखक, श्रीपं० दयाशंकर दुबे और श्रीभगवानदास केला ; मूल्य ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारा

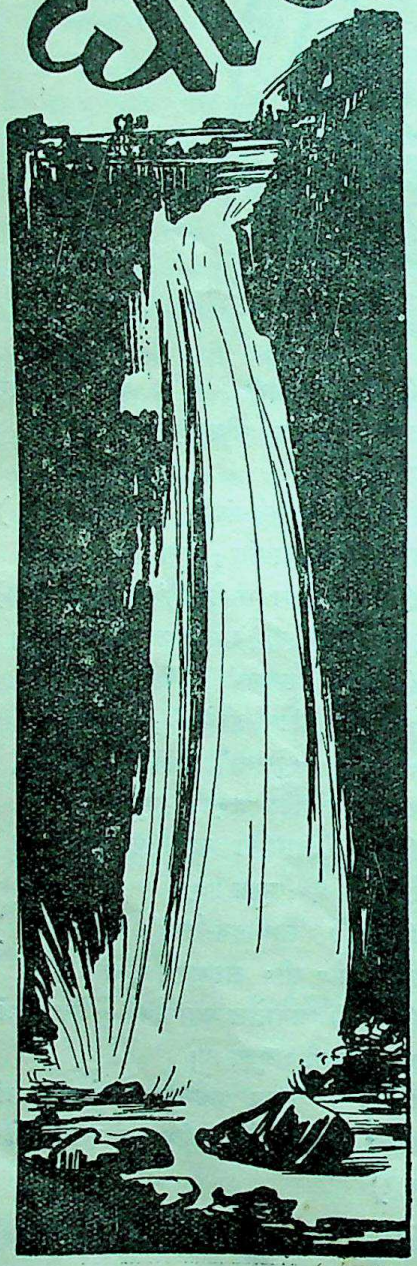

१. आतंक-पूर्ण स्थिति

मनुष्य को वैयक्तिक जीवन में कभी-कभी घोर संकटों का सामना करना पड़ता है, यहाँ तक कि किसी समय मनुष्य की सारी शक्ति थक जाती और वह परिस्थितियों का शिकार बन जाता है। जातियों और राष्ट्रों के जीवन में भी संकट-पूर्ण स्थितियाँ आती हैं। इतिहास में इसके अनेकों प्रमाण हैं। पर आज का इतिहास इस सबसे भिन्न रूप में लिखा जा रहा है, जब समस्त मानव-समाज पर घोर संकट की घटा छाई हुई है। आज की दुनिया पहली दुनिया से बदल गई है। अब तो विज्ञान के चमत्कार ने सारे विश्व का संबंध एक कुटुंब का-सा बना दिया है। भूमि, समुद्र और वायु के अनेकों साधनों द्वारा दुनिया के देश अब एक दूसरे से इतने निकट हो गए हैं कि दुःख और सुख में उनका साझा हो गया है। पृथ्वी के एक भाग में घोर संकट हो, और दूसरे भाग में उसका पता भी न लगे, यह स्थिति अब नहीं रही। अब योरप के एक भाग में युद्ध छिड़ा है, तो सारा संसार उससे प्रभावित हो रहा है। गत महासमर में भी सारे संसार पर संकट आया था। पर यह तो बीसवीं शताब्दी है। इन बीस-पचीस वर्षों में विज्ञान और सभ्यता ने कितनी उन्नति की है! लोगों के सामने कितनी ही नई चीज़ें आई हैं। वायु और पानी की शक्ति के नए-नए आविष्कारों से मनुष्य की खोज और उसकी दिमाग़ी ताक़त का पता लोगों को लगा है। पर अब तक हम उस शक्ति की मिठास का ही आनंद लेते थे, आज उसकी कड़ुआहट भी हमें बरदाश्त करनी पड़ेगी।

पोलैंड, नार्वे, हालैंड, बेलजियम और फ्रांस की भूमि पर तथा समुद्र की सतह और गहराई में लाखों मनुष्यों का संहार, लाखों-करोड़ों अनाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधवाओं का चीत्कार हमें घर बैठे ही रुला सकता है, हम दूर बैठकर ही आँसू बहा सकते हैं। पर स्थिति दिन-पर-दिन जैसी गंभीर होती जा रही है, उसमें दूसरों के लिये आँसू बहाना और सहानुभूति प्रकट करना भूलकर हम अपनी स्थिति पर अधिक ध्यान देने लगे हैं। युद्ध का आतंक बढ़ता जा रहा है। लोग एक भयंकर उलट-फेर की आशंका से बेचैनी प्रकट कर रहे हैं। एक राजकीय परिवर्तन से पहले आर्थिक जगत् में जैसी बेचैनी फैलती है, उसका सूत्रपात अपने देश में हो रहा है। लोग अपने पास के रुपए और खरे धन को गाड़ने लगे हैं, बैंकों में जमा किए हुए धन का अधिक निकास हो रहा है, नोटों के स्थान में अब लोग नक़द रुपए अधिक चाहते हैं। अभी हाल में कहीं-कहीं लोगों ने नोट लेने से हाथ खींचने का भी पागलपन शुरू कर दिया था। बैंकों से नोटों के बदले रुपए भुनाने की रफ़्तार तेज़ हो गई थी।

सरकार इस विषय में पूरी तरह सावधान है। उसने एक विज्ञप्ति निकालकर लोगों को बतलाया है कि भारत की आर्थिक स्थिति काफ़ी मज़बूत है, बैंकों की स्थिति सुदृढ़ है। साथ ही लोगों को गड़बड़ी न फैलाने और सरकार की साख को धक्का लगने की कोई हरकत न करने की चेतावनी भी दी है। हम इसका समर्थन करते हैं। सरकारी विज्ञप्ति में बैंकों की पूँजी, रिज़र्व धन, सैक्यूरिटी आदि के जो आँकड़े दिए गए हैं, उन पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं। साथ ही अफ़वाह फैलानेवालों और नोटों तथा बैंकों के प्रति अनावश्यक अविश्वास ज़ाहिर करने की हरकतों पर प्रतिबंध लगाना भी बुरा नहीं। ऐसी हालत में सरकार के लिये ऐसे कार्य करना लाज़िमी बात हो जाती है।

फिर भी इस संबंध में सरकार की तरफ़ से की जानेवाली कई कार्यवाहियों का हम विरोध करते हैं। वह इस कारण कि उनसे लोगों में फैली हुई अशांति और जनता के ऊपर छाया हुआ आतंक कम नहीं होता, बल्कि बढ़ता है। प्रांतीय सरकारें और उनके आदेश से स्थानीय अधिकारी जिस आशय की विज्ञप्ति और सूचना निकालते हैं, उनसे जनता में और भी असंतोष फैलता है। जो लोग अफ़वाह फैलाएँगे या लड़ाई की ख़बरों की इस ढंग से चर्चा करेंगे, जिसमें सरकार की कमज़ोरी ज़ाहिर हो, और लोगों में भय तथा निराशा पैदा हो, उन्हें इस तरह की हरकतों के लिये पाँच-सात साल तक की सज़ा मिलेगी—इस तरह के सरकारी ऑर्डर किसी भी व्यक्ति को किसी भी समय भयंकर दंड भोगने का पात्र बना सकते हैं। इससे नागरिक स्वतंत्रता का तो सर्वथा अपहरण होता ही है, पर चाहे जिस पुलिस-वाले और सरकारी कर्मचारी के हाथ में एक ऐसा अस्त्र आ जाता है, जिसके कुप्रहार से सभी लोग हर वक़्त शंकित, भयभीत और आतंक में डूबे रहेंगे। काग़ज़ी नोटों के संबंध में गिरफ़्तारियाँ करने की बात भी ठीक नहीं। भय और धमकी से स्थिति को ठीक रखने की अपेक्षा तो यह ठीक हो कि सरकार की तरफ़ से हर वक़्त लोगों को नोटों के रुपए मिलने का प्रबंध किया जाय। तब मुद्रा-संबंधी अशांति और लोगों की आशंका स्वयं दूर हो जायगी। लेकिन होता यह है कि सेविंग बैंक और सरकारी बैंकों से नोटों के रुपए मिलने में कठिनाई होती है, इससे लोगों में और भी अविश्वास फैलता है। लोग ग़लती पर हैं, सरकार का काम है कि लोगों की झूठी आशंका और भय दूर करे। गिरफ़्तारियों और डराने-धमकाने से नहीं, बल्कि परिस्थिति से जनता को पूरी तरह परिचित रखकर। इस संबंध में हम ब्रिटिश प्रधान मंत्री श्रीचर्चिल की तारीफ़ करेंगे। ब्रिटिश कॉमन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा में उनके वक्तव्य परिस्थिति का ठीक-ठीक पता देते हैं। इससे लोगों में भ्रम नहीं रहता और आनेवाली परिस्थिति का मुक़ाबिला करने के लिये उनमें साहस पैदा होता है। पर भारत में स्थिति दूसरी है। यहाँ भारत पर बाहरी ताक़त के हमले का डर बताया जाता है, आपस के झगड़ों से अशांति फैलने की ख़बरें दी जाती हैं, लड़ाई की ख़बरों की बाबत अनेक प्रतिबंध पैदा करके लोगों को गुमराह बनने का मौक़ा दिया जाता है। इसके साथ भारत-रक्षा-क़ानून का ज़ोरों के साथ अमल हो रहा है। इससे परिस्थिति और बिगड़ती है, जिसकी ज़िम्मेदारी सरकार के ऊपर आती है। हमारा निवेदन यह है कि इस वक़्त सरकार निहायत संजीदगी और समझ-बूझ के साथ परिस्थिति का मुक़ाबिला करे, और वैध उपायों से ही लोगों में फैले हुए आतंक को कम करने की चेष्टा करे। हर्ष की बात है, अब सरकार ने बैंकों से नोटों के रुपए मिलने का समुचित प्रबंध कर दिया है, जिससे भ्रम से फैले हुए आतंक में काफ़ी कमी आ गई है।

× × ×

२. ब्रिटेन के लिये अचूक अवसर

महात्मा गांधी ने अपने एक वक्तव्य में स्पष्ट कह दिया है—जब तक ब्रिटिश सरकार जीवन-मरण के युद्ध में फँसी हुई है, तब तक भारत में वह सत्याग्रह-आंदोलन छेड़कर सरकार की परेशानी न बढ़ाएँगे। पं० जवाहरलाल नेहरू ने भी अपने एक वक्तव्य में यही कहा है कि उनका मतलब सरकार की परेशानी से बेजा लाभ उठाने का नहीं। इससे सरकार के प्रति कांग्रेस की नीति का स्पष्ट पता लग जाता है। सत्याग्रह-आंदोलन की हाल में कोई संभावना नहीं, और जब तक वर्तमान युद्ध जारी है, तब तक यह नहीं छेड़ा जायगा। हमारी समझ में इस समय अँगरेज़ी सरकार के प्रति कांग्रेस की उदारता का इससे बड़ा कोई और सबूत नहीं हो सकता। कांग्रेस का जीवन देश की आज़ादी हासिल करने में है। इसलिये वह अब तक लड़ती रही है। विरोधी ताक़त हमेशा अपने दुश्मन की बेबसी और लाचारी से फ़ायदा उठाना चाहती है। लेकिन कांग्रेस अपने सत्य और अहिंसा के उसूल पर अचल है। वह अँगरेज़ों की शुभ-चिंतक है। इस लड़ाई में बार-बार कांग्रेस-नेताओं ने हिटलर और नाज़ियों के कृत्यों की घोर निंदा और मित्र राष्ट्रों की विजय की कामना की है। क्या ब्रिटिश सरकार के लिये इससे अच्छा और कोई मौक़ा आएगा, जब वह कांग्रेस की माँग स्वीकार कर हमेशा के लिये उसके साथ भाईचारे का संबंध जोड़ ले? कांग्रेस-नेताओं की स्पष्ट उक्तियों से सरकार को यह पता लग गया कि कांग्रेस का स्वरूप सदैव एक-सा रहा है। उसकी घोषणाएँ और उसका उद्देश्य एक है। कांग्रेस ने अब तक जो बात कही थी, वही आज भी कहे जा रही है। सरकार की विकट परिस्थिति में उसके रुख़ और व्यवहार में अंतर नहीं आया है। आज जब हज़ारों देश-सेवक जेलों में बंद किए जा चुके हैं, और गिरफ़्तारियों का सिलसिला जारी है, तब भी कांग्रेस को सत्याग्रह के लिये उतावली नहीं। इस वक़्त ब्रिटिश सरकार भारत की पूर्ण स्वतंत्रता की माँग स्वीकार कर विधान-परिषद् द्वारा भारत को शासन-विधान बनाने का अधिकार देती है, तो भारत अपने संपूर्ण साधनों के साथ ब्रिटिश सरकार का साथी होगा। यह साम्य लड़ाई के समय तक का ही न होगा, बल्कि महात्मा गांधी ने कहा है कि अभी भारत को वर्षों तक अपनी रक्षा के लिये ब्रिटिश सैनिक शक्ति के सहयोग की आवश्यकता पड़ेगी। कांग्रेस के इस इरादे और नए भारत-मंत्री मि० एमरी के उस वक्तव्य में, जिसमें वह भारत के आत्मनिर्णय के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकार को मंज़ूर करते हैं, सिर्फ़ कुछ स्पष्टता और थोड़े-से शब्दों का अंतर रह जाता है; कांग्रेस और सरकार आपस में एक जगह मिल सकते हैं। क्या यह अंतर इस वक्त दूर नहीं किया जा सकता? क्या ऐसे मौक़े पर, जो अँगरेज़-जाति के जीवन में सबसे नाज़ुक मौक़ा है, कोरी शेख़ी और बाह्य आडंबर की आड़ में सरकार कांग्रेस से हाथ मिलाने को तैयार न होगी? अगर नहीं, तो इसे हम घोर दुर्भाग्य के सिवा और क्या कहें?

× × ×

३. भारत अपनी रक्षा को तैयार है

भारत के कमांडर-इन-चीफ़ की एक विज्ञप्ति निकली है। इसमें आपने भारत पर भी किसी बाहरी शक्ति के हमला होने की आशंका प्रकट की है, और उसके लिये देश की सैनिक शक्ति बढ़ाने के लिये सहयोग देने की अपील की है। इधर पिछले दिनों से भारत में फ़ौजी तैयारियाँ कुछ विशेष रूप से हो रही हैं। एक सरकारी विज्ञप्ति में भारत की हवाई, समुद्री और स्थली शक्ति का परिचय भी दिया गया है। सरकार का रुख़ यहाँ हवाई शक्ति अधिक बढ़ाने का है, और आजकल के युद्ध का अनुभव देखकर ऐसा सोचना स्वाभाविक है। भारत का लंबा-चौड़ा समुद्र-तट है। उसे देखते हुए यहाँ एक बड़ा जंगी जहाज़ी बेड़ा चाहिए। अब तक हिंदोस्तान की फ़ौज पर जितना ख़र्च हुआ है, वह पैदल सेना की संख्या बढ़ाने पर ही अधिक हुआ है। पर इस लड़ाई ने बतला दिया कि फ़ौज में अधिक सैनिकों की भर्ती का इतना बड़ा मूल्य नहीं, जितना नई मशीनरी, टैंक हवाई जहाज़ और समुद्री बेड़े का हो सकता है। युद्ध कला के साधन इतने बढ़ गए हैं कि कोई फ़ौज जब तक उन सभी साधनों से सुसज्जित और निपुण न होगी, तब तक वह दुश्मन के ऊँचा सिर उठाने पर उस पर विजय प्राप्त करने का साहस नहीं कर सकती। आज की हालत में भारत इसके लिये कहाँ तक तैयार है? पिछली लड़ाई बीस को वर्ष बीत गए। तब भारतीय फ़ौज ने फ़्रांस, आफ़्रिका और मेसोपोटामिया के क्षेत्रों में अपनी बहादुरी का परिचय दिया था। सरकारी वक्तव्य ही इसकी ताईद करते हैं कि भारत की फ़ौज लड़ाई के मैदान में अपना अद्भुत पराक्रम दिखलाती है। पर यह पराक्रम कोरा शारीरिक बल-प्रदर्शन करने से नहीं आता। यदि इन बीस वर्षों में भारतीय सैनिकों को युद्ध-कला की वह तालीम मिली होती, जिसका परिचय हमें आज योरप की लड़ाई में मिल रहा है, तो निस्संदेह भारत आज अपनी रक्षा के लिये ही नहीं, औरों की रक्षा के लिये भी आगे बढ़ता, और दुनिया में उसकी ज़बरदस्त फ़ौजी ताक़त होती। अब जब ख़तरा सिर पर आ गया है, तब नई-नई बातें सूझने लगी हैं। क्या इतने अल्प समय में हिंदोस्तान अपनी इतनी फ़ौजी ताक़त बढ़ा सकता है कि इस लड़ाई के समय में ही उस पर किसी बाहरी शक्ति का आक्रमण हो, तो वह सफलता-पूर्वक उसका मुक़ाबिला कर सके? हमें तो इस सूझ में भी विशेष सार दिखाई नहीं देता कि हिंदोस्तान के ऊपर किसी बाहरी ताक़त का हमला होगा। क्या जर्मनी भारत पर आक्रमण करेगा? इँगलैंड-जैसे बलवान् शत्रु से मुक़ाबिला करने पर जर्मनी क्या खाकर भारत की ओर क़दम बढ़ा सकता है? हम समझते हैं, जर्मनी और रूस की अनाक्रमण-संधि होते हुए भी रूस को अपने अस्तित्व के लिये फ़ौजी ताक़तों को एशिया या पूर्व की ओर बढ़ने में रुकावट डालना लाज़िमी हो जायगा, और उसके लिये वह ख़तरा मोल ले लेगा, इसलिये इटली और जर्मनी योरप से आगे नहीं बढ़ सकते। यही बात रूस और जापान के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संबंध में भी कही जा सकती है। इनमें कोई भी एक दूसरे को इतना आगे क्यों बढ़ने देगा, जिसमें आगे चलकर किसी की स्थिति के लिये भयंकर ख़तरा पैदा हो सकता है। अतः रूस और जापान परस्पर एक दूसरे के डर से भारत की ओर नहीं बढ़ सकते। इसमें जापान तो आजकल स्वयं कमज़ोर हो रहा है। रूस की वैदेशिक नीति के अनुसार उसे अन्य देशों पर आक्रमण नहीं करना चाहिए। तब यहाँ ख़तरा किस बात का है? यदि आंतरिक ख़तरे की बात है, तो उसका इलाज सरकार के हाथ में है। हम इस गप्प में विश्वास नहीं करते कि पाकिस्तान-योजनावाले मुसलमान दक्षिण-पश्चिम-एशिया के मुसलिम राष्ट्रों का सहयोग पाकर यहाँ मुसलिम राज्य की सृष्टि कर सकते हैं। अफ़ग़ानिस्तान, ईरान या टर्की में आज इतना भी दम नहीं कि वे बिना किसी बड़ी ताक़त का सहारा लिए हुए किसी दुश्मन से अपनी रक्षा कर सकें। अपने राष्ट्र की सीमा से बाहर नज़र फेकना उनके लिये असंभव और नामाक़ूल बात है। यदि सरकार यहाँ के नेताओं की सलाह से भारत की राजनीतिक स्थिति ठीक कर दे, तो भारत के अँगरेज़-बालक-युवा-वृद्ध बारह हाथ की रज़ाई में आराम से सोएँ। फिर उनकी और हिंदोस्तानियों की जानोमाल की रक्षा का प्रश्न समस्त भारत की रक्षा का प्रश्न बन जायगा। यही क्यों, तब भारत के अँगरेज़ यहाँ के लोगों के साथ देश की रक्षा के कामों में वैसे ही साझीदार होंगे, जैसे अन्य राष्ट्र-निर्माणकारी कामों में वे हो सकते हैं। अँगरेज़ी फ़ौजी अफ़सर, फ़ौजी सामान, वायु-यान-विशारद, क्रूज़र, पनडुब्बी, एंटी-एयरक्रेफ़्ट, पैराशूट आदि जितने सामान और जितने प्रकार के आदमियों की यहाँ ज़रूरत होगी, उसकी पूर्ति कहाँ से हो सकती है? इसलिये परिस्थितियों का यह तक़ाज़ा है कि हिंदोस्तानियों और अँगरेज़ों का अभी वर्षों तक अटूट संबंध रहे। लेकिन यह संबंध भाईचारे का, समानता का होगा, शासक और शासित का या मालिक और ग़ुलाम का नहीं। ऐसी हालत में आज की सैनिक तैयारियों का भी बड़ा मूल्य होगा। इस संकट के समय देश-भर की शक्तियाँ विशेष रूप से इस कार्य में सहयोग दे सकती हैं। इसका बहुत बड़ा असर योरप के युद्ध पर भी होगा।

× × ×

४. ख़ाकसारों का जर्मनी से संबंध

ख़ाकसार-आंदोलन के संबंध में पहले भी हमने चर्चा की थी। मुसलिम स्वयंसेवकों का यह सैनिक ढंग का संगठन लोगों के लिये एक पहेली बन गया था। जिस ढंग से ख़ाकसारों ने काम किया, वह भी विचित्र था। लोगों में इससे और भी भ्रम पैदा हुआ। इस दल का उद्देश्य समाज-सेवा बतलाया गया, किंतु उसने राजनीतिक मामलों में ही दिलचस्पी ली। इस दल के लोगों से यह भी सुना गया कि वे हिंदोस्तान में मुसलिम राज्य स्थापन करना चाहते हैं। यह भ्रम इससे दूर हो जाता है कि आजकल वे सर सिकंदरहयातख़ाँ की सरकार के विरुद्ध मोर्चा ले रहे हैं। मुसलिम लीग से भी इस दल का कोई संबंध नहीं रहा, यह मि० जिन्ना के वक्तव्य से प्रकट हो गया। जिन्ना साहब को जो उम्मीदें अल्लामा मशरक़ी से पैदा हुई थीं, वे कुछ तो उसी वक़्त ख़त्म हो गई थीं, जब ख़ाकसारों ने यू० पी० के कांग्रेस-मंत्रिमंडल पर आक्रमण किया था, और उस वक़्त ख़ाकसारों के नेता ने कह दिया था कि मि० जिन्ना उनसे अपना मतलब गाँठना चाहते हैं। अपने प्रदर्शनों के अलावा ख़ाकसार-स्वयंसेवक कांग्रेस और मुसलिम लीग के नेताओं के जुलूसों में भी भाग लेते रहे हैं। इस तरह की परस्पर विरोधिनी कार्यवाहियों को देखते हुए यह समझ में आना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुश्किल है कि ख़ाकसार-दल वास्तव में है क्या? अल्लामा मशरक़ी एक तरफ़ ब्रिटिश सरकार को लड़ाई में पचास हज़ार स्वयंसेवकों से मदद देने का पत्र लिखते हैं, दूसरी तरफ़ पंजाब से लड़ाई के लिये सबसे अधिक सैनिक भेजनेवाली सिकंदर हयातख़ाँ की सरकार के ख़िलाफ़ लड़ाई शुरू कर देते हैं। तब क्या यह सब धोखा है? क्या ख़ाकसार-आंदोलन इन सबसे परे कोई और चीज़ है?

पिछले दिनों प्रांतीय सरकारों और केंद्रीय सरकार को भी इस तरह की परेशानी रही है, और उसने इस संबंध में विशेष रूप से जाँच की है। हमें पता नहीं, सरकार की जाँच का नतीजा क्या है, पर सहयोगी 'ट्रिब्यून' ने अपने एक लेख में इस विषय पर प्रकाश डाला है। उसके कुछ अंश इस प्रकार हैं—

"गत कुछ महीनों में इस आंदोलन के तमाम पहलुओं की बहुत निकट से जाँच की गई, और अधिकारी इस नतीजे पर पहुँचे बताए जाते हैं कि ख़ाकसार-आंदोलन विशुद्ध सामाजिक आंदोलन नहीं। इस बात के काफ़ी सबूत हैं कि इस आंदोलन को कहीं दूसरी जगह से प्रेरणा मिलती है। ख़ाकसारों का जर्मनी के साथ बहुत गहरा संबंध बताया जाता है। अब इस बात में संदेह नहीं रहा कि ख़ाकसार वर्तमान युद्ध में, भारत में, जर्मन जासूसों का काम करते हैं। इस आंदोलन की तह में जर्मनी का पूरा हाथ है। इस बात का सबूत ख़ाकसार-आंदोलन की आमदनी के स्रोतों की जाँच किए जाने पर मिला है, अर्थात् ख़ाकसार-नेताओं को हिटलर की तरफ़ से आर्थिक सहायता दी जाती है।"

आगे बताया गया है कि इस दल के कुछ नेताओं का ही जर्मनी से संबंध है। अल्लामा मशरक़ी बर्लिन हो आए हैं, और वहाँ जर्मन नेता की तरफ़ से उनका स्वागत किया गया। ख़ाकसार-स्वयंसेवकों द्वारा बेलचा धारण करने की प्रेरणा भी जर्मनी से मिली है, क्योंकि नाज़ी सैनिक भी बेलचा धारण करते हैं।

इस दल का संगठन बिलकुल तानाशाही ढंग पर किया गया है। ख़ाकसारों के मुख-पत्र 'अलइस्लाह' ने अब तक जर्मन आदर्शवाद का ख़ूब प्रचार किया है। नाज़ी नेताओं के चित्र छापे हैं। मुमकिन है, इस तरह के विशेषांक निकालकर, जिनमें जर्मनी का प्रोपेगैंडा किया गया हो, इस दल के लोगों ने नाज़ियों से काफ़ी रुपया ऐंठा हो।

जब इस तरह के प्रमाण मिलते हैं, तब क्या वजह है कि पंजाब में तीन-चार महीने से इस दल का आंदोलन जारी है, और सरकार ऐसे वक़्त इस आंदोलन को कुचल नहीं देती? क्या मुसलमान होने के कारण ख़ाकसारों की हरकतों की इतनी उपेक्षा की जा रही है? सरकार की इस ढिलाई की हम दाद नहीं दे सकते।

× × ×

५. राष्ट्रीय योजना-समिति

बंबई में राष्ट्रीय योजना-समिति की एक और बैठक, पं० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में, हो गई, तथा इन गर्मी के दिनों में ही एक बैठक और होनेवाली है। इस बैठक में भिन्न-भिन्न कमेटियों की रिपोर्टें पेश की गईं। हर्ष की बात है, इस समिति को सभी दल और विचारों के लोगों का सहयोग तथा सहानुभूति प्राप्त है। ऐसी दशा में इस कमेटी का जो भी निर्णय होगा, उस पर सारा देश अमल करेगा। भारत की आर्थिक स्थिति का प्रश्न बड़ा ही जटिल है। वह इसलिये कि अभी तक राष्ट्रीय दृष्टि से यहाँ के आय-स्रोतों की खोज करने, देश के निर्माण में उनका ठीक-ठीक उपयोग करने और उपयोग के लिये एक निश्चित और सर्वोपयोगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीति और उसूल क़ायम करने की कोशिश नहीं की गई। अभी तक व्यक्तिगत रूप से लोग यहाँ के आय-स्रोतों से काम लेते रहे हैं। जहाँ सम्मिलित पूँजी से कुछ धंधे चले हैं, वहाँ भी पहले उन्हीं धंधों को अपनाया गया है, जिनमें पूँजी के लिये कम ख़तरा हो, आसानी से माल पैदा हो सके, और जिनके लिये बाज़ार तैयार मिले। इसकी एक बड़ी वजह यह है कि भारत की पूँजी को विदेशों की बड़ी पूँजी का मुक़ाबिला करना पड़ता है, इसलिये वह एक सीमा तक और ख़ास-ख़ास दिशाओं में ही फूल-फल सकती है। सभी तरफ़ उसकी गति नहीं हो सकती। इसके लिये यह ज़रूरी है कि यहाँ के सभी तरह के उद्योग-धंधे, दस्तकारी, कला, आमदनी के साधन, उपयोग की मात्रा और बचत का परिमाण मालूम किया जाय, और एक देशव्यापी योजना के आधार पर सारे कार्य हों। इससे ऐसे अनेक धंधों, रोज़गारों और राष्ट्रीय आमदनी के साधनों की खोज हो सकेगी। आजकल जिन कामों की तरफ़ लोगों का ध्यान नहीं जाता, वे भी देश के लिये उपयोगी हो सकेंगे, जिससे देश की संपत्ति (Output) बहुत बढ़ जायगी। जिन कामों में अलग-अलग लोग अपना रुपया नहीं लगा सकते, पर जो कार्य राष्ट्र के लिये ज़रूरी हैं, उनकी तरफ़ सरकार ध्यान देगी। एक सर्व-सम्मत आर्थिक योजना होने से सभी श्रेणी के लोगों को अपनी स्थिति का पता रहेगा, वर्ग-विद्वेष नहीं बढ़ेगा। लोगों की शक्तियों का उपयोग राष्ट्र-निर्माणकारी कार्यों में होगा। यदि श्रम का एक भाग मज़दूरी की तादाद से अधिक होता है, तो उसका उपयोग समाज और राष्ट्र के सामूहिक लाभ के लिये होगा।

इसलिये इस राष्ट्रीय योजना का हमने हार्दिक स्वागत किया था। हर्ष की बात है, इस उथल-पुथल के समय भी इस उपयोगी आयोजना का कार्य बंद नहीं हुआ। वास्तव में इस विनाश-काल के बाद तुरंत ही जिस चीज़ की सबसे पहले ज़रूरत होगी, वह इस योजना के अंदर है। गत महा-समर के बाद योरप के देशों की बुरी दशा हो गई, सभी देशों में आर्थिक संकट उपस्थित हो गया, जिसके कारण गृह-युद्ध और नई क्रांति पैदा हो गई। उस वक़्त लोगों के सामने कोई निश्चित आर्थिक कार्य-क्रम नहीं था। जर्मन सरकार की साख गिर गई थी। लोग अँधेरे में भटकते थे। राजनीतिक संगठन के छिन्न-भिन्न होने पर भी आर्थिक संगठन की एक बुनियाद सामने होती है, तो देश तबाह होने से बच जाता है। हम नहीं समझते कि हिंदोस्तान में ऐसी स्थिति आ सकती है। फिर भी इस संघर्ष-काल से गुज़रने पर भारत को तुरंत ही बड़े पैमाने पर राष्ट्र-निर्माण के कार्य में जुट जाना होगा। अतः इस राष्ट्रीय योजना का आजकल के वक़्त में बहुत बड़ा मूल्य है। देश-वासियों को उसकी बातों से जानकारी रखनी चाहिए, और इस कार्य में सबका सहयोग होना चाहिए।

× × ×

६. देशी बीमा-कंपनियाँ

उद्योग और व्यवसाय में आजकल बीमा-व्यवसाय का भी विशेष स्थान है। इस व्यवसाय का भविष्य और भी उज्ज्वल है। हमारे देश में पिछले दिनों से बीमा-व्यवसाय की अच्छी उन्नति हुई है। इस उन्नति और प्रगति के साथ नई समस्याएँ, उलझनें तथा कठिनाइयाँ भी पैदा हुई हैं, जो स्वाभाविक हैं। अतः जिन क़ानूनों और नियमों के अंदर बीमा का व्यवसाय पहले होता था, उनमें संशोधन तथा सुधार करना और नए नियम बनाना लाज़िमी हो जाता है। भारत का सन् १९३८ का नया इंस्योरेंस ऐक्ट इसी का परिणाम है। यह भी सही है कि किसी क़ानून के लिये सभी लोगों का एकमत होना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी असंभव और मुश्किल है। लोगों के दृष्टिकोण और स्वार्थ भिन्न-भिन्न होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक मामले पर अपने दृष्टिकोण से ही विचार करता है। तब क़ानून का मंशा यह होना चाहिए कि वह एक ऐसी आधार-शिला तैयार करे, जिस पर भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण और स्वार्थ अधिक-से-अधिक एक दूसरे के नज़दीक आ सकें, और जिन व्यक्तियों का उससे संबंध है, उनकी अधिक-से-अधिक राय उसके पक्ष में हो। १९ मई को दिल्ली में भारतीय फ़ेडरेशन ऑफ़ इंडियन इंस्योरेंस कंपनीज़ की जनरल मीटिंग के वार्षिक अधिवेशन में उसके अध्यक्ष-पद से बाबू श्रीचंद दौनेरिया ने जो भाषण दिया, उसे लक्ष्य करके हमने उक्त शब्द कहे हैं। श्रीयुत दौनेरियाजी का बीमा-संबंधी ज्ञान गहरा है। वह एक बीमा-कंपनी के संचालक हैं। बीमा-क़ानून की आलोचना में उनकी राय एकपक्षीय हो सकती है। फिर भी आपने इस मामले पर सभी पहलुओं से विचार किया है, और इस बात को नहीं छिपाया है कि बीमा-क्षेत्र में नई-नई कंपनियों की जैसी दौड़ हो रही है, उससे उनमें कोई पछाड़ न खा जाय। जिस कंपनी की भित्ति सुदृढ़ नहीं, और उसका संचालन ठीक वैज्ञानिक ढंग पर नहीं हो सकता, उसे बीमा-व्यवसाय की उन्नति में सहायक न मानकर बाधक मानना चाहिए। श्रीदौनेरियाजी ने एक ओर जहाँ नई कंपनियों को अपनी बुनियाद और साख मज़बूत करने का आदेश दिया है, वहाँ नए बीमा-क़ानून की उस धारा की तीव्र आलोचना की है, जिसमें कंपनियों को एक बड़ी तादाद में सरकारी सैक्युरिटियों में रुपया जमा करना होगा। हम दौनेरियाजी की इस आलोचना से सर्वथा सहमत हैं कि इससे बीमा-व्यवसाय द्वारा देशी उद्योग-धंधों को अप्रत्यक्ष रूप से जो लाभ होता था, उसमें भारी कमी आ जायगी। इस दृष्टि से नया बीमा-क़ानून देश के लिये अनुपयोगी साबित होगा। पर इस बात को हमें नहीं भूलना चाहिए कि बड़े-बड़े उद्योग-धंधों के आगे छोटे-छोटे धंधे हमेशा तबाह हुए हैं। आज भी जिन बीमा-कंपनियों की बड़ी पूँजी है, उनकी जड़ मज़बूत है, और वे सरकारी सैक्युरिटियाँ जमा करके भी अपने को इस योग्य साबित कर सकती हैं कि वे देश के प्रधान, उपयोगी और मुख्य-मुख्य उद्योग-धंधों में, जिनकी ओर दौनेरियाजी ने संकेत किया है, रुपया लगा सकें। जो लोग अल्प पूँजी, अल्प ज्ञान और अल्प साधनों से बीमा-जैसे व्यवसाय के संचालन का ख़तरा मोल ले बैठते हैं, उन्हें अपने कार्य पर विचार करना चाहिए। हिंदोस्तान के उद्योग-धंधे विदेशी पूँजी का कड़ा मुक़ाबिला होने के कारण नहीं पनप पाते। वही दशा बीमा-कंपनियों के संबंध में है। बड़ी-बड़ी पूँजी की विदेशी कंपनियों का मुक़ाबिला जगह-जगह बीमा-कंपनियाँ खोलने से नहीं होगा। वह भी उस हालत में, जब यहाँ विदेशी सरकार है, और उसके क़ानून भी उसी ढंग के बनते हैं।

× × ×

७. फ़्लाउड-कमीशन की रिपोर्ट

बंगाल-सरकार ने अपने यहाँ की भूमि-समस्या की जाँच करने के लिये, सर फ़्रांसिस फ़्लाउड की अध्यक्षता में, एक कमीशन नियुक्त किया था। इस कमीशन के सदस्यों ने बंगाल के अतिरिक्त भारत के अन्य प्रांतों का भी दौरा किया, और हर जगह की भूमि के बंदोबस्त एवं प्रांतीय सरकारों की भूमि-व्यवस्था का ज्ञान प्राप्त किया। इसके बाद कमीशन ने लगभग पाँच सौ पृष्ठों की रिपोर्ट तैयार की। इस रिपोर्ट में विस्तार के साथ भारत और विशेषकर बंगाल की भूमि-संबंधी व्यवस्था की चर्चा की है, और उसके साथ अपने सुझाव पेश किए हैं।

भारत की भूमि-संबंधी व्यवस्था के संबंध में हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले भी चर्चा कर चुके हैं। इसलिये हम बंगाल के इस कमीशन और उसकी रिपोर्ट को बड़े महत्त्व की चीज़ समझते हैं। भारत की आर्थिक अवस्था के साथ यहाँ की भूमि-संबंधी समस्या का गहरा संबंध है। वास्तव में यहाँ तब तक कोई आर्थिक योजना काम में नहीं लाई जा सकती, जब तक भिन्न-भिन्न प्रांतों की भूमि-समस्या नए तरीक़े से हल नहीं की जाती। फ़्लाउड-कमीशन की रिपोर्ट में यह बतलाया गया है कि इतने दिनों के अनुभव से ज़मींदारी-प्रथा का अच्छा उपयोग नहीं हो रहा है, बल्कि उसके कारण कई ख़राबियाँ और बढ़ रही हैं। बंगाल का ही उदाहरण ले लीजिए। सन् १७९३ में लॉर्ड कार्नवालिस ने बंगाल में इस्तमुरारी बंदोबस्त क़ायम किया। तब से सरकार की भूमि-संबंधी आमदनी बिलकुल नहीं बढ़ी। ज़मीन की उपजाऊ शक्ति बढ़ी, जोत का रक़बा भी बढ़ा। फलतः ज़मींदारों की आमदनी बढ़ गई। हर बंदोबस्त में ज़मींदारों को ही अधिक लाभ हुआ। दूसरी तरफ़ सरकार की आमदनी नहीं बढ़ी, तो अपने ख़र्च के लिये उसने दूसरे तरह के कर लगाए। इसका बोझ आम जनता पर पड़ा। उधर ज़मींदारों को अच्छी आमदनी होने लगी, तो जिन लोगों के पास रुपया था, उन्होंने उसे ज़मींदारियों में लगा दिया और उद्योग-धंधे उजड़ गए। यह न केवल बंगाल में, बल्कि यू० पी० और अन्य प्रांतों में भी हुआ। उद्योग-धंधे नष्ट होने से लोगों की बेकारी बढ़ी। इस प्रकार साधारण लोगों पर दोनो तरफ़ से मार पड़ी। ज़मींदारों के नीचे खेती करनेवाले लोगों की दशा और भी ख़राब हो गई। वे ज़मींदारों के दास बन गए। कमीशन का कहना है कि बंगाल के एक तिहाई किसान ऐसे हैं, जिनके पास भूमि का एक टुकड़ा भी नहीं, और वे मज़दूरी करते हैं।

इन बातों पर विचार करते हुए फ़्लाउड-कमीशन ने सिफ़ारिश की है कि ज़मींदारी-प्रथा हटा दिया दी जाय, और ज़मींदारों को मुआविज़ा देकर सरकार उनकी ज़मीन ले ले। याद रखना चाहिए, कमीशन ने केवल आर्थिक पहलू ध्यान में रखते हुए ही यह सिफ़ारिश की है। इस प्रश्न के सामाजिक और राजनीतिक पहलू भी हैं। हम इस प्रश्न पर तत्काल ही कोई निर्णय देने को तैयार नहीं। हमारा विश्वास है, यह प्रश्न निकट-भविष्य में ही अधिक वेग के साथ हमारे सामने आवेगा, और तब हमें इसका हल ढूँढ़ना ही पड़ेगा। फ़्लाउड-कमीशन की सिफ़ारिश में हमें सचाई और सार, दोनो ही नज़र आते हैं। हम देखते हैं, ज़मींदारों की शक्तियों का आजकल के वक़्त में अच्छा उपयोग नहीं हो रहा है। उनका जो रुपया ज़मींदारियों में लगा हुआ है, उससे वे देश के उद्योग-धंधों का विकास कर सकते हैं। अब तक उनका सारा समय लगान की वसूलयाबी और उसके अलावा अन्य शान-शौकत, विलास और मुक़दमेबाज़ी में ही अधिक बरबाद होता रहा है। कितनी ही ज़मींदारियाँ क़र्ज़ में डूबी हुई हैं। यदि इससे छुटकारा पाकर ज़मींदारों की आर्थिक, मानसिक तथा शारीरिक शक्तियों का उपयोग उद्योग-व्यवसाय में हो, तो इससे उनका और देश का, दोनो का लाभ होगा। इससे एक विशेष लाभ यह भी होगा कि खेती की तरक़्क़ी होने लगेगी। जिन किसानों को भूमि का असली मालिक बना दिया जायगा, वे उसकी उपज और आमदनी बढ़ावेंगे। आजकल ज़मींदार तो खेती करते नहीं, किसान यह समझकर कि वह ज़मीन का मालिक नहीं, उसके पास की ज़मीन कल उससे छिन जायगी, खेती अच्छी तरह नहीं करता। अब जो लोग बिना भूमि के खेतों में मज़दूरी करके जीविका कमाते हैं (इस तरह खेती के ऊपर ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक बोझ पड़ रहा है), वे नए उद्योग-धंधे खुलने से उनमें काम करने चले जायँगे। इससे भूमि के ऊपर पड़ा हुआ बोझ हलका होगा। हम चाहते हैं, इन मामलों पर गंभीरता के साथ विचार किया जाय, और भविष्य की बातों पर विचार करते हुए मुआविज़े के साथ ज़मींदारी-प्रथा हटा दी जाय, तो अच्छा ही होगा।

× × ×

८. बीदर-कांड

हैदराबाद-राज्य के बीदर-नामक स्थान की घटना ऐसी है, जिसकी ओर से आँखें बंद करके नहीं बैठा जा सकता। घटना का पता पाठकों को है। एक साधारण-सी बात पर, दो लड़कों के आपस के झगड़े के कारण, मामला ज़ोर पकड़ गया, और उसमें उत्पाती लोगों ने भाग लेकर अपनी कुप्रवृत्तियों और निंदनीय हरकतों का परिचय दिया। दूकानों में आग लगा दी गई। माल की लूट हुई। हत्याएँ हुईं। कोई सवा सौ घर और दूकानें जलीं। क़रीब ५० लाख की हानि हुई। जन और धन दोनों प्रकार की हानि में हिंदुओं की तादाद ज़्यादा है। एक प्रकार से यह घटना सक्खर-कांड का ही एक रूप है। इस तरह के कांडों से कब हमारा पिंड छूटेगा, यह कोई नहीं कह सकता। निज़ाम-राज्य में ऐसी घटना होने का कुछ विशेष अर्थ भी हो सकता है। असल में कोई साधारण घटना ईंधन में चिनगारी का काम करती है। जहाँ इस तरह के झगड़े होते हैं, उसका साफ़ मतलब यह होता है कि वहाँ का वातावरण पहले से ही इस

पर्ल पाउडर

के

व्यवहार से शरीर की थकावट दूर होती है। घमौरी फूट जाती है। ग्रीष्म की थकावट दूर होकर मन आनंद-पूर्ण हो जाता है।

यह पाउडर बच्चे के शरीर पर बुरकने के लिये सुगंधित किया हुआ है, और कीटाणु-नाशक है।

बंगाल केमिकल ऐंड फ़ारमास्युटिकल वर्क्स लि०

कलकत्ता : : बंबई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार का बना हुआ था। हैदराबाद मुसलिम रियासत है। इस रियासत की बाबत एक बहुत बड़ा आंदोलन हो चुका है। उस आंदोलन का कारण भी वहाँ के हिंदुओं की शिकायतें थीं। उम्मीद थी, उस आंदोलन की समाप्ति पर हैदराबाद का वातावरण ठीक हो जायगा, और वहाँ के हिंदू और मुसलमान मेल तथा प्रेम के साथ रहने लगेंगे, लेकिन इस घटना से पता लगता है कि वहाँ की हालत बहुत बिगड़ी हुई है। इसकी ज़िम्मेदारी रियासत के अधिकारियों पर है। सक्खर के दंगे के कारण ही सिंध के अल्लाबख़्श-मंत्रिमंडल का अंत हो गया। जहाँ राज्य-सत्ता मुसलिम अधिकारी के हाथ में हो, और वहाँ मुसलमानों द्वारा ग़ैर-मुसलमानों पर अत्याचार किया जाय, तो राज्य-सत्ता की ज़िम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। यही बात उस स्थान के संबंध में भी कही जा सकती है, जहाँ अधिकारी हिंदू या ग़ैर-मुसलमान हों, और वहाँ मुसलमानों पर किसी तरह की सख़्ती की जाय। तब क्या निज़ाम-सरकार इस तरह के मामलों को रोकने के लिये निश्चित क़दम उठाने को तैयार है? क्या वह बीदर की घटना के संबंध में एक निष्पक्ष जाँच-कमीशन बिठाने की उदारता प्रकट करेगी? जिन लोगों के मामले अदालत में चल रहे हैं, उनकी बाबत हम कुछ नहीं कह सकते। उनका न्याय तो अदालत द्वारा होगा ही। पर यह कांड दैवी या संयोग-वश तो हुआ नहीं, इसके कुछ बुनियादी कारण होंगे। उनकी जाँच की जाय। जब तक हैदराबाद-राज्य में उत्तरदायी शासन की स्थापना नहीं हो जाती, जिसमें राज्य की ज़िम्मेदारी प्रजा के चुने हुए प्रतिनिधियों के हाथ में आ जाय, तब तक इस तरह के कांडों की ज़िम्मेदारी नवाब हैदराबाद और उनके मंत्रियों पर ही रहेगी। इसलिये इन ज़िम्मेदारियों से बचने और बदनामी न उठाने का सीधा मार्ग तो रियासतों में उत्तरदायी शासन की स्थापना है। पर जब तक सत्ताधारियों में इतनी विवेक बुद्धि नहीं आती, तब तक प्रजा को असंतोष और रोष दूर करने के लिये इतना तो मालूम करना ही पड़ेगा कि राज्य के जिन कर्मचारियों को प्रजा के जान-माल की रक्षा का काम सुपुर्द किया गया है, उनके होते हुए साधारण घटनाएँ क्यों इतना भयंकर रूप धारण कर लेती हैं। अवश्य ही बीदर-कांड की बाबत भी इस तरह की शिकायतें होंगी। राज्याधिकारियों का कर्तव्य है कि वे ऐसे लोगों के कार्यों की जाँच करके उनके अपराध के लिये उन्हें उचित दंड दें।

× × ×

६. विश्व-विख्यात भारतीय खिलाड़ी की मृत्यु!

भारतवर्ष ने हर क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय ख्याति के सपूत पैदा किए हैं। साहित्य, विज्ञान, राजनीति, शारीरिक पराक्रम आदि में अब भी भारतीय सपूतों का नाम दुनिया के भागों में गौरव के साथ लिया जाता है। इनमें क्रिकेट के खिलाड़ी श्रीअमरसिंह का देहावसान अभी जामनगर में हो गया। यह संवाद न केवल भारत के कोने-कोने में, बल्कि दुनिया के अनेकों भागों में बड़े दुःख के साथ सुना गया। स्वर्गीय अमरसिंह ने क्रिकेट के खेल में दुनिया-भर के प्रसिद्ध खिलाड़ियों को मात दी थी। उन-जैसा बाउलर दुनिया में कोई न था। संसार के खिलाड़ियों में अमरसिंह का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता था। वह जहाँ गए, वहीं उन्होंने अपना और उसके साथ देश का मस्तक ऊँचा उठाया। अमरसिंह को खोकर भारत ने अपना एक अनमोल रत्न खो दिया। अमरसिंह के स्थान की पूर्ति होना कठिन है। सन् १९३१ से वह क्रिकेट के मैदान में आए, और अपने समय के महान् क्रिकेटर कहलाए। उनकी असामयिक मृत्यु पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न केवल उनके संबंधी, बल्कि दुनिया-भर के लोग आँसू बहाते हैं। परमात्मा स्वर्गीय अमरसिंह की आत्मा को शांति प्रदान करें।

× × ×

१०. श्रीभानु-अभिनंदन-ग्रंथ

छंद-प्रभाकर, काव्य-प्रभाकर आदि अमर हिंदी-ग्रंथों के रचयिता कविवर पं० जगन्नाथप्रसादजी 'भानु' हिंदी के सबसे वयोवृद्ध साहित्य-सेवी हैं। आप आगामी श्रावण शुक्ल १० को ८१ वर्ष के हो जायँगे। आप छंद-शास्त्र के अद्वितीय ज्ञाता हैं। सहृदयता और उदारता मूर्ति हैं। हमें यह जानकर खुशी हुई है कि सी० पी० के साहित्य-सेवी उनको अर्पण करने के लिये अभिनंदन-ग्रंथ निर्माण कर रहे हैं। अस्तु। श्रीभानु-अभिनंदन-समिति, बिलासपुर ने सूचना प्रकाशित की है—

श्रीभानु-अभिनंदन-समिति का निर्माण हो चुका है। रायगढ़-नरेश राजा चक्रधरसिंहजू अध्यक्ष, उनके दीवान डॉ० बलदेवप्रसाद मिश्र उपाध्यक्ष एवं काव्यविनोद पांडेय लोचनप्रसाद, 'वीणा'-संपादक 'कुसुमाकर'जी, आचार्य भालचंद्र राव तैलंग, श्रीप्यारेलालजी गुप्त और बंदेअली फ़ातमी क्रमशः संपादन-मंत्री, प्रकाशन-मंत्री, अर्थ-मंत्री तथा सामग्री-मंत्री निर्वाचित हुए हैं।

अभिनंदन-ग्रंथ का कार्य ज़ोर-शोर से प्रारंभ कर दिया गया है। इसकी सफलता का श्रेय अधिकांशतः काव्याभिरुचि रखनेवाले सर्व-साधारण पर ही निर्भर है। विचार है, मध्यप्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन द्वारा अनुमोदित श्रीभानु-अभिनंदन-ग्रंथ केवल श्रद्धा-पुष्प न हो, बल्कि मध्यप्रदेश की वर्तमान साहित्यिक प्रगति का प्रतीक भी हो। इसके लिये प्रकाशकों से पत्र-व्यवहार हो रहा है।

प्रकाशनादि-संबंधी सहायताएँ और लेख श्रीबंदेअली फ़ातमी, सामग्री-मंत्री श्रीभानु-अभिनंदन-समिति, प्रेम-मंदिर, रायगढ़ (सी० पी०) तथा आर्थिक सहायताएँ श्रीप्यारेलाल गुप्त, अर्थ-मंत्री, श्रीभानु-अभिनंदन-समिति, मैनेजर को-ऑपरेटिव बैंक, बिलासपुर (सी० पी०) के पते पर आनी चाहिए। मध्यप्रांतीय साहित्य-सम्मेलन के आदेशानुसार ग्रंथ-कार्य आगामी अधिवेशन तक समाप्त हो जाना आवश्यक है।

अभिनंदन-समिति ने कुछ विषयों की एक सूची भी तैयार की है, जिन पर लेख आने चाहिए। वह सूची नीचे दी जाती है—श्रद्धेय भानु महोदय को छोड़कर अन्य विषयों के निबंधादि केवल मध्यप्रांतीय साहित्यिकों के ही आने चाहिए। लेख बहुत बड़े न हों, वरन् छोटे, परंतु सार-पूर्ण हों, इसका ध्यान रखना आवश्यक है—

(१) छत्तीसगढ़ का ऐतिहासिक महत्त्व

(२) साहित्य में महाकोशल (प्राचीन-अर्वाचीन) का स्थान

(३) शिला-लेखों तथा ताम्र-पत्रों में काव्य

(४) हिंदी-साहित्य का अन्य साहित्यों से संबंध

(५) मध्यप्रांतीय साहित्यिकों का स्वभाव

(६) छत्तीसगढ़ का ग्राम्य गीत-साहित्य

(७) 'कामायनी' मध्यप्रांत की दृष्टि में

(८) 'साकेत' एक मध्यप्रांतीय की दृष्टि में

(९) मध्यप्रांत की दृष्टि में प्रेमचंद

(१०) संगीत और कला-प्रेमी महाकोशल

(११) देवार-गीतों में छत्तीसगढ़ का प्राचीनगौरव

(१२) संस्कृत-साहित्य में भारतीयता का सांस्कृतिक विकास

(१३) उर्दू, हिंदी, हिंदुस्तानी या एक भाषा, एक लिपि

(१४) गांधी, भारतीय विश्व-भावना का वर्तमान प्रतीक

(१५) आधुनिक विज्ञान में भारत का वैज्ञानिक महत्त्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१६) नारी-जाति और साहित्य

(१७) हिंदी के मुसलमान सेवक

(१८) श्रद्धेय साहित्यिकों के संस्मरण (पत्र, डायरी, सत्संग इत्यादि)

(१९) क्रिश्चियन मिशनरियों और ग़ैर-मिशनरियों की हिंदी-सेवा

(२०) कहानी (मौलिक)

(२१) एकांकी नाटक (मौलिक)

(२२) गद्य-काव्य (मौलिक)

(२३) कविताएँ (व्रजभाषा, खड़ी बोली एवं अन्य मध्यप्रदेशीय बोलियों में)

(२४) अभिनंदन-साहित्य की उपयोगिता

(२५) भानु कवि की मौलिक कविताएँ

(२६) श्रीभानु से अन्य साहित्यिकों का संबंध, उनकी वैयक्तिक महत्ता

(२७) श्रद्धेय भानु की देन—पिंगल तथा गणित-ज्ञान

(२८) हज़रत फ़ैज़ की शायरी

(२९) श्रीभानु द्वारा रामायण पर प्रकाश

(३०) श्रीमान् भानु के ग्रंथ-लेखन का इतिहास

(३१) श्रीभानु-भक्त्यंजलि (पद्य)

× × ×

११. साहित्य-प्रेमियों से—

लहेरियासराय का पुस्तक-भंडार शीघ्र ही अपनी रजत-जयंती मनाने जा रहा है। इस अवसर पर 'स्मारक-ग्रंथ' और 'पुस्तक-भंडार का इतिहास'-नामक दो दर्शनीय ग्रंथ निकल रहे हैं। साहित्य-प्रदर्शनी और कवि-सम्मेलन का भी आयोजन है। साहित्य-प्रदर्शनी में बिहार की प्राचीन पत्र-पत्रिकाएँ भी रक्खी जायँगी। जिनके पास बिहार की प्राचीन पत्र-पत्रिकाएँ हों, उन्हें चाहिए कि उनकी प्रतियाँ भेज दें। जयंती-समारोह के बाद पत्र-पत्रिकाएँ सुरक्षित रूप में लौटा दी जायँगी। जिन पत्र-पत्रिकाओं की आवश्यकता है, उनके नाम नीचे दिए जा रहे हैं—

बिहार-बंधु (बिहार शरीफ़), लक्ष्मी (गया), मिथिलामिहिर (दरभंगा), चंपारण-चंद्रिका (मोतिहारी), तिर्हुत-समाचार (मुज़फ़्फ़रपुर), नारद (छपरा), सारन-सरोज (छपरा), खत्री-हितैषी (पटना), भारत-रत्न (पटना), क्षत्रिय-पत्रिका (पटना), पीयूष-प्रवाह (भागलपुर), मनोरंजन (आरा), सत्ययुग (मुज़फ़्फ़रपुर), आर्यावर्त (राँची और दानापुर), नागरी-प्रचारिणी, विद्या (राँची), पाटलिपुत्र (पटना), चंपारन-हितकारी (मोतिहारी), हरिश्चंद्र-कौमुदी (गया), भूमिहार-ब्राह्मण-पत्रिका (मुज़फ़्फ़रपुर), रौनियार-हितैषी (मुज़फ़्फ़रपुर), महिला-दर्पण (छपरा), गृहस्थ (गया), साहित्य-माला (गया), विद्या (गया), मारवाड़ी-सुधार (आरा), राम (आरा), विजय (छपरा), पूर्णिया-समाचार (पूर्णिया), सत्संग, सुप्रभात (भागलपुर), हरिश्चंद्र-कला (पटना), शिक्षा (पटना), महावीर (पटना), देश (पटना), तरुण-भारत (पटना), बिहारी (पटना), चैतन्य-चंद्रिका (पटना), विद्या-धर्म-दीपिका (बगहा, चंपारन), नागरी-प्रचारिणी त्रैमासिक पत्रिका (आरा), साहित्य-पत्रिका मासिक (आरा), तेली-समाचार (बाढ़), रवानी समाचार (आरा), कमला (भागलपुर), प्रजाबंधु (पटना), जैनसिद्धांत-भास्कर (आरा), आशा (मुज़फ़्फ़रपुर), लेख-माला और वैशाली (मुज़फ़्फ़रपुर) इत्यादि। इनके सिवा और भी बहुत-सी पुरानी पत्र-पत्रिकाएँ होंगी। उनके पुराने अंकों के प्रदर्शन के साथ संग्रहकर्ता अथवा प्रेषक का नाम और पता तथा चित्र भी, प्राप्त होने पर, प्रदर्शित किया जायगा। अस्तंगत पत्र-पत्रिकाओं के प्रथम और अंतिम अंक तथा कोई विशेषांक मिल सकें, तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्युत्तम। वर्तमान पत्र-पत्रिकाओं के प्रथमांक और विशेषांक भी चाहिए।

आशा है, साहित्य-प्रेमी इस निवेदन पर अवश्य ध्यान देंगे, और इस कार्य में संयोजकों का हाथ बटाएँगे।

× × ×

१२. हिंदी और पं० वेंकटेश नारायण तिवारी

पं० केदारनाथ पांडेय लिखते हैं—

"साहित्य-सम्मेलन के काशी-अधिवेशन के पश्चात् से पं० वेंकटेशनारायण तिवारी ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में हिंदी-हिंदोस्तानी-विषयक लेख लिखकर हिंदी की जो बहुमूल्य सेवा की है, उसके लिये हिंदी उनकी चिर-ऋणी रहेगी। उन्होंने हिंदी या हिंदोस्तानी-आंदोलन का जो वास्तविक भंडाफोड़ किया है, उससे वह बहुत-से लोगों के कोप-भाजन हो रहे हैं। कोई उन्हें हिंदू-महासभाइस्ट कहता है, तो कोई हिंदू-पक्षी। सारांश यह कि हिंदोस्तानी-समर्थक उन्हें ख़ूब पेट-भर खरी-खोटी सुना रहे हैं। इतना सब होने पर भी धुन के पक्के तिवारीजी जिस उत्साह के साथ इस कार्य में संलग्न हैं, वह प्रशंसनीय है। हम आशा करते हैं कि तिवारीजी इसी भाँति आंदोलन बढ़ाते चलेंगे, और अपने सहकारियों को भी इसके हेतु उत्साहित करेंगे।"

गुलदस्तए-नग़मात

(पहला गुलदस्ता)

जिसमें नई और पुरानी चाल के ख़याल, ठुमरियाँ, दादरे, होलियाँ, चैतियाँ, कजलियाँ, ग़ज़लें, सुंदर कविता और बंदिश की निहायत आसान और सरल नोटेशन में, हर गाने पीछे पाँच-पाँच ख़ूबसूरत तानें, आलाप और गाने का तरीक़ा दिया गया है। मूल्य २।)

लेखक—प्रोफ़ेसर बड़े आग़ा साहब,
भातखंडे यूनिवर्सिटी आफ़ इंडियन म्युज़िक
लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगस्त, सन् १९४० ई०

का

'सुधा' का विशेषांक

अगस्त, १९४० का नववर्षांक विशेषांक होगा। इसमें उत्तमोत्तम पाठ्य-सामग्री, अनेक रंगीन तथा बीसों सादे एवं दुरंगे चित्र होंगे। हिंदी-संसार के कृतविद्य, लब्धप्रतिष्ठ एवं धुरंधर विद्वानों और अपने विषय के विशेषज्ञों के सर्वश्रेष्ठ लेखों का यह अनुपम भांडार होगा। टाइप तथा छपाई नयनाभिराम एवं दर्शनीय होगी। इस बात का विशेष प्रयत्न किया जा रहा है कि यह विशेषांक बहुत ही बढ़िया हो।

यह विशेषांक हज़ारों ग्राहकों की सेवा में पहुँचेगा, और लाखों पाठकों की दृष्टि से गुज़रेगा, तथा जुलाई-मास के अंतिम सप्ताह में प्रकाशित हो जायगा। अतः इस विशेषांक में विज्ञापन देना निश्चय ही अपने व्यापार को अधिकाधिक लाभ पहुँचाना है। विज्ञापन-दाताओं को इस अवसर से अवश्य लाभ उठाना चाहिए।

समय बहुत कम है, अतः फ़ौरन् अपना विज्ञापन आकर्षक रूप से बनवाकर स्थान ठीक करा लें, वरना पछताना पड़ेगा। आपको विज्ञापन बनाने का अवकाश न हो, तो हम बना देंगे।

'सुधा' के इस विशेषांक को समस्त हिंदी-संसार पढ़ेगा! १२ जुलाई तक अपना आकर्षक विज्ञापन हमें भेज दीजिए।

मैनेजर 'सुधा', ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तमोत्तम कहानियाँ

प्रेम-प्रसून

(तृतीयावृत्ति)

स्व० प्रेमचंदजी की उत्तमोत्तम १२ कहानियों का संग्रह। यदि आप पुस्तक पढ़कर अपना अस्तित्व भूल जाने का आनंद लूटना चाहते हैं, तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए। मूल्य १।), सजिल्द १।।।)

मंजरी

(द्वितीयावृत्ति, सचित्र)

लेखक, पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न। महाकवि श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर आदि वंग लब्ध-प्रतिष्ठ गल्प-लेखकों की श्रेष्ठ, सरस और चमत्कार-पूर्ण, सुंदर, स्वाभाविक, रोचक, काव्यमय, भाव-पूर्ण, सूक्ष्म चरित्र-चित्रण करनेवाली, शिक्षा-प्रद और उत्साह-वर्द्धक गल्पों का अनूठा संग्रह। मूल्य १।), सजिल्द १।।।)

चित्रशाला

(द्वितीयावृत्ति)

हिंदी-जगत् से जिसका कुछ भी परिचय है, वह कहानियों के श्रेष्ठ लेखक पं० विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' को जानता होगा। आपकी कहानियाँ एक-से-एक बढ़कर होती हैं। पाठक कभी करुणा से रोने लगते हैं, कभी विनोद की गुदगुदी से हँसने लगते हैं। अनेक सादे और रंगीन चित्रों से युक्त इस ४०० पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ३।) है, और सजिल्द ४।)

अद्भुत आलाप

(चतुर्थावृत्ति)

लेखक, स्वर्गीय पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी। इसमें ऐसे-ऐसे विचित्र, कौतूहल-पूर्ण निबंध हैं कि शुरू करने पर विना समाप्त किए रहा नहीं जाता। इसकी लेखन-शैली का तो कहना ही क्या! विषय इतना रोचक है कि उपदेश के साथ-साथ खासा मनोरंजन भी होता है। मूल्य ।।।), सजिल्द १।)

प्रेम-गंगा

अनुवादक, स्व० पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा। वस्तुतः यह पुस्तक प्रेम की निर्मल गंगा ही है। इसमें प्रेम की ऐसी रसीली कहानियाँ हैं कि पढ़कर आप मुग्ध और चकित हो जायँगे। सौंदर्य में कैसी विचित्र अकर्षण-शक्ति है, प्रेम में कितनी तेज़ बिजली भरी हुई है, पुरुषार्थ और वीरता से कैसी-कैसी अलभ्य वस्तुओं का उपभोग किया जा सकता है, आदि का अच्छा दिग्दर्शन है। कई रंगीन और सादे चित्र। मूल्य १।), सजिल्द १।।।)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा उपन्यास-साहित्य

हृदय की परख

(चतुर्थावृत्ति)

लेखक, हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक प्रोफ़ेसर चतुरसेन शास्त्री आयुर्वेदाचार्य। आपने इस उपन्यास में मनुष्य के विचार को बड़े ही उत्तम ढंग से अंकित किया है। इसे देखकर हमें सहसा कह देना पड़ता है कि यह उपन्यास अब तक के प्रकाशित तमाम उपन्यासों से बाज़ी मार ले गया है। उत्तमता का यही काफ़ी प्रमाण है कि इतने अल्प समय में चार-चार संस्करण छापने पड़े। मूल्य १), सजिल्द १॥)

बहता हुआ फूल

(तृतीयावृत्ति)

अनुवादक, पं० रूपनारायण पांडेय। वंग-भाषा के लेखकों में श्रीयुत बाबू चारुचंद्र वंद्योपाध्याय बी० ए० का नाम ख़ूब प्रसिद्ध है। यह उपन्यास उन्हीं के 'स्रोतेर फूल' नाम के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास का हिंदी-अनुवाद है। चरित्र-चित्रण जिस सुंदरता के साथ किया गया है, उसे देखकर आप मुग्ध हुए विना नहीं रह सकेंगे। अनेक रंग-बिरंगे चित्रों से सुसज्जित। लगभग ५०० पृष्ठ। मूल्य २॥), सजिल्द ३)

विजया

अनुवादक, पंडित रूपनारायण पांडेय कविरत्न। इस उपन्यास में सामाजिक चरित्र-चित्रण इतनी बारीकी और सुंदरता से किया गया है कि कहीं पढ़ते-पढ़ते करुणा और सहानुभूति से हृदय पिघल जाता है, और कहीं घटना की वास्तविकता से प्रभावान्वित होकर आठ-आठ आँसू बहाने पड़ते हैं। ६-७ रंगीन और सादे चित्र भी दिए गए हैं। मूल्य १॥), सजिल्द २)

पवित्र पापी

सुप्रसिद्ध रूसी उपन्यास-लेखक डॉस्टाय फ़िस्की के लोक-प्रिय उपन्यास 'crime and Punishment' का हिंदी-अनुवाद। अनुवादक, पं० व्रजकृष्ण गुर्टू बी० ए०, एल्-एल्० बी० और कविराज विद्याधर विद्यालंकार। रूस की दरिद्रता, वहाँ की राजनीतिक अवस्था, पुलिस की तहक़ीक़ात का ढंग, साइबेरिया के जेल की दशा, शराबख़ाने का दृश्य, सच्ची मित्रता का अनुपम चित्र और स्वार्थी मनुष्य का प्रेम देखते ही बनता है। मूल्य ३), सजिल्द ३॥)

विचित्र योगी

लेखक, श्रीद्वारकाप्रसाद मौर्य बी० ए०, एल्-एल्० बी०। वसुमती का अपनी सती-साध्वी देवरानी से ईर्ष्या करना। देवर का चित्त अपनी ओर आकर्षित करने के लिये षड्यंत्र की रचना। कमला के साथ दुर्व्यवहार। काशी में किसी पंडा के घर उसका छोड़ा जाना। वहाँ से उसका निकल भागना। एक मियाँ के हाथ में पड़ना। वहाँ भी एक हिंदू दाई की मदद से अपने सतीत्व की रक्षा करना और भाग निकलना। आदि गार्हस्थ्य जीवन की जटिल समस्याओं से भरपूर। मूल्य १), सजिल्द १॥)

जासूस की डाली

लेखक, श्रीयुत बाबू गोपालरामजी गहमरी, जासूस-संपादक। गहमरीजी जासूसी कहानियाँ लिखने में कितने सिद्ध-हस्त एवं पटु हैं, यह किसी से छिपा नहीं। आप ही की कहानियों का यह सुंदर संग्रह है। प्रत्येक कहानी इतनी रोचक है कि शुरू करके फिर विना ख़त्म किए जी नहीं मानता। अनेक सादे और रंगीन चित्र। मूल्य १॥), सजिल्द २)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गया ! धड़ाधड़ बिक रहा है !! अपनी प्रति शीघ्र मँगा लें !!!

कांग्रेस-राज्य में

अर्थात्

संयुक्त प्रांत में कांग्रेस-शासन के अट्ठाईस महीने

[लेखक—श्रीगोपीनाथजी श्रीवास्तव एम्० एल्० ए०, भूतपूर्व पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी]

इस पुस्तक के अँगरेज़ी-संस्करण का अच्छा स्वागत हुआ, जिससे हिंदी-संस्करण की भी माँग बढ़ती गई। अतएव प्रोत्साहित होकर हमने इसे जनता के लाभार्थ हिंदी में प्रकाशित किया है। इस पुस्तक द्वारा हमें यह अच्छी तरह विदित हो जाता है कि कांग्रेस-शासन ने, अपने कुछ दिनों के अस्तित्व में, लोक का कितना कल्याण किया। पुस्तक में कुल बारह अध्याय हैं, जिनमें कांग्रेस-गवर्नमेंट ने निम्नांकित विषयों-संबंधी जो-जो सुधार अथवा कार्य किए, उनका पूर्ण दिग्दर्शन कराया गया है, जैसे—नागरिक स्वतंत्रता, हरिजन, दरिद्रता और जायदाद, काश्तकारी, ग्राम-सुधार, घरेलू उद्योग-धंधे, मज़दूर, शिक्षा, आबकारी, सिंचाई और सरकारी इमारतें, स्थानीय शासन और स्वास्थ्य, जेलख़ाने, राजस्व, सांप्रदायिक स्थिति, स्पीकर और विधान।

उपर्युक्त सभी कार्यों की सुव्यवस्था में कांग्रेस-मंत्रिमंडल ने, यू० पी० में, जिस महान् व्यवहार-कुशलता का परिचय दिया, और इसका जो प्रभाव प्रांत की जनता पर पड़ा, उसे यहाँ लिखना असंभव है—उसे तो आप इस पुस्तक के पढ़ने पर ही भली भाँति जान सकेंगे।

राष्ट्रीय तथा राजनीतिक विचारवाले प्रत्येक स्त्री-पुरुष को इसे मँगाकर अवश्य पढ़ना चाहिए। पुस्तक की भाषा तथा छपाई-सफ़ाई का तो कहना ही क्या! पृष्ठ-संख्या २०० ; मूल्य सादी ॥।), सजिल्द १।)

सब प्रकार की हिंदी-पुस्तकें मिलने का पता—

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered No. A—473

एक अनिवार्य नित्य-कर्म

ज्योंही आपके पति कामसे घर वापस आयें तथा आपके बच्चे पाठशालासे लौटें आपको तुरन्त उनकी चाय बनानी चाहिये। और इस प्रकार आप प्रति दिन, अपने घर पर अपनी निजी चाय मंडलीका आयोजन करें, यही गार्हस्थ्य-जीवनके आनन्दकी पराकाष्ठा है। आप ही के घर ऐसी आनन्ददायक मंडली इस समय और भी बहुतसे घरोंमें जुड़ी होगी।

आइये,

हम सब भारतीय चाय पियें

चाय तैयार करनेका तरीका : ताजा पानी खौलाइये। साफ बर्तन जरा गर्म कर लीजिये। उसमें प्रत्येकके लिये एक और एक चम्मच अधिक, बढ़िया भारतीय चाय रखिये। पानी खौल जाते ही चाय पर ढाल दीजिये। पांच मिनिटों तक चायको सीझने दीजिये। इसके बाद प्यालोंमें ढाल कर दूध और चीनी मिलाइये।

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैंशन बोर्ड द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
गंगा-फ्राइनश्रीट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल (सेठ प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Approved by the Directors of Public Instruction in U.P., C.P., C.I., Bombay, Behar & Punjab

पुस्तकालय
6.5.40

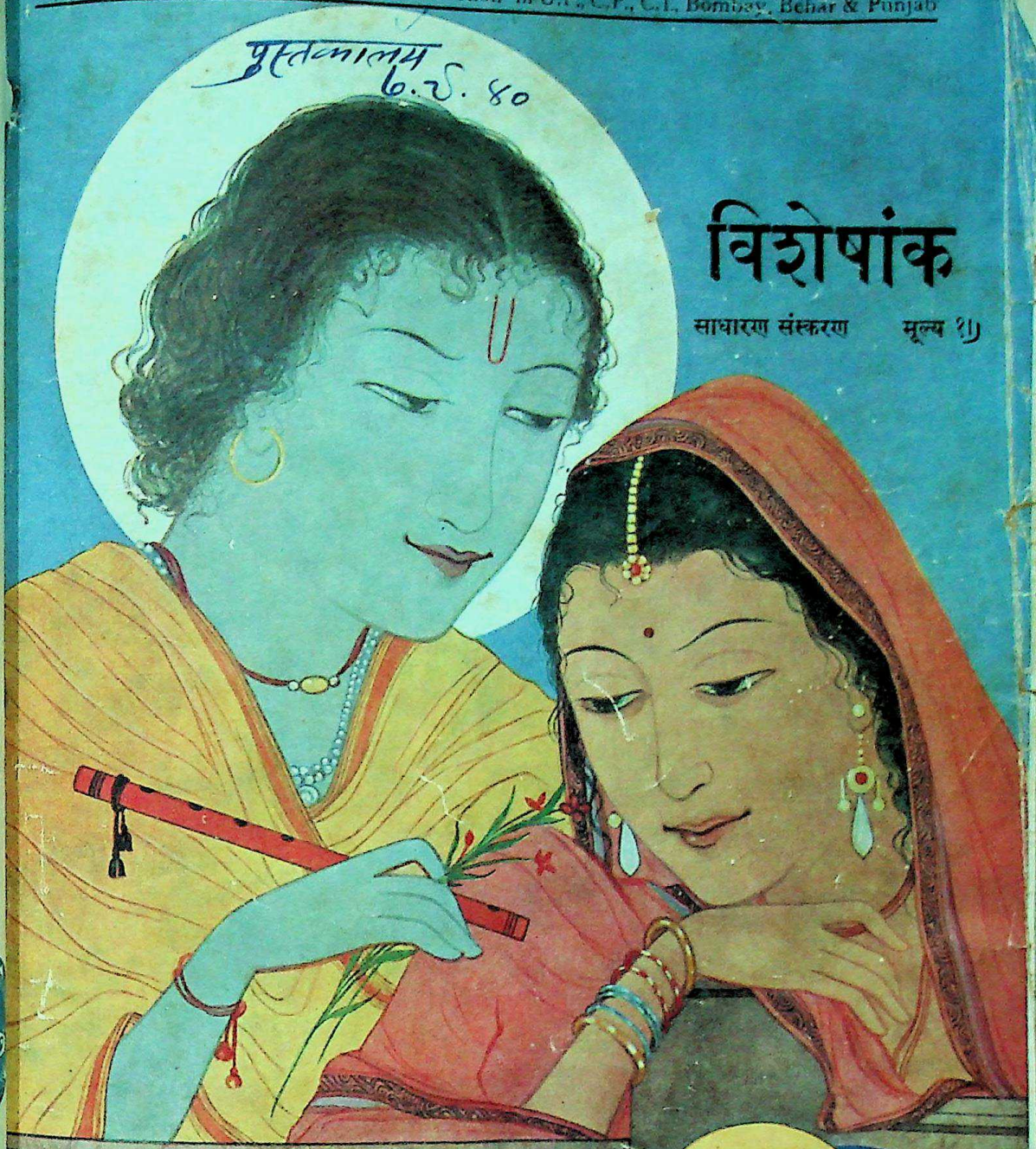

विशेषांक

साधारण संस्करण मूल्य १)

दिन पेश्तर उसकी सूचना देनी चाहिए।

लेख आदि

लेख या कविता स्पष्ट अक्षरों में, काग़ज़ की एक ओर, संशोधन के लिये इधर-उधर जगह छोड़कर, लिखी होनी चाहिए। क्रमशः प्रकाशित होने लायक़ बड़े लेख संपूर्ण आने चाहिए। किसी

नज़रों सेगुज़र
पत्रिका होने के
बढ़ रहा है।

कृपया शीघ्र ही
कर लाभ उठाइए
तो कर लीजिए।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

संपादक
श्रीदुलारेलाल
श्रीसावित्री

श्रावण, १९९७
AUGUST, 1940

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-साहित्य का शृंगार

'कसक'-नामक काव्य-संग्रह प्रकाशित हो गया!

[ले०—श्रीराय दुर्गाप्रसाद रस्तोगी 'आदर्श']

'कसक' की दर्द-भरी कविताओं का नवयुवकों और नवयुवतियों ने जैसा स्वागत किया है, वैसा अन्य किसी काव्य का इधर देखने में नहीं आया। थोड़े-से विद्वानों और साहित्यिकों की सम्मतियाँ देखिए—

१—महाकवि पं० अयोध्या-सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

'कसक' के कवि सहृदय हैं, और साहित्य-मर्मज्ञ भी। 'कसक' में वैसे ही हृदय की कसक का मनोरम चित्र है।

आज ही अपनी प्र

पता—र

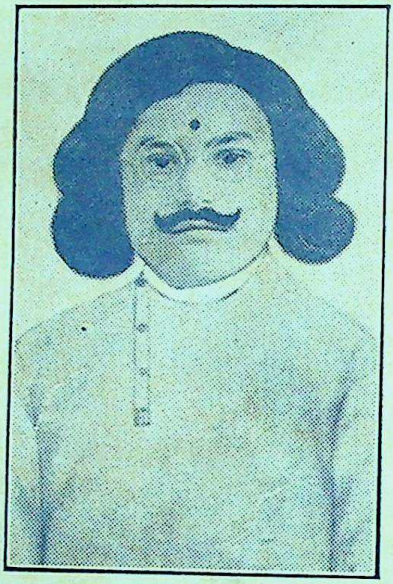

'कसक' के भावुक कवि—
श्रीकविवर 'आदर्श'

"मेरे कलेजे की कसक,
ताक़त अगर तुझमें कहीं,
उनका कलेजा दे हिला,

२—महाकवि बाबू मैथिलीशरण गुप्त

आपकी साहित्य-साधना की सफलता चाहता हूँ। 'कसक' देखकर उसकी आशा होती है।

३—डॉक्टर रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' एम्० ए०

'कसक' में वस्तुतः बड़ी कसक है, जो सरल, सुबोध और भाव-पूर्ण भाषा में व्यक्त की गई है। कतिपय स्थानों में भावानुभूति बड़ी ही रुचिर और रोचक है। पदावली भी सयत और

में प्रत्येकके लिये एक और एक चम्मच अधिक, बढ़िया भारताथ चाय
ी खौल जाते ही चाय पर डाल दीजिये। पांच मिनिटों तक चायको
ये। इसके बाद प्यालोंमें डाल कर दूध और चीनी मिलाइये।

द्वारा प्रचारित IKI

में श्रीगुलाबलाल (सेल्स प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा के नियम

[सुधा के २ संस्करण निकलते हैं—(१) राजसंस्करण, (२) साधारण संस्करण]

मूल्य

'सुधा' के राजसंस्करण का डाक-व्यय-सहित वार्षिक मूल्य १२), छ मास का ६) और प्रति संख्या का १) है। साधारण संस्करण का वार्षिक ६), छ मास का ३) और एक प्रति का ॥) है। वी० पी० से मँगाने में ≡) रजिस्ट्री के और देने पड़ेंगे। इसलिये ग्राहकों को मनीऑर्डर से ही चंदा भेज देना चाहिए। भारत के बाहर सर्वत्र वार्षिक मूल्य वही है, जो भारत में। सुधा की यह भी एक विशेषता है। वर्षारंभ श्रावण (अगस्त) से होता है। लेकिन ग्राहक चाहे जिस संख्या से बन सकते हैं।

अप्राप्त संख्या

अगर कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे, तो उसी महीने के अंत तक कार्यालय को सूचना मिलनी चाहिए। लेकिन हमें सूचना देने के पहले स्थानीय पोस्ट-ऑफ़िस में उसकी जाँच करके डाकख़ाने का दिया हुआ उत्तर सूचना के साथ आना चाहिए। उन्हें उस संख्या की दूसरी प्रति भेज दी जायगी। लेकिन उक्त तारीख़ के बाद सूचना मिलने से उस पर ध्यान नहीं दिया जायगा, और उस संख्या को ग्राहक १) या ॥) के टिकट भेजने पर ही पा सकेंगे।

पत्र-व्यवहार

उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिए, अन्यथा पत्र का उत्तर विलंब से दिया जाना संभव है। पत्र के साथ ग्राहक-नंबर का भी उल्लेख होना चाहिए। मूल्य या ग्राहक होने की सूचना मैनेजर सुधा, नं० ३६, लाटूश रोड, लखनऊ के पते से आनी चाहिए।

पता

ग्राहक होते समय अपना नाम और पता बहुत साफ़ अक्षरों में लिखना चाहिए। दो-एक महीने के लिये पता बदलवाना हो, तो उसका प्रबंध डाक-घर से ही कर लेना ठीक होगा। अधिक दिन के लिये बदलवाना हो, तो संख्या निकलने के १५ दिन पेश्तर उसकी सूचना देनी चाहिए।

लेख आदि

लेख या कविता स्पष्ट अक्षरों में, काग़ज़ की एक ओर, संशोधन के लिये इधर-उधर जगह छोड़कर, लिखी होनी चाहिए। क्रमशः प्रकाशित होने लायक़ बड़े लेख संपूर्ण आने चाहिए। किसी लेख अथवा कविता के प्रकाशित करने या न करने का, उसे घटाने-बढ़ाने का तथा उसे लौटाने या न लौटाने का सारा अधिकार संपादक को है। जो नापसंद लेख संपादक लौटाना मंज़ूर करें, वे टिकट भेजने पर ही वापस किए जा सकते हैं। यदि लेखक लेना स्वीकार करते हैं, तो उपयोगी और उत्तम लेखों पर पुरस्कार भी दिया जाता है। सुधा में प्रकाशित पुरस्कृत लेखों और कविताओं को पुस्तकाकार या किसी संग्रह में निकालने का अधिकार सुधा के अध्यक्ष को रहेगा। अपुरस्कृत रचनाओं पर लेखकों और सुधा-अध्यक्ष, दोनों का अधिकार होगा। सचित्र लेखों के चित्रों का प्रबंध लेखकों को करना चाहिए। चित्र प्राप्त करने के लिये आवश्यक ख़र्च प्रकाशक देंगे।

लेख, कविता, समालोचना के लिये पुस्तकें और बदले के पत्र इस पते से भेजने चाहिए—

श्रीदुलारेलाल
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
कवि-कुटीर, लखनऊ

विज्ञापन

किसी महीने में विज्ञापन बंद करना या बदलवाना हो, तो एक महीने पहले सूचना देनी चाहिए।

अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। छपाई पेशगी ली जाती है। विज्ञापन की दर नीचे प्रकाशित है—

साधारण	१ पृष्ठ	या	१	,,	,,	,,	१५)	,, ,,
,,	½ ,,	या	½	,,	,,	,,	१०)	,, ,,
,,	¼ ,,	या	⅛	,,	,,	,,	६)	,, ,,

कम-से-कम आधा कालम विज्ञापन छपानेवालों को सुधा मुफ़्त मिलती है। विज्ञापनदाता द्वारा छपे हुए सुधा-साइज़ के ८ पृष्ठ के क्रोड़-पत्र की सिलाई, बटाई के चार्जेज़ ६०), ४ पृष्ठ के ३५) और २ पृष्ठ के २०) लिए जाते हैं।

सुधा में विज्ञापन छपाने से बड़ा लाभ रहता है। कारण, इसका प्रत्येक विज्ञापन लाखों पढ़े-लिखे, धनीमानी और सभ्य स्त्री-पुरुषों की नज़रों सेगुज़र जाता है। हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका होने के कारण इसका प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ रहा है।

कृपया शीघ्र ही अपना विज्ञापन सुधा में छपाकर लाभ उठाइए। कम-से-कम एक बार परीक्षा तो कर लीजिए।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सुधा' का अगला अंक

इस विशेषांक का परिशिष्टांक है

जो १५ सितंबर तक निकल जायगा।

इसके कुछ महत्त्व-पूर्ण लेख और कविताएँ निम्न-लिखित हैं—

लेख	लेखक
१. मत छिपो—(कविता)	श्री'वचनेश'जी
२. बड़ा पापी कौन ? (नाटक)—गतांक से संबंधित...	श्रीयुत सेठ गोविंददास
३. म्योरियो की प्रणय-लीला (सचित्र)	श्रीमती प्रभावतीदेवी
४. हाँ (कहानी)	श्रीमती स्वरूप कुमारी काक 'करुणा'
५. कोर-कसर (कविता)	श्री'हरिऔध'जी
६. स्कूलों के लगने का समय	श्रीयुत कालिदास कपूर एम्०ए०,एल्० टी०
७. उद्वेग से बचने के उपाय	डॉ० दुर्गाशंकर नागर
८. प्रभात (कविता)	श्रीपं० भूपनारायण दीक्षित एम्० ए०, एल्० टी०
९. भारतवर्ष में वैदिक साहित्य का प्रकाशन-कार्य	श्रीवासुदेवशरण अग्रवाल एम्० ए०, एल्-एल्० बी०
१०. इस हाथ दे, उस हाथ ले (कहानी)	श्रीव्रजरत्नदास

मासिक पत्रिकाओं में 'सुधा' का विशेषांक सर्वोत्तम है।

ग्राहक बनने के लिये नीचे का फ़ार्म भरकर भेज दीजिए—

:—यहाँ से काटिए—:

नं० ..... ता० .....

मैनेजर 'सुधा'

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

प्रिय महाशय,

कृपया मेरा नाम सुधा के साधारण/राज संस्करण के ग्राहकों में लिख लीजिए।

वार्षिक मूल्य ६) / १२) वी० पी० द्वारा वसूल कर लीजिए। / मनीऑर्डर से प्रेषित है।

भवदीय—

[हस्ताक्षर कीजिए]

पूरा पता.....

.....

.....

नोट—वी० पी० मँगाने की अपेक्षा मनीऑर्डर से मूल्य भेजने में ।) की बचत होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमला

[महिलाओं की अपनी मासिक पत्रिका]

संपादक—श्रीबाबूराव विष्णुपराड़कर

सहायक—श्रीशांतिप्रिय द्विवेदी

वार्षिक मूल्य ४॥) एक प्रति का ।=)

विदेश में ६॥) विदेश में ॥)

'कमला' कैसी निकल रही है?

मनीषियों की दृष्टि में

डॉ० भगवानदास—

जहाँ तक मैंने देख पाया, इसमें शिष्ट मनोरंजन, ज्ञानवर्धन, विचार-प्रोत्साहन, कविता-स्वादन, सभी प्रकार की कुछ-न-कुछ आधुनिक सामग्री रहती है।

काका कालेलकर—

स्त्री-जाति की सर्वांगीण उन्नति के लिये 'कमला' को छोड़कर और कौन मासिक पत्रिका है?

मैथिलीशरण गुप्त—

बहुत अच्छी निकल रही है।

डॉ० बाबूराम सक्सेना—

(प्रधान मंत्री हिं० सा० स०, प्रयाग)

देखकर तबियत ख़ुश हुई।

बनारसीदास चतुर्वेदी—

कितने ही लेख ऐसे निकले हैं, जो कन्याओं की पाठ्य-पुस्तकों में उद्धृत किए जा सकते हैं।

नवयुवक साहित्य-सेवियों को 'कमला' जो प्रोत्साहन दे रही है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी होगी।

उषा मित्रा—

'कमला' जो सुंदर होकर निकलती है, उसके लिये मुझे तनिक भी विस्मय नहीं है, क्योंकि प्रसिद्ध साहित्य-सेवियों के हाथ से उसका साधारण होकर निकलना ही एक विस्मय की बात थी। यदि विस्मय है, तो इस बात पर कि इतने अल्प मूल्य में, विशद आकार-प्रकार में 'कमला' ऐसी पुष्ट होती किस प्रकार से है?

पत्र-पत्रिकाओं की दृष्टि में

'प्रताप', कानपुर—

कन्याओं और गृहिणियों के लिये उपयोगी एवं शिक्षा-प्रद मनोरंजक सामग्री का इसमें सुरुचि-पूर्ण संकलन किया गया है। कविता, कहानी, उपदेश, मनोरंजक चुटकुले, घर-गृहस्थी की दैनिक आवश्यकता, स्वास्थ्य, सफ़ाई आदि कितने ही उपयोगी विषयों पर योग्य लेखक-लेखिकाओं की रचनाएँ दी गई हैं।

'साहित्य-संदेश', आगरा—

भारतीय महिला को जिसकी ज़रूरत है, वह सभी मसाला इस पत्रिका में है।

यू० पी० सरकार का मासिक पत्र 'हल', लखनऊ—

इसमें कविताओं, कहानियों तथा स्त्री-संबंधी उपयोगी लेखों का सुंदर चयन हुआ है। इसमें केवल सामाजिक लेखों को ही स्थान नहीं दिया गया है, बल्कि राजनीतिक तथा अन्य विषयों के लेखों की भी अधिकता है। संपादन अच्छी तरह किया गया है। इसकी छपाई-सफ़ाई भी सुंदर है।

'जनता', पटना—

सुरुचि और सादगी इसकी अपनी कला है। लेखों का चयन बहुत ही सुंदर होता है। पाठ्य-सामग्री काफ़ी रहती है। हिंदी के माने जाने लेखकों का सहयोग 'कमला' को प्राप्त है।

'सुदर्शन', एटा—

हम अधिकार-पूर्वक कह सकते हैं कि यदि हम अपनी महिलाओं को पश्चिमी रंगीन संस्कृति से सुरक्षित रखकर उन्हें भारतीय सभ्यता के अनुकूल बनाना चाहते हैं, तो 'कमला' जैसी पत्रिका को हमें उनके निकट पहुँचाना ही होगा।

पता—मैनेजर 'कमला', गायघाट, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापार की मंदी होने पर भी

१. ठीक-ठीक लिखे हुए
२. उपयुक्त माध्यम में दिए गए **विज्ञापन**
३. सुंदरता से छपे हुए

व्यापार की चाभी
विज्ञापन छपाना
: : है : :

हमेशा रुपया खींचते हैं

सुधा

१. में दक्ष मनोवैज्ञानिक विज्ञापन-लेखक नियुक्त हैं।
२. विज्ञापन देने के लिये सर्वोत्तम माध्यम है।
३. उसकी टाइपोग्राफ़ी कला-पूर्ण है।

इसीलिये

सुधा में विज्ञापन छपाइए

आपके
लाभ
की
बात

साधारण विज्ञापन की दर

	प्रतिमास
१ पृष्ठ की छपाई	२५)
१/२ ,, ,, ,,	१५)
१/४ ,, ,, ,,	१०)
१/८ ,, ,, ,,	६)

सुधा में जितने विज्ञापन छपते हैं, उतने किसी भी हिंदी-पत्रिका में नहीं छपते !

मैनेजर 'सुधा'
[विज्ञापन-विभाग]
नं० ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सी० पी०, बिहार, उड़ीसा आदि के शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत

बाल-विनोद

[बच्चों के लिये सर्वश्रेष्ठ सचित्र मासिक पत्र]

भारत के प्रत्येक बालक-बालिका को

ज़रूर पढ़ना चाहिए।

क्योंकि—

१. बाल-विनोद के अक्षर-अक्षर में बालकों के लिये नवयुग का संदेश भरा रहता है।

२. बाल-विनोद की कविता-कहानी पढ़कर बालक लोट-पोट हो जाते हैं, और अंत तक पढ़े बिना रह नहीं सकते।

३. बाल-विनोद बच्चों को देश, विदेश, विज्ञान और भूगोल आदि का ज्ञान सीधी, सरल कहानियों ही में करा देता है।

४. बाल-विनोद के विशेषांक एक नई चीज़ बालकों के लिये सुलभ कर देते हैं।

५. बाल-विनोद की प्रशंसा समस्त हिंदी-संसार ने मुक्त कंठ से की है।

संपादक

श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट

इसका नया विशेषांक

नटखट-अंक

१५ जुलाई, सन् १९४० को प्रकाशित हो गया।

पृष्ठ-संख्या लगभग १००; चित्र-संख्या ६० !

दुरंगी स्याही से छपा हुआ !!

बाल-लेखकों द्वारा लिखा हुआ !!!

यह अंक बच्चों के सब पत्रों में बेजोड़ है।

मूल्य १), अभी से ग्राहक बनें और मुफ्त लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश

[राष्ट्रीयता का प्रबल समथक सचित्र साप्ताहिक]

संपादक—रामचंद्र त्रिवेदी

केवल 'देश' पढ़कर ही आपको संतोष हो सकता है,

क्योंकि

देश - विदेश के सबसे ताज़े समाचार, अंतरराष्ट्रीय विषयों के गंभीर लेख,
मनोहर - चुहचुहाती कहानियाँ, देहाती दुनिया का सजीव चित्र,
बापू की अनमोल वाणी, विचार - पूर्ण साहित्यिक
निबंध, तरुणाई से ओत-प्रोत कविताएँ

आपको केवल 'देश' में ही पढ़ने को मिलेंगी ।

साथ ही

'सहज - शब्द - पहेली' के द्वारा आप पुरस्कार पाने के भी अधिकारी होंगे ।
'देश' में विज्ञापन देकर विज्ञापनदाता कपनी आवाज़ घर-घर पहुँचा
सकते हैं ।

आज ही ग्राहक बनने के लिये पत्र लिखिए ।

नमूना मुफ़्त नहीं भेजा जाता ।

वार्षिक मूल्य ३॥) एक अंक ।)

मैनेजर 'देश', देश-कार्यालय, कदमकुआँ, पटना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

卐 साहित्य रत्नाकर 卐

प्राचीन-अर्वाचीन ३०० हिंदी-कवीश्वरों की रसालंकारयुक्त प्रासादिक पद्य-रचनाएँ

[शोधित, वर्धित, तृतीयावृत्ति]

इस पुस्तक में अकबर, अनन्य, अनंत, अहमद, आलम, उदय, कबीर, कमाल, कहान, किशोर, केशव, किसन, काशीराम, कुबेर, कृष्णदास, कुंदन, गद, गंग, गोविंद, गोप, गोपाल, गिरिधर, ग्वाल, घासीराम, चंद, चंद्रकला, चौरामल्ल, जमाल, जसु, जीवन, जुगल, ज्येष्ठ, ठाकुर, द्विजराम, दयाराम, दादु, दीनदर्वेश, दुर्गादत्त, देवकीनंदन, देवीदास, तानसेन, तुलसी, नरसिंह, नरोत्तम, नवनीत, नागर, नाथ, नीलकंठ, निपटनिरंजन, पजनेस, पद्माकर, बनारसी, बलदेव, बलभद्र, बाजींद, बेनी, बेताल, बिहारी, बीरबल, बुधसेन, ब्रह्मानंद, भरमि, भूधर, भूषण, मतिराम, मणियार, मान, मानसिंह, मीराबाई, मुक्तानंद, मुरारिदान, रघुराज, रघुनंदन, रसखान, रससिंधु, रसलीन, रणछोड़जी, वृंद, वल्लभ, शालिग्राम, शिवप्रसाद, शेष, शिवदास, हरिचरण, हरिचंद, रूपनारायण, रणमल्ल, रविदत्त, रविराम, रहीम (खानखाना), लाल, रामचंद्र—आदि ३०० नामी कवियों की कविताओं का कवि-परिचय सहित समावेश किया गया है।

* संक्षिप्त विष-दर्शन *

आत्मज्ञान प्रबोध

ओंकार सार—जीव शिव—ब्रह्मदर्शन—ज्ञानदीप—ज्ञान—कटारी—शब्द—नाद ब्रह्म—गुणतत्त्व महत्त्व—वैराग्य—विवेक—देह पिंजर—असार संसार—चित्त चांचल्य—मनःस्वरूप—नाम विचार—पंच विकार—काया—माया—कर्म—अनुभव उपदेश। प्रभुभक्ति—ईश अनुग्रह—ईश महिमा—दशावतार महिमा—सर्व देव माहात्म्य—तीर्थ—देव गुरुस्वरूप। शिव-शक्ति की भक्ति—शदाशिव महिमा—शिवकथा प्रभाव—भवानी प्रभाव—शक्ति महिमा—शिवकांचि माहात्म्य-दुर्गा, अंबिका, शारदा, स्तुति-गंगा लहरी, गणेश स्तवन। श्रीराममहिमा—रघुराज गुणगान—रामनाम प्रताप—श्रीराम बाल-स्वरूप—सीताराम वर्ण महिमा—सीता स्वयंवर—धनुष भंग—अवधेश सवारी—केकयी-दशरथ—वचन—लंकादहन—रावण परिस्थिति। श्रीराधाकृष्ण भक्ति-शृंगार—आध्यात्मिक राधा—श्रीकृष्ण-स्तवन—श्रीकृष्ण—विलास—श्रीकृष्ण व्रजबाला—विरह—राधिका शृंगार—राधिका याचना—कहान—रुक्मिणी-गोपी विरह-गोप-गोपी मनमोहन शृंगार-मुरली, बाँसुरी-वर्णन—सुदामादि प्रसंग। सृष्टिसौंदर्य-ऋतु-वर्णन वसंत-होरी-ग्रीष्म वर्षा शरद-हेमंत शिशिरादि वर्णन—हिंडोर—वर्णन। सदुपदेश-सदाचार— यह—कीर्ति महिमा—संगीतध्वनि उपदेश—परोपकार प्रशंसा—सुबोध रासरस—शील—सत्य—स्वधर्म—सुसंग—कुसंग—दुर्मिल प्रसंग—काम जागृति—जाति स्वभाव—नीति की बरकती—हिंमत—संप—वर्णाश्रम धर्म—तीर्थ—गोरक्षा—कर्तव्य—कर्म—स्वार्थ—कृतघ्नता—प्रकीर्ण प्रबोध। समय-भाविकी प्रबलता—अस्तोदय—समय परिबल—प्रारब्ध कर्म—कलि विडंबन—कलि वर्णन—विधि खेल विचित्र घटना—पेट प्रपंच। सज्जन-दुर्जन-विचार—सज्जन—संत—भक्त—लच्छन—संत समागम—साधु—असाधु—भिक्षु, बगभक्त पाखंड—सूम स्वरूप—सूम सरदार कथन सूम कुगुरु—सूम सेवा—कविकी कदर—पिता—पुत्र क्लेश—बंधु औ सुवर्ण—खल सज्जन भेद—सुमित्र सज्जन—शुभाशुभ द्विज, क्षत्रिय, वैश्य, वैद्य, वकील, सिपाई, सेवक, शेठ, चारण, आर्य, अनार्य। शुभाशुभ नारी—विचार—पतिव्रता प्रशंसा—पति भक्ति—स्त्री भूषण संग निषेध—शुभाशुभ स्त्री—लच्छन—छिनाल लच्छन—नारी—यारी खुवारी—स्त्री चरित्र—कर्कशा औ कुपात्र कंथ।

: कृपया उलटइये :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीति चातुरी—राजबोध-राजरिद्धि-बात चातुरी-राज व्यवहार-संधि विग्रह-राय-राणी-अंग-मंत्री-वजीर-मुसाहेब-राजकुमार-रावत-पटावत-कवि-रैयत भूषण-चाणक्य-चौद विद्या-राजमित्र-संग कुसंग विक्रमराय को उपदेश अकबर को नीति शिक्षा। काव्यचमत्कृति-संगीतसार—विविध जाति संकर छंद-शब्द चमत्कृति-सुबोधक वर्णमैत्रि-स्वानुभव संगति-सापेक्षिक दर्शन-द्विअर्थी सापेक्षिक आवश्यक प्रसंग-युक्ति निपरूण-विधि, उपालंभ कटाक्ष-पावस-अपन्हुति-विरोधाभास-समस्या, प्रश्नोत्तर-उत्प्रेक्षा, पादपूर्ति-गूढ, काव्य-रागमालिका-भैरव, मालकोशादि रागिनी-मधुमाधवी बनारसी-चंद्रग्रहण प्रतिकार-रमा, उमा संवाद-दंत, जिह्वा संवाद-लकड़ी, कमरी, चेचक, इत्यादि। शृंगार सौंदर्य-हास्यरस—स्त्री सौंदर्य-सोलहु शृंगार—संयोग शृंगार-शृंगार, विराग, भक्ति-सुदरी तन वर्णन-नांगरी प्रिया स्वरूप-रूपकालंकार-हंस-भार-अप्सरा, श्याम उपमा-त्रिया कटाक्ष-भामिनी भोजन-तारतम्य-वीर शृंगार हास्य-मुकरियाँ। प्रेम-प्रीति-मैत्रि-विरह—त्रविण-प्रेम-प्रेमबाण-प्रेम-प्रेमिक महत्त्व-प्रेमपंथ विरलता-प्रिया विरह-विरह व्यथा। नासिका वर्णन—प्रथम दर्शन नासिका छवि-चतुर्विध नायिका अष्टानिधान नायिका लज्जित,-नवपर्णिता-चंद्राभिसारिका-नायिका भेद-शृंगार-स्वकिया-उत्तम लच्छन-नवोढ़ा-सुरतांत लच्छन विभ्रम ललित हाव लच्छन-चतुर्विध नारी लच्छन-वंध्या सुतांत-लच्छन-पद्मिनी उर्वसी स्वरूप-सात्विकभाव उदाहरण-नायक नायिका पत्रिका। चित्र विचित्र अन्योक्तियाँ—लेखिनो आदि उक्ति—पुष्पहारान्योक्ति—शंख, कुरंगान्योक्ति मयूर, सिंहान्योक्ति-हंस, सरितान्योक्ति-गागर-सावरोक्ति-मेघ, मार्तंड तापोक्ति राधा, सखी चंद्रोक्तिका-मृदंग औ गणिकान्योक्ति। कविकुल गौरव—तुलसीदास स्तुति, विनय वाल्मीक, कबीर, नानक इ. चंद प्रतिज्ञा-गंग, बीरबल, पद्माकर, जगतसिंह, ब्रह्मानंद (श्रीरंग) मणियार (महिम्न)-हरिश्चंद्र दृढ़ता-धनीराम-केवल-गोप-सुंदर-केशव-तानसेन। ग्रंथ गौरव-काव्य, भाषा विचार—भागवत, रामायण महिमा-बिहारी सतसई-हरिप्रिया-विलास-काव्य महाकाव्य-काव्य प्रशंसा-कविता,कान्ता-कवि काव्य महत्त्व-संस्कृत महत्त्व-जैनभाषा प्रशंसा। महज्जन महिमा—विक्रम-अकबर-शिवाजी-छत्रशाल-बालाराव-जयशाह-पद्मसेन संजयराय-रिमा औ सोलंकी-केसरीरांज-रामसिंह-जयसिंह-शाहु-शाहजहाँ इत्यादि।

ग्लेज काग़ज, बड़ा साइज़, तीन नामवाली सुंदर बढ़िया रेशमी कपड़े की जिल्द, पृष्ठ संख्या ५८०, मूल्य ४) पोस्टेज ॥-)

सचित्र चौरासी आसन

उक्त ग्रंथ में मंत्र प्रक्रियादियुक्त हठयोग के सिद्धासन, सिंहासन, पद्मासन, वीरासन, धीरासनादि ८४ आसनों के १८ चित्रों के साथ सरल विवरण भी दिया गया है। मूल्य १॥), पोस्टेज ।)

श्रीरामगीता

श्रीरामगीता प्रसिद्ध ग्रंथ है और उनका अनेकों ही विवेचन हुए हैं। इस ग्रंथ में सरल और स्पष्ट विवेचन किया है। यह ग्रंथ पढ़ने से आत्मा को बड़ा आनंद और अंत में कल्याण होगा। इस ग्रंथ के मूल श्लोंको के ऊपर शब्दार्थ-भावार्थ लिखने का तथा संशोधन करने का श्रम विद्वद्वर्य ब्रह्मचारी श्रीनृसिंह शर्मा ने किया है।

पृष्ठ-संख्या १२८×१६ क़ीमत १) पोस्टेज ।)

मिलने का पता

कहानजी धर्मसिंह पुस्तकालय, राजकोट सदर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

	पृष्ठ
१. मंगलाचरण (कविता)—[लेखक, श्रीदुलारेलाल	१
२. कल्पना (कविता)—[लेखक, श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ...	२
३. अहिंसात्मक मतभेद (सचित्र)—[लेखक, श्रीपं० रामविलास शर्मा एम्० ए०	३
४. मूल हिंदी या वेसिक हिंदी—[लेखक, डॉ० सत्यप्रकाश डी० एस्-सी० ...	१७
५. बड़ा पापी कौन ? (सामाजिक नाटक)—[लेखक, श्रीयुत सेठ गोविंददास ...	२५
६. कलाकार से (कविता)—[लेखक, श्रीयुत बाबू मैथिलीशरण गुप्त ...	३३
७. पाकिस्तान की असफल योजना—[लेखक, श्रीयुत रामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०	३५

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सरदी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉक्स नं० ६८२५

[ई० सन् १९०१ में स्थापित]

च्यवनप्राश-३) सेर अध्यक्ष मथुरा बाबू का मकरध्वज-४) भरी

शक्ति औषधालय-ढाका

आयुर्वेदिक संसार में युगांतर उपस्थित कर दिया है।
कारखाना और हेड ऑफ़िस ढाका, बंगाल। तार का पता "शक्ति" ढाका।
कलकत्ता हेड ऑफ़िस—५२। १, बीडन स्ट्रीट। चौरंघी
बंगाल से बाहर की शाखाएँ—देहली, कानपुर, इलाहाबाद, पटना, भागलपुर, गया, बनारस, गोरखपुर, बुलानाला, जमशेदपुर, गौहाटी, तिनसुकिया (आसाम), मदरास, कटक, रंगून, वेसिन, मांडले (बरमा), बंबई, लखनऊ ब्रांच—२, श्रीराम रोड, लखनऊ आदि।
ब्रांच भारतवर्ष में सर्वत्र और बरमा में
मृतसंजीवनी सुरा (गवर्नमेंट से लाइसेंसशुदा) भारतवर्ष और बरमा में हमारी सभी ब्रांचों में मिलती है।
अध्यक्षगण—श्रीमथुरामोहन, लालमोहन, फणींद्रमोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती।

प्रोप्राइटर्स—श्रीमथुरामोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती बी० ए०

हिंदू केमिस्ट और फ़िज़िशियन

पत्र और मनीऑर्डर आदि मथुरा बाबू मैनेजिंग प्रोप्राइटर के नाम भेजिए। (एम्०)
आयुर्वेदीय चिकित्सा-प्रणाली-संबलित सूचीपत्र मुफ़्त मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	पृष्ठ
८. विभाजन-योजना (व्यंग्य-चित्र) ...	४८
९. सच्चा साहित्य—[लेखक, आचार्य काका कालेलकर	४९
१०. नष्ट नागरिक (कहानी)—[लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री	५१
११. चित्र-दर्शन (कविता)—[लेखक, प्रो० रामकुमार वर्मा एम्० ए०, प्रयाग-विश्व-विद्यालय	५४
१२. परम प्राचीन भारतीय इतिहास का रूप—[लेखक, रावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र तथा रायबहादुर पंडित शुकदेवविहारी मिश्र	५६
१३. सुहागरात (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत प्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०	६५
१४. उत्पत्ति के भेद (अर्थ-शास्त्र)—[लेखक, प्रो० दयाशंकरजी दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी०	७१
१५. मनमोहन (कविता)—[लेखक, डॉक्टर रामशंकर शुक्ल 'रसाल' एम्० ए०, डी० लिट्०	७६
१६. प्रवासी-साहित्य—[लेखक, स्वामी भवानीदयालजी संन्यासी	७७
१७. नेता (हास्य-रस की कहानी)—[लेखक, श्रीयुत कृष्णदेवप्रसाद गौड़ एम्० ए० 'बेढब' बनारसी... ...	८२

कुकड़ूँ कूँ

मुस्किराने ! खिलखिलाने !! हिनहिनाने !!!

और

हँसते-हँसते सचमुच लोटन कबूतर बन जाने की इच्छा है, तो 'कुकड़ूँ कूँ' पुस्तक की एक प्रति चुपचाप किसी बुकसेलर से उड़ा लीजिए, नहीं तो सीधे १=) की वी० पी० हमसे मँगाइए। मूल्य १), डाक-खर्च ।-)

पुस्तकालयों को डाक-खर्च माफ़

मैनेजर—मुस्कान-मंदिर ७ । १ बाबूलाल लेन (S) कलकत्ता

न लगे, न गंधाय, न कपड़े पर दाग़ पड़े ।

दाद की अमीरी दवा

इसके लगाने से नया-पुराना दाद दानाय बहुत जल्द आराम होता है। फ़ी शीशी १=) डाक-महसूल १ से ५ शीशी तक ।=)

बाल साफ़ करने का अमीरी साबुन

विना जलन व तकलीफ़ के ५ मिनट में बाल साफ़ करता है। फ़ी बट्टी ।), तीन का ॥=), छ का १=) डाक-व्यय ।=) १२ का २) डाक-व्यय ॥।-)

पता— वैद्य सरजूप्रसाद ऊमर वैश्य

मिरज़ापुर-सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	पृष्ठ
१८. सजनीवाद की प्रगति (व्यंग्य-चित्र)	८७
१९. उद्ध्वस्त अवंतिका के खँडहरों में (सचित्र, अन्वेषण)—[लेखक, ज्योतिषाचार्य श्रीयुत पं० सूर्यनारायण व्यास ...	८८
२०. मस्को डायलाग (कविता)—[लेखक, श्रीपं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	९७
२१. साधु और असाधु (कहानी)—[लेखक, श्रीपांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'	९८
२२. हिंदी-कविता के पिछले पच्चीस वर्ष (संस्मरणात्मक विकास-रेखा)—[लेखक, श्रीरामनाथ 'सुमन' ...	१०६
२३. वर्ण-व्यवस्था—[लेखक, श्रीयुत संतराम बी० ए०	१०७
२४. हरिआली (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'वचनेश'	१२२
२५. करुण कहानी (कविता)—[लेखक, श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी एम्० ए० (ऑनर्स)	१२३
२६ पाप की पहेली (कहानी)—[लेखक, श्रीपं० लक्ष्मीशंकर मिश्र 'अरुण' बी० ए०	१२५
२७. स्वार्थ-संघ का अधिवेशन (कहानी)—[लेखक, श्रीपं० हरिशंकर शर्मा ...	१३६
२८. गुच्छूपानी (सचित्र, भ्रमण)—[लेखक, प्रो० धर्मदेव शास्त्री, दर्शनकेसरी ...	१४०
२९. गीत (कविता)—[लेखक, श्रीपं० सुमित्रानंदन पंत	१४६
३०. मेरे साथ अत्याचार ! (कविता)—[लेखक, श्रीयुत हरिवंशराय 'बच्चन' एम्० ए०, बी० टी०	१४७
३१. मेरी चोरी (संस्मरणात्मक कहानी)—[लेखक, श्रीयुत गुलाबरायजी एम्० ए० ('साहित्य-संदेश', संपादक) ...	१४८
३२. भारतीय राजनीति और मुसलमान—[लेखक, माननीय राजा श्रीयुवराजदत्तसिंह, मेंबर कौंसिल ऑफ् स्टेट ...	१५५
३३. सावन (कविता)—[लेखक, श्रीयुत तेजनारायण काक एम्० ए० ...	१६१

लिकोरिया (श्वेतप्रदर)

अत्यंत ही भयानक रोग है, जो खून की कमी, गर्भाशय की कमज़ोरी, मासिक धर्म के कुसमय और अनुचित मात्रा (समय के पूर्व या पश्चात् कम या अधिक मात्रा) में आने इत्यादि से उत्पन्न होता है। आजकल ९० प्रतिशत स्त्रियाँ इस रोग की शिकार पाई जाती हैं, जिसके प्रभाव से स्त्रियों का शरीर अंदर-ही-अंदर घुलता रहता है, निर्बल और कांति-हीन हो जाता है। भूख कम लगती है और पेड़ू में दर्द तथा काम में अरुचि रहती है।

लि को रौ ल (Likorol)

इस भयंकर रोग की एकमात्र और अनुभूत औषधि है, जिसके यथाविधि २१ दिन सेवन-मात्र से स्त्रियों का लाल, पीला, श्वेतप्रदर (धातुस्राव, रक्तस्राव इत्यादि), ऋतुकाल में ऋतु का असमय होना, गर्भाशय या कमल के ऊपर की सूजन, कमर, पेड़ू, सिर- दर्द, सिर में चक्कर आना या ऋतु के समय कमर और पेड़ू में दर्द होना इत्यादि दूर होकर शरीर सुंदर और सुडौल हो जाता है। लिकोरौल की एक शीशी का मूल्य केवल ५॥≡) है। डाक-व्यय अलग। सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स—

केय ब्रदर्स, (Sl/35) बंबई नं० २

Kaye Brothers, Deptt. Sl/35, Bombay No. 2.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

३४. उद्धार (सचित्र, कहानी)—[लेखक, श्रीयुत शिक्षार्थी १६३
३५. गद्य-काव्य—[लेखिका, कुमारी दिनेश-नंदिनी चोरड्या १६६
३६. तुलसी-जयंती—[लेखिका, श्रीमती सावित्री दुलारेलाल एम्० ए० ... १७०
३७. बिजली की बिजली (कविता)—[लेखक, पु० श्रीप्रतापनारायण 'कविरत्न' १७६
३८. ऊधव (कविता)—[लेखक, डॉ० राम-प्रसाद त्रिपाठी १७८
३९. सुधा-चित्रावली १७९
४०. चयन—[लेखकगण, कुमारी निवेदिता मित्रा 'कनक', श्रीयुत एम्० पी० केदार आई० डी० डी०, श्रीयुत 'एक सज्जन', श्रीयुत श्यामाचरणदत्त पंत, श्रीयुत संतराम बी० ए०, श्रीसुषमारानी 'मंजु' और श्रीयुत चिरंजीलाल 'एकाकी' १८३
४१. परिचय—[लेखकगण श्रीयुत 'उमेश', श्रीयुत भास्कर, श्रीयुत वासुदेवशरण अग्रवाल, श्रीयुत 'अरुण', श्रीयुत गंगा-प्रसाद 'कौशल' और श्रीपं० श्रीदत्त अवस्थी १९४
४२. कुसुम १९८
४३. धारा (संपादकीय विचार) ... १९९
४४. भूमध्य-सागर-युद्ध (व्यंग्य-चित्र) .. २२६

हर तरह की सस्ती, सुंदर और टिकाऊ
ब्लाक, रबर की मुहर
पीतल के सील, चपरास, हरूफ़, साइनबोर्ड नेमप्लेट, एंबोसिंग मशीन आदि के लिये मशहूर रबर स्टैंप फैक्टरी (गवर्नमेंट कनट्रैक्टर), कदमकुआँ (पार्क-रोड), पटना से सूचीपत्र मुफ़्त मँगा-कर ऑर्डर दें, या एजेंसी लें।

पागलपन, उन्माद,
मूर्छा (हिस्टीरिया) आदि के लिये
यह साधु की दी हुई जंगली जड़ी है। यदि आप अनेकों दवा कराकर निराश हो चुके हैं, तो भी इसकी परीक्षा करें। ८-१० ख़ूराक में फ़ायदा मालूम होगा।
मिलने का एकमात्र पता—बिहार एजेंसी ऐंड ट्रेडिंग-हाउस, कदमकुआँ, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) तिरंगे चित्र

१. संकीर्तन—[चित्रकार, डॉ० अवनींद्रनाथ ठाकुर १
२. पर्वत की आत्मा—[चित्रकार, श्रीअसित-कुमार हाल्दार १२३
३. पर्वतीय प्रकृति—[चित्रकार, श्रीयुत हकीम मुहम्मदख़ाँ १७६

(ख) व्यंग्य-चित्र

४. विभाजन-योजना—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी ४८
५. सजनीवाद की प्रगति—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी ८७
६. भूमध्य-सागर-युद्ध—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी २२६

(ग) सादे चित्र

७. श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'अरिऔध' २
८. श्रीपं० रामविलास शर्मा एम्० ए० ... ३
९. देश के प्राण महात्मा गांधी ... ४
१०. राष्ट्रपति मौलाना अबुलकलाम आज़ाद ५
११. कांग्रेस के प्रधान मंत्री आचार्य कृपलानी ७
१२. श्रीपं० जवाहरलाल नेहरू ९
१३. श्रीसुभाषचंद्र बोस १४
१४. श्रीपं० गोविंदवल्लभ पंत १४
१५. श्रीराजगोपालाचारी १५
१६. श्रीरफ़ीअहमद क़िदवई १५
१७. साम्यवादी नेता श्रीनरेंद्रदेव ... १५
१८. साम्यवादी नेता श्रीसंपूर्णानंदजी ... १६
१९. डॉ० सत्यप्रकाश डी० एस्-सी० ... १७
२०. श्रीयुत सेठ गोविंददास २६
२१. श्रीयुत बाबू मैथिलीशरण गुप्त ... ३३
२२. श्रीयुत रामानरायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... ३५

विशुद्ध आयुर्वेदिक औषधें

आपको

सुख-संचारक कंपनी, मथुरा ही में मिल सकेंगी। युक्त प्रांत-भर में सबसे बड़ी बिजली की मशीन से चलनेवाला यही एकमात्र कारखाना है।

बड़ा सूचीपत्र मँगाकर देखिए।

पता—सुख-संचारक कंपनी लिमिटेड

मथुरा, यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	पृष्ठ
२३. आचार्य काका कालेलकर	४६
२४. आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री	५२
२५. प्रो० रामकुमार वर्मा एम्० ए० ...	५४
२६. स्वर्गीय पं० गणेशविहारी मिश्र, रावराजा डॉ० श्यामविहारी मिश्र, रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र	५६
२७. श्रीयुत प्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०	६६
२८. प्रो० दयाशंकरजी दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी०	७२
२९. डॉ० रामशंकर शुक्ल 'रसाल' एम्० ए०, डी० लिट्०	७६
३०. स्वामी भवानीदयालजी संन्यासी ...	७७
३१. श्रीयुत कृष्णदेवप्रसाद गौड़ एम्० ए० 'बेढब' बनारसी	
३२. श्रीयुत पं० सूर्यनारायण व्यास ...	
३३. पुरातन अवंती के गढ़-नामक स्थान के उत्खनन-केंद्र का दृश्य	
३४. वेश्या-टेंकरी	
३५. मौर्यकालीन स्तूप के उत्खनन का दृश्य	
३६. पीर मत्स्येंद्र के समुन्नत टीले पर लेखक, श्रीआर० करंदीकर तथा श्रीसोर्टीसा खंदक में पुरातत्त्व-साहित्यान्वेषण कर रहे हैं ...	
३७. वैभवशालिनी अवंती का पुरातन श्रीमहाकालेश्वर का मंदिर	
३८. श्रीपं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ...	

पढ़कर फेक देनी चाहिए

वे मासिक, साप्ताहिक और दैनिक पत्र-पत्रिकाएँ, जो केवल आपका क्षणिक मनोरंजन करती हों !

बिना पढ़े फेक देना चाहिए

वह साहित्य, जो पुराना, निर्जीव, रस-हीन, कला-हीन और आंदोलन-मात्र बनकर हाथ में आ पड़े !

पढ़ना, पढ़ाना और संचय करना चाहिए

केवल वही साहित्य, जो नए युग की नई भावनाओं का प्रतिनिधि हो, जिसमें जान हो, जो नवराष्ट्र और नवसमाज की सृष्टि कर सके।

वही हमारा इतिहास होगा !

"सुधा"
वार्षिक मूल्य
साधारण ६)
राजसंस्करण १२)

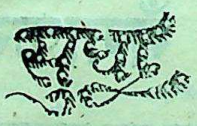

में आपको सब कुछ मिलेगा। इसलिये 'सुधा' के ही ग्राहक बनना चाहिए।

पता—
मैनेजर 'सुधा'
३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	पृष्ठ
३९. श्रीपांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'	९९
४०. श्रीरामनाथ 'सुमन'	१०६
४१. श्रीसंतराम बी० ए०	११८
४२. श्रीयुत 'वचनेश' जी	१२२
४३. श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी एम्० ए० ...	१२३
४४. श्रीपं० लक्ष्मीशंकर मिश्र 'अरुण' बी० ए०	१२५
४५. श्रीपं० हरिशंकर जी शर्मा	१३७
४६. प्रो० धर्मदेव शास्त्री, दर्शनकेसरी ...	१४०
४७. देहरादून का दर्शनीय स्थान गुच्छूपानी	१४१
४८. गुच्छूपानी का बाह्य दृश्य	१४३
४९. गुच्छूपानी	१४३
५०. श्रीपं० सुमित्रानंदन पंत	१४६
५१. श्रीयुत हरिवंशराय 'बच्चन' एम्० ए०, बी० टी०	१४७
५२. श्रीयुत गुलाबरायजी एम्० ए० ...	१४८
५३. माननीय राजा श्रीयुवराजदत्तसिंह ...	१५६
५४. श्रीयुत तेजनारायण काक एम्० ए० ...	१६१
५५. श्रीयुत शिक्षार्थी	१६३
५६. उधर वे दोनो बड़ी-बड़ी आँखें, पूर्ववत् मेरी ही तरफ़ थीं।	१६५
५७. इतने में एक बालक दौड़ता हुआ आया	१६७
५८. पद-दलित पुष्प	१६८
५९. कुमारी दिनेशनंदिनी चोरड्या ...	१६९
६०. श्रीमती सावित्री दुलारेलाल एम्० ए०	१७०
६१. पु० श्रीप्रतापनारायण 'कविरत्न' ...	१७६
६२. डॉ० रामप्रसाद त्रिपाठी	१७८
६३. वाइसराय की कोठी पर लड़कियों का प्रदर्शन	१७९
६४. शुभ विवाह	१७९
६५. कुमारी पद्मा वाचस्पति बी० ए० और श्रीब्रह्मदत्त लखनपाल बी० कॉम० ...	१८०
६६. पं० गंगाकृष्णजी दवे और कुमारी स्नेहलता हिंदीभूषण	१८१
६७. बंबई-प्रांतीय महिला-कॉन्फ्रेंस की कुछ सदस्याएँ	१८२
६८. 'गर्ल गाइड' की लड़कियाँ	१८२
६९. कुमारी निवेदिता मित्रा 'कनक' ...	१८३
७०. श्रीएम्० पी० केदार आई० डी० डी०	१८४
७१. मिसेज़ शांतिलता आर० संत ...	१८६
७२. पंडित श्यामाचरणदत्त पंत	१८८
७३. श्रीसुषमारानी 'मंजु'	१९१
७४. श्रीचिरंजीलाल 'एकाकी'	१९२
७५. बाबू शिवपूजनसहाय	२२१
७६ स्वर्गीय पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी	२२५

स्वप्नदोष

बिना किसी औषधि, तेल, व्यायाम, मैशीन, रिंग, इलैक्ट्रिक बेल्ट तथा पथ्य के पहिली ही रात्रि से सर्वथा असम्भव। प्रमेह आदि की भी चिकित्सा की जाती है। मेरी अद्भुत चिकित्सा प्रणाली से आप आश्चर्यान्वित हो जाएंगे। पत्र व्यवहार गुप्त रखा जाता है। उत्तर के लिए एक आने की टिकट भेजें।

डाक्टर योगेश चन्द्र लाहौर। DR. YOGESH CHANDER, LAHORE.

University Degrees

Read Prospectus of new type degrees in Hindi (Indian) English and Psychology of Lahore University (Govt. Regd.) (not Pb. University) Easy terms. Send 4 anna stamps for 'Rules & Regulations' & 'Revolution in Medical World' (of 30 pages). गवर्नर लाहौर यूनीवर्सिटी

Governor, Lahore University.

'Revolution in Medical World'
(of 30 pages , free.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी बाल-साहित्य की पुस्तकें

बच्चों को बहुत पसंद आवेंगी

सुघड़ चमेली

लेखक, स्वर्गीय पंडित रामजीदास भार्गव। हिंदी एवं उर्दू-संसार भली भाँति जानता है कि आप बालोपयोगी पुस्तकें लिखने में कैसे पटु हैं। आप इस सचित्र पुस्तक को अपनी लड़कियों को पढ़ाइए और फिर देखिए कि वे चमेली की तरह कैसी सुघड़ हो जाती हैं! मूल्य -)

भगिनी-भूषण

लेखक, स्व० गोपालनारायण सेन-सिंह बी० ए०। यह पुस्तक बच्चों को पढ़ाने लायक़ है। इसमें छोटी-छोटी कहानियों के बहाने बच्चों को बहुत-सी शिक्षाएँ दी गई हैं। मूल्य -)

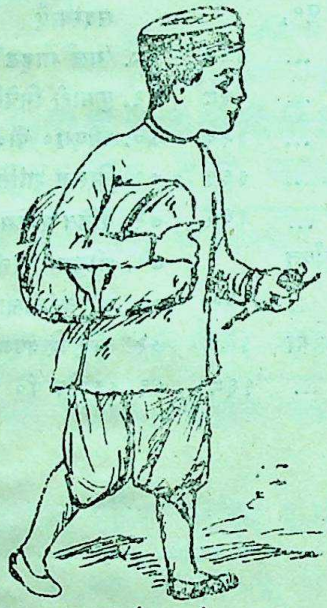

खेल-पचीसी

लेखक, श्रीप्रतिपालसिंहजी। इस सचित्र पुस्तक में उन २५ खेलों का संग्रह किया गया है, जो लड़के साधारणतः शौक़ से खेलते थे। अँगरेज़ी-शिक्षा के फैलने से हमारे पुराने खेल दिन-दिन मिटते चले जा रहे हैं। शायद कुछ दिनों बाद उन खेलों के जानकार भी न रहेंगे। इनके साथ लड़कों की कुछ कसरत भी हो जाती है। मूल्य ।), ।=)

लड़कियों का खेल

लेखक, श्रीगिरिजाकुमार घोष। पुस्तक का विषय नाम से ही स्पष्ट है। इस पुस्तक की रचना विशेषकर लड़कियों के लिये ही हुई है। वे इसे बड़े चाव से पढ़ेंगी, और इससे बहुत कुछ सीखेंगी। हिंदी में ऐसी बहुत कम पुस्तकें निकली हैं। मूल्य ।-), जिल्ददार ।≡)

मिलने का पता—मैनेजर बाल-विनोद-वाटिका, कवि-कुटीर, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाइब्रेरी-संस्थापक स्थायी ग्राहक

बनकर

हिंदी-माता की सेवा कीजिए !

डाक-व्यय माफ़ * नियम पढ़ें !

(१) लाइब्रेरी-संस्थापक स्थायी ग्राहक बनने की प्रवेश-फ़ीस सिर्फ़ १) है।

(२) पुस्तकें प्रकाशित होते ही—१५ दिन पहले मूल्य आदि का 'सूचना-पत्र' ❀ भेज देने के बाद—वी० पी० द्वारा भेज दी जाती हैं। ६) की ४-५ पुस्तकों का सेट एक साथ भेजा जाता है, जिसमें डाक-ख़र्च में बचत रहे।

(३) जो पुस्तकें हमारी प्रकाशित होती हैं, उन पर आपको २५) सैकड़ा तथा बाहर की—हिंदुस्थान-भर की—पुस्तकों पर —) रुपया कमीशन दिया जाता है।

(४) लाइब्रेरी-संस्थापक स्थायी ग्राहक जिस पुस्तक को चाहें, लें, जिस पुस्तक को न चाहें, न लें; यह उनकी इच्छा पर निर्भर है। पर साल-भर में कम-से-कम ६) की पुस्तकें लेकर हिंदी-साहित्य-प्रचार में हमारी सहायता करनी पड़ेगी।

(५) कम-से-कम ६) की हमारी प्रकाशित पुस्तकें एक साथ लेने पर डाक-ख़र्च हमारे ज़िम्मे रहेगा। यानी माल हम पहुँचता हुआ देंगे। अतएव ६) की पुस्तकें एक साथ मँगाइए।

(६) स्थायी ग्राहकों की भूल से वी० पी० लौट आने पर डाक-ख़र्च उनको ही देना पड़ता है, और दो बार वी० पी० लौट आने पर लाइब्रेरी-संस्थापक स्थायी ग्राहकों की सूची से उनका नाम काट दिया जाता है।

❀ नई पुस्तकों में से यदि कोई या सब न लेनी हों, अथवा और कोई पुस्तक मँगानी हो, तो 'सूचना-पत्र' मिलते ही हमें पत्र लिखना चाहिए, जिसमें इच्छानुसार काररवाई कर दी जा सके। १५ दिन के अंदर कोई सूचना न मिलने पर, आपकी स्वीकृति समझकर, सब नई पुस्तकें वी० पी० द्वारा भेज दी जाती हैं। ६) की पुस्तकें होने के कारण डाक-ख़र्च ख़ुद हम देते हैं।

प्रतिज्ञा-पत्र भरने के लिये फ़ार्म मँगाएँ !!

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों की सबसे बड़ी दूकान

राजनीति | अर्थशास्त्र | जीवन-चरित

प्रहसन | गल्प | विज्ञान

गंगापुस्तकमाला लखनऊ कार्यालय

उपन्यास | नाटक | इतिहास

काव्य | साहित्य | कृषि

हिंदी की कहीं से भी प्रकाशित किसी भी विषय की किसी पुस्तक की यदि कभी आपको आवश्यकता पड़े, तो इधर-उधर न भटककर सीधे एक पत्र हमें लिखिए।

पुस्तकें चुनने के लिये आज ही सूचीपत्र मँगाइए !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य चतुरसेनजी शास्त्री की कृतियाँ

(१) हृदय की परख

आपने इस उपन्यास में मनुष्य के विचारों को बड़े ही उत्तम ढंग से अंकित किया है। उपन्यास हिंदी-संसार में लासानी है। मूल्य १), सजिल्द १॥)

(२) खवास का ब्याह

शास्त्रीजी ने इसे पृथ्वीराज रासो के आधार पर लिखा है। इसमें संयोगिता के स्वयंवर का कथानक बड़ी सुंदर भाषा में लिखा गया है। एक रंगीन चित्र भी। मूल्य १), स० १॥)

(३) अक्षत

इसमें लेखक की आठ सुंदर, रसीली तथा शिक्षा-प्रद कहानियाँ हैं, जिन्हें पढ़कर आप आपे से बाहर हो जायँगे। सचित्र पुस्तक का मूल्य १), सजिल्द १॥)

(४) उत्सर्ग

यह एक सुंदर ऐतिहासिक नाटक है, जिसमें चित्तौर के अग्रगण्यवीर अधिपति जयमल तथा उनकी जवाँमर्द रानी की वीरता का दिल फड़का देनेवाला वर्णन है। पढ़ते ही बाँहें फड़कने लगती हैं। मूल्य ।=), सजिल्द ॥)

(५) ब्रह्मचर्य-साधन

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने ब्रह्मचर्य की महिमा, विधि और उसके साधन के विषय में अच्छा प्रकाश डाला है, जो विद्यार्थि समुदाय के लिये अत्यंत उपयोगी है। मूल्य ॥), सजिल्द १)

(६) गोल सभा

इसमें आपको सात समुद्र-पार विलायत के जेम्स-पैलेस में बैठकर भारत एवं ब्रिटेन के राजनीतिक खिलाड़ियों द्वारा भारत की तक़दीर का जो फ़ैसला हुआ, उसका ब्योरेवार परिचय मिलेगा। कुछ ही प्रतियाँ रह गई हैं। सचित्र पुस्तक का मूल्य १॥), सजिल्द २)

(७) सुखी जीवन

ग्रामीण तथा नागरिक स्त्री-पुरुषों तथा विशेषकर स्त्रियों के लिये अत्यंत लाभदायिनी है। स्त्रियों का बचपन, उनका गार्हस्थ्य जीवन, उनकी तंदुरुस्ती आदि विषयों की जानकारी प्राप्त करने के लिये यह अद्वितीय पुस्तक है। इसका प्रत्येक स्त्री के हाथ में जाना अत्यंत आवश्यक है। मूल्य ॥।), सजिल्द १)

(८) आरोग्यशास्त्र

स्वास्थ्य के संबंध में हिंदी-जगत् में यह अद्वितीय ग्रंथ-रत्न है। कई सुंदर, रंगीन और सैकड़ों सादे चित्रों से सुसज्जित पुस्तक का मूल्य १२)

(९) ग़दर के पत्र तथा कहानियाँ

इसमें सन् ५७ के भयानक विप्लव की भीषणता का दिग्दर्शन है। प्रत्येक घटना पढ़ने योग्य है। मूल्य १), सजिल्द १॥)

(१०) हृदय की प्यास

[तृतीयावृत्ति]

यह आपका मौलिक उपन्यास बहुत ही उच्च कोटि का है। भाषा में जान है, ओज है, प्रभाव है और रस है। इसकी घटनाएँ दिल पर चोट करनेवाली हैं। पाठक स्वयं पढ़कर इसकी उत्तमता का पता लगा सकते हैं। इसे अवश्य मँगाइए। मूल्य २), सजिल्द २॥)

पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इँगलैंड का इतिहास

सी० पी० और बरार के हाई-स्कूलों तथा बिहार के मिडिल और हाईस्कूलों में पढ़ाई जाने के लिये टेक्स्ट-बुक-कमेटी द्वारा स्वीकृत पाठ्य-पुस्तक।

हिंदी में इँगलैंड-जैसे स्वतंत्रता-प्रिय देश का एक अच्छा-सा इतिहास भी अभी तक नहीं लिखा गया! इसी अभाव की पूर्ति के लिये अँगरेज़ी की ढेरों प्रसिद्ध-प्रसिद्ध पुस्तकों को पढ़कर और उनका अवलंब लेकर इस ग्रंथ-रत्न की रचना की गई है। यह ग्रंथ हिंदी-साहित्य का गौरव बढ़ानेवाला है। प्रत्येक लाइब्रेरी और पुस्तकालय में इसकी एक-एक प्रति रहनी चाहिए। स्कूलों के विद्यार्थियों के लिये तो यह ग्रंथ अमूल्य ही है। यह उत्कृष्ट और अपूर्व ग्रंथ हिंदी-साहित्य-सम्मेलन और सी० पी०, यू० पी०, बिहार आदि में पढ़ाया जाता है। काग़ज़ बढ़िया तथा छपाई मनोहारिणी।

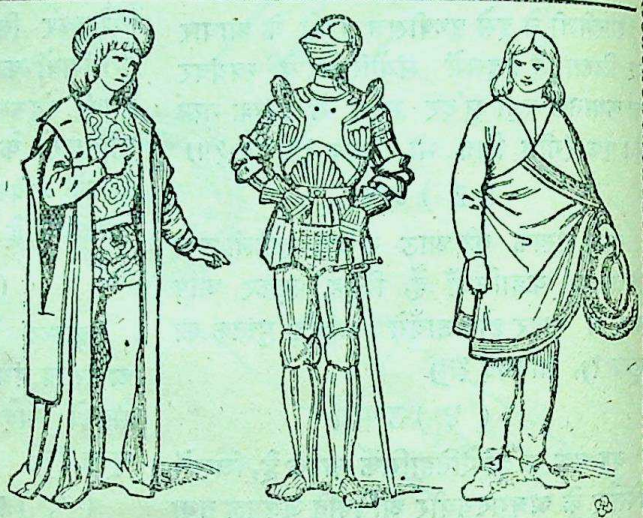

लेखक—

प्रोफ़ेसर डॉक्टर प्राणनाथजी विद्यालंकार

प्रथम खंड	सादी १।)	सजिल्द	१॥)
द्वितीय ,,	,, १।)	,,	१॥)
तृतीय ,,	,, १।)	,,	१॥)
द्वितीय और तृतीय खंड (सजिल्द एक में) केवल			२॥)

नोट—बिहार में तीनो भाग पढ़ाए जाते हैं। और, यू० पी० और सी० पी० आदि में केवल आख़ीरी दोनो भाग ही। इसीलिये उपर्युक्त ढंग से जिल्दें बँधवाई गई हैं।

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरानी पुस्तकों के

(१) बिहारी-रत्नाकर

(तृतीयावृत्ति)

महाकवि बिहारी की जगत्प्रसिद्ध सतसई पर अद्वितीय हिंदी-भाष्य। भाष्यकार, व्रजभाषा-साहित्य के पारदर्शी, मर्मज्ञ विद्वान् स्वर्गीय बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर' बी० ए०। संपादक, श्रीदुलारेलाल भार्गव। सुधा-आकार। छपाई-सफ़ाई आदर्श। जिल्द और सजावट भी अपूर्व। हिंदी में इसके जोड़ का कोई सटीक महाकाव्य नहीं। इस बृहद् ग्रंथ ने हिंदी-संसार के व्रजभाषा-साहित्य में युगांतर उपस्थित कर दिया। यू० पी० की विशेष-योग्यता और आगरा, लखनऊ, बनारस आदि विश्व-विद्यालयों में कोर्स-बुक है। बिहारी, जयशाह आदि के असली चित्र। मूल्य सजिल्द ५)

नवीन संस्करण

(२) जयद्रथ-वध

(षष्ठावृत्ति)

अनुवादक, पं० गोकुलचंद्र शर्मा एम्० ए०। श्रीयुत प्रोफ़ेसर परशुराम-नारायण पाटणकर एम्० ए० के 'वीर-धर्म-दर्पण'-नामक संस्कृत-नाटक का हिंदी-अनुवाद। यह गद्य-पद्यमय वीर-रस-पूर्ण नाटक है। राजपूताना में हाईस्कूल-परीक्षा, यू० पी० में सातवीं कक्षा और पंजाब में हिंदी-भूषण-परीक्षा के कोर्स में स्वीकृत। मूल्य ॥)), सजिल्द १।)

(३) लिली

(द्वितीयावृत्ति)

लेखक, श्रीपं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'। 'लिली' श्रेष्ठ कहानियों का संग्रह है—सरस और चमत्कार-पूर्ण, सुंदर, स्वाभाविक, रोचक, काव्यमय, भाव-पूर्ण, सूक्ष्म चरित्र-चित्रण करनेवाली, शिक्षा-प्रद और उत्साह-वर्द्धक कहानियों का अनूठा संग्रह। इतनी अच्छी और उच्च कोटि की कहानियाँ आपने अब तक नहीं पढ़ी होंगी। मूल्य १), सजिल्द १॥)

(४) प्रेम-द्वादशी

(पंचमावृत्ति)

प्रेमचंदजी की कहानियाँ अलग-अलग कई भागों में प्रकाशित हो चुकी हैं; किंतु साधारण स्थिति के प्राणियों के लिये उन सभी संग्रहों को ख़रीदना मुश्किल है। उनके सुबीते के लिये इस पुस्तक में प्रेमचंदजी ने अपनी सबसे अच्छी १२ कहानियाँ छाँटकर प्रकाशित करवाई हैं। यू० पी० की विशेष-योग्यता और इंटरमीजिएट-परीक्षा, इलाहाबाद की साहित्य-सम्मेलन-परीक्षा में पाठ्य-पुस्तक है। पुस्तक में कई तिरंगे चित्र भी हैं। मूल्य ॥)), सजिल्द १।)

(५) हिंदी

(चतुर्थावृत्ति)

लखनऊ-विश्वविद्यालय के हिंदी-अध्यापक एवं सुप्रसिद्ध हिंदी-लेखक स्व० पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए० ने हिंदी-भाषा की उत्पत्ति और उसके विकास पर दो बड़े ही विद्वत्ता-पूर्ण और मार्मिक निबंध लिखे हैं। इसमें वे दोनो निबंध बड़ी सुंदरता-पूर्वक छापे गए हैं। इतना गहन विषय होने पर भी पढ़ने में उपन्यास-सा मज़ा आता है। भट्टजी की भाषा में यही विशेषता है। शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत पाठ्य-पुस्तक। मूल्य ॥=), सजिल्द १=)

मैनेजर गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं अपने हिंदू भाइयों से यह अपील करना आवश्यक समझता हूँ कि वे इस अद्भुत पुस्तक को न केवल आप पढ़ें, वरन् अपने मित्रों में भी इसका प्रचार करें।"

—भाई परमानंद

भारत में बाइबिल

[दो भाग]

अनुवादक

श्रीयुत

संतराम जी बी० ए०

ईसाइयों की धर्म-पुस्तक बाइबिल यद्यपि उनकी दृष्टि में ईश्वर-कृत मानी जाती है, पर वास्तव में उसकी रचना का क्या रहस्य है और किस तरह वह बनी है, यह इस पुस्तक के पढ़ने से मालूम होता है। वास्तव में महात्मा ईसा भारतवर्ष में कई वर्षों तक अध्ययन करते रहे। यहाँ से लौटकर उन्होंने भारतीय सभ्यता और धर्मों के निचोड़-रूप एक पुस्तक लिखी, जिसका नाम बाइबिल रक्खा गया। भारतीय सभ्यता का योरपीय सभ्यता में कितना समावेश है, यह इस पुस्तक के पढ़ने से मालूम होता है। इस पुस्तक में डबल प्रमाणों द्वारा सिद्ध किया गया है कि प्राचीन संसार में धर्म, नीति, आचार और क़ानून-संबंधी जितना भी ज्ञान फैला हुआ है, वह सब भारत ही से गया है।

पृष्ठ-संख्या प्रायः ५००

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

लखनऊ

मूल्य
सादी ३)
सजिल्द ४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-अँगरेज़ी-छपाई

रंगीन तिरंगे चित्र

सर्वश्रेष्ठ जिल्द-बँधाई

सोने की छपाई, चिट्ठी के काग़ज़, लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड, विज़िटिंग-कार्ड, बिल, मेमो, रसीद - बुक, कैलेंडर, नोटिस, निमंत्रण - पत्र, अभिनंदन - पत्र, पुस्तक आदि — — — —

सब प्रकार की छपाई का काम

हमारे यहाँ सुंदर

साथ ही

ठीक वक़्त पर, किया जाता है।

संतोषप्रद काम देने की गैरंटी

आपको छोटा-मोटा, सुंदर, सस्ता, किसी प्रकार का भी छपाई का कोई काम कराना हो, तो उसे तुरंत हमारे पास भेजिए।

अब इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं !

सब प्रकार की छपाई के काम के लिये सुविधा-जनक स्थान

मैनेजर

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस

२३, लाटूश रोड

—लखनऊ—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्या-विभाग, कांकरोली

द्वारा प्रकाशित

हिंदी-ग्रंथ

संख्या	नाम	मूल्य
१	बुरहानपुर-शास्त्रार्थ	।)
२	सनातनधर्म	-)
३	कविता-कुसुमाकर प्र० भा०	॥)
	,, ,, द्वि० भा०	॥)
४	संप्रदाय-प्रदीप (आलोक-सहित)	१॥)
५	रसिक रसाल (हिं० रीति-ग्रंथ)	१॥)
६	कांकरोली (चारो भाग) [श्रीद्वा० प्राकट्यवार्ता, कांकरोली का इतिहास, श्रीद्वा० सेवा-शृंगार-प्रणाली, तृ० गृह-कीर्तन-प्र०]	५)
७	प्राचीन वार्ता-रहस्य प्र० भाग	१)
८	कांकरोली-दिग्दर्शन	-)॥
९	प्राचीन वार्ता-रहस्य द्वि० भाग (अष्टसखा)	प्रेस में

इसके अतिरिक्त कई गुजराती पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं।

पुस्तकें मिलने के पते—

१. संचालक—विद्या-विभाग, कांकरोली

२. श्रीलल्लूभाई छगनलाल-देसाई कालूपुर टेमलापोल, अहमदाबाद

३. गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिकों का सखा आलोचना-प्रधान

साहित्य-संदेश

क्यों पढ़ना चाहिए ?

इसलिये कि

(१) हिंदी की साहित्यिक और विशेषकर आलोचनात्मक जागृति का यह अग्रदूत है।
(२) साहित्य-संदेश हिंदी के प्रमुख विद्वानों के विचारों का माध्यम है।
(३) साहित्य-संदेश आलोचना-साहित्य का सर्वश्रेष्ठ मासिक है।
(४) हिंदी में प्रकाशित पुस्तकों की जल्दी-से-जल्दी निष्पक्ष आलोचना प्रकाशित करना इसका मुख्य उद्देश्य है।
(५) साहित्य-संदेश अपने पाठकों में आलोचना के नाम पर थोथे विचार, पक्षपात और दलबंदी का प्रचार नहीं करता, वरन् हिंदी-साहित्य में ठोस और गंभीर समीक्षा-शैली तथा सुरुचि एवं प्रगति के संस्कारों को जाग्रत् करता है।
(६) यह होनहार विद्यार्थियों को साहित्य के पथ पर अग्रसर करता है।
(७) लेखकों को प्रोत्साहन देकर, उनकी कृतियों को लोकप्रिय बनाता है।
(८) यह रहस्यवाद, छायावाद, प्रगतिवाद और प्राचीन तथा अर्वाचीन साहित्य की सभी प्रवृत्तियों एवं हिंदी के सभी लब्ध-प्रतिष्ठित साहित्यिकों पर नियम-पूर्वक अध्ययन-पूर्ण सामग्री प्रस्तुत करता है।
(९) यह हिंदी के विद्यार्थियों के लिये, विशेषकर सम्मेलन की परीक्षाओं, प्रभाकर, विशेष-योग्यता तथा स्कूल-कॉलेजों में हिंदी पढ़नेवालों के लिये बहुत उपयोगी है।
(१०) हिंदी-पत्रों में यह पत्र सबसे सस्ता और उपयोगिता की दृष्टि में सबसे अधिक मान्य है।
(११) इस पत्र में दवा-दारू, विदेशी वस्तु, प्रतियोगिता आदि के तथा अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। साहित्य-संबंधी विज्ञापन छापना ही इसे अधिक अभीष्ट है।

संपादक—श्रीगुलाबराय एम्० ए०, श्रीमहेंद्र

यह पत्र यू० पी०, सी० पी०, बिहार आदि की प्रांतीय सरकारों तथा ग्वालियर, जयपुर आदि कितने ही देशी राज्यों द्वारा स्वीकृत है। मूल्य ३) वार्षिक। विद्यार्थियों तथा शिक्षा-संस्थाओं से २) मात्र। आज ही मनीऑर्डर भेजकर ग्राहक बनिए।

नमूना मुफ़्त मँगाकर देखिए।

पत्र-व्यवहार का पता—साहित्य-संदेश-कार्यालय, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त प्रांत, मध्य-प्रदेश, इंदौर, धार आदि के शिक्षा-विभागों
तथा बड़ौदा-राज्य के पुस्तकालयों के लिये स्वीकृत

प्रकाशक
मध्य-भारत-हिंदी-
साहित्य-समिति
इंदौर

वीणा

संपादक
श्रीकालिकाप्रसाद
दीक्षित
'कुसुमाकर'

पुरातत्त्व-शास्त्र के सुप्रसिद्ध विद्वान् तथा बड़ौदा-राज्य-पुरातत्त्व-विभाग के अध्यक्ष

डॉक्टर हीरानंद शास्त्री

(एम्० ए०, एम्० ओ० एल्०, डी० लिट्०)

लिखते हैं—

"मुझे वीणा से अच्छा परिचय है। मैं इसे हिंदी का एक उत्तम मासिक पत्र मानता हूँ। इसमें अच्छे लेख निकला करते हैं। इसके संपादक एक योग्य लेखक हैं, और इनकी आलोचनाएँ उच्च कोटि की होती हैं। 'वीणा' से हिंदी-भाषा को बहुत लाभ हो रहा है।"

ता० १—१२—३९

आगामी विशेषांक—

(१) एकांकी नाटक-अंक

(२) ग्राम-सुधार-अंक

वार्षिक मूल्य ४), एक प्रति का ।=)

मिलने का पता—

व्यवस्थापक 'वीणा'

इंदौर, C.I.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-संसार में युगांतरकारी साहित्य

लेखक—श्री० पं० गौरीशङ्कर द्विवेदी 'शंकर'

बुन्देल—वैभव

अथवा

(बुन्देलखण्ड के हिन्दी कवियों का साङ्गोपाङ्ग इतिहास)

सचित्र, सटिप्पण और सजिल्द

[प्रथम भाग में]

हिन्दी-भाषाकी उत्पत्तिका संक्षिप्त इतिहास, हिन्दी-कविता और उसके मुख्य अङ्ग, कवि की महत्ता पर लोकमत, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त परिचय, बुन्देलखण्ड के ग्राम-गीत आदि के भरपूर विवरणों के—

साथ ही साथ

सर्व श्री गोस्वामी तुलसीदास, बलभद्र मिश्र, महाराजा मधुकरशाह, कवीन्द्र केशवदास मिश्र, राजा बीरबल, राजा टोडर मल, रहीम और बिहारी आदि ४० कवियों के खोज पूर्ण प्रामाणिक चरित्र आलोचनात्मक विवेचनाओं और टिप्पणियों सहित चुनी हुई कवितायें तथा कितने ही ज्ञातव्य विषयों के अतिरिक्त पांच तिरंगे और आठ रंगीन चित्रों सहित—

छपाई, सफाई, सजधज और गैटअप बहुतही बढ़िया। पृष्ट संख्या ३०० होते हुये भी मूल्य लागत मात्र २॥)

बुन्देल-वैभव (द्वितीय-भाग) में

सर्व श्री गुलाब, खेमराज, कृपाराम, रामशाह महाराजा, मोहन, मतंग, परमेश, लालकवि, छत्रसाल महाराजा, उदोतसिंह महाराजा, खण्डन, कारे कवि, कवीन्द्र बिहारी, करन कवि आदि १५१ कवियों के खोज पूर्ण प्रमाणिक जीवन चरित्रादि और प्रथम भाग ही की भांति आलोचनात्मक विवेचनाओं और टिप्पणियों सहित चुनी हुई कविताएँ। छपाई, सफाई, सजधज और गैट अप बहुत ही बढ़िया फिर भी प्रायः ३०० पृष्ट होते हुये भी मूल्य केवल २॥)

तुलसी, केशव, रहीम, बिहारी आदि कवियों पर विशेष अध्ययन के लिये इन ग्रन्थों को अवश्य ही पढ़ना चाहिये। **सहस्त्रों सम्मतियों में से कुछ सम्मतियां देखिए:—**

साहित्य महारथी आचार्य श्री पं० महावीरप्रसाद जी द्विवेदी—

.....बड़ी अच्छी पुस्तक आपने लिखी, बुन्देलखण्डके विस्मृत प्राण गौरवको फिरसजीव करदिया।

राव राजा रायबहादुर डाक्टर श्री पं० श्यामबिहारी जी मिश्र एम. ए. डी. लिट् लखनऊ

.....यह ग्रन्थ रत्न संग्रह करने योग्य बन पड़ा है और इसके पढ़ जाने से कोई मनुष्य हिन्दी साहित्य का ज्ञाता माना जा सकेगा।

गीता-गौरव

(परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण)

श्री मद्भगवद्गीता मूल के साथ ही साथ छन्दोबद्ध सरल और सरस हिन्दी अनुवाद। पाण्डित्यपूर्ण भूमिका में गीता-विषयक कितने ही मौलिक विषयों का समावेश है संक्षेप में महाभारत की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथा तथा और भी कितने ही ज्ञातव्य विषय हैं। कितने ही तिरंगे और रंगीन बढ़िया चित्र हैं। छपाई, सफाई, सजधज और गैट अप बहुत ही बढ़िया पृष्ठ संख्या प्रायः ३०० फिर भी जन साधारण के हित का ध्यान रखते हुये दाम लागत से भी कम केवल १॥) । इस ग्रन्थ पर प्राप्त सहस्रों में से कुछ सम्मतियां देखियेः—

साहित्य महारथी आचार्य श्री पं० महावीरप्रसाद जी द्विवेदी—

गीता-गौरव मासाद्य, मोदा प्राप्तो मया महान्।
पार्थस्य सारथे कृष्ण, कर्त्तुः कीर्ति प्रसारय॥

Honble Sir, G. V. Bewoor Esqr. I.C.S., C.I.E., J.P., Director General of Post & Telegraphs, India, Burma, Aden & Ceylon.

I.....much appreciate your great labour and I have no doubt, the Hindi knowing public will remain under a debt of gratitude to you. Wishing you all success in the future.

सुकवि-सरोज प्रथम भाग

परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण

(सचित्र, सटिप्पण और सजिल्द)

सर्व श्री गोस्वामी तुलसीदास, बलभद्र मिश्र, कवीन्द्र केशवदास मिश्र' बिहारी, आदि कवियों के प्रामाणिक जीवन चरित्रों, उनकी चुनी हुई रचनाओं उन पर आलोचनात्मक विवेचनाओं और टीका टिप्पणियों के सहित।

छपाई, सफाई, सजधज और गैट अप बहुत ही बढ़िया पृष्ठ संख्या प्रायः २०० फिर भी मूल्य केवल १) एक रुपया।

सुकवि-सरोज द्वितीय भाग

(सचित्र, सटिप्पण और सजिल्द)

सर्व श्री गोस्वामी तुलसीदास, नन्ददास, व्यास जी, स्वामी हरिदास, कल्याण, हरिसेवक मिश्र और अयोध्यासिंह जी उपाध्याय आदि ५८ कवियों के प्रामाणिक जीवन चरित्रों और आलोचनात्मक विवेचनाओं के सहित।

छपाई, सफाई, सजधज गैट अप बहुत ही बढ़िया पृष्ठ संख्या ४०० होते हुये भी दाम लागत मात्र २॥) बढ़िया कपड़े की जिल्द पर सुनहली छपाई वाली प्रतिका दाम ३) प्राप्त हुई सहस्रों सम्मतियों में से एक सम्मति देखिये।

आचार्य श्री पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी

.....'सुकवि-सरोज' के द्वितीय भाग ने मुझे मोह लिया पुस्तक अनमोल है। वह तो एक रत्न है उससे बुन्देलखण्ड के कीर्ति कला निधि की कलायें और भी चमक उठेंगी।

हमारे ये ग्रन्थ लेकर पढ़ियेः— किसी भी पुस्तक विक्रेता से। आगरा में 'साहित्य-रत्न भण्डार' से। लखनऊ में 'गङ्गा पुस्तक माला' से।

आठ आना भेजकर स्थायी ग्राहक बन जाने से सब ही ग्रन्थ पौने मूल्य में मिल जावेंगे। सब ग्रन्थ एक साथ मंगाने वालों को डाक व्यय माफ। विशेष जानने के लिये पत्र व्यवहार कीजिये।

व्यवस्थापकः— बुन्देल-वैभव-ग्रन्थमाला कालपी।

Kalpi U. P

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सी० पी० शिक्षा विभाग द्वारा पारितोषक एवं पुस्तकालयों के लिये स्वीकृत

बड़े २ साहित्य महारथियों द्वारा मुक्तकंठ से प्रशंसित

साहित्य के अनोखे रत्न

कवि सम्राट साहित्य वाचस्पति श्री पं० अयोध्यासिंह जी उपाध्याय हरिऔधजी—

झलक—

में श्री हरिऔध जी के जीवन की १४ शिक्षा प्रद-घटनाओं पर नवीन अंग्रेजी शैली से सजीव भाषामें औपन्यासिक अपूर्व शिक्षाप्रद जीवन चरित्र में उन बारीकियों का वर्णन है जिनसे श्री हरिऔधजी इस महत्व पर पहुँचे हैं। बालकों को अवश्य पढ़ाकर उन्हें महत्व पूर्ण भावों से भरिये। मूल्य ।।)

द्वारा लिखित-

बाल-कवितावली

में छोटी २ साधारण किन्तु शिक्षा से भरी जिनकी पदावली बालकों के कोमल हृदयों में कुंदन की भांति मधुरता पूर्वक उच्च भाव भरने वाली तथा ऊंचे क्लास के बालकों को साहित्यिक छटा के साथ पूर्ण उपदेश प्रद एवं कोमल हृदयों में नवीन उल्लास-भावनायें भरने वाली, मनमोहने वाली सुन्दर कविताओं का संग्रह प्रत्येक छोटे बड़े बालक बालिकाओं का अवश्य पाठनीय अपूर्व संग्रह मूल्य ।।)

दोनों पुस्तकों की महत्ता—

श्री अमरनाथ झा, वाइस चांसलर इलाहाबाद युनीवर्सिटी, श्री पं० भगवतशरण उपाध्याय एम० ए० हिन्दू विश्व विद्यालय बनारस। श्री धीरेन्द्र जी वर्मा एम० ए० डी० लिट। सुविख्यात डा० पीताम्बरदत्त जी बडथ्वाल। आचार्य स्व० पं० महावीरप्रसाद जी द्विवेदी। कविवर श्री मैथिलीशरण जी गुप्त एवं बड़े २ सम्पादक महोदयों की मुक्त कंठ से की गई प्रशंसा से सिद्ध होती है।

प्रलापिनी

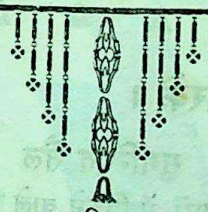

रचयिता—
श्री० पं० होरीलाल शर्मा
बी० ए० नीरव बरेली

६० पृष्ठ दुरंगी चित्ताकर्षक छपाई, बढ़िया गेट अप,
मू० सजिल्द ।।।)
मू० अजिल्द ।।)

भूमिका लेखक—बरेली कालिज के हिन्दी संस्कृत विभाग के अध्यक्ष, हिन्दी साहित्य के एक मौन कलाविद श्रीमान् श्रीधर पन्त एम० ए०

हम इसकी प्रशंसा में स्वयं कुछ न लिखकर—

श्री महाकवि हरिऔध जी के दो शब्द उद्धृत करते हैं—

"यह 'प्रलापिनी नहीं आलापिनी है. भगवती वीणापाणि के अनुग्रह से इसकी ध्वनि बड़ी मनोहर है। इसके राग अनुराग मय हैं, इसका नाद कर्ण रसायन है और इसकी माधुरी मनोमुग्ध कर। 'नीरव' का मधुर रव प्रलापिनी को सरस आलापमय बनाता है और लाल की लाली लेखनी के मुख की लाली रखने में समर्थ होतीहै।" आप हिन्दी काव्य-प्रेमी होने के नाते इसे एक बार अवश्य पढ़िये। यह आपके हृदय के बहुतही समीप पहुंचेगी आप इसकी भावुकता से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते!

मिलने का पता—शर्मन प्रेस इटावा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ प्रेमी पागल ❀

सच्चे प्रेम की लगन भी क्या२नहीं कराती है ? प्रेमी अपनी प्रेयसी केलिये हजारों कष्ट सहकर भी उसे कैसे प्राप्तकरता है? यह इस घटना चक्र पूर्ण प्रेम से ओतप्रोत उपन्यास में देखकर ही प्रेम सागर में प्रवाहित हूजिये और प्रेम में पागल होने वाले युवक युवतियोंको अपूर्व शिक्षा दीजिये । मू० ।=)

❀ सरला के पत्र ❀

शिक्षित सरला का ग्रामीण जमीदार के साथ अनमेल विवाह का दुष्परिणाम, बड़ी ही हृदयग्राही प्रभाव पूर्ण भाषा में नवीन शैली से पत्रों के रूप में लिखा गया स्त्रियों के लिये यह बड़ा ही शिक्षाप्रद मनोरम उपन्यास है । मूल्य ।=) मात्र ।

गल्पाष्टक ।

ले०-श्री शिवनारायण वर्मा 'नयन'

अपूर्व शिक्षाप्रद मनमोहनी भावपूर्ण भाषा में गीत का प्रभाव, घर कैसे रहता है, समर्पण, जातिच्युत, दुखी आत्मा, घोर स्वार्थ और विचारानन्द नामक ८ शिक्षाप्रद मनोहर गल्पों का संग्रह है । मू० ।-)

जीवन का सच्चा आनन्द

२३ सौ वर्ष प्राचीन ऋषियों की अप्राप्य खोज का सार

५० सुन्दर चित्रों सहित ४५० पृष्ठका

रतिरहस्य मू० २॥)

THE SCIENCE OF A HAPPY MARRIED LIFE

A Digest of about fifty ancient Sanskrit, English & Urdu, books on Sexual Science.

नितान्त गोपनीय गुप्त, अपूर्व काम ग्रंथके लिये जर्मनी डाक्टरोंकी राय है कि प्रत्येक मनुष्य को विवाह के पूर्व अवश्य पढ़ना चाहिये अतएव आप भी सभ्यतापूर्ण शांत और आनन्ददाता ग्रंथ को पढ़कर जीवन का सच्चा सुख लूटिये ।

त्रिदिव ।

ले०-श्री पं० लक्ष्मीनारायण शर्मा मयूर

त्रिदिव में गले का हार सन्देश और प्रेमनाम ३ खंड में अत्यन्त ओजस्वी भाव पूर्ण कविता का मनोरम संग्रह है। पढ़ते ही वीरता से मुर्दोंमें भी जोश आताहै । मू० ॥)

बेकारी की भयानक समस्या—हल करके ।

सुगन्धित शर्बत

इसमें देशी बिदेशी डाक्टरी यूनानी वैद्यक सब प्रकार के शर्बतों के पूर्ण नुस्खे और सोडावाटर लेमनेट आदि बनाने की पूर्ण विधि के साथ लाखों रुपये के बिकने वाले शर्बतों के विलायती एसेंस बनानाभी बतलायाहै मू० ॥)

साबुन शिक्षा ।

पियर्स, सनलाइट विलायती कलकत्ता और मेरठ वालों के से बढ़िया २ सभी देशी बढ़िया मशीनों और बिना मशीनों के बनाना तथा सोडा कास्टिक व साबुन की जान खुशबू बनाना और तैलों की बू उड़ाकर पतला साबुन के योग्य बनाना । मू०१)

सुगन्धित तैल

बाजारों में बिकने वाले उत्तमोत्तम सभी तेलों के नुस्खे मय तैयारी की पूर्ण विधि सहित वर्णित है इसकी सहायतासे विदेशीविलायती सभी मनमोहक धड़ाधड़ बिकने वाले तैल बनाकर मालामाल बन सकते हैं । मू० ॥)

मिलने का पता—शर्मम प्रेस इटावा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	वार्षिक मूल्य	विशेषांक-मूल्य
राजसंस्करण	१२)	२॥)
साधारण संस्करण	६)	१)

प्रकाशक—
गंगा-फाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

वर्ष १४ खंड १ | श्रावण, ३१८ तुलसी-संवत् (१९९७ वि०)— अगस्त, १९४० | संख्या १ पूर्ण संख्या १६९

मंगलाचरण

[श्रीदुलारेलाल]

गंध-बलित-मारुत-चलित-ललित कुंज-दल-पुंज—
भरत दलित चित में वहै कलित वेनु-धुनि-गुंज।

❀ ❀ ❀

भरत जु जगत प्रकास, करत बास तम-जगत क्यों ?
धरत अमित गुन पास, परत सतत मन-पास क्यों ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्पना

[श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध']

(उपाध्यायजी सुधा-मंडल के स्तंभ हैं। खड़ी बोली और ब्रजबानी, दोनो भाषाओं पर आपका पूरा अधिकार है। आप सरल-से-सरल और कठिन-से-कठिन भाषा लिखते हैं। प्रिय-प्रवास, रस-कलस, वैदेही-वनवास आदि आपकी अमर रचनाएँ हैं।—सुधा-संपादक)

(अनुष्टुप्)

है विमुग्ध बना देती हो उत्फुल्ल सुगंधिता
कल्पना-कलिका कांता मानसोद्यान-संभवा ॥१॥
अलंकारवती रामा-तुल्या है लोकमोहिनी ,
संस्कृता, कांति-कलिता कल्पना समलंकृता ॥२॥

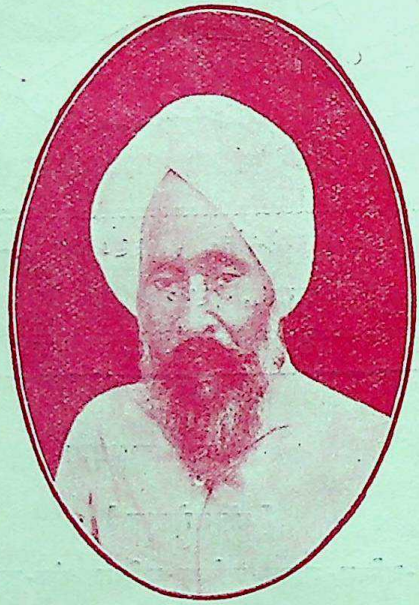

श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

होती है कल्पना मान्या भू में भूरि प्रशंसिता ,
हो शोभिता सुभाषा से भावुक-भाव-भूषिता ॥३॥
लालायिता बनाती है रस-लुब्धा प्रवृत्ति को ;
लसती उक्ति-ग्रीवा में कल्पना-मंजुमालिका ॥४॥

भावोपेता, सुधा-सिक्ता, व्यंजना-परिपूरिता
होती है भूरि मधुरा कल्पना कवि-केसरी ॥५॥
कलिता कविता-माता-भावुकता-विभूषिता
कमनीयता - उपेता होती है कांत कल्पना ॥६॥

मोहती मानसों को है, है बढ़ाती विमुग्धता
कांत कलाभा-कलिता कल्पना मणि-मुद्रिका ॥७॥
भूतल-भूति-भरिता, दिवता दिव्यता-रता ;
लौकिकता-विलसिता धन्या है कवि-कल्पना ॥८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहिंसात्मक मतभेद

[श्रीपं० रामविलास शर्मा एम्० ए०]

(श्रीरामविलासजी का सुधा-मंडल के लेखकों में अत्यंत ऊँचा स्थान है। आप जो कुछ लिखते हैं, ख़ूब पढ़कर, मनन करके। आपकी भाषा में जान रहती है। इस लेख में कांग्रेस के वर्तमान वातावरण का आपने ख़ासा ख़ाका खींचा है। [illegible] और कांग्रेस-भक्तों को यह लेख पढ़कर इस पर विचार [illegible] विद्यालय में अँगरेज़ी के प्रोफ़ेसर हैं। यह फ़ार्म छपते [illegible] के आगामी उपाधि-वितरणोत्सव में हमारे श्रेष्ठ चि[illegible] उपाधि से विभूषित हो जायँगे। बधाई !—सुधा-संप[illegible]

ख़ू[illegible] ब गाजे-बा[illegible] अनेक नेताओं ने पूर्ण दूल्हा [illegible] शुरू किया था कि जाय, [illegible] गांधी लड़ाई का उसे [illegible] ही लिये महात्मा जाय, [illegible] गया था, परंतु की हो[illegible] र कसा जाने को के अनेक प्रस्ताव पास कि[illegible] तब उन्हें उनके जाने के बाद नेतृत्व [illegible] यित्व से ही उपयुक्त अवसर पर कांग्रेस[illegible] कर दिया गया। नीति के उत्तरदायित्व [illegible] ना गांधी ने 'हरि-अलग कर दिए गए महात्म[illegible] में लिखा कि ईश्वर गांधी की हुई है। कित[illegible] मनुष्य के सामने धूमधाम से त्रिपुरी औ[illegible] विश्वास को सिद्ध फिर रामगढ़ में घोषि[illegible] के लिये उनके किया गया था [illegible] यह उपयुक्त समय कांग्रेस का यदि को[illegible] परंतु इस सिद्धि के नेतृत्व कर सकता है, [illegible] आपके कथनानुसार महात्मा गांधी, जब भी ज़रूरत उनका कांग्रेस से महात्मा गांधी [illegible] ग्रेस को अपने अभिमत से सहायता देते रहेंगे।] अलग होना मानो अनि-सकते हैं। सत्याग्रह की वार्य हो गया—

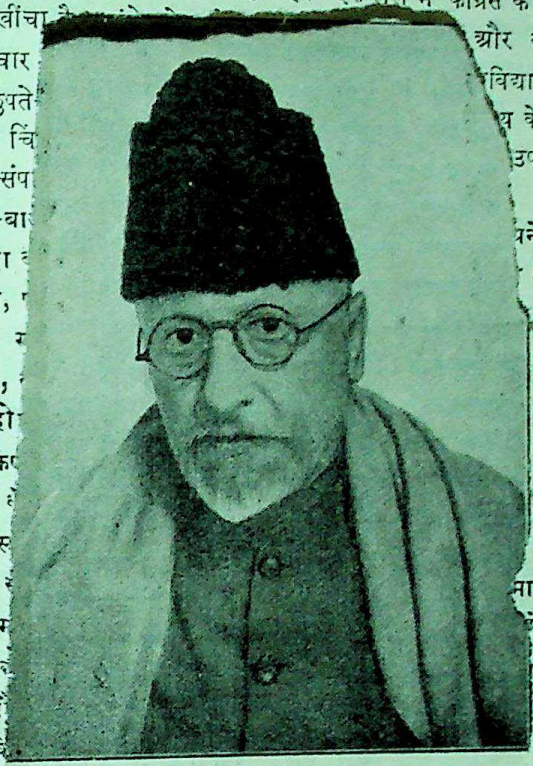

राष्ट्रपति मौलाना अबुलकलाम आज़ाद

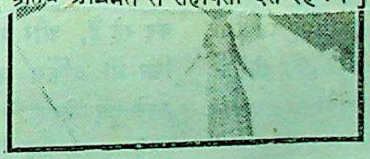

श्रीपं० रामविलास शर्मा एम्० ए०

तैयारी की घोषणा की गई थी, और प्रधान सेनापति महात्मा गांधी ने अपने सैनिकों के सामने कुछ शर्तें रक्खी थीं, जिनके पूर्ण होने पर

"I felt that now was the time to prove my faith before God and man. And so I asked

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

for absolution from the Committee."

महात्मा गांधी और वर्किंग कमेटी के बीच का मतभेद कितना गहरा है, इस संबंध में एक राय नहीं दिखाई देती। राष्ट्रपति आज़ाद के अनुसार महात्मा गांधी, जब भी [illegible] अपने अभिमत से सहायत[illegible] देते रहेंगे। परंतु [illegible] 'Whenever ne[illegible]sary' और कहाँ [illegible] तथा रामगढ़ का ए[illegible] शासन! कांग्रेस के [illegible] मंत्री आचार्य कृपल[illegible] कहा है कि वर्किं[illegible] के प्रस्ताव से क[illegible] उन मूल-सिद्धांतों [illegible] नीति (fundam[illegible] principles [illegible] policies) में, [illegible] कांग्रेस महात्मा गांध[illegible] नेतृत्व में बीस स[illegible] मानती आ रही हैं [illegible] परिवर्तन नहीं हुआ[illegible] इन मूल-सिद्धांत[illegible] नीति के विषय में [illegible] कुछ और ही कहते हैं [illegible]

"Hitherto I h[illegible] been responsi[illegible] for guiding the general policy of the Congress. I could no longer do so when fundamental differences were discovered between them and me."

सैद्धांतिक और व्यापक मतभेदों के कारण महात्मा गांधी के लिये यह संभव न था कि पहले की ही तरह वह कांग्रेस की नीति निर्धारित करते रहें। यह स्पष्ट है कि महात्माजी अपने और वर्किंग कमेटी के बीच सैद्धांतिक मतभेद पाते हैं, और इसीलिये अब वह कांग्रेस को उसके उचित मार्ग पर नहीं चला सकते। आचार्य कृपलानी यह कहकर कि [illegible] कमेटी में कोई व्यापक मतभेद नहीं है, मतभेद की बात पर लीपा-पोती करना चाहते हैं।

पं० जवाहरलाल नेहरू ने इस संबंध में जो वक्तव्य दिया है, उसमें उनकी स्वाभाविक अस्पष्टता दो क़दम आगे और बढ़ गई है। पहले आप कहते हैं कि वर्किंग कमेटी ने जनता को अपने विश्वास में लेकर उसे उन मूल-समस्याओं से परिचित करा दिया है, जो पहले दूर भविष्य में [illegible]ान पड़ती थीं। और, [illegible]सा करके कमेटी ने अच्छा [illegible] किया है। वर्किंग कमेटी [illegible]। जिस प्रकार जनता को [illegible]पना विश्वास-पात्र बनाया [illegible], उसका एक उदाहरण तो [illegible]पर ही है कि गांधीजी [illegible]तभेद के संबंध में कुछ कह रहे हैं, और कांग्रेस [illegible] प्रधान मंत्री कुछ और। फिर भी वर्किंग कमेटी के उक्त कार्य की प्रशंसा करते हुए नेहरूजी कहते हैं कि हममें से बहुतों के लिये पुराने ढर्रे छोड़ना दुष्कर है, और हम बीते हुए कल की ही लकीर पीटते चलते हैं। घटनाओं से जो स्पष्ट परिणाम निकलते हैं, उनसे

(अनुष्टुप्)

[illegible]उत्फुल्ल सुगंधिता भावोपेता, सुधा-सिक्ता,
[illegible]मानसोद्यान-संभवा ॥१॥ होती है भूरि मधुरा क[illegible]
[illegible]या है लोकमोहिनी, कलिता कविता-माता-[illegible]
[illegible]कल्पना समलंकृता ॥२॥ कमनीयता - उपेता होत[illegible]

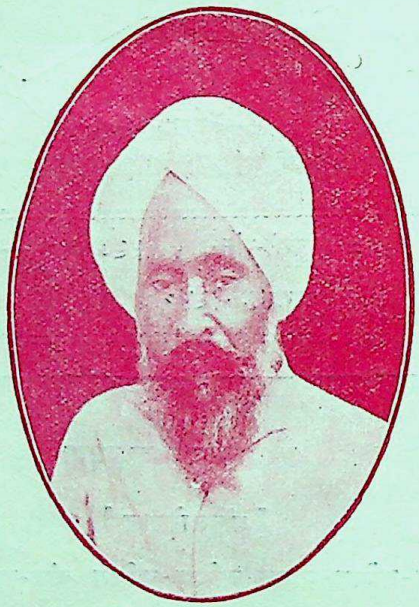

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम लाभ उठाना नहीं चाहते। बड़ी-बड़ी शक्तियाँ संसार के वर्तमान रूप को बदल रही हैं। गुस्सा होने या उत्तेजित होने से कोई लाभ न होगा। हमें उन्हें समझना चाहिए, और उनके अनुसार अपना मार्ग भी निश्चित करना चाहिए। घटनाएँ बड़े-बड़े डग (giant strides) रखती चली जा रही हैं, और हम उनके साथ क़दम मिलाने की चेष्टा करेंगे, इत्यादि। यह हम समझते हैं कि उत्तेजित होने से काम न चलेगा, परंतु यह उत्तेजना किसमें है, जिसके लिये नेहरूजी यह चेतावनी दे रहे हैं? क्या उत्तेजना से दूर रहकर, शांत मन से उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि बड़े-बड़े डग रखने-वाली घटनाओं से कौन क़दम मिलाने की कोशिश कर रहा है, वर्किंग कमेटी, महात्मा गांधी या स्वयं नेहरूजी? परिस्थितियों से बाध्य होकर ही वर्किंग कमेटी को वर्धा का वह प्रस्ताव पास करना पड़ा है, जिससे गांधीजी कांग्रेस-नीति के उत्तरदायित्व से अलग हो गए हैं। तब नेहरूजी के शब्दों का यही अर्थ हो सकता है कि महात्मा गांधी इन परिस्थितियों के अनुसार नहीं बदलना चाहते। यदि यह सच है, तो अभी तक गला फाड़-फाड़कर "गांधीजी ही देश का नेतृत्व कर सकते हैं।" घोषित करने की क्या आवश्यकता थी? पं० जवाहरलाल नेहरू यह स्पष्ट नहीं कह सकते कि महात्मा गांधी लकीर के फ़क़ीर हैं, अब हम उनके पीछे नहीं चल सकते। उन्होंने गांधीजी के बारे में जो कुछ लिखा है, उससे जन-साधारण को भुलावे में ही डाला गया है। और, नेहरूजी को गांधीजी में विश्वास है, इस पर गांधीजी ने अपनी सम्मति देकर जनता के भ्रम को पक्का कर दिया है—"His love and confidence in me peep out of every sentence referring to me." शब्द-शब्द से पं० जवाहरलाल नेहरू का गांधीजी में प्रेम और विश्वास प्रकट होता है, और इसीलिये हम नहीं समझ पाते कि परिस्थिति के साथ कौन

राष्ट्रपति मौलाना अबुलकलाम आज़ाद

[आपके कथनानुसार महात्मा गांधी, जब भी ज़रूरत पड़े, कांग्रेस को अपने अभिमत से सहायता देते रहेंगे।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे नहीं बढ़ रहा है, और देश को सबसे अधिक भ्रम में कौन डाल रहा है, वर्किंग कमेटी, महात्मा गांधी या पं० जवाहरलाल ?

इस मतभेद पर एक दूसरी सफ़ाई श्रीपट्टाभि सीतारमैया की है, जिनकी हार महात्मा गांधी की हार थी, और इसलिये जिनकी सफ़ाई भी बहुत कुछ महात्मा गांधी की सफ़ाई होनी चाहिए। उनके लेख का शीर्षक है 'No Parting of the ways' अर्थात् कांग्रेस और महात्मा गांधी के मार्ग एक ही हैं, दोनो अलग-अलग रास्तों पर नहीं चल रहे। परंतु लेख से यदि हम कुछ भी समझ पाते हैं, तो यह कि उनके रास्ते दो हैं, यद्यपि वे साथ-साथ चलें, तो ज़्यादा अच्छा हो। श्रीसीतारमैया कहते हैं कि महात्मा गांधी एक डॉक्टर हैं, और हम लोग अस्पताल। विना उनके हमारा इलाज नहीं हो सकता, और हमारे विना उनके प्रयोग भी बृहत् परिमाण पर नहीं हो सकते, इसलिये दोनो को मिल जाना चाहिए। डॉक्टर और मरीज़ की उपमा सोलह आने ठीक है, पर इन मरीज़ों पर प्रयोग करने से राष्ट्र का उद्धार नहीं हो सकता। डॉक्टर साहब को प्रयोगों का जो अवसर मिला, उससे बीमारी कम होने के बजाय बढ़ती ही गई। श्रीसीतारमैया विकट परिस्थिति में हैं, एक तरफ़ वर्षों के आराध्य की उपासना नहीं छोड़ सकते, दूसरी ओर उस अस्पताल को भी नहीं छोड़ सकते, जिससे उनका घनिष्ठ संबंध है। इसलिये वह दोनो को ही समझा-बुझाकर पास लाना चाहते हैं। यही नहीं, दोनो की प्रशंसा कर वह जनता की भक्ति दोनो में ही बनाए रखना चाहते हैं। एक तरफ़ गांधीजी की प्रशंसा में वह कहते हैं—"His mind works under the spell of visions. That is why he is able to work miracles. Practical difficulties and political standpoints do not baffle him." और किसी देश में ये शब्द एक नेता के लिये निंदात्मक समझे जाते, परंतु भारतवर्ष में प्रशंसात्मक हैं, क्योंकि जो वस्तु निंदा के योग्य है, वह हमारे सामने प्रशंसा के योग्य बताकर रक्खी गई है। परिस्थिति की वास्तविक कठिनाइयों से व्यग्र न हो स्वप्नद्रष्टा महात्मा चमत्कार कर दिखाते हैं, परंतु ये चमत्कार शायद स्वप्न-लोक ही में होते हैं, नहीं तो यदि चमत्कारों से वास्तविक समस्याएँ सुलझ जातीं, तो गांधीजी और उनके अनुयायियों में मतभेद ही क्यों होता? इन अनुयायियों के प्रति श्रीसीतारमैया की सफ़ाई है—"Ministers and politicians can not live in a land of dreams. The utopia is not for them, nor is the administration of a country an experiment in self-governance."

इन शब्दों का यदि कुछ अर्थ है, तो यही कि गांधीजी और उनके अनुयायियों में उतना ही अंतर है, जितना स्वप्न और वास्तविक संसार में। मंत्री और राजनीतिज्ञ स्वप्न-लोक में नहीं रह सकते, तब वहाँ कौन रहता है? एक देश का शासन आध्यात्मिक साधना के लिये एक प्रयोग नहीं बन सकता। उसे इस प्रकार का प्रयोग कौन बनाता है? 'Practical difficulties' होते हुए भी महात्मा गांधी चमत्कार कर दिखाते हैं। ये चमत्कार किस लोक में होते हैं? फिर भी गांधीजी और उनके अनुयायियों में 'Parting of the ways' नहीं। दोनो एक ही राह पर चल रहे हैं। गांधीजी के लिये स्वप्न सत्य है, तो उनके अनुयायियों के लिये सत्य स्वप्न!

श्रीपट्टाभि सीतारमैया ने गांधीजी से प्रार्थना की है कि उन्हें अपने अनुयायियों के प्रति उदारता दिखानी चाहिए, और अपने न्याय के साथ क्षमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सहयोग कर उनकी निर्बलता के प्रति सहानुभूति दिखानी चाहिए। परंतु गांधीजी के लिये यह संभव नहीं। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि उनमें और कांग्रेस में मतभेद है, इसलिये दोनो अलग हो गए हैं। कम-से-कम गांधीजी के वक्तव्य में [illegible] निश्चय किए बैठे हैं कि उसके [illegible] ही करते रहेंगे। दुविधा या [illegible]ारा वक्तव्य संदेहवाली [illegible]न्होंने वर्किंग कोई बात [illegible] नहीं। उन्होंने [illegible] समझाने की भरसक चेष्टा [illegible] उनकी बात की कि वर्किंग [illegible] न आई। कमेटी उनकी [illegible]ने उन्हें देश नीति ग्रहण [illegible]टर बनाया, करे — "I [illegible] pleaded [illegible]त आई। pleaded hard with [illegible]र भी सवि- the Com- [illegible]-परिवार में mittee: If [illegible]त्मा गांधी you have [illegible]ने अहिंसा faith in [illegible] संसार में non-vio- [illegible]का बलिदान lence [illegible]लिदान कर of the [illegible]ांग्रेस strong, now is the time to act on it." परंतु वर्किंग कमेटी गांधीजी को नया पैग़ंबर बनाने के लिये तैयार न थी। "बंदर की बला तबेले के सिर"—वर्किंग कमेटी ने अपनी बला जनता के सिर रक्खी कि जनता इस आदर्श का पालन न कर पाएगी।

कमेटी के सामने यह समस्या थी कि भीतरी गृह-युद्ध और बाहरी आक्रमण (impending anarchy within and danger of aggression from without) से देश की रक्षा कैसे की जाय? इस समस्या पर श्रीसीतारमैया ने और [illegible] प्रकाश डाला है। भय यह है कि देश में अराजकता उत्पन्न होने पर कांग्रेस-मंत्रियों को—यदि कांग्रेस ने पद-ग्रहण किया—हिंसा का सहारा लेना पड़ेगा। यही नहीं, वह यह भी कहते हैं कि यद्यपि कांग्रेस सारे देश का प्रतिनिधित्व करती है, फिर भी इस अवसर पर स्वतंत्रता की ओर अपनी यात्रा में वह और संस्थाओं को भी साथ ले लेगी। अब प्रश्न यह है कि ये संस्थाएँ भी क्या कांग्रेस की नीति ग्रहण करेंगी?—"Would these organisations acquiesce in this new experiment of a non-violent organisation of the

[illegible] हमेशा बराबर विश्वास [illegible] की बहु-संख्यक जनता महात्मा गां[illegible] चलना चाहती [illegible] करोड़ों ग़रीब [illegible] गांधी को ही [illegible] मानना चाहते [illegible] एकाएक कैसे छू- [illegible] महात्मा गांधी [illegible] विपरीत वर्किंग [illegible] अलग नीति [illegible] कर सकी? क्या [illegible] जन-मत की [illegible] थी? चाहे वर्[illegible] मत की उपेक्षा [illegible] रखती हो, चाहे [illegible] साथ हो, और [illegible] बनाता हो—[illegible] में एक बात स्पष्[illegible] कमेटी महात्मा [illegible] नहीं। तब [illegible]

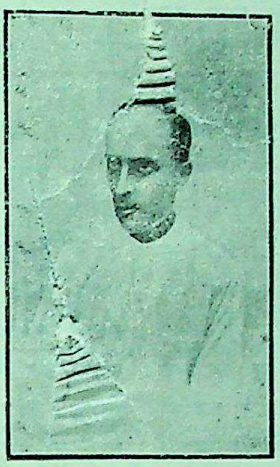

पं० जवाहरलाल नेहरू

[आपके कथनानुसार वर्किंग कमेटी ने जनता को अपने विश्वास में लेकर उसे उन मूल-समस्याओं से परिचित करा दिया है, जो पहले [illegible] प्रस्ताव से कांग्रेस के उन मूल-सिद्धांतों तथा नीति में, जिन्हें कांग्रेस महात्मा गांधी के नेतृत्व में बीस साल से मानती आ रही है, कोई परिवर्तन नहीं हुआ।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Government of India ?" भारत पर शासन करने के लिये जब ये संस्थाएँ एकत्र होंगी, तब वे इस नए प्रयोग में सम्मिलित होंगी या नहीं ? March to freedom और organisation of the Government of India कैसी सरलता से पर्यायवाची बन गए हैं। किस भी समस्या यह नहीं है कि ये की सफ़ाई होनी चाहिए। साथ कैसे मार्च र्पक है 'No Parting of सबके साथ हिंदुत् कांग्रेस और महात्मा गांधी बन सकेंगे। इस दोनो अलग-अलग रास्तों पर सत्याग्रह का परंतु लेख से यदि हम कुछ भी सतह पर काम क यह कि उनके रास्ते दो हैं, वर्किंग कमेटी । चलें, तो ज़्यादा अच्छा हो। चाहे महात्मा गांधी हैं कि महात्मा गांधी एक श्रीसीतारमैया के लोग अस्पताल। विना उनके स्थापना की सम्भव हो सकता, और हमारे विना होने पर हमें परिमाण पर नहीं हो सकते, क्या कांग्रेस के मिल जाना चाहिए। डॉक्टर बार आई है ? मपमा सोलह आने ठीक है, पर है—"The C प्रयोग करने से राष्ट्र का उद्धार had an o डॉक्टर साहब को प्रयोगों का faith." क्या यह उससे बीमारी कम होने के शासन की, शांति ाई। श्रीसीतारमैया विकट परि- समस्या पहले नहीं तरफ़ वर्षों के आराध्य की कांग्रेस की नीति छोड़ सकते, दूसरी ओर उस ग्रहण अभी इतना पुराना नहा हुआ कि लोग उसे भूल जायँ। पं० जवाहरलाल नेहरू तक ने लिखा है—"Indeed Congress Government have used the police." जब पुलिस द्वारा कांग्रेस ने शांति-स्थापना की है, तब महात्मा गांधी कैसे कह सकते हैं कि यह समस्या कमेटी के सामने पहले कभी नहीं आई। पं० जवाहरलाल ने ऊपर का वाक्य लिखकर यह भी क्यों नहीं लिख दिया कि गांधीजी का वर्तमान मतभेद शांति-स्थापना के कारण नहीं, और यदि है, तो कांग्रेस के पद-ग्रहण के समय महात्मा गांधी अपने सिद्धांतों की हत्या कर कांग्रेस से सहयोग कर रहे थे ?

कांग्रेस और महात्मा गांधी के बीच सहयोग किस प्रकार पर था? क्या तत्पर महात्मा गांधी व्यग्र न हो स्वप्नद्रष्टा महात्मा सा एक नीति दिखाते हैं, परंतु ये चमत्कार शाय ress non- ही में होते हैं, नहीं तो यदि चमत्कार olicy." दूसरी समस्याएँ सुलझ जातीं, तो गांधी सबल के हाथ अनुयायियों में मतभेद ही क्यों नी; वह उसके अनुयायियों के प्रति श्रीसीतारमैया बन जाती है— है—"Ministers and politi rong cannot not live in a land of dr must be a utopia is not for them, f 'creed' is administration of a ccu ने उसे इस रूप periment in self-governar ांग्रेस निर्बल थी,

इन शब्दों का यदि कुछ अर्थ है उसके लिये गांधीजी और उनके अनुयायियों निर्बलता की भूमि अंतर है, जितना स्वप्न और वा का उत्तरदायित्व में। मंत्री और राजनीतिज्ञ स्वप्न-ल की अहिंसा की सकते, तब वहाँ कौन रहता है ? फिर भी गांधीजी शासन आध्यात्मिक साधना के ही निर्बलता का नहीं बन सकता। उसे इस t tragic dis- बनाता है ? 'Pretty impotence is in store for me, I hope still to retain the faith that has sustained me all these years..." यदि भविष्य में उन्हें अपनी निर्बलता का ही ज्ञान होना बदा है, तो भी वह उसी सिद्धांत पर विश्वास करने की आशा करते हैं, जिसने इतने वर्षों तक उन्हें सहारा दिया है। गांधीजी को इस निर्बलता का ज्ञान कैसे होगा, उसी पुराने सिद्धांत पर चलने से तो ? परंतु कार्य-रूप में उसकी असफलता देखकर भी वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसमें विश्वास किए जायँगे, मानो निर्बलता सिद्ध होने पर भी उसे दूर करने की चेष्टा करना पाप होगा ! "सूरदास की कारी कामरि चढ़ै न दूजो रंग"—पहले तो कहा कि कमली काली ही नहीं है, और यदि किसी तरह सिद्ध हो गया कि कमली काली है, तो भी निश्चय किए बैठे हैं कि उसके कालेपन से इनकार ही करते रहेंगे।

गांधीजी का सारा वक्तव्य अत्यंत करुण है। उन्होंने वर्किंग कमेटी को भरसक समझाने की चेष्टा की, परंतु उनकी बात उसकी समझ में न आई। जिस वर्किंग कमेटी ने उन्हें देश का एकच्छत्र डिक्टेटर बनाया, उसी से अब 'pleaded hard' की नौबत आई। समझाने-बुझाने पर भी सविनय अवज्ञा कांग्रेस-परिवार में शुरू हो गई। महात्मा गांधी के अनुसार कांग्रेस ने अहिंसा की नीति छोड़कर संसार में अपनी उच्च पदवी का बलिदान कर दिया, और बलिदान कर दिया उस संबंध का, जो कांग्रेस और गांधीजी के बीच विना लिखे और विना कहे हुए भी वर्तमान था। कितने आश्चर्य की बात है कि इतने विश्वास के प्रस्ताव पास करने और बार-बार उन्हें कांग्रेस का एकमात्र नेता घोषित करने पर भी गांधीजी कहते हैं—कांग्रेस और उनके बीच का संबंध 'unwritten and unspoken' है। यदि भरी कांग्रेस में प्रस्ताव पास करने पर भी वह संबंध बेकहा और बेलिखा ही रह जाता है, तो उसे और स्पष्ट रूप से घोषित करने का दूसरा उपाय क्या हो सकता है? अंत में महात्मा गांधी को पं० जवाहरलाल नेहरू के प्रेम और विश्वास से ही संतोष करना पड़ता है। ऐसी करुण परिस्थिति गांधीजी के लिये क्यों उत्पन्न हुई? हमें तो बराबर विश्वास दिलाया गया है कि देश की बहु-संख्यक जनता महात्मा गांधी के ही पीछे चलना चाहती है; देश के करोड़ों ग़रीब किसान महात्मा गांधी को ही अपना नेता मानना चाहते हैं। वह नेतृत्व एकाएक कैसे छू-मंतर हो गया? महात्मा गांधी के समझाने के विपरीत वर्किंग कमेटी एक अलग नीति कैसे निर्धारित कर सकी? क्या इस प्रकार वह जन-मत की उपेक्षा कर रही थी? चाहे वर्किंग कमेटी जन-मत की उपेक्षा करने की शक्ति रखती हो, चाहे जन-मत उसके साथ हो, और उसे शक्तिशाली बनाता हो—किसी भी दशा में एक बात स्पष्ट है कि वर्किंग कमेटी महात्मा गांधी पर निर्भर नहीं। तब त्रिपुरी में यह घोषित करने की क्या आवश्यकता थी कि देश का नेतृत्व यदि कोई कर सकता है, तो महात्मा गांधी ही कर सकते हैं? वही घोषणा इस वर्ष रामगढ़ में फिर दुहराई गई। तब हठात् वर्किंग कमेटी में ऐसा आत्मविश्वास कहाँ से जाग्रत् हो गया, जो वह महात्मा गांधी से भिन्न अपनी एक नीति बनाने लगी?

पं० जवाहरलाल नेहरू

[आपके कथनानुसार वर्किंग कमेटी ने जनता को अपने विश्वास में लेकर उसे उन मूल-समस्याओं से परिचित करा दिया है, जो पहले दूर भविष्य में जान पड़ती थीं।... हममें से बहुतों के लिये पुराने ढर्रे छोड़ना दुष्कर है।]

त्रिपुरी में जिस दल ने विजय पाई, उसी दल का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेतृत्व वर्किंग कमेटी कर रही है। त्रिपुरी के पहले कांग्रेस पर उस दल का प्राधान्य था, और त्रिपुरी के बाद भी उसका प्राधान्य रहा, केवल त्रिपुरी में श्रीसुभाषचंद्र बोस के पुनः सभापति निर्वाचित होने से वह प्राधान्य कुछ समय के लिये घपले में पड़ गया था। उस विकट परिस्थिति में वर्किंग कमेटी के नेताओं को महात्मा गांधी के नेतृत्व की आवश्यकता पड़ी थी। महात्मा गांधी आज कह सकते हैं कि कांग्रेस और उनके बीच का संबंध बे-लिखा और बेकहा था। परंतु उस समय तो उन्होंने अपने अनुयायियों से खुल्लमखुल्ला अपील की थी कि उन्हें कांग्रेस से निकल आना चाहिए, और कांग्रेस के बाहर ही वे देश की अधिक सेवा कर सकेंगे। गांधीजी की उस घोषणा ने स्पष्ट कर दिया था कि उनका कांग्रेस से ही नहीं, बल्कि उस पर आधिपत्य करनेवाले एक दल-विशेष से घनिष्ठ संबंध था। उस दल के आधिपत्य पर आक्रमण होने से वह विचलित हो उठे, और उस दल को कांग्रेस से बाहर निकालकर कांग्रेस को ही कमज़ोर बना देने के लिये तैयार हो गए। देश के बहुमत के पीछे चलना उन्हें स्वीकार न था। कांग्रेस में अपने दल का दूसरे की अधीनता स्वीकार करना ही उनके लिये असह्य था। परंतु उस समय भी महात्मा गांधी के अनुयायियों ने सिद्ध कर दिया कि राजनीति में वे महात्मा गांधी से अधिक चतुर हैं। कहाँ कांग्रेस से निकलने की बात हो रही थी, कहाँ गांधीजी में विश्वास का प्रस्ताव पास हुआ, और विश्वास का प्रस्ताव भी ऐसा कि देश का नेतृत्व तुम्हीं कर सकते हो, और दूसरा कोई नहीं। अंत में श्रीसुभाष बोस की विजय पराजय में परिणत हो गई। पट्टाभि की हार से गांधीजी हारे थे, मदरास और संयुक्त प्रांत के प्रधान मंत्रियों की जीत से वह फिर जीत गए।

फिर भी दोनो प्रांतों के मंत्री जो अपनी विजय प्राप्त कर सके, वह महात्मा गांधी के ही नाम से। अपने दल को विजयी बनाने के लिये महात्मा गांधी को अस्त्र-रूप में प्रयुक्त करना आवश्यक था। देश में इस दल के नेतृत्व के प्रति एक असंतोष बढ़ रहा था; उसके फल-स्वरूप श्रीबोस सभापति चुने गए। परंतु वह असंतोष अभी स्पष्ट आकार-प्रकार न ग्रहण कर सका था। इसीलिये गांधी-अस्त्र का प्रयोग कर मंत्रियों का यह दल उसे बहुत कुछ छिन्न-भिन्न कर सका। यह असंतोष अस्पष्ट था, इसीलिये त्रिपुरी के बाद वह दूसरे दल से संगठित मोर्चा न ले सका, प्रत्युत आपस के ही मतभेद से निर्बल होता गया। त्रिपुरी में मंत्रियों को अपने पक्ष की विजय के लिये महात्मा गांधी के नेतृत्व का स्वाँग रचना पड़ा। वास्तव में वह कांग्रेस से महात्मा गांधी में विश्वास का प्रस्ताव पास कराके अपने दल के नेतृत्व और अपने मंत्रित्व में विश्वास का प्रस्ताव पास करा रहे थे। महात्मा गांधी का व्यक्तिगत नेतृत्व कितना निर्बल और नगण्य था, वह इसी बात से जाना जा सकता है कि उन्होंने हताश हो अपने अनुयायियों से कांग्रेस से निकल आने के लिये कहा था। वास्तव में अपने दल की हार उन्होंने इतने भयंकर रूप में देखी थी, जितनी वह थी नहीं। कांग्रेस के मंत्रिदल ने गांधीजी में विश्वास का प्रस्ताव पास कराके सिद्ध कर दिया कि राजनीति में महत्त्व किसी 'दल' का होता है, 'व्यक्ति'-विशेष का नहीं। ऊपर से वे गांधी के नेतृत्व की घोषणा कर रहे थे, परंतु भीतर से अपने दल की विजय पर प्रसन्न हो रहे थे। जिन महात्मा गांधी का नाम जपकर यह दल त्रिपुरी में विजयी हुआ था, उन्हीं महात्मा गांधी को आज उसने अपने नेतृत्व से अलग कर दिया है। इससे उस दल की महत्ता और शक्ति सहज ही समझ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ सकती है। महात्मा गांधी ने कांग्रेस में इस दल की सृष्टि की थी, उसे राजनीति सिखाई थी, देश के विशिष्ट वर्गों से शक्ति-लाभ करना सिखाया था, इसीलिये उस दल से संबंध-विच्छेद होते आज उन्हें अपार क्लेश हो रहा है—"My word seemed to lose the power to carry with me those whom it was my proud privilege to carry all these many years which seem like yesterday." जिन्हें वह अपना अनुयायी बना सके थे, आज वे ही उनके शब्दों से मुग्ध न होकर पत्थर हो गए थे। फिर भी इस निर्मम प्रहार को गांधीजी सह सके हैं, इसकी उन्हें खुशी है—"I have been able to bear the strain of the break and have the strength to stand alone." किसी दूसरे व्यक्ति के लिये यह प्रहार सांघातिक होता।

यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि गांधीजी के लिये यह परिस्थिति नई नहीं है। सन् ३४ में वह एक बार पहले भी कांग्रेस से संबंध-विच्छेद कर चुके हैं। कांग्रेस और अपने बीच उन्हें आज जो सैद्धांतिक मतभेद दिखाई देता है, वह एक बार पहले भी देश के सामने आ चुका है। सितंबर सन् ३४ में भी उन्होंने "fundamental differences between the Congress intelligentsia and me" का उल्लेख किया था (P. Sitaramayya's History of the Congress, P. 973)। और, इन्हीं सैद्धांतिक मतभेदों के कारण उन्होंने कांग्रेस से अलग हो जाने का विचार भी किया था। जिन बातों पर उन्हें अपने और कांग्रेस के बीच मतभेद दिखाई देता था, उनका उन्होंने स्पष्ट उल्लेख किया था। गांधीजी के ही अनुसार बहुत-से कांग्रेस-जनों ने उन्हें याद दिलाया था कि खादी के संबंध में जो धोखाधड़ी और टालमटोल (hypocrisy and evasion) चल रही थी, उसके लिये गांधीजी ही उत्तरदायी थे। इसके अतिरिक्त पार्लियामेंटरी बोर्ड, हरिजन-आंदोलन, अहिंसा, सविनय अवज्ञा आदि के विषय में भी उनका और लोगों से मतभेद था। इतने मतभेदों के होते हुए भी कांग्रेस का प्रधान दल गांधीजी के नेतृत्व को स्वीकार करता चला आता था, इसलिये नहीं कि वह गांधीजी के सिद्धांतों में विश्वास करता था, वरन् इसलिये कि इसी में उस समय उसका स्वार्थ था। इस स्वार्थपरता और बेईमानी से गांधीजी का भी जी ऊब रहा था, और वह इस बात को तय कर लेना चाहते थे कि कांग्रेस और देश उनके साथ है, या कांग्रेस के नए नेताओं के साथ। गांधीजी के प्रस्तावों पर वोट देते हुए कांग्रेस के सदस्यों पर कैसी विपत्ति छा जाती थी, इसका उल्लेख करते हुए उन्होंने लिखा था—

"Even the memory of the sense of oppression which they experienced at the time of voting, without an intelligent belief in these resolutions, oppresses me just as much as they were oppressed."

और, खद्दर के विषय में—

"It is intolerable that there should be unashamed fraud in the observance of the Khaddar clause."

ऐसी परिस्थिति में गांधीजी को कांग्रेस में रहना चाहिए, या अलग हो जाना, इस विषय में कांग्रेस के प्रधान दल में दो मत थे—एक मत सरदार पटेल का था कि समय आ गया था, जब गांधीजी को कांग्रेस से अलग हो जाना चाहिए था, दूसरा मत पं० गोविंदवल्लभ पंत और श्रीरफ़ी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहमद क़िदवई का था कि गांधीजी कांग्रेस में रहें, परंतु उसके संचालन में क्रियात्मक भाग न लें (remaining in the Congress without participating in active administration of the organisation)। बाद में गांधीजी की जो स्थिति हुई, वह इन दोनों से ही भिन्न थी; गांधीजी कांग्रेस से अलग रहकर भी यथावसर उसका नेतृत्व करते रहे। परंतु गांधीजी जो चाहते थे, वह नहीं हुआ। वह बंबई-कांग्रेस के सामने अपने कुछ प्रस्ताव रखकर यह जाँचना चाहते थे कि कांग्रेस उनके साथ है या नहीं। कांग्रेस ने हेर-फेर के साथ उनके कुछ प्रस्तावों को पास कर दिया, परंतु उनके सभी प्रस्तावों को मूल-रूप में पास कर वह उनमें अपना अविकल विश्वास प्रकट करने को तैयार न थी। इसलिये गांधीजी को कांग्रेस से अलग हो जाना पड़ा। परंतु कांग्रेस के बुद्धिमान् नेता बाद में भी गांधीजी का पहले के ही भाँति उपयोग करते रहे।

गांधीजी का जो उपयोग त्रिपुरी में हुआ, उसी से मिलता जुलता उनका उपयोग बंबई में हो चुका था। गांधीजी तो कांग्रेस से और पहले ही अलग हो जाना चाहते थे, परंतु नेताओं ने सलाह दी कि बंबई की कांग्रेस के बाद ही वह जो कुछ करना चाहें, करें। गांधीजी ने तो सोचा कि बंबई में अपने प्रस्ताव रख वह कांग्रेस में अपने अनुयायियों की संख्या का अनुमान कर सकेंगे, परंतु कांग्रेस के बड़े नेताओं ने उनका उपयोग किया समाजवादी सदस्यों को क़ाबू में रखने के लिये, और इसमें वे पूरी तरह सफल हुए। त्रिपुरी में गरम दल की शक्ति से जब फिर उनकी मुठभेड़ हुई, तब गांधीजी को कांग्रेस से अलग रहने की, या उसमें रहकर भी उसके संचालन में सक्रिय भाग न लेने की सलाह देनेवाले नेता ही उनके एकच्छत्र नेतृत्व की दुहाई देने लगे। कांग्रेस में गांधी-दल की विजय हुई, तो वह गांधीजी की बुद्धिमत्ता के कारण नहीं, वरन् उनके नाम से फ़ायदा उठानेवाले उनके अनुयायियों की कूटनीति के कारण। गांधीजी अहिंसा की नीति अपने विरोधी के सामने भाग खड़े होने में ही चरितार्थ होते देखते थे। कांग्रेस में समाजवादियों की जड़ जमती देख वह सन् ३४ में ही दुहाई देने लगे थे—"If they gain ascendancy in the Congress, as they well may, I cannot remain in the Congress." त्रिपुरी में श्रीबोस की विजय होने पर उन्होंने अपने अनुयायियों से ही कांग्रेस छोड़कर बाहर आ जाने को कहा था। परंतु उनके अनुयायी ऐसी कच्ची गोटें नहीं खेले थे; उन्होंने समाजवादियों को और गरम दलवालों को चुनौती दी, और महात्मा गांधी का नाम जपकर फिर विजयी हुए।

अब सहज ही प्रश्न उठता है कि महात्मा गांधी सन् ३४ में कांग्रेस से अलग होकर अब तक उसका उत्तरदायित्व कैसे वहन करते रहे? उस समय उन्होंने अपने अनुयायियों से जिन मतभेदों का उल्लेख किया था, उन्हें देखते हुए यह कल्पना में भी नहीं आता कि वह कांग्रेस-जनों का नेतृत्व कर सकते थे। बंबई-कांग्रेस में उन्होंने अपनी नीति के सच्चे अनुयायियों की संख्या कूतनी चाही, और जिस परिणाम पर वह पहुँचे, उससे उन्होंने कांग्रेस से अलग हो जाना ही उचित समझा। परंतु कांग्रेस की राजनीति एक ऐसी भूलभुलैया है, जिसमें सभी कुछ संभव है। सैद्धांतिक मतभेदों के होते हुए भी, कांग्रेस से खुल्लमखुल्ला संबंध-विच्छेद करके भी, वह उसके एकच्छत्र नेता बनकर रहे, और छ साल बाद आज फिर सैद्धांतिक मतभेद उठ खड़े हुए हैं। कांग्रेस-सरकार की पुलिस जब बिहार के किसान-नेताओं के सिर लाठी से फोड़ रही थी, तब ये मतभेद किस शून्य में विलीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गए थे ? क्या सचमुच अहिंसा को लेकर ही गांधीजी और वर्किंग कमेटी के बीच मतभेद हुआ है ?

गांधीजी की अहिंसा दक्षिण-आफ्रिका से शुरू होती है। झुलू-विद्रोह और बोअर-युद्ध में यह स्वीकार करके भी कि झुलू और बोअर न्याय पर थे, वह अँगरेज़ों की सहायता करते रहे। इससे आशा थी कि आगे चलकर ब्रिटिश सरकार आफ्रिका में भारतीय व्यापारियों को अधिक सुविधाएँ दे देगी। परंतु वैसा न हुआ। सन् १४ की लड़ाई में महात्मा गांधी ने फिर ब्रिटेन की सहायता की, परंतु उसका भी फल उनकी आशा के प्रतिकूल हुआ। वर्तमान युद्ध छिड़ने पर वह फिर ब्रिटेन की सहायता के पक्ष में थे, और ऐसी सहायता के, जो बिना किसी शर्त के दी जाय। केवल वर्किंग कमेटी उनके पीछे चलने को तैयार न थी। एक बार फिर मतभेद स्पष्ट हो गया। युद्ध छिड़ने से आज तक के गांधीजी के वक्तव्यों और लेखों को एक ओर रखिए, और कांग्रेस के अन्य प्रधान नेताओं के वक्तव्य दूसरी ओर, तो दोनो का अंतर स्पष्ट हो जायगा। दोनो ओर यह चेष्टा रही है कि एक दूसरे को अपनी ओर खींचा जाय, और जनता के सामने मतभेद स्पष्ट न होने पाए। एक ने यदि दूसरे के विरोध में कुछ कहा, तो दूसरे ने कोशिश यही की कि उस पर ऐसी टीका-टिप्पणी की जाय, जिससे उसका अर्थ खींच-तानकर अपने अनुकूल बन जाय। श्रीयुत अबुलकलाम आज़ाद ने कहा था कि सत्याग्रह अनिश्चित रूप से स्थगित नहीं किया जा सकता, उसे शीघ्र छेड़ना पड़ेगा। गांधीजी ने कहा, सत्याग्रह अनिश्चित समय के लिये स्थगित कर दिया गया है। वर्किंग कमेटी सत्याग्रह छेड़ना चाहती है या नहीं, यह दूसरी बात है; परंतु वह धमकी देने में विश्वास करती है। गांधीजी ब्रिटेन को किसी तरह भी संकोच में नहीं डालना चाहते। यही बात लेकर आज वह वर्किंग कमेटी से अलग हो गए हैं। परंतु वर्किंग कमेटीवाले इस अलग होने का महत्त्व समझते हैं। वह जानते हैं, और कहते हैं कि आवश्यकतानुसार वे फिर गांधीजी से सहायता ले सकेंगे। कांग्रेस से बार-बार अपना मतभेद प्रकट करने और फिर भी उसी के हाथों में कठपुतली की तरह नाचने का एक ही अर्थ है कि कांग्रेस का नेतृत्व गांधीजी के हाथ से निकलकर उनके अनुयायियों के हाथों में चला गया है। कहने को ये लोग गांधीजी के अनुयायी थे, परंतु पहले भी बड़े धैर्य से अपने दिमाग़ पर बोझ डालकर वे गांधीजी की आज्ञा मानते थे। इस अस्वाभाविक आज्ञाकारिता से गांधीजी को भी लज्जा

साम्यवादी नेता श्रीनरेंद्रदेव

[आप किसान-सभा के सभापति होकर भी [illegible] होने पर वह कांग्रेस से अलग नहीं हुए; यही नहीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंबई में एक बार मज़दूरों पर गोली चलने पर उन्होंने उसका समर्थन भी किया था। सेना के ही संबंध में लंदन की गोलमेज़-कॉन्फ्रेंस में उन्होंने कहा था कि राजपूतों आदि ने देश की रक्षा की है, आगे भी करेंगे; देश की रक्षा के लिये हम ब्रिटिश सेना के मोहताज न रहेंगे। गांधीजी के अनन्य भक्त श्रीसीतारमैया ही पूछते हैं, क्या गोलमेज़-कॉन्फ्रेंस में गांधीजी सैनिक संगठन के विरुद्ध थे?—"Was Gandhi thinking all the while of disestablishing the armies of the military type altogether?", और वह स्वयं उत्तर देते हैं—"That does not appear to be the case." यदि गांधीजी तब सैनिक संगठन के विरोधी न थे, तो अपनी ऐसा मूल-रूप में पास कर वह उनमें अपना अविकल विश्वास प्रकट करने को तैयार न थी। इसलिये गांधीजी को कांग्रेस से अलग हो जाना पड़ा। परंतु कांग्रेस के बुद्धिमान् नेता बाद में भी गांधीजी का पहले के ही भाँति उपयोग करते रहे।

गांधीजी का जो उपयोग त्रिपुरी में हुआ, उसी से मिलता जुलता उनका उपयोग बंबई में हो चुका था। गांधीजी तो कांग्रेस से और पहले ही अलग हो जाना चाहते थे, परंतु नेताओं ने सलाह दी कि बंबई की कांग्रेस के बाद ही वह जो कुछ करना चाहें, करें। गांधीजी ने तो सोचा कि बंबई में अपने प्रस्ताव रख वह कांग्रेस में अपने अनुयायियों की संख्या का अनुमान कर सकेंगे, परंतु कांग्रेस के बड़े नेताओं ने उनका उपयोग किया समाजवादी सदस्यों को क़ाबू में रखने के लिये, और इसमें वे पूरी तरह सफल हुए। त्रिपुरी में गरम दल की शक्ति से जब फिर उनकी मुठभेड़ हुई, तब गांधीजी को कांग्रेस से अलग रहने की, या उसमें रहकर भी उसके संचालन में सक्रिय भाग न लेने की सलाह उन्होंने कहा था कि जो अपनी रक्षा कर सके, वह रहे, नहीं तो शहर छोड़कर दूसरी जगह चला जाय। इसके बाद एक वक्तव्य में अहिंसा की व्याख्या करते हुए उन्होंने यहाँ तक कहा था कि आत्मरक्षा में हिंसा हिंसा नहीं होती। ये ही सब

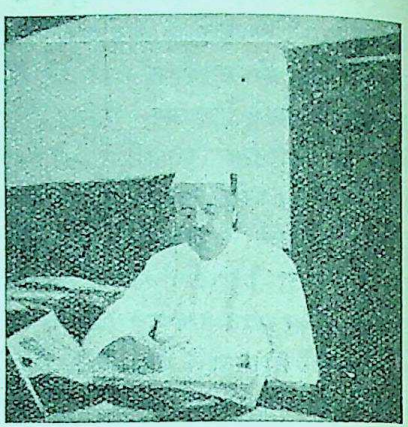

पं० गोविंदवल्लभ पंत

[त्रिपुरी में आप ही का गांधीजी के प्रति विश्वास का प्रस्ताव था।]

बातें देखते हुए यह विश्वास नहीं होता कि अहिंसा को लेकर वर्किंग कमेटी से उनका मतभेद हो गया है।

जो बात स्पष्ट है, वह यह कि गांधीजी इस युद्ध में शुरू से ही ब्रिटेन की सहायता करना चाहते थे। सहायता न कर सकने पर वह ब्रिटेन को किसी तरह भी संकोच में न डालना चाहते थे। वर्किंग कमेटी उनकी इस नीति से असहमत रही है। अंत में ऐसी परिस्थिति आ गई कि एकाएक गांधीजी को कांग्रेस के उत्तरदायित्व से अलग होना पड़ा। यह कांग्रेस का नया दल गांधीजी का ही बनाया हुआ है। वह कांग्रेस में देश के मिल-मालिकों और ज़मींदारों के स्वत्वों की रक्षा करता है। गांधीजी ने उसे सिखाया है कि इन स्वत्वों की रक्षा के लिये लोकमत को साथ लेने से बढ़कर दूसरा उपाय नहीं। इस दल ने इस नीति को ग्रहण किया, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदा यह चेष्टा की कि किसान-मजूरों के नेता उसके क़ाबू में रहें। इसके लिये पहले तो गांधीजी

श्रीराजगोपालाचारी

[आपने पंतजी के प्रस्ताव का समर्थन किया था।]

ही सबसे उपयुक्त साधन थे; देश को साथ लेने के लिये गांधीजी का नाम काफ़ी था। परंतु देश पर से गांधीजी का नया जादू कम हो रहा था। किसान-मजूरों का एक नया नेतृत्व ही धीरे-धीरे जड़ जमा रहा था। कांग्रेस में एक समाजवादी दल का संगठन हुआ। पहले हाई कमांड ने कोशिश की कि इसे कांग्रेस में स्थान ही न मिले, परंतु उसे निकालने में असफल हो उसका उन्होंने और भी बढ़िया उपयोग किया। उसे अपनी तरफ़ मिलाकर वे किसान-मजूरों के आंदोलन को दबा सके। किसानों के नेता स्वामी सहजानंद और श्रीराहुल

श्रीरफ़ीअहमद क़िदवई

[आपकी राय थी कि गांधीजी कांग्रेस में रहें, परंतु उसके संचालन में क्रियात्मक भाग न लें।]

सांकृत्यायन को जेल भेजकर भी किसान-सभा के सभापति श्रीनरेंद्रदेव को वे गांधीजी के महान्

साम्यवादी नेता श्रीनरेंद्रदेव

[आप किसान-सभा के सभापति होकर भी गांधीजी के महान् समर्थक हैं।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्थक के रूप में पेश कर सके। पद-ग्रहण के घोर विरोधी, समाजवादी श्रीसंपूर्णानंद को अपनी कूटनीति के बल पर वह शिक्षा-मंत्री बना सके। परंतु इन नेताओं के भी ऊपर उनके हाथ में अभी एक प्रधान अस्त्र और है—पं० जवाहरलाल नेहरू। वे समझते हैं कि इस अस्त्र से वह किसी भी गरम दल के आंदोलन को अपने लिये घातक न बनने देंगे।

साम्यवादी नेता श्रीसंपूर्णानंदजी
[यू० पी० के भूतपूर्व शिक्षा-मंत्री]

और, गांधीजी अपने जन-आंदोलन द्वारा कांग्रेस में धनी वर्गों के प्रतिनिधि एक दल को शक्तिशाली बनाकर अपना काम कर चुके। उस दल को गांधीजी की अब ज़रूरत नहीं; जनता को अपनी ओर करने के लिये उसके हाथ में और नए-नए 'नेता' आ गए हैं। गांधीजी सात वर्षों से इस दल पर अपना एकाधिपत्य स्थापित करना चाहते रहे हैं, परंतु वह उन्हें दूर-ही-दूर रखता रहा है, यद्यपि कहा उसने यही है कि बिना छत्र और मुकुट के हमारे सम्राट् तुम्हीं हो। गांधीजी की ऐसी दयनीय दशा हो गई है कि वह कांग्रेस से अलग होकर भी अलग नहीं हो पाते। वह करुण स्वरों में अपनी वेदना व्यक्त करते हैं, और उनके अनुयायी उस वेदना से ही, उस वेदना के मूल-कारण पारस्परिक विभेद से ही इनकार कर गांधीजी का गूढ़ उपहास करते हैं। परंतु इसका उत्तरदायित्व गांधीजी ही पर है। देश के निम्न वर्गों के त्याग पर उन्होंने जो संपत्तिशालियों का प्रासाद निर्मित किया था, उसका यह उचित ही परिणाम है कि वे ही संपत्तिशाली अपने समर्थक को इस प्रकार ठुकरा दें। गांधीजी की 'tragic impotence' से सहानुभूति करना असंभव है। जो उन्होंने देश की विशाल जनता के प्रति किया है, उसका शतांश ही उनके अनुयायियों ने अभी उनके प्रति किया है।

दुलारे-दोहावली पर
आचार्य रामचंद्रजी शुक्ल की नई सम्मति

हिंदी-साहित्य के सर्वश्रेष्ठ समालोचक और इतिहासकार पं० रामचंद्रजी शुक्ल अपने 'हिंदी-साहित्य का इतिहास'-नामक ग्रंथ के नए संस्करण में लिखते हैं—

"कविवर बिहारीलाल की परंपरा के वर्तमान प्रतिनिधि श्रीदुलारेलालजी भार्गव के दोहों की बारीकी साहित्य-क्षेत्र में अपना कमाल खड़ी बोली के इस ज़माने में भी दिखाती रहती है। बिहारी की प्रतिभा जिस ढाँचे की थी, उसी ढाँचे की श्रीदुलारेलालजी की भी है, इसमें संदेह नहीं। एक-एक दोहे में सफ़ाई के साथ रस से स्निग्ध या वैचित्र्य से चमत्कृत कर देनेवाली प्रचुर सामग्री भरने का गुण इनमें भी है। कुछ दोहों में देश-भक्ति, अछूतोद्धार, राष्ट्रीय आंदोलन इत्यादि की भावना का अनूठेपन के साथ समावेश करके इन्होंने पुराने ढाँचे में नया मसाला ढालने की अच्छी कला दिखाई है। आधुनिक काव्य-क्षेत्र में श्रीदुलारेलालजी ने व्रजभाषा-काव्य-चमत्कार-पद्धति का एक प्रकार से पुनरुद्धार किया है। इनकी दुलारे-दोहावली पर टीकमगढ़-राज्य की ओर से २,०००) का देव-पुरस्कार मिल चुका है।"

दुलारे-दोहावली का सातवाँ, सुंदर, सस्ता संस्करण तैयार है। अपनी प्रति मँगा लीजिए। मूल्य ॥), सजिल्द १) मिलने का पता—**गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल हिंदी या बेसिक हिंदी

[डॉ० सत्यप्रकाश डी० एस्-सी०]

(डॉक्टर सत्यप्रकाश सुधा-मंडल के श्रेष्ठ लेखक और सुंदर कवि हैं। वैज्ञानिक तो वह हैं ही, रसायन-शास्त्र के डॉक्टर, प्रयाग-विश्वविद्यालय में अध्यापक। कोई वैज्ञानिक भी हो, और कवि भी, ऐसा संयोग बहुत कम होता है। सुधा में आपकी जो रचनाएँ निकलती रही हैं, उनसे आपकी सर्वतोमुखी प्रतिभा का अच्छा परिचय मिलता है। वे हिंदी-संसार द्वारा आदर और रुचि के साथ पढ़ी गई हैं। आपके 'इँगलिस्तानी' लेख को लोगों ने बहुत पसंद किया था। सुधा-मंडल के प्रधान लेखकों में से एक, मंगलाप्रसाद-पारितोषिक-विजेता हमारे मान्य मित्र पं० गंगाप्रसादजी उपाध्याय के आप सुयोग्य पुत्र हैं। आपकी धर्मपत्नी भी हिंदी में एम्० ए० और अच्छी लेखिका हैं। ईश्वर करे, दंपति द्वारा हिंदी की यथेष्ट सेवा होती रहे।—सुधा-संपादक)

बेसिक हिंदी से मेरा अभिप्राय क्या है, यह बात समझने के लिये यह जानना आवश्यक है कि बेसिक इँगलिश क्या है। बेसिक इँगलिश वह इँगलिश है, जो कम-से-कम समय में सीखी जा सके, जो सब इँगलिश प्रांतों के लिये एक-सी हो, जिसमें कम-से-कम शब्द हों, और जिससे साधारणतः सबका काम चल सके। इस समय बेसिक इँगलिश में ८५० शब्दों का प्रयोग किया जाता है, और इतने शब्दों से ही २०,००० शब्दों का काम निकाला जा रहा है। इस इँगलिश का अभिप्राय लोगों को एक अंतरराष्ट्रीय भाषा प्रदान करना है। अँगरेज़ी टाइप बहुत छोटा बन सकता है, और बेसिक इँगलिश के समस्त शब्द रॉयल साइज़ अठपेजी के एक पृष्ठ पर छप सकते हैं। इसका व्याकरण भी सरल है, और थोड़े नियमों से ही शब्दों के रूपांतर किए जा सकते हैं।

डॉ० सत्यप्रकाश डी० एस्-सी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेसिक इँगलिश जाननेवाले को ५० ऐसे और शब्द सीखने पड़ते हैं, जो योरप की सभी भाषाओं में एक समान प्रयुक्त होते हैं, जैसे रेडियो, होटल, टेलीफ़ोन, क्लब इत्यादि। इँगलिश-भाषावालों को यह अभिमान है कि संसार में इस भाषा के बोलने या समझनेवालों की संख्या सबसे अधिक है—"It is the natural language, or the language of government or trade, of some 650 millions". यह ध्यान रखना चाहिए कि इस गणना में ६५ करोड़ की संख्या में ३५ करोड़ भारतवासियों की संख्या जोड़ ली गई है, क्योंकि दुर्भाग्य से इस देश की सरकारी भाषा इँगलिश है, और अंतरराष्ट्रीय व्यापार भी हमारे यहाँ के व्यक्ति इसी भाषा द्वारा करते हैं, यद्यपि अँगरेज़ी बोल सकने और समझ सकनेवाले हमारे यहाँ एक करोड़ से कम ही होंगे। इसी प्रकार कुछ अन्य परतंत्र जातियों की संख्या भी इसी में सम्मिलित कर ली गई है। ये सब बातें ध्यान में रखकर कहा जा सकता है कि अँगरेज़ी २० करोड़ से अधिक व्यक्तियों की 'Natural language' या प्राकृतिक भाषा नहीं है।

इँगलिश-भाषा-भाषी देश इस प्रकार हैं—

देश	जन-संख्या
यूनाइटेड किंगडम	४ करोड़, ६४ लाख
संयुक्त राज्य अमेरिका	१२ ,, २८ ,,
दक्षिण-आफ्रिका	८ ,,
कनाडा	१ ,, ५ ,,
आस्ट्रेलिया	६६ ,,
	१८ करोड़, ७१ लाख

इस प्रकार समस्त संसार में अँगरेज़ी २० करोड़ व्यक्तियों से अधिक की भाषा प्रतीत नहीं होती। हिंदी-भाषियों की जन-संख्या भी लगभग इतनी ही पड़ती है, जैसा निम्न-लिखित अंकों से स्पष्ट है। हमने मध्य-प्रांत और बंबई-प्रांत में, अपने हिसाब में, हिंदी-भाषियों की जन-संख्या कुल जन-संख्या की आधी रक्खी है—

संयुक्त प्रांत	४ करोड़, ८४ लाख
बिहार	३ ,, ४२ ,,
पंजाब	२ ,, ३५ ,,
उड़ीसा	८० ,,
मध्य-भारत	६६ ,,
राजपूताना	१ ,, १५ ,,
बंबई	९० ,,
मध्य-प्रांत	७० ,,
दिल्ली	६ ,,
कश्मीर	३६ ,,
हैदराबाद	१ ,, ४५ ,,
	१६ करोड़, ६९ लाख

इस संख्या में हमने प्रवासी प्रदेश, आसाम, बंगाल, बर्मा, मदरास, मैसूर, ट्रावंकोर आदि प्रांतों और रियासतों के हिंदी-भाषियों के अंक छोड़ दिए हैं। हमारा अनुमान है कि किसी भी प्रकार की हिंदी बोलने और समझनेवालों की संख्या २० करोड़ से अधिक ही है। अतः अँगरेज़ीवालों का यह अभिमान व्यर्थ है कि उनकी भाषा का व्यवहार करनेवाले लोगों की संख्या सबसे अधिक है। यों तो चीनी-भाषा का व्यवहार ४५ करोड़ व्यक्ति करते हैं, और उनकी संख्या कदाचित् सबसे अधिक है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि हम लोगों को भी अपनी भाषा को उतना ही बहुव्यापी मानने का अधिकार है, जितना अँगरेज़ों को इँगलिश को। बेसिक इँगलिश का यह उद्देश्य रहा है कि ऐसी बातें, जो सार्वजनिक उपयोगिता की हैं, और जिन्हें साहित्यिक और असाहित्यिक, सभी लोगों को सुनाना-समझाना है, भाषा की ऐसी शब्दावली में की जायँ, जो सुगम और सरल हो, जिसमें शब्दाडंबर और दुरूहता न हो। यह ठीक है कि बेसिक भाषा साहित्यिक भाषा की स्थानापन्न नहीं हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती, और न इस भाषा का उद्देश्य ही यह है।

रेडियो की समस्या

बेसिक हिंदी या बेसिक इँगलिश की उपयोगिता आजकल रेडियो की दृष्टि से और बढ़ गई है। इस समय रेडियो-संवाददाताओं में उर्दू-भाषियों एवं मुसलमानों का प्राधान्य हो गया है। यह उचित ही है कि जिस भाषा में ये संवाद प्रचारित किए जाते हैं, वह अधिकांश भारतीयों की समझ में नहीं आ सकती। वह शब्दावली आर्य-जनता के लिये दुरूह और अपरिचित है। ऐसी अवस्था में इसका विरोध किया जाना स्वाभाविक और उचित ही है। पर रेडियो-संचालकों की स्थिति भी दुविधा-जनक है। संस्कृत-शब्दों का मुसलमान विरोध करेंगे, और अरबी-फ़ारसी-शब्दों का हम लोग। दो भाषाओं का समानांतर चलाया जा सकना भी न तो उचित है, और न सुगम ही। इस दृष्टि से ७००-८०० शब्दों की यदि कोई बेसिक हिंदी या मूल हिंदी बना ली जाय, तो बहुत अच्छा हो। जितने संवाद रेडियो द्वारा प्रचारित किए जायँ, उनमें इसी शब्दावली का व्यवहार किया जाय। विशेष भाषणों और व्याख्यानों पर तो प्रतिबंध लगाना कठिन है, पर संवाद, समाचार और सरकारी बुलेटिन इस शब्दावली में ही घोषित किए जायँ।

मुसलमानों की अज्ञता का हम पर उत्तरदायित्व

मुसलमान लोग संस्कृत-शब्दों से जितना भड़कते हैं, उतना हम (आर्य) अरबी और फ़ारसी-शब्दों से नहीं घबराते। यह प्रवृत्ति हिंदी-भाषी प्रांतों में ही है। बंगाल के मुसलमान अपनी भाषा में संस्कृत के तद्भव और तत्सम शब्दों का उसी प्रकार प्रयोग करते हैं, जिस प्रकार वहाँ के आर्य। यही अवस्था महाराष्ट्र और सौराष्ट्र एवं आंध्र आदि प्रांतों की भी है। वहाँ धर्म-परिवर्तन का अर्थ भाषा-परिवर्तन नहीं समझा गया है। आजकल मुसलमानों की सांप्रदायिक प्रवृत्ति कुछ अड़चनें अवश्य डालने लगी है। कुरान की भाषा अरबी है, जो सेमेटिक भाषा है, पर इसे फ़ारस के मुसलमानों ने भाषा के रूप में नहीं अपनाया। उनकी फ़ारसी-भाषा आर्य-भाषा है, और धर्म-परिवर्तन पर भी उन्होंने भाषा परिवर्तित नहीं की। उर्दू-भाषा का मुसलमानी धर्म से कोई संबंध नहीं (मुसलमानी संस्कृति से तो है), फिर भी धर्म के आश्रय पर इसे व्यर्थ प्रोत्साहन दिया जा रहा है। अस्तु। अभिप्राय यह कि हमारे हिंदी-प्रांतों को छोड़कर और कहीं भी मुसलमानों ने संस्कृत-शब्दों का बहिष्कार नहीं किया। स्वयं फ़ारसी में संस्कृत-शब्दों का बाहुल्य है, क्योंकि यह आर्य-भाषा है।

इसका उत्तरदायित्व हमारे ऊपर है कि हमारे प्रांत के मुसलमान संस्कृत-शब्दों के प्रयोग से घबराते हैं। हमने पारस्परिक व्यवहार में उन्हें संस्कृत-शब्दों के सीखने का अवसर ही नहीं दिया। उदारता के नाम पर हमने मुसलमानों को अज्ञ रक्खा है। फल यह है कि हमारे प्रांतों में हिंदुओं के ज्ञान का शब्द-भांडार मुसलमानों के ज्ञान-भांडार की अपेक्षा कहीं अधिक है। हिंदू लोग हिंदी और उर्दू, दोनो बोल और समझ सकते हैं, और मुसलमान लोग केवल उर्दू जानते हैं। हमने अपनी उदारता से मुसलमानों को अनभिज्ञ रक्खा, और हमारी यह उदारता ही आज हमारे लिये कंटक हो रही है।

हमने उदारता कैसे प्रदर्शित की है, इसे कुछ उदाहरणों से स्पष्ट करने का प्रयत्न करूँगा। हमारे मित्र जब हमारे यहाँ आते हैं, तो हम उनके स्वागत में कहते हैं—"नमस्ते, आओ भाई, कहो, कुशल तो है?" हमारे मित्र कहते हैं—"नमस्ते, सब ईश्वर की कृपा है।" पर जब हमारे यहाँ कोई मुसलमान सज्जन पधारते हैं, हमारी उदारता हमसे कहलाती है—"जनाब, आदाबअर्ज़, आपका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिज़ाज कैसा है ?" और वह साहब फ़रमाते हैं—"जनाब, तसलीम। ख़ुदा की मेहरबानी है, आपकी इनायत है।" इस वार्तालाप का प्रभाव यह होता है कि हम लोग जनाब, आदाब, मिज़ाज, तसलीम, ख़ुदा की मेहरबानी, इनायत आदि सब शब्द सीख जाते हैं, और हमारे मुसलमान मित्र को नमस्ते, कुशल, ईश्वर, कृपा आदि शब्द सुनने और बोलने का अवसर ही नहीं प्राप्त होता। चाहे हम मुसलमान सज्जन के यहाँ जायँ, चाहे वह हमारे यहाँ आए, चाहे वार्तालाप हम आरंभ करें, चाहे वह, दोनो परिस्थितियों में हम विशुद्ध उर्दू बोलने लगते हैं। हमें उनकी ख़ातिर हर तरह मुनासिब है, चाहे हम अतिथि हों, चाहे वह। हमारी इस उदारता ने मुसलमानों को संस्कृत-शब्दों से अज्ञ रक्खा है।

हमारे उत्सवों और अधिवेशनों में जब मुसलमान सज्जन आते हैं, तो हमारे व्याख्याता "जनाब सदर और हाज़रीन जलसा" कहकर संबोधन करते हैं, और यदि हम उनके यहाँ जायँ, तब भी हम धारा-प्रवाह उर्दू बोलने में गर्व समझते हैं। हमने अपने मुसलमानों को हिंदी बोलने और समझने का कभी अवसर नहीं दिया। कितने मुसलमानों को व्याख्यान के आरंभ में "सभापति महोदय, सज्जनो एवं भद्र महिलाओ" कहते सुना होगा ! मुसलमानों की सांप्रदायिक प्रवृत्ति तो इसका कारण है ही, पर हमारी उदारता को भी दोष दिया जाना चाहिए। श्रेय इसमें है कि हमारे हिंदू भाई मुसलमानों से उसी प्रकार की भाषा में संबोधन और वार्तालाप करें, जैसा अन्य हिंदू भाई से करते हैं। हिंदू सभाओं में जिस प्रकार भाषण देते हैं, उसी प्रकार की शब्दावली में मुसलमानों की उपस्थिति में भी भाषण दें। ऐसा करने से दोनो का लाभ होगा। और, फिर हमें यह शिकायत सुनने को न मिलेगी कि मुसलमान लोग हिंदी-शब्दों को समझते ही नहीं। कोई भी बेसिक भाषा तब तक सफल नहीं हो सकती, जब तक हमारी द्विभाषिया नीति रहेगी। यह सर्वथा अनुचित है, और धोखेबाज़ी भी कि हिंदुओं से हम किसी एक शब्दावली में वार्तालाप करें, और मुसलमानों से सर्वथा भिन्न शब्दावली में।

हमारा साधारण शब्द-भांडार

अवस्था, आयु और परिस्थिति के अनुसार मनुष्य का शब्द-भांडार परिवर्तित होता रहता है। नगर और ग्राम के बच्चों में बड़ा अंतर हो जाता है। मेरा ऐसा अनुमान है कि मेरा ढाई वर्ष का बच्चा दो सौ से अधिक शब्दों से परिचित है, और लगभग १५० शब्द बोलने का प्रयास करता है। सवा चार वर्ष का दूसरा बच्चा ५५०-६०० शब्दों से भले प्रकार परिचित है, और इनमें से लगभग सभी शब्दों का बोलचाल में प्रयोग करता है। मेरे नौकर भी ७०० शब्दों का प्रयोग करते हैं। सभी भारतीय कारीगर, जैसे मकान बनानेवाले राज, लुहार, हलवाई, माली, दरज़ी आदि, अपने-अपने व्यवसाय के लगभग १०० शब्दों का प्रयोग और करते हैं। ८वीं कक्षा तक के साहित्यिक विद्यार्थियों के शब्द-भांडार में ५,५०० शब्द हैं। सरल और साधारण भाषा में गल्प और उपन्यास लिखनेवाले भी ५,५०० से अधिक शब्दों का बहुत कम प्रयोग करते हैं। मैथिलीशरणजी प्रभृति कवि ७,००० शब्दों का प्रयोग करते हैं, ऐसा मेरा अनुमान है। 'हरिऔध'जी ने संभवतः आजकल के कवियों में सबसे अधिक शब्दों का प्रयोग किया है, इनकी संख्या १०,००० से अधिक ठहरेगी। 'बोलचाल', 'ठेठ हिंदी का ठाठ', 'प्रिय-प्रवास', 'रस-कलश' और 'वैदेही-वनवास', ये सब भाषा की दृष्टि से अनमोल ग्रंथ हैं, और कवि के भाषा-अधिकार के विशेष परिचायक। श्रीरामचंद्रजी शुक्ल के समान संस्कृत-गर्भित भाषा लिखनेवाले समा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोचकों का भांडार ६,००० के लगभग होगा। दार्शनिक, वैज्ञानिक और कला-संबंधी विषयों पर लिखनेवाले लेखकों के शब्द-भांडार की कोई सीमा नहीं। जिस विषय पर वे ग्रंथ लिखेंगे, उसके स्वतः २५०-५०० पारिभाषिक शब्दों का व्यवहार करेंगे ही। मैंने स्वयं २०,००० शब्दों का व्यवहार अपने लेखों और पुस्तकों में किया है। वैज्ञानिक विषयों पर लिखनेवाले सभी लेखकों की यही अवस्था है।

मैंने जो अंक यहाँ दिए हैं, वे आनुमानिक तो अवश्य हैं, पर कोरे काल्पनिक नहीं। साहित्य-समीक्षकों और विश्वविद्यालय के अन्वेषकों से मेरा अनुरोध है कि वे ऐसी तालिका तैयार करें, जिससे पता चल जाय कि अमुक कवि या साहित्यिक ने कितने शब्दों का प्रयोग किया। अभी हाल में बाबू रामचंद्र वर्मा ने एक 'आनंद-शब्दावली' संकलित की है, जिसमें स्कूल-पुस्तकों के पाठों की आयोजना रक्खी गई है। वह इस प्रकार है—

पहली सूची	...	कक्षा १ और २ के लिये	१,४०० शब्द
दूसरी सूची	...	कक्षा ३ के लिये	१,२०० शब्द और (कुल २,६०० शब्द)
तीसरी सूची	...	कक्षा ४ के लिये	८०० शब्द और (कुल ३ ४००)
चौथी सूची	...	कक्षा ५ के लिये	६०० शब्द और (कुल ४,३००)
पाँचवीं सूची	...	कक्षा ६ के लिये	४०० शब्द और (कुल ४,७००)
छठी सूची	...	कक्षा ७ और ८ के लिये	८०० शब्द और (कुल ५,५००)

यह सूची साधारणतः बहुत अच्छी बनी है, और स्कूलों के लिये आदर्श हो सकती है। अभिप्राय यह कि ८वीं कक्षा के विद्यार्थी का साहित्यिक शब्द-भांडार ५,५०० शब्दों का हो जाता है। इस कक्षा के उपरांत शब्दों की संख्या में बहुत कम वृद्धि होती है। अधिकांश साहित्य ६,००० शब्दों में भले प्रकार व्यक्त किया जा सकता है।

इस 'आनंद-शब्दावली' की पहली सूची में उर्दू-शब्दों का सापेक्ष समावेश अधिक है, पर जैसे-जैसे हमारी भाषा अधिक साहित्यिक होती जाती है, इन शब्दों की संख्या कम होती जाती है। मेरा भी यह अनुमान है कि ६,००० के लगभग शब्दों में ४०० से अधिक उर्दू के शब्द अपनाने की कभी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। आजकल की प्रवृत्ति के अनुसार ६,००० शब्दों की साहित्यिक भाषा में संभवतः १००-२०० शब्द ही उर्दू के लेने समुचित होंगे। साथ ही २०० के लगभग शब्द इँगलिस्तानी के लेने पड़ेंगे।

जब तक विद्यार्थी ने बुद्धि, विचित्र, वस्तु, स्वभाव आदि शब्द नहीं सीखे हैं, तब तक तो वह अक़्ल, अजब, चीज़, आदत आदि शब्दों का प्रयोग करेगा, पर आगे की साहित्यिक कक्षाओं में ये शब्द बहुत ही कम प्रयोग में आएँगे। कविता में इन शब्दों का प्रयोग बहुत ही कम होगा। हाँ, यदि बाज़ार में जाकर मोल लेना है, तो हमारे साहित्यिक भी यही कहेंगे—"इस चीज़ का दाम क्या है?", न कि "इस वस्तु का मूल्य क्या है?"

बेसिक हिंदी की कठिनाई

जब कि हमारे यहाँ का ४ वर्ष का बालक ५०० से अधिक शब्दों का प्रयोग करता है, और पहली-दूसरी कक्षा के विद्यार्थी १,४०० शब्दों का प्रयोग करते हैं, तो यह किस प्रकार संभव है कि ८००-९०० शब्दों की हिंदी में कोई बेसिक भाषा बनाई जा सके! प्रश्न यह हो सकता है कि बेसिक इँगलिश में इतने कम शब्दों से कैसे काम चलाया जाता है? यह बात समझने के लिये निम्न-लिखित बातें जानने की आवश्यकता है—

(१) बेसिक इँगलिश में पर्याय शब्दों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकाल दिया गया है, जैसे change-शब्द तो है, पर transform आदि पर्याय नहीं।

(२) एक ही क्रिया के साथ अनेक प्रीपोज़ीशन लगाकर भिन्न-भिन्न भावों को प्रकट किया गया है।

(३) संकीर्ण वाक्यों के स्थान में सरल वाक्यों से काम लिया गया है। जैसे "I shall esteem it a great favour if you will send" के स्थान में—"will you kindly send."

ऐसे वाक्य—जैसे "May I trespass on your indulgence in the following matter"—उड़ा दिए गए हैं, और बातें सीधे-सादे शब्दों में कही जाती हैं।

बेसिक हिंदी की सबसे बड़ी कठिनाई प्रीपोज़ीशनों का अभाव है। Put up, put out, put with, put in आदि के समान भिन्न भाववाले शब्द एक ही क्रिया से नहीं बनाए जा सकते। संस्कृत-शब्दों की क्षमता इस संबंध में बहुत अधिक थी, और अनेक उपसर्गों के प्रयोग से नए शब्द सरलता से बनाए जा सकते थे। जैसे आकाश, प्रकाश, विकाश अथवा आहार, विहार, संहार। इनमें मूल-धातु एक ही हैं, पर ये शब्द अब अलग-अलग स्वतः शब्द बन गए हैं, और निश्चित अर्थ में रूढ़ि हो गए हैं।

हमारे यहाँ के ठेठ शब्दों में भी थोड़े-थोड़े परिवर्तनों से विशेषार्थ प्रकट करने की अच्छी क्षमता रही है, जैसे कड़ा से कड़ाही, कड़ा-प्रसाद, कढ़ी, कढ़ायल (करायल)।

साहित्य से अपरिचित जनता शब्दों को किस सुगमता से आवश्यकतानुसार गढ़ती है, यह निम्न-लिखित उदाहरण से स्पष्ट हो जायगा।

मज़दूर या राज लोग मकान बनाते समय निम्न-लिखित शब्दों का किस उत्तमता से प्रयोग करते हैं—

ईंटा ढोनेवाले के लिये	ईंटहा
गारा ,, ,,	गरहा
चूना ,, ,,	चुनहा
सीमेंट ,, ,,	सिमिटहा

सीमेंट-ऐसे विदेशी शब्द में भी इन लोगों ने अपना देशी व्याकरण लगाकर सुंदर-सा शब्द बना लिया है। हमारी साहित्यिक भाषा में ऐसे सरल रूपांतर करने की क्षमता मिटती जा रही है।

साहित्यिक भाषा में क्रियाओं का अभाव

संस्कृत-भाषा में क्रियाओं का बाहुल्य है। सुंदर-सुंदर संज्ञाएँ भी क्रियाओं के रूप में परिवर्तित की जा सकती हैं। अँगरेज़ी में भी एंग्लीसाइज़, इंडियनाइज़, पास्च्यूराइज़, इकोनोमाइज़ आदि क्रिया-शब्द संज्ञाओं से बनाए जा सकते हैं। साधारण बोल-चाल की भाषा में भी संज्ञाओं से क्रियाएँ बन जाती हैं, पर साहित्यिक हिंदी में यह क्षमता बहुत कम रह गई है। यह बात निम्न-लिखित उदाहरण से स्पष्ट है—

असाहित्यिक प्रयोग	साहित्यिक प्रयोग
कपड़े को तहा दो*।	कपड़े की तह कर दो।
आम मुलालो (मोलालो)।	आम का मूल्य निश्चित कर लो।

आजकल हमारी भाषा में शुद्ध क्रियाएँ बहुत कम रह गई हैं। रखना, जाना, करना, होना, लाना, देना क्रियाएँ ही शेष हैं। प्रेमचंदजी 'कर्मभूमि' में लिखते हैं—"इसके साथ तुम्हें ज़िंदगीभर निबाह करना होगा।" यह साहित्यिक प्रयोग है। वैसे वह लिख सकते थे 'निबाहना होगा'। और ऊँची श्रेणी के साहित्यिक जो थोड़ी-सी

* हमारी राय में साहित्यिक हिंदी में भी 'कपड़ा तहा दो' लिखना चाहिए। समर्थ लेखकों द्वारा लिखे जाने पर यह प्रयोग भी साहित्यिक समझा जाने लगेगा। – सुधा-संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रियाएँ शेष रह गई हैं, उनका भी लोप करना चाहते हैं। जैसे—

वह पढ़ता है। — वह पाठ करता है।
उसने सम्मति दी। — उसने सम्मति प्रदान की।
वह आया। — उसका आगमन हुआ।
वह गया। — उसने प्रस्थान किया।
वह कहता है। — उसका कथन है, या वह कथन करता है।
वह सोता है। — वह शयन करता है।

अभिप्राय यह कि संस्कृत की स्मृ, स्पृश् आदि धातुओं ने अपना क्रिया-रूप तो हिंदी में लुप्त कर दिया, अब तो उनसे बनी संज्ञाओं का ही प्रयोग शेष रह गया है। थोड़ी-बहुत जो क्रियाएँ रही भी हैं, उनका भी उच्च साहित्य में बहिष्कार किया जा रहा है।

आजकल की भाषा की अपेक्षा अवधी और ब्रजभाषा में क्रियाओं का रूप अधिक स्थिर था—

धरनी की आपदा नसाई। (सूर)

'नसाई' के स्थान पर आज का कवि 'नष्ट हुई' कहेगा।

घूँघटपटहि बिदारत। (सूर)

आजकल का प्रयोग 'विदीर्ण करते हैं' होगा।

बरसहिं जलद भूमि नियराए। (तुलसी)

'नियराए' के स्थान में आजकल का प्रयोग 'समीप आकर' होगा।

यह कहना कठिन है कि इस प्रकार क्रियाओं की क्षमता का ह्रास होना भाषा के अधःपतन का लक्षण है, या विकास का। जैसी परिस्थिति हमारी भाषा की है, वैसी ही लगभग सभी आर्य भारतीय भाषाओं की भी है। मराठी, गुजराती और बँगला, तीनों में क्रियाएँ बहुत कम रह गई हैं। अँगरेज़ी, फ़्रेंच और जर्मन-भाषाओं में क्रियाओं का उतना ही बाहुल्य है, जितना संस्कृत में।

बेसिक इँगलिश में क्रियाओं की संख्या बहुत कम करने का प्रयत्न हो रहा है। I can के स्थान में I am able रखने का प्रयास हो रहा है। ८५० बेसिक शब्दों में से—

४०० सामान्य संज्ञाएँ हैं।

२०० ऐसी संज्ञाएँ हैं, जिन्हें चित्रों द्वारा व्यक्त किया जा सके।

१५० विशेषणादि शब्द हैं।

१८ क्रियाएँ हैं, जो २० के लगभग प्रीपोज़ीशनों के साथ संज्ञाओं से संबंधित होकर सभी अभिप्रायों को व्यक्त करती हैं। शेष कुछ सर्वनाम, क्रिया-विशेषण आदि शब्द हैं।

१८ क्रियाएँ, जिनसे सब काम निकालने का प्रयत्न किया जाता है, निम्न-लिखित हैं—

Come	Let	Be	Send
Get	Make	Do	May
Give	Put	Have	Will
Go	Seem	Say	
Keep	Take	See	

इसका अभिप्राय यह है कि जैसे हिंदी में बहुत कम क्रियाएँ रह गई हैं, उसी प्रकार बेसिक इँगलिश में भी हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि व्याकरण में क्रियाओं का झमेला ही सबसे अधिक कष्टदायक है, अतः भाषाओं की प्रवृत्ति इस झंझट से मुक्त होने की ओर है। दिया, लिया, हुआ, किया, गया आदि कुछ क्रियाओं द्वारा ही सब भाव प्रकट करने का प्रयास किया जा रहा है।

बेसिक हिंदी की रूप-रेखा

बेसिक इँगलिश के आधार पर बेसिक हिंदी की रूप-रेखा तैयार की जा सकती है। इसमें निम्न-लिखित बातें मुख्य होंगी—

(१) अंतरराष्ट्रीय ५० शब्द बहुत कुछ ज्यों-के-त्यों लिए जा सकते हैं—

एलकोहल, एल्यूमीनियम, ऑटोमोबाइल, बैंक, बार, बीफ़, बीयर, कैलेंडर, केमिस्ट, चेक, चौकोलेट, कोरस, सिगरेट, क्लब, कॉफ़ी, कोलोनी, डान्स,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंजीनियर, गैस, होटल, इंफ़्ल्यूएंज़ा, लावा, मैडम, निकेल, ऑपेरा, ऑर्चेस्ट्रा, पैराफ़िन, पार्क, पासपोर्ट, पेटंट, फ़ोनोग्राफ़, पिआनो, पुलिस, पोस्ट, प्रोग्राम, प्रोपेगेंडा, रेडियो, रेस्टोराँ, स्पोर्ट, टैक्सी, टी, टेलीग्राम, टेलीफ़ोन, थिएटर, टोबेको, युनिवर्सिटी, ह्विस्की, ज़िंक।

इन शब्दों में से कुछ छोड़े जा सकते हैं, कुछ का उच्चारण-भेद किया जा सकता है, और कुछ के हिंदी-पर्याय प्रयुक्त हो सकते हैं। ऐसे शब्द रेखांकित कर दिए गए हैं। इस सूची में मोटर, रेल, स्टेशन आदि कुछ शब्द बढ़ाए जा सकते हैं।

(२) ऐसे ही फ़ारसी-अरबी-शब्दों की एक सूची बनाई जाय, जो भारत की सभी भाषाओं में प्रचलित हैं—विशेषतया बँगला, मराठी और गुजराती में। उनमें से जो नितांत आवश्यक हों, उन्हें ले लिया जाय। ऐसे फ़ारसी-अरबी-शब्दों का बहिष्कार किया जाय, जो सभी प्रांतों में अब तक समान रूप से व्यवहार में न आए हों।

तारीफ़—यह शब्द मराठी, गुजराती और हिंदी में प्रयुक्त होता है, पर बंगालियों के यहाँ नहीं। अतः इसे छोड़ देना चाहिए।

तालीम—इसका अर्थ शिक्षा देना है। हिंदी और मराठी में इसका प्रयोग है। पर मराठी में 'तालीमबाज़' खेलाड़ी को कहते हैं, और 'तालीमबाज़ी' का अर्थ जमनास्टिक है। अतः यह शब्द धोखे का है, इसका परित्याग हो जाना चाहिए।

'तमाशा' शब्द सब भाषाओं में प्रयुक्त होता है, अतः इसे ग्रहण कर लेना चाहिए।

'तसवीर' शब्द बँगला में प्रयुक्त नहीं होता। वहाँ छवि और चित्र कहते हैं। हिंदी और मराठी में इसका प्रयोग है, अतः इसे छोड़ देना ही उचित है।

(३) एक ही भाव के कई पर्यायों में से कोई एक, सबकी सुविधा देखते हुए, ले लेना चाहिए। जल और पानी-शब्दों में से जल-शब्द का प्रयोग अधिक उचित है, क्योंकि हमारे प्रांतों में तो दोनों शब्द प्रयुक्त होते हैं, पर महाराष्ट्र और बंगाल में 'पानी'-शब्द का व्यवहार नहीं होता।

(४) १,००० शब्दों की एक सरल सूची बनानी चाहिए, जिससे समस्त भारतीयों का परिचय होना अनिवार्य समझा जाय। रेडियो आदि में इसी सूची के शब्दों का व्यवहार करना चाहिए। यह सूची समस्त भारत के हित की दृष्टि से हो, न कि उर्दूवालों के साथ समझौता करने की दृष्टि से।

बेसिक हिंदी-संबंधी कुछ अपरिपक्व और असंबद्ध विचार ही यहाँ रक्खे गए हैं। आशा है, पाठक इस विषय में रुचि प्रकट करेंगे।

हिंदी-परीक्षाओं की पुस्तकें हमसे मँगाएँ—विशेषकर हिंदी-विशेष-योग्यता तथा हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की समस्त परीक्षाओं की। सूची-पत्र मुफ़्त मँगाएँ।

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ा पापी कौन ?

(सामाजिक नाटक)

[श्रीयुत सेठ गोविंददास]

(सेठ गोविंददासजी हिंदी के कृतविद्य कवि और नाटककार हैं, एवं मध्य-प्रांत के प्रधानतम नेता। आपने अपनी जेल-यात्राओं में अनेक नाटकों का निर्माण किया है। यह नाटक उनकी तीसरी जेल-यात्रा के समय, सन् १९३४ में, सिवनी-जेल में, लिखा गया था। इसके तीन गानों में से पहला उर्दू के प्रसिद्ध कवि 'चकबस्त' और दूसरा तथा तीसरा उर्दू के प्रसिद्ध कवि 'नूह' की कविताओं से उद्धृत किए गए हैं। इस नाटक में चार अंक हैं। पहला अंक यहाँ दिया जाता है। आगे भी एक-एक अंक दिया जायगा।—सुधा-संपादक)

पात्र

पुरुष

त्रिलोकीनाथ—एक पुराना ज़मींदार, व्यापारी और रईस

रमाकांत—एक नया ज़मींदार, व्यापारी और रईस

बनवारीलाल—एक दलाल

रंगलाल—रमाकांत का मुख्य कारिंदा

स्त्री

मलका—त्रिलोकीनाथ की रक्खी हुई एक वेश्या

विजया—रंगलाल की विधवा बहन

स्थान

एक नगर

पहला अंक

स्थान—त्रिलोकीनाथ के मकान का बैठकख़ाना

समय—संध्या

[बैठकख़ाना पुराने रईसों के बैठकख़ाने के सदृश सुंदरता से सजा हुआ है। दीवारों पर बीच में हरा तैल-रंग है, और किनारों पर काच के रंग-बिरंगे टुकड़ों के बेल-बूटे बने हुए हैं। पीछे की दीवार में तीन खिड़कियाँ तथा दाहनी और बाईं ओर की दीवारों में दो-दो दरवाज़े हैं। दरवाज़े और खिड़कियों की चौखटों पर भी काच के रंग-बिरंगे टुकड़ों का काम है। दरवाज़ों और खिड़कियों पर महराबदार रेशमी परदे हैं। दरवाज़े के किवाड़ों में काच लगे हुए हैं। दीवारों पर यत्र-तत्र बड़े-बड़े चित्र तथा शीशे लगे हैं, और छत से हरे रंग की हंडियाँ एवं झाड़ झूल रहे हैं। इन्हीं के बीच में दो बिजली के पंखे हैं। दीवार में बिजली की बत्तियों के ब्रेकेट लगे हैं, और उन्हीं के प्रकाश से कमरा प्रकाशित है। पीछे की दीवार के बीच में एक घड़ी लगी है, जिसमें छ बज रहे हैं। फ़र्श पर क़ालीन बिछा है। उस पर सफ़ेद ख़ोली से ढके मसनद लगे हैं। बिजली की बत्तियाँ और पंखे छोड़कर शेष सारी सजावट पुराने ढंग की है। गद्दी पर एक मसनद से टिके त्रिलोकीनाथ बैठे हैं। यह गेहुँए रंग और ठिगने क़द के मोटे मनुष्य हैं। अवस्था लगभग ५० वर्ष की है। सिर पर पुराने ढंग के पट्टे हैं, और बड़ी-बड़ी मूछें तथा गलमुच्छे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर, मूछों और गलमुच्छों के आधे से अधिक बाल सफ़ेद हो गए हैं। शरीर पर काश्मीरी मलीदे का कामदार ऊनी कोट और बंगाली ढंग की चुनी हुई पतली धोती पहने हैं। सिर खुला हुआ है। उनके निकट ही चाँदी के थाल में चाँदी का हु.क्का रक्खा है। उसकी सुनहरी सटक से वह हु.क्का पी रहे हैं। त्रिलोकीनाथ के साथ गद्दी पर ही बनवारीलाल बैठा है। वह साँवले रंग का, साधारण क़द और शरीर का व्यक्ति है। अवस्था लगभग ४५ वर्ष की है। बाल आधुनिक ढंग से कटे और छोटी-छोटी, काली मूछें हैं। एक लंबी, सफ़ेद, रेशमी क़मीज़ और बंगाली ढंग की चुनी हुई धोती पहने है। सिर पर दिल्लीसाई गोल पगड़ी है, और क़मीज़ पर बढ़िया दुशाले की जोड़ी ओढ़े है।]

श्रीयुत सेठ गोविंददास

त्रिलोकीनाथ—(हु.क्का गुड़गुड़ाकर) हाँ, तो आपकी सलाह है कि मैं इस दफ़ा चेंबर की प्रेसिडेंटी के लिये न खड़ा होऊँ ?

बनवारीलाल—मेरी तो यही सम्मति है बाबू साहब !

त्रिलोकीनाथ—और इसका सबब बनवारीलालजी ?

बनवारीलाल—एक तो आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं, हृद्रोग में पूर्ण विश्राम ही सबसे अच्छी ओषधि है ; दूसरे, आजकल हर-एक कार्य का ढंग बिगड़ता जा रहा है। आपका वंश हमारे यहाँ का सबसे प्राचीन रईसी वंश है। मैं नहीं चाहता कि आप अब इन सब झगड़ों में रहें।

त्रिलोकीनाथ—(ज़ोर से हु.क्का गुड़गुड़ाकर धुआँ छोड़ते और मुस्किराते हुए) साफ़-साफ़ क्यों नहीं कहते बनवारीलालजी कि आप लोग अब बाबू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रमाकांत को चेंबर का प्रेसिडेंट बनाना चाहते हैं।

बनवारीलाल—यह बात नहीं है बाबू साहब, कम-से-कम मेरे विषय में तो आपको यह विचारना ही नहीं चाहिए कि मैं इस उद्देश्य से आपको यह सम्मति दे रहा हूँ। मेरा तो बाबू रमाकांत की कोठी की अपेक्षा आपकी कोठी से कहीं प्राचीन संबंध है।

त्रिलोकीनाथ—लेकिन अब तो आपका भी बाबू रमाकांत की कोठी ही से ज़्यादा ताल्लुक़ होता जा रहा है।

बनवारीलाल—इसके लिये क्या किया जा सकता है बाबू साहब, हम लोग तो दलाल हैं, जहाँ अधिक काम मिलता है, वहीं जाना पड़ता है। इधर आपकी कोठी में कोई काम ही नहीं होता, और उनके यहाँ सभी प्रकार के व्यापार होने लगे हैं। हमारा नगर इस देश के बड़े-से-बड़े नगरों में है, और यहाँ की मंडी भी इस देश की किसी मंडी से कम नहीं, परंतु यहाँ का भी अधिक नहीं, तो कम-से-कम एक चतुर्थांश व्यापार अब उन्हीं की कोठी में चला गया है।

त्रिलोकीनाथ—(लंबी साँस लेकर) हाँ-हाँ, यह तो है ही। आपको तो जहाँ पैसा मिलेगा, वहीं आप जायँगे। (कुछ ठहरकर हुक़्क़ा गुड़गुड़ाते हुए) क्यों बनवारीलालजी, अगर मैं चेंबर की प्रेसिडेंटी के लिये न खड़ा हुआ, तब तो बाबू रमाकांत ही आसानी से चुने जायँगे।

बनवारीलाल—(कुछ ठहरकर सोचते हुए) हाँ, और तो कोई नहीं दिखाई देता, मैं समझता हूँ, वही हो जायँगे।

[कुछ देर तक निस्तब्धता रहती है। त्रिलोकीनाथ हुक़्क़ा गुड़गुड़ाते रहते हैं।]

त्रिलोकीनाथ—देखिए बनवारीलालजी, आप लोगों की सलाह के सबब से ही मैं एसेंबली के लिये बाबू रमाकांत के ख़िलाफ़ खड़ा नहीं हुआ, और वह एसेंबली के मेंबर हो गए। आप जानते हैं, अगर मैं खड़ा होता, तो वह कभी न चुने जाते।

बनवारीलाल—हाँ, उन्हें कठिनाई अवश्य पड़ती।

त्रिलोकीनाथ—(कुछ उत्तेजित होकर) कठिनाई पड़ती! अजी जनाब, मेरे मुक़ाबिले में उनका चुना जाना बिलकुल ग़ैरमुमकिन था।

बनवारीलाल—आप एक बात नहीं देखते।

त्रिलोकीनाथ—वह क्या ?

बनवारीलाल—अब बाबू रमाकांत के पास रुपया बहुत बढ़ गया है, आप इस समय कठिनाई में हैं। आप ख़र्च नहीं कर सकते थे, और उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा के लिये रुपया पानी के समान बहाया।

त्रिलोकीनाथ—परंतु केवल रुपए से चुनाव नहीं जीता जा सकता था। मैं मामूली आदमियों की तरफ़ से नहीं, ज़मींदारों की तरफ़ से खड़ा हो रहा था। ज़मींदारों ने मेरे मुक़ाबिले में उन्हें कभी वोट न दिए होते।

बनवारीलाल—परंतु बाबू साहब, अनेक ज़मींदार भी बाबू रमाकांत के क़र्ज़दार हैं।

त्रिलोकीनाथ—(हुक़्क़ा गुड़गुड़ाते हुए चिढ़कर) ख़ैर, जाने दीजिए। चुनाव हुआ ही नहीं, और होता, तो उसका क्या नतीजा निकलता, यह फ़िज़ूल की बहस है।

बनवारीलाल—(संतोष के साथ) हाँ-हाँ, निरर्थक वाद-विवाद है।

[कुछ देर तक पुनः निस्तब्धता रहती है। त्रिलोकीनाथ हुक़्क़ा गुड़गुड़ाते रहते हैं।]

त्रिलोकीनाथ—हाँ, तो मैं यह कह रहा था कि आप लोगों की सलाह के सबब ही मैं एसेंबली के लिये खड़ा नहीं हुआ।

बनवारीलाल—और, यह सम्मति कम-से-कम मैंने आपके ही लाभ के लिये दी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिलोकीनाथ—कैसे ?

बनवारीलाल—आपके हृद्रोग के कारण आपका बार-बार शिमला जाना अत्यंत भयावह था। फिर, मैं नहीं चाहता था कि आप अपने इतने प्राचीन वंश की प्रतिष्ठा इस प्रकार के झगड़ों में खो बैठें।

त्रिलोकीनाथ—(क्रोध से) आप मेरे सामने हर बात में मेरी दिल की बीमारी और मेरे ख़ानदान की इज़्ज़त के हौए इस तरह खड़े करने की कोशिश न कीजिए। मेरी दिल की बीमारी और मेरे ख़ानदान की इज़्ज़त का मुझे आपकी बनिस्बत ज़्यादा ख़याल है।

बनवारीलाल—(कुछ सहमकर) हाँ, इसे कौन अस्वीकार कर सकता है। परंतु आपके सच्चे शुभ-चिंतकों को इन बातों की चिंता नहीं, यह आप नहीं कह सकते।

[कुछ देर तक निस्तब्धता रहती है। त्रिलोकीनाथ हुक़्क़ा गुड़गुड़ाते रहते हैं।]

त्रिलोकीनाथ—मैं आपसे यह कहना चाहता था कि आप लोगों की सम्मति के कारण ही मैं एसेंबली के लिये खड़ा नहीं हुआ। पर एसेंबली एक दूर की चीज़ है, और उसके मेंबर तो मामूली-मामूली आदमी भी हो जाते हैं, लेकिन चेंबर की बिलकुल दूसरी बात है। वह आँखों के सामने है। रोज़गारी जमात में चेंबर की प्रेसिडेंटी सबसे ज़्यादा इज़्ज़त की जगह समझी जाती है। जब से चेंबर क़ायम हुआ, तब से मैं ही उसका प्रेसिडेंट हूँ, और मेरे रहते दूसरा हो, यह मैं नहीं देख सकता। आपको जब मेरे ख़ानदान और इज़्ज़त का इतना ख़याल है, तब आपसे मुझे चुनाव में पूरी मदद मिलनी चाहिए।

बनवारीलाल—(कुछ सोचते हुए) यदि आप खड़े ही होंगे, तो मैं अपना मत आपको दूँगा, यह निश्चित है।

त्रिलोकीनाथ—लेकिन केवल आपके मत से क्या होगा ? आपको तो आगे होकर मेरी मदद करनी होगी। आप यहाँ के सबसे बड़े दलाल हैं, आपका सभी दलालों पर असर है, आप चाहें, तो ज़्यादातर दलालों के वोट मुझे दिला सकते हैं।

बनवारीलाल—(कुछ सोचकर) यह बड़ी कठिन बात है बाबू साहब !

त्रिलोकीनाथ—यह क्यों ?

बनवारीलाल—आप जानते हैं, बाबू रमाकांत की कोठी का भी सब काम प्रायः मेरे यहाँ ही आता है। जब आपके विरुद्ध वह खड़े हो रहे हैं, तो मैं आगे होकर आपकी सहायता कैसे कर सकता हूँ ?

त्रिलोकीनाथ—(कुछ सोचते हुए ठहरकर) मैं आपके इस असमंजस को मानता हूँ। ऐसी हालत में जिस तरह आपने मुझे एसेंबली के लिये उनके ख़िलाफ़ खड़े न होने को मजबूर किया, उसी तरह आप उन्हें चेंबर के लिये मेरे ख़िलाफ़ खड़े न होने के लिये मजबूर कर सकते हैं।

बनवारीलाल—(कुछ सोचते हुए) परंतु यह तो संभव नहीं जान पड़ता बाबू साहब !

त्रिलोकीनाथ—(क्रोध से) यह क्यों ? मैं ही हर बात में मजबूर किया जा सकता हूँ, वह नहीं।

[कुछ देर तक फिर निस्तब्धता रहती है। त्रिलोकीनाथ हुक़्क़ा गुड़गुड़ाते रहते हैं।]

बनवारीलाल—इसके लिये मैं प्रयत्न कर चुका हूँ बाबू साहब, पर कोई फल नहीं निकला। चुनाव का अभी यथेष्ट समय होने पर भी इसी चुनाव के संबंध में वह दिल्ली की एसेंबली की बैठक छोड़कर आज यहाँ आए हैं।

त्रिलोकीनाथ—(घृणा से मुस्किराकर) तभी आप मेरे दिल की बीमारी और मेरे ख़ानदान की इज़्ज़त वग़ैरह की बातें मेरे सामने रख-रखकर मुझे न खड़े होने के लिये मजबूर कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनवारीलाल —(जल्दी से) नहीं-नहीं, यह बात नहीं है। वे दोनो कारण तो हैं ही, परंतु...

त्रिलोकीनाथ—(बीच ही में) ठहरिए, अगर वह आपका कहना नहीं मानते, तब तो आप बिना किसी तरह के पशोपेश के उनसे यह कह सकते हैं कि त्रिलोकीनाथ हम लोगों के कहने से एसेंबली के लिये आपके ख़िलाफ़ खड़े नहीं हुए, अब अगर आप हम लोगों के मना करने पर भी चेंबर के लिये उनके ख़िलाफ़ खड़े होंगे, तो हम उनकी मदद करेंगे, आपकी नहीं।

[बनवारीलाल चुप होकर सिर झुका लेता है। कुछ देर तक निस्तब्धता रहती है। त्रिलोकीनाथ हुक़्क़ा गुड़गुड़ाते रहते हैं।]

त्रिलोकीनाथ—कहिए, अब आपको क्या कहना है ?

बनवारीलाल—(धीरे-धीरे सिर उठाते हुए कुछ सोचकर) य.....य.....यह थोड़ा..... क.....क.....कठिन प्रश्न है बाबू साहब !

त्रिलोकीनाथ—(अत्यंत क्रोध से) मैं तो जानता था जनाब कि जब आपके मुँह से मेरे दिल की बीमारी, मेरे ख़ानदान की इज़्ज़त, मेरे और आपके पुराने ताल्लुक़ात वग़ैरह की मीठी-मीठी बातें निकल रही थीं, तब आपके पेट में दरअसल क्या भरा था। (कुछ ठहरकर हुक़्क़ा गुड़गुड़ाते हुए) बनवारीलालजी, आपको चाहे इस रमाकांत ने ख़रीद लिया हो, पर मेरे लिये तो अब भी वह पैर की जूती से ज़्यादा नहीं। यह न समझिए कि अभी उसने मेरा मिल और एक गाँव ख़रीदा है, इसलिये उसने मुझे भी ख़रीद लिया, और वह मुझे दबा सकता है। अगर उसने मिल और गाँव ख़रीदे हैं, तो जितना रुपया दिया है, उससे सवाए दाम की जायदाद ली है। दुनिया में रुपया ही सब कुछ नहीं होता बनवारीलालजी, वह तो ख़ानगियों के पास भी हो जाता है। ख़ानदान रुपए से कहीं बड़ी चीज़ है। मेरी सात पुश्तें इस शहर में हो गईं, और वह अभी दस-बारह साल से यहाँ आकर बड़ा है। (फिर कुछ ठहरकर, हुक़्क़ा गुड़गुड़ाकर) चाहे मेरे पास रुपया न रहा हो, चाहे मैं क़र्ज़दार हो गया होऊँ, पर मैं मैं ही रहूँगा, और वह वही। हम यह भी नहीं जानते कि उसके बाप-दादे चोर थे, या भठियारे। अरे, उस तक में न कोई शाइस्तगी है, न तहज़ीब। अच्छी और बुरी चीज़ तक की परख नहीं। वही मसल कि "बंदर क्या जाने अदरख का सवाद।" फिर उसने रुपया किस तरह पैदा किया है? यह भी तो देखना चाहिए कि कारख़ानों में मज़दूरों से किस तरह काम ले-लेकर वह उनका ख़ून चूसता है, सरकारी अफ़सरों की ख़ुशामद तथा और भी न-जाने क्या-क्या करके, किस तरह ठेके लेता है। एसेंबली में भी वह ख़ुदग़रज़ी से गया, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। मेरे और मेरे बुज़ुर्गों के भी सरकारी अफ़सरों से ख़ासे ताल्लुक़ात रहे, पर हम लोगों ने उनसे कभी रुपए का फ़ायदा नहीं उठाया, बल्कि हज़ारों और लाखों रुपए के चंदे दिए। (कुछ ठहरकर, ज़ोर से हुक़्क़ा गुड़गुड़ाकर धुआँ छोड़ते हुए) न दीजिए मदद, बनवारीलालजी, न दीजिए। आप सब ख़ुदग़रज़ लोग मुझे छोड़ दीजिए, पर मेरे बुज़ुर्गों के इक़बाल और मेरे ख़ानदान ने इस शहर और इस सूबे के लिये जो कुछ किया है, उसकी ताक़त पर मुझे आज भी यक़ीन है कि मैं (ज़ोर से सिर हिलाकर और तेज़ आवाज़ में) ज़रूर चेंबर का प्रेसिडेंट चुना जाऊँगा।

[कुछ देर तक निस्तब्धता रहती है। त्रिलोकीनाथ हुक़्क़ा गुड़गुड़ाते रहते हैं।]

बनवारीलाल—(धीरे-धीरे) बाबू साहब, आप अनेक बार उत्तेजित हो उठते हैं। किंतु आपका हृदय शुद्ध है, यह मैं जानता हूँ, अतः आपने जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ कहा, उसे मैं ज़रा भी बुरा नहीं मानता। हाँ, आपके स्वास्थ्य पर इस क्रोध का अवश्य बुरा प्रभाव पड़ता है। (कुछ ठहरकर) इतना मैं पुनः आपसे निवेदन करता हूँ कि मैं जो सम्मति आपको दे रहा हूँ, वह आपकी ही भलाई की दृष्टि से।

त्रिलोकीनाथ—(अत्यंत क्रोध से) बस-बस, (फिर कुछ ठहरकर हुक़्क़ा गुड़गुड़ाते हुए) बहुत मैंने अपनी भलाई सुन ली; माफ़ कीजिए। यदि आप मेरी इतनी भलाई चाहनेवाले हैं, तो आप रमाकांत को क्यों नहीं बैठा देते ?

बनवारीलाल—मैं ईश्वर को साक्षी देकर कहता हूँ कि मैंने इसका पूर्ण प्रयत्न कर लिया।

त्रिलोकीनाथ—फिर आप उससे यह साफ़ क्यों नहीं कह देते कि आप उसकी मदद नहीं करेंगे।

बनवारीलाल—यह कह सकने की मुझमें शक्ति नहीं।

त्रिलोकीनाथ—(चिढ़कर) तो बस, फिर हो चुका। आपसे मेरा आज से कोई ताल्लुक़ नहीं रहेगा। आप दोनो के दोस्त नहीं रह सकते, एक को चुन लीजिए।

[कुछ देर तक फिर निस्तब्धता रहती है। त्रिलोकीनाथ हुक़्क़ा गुड़गुड़ाते हैं।]

बनवारीलाल—(धीरे-धीरे) बाबू साहब, आप एक बात देखते हैं ?

त्रिलोकीनाथ—क्या ?

बनवारीलाल—आप इस समय हर दृष्टि से निर्बल हैं। आपको इतने बड़े आदमी से शत्रुता कदापि मोल न लेनी चाहिए।

त्रिलोकीनाथ—(घृणा से हँसकर) बड़ा आदमी ! मैंने कहा न कि मैं उसे पैर की जूती से ज़्यादा नहीं समझता।

बनवारीलाल—यह कह देना सरल है बाबू साहब, परंतु इस समय रुपया अधिक शक्तिशाली है। सारे संसार को यह नचा रहा है। एक गँवारी कहावत है कि "चाँदी की मेख और तमाशा देख।" आप अत्यधिक क़र्ज़दार हो गए हैं बाबू साहब ! आप.....

त्रिलोकीनाथ—(एकदम आग-बबूला होकर खड़े होते हुए) अच्छा, तो आरज़ू-मिन्नत करते-करते अब आप धमकी देने पर उतारू हो गए। (चिल्लाकर) धमकी ! ओह ! मुझे धमकी ! बस उठिए, जाइए यहाँ से, मैं आपसे बात नहीं करना चाहता। (क्रोध से इधर-उधर टहलने लगते हैं।)

बनवारीलाल—(खड़े होकर) बाबू साहब, बाबू साहब !

त्रिलोकीनाथ—(बीच ही में) आप जाते हैं, या मुझे दरबान को बुलाकर कहना होगा कि आपको बाग़ के बाहर ..... (फिर भी न जाते देखकर ज़ोर से) दर.....

बनवारीलाल—(बीच ही में) इस समय आपसे कुछ भी कहना निरर्थक है, अतः मैं जाता हूँ। पर फिर भी आपसे कहे जाता हूँ कि जो कुछ मैंने कहा है, आपके लाभ के.....

त्रिलोकीनाथ—(चिल्लाकर) सुन लिया, सुन लिया। बस, मुझे माफ़ कीजिए।

[बनवारीलाल दाहनी ओर के दरवाज़े से जाता है।]

त्रिलोकीनाथ—(टहलते और ओठ चबाते हुए) धमकी ! मुझे धमकी ! तीन कौड़ी का दलाल होकर मुझे धमकी !!

[बाईं ओर के दरवाज़े से मलका का प्रवेश। वह गौर वर्ण की, साधारण क़द और शरीर की अत्यंत सुंदर वेश्या है। उसकी अवस्था लगभग २८-२९ वर्ष की है। रेशमी, ज़रीदार शलूका और पाजामा पहने है। पतला, सितारे लगा हुआ, रेशमी दुपट्टा ओढ़े है। मुसलमानी ढंग के जड़ाऊ आभूषण पहने है।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलका—(आगे बढ़कर मुस्किराते हुए) इस ग़ुस्से पर सदक़े जाऊँ। अगर अभी डॉक्टर आ जायँ, तो वह भला क्या कहेंगे। (कुछ ठहरकर) प्यारे, मैंने आज की यह सब बहस पास के कमरे से सुन ली। इस तरह की बातों और तुम्हारे इस तरह के ग़ुस्से से तो तुम्हारे दिल पर बहुत बुरा असर हो सकता है।

त्रिलोकीनाथ—(टहलते हुए) ओह ! दिल क्या हुआ, सबसे बड़ी क़ैद हो गई। दिल के सबब से एसेंबली की मेंबरी के लिये खड़ा नहीं हुआ, दिल के सबब से चेंबर की प्रेसिडेंटी छोड़नी चाहिए, दिल के सबब से जी-भरकर शराब नहीं पी सकता, दिल के सबब से ज़िंदगी-भर जो कभी धमकी नहीं सुनी, वह धमकी सुनकर भी ग़ुस्सा न होऊँ, ऐसी ज़िंदगी से तो मौत हज़ार दर्जे अच्छी।

मलका—(त्रिलोकीनाथ का हाथ पकड़कर गद्दी पर बिठाते और स्वयं बैठते हुए) अच्छा, अच्छा, बैठो, वाहियात बातें मुँह से न निकालो। मौत हो तुम्हारे दुश्मनों की। (कुछ ठहरकर) मुझसे भी न बोलोगे ?

त्रिलोकीनाथ—(कुछ मुस्कराते हुए मलका के गले में हाथ डालकर) तुमसे न बोलूँगा, तब तो कल मरते, आज ही मर जाऊँगा। दिलाराम, इन तमाम तकलीफ़ों में तुम्हीं तो एक आराम हो।

मलका—लेकिन तुमने ये सब तकलीफ़ात ख़ुद ही तो मोल ले रक्खी हैं। छोड़ो न सब झंझट। क्या रक्खा है इस चेंबर की प्रेसिडेंटी में ? मारो लात।

त्रिलोकीनाथ—क्या कहती हो, दिलरुबा, इस धमकी के बाद भी। हर्गिज़ नहीं। तुम जानती हो, मलका, ख़ानदान की और अपनी इज़्ज़त मैं दुनिया में सबसे बड़ी चीज़ समझता हूँ। आज दस साल से तुम मेरे पास हो। तुमने देखा होगा कि चाहे मैं कितनी ही शराब पीकर तुम्हारे साथ कितने ही आराम क्यों न भोगूँ, लेकिन किसी के सामने सर झुकाना मैंने नहीं सीखा। ख़र्च करने और आराम से रहने में मैं कोई बुरी बात नहीं समझता। मेरे बुज़ुर्गों ने रुपया पैदा किया था, मुझे उनसे मिला था, मैंने ख़र्च कर दिया, किसी दूसरे के बाप का नहीं था। और, क़र्ज़ ! क़र्ज़ क्या कोई मुफ़्त में या मेहरबानी करके देता है। जायदाद है, लोगों को कौड़ी-कौड़ी पट जाने का यक़ीन है, इसलिये सूद कमाने को लोग क़र्ज़ देते हैं। मैंने अगर क़र्ज़ भी लिया, तो किसी दूसरे के बाप की जायदाद पर नहीं। अरे, आबादी और बरबादी तो होती ही रहती है। कोई आबाद होता है, और कोई बरबाद। जो ख़र्च नहीं करते, साँप के मुआफ़िक़ दौलत पर बैठे रहते हैं, उनके पास क्या वह हमेशा रहती है। किसी-न-किसी तरह चली ही जाती है। हाँ, अगर मैंने किसी को धोका देकर जालसाज़ी या फ़रेब किया हो, किसी ग़रीब का पेट काटा हो, किसी को किसी तरह नुक़सान पहुँचाया हो, किसी की बहू-बेटी की इज़्ज़त बिगाड़ी हो, तो मैं किसी की आँख सहूँ, किसी की बात बरदाश्त करूँ। (हाँफते हुए) धमकी। ओह ! धमकी। तीन कौड़ी के दलाल की यह मजाल कि वह मुझे धमकी दे।

मलका—प्यारे, आज तो सचमुच ही तुम्हारा बुरा हाल है। इससे तो तंदुरुस्ती को बड़ा नुक़सान पहुँचने का अंदेशा है। (कुछ ठहरकर) अच्छा, गाना न सुनोगे ?

त्रिलोकीनाथ - (मुस्किराते और मलका को गले से लगाते हुए) ओह ! तुम्हीं मेरी सब बीमारियों की दवा हो। गाओ, दिलाराम, गाओ, तुम्हारे पास रहने पर ग़ुस्सा भी कहाँ तक रह सकता है। (कुछ ठहरकर) पर, हाँ, रूखा-सूखा गाना क्या अच्छा लगेगा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलका—ऐसे ग़ुस्से की हालत में शराब !

त्रिलोकीनाथ—तुम्हारे बाद अगर कोई दूसरी चीज़ मेरी दवा है, तो वही।

मलका—पर डॉक्टर.....

त्रिलोकीनाथ—(क्रोध से) जहन्नुम में गया डॉक्टर ! डॉक्टर की राय से अगर मैं चलूँ, तो एक मिनट जीता नहीं रह सकता।

मलका—अच्छा, अच्छा, ग़ुस्सा न हो, अभी मँगवाती हूँ। (ज़ोर से) शाहज़ादी, शाहज़ादी।

[स्वच्छ वस्त्रों में एक अधेड़ नौकरानी का प्रवेश।]

मलका—शीशी और गिलास।

[शाहज़ादी का प्रस्थान। एक चाँदी की चौकी पर दो कट ग्लास के सुंदर 'डिकेन्टर' और दो कट ग्लास के 'वाइन ग्लास' रक्खे हुए प्रवेश तथा चौकी गद्दी के निकट रख पुनः प्रस्थान। मलका गाना आरंभ करती है। त्रिलोकीनाथ शराब पीते हैं।]

मलका—

फ़िक्रे-मीना क्यों है साक़ी,
क्यों तलाशे-जाम है ?
तू लगा दे मुँह से ख़ुम,
पीना हमारा काम है।
मुझसे रौशन इन दिनों
दैरो हरम का नाम है ;
पाए-बुत पर है जबीं
लब पर ख़ुदा का नाम है।
सुबह को शबनम के मोती
बाग़ में चोरी गए ;
फूल किरनों से ये कहते
हैं—"तुम्हारा काम है।"
देखना है हुस्न के जलवे,
तो बुतख़ाने में आ ;
तेरे काबे में तो वाएज़,
बस ख़ुदा का नाम है।
मेरे मज़हब में है वाएज़,
तर्के-मैनोशी हराम ;
छोड़कर पीता हूँ फिर,
तोबा इसी का नाम है।

यवनिका-पतन

सेठ गोविंददासजी की अमूल्य कृतियाँ

कर्तव्य—इस नाटक के पूर्वार्द्ध में मर्यादा-पुरुषोत्तम राम और उत्तरार्द्ध में श्रीकृष्णचंद्र के चरित्र को लेकर विद्वान् लेखक ने दृश्य काव्य की रचना की है। मूल्य १॥), सजिल्द १॥।)

हर्ष—इस नाटक में सम्राट् हर्षवर्द्धन के समय की सामाजिक अवस्था तथा तत्कालीन नर-नारियों के मनोभावों का एवं उनके विकास और ह्रास का अनुपम वर्णन है। मूल्य १॥)

प्रकाश—यह सामाजिक नाटक है। इसमें कुछ राजनीतिक बातों का भी समावेश है। मूल्य १॥)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलाकार से

[श्रीयुत बाबू मैथिलीशरण गुप्त]

(गुप्तजी सुधा-मंडल के स्तंभ हैं। आप खड़ी बोली के सबसे प्रसिद्ध एवं इस युग के प्रतिनिधि कवि हैं। हमारे अंतरंग मित्र भी। आपने इतिवृत्तात्मक, रहस्यवादी, छायावादी आदि सभी ढंग की कविताएँ लिखी हैं। भारत-भारती, साकेत, यशोधरा, द्वापर आदि आपके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। आपके विषय में अधिक लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है।—सुधा-संपादक)

तेरा श्वासोच्छ्वास उदार।
साधु वेणुवादी, मेरी भी सुन तू तनिक पुकार।
साँप क्यों न आ गिरे गोद में,
तू निमग्न - सा मुग्ध मोद में,
अपनी खिड़की पर विनोद में
कलाकार, अपमान न माने,
देश-काल भी जो तू जाने,
पीर पराई भी पहचाने,
तो टुक इधर निहार।
तेरा श्वासोच्छ्वास उदार।

मैं दुःखिनी पड़ोसिन तेरी,
काल कोठरी कुटिया मेरी,
अंधकूप - सी आज अँधेरी,
बहती नहीं बयार।
तेरा श्वासोच्छ्वास उदार।

सन्न शीत की संध्या - वेला,
कहाँ आज तारों का मेला,
बाहर विष-बुँदियों का रेला,
भीतर हाहाकार।
तेरा श्वासोच्छ्वास उदार।

आग नहीं कोने में जलती,
वह है केवल धुआँ उगलती,
आज कहीं आँधी भी चलती,
तो भी था निस्तार।
तेरा श्वासोच्छ्वास उदार।

हो। मैं झूठ-मूठ
देने लगे। जब उन्होंने मुझसे दुबारा पूछा, तो मैंने
दिया। इस तरह उन्होंने आशा दिलाई। इसके पश्
मैंने सेवन किया, अब बिलकुल आरोग्य हूँ। प्रयोग-
असली सूर्यतापी शिलाजीत ५ तोला, असली बंग भ
असली अकरकरा ६ माशा, असली नेपाली कस्तूरी
डालकर ऊपर से शीतल चीनी का तेल २० बूँद, ब
मिलावें। इसके बाद ताज़ी ब्राह्मी बूटी के अर्क में १
लें और साया में सुखा लें। बस, प्रेसबटी तैयार है।
पाव-भर गाय के दूध में एक तोला शक्कर मिलाकर
हो गया था, और अब उस परम पिता की कृपा से
वक्त से अब तक मैं यही ओषधि लोगों को दाम-के
उठाया है। उनकी आशाओं की पूर्ति हुई है। प्रयोग
लाभ उठावें। अगर आप इसके बनाने में असमर्थ
हो या असली चीज़ें न मिलती हों, तो हमसे बनी
देखें। यह ओषधि वीर्य का पतलापन, बीसियों कि
के साथ धातु का जाना, स्वप्नदोष व सूज़ाक, सुस्ती
असली ताक़त की कमी, सोचने की ताक़त कम हो
अत्यंत ताक़त देती है, और नस-नस में ज़िंदगी
और दो पैकेट पूरी ख़ूराक का ४॥) है, और तीन पै
नि
प्रे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसी इस ईंधन ने ठानी,
आँख-नाक सब पानी-पानी,
बच्चों की यह खींचा - तानी,
रुँधी साँस इस बार!
तेरा श्वासोच्छ्वास उदार।

मेरे कंधे छोड़ - छोड़कर,
आँख मूँद, मुँह मोड़-मोड़कर,
मरे न माथा फोड़-फोड़कर,
आकर इन्हें उबार।
तेरा श्वासोच्छ्वास उदार।

तेरी मुरली कूक रही है,
किंतु ताल-सा चूक रही है,
कौन राग यह हूक रही है
करके स्वर - विस्तार?
तेरा श्वासोच्छ्वास उदार।

फूँक इधर भी एक लगा दे,
इस चूल्हे की आग जगा दे,
भूख और हड़कंप भगा दे,
गा फिर देस - मलार।
तेरा श्वासोच्छ्वास उदार।

[illegible] हराम;
छोड़कर पीता हूँ फिर,
तोबा इसी का नाम है।
यवनिका-पतन

स्त्रियों को कौन-सा ग्रं[illegible]

चिकित्सा-चंद्रोद[illegible]

पृष्ठ-संख्या ६७०, मूल्य

इस ग्रंथ में स्त्रियों के सभी रोग जैसे प्र[illegible]
विस्तार से लिखा गया है।

बाँझ बनानेवाले और पुत्रवती करनेवाले
इसी ग्रंथ के नुसखे, जो चार पैसे में बन स[illegible]
बेचकर मालामाल हो रहे हैं। आप इस पुस्[illegible]
नुसखे तैयार कर लेते? इसी भाग को देखकर

पता—हरिदास[illegible]

[illegible]ही अमूल्य कृतियाँ

[illegible]पोत्तम राम और उत्तरार्द्ध में श्रीकृष्णचंद्र के
[illegible]ना की है। मूल्य १॥), सजिल्द १॥।)
[illegible]य की सामाजिक अवस्था तथा तत्कालीन नर-
[illegible]ास का अनुपम वर्णन है। मूल्य १॥)
[illegible]कुछ राजनीतिक बातों का भी समावेश है।

[illegible]-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी कहानी

प्रिय पाठको ! मैं एक ज़मींदार का लड़का हूँ। कुसंगतों के कारण मुझे जिरियान और प्रमेह रोग हो गया। पहले तो एक-दो साल मैंने लोक-लाज के कारण अपना भेद छिपाए रक्खा, परंतु रोग ने भयानक सूरत अख़्त्यार कर ली। अब मैं घबड़ाकर उठा। संसार में चारो ओर से अँधेरा मालूम होने लगा, तब मेरी आँखें खुलीं। रुपया-पैसा की मेरे यहाँ कमी न थी। इलाज शुरू किया गया। बड़े-बड़े डॉक्टर, वैद्यों, हकीमों की दवाएँ मँगाई और खाई, मगर रोग बढ़ता ही गया, ज्यों-ज्यों दवा की, आख़िर मामला यहाँ तक आ पहुँचा कि मैं आत्महत्या की सोचने लगा और इस दुःखमय जीवन से मर जाना बेहतर समझने लगा। हमारे गाँव के पास ही एक मील की दूरी पर ईंटों का एक खेड़ा है। कारण-वश उसी खेड़े पर काठियावाड़ के एक प्रसिद्ध त्यागी योगिराज आ बैठे और एक झाड़ी में आसन लगाकर ईश्वर - चिंतन में मग्न हो गए। गाँव के बालक और युवकों ने जब उन्हें देखा, तो उनकी प्रशंसा गाँव में फैला दी कि खेड़े पर एक महात्मा आए हैं। जो बड़े तेजस्वी प्रतीत होते हैं। यह सुनकर लोगों के समूह-के-समूह उनकी सेवा में जाने लगे। जब मैंने यह सुना, तो मैं निराशा और आशा को साथ लिये उनके चरणों में जा उपस्थित हुआ। उन तेजस्वी के आत्म दर्शन करते ही मेरा चित्त गद्गद और प्रसन्न हो गया और नमस्कार कर एक ओर बैठ गया। महात्माजी मेरी शक्ल और दशा देखकर फ़ौरन् ताड़ गए और मेरी ओर आकर्षित होकर बोले कि बेटा तुम बड़े निराश और दुखी मालूम होते हो, क्यों तबियत कैसी है और तुम्हारे दुखी होने का क्या कारण है ? बस, फिर क्या था। जैसे मेरे दिल के घावों को किसी ने छेड़ दिया हो। मैं फूट-फूटकर रोने लगा। महात्माजी यह दशा देखकर बेचैन हो उठे और मेरे पास आकर मुझे धीरज देने लगे। जब उन्होंने मुझसे दुबारा पूछा, तो मैंने अपनी बीमारी का सारा हाल उनके सम्मुख रख दिया। इस तरह उन्होंने आशा दिलाई। इसके पश्चात् उन्होंने एक प्रयोग मुझे बतलाया, जिसे बनाकर मैंने सेवन किया, अब बिलकुल आरोग्य हूँ। प्रयोग—असली त्रिफला-चूर्ण ५ तोला, त्रिकटु-चूर्ण ५ तोला, असली सूर्यतापी शिलाजीत ५ तोला, असली वंग भस्म ६ माशा, असली सूर्यछाप केशर ३ माशा, असली अकरकरा ६ माशा, असली नेपाली कस्तूरी ६ रत्ती इन सब ओषधियों को कूट-छानकर खरल में डालकर ऊपर से शीतल चीनी का तेल २० बूँद, बहरोजा का तेल २० बूँद, चंदन का तेल २० बूँद मिलावें। इसके बाद ताज़ी ब्राह्मी बूटी के अर्क़ में १२ घंटे तक घोटकर झरबेरी के बराबर गोलियाँ बना लें और साया में सुखा लें। बस, प्रेमवटी तैयार है। सेवन-विधि—१ गोली प्रातः और एक गोली सायंकाल पाव-भर गाय के दूध में एक तोला शक्कर मिलाकर खाए। इस ओषधि के सेवन से २० रोज़ में आरोग्य हो गया था, और अब उस परम पिता की कृपा से मेरे तीन बच्चे हैं, जो बिलकुल ही आरोग्य हैं। उस वक़्त से अब तक मैं यही ओषधि लोगों को दाम-के-दाम पर दे रहा हूँ, जिससे सैकड़ों व्यक्तियों ने फ़ायदा उठाया है। उनकी आशाओं की पूर्ति हुई है। प्रयोग ऊपर भली प्रकार समझा दिया गया है। इसे बनाकर लाभ उठावें। अगर आप इसके बनाने में असमर्थ हों या कारोबार के कारण आपको फ़ुरसत कम मिलती हो या असली चीज़ें न मिलती हों, तो हमसे बनी-बनाई ओषधि मँगा लें और उसके आश्चर्य-जनक गुण देखें। यह ओषधि वीर्य का पतलापन, बीसियों क़िस्म के प्रमेह, पेशाब के साथ वीर्य का जाना, पाख़ाने के साथ धातु का जाना, स्वप्नदोष व सूज़ाक, सुस्ती, कमज़ोरी और नामर्दी जवानी में बुढ़ापे की हालत, असली ताक़त की कमी, सोचने की ताक़त कम हो जाना, स्त्रियों के प्रदर-संबंधी रोग वग़ैरा दूर करके अत्यंत ताक़त देती है, और नस-नस में ज़िंदगी का संचार करती है। क़ीमत फ़ी पैकेट ४० गोली २॥) और दो पैकेट पूरी ख़ूराक का ४॥) है, और तीन पैकेट का ६) डाक खर्च माफ़ मनीऑर्डर-फ़ीस =)

निवेदक—बाबू श्यामलालजी रईस
प्रेमवटी-ऑफ़िस, नं० ३, कानपुर (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि आप शांति और आनंद चाहते हैं—

तो अभी मासिक पत्र 'व्यावहारिक वेदांत' के ३) चंदा देकर ग्राहक बन जाइए और निम्न-लिखित पुस्तकों का स्वाध्याय कीजिए।

पुस्तक	भाषा	साधारण संस्करण	विशेष संस्करण
स्वामीराम के समग्र ग्रंथ	हिंदी	१०)	१५)
" " " "	अँगरेजी	७)	१४)
" " " "	उर्दू	४॥)	६)
बाबा नगीनासिंह के समग्र ग्रंथ	हिंदी	३॥)	४॥)
" " " "	उर्दू	२॥।)	४॥)

भगवद्गीताएँ—

श्रीमन्नारायण स्वामी-कृत	हिंदी	४)	६)
श्रीजानकीनाथ मदन-कृत	उर्दू	—	२॥)
The Light of Bhagwat Gita	English	—	-/8/-
Gita Mala and the Heart of Gita	"	/12/-	1/-/-
Adi Bhagwat Gita	Anglo Hindi	-/2/6	—
Swami Ram—His life and legacy	English	3/-/-	3/8/-
Story of Rama	"	2/8/-	3/-/-
Heart of Ram and Poems of Rama	"	-/4/-	-/8/-
Swami Rama—Various Aspects of his life by the eminent Scholar of the age	"	—	1/-/-each
Note Books of Swami Rama in two Vols.	"	4/-/-	6/-/-
बृहतराम जीवन-चरित	हिंदी	२॥)	३)
भारत माता	"	—	१)
स्वामीराम के दस आदेश	"	—	१)
नारायण-चरित्र	उर्दू	—	॥)
साधारण धर्म	"	॥।)	—

सत्ययुगी प्रार्थना और अमली वेदांत हिंदी, उर्दू, अँगरेजी हरएक ।), १) सैकड़ा

स्वामीराम और नारायण के फ़ोटो ।॥ से लेकर १०) तक

श्रीरामतीर्थ पब्लिकेशन लीग

२५, मारवाड़ी-गली, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चा साहित्य

[आचार्य काका कालेलकर]

(काका साहब मराठी और गुजराती के लब्धप्रतिष्ठ लेखक और कृतविद्य, कुशल कलाकार हैं। इधर कुछ वर्षों से हिंदी-भाषा के प्रचार और देवनागरी-लिपि के सुधार में आपने विशेष रुचि से कार्य किया है। काका साहब ने इस लेख में सत्साहित्य का विवेचन किया है। अश्लील, समाज को पतन की ओर ले जानेवाले साहित्य की निंदा की है।—सुधा-संपादक)

निःसंदेह वही कहानी अच्छी होती है, जिसे पढ़कर मन द्रवित और प्रसन्न होता है, पाठक के हृदय की सहानुभूति बढ़ती है, और जिससे सहज ही हमारे ध्यान में न आनेवाले, किंतु जीवन के किसी वास्तव में महत्त्व-पूर्ण पहलू के आकलन करने की शक्ति बढ़ती है, साथ ही मानव-हृदय के प्रति आदर उत्पन्न होता है। मनुष्य-जाति ने अपने उद्धार के लिये अब तक जितने नीति-नियम तैयार किए, उनमें से कुछ तो केवल सामाजिक संकेत - मात्र हैं। उनमें समय-समय पर परिवर्तन होता रहना चाहिए। जहाँ आदर्श संकुचित अथवा कठोर हो, वहाँ नियमों को ढीला और उदार कर देना चाहिए। मानव-हृदय के संबंध में जितने भी नियम अनुदार, शंकित और नास्तिक वृत्ति द्वारा बनाए गए हों, उन्हें बदल डालना होगा। जिन नियमों का महत्त्व स्थानिक अथवा कालिक हो, उनकी उपयोगिता पूरी हो जाने पर भी वे बेमतलब टिके ही रहते हैं, इसलिये उन्हें समय पर ही मिटा देना चाहिए। ऐसा करने के लिये मानव के हृदय में जो विश्वजनीन सहानुभूति, न्याय-बुद्धि और औचित्य की अनुभूति बसती है, उससे न्याय की माँग करनी चाहिए। यह काम उपन्यास, कहानी, कविता

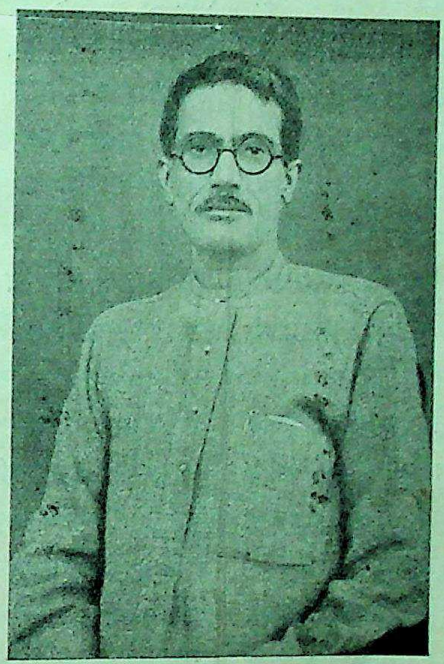

आचार्य काका कालेलकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा चित्रकला द्वारा भी बहुत सुंदर और अच्छी तरह किया जा सकता है।

नैतिक नियमों का दूसरा हिस्सा सनातन होता है। सत्य, अहिंसा, न्याय, प्रेम, क्षमा, पारस्परिक सहयोग, उदारता, आत्मविलोपन, सेवा, बलिदान इत्यादि सार्वभौम तत्त्व कभी बदला नहीं करते। यह बात अलग है कि मानव अपनी अपूर्णता के कारण इन तत्त्वों को सदा संकुचित कर लेता और विचित्र प्रकार के अपवाद भी बना लेता है। किंतु मानव-समाज की उन्नति इन्हीं तत्त्वों पर अवलंबित है। ये तत्त्व मानव-हृदय की पौष्टिक खूराक और सामाजिक जीवन की नींव हैं। जो कहानियाँ इस नींव को अशक्त या ढीला कर देती हैं, वे फिर कितनी भी रसीली क्यों न हों, श्रेष्ठ साहित्य की श्रेणी में नहीं आ सकतीं। वारांगना का रूप, विष की रुचिकरता, स्वाद, अधःपतन का आनंद, पामरता पर दया और क्षुद्र संकीर्णता का अभिमान, ये सब बातें सज्जन के मन को कभी आनंदित नहीं कर सकतीं। वासनाओं की प्रबलता से असहाय और विवश मनुष्य पर दया और अनुकंपा करना एक बात है, और उसका अभिनंदन करना दूसरी बात। विषय-विलासिता का प्रभाव मनुष्य की वासनाओं पर इतना तीव्र होता है कि फिर उसे सुंदर रूप देकर समाज की प्रमादी वृत्ति को उत्तेजन देना लोक-प्रियता और अर्थ-लाभ की दृष्टि से कितना भी वांछनीय क्यों न हो, उसे हम शुद्ध कला कभी न कहेंगे। मानवीय दुर्बलता पर घृणा करना कितना भी अनुचित हो, और अनुकंपा करना कितना भी उचित क्यों न लगता हो, दुर्बलता को न्याय-संगत मानना और उसकी रक्षा के लिये शुद्ध आदर्श को नीचे खींचकर गिरा देना श्रेष्ठसाहित्य कभी सहन नहीं कर सकता।

कोई भी लोक-हितैषी, साहित्य-रसिक व्यक्ति यही कहेगा कि शुद्ध साहित्य का यह आदर्श या कला का बुनियादी व्याकरण सँभालकर जो कुछ कला-विलास और लोकानुरंजन किया जा सकता है, उतना ही करना चाहिए।

सामाजिक और सांसारिक परिस्थिति के साथ ही प्राचीन आदर्श भी बदल दिए जाते हैं। साहित्य को यह काम बड़ी सावधानी से करना पड़ता है, और जिस साहित्य को यह काम करना पड़ता है, वह अपने समय के समाज की सेवा करके स्वभावतः अमर हो जाता है।

उचित जँचनेवाला साहित्य का आदर्श मैंने ऊपर स्पष्ट कर दिया है। इसी दृष्टि से मैं हर एक साहित्य को देखता हूँ। केवल मनोरंजन या रसास्वाद की दृष्टि को भी मैं जानता हूँ। कुछ लोगों की दृष्टि सिर्फ़ मनोरंजन और रस-तृप्ति पर ही लगी रहती है। उनके साथ मेरी सहानुभूति है। किंतु मेरी समझ में रस-तृप्ति और मनोरंजन की ढाल आगे रखकर केवल हीन वृत्तियों को भड़कानेवाले और समाज को गढ़े की ओर खींचनेवाले साहित्य को सामाजिक मान्यता कभी न मिलनी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिहर प्रेस का संसार प्रसिद्ध पुस्तकों का

सूचीपत्र

शुरू से अखीर तक एकवार अवश्य पढ़िये

१—राजयक्ष्मा

राजयक्ष्मा (तपेदिक) जीर्णज्वर, क्षय, थाइसिस कंझपसनट्र्यूबक्यूलिनिम आदि नामों से सभी परिचय रखते हैं। यह कैसे साधारण आहार विहारों की अवहेलना का फलमात्र है। जिसके कारण को हम समझने के लिये अब भी तैयार नहीं होते, कितने दुःख की बात है। विद्वानों का कहना है, कि जितने मनुष्य अन्य समस्त रोगों के कारण मरते हैं। उससे कुछ अधिक मनुष्य इस दुष्ट रोग से पीड़ित होकर मरते हैं। इसलिये यह निबन्ध लिखवाने का आर्डर २१ वें ग्वालियर वैद्य सम्मेलन की स्वागत कारिणी ने किया था, उस पर २० वर्ष के अनुभव पूर्ण खोज से ओत प्रोत वैदिक काल से लेकर अबतक के इतिहास और चिकित्सा से परिपूर्ण इस ग्रन्थ को आयुर्वेदोद्धारक प्रशस्त यशस्वी लेखक विद्वान वैद्य चिकित्सक चूड़ामणि पं० विश्वेश्वरदयाल जी वैद्यराज सम्पादक "अनुभूतयोगमाला" ने लिखा था जो समस्त आगत निबन्धों में से प्रथम श्रेणीका चुना गया और इस पर एक स्वर्णपदक दिया गया, इसीलिये यह लागतमात्र मू० ।)में दिया जाता है।

नि० भा० २२ वें वैद्य सम्मेलन बीकानेर के लिये लिखी गई

२—यकृत प्लीहा के रोग

यह पुस्तक भी अपने ढंग की अपूर्व वस्तु है यकृत प्लीहा क्या वस्तु है। इसका स्थान कहां है। किन-किन कारणों से बढ़कर कौन २ रोग पैदा करते उसकी क्या चिकित्सा है। यूनानी, एलोपैथी आयुर्वेदीय निदानों के मतभेद पर मार्मिक तुलनात्मक विवेचन जो आज तक अन्यत्र कहीं भी देखनेको न मिला होगा वह इसीमें मिलेगा, पुस्तक पढ़ने पर आप लेखक के लिये वाह २ किये बिना नहीं कर सकते। अवश्यमेव प्रत्येक को देखकर लाभ उठाना चाहिये। गृहस्थी के सिवा वैद्यों के बड़े काम की वस्तु है। मू० केवल ।)

नि० भा० वैद्य-सम्मेलन पटना से रौप्य पदक प्राप्त

३—मधुमेह

मधुमेह (डायावटीज) का विस्तृत और खोज पूर्ण विवेचन वैद्य संसार के प्रसिद्ध स्वर्गीय पं० परशुराम जी वैद्यशास्त्री का अद्भुत और ज्ञातव्य विषयों से ओत-प्रोत निबन्ध है। वैद्यजन इसके कारणों से अनभिज्ञ हैं। इसी कारण से वह इसकी चिकित्सा में सफल नहीं होते। यह समझते हुये लाक्षणिक चिकित्सा का कैसा सुन्दर किया है। जिसे देखते ही लेखक के लिये अपने आप ही वाह वाह कह उठेंगे, पुस्तक प्रत्येक वैद्य के देखने योग्य है, मू० ।।)

४—स्नान चिकित्सा

पुस्तक क्या है ? गागर में सागर की कहावत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को लेखक ने चरितार्थ कर दिया है ।

जरा पुस्तक की सूची पर तो ध्यान दीजिये, इसमें पांचभौतिक चिकित्सा, जलस्नान, मृत्स्नान, वायुस्नान, ज्योतिस्नान, चन्द्रस्नान, सूर्यस्नान, अर्थात् समस्त स्नानों द्वारा शिर की चोटी से पैर की एड़ी तक के समस्त रोगों पर ऐसे २ सरल और अनुभूत उपाय स्नानों द्वारा लिखे गये हैं कि जिसे पढ़कर साधारण व्यक्ति भी लाभ उठा सकता है । साल में सैकड़ों हजारों रुपये वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों आदि की जेबों में चले जाते हैं । यदि इससे बचकर स्वयं घर बैठे लाभ और ख्याति पैदा करना चाहते हो तो—

आज ही—

एक कार्ड लिखकर मंगा देखें, देखते ही आप चकाचौंध हो जायेंगे । स्टाक में बहुत थोड़ी प्रतियां शेष हैं, शीघ्रता कीजिये वरना पछताना पड़ेगा, पुस्तक का मूल्य भी केवव ।=) है ।

५—प्लीहा रोग चिकित्सा

यह पुस्तक अपने ढंग की बड़ी ही अनोखी है । यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह कितना भयंकर और दुखदाई रोग है, इसका अनुभव उन्हीं को होगा जो इस दुष्ट रोग के निन्यानवे के चक्कर में जीते जी नरक यातना का दुख भोग कर रहे हैं । इस पुस्तक में ऐसे २ सिद्ध प्रयोग लिखे गये हैं, जो सैकड़ों बार के अनुभूत हैं । पुस्तक का मूल्य केवल ।) ही है ।

६—श्वास रोग चिकित्सा

लोग कहते हैं कि दमा दम के साथ जाता है, यह उनकी बड़ी भूल है । वर्तमान समय में यह दुष्ट रोग ऐसा फैल रहा है कि दांतों तले अंगुली दबानी पड़ती है । इस पुस्तक में श्वास (दमा) के सम्पूर्ण लक्षण तथा उनके रूप आदि का सविस्तार से वर्णन हैं, प्रयोग ऐसे २ उत्तम दिये गये हैं जो कि सेन्ट परसेन्ट हैं, जिनको हर एक आसानी से बना सकता है । ऐसी अनोखी पुस्तक की कीमत केवल ।) मात्र है ।

७—अर्श रोग चिकित्सा

अपने ढंग की यह एक ही पुस्तक है । इसमें बवासीर रोग की उत्पत्ति मय कारणों के एवं निदान समेत भली भांति सरल भाषा में दर्शाई गई है, प्रयोग बड़े ही उत्तम हैं मू० केवल ।।)

८—स्त्री रोग चिकित्सा

स्त्री जाति कितनी कोमल पुष्प है, यदि इस पर असमय ही तुषार पड़ जाय, तो इसमें किसका दोष है । इस पुस्तक में स्त्रियों के रोग कैसे दूर हो सकते हैं । श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर, मासिक धर्म आदि की पूर्ण खराबियों को सम्पूर्ण विधान तथा चिकित्सा वर्णित है । हम चाहते हैं कि यह पुस्तक प्रत्येक गृहस्थ के हाथ में हो, ताकि वह अपना जीवन आनन्द मय बना सकें, पुस्तक का मूल्य भी केवल ।।) ही है ।

९—व्रणोपचार पद्धति

इस पुस्तक में समस्त प्रकार के घावों का इलाज है । जैसे विद्रधि, जहरबाद, नहरुआ, अग्नि से जलना, चोट लगने का घाव, गलगंड, गंडमाला, भगंदर, ग्रंथिअर्बुद, पामा रोग आदि के रोगों की सरल चिकित्सा लिखी है । पुस्तक का द्वितीय संस्करण छप गया है । मू० केवल ।=) है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०—सिद्धोषधि प्रकाश

आर्डरों की भरमार ? सारी प्रतियां समाप्त हो चलीं हैं। इसीलिये तो कहते हैं कि आज ही एक कार्ड डालकर मंगा लीजिये। इस पुस्तक में शिर से लेकर पैर तक के सम्पूर्ण रोगों के कारण निदान तथा उनकी चिकित्सा बड़े सरल ढङ्ग से सुलझाई गई है। पुस्तक में सैकड़ों प्रयोग हैं। जो अनुभूत योग हैं ऐसी पुस्तक का मू० केवल १॥) मात्र है।

११—वैद्यक शब्द कोष

अकारादि क्रम से संस्कृत औषधियों के नाम हिन्दी भाषा में लिखे गये हैं। पुस्तक बड़ी ही अच्छी और उपयोगी है। प्रत्येक वैद्य के पास रहनी चाहिये। मू० केवल ।)

१२—हरिधारित ग्रंथ-रत्न

पुस्तक क्या है ? गागर में सागर वाली कहावत को लेखक ने चरितार्थ कर दिया है। सम्पूर्ण रोगों की बड़ी अच्छी विवेचना की गई है। सुन्दर भाषाटीका में वर्णित है। मू० केवल ।=)

१३—भारतीय रसायन शास्त्र

(द्वितीय संस्करण)

इस पुस्तक में सोना, चांदी आदि २ बनाने की अपने शास्त्रों में प्रतिपादित सभी विधियों का संग्रह है। प्रत्येक वैद्य को इससे अवश्य ही लाभ उठाना चाहिये। पुस्तक बड़ी ही अच्छी है, मू० ॥)

१४-१५—औषधि विज्ञान

(प्रथम भाग व द्वितीय भाग)

यह पुस्तक आयुर्वेद के विद्यार्थियों एवं वैद्यों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। इस पुस्तक में औषधि निर्माण सम्बन्धी प्रक्रिया, चिकित्सा संम्बन्धी प्रक्रियायें औषधि के भिन्न २ वर्ग और उनके गुणधर्म प्रभाव इत्यादि एवं दीपक, रेचक, ग्राही, शीत तथा पित्तहर द्रव्यों का पूरा २ स्पष्ट दिग्दर्शन कराया गया है। अमुक रोग में अमुक औषधि एवं उसका पूरा २ विधान आदि सविस्तार से वर्णन है। पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। मू० प्रथम भाग १) द्वितीय भाग ।।) मात्र है।

१६-१७—औषधि गुणधर्मविवेचन

इस पुस्तक की उपादेयता के विषय में कहना ही वृथा है। इस पुस्तक में समस्त धातुज औषधियां क विषय में लेखक ने भली भांति दर्शाया है, कि आजकल प्रायः सभी वैद्यजन अंध परम्पराच्छन्न हो चिकित्सा कर रहे हैं। रोगों के कारणों का पता तथा उनकी उत्पत्ति कहां २ और कौन २ से बिगाड़ होने से वह वेदना पैदा हुई तथा अमुक स्थान की विकृति किस दवा से ठीक होगी आदि २ सुन्दर सरल भाषामें वर्णन है। इसकी एक २ प्रति प्रत्येक वैद्य के पास रहना नितान्त आवश्यक है। मू० प्रथम भाग ।।), द्वितीय भाग ।=) है।

१८—चिकित्सक व्यवहार विज्ञान

प्रायः ऐसा देखा गया है कि बड़े २ सुयोग्य वैद्य भी चिकित्सा सम्बन्धी व्यवहार न जानने के कारण रोगी को जीवन लीला से विदा करवाने का कलंक के भागी होते हैं। इसी कारण हमने सर्व साधारण के लाभार्थ इसे प्रकाशित किया है। वैद्य बन्धुओं को इससे लाभ उठाना चाहिये। मू० केवल ।) मात्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९-२०—पेटेन्टऔषधें औरभारतवर्ष

(प्रथम भाग व द्वितीय भाग)

पुस्तक के नाम से ही स्पष्ट है कि पुस्तक कैसी है, प्रथम भाग तथा द्वितीय भाग में भारतवर्ष की सभी पेटेन्ट औषधियां का भंडाफोड़ किया गया है रोगन बिजली, अमृतांजन, नमक सुलेमानी अपूर्व ताकत की दवा, बालामृत आदि २ सभी प्रसिद्ध २ पेटेन्ट औषधियों के बनाने की विधियां समझाई गई हैं। पेटेन्ट कर्त्ता एक आने की चीज के १) लेते हैं और मनमाना दाम ऐठ कर लखपती हो गए हैं। यदि आप भी लाभ उठाना चाहते हैं तो आज ही एक कार्ड डालकर मंगा देखिये। मू० प्रथम भाग का ।।), द्वितीय भाय का १) है।

२१—अंड तथा अन्त्रवृद्धि चिकित्सा

प्रस्तुत पुस्तक का विषय नाम से ही प्रगट है और सहज ही में अनुमान लगाया जा सकता है कि इस रोग के रोगियों को जीवन कितना नीरस और फीका मालूम होता है। यही सोचकर यह पुस्तक प्रकाशित की गई है। पुस्तक में सविस्तार रोगों का पूर्ण हाल मय निदान के चिकित्सा लिखी गई है। मू० ।) मात्र।

२२-२३--सिद्धप्रयोग (२ भाग)

(द्वितीय संस्करण)

ग्राहकों एवं अनुग्राहकों की उत्कट अभिलाषा एवं पत्र पर पत्र आने के कारण इस पुस्तक में वह शतशोऽनुभूत प्रयोग जो अनुभूत योगमाला में निकले थे और जिनकी परीक्षा हो चुकी थी, वही श्लोक बद्ध मणियों के रूप में भाषाटीका सहित प्रकाशित किये गये हैं। बहुत थोड़ी प्रतियां शेष हैं मू० प्रथम भाग का १) द्वितीय भागका ।।) मात्र।

२४--कोकसार

यह २५० वर्ष प्राचीन हस्तलिखित पुस्तक के आधार पर लिखी गई है। इसकी सानी का आज तक कोई भी कोकसार नहीं निकला है, इसमें ८४ आसन, स्त्री वशीकरण, स्तम्भन, इन्द्रीवर्द्धक, योनि संकोचन एवं उपयोगी मन्त्र, तन्त्र और अनुभूत प्रयोग लिखे गये हैं। पुस्तक की लेखनशैली बड़ी ही रोचक है। मू० ।।) मात्र है।

२५-२६--शिफाउल अमराज

इस पुस्तक में यूनानी साहित्यका सार निचोड़ लेकर अपनी भाषा में भर कर अपने साहित्य को सर्वांग पूर्ण बना लिया और अपना यह दोष) कि हमने किसी के यहां से कुछ लिया ही नहीं) मिटाने के लिये जिन २ ग्रन्थों से विषय लिया था उनका नामोनिशान सदा के लिये मिटा दिया, ऐसी दशा में अब जरूरत है कि हम अपना साहित्य पूर्ण कर सर्वज्ञ बने तो इधर उधर की साहित्य से संग्रह करना पड़ेगा, जब आप इसको एक बार पढ़ेंगे तो आपको आश्चर्य होगा कि, हम वास्तव में भूल से अन्य साहित्य को देखना पाप समझते थे। इससे हमें बहुत कुछ शिक्षा प्राप्त हो सकती है, आयुर्वेद के मर्मज्ञ बनने की इच्छा हो तो इस ग्रन्थ का अध्ययन अनिवार्य होगा, और निदान और लाजबाब योगों को देख बाग २ हो उठेंगे। मू० प्रथम भाग का १) द्वितीय भाग का १।।)

२७--दीर्घ-जीवन

"माला" सम्पादक द्वारा लिखित, हजारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसंशापत्र प्राप्त, अपने ढंग की निराली पुस्तक है गृहस्थ जीवन की ऐसी पुस्तक आज तक नहीं निकली, प्रातः से सायं तक के कर्तव्य वर्णित हैं। १०१ विषयों का समावेश किया गया है। मू० ।।)

२८--सरल रोग विज्ञान

निदान जैसे उपयोगी विषय को सर्वांग पूर्ण सरलता से समझाने वाली अपूर्व पुस्तक है। यूनानी आंग्ल और आयुर्वेदीय सभी पद्धतियों को एक साथ मिलाकर ऐसा उपयोगी बना दिया है कि साधारण से साधारण की समझ में निदान आ जाय और कोई नवीन रोग शेष न रहा है, कि जिसका निदान इसमें न हो। पुस्तक प्रत्येक वैद्य एवं आयुर्वेद प्रेमी के देखने योग्य है, कोष साइज के ४५० पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का दाम ३) मात्र, अजिल्द का २।) है।

२९--करावादीन कादरी

आयुर्वेद में जिस प्रकार भैषज्य-रत्नावली, रत्नाकर आदि में भेषज संग्रह है, उसी प्रकार यह करावादीन कादरी यूनानी चिकित्सा में व्यवहृत होने वाली विविध प्रकार की औषधियों के संग्रह से परिपूर्ण हैं। जहां आयुर्वेदीय औषधियां कड़वी कषैली होनेके कारण पुराने या सुकुमार प्रकृतिकेलोग खाने में हीला हवाला करते हैं। वहां यह सुस्वाद दवायें खानेको लालायति रहते हैं। सुकुमारप्रकृति के नवाबोंके लिये ही इस चिकित्सा का जन्म हुआ था। इसमें बड़ २ चमत्कारिक योगों का वर्णन आया है। जो वैद्यों के नाम यश एवं द्रव्य पैदा कराने में कमालका काम देता है। दूसरे इसके योग बड़े लाभदायक होते हैं। यह पुस्तक चार भागों में प्रकाशित हुई है, प्रथम भागका १) रु० द्वितीय भाग का १), तीसरा भाग का १) चौथा भागप्रेस में है।

३०—अर्बी फार्सी का कोष

यूनानी चिकित्सा में औषधियों के नाम अर्बी एवं फार्सी में होने के कारण चिकित्सकों को बड़ी असुविधा थी, वह विचारे घर में रखी हुई वस्तु को न जान कर पंसारियों के पास दौड़ लगाते थे। देशी पंसारी भी उन्हें नहीं जानते थे, अतः उनका उत्साह भंग हो जाता था और वह इसी कारण यूनानी चिकित्सा से नाक भौं सिकोड़ा करते थे। उन्हें क्या पता कि बादियान सौंफ को और समग गोंद को कहते हैं। इसीलिये इस कोष की रचना की गई है, अब आप इसके सहारे यूनानी चिकित्सा का भी रसास्वादन सहज में कर सकेंगे। इसमें यूनानी तौल, परभाषायें, भस्म एवं शोधन आदि का भी खूब खुलासा वर्णन शामिल है। मू० ।=) आ० है।

३१—प्रत्यंगिरा

ब्राह्मणों का वही लुप्तप्राय शस्त्र है, जिसके बल से ब्राह्मणों की सत्ता संसार मानता था। ब्राह्मणों के देखने योग्य है। मू० ।)

३२—दत्तात्रय तन्त्र

तन्त्र ग्रन्थों में दत्तात्रय तंत्र का बहुत उत्तम स्थान है, गृहस्थियों के काम के योग्य प्रायः सभी यंत्र, मंत्र, तंत्र इसमें हैं, बिना इसके पूर्ण शान्ति गृह में नहीं रह सकती, सरल भाषा टीका सहित का मू० ।।) आना है।

३३—कुञ्जिका स्तोत्रं

सप्तशती (दुर्गापाठ) के महत्व को सभी जानते हैं, वह क्यों सफल नहीं होती, उसका कारण मय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि विधान के दिया गया है, देवी उपासकों के लिये अमूल्यनिधि है। मू० ।) आना।

३४—बगला विधानम्

बगला कितना सिद्धप्रद उपाय है, यह बात सभी जानते हैं, परन्तु विधान न जानने से लोग निराश्रित हो जाते हैं, यदि आप अपनी इच्छापूर्त करना चाहते हों तो इसे अवश्य पढ़ें।मू० ।) आ०

३५—गायत्री पुरश्चरणम्

गायत्री सफल होने की अभूतपूर्व विधियों के सहित बहुत उपयोगी ग्रन्थ है। मू० !)

३६—इंदुमती

मन प्रसन्न करने के लिये उपयोगी शिक्षाप्रद सांगीत मू० =)

अनुभूत योगमाला के-

विशेषांक (बाजीकरणाङ्क)

अहा क्या ? यही कि बाजीकरण पढ़िये,जानते हैं इसमें क्या है ? वही कोका प्रणीत कोकशास्त्र आदि के बताये रति रहस्य का सुन्दर विशद वर्णन है जिसका जानना जरूरीहै,इसलिये कि इसमें अनुभूत तथा चिकित्सा आदि भी सम्मिलित हैं। मू० १) मात्र।

संग्रहणी अंक

यह बताना बिल्कुल ही आवश्यक है,कि इसमें क्या है ? जब देखो तब लोटा लिये पाखाने पर बैठे हैं, क्या बुरा मालूम होता है। अजीब किस्म की दिन भर कसरत करनी पड़ती है। जो इसके १०॥ के फेर में पड़ा, बस उसका मरण ही होता है। इस अंक में शतशोनुभूत प्रयोग और उपचार आदि सभी वर्णन किये गये हैं।बहुत थोड़ी प्रतियां शेष हैं, शीघ्रता कीजिये। मू० ॥) आना।

धात्वंक

धातु संबंधी सारे विकारों का विशद रूप से विश्लेषण है। उनका मारण, शोधन आदि सुन्दर तथा मुहावरेदार हिन्दी में वर्णित है, आज ही एक कार्ड डाल दीजिये, नहीं तो "चिड़ियां चुग गई खेत पुनि का पछताने होत है"। मू० १)

उपदंशांक

नवयुवकों की असंयम शीलता तथा असावधानीका इतना भीषण परिणाम निकला है कि आज घर २ इसका प्रचार हो गया है, उसी के नाश करने के सुगम उपाय एवम् चिकित्सा इसमें वर्णित है। ११ चित्रों के सहित इस अपूर्व संग्रह का दाम सिर्फ १) रु० है।

नव्यरोगांक (२ भाग)

भारतवर्ष में कौन २ नवीन रोगों ने आकर अपना आतंक जमाया है और जिनका प्रवेश आयुर्वेद में नहीं है। इस कारण निदान और चिकित्सा में वैद्यों को विमुख होना पड़ता है। इसलिये वैद्यों के उपकारार्थ बड़ी खोज के साथ इसको प्रकाशित किया है। इसको मंगाकर अवश्य देखें। कीमत प्रथम भाग का १) द्वितीय भाग ॥) है।

सन्निपाताङ्क

निदान स्थान में वर्णित है कि जिस वैद्य ने सन्निपात ग्रस्त रोगी को स्वस्थ्य कर दिया वह कौन से पुण्य का भागी नहीं। आजकल के वैद्यगण इस रोग में प्रायः कम सफल होते हैं। यह अंक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के प्रसिद्ध २ वैद्यराजों की अनुभवी चिकित्सा के द्वारा आविष्कृत किया गया है। निदान और चिकित्सा का अत्युत्तम समावेश किया गया है। भारत आश्रयीभूत वैद्यों से हमें पूर्ण आशा है कि इस अंक का आश्रय लेकर अवश्यमेव दुःखियों का दुःख दूर करने में दत्तचित्त होकर यश को प्राप्त करेंगे। मू० ।)

कुष्ठांक

यह नाम भी घृणित है। यह वह मर्ज है जिसे मसीह भी अच्छा नहीं कर सकता, लेकिन आज झूठा हो गया, इसे पढ़िये और साथ २ सौंदर्य की की रक्षा कीजिये। मू० ।।)

शिरोरोगाङ्क

शीशी, आधा शीशी सर्व प्रकार के शिरोरोगों की चिकित्सा का कारण, निदानादि वर्णितहै।सुन्दर सरस सचित्र का मू० ।।)

वातव्याध्यंक

वे बैठे थे, वे लेटे थे और वे उस दिन मदनोद्यान में विचरण कर रहे थे, और रो रहेथे इसलिये हमने दौलत का खून करना विचारा है। रोगों के समस्त उपचार इसमें हैं। मू० ।।)

सूजाकांक

वे छटपटा उठते, तिलमिला उठते हैं,और जीते जी उनके प्राण गले में अटक जाते हैं। जो इस व्याधि के कराल गाल में फंसे हैं। पढ़ कर रक्षा कीजिये। मूल्य ।।)

स्नायु रोगाङ्क

शरीर में स्नायु क्याहै ?इसके प्रतिघातसे कौन कौन रोग होते हैं ?वह कैसे दूर किये जासकते हैं। वैद्यों एवं ग्रहस्थियों के लिये खास जानने का विषय है। मू० २)

वस्तिरोगांक पूर्वार्द्ध

यह अंक अपने ढंग का निराला है, इसमें वस्ति में होने वाले सम्पूर्ण रोग साथ ही संक्षिप्त परीक्षाविधि जैसे वस्तशोथ, वस्तिव्रण, वस्तिबंदू मूत्रसंचय, वस्तिशूल, वस्ति टल जाना, वस्ति आध्मान, वस्ति अश्मरी, मूत्र दाह, मूत्रस्तम्भ, मूत्रकृच्छ, बेखबरी में मूत्रत्याग, मंड-मूत्र, मूत्र में रक्त, वस्तिदर्द, बहुमूत्र इत्यादि की चिकित्सा विधिपूर्वक लिखी गई है। मू० १)

हृदय रोगांक

हृदय सम्बन्धी समस्त रोगों के निदान मय लक्षण और सुन्दर २ रंगीन चित्रों के सहित समझाया गयाहै। अंक बड़ाही मनोहरहै आजतक ऐसा सुन्दर और वृहत् विशेषांक नहीं निकलाहै। मू० २)

फुफ्फुस रोगांक

विशेषांक क्या है, अपने ढंग का निराला निकाला है, फुफ्फुस सम्बन्धी सभी विषयों का पूर्ण विवेचन मय निदान के किया गया है। साथ ही फेफड़े के एक्सरे द्वारा लिये गये चित्र भी प्रकाशित हैं। मू० २)

बूटी निर्णयांक

अप्रचलित जड़ी, बूटियों के गुण और पहिचान का विशद वर्णन है, मू० १)

कराबादीन शिफाई

यूनानी के प्रसिद्ध २ योगों का अकारादि क्रम से संग्रह है। यूनानी हिकमत में इसका बहुत श्रेष्ठ स्थान है मू० २)

त्रिधातु सर्वस्व

वात, पित्त, कफ का शरीर में स्थान उनकी पहिचान आदि का अभूर्त पूर्व महत्व इसमेंही पढ़ने को मिलेगा। मू० २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निखिल भारतवर्षीय २७ वें वैद्य सम्मेलन नागपुर से स्वर्णपदक प्राप्त

आयुर्वेदीय-विश्वकोष

हमारे यहां निघंटु जैसे प्रधान उपयोगी विषय में ही बड़ा मतभेद है, यदि कई निघंटुओं को रखकर गुण विवेचना करें तो कोई भी निश्चितमत नहीं हो सकता उसी को कोई शीतल तो कोई उष्ण बतलाते हैं। इस प्रकार किसी भी एक वस्तु के उपयोग से रोग दूर करना वैद्यों के लिये महान कठिन था, हमने यह बात कई बार रोगियों की व्यवस्था करके देखी और उसके फल को देखा और दूसरे ग्रन्थों से मिलान किया तो पूर्ववात असिद्ध साबित हुई। प्रथम तो संस्कृत ग्रन्थों में ही एक दूसरे के विपरीत मिलता है फिर यूनानी एवं डाक्टरी से मिलान करने पर तो जमीन आस्मान का अन्तर निकलता है। आयुर्वेद में केवल ४०० वनस्पतियों का वर्णन मिलता है किंतु यूनानी निघंटु में करीब ६०० वनस्पतियों के गुण मिलते हैं। अंग्रेजी में करीब २००० औषधियों के गुणधर्मों का वर्णन मिलता है कुछ नवीन २ और भी बहुत सी वनस्पतियों तथा खनिजों का वर्णन मिलता है। हमने सबों का संग्रह हजारों अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, अरबी, तथा संस्कृत, हिन्दी के ग्रन्थों एवं प्रांतिक भाषओंका संग्रह एक स्थान पर दे दिया है, इस प्रकार इस कोष में करीब ५००० वनस्पतियों तथा खनिज एवं प्राणिजद्रव्यों का वर्णन आ गया है। किसी भी पैथी का कोई भी पैथी का कोई भी किताबी या प्रान्तीय नाम आपको मालूम हो तुरन्तरदीफवार देखने पर आपको सभों के मत एक स्थान पर उसके वर्णन के साथ मिलेंगे इस प्रकार सभी संदिग्ध पदार्थ जिनका अभी तक कोई भी निश्चय नहीं था कुछ प्रांत वाले किसी वस्तु को किसी नाम से पुकारते और कुछ के बदले कुछ लेते थे, वह सब इन मिलानों से खूब समझकर लिखा गया है अतः सदिग्धता हट गई है। अब ठीक वस्तु का यथार्थ बोध और उसके परीक्षित गुणों में कोई भी विचार करने की बात नहीं रह गई है। बहुत सी नवीन और लातों से खुदने वाली वस्तु का भी आप उपयोग करके अचिन्त्य चमत्कार प्रदर्शन कर सकेंगे। साथ में रोग निदान, उसकी चिकित्सा उस रोग के प्रख्यात योग, उसके बनाने की तरकीब गुण का विवेचन बड़े ही मार्मिक ढंग से किया हुआ मिलेगा। जो काम हजारों ग्रन्थों के पढ़ने से जानते वह सभी बातें केवल इस कोष से सहज में जान सकेंगे। फिर भी किसी विषय का निश्चय तभी होगा जब सब विषय कंठस्थ हो परन्तु ढूढ़ने में ही कई दिन लग जावेंगे। यह बात सिर्फ सैकड़ों में आप इस रदीफवार कोष से निकाल सकेंगे बस कहना यही है कि चिकित्सा करने वाले, वैद्य, हकीम, डाक्टरोंका यदि इस समय संसार में कोई सबसे बड़ा हित करने वाला है तो यही 'विश्व-कोष' है। यही कारण है कि आज संसार में इसकी धूम है, एक भाग मंगवाकर इसकी विशेषतायें देखें, दिखाने में यही एक ग्रन्थ सापेक्ष है प्रथम भाग १०२५० शब्दों २०×२६ साइज के ६५० पृष्ठों के संग्रह सजिल्द ६) रु० अजिल्द ५।) रु० है दूसरा भाग १०६७५ शब्दों के वर्णन युक्त का दाम सजिल्द ६।) रु० अजिल्द ५॥) रु० है तीसरा भाग प्रेस में है, आठ भागो में यह समाप्त होगा जो लोग १) रु० प्रवेश फीस मनीआर्डर से भेज स्थायी ग्राहक बनेंगे, उन्हें पौन मूल्य में यह ग्रन्थ मिल सकेगा।

मिलने का पता—श्री हरिहर प्रेस, बरालोकपुर-इटावा (यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नष्ट नागरिक

[आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री]

(आचार्य श्रीचतुरसेनजी शास्त्री अपनी भाषा की स्वाभाविकता, प्रौढ़ता और ओज के लिये प्रसिद्ध हैं। उनकी प्रारंभिक कहानियाँ छापने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ था। तब से आप बराबर सुधा में लिख रहे हैं। आपकी प्रतिभा सर्वतोमुखी है। गद्य-काव्य, कहानी, उपन्यास, नाटक, वैद्यक-शास्त्र, राजनीति आदि अनेक विषयों पर आपने सफलता-पूर्वक लेखनी चलाई है। हृदय की प्यास, हृदय की परख, अंतस्तल, आरोग्य-शास्त्र आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।—सुधा-संपादक)

वह कंपनी-बाग़ के एक कोने में, एक पुराने, बड़े-से पेड़ के नीचे, अक्सर बैठा रहता है। एक बहुत पुराना, टूटा हुआ टीन का बक्स, एक लोहे का खाली पिंजरा, एक मिट्टी के रंग की सड़ी हुई गुदड़ी, ये सब जितने क़रीने से सजाना संभव है, उस पेड़ के नीचे, ज़मीन पर, बाग़ की चहारदीवारी के निकट, सजाई हुई रक्खी रहती हैं। उसके बदन पर कपड़े नहीं हैं, एक चीथड़ा कमर में लपेटा हुआ है, फिर उस टीन के बक्स में क्या होगा, नहीं कहा जा सकता। परंतु जब इतना यत्न और संचय है, तो उसमें कुछ वस्त्र ऐसे होंगे ज़रूर, जिन्हें वह कभी ख़ास अवसरों पर ही पहनना चाहता होगा। परंतु इन सब सामानों के अलावा उसके पास जो ख़ास चीज़ है, वह एक जापानी बैंजो बाजा है। नित्य प्रातः-काल घर से आते समय मैं देखता हूँ, वह ऊपर आकाश की ओर मुख उठाकर तन्मय भाव से उस बाजे पर गत बजाता है, और अपने आपको ही सुनने योग्य कुछ गुनगुनाता भी है। निस्संदेह उसका कंठ-स्वर अच्छा नहीं, बाजे में वह मिलता भी नहीं, इसी से कदाचित् वह उस भाँति गाता है।

वह नवयुवक है, और अंधा। जिस पेड़ के नीचे उसने डेरा डाला है, उस पर दिन-भर सैकड़ों चिमगादड़ लटके रहते हैं। आने-जाने-वाले उसे आकाश की ओर मुँह उठाए, सड़क की ओर पीठ दिए, आम रास्ते से हटकर गुन-गुनाते और तन्मय होकर बाजा बजाते देख-कर अनायास ही कह सकते हैं कि वह यह बाजा किसी को सुनाकर, आकर्षित करके, पैसा या भीख माँगने के लिये नहीं बजा रहा है। वह उस वृक्ष पर रहनेवाले अरसिक चिमगादड़ों को और उन चिमगादड़ों के निर्माता उस परमेश्वर को भी बाजा नहीं सुनाता है। उसकी न तो इतनी उच्च आत्मा ही प्रतीत होती है, न वह इतना मूढ़ ही है—तब वह इतना तन्मय होकर किसलिये गा रहा है? धुन में मस्त होकर किसलिये बाजा बजा रहा है?

कल आते हुए देखा, वह अपना बाजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने धरे, चुपचाप सड़क की ओर पीठ किए, बैठा था। एक बालक एक टीन का डब्बा लिए,

आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री

उसके पास खड़ा, खूब खुश हो-होकर, खँझरी की भाँति बजा रहा था। परसों देखा, कोई उसका मित्र लड़का आया है, उसने उसे उदारता-पूर्वक अपना बाजा बजाने की अनुमति दे दी है। बालक बाजा बजाना नहीं जानता, किंतु वह धैर्य-पूर्वक, आकाश में अपनी अंधी दृष्टि फेंकता हुआ, उसका नीरस, अस्त-व्यस्त बजाना सुन रहा है। उसने अपने मित्र को जो आनंद-दान—थोड़ी देर बाजा बजाने की अनुमति देकर—दिया है, उससे जो आत्मतुष्टि उसे हुई है, वह उसके असुंदर, अंधे मुख पर प्रत्यक्ष दिखाई पड़ती है। वह एक महान् ज्ञानी गुरु की भाँति गंभीर होकर उस अनाड़ी बालक की उँगलियों से झंकृत ध्वनि पर अपने सिद्ध अभ्यास को तोल-सा रहा है। वह सोच रहा है, कहाँ वह और कहाँ वह, उसके होठों में हास्य की एक तिरछी रेखा खिंच गई है।

यौवन के इस उदय-काल में ही यह अनाथ, निरीह और दृष्टि-हीन, जीवन के समस्त उद्देश्यों से रहित बालक उस वृक्ष के नीचे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने निर्जीव हृदय का रस एक-एक बूँद बखेरकर सुखानुभव कर रहा है। वह कभी किसी से माँगता नहीं देखा गया। उस टूटे लोहे के ख़ाली पिंजरे को उसकी उस गृहस्थी में स्थिर रक्खा देखकर मन में अनेक बातें पैदा होती हैं। उस पिंजरे में कभी अवश्य ही कोई पक्षी रहा होगा। संभवतः तोता हो, और उसे वह उसी यन्त्र से बोलना सिखाता होगा, जैसे वह अब बाजा बजाता है। उस छोटे-से जीव से उसे कितना मोह होगा, इसका एक-मात्र प्रमाण यही है कि वह उस टूटे पिंजरे को साथ लिए फिरता है। क्या इस आशा से कि फिर कोई वैसा ही पक्षी उसे मिल जायगा? और, यह भी क्या संभव नहीं कि उसका वह स्नेह, जो पक्षी में था, निर्जीव बाजे में निहित हो गया हो।

चाहे जो हो, वह एक हृदयवान् ममता-संपन्न बालक है। उसके घर नहीं, परिजन नहीं, सगे नहीं, संबंधी नहीं, उसके नेत्रों में दृष्टि नहीं, मस्तिष्क में ज्ञान नहीं। संसार कितना सुंदर है, यह वह नहीं जानता। लोगों के पास धन है, दौलत है, महल हैं, मोटर है, राज्य है, राजमुकुट है, सेना है, सोना है। शायद वह नहीं जानता, पृथ्वी पर एक आदमी हिटलर है, जो लाखों मनुष्यों का रक्त बहा रहा है। वह मुसोलिनी से परिचित नहीं प्रतीत होता। रूस, जापान, अमेरिका, रेडियो, वायुयान आदि बीसवीं शताब्दि की किसी भी विभूति से कदाचित् वह परिचित नहीं। फिर भी वह मनुष्य का बच्चा है, मनुष्य है, मनुष्य का उसके पास हृदय है, मनुष्य का शरीर है, मनुष्य की-सी ममता है, मनुष्य का-सा ललित कला का ज्ञान भी है। उसकी मूर्खता में एक रस है, करुणा में एक स्वाद है, नेत्र-हीन मुख में एक जीवन है। वह कीड़ा-मकोड़ा तो है नहीं, एक चैतन्य पुरुष है। पुरुष के सभी अंग उसमें हैं, परंतु अविकसित, मूर्च्छित अथवा मुमूर्षु।

मनुष्य ने न-जाने कब से ऐसे बच्चे पैदा करने प्रारंभ किए हैं। दीन समाज का वह एक दीन पुरुष है, भाग्य-हीन जाति का वह एक भाग्य-हीन प्रतिनिधि है, नष्ट देश का वह एक नष्ट नागरिक है।

शास्त्रीजी की उत्तमोत्तम रचनाएँ

आरोग्य-शास्त्र (सैकड़ों चित्र)—मूल्य सजिल्द १२)
हृदय की प्यास (उपन्यास)—मूल्य २), २॥)
हृदय की परख (,,) —मूल्य १), १॥)
ख़वास का ब्याह (,,) —मूल्य १), १॥)
ग़दर के पत्र (कहानियाँ)—मूल्य १), १॥)
अक्षत (कहानियाँ)—मूल्य १), १॥)
सिंहगढ़-विजय (,,) —मूल्य १), १॥)
उत्सर्ग (नाटक) —मूल्य ।=), ॥)
ब्रह्मचर्य-साधन (स्वास्थ्य)—मूल्य ॥), १)

गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-दर्शन

[प्रो० रामकुमार वर्मा एम्० ए०, प्रयाग-विश्वविद्यालय]

(आप सुधा-मंडल के चिर - परिचित लेखक तथा कवि और प्रयाग-विश्वविद्यालय में हिंदी-प्रोफ़ेसर हैं। आपको ओरछा-नरेश द्वारा देव - पुरस्कार मिल चुका है।— सुधा-संपादक)

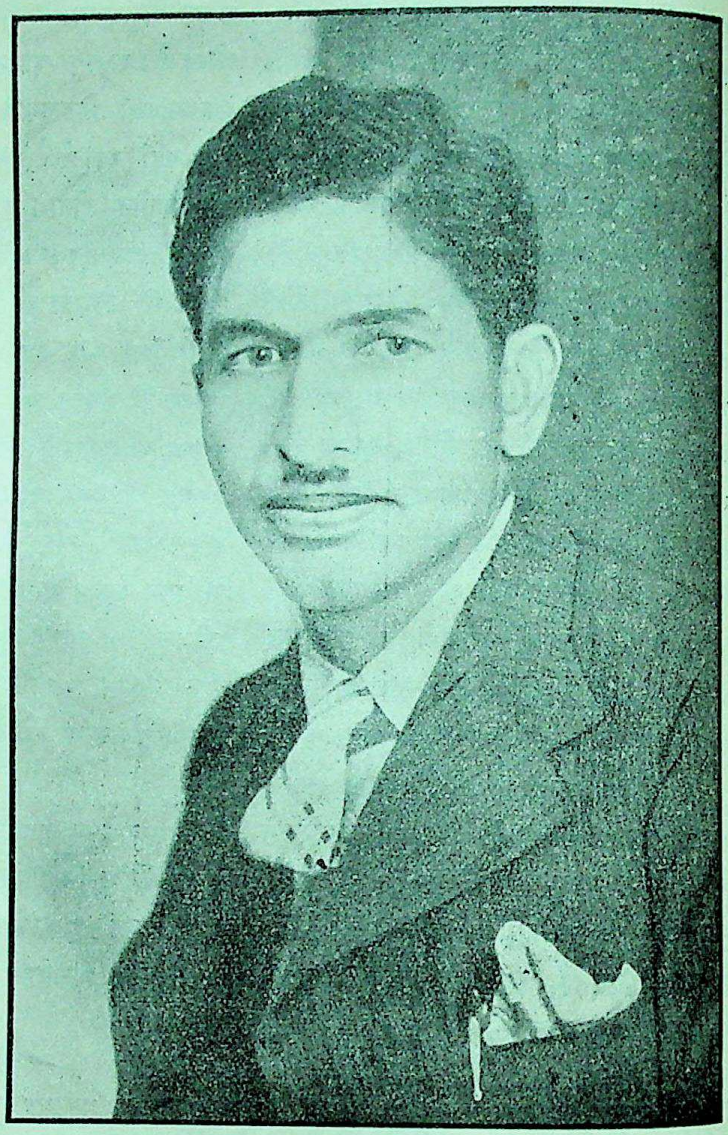

मैं अपना ही चित्र बनाऊँ।

सांध्य गगन निस्तब्ध मौन,
बिखरी - सी सीमा - हीन दिशाएँ;
दो तारे—उनमें झूली हैं,
भूली - सी ये श्याम घटाएँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पवन—एक संकेत—साँस की लहरों-सा रुक-रुककर जाता,
इंद्र - धनुष इस ओर और
उस ओर बूँद बादल बरसाएँ।
चातक सोच रहा है,
निज स्वर से प्रिय का अंतर भर जाऊँ।
मैं अपना ही चित्र बनाऊँ।
अर्ध रात्रि है, ज्योत्स्ना ने
अपना उज्ज्वल संसार बसाया;
एक सत्य जैसे पृथ्वी के
स्वप्न - भरे कण - कण में छाया।
जुही खिली, जैसे क्षण-क्षण के पुण्य सुरभि में झाँक रहे हैं,
निर्झर ने अपने 'कल-कल' को
जोड़ - जोड़कर गीत बनाया।
शशि - सज्जित लहरों में मैं
जीवन का चिर संगीत सजाऊँ।
मैं अपना ही चित्र बनाऊँ।

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूर-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से—जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से—बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुखार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सर्दी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुखार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।), डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥।-) }
२५ " " " ५≡) } श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम प्राचीन भारतीय इतिहास का रूप

[रावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र तथा रायबहादुर पंडित शुकदेवविहारी मिश्र]

(मिश्रबंधुओं की बहुमुखी प्रतिभा से हिंदी-संसार परिचित ही है। आप हिंदी-साहित्य के पथ-प्रदर्शक इतिहासकार और आलोचक तो हैं ही, आपने उपन्यास, नाटक, काव्य, राजनीति, इतिहास, अर्थशास्त्र, धर्म आदि विषयों पर भी पुस्तकों का प्रणयन किया है। रावराजा ही हमारे एकमात्र साहित्यिक हैं, जिन्हें डी० लिट्० की उपाधि से विभूषित करके प्रयाग-विश्वविद्यालय ने अपना भी गौरव बढ़ाया है। खेद है, और विश्वविद्यालयों ने हमारे कवि-कोविदों के प्रति सदा उपेक्षा का भाव ही रक्खा है !—सुधा-संपादक)

पाश्चात्य ऐतिहासिक भारतीय इतिहास का प्रारंभ-काल ३२६-२३ ईसा-पूर्व (बी० सी०)वाले सिकंदरी धावे से ही बहुत करके मानते हैं, और यदि बहुत आगे बढ़े, तो गौतम बुद्ध, महाभारत या रामायण का कुछ हाल कह दिया। वास्तव में हमारे प्राचीन इतिहास की महत्ता गौतम बुद्ध से पूर्व ही थी। अतएव आज हम उसका कुछ हाल प्रिय पाठकों के सामने रखते हैं। हमारे यहाँ सत्ययुग, त्रेता, द्वापर और कलि-युग के चार समय-विभाग माने जाते हैं, जिनके पौराणिक परिमाण बहुत लंबे-चौड़े होने से बेकार हैं ; किंतु पुराणों में विविध समयों और मन्वंतरों की घटनाओं के बहुत कुछ ग्राह्य हाल लिखे हैं। हमारे सात मन्वंतरों में अंतिम वैवस्वत मन्वंतर, हमारी समझ में, त्रेता से आरंभ होता है, किंतु वह चल अब तक रहने से है अनंतप्राय। अतएव वैवस्वत

स्वर्गीय पं० गणेशविहारी मिश्र (बाईं ओर)
रावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र (दाहिनी ओर)
रायबहादुर पंडित शुकदेवविहारी मिश्र (बीच में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्वंतरारंभ से काल-गणना युगों के अनुसार चलाई जा सकती है। पहले छ मन्वंतरों के नाम हैं स्वायंभुव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत और चाक्षुष। हमारी समझ में इन छओं को मिलाकर सत्ययुग माना जा सकता है। सबसे पहला स्वायंभुव मन्वंतर है। उनके दो पुत्र प्रियव्रत और उत्तानपाद थे। स्वायंभुव-सहित प्रियव्रत के वंश में २७ नरेशों के नाम पुराणों में उल्लिखित हैं, जिनमें स्वायंभुव मनु, प्रियव्रत, भरत और ऋषभदेव की मुख्यता है। इस वंश में एक बार सारी एशिया के देशों का बटवारा भाइयों में हुआ था। मोहंजोदड़ो और हड़प्पा की खोदाई से जिस सभ्यता का पता चलता है, वह पाश्चात्य पंडितों द्वारा ईसा-पूर्व की अट्ठाईसवीं शताब्दी की मानी गई है। उसमें बढ़ी हुई सभ्यता का परिचय मिलता है, जिसका कथन यहाँ अनावश्यक है, क्योंकि वह सर्व-साधारण को ज्ञात ही है। आगे इसी लेख में जो समय-निरूपण होगा, उसके हिसाब से स्वायंभुव मन्वंतर का भी आरंभ-काल इसी शताब्दी से प्रायः १०० वर्ष पीछे है। अतएव हमें इस काल की आर्य तथा अनार्य, दोनो सभ्यताओं का अच्छा पता लगता है। स्वायंभुव मन्वंतर के पीछे स्वारोचिष, उत्तम, तामस और रैवत-नामक चार मन्वंतर हुए। ये सब मनु विष्णुपुराण के अनुसार प्रियव्रत के वंशधर थे, किंतु इन चारो में से प्रत्येक मन्वंतर में कितने-कितने नरेश एक दूसरे के पीछे हुए, सो किसी पुराण में नहीं लिखा। ऐतिहासिकों का सिद्धांत है कि काल-गणना के बढ़ाने का प्रयत्न न करके कम-से-कम समय, जिसका मानना आवश्यक हो, इतिहास के लिये दृढ़ मानना चाहिए। प्रत्येक मन्वंतर का समय पुराणों में लाखों वर्षों का दिया हुआ है, किंतु कम-से-कम वह एक-एक राजवंश तो अवश्य होगा। इस प्रकार इन चारो मन्वंतरों में चारो मनुओं के अतिरिक्त और नहीं, तो एक-एक अन्य राजा तो होगा ही, सो चारो को मिलाकर उनमें कम-से-कम आठ राजाओं का होना निश्चित है। इस प्रकार स्वायंभुव मन्वंतर के २७ तथा इन चारो के आठ राजे मिलाकर इन पाँचों में अधिक नहीं, तो ३५ नरेश होंगे ही। ३६वाँ नंबर उत्तानपाद-वंशी चाक्षुष मनु का पड़ता है, जिनके नाम पर छठा मन्वंतर चला। इनके पीछे नौ और राजाओं के नाम लिखे हैं। इस प्रकार इन छओं मन्वंतरों में कम-से-कम ४५ नरेश एक दूसरे के पीछे हुए। ऐतिहासिकों का विचार है कि एक शताब्दी में एक दूसरे के पीछे छ राजाओं तथा पाँच पुश्तों का पड़ता बैठता है। लिखे तो हमारे यहाँ राजाओं के प्राचीन समय बहुत लंबे-लंबे हैं, किंतु वर्तमान ऐतिहासिकों का ही पड़ता ठीक मान लेने से इन छओं मन्वंतरों अर्थात् सत्ययुग में ७५० वर्ष बैठते हैं।

उत्तानपाद-वंशी ध्रुव, चाक्षुष, पृथु-वैन्य तथा दक्ष-नामक प्रधान नरेश थे, जिनके विवरण पुराणों में बहुत कुछ लिखे हैं, तथा सर्व-साधारण को ज्ञात भी हैं। अतएव उनका यहाँ दोहराना अनावश्यक है। स्वारोचिष मन्वंतर में दुर्गा-सप्तशती में लिखी हुई घटनाएँ मानी जा सकती हैं, क्योंकि उस काल के सुरथ नरेश का होना उसी मन्वंतर में कहा गया है, और ऋषियों ने उन्हीं से दुर्गा-सप्तशती की कथाएँ कही हैं। महाप्रलय की भी कथा इसी काल की है। उत्तम, तामस और रैवत मन्वंतरों में गजेंद्र-मोक्ष की कथा और वैकुंठ-निर्माण कहे गए हैं। वैकुंठ स्वर्ग भी समझा जाता है, किंतु इस हिसाब से पृथ्वी पर भी कोई स्थान समझ पड़ता है। चाक्षुष मन्वंतर में हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिपु, समुद्र-मंथन, देवासुर-संग्राम और बलि-बंधन की कथाएँ हैं। ये उपाख्यान भारत के न होकर फ़ारस के समझ पड़ते हैं। वराह-नृसिंह, मोहिनी और वामन भगवान् के चरित्र इन्हीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटनाओं से संबद्ध हैं। वैदिक कथनों तथा ज़ैंदावस्ता को मिलाकर पंडितों ने यह निष्कर्ष निकाला है, कि देव और असुर, दोनो पहले फ़ारस में थे, और असुरों से हारकर ही देवगण भारत आए। यहाँ आकर उन्होंने अनार्यों को पराजित कर ऋग्वेद का गान किया। उधर फ़ारस में रह जानेवाले आर्यगण पारसी कहलाए, जिन्होंने पावक-पूजन करके ज़ैंदावस्ता का गान किया। पुराणों में लिखा है कि प्रह्लाद भविष्य में इंद्र होंगे। इससे इस बात की झलक मिलती है कि किसी समय वह इंद्र हुए होंगे। उधर योगवाशिष्ठ में आया है कि बलि-बंधन द्वारा असुर-पराजय के पीछे प्रह्लाद ने भारी तपस्या की, जिस पर विष्णु द्वारा देवताओं से संधि होकर उन्हें इंद्र-पद मिला, और विष्णु ने वादा किया कि उस दिन से पृथ्वी को असुरों का रुधिर नहीं पान करना था। इन बातों से प्रकट है कि उसी संधि के पीछे प्रह्लाद इंद्र हुए, और देवेंद्र इंद्रालय आदि किसी स्थान में जा रहे। अनंतर चंद्र ने गुरु-पत्नी का अपहरण किया, जिससे चंद्र-वंश-प्रवर्तक बुध पुत्र उत्पन्न हुआ। इसका विवाह मनु वैवस्वत की पुत्री इला से हुआ, और पुरूरवस पुत्र की प्राप्ति हुई। गुरु-पत्नी के अपहरण से इंद्र और चंद्र तक का युद्ध हुआ था, जिससे अथवा किसी अन्य कारण से मनु वैवस्वत अपने जमाई बुध को लेकर भारत चले आए, सो यहाँ वैवस्वत मन्वंतर का आरंभ हुआ। मनु ने अयोध्या में राज्य जमाया, और बुध ने प्रतिष्ठानपुर अर्थात् प्रयाग के निकट झूसी में। बुध-वंशी सारे ऐल कहलाते थे। इला के वंशधर थे, तथा भारत में इलाव्रत से आए थे, इन्हीं दोनो अथवा किसी एक कारण से वे ऐल कहलाते थे। ऋग्वेद का निर्माण-काल भी चाक्षुष मन्वंतर से चलता है। सबसे प्राचीन वेदर्षि स्वयं चाक्षुष मनु थे। जिन दक्ष प्रजापति का विनाश महादेव द्वारा हुआ, वे चाक्षुष-वंशी दक्ष थे, अथवा कोई दूसरे, सो निश्चित नहीं। कथा भी बहुत करके दार्ष्टांतिक-सी है, और राम के पीछे इसका होना कथित है।

अब त्रेता का वर्णन चलता है। ऐतिहासिकों का विचार है कि भारत में आर्यागमन दो धाराओं में हुआ। इधर विष्णुपुराण का कथन है कि ब्रह्मा ने दो बार सृष्टि रची। ये दोनो विचार एक दूसरे का समर्थन करते हैं। पहली आर्य-धारा छओं मन्वंतर-काल की है, और दूसरी वैवस्वत मन्वंतर से चलती है। इसमें मुख्य शासक घराने सूर्य और चंद्र-वंशों के हैं। चंद्र-वंश के प्रायः दस राजघरानों के वंश-वृत्त पुराणों में मिलते हैं, जिनमें मनु से भगवान् रामचंद्र के समय तक ३८ से ४२ राजों के नाम, एक दूसरे के पीछे, विविध चांद्र वंशों में आते हैं। इधर सूर्य-वंश में दो ही मुख्य राजकुल हैं, अर्थात् अयोध्या और मिथिला के। इनमें से इसी समय मिथिला में केवल २६ राजाओं के नाम लिखे हैं, तथा अयोध्या में ६३ के। चंद्र-वंशी राजघरानों से मिलान करने पर ज्ञात होगा कि ये दोनो सूर्य-कुल के वंश-वृत्त अशुद्ध हैं। देखने में भी अचंभा-सा लगता है कि जितने समय में अयोध्या में दशरथ तक ६२ राजे पुराणों के अनुसार हुए, उतने ही में मिथिला में केवल २६, तथा चंद्र-वंशियों में ३८ से ४२ तक। जहाँ सब चंद्र-वंशी राजघरानों की संख्याएँ आपस में मिल जाती हैं, वहीं दोनो सूर्य-वंशों की न तो आपस में मिलती हैं, न चंद्र-वंशियों से। पुराणों में रामायण की कथा का विवरण त्रेतांत का है, अथच महाभारतवाला द्वापरांत का। फिर भी पीढ़ियाँ जोड़ने से राम, पुराणानुसार, मनु से ६३-वीं पुश्त पर पड़ते हैं, किंतु युधिष्ठिर केवल ५२वीं पर। इस प्रकार युधिष्ठिर राम से ११ पीढ़ी ऊँचे हो जाते हैं, जो बात सभी पौराणिक कथनों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरुद्ध पड़ती है। राम से १४ पीढ़ी नीचेवाले स्वयं राजा बृहद्बल महाभारतीय चक्रव्यूह के युद्ध में मारे गए थे। इस वंश-वृक्षोंवाली एक भूल ने प्राचीन भारतीय इतिहास में भारी गड़बड़ पैदा कर दी है। कई पाश्चात्य ऐतिहासिक महाभारतीय युद्ध का समय रामायणवाली कथा से पहले का मानते हैं, और एकाध भारतीय ऐतिहासिक भी ऐसा ही कहते हैं। फिर भी विचार करने से यह गड़बड़ बड़ी सुगमता-पूर्वक ठीक हो जाती है। पुराणों में मैथिल-राजवंश के पूर्व-पुरुष निमि इक्ष्वाकु के पुत्र कहे गए हैं, और कोई दूसरा प्राचीन राजकुल मिथिला में नहीं कथित है। उधर ब्राह्मण-ग्रंथों के देखने से प्रकट है कि माथव-नामक किसी राजपुरुष ने अपने पुरोहित रहूगण के साथ सदानीर (राप्ती)-नदी पार करके मिथिला में राज्य जमाया। समझ पड़ता है, माथव का वंश बारह-चौदह पुश्तों तक राज्य करता रहा, और तब इक्ष्वाकु-वंशी निमि वहाँ के राजा हुए। पुराणों में प्रायः ऐसा आया है कि वंश-वृक्षों में राज्य-हीन पुश्तों के नाम छोड़ दिए गए हैं, तथा राज्यारोही अपने प्राचीन राज्यकर्ता पूर्व-पुरुष का वंशधर न लिखा जाकर पुत्र ही कह दिया गया है। इस कथन के दस-बारह उदाहरण हमारे प्राचीन भारतीय इतिहास के राजवंशोंवाले वर्णन में आए हैं। यहाँ स्थानाभाव के कारण नहीं लिखे जाते। निमि के पुत्र मिथि राजा हुए, जिनके वंशधर रामचंद्र के ससुर सीरध्वज जनक थे। देश का नाम मिथिला चाहे माथव के नाम पर पड़ा हो, चाहे मिथि पर। विचार करने से राम के पिता का वंश-नंबर ३८वाँ पड़ता है, जैसा अभी प्रकट किया जायगा। सीरध्वज जनक दशरथ के समधी समकालीन होने से मनु वैवस्वत से प्रायः उतनी ही पीढ़ी नीचे होंगे, जितनी दशरथ थे। यदि माथव-वंशियों का राज्य १२ पुश्तों का माना जाय, तो जनक-वंश में अज्ञात नामोंवाली १२ पीढ़ियाँ जुड़ने से उनका समय दशरथ से मिलेगा, अन्यथा नहीं। जिन अहल्या को राम ने पवित्र किया था, उन्हीं के पुत्र शतानंद जनक के पुरोहित होने से इस समकालीनता का एक और कारण भी मिल जाता है। पुराणों तथा वेदों में चंद्र-वंशियों के विवरण बहुतायत से हैं, किंतु सूर्य-वंशियों के अपेक्षाकृत बहुत कम। कारण, चांद्र शाखाओं में राज्य बहुत अधिक थे, और नरेश भी विशेष प्रतापी हुए। इन कारणों से भी चांद्र वंशावलियाँ तो व्यासों द्वारा सुरक्षित रहने से ठीक-ठीक मिलती रहीं, किंतु सूर्य-वंशियों की बिगड़ गईं।

अब अयोध्या की वंशावली उठाई जाती है। इसमें वैवस्वत मनु से रामचंद्र तक पुश्तें लिखी तो ६३ तक हैं, किंतु ध्यान-पूर्वक देखने से ६५ पड़ जाती हैं। पंडितों का विचार है कि ये सब पुश्तें न होकर एक दूसरे के पीछे होनेवाले नरेशों के नाम हैं। हमारे पुराण-ग्रंथ किसी-न-किसी रूप में चले ईसा-पूर्व आठवीं-नवीं शताब्दी से आते थे। बौद्ध-साहित्य से भी प्रकट है कि बुद्ध-पूर्व-काल से यहाँ प्राकृत पुराणों के पाठ की प्रणाली चलती थी। फिर भी वर्तमान पुराण-ग्रंथ छितर गए, और गुप्त-काल में या उससे कुछ आगे-पीछे, प्रायः तीसरी से छठी शताब्दी तक, सुसंपादित होकर बहुत करके अपने वर्तमान रूपों में स्थापित हुए। ऐसा मत पंडितों का है। और, इस बात से भी सिद्ध होता है कि पहली शताब्दी के अमरकोष ने पुराणों का जो लक्षण दिया है, उसके अनुसार १८ में से केवल एक (विष्णु) पुराण ठीक उतरता है, १७ नहीं। यदि अमरसिंह के समय पुराण-ग्रंथ अपने वर्तमान रूपों में होते, तो वह ऐसा लक्षण ही क्यों बनाते, जो १८ में से १७ के विषय में ठीक न बैठता। इससे प्रकट है कि उनके पीछे पुराणों के रूपों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारी फेरफार हुए हैं। गुप्तकालीन व्यासों ने सूर्य-वंश का पूरा हाल जाने बिना ही जितने मिथिलेतर सूर्य-वंश नाम मिले, प्रायः वे सब अयोध्या की सीधी वंशावली में लिख दिए, यद्यपि उनमें से २६ नाम अयोध्या की बिरादरीवालों के थे, सीधे पूर्व-पुरुषों के नहीं, जैसा तत्कालीन घटनाओं से साफ़ प्रकट होता है। व्यासों ने घटनाएँ न बदलीं, क्योंकि उन्हें जान-बूझकर मिथ्या इतिहास नहीं देना था, वरन् केवल पूरा हाल न जानने से चार राज्यों के समस्त नाम एक ही वंशावली में लिख दिए, जिससे समय-संबंधी भारी गड़बड़ उठ खड़ा हुआ। फिर भी ध्यान-पूर्वक घटना मिलाने से प्रकट हो जाता है कि ये बढ़े हुए १२ नाम हैं हरिश्चंद्र-संबंधी वंश के, छ सगरवाले के तथा ८ दक्षिण-कोशल-राज-कुल के। इन वंशों के हरिश्चंद्र राम से प्रायः ३२ पीढ़ी ऊपर के पूर्व-पुरुष कहे गए हैं, सगर २० पीढ़ी ऊपर के तथा दक्षिण-कोशल-वंशी कल्माषपाद ११ पीढ़ी ऊपर के। यद्यपि वास्तव में हरिश्चंद्र राम से प्रायः २५ वर्ष पहले के होंगे, सगर राम से कुछ पीछे के और कल्माषपाद राम के प्रायः समकालीन। इन बातों के कारण कई समकालीनताओं से सिद्ध होते हैं, किंतु स्थानाभाव से यहाँ थोड़े ही लिखे जाते हैं।

वशिष्ठ से युद्ध कर कान्यकुब्ज-नरेश विश्वामित्र तपस्वी हो गए। इन्होंने वशिष्ठ को पुरोहित के पद से हटाकर हरिश्चंद्र के पिता त्रिशंकु को गद्दी दिलाई। अनंतर हरिश्चंद्र के समय वशिष्ठ फिर पुरोहित हुए, तथा शुनःशेप-संबंधी नर-बलि का अनुष्ठान हरिश्चंद्र के यहाँ होने लगा, जिसमें पधारकर विश्वामित्र ने अपने भागिनेय शुनःशेप को बचाया। विश्वामित्र और वशिष्ठ ने उत्तर-पांचाल-नरेश सुदास के यहाँ प्रतिष्ठित होकर वेद का तीसरा और सातवाँ मंडल गाया, जहाँ फिर इनका झगड़ा देख पड़ता है। निरुक्त, ऐतरेय तथा पंचविंश ब्राह्मण से वेदर्षि विश्वामित्र का आदिम राजत्व प्रमाणित है। इनके तृतीय मंडल ऋग्वेद में भी पिता गाथिन (गाधि) के मंत्र हैं, और यह कौशिक भी हैं। इन कारणों से हरिश्चंद्र के यहाँवाले कान्यकुब्ज-नरेश विश्वामित्र ही सुदास के यहाँवाले तृतीय मंडलकार विश्वामित्र ठहरते हैं। अतएव हरिश्चंद्र और सुदास का समय एक ही नहीं, तो निकट का था। उधर सुदास के पिता दिवोदास तथा राम के पिता दशरथ मिलकर (ऋग्वेद और रामायण के मिलाने से) तिमिध्वज शंबर को मारते हैं। सुदास की फूफी अहल्या को राम पवित्र भी करते हैं। राम के समकालीन पौरव संवर्ण और कुरु से सुदास हारते भी हैं। भरद्वाज ऋषि राम का आदर वन-गमन के समय करते तथा सुदास के पिता दिवोदास से दान (ऋग्वेद षष्ठ मंडल के अनुसार) पाते हैं। अतएव राम, सुदास और हरिश्चंद्र के समय मिल जाते हैं, या एक दूसरे से बहुत दूर के नहीं ठहरते। अतएव हरिश्चंद्र राम से ३० या ३२ पीढ़ी ऊपर के पूर्व-पुरुष नहीं हो सकते।

अब सगर का समय लिया जाता है। काशीराज प्रतर्दन हैहयवंशी नरेश वीतिहोत्र को हराते हैं, जिससे वह भरद्वाज का साथी भार्गव ऋषि एवं वेद-कार हो जाता है। उसी के पौत्र दुर्जय और प्रपौत्र सुप्रतीक को सगर हराते हैं। उधर प्रतर्दन रामायण के अनुसार रामाभिषेक में न्योते आते हैं। हरिवंश के अनुसार अगस्त्य की स्त्री लोपामुद्रा प्रतर्दन के पौत्र अलर्क को आशीर्वाद देती हैं, तथा स्वयं अगस्त्य रावण से लड़ने में राम की शस्त्रास्त्रों से सहायता करते हैं। वशिष्ठ सगर के पुरोहित भी होते हैं। इन कारणों से सगर राम से पीछे के ठहरते हैं, न कि उनसे बीस पीढ़ी ऊपर के पूर्व-पुरुष।

अब दक्षिण-कोशल-वंश उठाया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैषध-नरेश नल विदर्भराज भीम (नं० ३४) के दामाद तथा उत्तर-पांचाल-नरेश मुद्गल (नं० ३६) के ससुर थे । अतएव इनका समय नं० ३१ के बराबर बैठता है । यही नल दक्षिण-कोशल-नरेश कल्माषपाद के प्रपितामह ऋतुपर्ण के मित्र थे, जिससे उनका भी समय नं० ३५ के बराबर आता है। वास्तव में वह नं० ३६ है। अतएव कल्माषपाद का समय नं० ३९ पर आवेगा । उधर उपर्युक्त मुद्गल के पौत्र दिवोदास तथा पौत्री अहल्या थी, जिसे राम ने पवित्र किया । कल्माषपाद का समय अहल्यावाले से मिलता है, जिससे वह राम से ग्यारह पुश्त ऊपर के पूर्व-पुरुष नहीं हो सकते। कल्माषपाद से एक दूसरे के शत्रु वशिष्ठ और विश्वामित्र का भी व्यवहार था, जिससे भी यह समय रामवाले से मिलता है ।

इन कारणों से सिद्ध है कि हरिश्चंद्र, सगर और कल्माषपाद की ये २६ पीढ़ियाँ बिरादरी-वालों की होने से राम के पूर्व-पुरुषों से निकल जायँगी, जिससे राम का नंबर ६५ के स्थान पर ३९ होगा। सूर्य और चंद्र, दोनो वंश चलते मनु वैवस्वत ही से हैं, पहला उनके पुत्रों से और दूसरा कन्या इला से। इसलिये अपने बुद्ध-पूर्व के भारतीय इतिहास में हमने सब नरेशों को यथासाध्य नंबर दे दिए हैं, जिसका प्रयोजन है कि मनु से वह उतनी पीढ़ी नीचे का वंशधर है। रावण भी वैशाल-वंशी सूर्य-कुल से उत्पन्न नं० ३५ पर था। उसके वंश में शाखा का कथन अधिकतर नरेशों पर न होकर पुश्तों पर था । पीढ़ियाँ एक शताब्दी में पाँच ही होती हैं, तथा राज छ। इसी से रावण का स्थान राम से ४ नंबर पहले है। उपर्युक्त कथनों से प्रकट है कि मनु से राम तक चलनेवाले त्रेता-युग में ३९ नरेश थे, और एक शताब्दी में छ के हिसाब से यह समय ६५० वर्षों का पड़ता है । त्रेता के सूर्य-वंश में अयोध्या, मिथिला, वैशाली, दक्षिण-कोशल, सगर, आनर्त और हरिश्चंद्रवाली सात रियासतें थीं, जिनमें मुख्य नरेशों में स्वयं मनु, इक्ष्वाकु, पुरंजय, मान्धातृ, त्रसदस्यु, रघु, दशरथ, राम, हरिश्चंद्र, सगर, ऋतुपर्ण, कल्माषपाद, शर्याति, आनर्त, निमि, मिथि, सीरध्वज जनक, करंधम और मरुत्त गिनाए जा सकते हैं ।

चंद्र-वंश में पौरव, यादव, आनव, द्रौह्य और तौर्वश नाम्नी पाँच शाखाएँ थीं। पौरव शाखा में हस्तिनापुर और पांचाल की प्रधानता थी, तथा द्विमीढ़ का विदर्भ-राज्य, उत्तर-पांचाल, दक्षिण-पांचाल, मागध, चेदि, काशी और कान्य-कुब्ज की गणना है। इनमें मुख्य नरेशों में नहुष, ययाति, पुरु, दुष्यंत (नं० २२), भरत (२३), हस्तिन, अजमीढ़, संवर्ण, कुरु, द्विमीढ़, भृम्यश्व, सृंजय, अभ्यावर्तिनचायमान, सुदास, काशिक, धन्वंतरि (३१, काशीपति), दिवोदास प्रथम, जह्नु, कुशिक, गाधि और विश्वामित्र गिनाए जा सकते हैं । यादवों में माथुर और हैहय नाम्नी दो शाखाएँ थीं। माथुर शाखा पहले चंबल के निकट रहकर शायद हैहयों के दबाव से विदर्भ (बरार) गई, और वहाँ से आनर्त तथा मथुरा में फैली। हैहय शाखा ने भारी महत्ता प्राप्त की, किंतु पराए अधिकारों का मान कम करने से अंत में इसे राज्य-च्युत होना पड़ा। यादवों में मुख्यता यदु, शशिबिंदु, विदर्भ, भीमरथ, मधु, महिष्यंत, दुर्दम, अर्जुन, तालजंघ और वीतिहोत्र की कही जा सकती है। तौर्वश शाखा में मरुत्त की मुख्यता थी । इन्होंने पौरव दुष्यंत को गोद ले लिया, जिससे यह राज्य पौरवोंवाले में मिल गया। द्रुह्यु-वंश का विस्तार बहुत होकर सारे पंजाब और अफ़ग़ानिस्तान पर इसका प्रभाव जमा तथा कई राज्य भी स्थापित हुए, किंतु मध्य-देश से दूर होने के कारण पुराणों में इनके कथन कम हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजराज्य भी प्रायः इसी वंश के थे। आनव-कुल की पूर्वी तथा पश्चिमी दो शाखाएँ थीं। पूर्वी अंग शाखा में बलि, अंग और दशरथ के मित्र लोमपाद की मुख्यता है। उत्तर-पश्चिमी शाखा में उशीनर, शिवि, केकय (केकयी के पिता) आदि की मुख्यता है। पीछे यह राज्य भरत के दोनो पुत्रों पुष्कल और तक्ष में बट गया, जिनके नामों पर पुष्करावती और तक्षशिला के राज्य चले। और कई राज्य भी स्थापित हुए, किंतु उनके वंश-वृत्त नहीं प्राप्त हैं। सूर्य-वंश में अयोध्या, मिथिला और वैशाली के वंश-वृत्त प्राप्त हैं। वैशालीवाला तो ठीक है, किंतु मिथिला का वंश-वृत्त घटा हुआ है, और अयोध्या का बढ़ा हुआ। चंद्र-कुल के दस वंश-वृत्त पुराणों में उपस्थित हैं। इन तेरह वंश-वृत्तों में आठ पूरे हैं, और पाँच अधूरे। त्रेता में आर्यों ने बढ़कर सारे उत्तरी और मध्य-भारत पर राज्य फैलाए। राक्षसों आदि के भी राज्य बने रहे, जिनमें दशरथ और राम के समय में तिमिध्वज-शंबर, वर्चिन, भेद और रावण की प्रधानता थी। शंबर को दशरथ और दिवोदास ने मिलकर ध्वस्त किया, वर्चिन और भेद को सुदास ने और रावण को राम ने। इनमें से प्रथम तीन के विवरण ऋग्वेद से प्राप्त हैं, और रावण के रामायण से। त्रेता में आर्य-सभ्यता का प्रसार भारत में अच्छा हुआ। सत्ययुग और त्रेता का मिलकर १,४०० वर्षों पर विस्तार था, अर्थात् ७५० वर्षों पर सत्ययुग का और ६५० पर त्रेता का।

द्वापर का हाल कुछ विशेष विस्तार के साथ ज्ञात है। इसमें भी तेरह राजवंशावलियाँ प्राप्त है, जिनमें केवल दो अपूर्ण हैं और शेष पूर्ण। इसमें वंशावलियाँ केवल राजाओं के नामों पर न चलकर पुश्तों पर भी ज्ञात हैं। द्वापर के सारे राजवंश मिलाने से चौदह पीढ़ियों का पड़ता बैठता है, जिससे राम के पीछे से महाभारतीय युद्ध तक का समय प्रायः २८० वर्षों का आता है। इसमें मुख्यता लव, कुश, हस्तिनापुर, मगध, चेदि और माथुर राज्यों की थी, प्रधानतया हस्तिनापुर तथा मगध की। द्वापरीय नरेशों में कुश, लव, सुदर्शन, बृहद्बल, श्रुतायुस, भगीरथ, मूलक, प्रतीप, शांतनु, भीष्म, अर्जुन, उग्रायुध, द्रुपद; नीप, अणुह, उपरिचर वसु, बृहद्रथ, जरासंध, चेदि, शिशुपाल, सत्वंत, वृष्णि, कंस, श्रीकृष्ण और कर्ण की मुख्यता थी। और भी कई नरेश महत्ता-युक्त थे, जिनके कथन महाभारत में आए हैं। युधिष्ठिर-कृत राजसूय के संबंध में महाभारत सारे भारत के नरेशों का उत्कृष्ट कथन करता है। रामायण द्वारा त्रेतांश तथा महाभारत द्वारा द्वापरांश के अच्छे कथन हुए हैं।

महाभारत के पीछे गौतम बुद्ध (जन्म ५६३ बी० सी०) के पूर्व तक हमने आदिम कलिकाल माना है। महाभारतीय युद्ध का समय विविध आधारों में भिन्न है। वायुपुराण के आधार पर डॉक्टर जैसवाल इसे १४२५ बी० सी० (ईसा-पूर्व) के लगभग मानते हैं, किंतु उस आधार में महापद्मनंद से महाभारतीय युद्ध - काल १०५० लिखा हुआ है। ऐसे पौराणिक कथन प्रायः समय को बढ़ाकर लिखते हैं। डॉक्टर सीतानाथ प्रधान इसी समय को ११५० बी० सी० के निकट मानते हैं, और पार्जिटा महाशय ९५० बी० सी० के निकट। पीछेवाला अंदाज़ भी ठीक मान लेने से रामचंद्र का समय प्रायः १२५० बी० सी० आता है, त्रेतारंभ का १९०० बी० सी० और सत्ययुगारंभ का २६५० बी० सी०। यह मोहंजोदड़ो और हड़प्पा से प्रायः १०० वर्ष पीछे का है।

महाभारतीय युद्ध के पीछे महाराजा युधिष्ठिर ने ३६ वर्ष राज्य किया। भगवान् श्रीकृष्ण के नेतृत्व में यदुवंश में यादवों और भोजों की दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान शाखाएँ थीं, जिनमें पुरानी मनमैली चली आती थी। महाभारतीय युद्ध में कृष्ण के पांडवों की ओर होने पर भी उन्हीं के वृंदवाले भोजवंशी कृतवर्मा कौरवों की ओर से लड़े। इन ३६ वर्षों में भोजों और यादवों में मनमैली बढ़कर प्रचंड शत्रुता के रूप में परिणत हो गई। बातों-ही-बातों में दोनों दलों में एक दिन श्रीकृष्ण के सामने ही युद्ध हो पड़ा, जिसमें महाभारत के अनुसार दोनों दल समाप्तप्राय हो गए। भोज लोग फिर भी अपने राज्य मातृकावत में स्थापित रहे, तथा यादव, अर्जुन के नेतृत्व में, इंद्रप्रस्थ चले आए, जहाँ का राज्य उन्हें अर्जुन द्वारा अर्पित हुआ, तथा द्वारावती को किसी शत्रु ने समुद्र में डुबो दिया। यदि कोई अन्य प्रबल शत्रु न होता, तो यादव द्वारावती डूबने पर भी कुछ हटकर वहीं रहते, और अपना राज्य छोड़कर इंद्रप्रस्थ न चले आते। इन कारणों से किसी अकथित अन्य शत्रु का भी दर्प समझ पड़ता है। यदु-वंश का विनाश देखकर पांडवों ने सोचा कि इस सहायक-विनाश के पीछे वे संसार में मान-पूर्वक न रह सकेंगे। अतएव उन्होंने महाप्रस्थान का विचार किया, जिसे स्वयं व्यास ने भी ठीक माना। इससे भी किसी भारी शत्रु के प्रबल पड़ जाने का भान होता है।

अब आदिम कलिकाल (९१४ से ५६३ बी० सी०) का समय उठाया जाता है। पुराण इसके विषय में केवल तीन राज्यों के वंश-वृक्ष देकर शेष वंशों के नरेशों की गिनती-मात्र दे देते हैं। ये तीन वंश हैं रामात्मज लव (नं० ५४—८०), हस्तिनापुर (नं० ५४ – ८१) तथा मगध (नं० ५४—७५) वाले। लव के अयोध्यावाले सूर्य-वंश में दिवाकर (५८) और महाकोशल मुख्य थे। इन्हीं के भाई शाक्य के पौत्र विष्णुपुराण के अनुसार प्रसिद्ध गौतम बुद्ध थे। महाकोशल के पुत्र प्रसेनजित, डॉक्टर प्रधान के अनुसार, ५३३ बी० सी० में गद्दी पर थे। इन्हीं के ककियावते भतीजे गौतम बुद्ध इस काल से ३० वर्ष पीछे उत्पन्न हुए। पौरव-कुल में जनमेजय, अधिसीम कृष्ण, निचक्षु और उदयन (५०० बी० सी० में गद्दी पर) प्रधान समझ पड़ते हैं, तथा मागध वंश में विरवजित (५८८ बी० सी० में गद्दी पर)। नं० ६० सेनजित के समय वायुपुराण उन्हें सुनाकर कहा गया। आप सूर्य-वंशी दिवाकर तथा पौरव अधिसीम कृष्ण के समकालीन थे। इन तीनों के पीछे, पुराणों के अनुसार, अन्य प्रांतों में निम्न-लिखित नरेश हुए—२७ पांचाल, २४ काशी, २८ हैहय, ३२ कलिंग, २५ अश्मक, २१ ऐक्ष्वाकु, २६ कौरव पौरव, २८ मैथिल, २३ शौरसेन और २० वीतिहोत्र। इसी काल में नागराज भोगी विदिशा-नरेश ने नागों का बल बहुत बढ़ाया। इनमें जितनी रियासतें गौतम बुद्ध के पीछे तक बच गईं, वे ३८२ बी० सी० के निकट महापद्मनंद द्वारा राज्य-च्युत हुईं।

आदिम कलिकाल में डेढ़-दो सौ वर्षों तक पांडव-वंशियों का साम्राज्य चला, प्रायः सवा सौ वर्ष मैथिलों का, और तब सोलह रियासतों का समय आया। पूरा समय प्रायः साढ़े तीन सौ वर्षों का है। युधिष्ठिर के पीछे परीक्षित सम्राट् हुए, किंतु कुछ ही काल राज्य करने के पीछे नागों द्वारा मारे गए। महाभारतीय युद्ध के भारी नृप-विनाश से पंजाबी नरेशों का बल गिर गया, और वहाँ नागों का प्रभुत्व हो गया। जरासंध के पीछे मथुरा में भी नागों का राज्य हो गया था। परीक्षित-विनाश के अनंतर पांडवों का साम्राज्य नष्ट हो जाता, किंतु सौभाग्य-वश उनका बेटा जनमेजय बड़ा पराक्रमी हुआ। इन्होंने नागों का बल ध्वस्त करके तक्षशिला तक पांडव-राज्य फैलाया, तथा मथुरा में श्रीकृष्ण के प्रपौत्र वज्रनाभ को स्थापित किया। इनके पीछे, निचक्षु के समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में, यह साम्राज्य डेढ़-दो सौ वर्ष के पीछे ध्वस्त होकर इसका पद मांडलिक नरेश-मात्र का रह गया। मट्ची (टिड्डी या वर्षा के पत्थरों) के उपद्रव से निचक्षु का पांचालों से मिलकर कौशांबी जाना लिखा हुआ है। इधर इंद्रप्रस्थ में जन-मेजय के भाई कक्षसेन का वंशधर रथगृत्स राज्य पर स्थापित हुआ। यह समय वैदिक साक्षी से लंबा बैठता है, किंतु पौराणिक आधार से इस काल में पाँच ही पुश्तों का होना सिद्ध है। जान पड़ता है, पुराणों से इस काल कई नाम छूट गए हैं। कौशांबी जाने पर पांडवों का साम्राज्य जाता रहा, तथा बृहदारण्यकोपनिषत् के अनुसार मैथिल जनक सम्राट् हुए। इस बात की भी साक्षी मिलती है कि कुछ काल तक कोशल की भी प्रधानता रही। आदिम कलिकाल का इतिहास पुराणों में थोड़ा ही आया है, अथच ब्राह्मण-ग्रंथों तथा बौद्ध-साहित्य में विशेषता से मिलता है। पंडितों ने खोज करके सात मैथिल सम्राटों के नाम निकाले हैं, जिनमें अंतिम का नाम कराल-जनक था। मैथिल-काल में खोज से नौ अन्य राज्यों के नाम मिले हैं, जिनके विषय में बहुत कुछ हाल ज्ञात है, किंतु यहाँ स्थानाभाव से रोचक होने पर भी नहीं लिखा जाता है। मैथिलों के पीछे गौतम बुद्ध के समय तक सोलह रियासतों का अस्तित्व प्रमाणित हुआ है, जिनमें से कुछ बुद्ध से पूर्व ही अस्तित्व से मिट चुके थे। उन सोलहो राज्यों के नाम ये हैं—काशी, कोशल, अंग, मगध, वज्जी, मल्ल, चेतिय (चेदि), वंस (वत्स), कुरु, पांचाल, मत्स्य, शूरसेन, अस्सक (अश्मक), अवंति, गंधार और कांबोज। ये सब महाजनपद कहलाते थे। इनके विषय में भी बहुत कुछ ज्ञात है, किंतु स्थानाभाव से लिखा नहीं जा सकता। दक्षिण में इस काल भोजराज, दंडक भोजराज, आंध्र, शबर, पुलिक, पुलिंद, मूतिब आदि राजवंश स्थापित थे, जिनमें कई अनार्य भी थे। आदिम कलिकाल में सामाजिक, राजनीतिक एवं अन्य बहुतेरी बातें भी ग्रंथों से विदित हैं, जिन्हें हमने अपने इतिहास-ग्रंथ में लिखा है, किंतु यहाँ स्थानाभाव से नहीं लिख सकते।

ESTABLISHED 1899

TELEPHONES:— 2 & 2 A

BHOLA NATH & CO.

LUCKNOW

MANUFACTURE RUBBER STAMPS, BRASS
& METAL BADGES, BRASS SEALS, BRASS
& IRON PADLOCKS, THUMB IMPRESSION OUTFITS,
MILITARY BADGES, TURBAN MONOGRAMS, FILE LACES,
EMBOSSING MACHINES, INKS Etc., Etc.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुहागरात

[श्रीयुत प्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए० एल्-एल्० बी०]

(श्रीवास्तवजी सुधा-मंडल के सुपरिचित कलाकार हैं। आप सहृदय, उदार और सज्जन हैं। आपकी कहानियाँ सुधा में प्रायः निकला करती हैं। आपने अनेक उपन्यास लिखे हैं, जिनका हिंदी-संसार ने अच्छा आदर किया है। विदा, विजय तथा विकास आपकी श्रेष्ठ रचनाएँ हैं।—सुधा-संपादक)

(१)

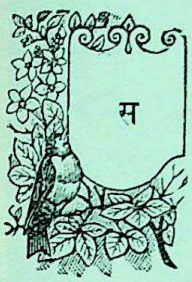

सन् १९३२ के मधु-मास की पूर्णिमा का साज सूया की आँखों को बड़ा मनोरम जान पड़ा। चाँदनी का वह निष्कपट नृत्य उसकी आशाओं को सिंधु की भाँति उद्वेलित करने लगा। वह नील सिंधु के रजतमय तट पर बैठ गई। सामने आकाश से परिहास करता हुआ, पीत चंद्रमा से कुछ-कुछ मिलता हुआ पीत समुद्र था, और उसके उस पार थी उसके प्रियतम आरातकी की जन्म-भूमि—जापान।

आरातकी ने उसका स्कंध छू दिया। सूया चौंक पड़ी। आरातकी हँस पड़ा, और सूया के नेत्र डबडबा आए। स्त्री-जाति की कोमलता फूट-फूटकर आँखों के मार्ग से बाहर निकलने लगी। आरातकी ने सूया को अपने प्रशस्त हृदय के सहारे लिटा लिया, और वह आश्रय पाकर उसके शरीर से चिपट गई। सूया को वह लघु—अति लघु क्षण कितना सुखकर प्रतीत हुआ! उसकी अनंत प्रेम-तपस्या का वह तुच्छ प्रसाद था, जिसकी स्मृति को उसने अपने हृदय में कंजूस के स्वर्ण की भाँति छिपा लिया।

आरातकी ने उसके आलुलायित केश-दाम सँवारते हुए कहा—"इतनी अधीरता क्यों है?"

सूया तड़प उठी। उसने भौंहें संकुचित करते हुए कहा—"अधीरता का प्रश्न! यह तो तुम्हीं अपने मन से पूछो।"

आरातकी संकुचित हो गया। उसने थोड़ी देर बाद कहा—"एक सैनिक की प्रेयसी को इतनी अधीरता शोभा नहीं देती।"

सूया उठकर बैठ गई। उसने तीव्र स्वर में कहा—"सैनिक की प्रेयसी का हृदय सैनिक नहीं, वह तो प्रेम के अमर भावों का समूह-मात्र है।"

आरातकी चुप होकर अपने कल के प्रयाण की कल्पना करने लगा। उसने हँसने की चेष्टा करते हुए कहा—"मैं इस्तीफ़ा देकर चला आऊँगा। जापान का सम्राट् हमारे प्रेम के बीच खड़ा नहीं हो सकता। यह फ़ौजी पोशाक, जो निंद्य ग़ुलामी की द्योतक है, सम्राट् की सेना के अध्यक्ष को सौंप दूँगा। उस अवधि तक तुम धैर्य रक्खो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूया खिलखिलाकर हँस पड़ी। आरातकी हैरानी से उसके मुख की ओर देखने लगा। आरातकी ने करुण स्वर में पूछा—"क्या विश्वास नहीं होता ?"

सूया ने हँसते हुए कहा—"यह भी भला कोई बात है। हँसी आती है तुम्हारी बुद्धि पर, तुम्हारी मूर्खता पर।"

आरातकी अप्रतिभ होकर सूया की ओर देखने लगा। सूया ने व्याख्या करते हुए कहा—"जापान का सम्राट् हमारे प्रेम के बीच चाहे खड़ा न हो सके, परंतु मेरी मातृभूमि के लिये तो वह इस समय शत्रु है। वह तुम्हें ग़ुलाम न बनाकर मुझे तुम्हारा ग़ुलाम बनाना चाहता है, जिसे मैं सहन नहीं कर सकती।"

आरातकी लज्जित-सा होकर पृथ्वी को चूमती हुई लहरों की ओर देखने लगा।

सूया कहने लगी—"यह आदि काल से अनंत नील आकाश, यह युगों को अपने उदर में रखनेवाला नील रत्नाकर, सदा हास्यमयी प्रकृति, सब स्वतंत्र हैं, किंतु मानव ? वह कितना स्वार्थमय है। एक की वस्तु बल से अपहरण कर, उसका अधिकार छीनकर अपने को इनका

श्रीयुत प्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी समझता है। मैं चीनी बालिका, चीन की भूमि की स्वामिनी हूँ, लेकिन मेरा पड़ोसी जापान आततायी होकर मेरा सुख-सौभाग्य नष्ट करने पर तुला हुआ है, और तुम उसी आततायी के एक प्रवर्तक सैनिक हो। मैंने तुम्हें अपने जीवन का स्वामी बनाया, और वह मधुर, स्निग्ध बंधन उफ़! आज कितना भयंकर मालूम होता है। तुम कल अपनी फ़ौज के साथ आकर हमारा नाश करोगे, और मैं तुम्हारा स्वागत करूँगी! नहीं, यह असंभव है। जाओ, मैं अपने मन की भावनाओं पर विजय प्राप्त करूँगी, और तुमसे घृणा करूँगी।" कहती हुई सूया उठ खड़ी हुई। उसकी आँखों से ज्वाला निकल रही थी—उसका शरीर काँप रहा था।

आरातकी ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा—"यह परिवर्तन कैसा? मैं फ़ौज से अपना नाम कटा दूँगा, और हम-तुम दोनो किसी दूर—अत्यंत दूर प्रदेश में चलकर अपना जीवन सुख से व्यतीत करेंगे।"

सूया ने अपना हाथ छुड़ाते हुए कहा—"जब हमारी बहनों और भाइयों पर तुम्हारे देशवासी अत्याचार करते हुए उनके हृदय का रक्त पान करेंगे। क्यों, वह हमारे जीवन का कैसा सुखमय काल होगा? हमारी सुहागरात हमारे भाइयों के हाड़-मांस के रक्त से अनुरंजित शय्या पर होगी? हमारी प्रेम-कहानी अनाथों के चीत्कार की ताल पर गाई जायगी! क्यों?"

सूया का व्यंग्य हँसने लगा। आरातकी बेबसी के साथ उसकी ओर देखने लगा।

(२)

आरातकी ने अपने अधिनायक के पास इस्तीफ़ा पेश करते हुए कहा—"मैं अब नौकरी नहीं करना चाहता।"

अधिनायक ने विस्फारित नेत्रों से देखते हुए कहा—"यह क्यों? इस अवसर पर तुम्हारा इस्तीफ़ा मंज़ूर नहीं किया जा सकता। कल हमारी सेना चीन-विजय के लिये यात्रा करेगी, और तुम आज अपना इस्तीफ़ा पेश करते हो। क्या तुम भीरु हो?"

आरातकी ने सिर नत किए हुए कहा—"मैं चीन के साथ युद्ध नहीं कर सकता।"

अधिनायक ने तीव्र स्वर में कहा—"इन शब्दों के लिये तुम्हें दंड दिया जा सकता है। जानते हो, जापानी सेना के नियम कितने कठोर हैं?"

आरातकी ने दृढ़ता से कहा—"मैं दंड की कठोरता सहन करने के लिये तैयार हूँ, किंतु चीन के विरुद्ध हथियार उठाने के लिये नहीं।"

अधिनायक सहन नहीं कर सका। उसने सक्रोध अपने जंगी बूटों का प्रहार किया। आरातकी के पैरों से रक्त निकलने लगा।

अधिनायक ने तड़पकर कहा—"मैं तुम्हें बंदी करता हूँ। तुम्हारा कोर्ट-मार्शल में चालान किया जायगा, और देश-द्रोह का मुक़द्दमा चलाया जायगा, जिसका दंड मृत्यु है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरातकी ने अपने को चुपचाप समर्पण कर दिया। उसकी आँखों के सामने उस दिन रात्रि की सूया की व्यंग्यमयी सुषमा का दृश्य आ गया। उसके मन का दुःख गलकर बह गया। उसने नीरव भगवान् से प्रार्थना की। हृदय की कातरता आनंद में परिणत होने लगी।

आरातकी के इस्तीफ़ा देने की बात क्षण-भर में तमाम फ़ौज में फैल गई। सैनिक उत्सुकता से आकर उसे देखने लगे—जैसे कभी देखा न हो। उनके सामने वह सिर झुकाए अपनी क़ैद की कोठरी में बैठा विचार-मग्न-सा था। वह उनके वाक्-प्रहारों को सहन करता हुआ अपनी दशा का सिंहावलोकन कर रहा था।

दूसरे दिन कोर्ट-मार्शल में उसका चालान हुआ। क्षण-मात्र में न्याय का वह प्रहसन समाप्त हो गया, और फ़ौजी अफ़सर ने यह फ़ैसला दिया कि आरातकी को धावे में सेना की अग्रिम पंक्ति में रक्खा जाय, अगर वह भागने का प्रयत्न करे, तो गोली से उड़ा दिया जाय। यह विचित्र फ़ैसला सुनकर आरातकी निराशा से अपनी गर्दन झुकाकर विधाता के विधान की आलोचना करने लगा।

(३)

निरीह चीनी जनता पर जापान का अत्याचार एक बड़ी दर्दनाक कहानी है, जिसका ओर-छोर मिलना कठिन है। मानचूरिया-प्रदेश कुछ ही दिनों में अधिकृत हो गया, और चीन की भूमि पर जापानी निरंकुश होकर अपना रौद्र नृत्य करने लगे। आरातकी के जीवन ने भी पलटा खाया, और वह भी अपने इतर भाइयों-जैसा हो गया। उसकी कोमलता का वह अंश, जो सूया के प्रभाव से जागरित हुआ था, समय तथा कुसंग के प्रभाव से पहले कुम्हलाया, और फिर निर्जीव होकर सूख गया। उसकी पाशविक प्रवृत्ति ने विजय पाई, और आज वह उस घटना को स्मरण कर अपनी शर्म छिपाने के प्रयास में म्लान हँसी हँस देता। सूया की स्मृति, केवल एक क्षीण रेखा की भाँति, उसके मानस-पटल पर अवशेष थी। वह आज विजय से उन्मत्त जापान का अग्रणी सेनानी था। संक्षेप में वह अपनी सैनिक टुकड़ी का कैप्टेन था।

ऊपर की घटना हुए पाँच वर्ष बीत चुके। इतने दिनों में उसने अपनी सूया का कोई समाचार नहीं पाया। पीकिंग-नगर छोड़कर वह कहाँ लापता हो गई थी, यह किसी को नहीं मालूम था। आरातकी जितना ही उसका पता लगाने में असफल होता, उतना ही वह क्रोधित होकर चीनी जनता पर अत्याचार करता। जब वह चीनी रमणियों को अपनी पाशविकता और बर्बरता का परिचय देता, तब अनायास सूया के वे शब्द उसके हृदय में खनखना उठते—"हमारी सुहागरात हमारे भाइयों के हाड़-मांस के रक्त से अनुरंजित शय्या पर होगी!" उन्हें भुलाने के लिये वह खीझकर द्विगुणित रोष से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी स्मृति को खून से प्रक्षालन करने का प्रयत्न करता ।

१७ जून की संध्या को जापानी सेना सियांग-नगर में अपनी विजय-पताका फहराने के लिये अग्रसर हो रही थी। नगर पहले से ही बम के गोलों से भूमिसात् कर दिया गया था। नगरवासी भाग गए थे, और जो भागने में असमर्थ थे, वे घरों में निरुपाय होकर उस घड़ी की प्रतीक्षा कर रहे थे, जब वे जापानी सैनिकों की बर्बरता का शिकार होंगे । यह भी उनकी वीरता का द्योतक था।

इस जापानी सेना का नायक आरातकी था, जो अदम्य उत्साह से विजय-मदिरा से ओत-प्रोत आशाओं का स्वर्ण-जाल गूँथ रहा था। इन दिनों उसका नाम निरंकुश अत्याचार के लिये पर्यायवाची हो गया था। रमणियाँ उसके नाम से सिहर उठतीं, और चीनी जनता भय से शंकित होकर अपने जीवन से निराश हो जाती ।

आरातकी ने देखा, नगर शून्य है। एक भयंकर निस्तब्धता छाई हुई है, जो श्मशान से भी अधिक भीति-जनक है । वह प्रसन्न होकर अपनी कीर्ति के भार से स्वयं दबने लगा। उसके सिपाही शिकारी कुत्तों की भाँति अपने-अपने शिकार की खोज में बिखर गए। थोड़ी देर में उन निरीह व्यक्तियों के अस्फुट क्रंदन से सियांग-नगर गुंजरित होने का उपक्रम करने लगा। किंतु दूसरे ही क्षण जापानी सैनिकों का रोष-पूर्ण रव उसे अपने उदर में छिपाने का सफल प्रयत्न करने लगा।

आरातकी कुछ सैनिकों के साथ एक उच्च अट्टालिका की ओर अग्रसर हुआ। उसके द्वार बंद थे। उसने उन लकड़ी के दरवाज़ों पर पद-प्रहार करते हुए तीव्र स्वर में अपना नाम लेकर खोलने का आदेश दिया।

उसके नाम ने वही प्रभाव प्रदर्शित किया, जो अली बाबा की कहानी में 'खुल जा सुम सुम' करता था । द्वार खुल गया, लेकिन मार्ग रोके हुए सैनिक-वेष में एक रमणी खड़ी थी।

आरातकी ने वज्र-कठोर स्वर में आदेश दिया—"मार्ग छोड़ दो, और अपने अस्त्र हमें दो।"

रमणी ने मुस्किराकर व्यंग्य-पूर्ण स्वर में कहा—"कौन, आरातकी, मुझे निःशस्त्र करना चाहता है !" यह कहकर वह वेग से हँस पड़ी।

आरातकी सहसा उस वीर रमणी की ओर देखने लगा। रमणी ने हँसते हुए कहा—"आरातकी, क्या तुमने कभी क्षण-भर के लिये सोचा है कि तुमने कितना अत्याचार किया है ? क्या तुम अपनी बर्बरता की कहानी स्वयं कह सकने में समर्थ हो ? क्या तुम बता सकते हो कि कितने बच्चों को तुमने उनकी मा के स्तनों से दूध पीते हुए छुड़ाकर पहले उन बच्चों के रक्त से अपनी तलवार की प्यास बुझाई, और फिर उनकी माताओं को अपनी सभ्यता का परिचय दिया, और फिर—फिर उन्हें इस संसार की पीड़ा से, कमज़ोर होने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिशाप से मुक्त कर दिया। यह तुमने अपनी काली करतूतों से प्रमाणित कर दिया है कि इस संसार में निर्वीर्य और निःशक्त होकर जीवन व्यतीत करने का अधिकार नहीं। इस कठोर सत्य को सिद्ध कर तुमने संसार के समक्ष एक अनुपम आदर्श रक्खा है।"

आरातकी क्षुब्ध हो चुका था। उसने अपने सैनिकों को आदेश दिया—"इस बकवादिन को जीवित पृथ्वी में दफ़ना दो, और इसके पहले इसका अच्छी तरह मान-मर्दन ....."

आरातकी अपना आदेश पूर्ण भी न कर पाया था कि रमणी ने पिस्तौल तानते हुए हँसकर कहा—"आरातकी, यह शक्ति तेरे सैनिकों में नहीं। तूने क्या अभी तक मुझे नहीं पहचाना ?"

आरातकी की स्मृति विद्युत्-प्रकाश की भाँति आलोकित होकर अपनी वर्षों की बिछुड़ी सूया को पहचानने का प्रयत्न करने लगी। उसके मुख की श्री अंतर्हित हो गई। उसने पीछे हटते हुए कहा—"कौन, सूया ! इस वेष में !"

सूया ने हँसते हुए कहा—"खैर, तुमने पहचाना तो ! शुक्र है ! हाँ, मैं सूया हूँ, और आज तुम्हारे पापों का प्रतिफल देने को, अपनी जाति का प्रतिशोध लेने को आई हूँ। यह मेरे पिता का घर है, जो पीकिंग से भागकर तुमसे बचने के लिये यहाँ आए। लेकिन तुम यहाँ भी पहुँच गए। स्वागत है !"

जापानी सैनिक सवेग अग्रसर हुए।

सूया की पिस्तौल का घोड़ा दबा। एक के बाद एक चार सैनिक धराशायी हो गए। आरातकी भी सँभलकर आगे बढ़ा, और सूया की पिस्तौल छीनकर फेंक दी। सूया ने सिंहनी की भाँति उछलकर आरातकी के वक्षःस्थल पर कटार का प्रहार किया। दूसरे क्षण आरातकी भूमि पर गिर पड़ा।

सूया वेग से हँसी। उसके हास्य की प्रतिध्वनि ने आरातकी के गमनोन्मुख प्राणों को क्षण-भर के लिये स्तंभित कर दिया।

सूया ने कहा—"आरातकी, आज हमारी सुहागरात है। इस कालरात्रि में आओ, हम दोनो एक मन-प्राण होकर इन असंख्य नर-नारियों के कंकाल पर अपनी प्रणय-लीला करें।"

दूसरे ही क्षण उसकी कटार सवेग उसके हृदय के समीप घुस गई, और वह आरातकी के वक्ष पर गिर पड़ी।

प्रेम-देवता उनकी सुहागरात को चिर-स्थायी करने का आयोजन करने लगे, और धीरे-धीरे तमिस्रा अपनी काली चादर से उन्हें छिपाकर चीन की रमणियों के क्रंदन को शांत करने में लीन हो गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्पत्ति के भेद

[प्रो० दयाशंकरजी दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी०]

(प्रो० दयाशंकरजी दुबे सुधा-मंडल के अर्थशास्त्र के प्रतिष्ठित लेखक हैं। उन्होंने तत्संबंधी अनेक पुस्तकें लिखी हैं। 'अर्थशास्त्र की रूप-रेखा'-नामक पुस्तक हाल ही में निर्मित हुई है, अभी अप्रकाशित है। उसी का यह इक्कीसवाँ अध्याय है। कुछ पहले के अध्याय सुधा में छप चुके हैं।—सुधा-संपादक)

मोहन आजकल अपने इलाहाबादी चाचा बिहारी के यहाँ फिर आ गया है। पिछली बार जब वह आया था, तो अर्थ-शास्त्र की कुछ बातों का ज्ञान उसने अपने चाचा से, साधारण वार्तालाप में ही, प्राप्त कर लिया था। यह बात उसे बड़ी अच्छी मालूम हुई। तभी वह प्रायः जान-बूझकर ऐसी बात उठा देता है, जिससे उसी संबंध की बात चल पड़ती है।

उस दिन मोहन चाचा के साथ चौक जा रहा था। दारागंज में, ग्रैंडट्रंक-रोड पर, पुलिस के थाने के निकट, एक स्थान ऐसा है, जहाँ इक्के-ताँगे खड़े रहते हैं। वहीं एक ओर कुछ लोग भीड़ लगाए खड़े थे। मोहन भी झट उसी भीड़ की ओर लपक गया। पर जब उसे मालूम हुआ कि एक मदारी बँदरिया नचा रहा है, तो उधर से हटकर फिर चाचा के पास आ गया। चाचा ने इक्का तय कर लिया था। दोनो उस पर बैठ गए, और इक्का चल पड़ा।

इसी समय मोहन ने कहा—"अच्छा चाचा! क्या यह मदारी भी अर्थशास्त्र की दृष्टि से कोई महत्त्व रखता है?"

मोहन ने अपनी समझ से ऐसा प्रश्न किया था कि वह मन-ही-मन बहुत प्रसन्न हो रहा था। वह सोचता था, अधिकतर यही संभव है कि चाचा कह दें, इसका महत्त्व कुछ नहीं, यह व्यर्थ है।

पर मोहन को सचमुच बहुत आश्चर्य हुआ, जब उसके चाचा ने उत्तर दिया—"हाँ, अर्थशास्त्र की दृष्टि से यह मदारी भी अपनी एक उपयोगिता रखता है। इसका महत्त्व क्यों नहीं? तुम्हें स्मरण होना चाहिए, मैंने तुम्हें बतलाया था कि अर्थशास्त्र में उत्पत्ति का अर्थ है उपयोगिता की वृद्धि।"

मोहन—"हाँ, मुझे याद है।"

चाचा—"तो अब तुम्हें यह समझने में असुविधा न होनी चाहिए कि अर्थशास्त्र की दृष्टि से कौन-सा कार्य उत्पादक है। इसे समझने के लिये इस प्रश्न पर विचार करना आवश्यक है कि उपयोगिता की वृद्धि करने के कौन-कौन-से ढंग हैं, अर्थात् यह कि किस प्रकार उपयोगिता की वृद्धि होती है।"

मोहन—"हाँ। बस, यही बतलाइए।"

चाचा—"उसका पहला भेद है रूप में परिवर्तन। बात यह है कि कुछ वस्तुएँ ऐसी होती हैं, जिनके रूपों में अगर कुछ परिवर्तन कर दिया जाय, तो उनकी उपयोगिता बढ़ जाती है। उदाहरण के लिये, मान लो, हम बाज़ार से अपने लिये कपड़ा ख़रीद लाए, और वह घर पर रक्खा हुआ है। उस दशा में उसकी उपयोगिता कम है बनिस्बत उसकी उस उपयोगिता के, जब दर्ज़ी उसे काट-छाँटकर उसका कोट हमारे लिये सीकर तैयार कर देता है। इसी प्रकार कोई बढ़ई है। उसके पास ढेर-की-ढेर लकड़ी पड़ी है। उस समय लकड़ी की उपयोगिता कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है बनिस्बत उसका उस उपयोगिता के, जब वह उसे चीरकर उससे मेज़-कुरसी तथा अलमारी तैयार कर देता है। इसी प्रकार भट्टे वाले का ईंट बनाना, कुम्हार का बर्तन बनाना, सुनार का अलंकार बनाना है। कच्चा माल पैदा करना भी उपयोगिता-वृद्धि में शामिल है। फिर उसके बाद तैयार माल

प्रो० दयाशंकरजी दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी०

बनाना है। खेती और पशु-पालन की गणना कच्चा माल तैयार करने में है। खेती में नाज का उत्पादन प्रकृति करती है, मनुष्य तो केवल बीज डालता तथा खाद और पानी का समयानुसार प्रबंध करता है। प्रकृति के काम में सहायता पहुँचाना तथा उसे गतिशील बनाना ही उसका काम है। प्रारंभ में थोड़े-से बीज रहते हैं। पर प्रकृति की सहायता लेकर मनुष्य उन्हें सैकड़ों मन नाज का रूप दे देता है। उससे समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। इसी प्रकार पशु-पालन है।"

मोहन—"इसी प्रकार हम अन्न, रोटी, बिस्कुट, मिठाई और नाना प्रकार की चीज़ें बनाते हैं। रुई से वस्त्र, काग़ज़ से पुस्तकें, यह भी रूपांतर ही है।"

चाचा—"हाँ, पर यह रूपांतर कच्चे माल से तैयार माल बनाना है। इसी प्रकार जितने भी उद्योग-धंधे और शिल्प-कार्य हैं, उनमें रूपांतर द्वारा ही उपयोगिता की वृद्धि की जाती है। उत्पत्ति का दूसरा भेद है स्थान-परिवर्तन। इसमें वस्तुओं का यातायात होता है। कुछ ऐसे पदार्थ हैं, जो एक स्थान पर बहुत अधिक परिमाण में रक्खे रहते हैं। वहाँ उनकी उपयोगिता उन स्थानों की बनिस्बत कम रहती है, जहाँ उनकी मात्रा कम है, पर माँग अथवा आवश्यकता अधिक है। जैसे लकड़ी जंगलों में होती है। वहाँ उसकी उपयोगिता कम है। पर अगर वह बस्ती में ले आई जाती है, तो उसकी उपयोगिता बढ़ जाती है। इसी प्रकार कोयला, पत्थर तथा लोहा हैं। लोहा खानों में रहता है। पर उसे वहाँ से निकलवाकर, रेल, मोटर अथवा गाड़ी पर लदवाकर जब बाज़ार में ले आया जाता है, तब उसकी उपयोगिता कितनी बढ़ जाती है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहन—"सीधी तरह से यों कहिए कि जैसे लखनऊ के ख़रबूज़े, नागपुर के संतरे, कंधार के अनार हैं। बाहर जाने से इनकी उपयोगिता बढ़ जाती है। अगर ये बाहर न पहुँचाए जायँ, तो एक तो जनता इनसे तृप्ति का लाभ न उठा सके, दूसरे, ये अपनी पैदायश के स्थान पर ही बहुत कुछ नष्ट हो जाया करें।"

चाचा—"इतना ही क्यों, और भी उदाहरण हैं। नदियों तथा समुद्रों से मछलियाँ, मोती तथा शंख अगर निकाले न जायँ, बाज़ार में आकर बिकें नहीं, तो इनकी उपयोगिता बहुत ही कम हो। इन वस्तुओं में रूप का परिवर्तन नहीं होता। केवल स्थान के परिवर्तन से इनकी उपयोगिता बढ़ जाती है।"

मोहन—"लेकिन जंगल से जो लकड़ी आती है, वह तो कटकर आती है। तो इसमें रूप-परिवर्तन क्यों नहीं हुआ?"

चाचा—"तुम्हारा कहना ठीक है। पर इस उपयोगिता की वृद्धि में स्थान-परिवर्तन-साधन का महत्त्व फिर भी अधिक माना जायगा। रूप-परिवर्तन का उतना नहीं। हाँ, जंगल से लकड़ी काटकर, चीरकर और फिर उसके तख़्ते चीरकर लाए जायँ, अथवा खानों से धातु शुद्ध करके लाई जाय, तो स्थान-परिवर्तन और रूप-परिवर्तन, दोनो प्रकारों से उपयोगिता की वृद्धि मानी जायगी।

"तीसरा भेद है अधिकारी के परिवर्तन का। यह उस दशा में होता है, जब पदार्थ का न तो रूप बदलता है, न स्थान। केवल उसका अधिकारी बदल जाने से उसकी उपयोगिता में वृद्धि हो जाती है।

"इसमें सौदागरों, अढ़तियों तथा दलालों का कार्य शामिल है। जैसे किसी व्यापारी के यहाँ हज़ारों मन नाज भरा है। उसके लिये उसकी उपयोगिता उतनी अधिक नहीं, जितनी उस अवस्था में, जब वह नाज उस व्यापारी के यहाँ भेज दिया जाय, जो फुटकर बिक्री करके सर्वसाधारण के हाथ बेचता है।"

मोहन—"तब तो जिन अमीरों के पास करोड़ों रुपयों की संपत्ति है, अगर कुछ लोग उसे उनके पास से खींचकर साधारण जनता के स्वास्थ्य, शिक्षा और उपभोग के लिये सुलभ कर दें, तो वे भी उपयोगिता की वृद्धि में बहुत सहायक होंगे।"

चाचा—"निस्संदेह। और, इस दृष्टि से राजनीतिक तथा समाजवादी नेता लोग भी उपयोगिता की वृद्धि में प्रबल सहायक हैं।

"चौथा भेद है संचय। कुछ ऐसी विशेष वस्तुएँ होती हैं, जो एक विशेष समय या ऋतु में अधिक होती हैं। उनकी आवश्यकता उत्पत्ति के समय उतनी नहीं होती, जितनी भविष्य में होती है। इसीलिये उन्हें संचित रखने की आवश्यकता हुआ करती है। संचय करने में विशेष सावधानी की आवश्यकता पड़ती है। यदि इसमें ग़लती या असावधानी हो जाती है, तो वे पदार्थ नष्ट हो जाते हैं। अतः व्यापारी लोगों को मुख्य रूप से इसी बात का ध्यान रखना पड़ता है कि वे तब तक किसी तरह नष्ट या विकृत न होने पाएँ, जब तक उनकी विशेष माँग या आवश्यकता न हो। जैसे नाज है। फ़सल पर वह उतना उपयोगी नहीं होता, जितना बाद में। इसलिये व्यापारी उसे खत्तियों में भरकर रखते हैं। साधारण रूप से जब तक दूसरी फ़सल नहीं आ जाती, तब तक उन्हें उसकी रक्षा करनी पड़ती है। यदि दैव-योग से अकाल पड़ गया, या फ़सल ही ख़राब हो गई, तो वही सुरक्षित नाज अगले वर्ष तक उपयोग में आता है। इसी प्रकार घी, गुड़, चावल और शराब आदि वस्तुएँ हैं। पुरानी पड़ जाने पर ही इनकी उपयोगिता अधिक होती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहन—"रुपया भी तो आपत्ति-काल के लिये लोग बैंकों में सुरक्षित रखते हैं ?"

चाचा - "हाँ, इस दृष्टि से वह भी उपयोगिता की वृद्धि करता है। अब पाँचवाँ भेद है विज्ञापन। बहुतेरी ऐसी चीज़ें हैं, जिनका विज्ञापन यदि किया जाय, तो वे उपयोगिता की बहुत वृद्धि करें। कुछ लोग तथा संस्थाएँ विज्ञापन के बिना गतिशील हो ही नहीं सकतीं। उनकी उपयोगिता की वृद्धि केवल विज्ञापन से होती है, और विज्ञापन द्वारा ही जनता उनसे लाभ उठाती है।"

इक्का चौक पहुँच गया था। दोनो उतर पड़े। चाचा ने कहा—"बस, अब दो-एक बातें इस संबंध में तुम्हें और बताने को रह गई हैं। चलो, जवाहर-पार्क में बैठें।"

दोनो पार्क में जाकर एक बेंच पर बैठ गए। चाचा ने कहा—"अब तक हमने उत्पत्ति के जो भेद तुम्हें बताए हैं, वे भौतिक हैं। पदार्थों के रूप, स्थान तथा अधिकारी के परिवर्तन से ही उनकी उपयोगिता की वृद्धि प्रकट हुई है। पर अब हम उत्पत्ति का एक दूसरा तरीक़ा तुम्हें बतलाते हैं। उसका भौतिक पदार्थों से कोई विशेष संबंध नहीं।"

मोहन—"लेकिन और तो सभी कुछ आप बतला रहे हैं, पर मैंने मदारी के संबंध में जो प्रश्न किया था, वह अभी ज्यों-का-त्यों पड़ा है। जान पड़ता है, आप उसे या तो भूल रहे हैं, या जान-बूझकर भुला देना चाहते हैं।"

चाचा—"अधीर न होओ, उसका उत्तर भी तुम्हें शीघ्र मिल जायगा। हाँ, तो उत्पत्ति का दूसरा तरीक़ा है अभौतिक उत्पत्ति। इसका संबंध उन लोगों से होता है, जो अप्रत्यक्ष रूप से जन-समुदाय की उपयोगिता की वृद्धि में सहायक होते हैं। कोई स्वास्थ्य-रक्षा में सहायता पहुँचाता है, कोई शिक्षा देता है, कोई समाज में शांति और व्यवस्था स्थिर रखने में सहायक होता है, कोई दर्शकों, श्रोताओं और पाठकों को अपनी कला से आनंद पहुँचाता है। इस प्रकार डॉक्टर, वैद्य, हकीम, अध्यापक, उपदेशक, वकील, जज, मुंसिफ़, पुलिसमैन, नर्तक, गायक, मदारी, पत्रकार आदि व्यक्ति भी समाज को उपयोगिता की वृद्धि करने योग्य बनाते हैं। और, इसलिये आर्थिक दृष्टि से ये भी उत्पादक ही हैं।"

मोहन—"सचमुच चाचाजी, तब तो उस टुटपुँजिए फेरीवाले का भी महत्त्व है, जो गा-गाकर चूरन बेचता है, अथवा कजरी सुनाकर एक-एक पैसे की पुस्तक।"

चाचा—"परंतु इस प्रसंग में सबसे अधिक ध्यान देने योग्य बात यह है कि दूकानदार, डॉक्टर, वकील, पुरोहित, पत्रकार आदि की प्रसिद्धि भी धन है; क्योंकि उसका विशेष महत्त्व और मूल्य है, उसके बदले में द्रव्य की प्राप्ति जो होती है।"

मोहन—"किंतु प्रसिद्धि तो बेची नहीं जा सकती।"

चाचा—"क्यों नहीं बेची जा सकती? जो दूकानदार अपने फ़र्म का नाम बेच देता है, वह अपनी प्रसिद्धि भी उस नाम के साथ बेच डालता है। लोगों को जब इस बात का पता चलता है कि यह नया दूकानदार भी उसी फ़र्म का मालिक अथवा उत्तराधिकारी है, तब मालिकों के बदल जाने पर भी पुराने ग्राहक पूर्ववत् उस दूकान के ग्राहक बने रहते हैं। नए दूकानदार को अगर पुरानी दूकान के नाम, यश और प्रसिद्धि प्राप्त न हो, तो निस्संदेह उसके ग्राहक पुरानी परिचित दूकान के ग्राहकों से कम रहेंगे। इसी प्रकार अन्य पेशेवालों के नाम, उनकी संस्थाओं तथा दूकानों के नाम की प्रसिद्धि इतनी स्थायी होती है कि उनके उत्तराधिकारी तक उसका लाभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठाते हैं। पत्रों के संपादक बदल जाते हैं, पर ग्राहक साधारणतया नहीं टूटते। वे पत्र के ग्राहक होते हैं, न कि उनके अधिकारियों के। व्यवसाय में नाम की बड़ी महिमा है। इसे अँगरेज़ी में गुडविल कहते हैं। इसीलिये हरएक व्यवसायी अधिक-से-अधिक लोगों से अपना परिचय रखता और बढ़ाता रहता है। वकील जब सार्वजनिक सेवा करने के कारण अधिक ख्याति पा जाते हैं, तब उनकी वकालत ख़ूब चलने लगती है।"

मोहन—"तब तो लोगों से राव-रस्म, मेल-जोल, परिचय और निकट संपर्क स्थापित करना भी धन की उत्पत्ति में ही माना जायगा।"

चाचा—"क्यों नहीं। जिन साधनों से किसी-न-किसी प्रकार उत्पत्ति अथवा उपयोगिता की वृद्धि हो, वे सब धनोत्पत्ति के उपाय माने जायँगे। अच्छा, अब चलो, खद्दर-भंडार में थोड़ा-सा कपड़ा खरीदना है।"

दोनो पार्क से उठकर खद्दर-भंडार आ पहुँचे। अंदर जाने पर मालूम हुआ, महात्मा गांधी के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में एक सप्ताह के लिये मूल्य में थोड़ी-सी कमी कर दी गई है। इस कारण भीड़ बहुत अधिक है।

मोहन बोल उठा—"महात्माजी के जन्म-दिवस ने भी उपयोगिता की वृद्धि में योग दिया है। यह भी एक तरह से विज्ञापन द्वारा उत्पादन का तरीक़ा ही माना जायगा।"

चाचा मुस्किराने लगे।

"पाइलोसा" द्वारा

बवासीर

बिना ऑपरेशन व इंजेक्शन

समूल नष्ट

बवासीर का रोग ज्यों-ज्यों पुराना होता जाता है, त्यों-त्यों इसकी पीड़ा असह्य होकर रोगी के शरीर को सुखाती जाती है। इसका इलाज शीघ्र न करने से शरीर में अन्य अनेक रोग पैदा हो जाते हैं।

जिन रोगियों ने अनेक सस्ते-सस्ते इलाजों से निराश होकर इसका सेवन किया, उनकी सम्मति है कि ख़ून का तो इसकी पहली ही ख़ूराक बंद कर देती है और ख़ूनी, बादी, आंतरिक, बाहरी, नई व पुरानी अर्थात् सब प्रकार की बवासीर इसके सेवन से शीघ्र समूल नष्ट हो जाती है, क्योंकि इसमें आंतरिक रक्त-शुद्धि के लिये वानस्पतिक गोलियों तथा बाहरी पीड़ा शांति के लिये रामबाण मलहम दोनो का प्रयोग साथ-साथ कराया जाता है, जिसके कारण दर्द, खुजली, टीस, सूजन, जलन और मस्सों द्वारा मवाद का बहना आदि तुरंत दूर हो जाते हैं।

केवल एक ही बक्स रोग को समूल नष्ट कर देता है। क़ीमत ८।) डा० ख० अलग।

स्पेसेफ़िक्स (इंडिया) सेल्स कारपोरेशन, ११वीं विंसेंट-रोड, बंबई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनमोहन

[डॉ० रामशंकर शुक्ल 'रसाल' एम्० ए०, डी० लिट्०]

('रसाल'जी सुधा-मंडल के प्रतिष्ठित लेखक, समालोचक, कवि, काव्य - शास्त्र - निष्णात एवं व्रज - भाषा के अनन्य प्रेमी हैं। आपने अनेक विषयों पर श्रेष्ठ पुस्तकों का निर्माण किया है।—सुधा-संपादक)

कैसे बुलाइ तपावैं उन्हें निज ताती उसाँस-समीरन मैं,
राखियै, रैहै न राखे हूँ तौ वह मूरति नैननि-नीरन मैं;
लै रसना मैं कहा रखियै अरी, आह-कराह की भीरन मैं,
राखैं कहा मनमोहन कौ बिरहानल-ज्वाल-जरे मन मैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवासी-साहित्य

[स्वामी भवानीदयालजी संन्यासी]

(श्रीसंन्यासीजी सुधा-मंडल के प्रतिष्ठित लेखक और इंडियन नेशनल कांग्रेस, नेटाल के प्रेसिडेंट हैं। अब आप भारतवर्ष ही में रहकर साहित्य-सेवा करना और राजपूताने को अपना कार्य-क्षेत्र बनाना चाहते हैं। यह आनंद की बात है। आपके लेख सुधा में समय-समय पर निकला करते हैं।—सुधा-संपादक)

इधर कुछ दिनों से हिंदी-साहित्य की फुलवारी में प्रवासी-पुष्पों का खिलना दुर्लभ हो रहा है। यह एक ऐसी बात है, जिससे हृदय व्यथित हो उठता है। इस शताब्दि के प्रथम चरण में इस विषय पर ख़ूब लिखा गया था—हिंदी में प्रवासी-साहित्य की यथेष्ट सृष्टि और अभिवृद्धि हुई थी। पं० बनारसीदास चतुर्वेदी का 'प्रवासी भारतवासी', साधु ऐंड्रयूज़ की 'फ़िज़ी में प्रतिज्ञाबद्ध कुली-प्रथा', पं० तोताराम सनाढ्य का 'फ़िज़ी में मेरे २१ वर्ष', पं० बाबूराम मिश्र का 'केनिया में हिंदुस्थानी' और मेरा 'दक्षिण-आफ़्रिका के सत्याग्रह का इतिहास' आदि उसी काल की कृतियाँ हैं। 'गुप्त' और 'सनेही'-जैसे कवियों के प्रवासी-संगीत से भी भारत की हृदय-तंत्री झनक उठी थी। वह काल प्रवासी-साहित्य की दृष्टि से सर्वोत्तम काल था।

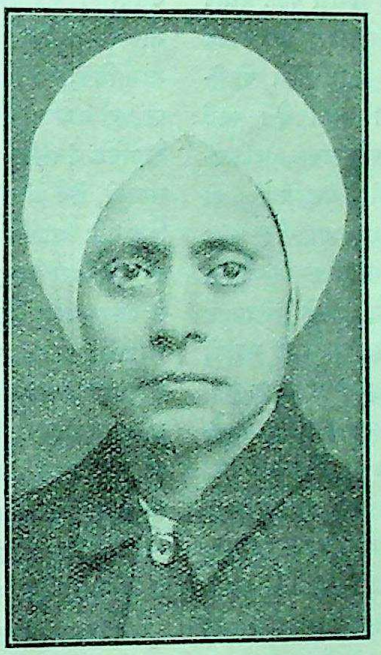

स्वामी भवानीदयालजी संन्यासी

इसमें संदेह नहीं कि भारतीय भाषाओं में इस विषय पर हिंदी में ही सबसे अधिक लिखा गया है, परंतु फिर भी जो कुछ लिखा गया है, वह अधूरा और अपर्याप्त ही है। प्रवासी भारतीयों की अनेक समस्याओं पर अब तक प्रकाश पड़ा ही नहीं—केवल उनकी राजनीतिक कठिनाइयों और विपत्तियों का एक अधूरा इतिवृत्त तैयार हो गया, किंतु उनकी धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और शिक्षा-संबंधी समस्याएँ अब तक अंधकार के गर्भ में डूबी हुई हैं। इसका मूल-कारण है अधिकारी लेखकों का अभाव, और प्रकाशकों की उपेक्षा-वृत्ति। वास्तव में इस विषय पर अधिकार-पूर्वक लिखनेवालों की संख्या नगण्य है, और जिन्होंने साहस करके इस मार्ग की ओर पैर बढ़ाया, उन्हें भी सहायता, सहानुभूति और प्रोत्साह न मिलने के कारण हताश होकर बैठ जाना पड़ा। परिणाम यह हुआ कि हिंदी-साहित्य का यह अंश अधूरा ही रह गया। कभी-कभी प्रवास-संबंधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकें निकल आती हैं। इधर जो दो-चार अच्छी पुस्तकें निकली हैं, उनका हम अभिनंदन करते हैं। किंतु जिस प्रगति से काम हो रहा है, वह साहित्य की दृष्टि से वांछनीय नहीं। जब-तब प्रसंगानुसार हिंदी के मासिक और साप्ताहिक पत्रों में प्रवासियों की थोड़ी-बहुत चर्चा हो जाया करती है।

हिंदी के अतिरिक्त भारत की अन्य भाषाओं में इस विषय पर बहुत ही कम साहित्य मिलता है। उपनिवेशों में यद्यपि मदरासी भाइयों की संख्या यथेष्ट है, फिर भी तामिल-भाषा में इस प्रश्न पर कोई प्रामाणिक ग्रंथ नहीं मिलता। बँगला, मराठी, उर्दू आदि भाषाओं में शायद अब तक कुछ लिखा ही नहीं गया। और, जो कुछ लिखा भी गया, वह साहित्य की स्थायी संपत्ति नहीं, यद्यपि महात्मा गांधी के व्यक्तित्व के प्रताप से इस विषय पर गुजराती आदि भारतीय भाषाओं में थोड़ी-बहुत चर्चा हुई, और होती रहती है। स्वयं महात्मा गांधी की आत्मकथा और उनके 'दक्षिण-आफ्रिका का सत्याग्रह' में प्रवासियों की परिस्थिति पर पर्याप्त प्रकाश पड़ा है। अन्य लेखकों को भी, जिन्होंने महात्मा गांधी की जीवन-रेखा खींचने की कोशिश की है, उनके जीवन के उस अंश पर प्रकाश डालना ही पड़ा है, जो प्रवासी भारतीयों से संबंध रखता है। इसके अतिरिक्त गुजराती में 'रंग-द्वेष का दुर्ग'-नामक ग्रंथ मिलता है, जो दक्षिण-आफ्रिका के प्रवासी भारतीयों की दशा का दिग्दर्शन कराता है। जहाँ तक मुझे ख़बर है, गुजराती में प्रवासियों पर और कोई महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ नहीं। हाँ, गुजराती में प्रवासी-पत्रों की कमी नहीं। मोंबासा से 'केनिया डेली मेल' निकलता है, ज़ंजिबार से 'ज़ंजिबार वॉयस' और 'समाचार', दारुस्सलाम से 'टंगेनिका ओपीनियन' और 'टंगेनिका हेरल्ड' तथा नेटाल से 'इंडियन ओपीनियन' और 'इंडियन व्यूज़' प्रकाशित होते हैं। यह सब द्विभाषी पत्र हैं—गुजराती और अँगरेज़ी। फिर भी गुजराती-भाषा में कोई ऐसा ग्रंथ नहीं मिलता, जिसमें समग्र उपनिवेशों और वहाँ के प्रवासी भारतीयों का सम्यक् वर्णन किया गया हो। इस तरह का हिंदी में केवल एक ही ग्रंथ है—'प्रवासी भारतवासी', किंतु वह आज से लगभग २५ वर्ष पहले लिखा गया था, इसलिये वह भी समय से परे (out of date) हो गया है।

मेरा विचार है, या तो 'प्रवासी भारतवासी' का परिवर्द्धित नवीन संस्करण निकाला जाय, अथवा 'बृहत्तर भारत' के नाम से नवीन ग्रंथ की रचना की जाय। यह काम जितना कठिन है, उतना ही महत्त्व-पूर्ण भी। इस ग्रंथ में प्रवासी भारतीयों की राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और शिक्षा-संबंधी अवस्था पर पूर्ण प्रकाश डाला जाना चाहिए, और वह भी वैज्ञानिक ढंग से। इसकी रचना में समय और सामग्री, धैर्य और निष्ठा की आवश्यकता पड़ेगी, किंतु यदि काम बन गया, तो हिंदी-साहित्य में यह एक ऐसी वस्तु होगी, जिस पर हम गौरव से मस्तक ऊँचा कर सकेंगे।

प्रत्येक उपनिवेश के प्राचीन इतिहास की खोज करके पता लगाना होगा कि क्या कभी भारत से उसका संबंध रहा है। उदाहरण के लिये आफ्रिका को लीजिए। एक लेखक ने यह प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है कि पौराणिक काल में आफ्रिका को 'क्रौंच-द्वीप' कहा जाता था, और मनु महाराज के एक पुत्र यहाँ के राजा थे। मिस्टर स्पिकी के कथनानुसार टंगेनिका के उत्तर के पर्वत-शृंगों का नाम 'सोमगिरी' था, और मार्को-पोलो के समय अबीसीनिया को 'मध्य-हिंद' के नाम से पुकारा जाता था। आफ्रिका में कुछ भू-खंडों को 'शंख-द्वीप' और 'कुश-द्वीप' कहा जाता था, और 'कुश-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वीप' के अनेक प्रांतों पर राजा सोमदेव का शासन था। ये सब बातें ऐसी हैं, जिन पर ऐतिहासिकों का मतभेद हो सकता है, किंतु इनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती—भारत और बृहत्तर भारत के लिये ये बातें कम महत्त्व की नहीं।

सत्य बात तो यह है कि अब तक हिंदी-भाषा में केवल दक्षिण-आफ्रिका की ही अधिकतर चर्चा हुई है, और वह भी विशेषतः महात्मा गांधी के सत्याग्रह के प्रताप से। फ़िज़ी के संबंध में जो कुछ स्वर्गीय साधु ऐंड्रयूज़ और पं० बनारसीदास चतुर्वेदी ने बीस साल पहले लिखा था, उसी पर हमें संतोष करना पड़ता है—उसके बाद वहाँ के संबंध में कोई उल्लेख-योग्य ग्रंथ नहीं निकला। एक आर्य-समाजी और एक सनातनी प्रचारक ने फ़िज़ी पर कुछ लिखने की चेष्टा की है, किंतु वह उनके प्रचार-कार्य का विवरण ही कहा जा सकता है—सार्वजनिक दृष्टि से उसका कोई विशेष महत्त्व नहीं। वहाँ से एक साप्ताहिक अख़बार भी हिंदी में निकलता है 'फ़िज़ी-समाचार' और उसकी फ़ाइल में वहाँ के भाइयों के इतिहास का कुछ अंश सुरक्षित है। फ़िज़ी में ऐसे अनेक विद्वान् हैं, जो प्रवासी-साहित्य की अभिवृद्धि कर सकते हैं, किंतु इस क्षेत्र से वे उदासीन जान पड़ते हैं। मोरिशस-द्वीप पर भी दो-तीन पुस्तकें हिंदी में निकली हैं, जिनमें 'मोरिशस का इतिहास' और 'हिंदू मोरिशस' विशेष उल्लेख-योग्य हैं। ये दोनो पं० आत्माराम की कृतियाँ हैं। वहाँ से हिंदी में तीन अख़बार भी निकलते हैं—'आर्य-पत्रिका', 'आर्य वीर' और 'सनातनधर्मार्क'। इनमें सांप्रदायिक चर्चा की ही विशेषता रहती है। ट्रिनीडाड, डमरेरा, सुरीनाम, जमैका, ग्रनेडा आदि उपनिवेशों के संबंध में आज तक कुछ लिखा ही नहीं गया—इस वस्तु से हिंदी-साहित्य का भांडार बिलकुल ख़ाली पड़ा है।

यह स्थिति हिंदी-साहित्य की हित-दृष्टि से वांछनीय नहीं, किंतु इधर ध्यान देने के लिये किसी को अवकाश ही कहाँ? मेरे मित्र पं० बनारसीदास चतुर्वेदी को इस विषय से वैराग्य ही हो गया है—उन्होंने इस काम से अपनी लेखनी को पूर्ण विश्राम दे दिया है। उनका बहाना यह है कि प्रवासी भाइयों के निकट संपर्क में आए बिना उनकी अवस्था पर अधिकार-पूर्वक लिखना असंभव है। किंतु यदि कोई उनसे यह पूछ बैठे कि "कृपानिधान! आप फ़िज़ी कितनी बार हो आए थे, और वहाँ के भाइयों के विषय में आपने कब और कितना व्यक्तिगत अनुभव प्राप्त किया था, जिसके आधार पर फ़िज़ी-संबंधी आपकी पुस्तकों की रचना हुई है?", तो शायद इसका जवाब नदारद ही होगा। मैं मानता हूँ, चतुर्वेदीजी के साथ प्रवासी भाइयों ने वैसा व्यवहार नहीं किया, जैसा करना चाहिए। यह भी मान लेता हूँ कि प्रवासी भारतीयों की ओर से यह अक्षम्य अपराध हुआ है। किंतु इससे खिन्न होकर प्रवासी प्रश्न की ओर से ही मुँह मोड़ लेना कहाँ का न्याय है? वास्तव में इसी प्रश्न के कारण चतुर्वेदीजी इतने प्रसिद्ध हुए—केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी। इसी प्रश्न के कारण वह महात्मा गांधी और साधु ऐंड्रयूज़ के निकट संपर्क में आ सके। इसी प्रश्न के कारण उन्हें अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई। वह अपनी साहित्य-सेवा के कारण हिंदी-संसार में प्रसिद्ध हो सकते थे, किंतु इस प्रश्न ने तो उन्हें संसार में प्रख्यात कर दिया। अतएव उनकी ओर से इस प्रश्न की उपेक्षा मुझे बहुत खटक रही है। इधर कुछ दिनों से 'विशाल भारत' में बृहत्तर भारत की चर्चा बिलकुल बंद हो गई है।

इस मामले में मैं भी हिंदी-संसार के सामने अपराधी हूँ। इधर दस साल के अंदर मैंने हिंदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में केवल एक ही ग्रंथ लिखा—'दक्षिण-आफ्रिका के मेरे अनुभव', और वह भी अधूरा ही है—उसमें केवल १९२० तक के अनुभवों का वर्णन है। इसका मुख्य कारण है राजनीतिक खटपट। ऐसे तो मैं क्रियात्मक राजनीति में सन् १९१३ से ही भाग लेने लगा हूँ, किंतु जब से 'नेतृत्व' का ढोल गले में पड़ा, तब से साहित्य-सेवा की उपेक्षा होने लगी। मैं कभी नेतागीरी के लिये उम्मीदवार नहीं हुआ, ठोक-पीटकर मुझे वैद्यराज बना दिया गया। एक मित्र ने ताना मारते हुए ठीक ही लिखा है—"यह वक्तव्य, यह इंटरव्यू, यह डेपुटेशन, यह मीटिंग—सब-के-सब फ़िज़ूल हैं। अमेरिकनों की भाँति जल्दबाज़ी और उतावली करने की पद्धति से मुझे घृणा है।"

किंतु मैं करूँ, तो क्या—बेतरह फँस गया हूँ। कई बार सोचा, इस क्षेत्र से अलग हो जाऊँ, किंतु उसे कार्यान्वित करने में असमर्थ रहा। मुझे अपने राजनीतिक सिद्धांत और विचार के प्रचार करने के लिये अँगरेज़ी-भाषा का आश्रय लेना आवश्यक हो गया है, क्योंकि इसी साधन द्वारा सरकारी अधिकारियों तथा अन्य भाषा-भाषियों के समक्ष मैं अपना अभिमत प्रकट कर सकता हूँ, और इसका स्पष्ट अर्थ हुआ—हिंदी-भाषा और साहित्य की उपेक्षा। यद्यपि कभी-कभी भारत के हिंदी-प्रेमियों को प्रवासियों की परिस्थिति से परिचित कराने के लिये मातृ-भाषा में लिखने का सौभाग्य प्राप्त हो जाया करता है, किंतु वह किसी भी दृष्टि से संतोष-जनक नहीं कहा जा सकता। इस पर मेरे सच्चे मित्रों को संताप भी हुआ है—उन्होंने मेरी इस प्रवृत्ति पर टीकाएँ भी की हैं, और मुझे उनके कथन में कोई अतिशयोक्ति नहीं दिखाई पड़ती। श्रीप्रेमनारायण अग्रवाल एम्० ए० ने अपनी अँगरेज़ी-पुस्तक में लिखा है—"राजनीतिक आंदोलन में फँसे रहने के कारण इधर वे एक या दो से अधिक पुस्तक नहीं लिख सके। यह बात साहित्य-संसार के लिये खेद-जनक है, जो उनकी लेखनी से निरंतर ग्रंथों की सृजना देखना चाहती थी।" यह बिलकुल सत्य है, और इससे इनकार नहीं किया जा सकता। जब मेरी बुद्धि परिपक्व हुई, और लेखनी बलवती, तब मैं राजनीति के झंझट में जा फँसा। एक समय था कि साहित्य ही मेरा इष्टदेव था, और आज राजनीति मेरा भगवान् है। बाबू शिवपूजन-सहायजी का यह कथन भी मुझे स्मरण आ रहा है—"चिंता होती है कि स्वामीजी साहित्य-क्षेत्र छोड़कर किधर भटक गए।" इसी की 'प्रवासी की कहानी' में ठाकुर राजबहादुरसिंह ने पुनरावृत्ति की है—"इधर राजनीति के झंझावात में पड़कर आप साहित्य की सुरम्य वाटिका का विहार ऐसा छोड़ चुके हैं कि संभवतः अपनी सुकुमार मनोवृत्तियों और भावुकता को राजनीतिक कर्कशता का शिकार बना चुके हैं।"

ये बातें ऐसी हैं, जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। भाई बनारसीदास चतुर्वेदी ने मुझे यह सलाह देने की कृपा की है—"मैं आपको यही सलाह दूँगा कि अब आप अपने जीवन को ठोस साहित्य-सेवा में लगावें। प्रवासी समस्याओं पर पुस्तकें, जिनका मूल्य अधिक न हो, यहाँ की जनता के लिये उपयोगी और लाभदायक सिद्ध होंगी।" मुझे चतुर्वेदीजी की यह सलाह बहुत पसंद आई है। हिंदी-साहित्य की उपेक्षा करके मैंने जो पाप कमाया है, उसका प्रायश्चित्त करना ही चाहिए। इस जीवन का अब ठिकाना भी क्या, शरीर जीर्ण हो रहा है, स्वास्थ्य चौपट हो चुका, और शक्ति क्रमशः क्षीण होती जाती है। इसलिये जो कुछ करना हो, शीघ्र ही कर डालना उचित होगा।

किंतु यहाँ के राजनीतिक बंधन में मैं ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बँधा हुआ हूँ कि देश के बदले बिना इस जीवन को बदलना संभव नहीं प्रतीत होता। इसलिये आगामी वर्ष—सन् १९४१ के अंत में—मैंने दक्षिण-आफ्रिका छोड़ देने का निश्चय कर लिया है, और हिंदुस्थान में बसने का। ऐसे तो मैं बिहार का बाशिंदा हूँ—वहीं मेरे बाप-दादे की जन्म-भूमि है, किंतु अब मैंने अजमेर में बसने का विचार कर लिया है। वहाँ के आदर्श नगर में आर्य-साहित्य-मंडल के संचालक श्रीमथुराप्रसादजी शिवहरे के उद्योग और परिश्रम से मुझे एक टुकड़ी ज़मीन भी मिल गई है। उसी में एक 'प्रवासी-भवन' बनेगा, जिसमें मेरी ख़ानगी लायब्रेरी होगी, और प्रवासियों के संबंध की सारी सामग्रियाँ भी। यहीं से, जहाँ तक मुझसे बन पड़ेगा, प्रवासी भारतीयों की सेवा और प्रवासी-साहित्य की अभिवृद्धि करता रहूँगा, और साथ ही इस समस्या के कुछ नवीन विद्यार्थी भी तैयार करने की चेष्टा करूँगा। यदि मेरी यह योजना कार्यान्वित हो सकी, तो जीवन का शेष अंश प्रवासी साहित्य की सेवा में ही व्यतीत होगा।

प्रगतिशील साहित्य पढ़िए !

(१) **अतृप्त मानव**—हिंदी के प्रसिद्ध कहानी-लेखक श्रीव्रजेंद्र की १२ कहानियों का संग्रह। इस पुस्तक की कहानियाँ हिंदी में नवीन कथा-क्षेत्र उपस्थित करती हैं। मानव-हृदय के अभाव, उसकी चिरजीवी प्रतृप्ति तथा तज्जनित अस्फुट भावनाओं, आकांक्षाओं और अंतस्तल की पहेलियों को सुलझाने का, उनको मूर्त स्वरूप देने का जितना सुंदर प्रयास इन कहानियों में किया गया है, उतना हिंदी में और कहीं मिलना दुर्लभ है। मूल्य केवल ॥)

(२) **सहोदरा**—हिंदी की ख्याति-प्राप्त कवयित्रीद्वय सुश्री रत्न और कृष्णा माथुर की सरल, सरस और मधुर कविताओं का संग्रह। इस पुस्तक में आपको प्रेम के गीत, आँसू-भरी कहानी, व्यथा की कथा और मातृभूमि की स्वतंत्रता के चिरचिंतन का संदेश मिलेगा। मूल्य ॥।)

(३) **आकाश-पाताल**—श्रीशंभुदयाल त्रिपाठी-लिखित और प्रसिद्ध लेखिका सुश्री विभा द्वारा संपादित इस नाटक में शोषित और शोषित-वर्ग का सजीव चित्र मिलेगा। कहीं आपके आँसू निकलेंगे, कहीं आप क्रोध से तिलमिला उठेंगे, और कहीं आप अपने जीवन की किसी घटना पर विचार करने लगेंगे। मूल्य ॥।)

(४) **युद्ध की कहानियाँ**—वर्तमान महायुद्ध पर लिखी गई सरस, रोचक और मौलिक कहानियाँ। यदि आप वर्तमान महायुद्ध की किन्हीं ख़ास घटनाओं का सजीव वर्णन पढ़ना चाहते हैं, तो इस पुस्तक को अवश्य मँगाएँ। मूल्य ≡)

(नोट—सब पुस्तकें एक साथ मँगाने पर डाक-व्यय माफ़)

पता—रत्न-मंदिर, उर्मिला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेता

[श्रीयुत कृष्णदेवप्रसाद गौड़ एम्० ए० 'बेढब' बनारसी]

('बेढब'जी शिष्ट हास लिखने के लिये प्रसिद्ध हैं। आपकी ऐसी अनेक सुंदर कहानियाँ सुधा में छप चुकी हैं। उन्हें सुधा के पाठकों ने पसंद भी किया है। आशा है, यह कहानी भी उन्हें बहुत मनोरंजक प्रतीत होगी।—सुधा-संपादक)

तोताराम के पिता पंसारी थे, परंतु तोताराम नगर - बिहारी। जैसे महात्माजी शांति के लिये कोई बात उठा नहीं रखते, उसी प्रकार तोताराम ने नगर का कोई कोना छोड़ नहीं रक्खा था। आठवें दर्जे की वार्षिक परीक्षा में उन्होंने 'रेकर्ड बीट' किया था, अर्थात् गणित में सौ में तीन अंक मिले, और सब विषयों में शून्य। उसी समय से आपने स्कूल में पढ़ने के लिये जाना छोड़ दिया। यह महान् कार्य आपने गर्मी की छुट्टियों में किया, नहीं तो हेडमास्टर की ओर से आपको अवश्य ठाट-बाट से बिदाई दी जाती, क्योंकि आप-जैसे विद्यार्थी उस स्कूल में संभवतः न आए होंगे।

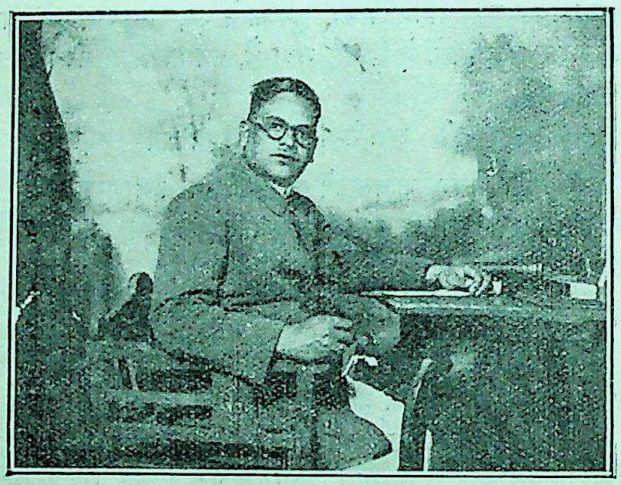

श्रीयुत कृष्णदेवप्रसाद गौड़ एम्० ए० 'बेढब' बनारसी

पढ़ना छोड़कर दूकान पर बैठना तोताराम को जँचा नहीं। वह नगर-भर का चक्कर काटते थे। नगर का सारा भूगोल उनसे परिचित हो गया। कभी-कभी पुस्तकालय में भी बैठ जाते थे, जैसे कभी - कभी विलायती अखबार भी भारत के हित की बात लिख दिया करते हैं।

एक दिन संध्या-समय तोताराम टहलकर आ रहे थे। रास्ते में एक बड़ी भीड़ देखी। जिंदाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के नारे लग रहे थे, हाथ में तिरंगे झंडे फरफरा रहे थे। यह भी भीड़ में धीरे से घुस गए; जैसे मच्छरदानी के छेद से साहसी मच्छर कभी-कभी घुस जाते हैं। वहाँ डेढ़ घंटे तक इन्होंने भाषण सुना। सुभाष बाबू बोल रहे थे। वह कांग्रेस की भूलें दिखला रहे थे, और अग्रगामी दल के कार्य-क्रम की व्याख्या कर रहे थे।

तोताराम के हृदय में बैठ गया कि चौवन-पचपन साल से कांग्रेस ने जो कुछ किया, वह सब बेकार है। और, यदि सचमुच स्वराज्य मिल सकता है, तो अग्रगामी दल द्वारा ही। और, यदि भारत के अधिकांश व्यक्ति अग्रगामी दल में सम्मिलित हो जायँ, तो संभव है, दो-तीन दिनों के भीतर ही स्वराज्य मिल जाय। सभा समाप्त होने पर उनके रोम-रोम से अग्रगामी दल टपक रहा था। यदि उनके सामने कोई कांग्रेसी आ जाता, तो उसका वही हाल होता, जो शंकर भगवान् के सम्मुख कामदेव का हुआ था।

तोताराम घर पहुँचे। उनके पिता दूकान बढ़ाकर, गुड़गुड़ी चढ़ाकर पी रहे थे। तोताराम ऐसे जोश के साथ घर आए, जैसे मंत्रियों ने पद-त्याग कर अपने-अपने नगरों में प्रवेश किया। आते ही आपने अपने पिता से शुभ समाचार कहा। बोले—"बाबूजी, आज हमने अग्रगामी दल में प्रवेश किया।" तोताराम के कार्यों से उनके पिता कुछ बहुत संतुष्ट नहीं थे, फिर भी अपना लड़का था, स्नेह बहुत रखते थे। बोले—"इसीलिये कहता था न बेटा! इधर-उधर मत जाओ। घर पर बैठकर दूकान-दौरी सँभालो। हाँ, तो उधर कैसे गए थे? दलदल है बड़ी भयानक चीज़। फिर निकले कैसे? सुनता हूँ, उसमें जो घुसता है, वह भीतर ही चला जाता है। तुम निकले कैसे? यह तो रामजी की कृपा थी कि तुम बच गए।" इतना कहते-कहते उनका जी भर आया, और वह अपने को सँभाल न सके, लगे ज़ोर-ज़ोर से रोने। रोना सुनकर भीतर से तोताराम की मा और बहन निकल आईं। इन लोगों ने देखा कि तोताराम खड़े हैं, उनके पिता खाट पर बैठे हैं। एक हाथ में नारियल की गुड़गुड़ी है, और वह सिसकियाँ भर रहे हैं। उनकी स्त्री ने बड़े घबराए हुए शब्दों में पूछा—"का भयल तोता क बाबू?"

बोले—"इस बुढ़ौती में..."

उनकी स्त्री और घबड़ाईं। उनका मुँह भी रुआसा हो गया। बोलीं—"आज सँझवै से बिलैया रोवत है। चुप रहा, का करवा, जवन भाग में बदा होला, ऊ के रोक सकला।" फिर तोताराम की ओर देखकर बोलीं—"का भयल बचवा?"

तोताराम खड़े-खड़े क्रोध का घूँट पी रहे थे। दूसरा होता, और यह घटना देखता, तो उसकी सारी राजनीतिक अभिलाषाओं पर पानी फिर जाता। परंतु उन्हें राजनीति में कार्य करना था। देश को स्वतंत्र करना था। छोटी-छोटी बातों में क्रोध प्रदर्शन करना वह उचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं समझते थे। उन्होंने कहा—"अरे, इनकी समझ में कुछ आया नहीं। मैं अग्रगामी दल में चला गया हूँ। इन्होंने समझा, दलदल में चला गया।" उनकी मा ने कहा—"ई का हौ बेटा!" उनकी मा की समझ में तो आया नहीं, परंतु इतना उन्होंने समझ लिया कि दलदल में फँसनेवाली बात नहीं है। पतिदेव से बोलीं—"जाए दा। कौनो वैसन बात नाहीं है।" और फिर तोताराम से कहा—"अपने बाबू से कह दा कि का हौ। बुढ़वा आदमी के काहे के रोआवैला।" तोताराम ने सोचा, अवसर अच्छा है। मुझे आगे चलकर भाषण देना होगा। नेता बनूँगा। यदि इन्हें भी न समझा सका, तो भारतवर्ष की सहस्रों-लाखों की जनता को कैसे समझाऊँगा। उन्होंने कहा—"अब मैं देश की सेवा करने जा रहा हूँ, और सुभाष बाबू के दल में चला गया हूँ। यह दल जल्दी भारत को स्वराज दिला देगा।"

तोताराम के पिता अब चुप हो चुके थे। उनकी समझ में यह तो आ गया था कि दल-दलवाली बात नहीं है, परंतु और कोई बात उनकी समझ में न आई। उन्होंने पूछा—"तब इसमें होगा क्या? तुम्हें क्या करना होगा? कुछ लाभ का डौल है?" क्योंकि उनके पिता व्यावहारिक बुद्धि के आदमी थे। जिस कार्य में कोई लाभ न हो, वह कार्य उनकी समझ में कोई कार्य नहीं होता था, जैसे जिस विभाग में पचास फ़ीसदी से कम मुसलमान हों, उसमें मुसलमान नहीं समझे जाते।

तोताराम ने कहा—"लाभ क्यों नहीं है। देश को स्वराज मिलेगा, और मैं नेता बन जाऊँगा।"

उनके पिता बोले—"हाँ-हाँ, यह तो बड़ी अच्छी बात है। फिर अपनी पत्नी की ओर देखकर कहा—"तोता नेता हो जायगा, तो हमारा भी आदर होगा। बेटा, मैंने समझा नहीं था। यह तो बड़ी ख़ुशी की बात तुमने सुनाई। नेता होने में बड़ा लाभ होगा। सुनते हैं, नेता लोगों को खाने-पीने की कमी नहीं रहती। मालूम नहीं, कहाँ से मिल जाता है। चलो, तोता इंटरेंस नहीं पास है, तो क्या, नेता तो हो गया। और बेटा, करना क्या होगा?"

तोताराम बोले—"करना क्या होगा। नेता को कुछ करना होता है। करनेवाले वालंटियर होते हैं। हमारा काम तो यह होगा कि सरकार से लड़ाई करने के लिये उन्हें तैयार करना होगा।"

पिता ने कहा—"मगर तुम्हारे पास बंदूक़-तोप तो है नहीं, न हमारे पास है। लड़ाई कैसे होगी?"

तोताराम—"यह देखा जायगा कि कैसे लड़ाई होगी। तैयारी तो हो जाय। अवसर पर सब हो जायगा।"

पिताजी बोले—"हाँ बेटा, यह तो ठीक कहा। हमें याद है, एक बार नमक बनाने का सत्याग्रह हुआ था। सुना, उसी के डर से विलायत के राजा ने अपनी गद्दी छोड़ दी। बेटा, जब नेता हो जाना, तब एक बात का विचार करना। तेरे बाप का भी भला हो जायगा। उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय जब स्वराज की लड़ाई आरंभ हुई थी, नमक-सत्याग्रह हुआ था। तुम जब स्वराज की लड़ाई करना, सत्तू-सत्याग्रह आरंभ कर देना। मेरा सत्तू खूब बिकेगा।"

तोताराम इस प्रकार की बातें सुनकर बहुत बिगड़े। उन्होंने कहा—"जब आप लोगों की समझ में कुछ नहीं आता, तब टाँग मत अड़ाया कीजिए। यह भी क्या कांग्रेस है कि जो चाहा, नेता बन गया। ये बातें सबकी समझ में नहीं आ सकतीं। नमक तो सरकार बनाती थी, इसलिये सत्याग्रह किया गया। सत्तू क्या सरकार बनाती है?"

इसी प्रकार पिता-पुत्र में प्रतिदिन नेतृत्व की बात होती। तोताराम धीरे-धीरे अग्रगामी दल के नेता हो ही गए। अब तोताराम के जलूस निकलने लगे। भाषण होने लगे। यह लोगों को संग्राम के लिये आवाहन भी करने लगे। एक दिन एक गाँव में इनका भाषण था। बड़ी तैयारी थी। अपार जन-समूह इनके स्वागत के लिये खड़ा था। अहीर लोग बड़ी-बड़ी लाठियाँ लिए बैठे थे। मालूम होता था, सभा नहीं है, कहीं डाका डालने की तैयारी है।

तोताराम खड़े हुए। गले में माला डाली गई। आपने व्याख्यान दिया—बड़े जोश, उत्साह और निर्भीकता से। लोगों ने उसी दिन समझा कि महात्मा गांधी की बुद्धि अब काम नहीं दे रही है। एक दिन भी नेतृत्व उनके हाथ में रहा, तो देश की दुर्दशा होने में कोई कसर न रह जायगी, उनकी भूल-पर-भूल प्रकट होने लगी। जनता के हाथों में लाठियाँ तन गईं। यदि कहा जाता, तो उसी समय वह फ़ोर्ट विलियम पर भी हमला कर देते। तोताराम के बोल चुकने पर तालियों की गड़गड़ाहट से आकाश गूँज गया। एकाध कोस के आदमी समझते कि कहीं पास में तोपें छूट रही हैं। उसी समय एक वृद्ध मनुष्य खड़ा हुआ। बड़े-बड़े बाल थे। खद्दर की मिरज़ई थी। सफ़ेद खद्दर की घुटनों तक धोती थी। बोला—"मुझे दो-एक सवाल पूछने हैं।"

सब जनता ने उसकी ओर देखा। श्रद्धा से सबके नेत्र भर गए। सब लोगों ने एक स्वर से कहा—"हाँ-हाँ, रामगुलाम महतो, पूछो।

"तोताराम ने समझा, यह कहाँ से बला आई। जैसे कोई अपनी प्रेमिका को पत्र लिख रहा हो, और उसके पिता आकर खड़े हो जायँ। महतो ने पूछा—"आप हम लोगों से क्या चाहते हैं?"

तोताराम—"बस, आप लोग तैयार रहिए।"

रामगुलाम—"तैयार तो हम लोग हैं ही।"

तोताराम—"तो बस, जब कहा जाय, युद्ध छेड़ दीजिए।"

रामगुलाम—"वही तो कहते हैं महात्माजी भी।"

तोताराम—"वह तो कहते हैं, चरखा चलाओ। चरखे से कभी स्वराज मिल सकता है? चरखा तो पहले लोग चलाते थे, फिर क्यों हम लोग दास हो गए?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता बोली—"हाँ-हाँ, महतो, यह बताओ।"

रामगुलाम महतो ने बड़ी शांति से कहा—"जब चरखा बंद हुआ, तभी से राज भी गया। अब यह बताइए, हम लोग रोटी खाते हैं, और देश छिन गया, तो क्या रोटी खाना छोड़ दें?"

जनता में भनभनाहट की आवाज़ होने लगी। लोग पूछने लगे—"हाँ-हाँ, बताइए महाशय!"

तोताराम ज़रा सकपकाए, इधर-उधर देखने लगे कि रामगुलाम ने पूछा—"हम लोग कपड़ा पहनते आए हैं, और परतंत्र हो गए, तो क्या कपड़ा पहनना छोड़ दें?"

इस पर और ज़ोर से चिल्लाहट हुई। "हाँ-हाँ, बताइए।" एक बार फिर तालियाँ ज़ोर से बजीं।"

तोताराम ने कहा—"यह कोई प्रश्न है। आप लड़ने आए हैं!"

इस पर किसी ने कहा—"आपने ही तो कहा है कि लड़ने के लिये तैयार रहिए।"

तोताराम को जोश आ गया। बोले—"मैं बेवक़ूफ़ी की बात का जवाब नहीं देना चाहता।"

इतना कहना था कि चारो ओर से आवाज़ आई—"वापस लो, यह शब्द वापस लो।"

सभा में हुल्लड़ मच गया। मंच की ओर बहुत-से लोग लाठियाँ उठाए दौड़े।

दो दल बन गए। वह स्थल पानीपत के मैदान का संक्षिप्त संस्करण बनने जा रहा था। तोताराम चुपचाप मंचवाली चौकी के नीचे प्राणायाम कर रहे थे।

बारंबार बच्चा होना स्त्री के स्वास्थ्य और सुंदरता को नाश करता है।

श्रीचपलादेवी वैद्या का परीक्षित तिलिस्मी हीरा

बंध्याकारक दवा

ग़रीब, बीमार तथा कमज़ोर स्त्रियाँ जो बारंबार बच्चा होने के दुःख से छुटकारा पाना चाहती हैं, तथा गर्भ गिराने के महापाप से बचना चाहती हैं, वे "बंध्याकारक दवा" मँगाकर केवल ५ दिन सेवन करें। गर्भ रहना बंद हो जायगा। वे अपनी बाक़ी ज़िंदगी आराम से बिता सकेंगी। मूल्य मय डाक-ख़र्च ४॥)

पत्रादि गुप्त रक्खे जाते हैं।

[सरकार से रजिस्टर्ड]

चपलादेवी वैद्या, चपला-भवन, गली रावलिया, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सजनीवाद की प्रगति

[चित्रकार – श्रीयुत शिक्षार्थी]

इक्कीसवीं सदी का कवि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्ध्वस्त अवंतिका के खँडहरों में *

[ज्योतिषाचार्य श्रीयुत पं० सूर्यनारायण व्यास]

(व्यासजी ज्योतिष के अच्छे पंडित हैं, और सुधा-मंडल के प्रसिद्ध लेखक। आपने कुछ वर्ष हुए योरप-यात्रा की थी। तत्संबंधी कुछ लेख सुधा में निकले थे, जिन्हें पाठकों ने बहुत पसंद किया। यह टॉक (लेख) आपने ऑल इंडिया रेडियो के बंबई-स्टेशन से, गत १ली मई को, ब्रॉडकास्ट किया था। इस लेख के पाठ से हमारी उज्जैन-नगरी का अतीत गौरव आँखों के सामने नाचने लगता है, और हम आनंद-लहरी में बहने लगते हैं।--सुधा-संपादक)

भारतवर्ष की प्राचीन वैभव-पूर्ण नगरी अवंतिका अर्थात् अभिनव उज्जैन के ऐतिहासिक महत्त्व और अतीत गौरव के विषय में इस इतिहासानुशीलन युग में अधिक बतलाने की आवश्यकता नहीं। संस्कृत-साहित्य के माधुर्य का जिन लोगों ने रसास्वादन किया है, पुरातन संस्कृति से जिन्हें अनुराग है, और इतिहास-जैसा विषय जिन्हें प्रिय है, उनसे यह अविदित नहीं कि उज्जैन कि प्रतिष्ठा का सम्मान विद्वानों और ग्रंथ-प्रणेताओं की दृष्टि में सर्वदा रहा है।

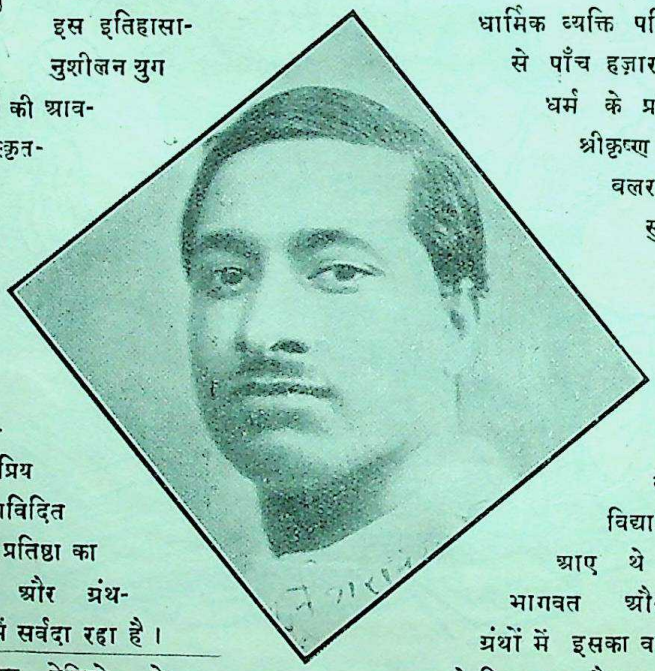

श्रीयुत पं० सूर्यनारायण व्यास

वैदिक काल की चर्चाओं के अनंतर आरण्यक, उपनिषद् और प्रायः अठारह पुराणों में इस पवित्र नगरी की अलग-अलग दृष्टिकोण से चर्चा की गई है।

पौराणिक काल की इस बात से प्रत्येक धार्मिक व्यक्ति परिचित है कि आज से पाँच हज़ार वर्ष पूर्व गीता-धर्म के प्रतिपादक भगवान् श्रीकृष्ण अपने ज्येष्ठ बंधु बलराम और मित्र सुदामा के साथ इसी सप्त-तीर्थ-प्रसिद्ध, मानवलोक के श्वर महाकाल की नगरी अवंती में, विद्याभ्यास के लिये, आए थे। महाभारत, भागवत और अन्य पुराण-ग्रंथों में इसका वर्णन अनेक प्रकार से किया गया है। महाकवि वाल्मीकि से लेकर काव्य-नाटककारों ने भी किसी-न-किसी प्रकार उज्जैन की चर्चा

* ऑल इंडिया रेडियो के बंबई-स्टेशन के डॉइरेक्टर की कृपा से प्राप्त।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर आत्मसंतोष माना है। आज भारत का ही नहीं, समस्त विश्व का सुधी-समाज जगत् के सर्वमान्य महाकवि कालिदास और सम्राट् विक्रमादित्य की अमल-धवल कीर्ति से पूरी तरह परिचित है। महाकवि ने अपनी प्रतिभा के वैभवालंकार से रसवंती अवंती का सुभग श्रृंगार किया है। और, आज जिस इतिहास के आधार-स्तंभ विक्रम के लिये स्वयं इतिहास भी मौन और संदेह का आवरण लिए हुए है, उस महापुरुष की नवरत्न-सभा इसी सरस्वती के लीला-निकेतन में रही है। बुद्धकालीन महाराज प्रद्योत, उदयन, अशोक और महाकात्यायन आदि की प्रिय नगरी, संस्कृति, व्यवसाय, विद्या, बुद्धि, वैभव से भरी और आध्यात्मिक, पावन पुरी उज्जयिनी भूमध्य-रेखा पर अवस्थित होकर इस बीसवीं शताब्दि में भी साहित्येतिहास-रसिकों के लिये महान् आकर्षण का विषय बनी हुई है। किंतु आज उस महिमामयी नगरी के अतीत गौरव का, कालिदासीय वैभवालंकृत शब्दों में जिसके बाज़ारों में रत्नाकर सागर की समस्त रत्न-राशि फैली हुई थी, इसलिये समुद्र—"संल्लक्ष्यन्ते सलिलनिधयः तोयमात्रावशेषाः"—ख़ाली पानी-ही-पानी रह गए थे, केवल स्मरण शेष रह गया है। उज्जैन के उजड़े हुए खँडहर, टीले, खंदकें और भू-गर्भ, न-जाने कितने युग-युग के इतिहासावशेषों को उदर-दरी में लिए हुए, अनुसंधान-प्रिय जनों की सतत प्रतीक्षा में रहे हैं। यह परम सौभाग्य का विषय है कि इस इतिहासोज्ज्वल नगरी की आंतरिक सुषमा का दर्शन और अनेक युगों की रजकणसंपुटों (स्तरों) का अंचल उठाकर पुरातत्त्व-श्रृंगार का अवलोकन करने के लिये व्यक्तिशः मेरी और इतिहास-संशोधन-समिति, उज्जैन की प्रार्थनाओं पर ग्वालियर के प्रजा-बंधु महाराजा ने उज्जयिनी के उत्खनन की स्वीकृति उदारता-पूर्वक सहायता के साथ दी। बहुत समय हुआ, सर जॉन मॉर्शल ने भी पुरातत्त्व की दृष्टि से यहाँ की खुदाई के महत्त्व की आवश्यकता अनुभव की थी। गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया के पुरातत्त्व-विभाग के डॉइरेक्टर जनरल रायबहादुर श्रीके० एन्० दीक्षित महोदय ने खुदाई के पहले उन स्थानों का स्वयं निरीक्षण किया। अंततः गत वर्ष राज्य के पुरातत्त्व-विभागाध्यक्ष तथा मर्मज्ञ विद्वान् पं० गर्दे महोदय की निरीक्षणता में चिरप्रतीक्षित उज्जैन की खुदाई का श्रीगणेश हुआ।

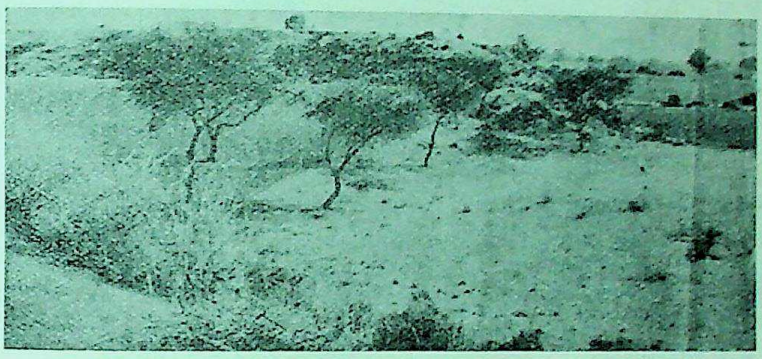

पुरातन अवंती के गढ़-नामक स्थान के उत्खनन-केंद्र का दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उज्जैन की व्यापकता, पुरातनता और उपनगरों के भग्नावशेषों के विस्तार की दृष्टि से उसका ऐतिहासिक उत्खनन-क्षेत्र बहुत विस्तृत हो सकता है। इसके लिये विपुल धन-राशि, दीर्घ काल एवं बहुत कौशल की आवश्यकता है। इधर पुरातन नगरी भी पौराणिक महाकाल-वन के अंचल में अभिनव उज्जैन बनकर बस गई है। यह आधुनिक नगरी प्राचीन अवंती से दक्षिण-भाग में फैल गई है। उद्ध्वस्त उत्तर दिशा में निर्मल-सलिला शिप्रा के पूर्व-तट पर पुरातन वैभव की स्मृति में धूलि लपेटे हुए अस्त-व्यस्त पड़ी हुई है, और अपनी उदर-दरी में अतीत काल का साहित्य लिए रजकणों ने ३० से ५० फ़ीट के उन्नत टीलों का स्वरूप बना लिया है।

गत वर्ष खुदाई के लिये क्रमशः तीन स्थान प्रमुख रूप से चुने गए थे—(१) वेश्या-टेंकरी, (२) कुम्हार-टेंकरी और (३) पुरातन उज्जयिनी की भग्नावशेष भूमि—गढ़।

लगभग चार वर्ष पहले नर्मदा-व्हेली-रिसर्च बोर्ड के प्रमुख कार्यकर्ता स्व० विष्णु-रघुनाथ करंदीकर, उज्जैन के सुविज्ञ जागीरदार ना० के० सोर्टी और हम लोग उज्जैन के इन भग्नावशेषों का अंतर्वैभव देखने के लिये इन खंदकों के यात्री बने हुए थे। उसी समय वेश्या-टेंकरी ने हम लोगों को अधिक आकृष्ट किया। ४०० फ़ीट के विस्तार तथा १०० फ़ीट के उन्नत श्रृंगवाली इस टेंकरी में हमने स्तूप का संदेह किया था। हमारा यह संदेह तब अधिक पुष्ट हुआ, जब कुछ स्थलों को खोदकर देखने पर लगभग २० इंच लंबी ईंट के खंड दिखाई दिए। श्रीकरंदीकरजी ने तो उसी समय अशोकन् स्तूप की कल्पना कर 'टाइम्स' और पुरातत्त्व-विभाग का ध्यान इधर आकर्षित करने का यत्न किया। परिणाम-स्वरूप यह टेंकरी खुदाई का विषय बनी, और अंततः यह क्रम भारतवर्ष के सब स्तूपों से दीर्घकाय स्तूप के रूप में प्रकट हुआ।

वेश्या-टेंकरी वर्तमान नगर के उत्तर-पूर्व में

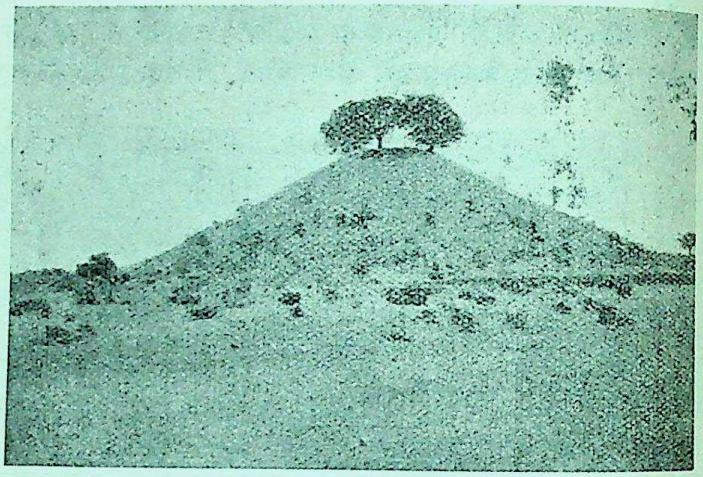

वेश्या-टेंकरी

३ मील की दूरी पर है। जैसा ऊपर कहा गया है, इसका व्यास ४०० फ़ीट का और उँचाई १०० फ़ीट की है। इसके चारो ओर एक ख़ंदक़-सी बनी हुई है। इसके पीछे, कुछ दूरी पर ही, एक विशाल तालाब है। कहा जाता है, इसे मालवे के सुलतानों ने बनवाया था। किंतु यह सत्य नहीं। उज्जैन के सप्त-सागरों में पौराणिक युग से इसकी परिगणना की जाती है, और इसका तीर्थ-माहात्म्य भी है।

वेश्या-टेंकरी के निकट ही पश्चिम तथा दक्षिण-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चिम दिशा में दो छोटी-छोटी और भी टेंकरियाँ हैं। वेश्या-टेंकरी के लिये किंवदंती है कि जिस समय युवराज अशोक उज्जैन का गवर्नर था, उसने यहाँ एक श्रेष्ठ कन्या से शादी की थी, और उसके निवास अथवा स्मृति के लिये इस जगह महल बनवाया था। इसी कारण यह स्थान 'वेश्या-टेंकरी' नाम से प्रसिद्ध है। किंतु खुदाई के बाद यह दंत-कथा प्रमाण की वस्तु न बन सकी, बल्कि अपने ढंग का सबसे पुराना और सबसे बड़ा मौर्यकालीन स्तूप इस टेंकरी से प्रकट हुआ।

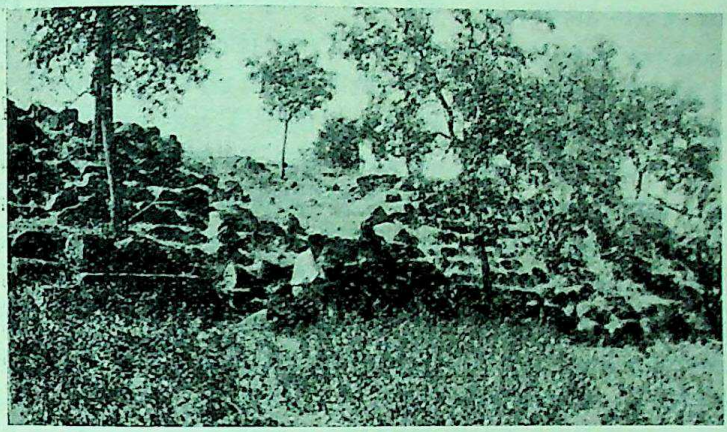

मौर्यकालीन स्तूप के उत्खनन का दृश्य

(इसी के पास आगे चलकर मुर्दे २३०० वर्ष पूर्व के मिले हैं।)

अभी तक पुरातत्त्वान्वेषकों ने इस प्रकार का स्तूप नहीं देखा। इसकी रचना भी सभी प्राप्त स्तूपों से सर्वथा भिन्नता रखती है। इसी प्रकार इससे थोड़ी-थोड़ी दूर की टेंकरियाँ भी खुदाई होने पर स्तूप की संक्षिप्त प्रतिकृति ही प्रमाणित हुई हैं। पहला विशालकाय स्तूप अर्थात् वेश्या-टेंकरी नींव के ऊपर की आधार-वेदी पर कोठी (ड्रम) की तरह मालूम होती है। ऊपर ईंटों से जुड़ाई तथा अंदर काली मोरम भरकर पुख़्ताई की गई है। बाहर के दृश्य भाग पर बड़े आकार की ईंटें कमल-दलाकार में जुड़ी हुई एक के अंदर एक निकली हैं। ईंटों की सबसे बड़ी साइज़ २२½ और १८½ इंच की है, और उससे छोटी २२½ तथा १५½ इंच की। यह मौर्यकालीन अर्थात् तीसरी शताब्दि बी० सी० का साहित्य है। इस बात का समर्थन उन सिक्कों ने भी किया, जो इस स्तूप के शिखर से खुदाई करते हुए मिले हैं। सिक्कों में कुछ 'पंचमार्क्ड' के हैं, और कुछ पर उज्जयिनी के चिह्न हैं। इस टेंकरी के निकट आने के लिये खंदक़ को पार करने का पुराना मार्ग-विशेष भी मिला है। यह पश्चिम दिशा की ओर है, जिधर पुरानी अवंतिका का होना निश्चित होता है। ऊपर की ईंटों की जुड़ाई प्रायः नष्ट-सी हो गई है, इस कारण स्तूप का बाहरी अंश जितना चाहिए, उतना स्पष्ट नहीं रह पाया है। जो बचा हुआ दिखाई पड़ता है, उससे यह निर्णयात्मक रूप से नहीं कहा जा सकता कि स्तूप का प्लान और शिल्प किस प्रकार का था। किंतु यह अनुमान अवश्य किया जा सकता है कि शिल्प-शास्त्र में इस प्रकार की कुशल रचना (जुड़ाई) का स्तूप कहीं भी प्राप्त नहीं। इस स्तूप की खुदाई प्रत्येक दिशा से की गई, जिससे चारो ओर का भाग स्पष्ट दिखाई दे, और पश्चिम-भाग की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ट्रेंच इस प्रकार लगाई गई कि स्तूप दो भागों में विभक्त दिखाई दे सके। इस खुदाई में उन महत्त्व के सिक्कों के अतिरिक्त और ऐसी कोई उल्लेख योग्य वस्तु नहीं मिल सकी। आश्चर्य तो यह कि प्राप्त वस्तुओं की तादाद भी अधिक नहीं। चीनी यात्री हुएनत्संग ने उज्जैन की यात्रा के प्रसंग पर जिस अशोकन् स्तूप का होना अशोक के बनाए हुए जेलख़ाने से कुछ दूर पर ही बतलाया है, संभवतः यही वह स्तूप हो।

वेश्या - टेंकरी से एक मील दूर, तालाब के निकट, दूसरा कुम्हार - टेंकरी - नामक स्थान है। इस पर अपने नामानुरूप मिट्टी के पात्रों के अनेक खंड दिखाई पड़ते थे। इन वस्तुओं पर भी सूक्ष्मदर्शी श्रीयुत गर्दे महाशय की दृष्टि गई, और खुदाई आरंभ की गई। इस टीले की खुदाई ने तो मानव - मस्तिष्क को इतना विस्मय में डाल दिया है कि वह अब तक एक पहेली बनी हुई है। यह टीला ऊपर से चपटा-सा था, अतएव इसके बीच में एक ट्रेंच लगाई गई। केवल पाँच-छ फ़ीट की गहराई पर ही मानव की हड्डियाँ दिखाई दीं, और ज़रा सावधानी से खुदाई की जाने पर तो मानव का संपूर्ण अस्थि-पंजर दृष्टि में आया। इसी ऊपर के स्तर में लगभग ४२ मानव-कंकाल लगातार निकल आए, जिनमें कुछ तो बिलकुल पूरे ही हैं। इनकी स्थिति विचित्र और विभिन्न प्रकार की है। इनमें से कुछ उत्तर-दक्षिण की ओर लेटे हुए पाए गए। एक मानव-पंजर अवश्य आज की प्रथा की तरह दक्षिण* में सिर किए हुए है। दो पंजरों के सिर दक्षिण-पश्चिम में हैं। टीले के उत्तरार्ध में मिले हुए पंजर पेट के बल सोए हुए थे, और दक्षिण-भाग के मुर्दे पीठ के बल लिटाए हुए हैं। अधिकांश के मुँह पश्चिम की ओर, कुछ के पूर्व की ओर और बाक़ी के आकाश की ओर थे। कुछ की स्थिति तो इतनी असाधारण थी कि जो सर्वदा के प्रेतों के गाड़ने में नहीं देखी जाती। दो शवों के घुटने दबे और ऊपर का भाग उठा था। एक की छाती का भाग दबा हुआ मालूम होता था, और सिर ऊपर उठा था। एक के शरीर का मध्य भाग बाईं ओर मुड़ा तथा घुटने दबे थे। सबसे अधिक आकर्षक तो वह पंजर था, जो बौद्ध-भिक्षुओं की तरह गर्दन झुकाए बैठा, हाथ पर हाथ रक्खे साधकों की तरह विदित हो रहा था। उँचाई तथा कमर के पास की हड्डियों की बनावट से कुछ तो स्पष्ट ही स्त्रियों के शव-पंजर थे, और इसी तरह बालकों के भी पंजर साफ़ मालूम होते थे। कुछ कंकालों के निकट कान के अलंकार (कुंडल) भी प्राप्त हुए हैं, और एक के पास गले में पहनने की मणियों की माला भी बिखरी हुई मिली। एक पंजर के दाँत लाल रंग के रँगे हुए मिले, शायद ये स्त्री के हों। इन मुर्दों के आस-पास अनेक मिट्टी के टूटे-फूटे तथा समग्र पात्र, दिए, मटके वग़ैरा भी पाए गए। इनमें से कुछ में हड्डियाँ, राख और छोटे-छोटे पात्र भी रक्खे हुए थे। पत्थर की पीसने की सिल और लुढ़िया, मिट्टी के कप, बशी की तरह के पात्र, सीधे या उल्टे एक पर एक जमाए हुए, और असंख्य पात्र-खंडों का समूह—यह सब सर्वत्र फैला हुआ था। साधारण धूलि तो मानो इन बर्तनों के साथ कुछ ही अंशों में मिली हुई थी। इस टीले के चार-पाँच फ़ीट के नीचे ही मुर्दे जलाने के चिह्न भी मिले हैं। इससे ज्ञात होता है कि यह उस समय का श्मशान होगा, जिस समय गाड़ने, जलाने और अस्थि तथा राख के गाड़ने की, तीनो प्रकार की प्रथा एक ही समय समाज में

* हमारी ओर तो सिर उत्तर की ओर ही किया जाता है। — सुधा-संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचलित थी। इन अस्थि-कंकालों के ऊपर कुछ महत्त्व के सिक्के भी मिले हैं, जिनसे यह अनुमान सहज हो सकता है कि ये मानव-पंजर ईसवी सन् के पहले दूसरी या तीसरी शताब्दि के होने चाहिए। दो हज़ार साल से ऊपर के इन अस्थि-पंजरों ने प्रकट होकर सजीव सुधीवर्ग को आश्चर्य-विमुग्ध-सा कर दिया है। जो सिक्के मिले हैं, उनमें से कुछ पर एक ओर हाथी कठड़ों के अंदर बना हुआ है, और इसी तरह के तत्सम सिक्कों पर एक ओर हाथी के बजाय कठड़ों में वृत्त का और दूसरी ओर चैत्य या पर्वत का चिह्न बना है। कुछ सिक्कों में उज्जयिनी के पुरातन चिह्न भी बने हुए हैं। प्राचीन मुद्रा-विशेषज्ञों के मतानुसार ये सिक्के ईसवी सन् पूर्व की दूसरी या तीसरी सदी के हैं, इसलिये ये कंकाल इसके भी पहले के हों, तो आश्चर्य नहीं। मोहंजोदारो की खुदाई में कुशान-काल (ईसा-पूर्व पहली सदी) के स्तूप के नीचे प्रागैतिहासिक काल के अवशेष मिले हैं, उसी तरह इन सिक्कों के निम्न स्तर से प्राप्त पंजर भी प्रागैतिहासिक हो सकते हैं। वैदिक तथा बुद्धकालीन ग्रंथों में आर्यों के मृतकों के गाड़ने की प्रथा का वर्णन अवश्य है। ये समस्त अस्थि-पंजर कलकत्ते के अंथ्रोपॉलाजिकल-विभाग में, इंडियन म्यूज़ियम के अधिकारियों की निरीक्षणता में, संरक्षण तथा परीक्षण के लिये भेजे गए हैं। अभी कुछ समय पहले ही बंगाल रॉयल एशियाटिक सोसायटी की वार्षिक सभा के अवसर पर इन 'हाड़-पंजरों' ने मानव-मस्तिष्क को आकर्षण का विषय बनाया था। उनमें से एक मानव की खोपड़ी की, जो ईसा के पहले तीसरी सदी की मानी गई है, लंबाई आदि से पुरातत्त्व-निष्णातों ने यह गणना की है कि उज्जैन का यह पुरातन महामानव काफ़ी ऊँचे क़द का होना चाहिए। नाक की लंबाई भरावदार और उठी हुई होगी। सर जॉन मॉर्शल द्वारा तक्षशिला के धर्मराजिका-मठ से निकाले गए केवल एक मानव-पंजर को छोड़ दिया जाय, तो समस्त भारत में प्रागैतिहासिक काल के इतनी अधिक संख्या में मानव-अवशेष केवल यहाँ उज्जैन ही में मिले हैं। आज इनमें अनेक विद्वानों द्वारा इतिहास का अनुसंधान किया जा रहा है। इन शवों ने जीवितों में अनेक प्रकार की कल्पना प्रेरित कर दी है। इनके प्रथमावलोकन के समय ही मुझे जिस प्रकार प्रेरणा हुई, वह यहाँ प्रकट कर दूँ, तो अनुचित न होगा—

(१)

संसृति के किन मधुर क्षणों का लेकर मौन सहारा,
कौन अरे, तुम! सोते निर्भय, ले इतिवृत्त हमारा—
इन उद्ध्वस्त शैल-शिशुओं के अंतराल में छिपकर,
चिर-समाधि साधे किस युग से, था तुमको किसका डर?

(२)

क्या तुम शुद्ध बुद्ध-अनुयायी और शांति-आराधक?
नीरव पंजर से लक्षित हो अचल सौम्यतम साधक?
अनुमानों के तुंग शैल तुम, विस्मृत कथा विधाता,
है 'अस्तित्व' तुम्हारा जीवन, यह 'इतिहास' बनाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३)

कितने शिला - खंड भूले हैं शब्द-शक्ति का ज्ञान,
और थकित हैं मानव लखकर प्रस्तर - युग - विज्ञान।
जीवित मानव को पंजर ! तुम विस्मित किए हुए हो ;
अस्थि-शलाका में युग-युग की गाथा लिए हुए हो।

(४)

युग-युग की मृण्मय चादर का कर पुनीत परिधान—
बुद्ध, अशोक और विक्रम का तानें कीर्ति - वितान ।
ये उद्ध्वस्त, सुप्त - से खँडहर आज विभव की गाथा
जाग्रत हो कहते हैं नीरव, जो कुछ यहाँ रहा था !

(५)

इनका यह 'अस्तित्व' बना है मानव का इतिहास ;
जड़ से चैतन्यों ने पाया व्यापक बुद्धि - विकास ।
आज अवंती रसवंती की गौरवमयी कहानी—
रजकण सजग बने कहते हैं अपनी बात पुरानी ।

इन शैल-शिशुओं की विस्मय - विमुग्ध-कारिणी खुदाई के बाद ही पुरातत्त्वज्ञ श्रीगर्दे साहब ने पुरातन अवंती के पुनीत भू-गर्भ के 'गढ़' पर उत्खनन आरंभ किया। सुदीर्घ काल से 'गढ़' सर्व-साधारण जनता को आकर्षित करता रहा है। उस रत्नगर्भा धरणी के अंदर से विविध साहित्य, मुद्रा, पात्र, मणि आदि उपलब्ध होते रहे हैं। वर्षाकालीन स्रोतस्विनी धूलि-शृंगों को विभक्त कर उनके अंतस्तल में दबे, भग्न भवनों की झाँकी भी कभी-कभी करा देती रही है। खाईं, ख़ंदक़, टीले और ध्वंसावशेष इतिहासविदों को सहसा आकृष्ट कर लेते रहे हैं कि इसी धरणी में अतीत का वैभव बिखरा हुआ है। कालिदास-कथित 'रत्न-राशि' यहीं कहीं दबी हुई है।

'गढ़' पर नगर की सीमाएँ स्पष्ट दिखाई पड़ जाती हैं। नगर के चारो ओर 'नगर-कोट' था, परंतु मालूम होता है, मालव-प्रथानुसार यह कच्ची मिट्टी की ईंटों का ही रहा होगा। यह कोट पूर्व-दक्षिण तथा उत्तर की ओर ही रहा है। प्रायः 'गढ़' पर धूलि-धूसरित स्थल ही मिलते हैं, पक्की ईंटों का शिल्प ऊपर कम दृष्टिगत होता है। नगर की पश्चिमी सीमा पर शिप्रा-नदी प्रवाहित होती है। इस ओर लकड़ी के पाटों से बनाए गए कठड़े एक के अंदर एक खड़े और आड़े फँसाए हुए, कच्ची ईंटों से भरे हुए नदी-तट पर खुदाई के बाद निकले हैं। इस प्रकार के कठड़े पाटलिपुत्र में भी गंगा-तट पर निकले हैं, जो मौर्य-काल के हैं, और जिनकी चर्चा ग्रीक-पर्यटक मेगस्थनीज़ ने भी की है। इन पाटों के नीचे के भाग में पॉलिश की हुई सुंदर मणियाँ भी मिली हैं, जैसी प्रायः मौर्यकालीन स्थलों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्य है, अतएव इन पाटों का समय भी तीसरी शताब्दि (बी० सी०) का होना स्पष्ट है।

कालिकादेवी के मंदिर के निकट, दक्षिण-पश्चिम दिशा में, एक नाले के तटवर्ती भाग की खुदाई की गई, तो वहाँ से मौर्यन् पॉलिश किया हुआ, सफ़ेद 'संड स्टोन' तथा 'पंचमार्क्ड' सिक्के और ढले हुए मौर्यकालीन सिक्के भी अच्छी संख्या में प्राप्त हुए। इन वस्तुओं के मिलने से यह परिणाम निकला कि मौर्य - काल के लेव्हल (स्तर) पर पहुँचने के लिये भूस्तर की ३५ से ४० फ़ीट की गहराई में अंदर जाना होगा। मौर्यन् लेव्हल से ८ या १० फ़ीट ऊपर का हिस्सा शुंगों का है। अभी क्षत्रप एवं गुप्त-काल के स्तरों का ठीक निश्चय नहीं किया जा सका है, क्योंकि इधर का प्रदेश नदी की बाढ़ अथवा अग्नि-कोप से नष्ट-भ्रष्ट-सा हो गया है। संभव है, गढ़ के ऊपरी भाग की खुदाई के समय क्षत्रप और गुप्तकालीन विभाग भी सहज उपलब्ध हो सके। गढ़ पर पीर मत्स्येंद्र का टीला

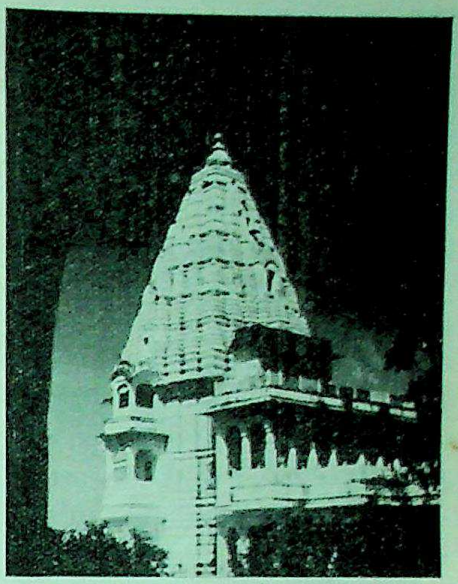

वैभवशालिनी अवंती का पुरातन शीमहाकालेश्वर का मंदिर

पीर मत्स्येंद्र के समुन्नत टीले पर लेखक, श्रीआर० करंदीकर तथा श्रीसोर्टीसा खंदक़ में पुरातत्त्व-साहित्यान्वेषण कर रहे हैं।

भी अनुसंधान के लिये अत्यंत महत्त्व का स्थान है। यहाँ एक स्थान पर २०-२५ फ़ीट नीचे खुदाई करते हुए लगातार २५ फ़ीट लंबाई तक गटर की बनी हुई दीवार पाई गई। जिस तरह मोहंजो-दारो में ड्रेन मिली है, उत्खनन के व्यापक रूप में आरंभ होने पर अवश्य ही नगर के चिह्नों के मिलने की संभावना है। गढ़ के अन्यान्य स्थलों पर की हुई खुदाई में जो महत्त्व की सामग्री मिली है, उनमें रिंगवेल्स (कुंडल की तरह के कुओं) का उल्लेख किया जाना ज़रूरी है। ये कुएँ मिट्टी की पकाई हुई गोल रिंग के हैं। हरएक रिंग के ऊपरी भाग में किनारें बनी हुई हैं, जिससे एक हिस्सा दूसरे में फँसाया जा सके। गढ़ पर ये कुएँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेक जगह मिल जाते हैं। इनका व्यास २ फ़ीट तथा उँचाई ७ या ८ इंच की होती है। कहीं-कहीं एक के ऊपर एक जमाई हुई २०-२५ रिंग्स १२ से १४ फ़ीट उँचाई तक कुएँ की तरह बनी हुई पाई गईं। ऐसे कुएँ २-२ या ४-४ पास-पास ही बने हुए २०-२२ फ़ीट नीचे कई स्थलों पर मिले हैं। वर्षा में नालों से भूखंडों के विदीर्ण होने पर कुओं तथा मिट्टी के विशाल पात्रों का दर्शन सहज ही इन नालों में हो जाता है। अतएव गढ़ पर नगर के व्यापक रूप की कल्पना करना स्वाभाविक ही है। इन कुओं के अंदर सड़ी हुई मिट्टी, अनेक प्रकार के पुराने सिक्के, मिट्टी के पके हुए बर्तन, दिए आदि तथा जानवरों की हड्डियाँ, मानव की अस्थियाँ आदि भरी हुई मिलीं। इनके अतिरिक्त बहुत बड़ी-बड़ी कोठियाँ, मिट्टी के घड़े अनेक जगह मिले हैं। इनमें से एक मिट्टी का पात्र तो बहुत ही महत्त्व की वस्तु के साथ पाया गया। उसमें किसी आदमी की अस्थियाँ थीं, और एक सील-मुद्रा भी रक्खी हुई थी। यह मुद्रा भी मिट्टी की ही ढली हुई थी। उस पर कुछ अक्षर भी बने हुए थे, जो अस्पष्ट-से हो गए थे। संभव है, इसी मृत व्यक्ति के नाम के हों। नंदी का चिह्न भी अंकित है। एक और सिल भी इसी तरह की मिली, जो सिक्के की तरह ज्ञात होती है, किंतु मिट्टी की ही है। इस पर एक और आदमी का चेहरा ढला हुआ है, दूसरी ओर कमल का आकार विदित हो रहा है। इस पर अक्षर बहुत साफ़ दिखाई देते हैं। आगे का अंश अस्पष्ट, अपाठ्य-सा है। संभवतः जिस मानव की यह अस्थि हो, उसी का यह चित्र, चिह्न और नाम आदि अंकित हो। अवश्य ही यह विचित्र और विस्मयकारी है। मिट्टी की सील और चेहरा बना होना भी भारतीय पुरातत्त्व-साहित्य में एक महत्त्व की वस्तु है। मकानों के अवशेषों का भी यही हाल है कि तीन भिन्न-भिन्न लेहलस पर एक के ऊपर एक बने हुए पाए जाते हैं। इससे यह स्पष्ट है कि खुदाई अत्यंत सावधानी से तथा काल-क्रमानुसार ३५ से ४० फ़ीट नीचे तक करना आवश्यक होगा।

पुराने ज़माने की अनेक प्रकार की मुद्राएँ, मिट्टी के खिलौने, पशु-पक्षी आदि पात्र, सुराहियाँ, पात्रों के पॉलिश किए हुए ढक्कन, थालियाँ, पानी पीने के बर्तन, ये सब मिट्टी के बने हुए अनेक प्रकार के, बहुत संख्या में, मिले हैं। एकमात्र धातु का पात्र मिला है। खुदाई में मौर्यन् पॉलिश वा एक प्रस्तर-खंड भी मिला है, जिससे यह अनुमान होता है कि निकट ही कहीं अशोक-स्तंभ भी हो।

इस प्रकार खुदाई का आरंभ बहुत सफलता के साथ हुआ है। आगामी वर्ष के लिये भी श्रीमंत सहृदय महाराजा गवालियर ने उत्खनन के लिये स्वीकृति दी है, जिसके लिये वह इतिहास-प्रिय जगत् की ओर से अवश्य ही धन्यवाद के अधिकारी हैं। हम आशा और विश्वास रखते हैं कि श्रीमंत की यह सहायता उस समय तक जारी रहेगी, जब तक यह ऐतिहासिक महान् नगरी अपने अतीतकालीन गौरवास्पद साहित्य के साथ प्रकट होकर ऐतिहासिक नूतन पृष्ठ का उद्घाटन न करे। वर्तमान उपलब्ध साधनों ने उज्ज्वल भावी का संकेत प्रदान किया है। अन्यान्य बहुमूल्य साहित्य के साथ ही यदि विक्रम और महाकवि कालिदास के पावन चिह्नों का प्राप्त हो जाना संभव हुआ, तो निःसंदेह इतिहास में सुवर्ण-पृष्ठ का प्रारंभ होगा, और उसी के साथ विक्रम की नगरी के वर्तमान शासक महाराजा का शुभ नाम भी सुवर्ण-वर्णों से अंकित रहेगा *।

* श्रीगर्दे साहब-लिखित पुरातत्त्व-विभाग की रिपोर्ट से इसमें सहायता प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मस्को-डायलाग्स्"

[श्रीपं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला']

(आप सुधा-मंडल के चिर-प्रसिद्ध युगांतरकारी कवि हैं। आपने हमारे अनुरोध से कहानियाँ और उपन्यास लिखकर भी यश प्राप्त किया है। आपकी रचनाएँ सबसे पहले हमने सन् १९२२ में छापी थीं।—सुधा-संपादक)

मेरे नए मित्र हैं श्रीयुत गिडवानीजी
बहुत बड़े सोश्यलिस्ट।
'मस्को-डायलाग्स्' लेकर आए हैं मिलने।
बोले—"यह देखिए—मस्को-डायलाग्स है,
श्रीसुभाषचंद्र ने जेल में
मँगाई थी।
भेंट की फिर मुझे, जब थे
पहाड़ पर।
'३५ तक मुश्किल से
पिछड़े इस देश में
दो प्रतियाँ आई थीं।"
फिर बोले— 'वक़्त नहीं मिलता,
मिस्टर गिडवानी का
बँगला बन रहा है,
देख-भाल करता हूँ।"
फिर कहा—"मेरे समाज में
बड़े-बड़े आदमी हैं—
एक से एक मूर्ख;
फाँसना है उन्हें मुझे;
ऐसे वे साले एक धेला नहीं
देने के।
उपन्यास लिखा है,
ज़रा देख दीजिए।
अगर कहीं छप जाय,
तो प्रभाव पड़ जाय उल्लू
के पट्ठों पर;
मनमाना रुपया फिर ले लूँ इन लो
खोल दूँ एक प्रेस नए किसी बो
आप भी वहीं चलें;
चैन की बंसी बजे।"
देखा उपन्यास मैंने,
पहले ही मिल गया—
"प्रय असनेहमई स्यामा, मुझे प्रेम है।"

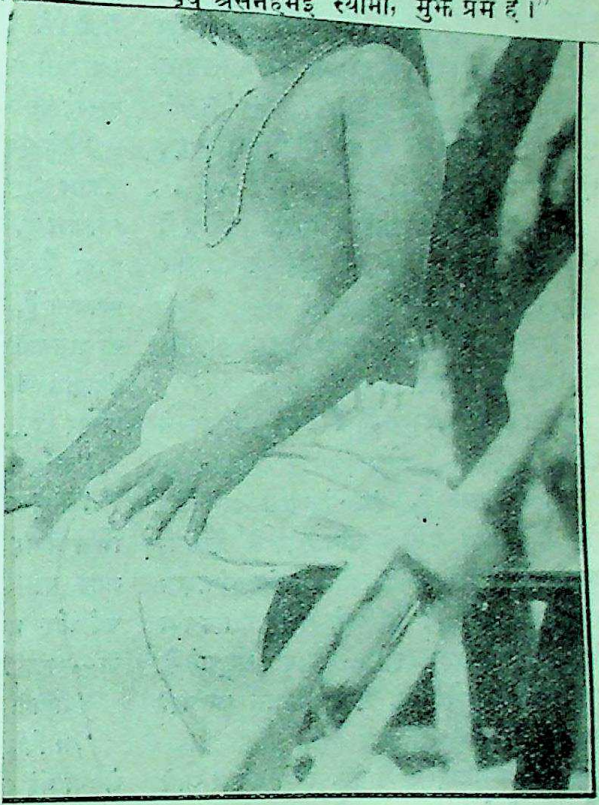

श्रीपांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'

मैत्री ठंडी
लोग आश्चर्य,

गूदड़ की कमाई में गंगादास का भी भाग होता है? तो क्या साधु गंगादास इतना गिरा हुआ है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधु और असाधु

[श्रीपांडेय बेचन शर्मा 'उग्र']

('उग्र'जी हिंदी के श्रेष्ठ नाटककार, औपन्यासिक, कहानी-लेखक और कवि हैं। आपका गद्य हिंदी में विशेष स्थान रखता है। उसमें उमंग, सरलता और स्वाभाविकता का अपूर्व सामंजस्य है। शब्द-चित्र बहुत मनोहर होते हैं। भाषा में उर्दू-शब्दों और मुहाविरों का प्रयोग बहुत सुंदर होता है। संस्कृत-शब्दों की मधुर पदावली एक बार सुनने पर कानों में गूँजा करती है। यथासंभव आप कोई भी बात इस सुसंस्कृत ढंग से कहते हैं कि शीघ्र ही समझ में आ जाय। भाषा-प्रवाह देखते ही बनता है। लेखन-शैली प्रभावोत्पादक होती है। इस कहानी में साधुता और असाधुता का विश्लेषण — सुधा-संपादक)

[illegible] मिट्टी, अनेक प्रकार के पुराने सिक्के, मिट्टी के पके हुए बर्तन, दिए आदि तथा जानवरों की हड्डियाँ, मानव की अस्थियाँ आदि भरी हुई मिलीं। इनके अतिरिक्त बहुत बड़ी-बड़ी कोठियाँ, मिट्टी के घड़े अनेक जगह मिले हैं। इनमें से एक मिट्टी का पात्र तो बहुत ही महत्त्व की वस्तु के साथ पाया गया। उसमें किसी आदमी की अस्थियाँ थीं, और एक सील-मुद्रा भी रक्खी हुई थी। यह मुद्रा भी मिट्टी की ही ढली हुई थी। उस पर कुछ अक्षर भी बने हुए थे, जो अस्पष्ट-से हो गए थे। संभव है, इसी मृत व्यक्ति के नाम के हों। नंदी का चिह्न भी अंकित है। एक ओर सिल भी इसी तरह की मिली, जो सिक्के की तरह ज्ञात होती है, किंतु मिट्टी की ही है। इस पर एक और आदमी का चेहरा ढला हुआ है, दूसरी ओर कमल का आकार विदित हो रहा है। इस पर अक्षर बहुत साफ़ दिखाई देते हैं। आगे का अंश अस्पष्ट, अपाठ्य-सा है। संभवतः जिस मानव की यह अस्थि हो, उसी का यह चित्र, चिह्न और नाम आदि अंकित हो। अवश्य ही यह विचित्र और विस्मयकारी है। मिट्टी की सील और चेहरा बना होना भी भारतीय पुरातत्त्व-साहित्य में एक महत्त्व की वस्तु है। मकानों के अवशेषों का भी यही हाल है कि तीन एक प्रस्तर-खंड [illegible] होता है कि नि[illegible]

इस प्रकार [illegible] के साथ हुआ है [illegible] श्रीमंत सहृदय [illegible] के लिये स्वीकृति [illegible] प्रिय जगत् की [illegible] अधिकारी हैं। [illegible] कि श्रीमंत की [illegible] रहेगी, जब त[illegible] अपने अतीतका [illegible] प्रकट होकर ऐहि[illegible] न करे। वर्तमान [illegible] का संकेत प्रद[illegible] साहित्य के साथ [illegible] कालिदास के पा[illegible] हुआ, तो नि[illegible] प्रारंभ होगा, अ[illegible] के वर्तमान श[illegible] सुवर्ण-वर्णों से [illegible]

ये चिंतित हो उठे, जो उनके बाद [illegible] क्ति से भगवान् की पूजा और सेवा [illegible] क्ष्मीपुर के भक्तों ने सलाह दी कि [illegible] ीन को अपना शिष्य बना लें। यही [illegible] ही-मन निश्चय भी किया, लेकिन [illegible] ास टपक पड़े, जिन्हें विधवा माता [illegible] लेकर नदी में बहाने जा रही थी।

उसकी माता से माँग लाकर [illegible] गंगादास बनाया, पाला-पोसा, बड़ा [illegible] या और पढ़ाया भी। गुरु गोविंद ने [illegible] चरित्र पर भी भरपूर ध्यान रक्खा [illegible] यम, नियम, व्रत, उपवास और कठोर [illegible] ाँध-बाँधकर गुरु ने आख़िरकार चेले [illegible] ना ही डाला। गोविंददासजी जब [illegible] ए, उस वक्त उनके शिष्य गंगादास-[illegible] के पूरे पचहत्थे जवान थे। क़स्बे के [illegible] ा-विद्वानों से जान-पहचान होने पर [illegible] का सबसे बड़ा मित्र था ग्वाला गूदड़— [illegible] योंकि गूदड़ का बाप मंदिर की गाय [illegible] ता, तब उसको, अक्सर, संग लाता [illegible] ा साफ़ करने, गायों को नहलाने, [illegible] गूदड़ के बाप को कई घंटे लगते, [illegible] कई घंटे गूदड़ और गंगादास साथ-

* श्रीगर्दे स[illegible] रिपोर्ट से इस[illegible] धन्यवाद।—ले[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही-साथ बिताते। खेलते, हँसते, दोनो यह भूल-कर कि एक साधु का चेला है, और दूसरा साधारण बालक। यों ही दिन बीते, हफ़्ते, महीने और बरसों बीते। गंगादास बच्चे से बड़े हुए, और फिर हुए साधु से महंत, मगर गूदड़ ग्वाला और साधु गंगादास का प्रेम दिन दूना और रात चौगुना ही बढ़ता रहा, यद्यपि पिछले काँटे गूदड़ लक्ष्मीपुर में बुरी तरह बदनाम हो गया था। लोगों का ख़याल था कि वही चोरों का सरग़ना है, चोरी करता है, कराता है, और इस तरह हासिल चीज़ों को इस सूबे से उस सूबे में बेचवाया करता है। गंगादास को पुराने पंडितों ने हितोपदेश भी दिए, फिर भी दोनो की मैत्री ठंडी न पड़ी, दिनोंदिन गरमाती ही गई। लोग आश्चर्य, आख़िर, करने लगे—"लुटेरे का मित्र यह साधु क्यों है, और हठ-पूर्वक रहना चाहता है? क्या गूदड़ की कमाई में गंगादास का भी भाग होता है? तो क्या साधु गंगादास इतना गिरा हुआ है,

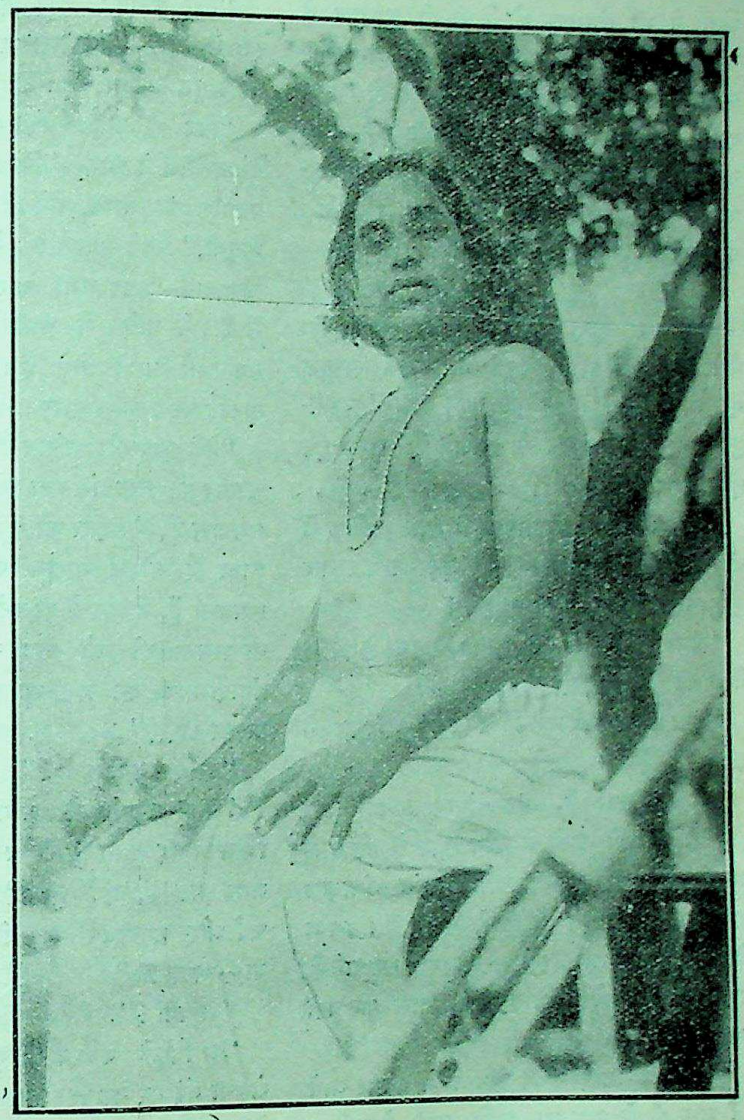

श्रीपांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा तो नहीं। बातचीत से, रंग-ढंग से, ऐसा तो नहीं मालूम पड़ता। फिर अब तक कभी, किसी ने भी, गंगादास को किसी भी दुराचार के नज़दीक नहीं पाया। एक-ब-एक साधु को हल्का सोचने में लोग मन-ही-मन सिहरते थे। मगर गूदड़ की असाधुता के प्रमाण भी कम नहीं। नवगढ़ी के डाके में कितनों ने गूदड़ को साफ़ पहचाना, मगर पकड़ उसे कभी कोई न पाया। पब्लिक तो पब्लिक—पुलिस तक!

❀ ❀ ❀

"बदमाश गूदड़ के मारे तो नाकों दम हो रहा है। हज़ार कोशिशें करने पर भी उसके ख़िलाफ़ एक भी सबूत या गवाह हम नहीं पाते।" लक्ष्मीपुर-क़स्बा-पुलिस-स्टेशन के इन्चार्ज ने झल्लते हुए छोटे दारोग़ा से कहा।

छोटे दारोग़ा बाबू बंगाली थे, और पुलिस में चंद बरसों से ही होने पर भी बड़े जोशीले और बुद्धिमान् ऑफ़िसर माने जाते थे।

"गवाह नहीं मिलते, इसका सबब कुछ-कुछ मैं जानता हूँ, शायद..."

"क्या...आप जानते हैं?" बड़े दारोग़ा ने दरियाफ़्त किया।

"मैं समझता हूँ, महंत गंगादास का दोस्त होने की वजह से क़स्बे के लोग गूदड़ के ख़िलाफ़ गवाही देने नहीं आते, क्योंकि महंत गंगादास चालचलन के बहुत ही अच्छे साधु हैं। उनका स्नेह-पात्र या मित्र लुटेरा भी हो सकता है, लक्ष्मीपुर का कोई भी ऐसा विश्वास कर नहीं सकता।"

"आप तो गंगादास की बगिया में अक्सर जाते हैं? आप ही ने कहा था न कि वहाँ के कुएँ का पानी स्वास्थ्य देनेवाला और रासायनिक द्रव्यों से दिव्य है। आप पूछते क्यों नहीं गंगादास से कि उसकी किस ख़ूबी पर ख़ुश हो उन्होंने उसे अपना सहचर बनाया है? यह बाबा भी....."

"नहीं जनाब," छोटे दारोग़ा ने प्रार्थना-भरे स्वर में कहा—"गंगादास पर शक लाना दूध को ताड़ी समझ लेना होगा।"

"फिर ··" बाईं हथेली पर दाहना घूँसा मार बड़े दारोग़ा ने कहा—"फिर गंगादास ऐसे शातिर बदमाश का साथी क्यों है? आप नहीं जानते बाबूजी," बड़े दारोग़ा ने अनुभव-जन्य रोष दिखाया—"आप अभी चार ही साल से पुलिस में हैं। ये बाबे—मैं कहता हूँ—ये बाबे सौ में सवा सौ पाजी होते हैं। बने, ढोंगी, ठग—'जे ताकहिं पर-धन, पर-दारा... ।'"

"मेरी कुछ और ही राय है," छोटे बाबू ने अपने अफ़सर की तरफ़ गंभीरता से देखकर कहा—"मैं समझता हूँ, गंगादास को गूदड़ का जीवन पसंद आता है, मोहक मालूम पड़ता है। क्यों? मैं समझता हूँ, बचपन से ही कठोर व्रत, संयम, नियमों का पालन करते-करते उक्त सभी अच्छे गुणों से गंगादास का मन खट्टा-सा हो गया। मुझे तो अक्सर डर..."

"डर क्या छोटे बाबू?"

"मैं अक्सर गंगादास से बातें करने के बाद इस चिंता में पड़ जाता हूँ कि क्या यह शख़्स जिस जगह पर है, वहाँ ख़ुश है? क्या वैराग्य, ब्रह्मचर्य और व्रत-पूजन का जीवन इसे पसंद है? या—या....."

"या क्या?"

"या जिसने बचपन में गुरु के डर से गली में खेलना बंद कर बराबर माला फेरने का अभ्यास किया; जवानी में माशूक़ों की गली की ख़ाक छानने की जगह 'राम-रज' से मूँड़ मारा—वही ज़बरदस्ती—वह तन से साधू होकर भी मन-ही-मन अधूरा ही रहा। मैं जो गंगादास की जगह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता, तो कभी का बगिया और कमंडलु बेचकर एक बार संसार का दूसरा पहलू भी देखता। और, तब अपने को पूर्ण मनुष्य समझ, पूर्ण मनुष्य से साधु को बहुत कम समझता।"

"हा हा हा हा!" हँसे बड़े दारोग़ा साहब—"छोटे बाबू की बातें होती हैं दूर की—पते की। जिन्हें कहते हैं अँगरेज़ी-ज़बान में—हाँ—'साइ-कालॉजिकल' बातें। ख़ैर, इस गूदड़ को अब आप ही सँभालिए। मुझे पूरी उम्मीद है, बदमाश को सप्रमाण गिरफ़्तार करने में आप पूरी तरह सफल होंगे। कई बरस से गूदड़ क़ानून को चरके दे रहा है। हमारी उसे गिरफ़्तार न कर सकने की कमज़ोरी पर ऊपर के ऑफ़िसर नाराज़ हैं, और तबादले का डर सर पर सरासर नाच रहा है। गोकि ईमानदार आदमी को तबादले से घबराना नहीं चाहिए, लेकिन हम तो बदले जायँगे नालायक़ बनाकर...। ऐसा न होने पाए छोटे बाबू! गूदड़ का केस आप ही सँभालिए।"

❀ ❀ ❀

"गूदड़ भाई!" गंगादास ने मंदिर के बरामदे में बैठे-बैठे पूछा—"पुलिस बुरी तरह तुम्हारे पीछे है, यह तुम जानते हो?"

"जानता हूँ, महाराज!" मित्र होने पर भी नम्रता से गूदड़ ने कहा—"लेकिन आपकी कृपा से कच्ची गोलियाँ गूदड़ ने नहीं खेली हैं। लूट-पाट के हरएक मौक़े पर मैं नहीं रहता, मेरे साथी लोग रहते हैं। मैं स्वयं किसी औरत के पास या डाका डालने जब जाता हूँ, तब एक ख़ास तरह के यंत्र से लैस होकर जाता हूँ।"

"यंत्र?" आश्चर्य से मुँह फैलाकर गंगादास ने अहीर गूदड़ से पूछा—"क्या स्त्री-गमन और डाके के लिये भी यंत्र-मंत्र होते हैं? क्या है तुम्हारे पास?"

"मेरे पास ....." गूदड़ ने धीरे से जवाब दिया—"दो टके बराबर ताँबे के सिक्के हैं, उन पर कुछ मंत्र-सा खुदा है।"

"ताज्जुब!" साधु ने फिर पूछा—"कैसे काम में लाते हो, ज़रा सुनूँ।"

"स्त्री-संग के लिये ख़ास यंत्र को कमर में बाँधा जाता है; डाकों में रक्षा के लिये मुँह में रक्खा जाता है। सब विश्वास की बातें हैं, इसे मुँह में रखकर पचासों बार मैं यारों के साथ 'काम' पर गया, और बेदाग़, हर बार, बचकर आया। यहाँ तक कि पुलिस हैरान है। अब भले ही दुनिया इन यंत्रों पर एतबार न लाए, मगर मैं तो पूरा भरोसा करता हूँ।"

"मैंने भी पुलिसवालों से तुम्हारी तारीफ़ सुनी है!"

"ठीक है महाराज," ज़रा उदासी से गूदड़ बोला—"सब ठीक है, मगर न-जाने क्या नहीं ठीक है; जिसे दिल में महसूस करने पर भी बतलाया नहीं जा सकता...मैं, आप विश्वास मानिए, इस जीवन से ऊब उठा हूँ।"

"क्या?" हैरान गंगादास ने पूछा—"तुम्हारा जीवन-क्रम मुझे तो बहुत ही आकर्षक मालूम पड़ता है। सुना है, कई सुंदरियाँ तुम्हारे वश में हैं।"

"हैं। बरसात का पानी नावदान में जाता है कि नहीं, वैसे ही हम-से निरंकुश लुटेरों का सर्वस्व अबला कहलानेवाली महामायाओं के पास ही जाता है। हैं स्त्रियाँ—कई—सुंदरियाँ; लेकिन मैं छक चुका उनके रूप-रस से। सबके दिल में अगर चाह है, तो महज़ उन रुपयों की, जिन्हें मैं अपनी जान जोखों में डालकर भर-भर अंजली लाता हूँ। रुपए न होंगे, उस दिन वे सुंदरियाँ मेरी न रहेंगी। सारा दिखावा ख़ुदग़रज़ी का है—कठोर, नीरस। मैं इस नक़ली जीवन से ऊब गया हूँ। मुझे तो ऐसा लगता है कि सनक में किसी दिन सर मुँड़ाकर किसी ओर चला न जाऊँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह !" घबराकर साधु ने गूदड़ का मुँह बंद कर दिया—"बुरी बातें मुँह से न निकालो। साधु होना है, तो यह मंदिर है, बगिया है। यहीं रहो, और सेवा करो। कहीं भागने, जाने की ज़रूरत ? मुझे तो तुम्हारा जीवन निहायत मीठा मालूम पड़ता है। मेरा तो अगर बस चले ··· " गंगादास न-जाने क्या कहते-कहते, न कह सके।

"बस," गूदड़ ने दृढ़ता से कहा—"परसों आख़िरी बार एक 'काम' और करना है। इसलिये कि उस काम की तैयारी महीनों से हो रही है, और अब पूरी हो चुकी है। लक्ष्मीपुर की विख्यात विधवा रुक्मिणीबाई के पास पाँच लाख रुपए नक़द हैं। उसी के सेवकों और नौकरानियों को मिला लिया गया है। बड़ी रक़म हाथ लगने की उम्मीद है। बस, सोचा है, इस काम को कर, दाम से एक दिन और मैं अंतिम बार सुख लूटूँगा। हरएक सुंदरी को तन और धन से संतुष्ट करूँगा, और फिर आज्ञा होगी, तो यहीं आकर आपका चेला बन जाऊँगा। फिर ठाकुरजी की सेवा उसी प्रेम से करूँगा, जिस प्रेम से आज तक चुन-चुनकर कुकर्म करता रहा।"

"छिः गूदड़ भाई !" गंगादास ने कहा—"कुकर्म-सुकर्म कुछ नहीं। देखते नहीं मुझे। बचपन ही से तो सुकर्म कर रहा हूँ। न-जाने फिर भी शांति, संतोष क्यों हासिल नहीं। तुम अपनी समझ से 'कुकर्म' करते हो। लूट-पाट करने, कमर में यंत्र बाँधकर सुंदरियों से मिलने और पुरुषार्थ से सुख की सारी सामग्री पाने पर भी तुम्हें शांति नहीं, संतोष नहीं। शांति-संतोष न तो इस ओर है, और न उस ओर, फिर दोनो तरफ़ की सैर क्यों न की जाय ?"

"महाराज !" ताज्जुब से गूदड़ बोला—"आप ऐसे कैसे वचन बोल रहे हैं ! आख़िर कुकर्म कुकर्म ही है, और सुकर्म सुकर्म। आपमें और मुझमें आसमान और ज़मीन का फ़र्क़ है।"

"कुछ भी अंतर नहीं। मैं कोई अपनी इच्छा से तो साधु हुआ नहीं, मेरा दिल चालीस साल तक आनेवाले जन्म या मुक्ति के लिये खटते-खटते निस्सार और नीरस हो गया है। गुण-दोषमय संसार में जीवन का तुलन-क्रम सम रखने के लिये आदमी को अच्छे के साथ बुरे को भी देखना—जानना ही होगा, नहीं तो वह अपूर्ण, अतः बेकल ज़रूर रहेगा। तुम बुरा देख लेने के बाद कैसे अब भले की तरफ़ बढ़ रहे हो, पूर्ण बनने की अनजान इच्छा से; वैसे ही गंगादास की पूर्णता के लिये अभी ज़रूरत है ··· "

"किसकी ज़रूरत ?"

"कुकर्मों की गूदड़ भाई ! ज़रा पास आओ। कान में एक बात कहूँ।"

कान की बात सुनकर गूदड़ सक्ते में आ रहा।

"महाराज ! आप क्या कहते हैं ? ऐसा नहीं हो सकता। आप ऐसा कुछ कर ही नहीं सकते। जिस तरह अच्छे काम अभ्यास से होते हैं, वैसे ही बुरे कामों की भी कहानी है। इनके लिये जितने अभ्यास की ज़रूरत है, आपमें उसका दसवाँ हिस्सा भी नहीं। और, न कोशिश करने पर भी, बरसों, आप पाप के मर्म को समझ सकेंगे। भले-बुरे, सबके लिये अभ्यास की ज़रूरत है। ख़ैर, अब आज्ञा हो। विधवा के घरवाला काम करने का इंतज़ाम करना है। कौन आ रहा है ? हाँ, पहचाना आपने ?"

"छोटे दारोग़ा—बंगाली बाबू—मेरे मित्र हैं···।"

"मैं जाऊँ ?"

"यह शक करें, तो—कि मेरे आते ही भागा गूदड़ ?"

"करें शक बेशक ! यह हमारा कुछ भी नहीं कर सकते। जैसे इन्हें अपने पुलिस होने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घमंड है, वैसे ही हमें भी पुलिस की आँखों में धूल झोंकनेवाला होने का अभिमान है। आइए, सलाम छोटे बाबू !"

"ओह गूदड़ !" तेज़ नज़र उस पर डालकर बंगाली दारोग़ा ने पूछा—"ख़ैरियत तो है ?"

"आपकी दया है।" गूदड़ ने 'खग ही की भाषा' में जवाब दिया। "आप बाबाजी से सुलझिए। मुझे कुछ काम है।"

गूदड़ चला, फिर भी बंगाली छोटे दारोग़ा ने बाधा देते हुए एक प्रश्न और किया—"क्या काम है गूदड़ भाई ? क़स्बे में काम है या बाहर ? तुम ख़ुद जा रहे हो ?"

"हाँ, घर पर कुछ काम है। काठियावाड़ की भैंसें बिकने आई हैं, उन्हीं के सौदागरों से झक-झक करना है। माफ़ करिएगा।"

गूदड़ चला गया। निर्भय, निर्बाध। कुछ और पूछने की इच्छा होने पर भी छोटे दारोग़ा पूछ न सके। परिणाम यह हुआ कि साधु गंगादास से आज उन्होंने बहुत सीधा, साथ ही टेढ़ा सवाल किया—"इस डाकू से आपकी इतनी दोस्ती क्यों ?"

"डाकू—? किसने कहा ?" गंगादास ने पूछा—"गूदड़ डाकू नहीं, साधारण पेशेवर इंसान है। उसे आपने क्या क़ुसूर करते पाया ?"

"यही तो हैरानी है !" सब-इंस्पेक्टर ने कहा—"मौक़े पर गूदड़ कभी पकड़ा न गया। वैसे उसके ख़िलाफ़ आतिशज़नी, डाके, जुए और ज़िना की गाड़ियों शिकायतें थाने की दराज़ों में इकट्ठी हैं। फिर भी हम उसे पकड़ नहीं सकते। हमारा ऐसा ख़याल है, आपकी वजह से गूदड़ मज़बूत है। आपका दोस्त जान आपके भक्त मुलाहज़ा कर जाते हैं। इसी गूदड़ के बारे में ख़ास तौर पर आज मैं आया हूँ। इसे जल्द ही हम क़ानून के शिकंजे में कसेंगे, लेकिन यह काम आपकी मदद बग़ैर मुमकिन नहीं।"

"कैसी मदद आप मुझसे चाहते हैं ?" गंगादास ने पूछा।

"उसे गिरफ़्तार कराने में।"

"वह तो मेरा मित्र है।"

"वह चोर है ! गूदड़ !"

"किसी-न-किसी अर्थ में हम सभी चोर हैं।" गंगादास ने दबंग आवाज़ में जवाब दिया—"न पकड़े जाने के कारण हमें कोई चोर नहीं कहता। इसी तरह जब तक गूदड़ पकड़ा नहीं जाता, उसे चोर कहना ठीक नहीं। आप तो क़ानून जानते हैं।"

"ठीक है। अफ़सोस, आप बिलकुल ठीक कह रहे हैं। मगर यह अफ़सोस टिकाऊ नहीं। हम लगे हैं पीछे गूदड़सिंह के। ज़रूर पकड़ेंगे रँगे हाथों एक-न-एक दिन—और वह दिन बहुत दूर नहीं।"

"गूदड़ मेरा मित्र है। जब कभी उसके रँगे हाथ आपके चंगुल में आवेंगे, आप देखेंगे, वे हाथ गंगादास के होंगे, गूदड़ के नहीं। वह तो साधु है साधु।"

"और आप ?"

"मैं साधुता की खाँड़ खाते-खाते खीझकर अब ज़रा ज़ायक़ा बदलने के लिये दुनिया के दूसरे तेज़ रंग देखने को लालायित हूँ। मैं गूदड़ भाई को बुरा आदमी नहीं मानता, और न अपने को बहुत भला।"

❀ ❀ ❀

रात अँधेरी और घनघोर—बरसाती वक़्त कोई बारह बजे का। पानी बरसते-बरसते रुक गया था, सन्नाटा चारो ओर भयानक था। इसी वक़्त लक्ष्मीपुर-क़स्बे का कोई व्यक्ति गोपालदास की बगिया की ओर जाता नज़र आया। आदमी सर से पैर तक काले लबादे से ढका था। उसके हाथ में एक लंबा डंडा भी बिजली की चमक में साफ़ दिखाई पड़ता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह जब बगिया के निकट पहुँच गया, नज़र दौड़ाकर उसने चारो ओर सतर्कता से देखा, कोई पीछे है तो नहीं। जब कोई नज़र न आया, तब वह बगिया के अंदर दाख़िल हुआ।

और, अब बगिया के फाटक पर दो काली मूर्तियाँ पुनः नज़र आईं। वे दोनो आदमी पहले के साथ नहीं आए थे, बल्कि कहीं छिपे थे—अर्से से। वे धीरे-धीरे बातें करने लगे—"गूदड़ ही तो है। जा रहा है गंगादास को प्रणाम कर आशीर्वाद लेने।"

"गंगादास तो गंगादास, आज विष्णूदास भी गूदड़ को हमसे बचा न सकेंगे। मैं यहाँ अकेला ही काफ़ी हूँ। तुम जाओ। सारी तैयारी सही-सही जगहों पर फ़ौरन् करो। मैं गूदड़ के साथ आऊँगा।"

एक आदमी क़स्बे की तरफ़ लौटा। दूसरा बगिया के फाटक पर खड़ा-खड़ा अंदर की बातें सुनने की चेष्टा करने लगा। मगर गूदड़ और गंगादास फाटक से काफ़ी दूरी पर बातें कर रहे थे—कुछ-कुछ उत्तेजित, जो सुनाई पड़ता था अस्पष्ट। एक बार आवाज़ आई गूदड़ की—"बस, यह मेरा आख़िरी काम ठीक, फिर मैं बैरागी बन जाऊँगा।" दूसरी बार आवाज़ आई गंगादास की—"फिर नहीं, आज ही बैरागी बन जाओ। यह काम अब उसे सौंपो, जो वैराग्य से ऊबकर अनुराग की तरफ़ लुब्ध हो।" वे फिर धीरे-धीरे बातें करने लगे, जिन्हें बाहर का भेदिया कुछ भी सुन न सका। मगर गंगादास की आवाज़ पुनः बलंद हुई—"बस, मंदिर, बगिया और ठाकुरजी की सेवा तुम सँभालो। तुम्हारी सारी सुंदरियों को मैं सँभाल लूँगा। मैं ऊब गया हूँ वैराग्य से। अनुराग का अर्थ समझने के पहले ही मुझे बैरागी बना दिया गया, सो ठीक नहीं हुआ। एक बार चिमटकर दुनिया सुंदरी का प्रेम-रस मैं चखना चाहता हूँ। वैराग्य बहुत हो चुका।"

इसके बाद कोई आध घंटे तक वे दोनो आपस में उलझते रहे, लेकिन बोलते थे धीरे। आख़िर वे फाटक की ओर आते मालूम पड़े। पद-ध्वनि सुन गुप्त पुरुष पुनः आड़ में हो रहा। फाटक पर आ उनमें से एक ने दूसरे से कुछ कहा या पूछा, पता न चल सका। हाँ, इतनी आवाज़ सुनाई पड़ी—"क्या ?"..."यंत्र के दोनो सिक्के—यह कामिनी-मर्दक और यह शत्रु-नाशक यंत्र !" इसके बाद दोनो में से एक बगिया का फाटक बंद कर अंदर की ओर और दूसरा क़स्बे की तरफ़ बढ़ा। तेज़ी से, काले लबादे में, लंबा डंडा साथ हाथ में। वह व्यक्ति बेखटके बढ़ा चला जा रहा था, गोकि उसके ज़रा ही पीछे एक तगड़ा 'खटका' लगा हुआ था।

क़स्बा-लक्ष्मीपुर के पूर्व में गोपालदास की बगिया थी। वह आदमी दक्षिण की ओर चला। पीछा करनेवाले ने भी उसे अपनी आँखो से कभी ओझल न होने दिया। एक पुराने, सूखे नाले के पास आकर डंडा-धारी ने ताली बजाई, जिससे पचासों आदमी चारो तरफ़ से निकल आए। पहले आदमी ने आज्ञा के स्वर में सबसे कहा—"फ़ौरन् अपने-अपने काम पर पंद्रह-पंद्रह की तीन टुकड़ियों में बँटकर विधवा के घर पर झपटो। हमें पता मिला है, उसके पास कई लाख नक़द हैं। बस, हिम्मत और जीवट की ज़रूरत है। वर्षों का ख़र्चा एक ही घर में भरा धरा है—बहादुरो ! बढ़ो, लूटो !" और, बिना एक शब्द के आज्ञा का पालन हुआ। तीन टुकड़ियों में बँटकर सब-के-सब क़स्बे में घुस गए।

थोड़ी ही देर बाद रुक्मिणीबाई के मकान पर भयानक डाका पड़ा। डाकुओं के पास मशालें, टार्च, तलवारें और बंदूक़ें भी थीं। डाकुओं को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे घर का एक-एक कोना मालूम था। देखते-ही-देखते रुक्मिणीबाई के सारे नौकरों को बाँध, औरत-बच्चों को एक कोठरी में बंद कर, रुक्मिणीबाई को डरा-धमका, चाबियों का गुच्छा छीन, तिजोरियाँ खोल और तोड़-ताड़कर बरसों का संचित माल डाकू लूटने लगे। इसमें उन्हें बहुत वक्त न लगा। आनन-फ़ानन में विधवा का सर्वस्व लूटकर भाग खड़े हुए।

मगर अधिक दूर न गए होंगे कि 'सामने से पुलिस की तेज़ टार्चों का प्रकाश उनकी भयानक शक्लों पर पड़ा। वे घबराकर पीछे की तरफ़, भागने के इरादे से, मुड़े। मगर इधर भी पुलिस के टार्चों का अग्निमय जमघट! देखते-ही-देखते पूरा गरोह घेर लिया गया। पुलिस के जवान कोई डेढ़ सौ थे। एक-एक डाकू के हिस्से में तीन-तीन! काले लबादेवाले डंडा-धारी को पुलिस के कई ऑफ़िसरों ने जा घेरा—"कहाँ भागता है बदमाश गूदड़, ठहर!"

"एक क़दम भी आगे बढ़ा कि गोली मार दूँगा। पहचानता नहीं, मैं बंगाली सब-इंस्पेक्टर हूँ। तुझ-जैसे डाकुओं का काल।"

"ओः आप हैं! बंगाली बाबू?" लबादेवाले नक़ाबपोश ने कहा—"गूदड़ के हाथ में जब तक यह यंत्र है, उसे कोई पकड़ न सकेगा। देखिए।"

उधर बंगाली सब-इंस्पेक्टर के हाथ में यंत्रित सिक्का गया, इधर पुलिस के हाथों नक़ाबपोश गिरफ़्तार!

"फाड़ डालो इसका लबादा," एक ऑफ़िसर ने आज्ञा दी—"कई बरस से यह गूदड़ साला हाथ आ नहीं रहा था। इसे आज नंगा कर यहीं से जूते लगाते कोतवाली ले चलो।"

हुक्म की देर—पुलिस के एक जवान ने इधर से लबादे को लिया, दूसरे ने उधर से। तीसरा नक़ाब पर झपटा। तब—सबसे पहले बंगाली सब-इंस्पेक्टर ने और फिर—सबने देखा कि नक़ाब के अंदर की सूरत गूदड़ ग्वाले की नहीं, किसी और ही की है!

"आप...?" परमाश्चर्य से बंगाली सब-इंस्पेक्टर ने पूछा।

"हाँ, बंगाली बाबू, मैं ही हूँ—गंगादास। गूदड़ ग्वाला तो कभी का साधु हो गया है।"

"साधु!" हैरत से बंगाली दारोग़ा बोला—"विश्वास:नहीं होता गंगादासजी!"

"बंगाली बाबू, मुझसे उसी भाषा में बातें करने की कृपा कीजिए, जिसमें गूदड़ ग्वाले से करते। मुझे साधु अब न समझिए। अब तो मैं साधुत्व की मिठाई से ऊबकर दुनिया की खटाई का मज़ा लेने पर आमादा हूँ। देवता बदल गए बाबूजी! पूजा का प्रकार भी, साथ ही, बदलना चाहिए।"

मुफ़्त इलाज

पुराने और कठिन रोगों का पूरा हाल भेजकर शर्तिया इलाज घर बैठे मुफ़्त करावें।

पता—Dr. R. N. Gupta, M. B, C. H. M. C.

हैनिमैन मेडिकल हास्पिटल, शेखपुरा (मुंगेर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-कविता के पिछले पच्चीस वर्ष

(संस्मरणात्मक विकास-रेखा)

[श्रीरामनाथ 'सुमन']

(श्रीसुमनजी हिंदी के श्रेष्ठ लेखक और समालोचक हैं। आपने स्त्री-संबंधी साहित्य भी अच्छा लिखा है। आप हिंदी-कविता के बारे में कुछ लिखने के अधिकारी हैं। आपने इस लेख में खड़ी बोली की कविता का गत २५ वर्षों का विकास दिखाया है। ब्रजभाषा-कविता की आपने बिलकुल उपेक्षा कर दी है। हमारा उनसे अनुरोध है कि पिछले पचीस वर्ष को ब्रजभाषा-कविता के विकास पर भी कोई लेख लिखकर भेजें। यदि और कोई सज्जन इस संबंध में लिखेंगे, तो हम उस लेख को भी आदर-पूर्वक स्थान देंगे। हमारी राय में गत १७-१८ वर्षों में खड़ी बोली के साथ-साथ ब्रजभाषा-कविता का भी विकास हुआ है, और अनेक अच्छी-अच्छी कविताएँ और काव्य ब्रजभाषा-क्षेत्र में निर्मित हुए हैं। सुधा-संपादक)

१

१९१५ में जब तुकबंदियाँ जोड़ने की लालसा मन में पैदा हुई, मैं निरा बालक था। अनुकरण और उत्कंठा के घुटनों पर खड़ा होना सीख रहा था। जीवन कौतूहल से पूर्ण था। तुकबंदियाँ जुड़ जातीं, तो बड़ी खुशी होती। साहित्य में मेरे-जैसे बच्चों के लिये कहीं कोई पथ-प्रदर्शन नहीं था, अथवा था, तो वह इतना बंधनमय था, इतना रूखा कि वहाँ काव्य काव्य नहीं रह जाता था। हिंदी-कविता जंगल में भटक रही थी—घबराई हुई - सी, मार्ग-भ्रम से विचलित, उत्कंठा-शिथिल, चकित और खोई हुई। यह भी कह सकते हैं कि जैसे भारतीय राष्ट्र अपनी चेतना खोकर बेसुध था, वैसे ही हिंदी-काव्य भी आत्मस्वरूप भूलकर विकल था। उसमें कुछ खीझ थी—अपने को अभिव्यक्त न कर सकने की। पर सब मिलाकर एक उलझन सामने आती थी।

काव्य की आत्मा तो प्रच्छन्न, विस्मृत और विलीन थी ही, काव्य-शरीर भी पूर्णतः प्रकट न था। काव्य के रूप में अनिश्चितता थी। सब कुछ बिखरा हुआ था। जीवन अपनी दिशा और गति भूल गया था। मैथिलीशरण उस समय युवकों के मानस पर तेज़ी से उठ रहे थे। पर उनका उठना काव्य की आत्मा का उठना न था; हमारी उस मानसिक सुषुप्ति में वह हमारे पूर्व, विस्मृत गौरव की ओर एक उँगली दिखा रहे थे—दिशा का एक संकेत उनके काव्य में था। हमारे संचित अहंकार को उनकी कविता एक ठेस देती थी—मानो पूछ रही हो, तुम कौन थे, क्या हो गए? 'भारत-भारती'

श्रीरामनाथ 'सुमन'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या, उनके समस्त काव्य में यह इंगित भरा हुआ है। पर उस समय वह बहुत अनगढ़ और गद्यात्मक था। काव्य का प्राणोत्कर्ष वहाँ न था; काव्य वहाँ प्रचार-साधन से प्रेरित था। वैसे युग के आवाहन की दृष्टि से यह एक अत्यंत शुभ और महत्त्व-पूर्ण कार्य था। पर मैं यहाँ काव्य की बात कह रहा हूँ। उसका विचार करें, तो कहना पड़ेगा कि दृष्टि में कहीं गहराई न थी; हाँ, विस्तार कुछ-कुछ होने लगा था।

ईश-वंदना, देश और समाज की रूढ़ियाँ, हमारी दुर्दशा इत्यादि उस समय के विषय थे। ईश-वंदना में परंपरा और गतानुगतिकता थी, और दूसरे विषयों में भी कोई नूतन ध्वनि, नूतन दृष्टिकोण या प्राणोन्मेष न था; चर्वित चर्वण-मात्र था। पद्य और गद्य में अंतर सिर्फ़ छंद की दीवार का था। दोनो की विषय-वस्तु और निर्माण में समानता थी। हिंदी-काव्य की दशा एक दीर्घकालिक रोगी की तरह थी, जो मूर्च्छा में पड़ा हो। आत्मा का तेज तो विस्मृत था ही; शरीर भी अवश, शिथिल और मूर्च्छित था।

मैथिलीशरण में एक मुमूर्षु सार्वजनिक—राजनीतिक—स्वर था। 'भारत-भारती' के रथ पर चढ़े वह युग की एक क्षीण ध्वनि का संदेश लोगों को दे रहे थे। इसलिये लोक-प्रियता उनके हिस्से में ख़ूब आई। पौराणिकता का आश्रय लेना भी उनकी लोक-प्रियता का एक कारण था। हिंदी के युवक कवि की दृष्टि, काव्य-रचना अथवा हिंदी-काव्य का अध्ययन करते समय, उनकी ओर अवश्य जाती थी। मैथिलीशरण के काव्य में भारतीय संस्कृति के आचारवाद का प्रबल आभास है। इसमें भी संदेह नहीं कि वह हमारी सभ्यता के वैतालिक रहे हैं—आज भी हैं, और इसी में उनका गुण-दोष दोनो हैं।

इनसे कुछ दूर, दूसरी ओर भी, क्षितिज पर, एक हलकी-सी आभा दिखाई देने लगी थी। जब 'इंदु' का उदय हुआ, तो यह धीरे-धीरे स्पष्ट होने लगी। हमारे साहित्य में 'इंदु' की जो देन है, उससे आज के बहुत ही थोड़े युवक परिचित हैं, परंतु कई दृष्टियों से हिंदी-साहित्य की आत्मा को जगाने में 'इंदु' की देन 'सरस्वती' से कहीं अधिक है; कम तो कदापि नहीं। इसी को माध्यम बनाकर एक गोरा-चिट्टा युवक अपने प्राणों में स्वप्न और मस्तिष्क में कौतूहल तथा प्रश्न लिए हिंदी में आया। मैं 'प्रसाद' की बात कर रहा हूँ। उपादान की दृष्टि से देखें, तो प्राकृतिक भावोच्छ्वास लेकर इस नवयुवक कवि का प्रवेश हिंदी में हुआ। प्रकृति-दर्शन से इसके काव्य का बचपन आरंभ हुआ, पर इस प्रकृति-दर्शन में भी एक सहज दार्शनिक उत्कंठा, एक जिज्ञासा थी। वह प्रकृति और उसके सौंदर्य को ही पाकर संतुष्ट नहीं। सौंदर्य में वह अपने को निमज्जित नहीं कर पाता। व्यक्तित्व अपना प्रश्न लिए अलग है। इसीलिये सौंदर्य-दर्शन में तल्लीनता नहीं है। इसीलिये काव्य-कला का सौकर्य भी नहीं है। क्योंकि जहाँ कवि सौंदर्य में डूबकर सौंदर्यमय नहीं है, जहाँ उसका निजत्व विस्मृत नहीं है, वहाँ काव्य के रस का परिपाक भी नहीं है, काव्य का लोकोत्तर आनंद ही यह है कि उसमें मानव का क्षुद्र निजत्व विस्मृत हो जाता है, और प्रच्छन्न देवत्व या आत्म-तत्त्व की एक झलक मिलती है। मैं मानता हूँ, देवोत्थान ही काव्य का लक्ष्य है। विश्वात्मा में चिर-मंगल और आनंद का जो तत्त्व है, उसकी अनुभूति और उसके प्रति समरसता तथा रसग्राहकता ही काव्य का प्राणोद्दीपन है।

मैं कह रहा था, 'प्रसाद' के काव्य का बचपन इस दोष के साथ शुरू हुआ। इससे रसानुभूति में बाधा हुई। प्रकृति और कवि के बीच अतृप्त जिज्ञासा की एक दीवार खड़ी है। पर यह दोष दूसरी दृष्टि से कवि के विलासमूलक जीवन पर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतः उसके काव्य पर भी, एक अंकुश बन गया। इस जिज्ञासा ने ही कवि और उसके द्वारा हिंदी-काव्य को एक नई दिशा प्रदान की। जिज्ञासा इस धारा की टेक है। धीरे-धीरे जिज्ञासा बढ़ती है; उधर यौवन के घन घिरते हैं। बहुत दिनों तक काव्य में जिज्ञासा अलग, रसानुभूति तथा रमणीयता अलग रहती है। परंतु ज्यों-ज्यों समय बीतता गया है, जिज्ञासा अंतर्गत होती गई है, और अंत में 'कामायनी' तक पहुँचते-पहुँचते रसानुभूति से उसका पूर्ण सामंजस्य हो गया है।

जब मैं धारा की गति का स्मरण कर रहा हूँ, तब एक बात पहले कह देना ज़रूरी हो गया है। आधुनिक हिंदी-काव्य की प्रगति में 'भारत-भारती' और 'प्रिय-प्रवास' दो बड़ी मंज़िलों के द्योतक हैं। 'भारत-भारती' ने प्रच्छन्न आत्मविश्वास को कुरेदकर ऊपर उठाने की चेष्टा की; इसने हमारे मनुष्यत्व को ललकारा—हमारे पौरुष को चैलेंज किया, और उसे उभाड़कर ऊपर लाने का उसे श्रेय है। काव्य-कला या काव्य के आत्माभिव्यंजन की दृष्टि से उसकी कुछ बहुत देन नहीं है। हाँ, रूप या शैली के निर्माण में अवश्य उसने सहायता पहुँचाई। आधुनिक भारत में रवींद्रनाथ और मैथिलीशरण, दो ही कवियों को यह यश मिला है कि युवक-समाज में उनकी रचनाएँ गाई गईं, पढ़ी गईं, और उनके जातीय हृदयोद्गार का दर्पण बन गईं। रवींद्रनाथ भाव-राशि में गहरे थे; वंग-भूमि की तरलता उनमें फूट पड़ी है। मैथिलीशरण उत्तर के, आर्यावर्त के सरल, समतल मैदानों की संस्कृति के प्रतिनिधि हैं, जिसमें पौराणिकता का ज़बर्दस्त पुट है, अतः जो ऐतिहासिक निष्कर्षों, उपाख्यानों तथा उपादानों से भरी हुई है। इसमें पौराणिकता और गतानुगतिकता है, पर चिरंतन सत्य की एक झलक भी है। रवींद्रनाथ में मानव-संस्कृति के सामंजस्य का स्वर है। मैथिलीशरण में हिंदू-संस्कृति तथा राष्ट्रीयता का स्वर है। पर रवींद्रनाथ का प्राण-पक्षी मानव-संस्कृति का पूजक होकर भी जब कहीं-कहीं प्रांतीयता के पिंजरे में फँस जाता है, अतः उसकी सहानुभूति शृंखला-बद्ध और संकुचित हो जाती है, वहाँ मैथिलीशरण में वैष्णव-धर्म की उदारता भी है, और कहीं उनका स्वर राष्ट्रीयता के क्षेत्र से नीचे स्तर पर नहीं उतरता।

'प्रिय-प्रवास' की सफलता दो बातों से है। एक तो यह कि इसमें पहली बार श्रीकृष्ण मानव-रूप में व्यक्त हुए। दूसरी बात यह कि इसने अतुकांत काव्य का आरंभ किया। संस्कृत के अनेक वृत्तों और छंदों का सफलता-पूर्वक प्रयोग करने का श्रेय भी 'प्रिय-प्रवास'-कार को है। यह करुण-रस-प्रधान काव्य है। यह भी उस ज़माने में परंपरा की लीक तोड़ने के ही समान था। इसने हिंदी को कुछ नवीनता दी, कुछ दृष्टि दी। काव्य की दृष्टि से 'प्रिय-प्रवास' 'भारत-भारती' के आगे था। इसे लेकर आलोचना का बाज़ार भी काफ़ी गर्म हुआ। किसी ने कवि को सिर पर उठाया; किसी ने अतुकांत और संस्कृत-निष्ठ काव्य-शैली का अनुकरण करने के कारण गालियाँ भी दीं, पर आधुनिक काव्य के निर्माण में इससे कवि की महत्त्व-पूर्ण देन कम नहीं हो जाती।

'प्रिय-प्रवास'-कार ने अतुकांत कविता का जो मार्ग अपनाया, उसे आगे चलकर 'प्रसाद', लोचन-प्रसाद पांडेय इत्यादि ने संस्कृत किया। इन पिछले कवियों ने संस्कृत के साथ अँगरेज़ी-साहित्य से भी इस दिशा में प्रोत्साहन प्राप्त किया। 'सानेट' लिखे; अनेक नए वृत्त चलाए; चंपू लिखे। 'प्रसाद'जी ने इस दिशा में काफ़ी काम किया।

१९२० तक हिंदी-काव्य का एक रूप बनने लगा। धीरे-धीरे नए विषय, नई उपमाएँ भी दिखाई देने लगीं। काव्य रोमैंटिक स्पर्श से पुलकित हुआ। मूर्च्छा टूटी; प्राणों में कुछ अस्पष्टता, उलझन, स्वप्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया। पर अब भी भ्रमित कस्तूरी-मृग की नाईं हिंदी-काव्य अंतःसुगंध की खोज में भटक रहा था, जब सुगंध उसी के पास थी।

१९२० में न केवल राष्ट्र ने, बल्कि राष्ट्र की आत्मा ने भी, एक करवट ली। प्राणों पर पड़ी काई कटने लगी। उपनिषद् की भाषा में सत्य पर से स्वर्ण का आवरण हटने लगा। तब से हमारी संस्कृति और साहित्य का संक्रांति-काल आरंभ होता है। वैसे उसे बहुत पहले से आरंभ कर सकते हैं। पर अब रेखाएँ स्पष्ट होने लगीं। भारीक्रांत जीवन तरंगित होने लगा। संक्रांति-काल में मन अनेक धाराओं का संघर्ष-स्थल होता है। साहित्य में भी इन विविध धाराओं का संघर्ष प्रतिफलित होता है। सत्य की खोज में प्राणों की विकलता, विह्वलता, पराधीनता और जड़ता की अनुभूति की वेदना, पूर्व-गौरव की स्मृति, महायुद्ध के बाद समस्त विश्व के मानस पर प्रलय के बादलों की तरह छा जाने-वाली दुःख तथा वेदना की काली छाया! और इनके बीच भारतीय युवक की अनेक सामाजिक रूढ़ियों में छटपटाती हुई आत्मा। पश्चिम और पूर्व का संसर्ग। समस्त विश्व के साहित्य में दुःखवाद की रोदन-ध्वनि व्याप्त हो रही थी। मनुष्य आख़िर अपने चारो ओर के वातावरण में ही साँस लेता है, और जब उसमें दुःख की विद्युत्-तरंगें भर रही हों, उनसे छूटा कैसे जा सकता है। बीसवीं शताब्दी का विश्व-अन्वेषण, आत्मशोध की प्रसव-वेदना, असफलता, खोझ, सभ्यता की निष्फलता तथा जीवन के सामान्य दुःखों और चक्रवृद्धि ब्याज-सी फैलनेवाली चिंतामूलक कल्पनाओं का चक्रव्यूह है। इस दुःख ने समस्त जीवन को अभिभूत कर लिया है। तब आनंद की सहज स्फुरणा और चेतना का विस्मरण स्वाभाविक ही है। पश्चिम के संसर्ग से हमारे साहित्य में भी दुःखवादी आदर्श ग्रहण किया गया। मानव में जो देवता है, उसके ही नहीं, जो तुच्छ है, उसके प्रति भी सहानुभूति उमड़ी। जब अंदर दुःख हो, तब दुःख वा दुःखित में आत्मीय भाव सहज लभ्य है। पतन और दुर्दशा की अनुभूति के साथ दुःखवाद की स्वीकृति बिलकुल स्वाभाविक थी। १९२० के आस-पास हमारे साहित्य में जो मंथन अंदर-ही-अंदर हो रहा था, उससे एक मिश्र वृत्तियों का काव्य, धीरे-धीरे, उद्भासित हुआ। इसमें निजत्व का स्पर्श था, व्यक्ति की अपनी हृदय-वेदना थी, दुःख की छाया थी, और इन सबके बीच जो प्रश्न उसके मस्तिष्क पर छा रहा था, उसके कारण एक दार्शनिक उत्कंठा थी। कविता का यह वह युग था, जब चिंताधाराओं का स्पष्ट विभाजन संभव न था—वट की जटाओं की तरह सब एक में गुँथी हुई थीं। पर हाँ, परंपरागत अभिव्यक्तियों की जगह स्वानुभवमयी, किंचित् दृश्य किंचित् अदृश्य, किंचित् ज्ञात किंचित् अज्ञात अनुभूतियाँ कविता में प्रकट होने लगीं। इनमें भी वस्तुवादी और आदर्शवादी दृष्टियाँ मिली-जुली थीं, जो बाद में धीरे-धीरे अलग होती गईं। अलंकार और रस की अपेक्षा अनुभूति और ध्वनि को एक वर्ग कविता में अधिक महत्त्व देने लगा। उसके मत से ध्वनि ही काव्य का प्राण है। संस्कृत-साहित्य के इतिहास में भी हम देखते हैं, एक समय आचार्य आनंदवर्द्धन के नेतृत्व में कवियों के एक वर्ग ने इसी प्रकार ध्वनि को लेकर विद्रोह का झंडा उठाया था। संसार में जहाँ भी श्रेष्ठ काव्य है, वहाँ ध्वनि का कंपन अवश्य है। कुछ आदर्शवादिता, कुछ ध्वनिमूलकता—मतलब दोनो से जो नई धारा बनी, वही 'छायावाद' के नाम से प्रकट हुई। मैं ठीक नहीं कह सकता कि इसका ऐसा नाम क्यों रक्खा गया वा किसने रक्खा। मेरा ख़याल है कि इसमें अंतश्चेतन की दीप्ति का हलका आभास होने के कारण इसे यह नाम दिया गया होगा। कोई कहते हैं कि इसके विरोधियों ने व्यंग्य एवं उपहास-पूर्वक यह नाम रक्खा। निश्चित रूप से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ कहना कठिन है, पर इतना अवश्य है कि मैंने जब १९२१-२२ में ऐसी कविताएँ लिखीं, और शायद पहली कविता मेरी ही थी, जो 'प्रभा' में 'छायावाद' की स्पष्ट शीर्ष-रेखा के नीचे प्रकाशित हुई, तो मेरे मन में इतना ही था कि इसमें अपनी अंतर्दीप्ति की एक छाया मैं रखना चाहता हूँ, जो स्वभावतः स्पष्ट नहीं है, पर जिसके साथ कवि की विकलता, व्यथा और एक अस्पष्ट खोज (अभाव-मूलक) अवश्य है, समझ न सकता था, न समझने की उम्र ही थी कि यह चीज़ क्या है, जिसे मैं चाहता हूँ। इस कविता का स्रोत व्यक्तिगत था—हृदय के उद्गार। अँगरेज़ी में इसे 'पर्सनल पोएटरी' (निजत्व-पूर्ण काव्य) कह सकते हैं। परंतु 'पर्सनल' वा निजी होकर भी उसका अंत निजत्व में नहीं था। पौधा अवश्य निजत्व के घेरे में खड़ा था, पर उसकी जड़ों का विस्तार दूर तक था। एक प्रकार की व्यापकता और आध्यात्मिकता उसमें थी।

अनुभूति तर्क की भाँति स्पष्ट और तराज़ू में तौल लेने की चीज़ नहीं। अनुभूति को वाणी में प्रकट करना समर्थ भाषा-शास्त्री के लिये भी कठिन है, इसलिये इन नवागंतुक युवकों से वह आशा दुराशा-मात्र थी। चूँकि अनुभूति की छाया थी, इसलिये शब्दों में भी कुछ खिंचाव, कुछ परदा, कुछ प्रच्छन्न ध्वनि, कुछ अस्पष्टता थी। इन अनुभूतियों के लिये बहुधा नूतन शब्दों का भी आश्रय लिया गया, या ऐसे उपादान ढूँढ़े गए, जो सामान्यतः अस्पष्ट बोध होते थे। यह अस्पष्टता अपरिचय और व्यवहाराभाव की अस्पष्टता थी। शब्द-प्रयोग का दोष न था। संस्कृत-शब्द-कोष में एक-एक शब्द के अनेक अर्थ इस बात के द्योतक हैं कि समय-समय पर शब्द नूतन अर्थों की व्यंजना के लिये प्रयुक्त होते रहते हैं। शब्द-शक्ति अत्यंत विस्तृत है। शब्द-शक्ति का एक पूरा विज्ञान ही हमारे यहाँ है। शब्दार्थ व्यवहार और प्रयोग पर भी निर्भर है। शब्दों के व्यंग्यार्थ वा गूढ़ ध्वनि को लेकर उनके विविध प्रयोग सदा होते रहे हैं, और आज भी होते हैं। जब नूतन भाव मानस में उठते हैं—ऐसे भाव, जो सामान्यतः उस भाषा की अभिव्यंजना-प्रणाली के दायरे से तब तक बाहर थे, तो उनके लिये शब्दों की नूतन अभिव्यंजनाओं का आविष्कार भी करना पड़ता है।

जब 'मतवाला'* के द्वारा 'निराला'जी का हिंदी में आगमन हुआ, तब उनके उन्मुक्त छंदों पर तहलक़ा मच गया। केचुआ और रबड़-छंदों के नाम से इनका उपहास किया गया। सच पूछें, तो हिंदी-कविता के प्रति इतना विद्वेष-भाव 'निराला'जी के प्रयोगों के कारण ही पैदा हुआ, अन्यथा 'प्रिय-प्रवास' को लोग हज़म कर रहे थे। बात यह थी कि हिंदी जिस प्रांत की भाषा थी, उसमें तब भी गतानुगतिकता और कट्टरता का प्राबल्य था। हमारे आचार्यों ने कभी नवीनता का स्वागत न किया—उन्होंने सदैव उसकी अभ्यर्थना उपहास से की। फिर 'निराला'जी के नूतन आविष्कारों के प्रति उनकी सहानुभूति क्यों होती ? 'निराला'जी के आगमन ने हिंदी का रुद्ध द्वार खोल दिया। विद्रोह की प्रबल धार साहित्य में उमड़ पड़ी। वस्तुतः 'निराला'जी के प्रयोग अत्यंत सार्थक और सोद्देश्य थे। वह एक ओर बँगला को हिंदी के निकट ला रहे थे, दूसरी ओर पद्य के पंखों को उपनिषद् में निवेदित काव्य की तरह उन्मुक्त करना चाहते थे। नवीनता की अभ्यर्थना उपहास के साथ शुरू हुई।

१९२० से १९३२ तक का समय नवीन हिंदी-

* निरालाजी की प्रारंभिक रचनाएँ हमने माधुरी में छापी थीं, मतवाला में तो बाद में निकलीं। निरालाजी की जितनी रचनाएँ हमने माधुरी और सुधा में एक विस्तृत काल तक, छापी हैं, उतनी शायद ही और किसी ने किन्हीं पत्रों में छापी होंगी।—सुधा-संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्य की किशोरावस्था का समय है। इसमें अधिकारी आचार्यों द्वारा कभी उसके प्रोत्साहन में एक शब्द ख़र्च नहीं हुआ; उसके उपहास में, उसे गिराने में, उसे लोगों के सामने ग़लत रंग में पेश करने में वाणी का विशेष उपयोग हुआ। आरंभ से—लगभग १९१५ से—बराबर नवीनता की अभ्यर्थना भर्त्सना ने ही की है। 'हरिऔध' का विरोध, फिर 'प्रसाद' का उपहास, फिर 'निराला' पर निराधार आक्षेप। नक़ल, चोरी, असमर्थता, सबके आरोप इन पर लगाए गए। नवीन धारा को आगे बढ़ाने में 'इंदु' और 'प्रभा' की देन सबसे अधिक है। इन दोनों पत्रों को, विशेषतः पहले को, आज की संतति भूल गई है, पर उस समय और लोग तो ऐसी रचनाएँ छापने से भी डरते थे*। १९३० तक 'विशाल भारत' भी ऐसी कविताओं का विरोधी था। समय की माँग तथा काव्य-धारा की शक्ति को पहचानने की दृष्टि बहुत कम लोगों में थी। १९२८ के मुज़फ़्फ़रपुर-सम्मेलन में जब मैंने इन उपहासों के विरोध में, सम्मेलन के अध्यक्ष स्व० पं० पद्मसिंह शर्मा के भाषणों की तीव्र आलोचना करते हुए, आवाज़ उठाई, तब कुछ लोगों ने बड़ा हो-हल्ला मचाया। पर आचार्यों की गद्दी का प्रभाव तो कम होता ही जा रहा था। सिंहासन के बाहर उनकी शक्ति का क्षय हो चुका था; मैंने देखा, हिंदी की प्रातिनिधिक जनता पर से उनका प्रभाव उठता जा रहा है। मुझे हिंदी-काव्य के उज्ज्वल भविष्य के विषय में कभी शंका न थी। मैथिलीशरण के काव्य की आलोचना करते हुए १९२६ में मैंने लिखा था कि उनका मार्ग अब अवरुद्ध है। या वह समाप्त हो जायँगे, या फिर, अपनी मर्यादा के अंदर भी, नवीन काव्य की प्रेरणाओं को अपनाने को बाध्य होंगे। बाद की उनकी अनेक छोटी कविताओं ने इस भविष्यद्वाणी की सार्थकता सिद्ध की है। उनको नवीन काव्य की प्रेरणा और प्राण-धारा का आवाहन करना पड़ा। पर उस ज़माने में ये सभी लोग नवीन काव्य, विशेषतः 'निराला'जी तथा अतुकांत एवं मुक्त काव्य, के विरोधी थे। सबसे ज़्यादा दुःख मुझे यह देखकर होता था कि 'हरिऔध'जी और पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी-जैसे हिंदी का संस्कार करनेवाले भी उपहासकों के दल में शामिल थे। यही 'हरिऔध'जी थे, जिन्होंने हिंदी में नूतन छंदों का पहले प्रयोग किया था, और श्रीकृष्ण के मानवीय रूप का निदर्शन किया था, और यही द्विवेदीजी थे, जिन्होंने नवीन हिंदी के निर्माण में ज़बर्दस्त भाग लिया था, और 'व्रजभाषा बनाम खड़ी बोली' युद्ध के प्रधान सेनापति रह चुके थे। आश्चर्य यह कि कल्पित नामों से, स्वयं प्रच्छन्न रहकर इन्होंने ये आक्रमण किए, और जब उत्तर दिया गया, तो उसके प्रकाशन में अड़चन डालने की भी चेष्टा की। अवस्था प्राप्त होने के साथ मनुष्य किस प्रकार रूढ़िवादी होता जाता है, यह इसका उदाहरण है। इतिहास में सर्वत्र ऐसा ही होता रहा है। कल के अग्रणी आज के रूढ़िवादी बन जाते हैं।

'निराला'जी के तांडव ने जो विरोध-ध्वनि आधुनिक हिंदी-कविता के विषय में उठा दी थी, सुमित्रानंदन पंत ने अपनी रसवती, नागरी-सी कविता से उसे कुछ कम करने में सफलता प्राप्त की। इनके जीवन तथा काव्य में जो नागरिकता—urbanity—अतः सुकुमारता थी, उसने अवस्था-प्राप्त आचार्यों को भी मोह लिया। पंत ने लोगों में एक मधुर कुहक पैदा की, और स्वप्नाकर्षण की भाँति लोगों को मोहाविष्ट कर लिया। नवीन हिंदी-काव्य में पंत को हम 'निराला' का पूरक कह सकते

* लेखक से हमारा अनुरोध है कि कृपया हमारी संपादित माधुरी (१९२२-२७) और सुधा (१९२७-४०) भी देखने की कृपा करें।—सुधा-संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं । 'निराला'जी के काव्य में शक्ति का जैसा स्फुरण है, व्यक्तित्व का जैसा निर्घोष है, और आत्मविश्वास का जैसा प्रबल स्वर है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। हिंदी-जगत् की तूफ़ानी धाराओं के बीच 'निराला' में एक चट्टान की दृढ़ता, पर साथ ही उपजाऊ मिट्टी की ग्राहकता है। यह कवि की अंतःशक्ति का द्योतक है कि विरोधों के बीच भी वह स्थिरता-पूर्वक आगे बढ़ता गया है, और अंत में संपूर्ण विरोधी वातावरण को पराजित कर जैसे ज़बर्दस्ती उस पर छा गया है। 'निराला' में जो घोर 'ब्लंटनेस' है, वही उनकी विशेषता है । उन पर उनकी पैत्रिक भूमि (उन्नाव) की गहरी छाप है—इतनी गहरी कि जहाँ इन्होंने अपने बचपन और किशोरावस्था के दिन बिताए, उस वंग-भूमि की तरलता भी केवल उस पर एक हलका-सा आवरण बनकर रह गई है। यह आवरण आबेरवाँ की भाँति झीना है, और अंदर की चीज़ को छिपा नहीं पाता। इसीलिये यद्यपि उन्होंने कई कोमल तत्त्व-प्रधान रचनाएँ भी सफलता-पूर्वक लिखी हैं, पर वे उनके निजत्व के स्पर्श से अपेक्षाकृत शून्य हैं। उनकी विशेषता वहाँ नहीं है। वस्तुतः 'निराला' में हिंदी-काव्य के पुरुषार्थ का स्वर है—पहाड़ पर होनेवाले भयंकर विद्युद्गर्जन की कड़क है। उनमें शक्ति का पद-क्षेप है। उनमें जो दोष हैं, वे भी इस गुण के कारण और उसको लेकर ही हैं। आवेश और उन्मेष में भाव-गुंफन कहीं-कहीं अस्पष्ट हो जाता है, क्योंकि भाषा उसका बोझ वहन नहीं कर पाती, अटकती है। इसीलिये 'निराला' के काव्य के अध्ययन में उत्तराखंड की यात्रा का आनंद और कष्ट है।

'निराला' के काव्य ने बाद के वर्षों में एक और मूल्यवान् चीज़ हमें दी है । नाद-तत्त्व के प्रति जैसी ग्राहकता—जैसी Understanding 'निराला' में है, वैसी आधुनिक हिंदी-काव्य में कहीं नहीं । यह ग्राहकता साधारण और लोक-प्रिय संगीत से भिन्न है। इसलिये सामान्यतः समझ में नहीं आती।

पंत के काव्य में उसका पर-पक्ष दिखाई पड़ता है, जो 'निराला' में महान् है। पंत में काव्य का नारीत्व अपनी मृदुलता की अनुभूति में रसमय है—गंडेरी की भाँति वा मुग्धा नवोढ़ा की भाँति। पंत में जीवन के स्वप्नों की छाया है—जीवन-मार्ग पर फैली धूर नहीं। जहाँ 'निराला' का जीवन-पथ कर्मण्यता के कोलाहल से मुखरित है, वहाँ पंत का जीवन-मार्ग कल्पना और स्वप्न की लता-वेष्टित कुंज-गलियों में थिरकता, इठलाता चल रहा है। इसीलिये जहाँ माधुर्य और रस की पंत में अधिकता है, वहाँ पुनरुक्तियों की 'मानोटनी' भी है। पंत के काव्य पर उत्तराखंड की पर्वत-मालाओं की भी हलकी-सी छाया है। प्रकृति के प्रति कवि में कौतूहल और किंचित् मुग्धता का स्वर है। पर सब मिलाकर पंत की कविता रंगीन कल्पना के स्वप्न-जाल में मुग्ध है। उस नारी की भाँति, जिसने जीवन में रस-ही-रस पाया है, और जो कुछ और नहीं जान पाई है। अभी नई है, और कुमारीपन की आभा उसके चेहरे पर बनी है। जीवन में स्वप्न शरीर में मृदुता, मन में दुनिया के प्रति कौतूहल—अपने में भूली खोई-सी —। 'निराला' और पंत को आधुनिक हिंदी-काव्य का पुरुष और नारी-पक्ष कहें, तो अत्युक्ति न होगी। 'प्रसाद' में इन दोनों का समीकरण हमें मिलता है।

१९३० तक ये सारी धाराएँ बिखरी हुई थीं, और प्रायः स्थानीय क्षेत्रों में ही सीमित होकर उभर रही थीं। इनका कोई सामूहिक सार्वजनिक मंच न था। साहित्य की गहरी साधना के प्रति हिंदी-साहित्य-सम्मेलन में जो उपेक्षा थी, और जो आज तक चली ही जा रही है, वह मुझे खल रही थी। मैं बड़े ध्यान से हिंदी-काव्य की गति देख रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, और उसकी उन्नति पर उत्फुल्ल था। निजी रूप में मेरा सभी प्रमुख साहित्यकारों से परिचय था—उनसे भी जो नवीन धारा के विरोधी थे। १९२७ में मैंने साहित्य के नवसर्जन के लिये नवीन चेतना का भार उठा लेनेवाली एक संस्था संघटित करने की कोशिश की—अनेक पत्रों में इसका आंदोलन किया गया। मैंने सोचा था, शुरू में नवीन साहित्य के प्रमुख लेखक और कवि एकत्र हों—एक दूसरे के सपर्क में आवें। काफ़ी समर्थन भी हुआ। हिंदी के बहुत पुराने लेखकों में से एक, श्रीगोपालरामजी गहमरी तक, ने इसका समर्थन किया, पर कुछ मेरा इकलापन, कुछ अर्थाभाव, कुछ कदाचित् समय ही अनुकूल न था—कुछ मेरे उत्तर-भारत से चले जाने के कारण भी बात वहीं रह गई। 'प्रसाद'जी की अजगर-वृत्ति भी इसका एक कारण हुई। ख़ैर, संस्था नहीं बनी, पर काम रुका नहीं। धीरे-धीरे काव्य में गति आई; विस्तार आया। वह पुष्ट होने लगा; धीरे-धीरे विरोध कम होता गया। विरोध का स्थान उपेक्षा, उपेक्षा का कौतूहल, कौतूहल का जिज्ञासा, लेती गई। फिर अस्पष्ट सहमति का युग आया। १९३३ के बाद तो प्रत्येक पत्रिका में नूतन कवियों* का स्वागत होने लगा। यहाँ तक कि आधुनिक हिंदी-काव्य अपने नक़लचियों ('सूडो' कवियों) की अनुत्पादक छंदोबद्ध बाढ़ से घिर गया।

१९३२ से १९४० तक, यानी इन आठ वर्षों में, हिंदी-काव्य ने संतोष-जनक उन्नति की है। कल के उपेक्षित आज के 'हीरो' (नायक) हैं। इन वर्षों में सैकड़ों काव्य-ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। युक्त प्रांत की सरकारी रिपोर्टों के अवलोकन से मालूम होता है कि सबसे ज़्यादा पुस्तकें आजकल काव्य की ही निकलती हैं। खपती भी हैं। उनके पाठकों की तादाद बढ़ी है। फिर भी ईर्ष्यालु, प्राचीनता-प्रेमी आचार्यगण इस पर अस्पष्टता और दुरूहता का दोष लगाते ही जा रहे हैं। आश्चर्य, यह अस्पष्ट और दुरूह विभाग जनता में काफ़ी लोक-प्रिय हो रहा है।

इन वर्षों में हिंदी-काव्य में अनेक शैलियाँ फूटी हैं। कुछ ज्वालामुखी शांत भी हो गए हैं, जैसे 'एक भारतीय आत्मा', पांडेय मुकुटधर आदि। सियाराम-शरण, 'नवीन', सुभद्राकुमारी चौहान, भगवतीचरण वर्मा, महादेवी वर्मा, बच्चन, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, 'दिनकर', 'नेपाली', 'अंचल', 'द्विज', 'प्रेमी', 'मिलिंद', 'नरेंद्र', और आरसीप्रसादसिंह इत्यादि ने काव्य में काफ़ी सफलता प्राप्त की है। महादेवी ने गत १५ वर्षों में अपना बड़ा विकास किया है। आरंभ में इनके काव्य में कुमारीत्व की जो सरलता थी, उसने प्रणय के निगूढ़ मार्ग में आत्मार्पण किया है, और नारीत्व की तरलता और प्यास से उसका मानस प्रकंपित है। उसमें नारी के अतृप्त हृदय की गहरी अनुभूति तथा दंशन की छटपटाहट है। चिर-वियोगिनी नारी के निगूढ़ हाहाकार से इनका काव्य मुखरित है। वह वेदना के अतल में डूबा हुआ है। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया है, वेदना में ही संतोष और तृप्ति की खोज बढ़ती गई है। इनके काव्य में एक ओर मूक और निष्फल आकांक्षाओं का व्यथातुर उत्पीड़न है; दूसरी ओर आत्मार्पण में शांति एवं जीवन की सफलता ढूँढ़ने की चेष्टा। मनोविज्ञान के विद्यार्थी के लिये इनका काव्य विरोधी भावनाओं के संघर्ष की पर्याप्त सामग्री जुटाता है। इनके हृदय में तो वही चिरंतन

* हमने तो माधुरी (१९२२) और सुधा (१९२७) में इनके प्रारंभ-काल से ही छायावादी कविताएँ भी छापी हैं। वर्तमान श्रेष्ठ छायावादी कवियों में से अधिकांश की प्रारंभिक और प्रौढ़ रचनाएँ छापने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ है।—सुधा-संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारीत्व का क्रंदन है—आकांक्षा है आत्मार्पण करके, सर्वस्व देकर तृप्ति - बोध करने की। पर संस्कार, चिंता-धारा और उपार्जित स्वत्व-बोध के कारण विद्रोह, खीझ और घृणा भी है। इसलिये नारीत्व सफल नहीं हो पाता—उसके आत्मार्पण में पूर्णता नहीं है; एक 'रिज़र्व' है। फिर इनकी आत्मार्पण की अनुभूति मुखरा है—उसमें मौन त्याग का अबोलापन नहीं। अपने त्याग की वेदना की श्रेष्ठता सिद्ध करने की तार्किकता है।

महादेवी में जो कुछ मृदुल और रसमय है, वह उनके नारीत्व को लेकर ही है। जीवन के संघर्ष में भी यह मृदुलता इसलिये बच गई है कि नारी नारीत्व से भागकर भी अपने से सर्वथा पलायन करने में असमर्थ है। पर इनके समस्त काव्य के अध्ययन से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि निरंतर की खीझ और निष्फलता की तीव्रता के कारण नारीत्व के उस मृदुलता के स्रोत पर एक आवरण पड़ता जा रहा है। यह आवरण पहले झीना था; अब उसमें घनत्व और पृथुलता आ रही है। इसीलिये महादेवी के काव्य में रस का परिपाक बहुत कम दिखाई देता है। जहाँ निजत्व बिलकुल विस्मृत है, वहाँ पूर्ण आत्मार्पण है, वहीं रस घनत्व को प्राप्त होता है। महादेवी में नारी की सर्वस्वार्पण की और अपना सर्वस्व देकर अपने को कृतार्थ कर लेने की भावना है, पर वह सर्वस्वार्पण कर नहीं पाई हैं—यह भावना भी उनके समस्त प्राण में ओत-प्रोत नहीं है; यह उनके न चाहने पर भी है, इसलिये कि वह नारी हैं, और नारीत्व की मृदुल उत्सर्ग भावना से, इच्छा हो या नहीं, नारी के लिये पूर्ण पलायन संभव ही नहीं। इसी संघर्ष के कारण रस महादेवी में प्राणगत नहीं है, वरन् उनके काव्य का तार्किक परिणाम (Logical concluision)-मात्र बनकर रह गया है। इस संघर्ष के कारण ही उनमें गूढ़ता है। यह गूढ़ता रहस्यवाद की गूढ़ता नहीं है; जीवन की पहेली के न सुलझने के कारण कवि में जो अनिश्चय है, उसकी गूढ़ता है। पर जो हो, महादेवी ने आधुनिक हिंदी-काव्य पर अपनी एक छाप डाली अवश्य है। युवक कवियों का समुदाय-का-समुदाय उनके प्रति आकर्षित हुआ है। उनका अनुकरण कम-से-कम छंदों में तो बहुत अधिक हुआ है।

महादेवी की तरह रामकुमार भी इन वर्षों में बढ़ते ही गए हैं। इनकी कविता में कल्पना का अच्छा उपयोग हुआ है। रहस्यवादी स्पर्श भी है। अलंकारों का भी इन्होंने अच्छा उपयोग किया है। ध्वनि और सांकेतिकता भी इनमें यथेष्ट मात्रा में है। इनकी चंद कविताएँ बहुत अच्छी हैं।

भगवतीचरण में प्रवाह है। बौद्धिक वस्तुवादी व्यंजना से इनका काव्य परिपूर्ण है। इनमें 'सेंस ऑफ़ ह्यूमर' भी ख़ूब है। जब कहते हैं, उद्दाम वेग से कहते हैं। काव्य में, और कवि में भी, जीवन का एक प्रखर, क़रीब-क़रीब चुनौती देनेवाला—'चैलेंजिंग'—स्वर है। वेदना और व्यथा है, पर उनके पीछे पुरुष को भाग्य के प्रति दुस्साहसिक ललकार भी है।

सियारामशरण में गहराई है। और, गहराई से भी अधिक सरलता। यह हमारे साहित्य के कदाचित् एक ही मानवीय कवि हैं। हिंदी-काव्य की मधुशाला में मानो दक्षिण पवन का एक ठंडा, हलका, चैतन्य करनेवाला, झोंका आ गया हो—कुछ ऐसी इनकी देन है। ग्रामीण नववधूटी की तरह प्रसाधन-हीन होने पर भी इनकी कविता प्राकृतिक सौंदर्य से पूर्ण है। रस से प्राण भरे हुए हैं। पर इस रस पर मर्यादा और संयम की बाँध है। यौवन-घट रस में अंदर-ही-अंदर घुट रहा है, अनबोला प्राण प्रेम के दीपक पर अंचल-सा बना हुआ है। शुद्ध वातावरण, स्वस्थ विचार और सच्ची मनोज्ञता ने, काफ़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय हो जाने पर भी, इनके काव्य का कौमार्य क़ायम रक्खा है।

सुभद्राकुमारी ने काव्य में नारी में रमणी की अपेक्षा मातृत्व-बोध की अधिक चेष्टा की। उन्होंने नारी में मूर्च्छित, पर सतत वर्तमान मातृत्व के दर्शन किए हैं। इनमें मातृत्व का आत्मसंतोष है। पर काव्य-कला की दृष्टि से इनके परिमार्जन और विकास का जब समय आया, तब यह बुझ रही हैं।

बच्चन में पहाड़ी नाले का प्रखर वेग है। इनके काव्य में जवानी का अश्रांत नर्तन है; उद्वेलित यौवन की चुनौती है। उसमें उद्दाम प्रवाह, भाषा का सुथरापन और व्यंग्य है,तथा जीवन की भौतिकता का स्वर तीव्रता के साथ व्यक्त हुआ है। पर इस भौतिकता में पेचीदगी वा उलझन नहीं है; यौवन के आवेग के साथ इसके मूल में एक अद्भुत सरलता भी है। इतनी बेपरवाही, इतना समर्पण—इतना 'अबंडन'—हिंदी-काव्य में अन्यत्र नहीं दिखाई देता। कला की दृष्टि से इनकी कविता का स्थान काफ़ी ऊँचा है। शब्द मँजे हुए हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि उमर ख़ैयाम का रंग होते हुए भी इनके काव्य में निपट शारीरिकता नहीं है; इसके पीछे गहराई है, और जीवन का सरलता-पूर्ण कौतूहल है। जीवन की मधुशाला के बीच बैठकर भी कवि रिंद नहीं बना; कोई बंधन उसे उस वातावरण में भी उससे ऊँचा उठाए रहा है। हाल की कविताओं का स्वर पूर्व-काव्य से भिन्न है, और उस पर नियति के एक कठोर व्यंग्य-सा लगता है। इसमें अनिच्छा-पूर्ण, कठोर एवं बलात् जागरण की वास्तविकता है। अब इसमें दुःख और व्याकुलता की विदग्धता तो आ रही है, पर अविश्वास और प्रश्न की भी एक हलकी-सी रेखा कहीं-कहीं दिखाई देती है। यही इनके काव्य के लिये ख़तरे की चीज़ है।

'नवीन' भावना के कवि हैं। फलगू की धारा के समान यह फूलों-करारों को ढहाते चलते हैं। जिधर मन आया, निकल गए। मार्ग पूर्व-निश्चित नहीं। प्रवाह जिधर ले गया, चले गए। उद्दाम यौवन का स्वर इनकी कविता में है। परंतु शब्दों पर इनका अधिकार बहुत कम है। तुकों के लिये अक्सर शब्दों को बहुत तोड़ते-मरोड़ते हैं। ग्रामीण तथा विजातीय प्रयोग भी इनकी कविता में हैं। अक्सर होता यह है कि शुरू की दो-चार लाइनें अच्छी बन जाती हैं, फिर जैसे शब्द मिलते नहीं, या इनके भावों में तोड़ इतना होता है कि किस ज़मीन पर जा रहे हैं, इसे देखने की फ़ुर्सत ही इन्हें नहीं मिलती। उर्दू ग़ज़ल की स्पिरिट—प्रियतम से अलाप—इनकी कविता में पर्याप्त है। और, ग़ज़ल की तरह ही कोई एक पद इनकी कविता का प्राण होता है। इनके काव्य में भावों का प्रबल संघर्ष भी दिखाई पड़ता है—जैसे कवि सदा अपने दिल से लड़ रहा हो, और उद्वेलित यौवन के उद्दाम प्रवाह में उसके पाँव लड़खड़ाते हों। कर्तव्य और दिल की रुझान—श्रेय और प्रेय—का संघर्ष इनके काव्य में है। हृदय में बड़ी आसक्ति है। दिल को उपालंभ देते हैं, खरी-खोटी सुनाते हैं; माशूक़ से भी दो-दो हो जाती हैं। दोनों का युद्ध अभी समाप्त नहीं है। इसीलिये इनका काव्य दो किनारों से चल रहा है। पर इनमें दुस्साहसिकता—'एडवेंचर'—की स्पिरिट ख़ूब है। यौवन का स्वर इनके राजनीतिक वा शृंगारिक, दोनों प्रकार की कविताओं पर छाया हुआ है।

'द्विज' में आग्रह और रोदन की ध्वनि है। भगवतीप्रसाद वाजपेयी की कुछ छोटी कविताएँ अच्छी हैं। इनकी कविताओं में भी उपन्यासकार प्रधान है। इसीलिये चित्र-सा खड़ा कर देते हैं। 'दिनकर' में राष्ट्र-भारती की जवानी बोलती है। वह जवानी, जो हर क़दम पर कुछ करने, कुछ देने और कुछ लेने को भी बेचैन है। 'दिनकर' में युग की चुनौती का स्वर भी है। 'नेपाली' में मनोज्ञता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृति-परिचय भी है। 'नरेंद्र' लालसा और भोग-श्रृंगार के कवि हैं। उसमें उन्हें सफलता भी मिली है। इन्होंने और पंतजी ने अपने काव्य के उत्तर-काल में जो पथ अपनाया, वह इन दोनो के लिये बिलकुल अप्राकृतिक मालूम पड़ता है। इस प्रकार की कविताओं में इनके हृदय की गहराई का स्पर्श नहीं; मस्तिष्क का विलोड़न-मात्र है। इसमें कवि का 'ट्रेजिक' रूप है। जैसे परिस्थिति से विवश और कातर उसने यह मार्ग अपनाया है। इनमें निजत्व का स्पर्श नहीं, क्योंकि जिस वातावरण और स्थिति के चित्र इन कविताओं में हैं, उनमें कवि का जीवन ओत-प्रोत नहीं है ; वहाँ उसका आनंद नहीं है, अतः हृदय का रस भी नहीं। पंतजी ने इन कविताओं से न अपने को, न अपने काव्य को कुछ श्रेय दिया। ये उनके संस्कार और जीवन के अतल से दूर की चीज़ें हैं, और कवि केवल उनका द्रष्टा बनकर रह गया है।

एक और धारा आधुनिक हिंदी-काव्य में शुरू से रही है। यह जातीयता की भावानुभूति की धारा है। मैथिलीशरण, माखनलाल, 'नवीन', 'दिनकर', सोहनलाल इत्यादि प्रधानतः इसी के कवि हैं। माखनलाल में यह उत्कर्ष को प्राप्त हुई। उनमें राष्ट्र के प्राणों का स्वर, काव्य के वातावरण के बीच, व्यक्त हुआ है।

इनके अलावा और भी अनेक कवि हैं। पर आधुनिक हिंदी-काव्य का पूरा परिचय तो किसी बड़ी पुस्तक में ही दिया जा सकता है। आज तो हिंदी-काव्य की धारा शतधा होकर बह रही है। अवश्य ही इसमें मल भी है, और पर्याप्त मल है; विजातीय द्रव्य भी हैं, पर उसमें फलोत्पादकत्व और तत्त्व भी कुछ कम नहीं। 'मिलिंद', 'प्रेमी', 'केसरी', 'अंचल', आरसीप्रसादसिंह इत्यादि अनेक कवियों को काफ़ी सफलता मिली है।

पुरानी शैली के कवियों में 'अनूप' का नाम नहीं भुलाया जा सकता। वीर-रस के यह एक ही कवि हैं। इनका सिद्धार्थ-महाकाव्य 'प्रिय-प्रवास' के बाद उस प्रकार की रचना का शायद सबसे श्रेष्ठ उदाहरण है। पुरानी शैली के कवियों में श्रृंगार-काव्य में पद्मधर अवस्थी ने बड़ी सफलता प्राप्त की थी। यह आशु-कवि थे। बड़े सहृदय। मैंने इनके मुख से अनेक कविताएँ सुनी हैं। दुःख है, वर्षों पूर्व, भरी जवानी में, एक दिन, एकाएक काशी में ही इनकी मृत्यु हो गई।

मतलब यह कि हिंदी-काव्य ने शक्ति पाई है, और वह अनेक कवियों के हृदय का अमृत पीकर पुष्ट हुआ है। उसकी सफलता का इससे दृढ़ प्रमाण और क्या हो सकता है कि जो लोग कल तक उसका उपहास करते थे, आज उसके प्रशंसकों में हैं, और कोई पत्रिका उसके विना अपनी शोभा पूर्ण नहीं समझती। २५ वा १० वर्ष पूर्व की स्थिति का जब हम ध्यान करते हैं, तो आश्चर्य होता है। तब हिंदी-कवि अछूत था; कवि-सम्मेलनों में उसे कौन पूछता, पत्रिकाओं के द्वार भी शायद ही कभी उनके लिये खुलते थे। आज विश्वविद्यालयों की उच्चतम परीक्षाओं में आधुनिक हिंदी-काव्य पढ़ाया जाता है। विवश होकर उसे हिंदी के समीक्षात्मक इतिहासों में स्थान देना पड़ा है। तब का बालक आज युवा हुआ है। इस यौवन में ही उसके लिये ख़तरे भी हैं। आज फिर हिंदी-काव्य किंचित् दिङ्मूढ़ हो रहा है। आरंभ में छायावाद के साथ जो आध्यात्मिकता की अंतःसलिला साहित्य में आई थी, उसका स्रोत सूख-सा रहा है। नहीं कहा जा सकता कि यौवन की प्रचंडता हिंदी-काव्य को किधर ले जायगी ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ण-व्यवस्था

[श्रीयुत संतराम बी० ए०]

(श्रीयुत संतरामजी सुधा-पाठकों के चिरपरिचित हैं। पंजाबी लेखकों में सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित आप ही हैं। वहाँ के जात-पाँत-तोड़क मंडल के आप प्राण हैं, और इस अनिवार्य समाज-सुधार में आपने अपना जीवन लगा दिया है। इसमें आपको यथेष्ट सफलता भी मिली है। पंजाब में जात-पाँत का गढ़ तेज़ी के साथ टूट रहा है। और प्रांतों में भी इसका असर हो रहा है। जात-पाँत और छूत-छात के संबंध में आपके विचार पढ़िए, और मनन कीजिए।—सुधा-संपादक)

योरपीय युद्ध से वैसे तो अगणित शिक्षाएँ मिलती हैं, परंतु हिंदुओं के लिये सबसे प्रधान शिक्षा यह है कि किसी राष्ट्र को चार भागों या वर्णों में विभक्त करके देश-रक्षा का काम उन चार वर्णों में से केवल एक ही का कर्तव्य ठहरा देना मूर्खता की परा काष्ठा है। भारत में अँगरेज़ों के पहले जितनी लड़ाइयाँ होती रही हैं, उन सबमें केवल क्षत्रिय—राजपूत—ही भाग लेते रहे हैं। दूसरे वर्णों को तो शस्त्र-विद्या सीखने का अधिकार तक न था। इसलिये जब राजपूत हार जाते थे, तो शेष हिंदू चुपचाप आक्रमणकारियों की दासता स्वीकार कर लेते थे। इसी से हिंदुओं की मनोवृत्ति हो गई है—

कोउ नृप होय, हमें का हानी ?
चेरी छाँड़ि न होउब रानी।

अर्थात् वे समझते थे कि कोई राजा बने, हमारी क्या हानि ? हम तो सदा शासित और दास ही बने रहेंगे। एक भंगी, चमार या कहार के लिये एक ही बात है, चाहे हिंदू राजपूत का राज्य हो, और चाहे मुसलमान या ईसाई का। वह बेचारा तो सदा भंगी का भंगी ही बना रहेगा। उसे कभी गवर्नर या ब्राह्मण बनने का अधिकार प्राप्त न होगा। यही मनोवृत्ति आज भी भारतीयों और विशेषतः हिंदुओं में दिखाई दे रही है। योरप में भयंकर युद्ध हो रहा है, और ये निश्चिंत बैठे कह रहे हैं—अजी, अँगरेज़ चले जायँगे, तो जर्मन आ जायँगे, हमें इससे क्या ? जैसे इस परिवर्तन के साथ इनका कोई संबंध ही नहीं। हिंदुओं की मनोवृत्ति तो इतनी पतित हो चुकी है कि वे अपने आपको सुदृढ़ बनाने के बजाय सदा दूसरों का ही आश्रय ढूँढ़ा करते हैं। वे कभी सिक्खों की चापलूसी करते हैं, और कभी मुसलमानों की। जब सिक्ख उनसे कहते हैं कि हम तुम्हारी रक्षा करेंगे, तो वह मारे ख़ुशी के फूले नहीं समाते। वे उन्हें रुपया-पैसा, कपड़ा-लत्ता और खाद्य-पेय सब कुछ देने को तैयार हैं, परंतु उन्हें स्वयं अपने को सबल बनाने का कभी विचार तक नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका कारण भी वर्ण-व्यवस्था का वही घातक परिणाम है, जिसने हिंदू को सिखलाया है कि तुझे अपनी रक्षा की चिंता करने की आवश्यकता नहीं; तेरी रक्षा का काम क्षत्रिय का है। जर्मनी यदि आज इस ब्राह्मणी वर्ण-व्यवस्था का अनुयायी होता, तो वहाँ हिटलर आज सर्वाधिकारी न होकर मोची की दूकान पर बैठा जूते सिया करता, क्योंकि उसका पिता एक चमार था, और ब्राह्मणी वर्ण-व्यवस्था में एक चमार को देश का शासक बनने का कोई अवसर ही नहीं। दूसरे, इस वर्ण-व्यवस्था का अनुयायी होने से जर्मनी-जैसा छोटा-सा देश इस युद्ध में साठ-सत्तर लाख सेना न ढकेल सकता।

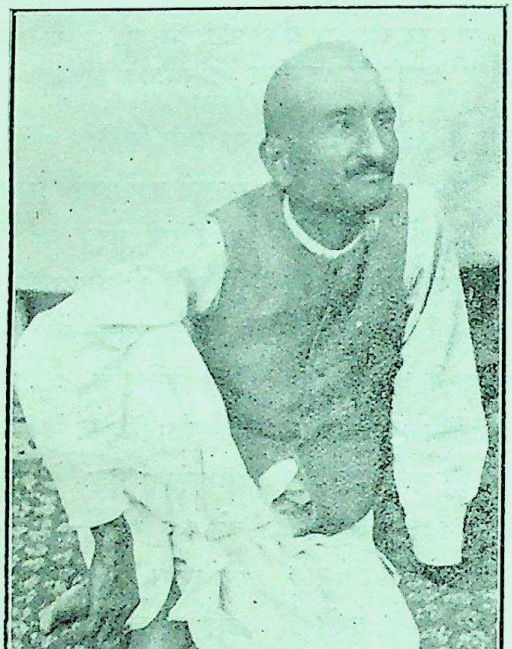

श्रीसंतराम बी० ए०

पश्चिमी देशों में हिंदुओं की-ऐसी वर्ण-व्यवस्था न होने से देश की रक्षा का काम जनता के केवल एक चौथाई भाग का ही कर्तव्य नहीं समझा जाता। वहाँ भंगी से लेकर पादरी तक सबको युद्ध-कला सीखनी पड़ती है। इसलिये संकट आने पर सारा राष्ट्र शस्त्र लेकर शत्रु के विरुद्ध खड़ा हो जाता है। गत महायुद्ध में जर्मनी हार अवश्य गया था, परंतु उसे दास नहीं बनाया जा सका था। इसी प्रकार यदि, परमेश्वर न करे, अँगरेज़ इस युद्ध में हार भी जायँ, तो जर्मनी उन्हें दास नहीं बना सकेगा। कारण यह कि अँगरेज़ों की मनोवृत्ति हिंदुओं की मनोवृत्ति नहीं। वहाँ के सर्व-साधारण हिंदुओं की भाँति यह नहीं कहते—

कोउ नृप होय,
हमें का हानी?
चेरी छाँड़ि न
होउब रानी।

अँगरेज़-बच्चे में जब तक प्राण है, स्वतंत्रता का भाव उसमें से निकल नहीं सकता। हालैंड बेलजियम और फ्रांस आज दब अवश्य गए हैं, परंतु जर्मनी उन्हें देर तक दबाकर रख नहीं सकेगा। इसके विपरीत ब्राह्मणी वर्ण-व्यवस्था ने अछूतों, शूद्रों और बनियों के भीतर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वावलंबन का भाव ही नष्ट कर दिया है। इनको सदा क्षत्रियों—आजकल के समय में चाहे वे सिक्ख हों, और चाहे मुसलमान—का मुखापेक्षी और मुहताज बना रहने का स्वभाव डाल दिया है। आज भी बनिए और ब्राह्मण स्वयं लड़ाका बनने की अपेक्षा धन देकर स्वरक्षा के लिये रक्षा-दल या गोरखा सिपाही रखना पसंद करते हैं। जैसे मधुमेह और यक्ष्मा का प्रभाव मनुष्य की देह में दूर तक पहुँचता और प्रकट होता है, उसी प्रकार ऊँच-नीच-मूलक वर्ण-भेद का प्रभाव हिंदुओं की मनोवृत्ति में बहुत दूर तक और नाना रूपों में प्रकट हो रहा है। हिंदुओं में परावलंबन के भाव के लिये यह वर्ण-व्यवस्था ही ज़िम्मेदार है।

आए दिन सुनने में आता है कि आज अमुक स्थान में डाका पड़ा, आज अमुक स्थान के बनियों को इर्द-गिर्द के देहात के जाट लूट ले गए, और बनिए तथा ब्राह्मण डाकुओं की शकल देखते ही मुसरी की तरह सो गए। इस प्रकार तीन चौथाई हिंदू-जनता के कायर होने का कारण भी यही वर्ण-भेद है। मनुष्य परिस्थितियों का दास है। बालक को जैसी परिस्थिति में रख दिया जाय, वह वैसा ही बन जाता है। सैनिक के पुत्र को यदि दूकानदार के घर में रख दिया जाय, तो वह डरपोक हो जायगा; यदि दूकानदार के बेटे का सिपाही के घर में पालन-पोषण होगा, तो वह निडर बन जायगा। वर्ण-व्यवस्था के कारण बनिए बनियों में और जाट जाटों में ब्याह-शादी करते हैं। इसलिये बनिए का बेटा एक विशेष प्रकार की परिस्थिति में पालित-पोषित होता है। उसके माता-पिता, ताऊ-चाचा, मामा-नाना, साले-बहनोई, सब दूकानदार बनिए होते हैं, जिनका मार-पीट, लूट-खसोट, रक्तपात से कोई संबंध नहीं होता, जो रक्त की बूँद देखकर भी घबरा जाते हैं, जिनके यहाँ एक दूसरे से हाथा-पाई होना भी परले दरजे का कुत्सित कर्म समझा जाता है। फलतः वह बालक बड़ा डरपोक, लड़ने भिड़ने से दूर भागनेवाला और दुर्बल-हृदय हो जाता है। इसके विपरीत जाट का लड़का जिस परिस्थिति में पलता है, वहाँ मार-पीट, लूट-खसोट, डाका-चोरी, हत्या-रक्तपात एक बहुत साधारण और प्रतिदिन की बात होती है। इसलिये वह इन बातों से बिलकुल नहीं डरता। यदि वर्ण-भेद न हो, तो बनिए के बेटे का मामा जाट हो, बहनोई गूजर हो, साला ब्राह्मण हो, और साढ़ू बढ़ई हो। इस प्रकार वह एक ऐसे वायु-मंडल में पालित-पोषित हो, जो उसके हृदय, मस्तिष्क और शरीर की सभी शक्तियों के विकास में सहायता दे। उसे अपने चारो ओर बनिए-ही-बनिए न देख पड़ें। तब जहाँ उसमें जाट और गूजर की निडरता हो, वहाँ ब्राह्मण और बढ़ई की बुद्धिमत्ता हो। वह न तो आजकल के बनियों की भाँति डाके और चोरी का नाम सुनकर ही काँपने लगे, और न जाटों की तरह व्यर्थ ही किसी तुच्छ-सी बात पर आपस में फ़िसाद करके अपने को नष्ट करे। पंजाबी में एक कहावत है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुक्कुड़, काँ, कँबोह क़बीला पालदा ;
जट्ट, मैंहा, संसार क़बीला गालदा ।

अर्थात् मुर्ग़ा, कौआ और कंबोह अपने परिवार को पालते हैं, परंतु जाट, भैंसा और मगर अपने परिवार का नाश करते हैं।

वर्ण-भेद के नाश से ही बनिए और जाट का, कायस्थ और भूमिहार का, ब्राह्मण और अब्राह्मण का झगड़ा समाप्त हो सकता है। इसी से सब हिंदू सच्चे अर्थों में सबल हो सकते हैं। हिंदू चिरकाल से केवल अपनी रक्षा—डिफ़ेंस—में ही लगे आ रहे हैं। वर्ण-भेद भी दूसरे धर्मों के विरुद्ध इनका एक प्रकार का रक्षा का उपाय ही था। परंतु जात-पाँत का दुर्ग अब टूट चुका है। इसमें बड़े-बड़े छेद हो चुके हैं। इसमें से लोग बाहर तो निकल सकते हैं, परंतु बाहर से नई कुमक भीतर नहीं पहुँच सकती। यह एक प्राकृतिक नियम है कि जो मनुष्य सदा अपनी रक्षा में ही लगा रहता है, वह हार जाता है। शत्रु पर पहले आक्रमण करनेवाला सदा फ़ायदे में रहता है। हमारे राजपूतों की पराजय का रहस्य भी बहुत कुछ इस आत्मरक्षा की नीति ग्रहण करने में ही छिपा है। ये अपनी स्त्रियों की रक्षा में ही लगे रह जाते थे, उधर मुग़ल इन्हें लूट ले जाते थे। वर्तमान योरपीय युद्ध में भी जब तक अँगरेज़, फ़्रेंच, डच आदि केवल जर्मनी के आक्रमणों से अपनी रक्षा का उपाय करते रहे, तब तक बराबर हानि उठाते रहे। परंतु अब जब कुछ दिन से अँगरेज़ों ने भी जर्मनी पर आक्रमण करने आरंभ किए हैं, जर्मनी का पग रुक गया है; उसे अपनी रक्षा की चिंता ने दबा लिया है।

समूहरूपेण वर्ण-भेद से घोर हानि उठाने पर भी हिंदुओं की मोह-निद्रा अभी भंग नहीं हुई। ब्राह्मण स्वयं विदेशियों का दास हो गया है, परंतु मुफ़्त में मिली हुई जन्म की बड़ाई छोड़ने के लिये तैयार नहीं। अब भी वह समता और बंधुता का संचार समाज में देखना पसंद नहीं करता। वह अपने लिये भले ही स्वराज्य चाहता हो, परंतु अछूतों और शूद्रों को स्वयं सामाजिक समता के अधिकार देने को तैयार नहीं, चाहे इससे समाज में प्रेम और संगठन का नाश होकर हिंदू-राष्ट्र मिट्टी में मिल जाय। महात्मा गांधी, आर्य-समाज और सिक्खों के यत्न रहते हुए भी, आज, देहात को तो जाने दीजिए, लाहौर, दिल्ली और लखनऊ-ऐसे बड़े नगरों की क्या अवस्था है! एक साफ़-सुथरा, पढ़ा-लिखा चमार किसी हिंदू हलवाई की दूकान पर दूध पीने या किसी हिंदू-होटल में भोजन करने चला जाय, और कहे कि मेरी जाति चमार है, उसे हलवाई कभ. अपने गिलास में दूध और होटल-वाला अपनी थाली में भोजन नहीं देगा। किसी हिंदू-मुहल्ले में रहने के लिये उसे मकान नहीं मिलेगा। किसी हिंदू कुएँ से उसे पानी नहीं भरने दिया जायगा। मेरे एक मित्र बी० ए०, एल-एल्० बी० हैं, और भगवत्कृपा से शीघ्र ही सब-जज बननेवाले हैं। परंतु दुर्भाग्य से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी जाति चमार है। बस, इतने से ही जिस हाते में उन्होंने मकान ले रक्खा है, वहाँ की हिंदू-स्त्रियाँ उनकी स्त्री को तनूर में रोटी नहीं लगाने देतीं, उसे किसी सामाजिक कार्य में निमंत्रण नहीं देतीं।

इसलिये जो लोग यह समझे हुए हैं कि शिक्षा के प्रचार से हिंदू अपने आप जात-पाँत और छूत-छात छोड़ देंगे, वे भूल में हैं। हिंदू अपने आप इस बात पर कभी विचार ही नहीं करेंगे, जब तक उन्हें विचार करने के लिये बाध्य न होना पड़ेगा। मुसलमानों से भी हिंदू पहले इसी प्रकार छूत-छात किया करते थे। परंतु जब से मुसलमानों ने इस अपमान का प्रतिवाद करना आरंभ किया, और देश में दंगे-फ़िसाद हुए, मुसलमानों के प्रति हिंदुओं का भाव ही बदल गया है। अब तो बड़े-बड़े तिलकधारी तक मुसलमानों की जूतियाँ चाटने लगे हैं। मुसलमानों की संख्या एक चौथाई होने पर भी प्रत्येक प्रांत में आधे मंत्री मुसलमान रक्खे जाने का प्रस्ताव हो रहा है।

अनुभव बताता है कि हिंदुओं की मनोवृत्ति बदलने का एकमात्र उपाय यह है कि अछूतों और शूद्रों को चाहिए कि अपने अंदर आत्म-सम्मान का भाव पैदा करें, और ऊँची जाति का जन्माभिमानी ब्राह्मण या क्षत्रिय, जो उनका अपमान करे, उसे दुत्कारें, उससे घृणा करें, उसे वहीं पाठ पढ़ा दें। अपमान का बदला लेने में चाहे उन्हें अपने प्राणों की भी बलि देनी पड़े, संकोच न करें, स्वतंत्रता, चाहे वह राजनीतिक हो और चाहे सामाजिक, बिना त्याग और आत्मोत्सर्ग के प्राप्त नहीं होती। दो-एक जगह मरने मारने की नौबत आते ही जन्माभिमान और पवित्रता का सारा ख़ुमार उतर जायगा, और तबियत ठिकाने आ जायगी। जब तक ईंट का जवाब पत्थर से न दिया जायगा, वर्ण व्यवस्था के ठेकेदार सोचेंगे ही नहीं कि उन्हें जात-पाँत और छूत-छात को दूर करने की आवश्यकता भी है, या नहीं।

अशक्ति का कट्टर दुश्मन

* आतंक-निग्रह गोलियाँ *

शरीर में खरा जोश पैदा करके कैसा भी अशक्त पुरुष हो, उसे नौजवान बना देती हैं। ३२ गोलियों की डिब्बी की क़ीमत १)

आतंक-निग्रह-औषधालय
जामनगर, काठियावाड़

लखनऊ-एजेंट—
मेसर्स इंदरचंद ऐंड कंपनी, चौक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिआली

[श्रीयुत 'वचनेश'जी]

(श्री'वचनेश'जी सुधा-मंडल के प्रतिष्ठित कवि हैं—व्रजभाषा और खड़ी बोली, दोनो के। कविताएँ बहुत ही सुंदर, सरल और सरस लिखते हैं। 'शबरी'-नामक खंड-काव्य ललित सवैयों में आपने अच्छा लिखा है। भगवत्संबंधी गीत भी आपने सुंदर लिखे हैं।—सुधा-संपादक)

दृगन हरिआली लेत लुभाय।
हरि-आली दोउ स्याम-गौर मिलि छटा रहे छहराय।

लता, डार, प्रति पात-पात पर
झूलत दोउ हुलसाय;

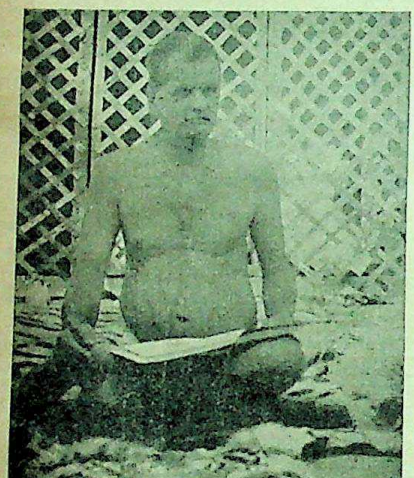

श्रीयुत 'वचनेश'जी

मिलितामिलित विविध रँग विहरैं
मृदु तृन - सेज सजाय।
सुमन - सुहास पराग - राग हैं
ओस सेद - कन काय;
तम-प्रकास पट नील-पीत में
अनुपम दुति दरसाय।
बिच-बिच मुख मूँदत कलिका-तिय
कीन्हे मान दिखाय;
बनि हरि मधुप मनावत ताकौ
गुंजनि बेनु बजाय।
हरि - रँग हेरत - हेरत हियरा
हरि-रँग में रँगि जाय;
जन 'वचनेस' ररै हरि-हरि नित
हरि में जाय समाय।

हिंदी-विशेष-योग्यता तथा हिंदी-साहित्य-सम्मेलन और पंजाब की हिंदी-परीक्षाओं की समस्त पुस्तकें हमसे मँगाएँ। सूचीपत्र मँगाकर देखें।

मैनेजर गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेकारी की समस्या स्वयं हल कीजिए

हमारी निम्न-लिखित पुस्तकों ने कितने ही भावुक दस्तकारों का पथ-प्रदर्शन करके उन्हें धन और यश प्रदान किया है, आप क्यों न प्रयत्न करें ?

सुगंधित साबुन और इत्र बनाने की पुस्तक	१)	विद्युत्-शास्त्र	॥)
रोशनाई बनाने की पुस्तक	॥)	तंतु-कला और माड़ी चढ़ाने की पुस्तक	१)
रंग की पुस्तक	१)	हिंदी केमिस्ट्री (पदार्थ-विज्ञान)	३)
तेल की पुस्तक	१)	सरल रसायन (पदार्थ-विज्ञान)	१)
वार्निश और पेंट	१)	रिसाला साबुन साज़ी (उर्दू सं०)	॥)

आरोग्य-विद्या (Hygeine) (सी० पी० और बरार के मिडिल स्कूलों में पाठ्य-पुस्तक) ॥)

श्रीयुत बाबू संपूर्णानंदजी, भूतपूर्व शिक्षा-मंत्री यू० पी० की सम्मतियाँ—

(१)

प्रोफ़ेसर लक्ष्मीचंदजी एम्० ए०, एम्० एस्-सी० काशी के एक होनहार विद्वान थे। उनकी असामयिक मृत्यु से समाज की क्षति हुई, पर वह कई वैज्ञानिक कृतियाँ छोड़ गए हैं, जो आदर के योग्य हैं। इन्हीं पुस्तकों में 'आरोग्य-विद्या' है। आकार में छोटी होने पर भी उसमें उपयोगी विषयों का अच्छा समावेश है। ×××× पाठशालाओं में उपादेय पुस्तक होगी। मैं आशा करता हूँ कि इसका अच्छा प्रचार होगा।

२८—३—४०

संपूर्णानंद

(२)

मैं स्व० प्रो० लक्ष्मीचंदजी की पुस्तकों की पहले भी तारीफ़ कर चुका हूँ। ये पुस्तकें उनके अल्प पर उपयोगी जीवन की यादगार हैं। वार्निश, पेंट, तेल, साबुन, रंग, रोशनाई आदि बनाने के जो उपाय इनमें बताए गए हैं, वे व्यवहार्य हैं। उनसे काम लेने से लाभ की आशा है। मैं उम्मीद करता हूँ कि लोग पुस्तकों की क़द्र करेंगे।

११—४—४०

सम्पूर्णानंद

अनुवाद-कला ।)	तद्धित-प्रयोग-सूची =)	ग्राम-सुधार-नाटक १)

रामतीर्थ-ग्रंथावली २८ भाग, पृष्ठ-संख्या ४०००

काग़ज़ की जिल्द १०); प्रति भाग ॥) कपड़े की जिल्द १५), प्रतिभाग ।॥)

THE COMPLETE WORKS OF SWAMI RAMA

(in 8 volumes of about 300 pages each.)

Cloth bound Rs. 8/- per vol. Re. 1/- Leather bound Rs. 16/-per vol. Rs. 2/-

स्वामी रामतीर्थ की सभी पुस्तकें हमारे यहाँ मिलती हैं।

मिलने का पता—श्रीशचंद्र अग्रवाल

विज्ञान-हुनर-ऑफ़िस, सकरकंद की गली, बनारस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उग्रजी की लेखनी

श्रीपांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' की लेखनी सामाजिक कुरीतियों पर सीधा प्रहार करती है। उसके जादू-भरे कारनामे देखने के लिये उनका कहानी-संग्रह—

'गल्पांजलि'

पढ़िए।

('उग्र'जी की 'आज' में प्रकाशित कहानियों का संग्रह)

१. ख़ूँख़्वार मौला
२. हत्यारा समाज
३. स्नान का फल
४. ब्राह्मण
५. एक बारा
६. परीक्षा
७. सोसाइटी ऑफ़ डेबिल्स

पृष्ठ-संख्या ११२ मूल्य केवल चार आना

आज ही एक प्रति मँगाइए।

मिलने का पता—श्यामबाबू अग्रवाल,
न्यूज़ पेपर एजेंट,
शिकोहाबाद, यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे हिंदी के प्रकाशन

रण-बाँकुरा दुर्गादास—जोधपुर के प्रसिद्ध वीर दुर्गादास राठौर का सचित्र जीवन-चरित्र। औरंगजेब के समय की ऐतिहासिक घटनाएँ बड़े मनोरंजक ढंग से वर्णित हैं। वीर-रस के संचार से अंतःकरण शुद्ध तथा जोश-पूर्ण हो जाता है। स्वामी की सच्ची सेवा और प्रतिज्ञा-पालन की कहानी इतिहास में सदा अमर रहने की वस्तु है। लेखक श्रीसुरेंद्र शर्मा। सजिल्द मूल्य १)

कुनाल (एकांकी नाटक)—प्रसिद्ध समालोचक और नाटककार प्रो० सत्येंद्रजी की उत्कृष्ट कृति। मनोमुग्धकारी और सम्राट् अशोक के समय पर प्रकाश डालनेवाली अनोखी रचना। लेखक, श्रीसत्येंद्र एम्० ए०। सजिल्द मूल्य ॥)

मेवाड़-गौरव—मेवाड़ के अमर प्राण ऐतिहासिक महापुरुष महाराणा कुंभा और राणा साँगा के वीरता-पूर्ण आख्यान हैं। लेखन-शैली में साहित्यिकता एवं रोचकता है केवल शुष्क ऐतिहासिकता ही नहीं। पुस्तक भारतीय इतिहास के नवयुवक पाठकों के काम की है—"भारत" प्रयाग।

भाषा-शैली सुंदर तथा सरस है। लेखक, पं० हरिशंकर शर्मा। सजिल्द मूल्य १)

महाराष्ट्र-केसरी—चिरस्मरणीय शिवाजी का पूर्ण जीवन-चरित्र। श्यामाचरणराय एम्० ए०। मराठा-साम्राज्य का उत्थान और महाराज शिवाजी के अनेक वीरता-पूर्ण कार्यों का वृत्तांत। लेखक, पं० ताराचरण अग्निहोत्री बी० ए०। सजिल्द मूल्य १।)

महाभारत-महिमा—महाभारत की मनोरंजक कथा का मनोहारिणी भाषा में वर्णन। लेखक, पं० हरिशंकर शर्मा। सजिल्द मूल्य १)

पता—रामप्रसाद ऐंड संस, प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन अनमोल पुस्तकें

१—दो बहनें

लेखक—श्रीभगवतीप्रसाद वाजपेयी

'दो बहनें' वाजपेयीजी की नवीन कला-कृति है। इस उपन्यास में प्रेम की लहरों और आँधियों का ऐसा अद्वितीय चित्रण लेखक ने किया है कि बरबस हृदय में उसकी कला बस जाती है। इसमें दो बहनों का निश्छल प्रतिद्वंद्वी प्रेम और उसके घात-प्रतिघात, प्रतिस्पर्द्धी का द्वेष, सौतेली मा का छल-पूर्ण व्यवहार और वेदांती पिता के हृदय की करुणा उपन्यास के पृष्ठों में अपनी छाया अलग-अलग चित्रित करते हैं। मानसिक द्वंद्वों का ऐसा समन्वय शायद ही पाठकों ने कहीं पाया हो। अद्वितीय सुंदर छपी और जेट-अपवाली पुस्तक का मूल्य केवल २)

२—गुप्त भारत की खोज

लेखक—डॉ० पाल ब्रन्टन

डॉक्टर पाल ब्रन्टन योरप के अत्यंत प्रसिद्ध लेखक हैं। उनकी 'गुप्त भारत की खोज' की अँगरेजी में लाखों प्रतियाँ भारत तथा अन्य देशों में अभी कुछ ही दिन पहले हाथोंहाथ बिकी हैं। इस पुस्तक में लेखक ने अपने भारतीय साधकों की खोज का रोचक वर्णन किया है। हिमालय से लेकर मदरास तथा कलकत्ते से लेकर बंबई तक के भूमि-भाग में जितने भी प्रतिष्ठित योगी, साधु और इस वेष में रहनेवाले मठाधीश हैं, उन सबसे डॉक्टर पाल ब्रन्टन जिज्ञासु रूप में मिले हैं, उनको पहचानने की कोशिश की है और उनसे उनकी विद्या की जानकारी प्राप्त करनी चाही है; लेखक ने अपने इन सब प्रयत्नों का सिलसिलेवार वर्णन लिखने में अद्भुत क्षमता दिखलाई है। इस पुस्तक के द्वारा भारत के योगियों, साधुओं और करिश्मेबाज़ वेष धारियों का अच्छा परिचय मिलता है। तथा उनकी धारणाओं से हम घर बैठे अवगत होते हैं। पुस्तक से संबंधित १५ चित्र इस संस्करण की विशेषता है। यह पुस्तक प्रेमियों के संग्रह करने योग्य है। सुंदर छपी, सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ३)

३—ईरान के सूफ़ी कवि

(सचित्र)

ईरान के सूफ़ी काव्य का सार-संग्रह

हिंदी ही नहीं, समस्त भारतीय भाषाओं में अपने विषय की बेजोड़ पुस्तक

लेखक—श्रीबाँकेबिहारी और श्रीकन्हैयालाल ऐडवोकेट, हाईकोर्ट, इलाहाबाद

इस पुस्तक में हाफ़िज़, रूमी, निज़ामी जामी, सादी, उमरख़ैयाम, फ़रीदुद्दीन आदि जैसे विश्वविख्यात कवियों की चुनी हुई कविताएँ नागरी-लिपि में दी गई हैं और साथ ही उनका हिंदी अनुवाद भी दे दिया गया है। ईरान के रहस्यवाद तथा काव्यामृत का पान करने की इच्छा रखनेवालों के लिये इससे बढ़कर कोई दूसरा साधन नहीं हो सकता। बड़े आकार के ४२५ पृष्ठ; कपड़े की जिल्द; नयनाभिराम ग्रंथ; मूल्य ४॥)

मिलने का पता—मैनेजर लीडर-प्रेस, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष का श्रेष्ठ ज़र्दा

"पतिन-ज़ार"

१. उत्कृष्ट व स्वादिष्ट ज़र्दा।

२. वैज्ञानिक तरीके से डिब्बे में बंद।

३. सर्वदा ताज़ा व सुगंधित रहनेवाला।

४. स्वाद व सुगंध में बेजोड़ व सर्वश्रेष्ठ।

जो लोग सुर्ती ज़र्दा इस्तेमाल करते हैं, उनसे बदलराम-लक्ष्मीनारायण का नाम छिपा नहीं है। लेकिन अन्य शहरों तथा दूर देहात के हमारे माननीय ग्राहकों को यथोचित मूल्य देने पर भी शुद्ध और ताज़ा माल नहीं मिलता। अतः उनके सुबीते के लिये पतिन-ज़ार को डिब्बे में बंद रखने की व्यवस्था की गई है। इस प्रकार वे हमेशा शुद्ध, स्वादिष्ट और ताज़ा सुर्ती ज़र्दा इस्तेमाल कर सकते हैं।

तोता-मार्का पतिन-ज़ार—ज़र्दा, पत्ती और सुर्ती का अपूर्व सम्मिश्रण।

हवाईजहाज़-मार्का ,,—केशर की तरह सुगंधित और स्वादिष्ट काशी की प्रसिद्ध पीली पत्ती ज़र्दा।

गोल्ड-मोहर-मार्का ,,—लखनवी पत्ती ज़र्दा। स्वच्छ व अच्छे तंबाकू द्वारा तैयार।

आविष्कारक—**बदलराम-लक्ष्मीनारायण**

प्रधान कार्यालय, बनारस-सिटी।

शाखाएँ—

१. १४४ ए, हरिसन-रोड, कलकत्ता।

२. ८२ कॉर्नवालिस-स्ट्रीट, कलकत्ता।

३. २८८ एडवर्ड-स्ट्रीट, रंगून।

४. आंग्रेवाडा-रोड, ३०२, कालबादेवी-रोड, बंबई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी-जगत् में अभूतपूर्व क्रांति उत्पन्न करनेवाले

श्रीपांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' की कृतियाँ

चंद हसीनों के खतूत

हिंदी में अपने ढंग की एक ही प्रेम-कहानी। कहानी हृदयग्राही और भाव अति पुष्ट। मूल्य ।।।)

दिल्ली का दलाल

तीर्थों और मेले-ठेलों में गुंडे किस प्रकार स्त्रियों को बहका लेते हैं, इसका विशद वर्णन इस पुस्तक में है। छपाई-काग़ज़ सुंदर। मूल्य १।।)

दोज़ख़ की आग

हिंदू-मुस्लिम-वैमनस्य से संबंधित आठ कहानियों का संग्रह। दंगों का कारण और उनके निराकरण का मार्ग जानने के लिये यह पुस्तक अवश्य पढ़िए। मूल्य १।।)

बलात्कार

६ सामाजिक कहानियों का संग्रह। समाज की ऐसी-ऐसी पोलें खोली गई हैं कि पढ़नेवाला दातों उँगली दावेगा। मूल्य १।।)

बुधुआ की बेटी

अछूतोद्धार का परिणाम केवल हिंदू-जाति को ही नहीं, वरन् तमाम भारत को किस प्रकार भोगना पड़ता है, इसका मर्मग्राही वर्णन इस पुस्तक में है। पृष्ठ-संख्या ३७५। मूल्य ३)

चार बेचारे

बेचारा संपादक, बेचारा अध्यापक, बेचारा सुधारक, बेचारा प्रचारक-नामक चार प्रहसन पढ़कर आप हँसी से लोट-पोट हो जायँगे। मूल्य १।।)

निर्लज्जा

'उग्र'-लिखित नौ कहानियों का संग्रह। प्रत्येक कहानी में एक अत्यंत उलझी हुई सामाजिक गुत्थी को ऐसे चमत्कार-पूर्ण ढंग से सुलझाया गया है कि वाह रे वाह! पृष्ठ-संख्या २४०। मूल्य १।।)

'कौशिक'जी की दो कृतियाँ

भिखारिणी

यह उपन्यास 'कौशिक'जी की क़लम का दर्शनीय चमत्कार है। मूल्य ३)

कल्लोल

१७ कहानियाँ। अधिकांश कहानियों में ग्राम्य जीवन का ऐसा सजीव चित्रण है कि पाठक अपने को भूल जाते हैं। मूल्य २।।)

अन्य पठनीय पुस्तकें

रंग-महल-रहस्य—मुग़ल बादशाहों के अंतःपुर के गुप्त रहस्य। पृष्ठ-संख्या ७००। मूल्य ४।।)

दृश्य-दर्शन—लेखक, आचार्य द्विवेदीजी। अनेक ऐतिहासिक स्थानों का वर्णन। मूल्य १।)

कर्म-क्षेत्र—दृढ़ संकल्प द्वारा लेखक ने असंभव को भी संभव सिद्ध किया है। मूल्य १।।।)

कप्तान की कन्या

रूसी लेखक अलेकज़ेंडर पुश्किन की एक प्रसिद्ध कहानी का हिंदी-अनुवाद। मूल्य १।।)

औरत का दिल

टॉल्सटॉय के कथनानुसार यह मोपाँसा की सर्वश्रेष्ठ कृति है। मूल्य १।।)

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

बीसवींसदी-पुस्तकालय

गऊघाट, मिर्ज़ापुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोषणा !

हम अपनी पुस्तकों के प्रेमियों को आगामी ३० ऑक्टोबर तक नीचे लिखी पुस्तकों को पौने मूल्य में देने की घोषणा करते हैं। यह सुविधा बार-बार नहीं मिलने की, इसलिये पुस्तकें मँगाने में शीघ्रता करें।—संचालक

अभिनेत्री की आत्मकथा—मिस विमला कुमारी-लिखित इस पुस्तक की लोकप्रियता का पता इसी से लगता है कि पुस्तक छपते ही इसका अनुवाद गुजराती-भाषा में हुआ। मूल्य १।)

अभिनेत्री जीवन के अनुभव—यह उक्त पुस्तक का दूसरा भाग है। पहली पुस्तक से भी अधिक रोचक और आकर्षक। मूल्य १।)

कलकत्ते की काली रातें—यह पुस्तक छपते ही रेवड़ियों की तरह हाथोहाथ बिक गई। अगर कलकत्ता का वास्तविक रूप आप देखना चाहते हैं, तो एक युवक मारवाड़ी द्वारा लिखित इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए। मूल्य १।)

जब मैं मजनू बना था उर्फ़ अलबेले एडीटर—एक मियाँ अपनी बीवी को भगाने के जुर्म में गिरफ़्तार हुए। उन पर क्या बीती—वह इस हास्य-रस की अजोड़ पुस्तक में पढ़िए। मूल्य ।।।)

डिक्टेटर—'उग्र'-लिखित अंतरराष्ट्रीय परिस्थिति पर लिखी गई अद्भुत पुस्तक। मूल्य ।।)

महापुरुषों की प्रेम-कहानी—इस पुस्तक में ड्यूक ऑफ़ विंडसर, सर तुकोजी राव होलकर, हिटलर, मुसोलिनी आदि की प्रेम-कहानियाँ काफी खोज के बाद लिखी गई हैं। सचित्र पुस्तक का मूल्य १।)

महापुरुषों की करुण कहानियाँ—बड़े आदमियों पर किस तरह मुसीबत के पहाड़ टूट पड़ते हैं। कॉर्लमॉक्स को अपनी लड़की के कफ़न के लिये पैसे नहीं जुटे। रणजीतसिंह के पुत्र दिलीप की दुःख-गाथा, सम्राट् बहादुरशाह का पुरदर्द दास्तान आदि पढ़कर आपकी आँखों में आँसू आ जायँगे। ग़दर के बाद नानासाहब पर क्या बीती आदि ऐसी घटनाओं पर इस पुस्तक में प्रकाश डाला गया है, जो इतिहास के पन्नों पर नहीं आई। सचित्र पुस्तक का मूल्य १।)

समाजवाद क्या है ?—इस पुस्तक के विद्वान् लेखक पंडित जगन्नाथप्रसाद मिश्र समाजवाद-विषय के एक अधिकारी व्यक्ति हैं। हिंदी के प्रायः सभी पत्रों ने इस पुस्तक को इस विषय पर लिखी गई पुस्तकों में सर्वश्रेष्ठ माना है। मूल्य १।)

कोई भी दो पुस्तकें एक साथ मँगाने से डाक-खर्च माफ़। हर प्रकार की पुस्तकें मँगाने के लिये पता नोट कर लें—

हिंदी-पुस्तक-भंडार, १७६, हरिसन-रोड, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्ध वेद

वेद की चार संहिताओं का मूल्य यह है—

वेद	मूल्य	डाक-व्यय	रेल-चार्ज
१. ऋग्वेद	५)	१)	॥)
२. यजुर्वेद	२)	॥)	।)
३. सामवेद	३)	॥)	।)
४. अथर्ववेद	३)	१)	॥)
	१३)	३)	१॥)

इन चारो संहिताओं का पेशगी मनीऑर्डर से सहूलियत का मूल्य ६॥) है, तथा डाक-व्यय ३) है। इसलिये डाक से मँगानेवाले ९॥) पेशगी भेजें। रेल-चार्ज या डाक-व्यय ग्राहकों के ज़िम्मे है। इसलिये जो ग्राहक रेल से चारो वेदों के एक या अनेक सेट मँगाना चाहते हैं, प्रति सेट के पीछे ७॥) के अनुसार मूल्य भेजें। [इसमें ॥) दो बार का पैकिंग और ॥) दो बार की रजिस्ट्री के हैं।] उनके ग्रंथ To Pay रेल-पार्सल से भेजेंगे।

श्रीमद्भगवद्गीता

(टीका-लेखक—श्री पं० श्री० दा० सातवलेकर)

इस 'पुरुषार्थबोधिनी' भाषा-टीका में यह बात दर्शायी गई है कि वेद, उपनिषद् आदि प्राचीन ग्रंथों के ही सिद्धांत गीता में नए ढंग से किस प्रकार कहे हैं। अतः इस प्राचीन परंपरा को बताना इस 'पुरुषार्थबोधिनी' टीका का मुख्य उद्देश्य है, अथवा यही इसकी विशेषता है।

गीता के १८ अध्याय ३ सजिल्द पुस्तकों में विभाजित किए हैं—प्रत्येक भाग का मूल्य ३) और डाक-व्यय ॥=) है। तथापि तीनो भाग इकट्ठा मँगानेवालों का ९) में भेजेंगे। ५) मनीऑर्डर से भेजें।

संपूर्ण महाभारत तैयार है।

अब संपूर्ण १८ पर्व महाभारत तैयार है। इस सजिल्द महाभारत का मूल्य ६५) रक्खा गया है। तथापि यह ग्रंथ सस्ते में प्राप्त कर सकते हैं। इसकी युक्ति पूछिए।

सूर्य-नमस्कार

श्रीमान् बालासाहब पंत B. A. प्रतिनिधि, राजासाहब औंध रियासत। इन्होंने इस पुस्तक में सूर्य-नमस्कार के व्यायाम का विस्तार से विवेचन किया है। पृष्ठ-संख्या १४०। मूल्य केवल ॥) डाक-व्यय ।=) के टिकट भेज दें।

सूर्य-नमस्कारों का चित्र-पट, साइज़ १०"×१५"। मूल्य ॥-) डाक-व्यय -)

आसन

(योग की आरोग्यवर्द्धक व्यायाम-पद्धति)

इस पद्धति का संपूर्ण स्पष्टीकरण इस पुस्तक में है। मूल्य केवल २) और डाक-व्यय ।=) है। मनीऑर्डर से २।=) भेजें।

पुस्तकों की बृहत् सूची मँगा सकते हैं।

मंत्री—स्वाध्याय-मंडल, औंध (ज़िला सितारा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-संसार में महाक्रांति !

जागृति का

साप्ताहिक संस्करण ही जिस ठाट-बाट से निकलता है, वह कम गौरव की बात नहीं है। पर इसके

कहानी-अंक

(पृष्ठ-संख्या ७४ एक अंक -)

वार्षिक मूल्य साप्ताहिक सहित ३॥)

ने तो हिंदी-संसार में एक नवयुग स्थापित कर दिया है। सुधा-साइज के ७४ पृष्ठों में ख्याति-नामा कहानी-लेखकों की विभिन्न विषयों पर रोचक कहानियों के अतिरिक्त हृदय पर सीधा प्रभाव डालनेवाली ओजमयी कविताएँ, उर्दू के प्रसिद्ध शायरों की चुनी हुई रचनाएँ, लांगूलीजी के व्यंग्य बाण और ओजस्वी संपादकीय विचार पढ़कर आप भी अवश्य स्वीकार करेंगे कि हिंदी में इतना अच्छा और सस्ता पत्र अब तक नहीं प्रकाशित हुआ। यह हमारी अटल घोषणा है कि भारत में चार पैसे में इस आकार का आज तक कोई पत्र नहीं निकला। पोस्टेज-सहित पाँच पैसों के टिकट भेजकर, नमूना मँगाकर हमारी घोषणा की सत्यता की परीक्षा कीजिए। एजेंटों और विज्ञापनदाताओं को शीघ्र पत्र-व्यवहार करना चाहिए।

व्यवस्थापक—जागृति ४२, स्ट्रैंड-रोड, कलकत्ता

पं० गोपालचंद्र वेदांत शास्त्री-लिखित —

सरल बँगला-शिक्षा

हिंदी के जरिए से बँगला-भाषा सीखने के लिये यह बहुत ही उत्तम पुस्तक है। इस में वर्ण-परिचय, अनुवाद, शब्दमाला, व्याकरण के नियम, कथित भाषा, मुहाविरे आदि भाषा सीखने-योग्य सभी विषय हिंदी में दिए गए हैं। शिक्षक की सहायता बिना भी स्वयं पढ़कर इस पुस्तक से थोड़े समय में बँगला सीखी जा सकती है। विश्वमित्र, भारत, प्रताप, सुधा, माधुरी, सरस्वती आदि सभी उच्च कोटि की पत्र-पत्रिकाओं में प्रशंसित। मूल्य १)

बँगला-परिचय

हिंदी से बँगला सीखने के लिये यह प्रथम पुस्तक है। मूल्य ।=)

नित्यकर्म-विधि

प्रातःकाल से रात्रि में शयन तक प्रतिदिन अनुष्ठान करने योग्य सभी नित्यकर्म इसमें दिए गए हैं। इसमें निद्रा-भंग - विधि, शौच - विधि, क्षौर - विधि, स्नान-विधि, संकल्प-वाक्य, शिखा-बंधन - विधि, तर्पण-विधि, संध्या - विधि, सब देव-देवियों की पूजा-विधि, हरएक देवता के ध्यान तथा प्रणाम - मंत्र, आसन, मुद्रा, न्यास, सत्यनारायण - व्रत - कथा, शिवरात्रि-व्रत - कथा, जन्माष्टमी - व्रत-कथा, गंगस्तोत्र, अन्नपूर्णा-स्तोत्र, महिम्न-स्तोत्र आदि अनेक स्तुतियाँ, सर्वौषधि, महौषधि आदि अनेक विषय सविस्तार हिंदी में वर्णित हैं। प्रत्येक हिंदू गृहस्थ को इसकी एक प्रति मँगवा लेनी चाहिए। ३६० पृष्ठ की पुस्तक का दाम १) मात्र है।

The Pearl Pocket Dictionary अँगरेजी-हिंदी - गुटका कोष है। प्रत्येक अँगरेजी-शब्द का हिंदी में शुद्ध उच्चारण तथा अर्थ दिया गया है। पृष्ठ-संख्या ८०० मूल्य १) है।

पता—स्वयं भाँति-पुस्तकालय, १०५, सदानंद-बाजार, बनारस-सिटी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

PLEASE DO NOT FORGET

YOUR OLD AND TRIED

Publishers, Booksellers & Order Suppliers

RAM PRASAD & SONS. AGRA.

Sole Agents to:—

The Modern Book Depot, Agra

The Standard Book Depot, Cawnpore.

We have established a reputation as a leading firm of publishers of educational and general books. Many of our publications are on the approved list of various Boards and University.

We undertake to publish manuscripts on terms highly profitable to authors. Correspondence invited.

Sales-Depot. We keep every kind of stationery and School, College and Law books in stock and supply them at proper rates. Besides this we can supply general books on every subject to suit modern tastes.

For price-list and other particulars write to:—

RAM PRASAD & SONS, CHOUK, AGRA.

SPIRITUAL BOOKS

These books are counted among the best literary jewels of the world. They contain the great thoughts of the men who are well known all over this globe of ours, and who have helped to civilize the human-race. They are thought-provoking, soul-inspiring and man-elevating. Highly useful to all alike. If you wish to improve your-self, do not fail to read them.

	Price Rs.	a.	p.
The Duties of man by Joseph Mazzini	0	10	0
A Slavery of our times by Count Tolstoy	0	6	0
A Joy for ever by John Ruskin	0	12	0
Dhammapada (Path of virtue) by Lord Buddha	0	8	0
Hindu Protestantism by M. L. Zutshi M. A., I. E. S.	0	8	0

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर बैठे डॉक्टरी का पूरा ज्ञान करानेवाली पुस्तकें

"इस पत्र के पढ़नेवाले हैं" ऐसा लिखनेवालों को

२५) सैकड़ा कमीशन मिलेगा।

डॉक्टरी चिकित्सा

डॉक्टरी रीति से रोग का निदान, लक्षण, चिकित्सा। मूल्य ६)

एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका

डॉक्टरी औषधियों का पूरा वर्णन। बनाने की विधि-मात्रा-विरोधी दवाओं के नाम। मूल्य ६)

कंपाउंडरी-शिक्षा मूल्य १॥)

इंजेक्शन-चिकित्सा सचित्र

(सुई द्वारा इलाज) मूल्य १।)

डॉक्टरी नुसखे

बड़े-बड़े डॉक्टरों द्वारा परीक्षित। मूल्य १।)

चिकित्सक के कर्तव्य मूल्य १॥)

प्रसिद्ध देशीय औषधियों के अँगरेज़ी डॉक्टर द्वारा परीक्षित प्रयोग।

मूल्य १)

भारतीय वनस्पतियों पर विलायती डॉक्टरों के अनुभव

मूल्य २)

याद रक्खो !

अगर आपको तंदुरुस्त रहना है, तो इसकी बातें याद रक्खो। मूल्य ।)

काया-कल्प

घर बैठे काया-कल्प करने की विधि व औषधियाँ। मूल्य ।)

जच्चा-बच्चा

संतान पैदा होने से लेकर बच्चे के पालन-पोषण की विधि। मूल्य ।)

संतान-निग्रह

जो लोग संतान पैदा होना पसंद नहीं करते, उसकी निर्दोष विधियाँ तथा बिना दवा के उपाय बताए हैं। मूल्य ।)

पुस्तकों का पैकिंग माफ़। डाक-खर्च, मनीऑर्डर जुदा पड़ेगा।

मँगाने का पता—

सुख-संचारक-कंपनी, लिमिटेड, मथुरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

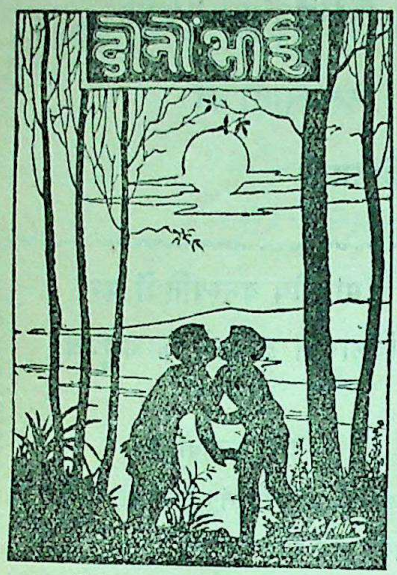

'शिशु'-कार्यालय

प्रयाग से प्रकाशित

सचित्र, शिक्षाप्रद और मनोरंजक

बालोपयोगी पुस्तकें--

(१) धिन्नकधिन्ना	।)
(२) मगर मामा	।)
(३) आटे का लड़का	।)
(४) परियों का देश	।)
(५) दोनो भाई	॥)
(६) चुन्नमुन्नू	॥)
(७) अंधेर नगरी	॥)
(८) रसीले चुटकुले	॥)
(९) लंपा चंपा	॥)
(१०) विज्ञान-वाटिका	।-)
(११) अजब देश	॥)
(१२) अक़्लमंदी की कहानियाँ	।)
(१३) हँसी-खेल	।=)
(१४) हँसी-खुशी	।=)
(१५) खेल-कूद	।=)
(१६) गुब्बारा	।=)
(१७) तितली	।)
(१८) बंदर की दुलहिन	।)
(१९) लाल बिल्ली	।)
(२०) बच्चू का ब्याह	।)

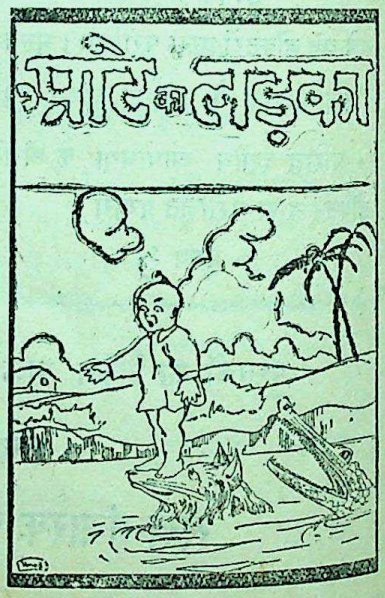

मँगाने का पता—

मैनेजर, 'शिशु'-कार्यालय, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करुण कहानी

[श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी एम्० ए० (ऑनर्स)]

(श्रीउमाशंकरजी सुधा-परिवार के सुपरिचित कलाकार हैं। आप ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कवि हैं। आपकी खड़ी बोली की कविताएँ भी वैसी ही सुंदर होती हैं। आपकी वियोग-शृंगार, करुण-रस और शांत-रस की कविताएँ अत्यंत मार्मिक, कारुणिक और धार्मिक होने के कारण विशेष प्रभावशालिनी होती हैं। ऐसा मालूम पड़ता है, मानो किसी विरही हृदय से रस-स्रोत उमड़ पड़ा हो। आप संस्कृत, हिंदी, अँगरेज़ी, उर्दू आदि भाषाओं के पंडित हैं। हस्त-रेखा देखने में भी आप परम प्रवीण हैं। अनेक राजे-रानियों और प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा इस संबंध में सम्मानित हो चुके हैं।—सुधा-संपादक)

(१)

नभ में हैं कितने तारे,
कैसे उनको गिन पाऊँ ;
हैं उर में कितने छाले,
यह कैसे हाय ! बताऊँ।

(२)

तम-नद में डूबा हूँ मैं,
तममय यह मेरी काया ;
क्या कभी छू सकेगी वह
प्रियतम की छवि की छाया ?

(३)

उर में बिजली-सी चमकी,
आँखों में जल भर आया ;
क्या जाने आज अचानक
किस स्मृति का घन घिर आया!

(४)

उस स्वर्ण-शिखर पर क्या यह
बहता जल-स्रोत थमेगा ?
क्या उर का उड़ता बादल
हिम होकर कभी जमेगा ?

श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी एम्० ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५)

अवरुद्ध हृदय के अंदर
अविरत आँधी-सी चलती ;
क्या जाने उसमें कैसे
यह दीप-शिखा है जलती ?

(६)

घनघोर घटा के बादल
जब नीले नभ पर छाए,
तब तंद्रामय नयनों में
वे स्वप्न तड़ित-से आए ।

(७)

दिन मुख-छवि में हैं उलझे,
रातें उलझीं अलकों में ;
कर गए न-जाने क्या वह
पल-भर बसकर पलकों में ?

(८)

नव-नील-नलिन से आँखें
किरणों की लिए अनी-सी ;
गिर रही कपोलों पर थी
केशों की लट उलझी-सी ।

(९)

है मस्तक पर छाई-सी
उनकी छिपती परछाईं ;
अस्तंगत रवि की रंजित
पर्वत पर जैसे झाँईं ।

(१०)

उस सिकतामयी स्थली पर
कौड़ी जो पड़ी पुरानी ;
इन खुले हुए ओठों की
ऐसी ही करुण कहानी ।

ब्रज-भारती

लेखक, कविवर पं० उमाशंकरजी वाजपेयी एम्० ए० । ब्रजभाषा में नवीन शैली के छंदों और आधुनिक ढंग के विषयों का ऐसा सुंदर समावेश अन्यत्र दुर्लभ है । ब्रजभाषा को अब भी जीवित-जाग्रत् एवं शक्तिशालिनी करनेवाली इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए ! मूल्य सादी ॥।), सजिल्द १।)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाप की पहेली

[श्रीपं० लक्ष्मीशंकर मिश्र 'अरुण' बी० ए०]

(श्रीयुत 'अरुण'जी सुधा-मंडल के नवीन, पर श्रेष्ठ कहानी-लेखक हैं। आपकी कहानियों ने हिंदी-साहित्य में अपना एक नया क्षेत्र बना लिया है। कहना न होगा कि यथार्थवाद (Realism) का समावेश जितना आपकी कहानियों में पाया जाता है, उतना औरों की कहानियों में नहीं। आपकी लेखन-शैली और भाषा-सौष्ठव में मौलिकता का पूर्ण विकास दिखाई देता है। भाव-पूर्ण (Emotional) कहानियाँ लिखने में आप बहुत ही सफल हुए हैं।—सुधा-संपादक)

(१)

नीला ने हँसते-हँसते रमेश के हाथ से मिठाई का दोना छीन लिया, और बोली—"बड़े आए कहीं हिस्सा मेरा और उड़ाने लगे आप! यह नहीं होगा।"

इतना कहकर दोने से एक नुक़ती का लड्डू उठाकर नीला ने अपने मुँह में डाल लिया, मगर फिर उसे हँसी आ गई—लड्डू चूर-चूर होकर कुछ बाहर गिर पड़ा।

अब रमेश की बारी थी—वह हँसते-हँसते लोट-पोट हो गया, और कह उठा—"वाह भाभी! वाह! तुम तो बच्चों से भी गई बीती हो। अरे, लड्डू खाना भी नहीं आता?"

हँसी के मारे नीला का बुरा हाल था। रमेश की बात सुनकर वह कुछ लजा गई, उसके गालों पर हल्की-सी लाली दौड़ गई। वह मुँह फेरकर फिर मिठाई खाने लगी। रमेश लपककर उसके पास पहुँचा, और दोनेवाला हाथ पकड़कर बोला—"देखो भाभी! आधा-आधा हिस्सा लो, इंसाफ़ से।"

अपना हाथ छुड़ाते हुए नीला बोली—"कैसा इंसाफ़? तुम्हीं बताओ, पास तुम हुए, मेरे लिये मिठाई तुम लाए, फिर खाने क्यों नहीं देते मुझे? हिस्सा माँगते हो, यही इंसाफ़ है? और, अपने हिस्से का लड्डू खा तो चुके पहले ही। अजी वाह कुँवरजी! वाह!"

छटककर नीला दूर जा खड़ी हुई, और रमेश को दिखा-दिखाकर हँसती हुई मिठाई खाने लगी।

रमेश ने कहा—"क्या बताऊँ, आज भैया न हुए, नहीं तो बताता तुम्हें!"

श्रीपं० लक्ष्मीशंकर मिश्र 'अरुण' बी० ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीला ने मानो उसकी बात सुनी ही नहीं। वह पीठ फेरकर बोली—"मिठाई है स्वादिष्ट, यह मानना पड़ेगा। और, स्वादिष्ट क्यों न होगी, कुँवरजी अपने हाथ से लाए हैं। क्यों न कुँवरजी ?"

घूमकर उसने तिरछी दृष्टि से रमेश की ओर देखा। रमेश चुपचाप भाभी की ओर देख रहा था। नीला धीरे-धीरे आगे बढ़ी, और रमेश के पास आकर बोली—"अच्छा, आँखें बंद करो।"

रमेश ने आँखें बंद कर लीं।

नीला ने कहा—"मुँह खोलो।"

रमेश ने अपना मुँह खोला।

"मुँह ऊपर उठाओ।"

रमेश ने मुँह ऊपर उठाया।

नीला ने दोने की बची-खुची मिठाई इकट्ठा कर एक बड़ा-सा गोला बनाया, और रमेश के मुँह में ठूँस दिया।

आँखें बंद किए-किए रमेश मिठाई खाने लगा। नीला उसे देखकर हँसते-हँसते बोली—"गिरने न पाए मुँह से, समझे कुँवरजी! वरना इतनी ही मिठाई जुर्माने में वसूल कर लूँगी।"

रमेश मुँह चलाते-चलाते बोला—"हूँ-हूँ।"

मिठाई का नेवाला बहुत बड़ा होने की वजह से रमेश का मुँह चल न पाता था। उसका बुरा हाल था, आँखों में आँसू आ गए थे। मगर हँसोड़ भाभी के आगे अपनी हार स्वीकार करने के डर से वह जैसे-तैसे खा रहा था। नीला रमेश की हालत देख-देखकर हँस रही थी। अचानक उसे कुछ याद आया। बोली—"अच्छा कुँवरजी! कहो—भाभी!"

रमेश ने जल्दी से कहा—"भा...भी!"

मगर भाभी कहने के साथ ही उसके मुँह की सारी मिठाई निकलकर गिर पड़ी।

नीला हँसते-हँसते पागल हो रही थी!

रमेश के कुर्ते पर, धोती पर मिठाई गिर पड़ी थी। उसे झटकते हुए वह बोला—"अच्छा भाभी! हँस लो ख़ूब आज—मुझे बेवक़ूफ़ बना दिया तुमने अयँ!"

वह नीला की ओर बढ़ा। नीला भागकर जल्दी-जल्दी सीढ़ियाँ उतरती हुई नीचे अपने कमरे में चली गई।

(२)

रमेश के जीवन में स्नेहमयी भाभी ने कितनी सजीवता ला दी थी, इसे वही जानता था। ममत्व के उस आकर्षण में वह अपने को भूला रहता, और अपने उस सुख को अमरत्व के प्रकाश में देखकर फूला न समाता। परंतु दुनिया की बात कुछ और ही थी।

समाज की आँखें पाप को खोजती रहती हैं। पाप—जो पुण्य से भी पवित्र होता है—उसे—हाँ, उसे ही।

तो फिर क्या हुआ—

बूढ़े दीवान साहब की बैठक में उस दिन रियासत के कुछ कर्मचारी इकट्ठा होकर ऐसी ही चर्चा कर रहे थे।

दीनानाथ ने कहा—"भैया! ज़माने की हालत बड़ी नाज़ुक है, किसी के दिल का हाल कोई नहीं जानता। देवर-भौजाई के तमाशे हमने भी बहुत देखे हैं, मगर ऐसा अंधेर कहीं नहीं देखा।"

रामसिंह अपना सिर खुजलाते हुए कह उठा—"ठीक कहते हो, कुछ तो दाल में काला ज़रूर है, साथ-साथ मोटर पर सैर करते फिरना, एक थाली में खाना, नाचना, गाना, दिल्लगी, होता क्या नहीं है! लेकिन कहे कौन? किसके दो सिर हैं?"

दीवान साहब से अब न रहा गया। लिखते-लिखते क़लम रख दी, और बोले—"क्यों? मैं कहूँगा, रियासत की नौकरी करते-करते बूढ़ा हो गया, बड़े महाराज का ज़माना देखा, उनके बाप का भी ज़माना देखा, मगर ऐसा अंधेर कभी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। आने दो हिज़हाइनेस को, सब बातें साफ़-साफ़ कह दूँगा। ये लच्छन अच्छे नहीं।"

दीनानाथ बोल उठा—"और दीवानजी! ज़रा हरहाइनेस की पोशाक देखी है आपने—मर्दों के भी कान काट लिए अब तो—बिरजिस, बूट, हैट, कहाँ तक कहूँ, सिगरेट भी पीती हैं!"

रामसिंह चौंककर कहने लगा—"सिगरेट? अरे नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।"

दीनानाथ ने जवाब दिया—"कैसे नहीं हो सकता? मेरी आँखों-देखी बात है।"

दीवान साहब बोले—"फिर तो रियासत की तबाही के दिन आ गए समझो।"

दीनानाथ कुछ कहना चाहता था, मगर रामसिंह ने उसे रोककर कहा—"और सुना दीवानजी! मोटर-कंपनी का वह अँगरेज़ एजेंट आया था न उस रोज़, वह दस-दस हज़ार की दो गाड़ियों का ऑर्डर ले गया है। मुझे तो मैकुआ से मालूम हुआ।"

दीवानजी के माथे पर शिकन आई। उन्होंने पूछा—"ऑर्डर दिया किसने? क्या दस्तख़त किए गए थे?"

रामसिंह ने जवाब दिया—"जी, हरहाइनेस से ही कुँवरजी ने दस्तख़त करवा दिए थे।"

दीवानजी ने एक ठंडी साँस ली।

दीनानाथ ने कहा—"आपने हिज़ हाइनेस को ख़त लिखा था इस बीच में?"

दीवानजी ने सिर नीचा किए हुए जवाब दिया—"हाँ, जवाब भी आ गया था। मगर वह एप्रिल के महीने में आएँगे। अभी पूरे ढाई महीने का अरसा है।"

रामसिंह ने कहा—"तो फिर उन्हें इत्तिला तो ज़रूर ही दे दीजिए, जो कुछ यहाँ उनकी ग़ैर-मौजूदगी में हो रहा है।"

दीवानजी ने अपनी सन-जैसी सफ़ेद दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा—"नहीं रामसिंह! मैं अपने हाथ की तहरीर नहीं देना चाहता इन मामलों में, कोई बात उल्टी-सीधी हो जाय, तो?"

सब लोग चुप हो गए। दीवानजी मन-ही-मन कुछ सोच रहे थे।

(३)

समय बीतते देर नहीं लगती।

होली का त्योहार आया। उस दिन सबेरे-ही-सबेरे नीला सोकर उठी ही थी। रमेश अपने कमरे से चुपचाप निकला, देखा, बरामदे में भाभी खड़ी थी। उसने जल्दी से एक हाथ में अबीर और दूसरे में सुनहला पाउडर लिया, और दोनो हाथ पीछे किए हुए धीरे-धीरे भाभी के पीछे जा खड़ा हुआ।

कुछ आहट पाकर नीला घूम पड़ी। पलक मारते ही रमेश ने अबीर और पाउडर उसके दोनो गालों पर मलते हुए कहा—"भाभी! होली मुबारक!"

नीला हँसते-हँसते बोली—"अरे, इतने सबेरे से होली मना ली कुँवरजी? बड़े वो हो तुम!"

रमेश बोला—"शुभ होली का शुभ सबेरा कितना भाग्यवान् होता है भाभी! जानती हो? मुझे आशीर्वाद दो।"

घुटने टेककर रमेश बैठ गया, और नीला के पैरों पर सिर रख दिया। नीला ने उसे उठाते हुए कहा—"जुग-जुग जियो कुँवरजी! जल्दी से तुम्हारा ब्याह हो जाय, सुंदर-सी बहू घर आए, लड़का हो, और—और जो कहो, सो आशीर्वाद दूँ।"

रमेश ने कहा—"नहीं भाभी! यह आशीर्वाद अच्छा नहीं।"

"फिर? तुम्हीं बताओ!"

"कुछ भूल गईं तुम भाभी!"

"तो बताओ न कुँवरजी!"

"मैं बताऊँ? बतलाना पड़ेगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ-हाँ, कहो न।"

"देखो भाभी ! मुझे आशीर्वाद दो कि मैं तुम्हारा बना रह सकूँ, तुम्हारे चरणों से कभी अलग न हो सकूँ। अपने चिर-स्नेह का वरदान दो भाभी ! मातृत्व की खोई हुई विभूति तुम्हीं ने मुझे दी है। आज इस पुण्य प्रभात में उसके अमरत्व का वरदान दो।"

रमेश की बात सुनकर नीला की आँखों में हर्ष के आँसू उमड़ चले, उसका गला भर आया। धीरे-धीरे उसने कहा—"कुँवरजी ! तुम्हारी भाभी में इतनी क्षमता कहाँ ! फिर भी यदि तुम्हें विश्वास है, तो आज तुम्हें सब कुछ देती हूँ।"

नीला रमेश के सिर पर हाथ फेरने लगी। रमेश ने धीरे से कहा—"भाभी !"

नीला ने कहा—"कुँवरजी !"

दोनो एक दूसरे की ओर देख रहे थे—दोनो की आँखों में आँसू थे—हृदय में स्नेह की तरंगें उठ रही थीं।

रमेश का हाथ पकड़े हुए नीला उसे अपने कमरे में ले गई। उसे कोच पर बिठा दिया। घंटी बजाई। दासी ने एक तश्तरी में कुछ मिठाई और फल लाकर रख दिए। नीला ने संकेत करते हुए रमेश से कहा—"खाओ कुँवरजी !"

रमेश बोला—"सब मेरा ही हिस्सा है ?"

नीला मुस्कराकर बोली—"बिलकुल तुम्हारा—यह मिठाई मैं खिला रही हूँ। तुम्हारी तरह थोड़े ही कि मेरे नाम से लाए, और खा गए ख़ुद !"

"ओहो, अभी तक याद है वह बात ?"

"बेशक, भूल कैसे जाती ?"

रमेश मिठाई खाने लगा। खाने के बाद मुँह-हाथ धोकर उठने लगा। नीला ने अपनी अलमारी खोली। एक चमकता हुआ चाँदी का बक्स निकाला। उसमें से कुछ लेकर वह रमेश के पास आ खड़ी हुई, और बोली—"कुँवरजी ! देखूँ तुम्हारा हाथ ?"

रमेश ने दाहना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा—"क्यों भाभी ! हाथ देखना कब से सीख लिया ?"

रमेश की उँगली में एक हीरे की चमकदार अँगूठी पहनाते हुए नीला ने कहा—"जब से कुँवरजी ने पास होने की मिठाई खिलाई ! देखो जी, सँभालकर रखना यह भाभी की सौगात।"

रमेश हँसते-हँसते बोला—"बहुत ख़ूब, होली की यादगार समझकर।"

(४)

विलायत से हिज़हाइनेस का एक पत्र नीला के नाम आया, जिसमें हिज़हाइनेस ने अपने आने की बात लिखी थी। दीवानजी ने वह पत्र बीच में ही हड़प कर लिया, और नीला को ख़बर तक न दी।

कुछ दिन बाद—

हिज़हाइनेस ने तार भेजा।

वह हवाईजहाज़ से बंबई पहुँच रहे थे, जहाँ कुछ कार्य-वश दो-एक दिन ठहरकर तब स्टेट लौटने का विचार था।

दीवान साहब ने कुल बातें जान लीं, मगर नीला या रमेश को कुछ भी ख़बर न मिलने दी। फिर एक दिन वह चुपचाप बंबई जा पहुँचे। हिज़हाइनेस उसी रोज़ आ रहे थे। हिज़हाइनेस से मिलने पर दीवानजी ने रमेश और नीला के बारे में बहुत कुछ भला-बुरा कह डाला। और, यह भी कहा कि स्टेट में पहुँचने पर ज़्यादा पक्का सुबूत दिया जायगा।

और हिज़हाइनेस—

दीवान साहब की बातें सुनकर चक्कर में थे। नीला पर उन्हें पूरा विश्वास था। रमेश के भ्रातृ-प्रेम को वह अच्छी तरह जानते थे।

फिर ?

कई पुश्तों से काम करनेवाले दीवानजी झूठ तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न बोलेंगे। यह भी विचार हिज़हाइनेस के मन में खटक रहा था।

बंबई के ताज-होटल में शाम को भोजन करते वक़्त दीवानजी को बुलाकर हिज़हाइनेस ने पूछा—"दीवानजी!"

दीवानजी ने अपने सिर की पगड़ी सँभालते हुए कहा—"हुक्म अन्नदाता!"

हिज़हाइनेस बोले—"मैं यह कह रहा था कि कुँवरजी को बुलाकर आपने उन्हें समझाया नहीं?"

कुछ खाँसते हुए दीवानजी ने उत्तर दिया—"अन्नदाता! कितनी ही बार समझाया, मगर उनके दिमाग़ तो सातवें आसमान पर रहते हैं, अपने को ही हिज़हाइनेस समझने लगे हैं, और क्या कहूँ अन्नदाता! यह सब हरहाइनेस की कमज़ोरी है।"

"हूँ, समझा।"

"और अन्नदाता! तहज़ीब, क़ायदा, पुराने रस्मोरिवाज, सब कुछ भूलकर विलायती जामा पहनना कहाँ तक मुनासिब है हरहाइनेस के लिये? आप भी हैं—दो बरस बाद विलायत से लौटे, मगर अपने देश की पोशाक पहनते हैं।"

"ठीक है दीवानजी! मैं स्टेट पहुँचकर सब देख लूँगा, तब मुनासिब इंतज़ाम किया जायगा। मगर मुझे सबसे बड़ा अफ़सोस इस बात का है कि आपके हाथ में रियासत की ज़िम्मेदारी होते हुए आप कुछ न कर सके!"

दीवानजी कुछ सकपकाकर बोले—"जी अन्नदाता! मैं—मैं क्या करता? आप—आप चलकर, ज़रा सरदार रामसिंह से, करनल दीनानाथ से पूछते, तो आपको मालूम होता कि मैंने क्या कोशिश नहीं की।"

हिज़हाइनेस ने खाना समाप्त किया, और उठकर बरामदे में टहलने लगे, उनका मन अशांत हो रहा था।

दीवानजी की कही सभी बातें एक-एक करके उनके दिमाग़ में चक्कर खा रही थीं।

नीला और रमेश!

नीला और रमेश?

दोनो एक ही रास्ते पर चल रहे हैं?

हिज़हाइनेस ने दीवानजी की तरफ़ घूमकर देखा, और बोले—"आप आज रात की गाड़ी से फ़ौरन् स्टेट वापस जाइए, मैं कल शाम तक पहुँच जाऊँगा।"

दीवानजी उठते-उठते बोले—"जैसी आज्ञा अन्नदाता!"

दीवानजी चलने लगे। हिज़हाइनेस ने फिर कहा—"और सुनिए दीवानजी!"

दीवानजी लौट पड़े।

हिज़हाइनेस ने कहा—"मेरे आने की चर्चा किसी से न कीजिएगा, समझे।"

"जी अन्नदाता! विश्वास रखिए।"

"अब आप जा सकते हैं।"

दीवानजी चले गए।

हिज़हाइनेस टहलते-टहलते होटल की छत पर पहुँचे।

रंग-बिरंगी रोशनी से सारा बंबई-शहर जगमगा रहा था। चारो ओर चहल-पहल थी। हिज़हाइनेस ने सोचा—क्या ऐसी ही चहल-पहल मनुष्य पसंद करता है? मानव-स्वभाव क्या यही चाहता है? बनावट का इतना मूल्य? अशांति इतनी महँगी बिका करती है?

हिज़हाइनेस दूसरी ओर देखने लगे—इंडिया गेट—उसके आगे प्रशांत महासागर।

ऊँची-ऊँची लहरें किनारे से टक्कर मार रही थीं।

दूर पर—एकाकी प्रकाश लाइट-हाउस पर दिखाई दे रहा था।

हिज़हाइनेस ने सोचा—क्या अपने विचारों में मग्न मैं भी ऐसा ही एकाकी हूँ? मन से उत्तर न मिला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५)

बड़ी-बड़ी दो 'डेम्लर' मोटर-गाड़ियाँ महल के फाटक पर खड़ी थीं। उनका योरपियन एजेंट कुँवरजी और हरहाइनेस के आगे गाड़ी की ख़ूबियाँ बयान कर रहा था।

नीला ने कहा—"कुँवरजी! यह सफ़ेद गाड़ी तो मैं लूँगी, मुझे यही रंग पसंद है।"

रमेश ने जवाब दिया—"क्या कहने हैं आपकी पसंद के हरहाइनेस! मेरे हिस्से में तो भूरी गाड़ी आ ही गई फिर।"

नीला ने रमेश की पीठ पर एक हल्की-सी चपत लगाते हुए धीरे से कहा—"मुझे हरहाइनेस न कहा करो कुँवरजी! इस संबोधन में बड़ी बनावट है, नहीं जानते?"

रमेश ने मुस्कराकर, झुककर एक सलाम करते हुए उत्तर दिया—"बहुत ख़ूब भाभी साहबा!"

नीला ने योरपियन एजेंट की तरफ़ घूमकर देखा।

एजेंट ने पास आकर कहा—"हरहाइनेस क्या आज ही मुझे बिदा कर सकेंगी?"

नीला बोली—"क्यों नहीं, आप ख़ज़ाने में जाकर अपना बिल दे दीजिए, रुपया मिल जायगा।"

"बहुत अच्छा, धन्यवाद!"

सलाम करके एजेंट चला गया।

इतने में ही—

ऊपर आसमान में उड़ते हुए हवाईजहाज़ की घरघराहट सुनाई दी।

नीला और रमेश देखने लगे।

हवाईजहाज़ नीचे उतर रहा था—महल के आगे के मैदान में।

नीला ने कहा—"कुँवरजी! यह तो यहीं उतर रहा है—कौन आया है?"

रमेश बोला—"क्या पता—कहीं भैया न हों!"

"देखना चाहिए, चलो, चलें।"

"चलिए।"

नीला ने अपनी सफ़ेद गाड़ी में बैठते हुए कहा—"इसी गाड़ी में चलेंगे, क्यों कुँवरजी?"

रमेश अपनी भूरी गाड़ी की ओर बढ़ता हुआ बोला—"नहीं भाभी, इसमें चलेंगे।"

नीला ने गाड़ी स्टार्ट कर दी।

रमेश ने अपनी गाड़ी भी चला दी।

दोनो गाड़ियाँ आगे-पीछे महल के फाटक से बाहर निकलीं। पहरेदारों ने सलाम किया। गाड़ियाँ मैदान की ओर चलीं। हवाईजहाज़ अब बिलकुल नीचा हो गया था। मैदान में पहुँचकर नीला और रमेश ने देखा—हवाईजहाज़ उतर चुका था, और उसमें से बाहर निकला एक ड्राइवर, फिर हिज़हाइनेस।

रमेश ने दौड़कर पैर छुए। हिज़हाइनेस ने धीरे से आशीर्वाद देकर पूछा—"अच्छे हो कुँवरजी?"

रमेश बोला—"आपकी कृपा से भैया! और, आपने इत्तिला भी नहीं दी अपने आने की, अचानक ही आ गए!"

हिज़हाइनेस ने कहा—"हाँ, मैं लिख तो चुका था, मगर ज़रा बंबई में ठहर जाना पड़ा।"

हिज़हाइनेस गाड़ियों के पास पहुँचे। नीला को देखा। नीला ने पैर छुए। सिर पर हाथ फेरते हुए हिज़हाइनेस बोले—"तुम कुशल से रहीं नीला?"

नीला की आँखों में मिलन का हर्ष आँसुओं के रूप में छा रहा था। वह कुछ न कह सकी। गाड़ी में बैठते हुए हिज़हाइनेस ने कहा—"ये गाड़ियाँ अभी ली हैं?"

रमेश ने उत्तर दिया—"हाँ, भैया! गाड़ियाँ अच्छी थीं, इसलिये ले लीं।"

हिज़हाइनेस कुछ न बोले। अपने ड्राइवर को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी गाड़ी लेकर आने की हिदायत करते हुए तीनो एक ही गाड़ी में बैठकर राजमहल में दाख़िल हुए। चारो तरफ़ ख़बर हो गई कि हिज़हाइनेस आ गए। दीवानजी ने सब कर्मचारियों के साथ आकर हिज़हाइनेस के पैर छुए। हिज़हाइनेस ने सबसे यथायोग्य पूछकर किसी प्रकार छुटकारा पाया, और महल के भीतर पहुँचे।

रमेश और नीला उनके स्वागत-सत्कार में लगे हुए थे।

(६)

और हिज़हाइनेस ?

उनके मन में बैठा हुआ संदेह का भूत दो ही चार दिनों में रमेश और नीला का पारस्परिक व्यवहार देखकर अच्छी तरह स्थिरता पा गया। जाने कैसे हिज़हाइनेस के मन में यह बात समा गई कि नीला को रमेश उनसे भी ज़्यादा प्यारा है। वह रमेश का इतना अधिक ख़याल क्यों रखती है ? दीवानजी का कहना ठीक ही निकल रहा है।

हिज़हाइनेस की उदासीनता बढ़ती जा रही थी। दीवानजी ने अपने कर्मचारियों द्वारा ख़ूब नमक-मिर्च लगाकर नीला और रमेश के ख़िलाफ़ उलटी-सीधी बातें हिज़हाइनेस के कानों तक पहुँचाईं। हिज़हाइनेस की आँखें बदलने लगीं। रमेश को देखते ही वह मुँह फेर लेते, और नीला के सामने पड़ने पर कभी कोई पुस्तक या अख़बार पढ़ने का बहाना करते। नीला पापिनी थी, उनकी दृष्टि में, और रमेश ? रमेश भ्रातृद्रोही था ! हिज़-हाइनेस की कल्पना में पाप की छाया आ गई थी। मगर सब कुछ होते हुए भी उन्होंने गंभीर बनना चाहा। आवश्यकता से अधिक चुप रहने लगे।

नीला की दृष्टि से उनका यह व्यवहार छिप न सका। वह कुछ-कुछ समझ रही थी, परंतु कारण क्या था, इसकी कल्पना उसे भी न थी। मानव-दुर्बलताएँ ऐसे ही समय में अविवेक की सृष्टि करती हैं।

उस रात को—

भोजन समाप्त होने पर जब हिज़हाइनेस आराम करने चले गए, नीला ने उनके कमरे में प्रवेश किया, और अपने हाथों से पान दिए। हिज़हाइनेस ने धीरे से कहा—"बैठो।"

सामने कुर्सी पर नीला बैठ गई। हिज़हाइनेस की आँखें उसकी ओर उठ गईं। वह उदास थी।

हिज़हाइनेस ने कहा—"नीला ! आज तुमसे कुछ ज़रूरी बातें करना चाहता हूँ।"

नीला ने उनकी तरफ़ देखकर जवाब दिया—"क्या आज्ञा है ?"

हिज़हाइनेस बोले—"मैं दो बरस बाद विलायत से लौटा हूँ, तो तुम्हारे व्यवहार में कुछ अंतर पाता हूँ, इसका क्या कारण है ?"

नीला ने सिर नीचा किए हुए जवाब दिया—"यही बात तो मैं भी श्रीमान् से कहना चाहती थी कि श्रीमान् के व्यवहार में अंतर आ गया है, संभवतः मुझसे ही कोई अपराध हो गया हो ?"

हिज़हाइनेस ने मुस्कराते हुए कहा—"अपराध ? क्या तुम अपराध की परिभाषा जानती हो ?"

"जानती हूँ।"

"अपराध कितना व्यापक होता है, यह भी जानती हो ?"

"जानती हूँ।"

हिज़हाइनेस उठकर पलँग पर बैठ गए, और बोले—"नहीं जानती हो नीला ! अगर जानती होतीं, तो आज मुझे इस मानसिक अशांति के महासागर में निराधार न बहना पड़ता।"

नीला चौंककर बोली—"आप क्या कह रहे हैं स्वामी ?"

हिज़हाइनेस ने उत्तर दिया—"नादान न बनो नीला ! सब कुछ जानते हुए भी तुम मुझे भुलावा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देने चली हो, मगर मैं दूध-पीता बच्चा नहीं हूँ।"

नीला कुछ न समझ सकी। वह घबराकर बोली—"हिज़हाइनेस ! आपको मेरी ही सौगंद—मुझे साफ़-साफ़ बताइए, आप क्या कहना चाहते हैं ?"

हिज़हाइनेस ने आँखें बंद करते हुए कहा—"कहना चाहता था, मगर अब न कहूँगा। जाओ नीला !"

हिज़हाइनेस पुनः बिछौने पर लेट गए।

नीला थर-थर काँप रही थी। उसका हृदय अशांत था—हिज़हाइनेस क्या कहना चाहते थे ?

हिज़हाइनेस ने मुँह फेर लिया—करवट ले ली। नीला की आँखों में आँसू भर आए थे। आँचल से उन्हें पोछती हुई वह चुपचाप उठकर अपने कमरे में चली आई। उसके मन में एक तूफ़ान उठ रहा था।

रात-भर—

वह ज़रा भी न सो सकी। उसकी विचित्र दशा हो रही थी।

(७)

दूसरे दिन—

हिज़हाइनेस ने रमेश को कुछ रियासती काम बतलाकर फूलगढ़ जाने को कहा। फूलगढ़ वहाँ से लगभग पचास मील दूर था।

शाम को—

रमेश अपनी मोटर लेकर चलने लगा। नीला ने दासी भेजकर उसे बुलवाया।

रमेश ने कहा—"भाभी ! जा रहा हूँ आज, तीन-चार दिन लगेंगे, कल तो भैया भी वहीं आ पहुँचेंगे, मुझसे कह रहे थे।"

नीला ने पूछा—"कल जायँगे ? तुमसे कहा है ?"

"हाँ, कल शाम को।"

"वापस कब आएँगे ?"

"मुझे यह नहीं मालूम, मुझे तो तीन-चार दिन का काम बताया है।"

नीला जाने क्यों किसी सोच में पड़ गई।

रमेश बोला—"अच्छा भाभी, नमस्ते। मैं चला।"

रमेश चला गया। नीला खड़ी-खड़ी सोचती ही रही। कब रमेश चल दिया, इसकी ख़बर ही नहीं उसे।

दासी ने आकर कहा—"महारानीजी ! स्नान का पानी तैयार है।"

नीला की विचार-धारा टूटी। उसने कहा—"चल, मैं आती हूँ।"

दासी चली गई। नीला जाने किस ख़याल में फिर डूब गई। उसे एक बार कँपकँपी-सी आई। अचानक गिर पड़ी। थोड़ी देर बाद उसने अपने को बिछौने पर पाया।

हिज़हाइनेस उसके सिरहाने बैठे अपने हाथों से पंखा झल रहे थे।

नीला ने देखा—यह क्या ? उसकी आँखों के आगे धुँधलापन छा रहा था। उसने फिर आँखें बंद कर लीं।

हिज़हाइनेस ने उसके माथे पर हाथ फेरते हुए कहा—"कैसा जी है नीला ?"

नीला ने कुछ कहना चाहा, मगर मुँह से आवाज़ न निकली। उसने आँखें खोलकर स्वामी की ओर देखा।

हिज़हाइनेस ने पूछा—"क्यों ? बात क्या है नीला ?"

नीला ने इस बार धीमे स्वर में कहा—'कुछ नहीं, मुझे, सिर में चक्कर आ गया था।"

"अब क्या हाल है ?"

"अच्छी हूँ। आप—आप क्यों तकलीफ़ कर रहे हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीला ने उनके हाथ से पंखा ले लिया, और उठकर बैठ गई।

नीला ने पूछा—"क्या कुँवरजी चले गए?"

हिज़हाइनेस के हृदय की कोमल भावनाएँ यह प्रश्न सुनते ही एकदम नष्ट हो गईं। पाप की कल्पना और भी स्पष्ट होकर सामने आ गई। कुछ ठहरकर हिज़हाइनेस ने जवाब दिया—"देर हुई गए। मैंने उसे रियासत के काम से फूलगढ़ भेजा है, कल मैं भी जाऊँगा।"

हिज़हाइनेस उठकर चल दिए। नीला अपने विचारों में डूब रही थी। हिज़हाइनेस के चेहरे पर घृणा और प्रतिहिंसा के चिह्न उसने नहीं देखे। पुरुष-हृदय को अविवेक की राह पर जाते हुए देर नहीं लगती, इसे नीला न जानती थी। उसके जीवन का अनुभव कुछ और ही था। सरलता और स्नेह से कोसों दूर रहनेवाली ईर्ष्या और वैमनस्य उसे छू भी न पाते थे। यही शायद उसके जीवन का अभाव था।

चौबीस घंटे और बीत गए। हिज़हाइनेस फूलगढ़ जाने की तैयारी कर रहे थे। नीला उनके कमरे में अचानक आ पहुँची। कमरे में उस समय कोई न था। हिज़हाइनेस स्नान करने गए हुए थे। नीला ने देखा, मेज़ पर एक शीशी रक्खी थी। कौतूहल-वश उसे उठाकर नीला ने उसके ऊपर के लेबिल पर नज़र डाली—लिखा था—'पोटैशियम साइनाइड'—भयंकर विष! नीला सिर से पाँव तक काँप उठी! इसका क्या होगा? पलक मारते ही उसने शीशी का कार्क खोलकर सारी दवा पास रक्खे पीकदान में उँडेल दी, और झारी से पानी लेकर शीशी में भर दिया, कार्क लगाया, और शीशी को जहाँ-की-जहाँ रखकर चुपचाप अपने कमरे में वापस लौट आई।

(८)

रात के ग्यारह बज चुके थे। हल्की-हल्की बूँदें पड़ रही थीं। आसमान पर काले-काले बादलों का राज्य था। हवा बड़े सन्नाटे से चल रही थी। बीच-बीच में बिजली भी कड़क उठती थी।

फूलगढ़ के गेस्ट-हाउस में—

ऊपर के कमरे में एक गोल मेज़ के सामने रमेश आराम-कुर्सी पर लेटा हुआ था। सामने दूसरी ऊँची कुर्सी पर हिज़हाइनेस बैठे हुए थे। हिज़-हाइनेस ने कहा—"यह सवाल मेरी इज़्ज़त का है। तुम्हें सब बातें समझा चुका मैं, अब तुम्हीं मुझे कोई रास्ता बताओ?"

रमेश ने जवाब दिया—"भैया! आज से पंद्रह बरस पहले—आप ही को पिता-तुल्य समझा था। आपके हाथ में मेरा हाथ सौंपकर वह परलोक सिधारे थे। उस दिन से आज तक आपकी आज्ञा को अपने जीवन की सबसे बड़ी विभूति और अपना परम धर्म मानता आया हूँ। आप ही मुझे मार्ग दिखा सकते हैं।"

हिज़हाइनेस मुस्कराए। उनकी इस मुस्कराहट में हलाहल की तीक्ष्णता थी। कुछ रुककर उन्होंने कहा—"मैं सब जानता हूँ रमेश! इसीलिये तुम पर भरोसा किया था।"

रमेश बोला—"आपकी और पूजनीया भाभी की छत्रच्छाया में रहकर मैं अपने को धन्य समझता हूँ। मैं आपसे जन्म-जन्मांतर में भी उऋण नहीं हो सकता भैया!"

"तो फिर रमेश! आज मैं इस पहेली को भी सुलझाना चाहता हूँ। तुम पर और तुम्हारी भाभी पर लगनेवाला यह कलंक का दाग़ मुझे शांति से जीवन-भर बैठने न देगा। दुनिया क्या कहती है, उसे मैंने सुना है, अनुभव किया है, मगर अब नहीं सुना जाता।"

"मैं नहीं समझा भैया! हमारे पारस्परिक व्यवहार की सत्यता पर दुनिया के कहने का प्रभाव कैसे पड़ सकता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अवश्य पढ़ सकता है। तुम बच्चे हो, नहीं जानते कि समाज का बल क्या चीज़ है। रमेश, मैं स्वयं भी समाज के आगे असमर्थ हूँ।"

"तो आप चाहते क्या हैं भैया ?"

"कैसे कहूँ रमेश ! वह बात बड़ी ही भयंकर है।"

"आपको मेरी ही सौगंद है भैया ! आप कुछ न छिपाइए—मुझसे कह दीजिए।"

हिज़हाइनेस कुर्सी से उठकर कमरे में टहलते हुए कुछ सोचने लगे। फिर थोड़ा ठहरकर उन्होंने कहा—"रमेश !"

"भैया !"

"मुझ पर विश्वास है तुमको ?"

"अवश्य भैया !"

हिज़हाइनेस ने अपने कोट की जेब से एक शीशी निकालकर रमेश के हाथ पर रखते हुए कहा—"आज यही तुम्हारे विश्वास का प्रमाण बनेगी।"

रमेश ने देखा, वह चौंककर बोला—"भैया ! यह तो 'पोटैशियम साइनाइड' है ?"

हिज़हाइनेस की आँखें लाल हो रही थीं। उनके होठ फड़क रहे थे—उनका स्वर भारी हो रहा था। वह बोले—"हाँ, यह भयंकर विष है। इसे पीकर अपने विश्वास की परीक्षा दो रमेश ! तुम्हारा भाई आज तुम्हारी परीक्षा लेना चाहता है।"

रमेश ने एक बार भाई की ओर देखा, फिर हाथ की शीशी की ओर—दूसरे ही क्षण वह ग़टग़ट करके शीशी की कुल औषधि पी गया।

पीने के बाद—

वह उठ खड़ा हुआ। हिज़हाइनेस के आगे घुटनों के बल बैठकर उसने उनके पैरों पर अपना सिर रख दिया, और बोला—"भैया ! कह दो एक बार कि मैं परीक्षा में सफल हो गया। अपने रमेश को अंतिम बार बिदा दो भैया !"

हिज़हाइनेस की आँखें बंद थीं। उन्होंने रमेश के सिर पर अपना हाथ फेरा, और धीरे-धीरे पैर बढ़ाते हुए कमरे से बाहर निकल आए।

थोड़ी देर बाद—बाहर—

मोटर के एंजिन की घरघराहट सुन पड़ी, फिर सब शांत हो गया। रमेश उठकर फिर आराम-कुर्सी पर जा बैठा। जेब से गीता की पुस्तक निकाली, और उसके पन्ने उलटने लगा।

उसके चेहरे पर एक अद्भुत शांति का प्रकाश था।

(६)

तीन दिन बाद—

हिज़हाइनेस ने भीषण ज्वर की दशा में आँखें खोलीं, इधर-उधर देखा।

नीला ने पास आकर पूछा—"कैसा जी है स्वामी ?

हिज़हाइनेस बोले—"पहले यह बताओ, रमेश कहाँ है ?"

नीला ने कहा—"क्यों ? फूलगढ़ भेजा था आप ही ने कुँवरजी को ?"

"फूलगढ़ ? ओफ़् !"

हिज़हाइनेस उठकर बैठ गए। उनके हाथ-पाँव काँप रहे थे। उन्होंने नीला का हाथ अपने दोनो हाथों में लेते हुए कहा—"नीला ! रमेश अब इस संसार में नहीं। मैंने उसे विष देकर—अपने हाथों विष देकर मार डाला है। मैं बड़ा पापी हूँ नीला !"

नीला चुप थी।

हिज़हाइनेस की बेचैनी बढ़ती जा रही थी।

उन्होंने पानी माँगा। पानी पीकर वह कुछ स्वस्थ हुए।

उन्होंने कहा—"नीला ! क्या रमेश को अब न पाऊँगा ?"

नीला कुछ न बोली।

हिज़हाइनेस की आँखों से आँसू बह रहे थे। उन्होंने रोते-रोते कहा—"एक बार वह आ जाता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर, महल के फाटक में एक भूरे रंग की मोटर प्रवेश कर रही थी।

हिज़हाइनेस बोले—"नीला! एक बारर मेश आ जाता, तो मैं उसे अपने पास बिठाकर, उसके पैरों पर अपना सिर रखकर उससे कहता कि रमेश, मुझे क्षमा कर, मैं बड़ा पापी हूँ।"

कुछ रुककर वह फिर कहने लगे—"सोचता हूँ, एक बार आकर वह मुझे पुकारता—भैया!"

अचानक दरवाज़े पर बाहर से किसी ने पुकारा—"भैया!"

हिज़हाइनेस चौंककर देखने लगे। उनकी आँखें किसी को खोजने लगीं।

दरवाज़ा खोलकर रमेश भीतर आते हुए बोला—"भैया! आपने इतनी देर में ख़बर दी मुझे?"

हिज़हाइनेस ने रमेश को छाती से लगा लिया।

नीला की आँखों में हर्ष के आँसू थे।

❀ ❀ ❀

दीवानजी और उनके सहयोगी कर्मचारियों को दूसरे ही दिन नौकरी से बरख़ास्त करके रियासत की हद से फ़ौरन् बाहर निकल जाने का हुक्म जारी हो गया, और उस हुक्मनामे पर हिज़हाइनेस के हस्ताक्षर थे!

इन पुस्तकों से हज़ारों ने लाभ उठाया है।

विवाहित आनन्द ॥।)
पत्नी पथ प्रदर्शक ॥।)
गर्भवती-प्रसूता और बालक १)
यौवन रक्षा ।)
लेखक—कविराज हरनामदास बी० ए० लाहौर।
सब बुकसेलर और रेलवे बुकस्टाल बेचते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वार्थ-संघ का अधिवेशन

[श्रीपं० हरिशंकर शर्मा]

(शर्माजी लब्धप्रतिष्ठ लेखक और प्रतिष्ठित पत्रकार हैं। आपकी भाषा सजीव और आलंकारिक होती है। हास्य-रस और पैरोडी अच्छी लिखते हैं। 'चिड़ियाघर' आपकी प्रसिद्ध पुस्तक है। स्वर्गीय महाकवि शंकरजी के आप सुपुत्र हैं।—सुधा-संपादक)

विचित्र वन में विचरनेवाले वन्य पशुओं में कुछ दिनों से बड़ा वैमनस्य हो गया था। एक दूसरे को एक आँख न देख सकता था। जो बलवान् जीव थे, वे तो निर्भयता-पूर्वक चरते-विचरते थे, परंतु निर्बल अपने बिलों या ग़ारों में छिपे पड़े रहते थे। मौक़ा मिला, तो बेचारे बड़ी सावधानी से इधर-उधर घूम-फिर लिए, नहीं तो नहीं। कभी-कभी तो इन ग़रीबों को हफ़्तों मुँह छिपाए पड़ा रहना पड़ता था।

यह देखकर दया के धाम मिस्टर भालूराम को निर्बल प्राणियों की बेबसी पर बड़ा तरस आया। उन्होंने जंगली जानवरों की एक पार्लियामेंट बुलाई। श्रीमान् काकभुशुंड और माननीया गिलहरीदेवी को निमंत्रण बाँटने का काम सौंपा गया। और, सर्वत्र यह स्पष्ट घोषणा कर दी गई कि जंगल-जगत् के सब जीव-जंतु, विशेषकर चौपाए, इस पार्लियामेंट में निर्भयता-पूर्वक, निस्संकोच सम्मिलित हों। किसी को किसी से डरने-झिझकने की ज़रूरत नहीं। सभा का उद्देश्य निर्बलों को सबलों के अत्याचार से बचाने के उपायों पर विचार करना है। सब सभ्यों को पधारकर अपने-अपने विचार प्रकट करने चाहिए। जो महाशय इस समय न पधारेंगे, उनकी शिकायत पीछे न सुनी जायगी। हाँ, उन्हें सभा के स्वीकृत प्रस्तावों पर अनिवार्य रूप से आचरण करना होगा।

रात्रि के पौने ढाई बजे सभा का कार्य प्रारंभ हुआ। मनोनीत सभापति वीरवर श्रीकेसरीसिंह के न पधारने के कारण सर्व-सम्मति से श्रीयुत बघर्रामल को प्रधान का कार्य संपादन करना पड़ा। सभा में उपस्थित उल्लेखनीय सज्जनों में से कुछ के नाम नीचे दिए जाते हैं—

मि० भालूराम, चौधरी चीताचरण, भाई भेड़ियासिंह, गोस्वामी गैंड़ानाथ, लाला लकड़बग्घामल, पं० गीदड़दत्त, मि० कुत्ताकिशोर, बाबू बिल्लामल, श्रीमती लोमड़ीदेवी, भगवान् वराहदेव इत्यादि।

गुणवती गोमाता और भगवती भैंसदेवी दर्शक-रूप से सभा में विराजमान थीं। इनके अतिरिक्त सैकड़ों-सहस्रों प्रतिनिधि मौजूद थे। स्थानाभाव से सबका उल्लेख कर सकना कठिन है। महाशय गर्दभदेव, मुंशी बकरामल,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉक्टर अश्विनीकुमार सभापतिजी की विशेष आज्ञा से सभा में सम्मिलित हुए।

सभा-मंडप भर चुकने पर कार्यवाही प्रारंभ होने से पूर्व संयोजक मि० भालूरामजी ने घोषणा की कि हमारे जो सदस्य नगरों में जा बसे हैं, वे एक तरफ़ तशरीफ़ रक्खें, और जिन्होंने अभी अपना जांगल प्रदेश नहीं छोड़ा है, वे एक ओर बैठे रहें। मनुष्यों ने जिस प्रकार मिलिटरी और सिविल बस्तियाँ बना ली हैं, उसी तरह हमें भी विभक्त हो जाना चाहिए। मि० भालूराम के कहते ही—बात-की-बात में—अभीष्ट व्यवस्था हो गई, और काम शुरू हुआ।

श्रीपं० हरिशंकरजी शर्मा

सबसे प्रथम सभापति श्रीबघरीमल ने फ़रमाया—"आप सब लोग निर्भय रहें, यहाँ किसी पर अत्याचार-अन्याय नहीं होने पाएगा। हम सब लोग विचित्र वन के निवासी हैं। यहाँ रहते-रहते हमारी कितनी ही पीढ़ियाँ बीत गईं। जब सबको इसी वन में रहना-सहना और खाना-पीना है, तब परस्पर राग-द्वेष की कोई बात न होनी चाहिए। हम सब लोग प्रेम-भाव से रहकर अपना-अपना काम करें। कमाने खाने के कारण भाईचारे में अंतर आना बड़ी शर्म की बात है। यह दुर्भावना दूर करने के लिये ही आज का यह सम्मेलन बुलाया गया है।"

मि० भालूराम ने सभापति के भाषण का बड़ी भलमनसाहत के साथ समर्थन किया। भाई भेड़ियासिंह ने कहा—"सज्जनो, यह कहना तो कठिन है कि हम बिलकुल अहिंसात्मक रहेंगे, परंतु इतना अवश्य है कि अब इस विचित्र वन में निर्बलों पर सबलों का अत्याचार न होने पावेगा। सब समुदाय, वे भी, जो अल्पसंख्यक हैं, समानता से चरें-विचरेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन विद्वत्ता - पूर्ण व्याख्यानों को सुनकर पं० गीदड़दत्त, मुंशी बकरामल, डॉ० अश्विनीकुमार आदि की प्रसन्नता का ठिकाना न था। उनके हृदय हर्ष से बल्लियों उछलने लगे। गुणवती गोमाता और भगवती भैंस भी ख़ुशी से फूली न समाती थीं। श्रीमती लोमड़ीदेवी ने सभापतिजी की आज्ञा प्राप्त कर बड़ी ओजस्विनी वाणी में कहा—"आदरणीय सभापति और प्रतिनिधिगण, आज मुझे विचित्र वन - निवासियों की यह सार्वजनिक सभा देखकर अपार आनंद हो रहा है। यह दिन धन्य है, जिसमें सबल और निर्बल, सब एकत्र होकर अपनी हित-साधना पर विचार करते हुए पारस्परिक प्रेम की गंगा बहा रहे हैं। भाइयो, हम लोग जो निस्तेज, निर्बल अथवा अल्पसंख्यक हैं, उन पर श्रीयुत सभापति-जैसी महान् आत्माओं और मि० भालूराम-सदृश परोपकार-मूर्तियों ने जो दया-दृष्टि रखने का आश्वासन दिया है, वह उनकी उदारता और हमारी सौभाग्यशालिता का ही द्योतक है। इसके लिये हम लोग धन्यवाद देने के अतिरिक्त और क्या कर सकते हैं।"

श्रीमती लोमड़ीदेवी के भाषण के बाद भाई भेड़ियासिंह ने कहा—"नहीं-नहीं, अब छोटे-बड़े या सबल-निर्बल का कोई सवाल नहीं। सब समान और भाई-भाई हैं। अगर इस सभा के पश्चात् भी विषम भाव बने रहें, तो इस सारे प्रयत्न का कुछ भी परिणाम न समझना चाहिए। फिर तो यह वृथा प्रयास हुआ।"

सभा की कार्यवाही प्रारंभ हुए दो घंटे हो चुके थे। सभापतिजी की आज्ञा से जल-पान करने के लिये आध घंटे को सभा विसर्जित की गई। सब लोग जल-पान की घात में इधर-उधर घूमने-फिरने लगे। यद्यपि अभयदान की घोर घोषणा पहले ही हो चुकी थी, तो भी निर्बल-दल सबलों से सशंक दिखाई देता था। सभा विसर्जन होते ही पं० गीदड़दत्त, बाबू बिल्लामल, मुंशी बकरामल आदि डर से थर-थर काँपने लगे। श्रीमती गोमाता और भगवती भैंसदेवी की द्विविधा का ठिकाना न था। सभापति की आज्ञा से जल-पान के लिये सभा बर्ख़ास्त हुई थी, परंतु विमल बंधुत्व और प्रांजल प्रेम-भाव के कारण जल-पान की टेबुल बिलकुल ख़ाली पड़ी थी। कोई खाय, तो क्या खाय, और जाय, तो कहाँ जाय। अच्छा 'समाज-वाद' हुआ, ख़ूब भ्रातृ-भाव की भेरी बजी। ऐसा प्रेम - प्रसंग तो जीवन को नष्ट किए बिना न मानेगा। आध घंटा बीतने आया, परंतु जल-पान का कहीं पता नहीं। जीवन में इस प्रकार संकट सहने का यह पहला ही अवसर था।

❀ ❀ ❀

सभापति बघर्रामल ने अश्विनीकुमार से हाथ मिलाकर प्रेम-भाव का परिचय दिया। भाई भेड़ियासिंह मुंशी बकरामल से मुलाक़ात करने लगे। मि० भालूराम ने महाशय गर्दभदेव से बातचीत शुरू की। चौधरी चीताचरण ने गुणवती गोमाता के गले में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ डाला। लाला लकड़बग्घामल पं० गीदड़-दत्त को पुचकारने लगे। गोस्वामी गैंड़ानाथ ने श्रीकुत्ताकिशोर की ओर करुणा-कर बढ़ाया।

"क्यों भाई, आप लोगों को कोई भय तो नहीं? किसी तरह की झिझक तो बाक़ी नहीं रही? किसी प्रकार का शक-शुबा तो नहीं? आज का निर्णय ठीक हुआ न?" सबल जाति के सरदारों ने निर्बल-वर्ग के प्रतिनिधियों से बड़े प्रेम-पूर्वक पूछा।

"नहीं महाराज, हम तो आज की घोषणा को इतिहास की अमिट छाप समझते हैं। हम और हमारी जाति आपके इस असीम उपकार को अनंत काल तक स्मरण रक्खेगी। आप धन्य हैं, और आपके इस असीम अनुग्रह के कारण हम लोग भी अपने को धन्य समझते हैं। याद रहे, आपकी सेवा के लिये हमारी जान हाज़िर है। जो आपका हुक्म होगा, उसकी तामील हम प्राण ख़तरे में डालकर भी करेंगे।" निर्बल-समाज के प्रतिनिधि बोले।

सबल जाति के लोगों ने कहा—"ठीक है, ठीक है। जब आप लोगों की जान हमारे लिये हाज़िर है, तो हमें भी किसी तरह की चिंता न करनी चाहिए। लाइए, आज का जल-पान आपकी परोपकार-वृत्ति और प्रेम-परायणता की परीक्षा लेते हुए ही करें। आइए, आइए, और अपने नए मित्रों के पेटों में पहुँचकर अपने ज्वलंत भ्रातृभाव का प्रशस्त परिचय दीजिए। इस उपकार के लिये हम और हमारा पेट, दोनो आपका गुण-गान करेंगे। ऐसा करके आप मेल-मिलाप के नाम पर अपने वंशजों के लिये भ्रातृभाव एवं समता का उदात्त उदाहरण छोड़ जायँगे। उधर हम लोगों को भी विश्वास हो जायगा कि आप वास्तव में हमारे सच्चे मित्र हैं। मित्रता की कड़ी कसौटी पर खरा उतरना आप-जैसे निष्कपट मित्रों से ही संभव है। आइए, आइए, सभा के कार्य में देरी होती है। आइए, जल-पान के मिस आपके प्रेम की प्रतीक पेट में डालकर सभा-भवन में चलें। यह ठीक है कि अब आप सभा की कुर्सियों पर नहीं दिखाई देंगे, बल्कि हमारे पेटों और हृदयों में विराजमान हो जायँगे। जो व्यक्ति मित्रता निभाने के लिये अपनी देह को मित्र के लिये अर्पण कर देता है, सचमुच वही सच्चा मित्र है। इससे बढ़कर संसार में सच्ची मैत्री का और कोई आदर्श नहीं हो सकता।"

थोड़ी ही देर में सारा जंगल जीवों की करुण पुकार से काँपने लगा। पशुओं के आर्तनाद से अखिल वायु-मंडल चीख़ उठा। रँभाहट और घबराहट का आलम बरपा हो गया। देखते क्या हैं, सभा का वह विशाल मंडप हड्डी पसलियों का गोदाम बना हुआ है, ज़मीन पर रक्त की नदियाँ बह रही हैं, और चमड़ियाँ इधर-उधर पड़ी भिनक रही हैं। मालूम हुआ, यह सब सच्ची मित्रता के प्रचंड परिचय का नंगा नमूना अथवा भ्रातृभाव की भोंड़ी भावना का भभकता हुआ दुष्परिणाम है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुच्छूपानी

[प्रो० धर्मदेव शास्त्री, दर्शनकेसरी]

(धर्मदेवजी सुधा-मंडल के अच्छे लेखकों में हैं। आपके यात्रा-विवरण विशेष रूप से रोचक होते हैं। गुच्छूपानी दर्शनीय स्थान है। विद्यार्थी-जीवन में हम भी इस स्थान का निरीक्षण अनेक बार कर चुके हैं। इंडियन-डिफ़ेंस-फ़ोर्स में जब हम थे, तब दो महीने गुच्छूपानी के निकट ही हमारा डेरा था, इसलिये पनचक्की के निकट प्रायः प्रतिदिन, खरी दुपहरी में, गुच्छूपानी में स्नान करने का आनंद लेने जाया करते थे।—सुधा-संपादक)

भारतीय संस्कृति में ऊँचे स्थान को ही स्वर्ग कहा जाता है। इस दृष्टि से हम देहरादून को 'स्वर्ग का द्वार' कह सकते हैं। आप गाड़ी से देहरादून जाते हुए, हरिद्वार से आगे कुछ ही मील दूर, गाड़ी में बैठे-बैठे ही, दोनो किनारों के रमणीक और स्वर्गीय दृश्य देखकर देहरादून को 'स्वर्ग का द्वार' कहने में मेरे साथी हुए विना न रहेंगे। जब मैं पहलेपहल देहरादून गया, तब ट्रेन में बैठे-ही-बैठे दोनो ओर के वन की निस्तब्धता, निर्जनता और अलौकिक रमणीयता से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि देहरादून से डोईवाला तक मोटर के रास्ते एक बार केवल इस अरण्य को देखने के ही लिये गया। मार्ग में कई स्थानों पर मध्याह्न में सूचीभेद्य अंधकार देखकर कालिदास की इस आशय की युक्ति स्मरण आ गई—

"सूर्य के भय से दिन में यहाँ अंधकार शरण में आया, और बड़े होते हुए भी छोटे को शरण देने में महत्त्व समझकर अंधकार को यहाँ निरापद् स्थान मिला।"

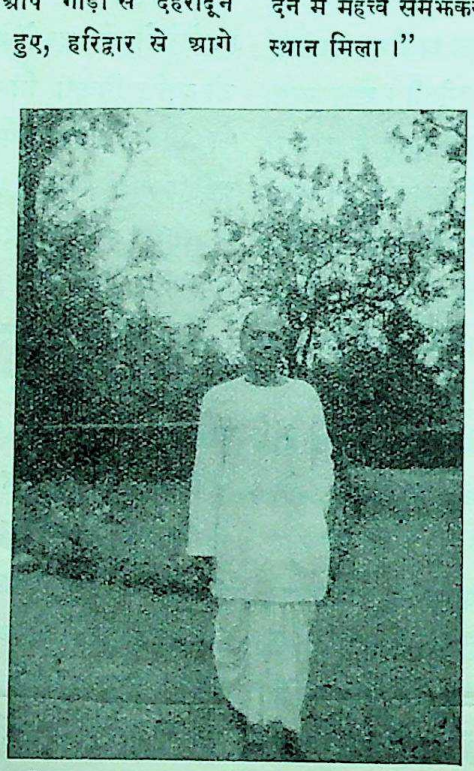

प्रो० धर्मदेव शास्त्री, दर्शनकेसरी

रास्ते के दृश्य देखकर आगंतुक के हृदय में यही भाव अंकित होता है कि देहरादून पहुँचकर तो इससे भी अच्छे प्राकृतिक दृश्य देखने को मिलेंगे। लेकिन देहरादून-स्टेशन पर पहुँचते ही मनुष्य के लिये गौरवास्पद उसकी कृति को देखकर कोई भी नवागंतुक निराश हुए विना न रहेगा। वस्तुतः मनुष्य के चरण-कमल जहाँ पहुँचे हैं, वहाँ उसने जंगल को जन-स्थान बनाने की कोशिश की अवश्य है, परंतु सौंदर्योपासक होने का दावा करने पर भी मानव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने किया उसका ख़ून है। शायद परीक्षक को परीक्षणीय का ख़ून करना ही पड़ता है।

इसी निराशा के कारण देहरादून पहुँचकर प्रायः सभी यात्री एक ही प्रश्न करते हैं—यहाँ कौन-कौन स्थान और प्राकृतिक दृश्य दर्शनीय हैं? इस प्रश्न का उत्तर प्रायः एक समान ही होता है। सहस्रधारा, गुच्छूपानी, नालापानी, टपकेश्वर, ये ही चार मुख्य प्राकृतिक दृश्यों के स्थान द्रष्टव्य समझे जाते हैं। इनमें भी सहस्रधारा और गुच्छूपानी मुख्य हैं। मुख्य इसलिये कि इन दोनो को देखकर ऐसा समझा जाता है कि सभी स्थान देख लिए। मैंने जब पहले-पहल गुच्छूपानी बाहर से देखा था, तब मुझ पर यह प्रभाव पड़ा कि सहस्रधारा देख लेने पर कुछ द्रष्टव्य शेष नहीं रहता। परंतु बाद में, जब आज से तीन वर्ष पूर्व गुजरात के प्रसिद्ध बाल-शिक्षक स्वर्गीय गिजू भाई के साथ मुझे गुच्छूपानी को अंदर से देखने का अवसर हुआ, उसका विराट् रूप देखकर मैं विस्मित भी हुआ, और भयभीत भी। इसके बाद मैंने कई बार गुच्छूपानी के पेट में घुसकर उसका अंत पाने की चेष्टा की, परंतु हर बार बीच से ही वापस आ गया। लगभग एक मील तक गुच्छूपानी के दोनो ओर लंबा पहाड़ खड़ा है, जिसे देखकर "भय में भी रस होता है"—इस सत्य का साक्षात्कार होता है। इस प्रकार मैं जब-जब गुच्छूपानी का अंत पाने के लिये गया, तब-तब मैंने उसे अनंत ही पाया। पिछली बार जब मैं मान्य काका साहब को गुच्छूपानी दिखाने गया, तब यह निश्चय करके गया कि अब की गुच्छूपानी को सांत देखकर ही लौटूँगा। गुच्छूपानी को आज तो प्रकट पानी ही करके मैं वापस आऊँगा। अपना यह निश्चय जब मैंने काका साहब को बताया, तब वह बोले—"मैं तो पुराना घुमक्कड़ हूँ, आप चाहे कुछ निश्चय कीजिए, मैं पीछे नहीं रहूँगा।"

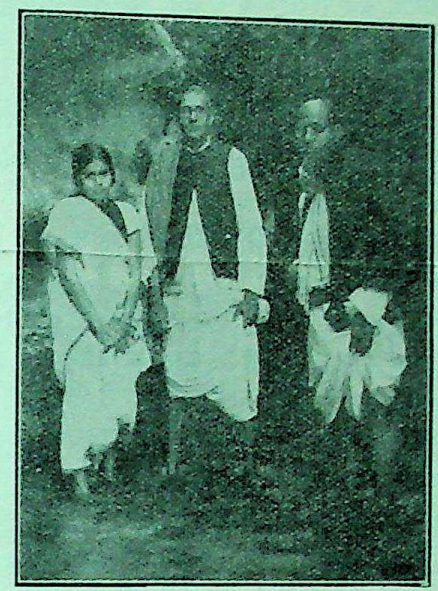

देहरादून का दर्शनीय स्थान गुच्छूपानी

[अंदर प्रविष्ट होते समय लिया गया चित्र। बाएँ से दाएँ—१. कुमारी चंदन पारीख एम्० ए०, २. श्रीकाका साहब कालेलकरजी और ३. प्रो० धर्मदेव शास्त्री (इस लेख के लेखक)]

कन्या-गुरुकुल से गुच्छूपानी ढाई मील दूर है। डेढ़ मील तक राजपुर-रोड से ही जाना होता है। एक मील बाद का रास्ता पैदल ही चलना पड़ता है। जाखन-ग्राम राजपुर-रोड पर ही दोनो ओर आधा मील लंबा बसा है। ग्राम के अंत में एक सुंदर शिव-मंदिर सड़क के किनारे पर ही बना है। मंदिर के पास से गुच्छूपानी जाने के लिये एक पगडंडी गई है। वैसे तो गुच्छूपानी जाने के लिये एक और मार्ग छावनी से होकर गया है, और उस मार्ग से पैदल कम चलना होता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परंतु उस मार्ग से गुच्छूपानी से पूर्व प्रकृति-माता ने जो उसकी पूर्व-पीठिका अथवा तैयारी की है, वह नहीं देखी जा सकती। और, इसे देखे बिना गुच्छूपानी का अपूर्ण दर्शन ही हो पाता है।

पैदल के रास्ते कुछ ही दूर चलने पर एक खाई आती है, जो किसी स्थान पर तो इतनी नीची है कि देखने से भी डर लगता है। देहरादून के आस-पास इस प्रकार के गर्त बहुत हैं, और प्रति-वर्ष इनकी संख्या में वृद्धि ही होती रहती है। इन गर्तों को देखकर भगवान् के शूकरावतार की कल्पना सत्य प्रतीत होती है। मार्ग में कुछ दूर तक दोनो ओर पलाश का वन-खंड दूर से बहुत सुंदर लगता है। उसे दूर से देखने पर तो ऐसा लगता है, मानों नाशपाती का बग़ीचा हो। रास्ते में कहीं घनी छाया और कहीं कड़ी धूप देखकर आश्चर्यान्वित हो जाना पड़ता है। वहाँ बालक धूप-छाँह खेला करते हैं, जिससे भगवान् के बाल-रूप का ध्यान हो आता है। थोड़ी दूर पर जब मुख्य मार्ग दो खंडों में विभक्त हो जाता है, तब प्रश्न होता है—'कः पन्थाः ?' परंतु किसी भी मार्ग से जाने पर आप गुच्छूपानी ही पहुँचेंगे। दो ही नहीं, इन दोनो के आगे चलकर अनेक उपभेद हो जाते हैं, परंतु सबका गंतव्य है एक ही, अर्थात् गुच्छूपानी। साधनों की अनेकता होने पर भी गंतव्य की एकता ही सब धर्मों का मूल है, यह सत्य यहाँ स्पष्ट होता है। भारतीय धर्म की—
"रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषाम्
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव"
इस उक्ति की यथार्थता यहाँ प्रत्यक्ष होती है।

"देखो, सामने मंसूरी का दृश्य कितना सुंदर लगता है। मंसूरी के बड़े-बड़े मकान किस क़दर छोटे हो गए हैं।" काका साहब ने चंदन बहन से कहा—

"मैं क्या-क्या देखूँ ?" चंदन पारीख ने कहा—"इतनी अधिक द्रष्टव्य चीज़ें मैं एक साथ कैसे देख सकती हूँ, जब कि सामने ऊँचा-नीचा मार्ग भी देखकर चलना ज़रूरी है, अन्यथा गिर जाने का भय है।"

वस्तुतः नए आदमी के लिये मार्ग में इतने अधिक दृश्य एकत्र हो जाते हैं कि वह हैरान हो जाता है। क़दम-क़दम पर 'वह देखिए' ये शब्द सभी के मुख से सुनकर सब किंकर्तव्य-विमूढ़ हो जाते थे, क्योंकि सबका 'वह' पृथक्-पृथक् ही होता था।

गुच्छूपानी से दो-तीन फ़र्लांग पूर्व ही पहाड़ पर एक ग्राम बसा है। ग्राम के अधिवासी प्रायः फ़ौजी पेंशनर नैपाली ही हैं। इसलिये प्रायः ग्रामवासी शिक्षित प्रतीत होते हैं। एक प्राइमरी स्कूल भी ग्राम में है। इस ग्राम को ही हम गुच्छूपानी का ग्राम कह सकते हैं, क्योंकि यहाँ से गुच्छूपानी आँखों और कानों से तो कुछ ही क़दम रह जाता है, जब कि पाँवों से दो-तीन फ़र्लांग। ग्रामीण गुच्छूपानी से ही पीने के लिये पानी लाते हैं। ग्राम से गुच्छूपानी तक का रास्ता बहुत ही ऊबड़-खाबड़ है, एक-आध स्थान पर तो एक दूसरे का हाथ पकड़कर ही उतरना पड़ता है। ग्राम से नीचे उतरकर गुच्छूपानी का बाह्य रूप दिखाई देता है। यहाँ पानी का प्रवाह कई हिस्सों में विभक्त हो गया है। यहाँ थोड़े-से फ़ासले पर दो पनचक्कियाँ भी चलती हैं।

गुच्छूपानी-घाटी में प्रवेश करते हुए ऐसा मालूम होता है, जैसे मृत्यु के मुख में प्रवेश कर रहे हैं। दोनो ओर चिकने, सुंदर, पर भयानक पर्वत-खंड देखकर रुद्र के विविध गणों का ध्यान होता है। लगभग एक मील तक जूता हाथ में लेकर घुटने से कुछ कम पानी में चलना पड़ता है। अपरिचित व्यक्ति तो इसमें एक क़दम भी चलने से डरेगा, परंतु जिसने एक बार इसका स्वरूप देख लिया, वह निःशंक दौड़ता जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

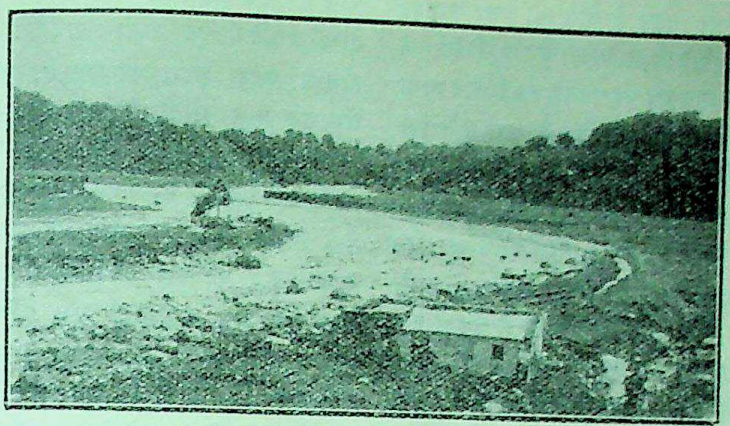

गुच्छूपानी का बाह्य दृश्य (घाटी से बाहर)

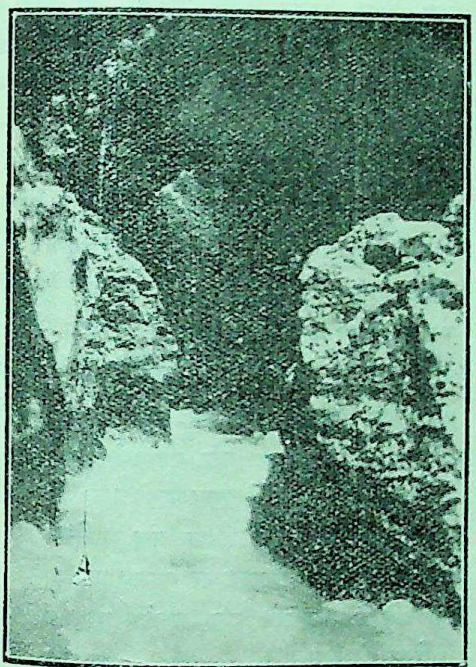

गुच्छूपानी
(घाटी के बीच का दृश्य । यहाँ बीच में स्रोत है ।)

बीच में कई स्थानों पर पाषाण-खंडों से पानी के छोटे - छोटे स्रोत निकल रहे हैं, जो दोनों दीवारों को सरस कर रहे हैं। एक स्थान से तो पानी का स्रोत इस तरह निकल रहा था, जैसे प्रकृति-माता हम पुत्रों को देखकर प्रस्तुतस्तनी हो उठी हो। हम चाहे कितने ही बड़े हो गए हों, प्रकृति-माता के इस स्नेहातिरेक की उपेक्षा नहीं कर सकते थे। सबने एक-एक करके मुँह लगाकर उसका पान किया। मुझे पानी पीते समय बचपन के उन दिनों की याद हो आई, जब बकरी पकड़कर, हाथ में उसके स्तन लेकर मुँह से दूध पीने की प्रक्रिया चलती थी।

एक स्थान पर ऊपर-नीचे करके तीन बड़े-बड़े पत्थर रास्ते में पड़े थे। उनके नीचे से होकर गुज़रते हुए हमें वामन-रूप धारण करना पड़ा। शिलाएँ एक पर दूसरी इस प्रकार रक्खी थीं, जैसे किसी ने सोच-विचारकर रख दी हों। घाटी का पानी कहीं-कहीं तो बहुत ऊँचे से गिरता है। ऐसे स्थानों पर प्रपात का दृश्य बहुत रमणीक हो गया है। घाटी के ठीक बीच में एक स्वयंभू पानी का कुंड है, जिसका पानी लेने के लिये दूर-दूर से ग्रामवासी आते हैं। वस्तुतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पानी मधुर बहुत है, पीते ही सारा श्रम दूर हो जाता है, ताज़गी आ जाती है। प्रकृतिदेवी ने अपने इस विश्राम-गृह पर पाषाणमय वितान ताना है, जो विना खंभों के सुप्रतिष्ठित है। ऊपर सुविशाल छत से सुसज्जित यह कुंड प्रकृति-गृह की यज्ञशाला प्रतीत होती है। कुंड से आगे कुछ दूर घाटी में ही बड़ा मैदान आ जाता है, परंतु इसके एक ओर पहाड़ के भाग में छत्र के समान मंच-सा बना है, जिसके नीचे वर्षा आ जाने की दशा में सैकड़ों नर-नारी बैठ सकते हैं। इस स्थान पर बहुत बड़ी कांग्रेस की जा सकती है—सामने मैदान में दर्शक बैठ सकते हैं, और पहाड़वाले भाग में मंच बन सकता है। यहाँ पानी का प्रवाह अत्यधिक सम-तल पर बहने के कारण गति-रहित मालूम होता है। इससे आगे दोनो ओर का पहाड़ क्रमशः छोटा होता गया है, और अंत में शून्य में विलीन हो गया है।

इस प्रकार दृढ़ अध्यवसाय के साथ आज हमने गुच्छूपानी का अंत देख लिया, और इससे संतोष भी बहुत अधिक हुआ। जाते हुए हमारे सामने एक ही लक्ष्य था—किसी प्रकार इस घाटी का अंत पाना है। इसलिये जाते समय हम लोग दोनो ओर के पहाड़ सूक्ष्म दृष्टि से देख नहीं पाए। आते समय यद्यपि देर हो गई थी, तब भी घाटी से हम कोशिश करने पर भी बहुत जल्द नहीं निकल सकते थे, क्योंकि पानी में से गुज़रना पड़ता था, और आते हुए उतराई भी थी। कहीं-कहीं तो पानी पड़ने से पत्थर बहुत चिकने हो गए थे। वहाँ फिसलने का डर था। ऐसे स्थानों पर चंदन बहन को पार कराने में मुझे और काका साहब, दोनो को सहायता देनी होती थी। एक हाथ में जूते लेना और दूसरे से धोती सँभालना, दोनो भार मालूम होते थे। वापस आते हुए कुंड के पास बहुत उतराई है, वहाँ थोड़ा-बहुत सभी फिसले। पास में लटकी हुई जिस बेल को हम पकड़ते, वह हाथ लगाते ही टूट जाती। पानी भी यहाँ फ़ॉल होने से काफ़ी गहरा हो गया है, इसलिये बहुत सँभालने पर भी धोती भीग ही गई।

वापस आते हुए हमने देखा, स्थान-स्थान पर आगंतुक व्यक्तियों ने पत्थर से अपने नाम खोदे थे। मनुष्य अपनी अमरता के लिये कितना लालायित है, यह यहाँ अंकित था। नाम खोदने-वालों का हाथ कहाँ-कहाँ तक पहुँच सकता है, यह भी देखने योग्य था। अगम्य प्रतीत होनेवाले स्थान पर भी कइयों ने नाम और अपने-अपने आदर्श वाक्य लिख रक्खे थे। ढलान में कहीं-कहीं अपने आपको रोकना ही चलना था, क्योंकि ऐसा किए विना चलना नहीं 'बहना' ही होता। कहीं-कहीं तो वेग इतना अधिक था कि पहाड़ पकड़कर चले विना अपने आपको रोक सकना भी अशक्य था।

गुच्छूपानी-घाटी में एक-दो स्थानों पर पानी का प्रवाह अदृश्य हो गया है, इसीलिये इसका नाम गुच्छूपानी हुआ है। 'गुच्छूपानी' नाम की मीमांसा करते हुए हममें से एक ने कहा—"नहीं, यह बात नहीं।" मैंने कहा—"वस्तुतः जितने यात्री इस घाटी को देखने आते हैं, वे कुछ ही दूर जाकर वापस चले जाते हैं। उनके लिये यह पानी का प्रवाह गुह्य, गुहांतर्गत ही रहता है।" परंतु हमारे लिये 'गुह्य पानी प्रकट पानी हो गया था, क्योंकि हमने इसका अंत पा लिया था। परंतु गुच्छूपानी का हृदय पर अटल प्रभाव पड़ा। इस दृष्टि से गुच्छूपानी गुह्य अर्थात् हृदय की गुहा में स्थित हो गया।

जब हम घाटी से बाहर आए, तब सूर्यनारायण सामने अस्ताचल पर रक्तवर्ण होकर मानो क्रुद्ध हो रहे थे—जिस घाटी में सहस्रकर होकर भी मैं प्रवेश न कर सका, वहाँ यह द्विकर लघु मानव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँच गया, और उसका अंत पा गया ! हमारे देखते-ही-देखते सूर्य के इस क्रोधानल के कारण दिग्दाह हो गया। पश्चिम दिशा में आग-सी लग गई। परंतु क्रोध का फल होता है सर्वनाश, यह सत्य भी हमने घाटी से आगेवाला मैदान पार करते-करते देख लिया। सूर्यनारायण के अस्त होने से हम घर तक अँधेरे में कैसे पहुँचेंगे, यह हम सोच ही रहे थे कि कुछ दूर चलने पर हमने देखा कि एक आकाश-चुंबी वृक्ष के पत्र-झरोखों से निशा-कांत संभ्रांत दृष्टि से देख रहा था कि मेरा विनाशक कहीं वापस तो नहीं आ रहा। जब उसे यह विश्वास हो गया कि सूर्य का नाम भी शेष नहीं रहा तब आश्वस्त होने से चंद्र का मुख-मंडल प्रकाशित हो गया। रात्रि के प्रकाश में मार्ग का दृश्य कुछ विचित्र हो गया था। जब हम लोग पर्वतीय मार्ग तय करके मंदिर के पास जाखन-ग्रामवाली राजपुर-रोड पर आए, तब वज्रमय (सीमेंट से बनी) सड़क ऊपर चंद्र के आलोक से और एक ओर विद्युत् के प्रकाश से चमचमा रही थी।

"मैंने अनेक स्थानों के प्राकृतिक दृश्य देखे हैं। गुच्छूपानी देखकर मैं यह नहीं कह सकता कि किसी की पुनरुक्ति हुई हो।" श्रीकाका साहब ने कहा। वस्तुतः गुच्छूपानी प्रकृतिदेवी का स्नानागार और क्रीड़ागार है, और है क़ुदरत का खेल।

सब-के-सब इसे गुप्त रसायन
के बनाने की विधि जानने के
हुए। नवाब बहालपुर के ससुर
मोहम्मद खाँ साहब ने अपनी
सेवा से बाबाजी से यह योग जीत
र उन्होंने इसे लाहौर के पं० ठाकुर-
को बतलाया। शर्माजी ने इसे दो
के साथ लिखकर इन तीनों से उत्तम
बतलानेवाले को १०००) नक़द इनाम
णा की। आज २० साल के लगभग
र यह पुरस्कार कोई प्राप्त नहीं कर
कर मथुरा के बाबू हरिदास ने इसे
द्रोदय में छपवा दिया। हमने
ग को स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बलता,
वीर्य-विकार-ग्रस्त रोगियों पर बरता
ल गुणकारी पाया। अनेक पत्र-पत्रि-
छपवा दिया। पाठक भी बनाकर
म एक आदमी का
दूसरे का चेहरा लाल, सुर्ख हो ग
के वैद्यराज बालकृष्ण शर्मा ने ३५० रो
बरता और इसे अधिक गुणकारी प
कर के संपादक श्रीछोटेलाल जी
चार्य ने गृह-चिकित्सा-पथ-प्रदर्शक
कि इतना प्रचंड, शीघ्र गुणकारी
नहीं देखा।
हमारा दावा है कि केवल ७ दिन
शरीर में रक्त दौड़ता नजर आवेग
चेहरा लाल कश्मीरी सेब की
लगेगा। ४० दिन में नपुंसकता, नि
जाती है। स्त्रियों के हर प्रकार सेर और
दूर हो गर्भधारण-शक्ति आती है
मंदे की शक्ति बढ़ाकर भूख दू सेर की
पाचन-क्रिया ठीक होती है। व
खराबी, खाँसी, नजला, जुकाम,
खून का पतलापन, आँखों का
कभी चिनगारी-से उड़ते नजर आ
थूक गिरना, दमा तथा हर तरह
तुरंत दूर कर नवजीवन संचार
भली भाँति समझाकर लिखा है
बिभाग न० ४६ पाष्ट बक्स न० ५५४ कलकत्ता
स्थानीय हमारे एजेंट से खरीदिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत

[श्रीपं० सुमित्रानंदन पंत]

(पंडित सुमित्रानंदन पंत हिंदी के युगांतरकारी, सुकुमार कवि हैं। खड़ी बोली को संगीतमय बनाने में आपका बहुत कुछ हाथ है। पंतजी कल्पना के स्वर्णलोक में ही नहीं विचरे हैं, अब वह अपनी 'युगांत' और 'युगवाणी' में जीवन के बहुत निकट आ गए हैं—छायावाद से प्रत्यक्षवाद में आ गए हैं। हाल की निकली हुई 'ग्राम्या' में उनके द्वारा चित्रित ग्राम-निवासियों के चित्र बड़े स्वाभाविक और सुंदर हुए हैं। इसमें उन्होंने एक आदर्श ग्राम की कल्पना करके एक मानव-धर्म की महत्ता और व्यापकता दिखलाई है।—सुधा-संपादक)

मधुर जीवन - आतप सुकुमार
सेकने दो न मुझे कुछ काल,—
युक्त हो रे मन के मधु बाल
छेड़ मधु [illegible] स्वप्नों की [illegible]

अनिल के खग, कर चल कल रोर,
फेन - लोमिल हिम - पंख [illegible]सार,
उड़ रहे छू - छू मन के छोर
[illegible]

[illegible] गति-रहित मालूम होता
[illegible]गे दोनो ओर का पहाड़ क्रमशः
[illegible] है, और अंत में शून्य में विलीन
[illegible]ढ़ अध्यवसाय के साथ आज हमने
[illegible] देख लिया, और इससे संतोष
[illegible]क हुआ। जाते हुए हमारे सामने
[illegible]—किसी प्रकार इस घाटी का अंत
[illegible]ये जाते समय हम लोग दोनो
[illegible] सूक्ष्म दृष्टि से देख नहीं पाए।
[illegible]पे देर हो गई थी, तब भी घाटी
[illegible] करने पर भी बहुत जल्द नहीं
[illegible]योंकि पानी में से गुज़रना पड़ता
[illegible]ए उतराई भी थी। कहीं-कहीं तो
[illegible] बहुत चिकने हो गए थे। वहाँ
[illegible]। ऐसे स्थानों पर चंदन बहन
[illegible]झे और काका साहब, दोनो को

किए विना चलना नहीं 'बहना
[illegible]र!
कहीं-कहीं तो वेग इतना अधिक
पकड़कर चले विना अपने आपको
भी अशक्य था।

गुच्छूपानी-घाटी में एक-दो स्थानों
का प्रवाह अदृश्य हो गया है, इसीलि
नाम गुच्छूपानी हुआ है। 'गुच्छूपानी
मीमांसा करते हुए हममें से एक ने कहा
यह बात नहीं।" मैंने कहा—"वस्तुत
यात्री इस घाटी को देखने आते हैं, वे
दूर जाकर वापस चले जाते हैं। उ
यह पानी का प्रवाह गुह्य, गुहांतर्गत
है।" परंतु हमारे लिये 'गुह्य पानी प्रकट
गया था, क्योंकि हमने इसका अंत पा लि
परंतु गुच्छूपानी का हृदय पर अटल प्र
इस दृष्टि से गुच्छूपानी गुह्य अर्थात् हृद
में स्थित हो गया।

आज करता दिशि - दिशि उल्लास,
मोतियों की कर मधु बौछार,—
मधुर रे मधु जीवन का हास,
मुग्ध स्नेहातप में संसार!

भोग लें जीवन - सुख कुछ काल
मधुर सुख ही सुख का उपचार,
आज पुलकित रे उर की डाल,
मधुर सुख जीवन का शृंगार!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपूर्व काया-पलट

(एक आश्चर्यजनक किंतु सत्य घटना)

उस वृद्ध ग्वाले की तत्पर सेवा से प्रसन्न हो रत्नागिरी ने उसे अपने महान् योग की केवल छ मात्राएँ प्रसाद-रूप में दे दीं। एकदम अपार शक्ति का अधिकारी बन जाने की प्रबल इच्छा ने उसे सभी मात्राएँ एक साथ खा लेने को विवश किया। फलस्वरूप स्वयं योगिराज को औषधि के प्रबल वेग को रोकने के लिये अत्यंत हैरान होना पड़ा और फिर भी जीर्ण वृद्धावस्था में ग्वाले को तीन विवाह करने पड़े और जो दशा हुई, उसका वर्णन करना सभ्यता का उल्लंघन करना है। यह समाचार राजा-महाराजा, रसिक, रईस आदि लोगों में बिजली की भाँति फैल गया और सब-के-सब इस गुप्त रसायन महावाजीकरण के बनाने की विधि जानने के लिये उत्सुक हुए। नवाब बहालपुर के ससुर हाजी हयातमोहम्मद ख़ाँ साहब ने अपनी लगन और सेवा से बाबाजी से यह योग जीत ही लिया और उन्होंने इसे लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्माजी ने इसे दो अन्य योगों के साथ लिखकर इन तीनों से उत्तम वाजीकरण बतलानेवाले को १०००) नक़द इनाम देने की घोषणा की। आज २० साल के लगभग हो गए और यह पुरस्कार कोई प्राप्त नहीं कर सका है, फिर मथुरा के बाबू हरिदास ने इसे चिकित्सा-चंद्रोदय में छपवा दिया। हमने भी इस योग को स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बलता, नपुंसकता, वीर्य-विकार-ग्रस्त रोगियों पर बरता और तत्काल गुणकारी पाया। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपवा दिया। पाठक भी बनाकर लाभ उठाएँ।

योग—शुद्ध बुरादा फ़ौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्क १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा को एक घंटा देखकर घृतकुमारी में घोंटकर मिट्टी के कूजे में मज़बूत बंद कर ५ सेर कंडों में फूँके। दुबारा एक तोला हरताल बर्की शुद्ध १॥ माशा कपूर शुद्ध में, तीसरी बार गंधक आमलासार शुद्ध १ तोला कपूर १॥ माशा में, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद एक तोला कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति १६ आँच दे, फिर इसको कड़ाही में डालकर बराबर इंद्रवधू डाल दे और नीचे आग जलावे। जब इंद्रवधू जलकर राख हो जाय, तो हवा देकर उड़ा दे। बस, 'अपूर्व शक्तिदाता' योग तैयार है। चार-चार चावल सुबह-सायंकाल माखन-मलाई से खावे-ऊपर से मिश्री मिला दूध पीवे।

इस योग की प्रशंसा में मथुरा के बाबू हरिदासजी लिखते हैं कि इसके सेवन से एक हफ्ते में एक आदमी का वज़न चार पौंड बढ़ गया, दूसरे का चेहरा लाल, सुर्ख़ हो गया। भूपाल के वैद्यराज बालकृष्ण शर्मा ने ३५० रोगियों पर बरता और इसे अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर के संपादक श्रीछोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने गृह-चिकित्सा-पथ-प्रदर्शक में छापा है कि इतना प्रचंड, शीघ्र गुणकारी योग दूसरा नहीं देखा।

हमारा दावा है कि केवल ७ दिन के सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता नज़र आवेगा। २१ दिन में चेहरा लाल कश्मीरी सेब की तरह चमकने लगेगा। ४० दिन में नपुंसकता, निर्बलता दूर हो जाती है। स्त्रियों के हर प्रकार का प्रदर-रोग दूर हो गर्भधारण-शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता है। पाचन-क्रिया ठीक होती है। कफ, तिल्ली की ख़राबी, खाँसी, नज़ला, ज़ुकाम, बदन दुखना, ख़ून का पतलापन, आँखों का पीलापन, कभी-कभी चिनगारी-से उड़ते नज़र आना, बार-बार थूक गिरना, दमा तथा हर तरह की कमज़ोरी तुरंत दूर कर नवजीवन संचार करता है। योग भली भाँति समझाकर लिखा है। फिर भी यदि आप न कर सकें, तो बनी बनाई, १६ आँच दी हुई ४० दिन की ८० मात्रा डाक-ख़र्च-सहित ५॥) में हम भेज देंगे। यदि कोई बात समझ में न आवे, तो जवाबी कार्ड डालकर उत्तर मँगा लें।

मँगाने का पता—वैद्यरत्न सत्यदेवजी, रूपविलास-कंपनी, नं० ३ कंचौसी, इटावा (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर चित्र, रेखा-चित्र और गुप्त भेदों-सहित

काम-कला-रहस्य

संस्कृत को छोड़कर हिंदी में आज तक कामशास्त्र के ग्रंथ की कमी-सी थी, इस कारण महर्षि वात्स्यायनप्रणीत कामसूत्र, रति-रहस्य, रति-मंजरी, अनंग-रंग आदि कामशास्त्र और अनेक संस्कृत-ग्रंथों को देखकर यह ग्रंथ लिखा है। इसी शास्त्र की ज्ञान-प्राप्ति की प्रबल वासना के कारण हजारों मनुष्य कपोल-कल्पित कोकशास्त्र के नाम से बिकनेवाली पुस्तकों को प्राप्त करके भी अतृप्त रह चुके हैं। इसको जानकर आप स्त्री-पुरुषों के पद्मिनी, चित्रिणी आदि जाति-भेद, स्वभाव और देह-तत्त्व के रहस्य को जान सकते हैं। व्यभिचारिणी, सुशीला, कुलटा आदि की परीक्षा कर सकते हैं। आनंद-वर्द्धक उचित संयोग कर सकते हैं। स्त्री को प्रसन्न और वशीभूत रख सकते हैं। इसमें रात्रि-चर्या, शयन के नियम, कामनिवास, तिथि-चक्र-ज्ञान, चौरासी आसनों के चौरासी रेखा-चित्र और वर्णन (इस विषय का यथार्थ रहस्य-प्रकाशन), इसके सिवा गर्भाधान-संबंधी काम-कलाएँ, उत्तम संतानोत्पादक नियम, षट्-ऋतु-स्त्री-विहार, जल-क्रीड़ा-विचार, प्रति ऋतु के अनुकूल पर्वत, काश्मीर, सिंध, मगध आदि देशों की स्त्रियों के विधान; मुग्धा, ज्ञातयौवना, खंडिता आदि नायिका-भेद, बाला, तरुणी आदि संज्ञा-भेद, सोलह शृंगार, स्त्री के भाव जानने की बातें, वशीकरण-तंत्र, शीघ्रपतन-निवारक, वीर्यस्तंभक औषधि, नपुंसकता-नाशक, बल-वर्द्धक औषधि, तिल, स्त्री-रोग-निवारक औषधि आदि अनेक विषय निष्कपट वर्णित हैं। आर्ट-पेपर पर छपे हुए दो सुंदर चित्र और सादे काग़ज़ पर छपे हुए रेखा-चित्र लगे हुए हैं। पृष्ठ १०६। मूल्य पहले १।) था, अब १) है। डाक-व्यय ।-)

मुनीम

इसके द्वारा हिंदी जाननेवाला मनुष्य बही-खाते का हिसाब जानकर, अच्छा-ख़ासा मुनीम बनकर प्रतिष्ठा के साथ ३०) मासिक की नौकरी कर सकता और व्यापार कर हजारों का लाभ उठा सकता है। पृष्ठ ६३। मूल्य पहले ।।) था, अब ।=) है। डाक-व्यय ।)

जीवन को सुखमय बनानेवाला

स्वस्थ दीर्घजीवन

इस पुस्तक में आयुर्वेदज्ञ ऋषियों और योरप के जगत्प्रसिद्ध विद्वान् डॉक्टरों के अनुभूत स्वास्थ्य-संबंधी उपदेश, उचित आहार-विहार, अद्भुत प्राणायाम, सरल व्यायाम, दीर्घायु प्राप्त करने के उपाय और बलवर्द्धक अपूर्व औषधियों के नुस्खे हैं। पृष्ठ १०० ; मूल्य पहले ।।=) था, अब ।।) है। डाक-महसूल ।)

सौंदर्य-साधन

इस पुस्तक में सर्वसौंदर्य का वर्णन डॉक्टरों के मत और वैद्यकशास्त्र के अनुसार किया है। सुंदरता उत्पन्न करनेवाले उपदेश, नियम और उपाय लिखे हैं। सुंदरता बढ़ानेवाले उबटन, लेप, पाउडर, केश-तैल, मिल्क, अंग-राग, साबुन, ख़िज़ाब आदि हैं। पृष्ठ १०४। मूल्य पहले ।।) था, अब ।=) है। डाक-व्यय ।)

स्वप्न-फल और अंगस्फुरण

(श्लोक, भाषा-टीका और चित्रों-सहित)

इसके द्वारा अपने तथा दूसरे के देखे हुए स्वप्नों का फल जान सकते और कह सकते हो। इसमें अनेक प्रकार के शुभ और अशुभ स्वप्नों की मीमांसा की गई है, और उनका फल भी कहा गया है तथा अशुभ स्वप्नों का दोष दूर करनेवाले दान, जप और स्तोत्र भी हैं। इससे आगे अंगों के फड़कने का फल बताया गया है। पृष्ठ ७२। मूल्य पहले ।।) था, अब ।=) है। डाक-व्यय ।)

तार विद्या-शिक्षक

इस पुस्तक में डैमी पर तार के देने और लेने की रीति, आवश्यक यंत्रों के चित्र तथा उन यंत्रों की जाँच करना, साफ़ करना, फ़िट करना और तारों के मिलाने का तरीक़ा हिंदी और अँगरेज़ी-भाषा में यथासंभव बड़ा अच्छा वर्णन किया है, जिसकी जानकारी सिगनेलर के लिये आवश्यक है। मूल्य ।।), डाक-व्यय ।)

तार सीखने की डैमी

मज़बूत, सुंदर। मूल्य प्रति डैमी १) मात्र, डाक-महसूल ।।)

पता--पं० रामचंद्र वैद्यशास्त्री, सुधावर्षक-प्रेस, नं० १, अलीगढ़ सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यथार्थ मू० ३) रुपया

इससमय १॥)रु०

(हिंदी-भाषा और चित्रों-सहित एकांत में पढ़ने-योग्य अपूर्व पुस्तक)

जिन योगों अर्थात् नुस्खों की तलाश में लोग वैद्यों, महात्माओं और तांत्रिकों की खुशामद किया करते हैं, और जैसी ओषधियों के वी० पी० पार्सल मँगाकर धन खर्च किया करते हैं, उनसे अच्छी, चमत्कारी ओषधियों और जड़ी-बूटियों के नुस्खे कई वर्ष की ढूँढ़-खोज के बाद इस पुस्तक में प्रकाशित किए हैं। इन्हें सेवन कर आनंद प्राप्त करें, चाहे प्रतिष्ठा के साथ धन कमावें।

प्रथम भाग में पुरुषों के लिये प्रमेह-नाशक और नपुंसकता-नाशक नुस्खे, वीर्य-स्तंभन के ऐसे नुस्खे, जिनमें नशीली दवा नहीं, खटाई न खाने तक वीर्य-स्तंभन रखनेवाला नुस्खा, दीपक देखने तक वीर्य-स्तंभन रखनेवाला नुस्खा, मुख में डाल रखने तक वीर्य-स्तंभन की गोली, पैर के तलुओं पर मल लेने पर ठंडे जल से पैर न धोने तक वीर्य-स्तंभन रखनेवाला नुस्खा, छोटी गुप्त इन्द्रिय को पुष्ट और दीर्घ बनानेवाले नुस्खे, काम-शक्ति को अधिक बढ़ानेवाले नुस्खे, स्त्री को शीघ्र द्रवित करनेवाले नुस्खे आदि। द्वितीय भाग में—स्त्रियों के लिये श्वेत-प्रदर व रक्त-प्रदर-नाशक नुस्खे, अशुद्ध मासिक ऋतु को खोलनेवाला योग, गुप्तांग को सिकोड़कर दृढ़ करनेवाले योग, बाल उड़ाने के नुस्खे, केश-वर्द्धक योग, पति-वशीकरण का नुस्खा, मुख की झाँई मिटाने-वाला नुस्खा, वंध्या के गर्भ-स्थापन करनेवाले नुस्खे, कन्या ही होती हों, तो पुत्रकारक नुस्खे, स्त्री को सुंदर, सुगठित यौवनवाली बनानेवाले नुस्खे, गर्भ-रक्षा के नुस्खे, गर्भ रहने को रोकनेवाले नुस्खे आदि। एक-एक नुस्खा सौ-सौ रुपए को भी सस्ता है। बनाने की विधि, लगाने की रीति, खाने के अनुपान और गुण छपे हुए हैं। इस समय दोनों भागों की पूरी पुस्तक का मूल्य १॥) रुपया मात्र; डाक-व्यय ।≡)

पता—पं० रामचंद्र वैद्यशास्त्री, सुधावर्षक-प्रेस, नं० १, अलीगढ़-सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक नज़र इधर भी !

मैं अपनी ज़िंदगी की एक ऐसी बात बतलाता हूँ कि जिससे हरएक का फ़ायदा हो सकता है। मेरे पुत्र जयभगवान के पेट के दाहने भाग में १२ वर्ष से बहुत सख्त गोला था। मैंने बड़े-बड़े डॉक्टरों और वैद्यों से १२ वर्ष तक बराबर इलाज कराया, और अपनी ताक़त से बाहर रुपया ख़र्च किया, लेकिन उसकी हालत दिन-प्रतिदिन ख़राब ही होती गई, और आख़िर में डॉक्टरों की सलाह ऑपरेशन की हुई। मुझे ऑपरेशन से भय हुआ और मैंने लड़के के पेट का ऑपरेशन कराना नहीं चाहा। मैंने वैद्यराज शीतलप्रसाद जैन सब्ज़ीमंडी, मुज़फ़्फ़रनगर की तारीफ़ सुनी और उनके पास पहुँचा। लड़के को दिखलाया, सब हाल बतलाया और इलाज के लिये प्रार्थना की। उनके यहाँ जयभगवान का इलाज ता० १२—२—४० को शुरू हुआ और ता० २०—५—४० को उसे बिलकुल आराम हो गया। वैद्यराजजी का इलाज देखकर मुझे ताज्जुब हुआ कि ऐसे ज़बरदस्त रोग को केवल सवा तीन महीने में सिर्फ़ ओषधि खिलाकर जड़ से नष्ट कर दिया और लड़के को किसी प्रकार की तकलीफ़ नहीं हुई। वैद्यराजजी के इलाज की तारीफ़ करने की ताक़त मुझमें नहीं है और न धन्यवाद के अतिरिक्त कोई शब्द ही।

मैंने देखा है कि असंख्य ऐसे रोगियों को वैद्यराजजी के इलाज से आराम होता है, जैसा कि निराश अपने लड़के की तरफ़ से मैं हो चुका था। मैं जनता से सिफ़ारिश करता हूँ कि वह वैद्यराज शीतलप्रसादजी जैन सब्ज़ी-मंडी, मुज़फ़्फ़रनगर के अनुभव से ज़रूर फ़ायदा उठावें, उनके पास पहुँचें या पत्र-व्यवहार करें।

निवेदक—

बाबूराम अग्रवाल

फ़र्म—बाबूराम-जगदीशप्रसाद आढ़ती

नई मंडी, मुज़फ़्फ़रनगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपूर्व काया-पलट

(एक आश्चर्यजनक किंतु सत्य घटना)

उस वृद्ध ग्वाले की तत्पर सेवा से प्रसन्न हो रत्नागिरी ने उसे अपने महान् योग की केवल छ मात्राएँ प्रसाद-रूप में दे दीं। एकदम अपार शक्ति का अधिकारी बन जाने की प्रबल इच्छा ने उसे सभी मात्राएँ एक साथ खा लेने को विवश किया। फलस्वरूप स्वयं योगिराज को ओषधि के प्रबल वेग को रोकने के लिये अत्यंत हैरान होना पड़ा और फिर भी जीर्ण वृद्धावस्था में ग्वाले को तीन विवाह करने पड़े और जो दशा हुई, उसका वर्णन करना सभ्यता का उल्लंघन करना है। यह समाचार राजा-महाराजा, रसिक, रईस आदि लोगों में बिजली की भाँति फैल गया और सब-के-सब इस गुप्त रसायन महावाजीकरण के बनाने की विधि जानने के लिये उत्सुक हुए। नवाब बहालपुर के ससुर हाजी हयातमोहम्मद खाँ साहब ने अपनी लगन और सेवा से बाबाजी से यह योग जीत ही लिया और उन्होंने इसे लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्माजी ने इसे दो अन्य योगों के साथ लिखकर इन तीनों से उत्तम वाजीकरण बतलानेवाले को १०००) नक़द इनाम देने की घोषणा की। आज २० साल के लगभग हो गए और यह पुरस्कार कोई प्राप्त नहीं कर सका है, फिर मथुरा के बाबू हरिदास ने इसे चिकित्सा-चंद्रोदय में छपवा दिया। हमने भी इस योग को स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बलता, नपुंसकता, वीर्य-विकार-ग्रस्त रोगियों पर बरता और तत्काल गुणकारी पाया। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपवा दिया। पाठक भी बनाकर लाभ उठाएँ।

योग—शुद्ध बुरादा फ़ौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्क १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा को एक घंटा देखकर घृतकुमारी में घोंटकर मिट्टी के कूजे में मज़बूत बंद कर ५ सेर कंडों में फूँके। दुबारा एक तोला हरताल बर्की शुद्ध १॥ माशा कपूर शुद्ध में, तीसरी बार गंधक आमलासार शुद्ध १ तोला कपूर १॥ माशा में, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद एक तोला कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति १६ आँच दे, फिर इसको कड़ाही में डालकर बराबर इंद्रवधू डाल दे और नीचे आग जलावे। जब इंद्रवधू जलकर राख हो जाय, तो हवा देकर उड़ा दे। बस, 'अपूर्व शक्तिदाता' योग तैयार है। चार-चार चावल सुबह-सायंकाल माखन-मलाई से खावे-ऊपर से मिश्री मिला दूध पीवे।

इस योग की प्रशंसा में मथुरा के बाबू हरिदासजी लिखते हैं कि इसके सेवन से एक हफ्ते में एक आदमी का वज़न चार पौंड बढ़ गया, दूसरे का चेहरा लाल, सुर्ख़ हो गया। भूपाल के वैद्यराज बालकृष्ण शर्मा ने ३५० रोगियों पर बरता और इसे अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर के संपादक श्रीछोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने गृह-चिकित्सा-पथ-प्रदर्शक में छापा है कि इतना प्रचंड, शीघ्र गुणकारी योग दूसरा नहीं देखा।

हमारा दावा है कि केवल ७ दिन के सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता नज़र आवेगा। २१ दिन में चेहरा लाल कश्मीरी सेब की तरह चमकने लगेगा। ४० दिन में नपुंसकता, निर्बलता दूर हो जाती है। स्त्रियों के हर प्रकार का प्रदर-रोग दूर हो गर्भधारण-शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता है। पाचन-क्रिया ठीक होती है। कफ, तिल्ली की खराबी, खाँसी, नज़ला, जुकाम, बदन दुखना, ख़ून का पतलापन, आँखों का पीलापन, कभी-कभी चिनगारी-से उड़ते नज़र आना, बार-बार थूक गिरना, दमा तथा हर तरह की कमज़ोरी तुरंत दूर कर नवजीवन संचार करता है। योग भली भाँति समझाकर लिखा है। फिर भी यदि आप न कर सकें, तो बनी बनाई, १६ आँच दी हुई ४० दिन की ८० मात्रा डाक-ख़र्च-सहित ५॥) में हम भेज देंगे। यदि कोई बात समझ में न आवे, तो जवाबी कार्ड डालकर उत्तर मँगा लें।

मँगाने का पता—वैद्यरत्न सत्यदेवजी, रूपविलास-कंपनी, नं० ३ कंचौसी, इटावा (यू०पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर चित्र, रेखा-चित्र और गुप्त भेदों-सहित

काम-कला-रहस्य

संस्कृत को छोड़कर हिंदी में आज तक कामशास्त्र के ग्रंथ की कमी-सी थी, इस कारण महर्षि वात्स्यायनप्रणीत कामसूत्र, रति-रहस्य, रति-मंजरी, अनंग-रंग आदि कामशास्त्र और अनेक संस्कृत-ग्रंथों को देखकर यह ग्रंथ लिखा है। इसी शास्त्र की ज्ञान-प्राप्ति की प्रबल वासना के कारण हज़ारों मनुष्य कपोल-कल्पित कोकशास्त्र के नाम से बिकनेवाली पुस्तकों को प्राप्त करके भी अतृप्त रह चुके हैं। इसको जानकर आप स्त्री-पुरुषों के पद्मिनी, चित्रिणी आदि जाति-भेद, स्वभाव और देह-तत्त्व के रहस्य-को जान सकते हैं। व्यभिचारिणी, सुशीला, कुलटा आदि की परीक्षा कर सकते हैं। आनंद-वर्द्धक उचित संयोग कर सकते हैं। स्त्री को प्रसन्न और वशीभूत रख सकते हैं। इसमें रात्रि-चर्या, शयन के नियम, कामनिवास, तिथि-चक्र-ज्ञान, चौरासी आसनों के चौरासी रेखा-चित्र और वर्णन (इस विषय का यथार्थ रहस्य-प्रकाशन), इसके सिवा गर्भाधान-संबंधी काम-कलाएँ, उत्तम संतानोत्पादक नियम, षट्-ऋतु-स्त्री-विहार, जल-क्रीड़ा-विचार, प्रति ऋतु के अनुकूल पर्वत, काश्मीर, सिंध, मगध आदि देशों की स्त्रियों के विधान; मुग्धा, ज्ञातयौवना, खंडिता आदि नायिका-भेद, बाला, तरुणी आदि संज्ञा-भेद, सोलह शृंगार, स्त्री के भाव जानने की बातें, वशीकरण-तंत्र, शीघ्रपतन-निवारक, वीर्यस्तंभक औषधि, नपुंसकता-नाशक, बल-वर्द्धक औषधि, तिल, स्त्री-रोग-निवारक औषधि आदि अनेक विषय निष्कपट वर्णित हैं। आर्ट-पेपर पर छपे हुए दो सुंदर चित्र और सादे काग़ज़ पर छपे हुए रेखा-चित्र लगे हुए हैं। पृष्ठ १०६। मूल्य पहले १।) था, अब १) है। डाक-व्यय ।-)

मुनीम

इसके द्वारा हिंदी जाननेवाला मनुष्य बही-खाते का हिसाब जानकर, अच्छा-खासा मुनीम बनकर प्रतिष्ठा के साथ ३०) मासिक की नौकरी कर सकता और व्यापार कर हज़ारों का लाभ उठा सकता है। पृष्ठ ६३। मूल्य पहले ।।) था, अब ।-) है। डाक-व्यय ।)

जीवन को सुखमय बनानेवाला

स्वस्थ दीर्घजीवन

इस पुस्तक में आयुर्वेदज्ञ ऋषियों और योरप के जगत्प्रसिद्ध विद्वान् डॉक्टरों के अनुभूत स्वास्थ्य-संबंधी उपदेश, उचित आहार-विहार, अद्भुत प्राणायाम, सरल व्यायाम, दीर्घायु प्राप्त करने के उपाय और बलवर्द्धक अपूर्व औषधियों के नुस्खे हैं। पृष्ठ १००; मूल्य पहले ।।-) था, अब ।।) है। डाक-महसूल ।)

सौंदर्य-साधन

इस पुस्तक में सर्वसौंदर्य का वर्णन डॉक्टरों के मत और वैद्यकशास्त्र के अनुसार किया है। सुंदरता उत्पन्न करनेवाले उपदेश, नियम और उपाय लिखे हैं। सुंदरता बढ़ानेवाले उबटन, लेप, पाउडर, केश-तैल, मिल्क, अंग-राग, साबुन, ख़िज़ाब आदि हैं। पृष्ठ १०४। मूल्य पहले ।।) था, अब ।-) है। डाक-व्यय ।)

स्वप्न-फल और अंगस्फुरण

(श्लोक, भाषा-टीका और चित्रों-सहित)

इसके द्वारा अपने तथा दूसरे के देखे हुए स्वप्नों का फल जान सकते और कह सकते हो। इसमें अनेक प्रकार के शुभ और अशुभ स्वप्नों की मीमांसा की गई है, और उनका फल भी कहा गया है तथा अशुभ स्वप्नों का दोष दूर करनेवाले दान, जप और स्तोत्र भी हैं। इससे आगे अंगों के फड़कने का फल बताया गया है। पृष्ठ ७२। मूल्य पहले ।।) था, अब ।-) है। डाक-व्यय ।)

तार विद्या-शिक्षक

इस पुस्तक में डैमी पर तार के देने और लेने की रीति, आवश्यक यंत्रों के चित्र तथा उन यंत्रों की जाँच करना, साफ़ करना, फ़िट करना और तारों के मिलाने का तरीक़ा हिंदी और अँगरेज़ी-भाषा में यथासंभव बड़ा अच्छा वर्णन किया है, जिसकी जानकारी सिगनेलर के लिये आवश्यक है। मूल्य ।।), डाक-व्यय ।)

तार सीखने की डैमी

मज़बूत, सुंदर। मूल्य प्रति डैमी १) मात्र, डाक-महसूल ।।)

पता--पं० रामचंद्र वैद्यशास्त्री, सुधावर्षक-प्रेस, नं० १, अलीगढ़ सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यथार्थ मू० ३) रुपया

इससमय १॥)रु०

(हिंदी-भाषा और चित्रों-सहित एकांत में पढ़ने-योग्य अपूर्व पुस्तक)

जिन योगों अर्थात् नुस्खों की तलाश में लोग वैद्यों, महात्माओं और तांत्रिकों की खुशामद किया करते हैं, और जैसी ओषधियों के वी० पी० पार्सल मँगाकर धन खर्च किया करते हैं, उनसे अच्छी, चमत्कारी ओषधियों और जड़ी-बूटियों के नुस्खे कई वर्ष की ढूँढ़-खोज के बाद इस पुस्तक में प्रकाशित किए हैं। इन्हें सेवन कर आनंद प्राप्त करें, चाहे प्रतिष्ठा के साथ धन कमावें।

प्रथम भाग में पुरुषों के लिये प्रमेह-नाशक और नपुंसकता-नाशक नुस्खे, वीर्य-स्तंभन के ऐसे नुस्खे, जिनमें नशीली दवा नहीं, खटाई न खाने तक वीर्य-स्तंभन रखनेवाला नुस्खा, दीपक देखने तक वीर्य-स्तंभन रखनेवाला नुस्खा, मुख में डाल रखने तक वीर्य-स्तंभन की गोली, पैर के तलुओं पर मल लेने पर ठंडे जल से पैर न धोने तक वीर्य-स्तंभन रखनेवाला नुस्खा, छोटी गुप्त इन्द्रिय को पुष्ट और दीर्घ बनानेवाले नुस्खे, काम-शक्ति को अधिक बढ़ानेवाले नुस्खे, स्त्री को शीघ्र द्रवित करनेवाले नुस्खे आदि। द्वितीय भाग में—स्त्रियों के लिये श्वेत-प्रदर व रक्त-प्रदर-नाशक नुस्खे, अशुद्ध मासिक ऋतु को खोलनेवाला योग, गुप्तांग को सिकोड़कर दृढ़ करनेवाले योग, बाल उड़ाने के नुस्खे, केश-वर्द्धक योग, पति-वशीकरण का नुस्खा, मुख की झाँई मिटानेवाला नुस्खा, वंध्या के गर्भ-स्थापन करनेवाले नुस्खे, कन्या ही होती हों, तो पुत्रकारक नुस्खे, स्त्री को सुंदर, सुगठित यौवनवाली बनानेवाले नुस्खे, गर्भ-रक्षा के नुस्खे, गर्भ रहने को रोकनेवाले नुस्खे आदि। एक-एक नुस्खा सौ-सौ रुपए को भी सस्ता है। बनाने की विधि, लगाने की रीति, खाने के अनुपान और गुण छपे हुए हैं। इस समय दोनों भागों की पूरी पुस्तक का मूल्य १॥) रुपया मात्र; डाक-व्यय ।≡)

पता—पं० रामचंद्र वैद्यशास्त्री, सुधावर्षक-प्रेस, नं० १, अलीगढ़-सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक नज़र इधर भी !

मैं अपनी ज़िंदगी की एक ऐसी बात बतलाता हूँ कि जिससे हरएक का फ़ायदा हो सकता है। मेरे पुत्र जयभगवान के पेट के दाहने भाग में १२ वर्ष से बहुत सख्त गोला था। मैंने बड़े-बड़े डॉक्टरों और वैद्यों से १२ वर्ष तक बराबर इलाज कराया, और अपनी ताक़त से बाहर रुपया ख़र्च किया, लेकिन उसकी हालत दिन-प्रतिदिन ख़राब ही होती गई, और आख़िर में डॉक्टरों की सलाह ऑपरेशन की हुई। मुझे ऑपरेशन से भय हुआ और मैंने लड़के के पेट का ऑपरेशन कराना नहीं चाहा। मैंने वैद्यराज शीतलप्रसाद जैन सब्ज़ीमंडी, मुज़फ़्फ़रनगर की तारीफ़ सुनी और उनके पास पहुँचा। लड़के को दिखलाया, सब हाल बतलाया और इलाज के लिये प्रार्थना की। उनके यहाँ जय-भगवान का इलाज ता० १२—२—४० को शुरू हुआ और ता० २०—५—४० को उसे बिलकुल आराम हो गया। वैद्यराजजी का इलाज देखकर मुझे ताज्जुब हुआ कि ऐसे ज़बरदस्त रोग को केवल सवा तीन महीने में सिर्फ़ ओषधि खिलाकर जड़ से नष्ट कर दिया और लड़के को किसी प्रकार की तकलीफ़ नहीं हुई। वैद्यराजजी के इलाज की तारीफ़ करने की ताक़त मुझमें नहीं है और न धन्यवाद के अतिरिक्त कोई शब्द ही।

मैंने देखा है कि असंख्य ऐसे रोगियों को वैद्यराजजी के इलाज से आराम होता है, जैसा कि निराश अपने लड़के की तरफ़ से मैं हो चुका था। मैं जनता से सिफ़ारिश करता हूँ कि वह वैद्यराज शीतलप्रसादजी जैन सब्ज़ी-मंडी, मुज़फ़्फ़रनगर के अनुभव से ज़रूर फ़ायदा उठावें, उनके पास पहुँचें या पत्र-व्यवहार करें।

निवेदक—

बाबूराम अग्रवाल

फ़र्म—**बाबूराम-जगदीशप्रसाद आढ़ती**

नई मंडी, मुज़फ़्फ़रनगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने किस भावना से प्रेरित होकर मेघदूत लिखा था, किंतु मेरा अनुमान है कि वह किसी राज्य में नौकर होंगे, और उन्हें छुट्टी न मिली होगी, तभी उनके कवि-हृदय में मेघ को दूत बनाकर अलकापुरी नहीं, तो काशमीर (जहाँ के वह रहनेवाले बतलाए जाते हैं) भेजने की कल्पना जाग्रत् हुई होगी।

मेरे आश्रयदाता स्वर्गीय हिज़हाइनेस राजर्षि सर विश्वनाथसिंहजू देव बड़े उदार थे, लेकिन छुट्टी देने में बड़े कृपण भी थे। और चीज़ें तो बिना माँगे ही मिल जाती थीं, क्योंकि मेरा संकल्प था कि सिवा छुट्टी के और कुछ न माँगूँगा, किंतु मौत की भाँति छुट्टी माँगे पर भी नहीं मिलती थी। नौकरी के स्वर्ण-पिंजर में बंद कीर-सी मेरी स्वच्छंद आत्मा विवशता से छटपटाया करती।

मेरे जीवन में वह अवस्था आ चुकी थी, जब क्षुद्र नदी की भाँति खल लोग बौरा उठते हैं, और उनके हृदय में वैभव और विलास की इच्छा होने लगती है। जलेसर के मकान के लिये थोड़ा क़र्ज़ा लिया था, वह अदा हो चुका था। बुंदेलखंड ऐसी फ़िज़ूलख़र्ची-प्रूफ़ जगह है कि वहाँ धन-संग्रह करने के लिये बेईमानी की भी ज़रूरत नहीं पड़ती। कुछ वणिक्-जाति की स्वाभाविक व्यवसाय-बुद्धि, कुछ स्त्री के आभूषण-प्रेम और कुछ कन्या के विवाह की दूरदर्शिता से मैंने पूरे पैंतालीस तोला सोना ख़रीद लिया था; चार-पाँच सौ रुपया भी पास-बुक में था। हृदय में जवानी की उमंग थी। जब छतरपुर में बहुत से अँगरेज़-दंपतियों को सैर के लिये आते देखता था, तब मैं भी सोचने लगता था कि मैंने ही कौन-से राम के बैल मारे हैं, जो इस सुख से वंचित रहूँ। महाराज के साथ बहुत सैर की थी, किंतु उसमें सपरिवार सैर का सुख और गौरव कहाँ? दूसरे की अधीनता में सुख का उपभोग आत्मभाव की तुष्टि नहीं करता। महाराज के साथ की सैर महाराज के लिये सैर थी, किंतु मेरे लिये घोर-कठोर कर्तव्य था। अस्तु।

ठाट-बाट के साथ सपरिवार बाहर जाने का सुअवसर देखने लगा। मेरठ से मेरी धर्मपत्नी की भतीजी की शादी का निमंत्रण आया। वह उपेक्षणीय न था। यद्यपि काम के नाम तो मैं फली भी न फोड़ता, तथापि मेरी उपस्थिति वहाँ अत्यंत वांछनीय थी।

छुट्टी के लिये खींच-तान होने लगी। महाराजा साहब के सभी कर्म उसी मुहूर्त के लिये रुके हुए-से जान पड़े।

नरेशों की चाकराधीनता, जिसके बल मैं अपना स्थान सुरक्षित समझा करता था, मुझे अखरने लगी। दीवान साहब पंडित सुखदेव-विहारी मिश्र के मेरे कार्य-भार को अपने ऊपर ले लेने का वचन देने पर (ऊँचे पदवाले नीचे पदवाले की एवज़ीदारी बहुत कम करते हैं, किंतु 'कभी नाव लढ़ी पर और कभी लढ़ी नाव पर' के न्याय से उन्होंने यह कार्य स्वीकार किया था) मुझे छुट्टी मिली।

मैं तो "अष्टकपाली दारिद्री जब चाले, तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्ध'' का माननेवाला था, किंतु महाराजा साहब सायत के उपासक थे। उन्होंने मेरे लिये भी सायत देखने का कष्ट किया। मेरे लिये चौथा चंद्रमा था, जो यात्रा के लिये अनिष्टकर समझा जाता है। लेकिन स्वतंत्रता के आवेश में चौथे चंद्रमा की बात तो क्या, आठवें चंद्रमा की बात न मानता। मैंने समझा, मेरे रोकने के लिये बहाना ढूँढ़ा गया है। मैं बालक तो न था, किंतु अवस्था के हिसाब से मैं महाराज के आगे बालक ही था। मेरे बाल-हठ के सामने महाराज का राजहठ न चला, क्योंकि मेरी धर्मपत्नीजी मायके जाने की प्रसन्नता में तिरिया-हठ का सहयोग दे रही थीं।

परमेश्वर के घर तक पहुँचने को अनेकों रास्ते हैं, किंतु छतरपुर से अपने घर जाने के दो ही रास्ते थे—एक सीधा आगरा होकर, और दूसरा कुछ फेरफार का, कानपुर होकर। आगरे का रास्ता 'घर की मुर्ग़ी' की तरह (मैं मुर्ग़ियाँ नहीं पालता हूँ)। आकर्षण-हीन हो गया था। नवीनता के उपासक के लिये जब "सैर कर दुनिया की ग़ाफ़िल, ज़िंदगानी फिर कहाँ? ज़िंदगानी गर रही, तो नौजवानी फिर कहाँ?" की उमंग हृत्सागर में विलोड़ित होने लगी, तो फिर नए मार्ग से जाने का मोह संवरण करना कठिन था। उस मार्ग के एक-एक लाभ बृहदाकार धारण कर मेरे सामने आने लगे। कानपुर के लिये महोबा होकर जाना होगा, आल्हा-ऊदल की वीर भूमि के दर्शन होंगे, इतिहास-प्रसिद्ध कीर्तिसागर देखने को मिलेगा। शायद यदि जाना चाहूँ, तो राम-पद-अंकित चित्रकूट की पुण्य भूमि में त्रयताप शमन करने का सुअवसर मिल जायगा, नहीं तो उधर के पावन समीर का एक-आध झोंका तो मिल ही जायगा। कानपुर में पाप-प्रक्षालिनी, कलिमल-विध्वंसिनी, पुण्यतोया भागीरथी के निर्मल सलिल में मज्जन और पान का अलभ्य लाभ मिलेगा। इससे भी बढ़कर एक और बात थी। वह यह कि कानपुर में एक सज्जन रहते थे, जिन पर मेरे चार हज़ार रुपयों की डिगरी थी, और जिसके इजरा कराने की क़ानूनी मियाद तीन चौथाई मेरे सौजन्य और दया-भाव के वश और एक चौथाई आलस्य के कारण जाती रही थी, किंतु मेरी समझ में इसकी नैतिक मियाद तब भी बाक़ी थी। उनका पता-ठिकाना तो इससे अधिक न मालूम था कि वह घी की दूकान करते हैं, किंतु चलते फिरते उनके दर्शन होने की दूरस्थ संभावना अवश्य थी। इस विचार में कुछ अधिक तत्त्व तो न था, किंतु अपने को धोका देने तथा अपनी फ़िज़ूल-ख़र्ची पर उपयोगिता का आवरण डालने के लिये यह ख़याल अच्छा था। उस मार्ग से जाने में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष-रूपी चारो पदार्थ मेरे करतल होने की संभावना थी। फिर क्या था? 'सब यानन तें श्रेष्ठ अति द्रुतगतिगामिनिकार' का आवाहन हुआ। महोबा की सड़क कुछ ख़राब थी। वैसे तो उधर जाने के लिये ड्राइवर लोग प्रायः आनाकानी किया करते थे, किंतु मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ उनका अफ़सर-मातहती का ही नहीं, वरन् श्रद्धा-भक्ति का भी संबंध होने के कारण चक्रपाणि ड्राइवर ने भी मना नहीं किया। मालूम नहीं, स्वयं विष्णु भगवान् ही मुझे काल के गर्त में लिए जा रहे थे। जाने के लिये मेरा असबाब भी इतना सुडौल बँधा था कि मुझे उस पर गर्व होने लगा। मैं भी अपनी निगाहों में बड़ा जँचने लगा। वक्रतुंड महाकाय का स्मरण कर मोटर पर सवार हुआ, और मारुत-तुल्य वेग से स्टेशन पहुँचा। स्टेशन पर सामान उतरा, और उसके साथ हम लोग भी उतरे। मेरे चाकरराज भी मेरे साथ थे। उन्होंने भोजनादि की सुविधा कर दी। रात को सवार होकर सुबह नौ बजे कानपुर पहुँचे। यद्यपि कानपुर में कई जान-पहचान के लोग थे, तथापि उन पर परिवार का भार डालना मैंने नीति-विरुद्ध समझा। सराय और होटल मुसलमानी और अँगरेज़ी आधिपत्य के चिह्न होने के कारण प्राचीनता के धार्मिक संस्कारों में पले हुए मनुष्य के लिये वर्ज्य-से थे। "येषां क्वापि गतिर्नास्ति" ऐसे अशरण लोगों को वाराणसी की भाँति शरण देनेवाली धर्मशाला का आश्रय लिया गया। धर्मशाला के चुनाव में ब्रह्म-वाक्य और डॉक्टर-वाक्य की भाँति ताँगेवाले का वाक्य प्रमाण माना गया।

आनंदराय की धर्मशाला में मनचाहा स्थान मिल गया। उन कमरों में घर का-सा वातावरण था। दीवारों पर किसी रमणी के कर-कमलों द्वारा अंकित मांगल्य-सूचक चित्रण से अनुमान होता था कि वहाँ पर किसी का विवाह भी हुआ था। भोजन करके कल्पना-शक्ति कुछ बढ़ जाती है। हाल ही में हम लोगों ने एक कहानी पढ़ी थी, जिसमें एक सज्जन की रेल में चोरी हो गई थी। चोरी के अनुसंधान में उन्हें एक महीना स्टेशन पर ही रहना पड़ा था, और उनकी लड़की का विवाह वहाँ के स्टेशन-मास्टर के लड़के से हो गया था। कहानी का चोरी का भाग तो छोड़ दिया, और सोचने लगे, हमारी लड़की के लिये सुयोग्य वर मिल जाय, तो उसका इसी धर्मशाला से विवाह कर सकते हैं। एक विवाह के लिये हमारे पास ट्रंक में पर्याप्त धन था। हम भूल गए थे, दीवार के भी कान हुआ करते हैं। धन का अस्तित्व बहुत-सी बातों को भुला देता है, फिर यह तो ज़रा-सी बात थी। हम लोग शृंगारियों और व्यसनियों की भाँति शाम की प्रतीक्षा करने लगे। पाँच बजते ही ताँगा मँगाया गया। एक ताँगे के लिये हम लोगों की संख्या कुछ अधिक थी; दूसरा ताँगा मँगाया गया, उसके लिये हम लोगों की संख्या कुछ कम थी। सोचा, सुख-दुख के साथी चाकर को भी सैर के लाभ से क्यों वंचित रक्खा जाय। आख़िर ताँगे में जगह छोड़ने की कौन-सी बुद्धिमानी है! उस समय मुझसे कोई यह कहनेवाला न था—"अल्पस्य हेतोर्बहु-हातुमिच्छन विचारमूढः प्रतिभासित्वं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मे ❀।" नौकरी की जी उबानेवाली कार्य-प्रणाली से छुट्टी पाने की प्रसन्नता, स्वतंत्रता के आवेश और सैर के शौक़ में उन साधारण बातों को भी भूल गया, जिनका मैं सदा ध्यान रखता था। अपने पसीने की कमाई के घनीभूत सार, मेरे लिये कोहनूर से भी नयनाभिराम और मूल्यवान् पैंतालीस तोले के स्वर्ण-खंड को मैं जी-जान से प्यारा तो नहीं, लेकिन किसी परम गोपनीय रहस्य की भाँति सुरक्षित रखता था। छतरपुर में उसके कारण घर सूना नहीं छोड़ता था। जिस बक्स में वह रक्खा जाता था, उसका स्पर्श मेरे सर्वतोभद्र और सर्वतोगति विश्वस्त चाकर (उसका नाम भरोसा था) के लिये भी वर्ज्य था। हाँ, तो उस द्वादशवर्षीय चाकरी-वारिधि की अमूल्य मणि की रक्षा के लिये नौकर भी न छोड़ा। मेरी धर्मपत्नी के मन में शंका की क्षीण रेखा आई थी, वह भी बातों के पारावार में जल की चल लहर और खल की प्रीति की भाँति स्थिर न रह सकी। मेरे कमरे से एक कमरा मिला हुआ था। उसके बीच के किवाड़ों में (देवीजी पर अपनी कर्तव्यशीलता की धाक जमाने के लिये) ताला डाल दिया था। बाहर भी मज़बूत ताला डाल दिया। ख़ज़ाने के प्रहरी की भाँति दो बार उसे खींचकर देख लिया था। इससे अधिक और सावधानी क्या? मेरे कमरे के दोनो ओर कुछ सज्जन, जो दुग्ध-फेन, चंद्र-ज्योत्स्ना और महात्मा गांधी के चरित्र तथा यश से भी उज्ज्वल, चंद्रमा के किरण-जाल से भी हलके और झीने तथा गंगाजी की प्रातःसमीर-प्रेरित लघु-लघु लहरियों से उर्मिल, (चुन्नरदार) सफ़ेद वाइल के कुर्ते पहने थे, ठहरे हुए थे। उनके गले में चमकती-दमकती स्वर्ण-शृंखलाएँ महेश के कंठ-काल की भाँति शोभा दे रही थीं। उनका अस्तित्व रक्षा की गारंटी था। फिर मैं आशावादी था, और मानव-जाति की श्रेष्ठता में विश्वास करता था। मेरे मन में कोई शंका क्यों स्थान पाती?

हम लोग सैर को चले। 'क्या देखें और क्या न देखें' के संबंध में भी ताँगेवालों की बात को आप्त वाक्य मानकर, उनकी माया-रूपिणी इच्छा के वशवर्ती होकर यंत्रारूढ़ की भाँति घूमने लगे। जिसे उन्होंने कह दिया—"अवसि देखिए, देखन जोगू", वही हमारे लिये परम दर्शनीय बन गया। उनकी रुचि लोक-रुचि की प्रतीक थी।

जब कभी मैं ताँगा घंटों के हिसाब से किराए पर करता हूँ, तभी मुझे Time is money (समय ही धन है) की सत्यता में विश्वास होता है, किंतु उस समय, जब रुपए की परवा न थी, तो उसके पर्याय समय की कब चिंता होती? मैं तो अनंत काल तक घूमता ही रहता (ताँगेवाले का तो एक-एक क्षण दुधार गाय बन रहा था), किंतु मेरी छोटी बालिका ने रुदन की ठानी। वह

❀ अर्थात् थोड़े लाभ के लिये बहुत छोड़नेवाला तो मुझे विचार-हीन मालूम पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय का मूल्य जानती थी। उसके सोने का समय हो गया था। हम लोग धर्मशाला लौटे। असबाब पर एक उड़ती हुई निगाह डालकर थके-माँदे कमरों के आगे सो रहे। बड़ी स्वस्थ निद्रा आई। सुबह उठे, और गंगा-स्नान के लिये प्रस्थान करनेवाले ही थे कि ख़याल आया कि कुछ रुपया और ले लें, लौटते समय बाज़ार से कुछ सौदा-पत्ता भी कर लेंगे। देवीजी एक साड़ी ख़रीदना चाहती थीं। बक्स का ताला खुला था। सोचा, ग़लती से खुला रह गया होगा। रुपयों की थैली की तरफ़ हाथ डाला गया, वह ग़ायब! सुनहली ज़ेवर के डब्बों की तरफ़ हाथ बढ़ाया, तो वह भी नदारद! सोने के ढेले की गंध भी न मिली। यदि कपूर का ढेला होता, तो कुछ दिनों कपड़ों में तो उसकी गंध रहती। देवीजी का चेहरा फ़क़ पड़ गया। अब क्या करोगे, चोरी हो गई! आश्चर्य-मुद्रा धारण कर मैंने भी चोरी शब्द की प्रतिध्वनि कर दी। प्रकृतिस्थ होने पर देवीजी को धीरज बँधाते हुए कहा—"अभी पुलिस को लाता हूँ। ऐसी बात नहीं कि पता न लगे।"

मैं उन्हें वहीं छोड़कर पूछता-पाछता थाने की ओर लपका। वहाँ जिधर देखूँ, वहीं सन्नाटा। दारोग़ाजी कहाँ हैं? एक बम-केस की तफ़तीश में गए हैं। छोटे दारोग़ाजी कहाँ हैं? कोर्ट साहब के यहाँ गए हैं। कोई मुहर्रिर, मुंशी, ख़वांदा कांस्टिबिल-रिपोर्ट लिखनेवाला न मिला। मैं झुँझलाकर कोतवाली की ओर जानेवाला ही था कि छोटे दारोग़ाजी लौट आए। उनसे मैंने अपना दुखड़ा रोया। उन्होंने सहृदयता-पूर्वक सुनने के बजाय मुझ पर अविश्वास प्रकट किया। इतना सोना कहाँ से आया? रियासत की नौकरी का नाम लिया, तो भेद-भरी दृष्टि से कहने लगे—"तभी! आपको क्या परवा है! छोड़कर चल दिए सैर करने!" मुझ-सा निरभिमान पुरुष भी ऐसी अपमान-जनक बातचीत न सुन सका। मैंने ज़रा कड़े स्वर से कहा—"यदि आपको रिपोर्ट लिखना हो, तो लिखिए, नहीं मैं जाता हूँ। मेरे पास फ़िज़ूल वक़्त नहीं।" वह मेरे साथ धर्मशाला गए। दो-एक आदमियों के बयान लिए, एक-आध जगह सामान इधर से उधर कराया, गालियों का कोष ख़ाली किया; बस, तफ़तीश की ख़ानापूरी हो गई। मैं डी० एस० पी० के यहाँ गया। छतरपुर की प्राइवेट सेक्रेटरीशिप के कार्ड की चोरी नहीं हुई थी। उसके बल पर डी० एस० पी० के बँगले में तुरंत प्रवेश मिल गया। उसने बात तो सहृदयता से सुनी, लेकिन किसी विशेष अफ़सर को तैनात करने से इनकार कर दिया। राजनीतिक जुर्मों (Political crimes) की छान-बीन में अधिकांश अफ़सर व्यस्त थे। बँगले से निकलते ही चपरासी ने इनाम के लिये सलाम किया। बड़ा ग़ुस्सा आया। लेकिन करता भी क्या। हारे ज्वारी की भाँति ताँगे पर आ बैठा।

दूसरे दिन नौ बजे से तीन बजे तक इंतज़ार करने के बाद कोतवाल साहब के दर्शन हुए। बड़ी दीनता धारण करने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने एक नवयुवक इंस्पेक्टर को भेजा। उनकी सलाह से मेरे पड़ोस के सफ़ेद-पोश लोगों की कलकत्ते के पते पर तलाशी के लिये वहाँ के सुपरिंटेंडेंट महोदय को तार दिया गया। वहाँ से जवाब आया कि कलकत्ते में वह गली ही नहीं। मैं अपना-सा मुँह लेकर रह गया।

छतरपुर से माल ख़रीदने आए हुए पुरोहित-जी ने परिस्थिति का अध्ययन कर मुझे बतलाया कि चोरी किस तरह हुई होगी। सींक की ओट पहाड़ की बात निकली। मेरे कमरे से मिले हुए कमरे के बीच में जो किवाड़ थे, उनमें देशी तरह की साँकल थी। उसके कुंडे के छोर पीछे की ओर मुड़े थे। वे नरम लबिया के थे; सहज ही में पीछे से सीधे किए जा सकते थे। कुंडों को पीछे ठोककर किंवाड़ खोलने में विशेष बुद्धिमानी की ज़रूरत न थी, उस काम को मैं भी कर सकता था। मेरा अज्ञान-तिमिरांध दूर हो गया। बेचारा ताला क्या करता? चोरी भी एक कला है।

दो दिन की छान-बीन में यह पता चला कि उस रोज़ एक ठगों का दल कानपुर आया था। उसने जुग्गीलाल-कमलापति के यहाँ, कलकत्ते की दूकान से, यह तार दिलवाया था कि उस ग़ोल के किसी व्यक्ति-विशेष को ५,०००) दे दिए जायँ। उनका मुनीम उस झाँसे में नहीं आया। वार ख़ाली गया। वह तो बच गए, मैं ग़रीब मारा गया। ५,०००) नहीं, तो २,५००) से कुछ ज्यादा हाथ लग गए। मृच्छकटिक के नायक चारुदत्त की भाँति मैंने भी संतोष कर लिया कि चोर हमारे घर से निराश नहीं गया। उसकी विद्या सफल हुई। वह ज़रूर सायत देखकर चला होगा।

तीन रोज़ की इक्का-ताँगा की दौड़-धूप और तारबर्क़ी में मेरी जेब का भार आधा रह गया, और जब जलेसर जाने-मात्र का किराया मेरे पास रह गया, तो दो दिन का स्थगित गंगा-स्नान का कार्य पूरा कर मैंने जलेसर का टिकट कटाया। जलेसर से मेरठ आया। वहाँ मेरी देवीजी के भाई साहब ने हम लोगों को एक कमरा दिया, उसके लिये एक छ लिवर का मज़बूत ताला भी दिया। ताला देखकर मुझे भाग्य की विडंबना पर हँसी आई। जब कुछ माल ही न रहा, तब ताले की क्या ज़रूरत?

मालूम नहीं, मेरी चोरी क्यों हुई? पूर्वजन्म के पापों के उदय होने से या इस जन्म की ग़फ़लत के कारण? जो कुछ भी हो, कनक से सौगुनी कनक की मादकता का नशा हिरन हो गया। छुट्टी लेने और चोरी होने का यही फल हुआ कि मैं अपना काम-काज रुचि और तन्मयता के साथ करने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे कच्चे साबुन नहीं चाहिये—मैं सनलाइट ही इस्तेमाल करती हूँ ?

पहले मैं सस्ते साबुन लगाती थी, पर एक दिन मैंने अपनी सहेली से पूछा, की तुम अपने सुफेद कपडों को इतने सुफेद और चमकीले कैसे रखती हो ? तो वह बोली सनलाइट साबुनसे ! यह सनलाइट साबुन की अधिक झाग का ही गुण है उसके कपडे इतने अदभुत और साफ लगते हैं !

बस तभी से मैंने सस्ते साबुन छोड दिये हैं ! मैं सनलाइट ही लगाती हूं अब सभी हमारे बेदाग और साफ कपडों की तारीफ करते हैं !

सनलाइट साबुन

हिन्दुस्तान में ही विशुद्ध वनस्पति तेलो से बनता है ।

S. 18-50 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कोई
बुद्धिमानी की बात—

नहीं है कि अब तक आप जिस पत्रिका में विज्ञापन छपाते आए हों, उसी में अब भी पुरानी लकीर पकड़े हुए विज्ञापन बराबर छपाते चले जायँ। जब कि सुधा एक ऐसी पत्रिका मौजूद है, जिसमें जिसने एक बार विज्ञापन छपाया, उसने बहुत अधिक लाभ उठाया और फिर सर्वदा के लिये सुधा का स्थायी विज्ञापनदाता बन गया, साथ ही सुधा की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। अब तक आप अँधेरे ही में रहे, जिससे अमूल्य अवसर खो चुके! खैर, अब भी चेतने का समय है। आप अब भी

सुधा के

आगले अंक

से विज्ञापन छपाकर अपूर्व लाभ उठाने से न चूकिए। नहीं तो मन की मन ही में रह जायगी, और अंत में पछताना ही हाथ लगेगा।

आपने बहुत धोखा खाया
आगे के लिये अब चेत जाइए!

मैनेजर सुधा, लखनऊ

बिहारी-सुधा

सुप्रसिद्ध काव्य-मर्मज्ञ, पूज्य मिश्रबंधुओं ने जैसे महाकवि देव की सर्वोत्तम कविताओं का संग्रह देव-सुधा के नाम से तैयार किया है, वैसे ही महाकवि बिहारी के मर्मस्पर्शी दोहों का भी किया है। दोनो संग्रहों को ख़रीदकर देखिए कि किस कवि में अधिक प्रतिभा थी—मुक्तक काव्य-रचयिताओं में, हिंदी-संसार में, कौन सर्वश्रेष्ठ ठहरता है! छप रही है। मूल्य सादी का ॥), सजिल्द का १) होगा, ऐसा अनुमान है।

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फैंसी रिस्टवाचिज़ बिलकुल मुफ़्त !

बिलकुल मुफ़्त !

मुफ़्त !!

बिलकुल मुफ़्त !!!

अमेरिकन

६ फ़ायर

वाला

रिवालवर

न्यू माडल

१९४०

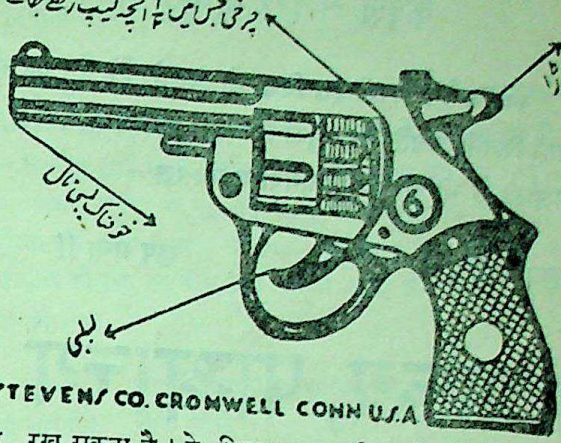

जिसे हरएक पुरुष बग़ैर लाइसंस रख सकता है। ये रिवालवर अभी-अभी अमेरिका से तैयार होकर आए हैं, जिनमें ख़ूबी यह है कि असली रिवालवर की भाँति इनमें कारतूस रखने की चरख़ी बनी हुई है, और इनके अंदर ६ ख़ाने हैं। जिनमें ६ कारतूस आ जाते हैं। घोड़ा दाबने से असली रिवालवर की भाँति चर्ख़ी ख़ुद-बख़ुद घूमती है और कारतूस छूटने की इस ज़ोर से आवाज़ आती है कि चोर, डाकू, ख़ूँख़्वार जानवर कोसों दूर भाग जाते हैं। जानोमाल की रक्षा के लिये इससे बढ़िया आपको कोई रिवालवर नहीं मिलेगा। इसका वज़न १५ औंस और लंबाई ९" है। मूल्य ४॥) मय १२५ कारतूस। ज़्यादा ३) के १०००) सुंदर पेटी मय खोल १॥) तेल की शीशी ।=) डाक-ख़र्च अलग। तीन रिवालवर एक साथ मँगानेवाले को डाक-ख़र्च माफ़। हरएक रिवालर के ख़रीदार को दो अदद सदा समानरूप से काम देने की गारंटीवाली फैंसी स्यूट रिस्टवाच मय सुंदर स्टेप (फीता) के बिलकुल मुफ़्त दी जायँगी।

मँगाने का असली पता—

अमेरिकन पिस्तौल-कंपनी, पोस्ट-बॉक्स नं० २७ (S. M. L. 100) अमृतसर Amritsar.

भटकने की ज़रूरत नहीं !

अगर आपको अमृतसर या पंजाब की किसी वस्तु (पुस्तकें, तस्वीरें, कृपाणें, तलवारें, कुल्हाड़ियाँ, चक्कर, तीर, कंघे, कंघियाँ या अमृतसरी सुगात, पापड़, बड़ीयाँ, नाले व हाथी-दाँत के खिलौने आदि की ज़रूरत हो, तो हमें लिखें—ज्ञाणी गुरुचरणसिंह साक्षी, मैनेजर—

वीर-पुस्तक-प्रकाशक-कंपनी, अमृतसर (पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्यों के मुक़ाबिले में डॉक्टर किस बात में नहीं हारे?

केवल सर्जरी अर्थात् शल्य-शालाक्य-विषय में

क्योंकि वैद्य अपनी इस विद्या को बिसारे बैठे हैं। यह भूल ही गए कि यह शास्त्र भी हमारे यहाँ कितनी उन्नति कर चुका है, उसी प्राचीन शल्यशास्त्र का अति सरल वर्णन और नवीन प्रणाली से भी परिचय दिलानेवाला ग्रंथ-रत्न—

छप गया ! छप गया !! छप गया !!!

प्राच्य, पाश्चात्त्य शल्य-तंत्र

इस ग्रंथ-रत्न में शल्य के भेद, लक्षण, उपाय, व्रणों के भेद, रक्षा और उत्तमोत्तम उपचार, उनके शोथ-निवारण, स्वदेशी टिंचर, आइडोफ़ार्म, स्वदेशी क्लोरोफ़ार्म आदि शल्य-विषयक अनुभूत डॉक्टरी दवाओं के मुक़ाबिले की ओषधियाँ शास्त्र में, पट्टी बाँधने के तरीक़े, व्रण के ६० उपक्रमोपचार शोधन, प्रत्येक प्रकार के व्रण, आघातज, विषज, आदृष्टि, किंचित् आदि-आदि सभी घाव, रक्तस्राव, भग्न अस्थि भग्न, अंगच्छेद, आंतरिक अंगों के व्रण, अर्बुद, विद्रधि, कांडभग्न, मोच छेदन, भेदन, बिम्लीपन पाचन, रक्तमोक्षण, स्नेहन, लेखन, एषण, आहारण, सीवन, पीड़न, निर्वाचन, क्रोधन, अवसादन, क्षारकर्म, लेपन-पोषण, बंधनादि कहाँ तक कहें, सर्व प्रकार के व्रणोपचार की प्राच्य-पाश्चात्त्य मतानुसार विशद व्याख्या सहित समस्त सफल क्रियाएँ दी हैं। व्रण बंधनों के अनेकों भेद, उपयोग, विशेषताएँ और शल्य-कर्म में आनेवाले अनेक शास्त्र शलाकाएँ, कत्तरिका, कुशपत्र, कूर्चल, वीक्षण यंत्र, कतनक, संदेश, स्वस्तिक आदि यंत्रों का मनोमोदक सचित्र वर्णन और उपयोग एवं शास्त्र-कर्म जौकाओं का प्रयोग और भेद सभी भली प्रकार समझाए गए हैं, हम दावे के साथ कहते हैं कि यह ग्रंथ आपकी आयुर्वेद-विषयक अन्य आवश्यकताओं में सबसे अधिक आवश्यक है। यह ग्रंथ आपके पास पहुँचते-पहुँचते आपके कार्य की कई गुना अधिक शोभा बढ़ा देगा। छपकर तैयार होते ही विद्यालयों में छात्रों तथा वैद्यों ने मँगा लिया, शीघ्रता करिए, अन्यथा दूसरी बार छपने की बाट जोहनी पड़ेगी।

मूल्य प्राच्य शल्य-तंत्र २॥), पाश्चात्त्य शल्य-तंत्र १॥) दोनो भाग एक साथ मँगाने पर ३॥) में देंगे। डाक-खर्च ।॥) अलग।

मिलने का पता—मैनेजर 'राकेश'

बरालोकपुर, इटावा (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय राजनीति और मुसलमान

[माननीय राजा श्रीयुवराजदत्तसिंह, मेंबर कौंसिल ऑफ़ स्टेट]

(राजा साहब अवध की दो प्रमुख रियासतों—ओयल और कैमहरा—के अधिपति हैं, और अखिल-भारतीय क्षत्रिय-महासभा के प्रधान मंत्री। आप मातृभूमि और मातृभाषा के परम प्रेमी और सच्चे क्षत्रिय हैं। हम हमेशा आपसे हिंदी में कुछ लिखने का अनुरोध करते रहे हैं। हमें हर्ष है, आपने इस ओर क़दम बढ़ाया है। इस लेख की सब बातों से चाहे कोई सहमत न हो, पर यह तय है कि यह विचारणीय विषय है। वीर क्षत्रिय-जाति को संगठित होकर राष्ट्रोत्थान में हाथ बँटाना चाहिए। यही समय है। अब नहीं, तो फिर कभी नहीं। भारतीय साहित्य और संस्कृति की रक्षा का काम सदा क्षत्रिय करते आए हैं, और अब भी उन्हें यह काम करना पड़ेगा। —सुधा-संपादक)

मुसलमान के लिये यह समझना सबसे कठिन है कि वह भारतीय है। और, जब तक वह यह नहीं समझता, तब तक भारतीय राजनीति उसके लिये पहेली ही रहेगी। वह यह नहीं भूल पाता कि मैं एक दूसरे देश से आया हूँ, मेरा धर्म दूसरा है, और मैं काफ़िरों पर शासन करने के लिये पैदा हुआ हूँ। वास्तव में जितने मुसलमान हिंदोस्तान में हैं, वे सब अरब से ही नहीं आए, उनमें बहुत-से यहीं के लोगों के धर्म-परिवर्तन से बने। लेकिन धर्म का अर्थ उन्होंने यही समझा कि हम जिस राष्ट्र में पैदा हुए हैं, जिस देश की जल-वायु से पले हैं, उसी के प्रति विद्रोह करें, एक संगठित अनाचार द्वारा हम अन्य मतावलंबियों पर अपना आतंक जमाए रक्खें। कांग्रेस के उत्थान के साथ-साथ मुसलमानों ने जो-जो राजनीति बरती, उससे यह स्पष्ट है कि उन्होंने इस देश को अपना देश नहीं समझा। उनकी आँखें हमेशा मुस्लिम राष्ट्रों की ओर लगी रहीं। वे सदा इस कल्पना में डूबे रहे कि हम किसी समय हिंदोस्तान के शासक थे, और हिंदोस्तान का शासन फिर हमारे ही हाथों में आना चाहिए।

कांग्रेस ने भारत की राजनीति में मुसलमानों का महत्त्व बहुत कुछ बढ़ाया है। महात्मा गांधी ने यह शर्त रख दी कि जब तक हिंदू-मुस्लिम-एकता न होगी, तब तक स्वराज्य न मिलेगा, मानो हिंदू-मुसलमान एक दूसरे का गला काटने को तैयार हों, और अगर स्वराज्य मिलने के पहले उनमें समझौता न हुआ, तो आपस में जूझ मरेंगे। इसका अर्थ यह हुआ कि इस समय जो हिंदू-मुसलमान आपस में नहीं जूझ मरते, तो इसलिये कि उनके सिर पर ब्रिटिश शासन की तलवार है। इस तरह कांग्रेस ने हिंदू-मुस्लिम-फूट और ब्रिटिश शासन की आवश्यकता का अच्छा-ख़ासा प्रचार किया है। वास्तव में मुसलमान भारत में अल्पसंख्यक हैं, वे राष्ट्र की एकता में लाख चेष्टा करके भी बाधक नहीं बन सकते। देश के बहुसंख्यक जन जब राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता के उपासक हैं, तब मुट्ठी-भर देश-द्रोहियों की क्या सामर्थ्य है, जो राष्ट्रीय प्रगति में बाधा दे सकें। देश पर पहले भी कभी मुसलमानों का एकच्छत्र शासन नहीं रहा। हिंदोस्तान के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जितने भी भाग पर, जब भी, इन्होंने शासन किया, तब क्षत्रियों की सहायता से। औरंगज़ेब ने सारे भारत पर अपना साम्राज्य फैलाना चाहा, और क्षत्रियों से वैर ठान लिया। उसकी नीति का परिणाम इतिहास में स्पष्ट लिखा है। हिंदुओं की इच्छा के विरुद्ध शासन करने की चेष्टा करने पर उसके साम्राज्य का ही ध्वंस हो गया, और दक्षिण से लेकर दिल्ली तक हिंदू-राज्य फैल गया। जब मुसलमानों का साम्राज्य पूर्ण वैभव पर था, और वे सब तरह से शक्तिशाली थे, तब तो राष्ट्र की संगठित शक्ति के सामने वे ठहर ही न सके, अब की तो बात ही दूसरी है। लेकिन कांग्रेस ने उन्हें सिर पर चढ़ा रक्खा है। कांग्रेस की नीति का परिणाम भी स्पष्ट है। जैसे-जैसे कांग्रेस उनकी माँगें पूरी करती जाती है, वैसे ही, सुरसा के मुख की तरह, उनकी माँगें भी बढ़ती जाती हैं, और अंत में वे देश के बँटवारा करने की माँग करने लगे हैं।

माननीय राजा श्रीयुवराजदत्तसिंह

सन् २० में कांग्रेस ने मुसलमानों से समझौता करने की कोशिश की थी। उस समय देश में एक राष्ट्रीय आंदोलन चल रहा था, लेकिन हिंदू - मुस्लिम-समझौते का आधार राष्ट्रीयता न था, वरन् तुर्किस्तान था। तुर्किस्तान और इंगलैंड में वैमनस्य था, इसलिये भारतीय मुसलमान भी अँगरेज़ों के विरुद्ध विद्रोह करने पर तुल गए। यह केवल उनका धार्मिक अंध-विश्वास था, जो इस प्रकार उन्हें तुर्किस्तान के मुसलमानों से सहानुभूति करने को प्रेरित कर रहा था। ग्रीस का जो भाग तुर्किस्तान लेना चाहता था, वह उचित था या अनुचित, इस पर किसी ने विचार करना आवश्यक नहीं समझा। तुर्किस्तान की इस माँग को महात्मा गांधी ने हिंदोस्तान में हिंदू-मुस्लिम-एकता का आधार बनाया। जब महात्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधी समझते थे कि मुसलमान कांग्रेस से सहयोग कर राष्ट्रीय शक्ति बढ़ा रहे हैं, तब मुसलमान नेता उससे अनुचित लाभ उठाकर अपना उल्लू सीधा कर रहे थे। हिंदोस्तान के आंदोलन से तुर्किस्तान की समस्या तो हल हो गई, लेकिन हिंदोस्तान की समस्या ज्यों-की-त्यों बनी रही, और उसी के साथ हिंदू-मुस्लिम-एकता का स्वप्न-प्रासाद भी ढह गया। पहले यदि हिंदू-मुस्लिम-समस्या नहीं थी, तो अब ज़रूर उठ खड़ी हुई है। वे ही अलीभाई, जो पहले देश के सबसे बड़े शुभ-चिंतक थे, अब डटकर संकीर्ण सांप्रदायिकता का प्रचार करने लगे। चारो तरफ़ मुसलमानों ने दंगे करने शुरू किए, और मुसलमान गुंडों द्वारा बहुत-से हिंदू, जो ऐसे उपद्रव के लिये तैयार न थे, मारे गए। मुसलमान-राजनीति का यह एक बहुत सुंदर उदाहरण है। पहले भीतर घुसकर मैत्री करना, फिर विश्वासघात करके छुरी चलाना। भारतीय इतिहास में मुसलमानों के लिये यह एक नई बात न थी। अलाउद्दीन ख़िलजी ने इसी तरह चित्तौर लिया था। वही विश्वासघात, सन् २३ और २४ में, मुसलमानों ने कांग्रेस के साथ किया। लेकिन अब भी कांग्रेसवालों की आँखें नहीं खुलीं। कांग्रेस मुसलमानों से मैत्री करने के फेर में अब भी राष्ट्रीयता का गला घोटने से नहीं हिचकती।

तमाशा यह है कि पं० जवाहरलाल नेहरू-जैसे कांग्रेस के नेता यह भी कहते जाते हैं कि देश में हिंदू-मुस्लिम-समस्या - नामक कोई चीज़ नहीं। देश की जो भी समस्याएँ हैं, वे आर्थिक और राजनीतिक हैं। फिर न-मालूम क्यों दूसरी तरफ़ हिंदू-मुस्लिम-एकता के लिये चेष्टा करना भी प्रत्येक कांग्रेस-नेता का कर्तव्य समझा जाता है। यह मानी बात है कि अगर एक आदमी से हम बार-बार यही कहेंगे कि बिना तुमसे दोस्ती किए हम इस घर में रह नहीं सकते, तो हमारी निर्बलता से लाभ उठाकर वह शेर हो जायगा। पहले चाहे वह दोस्त बनकर रह भी लेता, लेकिन अब तो उसका दिमाग़ आसमान पर चढ़ गया है। कहाँ पहले साथ रहने की बात थी, और कहाँ अब वे घर में विभाजन के लिये ही कटिबद्ध हैं। और, अवश्य वे एक दिन हमें घर से निकाल देने की भी धमकी देने लगेंगे। कांग्रेस का नेतृत्व इतना दब्बू और पुरुषार्थ-हीन है कि उसे अपने ऊपर भरोसा ही नहीं होता। राष्ट्र-निर्माण के लिये वह देश-द्रोहियों का सहयोग चाहता है। राष्ट्र की नींव हिंदुओं के रक्त से सींचकर वह मुसलमान-साम्राज्य का प्रासाद बनाने पर तुला हुआ है। जहाँ हिंदुओं के हित की बात आती है, वहाँ पं० जवाहरलाल नेहरू कहते हैं कि हिंदू-मुस्लिम-समस्या-नामक कोई चीज़ ही नहीं, लेकिन यदि मुसलमानों की समस्या होती है, तो वहाँ मुस्लिम सांप्रदायिकता भी राष्ट्रीयता बन जाती है। काश्मीर में शेख़ अब्दुल्ला ने एक मुसलमानों का आंदोलन चलाया है। नेहरूजी ने उसे राष्ट्रीय आंदोलन कहना शुरू किया, लेकिन जब उसकी सांप्रदायिकता अस्वीकार न कर सके, तब यह कहा कि काश्मीर में मुसलमानों के बहुसंख्यक होने के कारण वहाँ के आंदोलन का सांप्रदायिक होना अनिवार्य है। वहाँ के मुसलमानों की सांप्रदायिकता से नेहरूजी को सहानुभूति है। लेकिन जब हैदराबाद में हिंदुओं का सत्याग्रह चल रहा था, तब उनकी वह सहानुभूति हवा में लोप हो गई थी। हिंदू-मुस्लिम-समस्या तब तक नहीं सुलझ सकती, जब तक देश का नेतृत्व कांग्रेस के हाथ में रहेगा। अपनी निर्बलता के कारण इस नेतृत्व ने इस समस्या को इतना बढ़ा-चढ़ा दिया है, और जब तक देश में एक सबल नेतृत्व का अभाव रहेगा, तब तक यह समस्या भी तिल का ताड़ बनी रहेगी!

आजकल हमें मुसलमानों में बहुत-से दल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखाई देते हैं। बहुत-से लोग यह देखकर प्रसन्न होते हैं कि राष्ट्रीयता के विरोधियों में फूट पड़ गई है। वे यह भूल जाते हैं कि मुसलमानों में लाख मतभेद पड़ने पर भी उनके मुस्लिमपन पर धक्का नहीं लगता। कांग्रेस के मुसलमानों को ही लीजिए। मौलाना आज़ाद ने अपने एक वक्तव्य में कहा था कि कांग्रेसी हिंदुओं से हमारा भी मतभेद है, लेकिन उस पर समझौता करने के लिये अभी समय नहीं। इससे मालूम होता है, कांग्रेस तक के मुसलमान भी अभी हिंदुओं से समझौता नहीं कर सके। और, कितने आश्चर्य की बात है कि ये ही कांग्रेस के मुसलमान मुस्लिम-लीग के साथ समझौता करने को अग्रसर होते हैं। राष्ट्रपति की राष्ट्रीयता का यह हाल है कि कांग्रेसी हिंदुओं से अब भी उनके मतभेद बाक़ी हैं। हम पर ऐसा कहने में कांग्रेस-विरोधी होने का दोषारोपण किया जा सकता है। पर संयुक्त प्रांत के कांग्रेसी प्रधान मंत्री श्रीयुत गोविंदवल्लभ पंत के प्रमुख पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी तथा इस प्रांत के अग्रगण्य कांग्रेसी नेता श्रीवेंकटेशनारायणजी तिवारी ने दबी ज़बान से इसी आशय की बातें कही हैं। जुलाई की 'सरस्वती' में, एक लेख में, उन्होंने लिखा है—"इस संबंध में हम अपना खेद प्रकट किए बिना नहीं रह सकते कि रामगढ़ में होनेवाले कांग्रेस-अधिवेशन में कांग्रेस के सभापति सम्मानास्पद मौलाना अबुल-कलाम आज़ाद ने मुस्लिम-संस्कृति की महत्ता के विषय में जो कुछ कहा, उसे पढ़ने से मुसलमान-संस्कृति की विभिन्नता की भावना को प्रोत्साहन मिलने की अधिक संभावना है। हमको अचरज है कि राष्ट्रवादी मौलाना ने इस तरह की बातें कैसे कहीं। मौलाना बहुश्रुत हैं, और उनका दृष्टिकोण दार्शनिक। यदि मौलाना साहब भी इस तरह की निर्मूल बातें सही मानकर उनका प्रचार कर सकते हैं, तो यह कौन अचरज की बात है कि हमारे अनपढ़ मुसलमान भाई इन मौलाना साहब की बात को लेकर देश में सांप्रदायिक मनमुटाव फैलाने का प्रयत्न करते फिरें। मुस्लिम-संस्कृति के विषय में मौलाना साहब ने जो कुछ कहा, वह मि० जिन्ना के एतद्विषयक कथनों से किसी प्रकार भिन्न नहीं।" तब यदि यह कहा जाय कि कांग्रेसी मुसलमानों और मुस्लिम-लीगियों में इतना ही अंतर है कि एक अपने मतभेद को पुकारकर कहता है, दूसरा उसे छिपाए रहता है, तो अनुचित न होगा। एक राष्ट्रीयता पर यदि ऊपर से आघात करता है, तो दूसरा उसे भीतर-ही-भीतर कमज़ोर कर रहा है। कहना न होगा, इसमें अधिक घातक कौन है। इन कांग्रेसी मुसलमानों का वेष मित्रों का-सा है, पर उनके कार्य मित्रों के-से कदापि नहीं। इनका वास्तविक रूप समझने के लिये एक उदाहरण देखिए। दिखावे के लिये कांग्रेस कहा करती है कि वह मुसलमानों के साथ संयुक्त मंत्रिमंडल न बनावेगी, लेकिन भीतर-ही-भीतर मौलाना आज़ाद जिन्ना साहब से पूछ रहे थे कि यदि तुम्हारे एक या दो मंत्री अमुक प्रांत ले लें, तो क्या तुम मान जाओगे? मौलाना साहब चाहते थे कि ये बातें गुप्त रक्खी जायँ, लेकिन जिन्ना साहब ने आवेश में आकर सब बातों का भंडाफोड़ कर दिया। हिंदू-मुस्लिम-एकता के लिये कैसा बढ़िया प्रयत्न आज़ाद साहब कर रहे थे। कांग्रेसी मंत्रि-मंडलों में पहले से ही आवश्यकता से अधिक मुसलमानों का प्राधान्य था, उस पर आज़ाद साहब मुस्लिम-लीग से भी मंत्री लेने को तैयार थे। इसका मतलब यह हुआ कि कांग्रेसी मंत्रिमंडलों को मुसलमानों से भरकर वस्तुतः हिंदोस्तान का शासन मुसलमानों के हाथ में कर दिया जाय। जहाँ मुसलमानों का प्राधान्य है, वहाँ का शासन तो मुसलमानों के हाथ में है ही, अन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांतों में भी शासन की बागडोर बहुत कुछ उनके हाथ में आ जायगी। राष्ट्रपति की यही नीति है। हम दावे के साथ कहते हैं कि यह नीति राष्ट्रीयता के लिये पाकिस्तान से भी अधिक घातक है। और, कांग्रेस के नेतृत्व का रुख़ देखते हुए यह नीति किसी भी समय कार्यान्वित की जा सकती है।

पाकिस्तानवाले तो हिंदोस्तान का एक भाग ही माँगते हैं, परंतु कांग्रेसी मुसलमान सारे हिंदोस्तान पर शासन करना चाहते हैं। मित्र के वेष में शत्रु से खुला हुआ शत्रु ज़्यादा अच्छा है। हमें यह याद रखना चाहिए कि कांग्रेसी मुसलमानों और मुस्लिम-लीग में केवल नीति का भेद है, लक्ष्य दोनो का एक ही है। मुस्लिम-लीगवाले पाकिस्तान की माँग करके सारे भारत पर शासन करना चाहते हैं। लीगवाले बराबर यह कहते रहे हैं कि देश के शासन में उनकी इच्छा के विपरीत कुछ भी होने पर वे गृह-युद्ध शुरू कर देंगे। मुस्लिम-लीग अधिकतर उन मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करती रही है, जो अपने प्रांतों में अल्पसंख्यक हैं। इन अल्पसंख्यक मुसलमानों की समस्याओं को लेकर मुस्लिम-लीग ने देश में एक भारी आंदोलन रच डाला था। इन अल्पसंख्यक मुसलमानों की समस्या सुलझाने के लिये मुस्लिम-लीग ने पाकिस्तान की योजना तैयार की है, और यह एक ऐसी योजना है, जिसका अल्पसंख्यक मुसलमानों की समस्या से कोई संबंध नहीं। पाकिस्तान वहाँ बनेगा, जहाँ मुसलमान बहुसंख्यक हैं, इसलिये पाकिस्तान बन जाने पर भी अल्पसंख्यक मुसलमानों की समस्या ज्यों-की-त्यों बनी रहेगी। मुस्लिम-लीगी सोचते हैं कि पहले पाकिस्तान बनाकर आधे हिंदोस्तान पर हम यों ही अधिकार कर लें, जो कुछ बचेगा, वहाँ गृह-युद्ध की धमकी देने के लिये काफ़ी मुसलमान बचे रहेंगे। इस तरह एक दिन सारे देश पर फिर मुसलमानों का शासन हो जायगा। मुसलमान सोचता है कि काश्मीर में मुसलमानों की बहुसंख्या है, वहाँ के हिंदू राजा को हम निकाल बाहर करेंगे। सीमाप्रांत में मुसलमानों की बहुसंख्या है ही, सिंध, पंजाब, बंगाल आपस में मिलकर चारो तरफ़ से युक्त प्रांत, राजपूताना और बिहार को घेर लेंगे। दक्षिण में सहायता के लिये निज़ाम-सरकार है ही। कहना न होगा कि सिंध, काश्मीर, पंजाब और बंगाल का सैनिक महत्त्व बहुत ही बड़ा है। बाहर से सहायता आदि भी इधर से ही आ सकती है। भारत पर पहले भी जो आक्रमण हुए हैं, वे सिंध और पश्चिमोत्तर-प्रदेश की ओर से हुए हैं। हिंदोस्तान के मुसलमान सोचते हैं कि इन्हीं मार्गों से वे अब भी विदेशी मुस्लिम-राष्ट्रों की सहायता पा सकेंगे। इन प्रदेशों में यदि मुसलमानों का कोई भी उग्र आंदोलन शुरू हुआ, तो राष्ट्र के लिये वह बहुत ही संकट-जनक सिद्ध होगा।

इस तरह का एक आंदोलन प्रारंभ भी हो चुका है। यह आंदोलन ख़ाकसारों का है। इनके नेता अल्लामा मशरिक़ी का ध्येय है कि भारत पर मुसलमानों का एकच्छत्र शासन स्थापित किया जाय, इसलिये उसने मुसलमानों का एक अर्द्ध-सैनिक संगठन स्थापित किया है। अपनी वक्तृताओं में वह मुसलमानों से कहता है कि तुम संसार में शासन करने के लिये पैदा हुए हो। मुहम्मद के समय क़ुरान की जो शिक्षा थी, उसी को वह फिर दुहराना चाहता है। नादिरशाह और तैमूर लंग-जैसे दस्यु उसके आदर्श हैं। उसकी व्यवस्था में ग़ुलामी छोड़कर हिंदुओं के लिये दूसरा स्थान नहीं। उसने पंजाब और पश्चिमोत्तर-प्रांत में मुसलमानों का एक विशाल संगठन किया है। साथ ही उन प्रांतों में भी, जहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमान अल्पसंख्यक हैं, उसने उन्हें संगठित किया है, जिसमें देश के सभी भागों के मुसलमान एक साथ मिलकर देश में एक भारी गृह-युद्ध कर सकें। विश्वस्त सूत्र से यह भी पता चला है कि ख़ाकसारों के इस संगठन का संबंध नाज़ियों से है, और ये उस दिन की प्रतीक्षा में हैं, जब इँग-लैंड और भारत का मार्ग संकट-ग्रस्त हो, और ये ब्रिटेन से अरक्षित भारत में यथेच्छ रक्त-पात और उद्दंडता बरत सकें। इस प्रकार मुसलमानों के सभी दलों ने राष्ट्रीयता को चारो तरफ़ से घेर रक्खा है। मुस्लिम-लीगवाले पाकिस्तान की माँग करके देश में कोई भी शासन-सुधार नहीं होने देना चाहते। कांग्रेसी मुसलमान हिंदुओं को एक साथ संगठित नहीं होने देते। कांग्रेस की नीति पर मुसलमानों का प्रभाव रहे, इसकी वे सदा चेष्टा किया करते हैं। राष्ट्रीयता के लिये जो भी प्रयत्न होता है, उसे भीतर-ही-भीतर वे कुंठित करने को तत्पर रहते हैं। इसके अतिरिक्त ख़ाक-सार हैं, जो खुल्लमखुल्ला रक्त-पात के लिये तैयारी और उसका अभ्यास कर रहे हैं।

ऐसे समय में एक बहुत ही शक्तिशाली नेतृत्व देश की रक्षा कर सकता है। अब बातों का समय नहीं। राजनीतिक समस्याएँ अब शब्दों से नहीं सुलझ सकतीं। एक ओर देश-द्रोही हर तरह से अपनी शक्ति संगठित कर रहे हैं, तो दूसरी ओर कांग्रेस के नेता दृढ़ रूप से एक राष्ट्रीय नीति का पालन करने में असमर्थ हैं। इन देश-द्रोहियों की धमकी का उत्तर राष्ट्र की संगठित शक्ति ही दे सकती है। यह शक्ति केवल बातों की नहीं हो सकती। जिनमें पौरुष है, बल है, और देश पर मर मिटने की आन है, केवल वे ही देश का नेतृत्व कर सकते हैं। यह स्पष्ट है कि त्याग और बलिदान की भावना सबसे अधिक क्षत्रियों में वर्तमान है। अपने पूर्व-पुरुषों की कीर्ति उज्ज्वल रखने का फिर समय आ गया है। जिस त्याग ने क्षत्रिय-जाति को अमर कर दिया है, वही त्याग आज उसे फिर भी करना पड़ेगा। क्षत्रिय-महासभा ने क्षत्रियों के संगठन में प्रशंसनीय कार्य किया है। अब आवश्यकता इस बात की है कि यह काम और आगे बढ़ाया जाय, और क्षत्रिय-स्वयंसेवकों की एक विशाल सेना तैयार की जाय। यह क्षत्रिय-सेना ही राष्ट्रीयता की रक्षा और देश-द्रोहियों के प्राण-घातक संगठन का संहार कर सकती है। हमारा विश्वास है, जाति और देश की सेवा में तत्पर क्षत्रिय इस कार्य में सफल होंगे *।

* लेखक की शीघ्र प्रकाशित होनेवाली पुस्तक 'पाकिस्तान और क्षत्रिय' का एक अध्याय। —सुधा संपादक।

आवश्यकता है

जनता द्वारा प्रशंसित रेशमी, सूती और ऊनी कपड़ों की बाज़ार-भाव पर बिक्री करने के लिये चुस्त एजेंटों की। नियम सरल। नमूना मुफ़्त।

ग्रियर्सन निटिंग वर्क्स, लुधियाना (4 A)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावन

[श्रीयुत तेजनारायण काक एम्० ए०]

(आप सुधा-परिवार के उदीयमान लेखक हैं। आपकी सुंदर कहानियाँ और गद्य-काव्य सुधा में समय-समय पर निकलते रहे हैं। इधर आपने व्रजभाषा में दोहे लिखना भी शुरू किया है।—सुधा-संपादक)

ग्रीषम-भीषम-ताप-बस देखि धरा की पीर—
उमड़ि-घुमड़ि नभ-नयन तें बरसत झर-झर नीर ॥ १ ॥
उमड़ि - घुमड़ि बरखा परै, जलु - थलु-भेदु मिटाहिं ;
भीजन - डरु घन हू दुरैं महल-अटारिनु माहिं ॥ २ ॥

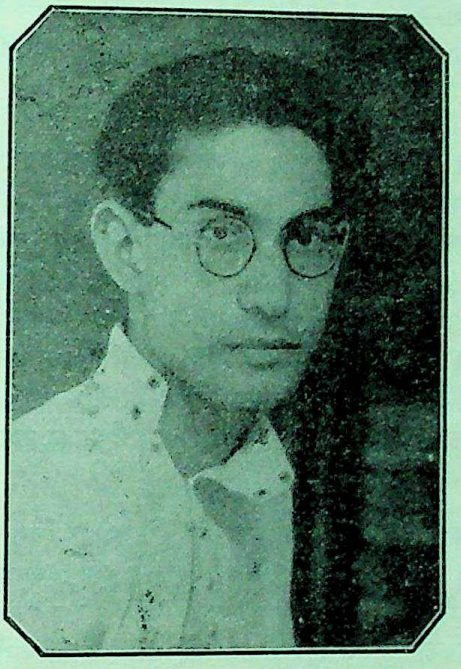

श्रीयुत तेजनारायण काक एम्० ए०

अमा - तमी घनघोर घन घिरे मेदिनी छाय ;
बनि बिजुरी-दुति को अली, मो कहुँ पंथु दिखाय ॥ ३ ॥
तम-घूँघट-पट टारि पल बिहँसि लियौ चट खींचि ;
चपला-रूप निहारि जग रह्यौ चौंधि चख मींचि ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरखा-रितु सरि ताहु - तनु बाढ़ति अतनु-तरंगु ;
धावति सागर सन मिलन लाज-कूल करि भंगु ॥ ५ ॥
मानस-सागर सौं उमड़ि बिरह - तरनि कैं तापु ;
नयन-गगन चढ़ि, घुमड़ि, घिरि बरसत बेदन आपु ॥ ६ ॥
बिरह - ज्वाल बिजुरी बनी, बदरा भए उसाँस ,
नैन - नीर - झरि लागही बिनु ही सावन-मास ॥ ७ ॥
जाइ उतै घनस्याम किन बरसौ दरसन - वारि ;
बृंदाबन-बीथिनि लगी भीषन बिरह - दवारि ॥ ८ ॥

गरमी और बरसात में सेवन करने योग्य धातु पौष्टिक दवा—

* सुधावलेह *

विश्वास करें, यह ओषधि इस भूतल का अमृत है। खाने के २४ घंटे बाद अपना गुण दिखाती है। इसके सेवन से धातु बढ़ती, पतली गाढ़ी होती, कामेच्छा बढ़ती, दिल-दिमाग़ में तरी और ताक़त आती है। दिल की धड़कन, सिर की कमज़ोरी, याद न रहना, आँखों के आगे अँधेरा आना, चक्कर आना, सिर घूमना, हाथ-पैर के तलवे जलना, खुल-कर भूख न लगना वग़ैरा आराम होकर मनुष्य का जीवन नवीन हो जाता है। जिन्हें गरमी के कारण स्वप्नदोष होते हैं, मैथुनेच्छा नहीं होती, वे इस अमृत को गरमी के चार महीने ज़रूर खावें। क़ीमत १) सेर है, पर ग़रीब भी लाभ उठा सकें, इसलिये ५) सेर दिया जायगा। महसूल डाक, पैकिंग १-), कुल ६-) में दवा का फल देखो।

वेलाग प्रशंसा-पत्र

नोंकझोंक-संपादक श्रीदामोदरदासजी चतुर्वेदी महोदय लिखते। हैं—

"आपके सुधावलेह ने मेरे लिये तो अमृत का-सा गुण दिखलाया। आज दवा ली और कल से ही सब शिकायतें दूर होकर मेरे जीवन में एक नए वसंत का आगमन आरंभ हो गया। वस्तुतः आपका सुधावलेह सुधा की वह सुंदर स्रोतस्विनी है, जिसका आश्रय लेकर अनेक निराश और निर्बल व्यक्ति नवजीवन तथा नई शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। रोग-संतप्त प्राणियों के उपकार के लिये आपने इस अवलेह का निर्माण कर अत्यंत अनुग्रह किया है। ईश्वर इस जन-सेवा के लिये आपको अखंड यश प्रदान करें।"

पता—हरिदास एंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[श्रीयुत शिक्षार्थी]

(शिक्षार्थीजी सुधा-परिवार के विख्यात व्यंग्य-चित्रकार हैं। आपके कल्पना-कलित और भाव-वलित व्यंग्य-चित्र—कार्टून सुधा में, समय-समय पर, निकलते रहते हैं। इस संख्या में भी कई जा रहे हैं। आपने अब कहानी लिखना भी शुरू किया है। बाल विवाह पर, इस कहानी में, अच्छा व्यंग्य लेखक ने किया है। कहानी पढ़ने के बाद उसका असर देर तक चित्त पर रहता है। कहानी के साथ दिए गए चारु चित्र शिक्षार्थीजी की ही कुशल कूची की कृति हैं।—सुधा-संपादक)

खों की बोली सरल भी है, कठिन भी। परंतु उसे समझने में भूल हो गई, तो हृदय को बुरी तरह भुगतना पड़ता है।

एक दिन था, जब दो आँखों ने मुझसे कुछ कहा था, कुछ माँगा था ; पर मैं, समय रहते, उनकी कातर बोली न समझ सका, उन्हें कुछ दे नहीं सका। वे, भिखारी के कटोरों की भाँति, बड़ी-बड़ी, रिक्त रह गईं।

उनकी बातें, बाद को, समझ में आ गईं ; किंतु तब बहुत देर हो चुकी थी, तीर हाथ से निकल गया था।

श्रीयुत शिक्षार्थी

अब भी जब कभी उन आँखों का कहना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याद आता है, तब कलेजा ऐंठकर रह जाता है।

❀ ❀ ❀

घनी पत्तियों के बीच में से 'झाँ' करते हुए गुलाब की तरह, गहरे हरे रंग के घूँघट में, एक मुखड़ा दिखलाई पड़ा। पास ही नई उम्र का, यही चौबीस-पचीस का, एक युवक स्वास्थ्य की तस्वीर-सा बना बैठा था। देखने में वह ग्रामीण लगता था, पर असभ्य नहीं, और मुँह पर उसके घबराहट की मलिन छाया मचल रही थी।

प्रसंग स्टेशन के मुसाफ़िरख़ाने का है। एक कोने में अन्य यात्रियों और उनके कोलाहल से दूर इस जोड़ी ने अपनी दुनिया बसा रक्खी थी।

उस दिन मैं अपनी किताबों का एक अर्जेंट पारसल भेजने के लिये स्वयं गया हुआ था। यों ही—केवल यों ही—थके हुए मन को बहलाने के लिये समझ लिया जाय—मैं मुसाफ़िरख़ाने की ओर भी जा निकला।

हरी धोती में अपने को सावधानी से ढँककर बैठी हुई नवयुवती का मुँह एक नज़र देखकर मैं न-जाने क्यों मशीन की भाँति रुक गया। सौंदर्य की उपेक्षा न की जा सकी। उसकी अवस्था, बतला दूँ, उन्नीस-बीस के लगभग रही होगी।

"क्योंजी," मैंने नवयुवक को संबोधित किया—"कहाँ जाना है?"

"कलकत्ता।" मुझे शंकित दृष्टि से देखता हुआ वह बोला।

"वहाँ तुम कहाँ नौकर हो?"

"कहीं नहीं; नौकरी ही ढूँढ़ने तो जा रहा हूँ।"

"तब क्या कलकत्ते में तुम्हारा कोई है?"

"न।" कहकर वह दूसरी तरफ़ देखने लगा।

उससे मैं नवयुवती का परिचय पाने के लिये बातें कर रहा था। कितना अनूठा रूप-लावण्य था वह कि आज पर्वत काफ़ की परियाँ होतीं, तो उनके लिये भी ईर्ष्या की सामग्री मौजूद थी; परंतु युवक के उखड़े-पुखड़े इरादे सुनकर आश्चर्य में पड़ गया—जब अपना ही ठिकाना नहीं, तो यह आख़िर किस बल पर इस लड़की को पराए देश लिए जा रहा है? हो न हो, ये घरवालों से रूठकर निकल भागे हों।

मैं, इसलिये, कहने लगा—"जानते हो भाई, निर्धन भारत में जीविका का प्रश्न बड़ा टेढ़ा है।"

उधर मैंने देखा, इस बीच, दो उँगलियों के सहारे अधखुले हरे घूँघट से दो विस्फारित नेत्र मुझे निशाना बनाए हुए थे।

"यहाँ" मेरा सिलसिला जारी रहा—"अनगिनती युवक ऊँचे-ऊँचे दर्जे पास करके हाथ पर हाथ रक्खे बैठे हैं, कोई पूछता नहीं।"

मुझे ऐसा लगा, मानो वह मुझसे बातचीत करने से जी चुरा रहा है। फिर भी मैं अपनी कहता ही गया—"ऐसी बढ़ी हुई बेकारी के युग में तुम कलकत्ते में कैसे टिकोगे? तुम आप तो ठोकर खाओगे ही, इस बेचारी को भी परेशानी में डाल दोगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह कुछ न बोला, टिकटघर से लगी तोलने की मशीन पर ही निगाह गड़ाए रहा। परंतु नवयुवती अपनी मुखाकृति से जैसे कहला रही थी कि—हाँ जी, सही तो है; ये बाबू बड़े समझदार हैं; इनकी बात मानो।

ठीक है, सहानुभूति का बदला भक्ति से मिलता है।

पर, अब मैं और क्या कहता? वह तो मेरी कुछ सुनता ही न था, गोया मैं कोई हव्वा होऊँ। परंतु किसी की दो आँखों को आँख-भर देखने के लिये मुझे इस आदमी की यह हरकत भी गवारा करनी पड़ी। तब युवक के कंधे को छूकर मैंने उसे अपनी ओर आकृष्ट किया, बातचीत जारी रखने के लिये लगे हाथ यह भी पूछ लिया—"यह तुम्हारी स्त्री हैं?"

"नहीं तो—न—हाँ।" वह हड़बड़ाकर बोला।

"क्या कहा?"

"हाँ तो।"

मेरे कान खड़े हो गए। "लेकिन पहले तुमने 'नहीं' कहा।"

वह हकीकी भूल गया, जिससे मैंने ताड़ लिया कि कुछ दाल में काला है।

उधर वे दोनो बड़ी-बड़ी आँखें, पूर्ववत्, मेरी ही तरफ़ थीं, जैसे वे मुझसे कुछ कहना चाहती थीं।

उधर वे दोनो बड़ी-बड़ी आँखें, पूर्ववत्, मेरी ही तरफ़ थीं, जैसे वे मुझसे कुछ कहना चाहती थीं, कोई निवेदन किया चाहती थीं, पर बोल न पाती थीं।

युवक को मैंने धीरे से धमकाया—"असली बात क्या है, साफ़-साफ़ बतलाओ, नहीं तो अभी पुलिस बुलाता हूँ।"

मेरी धमकी काम कर गई। उसने सब क़बूल कर लिया।

मुझे क्या पता था कि मेरी उत्सुकता-मात्र से एक भेद मिल जायगा; व्यर्थ की बातचीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से एक नतीजा निकलता देखकर मुझे वैसे ही .खुशी हुई, जैसे कोई कंकड़ों को इधर-उधर करके समय काटता हो, और उसके हाथ पारस लग जाय। मैंने सोचा, चाहता, तो इसी तरह मैं एक सफल जासूस भी हो सकता था—मुझमें माद्दा है। ख़ैर।

साथ ही मन में समाज-सेवा की भावना ने ज़ोर मारा। मैंने ठान लिया कि इस अबला का उद्धार करके इसे इसके घरवालों के सिपुर्द न कर दिया, तो नाम नहीं। जीवन में पुण्य कार्य करने का ऐसा अवसर अब कब मिलेगा? और फिर यह बिरली संदरता।

युवक से पूछा—"इन्हें कहाँ से लाए?"

उसने दबी ज़बान से नवयुवती की ससुराल का गाँव बतलाया।

फिर ससुर का नाम और जाति आदि आवश्यक बातें पूछकर मैंने युवक से कहा कि अब तुम ख़ैर चाहो, तो सीधे से इस अबला की जान छोड़कर चल दो।

देहाती तो देहाती ही। युवक चुपचाप उठा, जैसे धरती पर गिरा हुआ कोई घायल हाथ टेककर उठता है, और एक बार, बस हसरत और मजबूरी-भरी नज़र से गठरी बनी हुई लड़की को, लाज से भूमि में धँसी हुई लड़की को, देखकर स्टेशन के अंदर भारी पाँवों गया, और जन-समूह में विलीन हो गया। उसके सरल मुख पर व्यथा फैल गई थी, तो भी उसका भोलापन न दब सका था, युवक की उस क्षण-विशेष की प्रतिच्छवि हृदय पर से लाख मिटाने पर भी जा नहीं सकती।

इन सब उपन्यास की-सी आकस्मिक घटनाओं का प्रभाव नवयुवती के छोटे-से दिल पर क्या, कैसा पड़ा, यह मैं, समाज-सेवा और नेकनामी कमाने की धुन में, नहीं देख सकता था; मगर हाँ, हरे घूँघट के ठीक नीचे पत्थर का फ़र्श दो बूँदों से भीग गया था। लेकिन भला इतनी कठोरता पर दो नन्हीं बूँदों का क्या वश?

अब मेरे सामने यह प्रश्न आया कि यदि कहीं इसके ससुरालवालों ने इसे अब स्वीकार करने से इनकार कर दिया, तो? मेरी नीयत का ठिकाना कब तक? मैंने स्थानीय अनाथ-आश्रम के मंत्री से राय लेना उचित समझा।

"वैसी दशा में" मंत्री महोदय बोले—"हम इसे महिला-विभाग में भरती कर लेंगे।"

इससे निश्चिंत होकर मैंने अपने एक उत्साही मित्र को साथ लिया, और दोपहर की गाड़ी से हम लोग लड़की को लेकर उसकी ससुराल के लिये चल दिए।

आप कहें, तो क्या आश्चर्य कि बैठे-बिठाए बेमतलब एक झंझट सिर ले लिया; दौड़-धूप, ख़र्च-ख़राबी की; क्या लाभ? सबका जवाब तीन टुकड़ों में है—नए ख़ून की उमंग, छान-बीन की आदत, समाज-सेवा की बहती गंगा में हाथ धो लेने की लालसा। सबके पहले सौंदर्य-प्रियता भी रक्खी जा सकती थी; किंतु आगे चलकर उसका काम नहीं पड़ा, उससे काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं लिया गया; नहीं तो क़िस्सा ही और होता।

मार्ग में पुनः मेरी दृष्टि हरे घूँघट के अंदर उन दो बड़ी-बड़ी आँखों पर पड़ी—अब भी वे मुझसे कुछ कहने के लिये बेचैन जान पड़ती थीं, कोई निवेदन करने के लिये भरी हुई मालूम होती थीं; किंतु बोलने में, अपना तात्पर्य मुझे समझा सकने में असमर्थ। कच्चे दूध को धूमिल सिद्ध करनेवाली आँख की सफ़ेदी से निष्कलंकिता अवश्य बरसी पड़ती थी; पर उस सफ़ेदी के बीच में बैठी हुई, अपनी चपलता के लिये प्रसिद्ध, काली-काली पुतलियों पर सहसा विश्वास करते न बनता था।

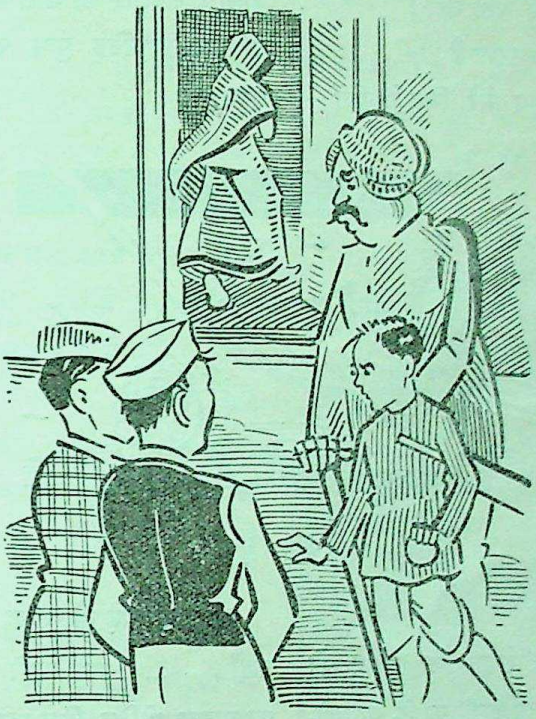

इतने में एक बालक—अधिक-से-अधिक नौ-साढ़े नौ साल का—दौड़ता हुआ आया।

तरह-तरह के विचारों में डूबते-उतराते हुए आख़िरकार हम वांछित स्टेशन पर पहुँच गए। इक्का किया; डेढ़ घंटे में गाँव-विशेष भी आ गया।

नवयुवती के ससुर को देखा; मोटी बरौनियों के नीचे जलते कोयले-सी आँखों पर आँखें न ठहरती थीं; आदमी क्या था, क्रूरता का अवतार था; आकृति पर जल्लाद-हृदय उभरा पड़ता था।

हमने पूछा—"क्या आप लड़की को स्वीकार करने के लिये तैयार हैं?"

"हाँ-हाँ, कोई हर्ज नहीं।" उसने हाथों की छड़ी पर अपने भारी-भरकम शरीर का भार सँभालते हुए कहा, गोया उसे अपने डंडे की मज़बूती पर विश्वास था, और यही हम पर वह प्रकट करना चाहता था।

और, हरी धोती में सिकुड़ी हुई नवयुवती — एक बेज़बान गाय की तरह—अंदर कर दी गई। जाते-जाते उसने मुझे मुड़कर देखा, जैसे—'बिदा दीजिए, अब कभी न मिल सकूँगी, नमस्ते।'

इतने में एक बालक—अधिक-से-अधिक नौ-साढ़े नौ साल का—दौड़ता हुआ आया; एक हाथ में चीड़ का बैट, दूसरे में दो पैसेवाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गेंद। कभी हमें नाक फुलाकर घूरता, कभी दरवाजे के भीतर नज़र दौड़ाता, जिधर वह गई थी।

अकस्मात् उसके मन में न-जाने क्या समाई कि वह इक्का-घोड़ी के पैर में एक बल्ला मारकर चंपत हो गया। स्पष्ट था, लड़का क्रोध से भरा हुआ है, पर क्यों, पता नहीं।

मैंने कहा—"बड़ा नटखट है!"

इक्के पर बैठते हुए मेरे मित्र ने पूछा—"किसका लड़का है यह?"

किसी ने हमारी हीरोइन के ससुर को बतलाकर कहा—"लड़का इन्हीं का है, बाबूजी, और, इसी बच्चे की दुलहिन तो है, जिसे आप कुमार्ग पर जाने से बचा लाए हैं!"

मुझे काटिए, तो ख़ून नहीं।—वह इसी की दुलहिन थी, नौ-साढ़े नौ साल के बच्चे की! ओह! मुझे यह क्यों बतलाया गया? क्या आवश्यकता थी? बतलानेवाला केवल इतना कहकर क्यों न चुप रह गया—"लड़का इन्हीं का है बाबूजी!" क्या इतना उत्तर काफ़ी न था?

और, वे आँखें क्या कहना चाहती थीं, यह मैं अब समझा—"देखो, हम कहती थीं न कि बाद में पछताओगे।" पर अब क्या हो सकता था? घनी पत्तियों के बीच में से 'झाँ' करनेवाला गुलाब, लू का मारा-सा, विवर्ण हो चुका था। पूर्ण-प्रस्फुटित पुष्प पद-दलित किया जा चुका था।

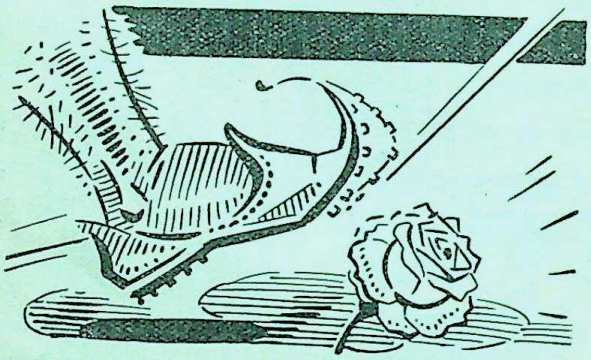

पद-दलित पुष्प

कहाँ नौ-साढ़े नौ साल का बालक और कहाँ.....! मेरे आगे स्टेशनवाले युवक का मायूस, पीड़ित, किंतु सरल मुख नाच उठा, और साथ ही तड़प उठे अभागिन लड़की की युवावस्था के अरमान।

मैं अपने को सँभाल न सका; इक्केवाले को मैंने पूरी तेज़ी के साथ चलने के लिये कहा, जैसे वहाँ कोई मेरा गला घोंट रहा था।

उधर वह क्रूरता का अवतार अपनी मज़बूत छड़ी पर हाथ फेरता हुआ अंदर घुस रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने इक्का और भी तेज़ करने के लिये कहा; कहीं किसी बेकस की चीख़ न सुननी पड़े।

मगर मेरे भीतर शैतान का विकट अट्टहास गूँजकर ही रहा। मैंने कान पर हाथ रख लिए; पर भला, कहीं खिड़कियाँ बंद कर लेने से घर के अंदर बजनेवाले काल के डंके की चोट धीमी पड़ सकी है?

घर पहुँचने पर ऐसा लगा, मानो किसी की चिता में आग देकर लौटे हैं।

गद्य-काव्य

[कुमारी दिनेशनंदिनी चोरड़्या]

(कुमारीजी अच्छी गद्य-काव्य-लेखिका हैं। आपको सेकसरिया-पुरस्कार 'शबनम'-नामक गद्य-काव्य-संग्रह पर मिल चुका है। 'शारदीया'-नामक आपका दूसरा उत्कृष्टतर संग्रह गंगा-पुस्तकमाला में, अभी हाल में, निकला है।—सुधा-संपादक)

दिनों के बाद आज फिर से फूलों की अंजलि भर तुम्हारा आह्वान करने बैठी हूँ!

जीवन के रीते क्षण आए, और गुज़र गए; आकाश में कई रंग चमके और अस्त हो गए; कई चिराग़ जले, और यौवन के झोंकों से बुझ गए।

किंतु मैं उन पलों को मोतियों से तोल रही हूँ, जिन्होंने तुम्हारी स्मृति का आँसुओं से शृंगार किया; उन्हीं रंगों की मैंने कल्पना की, जो तुम्हारे रूप की झाईं में मिल सके; उसी प्रदीप को अमर रक्खा, जिसने तुम्हारे पास पहुँचने तक मेरा पथ-प्रदर्शन किया—

आज फूलों की अंजलि भर मैं तुम्हारा आह्वान करने बैठी हूँ!

कुमारी दिनेशनंदिनी चोरड़्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलसी-जयंती

[श्रीमती सावित्री दुलारेलाल एम्० ए०]

(तुलसी-जयंती के शुभ अवसर पर ऑल इंडिया रेडियो-स्टेशन, लखनऊ से पढ़ा गया। —सुधा-संपादक)

तुलसी-खस-टाटी सरस हरि कलि-ग्रीसम-पीर,
त्रयतापन लूअनि करति त्रयविध सुखद समीर।
(दुलारे-दोहावली)

आज श्रावण-महीने के उजेले पाख की सप्तमी है। विक्रम की चार शताब्दी पहले इसी तिथि को गोस्वामी तुलसीदासजी का जन्म हुआ था। यद्यपि गोस्वामीजी के जन्म-संवत्, जन्म-स्थान, जाति, परिवार वग़ैरा के बारे में ठीक से कुछ नहीं पता है, फिर भी अपनी अलौकिक रचनाओं के कारण गोस्वामीजी हरएक हिंदू घर में अमर हैं। केवल हिंदू ही नहीं, बल्कि दूसरे धर्मों को माननेवाले विद्वान् भी गोस्वामीजी के ग्रंथों का आदर करते हैं। इनकी रचनाएँ व्यक्तिगत (Individual) न होकर सार्वजनिक (Universal) हैं। यही कारण है कि गोस्वामीजी के लिये सभी देश और जाति के लोगों के हृदयों में श्रद्धा और भक्ति है।

गोस्वामीजी के बारे में हम तीन तरह से जान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकते हैं—(१) अंतःसाक्ष्य—उन्होंने अपनी रचनाओं में जहाँ-तहाँ अपने विषय में जो कुछ लिखा है, (२) बहिःसाक्ष्य—दूसरे विद्वानों ने उनके लिये जो कुछ लिखा है, और (३) जनश्रुति—परंपरा से लोग उनके बारे में जो कुछ कहते आए हैं। सबसे पहले हम देखते हैं कि उन्होंने अपने लिये स्वयं क्या-क्या लिखा है।

अपनी जन्म-तिथि के लिये गोस्वामीजी ने किसी स्थान पर कुछ नहीं लिखा। अपनी माता के लिये उन्होंने रामचरित-मानस में, बालकांड में, एक चौपाई दी है—

"रामहिं प्रिय पावनि तुलसी-सी ;
तुलसिदास-हित हिय हुलसी-सी।"

इससे पता लगता है कि इनकी माता का नाम हुलसी था।

अपने नाम के बारे में इन्होंने विनय-पत्रिका, बरवै-रामायण और कवितावली में संकेत किया है—

"राम को गुलाम, नाम रामबोला राख्यो राम ;
काम यहै, नाम द्वै हौं कबहूँ कहत हौं।"

याने मैं राम का गुलाम हूँ। राम ने मेरा नाम रामबोला रक्खा है। काम यह है कि राम-राम कभी-कभी कहता हूँ। इससे पता चलता है कि तुलसीदासजी का नाम रामबोला था। बरवै-रामायण में—

"केहि गिनती महँ गिनती, जस बन-घास ;
नाम जपत भए तुलसी तुलसीदास।"

अर्थात् मेरी किस बात में गिनती है, मैं तो वन की घास के बराबर हूँ। राम का नाम जपने के कारण मैं तुलसीदास तुलसी-वृक्ष के समान पवित्र हो गया हूँ। इससे पता चलता है कि गोस्वामीजी का दूसरा नाम तुलसीदास था।

इसी प्रकार कवितावली में भी—

"साहिब सुजान जिन स्वानहू को पच्छ कियो,
रामबोला नाम, हौं गुलाम राम साहि को।"

इससे भी यही सिद्ध होता है कि तुलसीदासजी का नाम रामबोला था।

अपनी बाल्यावस्था के संबंध में गोस्वामीजी ने विनय-पत्रिका तथा कवितावली में संकेत किया है। विनय-पत्रिका में इस प्रकार है—

"तनु तज्यों कुटिल कीट ज्यों
तज्यो मातु - पिता हूँ।"

× × ×

"द्वार - द्वार दीनता कही,
काढ़ि रद, परि पाहूँ।"

× × ×

"स्वारथ के साथिन तज्यो तिजरा
को-सो टोटक, औचक उलटि न हेरो।"

× × ×

"जननी - जनक तज्यो जनमि,
करम बिनु बिधिहु सृज्यो अवडेरे।
मोहुँ से कोउ - कोउ कहत,
रामहिं को सो प्रसंग केहि केरे।
फिर्यो ललात बिनु नाम,
उदर लगि दुखउ दुखित मोहिं हेरे।
नाम-प्रसाद लहत रसाल-फल,
अब हौं बबुर - बहेरे।"

× × ×

"खायो खोंची माँगि, मैं तेरो नाम लिया रे ;
तेरे बल बलि, आजु लौं जग जागि जिया रे।"

इसी तरह कवितावली में भी गोस्वामीजी के बाल्यावस्था-संबंधी कुछ पद्य हैं—

"मातु - पिता जग जाय तज्यो,
बिधिहू न लिखी कछु भाल भलाई।"

× × ×

"जाति के, सुजाति के, कुजाति के पेटागि-बस
खाए टूक सबके, बिदित बात दुनी सों।"

× × ×

"बारे ते ललात, बिललात द्वार-द्वार दीन,
जानत हौं चारि फल चारि ही चनक को।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारांश यह कि यह बालकपन से ही अपने माता-पिता का लाड़-प्यार न पा सके। इन्हें रोटियों तक के लिये तरसना पड़ा। घर-घर जाकर इन्होंने भिक्षा माँगी, और चार चनों को चार फलों (अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष) के समान समझा।

जाति और कुल के बारे में विनय-पत्रिका और कवितावली में क्रम से इस प्रकार लिखा है—

"दियो सुकुल-जन्म, सरीर सुंदर,
हेतु जो फल चारि को।"

× × ×

"भलि भारत-भूमि, भले कुल जन्मि
समाज, सरीर भलो लहिकै।"

इससे मालूम होता है कि तुलसीदासजी का जन्म उच्च कुल में हुआ था, और वह उच्च कुल शायद 'सुकुल' था।

मानस में बालकांड में, तुलसीदासजी वंदना के स्थान पर कहते हैं—

"बंदौं गुरु-पद-कंज कृपा-सिंधु नर-रूप हरि।"

× × ×

"मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकरखेत।"

इससे ज्ञात होता है कि गोस्वामीजी के गुरु का नाम नरहरि था, तथा उन्होंने सूकरखेत याने सोरों (ज़िला एटा) में अपने गुरु से राम-कथा सुनी थी।

कवितावली और दोहावली में गोस्वामीजी की मृत्यु का संकेत उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार है—

"पेखि सप्रेम पयान-समै सब
सोच-बिमोचन छेमकरी है।"

× × ×

"राम-नाम-जस बरनिकै भयो चहत अब मौन;
तुलसी के मुख दीजिए अब हीं तुलसी-सौन।"

इससे मालूम होता है कि गोस्वामीजी ने कवितावली तथा दोहावली के कुछ पद्य मरणावस्था के समय लिखे थे।

गोस्वामीजी ने वेद, पुराण, दर्शन, उपनिषद्, गीता आदि सभी धर्म-ग्रंथों का गंभीर अध्ययन किया था। मानस के आरंभ में ही वह कहते हैं—

"नानापुराणनिगमागमसम्मतं यत्।"

इससे स्पष्ट है कि मानस समस्त धर्म-ग्रंथों का सार है। तुलसीदासजी के ग्रंथों का गंभीर अध्ययन करने के पश्चात् पता चलता है कि वह शांकर सिद्धांत माननेवाले थे। अभिप्राय यह कि सिद्धांत-रूप से तो गोस्वामीजी निर्गुण ब्रह्म की उपासना करते थे, परंतु व्यावहारिक क्षेत्र में सगुण को मानते थे। सगुण की कल्पना किए बिना भक्ति हो ही नहीं सकती, क्योंकि भक्ति-मार्ग में चित्त-वृत्तियों को जमाने के लिये किसी आधार की ज़रूरत होती है। अतः गोस्वामीजी व्यवहार-रूप से साकार को मानते थे। उनके लिये—

"ज्ञानहिं-भगतिहिं नहिं कछु भेदा।"

क्योंकि—

"उभय हरहिं भव-संभव खेदा।"

गोस्वामीजी ने पूरे हिंदुस्थान की यात्रा की थी। उन्होंने अपनी रचनाओं में भारत के भिन्न-भिन्न स्थानों का जितना सच्चा वर्णन किया है, उससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि वह उन स्थानों में स्वयं गए थे। सुने हुए या कल्पित स्थानों का इतना स्वाभाविक वर्णन नहीं हो सकता। अंतःसाक्ष्य से इस बात की पुष्टि भी होती है—

"अब चित! चेतु, चित्रकूटहि चल।"

"सेइय सहित-सनेह देह भरि कामधेनु कल कासी।"

× × ×

"बारिपुर, दिगपुर-बीच बिलसति भूमि,
अंकित जो जानकी-चरन-जलजात की।"

इत्यादि।

वृद्धावस्था में गोस्वामीजी को बहुत-से कष्ट उठाने पड़े। शैव-मतावलंबियों ने उन्हें तरह-तरह की तकलीफ़ें दीं। इसके अलावा उनके हाथ में असह्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीड़ा उठी। कवितावली में इसका वर्णन है—

"अबिभूत बेदन बिषम होत भूतनाथ,
तुलसी बिकल पाहि, पचत कुपीर हौं।"

× × ×

"साहसी समीर के, दुलारे रघुबीरजू के,
बाँह-पीर महाबीर बेगि ही निवारिए।"

× × ×

"पूतना पिसाचिनी ज्यों कपि-कान्ह तुलसी की
बाहु-पीर महाबीर, तेरे मारे मरैगी।"

× × ×

"घेरि लियो रोगनि कुलोगनि कुजोगनि ज्यों,
बासर जलद घन-घटा धुकि छाई है।"

× × ×

"पाँय पीर, पेट पीर, बाहु पीर, मुँह पीर,
जरजर सकल सरीर पीरमई है।"

इससे स्पष्ट हो जाता है कि गोस्वामीजी को वृद्धावस्था में एक बार शारीरिक कष्ट हुआ, परंतु ईश्वर-कृपा से वह स्वस्थ हो गए थे।

गोस्वामीजी अत्यंत नम्र स्वभाव के थे, साथ ही उनमें आत्मविश्वास भी उच्च कोटि का था। उनकी नम्रता इसी से प्रकट होती है कि उन्होंने अपनी प्रशंसा के लिये कभी एक अक्षर भी नहीं लिखा। इतने प्रकांड पंडित होते हुए भी वह नम्रता-वश कहते हैं—

"कबि न होउँ, नहिं बचन-प्रबीना;
सकल कला, सब बिद्या हीना।"

× × ×

"कबित - बिबेक एक नहिं मोरे,
सत्य कहौं लिखि कागद कोरे।"

इस प्रकार के अनेकों उदाहरण हैं।

गोस्वामीजी में आत्मविश्वास की परम सीमा थी। यही आत्मविश्वास उन्हें राममय किए हुए था—

"कौन की आस करै तुलसी,
जो पै राखिहैं राम, तौ मारिहै को रे?"

× × ×

"प्रीति राम-नाम सौं, प्रतीति राम-नाम की,
प्रसाद राम-नाम के पसारि पाँय सूतिहौं।"

× × ×

"जानकीनाथ बिना तुलसी
जग दूसरे सों करिहौं न हहा है।"

× × ×

"साधु, कै असाधु, कै भलो, कै पोच, सोच कहा?
का काहू के द्वार परौं, जो हौं सो हौं राम कौ।"

× × ×

"जागैं भोगी भोग ही, बियोगी रोगी सोग-बस,
सोवै सुख तुलसी भरोसे एक राम के।"

× × ×

"एक भरोसो, एक बल, एक आस-बिस्वास;
एक राम घनस्याम, हित चातक तुलसीदास।"

× × ×

"मति रामहिं सों, गति रामहिं सों,
रति राम सों, रामहिं को बल है।"

ऊपर कहे पद्यांशों से साफ़ मालूम होता है कि गोस्वामीजी को अपने राम पर कितना विश्वास था।

यहाँ तक तो संक्षेप में अंतःसाक्ष्य से जानी गई बातों का उल्लेख है। अब थोड़े में ही देखना है कि बहिःसाक्ष्य और जनश्रुति द्वारा गोस्वामीजी के बारे में क्या-क्या बातें ज्ञात हुई हैं। जिन ग्रंथों में तुलसीदासजी के संबंध में कुछ लिखा हुआ है, उनके नाम ये हैं—

(१) दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता, (२) भक्तमाल, (३) मूल गोसाईं - चरित, (४) तुलसी-चरित और (५) भक्तमाल की टीका। इन्हीं ग्रंथों के आधार पर विद्वान् लोग गोस्वामीजी के विषय में लिखते आए हैं। परंतु इन ग्रंथों की प्रामाणिकता में संदेह होने के कारण इनके आधार पर लिखी गई बातें भी संदिग्ध हैं। जनश्रुतियों का आधार भी ये ही ग्रंथ हैं।

अभी हाल में गोस्वामीजी के संबंध में कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई खोजें हुई हैं। लखनऊ-युनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर बाबू दीनदयालजी गुप्त सोरों (ज़िला एटा) गए थे। वहाँ उन्हें संवत् १८२९ में कवि मुरलीधर चतुर्वेदी-कृत रत्नावली की जीवनी, तुलसीदासजी की धर्मपत्नी रत्नावली द्वारा रचित रत्नावली (दोहा-संग्रह)* की संवत् १८७५ की प्रतिलिपि, संवत् १६७० में कृष्णदास - कृत श्रीशूकर-क्षेत्र-माहात्म्य और संवत् १६४२ की लिखी हुई रामचरित-मानस की एक पुरानी प्रतिलिपि मिली है। ऊपर लिखी सामग्री से गोस्वामीजी तथा उनकी धर्मपत्नी के संबंध में बहुत-सी बातें ज्ञात हुई हैं। कृष्णदास-कृत शूकर-क्षेत्र-माहात्म्य के प्रथम पृष्ठ पर पद्य है—

"सुकुल - बंस द्विज - मूल,
पितरन-पद-सरसिज नमहुँ।"

× × ×

"बंदहुँ तुलसीदास पितु-बड़भ्राता-पद-जलज,
जिन निज बुद्धि-बिलासरामचरित-मानस रच्यौ।"

इससे मालूम होता है कि तुलसीदासजी सोरों (ज़िला एटा) के रहनेवाले थे। नंददासजी इनके चचेरे भाई थे, तथा यह सुकुल-कुल में पैदा हुए थे।

रत्नावली द्वारा लिखित जीवनी के आधार पर गोस्वामीजी का जीवन-वृत्त इस प्रकार है—

तुलसीदासजी के पुरखे सोरों से पूर्व की ओर, डेढ़ कोस पर, रामपुर-ग्राम में, रहते थे। किंतु किसी कारण इनके पिता पं० आत्माराम शुक्ल अपनी पत्नी हुलासी और वृद्धा माता के साथ सोरों के योगमार्ग-मुहल्ले में निवास करने लगे। शुक्लजी के छोटे भाई रामपुर में ही रहे। तुलसीदासजी के जन्म के बाद इनकी माता का देहांत हो गया, और कुछ दिन पीछे इनके पिता का भी। इनके पालन-पोषण का भार इनकी दादी पर पड़ा, जिसने इन्हें पाल-पोसकर बड़ा किया। यह हमेशा 'राम-राम' कहा करते थे, इसलिये इनका मुँह-बोला नाम रामबोला या रामोला पड़ गया। यह बालक ही थे कि इनके चाचा भी चल बसे। इनके चचेरे भाई नंददास और चंददास अनाथ हो गए। तुलसीदासजी के लिये रुपए-पैसे की बड़ी तंगी थी। यह तंदुरुस्त, गोरे रंग के, उत्साही व्यक्ति थे। समय पाकर विविध शास्त्रों के पंडित और काव्य-कला-दक्ष हो गए। जाति के सनाढ्य ब्राह्मण तो थे ही—दीनबंधु पाठक ने इन्हें योग्य समझकर अपनी कन्या रत्नावली से इनका विवाह कर दिया। कुछ वर्षों बाद रत्नावली के तारापति-नामक पुत्र पैदा हुआ। वह जल्दी ही मर गया। विवाह के १५ वर्ष बाद एक दिन रत्नावली अपने भाई के साथ श्रावण-मास में पति की आज्ञा लेकर राखी बाँधने अपने मायके गईं। कुछ दिन बीतने पर एक दिन जब गोस्वामीजी 'नवाह्न' के बाद घर लौटे, तो सूने घर में उनका मन नहीं लगा। वह भादों की अँधेरी रात में अपनी ससुराल जा पहुँचे। वहाँ रत्नावली ने इनके प्रेम की सराहना करके नम्रता-पूर्वक इनसे भगवत्-प्रेम की महत्ता बताई। रत्नावली की बातों का इन पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। प्रेम की जो असीम धारा पत्नी के प्रति बह रही थी, वही भगवान् के प्रति बहने लगी।

जिस प्रकार गोस्वामीजी के जन्म-संवत्, जन्म-स्थान, जाति, परिवार वग़ैरा के बारे में विद्वानों में आपस में मतभेद है, उसी प्रकार उनके ग्रंथों के विषय में भी भिन्न-भिन्न मत हैं। कुछ विद्वान् गोस्वामीजी द्वारा रचित २५ ग्रंथ मानते हैं, कुछ २० तथा कुछ १७। संवत् १९८० में नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी ने तुलसीदासजी के केवल १२ ग्रंथों को प्रामाणिक

* यह पुस्तक गंगा-पुस्तकमाला द्वारा प्रकाशित हो रही है।—सुधा-संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानकर उनका प्रकाशन तुलसी-ग्रंथावली खंड १ और २ के रूप में किया है। युनिवर्सिटियों और कॉलेजों में भी ये ही ग्रंथ प्रामाणिक माने जाते हैं। इनके नाम ये हैं—

(१) मानस, (२) रामलला - नहछू, (३) वैराग्य - संदीपनी, (४) बरवै - रामायण, (५) पार्वती - मंगल, (६) जानकी - मंगल, (७) रामाज्ञा - प्रश्न, (८) दोहावली, (९) कवितावली, (१०) गीतावली, (११) श्रीकृष्ण - गीतावली और (१२) विनय-पत्रिका।

इनमें से रामचरित-मानस का प्रचार सबसे अधिक है। कोई ऐसा शिक्षित हिंदू-घर न होगा, जहाँ मानस की एक प्रति न हो। अन्य ग्रंथ भी मनन करने योग्य हैं। इनका भी कुछ कम प्रचार नहीं। हिंदी-साहित्य में विनय-पत्रिका की टक्कर का एक भी गीति-काव्य नहीं। कवि ने एक-एक शब्द के साथ अपना हृदय लपेटकर रख दिया है। प्रत्येक पद में आत्माभिव्यंजना (self-expression) भरी हुई है। समयाभाव के कारण गोस्वामीजी के ग्रंथों के विषय में अधिक यहाँ नहीं कहा जा सकता। महाकवि 'हरिऔध'जी के शब्दों में केवल इतना ही कहना है—

"बन राम-रसायन की रसिका
रसना रसिकों की हुई सफला,
अवगाहन मानस में करके
जन-मानस का मल सारा टला;
बने पावन भाव की भूमि भली,
हुआ भावुक-भावुकता का भला,
कविता करके तुलसी न लसे,
कविता लसी पा तुलसी की कला।"

पर्ल पाउडर

के

व्यवहार से शरीर की थकावट दूर होती है। घमौरी फूट जाती हैं। ग्रीष्म की थकावट दूर होकर मन आनंद-पूर्ण हो जाता है।

यह पाउडर बच्चे के शरीर पर बुरकने के लिये सुगंधित किया हुआ है, और कीटाणु-नाशक है।

बंगाल केमिकल ऐंड फ़ारमास्युटिकल वर्क्स लि०

कलकत्ता बंबई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिजली की बिजली

[पु० श्रीप्रतापनारायण 'कविरत्न']

(श्रीपुरोहितजी सुधा-मंडल के प्रतिष्ठित कवि और जयपुर-राज्य के पुस्तकालयाध्यक्ष हैं। आपकी कविताएँ सुधा में निकलती रहती हैं। आपने काव्य की कई पुस्तकें लिखी हैं—नल नरेश (महाकाव्य), काव्य-कानन, मन के मोती, नवनिकुंज आदि। गत वर्ष दशहरा-दरबार के अवसर पर जयपुर-नरेश ने आपको सम्मानित किया था। सन् १९३७ में आपने योरप का—विशेषकर इँगलैंड का—खूब भ्रमण किया।—सुधा-संपादक)

सुनो दुनिया के लोगो ! मैं
कहानी अपनी कहती हूँ ;
किसी को नहीं दीखती मैं,
देह में सबके रहती हूँ ॥ १ ॥
तुम्हारा काम नहीं चलता,
अगर मैं यहाँ नहीं होती ;
तुम्हारे लिये सर्वदा मैं
बीज हूँ सुख के ही बोती ॥ २ ॥
चमाचम करके पल में क्यों
रात का दिन हो जाता है ?
सिनेमा बोल - बोलकर क्यों
अनोखे दृश्य दिखाता है ? ३ ॥
फ़ोन के कानों में कैसे
तार भी ख़बर सुनाता है ?
हज़ारों कोसों की बातें
बताता कौन दिखाता है ? ४ ॥
मोटरें रेलों में बैठी
हवाई दौड़ लगातीं क्यों ?
कहीं भी पेरिस की परियाँ
रसीले गीत सुनाती क्यों ? ५ ॥

मंजु - चल मेघाचल - जाता
चंचला मैं हूँ कहलाती ;
भवानी, हेमवती, गिरिजा
सामने सब हैं शरमाती ॥ ६ ॥

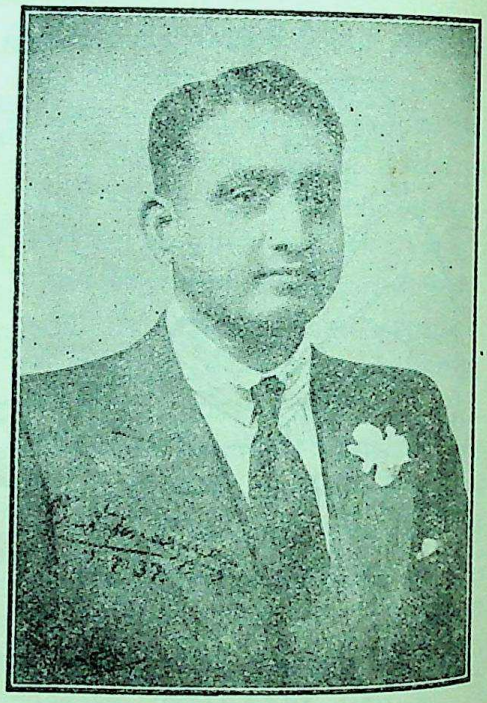

पु० श्रीप्रतापनारायण 'कविरत्न'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारुता और चुलबुलाहट
देखकर मेरी छवि अमला—
भूलती अपना चंचलपन
चंचला होकर भी कमला ॥ ७ ॥
सूर्य - शशि - तारों में ऐसी
मनोहर कांति नहीं मिलती ;
अनोखी मुझ - सी चपला क्या
जगत में ज्योति कहीं मिलती ? ८ ॥
घटा की छटा - बीच मेरी
अदा है जो तिरछी - बाँकी—
आज तक उसकी क़ीमत क्या
किसी ने कभी, कहीं आँकी ? ९ ॥
रूप के वर्णन में मेरे
सवाणी शेष हार खाता ;
चक्र हो चूर चक्रधर का
देह में मेरी रम जाता ॥ १० ॥
सभी की क्षण-भंगुरता को
सिद्ध मैं पल-पल में करती ;
दीप्तिधर अपने दर्शन से
जगत में नव-जीवन भरती ॥ ११ ॥
बूँद जो गिरतीं वसुधा पर,
प्रशंसा क्या है अंबर की ?
कृपा है यह मेरे घर की—
अनोखे सुधा-सरोवर की ॥ १२ ॥

मनोहर मेरे महलों में
करों से रंग सूर्य भरता ;
ज्योति लेने को मुझसे वह
खुशामद दिन-भर है करता ॥ १३ ॥
रंग से मेरी द्युति के या
ढंग से खूब चमकने के—
चंद्रमा पड़ा हुआ रहता
रोग में घटने-बढ़ने के ॥ १४ ॥
अछूती और अनूठी ही
सदा मेरी छवि रहती है ;
शैल में नीलम के जैसे
नदी हीरों की बहती है ॥ १५ ॥
विश्व में मेरा रूपांतर
कहाती शक्ति और माया ;
लीन मुझमें ही होती है
ब्रह्म की निराकार काया ॥ १६ ॥
छबीली, अलबेली बन मैं
नाचती, वाद्य बजाती हूँ ;
मेघ की नहीं गर्जना यह,
उसे मैं खूब हँसाती हूँ ॥ १७ ॥
शक्ति अब मुझसे भी ज्यादा
पा रही गाँधी की तकली—
जान यह, मुझ बिजली की भी
रगों से निकल रही बिजली ॥ १८ ॥

नोट—लेखक का 'नल-नरेश' महाकाव्य (मूल्य २॥), ३))
गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ से मँगाइए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊधव के प्रति

[डॉ० रामप्रसाद त्रिपाठी]

(डॉक्टर त्रिपाठी प्रयाग-विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफ़ेसर और हिंदी के प्रतिष्ठित लेखक हैं। ब्रजभाषा के आप श्रेष्ठ कवि हैं। इधर हाल में आपने बहुत ही सुंदर कवित्त लिखे हैं, जिन्हें पुस्तकाकार देखने के लिये रसिकजन लालायित हैं।—सुधा-संपादक)

(१)

कैसी अनरीति, विपरीत रीति रावरी है,
मरम छिपाए जात, करम लिखाए जात ;
कैसे रसवादी हौ, सवाद-रस-सारौ नाहिं,
सरस बनाए जात, बिरस दिखाए जात।
अनल जराए जात, सजल बनाए जात,
गरल पियाए जात, अमिय चिखाए जात ;
मायामय मोह की महानता न मानै मन,
सलख दिखाए जात, अलख सिखाए जात।

(२)

ऊधो, सुनौ, हौं तो बावरी हौं वाही बावरे की,
सामरी सों जाके जड़-जंगम जुरयौ करै ;
कुहुक रचावै, नीति-नियति दिखावै उतै,
अलख बतावै, इतै उर मैं दुरयौ करै।
तोहिं भरमाइबे को ब्रह्म की बतावैं बात,
तन-मन-तारन मैं प्रान ह्वै फुरयौ करै ;
मारै ममता सों मोहिनी को मंत्र मोहन, तौ
जीवन - हलाहल मैं अमिय घुरयौ करै।

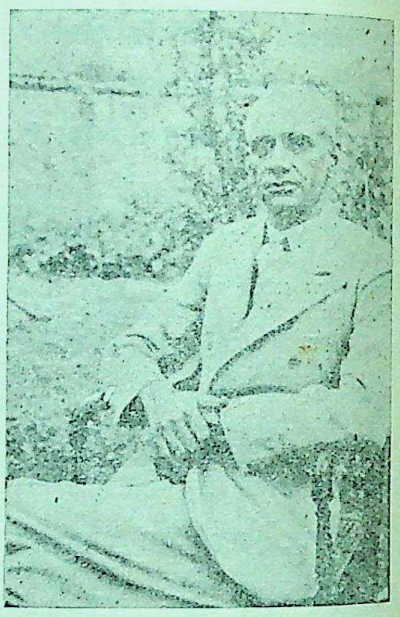

डॉ० रामप्रसाद त्रिपाठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत-पुस्तकों के

प्रमुख प्रकाशक और विक्रेता

वेद	उपनिषत्	पुराण
स्मृति	धर्मशास्त्र	कर्मकांड
व्याकरण	न्याय	वैशेषिक
सांख्य	योग	मीमांसा
वेदांत	कोष	काव्य
नाटक	नीति	अलंकार
ज्योतिष	आयुर्वेद	तंत्रशास्त्र

आदि-आदि

संसार के किसी भाग में प्रकाशित प्रत्येक विषय की प्राचीन और अर्वाचीन संस्कृत-पुस्तकें पत्र मिलते ही सेवा में उपस्थित की जा सकती हैं।

बड़ा सूचीपत्र निःशुल्क मँगाइए।

हमारी ग्रंथमालाएँ

१. चौखंबा-संस्कृत-ग्रंथमाला
२. बनारस-संस्कृत-ग्रंथमाला
३. काशी-संस्कृत-ग्रंथमाला
४. हरिदास-संस्कृत-ग्रंथमाला
५. विद्याविलास-प्रेस-ग्रंथमाला
६. मैथिल ग्रंथमाला
7. Chowkhamba Sanskrit Studies.

जयकृष्णदास हरिदास गुप्त, चौखंबा संस्कृत सीरीज़ ऑफ़िस
विद्याविलास-प्रेस, गोपालमंदिर, पो० बा० नं० ८
बनारस सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे हिंदी के प्रकाशन

केसरी-कीर्तन—पंजाब-शेर लाला लाजपतराय की सचित्र जीवनी। लालाजी के देश-सेवा तथा वीरता-पूर्ण जीवन पर प्रकाशन डालनेवाली, अनोखी कृति। लेखक, पं० हरिशंकर शर्मा। मू० ।।।)

सेवा-मार्ग—पं० श्रीकृष्णदत्त शर्मा पालीवाल, संस्थापक 'सैनिक' की प्रसिद्ध पुस्तक। देश और लोक-कल्याण के लिये कार्य करनेवालों का मार्ग-प्रदर्शन करनेवाली पुस्तक। मूल्य ।।।)

आश्चर्य-जनक घंटी—अत्यंत मनोरंजक कहानियों का संग्रह। लेखक, स्वामी सत्यदेव परिव्राजक। मूल्य ।=)

अमरीका के विद्यार्थी—लेखक, स्वामी सत्यदेव परिव्राजक। मूल्य ।)

अमरीका दिग्दर्शन—लेखक, स्वामी सत्यदेव परिव्राजक। मूल्य ।।।)

गद्यमालादर्श—लेखक, प्रो० जीवनशंकर याज्ञिक एम्० ए०, हिंदू-विश्वविद्यालय। हिंदी-गद्य-शैली पर अद्भुत रचना। मूल्य ।।।)

श्रीछत्रसाल दशक—भूषण कवि पर पं० हरिशंकर शर्मा की पूर्ण टीका। मूल्य ।)

शिवा बावनी—भूषण कवि-कृत। पं० हरिशंकर शर्मा की पूर्ण टीका-सहित। मूल्य ।)

मनोमंदिर—महात्मा गांधी के नैतिक, आर्थिक, सामाजिक विचारों का संग्रह। गुजराती से अनुवादित। मूल्य ।।)

कवितावली—गोस्वामी तुलसीदास-कृत। पं० ठाकुरप्रसाद शर्मा एम्० ए० की टीका। मूल्य १।)

शकुंतला-नाटक—राजा लक्ष्मणसिंह का प्रसिद्ध अनुवाद। मूल्य ।।।)

बेन-चरित्र अथवा राज परिवर्तन नाटक—लेखक, हिंदी के प्रसिद्ध नाटककार स्व० पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०। इसमें असहयोग की कार्य-क्षमता दिखलाई गई है। भट्टजी की उत्तम रचना। मूल्य १।)

सप्त-सुमन—ले०, हिंदू-पंच के यशस्वी संपादक स्व० पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा। सात हृदय-हारिणी मनोरंजक कहानियाँ। मूल्य १)

सचित्र योरपीय महाभारत। मूल्य ।=)

पता—रामप्रसाद ऐंड संस, प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा नया प्रकाशन

कल्याणी

श्रीजैनेंद्रकुमार का नया उपन्यास; मूल्य २)

शिवाजी

सर जदुनाथ सरकार का ऐतिहासिक ग्रंथ; मूल्य २)

हिंदी-साहित्य की भूमिका

पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी शास्त्राचार्य का नई खोजों से पूर्ण ग्रंथ; मूल्य २)

दत्ता

शरत्साहित्य का १८वाँ भाग शरत् बाबू का श्रेष्ठ उपन्यास; मूल्य ।।=)

शेष स्मृतियाँ

राजकुमार डॉ० रघुवीरसिंह के करुणरस-पूर्ण निबंध; मूल्य २)

रोमांचक रूस में

डॉ० सत्यनारायण के आँखों देखे रूस का उपन्यासमय चित्रण; मूल्य २)

दो फूल

श्रीमती सत्यवती मल्लिक की मार्मिक कहानियाँ; मूल्य लगभग १)

१. राजकुमार सागर
२. बच्चों का हितोपदेश
३. अँगूठी का मुकदमा

श्रीसुदर्शन की तीन बालोपयोगी पुस्तकें; मूल्य आठ-आठ आने।

चार कहानियाँ

पनघट

श्रीसुदर्शन की बिलकुल नई कहानियों का संग्रह; मूल्य २), १।।)

सुमनांजलि

कविवर अनूपजी की ओजस्विनी कविताएँ; मूल्य २)

झंकार

श्रीसुदर्शन के सुंदर गीतों का संग्रह; मूल्य ।।)

शरत्साहित्य

अठारह भाग छप चुके हैं। प्रत्येक भाग का मूल्य ।।=), ।।)

नोट—अपने समीप के बुकसेलरों से खरीदिए। अन्यथा हमें लिखिए। बड़ा सूचीपत्र मँगाइए।

संचालक—हिंदी-ग्रंथ-रत्नाकर-कार्यालय

हीराबाग, गिरगाँव, बंबई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुशखबरी ! खुशखबरी !!

पूर्ण रूप से मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य प्राकृतिक विधियों द्वारा

प्राकृतिक स्वास्थ्यालय कुहनी-आश्रम, बिजनौर

में आकर प्राप्त कीजिए, जिसको श्रोत्रिय कृष्णस्वरूपजी बी० ए०, एल्-एल्० बी० लूई कुहनी-रचित पुस्तकों "आरोग्यता प्राप्त करने की नवीन विद्या, मुखाकृति विज्ञान, मैं आरोग्य हूँ या रोगी" के हिंदी व उर्दू में अनुवादकर्ता व इस प्रणाली के भारतवर्ष में प्रथम पथ-प्रदर्शक ने सन् १९२६ ई० में सर्व जनता के लाभार्थ स्थापित किया।

कुहनी-आश्रम उत्तरी भारत में पुरुष, स्त्री और बच्चों के सब प्रकार के नवीन व पुराने रोगों को बिना ओषधि व चीर-फाड़ के, प्रकृति के साधारण नियमों का पालन करते हुए—जैसे शुद्ध प्राकृतिक भोजन, ठंडे जल के स्नान, सूर्य व भाप-स्नान तथा मिट्टी की पट्टी व शारीरिक व्यायाम के द्वारा रोगों की रोक-थाम व स्थायी रूप से नीरोग करने में श्रेष्ठ है।

रोगों की दशा का सावधानी के साथ निदान विशेषकर मुखाकृति विज्ञान द्वारा रोग का निर्णय करने के पश्चात् प्रत्येक रोगी की प्राकृतिक चिकित्सा-विधि निश्चय की जाती है, और रोगानुसार प्राकृतिक साधनों का उपयोग किया जाता है। असाध्य रोगियों को छोड़कर सब दशाओं में रोगियों को शीघ्र ही अपनी मानसिक व शारीरिक दशा में संपूर्ण रूप से अनुकूल वातावरण में रहकर निस्संदेह उन्नति होगी।

आश्रम नगर से बाहर मनोहर स्थान में स्थित है, और प्रकृति के प्रेमियों के लिये विशेषरूप से लाभकारी व सुखदायी है। उपर्युक्त पुस्तकों का मूल्य

		अजिल्द	सजिल्द
(१)	आरोग्यता प्राप्त करने की नवीन विद्या (हिंदी या उर्दू)—	४॥)	५)
(२)	मुखाकृति-विज्ञान (हिंदी या उर्दू)—	४)	४)
(३)	मैं आरोग्य हूँ या रोगी (हिंदी या उर्दू)—	।)	
(४)	Treatment of Influenza: (अँगरेजी)—	=)	
(५)	बच्चों का पालन (हिंदी)—	।)	

नोट—डाक-खर्च और पैकिंग आदि खरीददार के ज़िम्मे होंगे। स्नान के टब, स्टूल, कोच, स्पिरिट, लैंप्स आदि सर्व सामान, जो चिकित्सा के लिये आवश्यक है, हमारे यहाँ से उचित मूल्य पर मिल सकता है।

विशेष जानकारी के लिये मैनेजर से पत्र-व्यवहार करें।

मैनेजर—कुहानी-आश्रम,

बिजनौर (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा-चित्रावली

वाइसराय की कोठी पर लड़कियों का प्रदर्शन

[नई दिल्ली में, लेडी होप की संरक्षता में, वाइसराय महोदय की कोठी पर लड़कियाँ मार्च कर रही हैं ।]

शुभ विवाह

[डॉ० संतप्रसाद टंडन एम्० एस्-सी०, डी० फ़िल्०, लेक्चरर रसायन-विभाग, प्रयाग-विश्वविद्यालय और कुमारी रानी सेठ बी० ए०, दोनो का विवाह देहरादून में, बहुत साधारण रीति से, मातृभाषा में, माननीय बाबू पुरुषोत्तमदासजी टंडन ने कराया । डॉ० संतप्रसाद टंडनजी के तृतीय पुत्र हैं, और सुश्री रानी सेठ बाबू महाशंकर सेठ, ऐडवोकेट, देहरादून की बड़ी पुत्री ।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमारी पद्मा वाचस्पति बी० ए० और श्रीब्रह्मदत्त लखनपाल बी० कॉम०

[यह विवाह अभी। हाल ही में, दिल्ली में, हुआ है। इसमें विशेषता यह थी कि जाति-पाँति का कोई ख़याल नहीं किया गया, और शुद्ध खादी का प्रयोग हुआ। विवाह हिंदी में हुआ। चिरंजीविनी सुश्री पद्मा वाचस्पति हमारे मान्य मित्र प्रो० इंद्र विद्यावाचस्पति की सुपुत्री हैं।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० गंगाकृष्णजी दवे और कुमारी स्नेहलता हिंदीभूषण

[कुमारीजी पंजाब के सुप्रसिद्ध हिंदी-लेखक श्रीउदयशंकरजी भट्ट की सुपुत्री हैं। आपका विवाह, हाल ही में, बनारस के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० गंगाकृष्णजी दवे के साथ, लाहौर में, हुआ है। हम दंपति की उन्नति के हार्दिक इच्छुक हैं।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंबई-प्रांतीय महिला-कॉन्फ्रेंस की कुछ सदस्याएँ
[इन्होंने, अभी हाल में, बंबई के टाउन हॉल में मीटिंग की ।]

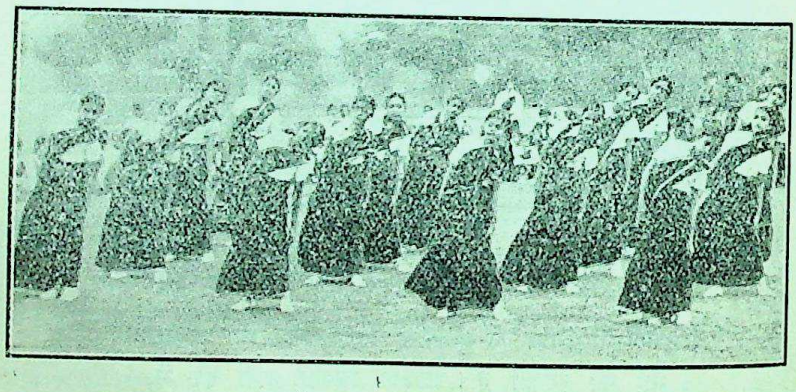

'गर्ल गाइड' की लड़कियाँ
[ये नई दिल्ली में, वाइसराय महोदय की कोठी पर, शारीरिक व्यायाम का प्रदर्शन कर रही हैं ।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चयन

१. विफल आशा

(१)

आशा और निराशा-पथ पर
स्वागत-दीप जलाकर सखि !

कुमारी निवेदिता मित्रा 'कनक'

बाट जोहती कब से प्रिय का
पीड़ा-थाल सजाकर सखि !

(२)

किधर, कहाँ, किस निर्जन वन में,
किस जीवन-सरिता के तीर—
खोजूँ कहाँ - कहाँ मैं उनको
आकुल-व्याकुल हृदय अधीर ?

(३)

इस उर की ठंडी आहों ने
उन्हें पुकारा कितनी बार ;
विरह-व्यथित इन युग नयनों से
निकल पड़े आँसू दो - चार !

(४)

अभिलाषा थी, इस जीवन में—
एक बार कर लूँ दर्शन ;
जीवन - संध्या से पहले ही
प्रीतम को दे दूँ जीवन !

कुमारी निवेदिता मित्रा 'कनक'

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. यह सब क्यों और कैसे हुआ ?

"युद्ध के बादल चारो तरफ़ मँडरा रहे हैं। और, कभी-कभी तो किसी ओर से घनघोर काली घटा इस तेज़ी से उठती मालूम होती है, जैसे एकदम बरसकर बस संसार की शांति और सुख, सब कुछ बहा ले जायगी। वस्तुतः विश्व की शांति आज ऐसी ही बालू की दीवार पर स्थित है।" ये शब्द मैंने आज से लगभग दो वर्ष पूर्व 'सरस्वती' में प्रकाशित अपने 'विनाश के पथ पर'-शीर्षक लेख में लिखे थे। आज इतना समय बीत जाने पर इन शब्दों का महत्त्व और मूल्य और भी बढ़ गया है। उपर्युक्त शब्दों में आनेवाले जिस महासंकट की ओर मैंने संकेत किया था, वह आज प्रत्यक्ष रूप में हमारे सम्मुख उपस्थित है।

तब से अब तक योरप विनाश-पथ का अनुगमन कर अपना जितना अनिष्ट कर चुका है, वह प्रकट ही है। कुछ समय पूर्व जो चिनगारी तुच्छ और साधारण-सी प्रतीत होती थी, वह आज प्रचंड और भयंकर दावानल के रूप में संसार का सब कुछ स्वाहा कर दिया चाहती है। सारा योरप तो इस आग की लपेट में आया हुआ है ही, योरप के बाहर और दूरस्थ देश भी अब इस आग की भीषण लपटों से सुरक्षित नहीं रहे। वर्तमान प्रलयकारी युद्ध में धन और जन का जितना संहार हो चुका है, वह एकबारगी रोंगटे खड़े कर देनेवाला है। मनुष्यत्व आज सचमुच पिशाच-रूप में तांडव-नृत्य करने लगा है, और सभ्यता तथा संस्कृति नग्नावस्था में नाच-नाचकर अपना जंगली रूप दिखा रही हैं।

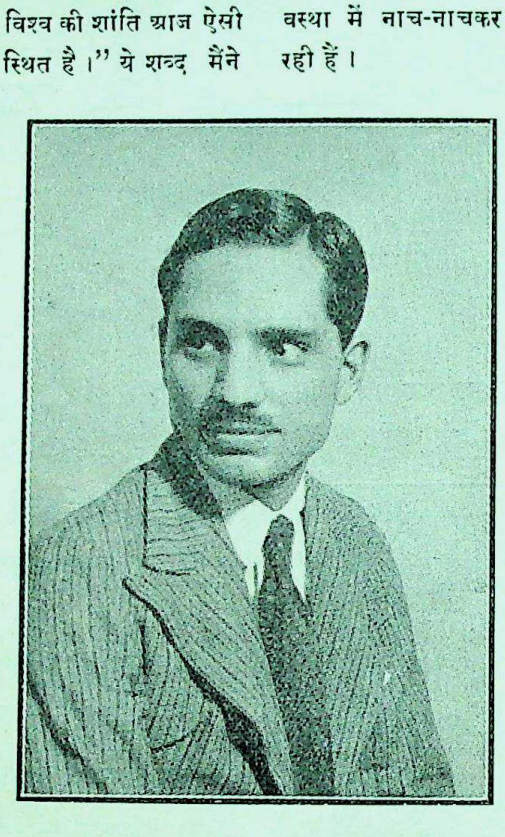

श्रीएम्० पी० केदार आई० डी० डी०

अनायास यह प्रश्न उपस्थित होता है कि यह सब क्यों और कैसे हुआ ? इसे दैवी प्रकोप और वैज्ञानिक चमत्कार कह देने और समझ लेने-मात्र से ही समस्या का संतोषप्रद हल नहीं हो जाता। अपने जिस लेख का मैंने ऊपर उल्लेख किया है, उसी में मैंने वर्तमान महायुद्ध आरंभ होने से बहुत पहले स्थिति की भयंकरता पर प्रकाश डालते हुए जताया था कि जर्मनी प्रतिहिंसा की आग में जलकर विनाश के महाप्रलय-कांड की रचना में दत्तचित्त होकर लगा है। वर्षों तक जो आग भीतर-ही-भीतर सुलगती रही, उसका ज्वालामुखी के रूप में स्फुटित होना स्वाभाविक था, और युद्ध की जो तैयारियाँ अंदर-ही-अंदर चिरकाल से हो रही थीं, उनका एक दिन क्रियात्मक रूप में प्रकट होना अनिवार्य था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्चर्य है, यह सब कुछ देखते हुए भी इँगलैंड और अन्य मित्र-राष्ट्र आँखें मूँदे पड़े रहे, और जब तक बला सिर पर नहीं आ पहुँची, इनसे कुछ भी करते-धरते नहीं बना। पिछले कुछ ही महीनों में जो कुछ हुआ है, और योरप के नक़्शे पर जिस तीव्र गति से रंग बदले हैं, वह आश्चर्य-जनक होते हुए भी बिना कारण और एकाएक नहीं हो गया है। हिटलर के कार्य-क्रम की गुप्त डायरी की बात चाहे असत्य ही हो, परंतु जब से उसने जर्मनी का राज्य-भार सँभाला, तब से उसके उद्देश्य और उद्योग एक खुली हुई पुस्तक के रूप में संसार के सामने विद्यमान रहे हैं।

हिटलर ने कब कौन-सा पग उठाया, और जर्मन-साम्राज्य के विस्तार के लिये क्या-क्या प्रयत्न किए, इनका संक्षिप्त क्रम-पूर्वक ब्योरा नीचे दिया जाता है—

(१) ३० जनवरी, १९३३—हिटलर जर्मनी का चांसलर बना।

(२) २१ ऑक्टोबर, १९३३—लीग ऑफ़ नेशन्स से संबंध-विच्छेद किया।

(३) ३० जून, १९३४—अपने ही देश में विश्वासघातकों को गोली का निशाना बनाया।

(४) १३ जनवरी, १९३५—सार का इलाक़ा हस्तगत किया।

(५) १६ मार्च, १९३५—वार्सेल्ज़ संधि की शर्तें तोड़ दीं।

(६) ७ मार्च, १९३६—राइनलैंड में जर्मन-सेना भेजी।

(७) जुलाई, १९३६—स्पेन के गृह-युद्ध में जनरल फ़्रांको को सहायता दी।

(८) २४ ऑक्टोबर, १९३६—बर्लिन और रोम में संधि स्थापित की।

(९) १२ मार्च, १९३८—आस्ट्रिया पर अधिकार किया।

(१०) १ ऑक्टोबर, १९३८—सूडेटन का इलाक़ा ले लिया।

(११) १४ मार्च, १९३९—ज़ेकोस्लोवेकिया के टुकड़े-टुकड़े किए।

(१२) २२ मार्च, १९३९—मेमेल पर क़ब्ज़ा जमाया।

(१३) २३ अगस्त, १९३९—रूस के साथ संधि की।

(१४) सितंबर, १९३९—पोलैंड को जीत-कर उसे रूस के साथ बाँट लिया।

(१५) ६ ऑक्टोबर, १९३९—मित्र-राष्ट्रों को युद्ध के लिये ललकारा।

(१६) एप्रिल, १९४०—नारवे और डेनमार्क पर धावा करके उन पर क़ब्ज़ा कर लिया।

(१७) मई, १९४०—हालैंड और बेलजियम पर आक्रमण किया।

(१८) १ जून, १९४०—फ़्लैंडर्स पर विजय पाई।

(१९) १० जून, १९४०—इटली को अपनी सहायता के लिये साथ मिलाया।

(२०) ११ जून, १९४०—पेरिस पर आक्रमण और उस पर अधिकार किया।

(२१) २२ जून, १९४०—फ़्रांस को आत्म-समर्पण करने के लिये बाधित किया।

(२२) जुलाई, १९४०—अपनी सारी शक्ति से इँगलैंड के साथ युद्ध कर रहा है।

ऊपर के वर्णन से इतना भली भाँति विदित होता है कि हिटलर के आज तक के सब प्रयत्नों और कार्यों में एक शृंखला और व्यवस्था रही है। यह कहना अथवा समझ लेना कि सब कुछ अपने आप और एकाएक हो गया, केवल अपने आप को धोखा देना है। इँगलैंड अब तक इसी धोखे का शिकार रहा, और उसके नेत्र उस समय खुले, जब पानी उसकी कमर से भी ऊपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँच गया। हिटलरिज़्म की जिस भयंकर बाढ़ में बहुत-से मित्र-राष्ट्र एक-एक कर तृण-रूप में बह गए हैं, और जिसके प्रबल प्रवाह की रोक-थाम इँगलैंड के लिये भी आज एक बड़ी भारी विकट समस्या बन गई है, उसका तारतम्य आज से छ-सात वर्ष पूर्व हिटलर के प्रारंभिक प्रयत्नों के साथ सहज में ही मिलाया जा सकता है। कौन जाने, इस लंबी अवधि में हिटलर ने कितनी रातें अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को सफल बनाने के लिये जागकर काटी हों। और, आश्चर्य होता है, इसी समय मित्र-राष्ट्रों ने दिन भी आलस्य-निद्रा में विलीन रहकर खो दिए!

रहा प्रश्न कि ऐसा हुआ क्यों? इस संबंध में भी मैंने अपने 'सरस्वती'-वाले लेख में ही उल्लेख किया था कि जर्मनी के ऊपर पिछले महायुद्ध में भारी तावान न डाला गया होता, और उसे अपना राष्ट्रीय अस्तित्व मिटाने के लिये बाध्य न किया जाता, तो कदाचित् पीछे अकेले इँगलैंड को ही बारह वर्ष में प्राप्त हुई तावान की रक़म से कई गुना अधिक जुर्माना युद्ध की तैयारियों पर ख़र्च के रूप में न देना पड़ता। मैंने उस लेख में लिखा था—"जब तक इँगलैंड का बस चला, उसने जर्मनी से अंतिम पाई तक प्राप्त करने का भरसक प्रयत्न किया। आख़िर जब जर्मनी ने तंग आए हुए काले नाग की तरह भयंकर फुफकार मारी, तब इँगलैंड भीगी बिल्ली की तरह बैठ रहा।"

कहना न होगा, इँगलैंड की नीति प्रारंभ से ही दूषित और निर्बलता की सूचक रही है। ज़ेको-स्लोवेकिया, पोलैंड आदि की घटनाएँ इस तथ्य का प्रत्यक्ष रूप में समर्थन करती हैं। इँगलैंड निर्बलों के पक्ष का दावा करते हुए भी उनकी यथोचित सहायता करने में असमर्थ रहा। सच तो यह है, इँगलैंड ने ऐसी नीति का अनुकरण करके अपनी साख को ही भारी धक्का नहीं पहुँचाया, वरन् अपनी इस अदूरदर्शिता द्वारा जर्मनी के लिये अपनी शक्ति बढ़ाने और अपार बल संचित करने का भी सुअवसर उपलब्ध किया। उसी का कड़ुवा फल आज उसके सामने आ रहा है।

आगे क्या होगा, यह तो किसी के लिये भी इस समय निश्चित रूप से कहना कठिन है। परंतु इसमें कुछ भी संदेह नहीं कि जो कुछ अब तक हुआ है, वह अपना एक महत्त्व-पूर्ण इतिहास रखता है, और उसकी नींव में कई एक ठोस कारण कार्य करते रहे हैं। यदि कोई आँखें रखता हुआ भी न देखे, और कान रखता हुआ भी न सुने, तो यह उसका अपना दुर्भाग्य समझना चाहिए।

एम्० पी० केदार (आई० डी० डी०)

× × ×

३. मिसेज़ शांतिलता आर० संत

आप महाराष्ट्र विदुषी हैं। हिंदू-विश्वविद्यालय की ग्रेजुएट हैं। आपने बीकानेर-राज्य में लगभग सात वर्ष तक लेडी एलजीन और श्रीमहारानी-जी-नोबल्स-गर्ल्स स्कूल में मुख्याध्यापिका का

मिसेज़ शांतिलता आर० संत

काम किया, राजपूत-सरदार तथा जागीरदारों की लड़कियों में विद्या का प्रेम बढ़ाया, और उक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्त्व-पूर्ण स्कूल की काफ़ी उन्नति की। जहाँ एक लड़की भी पास नहीं होती थी, वहाँ गत ४-५ वर्ष से 'शत-प्रतिशत' लड़कियाँ पास हो रही हैं। गत वर्ष तो एक लड़की प्रथम श्रेणी में पास होकर राजपूताने में फ़र्स्ट और यू० पी० में पाँचवीं आई। आपके काम और स्कूल की उन्नति से श्रीमती श्रीमहारानीजी साहबा और लड़कियों के मा-बाप तथा सब जनता बहुत प्रसन्न थी। आपको आपके काम से प्रसन्न होकर श्रीगंगासिंह-जी-गोल्डन-जुबली-मेडल भी प्रदान किया गया। सब रानी-महारानियों ने जब-जब इस स्कूल को भेंट दी, तब-तब अपनी प्रसन्नता व्यक्त की, और आपके परिश्रम तथा स्कूल के इंतज़ाम की तारीफ़ की। आप ही वह स्त्री हैं, जिन्होंने बीकानेर-राज्य में ऐसे महत्त्व-पूर्ण पद—हेडमिस्ट्रेस नोबल्स-गर्ल्स स्कूल—पर इतने वर्ष तक काम किया। ज़िम्मेवारी तथा स्कूल का नाम और काम देखते हुए आपका वेतन बहुत कम था। मिस्टर संत के भी स्टेट-हाईस्कूल में नौकर होने के कारण दोनो ही राज्य की सेवा बड़े प्रेम और सावधानता-पूर्वक करते थे।

लेकिन आपकी सज्जनता, लोक-प्रियता, स्कूल की उन्नति और आपके काम से श्रीमहारानीजी तथा श्रीमाजी साहबा का प्रसन्न और संतुष्ट होना ही आपके लिये घातक सिद्ध हुआ। मि० तुलानी ने, जो गत जून में ही डाइरेक्टर बनाए गए, आपके सरल और सच्चे स्वभाव का दुरुपयोग किया। आपने श्रीमाजी साहबा और श्रीमहा-रानीजी साहबा की इच्छा, एक अत्यंत सामान्य मामले में, शिक्षा-विभाग के डाइरेक्टर मि० तुलानी को प्राइवेट लिखकर और ज़बानी भी बतला दी। मि० तुलानी ने इस बात को श्रीमान् दीवान साहब द्वारा हिज़हाइनेस तक इस ढंग से पहुँचाया कि "जब राजघराने से कोई सिफ़ारिश आती है, तो हम क्या करें? मानें या न मानें?" साथ ही यह भी झूठ जोड़ दिया कि मिसेज़ संत श्रीमहारानीजी साहबा की तरफ़ से सिफ़ारिशें पेश और राज्य-काज में दस्तंदाज़ी करती रहती हैं। मि० तुलानी ने मिस्टर संत से भी दस्तीख़ा माँगा, लेकिन उन्होंने नहीं दिया।

मि० तुलानी (डाइरेक्टर) की इस कुटिल नीति से आपकी आर्थिक और कौटुंबिक बहुत हानि हुई है, और राज्य तथा स्कूल का भी एक अच्छी, ईमानदार स्त्री को झूठा इलज़ाम लगाकर निकालने से बहुत बड़ा नुक़सान हुआ है। मि० तुलानी मिसेज़ अग्रवाल को, जो मिसेज़ संत की असिस्टेंट थीं, इस ढंग से हेडमिस्ट्रेस बनाना चाहते थे।

आप आजकल अजमेर के श्रीसावित्री-गर्ल्स हाईस्कूल में काम करती हैं। आप भविष्य में राजपूत-जागीरदारों और सरदारों की लड़कियों के लिये राजपूताना ऐंड सेंट्रल इंडिया नोबल्स-गर्ल्स हाईस्कूल नाम की संस्था अजमेर में स्थापित करने की योजना कर रही हैं। परमेश्वर आपको इस कार्य में पूर्ण यश दे।

एक सज्जन

× × ×

४. मधुशाला

(१)

हिंदी-वाणी के मंदिर में
खुलीं चतुर्दिक मदशाला;
वीणा की झंकार हटाकर
ठनका प्याले से प्याला।
पुस्तक तजकर बनीं भारती
निज भक्तों की मधुबाला;
कविता में षड्ऋतु मदिरा का
श्रावण-सा बरसा डाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२)

झूम-झूमकर, अधर सिक्त कर
आईं रूपसि कवि-बाला,
नीलकंठ के सदृश जिन्होंने
भर आकंठ पिया प्याला।
यौवन-मद उभरा उरोज में
तप्त स्वर्ण के रँगवाला,
गजलक्ष्मी पर उलटे मानो
युगल कलश, मदिरा-प्याला।

(३)

जननी शिशु को बना रही अब
जन्म-जन्म का मतवाला—
मदालसा की ज्ञान-घुटी-सा
पिला - पिलाकर मद - हाला।
क्षत्राणी सब वीर-दर्प में
गातीं मदिरा का आल्हा;
नित्य ललाइन झूम-झूमकर
प्रियतम से कहती 'ला-ला'!

(४)

"मदिरा-मदिरा" मुरली बोली,
मद में झूली वनमाला;
रोम-रोम राधा ने अपने
अंग-अंग से मद ढाला!
लिखी भागवत व्यासदेव ने
पी - पी प्याले - पर - प्याला;
शरद्-रास षोडश सहस्र का
हुआ श्याम की मधुशाला।

(५)

मदिरा अर्पण, मदिरा हवि है,
मद ही हवन, हुताशन है;
मदिरामय हो गए कवीश्वर,
सब खोया अपनापन है।
ज्ञानी के भी दर्शन में यह
नूतन परिवर्तन युगपत्—
कभी ब्रह्ममय होगा; अब तो—
'सर्वं मदिरामयं जगत्'।

पंडित श्यामाचरणदत्त पंत

(६)

आज हिमालय मदिरालय हो,
सुरसरि हो मद का नाला;
फेन उठे, तूफ़ान उठे ज्यों
महासिंधु मद का प्याला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही कल्पना करता रहता
कवि घर में बैठा-ठाला—
मद पीने को कनक चाहिए,
बिना पिए ही मतवाला !

(७)

मदिरा स्नान, आचमन मदिरा,
मदिरा जप, मदिरा माला ;
मदिरा मंत्र, धारणा मदिरा,
ध्यान बना मद का प्याला।
शून्य पुजारी - पंडित बुनता
यही विचारों का जाला—
प्रतिमा पीपा हो जाए, तो
मंदिर होगा मधुशाला।

❀ ❀ ❀

बाला, प्याला, मधुशाला का
जब सबने रगड़ा पाला,
खिन्न हुआ "श्यामा", उसने भी
किया लेखनी-मुख काला।

श्यामाचरणदत्त पंत

× × ×

५. अछूतों को क्या करना चाहिए ?

अछूत बंधुओ (क्षमा करना, मैं आपको किसी बुरे भाव से अछूत नहीं कह रहा हूँ—और कोई उचित शब्द न मिलने से ही ऐसा कहना पड़ रहा है), आज मैं आपके हित की दो-एक बातें कहना चाहता हूँ, और आशा करता हूँ, आप उन पर विचार करेंगे। कुछ सुधारक कहते हैं, पूर्व-जन्म के पाप-कर्मों के कारण आपको परमेश्वर ने अस्पृश्य एवं कंगाल उत्पन्न किया है। आप इस समय मैले रहते हैं, गंदे काम करते हैं, आपका रहन-सहन और खान-पान खराब है, आपमें झूठ बोलने और सुरा-पान की लत है, इसलिये आप अछूत हैं। यदि आप पाप-कर्म छोड़ दें, और साफ़-सुथरे रहने लगें, तो आपका अछूतपन दूर हो जाय। इसलिये उन लोगों का सारा ज़ोर आप लोगों को लिखाने-पढ़ाने, सफ़ाई सिखाने और चमड़े आदि का काम छुड़ाने पर है। परंतु मैं समझता हूँ, आप अपने पाप कर्मों के कारण अछूत नहीं, वरन् उच्च वर्ण के लोगों ने आपको ऐसी परिस्थितियों में रहने पर बाध्य कर रक्खा है, जिनसे आप न साफ़-सुथरे रह सकते, न अच्छा खा-पहन सकते और न श्रीमान् बन सकते हैं। झूठ न बोलना, मदिरा न पीना, साफ़ रहना और लिखना-पढ़ना बड़ी अच्छी बातें हैं। ये सबमें होनी चाहिए। परंतु इनसे आपकी जाति की अस्पृश्यता एवं दरिद्रता दूर नहीं हो सकती। इससे आठ करोड़ अछूतों में से थोड़े-से भाइयों की दशा कदाचित् कुछ अच्छी हो जाय, दस-पाँच को कदाचित् सरकारी नौकरियाँ मिल जायँ, परंतु करोड़ों भाइयों का, जो देहात में रहते हैं, जिन्हें कोई छूता नहीं, जिन्हें कुएँ से पानी नहीं भरने दिया जाता, जिनके हाथ से लेकर कोई खाता नहीं, अछूतपन इस प्रकार दूर नहीं हो सकता। सारी जाति को अस्पृश्यता के गहरे गर्त से निकालकर बराबरी के सामाजिक एवं राजनीतिक अधिकार दिलाने के लिये आवश्यक है कि उस परिस्थिति को बदल दिया जाय, जिसमें आप रहते हैं। इसके लिये नीचे-लिखी बातें करनी चाहिए—

देहात में कुओं से पानी भरने, स्कूलों में दूसरे सवर्ण हिंदू-बच्चों के साथ इकट्ठा पढ़ने, ताँगा-इक्का चलाने, नगरों में तरकारी-भाजी, दूध-घी बेचने इत्यादि की एक मुहिम जारी करनी चाहिए। ऊँचे वर्ण के हिंदू इसका विरोध अवश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेंगे, और कदाचित् मार-पीट तथा मुक़द्दमेबाज़ी तक नौबत आए, परंतु इससे डरना नहीं चाहिए।

इस समय छूतछात के कारण आप हलवाई, बज़ाज़, पंसारी और आटा-दाल की दूकान खोलकर, दूध-घी, तरकारी-भाजी बेचकर, वकील-डॉक्टर बनकर, घोड़ा-गाड़ी और ताँगा चलाकर अथवा होटल बनाकर पैसा नहीं कमा सकते। यदि अस्पृश्यता मिट जाय, तो आपके लिये ये सब काम खुल जायँ, और आपकी श्रेणी के बहुत-से लोगों की दशा अच्छी हो जाय। सरकारी नौकरियाँ सब लोगों को नहीं मिल सकतीं, इसलिये दस-पाँच मनुष्यों के नौकर हो जाने से समूची जाति ऊँची नहीं उठ सकती। मेरी धारणा है, यदि आप सामाजिक समता के लिये मुहिम जारी करेंगे, तो अनेक नाम-मात्र ऊँची जाति के हिंदू भी इस पुण्य कार्य में आपकी सहायता करेंगे। यदि आप केवल सरकारी नौकरियों और एसेंबली की सीटें प्राप्त करने में ही लगे रहेंगे, और इसी में अपनी सारी शक्ति व्यय कर देंगे, तो इससे केवल कतिपय व्यक्तियों की दशा कुछ अच्छी हो जाय, तो हो जाय, परंतु जाति के रूप में आप लोगों को कोई स्थायी लाभ न होगा। इससे मेरा अभिप्राय यह नहीं कि आप सरकारी नौकरियों और एसेंबली की सीटों के लिये यत्न न करें। वे तो आपको मिलनी ही चाहिए। परंतु मैं चाहता हूँ, इनके साथ आपको सामाजिक समता प्राप्त करने के लिये भी पूरा प्रयत्न करना चाहिए।

हिंदुओं में अछूतों से घृणा करने की एक रूढ़ि-सी हो गई है। पुराना स्वभाव, सुरा-पान की लत की भाँति, कोमल शब्दों और उपदेशों से नहीं छूटा करता। जब आप लोगों में आत्मसम्मान—अपनी प्रतिष्ठा आप कराने—का भाव उत्पन्न हो जायगा, दस-पाँच जगह आप अपने अपमान का बदला चुकाने के लिये अपने प्राण तक देने को तैयार हो जायँगे, तभी हिंदू अनुभव करेंगे कि हमें अपनी छूतछात की बुरी लत छोड़ने की आवश्यकता है। मिन्नत करने और कोमल शब्दों में समझाने से उनके कान पर जूँ तक न रेंगेगी। आर्य-समाज, सिक्ख-पंथ और महात्मा गांधी का हरिजन-सेवक-संघ कई वर्ष से शांतिपूर्वक अछूतोद्धार का काम कर रहा है। बहुतेरे नवयुवक इनकी छात्र-वृत्तियों से अच्छे लिख-पढ़ भी गए हैं। परंतु उनका यह अछूतोद्धार पानी पर लकीर से बढ़कर स्थायी नहीं। देहात को जाने दीजिए, लाहौर, दिल्ली, प्रयाग प्रभृति बड़े नगरों में आज कोई पढ़ा-लिखा, साफ़-सुथरा चमार अथवा डोम अपने को चमार या डोम बताकर हिंदू-हलवाई के गिलास में दूध नहीं पी सकता, किसी हिंदू-भोजनालय में भोजन नहीं कर सकता, किसी हिंदू-कुएँ से पानी नहीं भर सकता। इससे क्या यह नहीं सिद्ध होता कि इनकी अछूतोद्धार की रीति व्यर्थ है?

अछूतपन स्वयं कोई रोग नहीं। यह जाति-भेद का ही कटु फल है। जैसा डॉ० आंबेदकर-जी का मत है, जब तक वर्ण-भेद है, तब तक अछूतपन दूर नहीं हो सकता। इसलिये आपको अपने अंदर से जाति-भेद मिटाने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए। यदि आप जाति-भेद न मिटाकर केवल सरकारी नौकरियों के लिये ही उद्योग करते रहेंगे, तो आपमें भी वैसा ही लड़ाई-झगड़ा और ईर्ष्या-द्वेष फैल जायगा, जैसा इस समय जाट और बनिए में, कायस्थ और भूमिहार में और ब्राह्मण एवं कहार में है। डोम और भंगी कहेंगे, सारी नौकरियाँ चमार लिए जा रहे हैं। मेघ बौरियों से लड़ेंगे। आप में भी वैसा ही ऊँच-नीच का भाव और फूट उत्पन्न हो जायगी, जैसी दूसरे सवर्ण हिंदुओं में है। इससे आपका संगठन न हो सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो लोग कहते हैं, अछूतोद्धार का ब्याह-शादी और खान-पान के साथ कोई संबंध नहीं, और आपको छात्र-वृत्तियाँ एवं नौकरियाँ देकर आपका मुँह बंद करना चाहते हैं, वे या तो रोग का मूल-कारण नहीं समझते या अपने स्वार्थ के लिये ऐसा कर रहे हैं। हिंदुओं और अछूतों का जब तक परस्पर रोटी-बेटी-संबंध न होगा, तब तक अछूतपन की जड़ नहीं कटेगी। इसीलिये लाहौर का जात-पाँत-तोड़क मंडल हिंदुओं में जाति-पाँति मिटाने पर ज़ोर देता है, ताकि जाति-भेद मिट जाने से अछूत और सवर्ण मिलकर एक हो सकें, और आपस में प्रेम-प्रीति उत्पन्न हो।

संतराम (बी० ए०)

× × ×

६. असहाया

किस प्रकार प्रिय, पद-पद्मों पर करूँ समर्पित फूल ?
आँखों में लहराती लहरें, रह-रह उठते शूल !

श्रीसुषमारानी 'मंजु'

छूट रहा है धीरे-धीरे जीवन-जलधि-किनारा ;
मैं एकाकी फिरूँ भटकती, तृण का नहीं सहारा।
यों मँझधार बही जाती हूँ भव-सागर में आह !
मानवता के नाते कोई बतलाएगा राह ?

सुषमारानी 'मंजु'

× × ×

७. कोई तुमको है भूल गया !

क्या ख़ुश होगी इसको सुनकर
वह देश छोड़कर दूर गया ;
दिल पर पत्थर रखकर कह दूँ,
कोई तुमको है भूल गया !

उस दिन पत्तों की छाया में
जब खड़ा हुआ था मैं छिपकर,
उन अलस कनखियों से देखा
तुमने रुककर, तुमने मुड़कर।
उन आँखों में आवाहन था,
उन आहों में अपनापन था,
फिर चली गईं पद-चिह्न छोड़,
कण-कण में प्यार अमर भरकर।
मैंने उनको झुककर देखा,
मैंने उनको छूकर देखा,
वे साफ़ कह रहे थे मुझसे—
कोई कुछ अपना भूल गया !
दिल पर पत्थर रखकर कह दूँ,
कोई तुमको है भूल गया !

मैंने होठों से चूम लिए
मोती-से कण, आँचल में भर।
नंगी दोनो बाहों से फिर
गोदी में छिपा लिए कसकर।
इनमें मेरा जीवन-संबल,
इनमें मेरा आदर्श विमल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं इसे न खोऊँगा मरकर,
मैं इसे निभाऊँगा मिटकर।
जब मुझे चूमती हों लपटें,
जब मेरी चिता धधकती हो,

श्रीचिरंजीलाल 'एकाकी'

[आपने नागरी-प्रचारिणी सभा (आगरा) के नवरस-दिवस पर बड़ी सफलता के साथ शृंगार-रस के देवता श्रीकृष्ण का अभिनय किया था।]

तब मेरे कण इस शव पर रख
कह देना—वह यह भूल गया!
दिल पर पत्थर रखकर कह दूँ,
कोई तुमको है भूल गया!
कभी-कभी जब ज्वलित चिता से
आँधी के झोंके आ - आकर
दूर उड़ा ले जाएँ मेरी
हड्डी की चिनगारी भरकर,
उठ-उठ गिरतीं अग्नि-शिखाएँ,
चट - चट करती भग्न शिराएँ,
उठती हुई जवानी मेरी
ख़ाक बने जब पल में जलकर,
भाग्य - सितारे! तुम्हीं टूटकर
कह देना तव जीवन-धन से—
वह भूल न पाया तुमको, पर
ख़ुद अपने को ही भूल गया!
दिल पर पत्थर रखकर कह दूँ—
कोई तुमको है भूल गया!
जग-रूढ़िवाद के बंधन से
अब है न ग्रस्त मेरा जीवन,
जग-रूढ़िवाद के क्रंदन से
अब है न त्रस्त मेरा जीवन।
यह नई सितारों की दुनिया,
यह जलनेवालों की दुनिया,
जलकर गिरना, जलकर मिटना,
बस इतना ही इनका जीवन।
मैं दूर गगन से देख रहा
तुम सुख से हो निज दुनिया में,
बस इतने से ही ख़ुश मैं भी
बाक़ी सब कुछ हूँ भूल गया!
दिल पर पत्थर रखकर कह दूँ—
कोई तुमको है भूल गया!

चिरंजीलाल 'एकाकी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

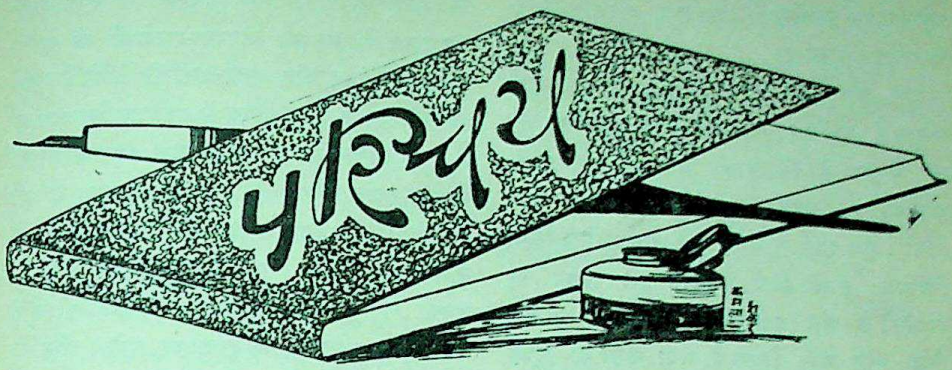

हल्दीघाटी (वीर - रस - प्रधान आदि - महाकाव्य)—लेखक, श्रीश्यामनारायण पांडेय ; प्रकाशक, इंडियन प्रेस, प्रयाग ; मूल्य २)

यह पुस्तक महाकाव्य शायद इसलिये है कि इसमें १७ सर्ग हैं, वीर-रस-प्रधान इसलिये कि इसमें मार-काट का वर्णन है, और आदि इसलिये कि लेखक ऐसा समझता है।

महाराणा प्रताप वीर-रस के अमर नायक हैं। जैसा उनका सरल जीवन, कठोर तपस्या और प्राण-पण से आदर्श का पालन था, वैसी ही सरलता और ओज उन पर लिखे गए काव्य में होना चाहिए। लेखक में कविजनोचित सहृदयता है, और उसने अपनी कविता से सिद्ध कर दिया है कि राणा का जीवन उसके अंतस्तल को भावावेग से कंपित कर चुका है। लेखक की शत्रु है महाकाव्य की परिपाटी और पुरानी वर्णन-शैली। बहुत-से महाकाव्य न तो महान् होते हैं, न उनमें उल्लेख-योग्य कोई कविता ही रहती है। महान् कवि होने के लिये महाकाव्य लिखना किसी युग में आवश्यक रहा हो, किंतु अब नहीं। इस पुस्तक के अतिरंजित वर्णनों को छाँटकर एक छोटी पुस्तक हल्दीघाटी पर लिखी जाती, तो अधिक प्रभावोत्पादक होती।

साधारण जनता में हिंदी-कविता को लोक-प्रिय बनाने की दृष्टि से यह पुस्तक अत्यंत महत्त्व-पूर्ण है। और, कोई कारण नहीं, जो इसी दृष्टि से कुछ और कविता-पुस्तकें न लिखी जायँ। भाषा और भाव का प्रवाह श्रोताओं पर तात्कालिक प्रभाव डालने में समर्थ है। नीचे हम कुछ पंक्तियाँ देते हैं, जिससे इस पुस्तक के गुण-दोषों का कुछ आभास मिल जायगा—

"घनघोर घटा के बीच चमक
तड़-तड़ नभ पर तड़िता तड़की ;
झन-झन असि की झनकार इधर,
कायर - दल की छाती धड़की।
अब देर न थी, वैरी - वन में
दावानल के सम छूट पड़े ;
इस तरह वीर झपटे उन पर,
मानो हरि मृग पर टूट पड़े।
मरने - कटने की बान रही
पुश्तैनी, इससे आह न की ;
प्राणों की रंचक चाह न की,
तोपों की भी परवाह न की।"

× × ×

भारतेर शिल्प-कथा (स्थापत्य, भास्कर्य ओ चित्रकला) [बँगला-भाषा में]—लेखक, श्री-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असितकुमार हालदार ; प्रकाशक, कलकत्ता-विश्व-विद्यालय ; मूल्य १)

इस पुस्तक के तीन अध्याय २१८ पृष्ठों में समाप्त हैं, इसलिये यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि इसमें भारतवर्ष की शिल्प-कलाओं का बहुत ही संक्षिप्त इतिहास दिया होगा। इस दृष्टि से बँगला के जानकारों के लिये, विशेषकर उनके लिये, जिन्होंने इस विषय पर अँगरेज़ी के ग्रंथ नहीं देखे, पुस्तक उपयोगी है। शैली स्पष्ट और रोचक है, तथा कला की सूक्ष्म विवेचना की चिंता न कर पाठक को उसके मोटे रूप से परिचय कराती चलती है।

पुस्तक के रचयिता प्रसिद्ध शिल्पकार हैं, देश-विदेश में उनका यथेष्ट सम्मान है, इसलिये पुस्तक को साधारण कला के इतिहासों में स्थान देना अनुचित जान पड़ता है। पुरातन शिल्प-कलाओं से, विशेषकर चित्रकला से, हालदार महोदय का अति निकट का संबंध है। अतएव उन्होंने इस विषय पर अधिकार के साथ लिखा है। आधुनिक चित्रकला पर उनके क्या विचार हैं, यह जानने की पाठक को स्वाभाविक उत्कंठा होती है। परंतु उन्होंने इस विषय में इतना ही लिखना उचित समझा है कि श्रीअवनींद्रनाथ ठाकुर के शिष्य और अनुशिष्य भारत के विभिन्न प्रदेशों में शिल्पकला की शिक्षा दे रहे हैं। योरप के आधुनिक चित्रकारों से उनकी विशेष सहानुभूति नहीं मालूम पड़ती। स्यूर के आलिस्टों की उन्होंने निंदा की है। क्या ही अच्छा होता, यदि वह श्री-रवींद्रनाथ ठाकुर के चित्रों पर भी अपना मत प्रकाशित करते।

पुस्तक के अंत में भारतीय शिल्प की विशेषता दिखाते हुए उन्होंने लिखा है—"हमारे यहाँ जो चित्रों में मनुष्य का आकार-प्रकार यथार्थ-जैसा नहीं होता, उसका कारण यह है कि बौद्ध और हिंदू-धर्म के शिल्पकार निराकार की मूर्ति बना-कर दर्शक के मन को कल्पना-राज्य में ले जाना चाहते थे।" भारतीय कला-प्रणाली में जो रेखाओं की भंगिमाएँ हैं, उनके विषय में यही प्रचलित धारणा है, परंतु वास्तव में वह एक कला की प्रणाली है, जिसका संबंध विषय की आध्यात्मिकता से कम है, व्यंजना के माध्यम से अधिक। खजुराहो के प्रसिद्ध मंदिरों में जो बीभत्स मूर्तियाँ बनी हैं, उनकी वही प्रणाली है, परंतु शायद ही कोई उनमें आध्यात्मिकता का दावा कर सके। और तो और, अजंता के चित्रों का हो, जिनसे 'अजंता-कला' एक प्रणाली का नाम पड़ गया है, संबंध सदा आध्या-त्मिक विषय से नहीं है। इतिहास की दृष्टि से वे इस-लिये महत्त्व-पूर्ण हैं कि हमें तब के जीवन का चित्र मिलता है, शाश्वत, अपरिवर्तनशील आध्यात्मिकता का नहीं, और कला की दृष्टि से उनका महत्त्व रेखाओं के सुचारु विन्यास तथा स्थापत्य के लिये उचित अलंकार बनने में है। एक चित्र के विषय में, जिसमें राजा की सवारी और लोगों का कोला-हल दिखाया गया है, श्रीहालदार ने लिखा है—"छविर मध्ये एमन एकटा सजीव भाव एसेछे जे मने हच्छे जेन तादेर सोर-गोल शुनते पावा जाच्छे।" यह जीवन की सजीवता उसी प्रणाली द्वारा व्यक्त हुई है, जिसका संबंध आध्यात्मिकता से बताया गया है। और भी यथार्थ जीवन के निकट का चित्र मसाला पीसने और मिर्च लगने से आँखें मलने का है—"राजारानी सखी-परिजन-परिवेष्टित हये रान्नाघरे शिलनोड़ाय मशला पिषते गिये झाल लागाय चोख रगड़ाच्चेन एइ रूप आछे।" अजंता के चित्रों के विषय वास्तव में क्या हैं, यह अब भी निश्चित नहीं। ठाँव-कुठाँव में अध्यात्म की कल्पना का एक उदाहरण द्वारपाल को बुद्ध भगवान् समझने का है। श्रीहालदार ने लिखा है—"प्रत्येक गुहार द्वारेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाशे आँका विराट आकारेर देवद्वारीर छविटिके अनेके अवलोकितेश्वर बले अनुमान करेन।" इससे स्पष्ट है, भारतीय कला-प्रणाली की विशिष्टता का अभी संतोषप्रद कारण नहीं खोजा जा सका। वास्तव में अन्य देशों में भी, जहाँ चित्रकला किसी दूसरी कला की अलंकार मान्य रही है, चित्रों में इसी प्रकार यथार्थ की अनुरूपता का अभाव रहा है। इटली में राफाएल के पहले, जब चित्रकला का प्रधान उद्देश्य गिर्जाघरों को सजाना था, वहाँ की चित्रकला में एक दूसरे रूप में अस्वाभाविकता पाई जाती है। जब चित्रकला बहुत कुछ स्वतंत्र होने लगी थी, तब वह यथार्थ के निकट भी आ गई। परंतु बाद में ऐसे आंदोलन भी हुए, जब लोगों ने कला को फिर स्थापत्य के अंतर्गत अलंकार-रूप में लाना चाहा, और तब उन्होंने प्रचलित परिपाटी छोड़कर फिर पुरानी रीति चलाई। १९वीं सदी में विलियम मोरिस ने इँगलैंड में अपनी कंपनी से ऐसा ही काम करना शुरू किया था। उसके लिये अधिकांश चित्र उसका मित्र बर्नजोन्स बनाता था, और रेखाओं की भंगिमा की दृष्टि से उसके अनेक चित्र योरपीय शिल्प में अजंता-प्रणाली के सर्वाधिक निकट आते हैं। हमें यह देख आश्चर्य होता है कि भूमिका में लेखक ने पश्चिम के लिये मॉडल का आदर्श माना जाना लिखा है। ग्रीक मूर्तियों में भी वास्तव में अधिकांशतः मॉडल का आदर्श नहीं माना गया; चेष्टा की गई है कि उसे सौंदर्य के एक निश्चित साँचे में ढाला जाय। वहाँ के बर्तनों आदि पर जो चित्रकारी है, वह इस आदर्श के बहुधा विपरीत है। वहाँ कुछ-कुछ अजंता की तरह रेखा-भंगिमाओं की प्रधानता है, और यथार्थ की सजीवता। सभ्यता के विकास के साथ कला और साहित्य में, विभिन्न देशों में, समान युग आते हैं, और यहाँ तक मिलते-जुलते हैं कि लोगों को पारस्परिक आदान-प्रदान का संदेह होने लगता है। प्रत्येक देश तब अपनी मौलिकता सिद्ध करने की चेष्टा करता है। भारतीय शिल्प की प्रणाली यहाँ के लिये अनोखी नहीं है, परंतु योरप में शायद ही अजंता-जैसा स्थापत्य और चित्रकला का सामंजस्य हो सका हो। यह सामंजस्य उस कला की विशेषता का एक प्रधान कारण है।

'उमेश'

× × ×

अतृप्त मानव—लेखक, श्रीव्रजेंद्र गौड़; प्रकाशक, रत्न-मंदिर, उर्मिला-कार्यालय, लखनऊ; पृष्ठ ८०; मूल्य ॥) ।

श्रीव्रजेंद्र गौड़ की रस-भरी कहानियों का यह संग्रह लोग पसंद करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। 'जब मैं वापस आया', 'भाग्य-दुर्भाग्य', 'ग़लती' और 'विवाहिता' प्रगतिशील साहित्य के अंग-विशेष की पूर्ति में सहायक हैं। लेखक ने अपनी बारहो कहानियों में यथार्थ स्वाभाविकता चित्रित करने का सफल प्रयास किया है। कहानियाँ पढ़कर ऐसा जान पड़ता है कि शैली में अपनापन है, और पुस्तिका आधुनिक रुचि की वस्तु है।

भास्कर

× × ×

अग्रवाल-जाति का प्रामाणिक इतिहास—लेखक, श्रीगुलाबचंद 'एरन' हिंदी-साहित्य-विशारद; प्रकाशक, हिंदी-साहित्य-सदन, सनावद (इंदौर-राज्य); मूल्य १); पृष्ठ-संख्या १४२।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने अग्रवाल-जाति का इतिहास पुराने ढर्रे पर मिलनेवाली सामग्री को जोड़कर लिखा है, जैसा प्रायः अग्रवालों के भाट वर्णन किया करते हैं। लेखक ने ऐतिहासिक दृष्टि से सामग्री की छान-बीन नहीं की। इतिहास-विज्ञान की दृष्टि से पुस्तक बहुत सामान्य कोटि की है। इसे प्रामाणिक कहना सुसंगत नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक को इस संबंध में श्रीसत्यकेतुजी विद्यालंकार का लिखा हुआ अग्रवाल-जाति का इतिहास देखना चाहिए, जिसमें ऐतिहासिक पद्धति से अग्रवाल-जाति की उत्पत्ति, अग्रसेन और अगरोहा, इन पर प्रामाणिक विचार किया गया है। पिछले वर्ष भारतीय पुरातत्त्व-विभाग ने भी अगरोहे में खुदाई कराई थी। वहाँ एक प्राचीन जनपद के सिक्के मिले हैं, जिन पर 'अगोद के अगच जनपदस' लिखा है। इससे मालूम होता है कि अगरोहे का प्राचीन नाम अग्रोदक था। पंजाब में कर्नाल-ज़िले में जैसे पृथूदक से पीहोआ बन गया है, वैसे ही अग्रोदक का बिगड़ा हुआ रूप अगरोहा है। वस्तुतः आग्रेय-नामक जनपद का उल्लेख महाभारत में आया है। सिकंदर के आक्रमण के समय यह गणराज्य पूर्वी पंजाब में विद्यमान था। मालूम होता है, उसके बाद इस प्रदेश से अग्रवाल लोग पूर्व और पश्चिम की ओर फैलने लगे।

पुस्तक के उत्तरार्द्ध में, लगभग सत्तर पृष्ठों में, लेखक ने अग्रवाल-जाति के वर्तमान काल के प्रसिद्ध नेता, कार्यकर्ता और साहित्य-सेवियों का संक्षिप्त वर्णन किया है, जो रोचक और अच्छा है। पुस्तक के दूसरे संस्करण में लेखक को अपनी शैली को ऐतिहासिक पद्धति से संस्कृत करना चाहिए।

वासुदेवशरण अग्रवाल

× × ×

आनंद-शब्दावली—संकलनकर्ता, श्रीयुत रामचंद्र वर्मा; प्रकाशक, शिक्षा-विभाग, बिलासपुर-राज्य (शिमला); मूल्य लिखा नहीं; प्रकाशक से प्राप्य।

विद्यार्थियों की प्रारंभिक और माध्यमिक साहित्य-शिक्षा के उद्देश्य से इस शब्दावली की रचना की गई है। पाठ्य पुस्तकों में आनेवाले प्रायः सभी शब्दों का संकलन इसमें पाया जाता है, और विद्यार्थी एवं जन-साधारण भी इससे पर्याप्त लाभ उठा सकते हैं। इसके द्वारा उच्च कोटि की साहित्यिक, औद्योगिक और वैज्ञानिक विषयों की पुस्तकें पढ़ने और समझने में भी अच्छी सहायता मिल सकती है। सभी विषयों के प्रचलित हिंदी-शब्दों का इसमें संकलन किया गया है। संकलन-कर्ता और प्रकाशक का यह प्रयत्न सर्वथा मौलिक और उपयोगी सिद्ध होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

× × ×

गुड़-पाक-विज्ञान (सचित्र)—लेखक, श्रीमाता-प्रसादजी गुप्त; मुद्रक और प्रकाशक, श्रीकेसरीदास सेठ, नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ; मूल्य ॥) ; प्रकाशक से प्राप्य।

इस पुस्तक में गन्ना बोने की फ़सल, गन्ना पकने की पहचान, हर प्रकार के कोल्हू और गुड़ की भट्ठी तैयार करना, रस साफ़ करना, कारबन बनाना, गुड़ बनाना, मुरब्बा, चटनी, अचार, भाजी आदि संबंधी समस्त वस्तुओं के बनाने की सरल और उपयोगी विधियों का वर्णन है। घरेलू जीवन के अतिरिक्त व्यवसाय की दृष्टि से भी पुस्तक का विषय महत्त्व-पूर्ण है। लेखक का यह प्रयास निश्चय ही सराहनीय है।

'अरुण'

× × ×

उर्मिमाला—लेखिका, श्रीशांतिदेवी प्रभाकर; प्रकाशक, सद्ज्ञान-सदन, इंदौर; मूल्य ॥।), पृष्ठ-संख्या ८८।

प्रस्तुत पुस्तक में कवयित्रीजी की ४९ कविताएँ संगृहीत हैं। कविताओं को मैंने आद्योपांत पढ़ा। कविताओं से स्पष्टतया प्रकट है कि कवयित्रीजी के हृदय में कुछ कहने की लालसा है, और वह लालसा बहुत ही बलवती है। मेरी राय में यही काव्य की मधुमती भूमिका है। कुछ कविताएँ तो बहुत ही सुंदर बन पड़ी हैं। देखिए—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितना सुंदर लगता है
सखि, दुख में भी मुसकाना ;
आँखों के उमड़े आँसू
आँखों में ही पी जाना।

और भी—

नहीं सुलझ पाई यह उलझन ;
कवि बनना क्या है पागलपन ?
अरे, चाँदनी रातों में जब
जग सुख की निद्रा में सोता ;
अपने भावों के प्रदेश में
कवि अपना अपनापन खोता।
जग की पीड़ाओं के काँटे
अपने उर में स्वयं चुभोता ;
जग कहता है मतवालापन
कवि बनना क्या है पागलपन ?

ये पंक्तियाँ कितनी सुंदर हैं। इनमें यथार्थ में वास्तविकता पाई जाती है। आगे चलकर कवयित्री-जी का कोमल हृदय विश्व के छल-छिद्रमय व्यापार को सहन नहीं कर सकता। वह कह उठती हैं—

अरे, विश्व यह महास्वार्थी*
क्या जाने दुखियों की ज्वाला ?
इसकी आँखें देख सकेंगी
कभी न कवि के उर का छाला।

ये पंक्तियाँ सदा ही अमर हैं। 'मनोकामना', 'वे दिन', 'नारी-जीवन', 'सावन का गीत', 'कृषक के प्रति', 'कलिका के प्रति' आदि कविताएँ काफ़ी सुंदर हैं। परंतु कहीं-कहीं कुछ कविताओं में मात्राओं की गड़बड़ी खटकती है। संभव है, ऐसा प्रूफ़रीडरों की असावधानी के कारण हुआ हो। वैसे पुस्तक अच्छी है। सर्वथा संग्रहणीय है। हम ऐसी सुंदर पुस्तक लिखने के लिये श्रीशांतिदेवी प्रभाकर को हार्दिक बधाई देते और आशा करते हैं कि वह भविष्य में और भी अच्छी-अच्छी पुस्तकें पाठकों के समक्ष उपस्थित करेंगी।

गंगाप्रसाद 'कौशल'

× × ×

शैलबाला—मूल-लेखक, श्रीननीलाल वंद्योपाध्याय; अनुवादिका, श्रीसावित्रीदेवी ; प्रकाशक, पुस्तक-भवन, बनारस सिटी ; मूल्य १।)

इस पुस्तक की द्वितीयावृत्ति मेरे सामने है। यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें उस समय की स्थिति का ज़िक्र है, जब मुग़ल-साम्राज्य का एक तरह से अंत हो चुका था। पुस्तक का कथानक अत्यंत रोचक और उपदेश-पूर्ण है, यद्यपि भाषा की शैली सामयिक नहीं ज्ञात होती। पुस्तक पठनीय है।

श्रीदत्त अवस्थी

* इस चरण में एक मात्रा की कमी है। द्वितीय संस्करण में कवयित्री महोदया कुछ इस प्रकार कर दें, तो ठीक हो जाय—'अरे, महास्वार्थी दुनिया यह।'—सुधा-संपादक

सफ़ेद बालवालो ! ख़िज़ाब छोड़ो

हज़ारों आदमियों द्वारा परीक्षित तथा सत्य प्रमाणित ख़िज़ाब नहीं, एक तेल है। पका बाल खूँटी से काला पैदा होकर यदि स्थायी काला न रहेगा, तो दूना दाम वापस की शर्त। दाम ५) रु० ४० से ऊपर उमर के लिये ठीक।

बाल काला-स्टोर्स, पो० कन्सी सिमरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'सभा-विधान' (निबंध)—लेखक, श्रीविष्णुदत्त शुक्ल ; मूल्य २॥)

(२) 'कचहरी की भाषा और लिपि'—लेखक, श्रीचंद्रबली पांडेय एम्० ए० ; मूल्य ॥।)

(३) 'आहुति' (नाटक)—लेखक, श्री-पुरुषोत्तम-महादेव वैद्य सिनेमाग्राफ़र ; मूल्य ॥।)

(४) 'पुष्करिणी' (कहानियाँ)—लेखक, श्रीभगवतीप्रसाद वाजपेयी ; मूल्य १॥)

(५) 'कालिदास' (आलोचना)—लेखक, श्रीवासुदेव विष्णु मिराशी एम्० ए० ; मूल्य ३।)

(६) 'राजस्थानी वार्ता' (कहानियाँ)—लेखक, श्रीसूर्यकरण पारीक एम्० ए० ; मूल्य १॥)

(७) 'महात्मा गांधी ; अभिनंदन - ग्रंथ' (इतिहास)—लेखक, श्रीसर्वपल्ली राधाकृष्णन् ; मूल्य १॥)

(८) 'योरप की सरकारें' (राजनीतिक)—लेखक, श्रीचंद्रभाल जौहरी ; मूल्य ३)

(९) 'ईरान के सूफी कवि' (काव्य)—लेखक, श्रीबाँकेबिहारी-कन्हैयालाल ; मूल्य ४॥)

(१०) 'पूर्व की राष्ट्रीय जागृति' (इतिहास)—लेखक, श्रीशंकरसहाय सक्सेना ; मूल्य १॥)

(११) 'आदर्श बालक' (जीवनी)—लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री ; मूल्य ॥)

(१२) 'प्राण-दंड' (राजनीतिक)—लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री ; मूल्य १॥)

(१३) 'समाजवाद क्या है?' (राजनीतिक)—लेखक, प्रो० जगन्नाथप्रसाद मिश्र ; मूल्य १।)

(१४) 'बफाती चाचा' (नाटक)—लेखक, श्रीरामनरेश त्रिपाठी ; मूल्य ॥)

(१५) 'क्रांतिकारी हिटलर' (जीवनी)—लेखक, श्रीआदित्यकुमार वाजपेयी एम्० ए० ; मूल्य १।)

(१६) 'आम' (कृषि)—लेखक, सैयद मोहम्मद मंज़ूरअली रिज़वी ; मूल्य १॥)

(१७) 'आम का व्यापार' (कृषि)—लेखक, उपर्युक्त ; मूल्य ॥=)

(१८) 'आम की रक्षा' (कृषि)—लेखक, उपर्युक्त ; मूल्य ॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

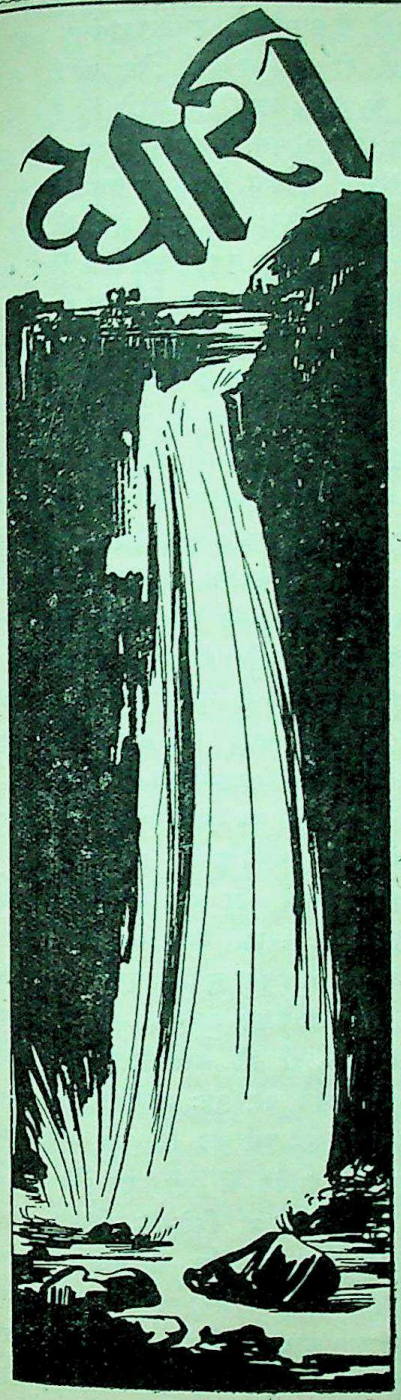

१. नम्र निवेदन

परम पिता परमात्मा की असीम अनुकंपा से आज सुधा अपने १४वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। यह विशेषांक सुधा के नवीन वर्ष का प्रवेशांक है। इधर मैं गंगा-पुस्तकमाला की शाखा बिहार में स्थापित करने के लिये पटना चला गया था। दूसरे, इसी बीच में हमारे पूज्य चाचा पं० मथुराप्रसादजी भार्गव का देहांत हो गया! इसलिये विशेषांक १५ दिन के विलंब से निकल रहा है। यह अंक तुलसी-जयंती को निकल जाना चाहिए था। बृहद् विशेषांक है, अतएव देर हो जाना क्षम्य है। इस विलंब की पूर्ति हम भाद्रपद और आश्विन के अंक १५-१५ दिन के अंतर पर निकालकर कर देंगे।

यह अंक कैसा निकला—लेखों का चयन, भाषा का परिमार्जन, प्रूफ़ों का संशोधन कैसा हुआ, संपादकीय टिप्पणियाँ कैसी हैं, छपाई-सफ़ाई, दिखाव (गेट-अप) और चित्रों में सुरुचि का ध्यान रक्खा गया है या नहीं, इसका निर्णय करना हमारा काम नहीं, अनुग्राहक ग्राहकों, प्रेमी पाठकों, विशेषकर हिंदी के कुशल, कृतविद्य, कर्णधार कवि-कोविदों का है। हमारा नम्र निवेदन तो इतना ही है कि हमने शक्ति-भर श्रेष्ठ, सुंदर सामग्री ही सम्मुख रखने का सत्प्रयत्न किया है। हमने अपने विगत साहित्यिक जीवन में दिन-रात इस बात की चेष्टा की है कि मातृभाषा की मंजुल मूर्ति को मौलिक, मनोहर और मनोरंजक कृति-कुसुमों से सुसज्जित करते रहें। इस बीच में, गंगा-पुस्तकमाला, माधुरी और सुधा द्वारा, नए-नए उदीयमान कलाकारों और उनकी रुचिर रचनाओं को भारती*-

* इस शब्द से हमारा तात्पर्य हिंदी से है।
—सुधा-संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा-भक्तों के सम्मुख प्रकाश में लाने का हमने प्रयास किया है। जब हमने गंगा-पुस्तकमाला और माधुरी का संपादन शुरू किया था, तब हिंदी में सरस्वती ही एकमात्र सुंदर पत्रिका थी, और हिंदी-ग्रंथ-रत्नाकर तथा मनोरंजन-पुस्तक-माला आदि २-४ मालाएँ ही हिंदी में निकल रही थीं। इनमें अनुवाद और आधार पर लिखी हुई रचनाएँ काफ़ी प्रकाशित होती थीं। हमने भरसक उद्योग किया कि उत्कृष्ट, मौलिक साहित्य का भी सृजन, संपादन और प्रकाशन हो। यदि हम इस क्षेत्र में कुछ भी कृतकार्य हुए हैं, तो मातृभाषा-भक्तों के ही कारण। हम तो उपलक्ष-मात्र रहे हैं।

बड़े हर्ष की बात है, इस समय हिंदी में सुंदर-सुंदर मासिक पत्रिकाएँ और साप्ताहिक तथा दैनिक* पत्र निकल रहे हैं। भारती-भाषा का स्वरूप काव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास, समालोचना, अर्थशास्त्र, राजनीति, विज्ञान, दर्शन आदि सभी क्षेत्रों में नव्य, भव्य और रुचिर रत्नों से सँवारा जा रहा है। अनुवाद का स्थान मौलिकता ले रही है, यह आनंद का विषय है। अनुवाद-कार्य भी चल रहा है, यद्यपि अपेक्षाकृत उस गति से नहीं, जिस गति से पहले चलता था।

कोई भी देश विना साहित्यिक समुन्नति के उन्नत नहीं हो सकता, और साहित्य की श्रीवृद्धि तभी होगी, जब उसका कलेवर अनुवाद के साथ-साथ मौलिक कृतियों से भी संपन्न होगा। इसलिये लेखक, अनुवादक और संपादक, सभी को चाहिए कि अपने-अपने कार्य में लगन के साथ लगे रहकर भरसक भाषा-भांडार को भरने में सहयोग दें—सहायता करें। अस्तु।

यह संख्या सहृदय साहित्य-सेवियों और स्नेहियों के सामने है। हमने यथासंभव उत्कृष्टतम रचनाएँ ही इसमें देने की चेष्टा की है। प्रत्येक लेख के साथ लेखक का फ़ोटो भी है। पिछले विशेषांकों में भी ऐसा किया गया था। यह सुधा की अपनी विशेषता है। प्रत्येक लेखक का संक्षिप्त परिचय भी दिया है। कुछ लेख तो, देर में आने के कारण तथा कुछ के लेखकों के चित्र समय पर प्राप्त न होने के कारण, विशेषांक में नहीं जा सके। इसलिये भाद्रपद की सुधा भी परिशिष्टांक के रूप में हम निकाल रहे हैं। उसमें जो लेख जा रहे हैं, वे इस विशेषांक के लेखों के समान ही उत्कृष्ट हैं। कुछ कलाकारों की कमनीय कृतियाँ देर में आई थीं, इसलिये हम रचनाओं का क्रम सर्वत्र उत्कृष्टता की दृष्टि से नहीं रख पाए हैं। इस अंक में नाटक, कहानी, कविता, यात्रा-वर्णन, इतिहास, अर्थशास्त्र आदि यथासंभव सभी विषयों के लेख दिए गए हैं। चित्र भी काफ़ी हैं। हम आगामी संख्याओं में सुधा को और भी सुंदर करने की कोशिश करेंगे। यदि श्रावण और भाद्रपद के अंक 'गुन-गाहक' ग्राहकों को पसंद पड़े, तो हम माघ-मास में फिर एक बृहद् विशेषांक निकालेंगे।

अंत में हमें अपने कृपालु ग्राहकों से भी एक निवेदन करना है। वह यह कि योरपीय युद्ध के कारण काग़ज़, स्याही आदि का मूल्य बहुत बढ़ गया है, तो भी हमने सुधा के मूल्य में कोई वृद्धि नहीं की। रफ़ काग़ज़ का मूल्य तो प्रायः दुगुना हो गया है, तो भी सस्ता संस्करण, ग्राहकों के बार-बार कहने पर, पुनः प्रकाशित करना प्रारंभ कर दिया है। तुर्रा यह कि इसे पुराने मूल्य अर्थात् ४) वार्षिक में ही हम दे रहे हैं! फिर इस साल जो विशेषांक निकल रहे हैं, उनमें भी प्रचुर धन-व्यय की बात है। अतएव सहृदय, साहित्य-प्रेमी, धनी-मानी ग्राहकों को सुधा की सहायता करनी चाहिए। प्रत्येक ग्राहक अपने हलक़े में ५-५ ग्राहक स्वयं या किसी एजेंट द्वारा

* कुछ पत्र विभिन्न प्रांतों से निकालने का हमारा भी ध्येय है। बिहार से 'देश' (साप्ताहिक) हम निकालने जा भी रहे हैं।—सुधा-संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनवा दें, तो हमें सुधा को शोभा-संपन्न बनाने में सहज ही सौकर्य प्राप्त हो जाय। उन एजेंटों को पत्रिका के नियमानुसार, पत्र-पुष्प के रूप में, पर्याप्त पारिश्रमिक हम देंगे। आशा है, ग्राहकगण अपने-अपने क्षेत्र में सुधा के लिये कोई एजेंट अवश्य नियुक्त करवा देंगे। उनके करावलंब से हमारा कंटक-करंवित मार्ग सरलता से कुसुममय हो जायगा।

× × ×

२. हिंदी-साहित्य में निराशावाद*

केवल हिंदी-साहित्य में ही नहीं, प्रत्युत समस्त भारतीय साहित्य में नैराश्य की भावना परंपरा से चली आ रही है। इसी से प्रभावित हिंदी-साहित्य में भी नैराश्य-भावना यत्र-तत्र लक्षित होती है।

वैदिक काल में जन-समूह अपनी शक्ति से निराश हो चुका था। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करने में असमर्थ थे। उसी समय इंद्र, वरुण, कुबेर इत्यादि देवताओं की प्रार्थनाएँ रची गईं। सामवेद के मंत्र इस बात के प्रमाण हैं कि मनुष्य अपनी शक्ति से निराश होकर देवताओं की शरण में गए।

दर्शन-काल में वेदांत-दर्शन संसार से पूर्णतया निराश है। भगवान् शंकराचार्यजी ने "ब्रह्म सत्यं

* संपादिका द्वारा लखनऊ के रेडियो-स्टेशन से पठित।

अब कोई बेकार न रहेगा

यदि आप (१) अमेरिका के बेकार लोगों की भाँति क़लम-दावात के सहारे केवल डाक की सहायता से बिना पूँजी रुपया कमाना चाहते हैं, (२) योरप की उन फ़र्मों के पते, जो नई-नई वस्तुओं के नमूने मुफ़्त भेजती रहती हैं, (३) अमेरिका की उस फ़र्म का पता, जो केवल पत्र लिखने पर संसार-भर की प्रत्येक चीज़ का आपको पता बता देगी, (४) ५०) से ५००) की पूँजी तक के कारख़ाने लगाने का पूरा विवरण, जिनसे ६०) से ३००) मासिक तक कमाया जा सकता है, (५) इँगलैंड व जापान की ताज़ा मालूमात और घर बैठे एजेंसी लेने के ढंग और पते, (६) स्वदेशी चीज़ों से विलायती वस्तुएँ बनाना, ४००) तोला मूल्य की बताई जानेवाली 'क्रीन-सीन' को अपने देश में पैदा करना और (७) भारत के कच्चे माल से रुपया कमाना चाहते हों, तो इस पुस्तक को अवश्य मँगाकर पढ़ें। इसके अतिरिक्त इसमें सैकड़ों ऐसी दस्तकारियाँ लिखी हैं, जो आज तक सुनने में नहीं आईं और उनसे साधारण पूँजीवाला आदमी दो-तीन रुपया रोज़ घर बैठे कमा सकता है। २५० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य १।) ; पोस्टेज ।=)

१०० गुना नफ़े का व्यापार

संसार में सबसे अधिक लाभदायक व्यापार पेटेंट औषधियों का है। इससे सौगुना नफ़ा कमाया जा सकता है। एक पैसा लागत की दवा के दो-दो रुपए मिलते देखे हैं। अमृतधारा और सुधासिंधु के मालिकों ने एक-एक पेटेंट दवा से करोड़ों रुपया कमाया है। यदि उनकी तरह आप भी भारतवर्ष, जर्मनी, इँगलैंड, अमेरिका की प्रसिद्ध और सर्वप्रिय प्रतिवर्ष करोड़ों रुपए की बिकनेवाली पेटेंट औषधियों के नुस्ख़े बिना किसी कष्ट के घर बैठे सीखकर साधारण पूँजी से प्रायः सभी प्रचलित पेटेंट औषधियों को स्वयं तैयार करके विज्ञापन द्वारा मुक़ाबले में कम क़ीमत में बेचकर सैकड़ों रुपए मासिक की स्थायी आमदनी पैदा करना चाहते हैं, तो आज ही "पेटेंट औषधियाँ और भारतवर्ष"-नामक पुस्तक की १ प्रति मँगाकर कारोबार शुरू कर दें। संभव है, फिर आपको यह पुस्तक किसी मूल्य पर न मिल सके। मूल्य ।॥); पोस्टेज ।-)

पता—रसायन-कार्यालय (सु) संगरिया (बीकानेर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगन्मिथ्या" आदि सिद्धांत-वाक्यों द्वारा संसार की असारता, शून्यता, नश्वरता इत्यादि का प्रदर्शन किया है।

महाभारत और रामायण-काल में समस्त दृष्टि-कोण एक आदर्श के अनुकूल था। जीवन के संघर्ष को अधिक-से-अधिक व्यापक रूप में प्रकट करके उसके अंतर्गत निराशावाद की बहुत-सी भावनाओं का दिग्दर्शन है।

श्रीमद्भगवद्गीता का आविर्भाव भी निराशा-जनक परिस्थितियों के बीच होता है। प्रथम अध्याय में अर्जुन संसारी व्यक्तियों के प्रतीक-रूप में लक्षित होते हैं। उन्हें जीवन-मरण, जय-पराजय से कुछ मतलब नहीं, वह चारो ओर से निराश होकर बैठ जाते हैं—

"एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत्;
विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः।"

अभिप्राय यह कि अर्जुन युद्ध-क्षेत्र में अपना धनुष-बाण फेंककर शोक से विक्षिप्त रथ पर बैठ गए। इस निराशावाद की प्रतिक्रिया के रूप में ही गीता का समस्त ज्ञान है। भगवद्गीता के उपदेश निराशावाद के ऊपर संगठित आक्रमण के रूप में हैं। श्रीकृष्ण अर्जुन के सामने नैराश्य-भावनाओं का खंडन करके आशा का संचार करते हैं। "क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप!" में संपूर्ण संसार के लिये कर्मण्य बन जाने का संदेश है। श्रीकृष्ण कहते हैं—"हे अर्जुन! हृदय की दुर्बलता त्याग-कर उठ खड़े होओ।"

हिंदी-साहित्य अपने प्रारंभ-काल में ही जैन-धर्म और बौद्ध-धर्म से प्रभावित है। जैन-सिद्धांत में "अहिंसा परमो धर्मः" की उत्पत्ति निराशावाद से होती है। जैन-धर्मावलंबी संसार से तटस्थ रहकर जीवन-साधना द्वारा सांसारिक बंधनों से मुक्त हो जाने का उपदेश देते हैं। हेमचंद ने जैन-सिद्धांत को बताते हुए जीवन की उदासीनता की ओर संकेत किया है। इसी प्रकार बौद्ध-धर्म में भी संसार से निराश होकर निर्वाण अर्थात् मुक्ति की भावना का प्रादुर्भाव हुआ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिंदी-साहित्य के पूर्ववर्ती साहित्यों में निराशावाद की भावना थी। इसलिये उनका हिंदी-साहित्य पर समुचित प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है। अब हमें देखना यह है कि हिंदी-साहित्य में नैराश्य की भावना किस-किस काल में कितनी मात्रा में रही है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। जिस देश में तथा जिस काल में जैसा समाज होता है, वैसा ही उस का देश का तथा उस काल का साहित्य भी होता है। लोगों के आचार-विचारों का प्रभाव साहित्य पर अनिवार्य रूप से पड़ता है।

चारण-काल में भारतीय नरेशों में वीरता का संचार था। जनता भी राजनीतिक संघर्षों के कारण वीर-रस से प्लावित थी। अतः उस काल के साहित्य में निराशावाद नहीं लक्षित होता।

भक्ति-काल अद्वैत भाव की भावना से प्रभावित था। कबीर की रहस्यमयी उक्तियाँ संसार की नश्वरता तथा मायावाद का स्पष्ट उद्घाटन करती हैं—

"माली आवत देखिकै कलियाँ करीं पुकार—
फूली-फूली चुन लिए, काल्ह हमारी बार।"

और भी—

"बाढ़ी आवत देखिकै तरुवर डोलन लाग;
हम काटे की कछु नहीं, पंछेरू घर भाग।"

इसी प्रकार सूफ़ी कवियों में भी निराशावाद है। मलिक मुहम्मद जायसी ने पद्मावत की सारी कहानी अन्योक्ति के रूप में लिखकर तथा नागमती का सती हो जाना दिखलाकर जीवन की निराशा प्रकट की है।

सूर, तुलसी, मीरा आदि वैष्णव कवियों की रचनाओं में संसार के प्रति निराशा है। जीवन-संघर्ष के बीच स्थान-स्थान पर मनुष्य को निराशा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलती है। लक्ष्मण के शक्ति लगने पर राम-ऐसे सर्वदर्शी भी गोस्वामीजी के शब्दों में निराशा प्रकट करते हैं—

"मेरो सब पुरुषारथ थाक्यो।"

तुलसीदासजी स्वयं भी संसार से पूर्णतया निराश थे। उनकी विनय-पत्रिका इस सत्य के लिये पर्याप्त प्रमाण है। सूर की गोपियों का अनंत रुदन निराशावाद की परा काष्ठा है—

"निसि-दिन बरसत नयन हमारे।"

× × ×

"हम अपने ब्रज ऐसेहि बसिहैं,
विरह - वाय - बौराने।"

इसी प्रकार मीरा के पदों में—

"हे री, मैं तो दरद दिवाणी,
मोरा दरद न जाणे कोय।"

× × ×

"मैं बिरहिणि बैठी जागूँ,
जगत सब सोवै री आली!"

× × ×

"पिय बिन सून्यो छै जी म्हारो देस।"

इत्यादि में हृदय की नैराश्य-जनक भावनाएँ हैं, जो प्रियतम से न मिल पाने पर उत्पन्न होती हैं।

रीतिकालीन साहित्य में नायिका-भेद के चित्रण में वियोग-शृंगार की ओर संकेत करके जीवन का महान् विषाद दिखलाया है। कलहांतरिता, प्रोषितपतिका इत्यादि नायिकाओं की उत्पत्ति निराशावाद से हुई है।

आधुनिक काल ग़दर के पश्चात् आरंभ होता है। उस समय का साहित्य ग़दर की प्रतिक्रिया के रूप में है। भारतीय स्वतंत्रता नष्ट होने का करुणा-जनक प्रभाव केवल राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में ही नहीं, बल्कि साहित्य में भी हुआ। भारतेंदु हरिश्चंद्र की रचनाओं में इसकी छाया है। अपने 'भारत-दुर्दशा'-नाटक के प्रारंभ में ही वह भारतवासियों को रोने के लिये निमंत्रित करते हैं—

"रोवहु सब मिलिकै, आवहु भारत-भाई!
हा हा! भारत-दुरदसा न देखी जाई!"

आधुनिक काल के उपन्यास, नाटक तथा कहानियों में अँगरेज़ी और बँगला-साहित्य की छाप है। फलतः हिंदी में भी अब दुःखांत नाटक, उपन्यास और कहानियाँ लिखी जा रही हैं।

आधुनिक कविता में निराशावाद की भावना रहस्यवाद के विरह के रूप में है। आत्मा परमात्मा से

नपुंसकतानाशक

यंत्र

अर्थात् जर्मनी का बना हुआ डीवेल्पर तथा अमेरिका, फ्रांस आदि के बने हुए नपुंसकतानाशक यंत्र, गर्भ-निरोध के वास्ते रबड़ का हरएक सामान और स्तंभक ओषधियाँ, कोकशास्त्र आदि पुस्तक, शीघ्रपतन रोकने के लिये छल्लेवाली भारत-भर में हमारी ही एक फ़र्म है। सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए। पत्र-व्यवहार गुप्त रक्खा जाता है।

सेक्सुअल साइंस ब्यूरो

पो० बा० १८८

Sexual Science Bureau (S. L.)

६६, अनारकली, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वियुक्त होकर उसी के विरह में छटपटाती रहती है। यही छटपटाहट आध्यात्मिक विरह के रूप में वर्णित है। श्रीसुमित्रानंदनजी पंत, श्रीरामकुमारजी वर्मा, श्रीभगवतीचरणजी वर्मा और श्रीमती महादेवीजी वर्मा की रचनाओं में यह निराशावाद विशेष रूप से लक्षित है। पंतजी तो कविता का प्रारंभ ही वियोग से मानते हैं—

"वियोगी होगा पहला कवि,
आह से निकला होगा गान;
उमड़कर आँखों से चुपचाप
बही होगी कविता अनजान।"

श्रीरामकुमारजी वर्मा भी संसार की नश्वरता से पूर्णतया निराश हैं—

"मैं आज बनूँगा जलद-जाल,
मेरी करुणा का वारि
सींचता रहे अवनि का अंतराल।"

ऐसा भासित होता है, मानो कवि का जीवन नैराश्य में व्यतीत हुआ है, और उसकी रग-रग में करुणा भरी है। श्रीभगवतीचरणजी वर्मा की रचनाओं में निराशावाद इतना अधिक है कि प्राकृतिक व्यापारों में भी उन्हें विनाश के लक्षण दिखाई देते हैं—

"इस विनाश के महागर्त में डूब जाय संसार,
और लोप हो जावे उसमें कलुषित हाहाकार।
जल-ही-जल हो,उथल-पुथल हो,बनो काल साकार;
बरसो-बरसो अरे सघन घन,महाप्रलय की धार।"

श्रीमती महादेवीजी वर्मा तो पीड़ा की साक्षात् प्रतिमा बनी हुई हैं। उन्हें तो ब्रह्म और पीड़ा में कोई भेद ही नहीं दिखाई देता—

"तुमको ढूँढ़ा पीड़ा में, तुममें ढूँढ़ूँगी पीड़ा।"

श्रीमती वर्माजी को आशा से निराशा और प्रकाश से अंधकार अधिक रुचिकर है। वह कहती हैं—

"करुणामय को भाता है
तम के परदे में आना;
हे नभ की दीपावलियो! तुम
पल-भर को बुझ जाना।"

इस प्रकार थोड़ा-बहुत निराशावाद हिंदी-साहित्य में अब भी लक्षित होता है। पर अनुमान ऐसा है कि निराशावाद की यह प्रवृत्ति धीरे-धीरे न रह जायगी। भारतीय जनता ज्यों-ज्यों राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक क्षेत्रों में उत्साह से भाग लेगी, त्यों-त्यों निराशा की भावना लोप होती जायगी। वर्तमान निराशावादी कवि भी अब धीरे-धीरे आशावाद की ओर आ रहे हैं। श्रीसुमित्रानंदनजी पंत ने 'ग्राम्या'-नामक पुस्तक के प्रारंभ में ही, एक मानव-धर्म की प्रधानता मानकर, मनुष्य के आनंदमय जीवन का चित्र खींचा है—

"जाति-वर्ण की, श्रेणिवर्ग की
तोड़ भित्तियाँ दुर्धर—
युग-युग के बंदीगृह से
मानवता निकली बाहर!"

और भी—

"आज मिट गए दैन्य-दुःख सब,
क्षुधा-तृषा के क्रंदन;
भावी स्वप्नों के पट पर युग-
जीवन करता नर्तन!"

इसी प्रकार अन्य बहुत-से कविगण तथा लेखकगण आशावादी साहित्य का निर्माण कर रहे हैं। अतएव हिंदी-साहित्य का भविष्य आशावाद में है।

× × ×

३. आधुनिक कन्या की उलझन*

हिंदुस्थान में आजकल पढ़ी-लिखी तथा अनपढ़, दोनो तरह की लड़कियों को मुसीबत उठानी

* संपादिका द्वारा लखनऊ के रेडियो-स्टेशन से पठित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ती है। जो लड़कियाँ अनपढ़ हैं, उन्हें लोग जाहिल कहकर ज़लील करते हैं; पर जो पढ़ी-लिखी हैं, वे भी कुछ कम उलझन में नहीं रहतीं। उनकी तालीम इसी कशमकश (संघर्ष) के बीच शुरू होती है। घर के आधे से ज़्यादा लोग शिक्षा न देने के पक्ष में रहते हैं, तो आधे से कम लोग शिक्षा देने के पक्ष में। आत्मशक्ति के बल पर किसी प्रकार जब वे पढ़ाई ख़त्म करती हैं, तो उनके सामने विवाह का सवाल आता है। भारत में अविवाहित रहना पाप समझा जाता है, इसलिये लड़की को विवाहित जीवन में प्रवेश करना ही पड़ता है।

ज़्यादातर तो ऐसा होता है कि मा-बाप अपनी रुचि के अनुसार वर चुनकर कन्या का विवाह कर देते हैं। बहुत कम घरों में विवाह के बारे में लड़की की सलाह ली जाती है। जहाँ सलाह ली भी जाती है, वहाँ चुनाव का घेरा जाति-पाँति के कारण सीमित रहता है। उसकी जाति में जो लड़के हैं, उहीं में से किसी एक को वह चुन सकती है। इस तरह उसे अपने गुण, कर्म और स्वभाव के अनुकूल पति पाना कठिन हो जाता है। वह उलझन में पड़ जाती है कि मा-बाप के आज्ञानुसार अनमेल-विवाह कर ले, या अपने इच्छानुसार मेल-विवाह। आख़िर कुछ तय नहीं कर पाती, और मा-बाप जैसा चाहते हैं, वैसा ही विवाह हो जाता है। यदि सौभाग्य से पति लड़की के गुण, कर्म और स्वभाव के अनुकूल मिल जाता है, तो लड़की की उलझनें कुछ कम हो जाती हैं, पर विवाह के पूर्व तो उसका जीवन उलझनों में ही बीतता है।

युनिवर्सिटी में लड़कियों की संख्या कम होने के कारण वे बेचारी चलने-फिरने, बोलने में झिझकती रहती हैं। युनिवर्सिटी के लड़कों में से कुछ के विचार तो आगे बढ़े हुए होते हैं, तथा कुछ पुरानी लकीर के फ़क़ीर होते हैं। यदि कोई लड़की साधारण तौर पर भी किसी लड़के से बातें करती है, तो पुराने विचारवाले लड़के उसके चाल-चलन पर आक्षेप करने लगते हैं। उस बेचारी का अपने साथ पढ़नेवाले लड़कों से बोलना-चालना भी मुश्किल रहता है।

मा के घर में मा, चाची, ताई, दादी वग़ैरह के विचार पुरानी रूढ़ियों से भरे होते हैं। वे लड़की को पुराने ढंग से रहने की शिक्षा देती हैं। दूसरी ओर स्कूल और कॉलेज की अध्यापिकाएँ, पिता, भाई, साथ की लड़कियाँ नए ढंग से चलने पर ज़ोर देती हैं। लड़की के सामने दो समाज रहते हैं—नया और पुराना। इससे वह बड़ी उलझन

कपास की खेती (सचित्र, सजिल्द)

पढ़िए कि भारतीय कृषक किस प्रकार कपास की उपज चौगुनी कर विलायती कृषकों की भाँति सुखी हो सकता है। भूमि, खाद, बीज, सिंचाई, रोग और उनके उपाय आदि विषयों का विस्तार-पूर्वक वर्णन है। लंकाशायर, मेनचेस्टर आदि, जो इस समय संसार-भर में रुई की मिलों और व्यापार के केंद्र हैं, क्योंकर धनवान् हुए, इसका भी बड़ा ही चित्ताकर्षक वर्णन है। मूल्य डाक-व्यय-सहित ३॥)

कृषि-संबंधी पुस्तकों के विख्यात लेखक—

बाबू रामप्रसाद रिटायर्ड सूबा व डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट,

ग्वालियर से मिल सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पड़ जाती है कि कौन-से समाज को ग्रहण करे। अगर दादी, मा आदि के कहने पर चलती है, तो नया समाज उसकी हँसी उड़ाता है। इसके अलावा ऐसा करके वह देश और काल के साथ तरक़्क़ी नहीं कर सकती। यदि नए समाज को ग्रहण करती है, तो मा, चाची, ताई, दादी आदि की नज़र में वह मेम साहब बन जाती है। जब हम नवें दर्जे में थीं, तब की एक मनोरंजक घटना हमें याद है। परीक्षा के दिन थे, इसलिये घर के काम में मा का हाथ बटाने के लिये हमारे पास समय न था। दादी खाना बनाने जा रही थीं। उनसे मिलने के लिये उनकी एक सहेली आईं। कहने लगीं—"बहन, अपनी पोती से साग-भाजी कटवा लो।" दादीजी बोलीं—"यह तो नेम साहब होय गई हैं, साग का कटिहैं।" हमने सोचा, यदि परीक्षा में सबसे अच्छे नंबर मिल गए, तो दादीजी का दिया हुआ टाइटिल दर्द देनेवाला न होगा।

सास के घर में भी लड़की को दोनो प्रकार के समाज का सामना करना पड़ता है। जो लोग नए विचार के होते हैं, उन्हें बहू का ख़याल रहता है, और जो पुराने ख़याल के, उन्हें उसके आचार-विचार पसंद नहीं आते। इसलिये उसे दुरंगी नीति अख़्तियार करनी पड़ती है। हमारी एक एफ़्०, ए० पास सहेली दुर्भाग्य से एक ऐसे ही घर ब्याही गईं। बीसवीं सदी के सुसंस्कृत पति देवता तथा उन्नीसवीं सदी की सास, जेठानी आदि, दोनो को ही प्रसन्न रखने के लिये बेचारी को बरबस अपनी आत्मा को मारकर बहुरूपिए का बाना अख़्तियार करना पड़ा। मौक़ा मिलने पर वह पति के साथ सभा-सोसाइटियों में भाग लेती थीं। पर जहाँ घर की पहली सीढ़ी पर क़दम रखती थीं, उनका हाथ सीधे खुले-अधखुले सिर पर जाता था, और पलक मारते वह हाथ-भर के लंबे घूँघट में छिपी हुई, नई-नवेली बहू के रूप में, धीरे-धीरे घर में प्रवेश करते नज़र आती थीं।

यह युग परिवर्तन का युग है। हरएक बात बदल रही है। किसी बात का निर्णय करने के लिये कोई स्टैंडर्ड नहीं। हरएक मनुष्य के विचार भिन्न-भिन्न हैं। हर शख़्स दूसरे के आचार-विचार नापने के लिये अपने आचार-विचारों का माप-दंड बनाता है। राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक, सभी क्षेत्रों (हलक़ों) में यही हाल है। भारत में शिक्षा की कमी के कारण ज़्यादातर लोग स्त्रियों का राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में भाग लेना उचित नहीं समझते। जो स्त्री इन क्षेत्रों में भाग लेती है, उसके साहस की सराहना करनेवाले तो कम होते हैं, उँगली उठानेवाले ही अधिक हो जाते हैं।

बेचारी के घरवाले जो उसे न उत्साहित करते रहें, तो इन कूप-मंडूकों के मारे उसका पूरा कैरियर ही समाप्त हो जाय। जो स्त्रियाँ इस समय राजनीतिक, साहित्यिक, सामाजिक आदि कार्यों में लगी हुई हैं, उन्हें अधपढ़े समाज के कारण बड़ी कठिनाई उठानी पड़ रही है। उन्हें शाबाशी मिलने के बदले झूठी आलोचना मिलती है। फिर भी कर्तव्य समझकर वे अपने इस काम में अटल हैं।

युग-परिवर्तन के कारण आधुनिक कन्या को हर क्षेत्र में और हर स्थान पर उलझन नज़र आती है। इस उलझन से बचने का एकमात्र उपाय है नीर-क्षीर-न्याय। पुराने और नए समाज में जो कुछ सार है, उसे ग्रहण कर ले, तथा जो ख़राबियाँ हैं, उन्हें त्याग दे। इस प्रकार की विवेक-बुद्धि उत्पन्न हो जाने पर कोई उलझन नहीं रह जायगी, और यह तमीज़ उसे ठीक तालीम से ही हो सकती है। शास्त्रकार मनु ने भी कहा है—"व्यवस्था देशकालानुसारता।" नियम देश और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल के अनुसार बनता-बिगड़ता रहता है। इसलिये धर्म की नज़र से भी पुरानी हानिकारक रूढ़ियों का खंडन करने में कुछ हर्ज नहीं। बुराई छोड़कर अच्छाई ले लेना ही हमारा मुख्य ध्येय होना चाहिए, तभी इस युग की लड़कियाँ—आधुनिक कन्याएँ—उलझनों से बच सकती और हिंदुस्थान को फिर तरक़्क़ी की चोटी पर पहुँचाने में अपने भाइयों और पतियों का हाथ बटा सकती हैं—

कोई कहता क्या, कहाँ, कान न कुछ भी कीजिए;
नीर-क्षीर के न्याय से उलझन सुलझा लीजिए।

× × ×

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्यजनक ईजाद ! याने—

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात

'गोनोकिलर'

रजिस्टर्ड

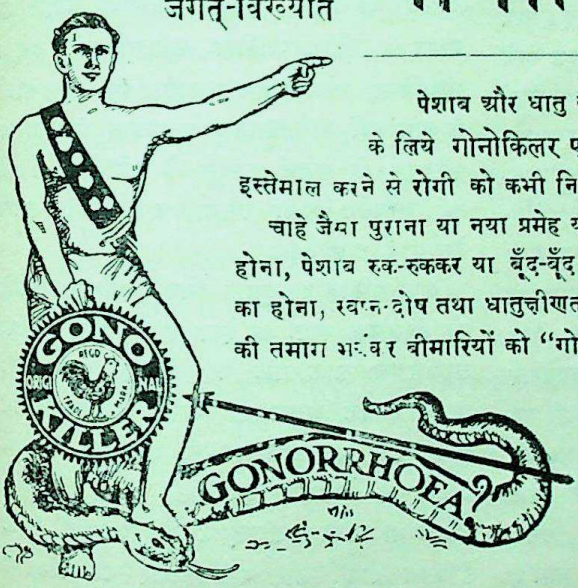

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने व निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर एक ऐसी ही आश्चर्यजनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश होना ही नहीं पड़ता।

चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन का होना, स्वप्न-दोष तथा धातुक्षीणता और औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को "गोनोकिलर" जड़ से नष्ट कर देता है।

नक़ली से सावधान !
ख़रीदने से पहले
दवा का नाम गोनोकिलर
और मुर्ग़ा-छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए

मूल्य ५० गोलियों की शीशी का ३) रु०, वी० पी० डाक-व्यय आठ आना अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी S. L. गिरगाँव, बैंक रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ-स्टाकिस्ट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४. कार्य-समिति का निर्णय

कांग्रेस-कार्य-समिति ने इन दिनों दो बड़े फ़ैसले किए हैं—एक फ़ैसला वर्धा में बैठकर किया; इस फ़ैसले के अनुसार महात्मा गांधी ने नियमानुसार कांग्रेस का नेतृत्व छोड़ दिया। दूसरा फ़ैसला दिल्ली में बैठकर वाइसराय के साथ हुई बातचीत के आधार पर किया, जिसमें कांग्रेस की भावी नीति और कार्य-क्रम का स्पष्टीकरण किया गया। ये दोनो फ़ैसले बड़े महत्त्व-पूर्ण हैं। पहले निर्णय के अनुसार कांग्रेस और महात्मा गांधी का मतभेद स्पष्ट हो गया। यह मतभेद अब तक प्रच्छन्न अवस्था में था। गत बीस वर्षों से कांग्रेस महात्मा गांधी के पद-चिह्नों पर चलती रही है। अब तक उसने महात्माजी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों की दुहाई दी है, पर कांग्रेस-क्षेत्र में दैवी और मानवीय शक्तियों का भेद हमेशा बना रहा है। महात्माजी के बार-बार प्रयत्न करने पर भी कांग्रेस ने 'वैध और शांतिमय उपाय' की जगह 'सत्य और अहिंसा द्वारा' स्वराज्य-प्राप्ति के ध्येय को नहीं अपनाया। कांग्रेस-शासन-काल में घरेलू झगड़े शांत करने के लिये 'शांति-सेना' का संगठन करने और पुलिस तथा अन्य भौतिक शक्तियों को काम में न लाने की महात्माजी की आयोजना को भी कांग्रेस सफल न बना सकी। खादी के उपयोग और चर्खे के व्यवहार में भी कांग्रेसजन उस कोटि तक आगे नहीं बढ़ सके, जो महात्मा गांधी को अभीष्ट है। महात्माजी इन सब बातों को राजनीतिक जीवन का ध्येय मानकर पालन कराना चाहते हैं। उनके निकट ध्येय और उसके साधन में कोई अंतर नहीं। कांग्रेस इन दोनो को अलग-अलग समझती है। अतः एक ही ध्येय के विभिन्न साधन हो सकते हैं। महात्मा गांधी और कांग्रेस में यह मौलिक मतभेद है। फिर भी वर्तमान अवस्था में कांग्रेस के पास और कोई साधन नहीं, और वह अहिंसा के साधन को ही सर्वोत्तम समझती है। इस दृष्टि से महात्मा गांधी और कांग्रेस अधिक दूर तक एक साथ हो जाते हैं, और अब तक कांग्रेस और महात्मा गांधी का ऐसा ही संबंध बना रहा है। इस समय एक असाधारण परिस्थिति पैदा हो गई है। जहाँ तक स्वराज्य-प्राप्ति के साधन का संबंध है, कांग्रेस अपने उसी पुराने उसूल को मानती है, पर जहाँ उसे शासन की ज़िम्मेदारी उठानी पड़ेगी, वहाँ उसे बाह्य शक्तियों का ध्यान रखना पड़ेगा। कांग्रेस को पता है, हिटलर ने महात्मा गांधी की अपील ठुकरा दी, और ब्रिटेन ने अहिंसा द्वारा हिटलर का मुक़ाबिला करने की अपील मंज़ूर नहीं की। इन भौतिकवादी ताक़तों के साथ कांग्रेस को काम पड़ेगा। महात्माजी चाहते हैं, भारत अपनी आध्यात्मिक शक्तियों से उनका मुक़ाबिला करे। कांग्रेस यहाँ तक महात्माजी के साथ नहीं चल सकती, अतः इस ऐतिहासिक परिवर्तन के समय कांग्रेस के दृष्टिकोण में भी यह परिवर्तन होना स्वाभाविक था, और उससे देश का हित ही होगा।

कार्य-समिति का दूसरा निर्णय वर्तमान स्थिति को बिलकुल स्पष्ट कर देता है। कांग्रेस ब्रिटिश सरकार से साफ़-साफ़ यह घोषणा करा लेना चाहती है कि भारत को अपना शासन-विधान स्वयं बनाने का अधिकार है, और इस कार्य में उसे पूर्ण स्वतंत्रता दी जाती है। इसके बाद कांग्रेस भी वर्तमान लड़ाई में हिंदुस्थान की तरफ़ से भाग लेगी, और वह हिटलर की शक्तियों को नष्ट करने में सहायता देगी, इसके लिये वह केंद्र में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के लिये भी तैयार है, जिसमें सभी दल और विचार के लोगों का प्रतिनिधित्व हो। यह राष्ट्रीय सरकार आपद्धर्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सिद्धांत पर क़ायम होगी, जैसा इँगलैंड में भी आजकल हो रहा है। युद्ध की समस्या हल होते ही फिर यह 'भानमती का कुनबा' नहीं रहेगा, और फिर देश जिस विचार के लोगों के हाथ में ताक़त सौंपेगा, वह दल प्रजातांत्रिक नियमों के अनुसार शासन-कार्य चलाएगा।

कांग्रेस के इस स्पष्टीकरण के साथ अब कौन-सी ऐसी बात रह जाती है, जिसके कारण वर्तमान गति-अवरोध ख़त्म नहीं किया जाता? इसमें पहली रुकावट ब्रिटिश सरकार की घोषणा की है, दूसरी कठिनाई मुस्लिम लीग की अड़ंगे की नीति है। पर हमें सारी रुकावट सरकार की ही मालूम होती है। यदि वह स्पष्ट रूप से भारत की आज़ादी की घोषणा कर दे, और भारत के आत्मनिर्णय के दावे को मंज़ूर कर ले, तो यह गति-अवरोध तुरंत ख़त्म हो जायगा। मुस्लिम लीग उसमें कोई रुकावट नहीं डाल सकती। जब मुस्लिम लीग को राज़ी करने की बात कही जाती है, तो इसका अर्थ यही समझा जाता है कि सरकार अभी गति-अवरोध दूर करने को तैयार नहीं, और वह उसके लिये अब भी बहाना तकती है। परमात्मा सरकार को सुबुद्धि दें।

× × ×

५. फ्रांस का पतन और उसके बाद

फ्रांस के पतन के साथ ही योरप का राजनीतिक मानचित्र एकदम बदल गया। किसी को भी यह उम्मीद न थी कि दुनिया की एक सबसे बड़ी सैनिक शक्ति जर्मनी के आगे इतने थोड़े समय में पराजित हो जायगी। इसका कारण चाहे जो हो, लेकिन परिणाम हम सबके आगे है, और वह बहुत ही बुरा है। योरप के इतिहास में फ्रांस ऐसा देश है, जिसने सबसे पहले प्रजातंत्र-शासन के लिये क्रांति की थी। जिसने तमाम योरप को ही नहीं, संसार-भर को प्रजातंत्रवाद का पाठ पढ़ाया था, वह फ्रांस आज फ़ैसिज़्म और नाज़ीज़्म का क्रीत दास बनकर उनके पद-चिह्नों पर

दस हज़ार रुपए की घड़ियाँ इनाम !

हमने अपनी दवाई 'जौहरे-हुस्न' की मशहूरी के लिये दस हज़ार रुपए की घड़ियाँ दवाई के ग्राहकों को इनाम में मुफ़्त बाँटने का फ़ैसला किया है। इस दवा के इस्तेमाल से हर जगह के बाल बग़ैर किसी तकलीफ़ के हमेशा के लिये दूर हो जाते हैं और फिर उम्र-भर उस जगह दुबारा बाल पैदा नहीं होते। जगह रेशम की तरह मुलायम और ख़ूबसूरत हो जाती है। मूल्य फ़ी शीशी २)। इस दवा का प्रचार करने के लिये हरएक शीशी के साथ एक फ़ैंसी रिस्टवाच मुफ़्त भेजी जाती है, यह घड़ी निहायत ख़ूबसूरत और मज़बूत है। मज़बूती और सुंदरता की गारंटी १० साल है। गारंटी का इक़रारनामा हर घड़ी के साथ भेजा जाता है। गारंटी के अर्से के अंदर अगर घड़ी ख़राब हो जाय, तो कंपनी उसके बदले में दूसरी घड़ी देगी। ज़रूरतमंद जल्द-से-जल्द ऑर्डर भेजकर इस रियायत से लाभ उठावें। दो शीशी के ग्राहक को डाक-खर्च माफ़, और दो घड़ियाँ भी मुफ़्त। पता—हिमालय औषधालय

पोस्ट-बॉक्स नं० ४६. (S.I.L) अमृतसर AMRITSAR.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल रहा है। अब तक हम डिक्टेटरों की श्रेणी में मुसोलिनी, हिटलर और फ्रांको के नाम सुना करते थे, अब एक और फ़ौजी व्यक्ति पीटेन का नाम बढ़ गया। फ्रांस के प्रजातंत्री शासन का ढाँचा एकदम बदल गया। अब वहाँ न मि० ब्लम हैं, न दलादियर और न रेनो। प्रगतिशील दलों का प्रतिनिधित्व लोप होकर अब फ़ौजी ढंग का शासन क़ायम हो गया है। पता नहीं, क्रांति का स्वप्न देखनेवाले और युद्ध-काल में मज़दूरों की ताक़त से फ्रांस में सोवियट शासन क़ायम करनेवाले कम्यूनिस्ट नेताओं का क्या हुआ! योरप में आज अधिनायक-तंत्र क़ायम है। कुछ छोटी-छोटी रियासतों के अतिरिक्त सारा पश्चिमी और मध्य-योरप डिक्टेटरशाही और फ़ैसिस्ट हुकूमत के चंगुल में आ गया है। उधर सोवियट रूस बाहरी आक्रमण से बचने के लिये अपनी सुदृढ़ क़िलेबंदी कर रहा है, तो इधर हिटलर ने अपनी सीमा पर अपने ढंग की हुकूमतें क़ायम कर दी हैं। रोमानिया और हंगरी भी जर्मनी के निकट जा चुके हैं। तब भविष्य में जर्मनी और सोवियट रूस की जिस लड़ाई की आशंका की जा रही है, उसमें हम फ़ैसिज़्म को कम चौकन्ना नहीं पाते। यह बात नहीं कि हिटलर विजय के गर्व में मदांध होकर आगे बढ़ रहा है, बल्कि विजय के साथ-साथ वह अपना संगठन भी बढ़ा रहा है। वह अपनी सीमाओं को अधिक मज़बूत बना रहा है। आज वह सारे योरप पर शासन करने का दावा करता है, तो कल दुनिया-भर की हुकूमत के लिये बढ़ेगा। संसार में जितने छोटे-छोटे राज्य हैं, उनकी स्थिति डावाँडोल हो रही है, वे मानो खुल्लमखुल्ला विजयी शक्तियों के साथ होंगे या अधिक-से-अधिक चुप बने रहकर अपनी ख़ैर मनाते रहेंगे। इसलिये अब ब्रिटेन के अलावा अमेरिका और सोवियट रूस ही ऐसी शक्तियाँ रह जाती हैं, जो नाज़ीवाद और फ़ैसिस्टवाद के बढ़ते हुए संकट से संसार की रक्षा कर सकती हैं। लेकिन अमेरिका और रूस किस प्रकार जर्मनी और इटली के विरुद्ध युद्ध-क्षेत्र में आ सकते हैं? यह समस्या बड़ी पेचीदा है। यह उस वक़्त संभव हो सकता है, जब अमेरिका और सोवियट रूस को स्वयं जर्मनी की बढ़ती हुई शक्ति से भय पैदा हो, और उन्हें अपने अस्तित्व के लिये जर्मनी के ख़िलाफ़ शस्त्र उठाना पड़े। संभव है, जापान के कारण अमेरिका अपने सिर पर युद्ध का ख़तरा उठाने को तैयार न हो। तब रूस अकेला ही इसके लिये आगे बढ़ सकता है। वैसे भी रूस और जर्मनी के सिद्धांतों में तीन-छ का संबंध है। रूस और जर्मनी के मेल को लोगों ने आवश्यकता से अधिक महत्त्व दिया। इन दोनो की अनाक्रमण-संधि का अर्थ यह नहीं कि जर्मनी और रूस एक हो गए। ये दोनो कभी एक नहीं हो सकते। आज सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि रूस और ब्रिटेन के संबंध अच्छे हों, चैंबरलेन के वक़्त से दोनो देशों में एक दूसरे के प्रति जितना अविश्वास बढ़ गया है, वह दूर किया जाय। सोवियट रूस के साथ हमदर्दी रखनेवाले या रूस के सिद्धांत माननेवाले लोगों के प्रति भी ब्रिटिश सरकार के रुख़ में परिवर्तन होना आवश्यक है। इससे लोकमत अनुकूल होता है। सबसे मुख्य बात यह है कि ब्रिटिश सरकार अपने अधीन समस्त देशों को स्वतंत्रता का अधिकार दे दे। इससे फिर इस बात का भय भी जाता रहेगा कि रूस भारत या ब्रिटेन के किसी भू-भाग पर अधिकार करना चाहता है, यद्यपि इस कथन को हम सही नहीं मानते। सोवियट रूस किसी स्वतंत्र देश पर आक्रमण नहीं करेगा। और, अगर वह ऐसा करता है, तो उसे संसार-भर में बदनाम होना पड़ेगा। हम समझते हैं, दुनिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सहानुभूति का इच्छुक सोवियट रूस किसी देश को विजय करने की अपेक्षा अपनी बदनामी से अधिक डरेगा। अतः भारत की स्वतंत्रता की घोषणा करने पर ब्रिटिश सरकार को जर्मनी के विरुद्ध एक ज़बरदस्त ताक़त मिल जाती है। हिटलरवाद का नाश करने में फिर भारत भी तन-मन-धन से जुट जायगा, पिछले अविश्वास और असंतोष दूर हो जायँगे, और दुनिया एक भयानक संकट से छुटकारा पा जायगी।

× × ×

अपनी रक्षा करो

अमेरिकन पिस्तौल १९४० माडल

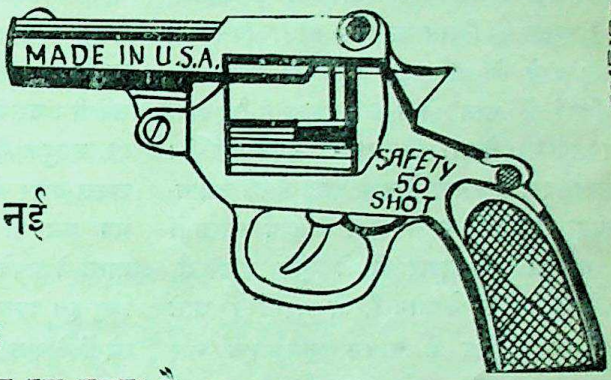

अमेरिका की नई ईजाद

इसको हरएक पुरुष बग़ैर लाइसेंस रख सकता है

यह पिस्तौल देखने में बिलकुल असली पिस्तौल-जैसा है, जो लगातार ५० फ़ायर बड़ी भयानक आवाज़ के लगाता है। इसकी आवाज़ से तो क्या इसकी शकल देखते ही चोर-डाकू, ख़ूनख़ार जानवर कोसों दूर भाग जाते हैं। इसलिये हर प्राणी-मात्र का कर्तव्य है कि अपने जानोमाल की रक्षा के लिये आज ही मँगवाकर अपने पास रक्खें। इसका हर घर में होना आवश्यक है, ऐसा पिस्तौल केवल हमसे ही मिल सकता है। मूल्य केवल ४॥) मय २४० शार्ट्स, डाकख़र्च जुदा। फ़ालतू शार्ट्स ३) प्रति १०००, पेटी व खाल पिस्तौल रखने के लिये १॥), पिस्तौल का तेल की शीशी ॥=) तीन के ख़रीदार को डाकख़र्च माफ़।

मिलने का पता—

American Pistol Agency, P. O. Box 46 (S. I. L.), Amritsar.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. बेकारी की समस्या

बेकारी की समस्या कैसे हल हो, यह बहुत पुराना प्रश्न है। समय-समय पर इसके कई ढंग के उत्तर भी दिए गए हैं। यह समस्या तब तक हल नहीं हो सकती, जब तक देश की आर्थिक अवस्था में मौलिक परिवर्तन और यहाँ के मुद्रा-विनिमय तथा अन्य आर्थिक समस्याओं का राष्ट्रीय दृष्टिकोण से संचालन नहीं होता। अब तक इस समस्या पर अधिकतर पढ़े-लिखे और मध्यम श्रेणी के लोगों की बेकारी को दृष्टि में रखते हुए विचार किया गया है। किंतु बेकारी की यह सीमा बड़ी तंग है। शिक्षा और कृषि के महकमों में कुछ उन्नति दिखलाकर और फ़ौजी विभाग में वृद्धि करने के साथ कुछ पढ़े-लिखे और योग्य व्यक्तियों को काम दिया जा सकता है, पर सर्व-साधारण की बेकारी की समस्या बहुत बड़ी है। इसका पता इस बात से लग जाता है कि उद्योग-व्यवसाय की वृद्धि के साथ यहाँ प्रतिवर्ष कारख़ानों के मज़दूरों की तादाद में जो वृद्धि होती है, उनमें अधिकांश वे लोग हैं, जो देहात से आते हैं, जहाँ जीविका के साधन भूमि, हल और हँसिया का अभाव हो गया है। भारत के व्यवसायी कारख़ानों की सन् १९३८ की रिपोर्ट में बतलाया गया है कि सन् १९३७ में जहाँ कारख़ानों के मज़दूरों की संख्या १६,७६,००० थी, वहाँ सन् १९३८ में यह तादाद १७,३८,००० हो गई। १९३७ में भारत में कुल ८,९३० कारख़ाने चालू थे, १९३८ में उनकी संख्या ९,७४३ हो गई, अर्थात् जहाँ उद्योग-धंधों में वृद्धि हुई, वहाँ देहात के बेकार लोगों को अधिक काम मिला। भारत में जितने लोग खेती पर निर्वाह करते हैं, उससे उनकी गुज़र होना मुश्किल है। प्रति गाँव पीछे थोड़े-से हल ऐसे होते हैं, जिनके पास जोत के लिये पर्याप्त भूमि होती है। बाक़ी लोग थोड़ी भूमि जोतकर या फिर मज़दूरी करके अपना काम चलाते हैं। इस दशा में मज़दूरी भी बड़ी सस्ती रहती है, क्योंकि खेती में उतना ही काम होता है, जिसे उस खेत के मालिक स्वयं कर लेते हैं। भूमि की कमी और हलों की वृद्धि के कारण किसी-किसी गाँव में भूमि की शरह इतनी बढ़ गई है कि उपज का बहुत बड़ा भाग केवल लगान चुकाने में चला जाता है, और उसके पीछे लोगों में जैसी अदालती कार्रवाइयाँ होती हैं, उससे वे और भी बरबाद हो जाते हैं। जब तक कृषि पर निर्वाह करनेवालों की एक बड़ी संख्या उद्योग-क्षेत्रों में नहीं आती, तब तक देहात कलह के अखाड़े बनते रहेंगे। उद्योग-व्यवसाय की असाधारण उन्नति होने पर ही बेकारी की समस्या हल हो सकेगी। उसके लिये आजकल का समय बड़ा ही उपयुक्त है, जब अंतरराष्ट्रीय परिस्थिति के कारण बाहर के माल का मुक़ाबिला करने का भय कम हो गया है। पिछली लड़ाई के वक़्त भारत ने अपने व्यवसाय में काफ़ी उन्नति की थी। किंतु इस वक़्त कुछ और ही हो रहा है। जिन लोगों के पास रुपया है, उसे वे उद्योग-व्यवसाय में न लगाकर, चाँदी और सोने के रूप में, ज़मीन में गाड़ रहे या दीवारों में चिनवा रहे हैं। एक अजीब क़िस्म का आतंक और भय लोगों पर सवार हो गया है। उन्हें पता नहीं कि जिस तरह के भय से वे काँप रहे हैं, यदि दुर्भाग्य-वश ऐसा हो भी गया, तो इस ज़मीन में गड़ी हुई संपत्ति का भोग कौन करेगा। ईंट और चूने की दीवारें और हाड़-मांस का पिंड आजकल के मौत के साधनों का कितना मुक़ाबिला करेगा। इस मिथ्या भ्रम और झूठे आतंक को छोड़कर हमें इस अवसर से जो भी लाभ उठाना चाहिए, उसमें चूकना नहीं चाहिए। बेकारी और कंगाली उपद्रवों और झगड़ों की जड़ होती है, उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूर करने का अवसर खोकर हम बिलकुल उलटे ढंग से सोच रहे हैं। हमें चाहिए, दुनिया में एक ओर जहाँ विनाश-काल आया हुआ है, वहाँ हम विपरीत बुद्धि से काम न लें।

× × ×

७. सीमा-प्रांत का संकट

अनेक वर्ष बीत गए, सीमा-प्रांत में कबीलेवालों का आतंक जैसे-का-तैसा बना हुआ है। सरकार ने गोले बरसा लिए, मशीनगनों के फ़ायर हो लिए, और हवाईजहाज़ों ने लंबी उड़ानें भर लीं, पर स्थिति ज्यों-की-त्यों बनी हुई है। लड़के-लड़कियों का अपहरण जारी है। विशेषतः पहाड़ी इलाक़ों के निकट की जनता पर आतंक छाया हुआ है। हम यह बात नहीं मानते कि इन कबीलेवालों में धार्मिक उन्माद नहीं, और उनके जितने भी हमले होते हैं, उनकी तह में उनका आर्थिक हित ही छिपा हुआ है। अगर ऐसी बात है, तो फिर हिंदुओं के बालक ही क्यों उड़ाए जाते हैं? हिंदुओं के जान-माल की ही हानि क्यों होती है? इन कबीलेवालों के भी महंत और गुरु हैं; और वे इन्हीं मुल्लाओं के अनुशासन में लूट-पाट करते हैं। इससे यह नहीं कहा जा सकता कि किसी-न-किसी प्रकार का मज़हबी पागलपन इन लोगों में नहीं। इसके साथ यह बात भी निःसंकोच कही जा सकती है कि इन लोगों की जीविका का कोई माक़ूल साधन नहीं। केवल शिकारी जीवन पर निर्वाह नहीं हो सकता, इसलिये इन्हें लूट-पाट का आश्रय लेना पड़ता है। सरकार इसके लिये क्या करे? वह हवाई-जहाज़ों से अन्न-धन की वर्षा तो नहीं कर सकती! कांग्रेस के पास सिवा सहानुभूति के प्रस्ताव के और क्या है? यह प्रश्न आज का नहीं, सरकार और कांग्रेस का इससे गहरा संबंध हो चुका है। दोनो ने कई पहलुओं से

करामाती दर्पण

किसी भी उमर का मनुष्य इस करामाती दर्पण में देख सकता है—चोरी गई वस्तु व गुमशुदा का पता, बीमार के स्वस्थ होने या न होने का हाल, आने-वाले व गुज़रे हुए हालात, भावी दुःखों से बचने के उपाय, गड़े धन का पता, किसी मुश्किल का हल होना या न होना, प्रेम, नौकरी, अदालती केस, परीक्षा आदि में विजय पाना, स्वर्गवासी माता-पिता, मित्रों-शहीदों से मुलाक़ात, जिसे कभी न देखा हो या जिसकी स्वप्न में भी आशा न हो, उसे आप इसमें भले ही देख लेंगे। मूल्य परचा तरकीब १॥≡), डाक-महसूल अलग। यदि ग़लत साबित हो, तो दाम वापस।

अपना पता साफ़-साफ़ लिखिए—हो सके, तो अँगरेज़ी में भी लिखिए।

मँगाने का असली पता—

अमेरिकन मैजिक हाउस (S. I. L.), पोस्ट-बॉक्स-नं० ४६, अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मामले पर विचार किया है। अब, सुना है, कांग्रेस अपनी तरफ़ से एक डेपुटेशन वज़ीरिस्तान भेजनेवाली है, और यह कबीलेवालों की माँग और शिकायतों के बारे में मालूम करेगा। सरकार के पास दमन का अस्त्र है। वह उसका प्रयोग कर रही है। यह तय है, सरकार तब तक कबीलेवालों को कोई आर्थिक सुविधा नहीं देगी, जब तक वे आत्मसमर्पण नहीं कर देंगे। यह बात स्वतंत्र कबीलों के स्वभाव के विरुद्ध है। तब अगर कांग्रेस के डेपुटेशन से कोई उत्तम हल इस समस्या का निकल आवे, तो यह सौभाग्य की बात होगी।

× × ×

दस हज़ार रुपए की घड़ियाँ इनाम में !

हमने नीचे लिखी तीन चमत्कारी दवाओं की मशहूरी के लिये अपने ग्राहकों को दस हज़ार रुपए की घड़ियाँ इनाम में मुफ़्त देने का फ़ैसला किया है। जल्दी कीजिए।

* काला तेल *

यह बार-बार लगानेवाला ख़िज़ाब नहीं, एक अद्भुत चमत्कारी तेल है, जो मामूली तेलों की तरह इस्तेमाल किया जाता है, और इसकी ख़ूबी यह है कि इसका व्यवहार करनेवाले दंग रह गए। इससे सफ़ेद बाल एकदम काले हो जाते हैं और फिर हमेशा काले ही पैदा होते हैं। यह हमारे पूज्य स्वामीजी की एक अमूल्य भेंट है, जो दिमाग़ को हर तरह की ताक़त पहुँचाता है, आँखों की ज्योति को बढ़ाता है और सर में ठंडक पहुँचाता है, बालों की यह ख़ुराक है। मूल्य फ़ी शीशी १॥), तीन शीशी ३॥।) और हरएक शीशी के साथ एक फ़ैंसी म्यूट रिस्टवाच मुफ़्त भेजी जाती है, जिसकी मज़बूती और ख़ूबसूरती की गारंटी १० साल है। गारंटी का इक़रारनामा घड़ी के साथ भेजा जाता है। डाकख़र्च अलग, ३ शीशी मँगाने से ख़र्च माफ़।

* काले भी गोरे कर दिखाए *

यदि आपके शरीर और मुख का रंग काला पड़ गया हो, तो इस दवा का व्यवहार कीजिए। इससे चेहरे की झाइयाँ, काले दाग़, कील, फुंसियाँ, चेचक के दाग़ वग़ैरह मिटकर चमड़े का रंग फूल की तरह निखर आता है। हमारी यह 'पेरिस - ब्यूटी' एक आज़मूदा वस्तु है, जो शर्तिया शरीर का रंग पलटकर दिखा देती है। मूल्य फ़ी शीशी १॥), ३ शीशी ३॥।) ख़र्च अलग। ३ शीशी मँगाने से ख़र्च माफ़। हरएक शीशी के साथ एक फ़ैंसी म्यूट रिस्टवाच मुफ़्त भेजी जाती है, जिसकी ख़ूबसूरती की गारंटी १० साल है। गारंटी का इक़रारनामा घड़ी के साथ भेजा जाता है।

* बाल उम्र-भर नहीं उगते *

यह बाज़ारी चीज़ नहीं, वैज्ञानिक ढंग से बनाई गई है। इसका व्यवहार करने से नरम-से-नरम स्थान के बाल जड़ से उखड़ जाते हैं और फिर कभी पैदा नहीं होते। चमड़ी रेशम की तरह मुलायम हो जाती है। मूल्य १॥), ३ शीशी का ३॥।), ख़र्च अलग। ३ शीशी मँगाने से ख़र्च माफ़। हरएक शीशी के साथ एक फैंसी म्यूट रिस्टवाच मुफ़्त दी जाती है, जिसकी मज़बूती और सुंदरता की गारंटी १० साल है। गारंटी का इक़रारनामा घड़ी के साथ भेजा जाता है।

नोट—इन दवाओं के नापसंद होने से दाम वापस दिया जाता है।

पता—हिमालय औषधालय, पोस्ट-बॉक्स नं० ४६, (S. I. L.), अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८. भारत में क्षय-रोग

भारत की जन-संख्या में वृद्धि होने के साथ ही यहाँ के रोग और रोगियों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। आज आठ साल पहले यहाँ क्षय के रोगियों की संख्या औसत से प्रति-वर्ष बीस लाख थी, अब यह तादाद पचास लाख पहुँच चुकी है। इससे पता चलता है कि यह रोग कितना संक्रामक हो रहा है। शहरों में ही नहीं, अब तो गाँवों में भी काफ़ी संख्या में लोग इस रोग के शिकार होते हैं। बंगाल की 'ट्यूबर-कुलोसिस-एसोसिएशन' संस्था की रिपोर्ट के अनुसार अकेले बंगाल-प्रांत में साल-भर में एक लाख मौत क्षय-रोग से होती है; फिर भी उन्नीस लाख वर्गमील लंबे-चौड़े और चालीस करोड़ की आबादी के मुल्क में केवल चालीस स्थान ऐसे हैं, जहाँ क्षय-रोग से पीड़ित व्यक्तियों का इलाज होता है। इन स्थानों पर भी चिकित्सा के समस्त साधन और सुविधाएँ अभी तक प्राप्त नहीं हैं। इसके मुक़ाबिले इँगलैंड में, जहाँ क़रीब साढ़े चार करोड़ आदमी बसते हैं, सात सौ ऐसे स्थान हैं, जहाँ क्षय के रोगियों का अच्छे-से अच्छा इलाज होता है। इस दृष्टि से भी भारत अन्य देशों के मुक़ाबिले कितना पिछड़ा हुआ है! बीमारी की वृद्धि और जीवनी शक्ति के ह्रास का कारण यहाँ की बेबसी और निर्धनता तो है ही, सरकार की उदासीनता और भारतवासियों की दीर्घसूत्रता भी कुछ हद तक इसके लिये ज़िम्मेदार है। प्रति-वर्ष विवाहों और उत्सवों में लाखों-करोड़ों रुपए स्वाहा कर देनेवाले यहाँ के धनी-मानी व्यक्ति ऐसे लोकोपयोगी कामों के लिये कितना धन-व्यय करते हैं? क्षय-रोग साधारण बीमारी नहीं। अन्य बीमारियों के लिये लोग किसी-न-किसी तरह चिकित्सा के साधन ढूँढ़ लेते हैं, पर इस रोग के लिये विशेष स्थान, विशेष चिकित्सा और विशेष प्रयत्नों की आवश्यकता है। हर्ष की बात है कि भारत के वर्तमान वाइसराय की पत्नी लेडी लिलिथगो इसके लिये विशेष प्रयत्नशील हो रही हैं। आपने क्षय-रोग-निवारण के लिये उत्तम कोटि का चिकित्सा-गृह स्थापित करने का संकल्प किया है, और उसके लिये धन की अपील की है। इस प्रयत्न की हम सराहना करते हैं। पर हम चाहते हैं, सरकार और भारत के धनी व्यक्ति विशेष रूप से इस ओर ध्यान दें, और एक अखिल भारतीय संस्था के रूप में इसके लिये प्रयत्न किया जाय। प्रत्येक प्रांत और बड़े-बड़े शहरों में शाखा-चिकित्सालय खोले जायँ। केंद्रीय स्थान में एक बड़ा चिकित्सालय हो, जहाँ चिकित्सा के सर्वोत्तम साधन हों। वहाँ से प्रांतीय और स्थानीय शाखा-संस्थाओं को आवश्यक सहायता दी जाय। प्रचार और अन्य साधनों से इस बीमारी की भयंकरता

एजेंट:—माताबदल-पंसारी,
अमीनाबाद, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम की जाय। निर्धन व्यक्तियों के लिये निःशुल्क चिकित्सा का प्रबंध हो।

× × ×

६. मुस्लिम-लीग मुर्दाबाद

देश की स्वतंत्रता की राह में मुस्लिम-लीग आजकल सबसे बड़ा रोड़ा है। सरकार भी यह महसूस करती है कि उसे लड़ाई में भारत की सहायता और सहानुभूति न मिलने देने में मुस्लिम-लीग सबसे अधिक बाधक हो रही है। मि० जिन्ना की ज़िद और हठधर्मी के कारण ही कांग्रेस और मुस्लिम-लीग में कोई समझौता नहीं हो पाता, और इसी कारण भारतीय जनता (जिसकी सबसे बड़ी प्रतिनिधि-संस्था कांग्रेस है) और कांग्रेस के संबंध अच्छे नहीं हो पाते। भारत-सरकार का मुखपत्र 'स्टेट्समैन' तक आजकल मि० जिन्ना की नीति को घातक बतला रहा है। इस पत्र का साफ़-साफ़ कहना है कि मि० जिन्ना न केवल देश को, बल्कि मुस्लिम-लीग को भी गड्ढे में ढकेल रहे हैं। सर सिकंदरहयातख़ाँ और मियाँ फ़ज़लुलहक़ का मि० जिन्ना से मतभेद है। उक्त दोनो प्रधान मंत्री अपने-अपने सूबे में सरकार को युद्ध में सहायता पहुँचा रहे हैं। मि० जिन्ना की

अवकाश का समय
क्या चाहता है ?
मस्तिष्क के लिये आराम !

मानसिक भूख बढ़ने पर
साहित्य
आपका उपयोगी मनोरंजन करता है !

नवयुग, नवसमाज,
नवराष्ट्र की एकमात्र
प्रतिनिधि
'सुधा'
साहित्य का सुलभ अमृत

आपकी पसंद ?
बेशक, हम बता सकेंगे, सीधा-सादा, सरस सन् १९४० का सामयिक साहित्य, सामयिक भाषा, सामयिक कला आपको मिलेंगी, जिनका अभाव आपके मन में मासिक पत्रों की ओर से अरुचि पैदा कर चुका है !

हमारे कहने से नहीं, हिंदी-भाषा-भाषियों की अनमोल सम्मतियाँ देखकर आपको मानना ही पड़ेगा—

सुधा

आपके, आपकी गृहदेवियों के, आपके समाज के अनुकूल पत्रिका है !

आज ही ग्राहक बनकर
नए वर्ष का
विशेषांक मुफ़्त लीजिए !

वार्षिक मूल्य ६) एक प्रति का ॥)

पता—
मैनेजर 'सुधा', कवि-कुटीर, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बार-बार चेतावनी पर भी पंजाब और बंगाल-प्रांत में युद्ध-कमेटियों और सिविक गार्डों की स्थापना हो रही है, और मुस्लिम-लीग के आदमी उनमें शामिल हो रहे हैं। 'स्टेट्समैन' इस पर कहता है कि सर सिकंदरहयातख़ाँ और मौ० फ़ज़लुलहक़ मुस्लिम-लीग से अलग हो जायँगे, तो मि० जिन्ना की मुस्लिम-लीग केवल उन प्रांतों में रह जायगी, जहाँ हिंदुओं का बहुमत है। और, हिंदू-बहुमत प्रांतों के मुसलमान पाकिस्तान-आयोजना के विरोधी हैं। इसलिये यह आयोजना अपने आप मर जायगी, और तब मुस्लिम-लीग भी मुर्दा हो जायगी। राष्ट्र-पति मौलाना अबुल-कलाम आज़ाद के पत्र का उत्तर मि० जिन्ना ने जिस भाषा में दिया है, उससे न केवल समझदार मुसलमानों और प्रगतिशील मुस्लिम-संगठनों में ही नाराज़गी फैली है, बल्कि जो लोग अब तक मि० जिन्ना के साथ थे, वे भी इससे नाराज़ हो गए हैं, और उन्हें यह महसूस होने लगा है कि मि० जिन्ना अपनी ज़िद के कारण देश की समस्या हल करना ही नहीं चाहते,

सन् १९४० के बाद क्या होगा ?

साहित्य ही समाज और देश का सच्चा इतिहास है !
साहित्य की प्रगति नवयुग के अनुकूल होकर ही अमर बनेगी !!
साहित्य समय का सबसे बड़ा और निष्पक्ष प्रतिनिधि है !!!

इसी कसौटी पर परख लीजिए !
मासिक पत्रिकाओं में कौन ऐसी पत्रिका है, जो आपको और आपके परिवार को बहुत प्रिय है ?

यदि वह वास्तव में साहित्य हो, तो !

किसका
नए वर्ष का विशेषांक
सर्वोत्तम है ?
अभी से ग्राहक बननेवालों को
विशेषांक मुफ़्त !

विशेषांक के सुप्रतिष्ठित लेखक
कौन हैं ?

'सुधा'
वार्षिक मूल्य ६)
राजसंस्करण १२)

यह संख्या देखिए !

आज ही लिखिए—
मैनेजर 'सुधा'
३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वर्तमान संकट-पूर्ण अवस्था से निकलने के लिये उनके पास कोई मार्ग नहीं। वह अपनी लीडरी के लिये देश और उसके साथ मुसलमानों के हितों का भी क़ुरबानी कर रहे हैं। मुस्लिम-लीग के क्षेत्र में इस तरह की विचार-विभिन्नता और आपस की चख़चख़ ज़ोर पकड़ रही है। तभी मि० जिन्ना और उनके कट्टर भक्तों को मुस्लिम-लीग में सफ़ाई करने की सूझ सूझी है। इस सफ़ाई के सबसे पहले शिकार हो सकते हैं, तो वे सर सिकंदरहयातख़ाँ और मौ० फ़ज़लुल-हक़ हैं। हम समझते हैं, इस सफ़ाई के साथ मुस्लिम-लीग का सफ़ाया भी हो जायगा, या यह दो दलों में विभक्त हो जायगी। हमने यह पहले भी कहा है, और फिर इस बात को दुहराते हैं कि किसी भी राजनीतिक समस्या के लिये मि० जिन्ना को निमंत्रण देकर कांग्रेस उनकी महत्ता बढ़ा देती है, और इसकी प्रतिक्रिया कांग्रेस की इज़्ज़त कम करती है। भविष्य में कांग्रेस और सरकार, इन दो शक्तियों के बीच में ही राजनीतिक चर्चा होनी चाहिए, और कांग्रेस समूचे देश की तरफ़ से सरकार के साथ बातचीत करे। मि० जिन्ना और मुस्लिम-लीग के साथ किसी तरह के समझौते की चर्चा न की जाय।

× × ×

१०. यू० पी० का ऋणमोचन-क़ानून

हिंदोस्तान में पुराने क़र्ज़ की समस्या भी एक महान् समस्या है। यह क़र्ज़ विशेषकर किसान और छोटे-छोटे ज़मींदारों पर है। इसकी तादाद कुल देश में सत्रह अरब और अकेले यू० पी० में क़रीब दो अरब रुपए है। कांग्रेस-मंत्रिमंडल ने एक बिल तैयार करके इस समस्या को बहुत कुछ हल कर लिया था। वर्तमान अवस्था में इससे अच्छा और कोई उपाय न था कि जिन लोगों पर अनाप-शनाप क़र्ज़ का बोझ लदा हुआ है, वे उससे हलके हो जायँ, और जिन लोगों ने क़र्ज़ दे रक्खा है, जिसके वसूल होने की कोई सूरत नहीं, उन्हें भी उसका कुछ भाग वापस मिल जाय। इस दृष्टि से कांग्रेस-मंत्रिमंडल द्वारा तैयार किया हुआ क़ानून बड़े फ़ायदे की चीज़ थी। एसेंबली से यह बिल पास भी हो चुका था, पर वह क़ानून नहीं बन पाया, तब तक कांग्रेस-मिनिस्टरी ने इस्तीफ़ा दे दिया। अब, सुना है, गवर्नर साहब अपने अधिकार से उक्त बिल को क़ानून का रूप दे रहे हैं। यह भी ख़बर है कि बिल का जैसा रूप पहले था, उसमें काफ़ी काट-छाँट की गई है, और अब वह उतना लोगों के फ़ायदे की चीज़ नहीं रह गया, जितना पहले था। यू० पी० के भूत-पूर्व माल-मंत्री श्रीयुत रफ़ीअहमद क़िदवई ने इसकी कड़ी आलोचना की है! क्या हम गवर्नर साहब से आशा करें कि जिस प्रकार अब तक कांग्रेसी मंत्रि-मंडल के बनाए हुए अन्य क़ानूनों को ज्यों-का-त्यों लागू करके उन्होंने परंपरा क़ायम रक्खी है, उसी प्रकार इस क़ानून के संबंध में भी करेंगे? आख़िर अब न सही, कुछ दिनों बाद फिर प्रांत में लोक-प्रिय सरकार क़ायम होगी, और तब फिर आजकल के बनाए हुए क़ानून में पहले-जैसा संशोधन किया गया, तो उसमें समय और शक्ति का व्यय तो होगा ही, गवर्नर साहब और उनके सलाहकारों के लिये भी यह शोभा की बात न रहेगी। हम चाहते हैं, प्रांत के चार करोड़ किसानों की भावना और उनके हित का ख़याल करके गवर्नर साहब क़र्ज़-क़ानून को उसी रूप में पास करेंगे, जिस रूप में वह एसेंबली से पास हो चुका है।

× × ×

११. दहेज़ और शादियों का ख़र्च

हमारे देश की सामाजिक कुरीतियों में दहेज़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की प्रथा भी एक बहुत बड़ी बुराई है। शिक्षा के प्रसार से जहाँ और तरह की सामाजिक बुराइयाँ कम होती जा रही हैं, और लोग जाति-पाँति के संकीर्ण दायरे से बाहर निकलकर अंतरजातीय संबंध और सहयोग की तरफ़ बढ़ रहे हैं, वहाँ पढ़े-लिखों में दहेज़ की मात्रा और बढ़ गई है। जो लड़का जितना ही अधिक शिक्षित होगा, उसके लिये दहेज़ की रक़म भी उतनी ही बड़ी चाहिए। ऐसे उदाहरण आएदिन सर्वत्र देखे जाते हैं। पढ़े-लिखे और अच्छे ख़ानदानों के लड़कों का बाज़ार-भाव की तरह मोल-तोल होता है। जिस लड़की के अभिभावकों ने अधिक रक़म भेंट कर दी, उसका संबंध पक्का हो गया। इसमें वर-कन्या की परस्पर पसंदगी और मंज़ूरी का ख़याल कम रहता है। इसके परिणाम-स्वरूप कितनी ही लड़कियाँ कुमारी रह गईं। कितने ही अनमेल संबंधों के कारण भयंकर सामाजिक दुष्परिणाम निकले। इससे अलग-अलग जातियों की संगठित सभाओं ने कुछ नियम बनाए, और जिन जातियों की अच्छी संगठित सामाजिक संस्थाएँ हैं, उनमें ऐसे नियमों का पालन भी हुआ। फलतः दहेज़ की बुराइयाँ किसी-किसी जाति के अंदर से कम हो गई हैं। पर शादियों के दूसरे ख़र्च अब भी वैसे ही बने हैं। इन दिनों कई जगह की विचित्र ख़बरें प्राप्त हुई हैं। एक-एक शादी में पच्चीस और तीस हज़ार रुपए फूँक देना उस देश और जाति के व्यक्ति को कितना शोभा देता है, जहाँ के कितने ही लोग प्रतिदिन पेट पर पट्टी बाँधकर सो जाते हों। हम समझते हैं, कोरे उपदेशों से ऐसे लोग कभी मान भी नहीं सकते। जिन लोगों को सामाजिक मंच पर दहेज़ के विरोध में भाषण देते देखा गया, वे ही अपनी संतान पर अधिक-से-अधिक दहेज़ माँगते देखे गए! यू० पी० के कांग्रेस-मंत्रिमंडल ने एक बिल इस संबंध में तैयार किया था, जिसमें शादियों के ख़र्च की सीमा निश्चित की गई थी। खेद है, वह चीज़ जहाँ-की-तहाँ पड़ी रह गई। पर इस आवश्यकता को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। शादियों की फ़िज़ूलख़र्ची रोकने के लिये क़ानूनी प्रतिबंध लगाना ज़रूरी है।

× × ×

१२. एक कलाकार का निधन!

भारत की सुप्रसिद्ध फ़िल्म-कंपनी 'बंबई-टाकीज़' के संस्थापक, सिनेमा-जगत् के प्रसिद्ध कलाकार श्रीहिमांशुरायजी का, बयालीस वर्ष की अवस्था में, देहावसान हो गया! आपके असामयिक निधन से भारत के सिनेमा-संसार की जो महान् क्षति हुई है, निकट भविष्य में उसकी पूर्ति होना कठिन है। श्रीयुत हिमांशुराय बंगाल के एक संपन्न और सुसंस्कृत परिवार में पैदा हुए थे। उच्च शिक्षा प्राप्त कर आप इँगलैंड चले गए, और वहाँ इंडिया-ऑफ़िस में काम करने लगे। वहाँ आपका परिचय बहुत बढ़ गया। वहीं से आपको चित्रपट-कला का शौक़ पैदा हुआ, और यह शौक़ यहाँ तक बढ़ा कि आपने और सब काम छोड़कर यह कार्य व्यवसाय के रूप में अपनाया। इँगलैंड में ही आपका साक्षात् देविकारानी से हुआ, जो शनैः-शनैः प्रेम और पति-पत्नी के रूप में परिणत हो गया। इन दोनों स्त्री-पुरुषों ने चित्रपट-कला में जो नाम पैदा किया है, उसका उदाहरण अन्यत्र मिलना मुश्किल है। पहले आप विलायत में ही सिनेमाओं में काम करते थे, और वहाँ आपको अच्छा प्रलोभन दिया गया। पर आपने उस पर ध्यान न देकर भारत में, सन् १९३४ में, बंबई-टाकीज़ की नींव डाली, और उसमें भारी यश प्राप्त किया। राय बाबू का वैयक्तिक जीवन बहुत सादा और मिलनसार था। अपने कार्य में अनवरत परिश्रम और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यवसाय के कारण ही आप इतना सुयश संपादन कर सके। पर इसका प्रभाव आपके स्वास्थ्य पर बुरा पड़ा। आपको उन्माद-रोग का शिकार होना पड़ा। आज श्रीमती देविकारानी के हृदय की क्या हालत होगी, जिनके नाम और कार्य से प्रत्येक सिनेमा-दर्शक और प्रेमी पूरी तरह परिचित है। आपके इस दुःख में हम अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करते और परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उन्हें वह साहस प्राप्त हो, जिससे वह अपने पति का अपूर्ण कार्य अधिक सफलता के साथ संपन्न कर सकें।

× × ×

१३. पं० हर्षदेव ओली का स्वर्गवास !

पं० हर्षदेव ओली के असामयिक देहांत का समाचार पत्रों में पढ़कर दुःख हुआ ! सरस्वती में उनकी कविताएँ द्विवेदी-काल में छपा करती थीं। बाद को वह हमारे अनुरोध से सुधा और माधुरी में भी लिखते रहे हैं। लखनऊ के आई० डी० टी० (अस्तंगत अँगरेज़ी-दैनिक) में मिस्टर रंगा आयर के सहायक संपादक थे। तब हमें भी दर्शन दिया करते थे। सहृदय व्यक्ति थे, हमारे मित्र। युक्त प्रांत के पर्वतीय प्रांतों के अच्छे कांग्रेस-कार्यकर्ता थे। लखनऊ और प्रयाग में उनके मित्रों और परिचितों की संख्या काफ़ी है। उन सभी को उनकी असामयिक मृत्यु से आघात पहुँचा है। अभी उनकी उम्र ४०-४५ वर्ष की ही थी। ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति दें।

× × ×

१४. वीणा और विचार-संपादकों से निवेदन

श्रावण की 'वीणा' में कलकत्ते के साप्ताहिक 'विचार' पर एक संपादकीय नोट निकला है। विचार में जो भद्दे ढंग से प्रतिष्ठित साहित्यिकों या व्यक्तियों पर आक्षेप किए गए हैं, उनकी ओर वीणा-संपादक ने पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। क्या सुदर्शनजी, क्या साधना बोस और क्या सुरेंद्रनाथ देसाई, विचार में उनको लेकर ओछे ढंग से मज़ाक़ किया गया है। महात्मा गांधी और श्रीजिन्ना के चित्र के नीचे जो एक उर्दू की शेर छापी गई है, उसका छापना वीणा-संपादक के अनुसार 'निहायत ओछी बात' है। हम वीणा-संपादक के कथन से सहमत हैं, परंतु यह उपदेश दूसरों के लिये ही न होना चाहिए। वीणा के होलिकांक में जो भद्दे मज़ाक़ छपे थे, वे हिंदी के लिये लज्जाजनक थे। और, वीणा के इसी अंक में 'निराला'जी के लिये इस तरह की भाषा का प्रयोग—जैसे "कवि-सम्मेलनों में उन्हें फूलकर कुप्पा बने बैठे देख" इत्यादि—उचित नहीं हुआ। हमारा नम्र निवेदन है कि अशिष्ट परिहास से हिंदी का अहित होता है; उसका स्थान शिष्ट समालोचना को दिया जाय, जिससे साहित्य का हित हो। वीणा और विचार के संपादक दोनो ही हमारे मित्र हैं। इसीलिये हमने यह सब लिखने का साहस किया है। आशा है, इस पर ध्यान दिया जायगा।

× × ×

१५ पुराणों तथा अन्य संस्कृत-ग्रंथों का अनुवाद

अखिलभारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सहायक मंत्री पं० नारायणदत्तजी पांडेय लिखते हैं—"बहुतेरे महत्त्व-पूर्ण पुराणों तथा अन्य संस्कृत-ग्रंथों का अभी तक हिंदी में अनुवाद नहीं हुआ है, और जिनका हुआ भी है, उनमें से बहुतों का शुद्ध और मुहाविरेदार भाषा में नहीं हो पाया है। जहाँ तक हमारी जानकारी है, अभी तक अग्नि-पुराण तथा वायुपुराण का कोई भी हिंदी-अनुवाद प्रकाशित नहीं हुआ। सभी संस्कृत तथा हिंदी-विद्वानों का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करते हुए हम यह सूचित करते हैं कि यदि इन दो पुराणों का हिंदी-अनुवाद किसी सज्जन के पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो, या कोई सज्जन यह कार्य करने को उद्यत हों, तो हमसे लिखा-पढ़ी करें। अन्य संस्कृत-ग्रंथों का भी (जिनका अभी तक अनुवाद न हुआ हो) अच्छा अनुवाद होने पर प्रकाशित किया जा सकता है। सम्मेलन अनुवादकों को १५ प्रतिशत रॉयल्टी देता है। विशेष दशा में अनुवाद के लिये इकट्ठा पारिश्रमिक देने पर भी विचार हो सकेगा।"

समस्त संस्कृत-साहित्य के प्रकाशन के संबंध में हमने भी एक योजना बनाई थी। दिल्ली-सम्मेलन में, इस संबंध में, एक प्रस्ताव भी पास हो गया था। समिति भी बन गई थी। ओरछा-नरेश हिज हाइनेस महाराजा वीरसिंहदेव उस समिति के प्रधान थे, रावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र मंत्री। सदस्यों में थे बाबू पुरुषोत्तमदासजी टंडन, सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला, आचार्य चतुरसेनजी शास्त्री आदि। हम भी एक सदस्य थे। खेद है, कोई मीटिंग ही न हो पाई, और प्रस्ताव प्रस्ताव ही रह गया। हमारा मित्रवर ओरछा-नरेश, पूज्य मिश्रजी और टंडनजी से अनुरोध है कि इस काम को आगे बढ़ाएँ।

× × ×

१६. बाबू शिवपूजनसहाय की नियुक्ति

हिंदी-प्रेमियों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सुप्रसिद्ध लेखक बाबू शिवपूजनसहाय छपरा के राजेंद्र-कॉलेज में हिंदी के अध्यापक नियुक्त हुए हैं। इसके लिये हम बाबू शिवपूजनसहाय को बधाई देते हैं, यद्यपि इससे उस कॉलेज का ही गौरव बढ़ा है, शिवपूजनसहायजी का नहीं। देश की अन्य शिक्षा-संस्थाओं के लिये यह उदाहरण अनुकरणीय है। हिंदी के प्रतिष्ठित लेखकों को अपने यहाँ स्थायी या अस्थायी रूप से अध्यापन के लिये बुलाकर कॉलेजों के प्रबंधक अपने शिक्षण को अधिक पूर्ण बना सकते हैं। विशेष रूप से

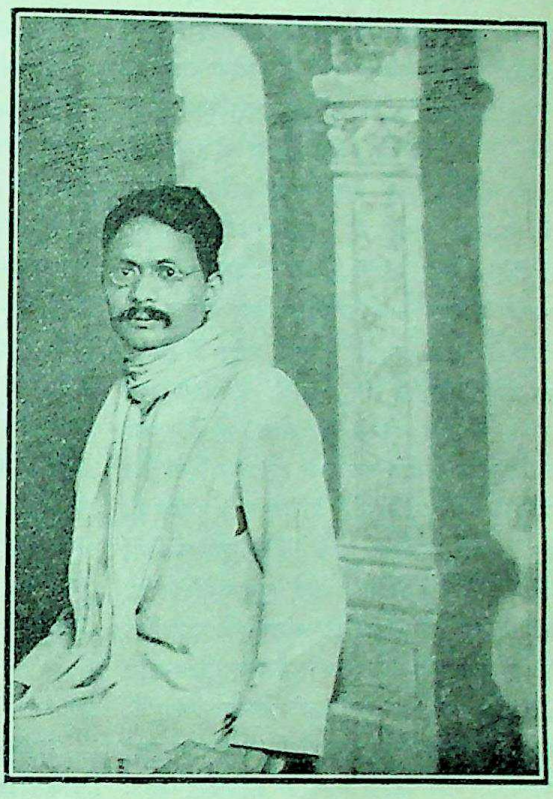

बाबू शिवपूजनसहाय

विद्यार्थी-समाज को साहित्यिकों के साक्षात्कार से महान् लाभ होगा, और उनमें अपनी भाषा तथा साहित्य के प्रति अभिरुचि बढ़ेगी। फिर बाबू शिवपूजनसहाय तो एक शैलीकार हैं। उनके सत्संग में आकर योग्य विद्यार्थी हिंदी के लेखक भी बनेंगे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो साधारण एम्० ए०-पास अध्यापक के संसर्ग में सुलभ न था।

× × ×

१७. राष्ट्रीय रक्षा-दल

यों तो भविष्य के बारे में कोई भी निश्चय-पूर्वक कुछ नहीं कह सकता, पर मनुष्य आँखों से जो देखता है, और दिमाग़ से जो सोचता है, उसके अनुसार उसे बंधेज भी बाँधने पड़ते हैं। आज संसार की स्थिति बिगड़ रही है। योरप-महाद्वीप का नक़्शा ही बदल गया, और आफ़्रिका तथा एशिया में संघर्ष जारी है। हमारा देश यद्यपि अब भी इस व्यापक हलचल से बरी नहीं, पर आगे चलकर कभी वह इससे अधिक विकट परिस्थिति में फँस सकता है। अतः हमारे सामने देश-रक्षा का प्रश्न आज सबसे अधिक महत्त्व-पूर्ण और सबसे पहले ज़रूरी चीज़ है। देश में जितने अलग-अलग संगठन और दल हैं, वे अपने-अपने दृष्टिकोण से इस मसले पर सोच रहे हैं, और उसके अनुसार उन्होंने कार्य भी शुरू कर दिया है। सरकार के पास फ़ौज और पुलिस की ताक़त है, फिर भी वह 'सिविक गार्ड' और युद्ध-कमेटियों का निर्माण कर रही है। इन युद्ध-कमेटियों का मतलब भी सरकार की मंशा के मुताबिक़ आंतरिक व्यवस्था ठीक रखना है। मुसलिम-लीग ने 'राष्ट्रीय मुसलिम-रक्षा-दल' तैयार किया है, और हिंदू-महासभा की तरफ़ से भी 'हिंदू-रक्षा-दल' का आयोजन हो रहा है। इसके अतिरिक्त कहीं-कहीं अलग-अलग स्थानीय संगठन भी इसी उद्देश्य के लिये प्रयत्न कर रहे हैं। इन सबका यह उद्देश्य है कि देश में किसी प्रकार की गड़बड़ी उपस्थित होने पर ये अपने वर्ग और अपने संप्रदाय की रक्षा कर सकें। इन सब संगठनों में हमें राष्ट्रीय रक्षा-दल सर्वोत्तम मालूम पड़ता है। यह संगठन बहुत व्यापक है। अन्य सांप्रदायिक ढंग पर बने हुए संगठनों से यह भी ख़तरा है कि कहीं वे क्षुद्र स्वार्थों को लेकर आपस में ही झगड़े पैदा करके अशांति न खड़ी कर दें। राष्ट्रीय रक्षा-दल का उद्देश्य सभी दलों, वर्गों और जातियों के लोगों में अमन क़ायम रखना है। उसमें हिंदू, मुसलमान और सभी क़ौमों के व्यक्ति शामिल हो सकते हैं। ज़िले-ज़िले और शहर-शहर में उसकी एक-एक कमेटी होगी, और उसके अंदर एक स्वयं-सेवक-सेना होगी। हर्ष की बात है, युक्त-प्रांतीय कांग्रेस-कमेटी की कौंसिल ने यह अनुष्ठान किया है। उसका क़ौमी सेवा-दल भी राष्ट्रीय रक्षा-दल का एक अंग होगा, जिसका पहले से सुदृढ़ संगठन है। प्रांतीय कांग्रेस-कमेटी की आयोजना के अनुसार इस प्रकार प्रांत-भर में एक लाख स्वयंसेवक ट्रेंड किए जायँगे, जिसके ख़र्च के लिये बीस लाख रुपए का अंदाज़ लगाया गया है। यह रक्षा-दल किसी भी वक़्त आम जनता की सेवा और उसकी रक्षा के लिये तैयार रहेगा। जनता और देश के प्रत्येक शुभचिंतक व्यक्ति का कर्तव्य है कि इस कार्य के साथ पूरा सहयोग करे, और राष्ट्रीय रक्षा-दल में शामिल होकर तथा धन से उसकी सहायता करके इस कार्य को सफल बनाने में योग दे।

× × ×

१८. हालवेल-स्मारक आंदोलन

कलकत्ता में हालवेल-स्मारक (कलकत्ता की कालकोठरी) के संबंध में आंदोलन शुरू हो गया। सरकार ने श्रीयुत सुभाषचंद्र बोस-जैसे देश के गण्य-मान्य और उच्च श्रेणी के नेता को इसी भय से गिरफ़्तार कर लिया। आप हालवेल-स्मारक को हटाने के लिये जिस दिन सत्याग्रह करनेवाले थे, उससे पहले आपको पकड़ लिया गया। पर इससे आंदोलन ठंडा नहीं पड़ेगा, बल्कि और भी बढ़ता जायगा। सत्याग्रहियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के जो जत्थे इस स्मारक की ओर गए, उनकी गिरफ़्तारियाँ हुईं। जो हो, बंगाल में यह आंदोलन अब पूरी कामयाबी हासिल करके ही ठंडा होगा।

श्रीयुत फ़ज़लुलहक़ की सरकार यह मानते हुए भी कि इस स्मारक का क़ायम रखना अनावश्यक एवं अवांछनीय है, अकारण ही इस मामले में देर कर रही है। इतिहासकारों ने यह सिद्ध कर दिया है कि यह हालवेल-स्मारक मि० हालवेल के दिमाग़ की उपज है, जिसका उद्देश्य अँगरेज़ों क़ौम को हमेशा हिंदोस्तानियों के प्रति प्रतिहिंसा के भाव रखने के लिये भड़काते रहना था। वहाँ ऐसी कोई भी घटना नहीं हुई थी, जिसकी याद इस स्मारक से दिलाई जाती है। और, अगर इतिहास के तथ्यों पर धूल डालकर ऐसा मान भी लिया जाय, तो क्या भारत में अँगरेज़ों और हिंदोस्तानियों का संबंध देखते हुए यह ठीक मालूम होता है कि इस तरह की यादगार क़ायम रक्खी जाय? इसका मतलब तो यह होगा कि सरकार अँगरेज़ों और हिंदोस्तानियों की आपस की दुश्मनी के घाव को ताज़ा रखना चाहती है। कानपुर में भी एक ऐसा ही 'यादगार-कुआँ' (Memorial Well) है। आज की परिस्थिति में और अँगरेज़ तथा हिंदोस्तानियों के बीच में संबंध क़ायम रखने के उद्देश्य से हम इस तरह के स्मारक क़ायम रखना अनावश्यक ही नहीं, बड़ा हानिकर भी समझते हैं। मदरास से नील के पुतले को हटाकर भूतपूर्व श्रीराजगोपालाचार्य की सरकार ने मदरास में प्रशंसनीय कार्य किया। श्रीफ़ज़लुलहक़ का भी कर्तव्य है कि एक हिंदोस्तानी के नाते इस कलंक के टीके को, जो बंगाल के हिंदुओं और मुसलमानों पर लगाया गया है, अच्छी तरह धोकर बंगाल की खाड़ी में बहा दें। इससे बंगाल के हिंदुओं और मुसलमानों के ही नहीं, हिंदोस्तानियों और अँगरेज़ों के आपस के संबंध भी अच्छे होंगे। ख़ुशी की बात है, सरकारी गोरे पत्र 'स्टेट्समैन' तक अब यही कहते हैं कि यह स्मारक हट जाना चाहिए।

× × ×

१९. बंबई-सरकार और मद्य-निषेध

बंबई-प्रांत में शराबख़ोरी रोकने के लिये कांग्रेसी सरकार द्वारा बनाए गए क़ानून का पालन कराने में प्रांतीय सरकार ने पहले जिस साहस से काम लिया था, उसमें अब ढिलाई आ गई है। हाईकोर्ट के फ़ैसले के बाद तुरंत ही सरकार ने क़ानून की मंशा क़ायम रखने के लिये कार्यवाही की। इससे लोगों में बड़ा उत्साह पैदा हुआ, और सरकार के कार्य की प्रशंसा हुई। पर अब सरकार ने विलायती शराब को आंशिक रूप में जायज़ क़रार देकर सिर्फ़ देशी शराब पर ही प्रतिबंध जारी रक्खा है। इससे मालूम होता है, जो क़ानून पहले कांग्रेसी मंत्रिमंडल ने बना दिया है, उसके संबंध में सरकार आगा-पीछा सोचने लग गई है। इससे शराबबंदी-कार्य के साथ जिन सार्वजनिक व्यक्तियों का सरकार से सहयोग था, वह भी टूट गया है। सरकार के लिये वाक़ई यह अपमान-जनक बात होगी, अगर उसके विधान के अंदर बनाए गए किसी क़ानून का पूरी तरह पालन न हो सके।

× × ×

२०. संग्राम का साहित्य के प्रचार पर प्रभाव

लड़ाई का असर हरएक चीज़ पर पड़ता है। इधर जब से योरप में युद्ध की गति बढ़ी है, तब से वहाँ युद्ध-विषयक साहित्य की बाढ़ आ गई है। जर्मनी की पोलैंड पर चढ़ाई होने के समय से अब तक लाखों ही पुस्तकें योरप की विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। हमें अँगरेज़ी में प्रकाशित कुछ पुस्तकों का पता है, जिनकी लाखों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतियाँ, अर्थात् कई संस्करण, केवल सप्ताहों के अंदर खप गए। दूसरी तरफ़ हमारा देश है। यहाँ युद्ध की ख़बरों के कारण दैनिक समाचार-पत्रों की बिक्री अवश्य बढ़ी, पर काग़ज़ के दाम चढ़ने से जहाँ अख़बारों के मूल्य में थोड़ी-सी वृद्धि हुई, वहाँ बिक्री पहले से भी कम रह गई। यह असर विलायती पत्रों पर भी पड़ा। वहाँ भी काग़ज़ की कमी के कारण पत्रों के आकार में कमी और मूल्य में वृद्धि हुई है, लेकिन अख़बारों का प्रचार और बढ़ा है। पुस्तकों का अधिक प्रकाशन हुआ है, और साहित्य की वृद्धि तथा बिक्री ख़ूब हो रही है। हमारे यहाँ इस वक़्त कोई पुस्तक छपाना भारी आर्थिक कठिनाई मोल लेना है। यहाँ तो लोग सस्ती चीज़ों के ग्राहक हैं। पुस्तकों की ख़रीद में उस पुस्तक को सबसे अधिक पसंद करेंगे, जिस पर अधिक-से-अधिक कमीशन मिलता होगा। आज जो पुस्तक प्रकाशित होगी, उसका लागत मूल्य पहले से अधिक होगा, अतः पुस्तक की क़ीमत उसी आकार-प्रकार की पहले छपी हुई पुस्तक की क़ीमत से अधिक होगी। इसका असर पुस्तक की बिक्री पर पड़ेगा। उसकी खपत कम होगी। जिन पत्र-पत्रिकाओं ने इस काल में, काग़ज़ और दूसरी चीज़ों के दाम चढ़ जाने पर भी, अपना मूल्य नहीं बढ़ाया, उन्होंने वास्तव में साहस का कार्य किया है! पर कुछ पत्रों की दशा तो विचित्र हो गई है। उनका मूल्य ड्योढ़ा हो गया है, आकार में कमी हो गई है, काग़ज़ में भी किफ़ायत-शारी की गई है, तो भी नौबत यहाँ तक पहुँच गई है कि जिन लेखकों को पारिश्रमिक के रूप में उनके यहाँ से कुछ पैसे मिलते थे, उन्हें भी बंद करना पड़ा है। जब ऐसे बड़े-बड़े पत्र, जो ग्राहक-संख्या और अपने ऊँचे स्टैंडर्ड का सबसे अधिक दम भरते हैं, ऐसा करते हैं, तो साधारण पत्रों की बात ही क्या। हमारी समझ में लेखकों का पारिश्रमिक और मसिजीवी व्यक्तियों की मजूरी कम करना उसी वक़्त ठीक होगा, जब पत्र का अस्तित्व ही ख़तरे में पड़ जाय, वरना अन्य अनिवार्य ख़र्चों के साथ लेखकों को दिए जानेवाले पैसे भी शामिल रखने चाहिए। लेखकों को प्रोत्साहन न मिलने तथा उन्हें अपनी जीविका के अन्य स्रोत तलाश करने देने का बुरा असर साहित्य पर पड़ता है। इससे साहित्य की प्रगति में बाधा पड़ती है। जिन पत्रों की आर्थिक दशा अच्छी है, उन्हें चाहिए, ऐसे वक़्त में कुछ हानि सहकर भी अपना आदर्श और परंपरा बनाए रक्खें। हमें लोक-रुचि का ध्यान रखकर साहित्य-प्रकाशन करना चाहिए। पर साहित्य के लिये लोक-रुचि पैदा करना भी हमारा काम है। इसलिये ऐसे वक़्त में हानि-लाभ की विशेष चिंता न कर हमें अपने कार्य पर विश्वास करके उसे चलाना है। साहित्य-सेवा और साहित्य की वृद्धि में इस युद्ध-जन्य परिस्थिति से गति-अवरोध नहीं होना चाहिए।

× × ×

२१. हास्यरसावतार स्वर्गीय चतुर्वेदीजी के संबंध में

सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति, ब्रजबानी के कुशल कवि, खड़ी बोली के लब्धप्रतिष्ठ लेखक, हास्यरसावतार पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी के देहावसान को एक वर्ष बीत गया। इस अवसर पर उनके संबंध में लिखे लेखों, कविताओं तथा संस्मरणों का संग्रह उनके पुत्र प्रकाशित करना चाहते हैं। विचार सुंदर है। सच्चे साहित्यिक का सच्चा श्राद्ध तो उसकी स्मृति को साहित्यिक स्वरूप देना ही है। उनके मित्रों और प्रशंसकों को चाहिए कि इस कार्य में उनके पुत्रों का करावलंब करें। स्वर्गीय चतुर्वेदीजी के संबंध में अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचना उनके ज्येष्ठ पुत्र श्रीरमावल्लभ चतुर्वेदी के पास, पोस्ट मलेपुर, ज़िला मुंगेर के पते से, यथा-

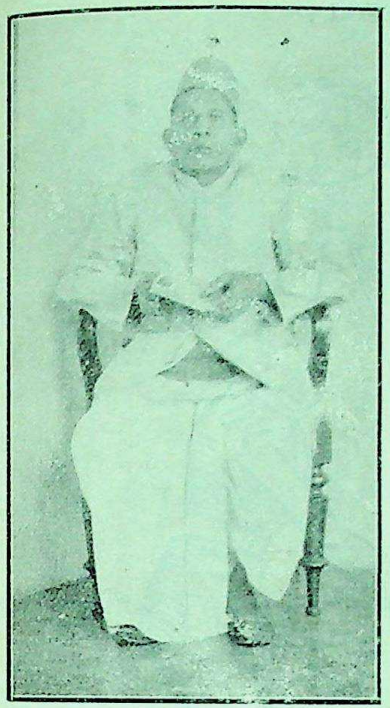

स्वर्गीय पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी

संभव शीघ्र भेज दें। लेखकों और संपादकों से भी समभ्यर्थना है कि वे उनके संबंध में प्रकाशित रचनाओं की कतरनें भी भेज दें।

× × ×

२२. तिवारीजी की माता का निधन !

इस फ़ार्म के छपते-छपते हमें मित्रवर पं० ब्रजमोहनजी तिवारी का पत्र मिला, जिससे मालूम हुआ कि उनकी मातेश्वरी का, आगरे में, शरीरांत हो गया। ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति दें, और तिवारीजी को धैर्य। मित्र के शोक में समवेदना होना स्वाभाविक ही है, अतएव इसका उल्लेख करना व्यर्थ है।

× × ×

२३. चित्र-परिचय

डॉ० अवनींद्रनाथ ठाकुर का परिचय कराना सूर्य को दीपक दिखाना होगा। आप वर्तमान बंगाली चित्र-कला-शैली के जनक हैं। आपके शिष्य भारतवर्ष-भर में फैले हुए हैं। आपका 'संकीर्तन'-नामक चित्र अन्यत्र छपा है। चित्र में चैतन्य महाप्रभु अपने साथियों-सहित कीर्तन कर रहे हैं। बहुत ही भाव-पूर्ण चित्र है। भावावेश में वह कितने मस्त हैं, यह देखते ही बनता है।

× × ×

श्रीअसितकुमार हाल्दार स्थानीय आर्ट स्कूल के प्रिंसिपल हैं। आप डॉ० अवनींद्रनाथ ठाकुर के प्रधान शिष्यों में हैं। आप उच्च कोटि के कुशल, कृतविद्य कलाकार हैं। आपकी गणना भारतवर्ष के सर्वोच्च चित्रकारों में है। आपका 'पर्वत की आत्मा'-नामक चित्र सुधा में प्रकाशित है। यह कितना कला-पूर्ण है, यह सहृदय चित्रकला-रसिक ही समझ सकते हैं।

× × ×

श्रीहकीम मुहम्मदख़ाँ चित्रकार से सुधा के पाठक भली भाँति परिचित हैं, क्योंकि आप वर्षों तक सुधा-स्टाफ़ में रहे हैं, और आपके चारु चित्र उसके कलेवर की श्री-वृद्धि करते रहे हैं। हकीम साहब हाल्दारजी के सहपाठी और डॉ० अवनींद्रनाथजी के शिष्यों में से हैं। आपके 'पर्वतीय प्रकृति'-नामक चित्र में काश्मीर का एक दृश्य है। जब हम काश्मीर गए थे, तब वहाँ हमने यह दृश्य देखा था। उसी पर एक दोहा रचा था, जिसका भाव लेकर हकीम साहब ने यह चित्र अपनी कुशल कूची से अंकित किया है। चित्र दर्शनीय है। उसके नीचे वह दोहा भी दे दिया गया है।

भाद्रपद की संख्या में हम प्रसिद्ध चित्रकार श्रीयुत काशिनाथ-गणेश खातू का चित्र देंगे। वह देर में ब्लाक बनने के कारण नहीं दिया जा सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमध्य-सागर-युद्ध

[चित्रकार—श्रीयुत शिक्षार्थी]

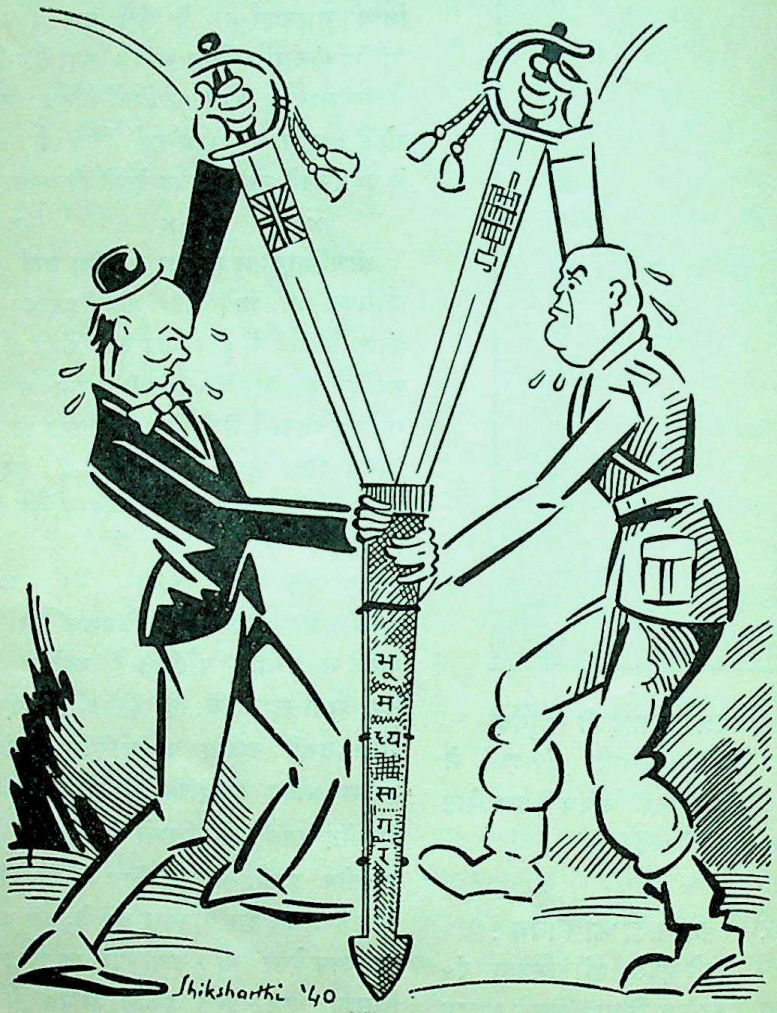

भूमधि-सागर-म्यान मैं इटली-ब्रिटिस-कृपान—
रहन चहत इकसंग ही, ह्वै है कहा सुजान ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

+ श्रीः +

सुधा

सामाजिक, साहित्यिक और राजनीतिक

मासिक पत्रिका

—:❀:—

वर्ष १३, खंड २

माघ-आषाढ़, ३१७ तुलसी-संवत् (१९९६-९७ वि०)

फ़रवरी-जुलाई, १९४० ई०

—:०:—

संपादक

सर्वप्रथम देव-पुरस्कार-विजेता

श्रीदुलारेलाल भार्गव

(संपादक गंगा-पुस्तकमाला)

—:०:—

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

राजसंस्करण		साधारण संस्करण		सस्ता संस्करण	
वार्षिक मूल्य	१२)	वार्षिक मूल्य	६)	वार्षिक मूल्य	४)
एक प्रति का मूल्य	१)	एक प्रति का मूल्य	॥)	एक प्रति का मूल्य	।)
विदेश के लिये वार्षिक	१२)	विदेश के लिये वार्षिक	६)	विदेश के लिये वार्षिक	४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुद्रक तथा प्रकाशक
श्रीदुलारेलाल अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
और गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

१—पद्य

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
१.	अचरज	श्रीचंद्रप्रकाश वर्मा 'चंद्र'	३३५
२.	अर्चना	साहित्यभूषण श्रीविनोद	१४५
३.	अरुणा	श्रीयुत रामप्रकाश अग्रवाल बी० ए०...	२५५
४.	अश्रु-कण	श्रीदुलारेलाल	१३८
५.	आनंद	श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	२
६.	कभी-कभी	श्रीयुत चिरंजीलाल 'एकाकी'	४२६
७.	कलुषित आनंद	श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	१६४
८.	कवि का दुःख	श्रीयुत चिरंजीलाल 'एकाकी'	२४०
९.	क्रांति-गीत	श्रीयुत बालेश्वर गुरु	३१७
१०.	गीत	श्रीपं० व्रजमोहन तिवारी एम्० ए०, एल्० टी० ...	३८५
११.	गीत	श्रीयुत कुँवर चंद्रप्रकाशसिंह...	२१६
१२.	गीत	श्रीसोहनलाल द्विवेदी एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	१
१३.	गीत	कुमारी विद्याकुमारी भार्गव	५३२
१४.	गीत	श्रीसोहनलाल द्विवेदी एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	४८१
१५.	दरस-दीपक अब जगा लो, प्राण मेरे !	श्रीयुत नीलकंठ तिवारी एम्० ए०, साहित्यरत्न ...	४०६
१६.	दाहे	श्रीयुत तेजनारायण काक एम्० ए०	५३१
१७.	नव-वधू	श्रीश्रीनिधि द्विवेदी साहित्याचार्य	३६
१८.	न्याय-तुला	श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	४१७
१९.	पुष्पांजलि	श्रीयुत लोचनप्रसाद पांडेय	३५१
२०.	प्रेमी रावण	श्रीयुत हरिकृष्ण 'प्रेमी'	५१०
२१.	बस, बस, अब न मथो यह जीवन	श्रीपं० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	२८६
२२.	भगवान् बुद्ध के प्रति ...	श्रीपं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	५४५
२३.	मधु-काल	श्रीयुत क़ाज़ी अशरफ़ महमूद	६४
२४.	मधु-मास	श्रीमती हीरादेवी चतुर्वेदी	५३
२५.	मधुवन	श्रीमती हीरादेवी चतुर्वेदी	१२२
२६.	मा की साध	श्रीश्रीनिधि द्विवेदी साहित्याचार्य	४८२
२७.	युगल-छवि...	श्रीयुत 'वचनेश'	९८
२८.	संकेत	श्रीरामकुमार वर्मा एम्० ए०	१६३
२९.	संदेश	ठाकुर गोपालशरणसिंह	९७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२—गद्य

संख्या	लेख	लेखक	
१.	अकस्मात् (कहानी) ...	श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०	[illegible]
२.	अर्थ या धन क्या है ? ...	प्रो० दयाशंकरजी दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	[illegible]
३.	अर्थशास्त्र के विभाग और उनका पारस्परिक संबंध	प्रो० दयाशंकरजी दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	[illegible]
४.	अर्थशास्त्र क्या है ?	प्रो० दयाशंकरजी दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	[illegible]
५.	आधुनिक शिक्षा-प्रणाली का प्रभाव	श्रीयुत बुद्धि सागर वर्मा (अष्ठाना) विशारद, बी० ए०, एल्० टी०	[illegible]
६.	उत्कल-भारती कुंतलकुमारी ...	प्रो० श्रीयुत प्रफुल्लचंद्र पट्टनायक	[illegible]
७.	उपभोग का आदर्श	प्रो० दयाशंकरजी दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	[illegible]
८.	उसने कहा था (कहानी) ...	श्रीयुत गिरीशचंद्र वर्मा	[illegible]
९.	किसान कहाँ ?	श्रीयुत पन्नालाल श्रीवास्तव एम्० ए०	[illegible]
१०.	कुसुम	... ... ८२, १८०, २८१, ३६८, ४६६ और	[illegible]
११.	क्या हिंदी काश्मीर से लद जायगी ?	श्रीपं० वेंकटेशनारायण तिवारी एम्० ए०	[illegible]
१२.	खाने के दाँत (व्यंग्य-चित्र) ...	श्रीयुत शिक्षार्थी	[illegible]
१३.	गद्य	श्रीकुमारी दिनेशनंदिनी चोरड्या	[illegible]
१४.	गद्य-गीत	कुमारी विद्याकुमारी	[illegible]
१५.	गद्य-गीत	श्रीकुमारी दिनेशनंदिनी चोरड्या	[illegible]
१६.	ग़ुलाम (कहानी)	श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०	[illegible]
१७.	गोस्वामी तुलसीदास के चित्र और प्रतिमाएँ	श्रीरामदत्त भारद्वाज एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	[illegible]
१८.	चयन	श्रीयुत गंगाप्रसाद पांडेय, श्रीयुत आनंदकुमार, श्रीयुत वसंतकुमार पांडेय, श्रीव्रजेंद्र, श्रीयुत श्याममोहन त्रिवेदी, कुमारी कमला बी० ए०, श्रीयुत लक्ष्मीप्रसाद मिस्त्री 'रमा', श्रीयुत गंगाप्रसाद 'कौशल', श्रीयुत गिरिधर शर्मा 'नवरत्न', महाराजकुमार डॉ० रघुवीरसिंह, कुँवर लक्ष्मीनारायणसिंह देव, श्रीयुत हरिमोहनलाल वर्मा बी० ए०, श्रीयुत उमाशंकर तिवारी 'समीर' साहित्यालंकार, श्रीयुत प्रयागनारायण त्रिपाठी, कुमारी स्नेहलता अष्ठाना, श्रीयुत हरिश्चंद्र अग्रवाल एम्० ए०, श्रीयुत राजाराम श्रीवास्तव 'पुनीत', श्रीमती राजकुमारी 'रमा', श्रीयुत यज्ञदत्त शर्मा बी० ए०, श्रीयुत महेशचंद्र अग्रवाल बी० एस्-सी०, ऑनर्स, विशारद, श्रीयुत मित्तल, श्रीगंगादेवी, सा०, श्रीयुत क़ाज़ी अ शरफ़ महमूद, श्रीयुत अंबिकेश 'कुंतल', श्रीयुत सुरेशचंद्र, श्रीयुत	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
		रामकुमारसिंह बी० ए०, गोल्डमेडलिस्ट, श्रीयुत रामलाल यादव, श्रीयुत पं० केशवप्रसाद मिश्र (हिंदी-विभाग, काशी-विश्वविद्यालय), श्रीयुत 'ग', श्रीयुत संतराम बी० ए०, श्रीयुत राजेश्वर-गौरीशंकर ओझा, श्रीयुत 'अभय', श्रीयुत सत्यप्रिय वेदालंकार, श्रीमती सावित्रीदेवी गर्ग, श्रीशारदा स्नातिका, श्रीहरेश शर्मा, श्रीयुत 'करुण' साहित्य-विशारद, श्रीयुत बालचंद श्रीवास्तव 'बाल', श्रीयुत रमावल्लभ चतुर्वेदी, श्रीयुत मुकुटविहारी-लाल श्रीवास्तव 'मुकुट' बी० ए० और श्रीयुत शंभुनाथ मिश्र	६६, १६५, २६६, ३५२, ४५१ और ५४६
१९.	छिन्न पत्र	श्रीपं० सुंदरलाल त्रिपाठी	५३३
२०.	जरमनी का अगिया वैताल ...	श्रीपृथ्वीपालसिंह एम्० ए०, जे० डी०, एल्-एल्० बी० ...	२४२
२१.	तत्त्ववेत्ता महापुरुष वैलेस (जीवनी)	श्रीयुत मंगलदेव शर्मा	४२५
२२.	तरक़्क़ी (कहानी)	श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०	३१९
२३.	दूध और स्वास्थ्य	श्रीयुत एम्० पी० केदार आई० डी० डी०	१५०
२४.	'दोज़ख़ की आग' (आलोचना)...	श्रीयुत प्रतापनारायणसिंह	१२३
२५.	दो लिपियाँ या एक लिपि ? ...	श्रीपं० वेंकटेशनारायण तिवारी एम्० ए०	१३
२६.	दो हाथ, दो काम ! (व्यंग्य-चित्र)	श्रीयुत शिक्षार्थी	२६५
२७.	द्वीप-रत्न जापान (सचित्र) ...	श्रीमती प्रभावतीदेवी	४८
२८.	धारा (संपादकीय विचार) ...	... ... ८३, १८१, २८२, ३६६, ४६८ और	५६२
२९.	धूप-छाँह (कहानी)... ...	स्वर्गीया श्रीमती 'चकोरी'	१०७
३०.	नया सवार—विंसटन चर्चिल ...	श्रीपृथ्वीपालसिंह एम्० ए०, जे० डी०, एल्-एल्० बी० ...	३८२
३१.	नारी और मानव-सभ्यता ...	श्रीयुत शचींद्रनाथ सान्याल	३९८
३२.	नीलम (कहानी)	श्रीयुत देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'	१३२
३३.	नृत्य-कला का उद्देश... ...	श्रीयुत रामप्रताप द्विवेदी	३०९
३४.	परिचय	श्रीयुत गंगाप्रसाद 'कौशल', श्रीयुत पृथ्वीपालसिंह एम्० ए०, जे० डी०, एल्-एल्० बी०, साहित्याचार्य गयाप्रसाद शास्त्री, वैद्य 'श्रीहरि', श्रीयुत 'उमेश', श्रीयुत संतराम बी० ए०, श्रीपं०रामदत्त शुक्ल ऐडवोकेट, श्रीपं०गौरीशंकर वाजपेयी, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०, श्रीयुत विश्वेश्वर, श्रीयुत गोविंदवल्लभ पंत और श्रीयुत श्रीदत्त अवस्थी	७८, १७७, २७७, ३६५, ४६२ और ५५७
३५.	पश्चात्ताप	प्रो० सद्गुरुशरण अवस्थी एम्० ए०	४३
३६.	पशुपतिनाथ का मंदिर (सचित्र, भ्रमण)	श्रीमती प्रभावतीदेवी	११९
३७.	प्रायश्चित्त (कहानी) ...	श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०	२१
३८.	बहूरानी (कहानी)	श्रीवासुदेव शर्मा 'देव'	५४२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
३९.	बाणभट्ट और उनकी कादंबरी...	श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा विशारद, बी० ए०, एल्० टी० ...	[illegible]
४०.	बिहार और हिंदुस्तानी ...	श्रीपांडेय रामावतार शर्मा एम्० ए०, बी० एल्०, साहित्य-शिरोमणि	१६१
४१.	बेकार का भाग्य (कहानी) ...	श्रीपं० हरिस्वरूप उपाध्याय	४८५
४२.	बेटा बिकरमचंद (प्रहसन) ...	देशदूत-संपादक श्रीयुत ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' ...	५२३
४३.	भारतवर्ष में शक्कर का व्यवसाय	श्रीयुत ज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी० ...	२४५
४४.	भाषण	श्रीयुत डॉ० पीतांबरदत्त बड़थ्वाल एम्० ए०, डी० लिट्० ...	५२०
४५.	भूले हुए राहगीर	श्रीपं० हनूमान शर्मा चौमूँ	१६५
४६.	भू-स्वर्ग स्विड्झरलैंड (सचित्र, भ्रमण) ...	श्रीसूर्यनारायण व्यास ज्योतिषाचार्य	४६६
४७.	मन का भ्रम (कहानी) ...	श्रीयुत बालगोविंदप्रसाद श्रीवास्तव	६०
४८.	महात्मा तुलसीदासजी ...	श्रीयुत कुँवर राजेंद्रसिंह एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	१६
४९.	मूल गोसाईं-चरित और पं० रामनरेश त्रिपाठी	श्रीयुत डॉ० पीतांबरदत्त बड़थ्वाल एम्० ए०, डी० लिट्०...	१
५०.	'मूल गोसाईं-चरित' की अप्रामाणिकता (आलोचना) ...	श्रीपं० रामदत्त भारद्वाज एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	२०६
५१.	मैं मा हूँ ? (कहानी) ...	श्रीयुत 'अमर' एम्० एस्-सी०, रिसर्च-स्कॉलर	४३१
५२.	रोग क्यों होते हैं ?	राजवैद्य पं० रवींद्र शास्त्री 'कविभूषण'	११
५३.	वह पत्र (कहानी)	श्रीकालीचरण चटर्जी एम्० ए०	२१७
५४.	वह मर गई ! (नाटक) ...	श्रीपं० गोविंदवल्लभ पंत ... ... २९१ और	४०१
५५.	वेदों का नया साहित्य ...	श्रीयुत वासुदेवशरण अग्रवाल एम्० ए०, एल्-एल्० बी०	४८१
५६.	शकुंतलाजी तथा उनकी 'रजकण' (आलोचना)	श्रीपं० उमाशंकरजी वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए० (ऑनर्स)	३९९
५७.	शांति के पथ पर	कुमारी सुशीलादेवी विद्यालंकृता, साहित्यरत्न	३१३
५८.	संतान के प्रति कृतज्ञता ...	श्रीपं० आत्मस्वरूप शर्मा	५४०
५९.	स्वर्गीय आचार्य रामदेवजी (संस्मरण)	श्रीयुत प्रोफ़ेसर धर्मदेव शास्त्री, दर्शनकेसरी	३३६
६०.	'हरिऔध'जी—एक अध्ययन...	श्रीमती प्रभा अष्ठाना बी० ए०	३३०
६१.	हिटलर की आप-बीती ...	श्रीपृथ्वीपालसिंह एम्० ए०, जे० डी०, एल्-एल्० बी० ...	३७
६२.	'हिंदी-व्याकरण' (आलोचना)	साहित्याचार्य श्रीपं० लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी साहित्यरत्न	२२८
६३.	हिंदुओं के दलित	श्रीपं० वेंकटेशनारायण तिवारी एम्० ए०	३८६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

क—रंगीन

(आर्ट पेपर पर)

संख्या	चित्र	पृष्ठ
१.	अरुणोदय (तिरंगा)	१६३
२.	आशीर्वाद—[चित्रकार, श्रीकमलाशंकरसिंह (तिरंगा)	१
३.	कविवर प्रो० रामकुमार वर्मा एम्० ए० (दुरंगा)	२५६
४.	कुटिया की ज्योति—[चित्रकार, श्रीकमलाशंकर-सिंह (तिरंगा)	४८१
५.	प्रेमी (तिरंगा)	६७
६.	महाराजा विक्रमाजीतसिंहजू देव (तिरंगा)	३८५
७.	मृगनयनी (तिरंगा)	२८६
८.	श्रीसोफ़िया बाडिया (दुरंगा) ...	२५७

ख—व्यंग्य

१.	खाने के दाँत—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी	१६४
२.	दो हाथ, दो काम !—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी	२६५

ग—सादे

१.	अडोरा की सुंदर सेल्स गर्ल... ...	५०८
२.	आर्य-घाट (श्मशान-घाट)... ...	१२०
३.	कुमारी सुशीलादेवी विद्यालंकृता, साहित्यरत्न	३१३
४.	'चा-नो-यू' (चाय पीने का उत्सव)...	४६
५.	जापान का पावन पर्वत फ़ुज़ियामा ...	५१
६.	झील के तटवर्ती झूरिक का एक मनोरम दृश्य	५०५
७.	झूरिक का एक विहंगम दृश्य ...	५०३
८.	झूरिक की अडोरा-शॉप	५०७
९.	झूरिक की एक सुंदर सड़क... ...	५०३
१०.	झूरिक की प्राकृतिक सुषमा... ...	५०२
११.	नृत्योत्सव के लिये गेशा पोशाक चुन रही है	५१
१२.	पर्वतीय सौंदर्य	५०१
१३.	पशुपतिनाथ का मंदिर	११६
१४.	प्रो० सद्गुरुशरण अवस्थी एम्० ए० ...	४३
१५.	बडगे स्टाइन (आस्ट्रिया) का होटल	५००
१६.	मिस्टर वाल्टर पेंटर	५०६
१७.	रायबहादुर कर्नल दीनानाथ... ...	३७०
१८.	वस्त्राभूषणों से अलंकृत सुंदरी गेशाएँ...	५०
१९.	श्रीकालीचरण चटर्जी एम्० ए० ...	२१८
२०.	श्रीपं० आत्मस्वरूप शर्मा	५४०
२१.	श्रीपं० हनूमान शर्मा चौमूँ... ...	१५६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या	चित्र	पृष्ठ
२२.	श्रीपांडेय रामावतार शर्मा एम्० ए०, बी० एल्०, साहित्यशिरोमणि ...	४८३
२३.	श्रीपृथ्वीपालसिंह एम्० ए०, जे० डी०, एल्-एल्० बी०	३८
२४.	श्रीमती लिलि पेंटर	५०८
२५.	श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित... ...	८८
२६.	श्रीयुत एम्० पी० केदार आई० डी० डी०	१५०
२७.	श्रीयुत गंगाप्रसाद 'कौशल'... ...	७६
२८.	श्रीयुत चिरंजीलाल 'एकाकी' ...	२४०
२९.	श्रीयुत प्रफुल्लचंद्र पट्टनायक	१४६
३०.	श्रीयुत प्रोफ़ेसर धर्मदेव शास्त्री, दर्शनकेसरी	३३६
३१.	श्रीयुत बालेश्वर गुरु	३१७
३२.	श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा विशारद, बी० ए०, एल्० टी०... ...	[illegible]
३३.	श्रीसूर्यनारायण व्यास	[illegible]
३४.	श्रीहरिहरस्वरूपजी शर्मा	[illegible]
३५.	साहित्य-वाचस्पति श्रीमान् रायबहादुर बाबू जगन्नाथप्रसाद 'भानु'	[illegible]
३६.	साहित्याचार्य श्रीपं० लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी साहित्यरत्न	[illegible]
३७.	स्व० कुमार कृष्णकुमार एम्० ए०, बी० एल्०	[illegible]
३८.	स्व० श्रीमती मंगलादेवी बालूपुरी ...	[illegible]

सखियों की बातचीत

रमा—"अरी मालती, देखूँ-देखूँ, क्या छिपाए लिए जाती है ?"

मालती—"फिर बताऊँगी, अभी जल्दी में हूँ।"

रमा—"और, तू शांता, इसके पीछे क्यों भाग रही है ?"

शांता—"बड़ी सुंदर पत्रिका आई है मालती के नाम। मैं भी उसके साथ जाकर देखूँगी।"

रमा—"कौन-सी ?"

शांता—"लखनऊवाली 'सुधा'! तुम अगर देखो, तो लोट-पोट हो जाओ। विशेषांक निकला है बड़ा ज़ोरदार!"

रमा—"तू ख़ुद नहीं मँगाती ? माँगकर पढ़ लेती है दूसरे से, क्यों ?"

शांता—"क्या करूँ, ग़रीब हूँ।"

रमा—"अच्छा, कोई बात नहीं। मैं रुपए दूँगी। तू मेरे नाम से मँगा ले। अभी पत्र लिख दे।"

शांता—"वाह मेरी बहन, धन्यवाद! मैं लिखती हूँ अभी कि वी० पी० भेज दें। ६) साल तो है ही।"

पता—मैनेजर 'सुधा', ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालक-बालिकाओं का सबसे अच्छा,

सबसे सस्ता और सचित्र मासिक पत्र

'शिशु' ही है।

शिशु कैसा है ? सैकड़ों रुपए ख़र्च करने पर भी जैसी शिक्षा बालकों को नहीं मिलती ; वैसी शिक्षा 'शिशु' उन्हें घर बैठे सहज में ही देता रहता है। छोटे बच्चे इसे पाकर बहुत ख़ुश होते हैं। उन्हें ख़ुश देखकर घर-भर ख़ुश हो जाता है। प्रत्येक बालक-बालिका को इसे पढ़ना चाहिए। यह ज्ञान की पिटारी है, शिक्षा की संदूक़ची है और हँसी-ख़ुशी का ख़ज़ाना है।

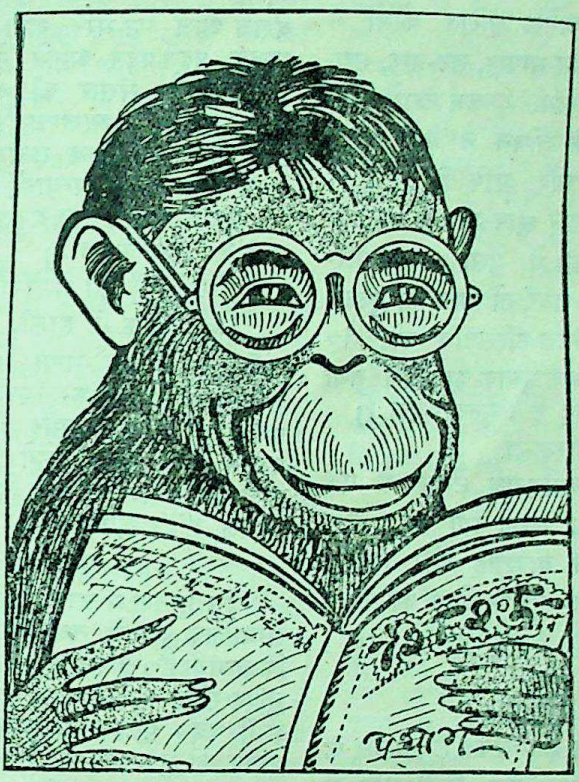

शिशु कैसा है ? यह देखने में मनोहर है और पढ़ने में भी मनोहर ! इसमें हर महीने ५० रंगीन छपे हुए पृष्ठों में १५-१६ तस्वीरें, मनोहर और शिक्षाप्रद कहानियाँ, मज़ेदार पहेलियाँ, निराले चुटकुले, जीवन - चरित्र तथा भूगोल, खगोल, गणित, इतिहास, विज्ञान आदि विषयों पर बड़े ही सरल और सचित्र बालोपयोगी लेख रहते हैं।

—:o:—

वार्षिक मूल्य २) एक प्रति ≡)

—:o:—

एक कार्ड डालकर नमूना मुफ़्त मँगाइए।

पता—मैनेजर, शिशु-कार्यालय, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-साहित्य की अनमोल पुस्तकें

मेरी आत्मकहानी

जगत्-प्रसिद्ध रशियन महर्षि टॉल्सटॉय को कौन नहीं जानता ? टॉल्सटॉय का जन्म एक उच्च घराने में हुआ था । उस समय के उच्च कुलोत्पन्न नवयुवकों के समान टॉल्सटॉय का यौवन-काल भी अनेक घृणित कामों में बीता । दुराचार, मिथ्या-भाषण, लूट-मार, मद्य-पान, निर्दयता आदि सभी दुष्कर्म उसने किए, किंतु अंत को उसके जीवन ने ऐसा पल्टा खाया कि महात्मा और ऋषि के नाम से पुकारा जाने लगा । यदि आप जानना चाहते हैं कि टॉल्सटॉय के जीवन में ऐसा बड़ा परिवर्तन किस प्रकार हो गया, तो आप यह पुस्तक अवश्य पढ़ें । यह पुस्तक टॉल्सटॉय की "My Confession"-नामक पुस्तक का सरल तथा सरस हिंदी में अनुवाद है । मूल्य केवल १)

अनारकली

कवि-सम्राट् श्रीरवींद्रनाथ टैगोर के एक प्रसिद्ध उपन्यास का सरल तथा सरस हिंदी अनुवाद । शाहजहाँ बादशाह और नादिरा बेगम के सैकड़ों वर्ष पुराने प्रेम का जीता-जागता चित्र पढ़कर आप फड़क उठेंगे । मूल्य प्रचारार्थ केवल ≡)॥

उपयोगितावाद

हम दावे के साथ कह सकते हैं कि इस के जोड़ की पुस्तक आज तक हिंदी-भाषा में नहीं छपी । लगभग बीस योरपीय भाषाओं में इस पुस्तक का अनुवाद हो चुका है, और समस्त भूमंडल पर बड़े चाव से पढ़ी जाती है । यदि आप संसार में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़िए । बढ़िया काग़ज़ पर छपी हुई सचित्र पुस्तक का मूल्य केवल १)

दिल्ली की अंतिम ज्योति

उर्दू के प्रसिद्ध लेखक श्रीयुत ख़्वाजा हसन निज़ामी के अंतिम मुग़ल राजकुमार तथा राजकुमारियों से संबंध रखनेवाले लेखों का सरल तथा सरस हिंदी में रूपांतर ।

पुस्तक पढ़ने से पाठकों को मालूम होगा कि जिन मुग़ल-सम्राटों के सामने एक दिन सारा भारतवर्ष सर झुकाता था, उन्हीं के वंशज आज पेट-भर रोटी को तरसते हैं। पुस्तक पढ़ते-पढ़ते आँखों से आँसू निकलने लगते हैं और संसार की असारता का दृश्य आँखों के सम्मुख आ जाता है। पुस्तक ऐतिहासिक होने के साथ-ही-साथ मनोरंजकता की दृष्टि से भी अच्छे-अच्छे उपन्यासों को मात करती है।

पुस्तक सचित्र तथा बहुत अच्छे काग़ज़ पर छपी है । मूल्य केवल २)

उर्दू-कवियों की मनोरंजक कविताएँ

इस पुस्तक में हाली, इक़बाल, ज़ौक़, ग़ालिब आदि उर्दू-भाषा के महाकवियों के मुख्य-मुख्य पद्य चुनकर रक्खे गए हैं । एक-एक पद्य ऐसा शिक्षाप्रद और मनोरंजक है कि पढ़कर आप फड़क उठेंगे । प्रत्येक पृष्ठ के नीचे कठिन शब्दों के अर्थ दिए हुए हैं । बढ़िया काग़ज़, सुंदर छपाई । मूल्य केवल ।=)

पुष्पलता

इस पुस्तक में उच्च कोटि के धार्मिक तथा सामाजिक भजनों तथा कविताओं का संग्रह किया गया है । हमारा दावा है कि आपने ऐसा सुंदर संग्रह आज तक न पढ़ा होगा । देश के सभी पत्र - पत्रिकाओं और विद्वानों ने इस पुस्तक की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है । पुस्तक बढ़िया काग़ज़ पर अत्यंत सुंदरता से छापी गई है । मुखपृष्ठ पर ऋषि दयानंद का एक भाव-पूर्ण चित्र है । पृष्ठ-संख्या १०८, मूल्य केवल ।।)

मनोरंजक कहानियाँ

कहानियाँ आपने बहुत पढ़ी होंगी, पर हम दावे के साथ कह सकते हैं कि ऐसी अपूर्व और अद्भुत कहानियाँ आज तक आपकी दृष्टि से न गुज़री होंगी । एक-एक कहानी इतनी रोचक और शिक्षाप्रद है कि एक बार आरंभ करके बिना समाप्त किए दिल नहीं मानता । मूल्य केवल ।)

मैनेजर, ज्ञान-प्रकाश-मंदिर, मु० और पो० मछरा, ज़िला मेरठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग, आरोग्य, व्यायाम और आत्मज्ञान-संबंधी

अद्भुत पुस्तकें

नीरोग होने का अद्भुत उपाय

यदि आप बिना औषधि के, बिना कुछ खर्च किए, सर्वदा नीरोग, स्वस्थ, युवा, पुष्ट, सुंदर, प्रसन्न, और सुखी रहना चाहते हैं, तो इस पुस्तक को अवश्य देखिए। यह पुस्तक आपका हज़ारों रुपया बचा देगी। औषधियों को निकालकर फेंक दो, डॉक्टरों को जवाब दे दो। इस पुस्तक को अवश्य पढ़ो। यह पुस्तक आपके सारे रोगों, दोषों, दुःखों और कष्टों को दूर कर देगी। मूल्य केवल १)

आत्मबल और मनोबल

आजकल इस आत्मबल और मनोबल के प्रभाव को देखकर योरप, अमेरिका, जापान और जर्मनी के लोग भी दंग हो गए हैं। इस पुस्तक के लेखक ने इसी आत्मबल और मनोबल के प्रभाव से नित्य सहस्रों रोगियों को अच्छा किया है। यदि आपको आत्मज्ञान के गूढ़ तत्त्वों को जानकर अपने दोनों लोकों को सुधारना है, तो इस ग्रंथ-रत्न को अवश्य देखिए। मूल्य केवल १)

सत्य, सुंदर और स्वतंत्र विचार

योग और आत्मज्ञान के संसार-प्रसिद्ध लेखक योगिराज मुनीश्वर पं० शिवकुमार शास्त्री के बनाए हुए ग्रंथों में यह ग्रंथ सर्वोत्तम है। इस ग्रंथ का ज्ञान इतना दिव्य और पवित्र है कि पढ़ते ही सारी शंकाएँ दूर हो जाती हैं। इसे पढ़कर मनुष्य सचमुच जीवन्मुक्त, आनंदमय और ब्रह्ममय हो जाता है। इस अलभ्य और अपूर्व ज्ञान के भांडार का मूल्य केवल २॥) है। यह सर्वोत्तम ग्रंथ है।

वेदांत-सिद्धांत

इस वेदांत-सिद्धांत ने—इस वेदांत की फ़िलॉसफ़ी ने अमेरिका में भी हलचल मचा दिया है। अमेरिकावाले वेदांत के इन सिद्धांतों से चकित होकर धड़ाधड़ वेदांती होते जा रहे हैं। इस पुस्तक की नई युक्तियों और प्रबल प्रमाणों को देखकर आपका चित्त भी फड़क उठेगा। मूल्य केवल २)

शरीर से अमर होने का उपाय

आत्मा तो अमर है ही। इस पुस्तक में शरीर से भी अमर होने का उपाय है। इन उपायों से आप मृत्यु को जीतकर सर्वदा नीरोग, युवा, सुंदर, बलवान, मेधावी और भाग्यवान् भी बने रहेंगे। यह झूठ नहीं, सत्य है। उपाय बहुत ही सरल और सुगम हैं। इसे बालक, वृद्ध, रोगी, युवा सभी कर सकते हैं। यह ग्रंथ इस बीसवीं सदी का एक अद्भुत आविष्कार है। मूल्य केवल १॥)

सचित्र योग-साधन

जिसे प्रत्येक गृहस्थ बिना गुरु के कर सकेगा। आसनों के पचासों सुंदर चित्रों के साथ योग-विषय पर ऐसा सरल, सुबोध और सर्वांगपूर्ण ग्रंथ आपको कहीं नहीं मिलेगा। यदि आपको सर्वदा नीरोग, युवा, सुंदर बलवान् और मेधावी बना रहना है, तो योग पर इस विशाल ग्रंथ को अवश्य पढ़िए। मू० केवल ३॥)

शांतिदायी विचार

इस पुस्तक को देखकर आप प्रसन्न हो जायँगे। यह विचारों का एक दिव्य ग्रंथ है। इसपर एक मुसलमान सज्जन की राय पढ़िए—

मैं जाति का मुसलमान हूँ और अपने मज़हब का कट्टर भी था। पर 'शांतिदायी विचार' और शास्त्रीजी के रचे हुए 'वेदांत-सिद्धांत' के पढ़ने से मेरे खयालात बिलकुल बदल गए। मेरे हृदय को केवल इन्हीं पुस्तकों के पढ़ने से शांति मिली। और, कहाँ तक कहूँ, शोक, दुःख और शंका के सागर में डूबते हुए मुझे इन्हीं दो पुस्तकों ने बचा लिया।

द० अबदुल लतीफ़ख़ाँ क्लर्क म्युनिसिपैलिटी, धार स्टेट।

शांतिदायी-विचार का मूल्य १) और वेदांत सिद्धांत का २) है।

मेस्मेरिज्म या भूतविद्या	मूल्य	॥)
आत्मज्ञान की कहानियाँ	,,	।=)
योग-सिद्धियों की प्राप्ति	,,	।=)
सृष्टि-विज्ञान-शास्त्र	,,	=)
वृद्धावस्था दूर करने का उपाय	,,	=)

पुस्तकों के मिलने का पता—मैनेजर ज्ञानशक्ति-प्रेस, गोरखपुर (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

कथा-साहित्य के प्रेमियों को अनुपम भेंट

कहानी का विशेषांक

अथवा

अमर कलाकारों की कृतियों का

अनुपम संग्रह

सितंबर ४० के अंतिम सप्ताह तक प्रकाशित हो जायगा।

कथा-साहित्य के प्रेमियों तथा 'कहानी' के कृपालु ग्राहकों को यह जानकर अत्यंत हर्ष होगा कि गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी हम 'कहानी' का विशेषांक प्रकाशित कर रहे हैं। हमारे पिछले विशेषांक की सभी पत्रों, प्रेमी पाठकों तथा सुविज्ञ समालोचकों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की थी। इस वर्ष का विशेषांक भी पिछले विशेषांक की भाँति हिंदी के कहानी-साहित्य में एक मौलिक और नवीन वस्तु होगी। क़रीब २०० पृष्ठों के इस विशेषांक में सुप्रसिद्ध कहानीकारों की कृतियों का समावेश रहेगा। जिनकी रचनाएँ इस विशेषांक में आ रही हैं, उनमें से कुछ के नाम ये हैं—सर्वश्री रवींद्रनाथ ठाकुर, शरच्चंद्र चट्टोपाध्याय, रमणलाल देसाई, जैनेंद्रकुमार, 'अज्ञेय', 'विष्णु', रामकुमार वर्मा तथा संसार की बीसियों सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ। इतना सुंदर विशेषांक हिंदी के पत्रकारी के इतिहास में अश्रुतपूर्व है।

यह नोट करने की बात है कि—

क़रीब २०० पृष्ठों की इस तथ्य-पूर्ण, रोचक, रोमांचक, कौतूहलोद्दीपक तथा विचारोत्प्रेरक सामग्री को हम केवल छ आने में पाठकों की भेंट कर रहे हैं और वार्षिक ग्राहकों के लिये तो हमने २) नाम-मात्र वार्षिक चंदा रक्खा है। पुस्तकालयों के लिये सिर्फ़ १॥) ही वार्षिक चंदा रक्खा है। इसके अतिरिक्त मात्र छ आना पोस्टेज भेजने पर १॥) मूल्य की एक भेंट-पुस्तक विना मूल्य प्रदान की जाती है। कृपया आज ही २।=) का मनीऑर्डर कर दीजिए, अन्यथा भेंट-पुस्तक आपको प्राप्त न हो सकेगी।

विस्तृत परिचय और गत वर्ष के विशेषांक के नमूने के लिये आज ही एक कार्ड लिखिए—

सरस्वती-प्रेस

बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९४० का हमारा नवीन प्रकाशन

(१) सम्राट् अशोक

लेखक, श्रीपं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न। यह नाटक स्वर्गीय क्षीरोदप्रसाद विद्याविनोद के नाटक के आधार पर लिखा गया है। उस समय भारत की सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक दशा क्या थी? अशोक ने बुद्ध-धर्म का प्रचार कैसे किया आदि बातें इस पुस्तक में पढ़िए। मूल्य सादी १।), सजिल्द १॥।)

(२) प्रत्यागत

लेखक, श्रीवृंदावनलाल वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी०। मा का जितना सुंदर, सजीव, ज्वलंत, उज्ज्वल एवं स्वाभाविक चरित्र-चित्रण इस उपन्यास में वर्माजी ने किया है, अन्यत्र दुर्लभ है। इस उपन्यास की मा संसार के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकारों द्वारा निर्णीत 'मा' से टक्कर ले सकती है। भारतीय साहित्य को छोड़िए, पश्चिमीय साहित्य के ज्वलंत औपन्यासिक भी एक बार इस 'मा' के लिये नवेंगे-तरसेंगे। मूल्य सादी १।), सजिल्द १॥।)

(३) अवध के ग़दर का इतिहास

लेखक, सरस्वती-संपादक श्रीदेवीदत्तजी शुक्ल। सन् ५७ के ग़दर का इतिहास हमारे लिये एक विशेष महत्त्व रखता है। अतएव उसकी सच्ची घटनाओं की जानकारी प्राप्त करना हर देश-भक्त के लिये आवश्यक हो जाता है। अतः यदि ग़दर-संबंधी सच्ची घटनाएँ जानना चाहते हैं, तो इस नवीन पुस्तक को अवश्य मँगाकर पढ़िए। ग़दर-संबंधी ब्योरेवार हाल जानने के लिये हिंदी में आपको ऐसी दूसरी पुस्तक न मिलेगी। मूल्य सादी १॥।), सजिल्द २)

(४) शारदीया

लेखिका, कुमारी दिनेशनंदिनी चोरड्या। हिंदी में गद्य-गीतों की जो शैली चली है, वह नई होते हुए भी भावमय है। कुमारीजी गद्य-गीतों के लिखने में हिंदी-संसार में काफ़ी प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुकी हैं। आपके गद्य-गीत बहुत ही सुंदर, सरल और सरस होते हैं। मूल्य सादी ।॥), सजिल्द १।)

(५) सुखी जीवन

लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री। ग्रामीण और नागरिक स्त्री-पुरुषों तथा विशेषकर स्त्रियों के लिये पुस्तक अत्यंत लाभदायिनी है। स्त्रियों का बचपन, उनका गार्हस्थ्य जीवन, उनकी तंदुरुस्ती आदि विषयों की जानकारी प्राप्त कर लेने पर स्त्रियाँ अपना जीवन निस्संदेह सुख-पूर्वक बिता सकती हैं। पुस्तक प्रत्येक स्त्री के हाथ में जाना अत्यंत आवश्यक है। मूल्य सादी ।॥), सजिल्द १)

(६) पौराणिक कहानियाँ

लेखक, श्रीपं० हरिप्रसाद द्विवेदी। इसमें पौराणिक काल के ४९ महापुरुषों की जीवनियाँ सरल और सरस भाषा में लिखी गई हैं। इन्हें पढ़ने से बच्चों का शिक्षा के साथ-साथ मनोरंजन भी होता है। बच्चे इन कहानियों को बड़ी दिलचस्पी से पढ़ते हैं। पुस्तक में कई चित्र भी दिए गए हैं। छोटे-छोटे बच्चों को अपने पूर्वजों के पवित्र एवं आदर्श चरित्रों का मनन करने के लिये इसे अवश्य मँगाकर पढ़ना चाहिए। मूल्य सादी ।।=), सजिल्द ।॥=)

(७) नादिरा

लेखक, श्रीगिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' बी० ए०। हिंदू-मुसलिम-एकता दिखलाते और सामाजिक कुरीतियों का दिग्दर्शन कराते हुए इस पुस्तक की रचना की गई है। पुस्तक आधुनिक ढंग पर लिखी गई है। भाषा सरल, सरस और मुहाविरेदार है। पढ़कर तबियत फड़क उठती है। एक बार हाथ में लेने पर बिना समाप्त किए जी न मानेगा। मूल्य सादी १॥।), सजिल्द २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(८) वीर-ज्योति

लेखक, साहित्याचार्य श्रीपं० लोकनाथजी द्विवेदी सिलाकारी साहित्यरत्न। प्रस्तुत पुस्तक एक ऐतिहासिक नाटक है। इसमें महेवा (बुंदेलखंड) के राजा वीर-शिरोमणि महाराज चंपतराय और उनकी वीरात्मा रानी सारंधा का चरित-चित्रण किया गया है। पुस्तक की रचना सामयिक है, क्योंकि आजकल हिंदू लोग अपने प्राचीन गौरव और पूर्वजों की सुकृतियों से प्रभावित हो रहे हैं। बुंदेलखंड-वासियों के लिये तो यह नाटक एक प्रकार का पुराण है। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

(९) नक्षत्र-मंडल

अनुवादक, स्व० श्रीरमाशंकर जेतली। इस पुस्तक में विविध देशों के विख्यात कहानी-लेखकों एवं कलाकारों—जैसे महात्मा टॉल्स्टॉय, मैक्सिम गोर्की, जान गाल्सवर्दी आदि—की सर्वश्रेष्ठ ११ रचनाएँ संगृहीत हैं। सभी कहानियाँ एक-से-एक बढ़कर शिक्षाप्रद हैं, जिनके द्वारा उन कलाकारों के सिद्धांतों का प्रचार बड़ी सुंदरता से होता है। इन कहानियों को पढ़कर पाठक यह अवसर अनुभव करेंगे कि हिंदी की आधुनिक कहानियों से ये कहानियाँ भिन्न हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति को यह पुस्तक मँगाकर अवश्य पढ़ना चाहिए। भाषा सरस एवं सुंदर। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

(१०) सेगाँव का संत

लेखक, श्रीयुत श्रीमन्नारायण अग्रवाल एम्० ए०। देश के प्राण, राष्ट्र के अप्रतिम नेता महात्मा गांधी की जीवनी के कुछ रोचक संस्मरण। उपन्यास से भी रोचक। सत्य घटनाओं का विस्तृत विवरण। त्याग, तप, स्वदेश-सेवा का व्रत लेनेवाले देश-सेवक 'बापू' की उपदेशप्रद और अनुकरणीय जीवन-कथा का एक सुंदर अंश देखना हो, तो इसे अवश्य ही पढ़ें। मूल्य अजिल्द ॥)), सजिल्द १।)

(११) कांग्रेस-राज्य में

अर्थात्

संयुक्त प्रांत में कांग्रेस-शासन के अट्ठाईस महीने

लेखक, श्रीगोपीनाथजी श्रीवास्तव एम्० एल्० ए०। इस पुस्तक के अँगरेज़ी-संस्करण का अच्छा स्वागत हुआ, जिससे हिंदी-संस्करण की भी माँग बढ़ती गई। अतएव प्रोत्साहित होकर हमने इसे जनता के लाभार्थ हिंदी में प्रकाशित किया है। इस पुस्तक द्वारा हमें यह अच्छी तरह विदित हो जाता है कि कांग्रेस-शासन ने, अपने कुछ दिनों के अस्तित्व में, लोक का कितना कल्याण किया।

राष्ट्रीय तथा राजनीतिक विचारवाले प्रत्येक स्त्री-पुरुष को इसे मँगाकर अवश्य पढ़ना चाहिए। पुस्तक की भाषा तथा छपाई-सफ़ाई का तो कहना ही क्या! मूल्य सादी ॥।), सजिल्द १।)

(१२) एक दिन

लेखक, बाबू भगवतीचरण वर्मा। आप हिंदी के प्रसिद्ध और प्रतिभावान् कवि हैं। आपकी उत्कृष्ट रचनाओं से हिंदी-प्रेमी भली भाँति परिचित हैं। 'एक दिन' भी आपके ही गद्य-पद्यमय काव्य का संग्रह है। इसमें जीवन के सच्चे और गहनतम विचार सरल, सुबोध और सरस ढंग से वर्णन किए गए हैं। पुस्तक सांस्कृतिक शिक्षाओं से ओत-प्रोत। मूल्य सादी ।।।), सजिल्द १।)

संचालक—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी प्रचारित पुस्तकें

[ये पुस्तकें भी माला तथा 'सुधा' के स्थायी ग्राहकों को २५ प्रतिशत कमीशन पर दी जायँगी]

नाम	लेखक	मूल्य
अमर कीर्ति (चरितावली)	पं० गंगाधर शर्मा साहित्यभूषण	॥)
ग्राम-संगठन (उपन्यास)	श्रीराभाचल पांडेय	॥)
घरेलू ओषधियाँ (चिकित्सा)	श्रीयुत श्रीकृष्ण वर्मा	॥)
गोपालन-शास्त्र (किसानोपयोगी)	श्रीगिरीशचंद्र जोशी	१॥)
समाज के हृदय की बातें (कहानी-संग्रह)	श्रीवैजनाथ केडिया	१)
आँखों देखा (घटनाओं की ज़िंदा तस्वीरें)	श्रीमंगलामोहन	॥)
सुखी समाज (उपन्यास)	श्रीबुद्धिभद्र	।=)
कोहार का राजा (जासूसी उपन्यास)	श्रीगिरीशचंद्र जोशी	१॥)
सुवर्ण-रेखा (उपन्यास)	श्रीदुर्गाप्रसाद खत्री	२॥)
निशीथिनी (काव्य)	श्रीपं० देवीदयाल शुक्ल 'प्रणयेश'	॥)
निर्मला (उपन्यास)	साजर वर्य श्रीचतुर्भुज माणकेश्वर भट्ट	१॥)
गल्प-रत्न (गल्प-संग्रह)	स्व० श्रीप्रेमचंदजी	१)
किसान की बेटी (उपन्यास)	अनुवादक, श्रीगंगाप्रसाद गुप्त	१)
संसार-चक्र (उपन्यास)	श्रीदुर्गाप्रसाद खत्री	॥=)
बीस व्यापार (व्यापार)	श्रीगौरीशंकर मिश्र	१॥=)
उर्वशी उर्फ़ सज़ायाफ़्ता प्रोफ़ेसर (उपन्यास)	श्रीगोपीनाथ मिश्र	॥)
नवाब वाजिदअली (जीवनी)	श्रीशीतलासहाय तथा श्रीश्रीपतिसहाय	१)
नलिनी (उपन्यास)	श्रीयुत राजेंद्र मिश्र 'इंद्र'	१)
पाक-प्रकाश अथवा मिठाई	श्रीसाताप्रसाद गुप्त	३)
स्त्रियों की पराधीनता	अनुवादक, ऋषीश्वरनाथ भट्ट बी० ए०	॥=)
वज्राघात (उपन्यास)	श्रीहरिनारायण आप्टे	२॥)
क्रांतिकारी राजकुमार	श्रीप्यारेमोहन चतुर्वेदी	१)
राष्ट्रीय वीणा (कविता-संग्रह)	संग्रहकर्ता पं० शिवनारायण मिश्र	१=)
गीता-गौरव	अनुवादक, श्रीगौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर'	१॥)
राम-रहीम (उपन्यास)	श्रीराजा राधिकारमणजी	३)
विश्व-दर्शन (वैज्ञानिक)	श्रीरामरत्न थपल्याल	२॥)
प्रथमा साहित्य-दर्पण (प्रथमा-परीक्षा के प्रश्नोत्तर)	-	१)
रहिमन-नीति-दोहावली	टीकाकार, श्रीपं० लक्ष्मीनिधि चतुर्वेदी	।)
डाह का फल (अँगरेज़ी नाटक का अनुवाद)	अनुवादक, श्रीमहेशचंद्रप्रसाद एम्० ए०	॥)
पाण-चिकित्सा (चिकित्सा)	डॉ० दुर्गाशंकर नागर	१)
संगम (ऐतिहासिक)	श्रीपं० चंद्रशेखर शुक्ल बी० ए०	२॥)
धनुषयज्ञ-नाटक (प्रथम अंक)	डॉ० हरिहरवत्ससिंह वर्मा	।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम	लेखक	मूल्य
जीवन-कथा (महात्मा गांधी की जीवनी)	—श्रीयुत राममोहनलाल	॥)
प्राचीन क्षत्रियों का विद्यानुराग (ऐतिहासिक)	—श्रीचंद्रशेखर शुक्ल बी० ए०	)
ग्रामों की ओर (ग्रामोपयोगी)	—श्रीयुत वीरद्र मालवीय	)
उद्यान-शास्त्र (कृषकोपयोगी)	—श्रीबैजनाथप्रसाद यादव	॥)
श्रीरामचंद्रोदय (काव्य)	—श्रीपं० रामनाथ ज्योतिषी	॥)
शिल्पमाला (दस्तकारी)	—श्रीमती विद्याधरी जौहरी, विशारद	)
हिंदी-शार्टहैंड मैन्युअल	—श्रीसरजूप्रसादसिंह बी० कॉम०	)
भारतीय कला-कौशल	—श्री डी०बी० बरवे बी० ए०	)
कल्पवृक्ष (कविता-संग्रह)	—श्रीकविरामजी	)
फलों तथा साग-भाजियों की खेती	—श्रीबैजनाथप्रसाद यादव	॥)
हृदय-निकुंज (काव्य)	—श्रीपं० गयाप्रसाद द्विवेदी 'प्रसाद'	)
लेनिन-साम्राज्यवाद	—अनुवादक, श्रीपं० जीवनराम शास्त्री	)
हरिश्चंद्र-चरित्र (नाटक राधेश्याम तर्ज़)	—श्रीयुत स्वामीदयाल व्यास	)
चीन की राज्य-क्रांति (राजनीतिक)	श्रीसंपूर्णानंदजी वर्मा	॥)
सम्राट अशोक (ऐतिहासिक)	—उपर्युक्त	)

आवश्यक निवेदन

स्कूलों और कॉलेजों के लाइब्रेरियनों से

आपको जब कभी अपने पुस्तकालय के लिये हिंदी-पुस्तकों की आवश्यकता पड़े, तुरंत हमें लिखें। जिस विषय की, जितने रुपए की पुस्तकें लिखेंगे, उस विषय की, उतने ही रुपए की नई-नई पुस्तकों का पूर्व-इनवायस बनाकर सेवा में स्वीकृति के लिये भेज दिया जायगा। और, फिर ऑर्डर मिलते ही पुस्तकें भी सेवा में भेज दी जायँगी। इस प्रकार आपका अमूल्य समय पुस्तकें छाँटने और उन्हें अनेक स्थानों से मँगाने में न जायगा और आपको अप-टु-डेट पुस्तकें भी मिल जायँगी।

स्कूलों के हेडमास्टरों से

स्कूल में इनाम बाँटने के लिये आपको जब-जब हिंदी-पुस्तकों की आवश्यकता पड़े, तुरंत हमें लिख दें कि इस स्टैंडर्ड के लड़कों के लिये इतने रुपए की पुस्तकें, जो इनाम के लिये गवर्नमेंट से स्वीकृत हैं, भेज दें। हम आपको उसी के मुताबिक़ पुस्तकें छाँटकर उनका इनवायस बनाकर सेवा में स्वीकृति के लिये भेज देंगे। फिर ऑर्डर आने पर पुस्तकें भी तुरंत ही भेज दी जायँगी। इस प्रकार आपका बहुत-सा अमूल्य समय बच जायगा, और लड़कों को नई-नई पुस्तकें भी पढ़ने को मिलेंगी।

पूर्ण आशा है, हिंदी-प्रेमी हेडमास्टर और पुस्तकाध्यक्ष हमारी इस सूचना का पूर्ण उपयोग करेंगे।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐतिहासिक उपन्यास-सम्राट्

श्रीवृंदावनलाल वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट

की

सुंदर रचनाएँ

(१) गढ़-कुंडार

यह हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद भारत के इतिहास के निर्माता चंदेलों, पँवारों, परिहारों और खंगारों के पारस्परिक संघर्ष से ओत-प्रोत, मध्यकालीन भारत की राजनीतिक चालों से भरा हुआ आल्हा-ऊदल की जन्मभूमि बुंदेलखंड का एक ऐतिहासिक उपन्यास है। मूल्य २॥), सजिल्द ३)

(२) विराटा की पद्मिनी

इस ऐतिहासिक उपन्यास में दाँगी-कुल में उत्पन्न विराटा की 'पद्मिनी'-नामक वीर कन्या का वीरता-पूर्ण चरित्र-चित्रण है। एक बार पढ़ने से तत्संबंधी मर्मस्पर्शी घटनाओं की छाप चिर काल तक बनी रहती है। मूल्य २॥), सजिल्द ३)

(३) लगन

यदि आप विवाह में ठहराव की कुप्रथा, समधियों का झगड़ा, पति-पत्नी का अविरल प्रेम, पर-स्त्रियों पर नैन-सैन चलानेवाले गुंडों की दुर्गति और अंत में सच्चे प्रेम की विजय देखना चाहते हों, तो इस उपन्यास को अवश्य पढ़ें। मूल्य ॥।), सजिल्द १)

(४) संगम

गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम से भी अधिक उपादेय और महत्त्व-पूर्ण यह जाति-गंगा का संगम है। इस उपन्यास में आपको अंतरजातीय संबंध का अच्छा दिग्दर्शन होगा। मूल्य २), सजिल्द २॥)

(५) कुंडली-चक्र

आपके उपन्यास अपने ढंग के अनोखे होते हैं। वर्माजी की लेखनी का चमत्कार यदि देखना हो, तो इसे अवश्य पढ़ें। यह काशी-विश्वविद्यालय में बी० ए० में कोर्स है। मूल्य १)), सजिल्द १॥।)

(६) प्रेम की भेंट

इस उपन्यास में वर्णित घटना बिलकुल सच्ची है। प्रेम के दीवाने एक युवक और एक सुंदर लड़की का क़िस्सा पढ़कर आप चकित हो जायँगे। मूल्य १), सजिल्द १॥)

(७) धीरे-धीरे

इस नाटक में वर्माजी ने वर्तमान राजनीतिक हलचल का आश्चर्यजनक खाका खींचा है। मूल्य ॥।), सजिल्द १)

(८) कोतवाल की करामात

वर्माजी पर हिंदी-संसार को गर्व है। उन्हीं की लेखनी से निकला हुआ 'कोतवाल की करामात'-नामक एक छोटा-सा सामाजिक उपन्यास है। इसे रोचक बनाने में वर्माजी ने कुछ उठा नहीं रक्खा। वर्णित घटना बिलकुल सच्ची है। मूल्य १), सजिल्द १॥)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोस्वामी तुलसीदास की धर्मपत्नी

रत्नावली

जीवनी और रचना

(सचित्र)

संपादक और टीकाकार

रामदत्त भारद्वाज

संशोधक

कविकुमार पंडित भद्रदत्त शर्मा

एवं

पंडित कृष्णदत्त भारद्वाज

(एम्० ए०, आचार्य, शास्त्री, साहित्यरत्न)

——:०:——

यह पुस्तक हिंदी-संसार में नई गवेषणा का फल है, और गोस्वामी तुलसीदास के आद्य जीवन एवं उनकी साध्वी धर्मपत्नी पर प्रचुर प्रकाश डालकर अनेक प्रचलित भ्रमों को दूर करती है। इसमें अन्य अनेक हस्त-लिखित ग्रंथों के आधार पर रत्नावली का विशद जीवन-चरित है, उसके २०१ दोहे तथा संपादक द्वारा उनकी सरल टीका भी विद्यमान है। अब तक उक्त चरित और दोहों की जो अनेक हस्त-लिखित प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं, उन सबकी तथा अन्य हस्त-लिखित पुस्तकों के कतिपय पृष्ठों के चित्र भी मनोविनोदार्थ यथास्थान दे दिए गए हैं।

यद्यपि गत दो-तीन वर्षों में इस विषय की चर्चा उक्त संपादक और टीकाकार द्वारा अनेक पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर हुई है, तथापि यह पुस्तक हिंदी के स्थायी-साहित्य में सर्वथा नई और अत्यंत महत्त्व-पूर्ण वस्तु है।

रत्नावली की रचना बालक-बालिकाओं एवं नर-नारियों के बड़े काम की है, और इतिहास, साहित्य तथा भाषा के मर्मज्ञों के लिये भी भव्य विचारों की सामग्री उपस्थित करती है।

गोस्वामी तुलसीदास-कृत रामायण का जो हिंदू-गृह में गौरवान्वित स्थान है, वैसा ही उनकी विदुषी पत्नी के दोहों का भी है। मूल्य लगभग ॥), सजिल्द १)

प्रकाशक—

गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरती

[कला-पूर्ण, प्रगतिशील मासिक पत्रिका]

संपादक—

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन

प्रफुल्लचंद्र ओझा 'मुक्त'

प्रत्येक हिंदी-पाठक के लिये नियमित रूप से 'आरती' पढ़ना आवश्यक है, क्योंकि इसके हर अंक में आपको मिलेगा—

(१) विश्व की विविध प्रवृत्तियों का परिचय।

(२) साहित्यिक, सामाजिक और राजनीतिक विषयों पर नवीनतम विचार।

(३) ओज-पूर्ण कहानियाँ और कविताएँ।

(४) संसार के महापुरुषों का उत्कृष्ट शब्द-चित्र।

(५) उत्पीड़ित मानवता की विद्रोह-पूर्ण हुँकार।

(६) गंभीर और प्रभावशाली टिप्पणियाँ।

ग्राहक बनकर और विज्ञापन देकर लाभ उठाइए। नमूने के लिये आठ आने का टिकट भेजिए।

वार्षिक मूल्य ५) एक प्रति ।≡)

आरती-मंदिर, पटना-सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

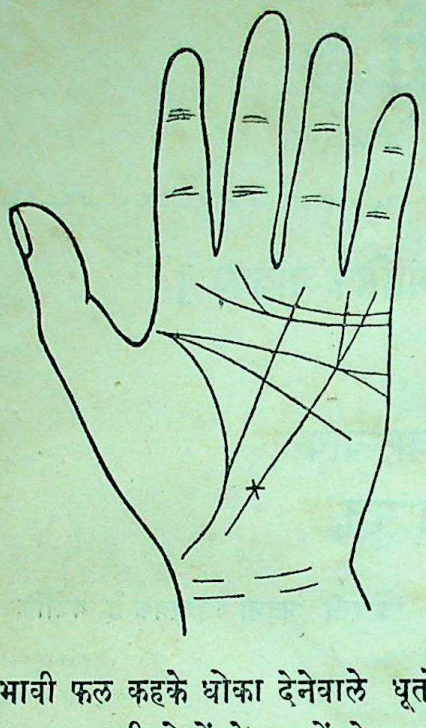

हस्त-परीक्षा

(हिंदी-पामिस्ट्री)

अनेक चित्रों सहित

द्वितीय बार छपकर तैयार है।

यदि आप विना जन्म-पत्र के केवल अपने हाथों पर से ही अपनी ज़िंदगी-भर का संपूर्ण भूत-भविष्य का शुभाशुभ फल जानना चाहते हों, अथवा उत्तम हस्त-परीक्षक बनना, अंट-संट भावी फल कहके धोका देनेवाले धूर्तों के प्रपंच से बचना, धंधा - रोज़गार का निर्णय करना, भावी रोगों के हमलों से बचना, कौन किस अधिकार के पद मिलने योग्य है यह जानना। जल-स्थल-यात्रा में से कौन यात्रा होना, सट्टा, लाटरी वग़ैरा से धन मिलना, कब कौन बात होना इत्यादि अनेक बातें स्पष्ट जानना चाहते हो, तो आज ही एक प्रति हस्त - परीक्षा (हिंदी-पामिस्ट्री) को ख़रीद लीजिए, जिससे उपर्युक्त सभी बातों का ज्ञान विना किसी गुरु की मदद के आपको भली प्रकार हो सकेगा। इस पुस्तक में पाश्चात्य देशीय समग्र सामुद्रिक शास्त्र के ग्रंथों का आशय पूर्वीय सामुद्रिक शास्त्र के साथ तुलना करके सरल हिंदी-भाषा में रेखाओं के अनेक चित्र-सहित भली प्रकार से वर्णन करने में आया है। हिंदी-भाषा में ऐसी बड़ी परम उपयोगी पुस्तक कहीं भी नहीं छपी होने से धड़ाधड़ बिक्री हो रही है। शीघ्रता करो। पुस्तकें थोड़ी संख्या में ही रही हैं, फिर हाथ न आवेगी, पुनः छपने तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। मूल्य सिर्फ़ ४।) है। डाक-महसूल।।)। अलग।

पता—मैनेजर श्रीभुवनेश्वरी प्रिंटिंग-प्रेस, रतलाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैज्ञानिक चमत्कार

इसे ध्यान-पूर्वक, विचार-पूर्वक आद्योपांत पढ़िए।

मान, प्रतिष्ठा, प्रेम, धन, यश, वैभव, अधिकार—
विना स्वस्थ संतान सब फीके, जीवन-भार।

(१) **पुत्रदा वटी**—इस औषधि-रहित, वैज्ञानिक गोली को एक बार ही विधिवत् व्यवहार करने से नीरोग स्त्री अथवा कन्या की माता यथासमय निस्संदेह इस प्रकार पुत्र-रत्न प्रसव करेगी, जैसे दो और दो का योग सदा निर्विवाद चार होता है। किसी मूल्य पर भी यह गोली सस्ती है। परंतु यदि आप सिर्फ़ दस रुपया (विदेशों से खर्च-सहित डेढ़ गिनी) हमारे मशविरे की फ़ी के साथ अपनी पूर्ण व्यवस्था-सूचक पत्र लिखकर तथा स्याही से स्त्री के हाथ-पैरों के साफ़ (स्पष्ट) निशानों-सहित इस पत्र का हवाला देकर लिखेंगे, और समयांतर में परमात्मा की कृपा से मनोरथ सिद्ध होने पर यथाशक्ति हमें उचित भेंट (जो देना स्वीकार हो) करने का सादर धर्म-पूर्वक वचन देंगे, तो यह गोली आज आप यों ही बिलकुल मुफ़्त पा सकते हैं।

(२) **इच्छानुसार संतान**—इस बात को सब कोइ जानते हैं कि सबों की सूरतों में कुछ-न-कुछ अंतर (फ़रक़) होता है, और प्रत्येक शिशु-जन्म-पश्चात् स्त्री के चेहरे (शक्ल) में थोड़ा-बहुत आवश्यकीय परिवर्तन अवश्य ही हो जाता है। यदि आप किसी नीरोग स्त्री का चित्र (ताज़ा फ़ोटो) हमारे पास भेज दें, तो हम उसकी प्राकृतिक मुखाकृति—चेहरे का नक़शा—(Facial Expression) का भले प्रकार—(Mystagogy) मिस्टैगाजी की रीत्यनुसार—विचार-पूर्वक निरीक्षण तथा परीक्षण करके—कोइ विशेष, उचित समय—प्रकृति द्वारा निश्चित समय—मालूम करके नियत कर देंगे कि उसी समय पर यदि वह विधिवत् वीर्य-दान लेगी, तो अवश्य ही अगली बार मनोवांछित संतान—पुत्र अथवा पुत्री—प्रसव करेगी। जो समय नियत किया जायगा, उसकी अवधि पूरा एक घंटा होगी, जो इस कार्य के लिये उचित तथा पर्याप्त है। हमारी सरल, वैज्ञानिक शिक्षानुसार व्यवहार करने से अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है। इस कार्य का जो कुछ बदला माँगा अथवा दिया जाय, निस्संदेह थोड़ा है। परंतु यदि आप इस पत्र का हवाला देकर हमारे लिये केवल पच्चीस रुपए (विदेशों से ढाई गिनी) निरीक्षण तथा परीक्षण-फ़ी(Scientific Examination Fee)-सहित चित्र तथा पूर्ण व्यवस्था-सूचक पत्र भेजेंगे और सादर धर्म-पूर्वक इस बात का वचन देंगे कि समयांतर में परमात्मा की अनुकंपा से इच्छित संतान प्राप्त होते ही हमको अपने स्वरूपानुसार उचित भेंट (जो देना स्वीकार हो) करेंगे, तो आज आप हमारा उचित वैज्ञानिक निर्णय बिना मूल्य ही प्राप्त कर सकते हैं। अँधेरे घरों में भकाभक उजाला देखना अभीष्ट हो, तो तुरंत लिखिए। जो महाशय वैज्ञानिक गोली तथा वैज्ञानिक विधि का साथ ही ऑर्डर दें, वह सिर्फ़ तीस रुपया फ़ी भेजें। यह ख़ास रिआयत है।

(३) **औषधि-रहित चिकित्सा**—यदि आप बिना औषधि सेवन किए तथा बिना किसी के जाने हुए योग-शक्ति, विचार-शक्ति, ध्यान-शक्ति और आध्यात्मिक तथा वैज्ञानिक, प्राकृतिक विधियों अथवा आवश्यकतानुसार दूसरी बेजोड़ सरल रीतियों, युक्तियों—देशी-विदेशी, सनातन-आधुनिक—आदि द्वारा पुराने, दुःखदायी, हठीले और असाध्य रोगों से छुटकारा पाना चाहें, तो पूर्ण व्यवस्था-सूचक पत्र लिखें। सब प्रकार निराश हो चुकने पर भी हमारी मालूम और बेमालूम विधियों आदि से अवश्य पूर्ण लाभ होता है। ख़र्चा मामूली होता है। पत्रोत्तर के लिये अपने पते का टिकट लगा लिफ़ाफ़ा साथ भेजें। "सुधा" का हवाला देकर लिखनेवाले पाठकों को मशविरे की फ़ी दस रुपया मुआफ़।

डॉक्टर जी० एस्० डी० शर्मन्, एम० ए०, डी० एस्-सी०, पी० एस्-डी०, पी-एच्० डी०।
विद्या-भूषण, योगविद्या-महार्णव, आकलटिस्ट तथा औषधि-रहित चिकित्सा-विशेषज्ञ।

सकसैस हाउस, फ़तेहपुर-सीकरी, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No. A-

उड़ते सितारे

भारतीय चित्रपट की उज्ज्वल तारिका **विमला कुमारी** कहती हैं—"मैंने चाय को सर्वदा आश्चर्यजनक तरो ताजा करने वाली पाया है।" चित्र-तारिका का जीवन एकाग्रता तथा खिंचाव का जीवन है और स्वभावतः वे सर्वदा चाय का ही भरोसा करती हैं। यह बहुत ही तरो ताजा करने वाला पेय है। यह चित्तको प्रसन्न भी करता है। चाय को अपना पहला प्रियपात्र बनाइये।

सब 'सितारों' की प्रिय-भारतीय चाय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 18

गंगा-फ़ाइनआर्ट प्रेस, लखनऊ में श्रीदुर्गाप्रसाद (मोहन प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया उपहार

कला की नवीन प्रवृत्तियाँ

श्रेष्ठ लेखकों की रचनाएँ

१. ग्राम्या (कविता-संग्रह)—लेखक, श्रीसुमित्रानंदन पंत ; मूल्य १)
२. पल्लविनी (कविता-संग्रह)—लेखक, श्रीसुमित्रानंदन पंत ; मूल्य ३)
३. जयशंकरप्रसाद (समीक्षा)—लेखक, श्रीपं० नंददुलारे वाजपेयी एम्० ए०; मूल्य १)
४. प्रबंध-प्रतिमा (निबंध-संग्रह)—लेखक, श्रीसूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ; मूल्य ३)
५. सितारों के खेल (उपन्यास)—लेखक, श्रीउपेंद्रनाथ 'अश्क' ; मूल्य १)
६. दो एकांकी नाटक—लेखक, श्रीसद्गुरुशरण अवस्थी एम्० ए० ; मूल्य ॥)
७. हवाई हमले से हिफ़ाज़त—लेखक, श्रीश्रीराम बाजपेयी ; मूल्य १)

मिलने का पता—

मैनेजर लीडर-प्रेस, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

	पृष्ठ
१. गीत (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'वचनेश'जी	३४३
२. कांग्रेस और हिंदू—[लेखक, माननीय राजा श्रीयुवराजदत्तसिंह, मेंबर कौंसिल ऑफ़ स्टेट	३४४
३. राखी (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०	३५१
४. हमारी राष्ट्रीय शिक्षा-संस्थाएँ—[लेखक, श्रीयुत रामचरित्रसिंह, हिंदी-विद्यापीठ, देवघर	३६४
५. अलेकजंद्रिया का प्राचीन विश्व-विद्यालय—[लेखक, श्रीयुत बैजनाथ-पुरी एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	३७१
६. तुलसीदास (कविता)—[लेखक, श्रीसोहनलाल द्विवेदी एम्० ए०, एल्-एल्० बी०	३७५

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सरदी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉक्स नं० ६८२५

[ई० सन् १९०१ में स्थापित]

च्यवनप्राश-३) सेर अध्यक्ष मथुरा बाबू का मकरध्वज-४) भरी

शक्ति औषधालय-ढाका

आयुर्वेदिक संसार में युगांतर उपस्थित कर दिया है।

कारखाना और हेड ऑफ़िस ढाका, बंगाल। तार का पता "शक्ति" ढाका।

कलकत्ता हेड ऑफ़िस—५२। १, बीडन स्ट्रीट। चौरंघी

बंगाल से बाहर की शाखाएँ—देहली, कानपुर, इलाहाबाद, पटना, भागलपुर, गया, बनारस, गोरखपर, बुलानाला, जमशेदपुर, गौहाटी, तिनसुकिया (आसाम), मदरास, कटक, रंगून, बेसिन, मांडले (बरमा), बंबई, लखनऊ ब्रांच—२, श्रीराम रोड, लखनऊ आदि।

ब्रांच भारतवर्ष में सर्वत्र और बरमा में

मृतसंजीवनी सुरा (गवर्नमेंट से लाइसेंसशुदा) भारतवर्ष और बरमा में हमारी सभी ब्रांचों में मिलती है।

अध्यक्षगण—श्रीमथुरामोहन, लालमोहन, फणींद्रमोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती।

प्रोप्राइटर्स—श्रीमथुरामोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती बी० ए०

हिंदू केमिस्ट और फ़िज़िशियन

पत्र और मनीऑर्डर आदि मथुरा बाबू मैनेजिंग प्रोप्राइटर के नाम भेजिए। (एम्०)

आयुर्वेदीय चिकित्सा-प्रणाली-संबलित सूचीपत्र मुफ़्त मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७. ट्रेन पर (कविता)—[लेखक, श्री-श्रीनिधि द्विवेदी ३७६
८. बड़ा पापी कौन ? (सामाजिक नाटक)—[लेखक, श्रीयुत सेठ गोविंददास ... ३७१
९. ऋग्वेद की एक भविष्य-वाणी (अथवा नैतिक पतन के गर्त में)—[लेखक, श्रीप्रो० धर्मदेव शास्त्री, दर्शन-केसरी, दर्शन-भूषण, सांख्य-वेदांत-न्याय-तीर्थ ३८२
१०. परेशान (कहानी)—[लेखक, श्री-कालीचरण चटर्जी एम्० ए० ... ३८६
११. हिमालय के अंतराल में (सचित्र, भ्रमण)—[लेखक, श्रीयुत रामेश्वरदयाल दुबे एम्० ए०, साहित्यरत्न ३९१
१२. राजा-रानी (कविता)—[लेखक, पु० श्रीप्रतापनारायण 'कविरत्न' ... ३९९
१३. संगीत की कलाएँ बंधन-मुक्त हैं—[लेखक, नाट्य-कलाचार्य श्रीयुत राजाराम द्विवेदी 'सुरंग' ४००
१४. पंतजी की 'ग्राम्या' (आलोचना)—[लेखिका, श्रीमती सावित्री दुलारेलाल एम्० ए० ... ... ४०१
१५. हिंदी-उपवन (कविता)—[लेखक, श्रीगंगाप्रसाद 'कौशल' ४०२
१६. चयन—[लेखकगण, कुमारी रूपकुमारी वाजपेयी बी० ए०, श्रीमती योगमाया-देवी, सभानेत्री बिहार-संस्कृत-छात्रा-सम्मेलन, श्रीयुत उमाशंकर तिवारी 'समीर' साहित्यालंकार, श्रीयुत एम्० पी० केदार और श्रीयुत लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक' ४०१
१७. परिचय—[लेखकगण, श्रीयुत सुधींद्र वर्मा एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, श्रीयुत 'अरुण' और श्री सा० ... ... ४१०
१८. कुसुम ४१०
१९. धारा ४१०
२०. 'हिंदी' और 'हिंदुस्तानी' के संबंध में सम्मेलन की नीति ४१२

हिंदी की सुंदर, सचित्र मासिक पत्रिका

वीणा

संपादक

श्रीकालिकाप्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर'

प्रकाशक

श्रीमध्य-भारत-हिंदी-साहित्य-समिति

डॉक्टर बाबूराम सक्सेना, एम्० ए०, डी० लिट्, प्रधान मंत्री हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग:—'वीणा' हिंदी की उच्च कोटि की पत्रिका है, और मातृ-भाषा और साहित्य की प्रचुर सेवा कर रही है।

दीवाली के अवसर पर बृहत् विशेषांक

वार्षिक मूल्य ४) **ग्राम-सुधार-अंक** एक प्रति ।=)

नमूने का अंक फ्री नहीं भेजा जाता।

व्यवस्थापक—'वीणा', इंदौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) तिरंगा

१. आँख-मिचौनी—[चित्रकार, श्रीराधेश्याम भटनागर ३४३

(ख) रंगीन

२. भिखारी—[चित्रकार, श्रीशंभुनाथ मिश्र ३९८

३. स्व० विद्यावाचस्पति श्रीपं० शालग्रामजी शास्त्री ३९९

पृष्ठ

(ग) सादे

४. श्रीप्रो० धर्मदेव शास्त्री, दर्शन-केसरी, दर्शन-भूषण, सांख्य-वेदांत-न्यायतीर्थ ... ३८२

५-१२. हिमालय के अंतराल में-संबंधी ८ चित्र ३९२-३९३, ३९५-३९८

१३. श्रीसुमित्रानंदन पंत ४०५

१४. श्रीमती योगमायादेवी ४११

कुकड़ूँ कूँ

मुस्किराने ! खिलखिलाने !! हिनहिनाने !!!

और

हँसते-हँसते सचमुच लोटन कबूतर बन जाने की इच्छा है, तो 'कुकड़ूँ कूँ' पुस्तक की एक प्रति चुपचाप किसी बुकसेलर से उड़ा लीजिए, नहीं तो सीधे १=) की वी० पी० हमसे मँगाइए। मूल्य १), डाक-खर्च ।-)

पुस्तकालयों को डाक-खर्च माफ़

मैनेजर—मुस्कान-मंदिर ७। १, बाबूलाल लेन (S) कलकत्ता

प्रेम-शक्ति

यह अपूर्व औषध ख़ासकर कमज़ोर तथा जो समय से पहले ही अपने जीवन से हाथ धो बैठे हैं, उनके लिये रामबाण है।

बहुत-से युवक अपनी नासमझी के कारण पचीस वर्ष की अवस्था में ही वृद्ध-जैसे दिखलाई देते हैं, वे अगर इसे इस्तेमाल करें, तो अवश्य पूर्ण यौवन प्राप्त कर सकेंगे। मानसिक कार्य करनेवाले सुबह तथा शाम दो गोलियाँ सेवन करें, तो वे अपनी मानसिक शक्ति तथा जीवनी शक्ति बढ़ा सकेंगे। एक शीशी २५ गोलियों की मँगाकर सेवन करें। क़ीमत एक शीशी २), वी० पी० ख़र्च जुदा।

मिलने का पता—जसवंत ब्रादर्स, मथुरा (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्यों के मुक़ाबिले में डॉक्टर किस बात में नहीं हारे?

केवल सर्जरी अर्थात् शल्य-शालाक्य-विषय में

क्योंकि वैद्य अपनी इस विद्या को बिसारे बैठे हैं। यह भूल ही गए कि यह शास्त्र भी हमारे यहाँ कितनी उन्नति कर चुका है, उसी प्राचीन शल्य-शास्त्र का अति सरल वर्णन और नवीन प्रणाली से भी परिचय दिलानेवाला ग्रंथ-रत्न—

छप गया ! छप गया !! छप गया !!!

प्राच्य, पाश्चात्त्य शल्य-तंत्र

इस ग्रंथ-रत्न में शल्य के भेद, लक्षण, उपाय, व्रणों के भेद, रक्षा और उत्तमोत्तम उपचार, उनके शोथ-निवारण, स्वदेशी टिंचर, आइडोफ़ार्म, स्वदेशी क्लोरोफ़ार्म आदि शल्य-विषयक अनुभूत डॉक्टरी दवाओं के मुक़ाबिले की ओषधियाँ शास्त्र में, पट्टी बाँधने के तरीक़े, व्रण के ६० उपक्रमोपचार-शोधन, प्रत्येक प्रकार के व्रण, आघातज, विषज, आदृष्टि, किंचित् आदि-आदि सभी घाव, रक्तस्राव, भग्न, अस्थिभग्न, अंगच्छेद, आंतरिक अंगों के व्रण, अर्बुद, विद्रधि, कांडभग्न, मोचच्छेदन,भेदन,बिमलीपन पाचन, रक्तमोक्षण, स्नेहन, लेखन, एषण, आहारण, सीवन, पीड़न, निर्वाचन, क्रोधन, अवसादन, क्षौरकर्म, लेपन-पोषण, बंधनादि कहाँ तक कहें, सर्व प्रकार के व्रणोपचार की प्राच्य-पाश्चात्त्य मतानुसार विशद व्याख्या-सहित समस्त सफल क्रियाएँ दी हैं। व्रण बंधनों के अनेकों भेद, उपयोग, विशेषताएँ और शल्य-कर्म में आनेवाले अनेक शास्त्र-शलाकाएँ, कत्तरिका, कुशपत्र, कूर्चल, वीक्षण-यंत्र, कतनक, संदेश, स्वस्तिक आदि यंत्रों का मनोमोदक सचित्र वर्णन और उपयोग एवं शास्त्र-कर्म जौकाओं का प्रयोग और भेद सभी भले प्रकार समझाए गए हैं। हम दावे के साथ कहते हैं कि यह ग्रंथ आपकी आयुर्वेद-विषयक अन्य आवश्यकताओं में सबसे अधिक आवश्यक है। यह ग्रंथ आपके पास पहुँचते-पहुँचते आपके कार्य की कई गुना अधिक शोभा बढ़ा देगा। छपकर तैयार होते ही विद्यालयों में छात्रों तथा वैद्यों ने मँगा लिया। शीघ्रता करिए, अन्यथा दूसरी बार छपने की बाट जोहनी पड़ेगी।

मूल्य प्राच्य शल्य-तंत्र २॥), पाश्चात्त्य शल्य-तंत्र १॥), दोनो भाग एक साथ मँगाने पर ३॥) में देंगे। डाक-खर्च ॥।) अलग।

मिलने का पता—मैनेजर 'राकेश'

बरालोकपुर, इटावा (यू०पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशुद्ध आयुर्वैदिक औषधें

आपको

सुख-संचारक कंपनी लि०, मथुरा ही में मिल सकेंगी। संयुक्त प्रांत-भर में सबसे बड़ी बिजली की मशीन से चलने-वाला यही एकमात्र कारखाना है।

बड़ा सूचीपत्र मँगाकर देखिए

पता—सुख-संचारक कंपनी लिमिटेड

मथुरा, यू० पी०

अद्भुत पुस्तकें

यदि आप सर्वदा नीरोग, युवा, सुंदर, बलवान् और जीवन्मुक्त रहकर मृत्यु को भी जीत लेना चाहते हैं, तो निम्न-लिखित अद्भुत पुस्तकों को मँगाकर अवश्य पढ़ जायँ—

नीरोग होने का अद्भुत उपाय	मूल्य १)	वेदांत-सिद्धांत	मूल्य २)
शरीर से अमर होने का उपाय	,, १॥)	सृष्टि-विज्ञान-शास्त्र	,, ≡)
वृद्धावस्था दूर करने का उपाय	,, ≡)	शांतिदायी विचार	,, १)
सचित्र योग-साधन	,, २॥)	अत्यंत सत्य व आत्मज्ञान की कथाएँ	,, ।≡)
सत्य, सुंदर और स्वतंत्र विचार	,, २॥)	मेस्मेरिज़्म या भूतविद्या	,, ॥)
योग-सिद्धियों को प्राप्त करने का उपाय	,, ।=)	आत्मबल, मनोबल और इच्छा-शक्ति	,, १)
		भजन-ज्ञान-गीता	,, ≡)

पता—मैनेजर ज्ञानशक्ति-प्रेस, गोरखपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस हज़ार रुपए की घड़ियाँ इनाम में !

हमने नीचे लिखी तीन चमत्कारी दवाओं की मशहूरी के लिये अपने ग्राहकों को दस हज़ार रुपए की घड़ियाँ इनाम में मुफ़्त देने का फ़ैसला किया है। जल्दी कीजिए !

* काला तेल *

यह बार-बार लगानेवाला ख़िज़ाब नहीं, एक अद्भुत चमत्कारी तेल है, जो मामूली तेलों की तरह इस्तेमाल किया जाता है, और इसकी ख़ूबी यह है कि इसका व्यवहार करनेवाले दंग रह गए। इससे सफ़ेद बाल एकदम काले हो जाते हैं, और फिर हमेशा काले ही पैदा होते हैं। यह हमारे पूज्य स्वामीजी की एक अमूल्य भेंट है, जो दिमाग़ को भी हर तरह की ताक़त पहुँचाता है, आँखों की ज्योति को बढ़ाता है, और सर में ठंडक पहुँचाता है, बालों की यह ख़ूराक है। मूल्य फ़ी शीशी १।।), ३ शीशी ३।।।) और हरएक शीशी के साथ एक फ़ैंसी म्यूट रिस्टवाच मुफ़्त भेजी जाती है, जिसकी मज़बूती और ख़ूबसूरती की गारंटी १० साल है। गारंटी का इक़रारनामा घड़ी के साथ भेजा जाता है। डाक-ख़र्च अलग, ३ शीशी मँगाने से ख़र्च माफ़।

* काले भी गोरे कर दिखाए *

यदि आपके शरीर और मुख का रंग काला पड़ गया हो, तो इस दवा का व्यवहार कीजिए। इससे चेहरे की झाँइयाँ, काले दाग़, कील, फुंसियाँ, चेचक के दाग़ वग़ैरा मिटकर चमड़े का रंग फूल की तरह निखर आता है। हमारी यह 'पेरिस-ब्यूटी' एक आज़मूदा वस्तु है, जो शर्तिया शरीर का रंग पलटकर दिखा देती है। मूल्य फ़ी शीशी १।।), ३ शीशी ३।।।), ख़र्च अलग। ३ शीशी मँगाने से ख़र्च माफ़। हरएक शीशी के साथ एक फ़ैंसी म्यूट रिस्टवाच मुफ़्त दी जाती है, जिसकी मज़बूती व ख़ूबसूरती की गारंटी १० साल है। गारंटी का इक़रारनामा घड़ी के साथ भेजा जाता है।

बाल उम्र-भर नहीं उगते

यह बाज़ारी चीज़ नहीं, वैज्ञानिक ढंग से बनाई गई है। इसका व्यवहार करने से नरम-से-नरम स्थान के बाल जड़ से उखड़ जाते हैं, और फिर कभी पैदा नहीं होते। चमड़ी रेशम की तरह मुलायम हो जाती है। मूल्य १।।), ३ शीशी का ३।।।), ख़र्च अलग। ३ शीशी मँगाने से ख़र्च माफ़। हरएक शीशी के साथ एक फ़ैंसी म्यूट रिस्टवाच मुफ़्त दी जाती है, जिसकी मज़बूती और सुंदरता की गारंटी १० साल है। गारंटी का इक़रारनामा घड़ी के साथ भेजा जाता है।

नोट—इन दवाओं के नापसंद होने से दाम वापस दिया जाता है।

हिमालय मेडिकल स्टोर

पोस्ट बॉक्स नं० १२ (S. M. L) अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

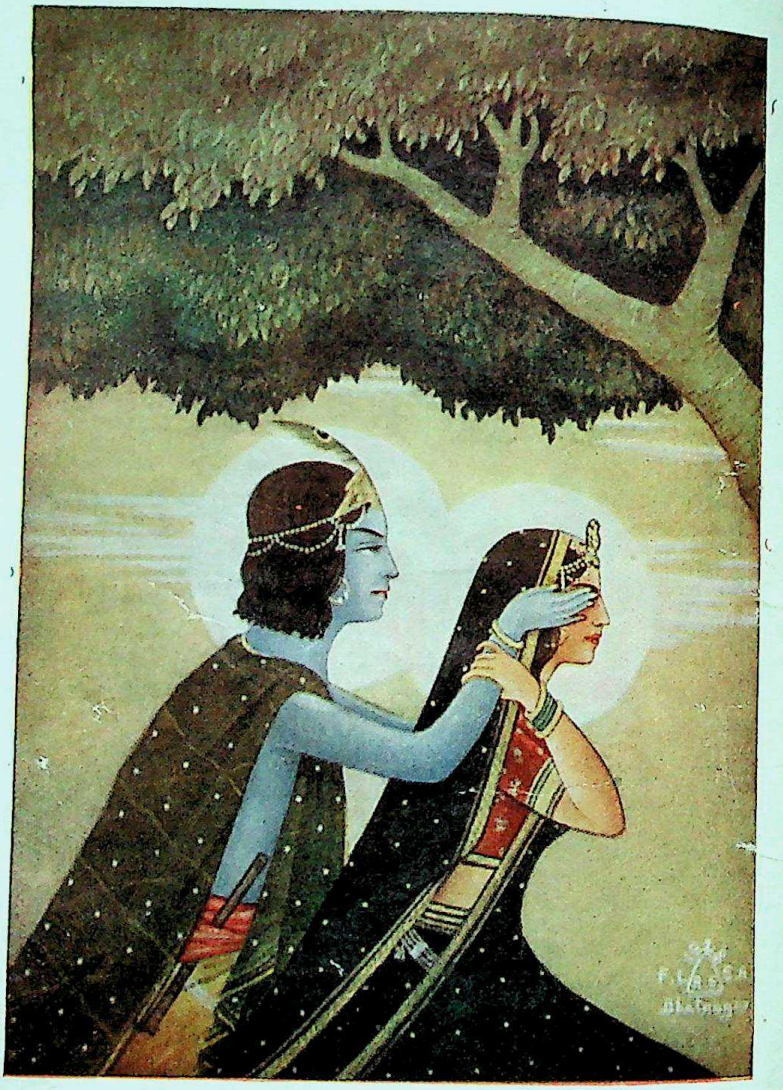

आँख-मिचौवल

[चित्रकार—श्रीराधेश्याम भटनागर]

मिहचत चोर-मिहीचनी चख अचकाँ चित-चोर ;
पिय-कर निय कर धरि रही तिय हिय-अमिय-बिभोर ।

(दुलारे-दोहावली)

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Approved by the Directors of Public Instruction in U. P., C. P., C. I., Bombay, Bihar, Punjab & Sind.

वार्षिक मूल्य प्रतिसंख्या

राजसंस्करण	१२)	१)
साधारण संस्करण	६)	॥)

प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

वर्ष १४ खंड १ | आश्विन, ३१८ तुलसी-संवत् (१९९७ वि०)— ऑक्टोबर, १९४० | संख्या ३ पूर्ण संख्या १७१

गीत

[श्रीयुत 'वचनेश'जी]

छिपे छिपि पैहौ नहिं अभिराम !

अपनी जानि छिपे तुम नभ में, मृदुल, मंद मुसकानि उषा में
झलकत है तन स्याम ; सुमनन हास - विराम ;
रवि-ससि में प्रतिबिंबित मुख-दुति, मानस में 'वचनेस' प्रतिधुनित
तम में चिकुर ललाम । तव मुरली बसु जाम ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस और हिंदू

[माननीय राजा श्रीयुवराजदत्तसिंह, मेंबर कौंसिल ऑफ़ स्टेट]

कांग्रेस को जो आज राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्त्व का स्थान प्राप्त है, उसके निर्माण में हिंदुओं ने सबसे बड़ा त्याग और बलिदान किया है। कहना तो यह ठीक होगा कि हिंदुओं ने अपने रक्त से सींचकर इस संस्था को बड़ा बनाया है। यह कहकर मैं कांग्रेस के राष्ट्रीय स्वरूप को सर्वथा अस्वीकार नहीं कर रहा हूँ। जहाँ तक उसका घोषित लक्ष्य समस्त भारत की जनता के लिये स्वतंत्रता प्राप्त करना है, वहाँ तक वह राष्ट्रीय कही जा सकती है। पर इस घोषित लक्ष्य की प्राप्ति के लिये लगभग विगत पचीस वर्षों से कांग्रेस जो नीति बरत रही है, वह राष्ट्रीय कदापि नहीं, वरन् उसी से भारत में राष्ट्रीयता का प्रायः अंत हुआ जा रहा है। राष्ट्रीयता के इस संकट का उल्लेख मैं पहले लेख * में कर चुका हूँ। जब कांग्रेस भारत की समस्त जनता के लिये स्वराज्य और स्वतंत्रता-प्राप्ति का लक्ष्य लेकर मैदान में आई थी, तब न्याय इसी में था कि वह हिंदू और मुसलमान, दोनो के प्रति अपने व्यवहार और नीति में निष्पक्ष रहती। किसी संस्था की राष्ट्रीयता का इसके अतिरिक्त अर्थ ही क्या हो सकता है कि वह अपने साथ रहनेवाले राष्ट्र के सभी वर्गों और संप्रदायों के अधिकारों का समान ध्यान रक्खे। पर, खेद है, कांग्रेस ने मुसलमानों की बेहूदा-से-बेहूदा माँगों के आगे झुककर सदैव हिंदुओं के अधिकारों की हत्या की है, और इस प्रकार अपनी राष्ट्रीयता का पूर्ण दिवाला निकाल दिया है। कांग्रेस का विगत पचीस वर्षों का इतिहास मुसलमानों के साथ समझौता करने के प्रयत्नों का ही ब्योरा है, जब कि उसने मुसलमानों को प्रसन्न करने के लिये हिंदुओं के अधिकारों का निःसंकोच अपहरण किया। कहने की आवश्यकता नहीं कि कांग्रेस की यह नीति सर्वथा असफल रही, वरन् उसी के फल-स्वरूप हिंदू-मुस्लिम-संघर्ष अधिकाधिक बिगड़ता रहा, और यह समस्या आज इतनी घातक हो गई है। कुछ विस्तार के साथ हिंदुओं के प्रति कांग्रेस की नीति को देखना होगा।

आज कांग्रेस में हिंदू और मुसलमान दोनो हैं, फिर भी वह मुसलमानों से ही समझौता करने के लिये उत्सुक रहती है। कांग्रेस के नेता चाहे हिंदू हों चाहे मुसलमान, वे मुस्लिम नेताओं से समझौते की बातचीत चलाया करते हैं। ध्यान देने की बात यह है कि समझौते की बातचीत हिंदुओं और मुसलमानों के नेताओं में नहीं होती, होती है कांग्रेस और मुसलमानों के नेताओं में। गत वर्ष सितंबर में वर्तमान योरपीय युद्ध-प्रसूत परिस्थिति पर परामर्श करने के लिये कांग्रेस-कार्य-समिति ने सिद्ध राष्ट्र-द्रोही मि० जिन्ना को आमंत्रित किया था, पर भारतीय स्वतंत्रता के अटल व्रती और तपस्वी हिंदू-राष्ट्र-पति, वीरवर विनायक दामोदर सावरकर को नहीं बुलाया। कहना न होगा कि मि० जिन्ना ने इस निमंत्रण को ठुकराकर कांग्रेस के इस मुस्लिम-मैत्री-मोह का उचित सम्मान किया। इससे यह स्पष्ट है कि समस्या हिंदू-मुस्लिम-मैत्री की नहीं, वरन् कांग्रेस-मुस्लिम-मैत्री की है। इसलिये कांग्रेस के नेता,

* गत श्रावण के विशेषांक में प्रकाशित।—सुधा-सपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहे हिंदू हों, चाहे मुसलमान, मुसलमानों के उपद्रवी दल से हमेशा समझौते की बातचीत चलाया करते हैं। कांग्रेस मुसलमानों से समझौता करने के लिये क्यों इतनी उत्सुक है, कांग्रेस-मुस्लिम-समझौते का देश के लिये क्या महत्त्व है? वास्तव में बात यह है कि कांग्रेस अँगरेज़ सरकार से सुधारों की भीख माँगती है, और मुस्लिम-लीग हमेशा इन सुधारों में अड़ंगा लगाती है। लीग यह भी स्वप्न देखती है कि भारत पर मुसलमानों का शासन हो जायगा। ब्रिटिश सरकार इस स्वप्न का मूल्य जानती है। यह स्वप्न न भूतकाल में सच था, और न भविष्य में सच होगा। लेकिन अँगरेज़ सरकार का उल्लू इसी में सीधा होता था कि वह इस स्वप्न को मुसलमानों के मन में जगाए रक्खे। अब भी जब सुधारों की बात होती है, तो अँगरेज़ों को यह बहाना मिल जाता है कि हिंदू-मुसलमानों में ऐक्य नहीं। जहाँ सुधारों की बात होती है, वहाँ कांग्रेस के नेताओं के पेट में खलभली होने लगती है। वे सोचते हैं, कहीं हम कांग्रेस और मुस्लिम-लीग की मैत्री दिखा सकते, तो फ़ौरन् स्वराज्य मिल जाता, अथवा निर्विघ्न इन सुधारों का उपभोग किया जा सकता। वे भूल जाते हैं कि ब्रिटिश राजनीति के तरकस में इस समझौते के बाद भी बहुत-से तीर बाक़ी रहेंगे।

पिछली लड़ाई में कांग्रेस के नेताओं को पता लगा कि ब्रिटेन जर्मनी से युद्ध के दबाव से विवश होकर भारत को स्वराज्य दे डालेगा। इसके लिये उन्होंने १९१६ में मुसलमानों के साथ लखनऊ-पैक्ट नाम का समझौता किया। इस पैक्ट द्वारा प्रांतीय धारा-सभाओं में मुसलमानों के लिये पृथक् निर्वाचन द्वारा अधिक प्रतिनिधित्व का सिद्धांत (Principle of separate communal electorates with weightage) कांग्रेस ने स्वीकार किया। इस प्रकार आएदिन प्रजातंत्र (Democracy) का डंका पीटनेवाली कांग्रेस ने पृथक् निर्वाचन-प्रणाली स्वीकार कर आज से चौबीस वर्ष पहले अपने हाथों इस देश में प्रजातंत्र की जड़ काट दी थी। लोकमान्य तिलक ने उस समय कहा था कि मुसलमान भी भारतीय हैं, और हम स्वराज्य भारतीयों के लिये चाहते हैं। इसलिये मुसलमानों को पृथक् प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए, और अधिक भी। भारतीय होने के कारण मुसलमानों को इस तरह पुरस्कृत किया जाने लगा। वे भारतीय हैं, इसलिये आवश्यक है कि सम्मिलित चुनाव स्वीकार न करें। और भी, वे भारतीय हैं, तथा हिंदुओं के भाई, इसलिये अलग प्रतिनिधित्व ही पर्याप्त नहीं, प्रत्युत उनके प्रतिनिधियों की संख्या औसत से अधिक भी होनी चाहिए। कैसी ज्वलंत भारतीयता है यह! कांग्रेस अब तक ऐसी ही भारतीयता का पोषण और राष्ट्रीयता की चेष्टा करती चली आ रही है। लखनऊ-पैक्ट में मुसलमानों के लिये पृथक् निर्वाचन और अधिक प्रतिनिधित्व स्वीकार कर लिया गया, परंतु इससे संतुष्ट होने के स्थान पर मुसलमानों की सारे भारत पर शासन स्थापित करने की लिप्सा को प्रोत्साहन मिला। जो पूरी रोटी ही हड़प जाना चाहता है, वह एक कौर से कैसे तृप्त हो सकता है। मुसलमान क्या चाहते थे, उन्होंने मुलतान, सहारनपुर, कोहाट, गुलबर्गा आदि विभिन्न स्थानों पर दंगे और लूट-मार करके दिखाना शुरू किया। फिर भी कांग्रेस के कानों पर जूँ नहीं रेंगी, और उसने इन्हीं मुसलमानों से निरंतर समझौते के प्रयत्न जारी रक्खे। कांग्रेस अपनी सुधारों की भूख हिंदुओं का ख़ून पीकर बुझाना चाहती है, परंतु मुसलमान उससे संतुष्ट नहीं। वे तो स्पष्ट ही देश में मुसलमानों का शासन चाहते हैं। वे सोचते हैं, यदि कांग्रेस का ही शासन हो, तो कांग्रेस मुसलमानों की होनी चाहिए। इसलिये वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस के क़िले पर बाहर से गोलों की बौछार कर रहे हैं, तो आज़ाद साहब भीतर से फाटक खोल देने की तैयारी में हैं। इस संकट-पूर्ण परिस्थिति से कांग्रेस हिंदुओं को छल से बेख़बर रख रही है, और उनकी वास्तविक स्वतंत्रता तथा अधिकारों को भारतीयता और राष्ट्रीयता के नाम पर, मुस्लिम-मैत्री की वेदी पर, लगातार बलि करती जा रही है। क्या यह हिंदुओं के साथ जघन्य विश्वास-घात नहीं? उन भोले हिंदुओं के साथ, जिन्होंने अपनी वोट की शक्ति से कांग्रेस और उसके नेताओं को वर्तमान अधिकार और महत्त्व का स्थान प्रदान किया है। क्या प्रांतिक धारा-सभाओं में कांग्रेस का बहुमत, मंत्रिमंडल और प्रभाव केवल हिंदुओं के सहयोग के कारण न था? इसके विपरीत कांग्रेस अपनी क्रियात्मक राजनीति से मुस्लिम-लीग का उत्साह बढ़ाती रहती है। उसकी यही मुसलमानों को येन केन प्रकारेण प्रसन्न करने की नीति देश में इतने दंगों के लिये ज़िम्मेदार है, जिनमें हिंदुओं पर अकथनीय अत्याचार हुए हैं। हिंदुओं के जान-माल और अधिकारों के प्रति कांग्रेस की उदासीनता देखकर ही मुसलमान उन पर नित नए अत्याचार करने की प्रेरणा पाते हैं। इसलिये मैंने पहले कहा है कि देश की राजनीति में जब तक समुचित परिवर्तन नहीं होता, तब तक हिंदुओं की रक्षा असंभव है।

लखनऊ-पैक्ट के अनुसार किस प्रकार पृथक् निर्वाचन स्वीकार कर कांग्रेस ने प्रजातंत्र-विरोधी प्रणाली की संवर्धना की, यह कहा जा चुका है। इसके अतिरिक्त इसी पैक्ट ने मुसलमानों के इस सर्वथा अनुचित दावे के लिये क्षेत्र तैयार किया कि समय आने पर अपने लिये संरक्षणों के स्वरूप और संस्था का प्रश्न स्वयं मुसलमान ही तय करेंगे। उक्त दावे में निहित इस सिद्धांत का स्थापन कि ऐसे महत्त्व के प्रश्नों पर अल्पमत को बहुमत पर अपनी माँगें लादने और मनवाने का अधिकार है, पहलेपहल खुलकर हमारी राष्ट्रीय कांग्रेस के सभापति मौलाना अबुलकलाम आज़ाद ने, सभा-पति-पद से, रामगढ़ में, किया। उन्होंने कहा, विधान-सम्मेलन में मुसलमानों को अपने लिये संरक्षणों की संख्या और स्वरूप निश्चित करने का पूर्ण अधिकार होगा। फिर दिल्ली में राष्ट्रीय कहे जानेवाले मुसलमानों की आज़ाद कॉन्फ्रेंस में इसी मत और सिद्धांत की पुष्टि की गई। पर संसार में अपने को प्रजातंत्रवाद का ठेकेदार कहनेवाली कांग्रेस ने इसके विरोध में एक शब्द भी नहीं कहा, प्रत्युत हिंदुओं को फँसाने के लिये मौलाना आज़ाद और आज़ाद मुसलमानों की राष्ट्रीयता का मनमाना बखान किया। राष्ट्रीयता और देश के सच्चे हितैषियों को कांग्रेस और इन राष्ट्रीय कहे जानेवाले मुसलमानों की गति-विधि सावधानी से परखनी चाहिए। यहाँ यह भी कह देना उचित होगा कि इसी लखनऊ-पैक्ट ने जहाँ एक ओर अत्यंत दुर्नीति-मूलक सांप्रदायिक निर्णय को संभव बनाया, वहाँ दूसरी ओर इसी की बुनियाद पर देश में वह विषैला वातावरण तैयार हुआ, जिसमें आज मुसल-मान पाकिस्तान की बेहूदा माँग पेश कर सके हैं।

यह सब तो प्रकट ही है कि लखनऊ-पैक्ट से मुसलमानों की तृप्ति नहीं हुई। होती भी क्यों, जब कांग्रेस उनकी प्रत्येक महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिये न्याय का गला घोटने को तत्पर थी। शासन-सुधारों के लिये जाँच करने देश में सायमन कमीशन आया, उसका बॉयकाट किया गया। फिर देश में सत्याग्रह-आंदोलन छिड़ा, जिसमें हिंदू-जनता ने अपने साथ किए गए पिछले अन्यायों को भूलकर कांग्रेस के आदेश पर अधिक-से-अधिक बलिदान किया। इस आंदोलन के बाद गोलमेज़-कॉन्फ्रेंसों का ताँता बँधा, जिनमें भारत का विधान विचारार्थ उपस्थित था। अंत में कांग्रेस और स्वयं महात्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधी ने भी इसमें भाग लिया। फल-स्वरूप देश के लिये जो सुधार दिए जाने को हुए, उनमें फिर मुसलमानों को पृथक् और अधिक प्रतिनिधित्व दिया गया। और, इस तरह प्रजातंत्र का कलंक-स्वरूप हिंदुओं की अधिकार-हत्या का दस्तावेज़ सांप्रदायिक निर्णय के नाम से स्थायी रूप से देश के विधान में स्थान पा गया। कांग्रेस ने यह जानते हुए भी कि यह सरासर अन्याय है, उसे स्वीकार किया। मुसलमानों से समझौता करने के फेर में उसने महामना मालवीयजी-सदृश नेताओं से अलग होने में भी आगा-पीछा नहीं किया, जिन्होंने ऐसे अन्याय को स्वीकार करनेवाली संस्था में रहना अनैतिक समझा। इस तरह सांप्रदायिक निर्णय को लेकर आनेवाला यह विधान सन् ३५ में देश पर लाद दिया गया। कांग्रेस ने पहले इस क़ानून को स्वीकार करने में बड़ी आनाकानी की, लेकिन यह न भूलना चाहिए कि उसका यह प्रदर्शन सांप्रदायिक निर्णय के कारण बिलकुल नहीं था। सांप्रदायिक निर्णय के निर्माण में तो कांग्रेस की शह थी ही, पर अंत में कांग्रेस ने इस विधान को स्वीकार कर लिया, और धारा-सभाओं में जाकर मंत्रिमंडल बनाए। इन मंत्रिमंडलों के बनने के बाद से कांग्रेस-हिंदू-संबंधों का एक नया इतिहास प्रारंभ होता है। अब कांग्रेस देश के सात प्रमुख प्रांतों में शासक और जनता की मा-बाप थी। इस समय उसे हिंदू और मुसलमानों के साथ अपनी मनमानी नीति बरतने की पूरी सुविधा और स्वतंत्रता थी। और, उसने यह सिद्ध कर दिया कि सांप्रदायिक निर्णय से हिंदू-हितों की जो क्षति हुई, वह उसकी दृष्टि से पर्याप्त नहीं थी। इसलिये कांग्रेस ने हिंदुओं के हितों की हत्या करके मुसलमानों को विशेष अधिकार और सुविधाएँ देने का कार्य-क्रम बना लिया, और इस दिशा में उसने जो कुछ किया, उसे बार-बार हिंदू-भावनाओं की उपेक्षा कर घोषित भी करती रही। इसके अनेक प्रमाण कांग्रेसी सरकारों के सूचना-विभाग की ओर से प्रकाशित हुई बहुसंख्यक पैंफ़लेटों में मिलेंगे। ये पैंफ़लेट केवल मुसलमानों के लिये ही उर्दू में छापे जाते थे, और उनमें निर्लज्जता-पूर्वक यह दिखाया जाता था कि किस प्रकार कांग्रेस-सरकार हिंदुओं के वैध अधिकारों का अपहरण कर मुसलमानों को सर्वथा अवैध सुविधाएँ भी दे रही है।

पहले यू० पी०-सरकार के ही कारनामों को देखना ठीक होगा, और वह भी उसी की घोषणाओं की भाषा में। यू० पी० की कांग्रेसी सरकार ने अपने शासन-काल में 'मुसलमान अक़्लियत और हुकूमत सूबाजात मुत्तहदा'-शीर्षक एक पुस्तिका उर्दू में प्रकाशित की थी। यह मुसलमानों में वितरित की गई थी। इसमें सरकार ने मुसलमानों को दिए गए विशेष अधिकारों और सुविधाओं की तालिका प्रकाशित की थी। यह विवरण अपनी कथा स्वयं कहता है। इस पुस्तिका में पहले मुसलमानों को कितनी नौकरियाँ दी गईं, इसका ब्योरा है। कहा गया है—"अगर्चे मुसलमानों की आबादी इस सूबे में १४ फ़ीसदी है, और हिंदुओं की ८५ फ़ीसदी, मगर कांग्रेस-हुकूमत ने अपने अहद में जितने तक़र्रुरात किए, उन सबमें मुसलमानों को उनकी आबादी की तनासुब से कुछ ज़्यादा नहीं, बल्कि कहीं ज़्यादा नुमायंदगी दी है, हत्ताकि बाज़ जगहों पर मुसलमान ५० फ़ीसदी से भी ज़्यादा जगह पर रक्खे गए हैं।" "मौजूदा कांग्रेस-हुकूमत ने अपने अहद में चार डिप्टी-कलक्टरों को टस्डपोस्ट पर नामज़द किया, जिनमें से तीन मुसलमान थे, और एक हिंदू.....।" "सेटिलमेंट अफ़सरों में मुसलमानों को ५० फ़ीसदी जगहें मिलीं, चार आदमी सेटिलमेंट अफ़सर बनाए गए, जिनमें दो मुसलमान थे.....।" "हाल ही में एक जगह डायरेक्टर सेंट्रल जेल की निकाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई। इस पर मुसलमान ही को रक्खा गया।" "सत्ताईस आदमियों को नायब तहसीलदारी से तरक़्क़ी देकर तहसीलदार बनाया गया। इसमें तेरह मुसलमान थे.....।" "मुहकमा मवेशियान में सर्किल सुपरिंटेंडेंट की एक नई जगह निकली, इस पर एक मुसलमान तक़र्रुर किया गया.....।" "गवर्नमेंट-प्रेस में हाल ही में ९३ आदमियों का तक़र्रुर हुआ, इसमें निस्फ़ से ज़्यादा मुसलमान थे।" इसी प्रकार उक्त पुस्तिका में अन्यान्य नौकरियों की भी तालिका दी गई है। पर समझने के लिये इतना पर्याप्त है। फिर आगे इस पुस्तिका में यह बतलाया गया है कि किस प्रकार कांग्रेस-सरकार ने हिंदुओं की धार्मिक, प्रेस और भाषण की स्वतंत्रता छीनकर "मुसलमानों के मज़हबी जज़्बात का एहतराम किया।" एक तरफ़ "अख़बारों या रिसालों में अगर कोई मज़मून इसलाम या पैग़ंबर इसलाम या अकाबिर इसलाम के ख़िलाफ़ ग़लती से किसी शख़्स की तरफ़ से शाया होता, तो हुकूमत इस पर फ़ौरन् काररवाई करती है। कुछ अरसा हुआ, एक हिंदू ने एक किताब इमाम-हसन व हुसैन की तारीख़ आगरा के एक मुस्लिम प्रेस से तबा कराकर शाया की। हुकूमत ने ताबे नाशिर और मुसन्निफ़ के ख़िलाफ़ फ़ौरन् काररवाई की, और किताब ज़ब्त कर दी गई। इलाहाबाद के एक हिंदी-अख़बार ने ख़ुदा और पैग़ंबर इसलाम की शान में कुछ गुस्ताख़ाना इबारत लिख दी। हुकूमत ने इस इशाअत को ज़ब्त-शुदा क़रार दिया, और एडीटर के ख़िलाफ़ भी काररवाई की गई।" दूसरी तरफ़ मुसलमानों के "एक अख़बार के किसी अख़बार के ख़िलाफ़ फ़िरक़ावाराना मुनाफ़रत फैलाने के जुर्म में कोई काररवाई नहीं की गई।" और भी "अक्सर मुसलमान मुक़र्ररीन जलसों में इंतिहाई इश्तयाल-अँगेज़ तक़रीरें करते रहते हैं, जिसमें हिंदुओं...की ज़ात पर निहायत नारवा और बेजा हमले होते हैं, और अवाम को तशद्दुद पर उभारा जाता है, मगर हुकूमत ने आज तक इन तक़रीरों की बिना पर किसी को गिरफ़्तार नहीं किया। इसके बरख़िलाफ़ एक हिंदू कांग्रेस-कारकुन बाबू केदारनाथ पर, जिन्होंने गोरखपुर में मुसलमानों के ख़िलाफ़ एक तक़रीर की थी, हुकूमत की हस्ब हिदायत दफ़ा १५३ (अलिफ़) मुक़दमा चलाया गया, और उन्हें एक साल क़ैद की सख़्त सज़ा हुई।" हिंदुओं के प्रेस और भाषण की स्वतंत्रता-अपहरण के प्रमाण इसी पुस्तिका से अन्य भी कितने उद्धृत किए जा सकते हैं। पर प्रेस और भाषण की स्वतंत्रता छीनकर ही कांग्रेस संतुष्ट नहीं हुई, हिंदुओं की धार्मिक स्वतंत्रता पर भी उसने निर्मम आघात किए। उक्त पुस्तिका में एलान किया गया है कि ".....कांग्रेसी हुकूमत के अहद में मुसलमानों पर किसी जगह कोई नई पाबंदी नहीं आयद की गई, बल्कि बाज़ मौक़ों पर जो पाबंदियाँ पहले से आयद थीं, वे भी हटा दी गईं। अलबत्ता बरअक्स इसके कई मुक़ामात ऐसे ज़रूर मिलेंगे, जहाँ मौजूदा हुकूमत ने हिंदुओं को मंदिरों में पूजा या आरती करने या शंख बजाने से रोक दिया है, उनके जुलूस पर किसी क़िस्म की पाबंदी लगा दी है। मसलन् बाराबंकी में मुहर्रम के दौरान में हुक्काम ने कई जगह शंख बजाना और कथा पढ़ना और होली में ख़ुद हिंदुओं पर रंग डालना ममनूअ क़रार दे दिया, जहाँगीराबाद में एक मंदिर कई रोज़ के लिये बंद करा दिया गया, बाँदा में मुहर्रम के दौरान में बग़ैर कप्तान पुलिस की ख़ास इजाज़त के हिंदुओं को शादी के जुलूस निकालने की इजाज़त नहीं दी गई, सीतापुर में मुहर्रम के दौरान में हिंदुओं के जलसे रोक दिए गए, और शंख या घड़ियाल या बाजा नहीं बजाने दिया गया.....। आनोला (ज़िला बरेली) में हिंदुओं पर कई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाबंदियाँ आयद की गईं, जिनमें एक यह भी थी कि हिंदू औरतें शादी के मौक़े पर ढोलक नहीं बजा सकती हैं। इन अहकाम की ४५ हिंदुओं ने ख़िलाफ़वरज़ी की, मगर हुकूमत ने बग़ैर किसी पशोपेश के उनको गिरफ़्तार करके सज़ाएँ दीं...।" लाहिराबाद गोरखपुर का एक मुहल्ला है। "इस मुहल्ले में सन् १९३६ ई० में गाय की क़ुरबानी हुकमन बंद कर दी गई थी" (कांग्रेस-सरकार के आने से पहले), पर कांग्रेस के शासन-काल में "अदालत से यह फ़ैसला हुआ कि मुसलमानों को इस मुहल्ले में गाय की क़ुरबानी का हक़ हासिल है।" इस प्रकार कांग्रेसी हुकूमत की ज़बान में ही मैंने कांग्रेस-हिंदू-संबंधों के कुछ प्रमाण प्रस्तुत किए हैं। हिंदू आँखें खोलकर देखें, कांग्रेस उनका बलिदान करके जिस स्वराज्य का विधान कर रही है, उसका पूर्व-रूप यह है।

यह कथा अकेले यू० पी० की है। प्रत्येक कांग्रेसी प्रांत में ऐसी नीति कांग्रेस-सरकार ने बरती। इसके अतिरिक्त मुसलमानों की प्रसन्नता के लिये कांग्रेस ने सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय गान 'वंदे मातरम्' को काँट-छाँट डाला, और धारा-सभाओं में तो उसका गाया जाना ही रोक दिया। जिस राष्ट्रीय झंडे की महत्ता और शान पर कांग्रेसी नेता मर मिटने की आन प्रदर्शित करते हैं, मुसलमानों के विरोध करने पर सार्वजनिक स्थानों में उसका फहराना बंद कर दिया गया। पर हिंदुओं पर स्वेच्छाचार सीमा तब लाँघ गया, जब राष्ट्र-भाषा के प्रकृत स्वरूप को भ्रष्ट कर मुसलमानों की प्रसन्नता के लिये एक नई भाषा हिंदुस्तानी गढ़ डाली गई, और हमारी 'भाषा' का सदियों से प्रचलित नाम भी, हिंदुओं का होने के कारण, हमसे छीन लिया गया। युक्त प्रांत और पंजाब के कुछ थोड़े-से मुसलमानों में प्रचलित उर्दू-लिपि को सार्वदेशिक नागरी-लिपि के समान स्थान प्रदान किया गया। मदरास की कांग्रेसी सरकार ने अपने प्रांत में हिंदुस्तानी पढ़ना अनिवार्य कर दिया, पर स्कूलों में हिंदुस्तानी की जो रीडरें प्रचलित कीं, उनमें उर्दू, फ़ारसी, अरबी के नितांत अप्रचलित शब्दों का समावेश किया गया, और हिंदी के सर्व-सुलभ शब्द भी या तो बहिष्कृत रहे, अथवा विकृत होकर प्रयोग में आए। बिहार-प्रांत में भाषा-संबंधी अत्याचार और भी बढ़ गया। बिहार पूर्ण रूप से हिंदी-प्रांत है, वहाँ ज़बरदस्ती उर्दू का प्रवेश अदालतों, स्कूलों, पाठ्य-पुस्तकों आदि में कराया गया, और वह भी हिंदी की हत्या करके। बिहार में हिंदी की कांग्रेस-कृत दुरवस्था तो एक स्वतंत्र लेख * में ही सम्यक् विवेचित हो सकती है। और, यह सब हुआ राष्ट्रीयता के कर्णधार कहे जानेवाले मुसलमान नेता राष्ट्र-पति मौलाना अबुलकलाम आज़ाद और डॉ० सैयद महमूद के हाथों। मैंने राष्ट्रीय मुसलमानों की देश-भक्ति की असलियत का उद्घाटन करने का कुछ प्रयत्न किया है। हिंदू अपनी संस्कृति के उन्मूलन के इन प्रयासों की ओर नज़र डालें।

ऊपर यू० पी०-सरकार के जिस पैंफ़लेट से उद्धरण दिए गए हैं, उसमें कांग्रेस-सरकार ने मुसलमानों की प्रतिनिधि और उनके हक़ों की संरक्षक होने का दावा किया है। "...यही नहीं कि मौजूदा हुकूमत सिर्फ़ ख़ुद ही मुसलमानों के जज़्बात मज़हबी का एहतराम करती है, बल्कि अगर हमारे सूबे के मुसलमानों को किसी दूसरी हुकूमत से किसी मज़हबी बिना पर कुछ ग़लतफ़हमी या शिकायत पैदा हो जाती है, तो कांग्रेस-हुकूमत इस सूबे के मुसलमानों की नुमायंदगी करती हुई दूसरे सूबों की हुकूमतों को

* इस संबंध में एक लेख पांडेय रामावतार शर्मा का सुधा की गत जुलाई, १९४० की संख्या में निकल चुका है।—सुधा-संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी इस तरफ़ तवज्जह दिलाती है।" इस तरह जहाँ कांग्रेस की एक सरकार अपने को मुसलमान-हितों की संरक्षक घोषित करती है, वहाँ दूसरी ओर हिंदुओं पर सर्वत्र बड़े-से-बड़े अत्याचार हुए, पर कांग्रेस ने विरोध में कभी एक आवाज़ नहीं उठाई। सन् ३९ में हिंदुओं ने अपनी धार्मिक, सामाजिक और नागरिक अधिकारों की प्राप्ति तथा रक्षा के लिये हैदराबाद में सत्याग्रह किया। निज़ाम-सरकार ने हिंदुओं का निष्ठुर दमन किया, और हिंदू-सत्याग्रहियों ने जेल में नारकीय यंत्रणाएँ भोगीं। पर राजकोट की प्रजा की अत्याचारों से रक्षा करने के लिये जान देने की धमकी देनेवाले महात्मा गांधी ने निज़ाम के अत्याचारों के विरुद्ध ज़बान तक नहीं खोली। देशी राज्यों में प्रजा की नागरिक स्वाधीनता की ठेकेदार कांग्रेस ने निज़ाम के इस दमन पर काग़ज़ी प्रस्ताव पास करके भी कोई आपत्ति नहीं की। इसी तरह सन् ३९ के दिसंबर में जब सिंध (सक्खर) में मंज़लगाद को सरकार ने मुसलमानों के हाथ से ले लिया, तो वहाँ के मुसलमानों ने हिंदुओं का निर्दय वध किया। दुधमुँहे बच्चे तक मुसलमानों की क्रूरता की बलि हुए, और हिंदू-स्त्रियों की जो दुर्दशा हुई, उसे लिखते नहीं बनता। उनका बलात् सतीत्व नष्ट किया गया, और फिर उनकी—विशेषतः जो गर्भवती थीं—हत्या कर दी गई। पर इस अवसर पर कांग्रेस ने, हिंदुओं की नुमायंदगी करते हुए भी, सिंध की हुकूमत की इस तरफ़ तवज्जह नहीं दिलाई। क्यों? आज हिंदू कांग्रेस से इसका जवाब चाहते हैं, क्योंकि उसकी ताक़त के पीछे एकमात्र उनकी क़ुर्बानियाँ हैं। पर कांग्रेस ने मुसलमानों के साथ यह उदारता बरतकर क्या पाया? यही कि कांग्रेस-मंत्रिमंडलों के इस्तीफ़ा देने पर मुसलमानों ने मुक्ति-दिवस मनाया, और जिन्ना साहब ने निमंत्रण पाकर उसे दुतकार दिया। ऐसे ही अनेक उदाहरण हैं। पर कांग्रेस ने अपना रवैया नहीं बदला, यद्यपि आजदिन कांग्रेस के नेता अपनी इस नीति के फल की कटुता का अनुभव करने लगे हैं। सरदार पटेल ने बंबई में २६ दिसंबर, सन् ३९ को कहा था—"मुस्लिम-लीग की स्थिति को समझाना बड़ा मुश्किल है। वह क्या चाहती है? कांग्रेस ने हर समय मित्रता का बर्ताव किया, परंतु हर बार उसे कोसा गया। यहाँ तक कि कांग्रेस ने अपने सम्माननीय नेता पं० मालवीय की बात भी नहीं मानी, और सांप्रदायिक निर्णय (Communal Award) को अस्वीकार नहीं किया।" पहली मई, सन् १९२५ को महात्मा गांधी ने हिंदू-मुसलमान-समस्या सुलझाने में अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए कहा था—"मैंने अयोग्यता स्वीकार कर ली है। मैंने स्वीकार कर लिया है कि इस रोग की ओषधि बतानेवाले वैद्य की विशेषता मुझमें नहीं है, मैं तो नहीं देखता कि हिंदू या मुसलमान मेरी ओषधि स्वीकार करने को तैयार हैं।" (कांग्रेस का इतिहास—डॉ० पट्टाभि सीतारमैया) खेद है, यह जानते हुए भी उस समय महात्मा गांधी ने अपने हिंदू-मुस्लिम-समझौते के प्रयत्न नहीं रोके। यदि तब भी महात्माजी और कांग्रेस उस ओर से अपना हाथ खींच लेते, तो आज न तो हिंदू-मुस्लिम-संबंध ही इतना बिगड़ता, और न देश में राष्ट्रीयता इस प्रकार संकट-ग्रस्त होती। अब तो प्रत्यक्ष ही कांग्रेस का नेतृत्व असफल हो चुका है, और इस समय देश और राष्ट्रीयता की रक्षा के लिये एक नवीन नेतृत्व, नवीन धर्म—क्षात्र धर्म—और एक नवीन, स्वस्थ राजनीतिक प्रगति की आवश्यकता है। इसका स्वरूप कैसा होगा, इसकी विवेचना आगे की जायगी *।

* माननीय लेखक की अप्रकाशित 'पाकिस्तान और क्षत्रिय' पुस्तक का एक अंश।—सुधा-संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राखी

[श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०]

(क)

रेशम का कोड़ा याक़ूत की नंगी पीठ पर पड़कर बोला—"सड़ाक् ! सड़ाक् !"

साथ ही रज़िया हँस पड़ी—"हीः हीः हीः हीः !"

दूसरी बार फिर कोड़ा एक बार हवा में घूमकर बोला—"सड़ाक् !"

रज़िया की हँसी फिर गूँज उठी—"हीः हीः हीः !"

याक़ूत आगे बढ़ा, रज़िया पीछे हटी । फिर वही—"हीः हीः हीः हीः !"

याक़ूत और भी पास पहुँच गया था । रज़िया ने कहा—"अच्छा भइ, देखो—एक बात बताओ याक़ूत !"

"पूछिए ।"

"मेरे कोड़े से—तुम्हें चोट भी लगी ?"

"उहुँः ।"

"दर्द भी हुआ ?"

"हूँ ।"

"पीठ में ?"

"नहीं ।"

"फिर कहाँ ?"

याक़ूत ने दोनो हाथ अपने सीने पर रख लिए, और मुस्कराने लगा ।

रज़िया बोली—"झूठे कहीं के ! चोट लगी नहीं, तो दर्द कहाँ से पैदा हो गया ?"

याक़ूत ने धीरे से जवाब दिया—"आप ही जानें ।"

"धुत् ! मैं क्या जानूँ ?"

"मल्कए-आलम सब कुछ जानती हैं ।"

"जानती होती, तो पूछती क्यों ?"

"इसकी वजह भी आप ही जानती हैं ।"

"और तुम याक़ूत ?"

"मैं ? मैं एक नाचीज़ ग़ुलाम !"

"ग़ुलाम ?"

"बेशक—मल्कए-आलम की मेहरबानी से जीनेवाला ।"

रज़िया उसकी तरफ़ देखकर मुस्कराई । याक़ूत बोला—"गुस्ताख़ी के लिये जाँबख़्शी की दरख़्वास्त कर सकता हूँ ?"

रज़िया के गालों पर हलकी-सी लाली दौड़ गई । उसने सिर नीचा कर लिया । चुपचाप चलती हुई वह पास खड़े हुए घोड़े के क़रीब जा पहुँची, और ज़ीन पर हाथ रखकर याक़ूत की तरफ़ देखा ।

आगे बढ़कर याक़ूत ने अपने दोनो हाथों का सहारा देकर रज़िया को घोड़े पर बिठा दिया, और झुककर सलाम किया ।

रेशम का कोड़ा रज़िया के हाथ में फिर घूमने लगा । घोड़े के एँड़ लगाई—घोड़ा हवा से बातें करने लगा ।

हब्शी ग़ुलाम याक़ूत घोड़े और रज़िया को देखता रहा, जब तक वे दोनो उसकी आँखों से ओझल न हो गए ।

आसमान पर झूमते हुए लाल-पीले बादलों की तरफ़ उसकी निगाह गई । उसने सोचा—इन्सान की उम्मीदें भी इसी तरह रंगीन हुआ करती हैं । उसने एक ठंडी साँस ली । वह चुपचाप एक ओर चल दिया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख)

"आपको जानना चाहिए मल्कए-आलम ! शरह की हर बात पर अमल करना मज़हब का क़ानून है।"

"और, काश कि उस बात से सल्तनत, रियाया, या बज़ाते-ख़ुद, मुझी को, नुक़सान पहुँच रहा हो ?"

अमीरख़ाँ ने अपनी दाढ़ी के चाँदी-जैसे बालों पर हाथ फेरते हुए जवाब दिया—"अंजाम और नतीजे का ख़याल छोड़कर मज़हबी बातों पर पूरे एतक़ाद और कोशिश के साथ अमल करना हरएक अहले-इस्लाम का फ़र्ज़ है।"

रज़िया कुछ सोचने लगी। अमीरख़ाँ की बात उसकी समझ में न आती थी। उसने कहा—"मगर ख़ुदा की क़ुदरत को भूल जाना किस मज़हब का क़ानून है ?"

"सुल्ताना ने शायद मेरे कहने का मतलब नहीं समझा। मैं यह कह रहा था कि इस्लाम पर ईमान लानेवालों में और दूसरों में जो फ़र्क़ है, उसे मद्देनज़र रखते हुए हमें अपनी तरक़्क़ी का रास्ता....."

बात काटकर रज़िया बोली—"फ़र्क़ कैसा ? इन्सान-इन्सान में फ़र्क़ मानना कोई मज़हब नहीं सिखाता। और, काश कि सिखाता हो, तो ऐसे मज़हब पर ईमान लाना सख़्त ग़लती करना है।"

अमीरख़ाँ ने रज़िया की बात सुनी। उसका चेहरा ग़ुस्से से सुर्ख़ हो गया। उसने अपने हाथ की तसबीह माथे से लगाते हुए जवाब दिया—"मल्कए-आली ! इस्लाम के उसूलों पर बहस करना हमारे-आपके दरमियान मुनासिब नहीं।"

"इसका मतलब यह है कि आपका मशविरा क़ुबूल करके ही मैं हुकूमत चला सकती हूँ ?"

"मैंने यह तो नहीं कहा।"

"फिर, आपके ख़यालात अगर मेरी समझ में हुकूमत के लिये ग़ैरमुनासिब हों, तो भी मुझे उन पर अमल करना होगा, यह आप कहना चाहते हैं ?"

"मैंने यह भी नहीं कहा।"

"क्यों ? मज़हब की आड़ लेकर आप हुकूमत की डोरियाँ खींचना चाहते हैं, और ज़िम्मेदारियों से बचते हुए ?"

"सुल्ताना ने ऐसा किसलिये ख़याल किया ?"

"क्योंकि सुल्ताना आप लोगों की सब चालें अच्छी तरह समझती है। सुल्ताना बख़ूबी जानती है कि उसके वफ़ादार कहलानेवाले अमीरोउमरा नमक के किस क़दर सच्चे हैं। सुल्ताना के ख़यालात को बदल देना ग़ैरमुमकिन है ख़ाँ साहब !"

अमीरख़ाँ की आँखों में एक अजीब रोशनी-सी आई, और ग़ायब हो गई। उसने अपने को बहुत सँभालते हुए कहा—"सल्तनत की ज़िम्मेदारियाँ अच्छी तरह समझते हुए भी मल्कए-आलम ने मज़हबी मसलों पर ग़ौर करने से इनकार कर दिया। मैं मल्कए-आलम को आगाह कर देना मुनासिब समझता हूँ कि शायद हुकूमत के वफ़ादार ग़ुलामों के दिलों में इस बात से नाइत्तिफ़ाक़ी और बदअमनी का ज़हर....."

बात काटकर रज़िया ने कहा—"ज़हर ? वह ज़हर उनकी मौत का बायस बनेगा ख़ाँ साहब ! रज़िया कोई मिट्टी का खिलौना नहीं, जो उसे आप लोग अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ जिधर चाहें ले जायँ। जाइए, तशरीफ़ ले जाइए, और हुकूमत के उन वफ़ादार कहलानेवाले नमकहरामों से कह दीजिए कि मल्कए-आलम को उनकी या उनके मशविरे की क़तई ज़रूरत नहीं।"

रज़िया उठ खड़ी हुई। उसने सिर ऊपर उठाया, और धीरे-धीरे चलकर खिड़की के क़रीब जा पहुँची। वह झाँककर बाहर बग़ीचे की तरफ़ देखने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमीरख़ाँ भी उठा—उसके पैर काँप रहे थे। वह भी चुपचाप—कुछ फ़ासले पर—रज़िया के पीछे आ खड़ा हुआ। उसने धीरे से कहा—उसका स्वर भारी हो रहा था—"मैं नहीं समझ सका कि मलकए-आलम के दिल में सल्तनत के जाँनिसार ग़ुलामों की जानिब से ऐसी बेमुरव्वती और ख़ामख़याली किस मरदूद ने पैदा कर दी।"

रज़िया चुप थी, मानो उसने सुना ही नहीं कुछ।

अमीरख़ाँ कहता गया—"मज़हब के दुश्मनों की तरफ़ से ग़ाफ़िल न रहना हुकूमत का फ़र्ज़ है। उसकी याददिहानी शायद मलकए-आलम को नागवार ख़ातिर न होगी।"

रज़िया ने घूमकर देखा। अमीरख़ाँ सिटपिटाकर पीछे हटते हुए बोला—"हुज़ूर के दुश्मनों की तबीयत कुछ नासाज़ नज़र आती है?"

"जी—आप अभी तक गए नहीं?"

"जी मलकए-आलम!"

"अच्छा—"

रज़िया ने आगे बढ़कर ताली बजाई—"कोई है?"

जवाब में चार ख़ोजे हाथों में नंगी तलवारें लिए अंदर दाख़िल हुए।

रज़िया ने कहा—"ख़ाँसाहब को बाहर....."

मगर तब तक अमीरख़ाँ जाने कैसे वहाँ से नौ दो ग्यारह हो चुके थे।

(ग)

चंदनसिंह ने सब कुछ सुना। सुनने के बाद उसने कहा—"बेटा! सुल्तान अल्तमश का मैंने नमक खाया है। राजपूत नमकहराम नहीं हुआ करता, इतना याद रखना। समय आने पर अपनी मलका के लिये प्राण दे देना भी तुम्हारा धर्म है।"

"मैं समझता हूँ बापू! सब कुछ समझता हूँ, लेकिन एक भी अमीर-उमरा ऐसा नहीं, जो सुल्ताना की हुकूमत मानने को तैयार हो। उस बदमाश अमीरख़ाँ ने सबको बाग़ी बना रक्खा है।"

"लेकिन तुम तो सब कुछ जानते हो? मल्का को आगाह कर दो, देखो बेटा! रज़िया और तुम हमजोली के हो, साथ खेले, साथ पढ़े, तुम उसके साथ दग़ा न करना। औरों की बात जाने दो, जो जैसा करेगा, वैसा फल पाएगा।"

सूरजसिंह सोचने लगा—बापू शायद यह नहीं जानते कि कहने और करने में बड़ा अंतर हुआ करता है। केवल सलाह-मशविरे से ही ऐसी-ऐसी समस्याएँ सुलझा नहीं करतीं।

कुछ ठहरकर वह बोला—"बापू! आप जानते हैं, मैं अकेला हूँ, और दुश्मन बहुतेरे?"

चंदनसिंह के सूखे हुए चेहरे पर हँसी आ गई। बेटे की पीठ पर हाथ फेरते हुए उसने कहा—"अरे पागल! सारे वन में सिंह एक ही हुआ करता है, गीदड़ हज़ारों होते हैं। तू मेरा बेटा है—मेरा—देख इधर।"

बूढ़े ने अपने कुर्ते के बंद खोलकर चौड़ी छाती सामने करते हुए कहा—"गिन ले—छाती पर पैंतीस घाव। देख, सुल्तान अल्तमश के साथ एक लड़ाई की यादगार अब भी बाक़ी है।"

सूरजसिंह ने आँखें फाड़-फाड़कर देखा—गिना। सचमुच बापू की छाती पर पैंतीस सूखे हुए घाव। उसकी आँखों में दृश्य घूमने लगा—उसका बापू जब जवान रहा होगा—सूखी हुई इस हड्डियों की ठठरी के बजाय लोहे-जैसा गठा हुआ शरीर। आधे मन वज़न की दोधारी तलवार लेकर बापू दुश्मनों के बीच में पिल पड़ता होगा। ओफ़्! उस समय बापू की बहादुरी देखने योग्य होगी। और, उसी बापू की तो संतान है वह। क्यों सूरजसिंह? सूरजसिंह का चेहरा लाल हो गया। भुजाएँ फड़कने लगीं। धमनियों में बिजली की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह रक्त का प्रवाह दौड़ने लगा। खड़े होकर सूरजसिंह ने म्यान से तलवार खींच ली। घुटने टेककर, बापू के पैरों पर तलवार रखकर सिर झुकाते हुए उसने कहा—"बापू! आशीर्वाद दीजिए—आपकी संतान आपके यश को धब्बा न लगा सके।"

बूढ़े चंदनसिंह की आँखों में आँसू भर आए। उसने सूरजसिंह को उठाकर छाती से लगाते हुए कहा—"बेटा! भगवान् एकलिंग की अभय छाया तुझ पर है, तेरी विजय होगी।"

सूरजसिंह ने तलवार म्यान में कर ली। खूँटी से अँगरखा और पगड़ी उतारकर वह पहनने लगा। इतने में हाथ में पूजा की थाली लिए उसकी मा ने कमरे में प्रवेश किया। सूरजसिंह देखने लगा उधर ही। मा ने आते ही कहा—"बड़ी जल्दी है आज तुझे? राखी तो बँधाता जा। आज रक्षा-बंधन है।"

सूरजसिंह ने उत्तर दिया—"राखी? तुम बाँधोगी मा?"

"हाँ, बहन का कर्तव्य भी मा को पालन करना पड़ता है बेटा! आज को बहन होती।"

"होती? है तो बहन।"

"कहाँ है बेटा?"

"वाह! तुम जानतीं भी नहीं मा? न मानो, तो बापू से पूछ देखो।"

चंदनसिंह ने पत्नी की ओर देखकर कहा—"ठीक तो कह रहा है, उसके बहन है, बहन के पास ही जा रहा था।"

गृहिणी की समझ में कुछ न आया। सूरजसिंह ने कहा—"मा! राखी मुझे दो, लेता जाऊँ; आज तो बहन से ही राखी बँधाऊँगा।"

मा ने पूछा—"लेकिन कौन है वह बहन? बता तो सही।"

"है, बस, इतना ही जान लो।"

"आज तक तो कभी बताया नहीं तूने?"

"झूठ कहती हो मा! तुम उसे जानती हो, अच्छी तरह जानती हो, बताने की ज़रूरत क्या।"

चंदनसिंह ने गृहिणी के आश्चर्य-चकित चेहरे की ओर देखकर कहा—"अरे भई! रज़िया है न अपनी, उसी से राखी बँधाएगा, हर्ज क्या है।"

गृहिणी ने चौंककर कहा—"रज़िया? मगर वह तो मुसलमान है?"

चंदनसिंह ने जवाब दिया—"तो क्या हुआ, मुसलमान भी तो हमीं-तुम-जैसे मनुष्य होते हैं। उनके भी हृदय होता है। सोचो ज़रा—उसका दिल कितना ख़ुश होगा, जब सूरज भाई बनकर उससे राखी बँधाएगा।"

कपड़े पहनकर सूरजसिंह ने मा के हाथ की थाली से राखी उठाकर जेब में रक्खी, और पैर छूकर बोला—"मा! आशीर्वाद दो, जाता हूँ बहन के पास राखी बँधाने।"

"तेरी लाख बरस की उमर हो बेटा!"

सूरजसिंह चल पड़ा। गृहिणी उसकी ओर एकटक देख रही थीं।

चंदनसिंह ने पास आकर कहा—"क्या समझीं? एक ही देश में, एक ही भूमि पर पैदा होकर, साथ रहकर जीने-मरनेवालों में धर्म का अंतर होते हुए भी व्यवहार का अंतर नहीं होना चाहिए। हमारा हिंदूपन दूसरों को अपनाने में है, त्यागने में नहीं।"

(घ)

लाश पर आख़िरी मर्तबा नज़र डालकर रज़िया ने मुँह फेरकर कहा—"ले जाओ इसे, दफ़ना दो।"

चार पहरेदार याक़ूत की लाश उठाकर ले चले। पीछे-पीछे दो-चार शाही मुसाहब और अमीर भी चले।

रज़िया घूम पड़ी। उसने पुकारा—"ख़ाँ साहब!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमीरख़ाँ लौट आया। पास आकर बोला—"क्या हुआ मल्कए-आलम ?"

रज़िया ने कहा—"याक़ूत की मौत का राज़ मैं जानती हूँ। मगर कह नहीं सकती। यह मेरी कमज़ोरी है, जिसे मैं ख़ुद महसूस कर रही हूँ। बेहतर होगा कि आप लोग इसके क़ातिल को ढूँढ़ निकालें, और उसे सख़्त-से-सख़्त सज़ा दें।"

अमीरख़ाँ के होठों पर मुस्कराहट की एक लहर आई, मगर उसने सँभाल लिया। उसने रज़िया की तरफ़ देखते हुए कहा—"दानिशमंद मल्का के ख़यालात की क़ीमत मैं बख़ूबी समझता हूँ, मगर याक़ूत का क़ातिल कौन है, इसे मैं क़तई नहीं जानता। पता लगाने की कोशिश करूँगा।"

"मगर आपकी कोशिश क्या होगी, इसे भी मैं जानती हूँ।"

"हुज़ूर का मक़सद ?"

"हाँ-हाँ, उसे ज़ाहिर न करना ही बेहतर है। हम लोग एक दूसरे को अच्छी तरह समझ गए हैं ख़ाँ साहब।"

"हुज़ूर के दुश्मनों ने हुज़ूर के दिल में मेरी जानिब से कैसी ज़हरीली....."

बात काटकर रज़िया ने कहा—"किसी बेगुनाह इन्सान के ख़ून से खेलना अच्छा नहीं हुआ करता ख़ाँ साहब ! ख़ुदा सब कुछ देखता है, सब कुछ जानता है, उसके इंतक़ाम से डरना चाहिए।"

अमीरख़ाँ चुपचाप सुनता रहा। फिर सलाम करके चला गया।

रज़िया कमरे की खिड़की पर जा खड़ी हुई। परदा उठाकर नीचे की तरफ़ देखा, याक़ूत का जनाज़ा निकल रहा था। रज़िया ने एक ठंडी साँस ली। उसकी आँखों में आँसू भर आए। किसी के पैरों की आहट पाकर उसने दुपट्टे के छोर से उन्हें पोंछ डाला। उसकी बाँदी मरियम थी। मरियम ने आते हुए कहा—"हुज़ूर ! सरदार सूरजसिंह—"

रज़िया ने जवाब दिया—"हाँ-हाँ, उन्हें बुला ला।"

थोड़ी देर बाद सूरजसिंह रज़िया के आरामगाह में दाख़िल हुआ। एक मसनद के सहारे बैठते हुए रज़िया ने कहा—"आइए, आज एक मुद्दत के बाद आप आए हैं भैया !"

सामने पड़ी हुई चौकी पर बैठते हुए सूरजसिंह ने जवाब दिया—"ख़ैरियत तो है बहन ? तुम्हारा चेहरा आज कुछ उतरा हुआ है, और आँखें भी लाल हो रही हैं। बात क्या है ?"

एक माँगी-सी मुस्कराहट आई, और आकर चली गई। रज़िया बोली—"कुछ भी नहीं भैया ! मुझ-जैसा बदनसीब शायद ही कोई दुनिया में होगा। आपसे कोई बात छिपी नहीं।"

"क्यों ? क्या कोई नया वाक़या पेश है ?"

"याक़ूत का ख़ून हो गया ! इसके अलावा कोई बात नहीं।"

"यहाँ तक दुश्मनों ने हिम्मत की ?"

"हाँ भाई ! मगर मैं यह न समझ सकी कि उस बेगुनाह के क़त्ल से लोगों को क्या हासिल हुआ ?"

"क्या हासिल हुआ ? बहन ! तुम बहुत भोली हो, जानती हो, तुम अगर एक मिट्टी के खिलौने को भी नेक नज़र से देखती हो, तो वह भी तुम्हारे दुश्मनों की तलवार का शिकार बन सकता है। बग़ावत की इस आग को जल्द-से-जल्द बुझाना होगा।"

"कैसे बुझा सकोगे भैया ?"

रज़िया की बात का कुछ जवाब न देकर सूरजसिंह ने रेशमी राखी उसके हाथ पर रख दी, और अपना दाहना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा—"आज हम लोगों का रक्षा-बंधन का त्योहार है। बहन अपने भाई के राखी बाँधती है। मैं भी अपनी बहन के पास राखी बँधाने आया हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह ! बड़ी ख़ुशी से—लाइए, मैं ज़रूर आपके राखी बाँधूगी भैया ! मैं अपनी ख़ुश-क़िस्मती समझती हूँ, जो आपने यह हक़ मुझे आज दिया।"

दोनो उठ खड़े हुए। रज़िया ने राखी बाँध दी। सूरजसिंह ने कहा—"बहन ! याद रखना। भाई का यह नाता तुम्हारे साथ ताज़िंदगी निभाऊँगा। तुमसे सिर्फ़ इतना ही चाहता हूँ कि एक सूरजसिंह ही नहीं, तुम्हारी रियाया का हर-एक राजपूत तुम्हारा भाई है, उसे भाई ही समझना।"

रज़िया ने जवाब दिया—"बेशक, रज़िया की हुकूमत में हिंदू-मुसलमान का फ़र्क़ हमेशा के लिये मिट जायगा। मैं वायदा करती हूँ भैया ! क़ौल देती हूँ इस बात का।"

"तो फिर रज़िया ! मैं तुम्हें यक़ीन दिलाता हूँ कि हिंदुओं की हमदर्दी एक मर्तबा हासिल कर लेने के बाद तुम्हारे दुश्मनों की ताक़त कुछ भी न रह जायगी। रज़िया ! सोने का वह हिंदुस्तान होगा, जब मंदिर में आरती के वक़्त घंटे की आवाज़ के साथ-साथ मस्जिद में अज़ान सुनाई पड़ेगी। हिंदू और मुसलमान आपस की नाइत्ति-फ़ाक़ी भूलकर भाई-भाई की तरह गले मिलेंगे। एक दिल, एक आवाज़ के साथ प्यार से कहेंगे—'हिंदुस्तान हमारा !' उस वक़्त क्या तुम्हें ख़ुशी न होगी ?"

रज़िया की आँखों में आँसू आ गए। उसने सूरजसिंह के आगे घुटने टेककर दोनो हाथ फैलाते हुए कहा—"भैया ! यह सुनहला ख़्वाब क्या सच्चा हो सकेगा कभी ?"

(ङ)

दूसरे रोज़ दरबार में—

समय से कुछ पहले ही सब मुसाहब, अमीर-उमरा आ डटे थे। क़ाज़ी साहब ने क़ुरान खोलकर एक आयत सुनाते हुए कहा—"औरत की हुकूमत क़ुबूल करने की इजाज़त शरह में भी नहीं। मुझे ताज्जुब है कि अब तक आप लोग ख़ामोश क्यों बैठे रहे !"

किसी ने उठकर जवाब दिया—"उस ख़ामोशी का ख़ात्मा होने का वक़्त अब क़रीब आ गया है क़ाज़ी साहब !"

अमीरख़ाँ ने कहा—"मल्का की ज़्यादती बरदाश्त करने की अब कोई ज़रूरत नहीं। आज सरे दरबार उनके आगे हमें अपना इरादा ज़ाहिर कर देना चाहिए, और उन्हें मजबूर करना चाहिए कि वह तख़्त छोड़ दें।"

क़ाज़ी साहब ने कहा—"बेशक, अब डरने से काम न चलेगा। अगर मल्का ने हमारी तजवीज़ न मानी, तो हमें बग़ावत....."

क़ाज़ी साहब के मुँह की बात मुँह में रह गई। चोर-दरवाज़ा खुला, और रज़िया ने चार अंग-रक्षकों के साथ दरबार में प्रवेश किया।

भरे दरबार में सन्नाटा छा गया। रज़िया ने तख़्त पर बैठते हुए कहा—"सब्र की भी एक हद होती है। आप सब लोग सल्तनत के ख़ैरख़्वाह और तख़्त के वफ़ादार कहलाते हैं। क्या यही आपकी ख़ैरख़्वाही और वफ़ादारी का सुबूत है ? बग़ावत की पोशीदा तैयारियाँ मुझसे पोशीदा नहीं रक्खी जा सकीं। मैं सब कुछ जानती हूँ, और अब आख़िरी मर्तबा आपसे पूछना चाहती हूँ कि वालिद मरहूम की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कौन ज़बान खोलना चाहता है ?"

सब ख़ामोश थे। अमीरख़ाँ ने कहा—"मल्कए-आलम के इस सवाल का जवाब मैं देता हूँ। हम सब लोग आपस में मशविरा कर चुके हैं कि मल्कए-आलम की हुकूमत में मज़हब की तौहीन, रियाया में बदअमनी और नाइत्तिफ़ाक़ी बढ़ रही है। ऐसी हालत में बेहतर होगा कि मल्कए-आलम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने हाथों से शाहज़ादे महबूब की ताजपोशी करने के बाद सल्तनत के इंतिज़ाम से अपना हाथ खींच लें।"

रज़िया का चेहरा क्रोध से लाल हो गया। उसने अपने चारो तरफ़ एक मर्तबा निगाह डाली। अमीर-उमरा और सरदार लोग सिर नीचा किए चुपचाप बैठे थे। रज़िया ने कहा—"हो सकता है, सल्तनत की बेहतरी के ख़याल से आप लोगों ने ऐसा मशविरा किया है। मगर इतना याद रखिए, आप लोगों ने तख़्तनशीनी के लिये शाहज़ादे महबूब को चुनने के बाद मेरे ख़िलाफ़ बहुत कुछ कर डाला है। दूसरे अलफ़ाज़ में मैं उसे बग़ावत कह सकती हूँ।"

इस बार क़ाज़ी साहब उठ खड़े हुए। कोर्निश के बाद उन्होंने कहा—"सुल्ताना का ऐसा ख़याल करना सख़्त ग़लती है। सल्तनत के ख़ैरख़्वाह सुल्ताना के बजाय शाहज़ादे महबूब को अपना बादशाह क़रार देना चाहते हैं। क्या वह सुल्ताना का सगा भाई नहीं? वतन के लिये क्या सुल्ताना इतनी क़ुर्बानी नहीं कर सकतीं? दरबार का फ़ैसला सुल्ताना को क़ुबूल करना होगा।"

रज़िया उठ खड़ी हुई। उसने कड़ककर कहा—"बस, ज़ुबान बंद कीजिए क़ाज़ी साहब! सल्तनत के मामलों का फ़ैसला बादशाह के हाथों हुआ करता है। मैं दरबार का फ़ैसला मानने को तैयार नहीं। यही मेरा जवाब है।"

अमीरख़ाँ बोल उठा—"मल्कए-आलम सरासर ग़लती कर रही हैं। उन्हें पछताना पड़ेगा।"

"आपकी बला से—मैं अपनी ताक़त तोल चुकी हूँ, और मौजूदा बग़ावत की तैयारी रद कर देने के लिये मेरे पास माक़ूल इंतज़ाम है।"

रज़िया की बात ख़त्म होने के पहले ही शाहज़ादे महबूब ने दरबार में क़दम रक्खा।

"शाहज़ादा ज़िंदाबाद! शाहज़ादा ज़िंदाबाद!" चारो तरफ़ से यही नारे लगने लगे।

महबूब दरबार में आकर, अकड़कर खड़ा रहा। रज़िया ने उसकी तरफ़ देखकर कहा—"तहज़ीब की परछाईं से भी दूर रहनेवाला यही हैवान आप लोगों का बादशाह बनेगा, क्यों ख़ाँ साहब?"

उसने अमीरख़ाँ की तरफ़ देखा। फिर हुक्म दिया—"महबूब! मल्का के रूबरू बेअदबी से पेश आने के जुर्म में तुम गिरफ़्तार किए जाते हो। कुछ रोज़ क़ैदख़ाने में रहकर तहज़ीब सीखने की कोशिश करना, तब शायद बादशाहत के क़ाबिल बन सको।"

फ़ौरन् ही चार सिपाहियों ने आगे बढ़कर शाहज़ादे को क़ैद करना चाहा, मगर पलक मारते ही सैकड़ों नंगी तलवारें नाच उठीं। सिपाही पीछे हट गए।

"शाह महबूब ज़िंदाबाद! शाह महबूब ज़िंदाबाद!" फिर यही आवाज़ गूँज उठी। महबूब को साथ लेकर दरबार के अमीर-उमरा चल दिए। रज़िया तख़्त के पायदान पर तलवार टेके खड़ी देखती रही। बग़ावत के नाटक का पहला दृश्य उसकी आँखों के आगे आया, और चला गया। आग सुलग चुकी थी। उसे बुझाना ज़रूरी था। रज़िया ने आठ-दस घुड़सवार सिपाहियों को साथ लिया, और बाहर निकली। रास्ते में वही जुलूस जा रहा था। उसी रोज़ ग़ुस्से से काँपती हुई रज़िया ने एक नए फ़रमान पर दस्तख़त कर दिए। दूसरे ही दिन सवेरे-ही-सवेरे शहर की चौमुहानी पर लगभग चार सौ बाग़ियों की लाशें फाँसी पर लटकती हुई दिखाई दे रही थीं। सिर्फ़ अमीरख़ाँ जाने कैसे बच गया!

(च)

और फिर—

बग़ावत ने ज़ोर पकड़ा। रज़िया के भाग्य ने उसका साथ न दिया। बाग़ियों का बड़ी दिलेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से मुक़ाबिला करने पर भी उसे हारना पड़ा। तख़्तोताज का मोह छोड़कर वह भागी—अपनी प्राण-रक्षा के लिये। साथ में—स्नेह के बंधन में बँधा हुआ सूरजसिंह अपने दस चुने हुए राजपूत सिपाहियों के साथ रज़िया की रक्षा कर रहा था।

आगरे की सड़क पर दोपहर की जलती हुई धूप में रज़िया ने कहा—"भैया! बड़ी प्यास लग रही है, कहीं पानी मिलेगा?"

सूरजसिंह ने इधर-उधर देखा—मीलों तक बस्ती का नामोनिशान नहीं। उसने रज़िया की ओर आँखें उठाईं—फूल-सा चेहरा धूप में कुम्हला गया था। होठ सूख रहे थे। माथे पर पसीने की बड़ी-बड़ी बूँदें मोती-जैसी झलक रही थीं।

सूरजसिंह सोचने लगा—बुरा वक़्त क्या इसी को कहते हैं? दिल्ली की सम्राज्ञी को घूँट-भर पानी नहीं मिल सकता? सूरजसिंह पानी की तलाश में चल पड़ा। बरगद के वृक्ष के नीचे राजपूत सिपाही और रज़िया अपने घोड़ों से उतरकर जा खड़े हुए।

थोड़ी देर बाद—

सामने से धूल उड़ती हुई दिखाई दी। साथ ही घोड़ों की टापों की आवाज़ भी नज़दीक आने लगी। रज़िया के मुँह से निकला—"दुश्मन।"

दस तलवारें म्यानों से बाहर निकल आईं। आन के पक्के राजपूत आश्रिता की प्राण-रक्षा के लिये तैयार खड़े थे। देखते-देखते लगभग पाँच-छ सौ मुसलमानों ने आकर उन्हें घेर लिया। बात-की-बात में तलवार चल गई। एक-एक राजपूत सैकड़ों शत्रुओं पर भारी हो रहा था। लाशों के ढेर लग गए। मगर ईश्वर कही जानेवाली उस महान् शक्ति का निर्णय कुछ और ही था। दसो राजपूत एक-एक करके लड़ाई में काम आ गए। रज़िया अकेली दुश्मनों का मुक़ाबिला कर रही थी। मुसलमानों के सरदार अलतूनिया ने उसके सामने आकर कहा—"बस, हाथ रोक लीजिए मल्कए-आलम!"

जवाब में रज़िया के हाथ की तलवार अलतूनिया के सिर पर गिरने चली, लेकिन बिजली की तेज़ी से अलतूनिया ने घोड़े की बाग मोड़ दी। तलवार उसकी पगड़ी को गिराकर फिर एक बार हवा में ऊँची उठी। पलक मारते ही एक सिपाही ने पीछे से जाकर रज़िया के दोनो हाथ पकड़ लिए।

रज़िया क़ैद कर ली गई। अलतूनिया के सिपाही उसे लेकर चल पड़े।

रास्ते में—

अलतूनिया ने कहा—"मल्कए-आलम! आप तलवार भी चला सकती हैं, इसका मुझे इल्म न था।"

रज़िया के हाथ बँधे थे।

बेबसी से चीख़कर उसने जवाब दिया—"नमकहराम नौकरों को ख़तावार होने पर ही मेरी तलवार का मज़ा चखना पड़ता है। खोल दे मेरे हाथ, और फिर देख मेरी तलवार के जौहर।"

अलतूनिया हँस पड़ा। उसने कहा—"उसकी ज़रूरत नहीं, क़ैदी की मर्ज़ी की कोई क़ीमत नहीं हुआ करती।"

रज़िया ने एक बार घूरकर उसकी तरफ़ देखा—अलतूनिया ने सिर नीचा कर लिया।

रज़िया कुछ सोचने लगी, और सूरजसिंह जब पानी लेकर वापस आया, तब—तब रज़िया का कहीं पता न था! केवल उसके साथी दस राजपूतों की लाशें बीती हुई घटना का समाचार सुना रही थीं।

(छ)

ख़ीमे के दरवाज़े पर—

आगंतुक को रोकते हुए प्रहरी ने कहा—"क्या चाहते हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगंतुक ने जवाब दिया—"सरदार से मुलाक़ात।"

"नहीं हो सकती।"

"क्यों?"

"उन्हें फ़ुरसत नहीं।"

"मगर मुझे उनसे मिलना ज़रूरी है।"

"क्या ख़बर लाए हो?"

"हाँ।"

प्रहरी ने आगंतुक की ओर ध्यान से देखा—शलवार, लंबा कुर्ता, कमर में फेंटा, मख़मली वास्कट, सिर पर भारी साफ़ा, घनी दाढ़ी, लंबा-तड़ंगा जवान दिखाई देता था।

प्रहरी बोला—"ख़ुफ़िया निशान?"

आगंतुक चुप था। दूसरे ही क्षण कुछ सोचकर उसने जवाब दिया—"मैं अपना वक़्त ख़राब नहीं कर सकता, मुझे सरदार से मिलना ज़रूरी है। उन्हीं के काम से मैं दिल्ली से आया हूँ। अगर तुम उन्हें इत्तिला नहीं दे सकते, तो मैं चला, मगर याद रखना, इसकी जवाबदेही तुम्हारे सिर होगी।"

आगंतुक चलने लगा। प्रहरी उसकी बातों से कुछ डरकर बोला—"सुनो तो?"

आगंतुक ठहर गया।

प्रहरी अंदर गया, और फिर वापस आकर बोला—"जाओ, सरदार बुला रहे हैं।"

आगंतुक ने ख़ीमे के अंदर जाकर अपने को सरदार अलतूनिया के सामने पाया। उसके सलाम का जवाब देकर अलतूनिया ने कहा—"दिल्ली से क्या ख़बर लाए हो?"

आगंतुक ने कहा—"शाह महबूब का पैग़ाम, क्या आप सुनना चाहते हैं?"

अलतूनिया ने सिर हिलाया। आगंतुक बोला—"सुल्ताना की गिरफ़्तारी से शाह महबूब बहुत ख़ुश हैं, और उन्होंने आपको जल्द-से-जल्द दिल्ली तशरीफ़ लाने की हिदायत की है।"

हुक़्क़े की नली मुँह से हटाते हुए अलतूनिया ने कहा—"हिदायत की है? क्यों?"

"मैं नहीं जानता, शाह की मर्ज़ी।"

अलतूनिया की भौंहें चढ़ गईं। उसने फिर कहा—"सुल्ताना मेरी क़ैद में है, मगर शाह महबूब को उससे क्या सरोकार? मैं उनका हुक्म मानने को तैयार नहीं, और न वह मुझे मजबूर ही कर सकते हैं।"

"इसी ख़याल से शाही फ़रमान आपकी ख़िदमत में नहीं भेजा गया। शाह महबूब आपको अपना दोस्त और हमदर्द समझते हैं। आपको उनकी बात मानकर दिल्ली तशरीफ़ ले जाना ही मुनासिब है।"

"हूँ।"

अलतूनिया किसी गहरे विचार में पड़ गया।

थोड़ी देर बाद उसने पूछा—"क्या नाम है तुम्हारा?"

"करीमख़ाँ।"

"अच्छा, करीमख़ाँ! तुम शाह महबूब से इत्तिला कर देना कि मैं लाहौर जा रहा हूँ। वह चाहें, तो मुझसे वहीं मुलाक़ात हो सकेगी। मेरा दिल्ली जाना नामुमकिन है।"

करीमख़ाँ ने सलाम किया, और ख़ीमे से बाहर निकल आया।

दाहनी तरफ़ रास्ते के किनारे एक दूसरा ख़ीमा लगा हुआ था, जिसके चारो तरफ़ चार सिपाही घूम-घूमकर पहरा दे रहे थे।

करीमख़ाँ ने प्रहरी से पूछा—"उस ख़ीमे में कौन है?"

प्रहरी ने जवाब दिया—"एक क़ैदी।"

"कौन?"

"सुल्ताना रज़िया।"

"रज़िया बेगम?"

"हाँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करीमख़ाँ कुछ सोचने लगा। उसने कमर के फेंटे में हाथ डाला, और चार मुहरें निकालकर प्रहरी के हाथ पर रखकर बोला—"अच्छा, मैं अब जाता हूँ, यह है तुम्हारा इनाम।"

प्रहरी ने झुककर सलाम किया।

करीमख़ाँ एक ओर चल दिया।

लगभग बीस क़दम पर आम का एक घना दरख़्त था, उसके नीचे बैठकर करीमख़ाँ कुछ सोचने लगा। धीरे-धीरे उसकी आँखें बंद होने लगीं। पेड़ के तने के सहारे वह लेट गया। ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी।

(ज)

"ख़रीद सकता हूँ—पैसे से, ताक़त से और ज़बरदस्ती भी, ज़रूरत पड़ने पर।"

"ग़लत बात।"

"ग़लत को भी सही बनाना मेरे लिये मुमकिन है।"

"मगर ऐसा सौदा बहुत महँगा पड़ता है अलतूनिया!"

"पसंद आने पर महँगे-सस्ते का ख़याल करना हिमाक़त है।"

"तो तुम्हारा मतलब यह है कि तुम्हारी पसंद के मुताबिक़ हर चीज़ की क़ीमत भी हो सकती है?"

"बेशक।"

रज़िया हँस पड़ी। उसने कहा—"कितने भोले हो तुम अलतूनिया! मुझे ताज्जुब है कि तुम फ़ौजी सरदार कैसे बन गए! तुम्हें तो सौदागर होना चाहिए था।"

"लड़ाई भी तो एक सौदा ही है रज़िया! क़िस्मत, हिम्मत और फ़तह का सौदा जान के साथ किया जाता है। इन्सान की ज़िंदगी भी एक रोज़गार है। दुनिया के बाज़ार में हर रोज़ कितनी मर्तबा हम अपने को ख़रीद-फ़रोख़्त करते हैं। हर-एक साँस के साथ इन्सान अपना मोल करता है, मगर वह यह भूल जाता है कि उसका आख़िरी ख़रीदार मौत है।"

रज़िया ने मुस्कराते हुए जवाब दिया—"ओहो! सूफ़ी फ़क़ीरों की-सी बातें भी तुम ख़ूब बना सकते हो अलतूनिया!"

अलतूनिया के चेहरे पर गंभीरता छा रही थी। उसने कहा—"सुल्ताना! दुनिया के इस पहलू को मैंने ख़ूब समझ लिया है। मगर मैं भी इन्सान हूँ। मेरी भी कमज़ोरियाँ हैं। हविस का तूफ़ान उठने पर मैं अपने को भूल जाता हूँ। मेरा रास्ता बदल जाया करता है। मैं भी गुनहगार हूँ, मगर उतना नहीं, जितना दुनिया के दूसरे लोग। मैं अपने गुनाहों को जानता हूँ, क़ुबूल करता हूँ, और उस पाक परवरदिगार की रहमत पर एतक़ाद होने की वजह से मुझे किसी का ख़ौफ़ नहीं।"

रज़िया अपनी जगह से उठी, और धीरे-धीरे चलती हुई आकर सामने की चौकी पर बैठ गई। अलतूनिया की आँखें उसकी ओर उठ गईं। रज़िया ने देखा—अलतूनिया की आँखों में आँसू छलक रहे थे। रज़िया ने अपना अवसर पहचान लिया। वह बोली—"अलतूनिया! मैं समझ गई, तुम अज़ीमुश्शान हो, किसी फ़रिश्ते से कम नहीं, मुझे मुआफ़ करना।" रज़िया ने सिर नीचा कर लिया।

अलतूनिया के हृदय में धीरे-धीरे उभरती हुई भावुकता की नदी बाँध तोड़कर बह चली। वह बोला—"सुल्ताना! यह ज़रूर है कि तुम मेरी क़ैद में हो, मगर क्या तुमने अपने को क़ैदी समझ पाया है? तख़्ते-दिल्ली की मल्का की इज़्ज़त का माक़ूल इंतज़ाम क्या मैंने नहीं किया है? मेरी तहज़ीब, मेरा ईमान, मेरा मज़हब, सब कुछ इन्सान को इन्सान मानने में है।"

रज़िया कुछ सोचने लगी। अलतूनिया की बात का जवाब न देकर वह उठी, और सामने रक्खे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख़ासदान से पान का बीड़ा निकालकर उसके सामने बढ़ाया। अलतूनिया ने पान लेकर कहा—"शुक्रिया !"

रज़िया बोली—"अलतूनिया ! मुझे अफ़सोस है कि क़िस्मत ने मेरे सारे अरमानों पर ख़ाक डाल दी। मेरी ज़िंदगी अब तुम्हारे हाथ में है, और तुम शायद मुझे शाह महबूब के हाथों में सौंप देने की तैयारी कर चुके होगे। हम लोग एक दूसरे के दुश्मन होते हुए भी ऐसे वक़्त पर दोस्त बने, जब कि ज़माने की गर्दिश ने हमारी दुनिया को हमसे जुदा करने का फ़ैसला कर डाला है।"

रज़िया ने एक ठंडी साँस लेकर अलतूनिया की तरफ़ जवाब पाने की आशा से आँखें उठाईं।

कमान से छूटा हुआ तीर निशाने पर ठीक-ठीक लगा है या नहीं, रज़िया यही देखना चाहती थी। अलतूनिया ने जवाब दिया—"सुल्ताना ! तुम्हारा ख़याल ग़लत है। शाह महबूब के हाथों में सौंपने के इरादे से मैंने तुम्हें क़ैद नहीं किया। तुम अपनी आज़ादी चाहती हो ?"

"हरएक क़ैदी की दिली ख़्वाहिश यही होती है, मगर उसकी क़ीमत ही क्या ?"

"मुझसे पूछो रज़िया ! मैं कम-से-कम तुम्हारी आज़ादी की क़ीमत बता सकता हूँ, क्योंकि मैं पहले ही कह चुका हूँ कि दुनिया की हर चीज़ का सौदा हुआ करता है। मैं भी तुम्हारी आज़ादी तुम्हें बेच सकता हूँ, अगर तुम उसे ख़रीदना चाहो, तो।"

रज़िया ने कहा—"क्या क़ीमत चाहते हो तुम ?"

अलतूनिया उठ खड़ा हुआ। थोड़ी देर टहलता रहा, फिर बोला—"सुल्ताना ! दिल्ली का तख़्त भी तुम फिर हासिल कर सकती हो, तुम्हारी आज़ादी के साथ-साथ वह भी तुम्हें मेरी तरफ़ से सौग़ात की शक्ल में मिलेगा।"

रज़िया की उत्कंठा बढ़ती जा रही थी। उसने पूछा—"क्या मैं पूछ सकती हूँ कि तुम्हारी इस कोशिश का एवज़ चुकाने के लिये मुझे क्या करना होगा ?"

"क्या कर सकोगी तुम ? तुम्हीं इसका फ़ैसला कर लो। अलतूनिया की ज़िंदगी का आख़िरी सौदा यही होगा रज़िया !"

"तुम्हारा मक़सद मैं अब भी नहीं समझ सकी।"

अलतूनिया के होठों पर मुस्कराहट खेल रही थी। पास आकर उसने रज़िया के दोनो हाथ अपने हाथों में लेकर कहा—"तुम्हारी आज़ादी और दिल्ली का तख़्त, दोनो तुम्हें दे सकूँगा रज़िया ! मगर उसका एवज़ क्या होगा—मेरी आँखों में देखो, और दिल के अरमानों का अक्स पहचानने की कोशिश करो। हम-तुम क्या कभी इतने क़रीब आ सकते हैं ? बोलो रज़िया !" रज़िया के गालों पर हल्की-सी लाली छा गई। उसने आँखें नीची कर लीं।

(झ)

उस रात के सन्नाटे में जब घिरते हुए बादलों का अँधेरा संसार की हर चीज़ को अपने में छिपा लेना चाहता था—शाह महबूब और उसके सिपाही भूखे भेड़ियों की तरह सरदार अलतूनिया के फ़ौजी पड़ाव की तरफ़ बढ़े चले आ रहे थे। उनके आगे-आगे करीमख़ाँ रास्ता बताता हुआ चल रहा था।

अचानक वह रुक गया। शाह की तरफ़ घूमकर उसने कहा—"आलीजाह ! एक अर्ज़ है मेरी।"

शाह ने जवाब दिया—"बोलो।"

"मेरा इनाम क्या होगा ? एक वफ़ादार रियाया का हक़ मुझे मिलना ही चाहिए।"

कुछ सोचते हुए शाह ने कहा—"करीमख़ाँ ! काश कि मैं अलतूनिया को गिरफ़्तार कर सका,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो तुम्हें भरपूर इनाम दूँगा। तुम्हें ख़ुश कर दूँगा।"

"वायदा करते हैं आलीजाह ?"

"वायदा करता हूँ।"

करीमख़ाँ ने घोड़ा आगे बढ़ाया। बात-की-बात में शाह की फ़ौज ने अलतूनिया के पड़ाव पर छापा मारा। तलवारें चलने लगीं, और करीमख़ाँ नंगी तलवार हाथ में लिए रज़िया के ख़ीमे की तरफ़ बढ़ा। दाख़िल होते ही किसी ने उसे सामने से धक्का दिया। करीमख़ाँ सँभल गया। उसने देखा—अलतूनिया उस पर फिर वार कर रहा था। करीमख़ाँ पीछे हटने लगा। अलतूनिया ने उसका गला पकड़ते हुए कहा—"दोज़ख़ी कुत्ते! लेता जा मुख़बिरी का इनाम।"

करीमख़ाँ ने अपने को छुड़ाने की कोशिश की। अलतूनिया का हाथ ढीला पड़ा। एक झटके के साथ करीमख़ाँ पीछे हटा, मगर उसकी दाढ़ी के सारे बाल अलतूनिया के हाथ में आ गए। साथ ही दौड़कर आती हुई रज़िया चीख़ उठी—"भैया! तुम ?"

अलतूनिया ने हाथ रोक लिया, और रज़िया की तरफ़ देखा। रज़िया बोली—"सरदार! मेरे भाई सूरजसिंह—तुमने इन्हें पहचाना नहीं ?"

सूरजसिंह सोच रहा था कि अलतूनिया से रज़िया को इतनी हमदर्दी कैसे ? अलतूनिया एक राजपूत को रज़िया का भाई क़ुबूल करने में हिचक रहा था।

रज़िया ने फिर कहा—"अलतूनिया! यह मेरे धरम के भाई हैं, तुम्हारे दुश्मन नहीं।" मंत्र-मुग्ध की भाँति अलतूनिया ने अपना दाहना हाथ आगे बढ़ाया। सूरजसिंह ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा—"सरदार अलतूनिया! मुबारक!"

दोनो गले मिले।

मार-काट का शोर-ग़ुल चारो तरफ़ बढ़ रहा था।

दोनो ने बाहर निकलकर देखा—अलतूनिया की फ़ौज हार रही थी। लाशों के ढेर लग गए थे। देर करने का वक़्त न था। अलतूनिया ने हुक्म दिया—तीन घोड़े लाए गए। रज़िया, सूरजसिंह और अलतूनिया घोड़ों पर सवार होकर एक तरफ़ भाग चले। मगर आगे बढ़ने पर शाह महबूब की फ़ौज ने उनका रास्ता रोका। सूरजसिंह ने कहा—"सरदार अलतूनिया! मैंने बड़ी सख़्त ग़लती की है। इस आफ़त को लाने की ज़िम्मेदारी मुझ पर है। मुझे माफ़ करना। मैं न जानता था कि आप रज़िया के हमदर्द और मददगार हैं।"

अलतूनिया ने मुस्कराकर जवाब दिया—"नौजवाँ! ख़ुदा की मर्ज़ी को इन्सान नहीं रोक सकता। मेरी बदनसीबी ने तुम्हें इस मुसीबत का महज़ एक ज़रिया बना दिया। अफ़सोस है, मैं सुल्ताना को दिल्ली के तख़्त पर न बिठा सका।"

शाह महबूब के सिपाही और भी नज़दीक आ गए। सूरजसिंह ने देखा, अमीरख़ाँ सामने चला आ रहा था। अलतूनिया को संकेत करके सूरजसिंह ने बतलाया—"यही है वह कमबख़्त, जिसने सुल्ताना की हुकूमत में बग़ावत का बीज बोया था।"

बात-की-बात में अलतूनिया ने अमीरख़ाँ पर हमला कर दिया। सूरजसिंह और रज़िया उसके दाएँ-बाएँ लड़ने लगे। एक सिपाही ने पीछे से आकर रज़िया पर तलवार चलाई। अलतूनिया ने देख लिया। लपककर उसने उस सिपाही के दो टुकड़े कर दिए। मगर मौक़ा पाकर अमीरख़ाँ की तलवार अलतूनिया की पीठ में दस्ते तक घुस गई।

गिरते-गिरते अलतूनिया चिल्ला उठा—"सुल्ताना! ख़ुदा हाफ़िज़! सूरजसिंह! सुल्ताना का ख़याल....." अलतूनिया कुछ न बोल सका। उसकी लाश को रौंदते हुए सिपाही आगे बढ़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रज़िया और सूरजसिंह पीछे हटकर लड़ने लगे। मगर कब तक? सैकड़ों दुश्मनों के आगे चारा ही क्या। एक सिपाही का भाला रज़िया के दाहने कंधे से पार हो गया। वह घोड़े से नीचे गिरने लगी। अमीरख़ाँ दौड़ा, और चिल्लाया—'ज़िंदा गिरफ़्तार कर लो, सुल्ताना को पकड़ लो!" सूरजसिंह घोड़े से कूदकर रज़िया के पास जा पहुँचा। अमीरख़ाँ रज़िया को उठा रहा था। जाते-ही-जाते सूरजसिंह ने अपनी तलवार का एक हाथ ऐसा मारा कि अमीरख़ाँ का सिर कटकर दूर जा गिरा। सूरजसिंह ने रज़िया को उठाकर कंधे पर रख लिया, और फिर लड़ने लगा।

एकबारगी अल्लाहोअकबर के नारे लगे, और सैकड़ों सिपाही सूरजसिंह पर टूट पड़े। सूरजसिंह ने अपने घोड़े के क़रीब पहुँचकर, घायल रज़िया को ज़ीन पर रखकर एक छलाँग मारी, और घोड़े पर बैठकर भाग निकला। "पकड़ो, पकड़ो, जाने न पाए।" चारो तरफ़ यही शोर उठ रहा था। कुछ सिपाही दौड़े। सूरजसिंह बुरी तरह घायल हो चुका था। एक सिपाही की तलवार से उसका प्यारा घोड़ा भी मरकर गिर गया। आन के सच्चे राजपूत ने अपनी मल्का के लिये, नहीं-नहीं, अपनी धर्म की बहन के लिये अपने प्राणों की आहुति दे दी!

(ञ)

लड़ाई के उसी मैदान में—

सूरज डूब रहा था। बूढ़ा चंदनसिंह अपने माथे का पसीना पोंछता हुआ, तलवार टेके हुए, बेटे की लाश के पास खड़ा हुआ था। उसकी आँखें गीली थीं, मगर आँसू बाहर न आते थे। घायल रज़िया ने आँखें खोलीं, और पुकारा—"भैया सूरज!"

बूढ़े चंदनसिंह ने रोते-रोते कहा—"अभागी बेटी! तेरा भैया चला गया अब।"

रज़िया तड़पने लगी।

हाथ के सहारे से चंदनसिंह ने उसकी करवट बदल दी।

रज़िया ने देखा, सूरजसिंह की ख़ून से लथपथ लाश पड़ी हुई थी। खिसकती हुई वह क़रीब जा पहुँची। अपने हाथ से धीरे-धीरे उसने सूरजसिंह का दाहना हाथ उठाया—कलाई पर रेशमी राखी अब भी चमक रही थी। सूरज की आख़िरी किरणों ने उसका रंग सुनहला कर दिया था। रज़िया ने चंदनसिंह की ओर देखकर कहा—"बापू! भैया ने राखी का हक़ अदा कर दिया, क्यों?"

बूढ़े राजपूत की आँखों से दो आँसू टप टप कर धरती पर आ गिरे।

रज़िया ने एक ठंडी साँस लेकर अपनी आँखें सदा के लिये मींच लीं।

थोड़ी देर बाद एक चिता जल उठी, और पास ही एक क़ब्र खोदी जा रही थी।

इतिहास हमारा इस घटना को छिपा चुका है, मगर हिंदुओं और मुसलमानों में कभी-कभी इसकी चर्चा सुनने में आती है। अब यह एक भूली हुई याद है!

आवश्यकता है

जनता द्वारा प्रशंसित रेशमी, सूती और ऊनी कपड़ों की बाज़ार-भाव पर बिक्री करने के लिये चुस्त एजेंटों की। नियम सरल। नमूना मुफ़्त।

ग्रियर्सन निटिंग वर्क्स, लुधियाना (4 A)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी राष्ट्रीय शिक्षा-संस्थाएँ

[श्रीयुत रामचरित्रसिंह, हिंदी-विद्यापीठ, देवघर]

"सार्वजनिक संस्था का अर्थ है लोगों की मंज़ूरी और उनके धन से चलनेवाली संस्था। जब लोगों की मदद मिलना बंद हो जाय, तो उसे जीवित रहने का कोई अधिकार नहीं। स्थायी संपत्ति से चलनेवाली संस्था स्वतंत्र होती हुई देखी जाती है, और कितनी बार तो लोकमत के विपरीत आचरण करती है।.....उनके प्रबंधक उनके मालिक बन बैठते हैं, तब उन्हें और किसी की जवाबदेही मालूम ही नहीं पड़ती। क़ुदरत जिस प्रकार पैदा करती और नित्य खाती है, उसी प्रकार सार्वजनिक संस्थाओं का जीवन होना चाहिए। जिस संस्था की सहायता करने को लोग तैयार न हों, उसे सार्वजनिक संस्था की हैसियत से क़ायम रहने का अधिकार नहीं।" आज पाठकों से, गांधीजी के शब्दों में, इन बातों को कहने की मुझे अत्यंत आवश्यकता प्रतीत हो रही है। 'सार्वजनिक संस्थाएँ' और 'राष्ट्रीय संस्थाएँ' किसी भी देश की सबसे बड़ी राष्ट्रीय संपत्ति हैं। प्रत्येक देश में वहाँ की सरकार के पीछे इन्हीं संस्थाओं का बहुत अधिक हाथ रहता है—चाहे वे शुद्ध राजनीतिक हों, शिक्षा-संस्था हों या अन्य किसी प्रकार की। गांधीजी ने ये वाक्य किसी विशेष अवसर पर कहे थे, और उनका आशय कांग्रेस-जैसी संस्था के साथ-साथ उस प्रकार की दूसरी संस्थाओं से भी था। भारत में अभी कितनी ही ऐसी शिक्षा-संस्थाएँ चल रही हैं, जो राष्ट्रीय हैं; और साथ ही, समय-समय पर, राष्ट्र की बड़ी-बड़ी आशाओं की पूर्ति में उनका भी बहुत अच्छा हाथ रहा है। दर-असल इसी के लिये उनकी नींव भी डाली गई थी। आज हमें इन्हीं शिक्षा-संस्थाओं के बारे में कुछ कहना है।

सन् १९२१ ई० का ज़माना हमारे सांस्कृतिक और राजनीतिक इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है। यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय, तो हमारे हर तरह के राष्ट्रीय विकास की मोड़ का वह ज़माना था। विदेशी वस्तु, विदेशी शिक्षा, विदेशी चाल-ढाल आदि के प्रति विद्रोह, और स्वदेशी वस्तु, स्वदेशी शिक्षा तथा स्वदेशाभिमान के प्रति एक तीव्र आकर्षण उस ज़माने ने ही हमें दिया। देश में राष्ट्रीय जागरण के साथ-साथ तत्कालीन स्कूलों एवं कॉलेजों की शिक्षा के प्रति भी भारतीयों की कुरुचि उत्पन्न हुई, और धीरे-धीरे बढ़ती ही गई। भारतवासियों ने सरकार द्वारा संचालित संस्थाओं की शिक्षा का उद्देश्य भी समझ लिया।

१९२० ई० में कलकत्ते में कांग्रेस का जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष अधिवेशन हुआ, उसमें विद्यार्थियों से सरकारी तथा सरकार से सहायता प्राप्त स्कूलों तथा कॉलेजों का बहिष्कार करने को कहा गया। अधिवेशन समाप्त होने के पश्चात् महात्मा गांधी ने अपने दौरे के सिलसिले में इस भावना का पर्याप्त प्रचार किया। वह कहते थे, अन्य लोगों से मुझे जो कुछ कहना था, मैं कह चुका; अब केवल विद्यार्थियों से अपील करना ही बाक़ी रह गया है। उनकी अपील यह थी कि विद्यार्थी सरकारी शिक्षा-संस्थाओं को त्यागकर राष्ट्रीय शिक्षा-संस्थाओं में भर्ती हो जायँ, और अपने को अपनी मातृभूमि का योग्य सेवक बनावें। बहिष्कार की इन्हीं पुकारों से राष्ट्रीय शिक्षा-संस्थाओं का आविर्भाव हुआ। तत्कालीन स्थापित संस्थाओं में बिहार-विद्यापीठ, काशी-विद्यापीठ, गुजरात-विद्यापीठ, उड़ीसा का सत्यवादी स्कूल तथा महाराष्ट्र-विद्यापीठ प्रमुख हैं। इन विद्यापीठों की शाखाएँ सैकड़ों की संख्या में मुल्क के कोने-कोने में स्थापित हुईं। कठिनाइयों का मुक़ाबिला न कर सकने के कारण कुछ ही वर्षों में इन में से अधिकांश का लोप हो गया, और कुछ अब भी किसी-न-किसी प्रकार चल रही हैं। बाद में भी कुछ संस्थाएँ क़ायम हुईं, जिनमें कतिपय आज भी जीवितावस्था में हैं। पर उन्हें जिस तेज़ी के साथ बढ़ना चाहिए, और जिस जीवन के साथ जीना चाहिए, वह नहीं हो रहा है। इन संस्थाओं में हिंदी-विद्यापीठ, प्रयाग और हिंदी-विद्यापीठ, देवघर मुख्य हैं।

इन संस्थाओं की महत्ता समझने के लिये तत्कालीन परिस्थिति एवं इनके उद्देश्यों को मद्देनज़र रखकर विचार करना आवश्यक है। हमारे यहाँ प्राचीन काल में जिस प्रकार की शिक्षा-पद्धति प्रचलित थी, आज की शिक्षा-पद्धति उससे सर्वथा विपरीत है। उस काल में छात्र ग्राम से दूरस्थित आश्रमों में जाकर विद्याध्ययन करते थे। प्राचीन ग्रंथों के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि उस समय गुरु और छात्र, दोनो साथ-साथ रहते थे। आचार्य सदा इस बात का ध्यान रखते थे कि हमारे शिष्य अच्छे विद्वान् होने के साथ ही उच्च कोटि के चरित्रवान् और समाज तथा देश के सेवक बनें। हमारी इन राष्ट्रीय शिक्षा-संस्थाओं का उद्देश्य भी कुछ-कुछ इन्हीं प्राचीन आदर्शों की ओर उन्मुख था। इन संस्थाओं का रंग-ढंग देखने पर पता चलता है कि हमारी ये संस्थाएँ प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा-संस्थाओं का मिश्रित रूप हैं। हमारे नेता चाहते थे कि हमारी आत्मा तो प्राचीन हो, किंतु शरीर सर्वथा नए रंग (कच्चा नहीं, पक्का) में रँगा हुआ हो। एक बात में यदि कहा जाय, तो उस शिक्षा से हमारी आत्मा विदेशी रंग से रँग न सकी, वरन् अधिक-से-अधिक अपनेपन की ओर झुकी। मैदान में वृक्षों के नीचे चटाई पर क्लास का होना, छात्रों के बीच रहकर उनके प्रतिदिन के कार्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में सुधार कर उनके जीवन को आदर्श बनाना आदि बातें प्राचीनता की द्योतक थीं ; पढ़ाई जानेवाली पुस्तकें, व्यावहारिक शिक्षा, शिक्षा-पद्धति आदि बातें आधुनिकता की द्योतक थीं।

प्रारंभ में इन संस्थाओं के संचालक तथा अध्यापक वे ही लोग हुए, जो राष्ट्रीयता की तेज़ लहर में पड़कर, अपने-अपने पेशों से विमुख होकर राष्ट्रीय आंदोलन में शरीक हुए थे। उनमें काफ़ी लगन थी, योग्यता थी, और त्याग भी था। यद्यपि उन लोगों ने शिक्षा तो सरकारी कॉलेजों में ही पाई थी, पर उनके सम्मुख एक आदर्श खड़ा था। वे नौजवानों को उनके छात्र-जीवन में ही राष्ट्रीयता के रंग में रँगा देखना चाहते थे।

इन संस्थाओं के उद्देश्य भी यह सोच-विचार-कर बनाए गए कि इनसे निकले छात्र आगे चलकर योग्य नागरिक बन सकें, समाज के सामने एक नूतन आदर्श रक्खें, और भविष्य में सुंदर भारत का निर्माण कर सकें। सरकारी शिक्षा एवं उस तरह के वायुमंडल में लालित-पालित व्यक्तियों के मस्तिष्क में इस प्रकार की बातें भर दी जाती हैं कि वे अपने पूर्वजों, अपनी संस्कृति, अपनी कलाओं से घृणा करने लगते हैं। विना सोचे-समझे पाश्चात्त्य जगत् की सारी बातों की नक़ल करने में ही लोग गौरव अनुभव करने लगते हैं। भारतीयता और पारस्परिक प्रेम तो अब भी ऐसी सरकारी संस्थाओं में धीरे-धीरे मिटता-सा जा रहा है। आज़ादी हासिल करने की बातें उन्हें अच्छी लगती ही नहीं। ये बातें तब भी थीं, और अब भी, अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं की सेवा के पश्चात् भी, बहुत अंश में मौजूद हैं। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर उन संस्थाओं ने भारत की विशिष्ट संस्कृति और विद्याओं का विकास, विश्व के प्राचीन और नवीन विज्ञान की उन्नति और प्रचार, भारत की राष्ट्रीय परिस्थिति और जीवन के अनुकूल शिक्षा-प्रदान, भारत की सर्वांगीण उन्नति के लिये सुयोग्य कार्यकर्ताओं का संघटन तथा योग्यतम देश-सेवकों का निर्माण आदि बातों को अपने उद्देश्य के अंतर्गत रक्खा। इनका मुख्य उद्देश्य नौकरी नहीं, लोक-सेवा ही था। साथ ही लोगों ने इसे भी ध्यान में रक्खा कि विद्यार्थियों के मस्तिष्क व्यर्थ की बातों से न भरे जायँ; शास्त्र-ज्ञान के साथ-साथ कला-कौशल भी सिखाया जाय, जिससे छात्र आसानी से जीविकोपार्जन कर सकें। और, ये ही बातें आज वर्धा-शिक्षा-योजना में और भी परिष्कृत रूप में मौजूद हैं। राजनीतिक ज्ञान के लिये आवश्यक व्यवस्था की जाय, जिससे छात्र आधुनिक जगत् की उथल-पुथल से अनभिज्ञ न रह सकें। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही रक्खी जाय। प्रकृति-निरीक्षण द्वारा भी शिक्षा प्राप्त करने पर ज़ोर दिया जाय। इन सारी बातों पर भी उस समय काफ़ी ध्यान दिया गया। वह शिक्षा में एक नई क्रांति थी, जिसने हमें भारतीयता की ओर आकृष्ट किया। राजनीति-विषयक चर्चा उन क्रांतियों में एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख़ास स्थान रखती है, और आज भी जितनी राष्ट्रीय शिक्षा-संस्थाएँ हैं, उनकी अन्यान्य संस्थाओं से यह बहुत बड़ी विशेषता है। आज इस क्रांति-काल में सरकारी शिक्षा-संस्थाओं में पढ़नेवाले विद्यार्थियों से कहा जाता है कि राजनीति और विद्यार्थी-जीवन, दोनो दो परस्पर विरोधी बातें हैं, एक साथ इनका चलना संभव नहीं। इसी कारण सरकारी शिक्षा-संस्थाओं में अध्ययन करनेवाले बी० ए० और एम्० ए० के विद्यार्थियों में भी—कुछ अपवाद छोड़कर—इन विषयों की जानकारी निहायत कम पाई जाती है। हाँ, इधर विद्यार्थी-आंदोलन के कारण छात्रों की प्रवृत्ति—बहुत कम छात्रों की प्रवृत्ति—बदली है।

सभी जानते हैं कि किसी कार्य के प्रारंभ में उत्साह-वश लोग भाग लेते हैं; बहुत कम लोग सिद्धांत-रूप से और ख़ूब सोच-समझकर कार्य में लगते हैं। यदि कार्य अधिक दिनों तक चला, तो अंत तक कुछ दृढ़निश्चयी व्यक्ति ही ठहर पाते हैं। इसलिये सारी योजना ही अस्त-व्यस्त हो जाती है। हमारी राष्ट्रीय शिक्षा-संस्थाओं के साथ भी ये ही बातें लागू होती हैं। शुरू में तो ऐसा प्रतीत होता था कि ये संस्थाएँ मुल्क के तमाम स्कूलों और कॉलेजों को भी मात कर देंगी; किंतु कुछ ही समय पश्चात् इनकी अवस्था ऐसी बदल गई कि सारी योजनाएँ ही नष्टप्राय-सी हो गईं। वैसे तो इन संस्थाओं के बंद होने अथवा जीवित रहने पर भी संकट-ग्रस्त होने का मुख्य कारण अर्थाभाव ही दृष्टिगोचर होता है, परंतु ज़रा गंभीरता से सोचने पर पता चलता है कि लोगों की उदासीनता ही इसके लिये ख़ास कारण बनी। पीछे तो ऐसी संस्थाओं को लोगों ने सैनिक पड़ाव-सा बना लिया। सत्याग्रह के लिये लोगों को थोड़ी-सी शिक्षा देकर ही अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ ली। ऐसे कार्यों से सत्याग्रह-संग्राम को तो काफ़ी सहायता मिली (राष्ट्रीय शिक्षा-संस्थाओं के उद्देश्यों में से एक यह भी था), पर उनको जो स्थायित्व प्राप्त कर कुछ और भी आगे बढ़ने की ज़रूरत थी, वह नहीं हो सका। परिणाम-स्वरूप शिक्षा के मामले में इन संस्थाओं से लोगों का विश्वास-भाव उठ-सा गया, और नेता भी, जो इन संस्थाओं से संबंधित थे, अपने-अपने लड़कों को इन राष्ट्रीय शिक्षालयों में न भेजकर सरकारी विद्यालयों अथवा कॉलेजों में भेजने लगे। अतएव इन संस्थाओं में कोई जीवन नहीं रह गया।

हम ऐसी परिपाटी के विरोधी नहीं; किंतु देश के शिक्षा-शास्त्रियों को, जो राष्ट्रीय शिक्षा के हिमायती हैं, सूचित कर देना चाहते हैं कि ऐसे कार्यों से हमारे देश की राष्ट्रीय शिक्षा आगे नहीं बढ़ सकती, राष्ट्रीयता किसी रूप में भले ही बढ़ जाय। राष्ट्रीय शिक्षा या संस्था को चिरस्थायी बनाने के लिये उन्हें अपने वर्तमान दृष्टिकोण में थोड़ा परिवर्तन करना होगा। हमें अभी जितनी स्वाधीनता-आंदोलन की ज़रूरत है, उतनी ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे देश का शासन-भार सँभालने के लिये शक्ति-संचय की भी आवश्यकता है। इन दोनो ही कार्यों की ओर तत्पर रहने के लिये हमारे राष्ट्र-निर्माताओं को अभी सचेत रहना चाहिए, इसलिये उन्हें राष्ट्रीय शिक्षा में दायित्व लाने के लिये सदैव सचेष्ट रहना चाहिए। राष्ट्रीय विद्यापीठों या राष्ट्रीय कॉलेजों में जब तक विद्यार्थी अध्ययन करें, तब तक उनमें राष्ट्रीयता तो कूट-कूटकर भरी ही जानी चाहिए; किंतु उन्हें ऐसे किसी कार्य में न पड़ने देना चाहिए, जिसके फल-स्वरूप उनके विद्यार्थी-जीवन पर किसी प्रकार का आघात हो, और विद्यार्थी-जीवन नष्ट हो जाय। हाँ, शिथिलता मिटाने के लिये उन्हें राष्ट्रीय कार्यों में क्रियात्मक रूप से भाग भी लेना चाहिए। राष्ट्रीय पर्व-त्योहारों, किसी महापुरुष की जन्म-मृत्यु के अवसर पर प्रदर्शन या विशेष प्रकार के विपत्ति-काल में जनता की सेवा आदि ऐसे ही कार्यों में हैं। अपनी पढ़ाई समाप्त कर लेने पर विद्यार्थी अपना क्षेत्र स्वतंत्रता से चुन लेगा। ऐसी पढ़ाई से, हमें विश्वास है, उन शिक्षा-संस्थाओं और उन लोगों की शिक्षा में भी कुछ-न-कुछ स्थायित्व अवश्य आ जायगा, और वैसी संस्थाओं से योग्य विद्यार्थी भी निकल सकेंगे, जिनसे देश के बौद्धिक विकास के लिये भी आशा की जा सकती है।

अब हमें देखना यह है कि संप्रति ये संस्थाएँ किस रूप में चल रही हैं, कहाँ तक अपने आदर्शों का पालन कर रही हैं, आजकल इनमें रहनेवाले छात्रों का जीवन किस तरह व्यतीत होता है? इस समय लोगों ने आम तौर से राष्ट्रीय शिक्षा-संस्थाओं को अव्यवस्था एवं गड़बड़ियों का प्रतीक मान लिया है। जिनमें ये बातें नहीं, वे राष्ट्रीय शिक्षा-संस्था कहलाने की अधिकारिणी नहीं। आखिर लोगों के मस्तिष्क में इस प्रकार की बुरी धारणा के उद्भव का कारण क्या है? आज यदि हम ज़रा ध्यान से देखेंगे, तो सच्चाई का पता लगाते देर न लगेगी। अब हम वर्तमानकालीन इन संस्थाओं की कुछ कमियों की ओर एक संकेत कर देना चाहते हैं। इन संस्थाओं की सबसे बड़ी कमी तो आर्थिक है, और उनके साथ सदैव लगी रहेगी। अगर उनके पास कुछ स्थायी फ़ंड हो जाय या आर्थिक प्रश्नों से वे निश्चिंत रहें, तो कुछ लाभ भी है, और कुछ हानि भी। लाभ यह कि उद्योग को, जो उन संस्थाओं का एक मुख्य विषय है, मज़बूत बनाया जा सकेगा, और साथ ही योग्यतम सेवकों को भी नियुक्त कर सकेंगे। परंतु यह ध्यान देने की बात है कि आर्थिक निश्चितता के फल-स्वरूप उनमें जीवन की अवश्य कुछ-न-कुछ कमी हो जायगी। आज जितनी भी राष्ट्रीय संस्थाएँ हैं, उनमें अधिकांश में यह देखा जाता है कि कम-से-कम वेतन पर अनुभव-हीन व्यक्तियों को शिक्षक-रूप में रख लिया जाता है, जिनकी केवल शिक्षा ही नहीं, वरन् जीवन के और भी अंग कमज़ोर हुआ करते हैं। कुछ रुपयों के लोभ में झट खादी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारण कर लेना और मातृभूमि के लिये मर मिटने की एक अमिट राष्ट्रीय भावना रखना, ये दोनो दो विभिन्न वस्तुएँ हैं। कई वर्षों के अनुभव से हम कह सकते हैं कि बहुत-सी राष्ट्रीय शिक्षा-संस्थाओं के शिक्षकों की खादी-पोशाक और राष्ट्रीयता चाँदी के चंद चमचम टुकड़ों की ख़रीदी हुई ही रहती है। क्या ऐसी कमज़ोर नींव पर इतना बड़ा विशाल भवन टिक सकेगा ? हाँ, सभी ऐसे ही नहीं होते। हर जगह दो-एक ऐसे व्यक्ति भी मिलेंगे, जिन्हें भूलने की ग़लती हम नहीं कर सकते। थोड़े दिनों के साथ से ही हम पर वे अपनी एक छाप छोड़ जाते हैं। दरअसल देखा जाय, तो ये ही दो-एक व्यक्ति इन संस्थाओं के आकर्षण के कारण बने रहते और उनकी आत्मा का काम करते हैं। अतः विद्वान् एवं विचारशील लोगों को रखना ही छात्रों एवं संस्थाओं के हक़ में लाभप्रद होगा।

प्रायः संस्थाओं में स्वावलंबन के लिये कोई व्यवस्था नहीं, फिर भी वहाँ स्वावलंबन का राग अलापते देखकर महान् आश्चर्य होता है। कुछ संस्थाओं में नाममात्र के लिये कुछ व्यवस्था भी की गई है, तो वह भी केवल प्रदर्शन-सा है, अथवा उसी के लिये है। वहाँ क्या होता है, बाहर से सुनकर कोई भी मुग्ध हो जायगा; किंतु पता लगाने पर असलियत मालूम पड़ जायगी। अर्थाभाव के कारण अपने पवित्र लक्ष्य तक पहुँचने में बाधा पड़ती है, लेकिन अच्छा होता कि जो कुछ किया जाय, वह ठोस रूप में हो।

अक्सर देखा जाता है कि कुछ लड़कों को छोड़ अधिकांश लड़के शारीरिक श्रम में संकोच का अनुभव करते हैं। इसमें उस वातावरण का तो दोष है ही, जिसमें उनका पालन-पोषण हुआ है, साथ ही श्रम करानेवालों का भी कम दोष नहीं। वे लोग ख़ुद भी इन कार्यों में अप्रतिष्ठा और संकोच का अनुभव करते हैं, साथ ही लड़कों से आशा रखते हैं कि केवल आज्ञा मानकर ही वे लोग श्रम को प्रिय वस्तु समझने लगेंगे। क्या यह कभी संभव है कि ऐसी अवस्था में यह संकोच लड़कों के मस्तिष्क से दूर हो सके, और वे संस्थाओं के उद्देश्य के अनुकूल आदर्श बन सकें ? छात्रों की प्रवृत्ति होती है कि वे अपने साथ में रहनेवाले बड़े लोगों के कोरे आदर्शात्मक उपदेशों की ओर अधिक ध्यान नहीं देते। वे तो झुकते हैं उनके व्यावहारिक कार्यों की नक़ल की ओर, जो संभव और अधिक स्वाभाविक भी है। आजकल के बुद्धिवाद के ज़माने में निषेध या कोरे आदेश में किसी की श्रद्धा नहीं रहती। अतः यह निहायत ज़रूरी है कि विद्यार्थियों के साथ अनुभव-हीन या आडंबर दिखानेवाले व्यक्ति न रक्खे जायँ।

एक और ख़ास बात यह है कि अब तक पढ़ाई का ढर्रा बदला नहीं गया है। इन संस्थाओं का कार्य प्रारंभ से ही समाज के सम्मुख पढ़ाई के संबंध में क्रांति उपस्थित करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। पर सरकारी शिक्षालयों की पढ़ाई के हम इतने बड़े आदी हो गए हैं कि राष्ट्रीय संस्थाओं के संचालक भी आज उस ढर्रे को अपनाने से बाज़ नहीं आते। एक बार बिहार की एक राष्ट्रीय एवं उत्कृष्ट साहित्यिक संस्था के व्यवस्थापकजी राजेंद्र बाबू से यह राय लेने गए थे कि अपनी संस्था में वह हाई-स्कूल की पढ़ाई भी जारी कर दें, तो कैसा हो? राजेंद्र बाबू ने इसके उत्तर में केवल इतना ही कहा था कि आजकल के नेता या कर्मी कुछ नहीं कर पाते, तो एक हाईस्कूल क़ायम करने की अवश्य सोच लेते हैं। इस कथन में आधुनिक राष्ट्रीय शिक्षा के नाम पर प्रचलित प्रणाली की कितनी कटु आलोचना भरी हुई है, पाठक स्वयं सोच सकते हैं। ऐसे ढर्रे में हमें आमूल परिवर्तन करने की बड़ी सख़्त ज़रूरत है। हम आशा करते हैं कि हमारे राष्ट्र के कर्णधार और शिक्षा-शास्त्रियों का ध्यान इस कमी की ओर अवश्य जायगा।

अब कोई बेकार न रहेगा

यदि आप (१) अमेरिका के बेकार लोगों की भाँति क़लम-दावात के सहारे केवल डाक की सहायता से बिना पूँजी रुपया कमाना चाहते हैं, (२) योरप की उन फ़र्मों के पते, जो नई-नई वस्तुओं के नमूने मुफ़्त भेजती रहती हैं, (३) अमेरिका की उस फ़र्म का पता, जो केवल पत्र लिखने पर संसार-भर की प्रत्येक चीज़ का आपको पता बता देगी, (४) ५०) से ५००) की पूँजी तक के कारख़ाने लगाने का पूरा विवरण जिनसे ६०) से ३००) मासिक तक कमाया जा सकता है, (५) इँगलैंड व जापान की ताज़ा मालूमात और घर बैठे एजेंसी लेने के ढंग और पते, (६) स्वदेशी चीज़ों से विलायती वस्तुएँ बनाना, ४००) तोला मूल्य की बताई जानेवाली 'झीन-सीन' को अपने देश में पैदा करना और (७) भारत के कच्चे माल से रुपया कमाना चाहते हों, तो इस पुस्तक को अवश्य मँगाकर पढ़ें। इसके अतिरिक्त इसमें सैकड़ों ऐसी दस्तकारियाँ लिखी हैं, जो आज तक सुनने में नहीं आईं और उनसे साधारण पूँजीवाला आदमी दो-तीन रुपया रोज़ घर बैठे कमा सकता है। २५० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य १।); पोस्टेज ।=)

१०० गुना नफ़े का व्यापार

संसार में सबसे अधिक लाभदायक व्यापार पेटेंट ओषधियों का है। इससे सौगुना नफ़ा कमाया जा सकता है। एक पैसा लागत की दवा के दो-दो रुपए मिलते देखे हैं। अमृतधारा और सुधासिंधु के मालिकों ने एक-एक पेटेंट दवा से करोड़ों रुपया कमाया है। यदि उनकी तरह आप भी भारतवर्ष, जर्मनी, इँगलैंड, अमेरिका की प्रसिद्ध और सर्वप्रिय प्रतिवर्ष करोड़ों रुपए की बिकनेवाली पेटेंट ओषधियों के नुस्ख़े बिना किसी कष्ट के घर बैठे सीखकर साधारण पूँजी से प्रायः सभी प्रचलित पेटेंट ओषधियों को स्वयं तैयार करके विज्ञापन द्वारा मुक़ाबिले में कम क़ीमत में बेचकर सैकड़ों रुपए मासिक की स्थायी आमदनी पैदा करना चाहते हैं, तो आज ही 'पेटेंट ओषधियाँ और भारतभर्ष'-नामक पुस्तक की १ प्रति मँगाकर कारोबार शुरू कर दें। संभव है, फिर आपको यह पुस्तक किसी मूल्य पर न मिल सके। मूल्य ॥।); पोस्टेज ।-)

पता—रसायन-कार्यालय (सु), संगरिया (बीकानेर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलेकज़ंद्रिया का प्राचीन विश्वविद्यालय

[श्रीयुत बैजनाथपुरी एम्० ए०, एल्-एल्० बी०]

इजिप्ट में, नाइल-नदी के मुहाने पर, अलेकज़ंद्रिया स्थित है। वर्तमान समय में यद्यपि यह प्रसिद्ध और सुंदर नगर है, पर प्राचीन समय में यह विद्या का केंद्र था, जहाँ दूर-दूर से विद्यार्थी विद्या ग्रहण करने आते थे। इस नगर की नींव सिकंदर महान् ने, टायर के पतन के बाद, डाली थी। उसे यह ज्ञात हो गया था कि किसी समय में यह नगर अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण संसार में बहुत बड़ा गिना जायगा। ईसा से ३२३ वर्ष पूर्व सिकंदर महान् भारत से लौटते समय बेबीलोन में मर गया। इस कारण वह इस नगर की उन्नति में भाग न ले सका। उसकी मृत्यु के उपरांत उसके प्रधान सेनापति टालमी सोटर ने मिस्र पर अपना अधिकार कर लिया, और तब से उसने इस नगर की उन्नति में बहुत उद्योग किया। टालमी के वंशज राजों के समय में यह उन्नति के शिखर पर पहुँच गया। इसकी प्रसिद्धि भारतवर्ष तक पहुँच चुकी थी, और यहाँ के राजों का भारत के मौर्य सम्राट् अशोक से अंतरराष्ट्रिय संबंध था। पर जिस शीघ्रता से इसका उत्थान हुआ था, उसी प्रकार इसका पतन होते भी देर न लगी। रोम के सम्राट् क़ैसर के समय में यह रोम-साम्राज्य में आ गया। इससे इसकी उन्नति में अधिक धक्का पहुँचा। सन् ६४० में यह ख़लीफ़ा उमर के अधिकार में आया, और तब से बिलकुल सत्यानास हो गया। इसके पश्चात् का इतिहास अलेकज़ंद्रिया के विद्यालय के लिये कोई विशेषता नहीं रखता।

अलेकज़ंद्रिया के विद्यालय का बीज टालमी सोटर ने ईसा से ३२२ वर्ष पूर्व, सिंहासनारूढ़ होने के उपरांत, डाला। वह स्वयं विद्या से प्रेम करता था, और कई भाषाओं का पंडित था। इसलिये उसने अलेकज़ंद्रिया में सुंदर उद्यान और गगनस्पर्शी अट्टालिकाओं के अतिरिक्त विद्या और कला का भी एक केंद्र स्थापित किया। यहाँ विद्वानों का बड़ा सत्कार होता था, और उनकी जीविका के लिये राज्य की ओर से प्रबंध था। इसका परिणाम यह हुआ कि सभी प्रदेशों के प्रसिद्ध विद्वान् यहाँ आकर बस गए। भारतवर्ष से भी बहुत-से ब्राह्मण और बौद्ध-विद्वान यहाँ आए। उस समय भारत से अलेकज़ंद्रिया आना कठिन न था। दोनो देशों में सुरक्षित रूप से व्यापार होता था। इसके अतिरिक्त, जैसा सम्राट अशोक ने अपने धर्म-लेखों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखा है, यहाँ उसने बहुत-से बौद्ध-भिक्षु धार्मिक प्रचार के लिये भेजे।

इस विद्यालय में १४ हज़ार से ऊपर विद्यार्थी पढ़ते थे, जो केवल मिस्र और ग्रीस देश के ही न थे, प्रत्युत सभी देशों से विद्याध्ययन करने आए थे। विद्यार्थियों के अतिरिक्त बड़े-बड़े दार्शनिक, गणितज्ञ, ज्योतिषी, कवि, वैज्ञानिक और चिकित्सक यहाँ रहते थे। उस देश के पुरुष इन विद्वानों की हर प्रकार से प्रतिष्ठा करते थे, और सदैव यह प्रयत्न करते थे कि वे उनके देश से न चले जायँ। यह उनके विद्या-प्रेम का एक उदाहरण है। स्वयं सम्राट् इन विद्वानों के आदर-सत्कार के हेतु इनके साथ भोजन करता था। इससे यह बात प्रकट होती है कि सम्राट् अपने को किसी प्रकार इन विद्वानों से उच्च और श्रेष्ठ नहीं समझता था। भोजन के समय मिस्र-सम्राट् और विद्वानों में तरह-तरह के वाद-विवाद होते थे, जिससे विद्या की उन्नति हो सके।

अलेकज़ंद्रिया के विद्यालय में बहुत-से विषय पढ़ाए जाते थे। साहित्य, कविता और समालोचना का एक विभाग था। गणित-विभाग में, ज्यॉमेटरी, ट्रिगना मेटरी और अल-जबरा भी पढ़ाया जाता था। ज्योतिष और नक्षत्र-विद्या का अलग विभाग था। चिकित्सा-विभाग में केवल व्याधियाँ और उनकी ओषधियाँ ही नहीं बताई जाती थीं, बल्कि चीर-फाड़ भी सिखाई जाती थी। शवों के अतिरिक्त मृत बंदियों के शरीरों को भी काटकर हड्डियों, दिलों, फेफड़ों और नसों की परीक्षा की जाती थी। जिन बंदियों को फाँसी होने को होती थी, वे विद्यालय भेज दिए जाते थे। वहाँ उनका शरीर चीर-फाड़कर हृदय और मस्तिष्क की गति देखी जाती थी। इतिहास और भूगोल का अलग विभाग था। यहाँ मिस्र के इतिहास और भूगोल के अतिरिक्त और देशों का इतिहास भी पढ़ाया जाता था। दर्शन-विभाग में बौद्ध, ब्राह्मण, यूनानी और यहूदी-दर्शन-शास्त्र के अतिरिक्त इपीक्यूरियन-दर्शन-शास्त्र—जिसका सिद्धांत है, "खाओ, पियो, मौज उड़ाओ, कभी न लाओ मन में खेद।"—का भी अध्ययन होता था। पर यह शास्त्र विशेष रूप से नहीं पढ़ाया जाता था, ताकि विद्यार्थी कर्तव्य-भ्रष्ट न हो जायँ। खयाली घोड़ों पर न चढ़कर लोग असली घोड़े पर चढ़ना ठीक समझते थे। इसीलिये यूनानी दार्शनिक प्लेटो की पुस्तक के विरुद्ध यहाँ के विद्वान् पंडितों ने पुस्तकें लिखना आरंभ किया। विज्ञान-विभाग अलग था। इसमें भौतिक और रसायन की शिक्षा दी जाती थी। बनस्पति-शास्त्र और पशु-शास्त्र की शिक्षा का विशेष प्रबंध था। विद्यालय में एक बड़ा भारी उद्यान था, जहाँ तरह-तरह के वृक्ष लगे थे, और भाँति-भाँति के फूल फूलते थे। इसके अतिरिक्त एक बड़ा चिड़ियाखाना भी था, जहाँ बहुत-से पशु थे। कृषि-विद्या और व्यायाम पर विशेष ध्यान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया जाता था। शिल्प-विद्या, गान-विद्या और इंजीनियरिंग का भी विशेष प्रबंध था। इससे यह बात प्रकट होती है कि अलेकज़ंद्रिया के विद्यालय में सभी विषयों की शिक्षा दी जाती थी।

उस विद्यालय के कई विद्वानों को अब तक विद्यार्थी याद करते हैं। यूक्लिड का नाम प्रायः सभी विद्यार्थी जानते हैं, और उससे घबराते हैं। यह अलेकज़ंद्रिया के विद्यालय में गणित का अध्यक्ष था, और सम्राट् भी इससे घबराते थे। एक बार सम्राट् ने यूक्लिड से पूछा—"ज्यॉमेटरी किस प्रकार बिना परिश्रम किए सीखी जा सकती हैं?" यूक्लिड ने तत्क्षण उत्तर दिया—"ज्यॉमेटरी के लिये कोई राजकीय मार्ग नहीं।" यूक्लिड के नीचे असोनिअस शिक्षक था, जिसने कोनिक्स का आविष्कार किया था। आर्कमिडीस बड़ा ही प्रसिद्ध वैज्ञानिक था, और उस विद्यालय में विज्ञान का प्रधानाध्यक्ष था। उसने यह बात आविष्कार की कि यदि किसी वस्तु को वायु में तौला जाय, और फिर पानी में, तो पानी में उसका वज़न घट जायगा। ऐरोस्थनीज़ इस विद्यालय में इतिहास का शिक्षक था। वह ईसा से २४० वर्ष पूर्व से १९६ वर्ष पूर्व तक विद्यालय के पुस्तकालय का प्रधान रहा। ८० वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु हुई। यह भूगोल का भी शिक्षक था, और इसी ने भूगोल को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया। इसने भारतवर्ष की लंबाई-चौड़ाई ठीक लिखी है। मैनथो भी बहुत बड़ा इतिहासकार था। इसने मिस्र का दो हज़ार वर्ष तक का इतिहास लिख डाला, और राजों के नाम बिलकुल ठीक दिए हैं। हिप्पकिस बड़ा विद्वान् ज्योतिषी था। इसी के कारण अलेकज़ंद्रिया-विद्यालय में वेधशाला स्थापित की गई थी। सूर्य, चंद्र और नक्षत्रों की गति के विषय में इसने बहुत खोज की, और तभी से इसे ज्योतिष का पिता कहा जाता है। हैरोफ़िलस चिकित्सा-शास्त्र का अध्यक्ष था। इसने मनुष्य के शरीर, हृदय की गति और मस्तिष्क के विषय में भी बहुत खोज की। चीर-फाड़ के कारण वहाँ के बहुत-से विद्वान् इसके विरुद्ध थे। इनके अतिरिक्त केलीमेकस और लाइकोफ्रोन नाम के विद्वान् उस विद्यालय में थे।

अलेकज़ंद्रिया का पुस्तकालय उस समय संसार-भर में प्रसिद्ध था। इस पुस्तकालय की भी नींव टालमी सोटर ने डाली थी। यह विद्यालय इसलिये स्थापित किया गया था कि इसमें बड़े-बड़े विद्वान् बैठकर खोज और आविष्कार कर सकें। पुस्तकालय को सुंदर बनाने में डेमेट्रियस नाम के यूनानी विद्वान् ने सम्राट् की बड़ी सहायता की। अपने ३८ वर्ष के राज्य-काल में सम्राट् टालमी सोटर ने उसकी सहायता से बहुत-सी पुस्तकें संग्रह कीं। उसके बाद उसके पुत्र टालमी फिलाडेलफ़स ने पुस्तकें संग्रह करने में हृदय से प्रयत्न किया। उसने पुस्तकों की खोज में यूनान, एशिया, योरप और भारत आदमी भेजे। जो पुस्तकें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आती थीं, उनका मिस्र-भाषा में भी अनुवाद हो जाता था। टालमी फ़िलाडेलफ़स के पुत्र (टालमी युरगेटस) ने भी इस कार्य में बड़ा परिश्रम किया। इसका परिणाम यह हुआ कि १०० वर्ष में लगभग ५ लाख पुस्तकें अलेकज़ंद्रिया के विद्यालय में संगृहीत हो गईं। हरएक विषय की पुस्तकों के लिये अलग-अलग स्थान थे। इतिहास की पुस्तकों का विभाग विज्ञान की पुस्तकों के विभाग से अलग था। पुस्तकों की जिल्द नहीं बँधी रहती थी। उनकी तुलना आजकल की जन्मपत्रियों से की जा सकती थी। विद्यार्थी को बड़े परिश्रम से एक पुस्तक को देखना पड़ता था, पर इसके साथ-ही-साथ उसे पूरी पुस्तक का ज्ञान हो जाता था। बहुत लंबी-चौड़ी पुस्तक को फाड़कर कई भागों में किया जाता था, और उन पर रंग लगा दिया जाता था, ताकि एक दूसरे से मिल न जायँ। पुस्तकों की प्रतिलिपि करने का अलग विभाग था। हज़ारों विद्वान् केवल पुस्तकों की प्रतिलिपि करते थे। अच्छी पुस्तकों की कई प्रतिलिपियों की आवश्यकता होती थी, इसलिये बहुत-से लेखक एक कमरे में बैठाए जाते थे।

पुस्तकालय के साथ एक पुस्तक-भांडार भी था, जहाँ पुस्तकों की बिक्री होती थी। पुस्तकालय का संचालन एक कमेटी द्वारा होता था, जिसके सदस्य प्रत्येक विभाग के अध्यक्ष थे। सबसे बड़ा अध्यक्ष ऐरोस्थनीज़ था, जो ४४ वर्ष तक पुस्तकालय का प्रधान रहा। पुस्तकालय के अतिरिक्त वहाँ का अजायबघर या संग्रहालय भी देखने योग्य था। इसमें प्राचीन वस्तुओं के संग्रह के अतिरिक्त जीवित पशु भी थे। बाहर के दर्शक इस संग्रहालय से भी लाभ उठा सकते थे। विद्यालय का व्याख्यान-भवन अलग बना हुआ था, जहाँ प्रसिद्ध विद्वानों के व्याख्यान होते थे। उत्सव और सभा के लिये भी विशेष स्थान थे। त्योहारों और सम्राट् के जन्म-दिवस पर तरह-तरह के विनोद होते थे।

अलेकज़ंद्रिया का विश्वविद्यालय वास्तव में एक आदर्श विश्वविद्यालय था। इस विद्यालय को टालमी सम्राटों ने उच्च कोटि पर पहुँचा दिया था। यह विद्या और सभ्यता का एक मंदिर था, जहाँ संसार के कोने-कोने से विद्या के पुजारी अपनी भक्ति का प्रमाण देने और इस तीर्थ की यात्रा करने आते थे, तथा इस महान् विद्यालय का दर्शन करके अपने को धन्य समझते थे।

रद्दी पुस्तकें न पढ़कर अच्छी पुस्तकें पढ़िए।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उड़ते सितारे

भारतीय चित्रपट की उज्ज्वल तारिका **विमला कुमारी** कहती हैं—"मैंने चाय को सर्वदा आश्चर्यजनक तरो ताजा करने वाली पाया है।" चित्र-तारिका का जीवन एकाग्रता तथा खिंचाव का जीवन है और स्वभावतः वे सर्वदा चाय का ही भरोसा करती हैं। यह बहुत ही तरो ताजा करने वाला पेय है। यह चित्तको प्रसन्न भी करता है। चाय को अपना पहला प्रियपात्र बनाइये।

सब 'सितारों' की प्रिय-भारतीय चाय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 129 B

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरती

[कला-पूर्ण, प्रगतिशील मासिक पत्रिका]

संपादक—

सच्चिदानंद-हीरानंद वात्स्यायन

प्रफुल्लचंद्र ओझा 'मुक्त'

प्रत्येक हिंदी-पाठक के लिये नियमित रूप से 'आरती' पढ़ना आवश्यक है, क्योंकि इसके हर अंक में आपको मिलेगा—

(१) विश्व की विविध प्रवृत्तियों का परिचय ।

(२) साहित्यिक, सामाजिक और राजनीतिक विषयों पर नवीनतम विचार।

(३) ओज-पूर्ण कहानियाँ और कविताएँ ।

(४) संसार के महापुरुषों का उत्कृष्ट शब्द-चित्र ।

(५) उत्पीड़ित मानवता की विद्रोह-पूर्ण हुंकार ।

(६) गंभीर और प्रभावशाली टिप्पणियाँ ।

ग्राहक बनकर और विज्ञापन देकर लाभ उठाइए । नमूने के लिये आठ आने का टिकट भेजिए ।

वार्षिक मूल्य ५) एक प्रति ।≡)

आरती-मंदिर, पटना-सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलसीदास

[श्रीसोहनलाल द्विवेदी एम्० ए०, एल्-एल्० बी०]

(सोहनलालजी हिंदी के प्रसिद्ध कवि हैं। उनकी कुछ प्रारंभिक रचनाएँ हमने छापी थीं। फिर कुछ वर्ष आप अधिकतर बालकों के लिये कविताएँ लिखते रहे। अब इधर फिर आपने उच्च कोटि की कविताएँ लिखना प्रारंभ किया है। स्थानीय दैनिक पत्र 'अधिकार' के आप संपादक हैं।—सुधा-संपादक)

(१)

जब मुग़ल - महीपों के बादल
छाए जीवन - नभ में अपार,
दासता, पराजय, गृह - विग्रह
से गहराया तम का प्रसार,
तब राम-नाम का अमृत ले
आए गाते गौरव अमंद्र;
मृत, हत जनता को मिले प्राण,
तुम चमके बन सौभाग्य-चंद्र!

(२)

जब हिंदू - कुल का महापोत
था इस जग-जलनिधि में अधीर,
तुम बने अचल आकाश - दीप,
दिखलाया प्रतिपल सुगम तीर।
अंधड़ वैभव के बहे घोर,
लहरें विलास की उठीं रोर;
तुम सुदृढ़ पाल बन लोक-पाल,
तब ले आए निज धर्म ओर।

(३)

उपनिषद्, वेद, दर्शन, पुराण,
शत सद्ग्रंथों का खींच सार,
प्रतिपल जप के संपुट दे-दे,
तप की ज्वाला सुलगा अपार,
फिर निज मन के मुक्ता-कण दे,
औ' लोक - वेद की धातु ढार
यह राम-रसायन रचा विमल
नश्वर तन को अमृतोपहार!

(४)

हे वाल्मीकि के पुनर्जन्म,
क्या भवन-भवन, क्या धाम-धाम
बज रही भक्ति की मधुर बीन,
क्या नगर-नगर, क्या ग्राम-ग्राम।
आबाल, वृद्ध, नारी, नर में,
क्या प्रात-प्रात, क्या शाम-शाम,
तुलसी, तुम गूँज रहे रह-रह
गृह-गृह में बनकर राम - नाम!

(५)

क्या राजभवन, क्या रंक-द्वार,
सब ओर समादृत तुम समान;
क्या ज्ञानी - गृह, विज्ञानी - गृह,
युग-वाणी के तुम बने गान।
क्या यती - व्रती, क्या गृही - रती,
करते सबको गति - मति प्रदान;
नंदित स्वदेश, वंदित विदेश,
हे तुलसी, तुम युग-युग महान!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ट्रेन पर

[श्रीश्रीनिधि द्विवेदी]

(१)

धूसर नभ, किंशुक-वन का
कुम्हलाया हरियालापन ;
यह उमस ! ट्रेन-गति धीमी !
घर पाने को व्याकुल मन ।

(२)

इस यंत्र-यान में यात्री
सामान समान भरे हैं ;
गतिमय जड़ - चेतनता में
समता के भान भरे हैं ।

(३)

हाहाकारों में घुटते
यंत्रित जीवन के क्षण-क्षण ;
हो चूर दूर हो जाते
बनकर आँधी में रजकण ।

(४)

जीवन-श्रम, कष्ट, थकावट,
आँसू है और पसीना ;
किसलिये अरे, क्यों कब तक
जीना, मर-मरकर जीना ।

कोइ भी रोग असाध्य नहीं

क्षय, हिस्टीरिया, संग्रहणी, श्वास, कुष्ठ, फ़ालिज, डायबिटीज़ (मधुमेह), ब्लड-प्रेशर एवं पुरुषत्व-हीनता आदि कोई भी रोग, कैसा ही कष्ट-साध्य तथा असाध्य क्यों न हो, कॉन्ट्रैक्ट-सिस्टम पर सफलता के साथ चिकित्सा की जाती है ।

नोट— पोस्टेज आदि के लिये ।।) के टिकट भेजने पर १५ दिन सेवन करने योग्य बवासीर की अचूक, फ़क़ीरी दवा मुफ़्त भेजी जाती है । किसी भी विषय में परामर्श लेने के लिये जवाबी कार्ड या ⌐) का टिकट भेजना अत्यावश्यक है ।

प्राणाचार्य पं० गयाप्रसाद शास्त्री, राजवैद्य
एस्० ए०, ए० वी०, बी० आर०
'क्षय तथा संग्रहणी स्पेशलिस्ट'
गणेशगंज, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ा पापी कौन ?

(सामाजिक नाटक)

[श्रीयुत सेठ गोविंददास]

(गतांक से आगे)

तीसरा अंक

स्थान—त्रिलोकीनाथ का बैठकख़ाना

समय—रात्रि

[बैठकख़ाना उसी प्रकार सजा हुआ है, जैसा पहले अंक में था। पर अब ऋतु परिवर्तित हो जाने के कारण दोनो बिजली के पंखे चल रहे हैं। त्रिलोकीनाथ गद्दी पर, मसनद के सहारे, बैठे हैं। इस समय वह पतला-सा सफ़ेद कुरता पहने हैं, जिसकी ढीली बाँहों पर इमली के चियों से पतली चुन्नट की गई है, और गले, बाँहों के सिरे तथा चारो ओर की किनार पर लखनऊ की चिकन का काम है। उनकी धोती यद्यपि आज भी चुनी हुई है, तथापि वह बहुत पतली है। त्रिलोकीनाथ के निकट ही मलका बैठी हुई गा रही है। उसकी वेष-भूषा यद्यपि पहले दृश्य के सदृश ही है, परंतु उसके कपड़े आज रेशम के न होकर पतले आबेरवाँ के हल्के गुलाबी रँगे हैं। उसके आभूषण जड़ाऊ, भारी न होकर हल्के मोती के हैं। त्रिलोकीनाथ के गले में चैती गुलाब की एक माला पड़ी है, तथा मलका के गले में भी उसी प्रकार की माला एवं भुजाओं तथा हाथों में उसी प्रकार के गुलाब के बाज़ूबंद और कंकण हैं। गुलाब की कुछ मालाएँ ख़ाली मसनदों पर सजी हुई हैं। त्रिलोकीनाथ के पास ही चाँदी की चौकी पर शराब के डिकैंटर और 'वाइन-ग्लास' रक्खे हैं, और वह गिलास पर गिलास चढ़ा रहे हैं। मलका के निकट एक चाँदी की चौकी पर चाँदी का गुलाब-पाश रक्खा है, जिसका गुलाब गाते-गाते मलका बार-बार त्रिलोकीनाथ पर छिड़कती और मुस्कराती है। दोनो के बीच में गद्दी पर चाँदी का पानदान है, तथा गद्दी के नीचे चाँदी का पीकदान।]

मलका—

गुलशन में कभी हम सुनते थे,
वह क्या था ज़माना फूलों का;
कलियों से कहानी कलियों की,
फूलों से फ़िसाना फूलों का।
क्या मौसमे-गुल पर इतराकर
हम गाएँ तराना फूलों का;
दो रोज़ में आनेवाला है
एक और ज़माना फूलों का।
फिर बादे-सबा वह आ पहुँची,
फिर रंग खिला, निकहत फैली;
ऐ लूटनेवालो, अब लूटो
मामूर ख़ज़ाना फूलों का।
शाख़ें भी बलाएँ लेती हैं,
पत्ते भी निछावर होते हैं;
अल्लह रे जवानी गुलशन की,
उफ़-उफ़ रे ज़माना फूलों का।
क्या ज़िक्रे-चमन, क्या फ़िक्रे-चमन,
क्या ज़ौक़े-चमन, क्या शौक़े-चमन;
दाग़ों से हमारा ख़ानए-दिल
है दौलतख़ाना फूलों का।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिंदाने-चमन यह सोचकर अब
हुशियार हुए दिन डूबने पर;
छलकेगा शराबे - शबनम से
एक - एक पैमाना फूलों का।

त्रिलोकीनाथ—(गायन पूर्ण होने पर ज़ोर से) शाहज़ादी ! ओ शाहज़ादी !

मलका—क्यों ?

त्रिलोकीनाथ—ये दोनो डिकेंटर ख़ाली हो गए न ?

मलका—(चौंककर डिकेंटर देखते हुए) अच्छा, तुम आज इतना पी गए ! ये दोनो भी ख़ाली कर दिए। चार पहले, और दो ये।

त्रिलोकीनाथ—नहीं, पहले चार में तो दो तुमने पिए थे।

मलका—पर चार कुछ कम होते हैं।

त्रिलोकीनाथ—अब तुम भी धमकाओगी। ओह ! इन धमकियों का कोई ठिकाना है।

मलका—मगर, प्यारे, डॉक्टर.....

त्रिलोकीनाथ—(अत्यधिक क्रोध से) अब अगर तुमने डॉक्टर का नाम लिया, तो मैं सिर पटक दूँगा।

मलका—लेकिन.....

त्रिलोकीनाथ—(क्रोध से) अगर, मगर, लेकिन कुछ नहीं। मैं अपना ख़ुद मुख़्तार हूँ। ज़िंदगी-भर जो चाहा, किया ; अब भी जो चाहूँगा, करूँगा। ओह ! कहाँ है वह हरामज़ादी शाहज़ादी। (फिर ज़ोर से) शाहज़ादी ! ओ शाहज़ादी !

मलका—वह शायद कहीं चली गई है। और शराब चाहते हो न ?

त्रिलोकीनाथ—तुम थोड़े ही लाओगी ?

मलका—मैं न लाऊँगी, तो तुम ख़ुद जाकर ले आओगे।

त्रिलोकीनाथ—ज़रूर।

मलका—(एक डिकेंटर उठाकर) अच्छी बात है, लाती हूँ।

त्रिलोकीनाथ—नहीं, दोनो भरकर लाओ।

मलका—प्यारे..... प्यारे !

त्रिलोकीनाथ—बस, धमकी नहीं, दिलरुबा, दोनो, ज़रूर दोनो लाओ।

मलका—(गिड़गिड़ाकर) मेरा इतना भी कहा न मानोगे।

त्रिलोकीनाथ—(मुस्कराकर) जब धमकाने से न माना, तब आरज़ू-मिन्नत करती हो। (गले में हाथ डालकर उसका मुँह चूमते हुए) दिलाराम, माफ़ करो, मैंने तुम्हें कुछ सख़्त अलफ़ाज़ कह दिए, पर तुम जानतीं नहीं कि आज दरअसल मेरी क्या हालत है।

मलका—(चौंककर) क्या कोई नई बात हुई है ?

त्रिलोकीनाथ—ज़रूर।

मलका—क्या, प्यारे ?

त्रिलोकीनाथ—बताऊँगा, पर यह मौक़ा तो वह बात बताने का नहीं। तुम जानती हो, तुम्हें और शराब को छोड़ दूसरी बातों के लिये मेरे वक़्त मुक़र्रर हैं। हाँ, तुम और शराब हर वक़्त...

मलका—(त्रिलोकीनाथ का मुख ध्यान से देखकर) नहीं-नहीं, तुम्हारे चेहरे से मालूम होता है कि कोई बड़ी बात है। मैं तो अभी, और ज़रूर अभी, उसे सुनूँगी।

त्रिलोकीनाथ—तब एक शर्त पर।

मलका—क्या ?

त्रिलोकीनाथ—पहले दोनो डिकेंटर भरकर ले आओ।

मलका—मुझे तो तुमने पहले ही काफ़ी पिला दी है।

त्रिलोकीनाथ—एक और सही। आज कुछ न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालो, दिलाराम, जो कुछ मैं कहूँ, वह करती जाओ।

मलका—अच्छी बात है, लाती हूँ।

[मलका दोनो डिकेंटर उठाकर जाती है। त्रिलोकीनाथ उठना चाहते हैं, पर उनसे उठा नहीं जाता। तब शांत होकर पुनः मसनद से टिक जाते हैं। अब कुछ सोचते हुए वह सामने की ओर देखने लगते हैं। उनकी दृष्टि में एक विचित्र प्रकार की निराशा दिखाई पड़ती है। कुछ देर पश्चात् एकाएक मुस्करा देते हैं, फिर दाहने हाथ से एक मसनद को ठोकने लगते हैं। मलका का दोनो डिकेंटर लिए हुए प्रवेश। मलका डिकेंटर चौकी पर रखती है।]

त्रिलोकीनाथ—(शांत होकर) पिलाओ, दिलरुबा, तुम मुझे पिलाओ, और मैं तुम्हें पिलाऊँगा।

[दोनो दो गिलास भरकर एक दूसरे को देते हैं।]

मलका—अच्छा, वह नई बात क्या हुई है, यह तो बताओ।

त्रिलोकीनाथ—(शराब पीकर) जगन्नाथ-रामनाथ व्यापारी का नाम जानती हो ?

मलका—(कुछ सोचते हुए) हाँ, कभी सुना तो है।

त्रिलोकीनाथ—उसने मेरे ख़िलाफ़ इनसाल-वेंसी-कोर्ट में दरख़्वास्त की है। (फिर पीता है)

मलका—(चौंककर आश्चर्य से) अच्छा, उसकी इतनी मजाल !

त्रिलोकीनाथ—उसकी नहीं, यह सब उसी रमाकांत की शरारत है।

मलका—वही चेंबर की प्रेसिडेंटी।

त्रिलोकीनाथ—(पीकर) हाँ, वही चेंबर की प्रेसिडेंटी।

मलका—प्यारे, मैंने तो पहले ही कहा था कि लात मारो इन सब झंझटों को। (कुछ ठहरकर सोचते हुए) अच्छा, देखो, मुझे एक बात सूझी है।

त्रिलोकीनाथ—वह क्या ?

मलका—अभी अगर तुम उस झगड़े से हट जाओ, तो यह दरख़्वास्त शायद वापस ले ली जाय।

त्रिलोकीनाथ—ओह ! इस धमकी के डर से। हरगिज़ नहीं। चाहे मेरा सब कुछ चला जाय, रहने का मकान और कपड़े भी न बचें, पर इन शोहदों के सामने मैं सिर न झुकाऊँगा, कभी नहीं। हरगिज़ नहीं। तुम तो जानती हो, मैं तो उस उसूल को माननेवाला हूँ कि जो चीज़ सबसे ज़्यादा तकलीफ़देह हो, उसे सबसे तेज़ ठोकर मारने की ज़रूरत है। (गिलास ख़ाली कर, ख़ाली गिलास मलका को देकर) भरो दिलरुबा, फिर भरो।

मलका—पर इतनी जल्दी-जल्दी।

त्रिलोकीनाथ—कुछ न कहो, एक लफ़्ज़ नहीं। आज भी शराब न पिऊँगा, दिलरुबा ! (मलका फिर गिलास भरकर देती है) क्यों दिलाराम, अगर मैं दर-दर का भिखारी हो गया, तो तुम भी मुझे छोड़ दोगी ?

मलका—(त्रिलोकीनाथ के गले में हाथ डालकर) प्यारे, दस साल से तुम्हारे पास हूँ। होश सँभालते ही तुम्हारे पहलू में आ गई, और तब से तुम्हीं को शौहर, तुम्हीं को सब कुछ समझा है। दस साल तक हाथी पर बैठने के बाद अब मलका किसी गधे पर सवार होगी ? दस साल तक मलका सच्ची मलका रहने पर अब गली-कूचों की ख़ाक छानेगी ? प्यारे, इतने दिनों तुम्हारे पास रहने पर भी तुम मुझे मामूली रंडी ही समझते हो ?

त्रिलोकीनाथ—(पीकर) नहीं, यह बात नहीं, लेकिन.....

मलका—(बीच ही में) इसके मुतालिक़ अगर तुम एक लफ़्ज़ कहोगे, तो मेरी बेइज़्ज़ती करोगे। (गर्व-भरे शब्दों में) मलका ऐसी-वैसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंडी नहीं। अगर वह ख़ुशहाली में तुम्हारे साथ रही, तो मुसीबत में भी तुम्हारे क़दमों की लौंडी बनकर रहेगी।

[त्रिलोकीनाथ उसे गले से लगाकर चूम लेते हैं।]

मलका—(कुछ ठहरकर) लेकिन प्यारे, यह प्रेसिडेंटी क्या इतनी बड़ी चीज़ है कि इसके पीछे इस तरह बरबाद हुआ जाय ?

त्रिलोकीनाथ—अब बात प्रेसिडेंटी की नहीं रही, दिलरुबा, यह तो आन की बात है। आन के लिये त्रिलोकीनाथ रुपया क्या, अपनी ज़िंदगी भी निसार कर देगा। (पीते हैं)

मलका—और चुनाव में अगर हार गए, तो ?

त्रिलोकीनाथ—वह दूसरी बात है। वह ख़ुद अपना सिर झुकाना तो नहीं हुआ न। (पीकर, कुछ ठहरकर) रमाकांत, बदज़ाद रमाकांत। अक़्लमंद आदमी तो समझने लगे हैं कि वह कैसा है। पर हाँ, मामूली आदमियों से अभी उसके काले कारनामे ख़ैरात की सफ़ेद चादर के भीतर छिपे हुए हैं। पर सच बात तो जल्दी ही चादर से बाहर आकर रहती है। एक दिन सारी दुनिया जान जायगी कि वह कैसा दोज़ख़ी है। ओह ! (पीकर दाँत पीसते हुए) ग़रीब मज़दूरों और किसानों का ख़ून पीनेवाले जोंक, दूसरे की बहू-बेटियों के पीछे घूमनेवाला कुत्ता, रुपया कमाने की मशीन.....(हाँफते हुए चुप हो जाते हैं)

मलका—प्यारे, प्यारे, यह क्या है ? यह क्या है ? इस ग़ुस्से से उसे नहीं, तुम्हारी तंदुरुस्ती को ही नुक़सान पहुँच रहा है।

त्रिलोकीनाथ—लड़ूँगा, दिलरुबा ! लड़ूँगा। चाहे तमाम दुनिया उसकी तरफ़ हो जाय, मैं अकेला लड़ूँगा। (पीकर) इनसाफ़वेंसी-कोर्ट में यहाँ के बड़े-से-बड़े बैरिस्टर को खड़ा करके लड़ूँगा, और जीत गया, तो उस जगन्नाथ-रामनाथ पर हतकइज़्ज़ती का दावा कर उसे मज़ा चखा दूँगा। (पीकर) जब तक दम रहेगा, लड़ूँगा। त्रिलोकीनाथ का सिर कभी न झुकेगा, कभी नहीं। (गिलास ख़ाली कर, ख़ाली गिलास देते हुए) भरो, फिर भरो दिलाराम, और कुछ गाओ, अच्छी-सी चीज़ गाओ। इस दुनिया से उस दुनिया में आने दो, जिसमें तुम्हारे, शराब के, फूलों के और गाने के सिवा पाँचवीं चीज़ नहीं। तुम्हारे गाने से इन फूलों की ख़ुशबू कहीं ज़्यादा बढ़ जाती है।

[मलका फिर गिलास भरकर त्रिलोकीनाथ को देती और अपना गिलास ख़ाली कर गाना आरंभ करती है। अब त्रिलोकीनाथ स्वयं भर-भरकर पीना आरंभ करते हैं।]

मलका—

बुलबुल का चुराया दिल नाहक़,
यह ख़ाम - ख़याली फूलों की;
लेती है तलाशी बादे-सबा
सब डाली-डाली फूलों की।
आलम है अनोखा कलियों का,
दुनिया है निराली फूलों की;
अल्लाह रे इस ख़ुशहाली पर
यह ख़ुश - इक़बाली फूलों की।
मिसले - बुलबुल निकहत से छुटे
दम-भर को चमन, मुमकिन ही नहीं;
होती है तसद्दुक़ फूलों पर
ख़ुद रहनेवाली फूलों की।
हर ज़र्रे पर, हर पत्ते पर
क़ुरबाने तसद्दुक़ करने को;
निकहत का ख़ज़ाना खोल दिया,
हिम्मत है य' आली फूलों की।

त्रिलोकीनाथ—(गाने के बीच में झूमते हुए) वाह-वाह ! क्या तान है। दिल के फूल की पंखुड़ियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंद-सी हो गई थीं, वे फिर इस तान से खुल रही हैं, दिलरुबा, खुल रही हैं।

[मलका आदाब बजाकर गाना जारी रखती है।]

हारों में गुँथे, जकड़े भी गए,
गुलशन भी छुटा, सीना भी छिदा ;
पहुँचे मगर उनकी गरदन तक,
यह ख़ुश-इक़बाली फूलों की।

त्रिलोकीनाथ—(फिर अधूरे गाने में ही गिलास चौकी पर रखते हुए घबराकर) आह ! दर्द ……

मलका—(चौंककर घबराते हुए) कहाँ दर्द ? कहाँ दर्द ? दिल में ?

त्रिलोकीनाथ—हाँ, वहीं है, पर कुछ फ़िक्र की बात नहीं। (छाती पर दोनो हाथ लगाते हुए) मुझे सहारा देकर उठाओ। मैं सोने के कमरे में चलूँगा।

[मलका सहारा देती है, पर जब साधारण सहारा देने से त्रिलोकीनाथ नहीं उठते, तब दोनो कंधों के नीचे हाथ डालकर उठाती है। वह उठ तो जाते हैं, पर एकाएक लड़खड़ाकर फिर बैठ जाते हैं।]

त्रिलोकीनाथ—ओह ! ज़ोर का, बहुत ज़ोर का दर्द है। डॉक्टर ……डॉक्टर को……

मलका—(ज़ोर से घबराकर) दरबान ! दरबान !

[जब वह नहीं आता, तब मलका दाहनी ओर के दरवाज़े के निकट जाती है।]

मलका—दरबान ! दरबान !

[दरबान का सफ़ेद वर्दी में प्रवेश।]

त्रिलोकीनाथ—ओह …… ओह…… ओ…

[छटपटाकर लेट जाते हैं। मलका और दरबान शीघ्रता से गद्दी के निकट आकर सँभालते हैं।]

मलका—(घबराहट के स्वर में) दरबान, डॉक्टर, फ़ौरन् डॉक्टर को……

दरबान—परंतु अब डॉक्टर क्या करेगा। यह तो संसार में न ……

[मलका रो पड़ती है।]

यवनिका-पतन

(आगामी अंक में समाप्य)

अशक्ति का कट्टर दुश्मन

आतंक-निग्रह गोलियाँ

शरीर में खरा जोश पैदा करके कैसा भी अशक्त पुरुष हो, उसे नौजवान बना देती हैं। ३२ गोलियों की डिब्बी की क़ीमत १)

आतंक-निग्रह-औषधालय
जामनगर, काठियावाड़

लखनऊ-एजेंट—
मेसर्स इंदरचंद एंड कंपनी, चौक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋग्वेद की एक भविष्य-वाणी (अथवा नैतिक पतन के गर्त में)

[श्रीप्रो० धर्मदेव शास्त्री, दर्शन-केसरी, दर्शन-भूषण, सांख्य-वेदांत-न्यायतीर्थ]

ऋग्वेद के दशम मंडल का दसवाँ सूक्त यमयमी-सूक्त के नाम से प्रसिद्ध है। इस सूक्त में यम और यमी का संवाद है। सूक्त में कुल १४ मंत्र हैं। इनमें से १, ३, ५, ६, ७, ११, १३ यमी के और २, ४, ८, ९, १०, १२, १४ यम के हैं।

यमी यम के साथ पति - पत्नी का संबंध करना चाहती है, और यम उसे ऐसा करने से रोकता है। यम ने एक स्थान पर कहा है—"अन्यमिच्छस्व सुभगे ! पतिं मत्" अर्थात् हे सुंदरि ! तू मुझसे पृथक् अन्य किसी पति की कामना कर।

इस सूक्त में यम ने अपने पक्ष की पुष्टि में कहा है—"आधाता-गच्छानुत्तरा युगानि यत्र जामयः कृण्वन्नजामि", अर्थात् वे युग आगे ही आएँगे, जब बहनें भी भाइयों से वैसा संबंध करेंगी, जो बहनों के योग्य नहीं, अर्थात् बहन-भाइयों का अनुचित संबंध होगा।

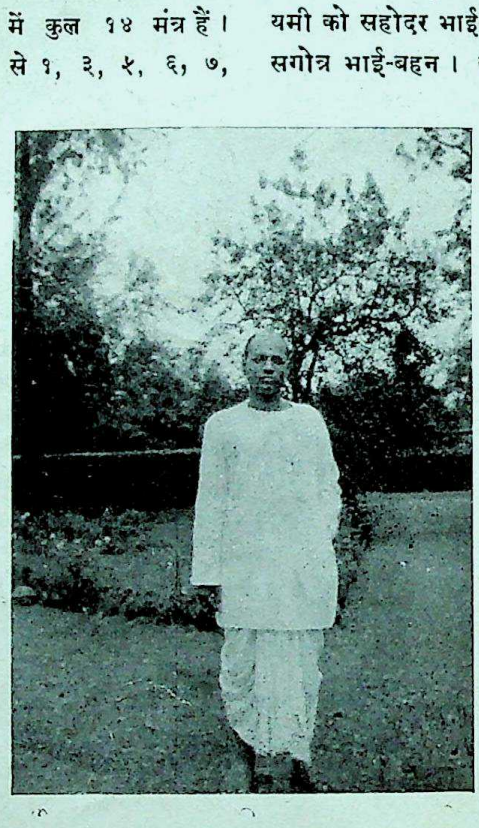

श्रीप्रो० धर्मदेव शास्त्री, दर्शन-केसरी, दर्शन-भूषण, सांख्य-वेदांत-न्यायतीर्थ

इस सूक्त में आए हुए यम-यमी शब्दों के अर्थ के संबंध में बहुत मतभेद है। कुछ लोग यम-यमी को सहोदर भाई-बहन समझते हैं, और कुछ सगोत्र भाई-बहन। कतिपय आचार्य यम-यमी का अर्थ विवाहित पति-पत्नी करते हैं।

हमारे विचार से यम-यमी भाई - बहन हैं। सूक्त में इसके कई प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। यम-यमी न तो सगे भाई-बहन हैं, न सगोत्र, अपितु समाज के वे स्त्री-पुरुष, जिन पर समाज ने अनुचित संबंध न करने का प्रतिबंध लगा रक्खा है, जो धर्म-व्यवस्था और मर्यादा के अधीन भाई-बहन हैं, यहाँ यम-यमी द्वारा अभिप्रेत हैं।

वास्तव में समाज के सब स्त्री-पुरुष भाई-बहन हैं। ऋग्वेद में एक स्थान पर कहा गया है—"स्वसारं जार अभ्येति पश्चात्" अर्थात् जो जार है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यभिचारी है, वह बहन के साथ व्यभिचार करता है, क्योंकि अविवाहित स्त्री-पुरुष समाज में भाई-बहन ही हैं। समाज ने जिनका संबंध वैवाहिक रूप में निश्चित कर दिया, उनके अतिरिक्त सभी के साथ भाई-बहन का ही संबंध रह जाता है। इसीलिये समाज के सभी स्त्री-पुरुष भाई-बहन हैं। इसी कारण गोत्र के अंदर शादी नहीं होती थी। जहाँ तक भी पुरुष का परिचय है, समीपता है, वहाँ तक भाई-बहन का नाता स्फुट है, अतः वहाँ विवाह करना निषिद्ध होता था। विवाह कर लेने पर स्त्री-पुरुष अनियंत्रित तो हो नहीं जाते, उल्टे नियंत्रित और वशी होने की ही उनसे आशा की जाती है। विवाह का आदर्श भी यही है। अतः उन दोनो को भी यम-यमी कहा जा सकता है, अर्थात् वे इस बात पर मजबूर हैं कि अपने से अतिरिक्त स्त्री-पुरुषों को भाई-बहन समझें।

यमयमी-सूक्त की उपर्युक्त भविष्य-वाणी का अर्थ यही है कि इस प्रकार के भाई-बहनों का अनुचित संबंध भविष्य में ही हो, अर्थात् सदा टलता रहे। ऐसे बुरे दिन वर्तमान काल में न आएँ, उनके संबंध में सदा यही कहा जाता रहे कि वे दिन आएँगे ही। आ गए, ऐसा न कहा जा सके। परंतु दुःख का विषय है कि ऐसे दिन अब आ गए हैं! यमयमी-सूक्त में तो यह भविष्य-वाणी उपर्युक्त प्रकार के भाई-बहनों के लिये आई है, परंतु आज यह सगे भाई-बहनों के संबंध में भी सत्य हो रही है।

थोड़े दिन हुए, योरप में एक डॉक्टर ने डॉक्टरी के अनुसार सगे भाई-बहनों के विवाह-संबंध को लाभकारक बताया था। वास्तव में योरप के लोग आदर्श-प्रिय हैं, वे बुराई-भलाई, सभी का आदर्श उपस्थित करने पर उद्यत रहते हैं। यदि कोई मूछें कटवाने का आदर्श उपस्थित करता है, तो दूसरा दो गज़ की मूछ बढ़ाने में परेशान है। यदि कोई स्त्री अंधे पति की तलाश में धन आदि की उपेक्षा करके निर्धन युवा से संबंध करने के लिये तत्पर है, तो दूसरी ८० वर्ष के बुड्ढे के साथ विवाह करने पर तैयार है--स्वयं १७ वर्ष की अवस्था में भी। परंतु इतना मानने में तो किसी भी तत्त्वदर्शी को इनकार नहीं करना चाहिए कि योरप के स्त्री-पुरुषों का चरित्र नैतिक दृष्टि से इतना पतित नहीं, जितना इस समय भारत के स्त्री-पुरुषों का है।

भारत में, वैयक्तिक रूप में चरित्र के लिये सब कुछ अर्पण कर देनेवाले स्त्री-पुरुष आज भी मिलेंगे, और उन्हीं पर देश जीवित है, परंतु समूचे राष्ट्र का नैतिक जीवन बहुत निंदित हो रहा है। दुःख की बात तो यह है कि यह बीमारी शहरों में न रहकर अब गाँवों में भी चली गई है, और देश के होनहार युवक, बालक, सब पर इसका प्रभाव पड़ रहा है।

आज इस बात को दस वर्ष हो गए हैं। तब, अर्थात् सन् ३० में, मैं बनारस में रहा करता था। वहाँ आर्य-समाज के विधवा-आश्रम में एक स्त्री प्रविष्ट कराने के लिये लाई गई। वह गर्भवती थी, और उसके घर के लोग उसे ग्रहण के अवसर पर गंगा-स्नान के बहाने लाए थे, और काशी के दशाश्वमेध-घाट पर अकेला छोड़कर चले गए थे। उसने जो अपना वक्तव्य दिया, उसे सुनकर मैंने तब विश्वास नहीं किया था। उसने कहा—"मेरा यह गर्भ मेरे सहोदर भाई का है। मेरी अंतरात्मा इस बात पर विश्वास न करती थी कि सहोदर भाई का सहोदरी बहन के साथ भी इस प्रकार अनुचित संबंध हो सकता है। परंतु आज सार्वजनिक जीवन में कुछ घुसने पर प्रतीत होता है कि यह घटना भी सत्य हो सकती है।

सहोदर भाई-बहनों के संबंध की अन्य भी कई घटनाएँ सुनने में आई हैं, जिनके संबंध में बहुत पूछ-ताछ पर यही निश्चय होता है कि वे सत्य ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होंगी। एक गाँव की घटना है कि एक पिता का आत्मजा पुत्री से अनुचित संबंध हो गया। उसके गर्भ रह गया। पूछने पर उसने स्पष्ट कह दिया कि यह गर्भ मेरे पिता का है। तब उसे किसी प्रकार दबाया गया। पिता ने पुत्री की हत्या का भी विफल प्रयत्न किया।

सौतेली मा भी तो मा ही है, परंतु उसके साथ पुत्रों के संबंध की अनेकों कथाएँ शहरों तथा गाँवों में भी होती हैं। सास, साली, मौसी, चाचे की लड़की आदि के अनुचित संबंधों की गणना ही नहीं। थोड़े दिन हुए, मुझे एक ऐसे व्यक्ति ने, जिस पर अविश्वास नहीं किया जा सकता, बताया कि सगी माता के साथ भी एक आत्मज पुत्र का अनुचित संबंध है, तब मेरे आश्चर्य की सीमा न रही। मैंने सोचा, ऐसे अभागे देश का क्या होगा? इतना नैतिक पतन! हद है।

इधर जब से स्त्री-पुरुषों का मन नहीं मिलता, अथवा वे घर का काम करने में अपमान समझते हैं, और साथ ही भड़कीले, विषय-वर्धक सामान उत्पन्न हो गए हैं, लोगों की आवश्यकताएँ बढ़ गई हैं, बाहर भी सिनेमा, थिएटर, उपन्यास, खेल-तमाशे, सभी कुछ विषय-भोग बढ़ानेवाली ही सामग्री दृष्टिगोचर होती है, धर्म, ईश्वर, बिरादरी, जाति, सभी की उपेक्षा हो चली है—भय किसी का रहा ही नहीं। तब क्यों न इस प्रकार के नैतिक पतन का वातावरण पैदा हो। इसके पैदा करने में तो कोई प्रयत्न करना ही नहीं पड़ता। हाँ, रोकने के लिये प्रयत्न की आवश्यकता है—

"प्रवृत्तिरेषा भूतानां निवृत्तिस्तु महाफला।"

कुछ समय हुआ, मदरास की ओर कुछ युवक-युवतियों ने इस प्रकार के विचारों का प्रचार प्रारंभ कर दिया था कि विवाह का बंधन मनुष्यता के विकास में बाधक है। विवाह के विना ही स्त्री-पुरुषों को आपस में अनुचित संबंध कर लेना चाहिए। इसका पूज्य महात्मा गांधीजी ने 'हरिजन' के अंकों में बहुत प्रबल विरोध किया था।

मैं एक साम्यवादी सज्जन को जानता हूँ, जो कहा करते हैं—"विवाह न करके वेश्या-वृत्ति द्वारा विषय-तृष्णा की पूर्ति करना श्रेयस्कर है। इसलिये मनुष्य विवाह करने के बंधन से छूट सकता और देश की अधिक सेवा कर सकता है।" परंतु, मैं कहता हूँ, उपर्युक्त प्रकार के अनाचार और पतन से तो वेश्या-वृत्ति अच्छी है। वेश्या और वेश्यागामी अपने रूप को छिपाते नहीं। समाज उनका मूल्य आँक सकता है, बच सकता है। परंतु इस प्रकार घर-घर में वेश्यालय खोलना और समाज में श्रेष्ठ बने रहना कितना घातक है!

गाँवों, क़स्बों और शहरों में अब नौजवान इस प्रकार के अनाचार के लिये संगठित होकर काम किया करते हैं। जिन नौजवानों पर देश का भविष्य निर्भर है, वे ही इस प्रकार के दुराचार का पोषण कर रहे हैं।

विवाह करके भी अनेकों इस प्रकार के कामों में सफलता प्राप्त करना हिम्मत का काम समझते हैं।

यह सब भी क्षम्य है, परंतु दुःख तो यह है कि अब शहरों की स्त्रियों में भी आचार की वह मर्यादा नहीं रही। ऊँचे, बड़े-छोटे, सभी घरों की स्त्रियों में अब यह दुराचार की मात्रा घर कर रही है।

हमारे देश का वातावरण ही दूषित हो रहा है। गाना, बजाना, खाना-पीना, घूमना, मिलना, सभी में दुराचार की चर्चा है। देश के विचारक नेताओं तथा धार्मिक संस्थाओं को इसका प्रबल विरोध करना चाहिए। एक तो देश परतंत्र है, यदि इस प्रकार नैतिक पतन की वृद्धि होती रही, तो हमारा क्या होगा?

अब तो देश में उसी पुराने वेद के आदर्श को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनर्जीवित करना चाहिए कि सभी स्त्री-पुरुष भाई-बहन हैं।

जो पुरुष अथवा स्त्री आचार-हीन है, उसका जीवन नरकमय हो जाता है। गार्हस्थ्य जीवन तो शंका-पूर्ण रहता है। जो पुरुष व्यभिचारी है, वह अपनी पत्नी पर सदा संदिग्ध दृष्टि रखता है। वह अपनी प्रेयसी की तरह उसे भी दुराचारिणी समझता है। साथ ही संतान तो उसकी अच्छी कभी हो ही नहीं सकती। देश के लिये उसने एक बोझ पैदा किया। बस, फिर इधर-उधर मुँह मारने की यह आदत उसे न तो घर का रखती है, और न घाट का। यही अवस्था स्त्रियों की भी है।

हिंदू-घरों में पुत्री और पुत्र-वधू में भेद नहीं समझा जाता था। हमारे घर से पुत्री अथवा बहन दूसरे के गई है, और दूसरी पुत्री अथवा बहन आ गई है, यह कितना सुंदर आदर्श है!

परंतु आज पुत्र-वधू के साथ श्वशुर के अनुचित संबंध की अनेकों घटनाएँ सुनने में आती हैं। यह एक साधारण बात हो गई है।

यदि ये बातें रोकी न गईं, तो देश का भविष्य बहुत अंधकार-पूर्ण है।

मनुष्य के विचारों का प्रकृति के विधान पर भी प्रभाव पड़ता है। मनुष्य के विचारों की विद्युत् ही प्रकृति की संचालिका विद्युत् का संचालन करती है। अतः जो पुरुष इस प्रकार के कुविचार करता है, तथा उसे कार्य-रूप में परिणत करता है, वह अपने पास के वातावरण को, प्रकृति के विधान को दूषित करता है। मेरा विचार है, इन्हीं कुकृत्यों का फल हम भोगते हैं, जब भूकंप आते हैं, अथवा अतिवृष्टि और अनावृष्टि होती है।

देश के कर्णधारों को इस पर विचार करना चाहिए।

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूर-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से—जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से—बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुखार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सरदी, जुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुखार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।), डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥।-)
२५ ,, ,, ,, ५≡)

श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परेशान

[श्रीकालीचरण चटर्जी एम्० ए०]

(पूज्य काली बाबू हमारे शिक्षा-गुरु हैं। इंट्रेंस में आपने हमें अँगरेज़ी, इतिहास, भूगोल पढ़ाया था। आपका अँगरेज़ी पर अच्छा अधिकार है, उसी के फल-स्वरूप प्रांत-भर में प्रथम आने पर अँगरेज़ी का नेस्फ़ील्ड-स्कॉलरशिप पाने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ था। आप इतिहास के भी विशेषज्ञ हैं, और इन प्रांतों के अनेक स्कूलों में हेडमास्टर रहकर आपने अपने को सुयोग्य शिक्षक भी सिद्ध किया है। आजकल आप रिटायर होकर, बंगाली होकर भी राष्ट्र-भाषा की सेवा कर रहे हैं। हमारे अनुरोध पर आपने हिंदी में अनेक अच्छी कहानियाँ लिखी हैं।—सुधा-संपादक)

औरों का अनुभव मैं नहीं कह सकता, परंतु मेरे दस वर्ष के विवाहित जीवन का कड़ुवा तजुर्बा यह बतलाता है कि ऐसे जीवन में रात्रि के समय विघ्न-रहित नींद असंभव है। फिर भी एक सुविधा यह कि 'चें-में' करनेवाले परमपिता परमेश्वर की असीम अनुकंपा से कोई नहीं, न देवीजी के ज़ेवर की ज़ोरदार फ़रमाइश ही जब-तब रहा करती है, तथापि एक दिन की घटना सुनिए—

स्कूल से आकर कुछ सुना ही नहीं था। इंस्पेक्टर साहब के आगमन के उपलक्ष में स्कूल का काम समाप्त कर घर लौटने में सायंकाल के ७ बज गए थे। कुछ जल-पान कर मुहल्ले के स्वनामधन्य रायसाहब के यहाँ 'ब्रिज' खेलने चला गया। वहाँ से घर आते १० बज गए। आते ही महराजिन ने सुसमाचार सुनाया—"माजी 'सलीमा' देखने गई हैं, मामाजी के साथ।"

मामाजी का नाम था युगलकिशोर, उर्फ़ 'जग्गू'—देवीजी के छोटे भाई। यह हज़रत हरदोई में वकालत करते हैं। स्वाधीन पेशा ठहरा, सुतरां मन में तरंग उठते ही तफ़रीह के लिये लखनऊ चले आए हैं, और टाकी, ड्रामा, बिसमिल्ला बेगम का नाच आदि देखकर मन बहला रहे हैं।

ख़ैर, भोजनादि से छुटकारा मिलने पर जगे रहने के उद्देश्य से मैं एक रोमांचकारी 'डिटेक्टिव' उपन्यास पढ़ने लगा। ऊपर से मालूम होता था, ख़ूब पढ़ रहा हूँ, किंतु आँखों के दो पुट मिलकर न-जाने कब जवाबी पोस्ट-कार्ड हो गए, कुछ पता नहीं चला। हठात् किसी ने ज़ोर से धक्का देकर मेरी नींद उचाट दी। हड़बड़ाकर उठ बैठते ही प्रसन्न-वदन देवीजी मुस्कराती हुई बोलीं—"बायस्कोप देख आई।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं मुँह बनाकर बोला—"कृतार्थ हुआ।" फिर असंतोष-व्यंजक स्वर से, विरक्ति-पूर्ण वाणी में मैंने कहा—"मैं तो समझा था, शायद भूडोल आया या डाकुओं ने मकान पर हमला कर दिया।"

'एसेंस' की महक से कमरा भरपूर और देवीजी का लक़दक़ वेश-विन्यास—प्याज़ी रंग की, पार्सी साड़ी, आसमानी रंग का मख़मली जंपर, पैर में कामदार नागरा। उन्हें देखा नींद-भरी आँखों से; प्रतीत हुआ, वसंत-श्री की साक्षात् ललित-ललाम मूर्ति सामने विराजमान है। बग़ल के तकिए को पकड़कर करवट बदलते ही देवीजी बोल उठीं—"बाप रे बाप, ऐसा निधड़क सोनेवाला तो मैंने कहीं देखा ही नहीं। ज़रा सुनो तो।"

नींद के मारे मैं कितना विकल था, इसकी कौन परवा करता है? वह तो थीं अपनी धुन में विभोर। हताश होकर बोला—"कहो न; किंतु स्कूल में दिन-भर हेडमास्टर साहब की चायँ-चायँ, उस पर 'ब्रिज' में बुरी तरह हार; अतः अगर तुम मुझ पर इस समय थोड़ी-सी दया करो, तो मेरे पूज्य पिता से प्राप्त ये प्राण बच जायँ। एक बजना चाहता है—तुम भी चित्र की उत्तेजना मिटाने के लिये सिर पर गुल-रोग़न, छोड़ शीतल होकर सो जाओ।" लेकिन मेरी नम्र प्रार्थना चिकने पत्थर पर पानी की तरह बह गई, और देवीजी के आनंदोज्ज्वल मुख-मंडल पर अगाध गांभीर्य काली छाया की भाँति छा गया। परित्राण पाने का कोई उपाय नहीं सूझा; उनका मान-भंग करने के लिये अगत्या प्रश्न किया—"किस ड्रामा में गई थीं?"

"बहरे हो गए हो क्या? कहा तो, बायस्कोप देखने गई थी।"

"बायस्कोप या तेईस्कोप?"

"वह क्या?"

"जो बायस्कोप बोलनेवाला होता है, उसे मैं तेईस्कोप कहता हूँ।"

"इतना मस्ख़रापन तुम्हें मालूम है!"

"ख़ैर, तो किस सिनेमा में गई थीं?"

"यह तो याद नहीं है—दाढ़ीजार का न-जाने क्या नाम था? अरे उस मार्केट के पास।"

"वहाँ तो कई एक सिनेमा हैं न?"

"ये सब तो मैं जानती नहीं। गाँव की गोद में किशोर अवस्था तक पली हुई, सच्चे हिंदू-घर की कन्या दस वर्ष पहले तुम्हारे यहाँ आई थी। कर्तव्य-परायण माता-पिता से जो शिक्षा मिली है, उसी के बल पर तुम्हारे घर के मामलों में आधिपत्य कर रही हूँ। नए युग की आवश्यकताओं से परिचित नहीं; इसलिये मेरी ख़र्चीली आदत भी नहीं; न मेरी दूसरे पुरुष के साथ नाचने, घूमने, सिनेमा आदि देखने की जघन्य प्रवृत्ति ही है, जो कुप्रवृत्ति आजदिन स्त्री-पुरुष के मधुर संबंध को कटु बना रही है—युवक-युवतियों के अभिभावकों को बुरी तरह परेशान कर रही है। भारतीयता छोड़ पश्चिमीय सभ्यता, रीति-नीति का अंधा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नुकरण कर सुख-शांति, पवित्रता, सच्चरित्रता का लोप ....."

"अरे चुप-चुप; एक बजना चाहता है. यह व्याख्यान देने का समय थोड़े ही है; तुम्हारा व्याख्यान कल सुन लूँगा; अब जल्दी-जल्दी टट्टू आगे बढ़ाओ। कहो तो सही, विषय क्या था ?"

"कैसे कहूँ ? प्रोग्राम ख़रीदा नहीं। कहा जग्गू से; वह बोला—'क्या होगा ख़रीदकर ? सब तो समझोगी नहीं।' जो हो, उस लौंडे का यानी नायक का कैसा भद्दा गला था ! जब मीड़ में आवाज़ आती था, उस समय उसका गला कैसा भर्राता था; मगर मूर्च्छना की आवाज़ ने तो उसे भी मात कर दिया था। हँसते-हँसते पेट फूल गया; मुँह में रूमाल ठूँसकर हँसी को ज्यों-त्यों रोका। स्टेज के ऊपर लाल रोशनी के अँगरेज़ी-अक्षरों में शायद लिखा हुआ था—'चुप रहो।'"

"लड़के का क्या नाम था ?"

"कहा तो है, प्रोग्राम नहीं ख़रीदा गया।"

"ठीक-ठीक, ग़लती हो गई।"

सोचा, अब कदाचित् देवीजी शांत हो जायँगी। किंतु हरे-हरे ! मेरी आशा के अंकुरों पर एक क्षण में पाला पड़ गया। देवीजी ने फिर शुरू किया—

"मगर बाजा बड़ा अच्छा था। आइस-क्रीम के भी दर्शन हुए; किंतु बेचनेवाले के हाथ से लेकर खाने को जी नहीं चाहा, यद्यपि वह काफ़ी साफ़-सुथरा था। और हाँ, उस दिन तुम लोगों के प्रसिद्ध हिंदू होटल में भी गई थी; राम-राम ! रसोइया उघारे बदन परोस रहा था—पसीना और झोल मिलकर मानो गंगा-जमुना का संगम हो रहा था।...और एक बात याद आ गई। जग्गू ने जब 'ब्वॉय' कहकर पुकारा, तो देखा, एक हट्टा-कट्टा, ४० वर्ष का, दाढ़ी-मूछवाला जवान आदमी आ हाज़िर हुआ। 'ब्वॉय' माने तो जानती थी 'छोटा लड़का', उसे देखकर मैं तो अथाह आश्चर्य में डूब गई। फिर हमारी 'सीट' के सामने एक गोरा और एक मेम बैठी थी; मैं तो छोटे क़द की हूँ; चित्र देखने के लिये एक दफ़े इस तरफ़ सिर झुकाया, और एक दफ़े उस तरफ़—ऐसा करते-करते गरदन में दर्द हो गया है।"

"बहुत-से लोग ऐसे होते हैं, जो दूसरों की असुविधाएँ नहीं समझते, या समझकर भी नहीं समझना चाहते।"

"हाँ, तुम्हारा कहना बिलकुल ठीक है।... फिर देखा अनेकानेक अपने भाइयों को, जो चित्र न देखकर उस मेम को देख रहे थे।.. अच्छा, सच बताओ, तुम लोग क्या इसी-लिये सिनेमा देखने जाते हो ? क्या ही नुमाइशी सूरत ! राम-राम ! ओठों पर लाल रंग, बैठे हुए गालों पर पाउडर की एक मोटी परत, घुटने के ऊपर तक उघरा हुआ, हया-शर्म छू ही नहीं गई है। बलिहारी है इस सभ्यता की, और बलिहारी है तुम लोगों की निगाह की !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है, ठीक है; फिर तुमने भी तो यही सब देखा है, चित्र नहीं देखा न ?"

"राम का नाम लो ; छिः-छिः !"

"हाँ, तो कथानक क्या था ?"

"कथानक मैं समझी थोड़े ही हूँ—सब अँगरेज़ी गिटपिट। अँगरेज़ी में मेरी विद्या की दौड़ प्राइमर तक। फिर तुमसे पाला पड़ा है—लिखना-पढ़ना गया जहन्नुम में, घर-गृहस्थी से....."

"घर तो है; लेकिन गृहस्थी ?—सो तो ईश्वर की कृपा से उसका यहाँ झमेला ही नहीं।"

"हाँ-हाँ, तुम बड़े बकवादी हो। हाँ, ख़ाक कथानक ? उसमें समझना-समझाना क्या है ? देखा, एक लड़का एक लड़की के प्रेम-पाश में बुरी तरह फँस गया, फँसकर प्रेमिक-प्रेमिका के जघन्य गुंडेपन का नग्न अभिनय, उनका उन्मत्त प्रेमालाप और गाना। अंत में नायिका मर गई।"

परंतु झपकी आ जाने के कारण अंत के दो शब्द के सिवा कुछ सुन नहीं पाया; तुरंत सचेत होकर पूछा—"कौन मर गया ?"

"नायिका ! अरे नहीं-नहीं; नायिका नहीं मरी; वह तो पारसाल की बात है—जिस सिनेमा में मैं तुम्हारे साथ गई थी, यह उसमें था। एँः, सब गड़बड़ हो गया इसमें नायिका नहीं मरी।"

मुझसे अब रहा नहीं जाता था। डेढ़ बजे का घंटा सुनाई दिया। बोला—"नायिका हत-भाग्य है।"

"सो क्यों ?"

"सो क्यों ? उस ससुरी के मरने से सबको आराम मिलता; तुम जल्दी लौट आतीं, मैं अब तक तानकर शांति से गहरी नींद में सो रहता, और नायक भी निहाल हो जाता।"

"आख़िर क्यों ? उन दोनों में इतनी मुहब्बत थी !"

"मुहब्बत ?—देखते, नायिका के मर जाने से नायक और एक युवती के साथ ठीक वैसी ही रास-लीला कर रहा है।"

"यह तुम लोगों से ही संभव है।"

"और तुम लोगों से भी...न, न, त्योरी न चढ़ाओ। इसके माने तुम नहीं—यानी मेरी बात तुम पर लागू नहीं है—मेरे कहने का मतलब यह है कि उनके देश की रँगीली, अलबेली रमणियाँ ऐसा कर सकती हैं।"

मेरी एक भी नहीं सुनी; देवीजी एकदम बिगड़ उठीं—उनका मुँह लाल हो गया, और आँखें फैल गईं। इस परिस्थिति में मेरा तेज़ी पकड़ना मूर्खता होती, सुतरां सारा गुड़ गोबर होता हुआ देख मैं घिघियाकर बोला—"देखो, तुम व्यर्थ के लिये नाराज़ हो गईं। कौन नहीं जानता कि यह देश सती-साध्वियों का देश है। पातिव्रत-धर्म के लिये भारतवर्ष का नाम अभी तक दुनिया के नक़्शे में मिलता है—भारतवर्ष के आदर्श सती-धर्म की महिमा जगत्-प्रसिद्ध है। हम सब मरकर भी जीवित हैं—यह केवल तुम लोगों के पुण्य-प्रभाव से। देखो, अब मुझे भी व्याख्यान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देने की विकट इच्छा हो रही है, परंतु चिल्लाकर; अफ़सोस ! लाचारी है, क्योंकि एक तो दो बजने चाहते हैं; दूसरे, मुहल्ले के लोग निरा गद्य होने के कारण मेरी इस बेवक़्त की चिल्लाहट सुनकर मुझे बरेली या आगरा भेजने का प्रबंध करेंगे।"

"जाओ, तुमसे बोलना नहीं चाहती।"

यह उत्तर सुनकर मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ; मन-ही-मन विचारा कि ऐसी ही बुद्धि सरस्वतीजी दें, ताकि मैं मज़े में सो जाऊँ। किंतु दुर्भाग्य की बेड़ियों में जकड़ा हुआ मैं—मुझे चैन कहाँ ? थोड़ी देर तक देवीजी की जिह्वा पर चुप्पी का ताला पड़ा रहा सही, परंतु उनकी अल्हड़ खोपड़ी के अंदर उस समय भी वाक्पट के चित्र चक्कर लगा रहे थे। सुतरां उन्होंने मेरी देह हिलाकर कहा—"सुनो, कौन मर गया। एक को तो मरना ही पड़ेगा न ?"

"एक को नहीं, सबको। तो तुम शायद यह समझी हो कि कन्सार्ट पार्टी के कार्नेट बजानेवाला मर गया।"

"अरे न, न; तुम बड़े वैसे आदमी हो।... किंतु एक लड़के को देखा बहुत ही सुंदर; मानो भगवान् ने उसके शरीर को सुंदरता का ख़ज़ाना सौंपा था। मैंने सोचा था, और जग्गू ने भी कहा कि वह भी उस लड़की के प्रेम में फँस गया था। लेकिन था वह बहुत ही रूपवान्। अगर प्रोग्राम होता, तो दिखाती उसका चित्र। अहा ! ऐसे एक लड़के से स्नेह करना....."

देवीजी के वाक्य को समाप्त न होने देकर एवं बनावटी विस्मय तथा क्रोध प्रकट कर बिस्तर पर उठ बैठा, और आँखें निकालकर तथा चिढ़कर बोला—"ऐं, क्या कहा तुमने ? उससे तुम प्रेम करना चाहती हो ? ओफ़्फ़ोह ! उसे मैं जान से मार डालूँगा। एक नारी दो मनुष्यों से कभी सच्चा प्रेम नहीं कर सकती। मैं कल ही उसको चैलेंज देकर पत्र लिखूँगा।"

एकाएक मेरी रौद्र मूर्ति देखकर देवीजी घबरा गईं—उनका मुँह पीला पड़ गया। पंचवटी की कुटिया में रामचंद्रजी सीताजी को न पाकर शायद इतने न घबराए होंगे। संदेह-पूर्ण दृष्टि से मुझे घूरकर बोलीं—"ऐं, यह तुम क्या कह रहे हो ? मेरा कहना तो तुमने अंत तक सुना ही नहीं, फिर कहते हो कि ख़त भेजोगे ? तुम पागल तो नहीं हो गए हो ? भला, तुम उसे पहचानते हो ?"

गंभीरता का आवरण ओढ़कर बग़ल के गिरदे को फिर से घसीटते हुए लेट गया, और थोड़ा नरम होकर बोला—"हाँ, पत्र ज़रूर भेजता, अगर उसका नाम या पता मालूम होता। इधर प्रोग्राम भी नहीं है, और स्कूल के मुंशी के लिये विलायत जाने का स्वप्न देखना हवा को तलवार से काटने के बराबर है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिमालय के अंतराल में

[श्रीयुत रामेश्वरदयाल दुबे एम्० ए०, साहित्यरत्न]

मैं ने कहीं पढ़ा था—"अपने सुख, विलास, शोभा और सजावट को दृष्टि में रखकर जो प्रकृति से प्रेम करते हैं, वे केवल विलासी हैं। वे प्रकृति के सच्चे उपासक न होकर केवल तमाशबीन हैं। शहरों के पार्कों में पौधों, वृक्षों और लताओं को मनुष्य की क़वायद करते देखकर प्रसन्न होनेवाले अपना रूप ही सर्वत्र देखना चाहते हैं। अपने से बाहर देखना उन्हें अच्छा नहीं लगता। यह है हृदय-हीनता, अपनापन और अहंकार।"

श्रीनगर और उसके आस-पास भी प्रकृति-नटी को मनुष्य की क़वायद करनी पड़ी है। निशात-बाग़ में यदि गिरि-अंक-विहारी, स्वच्छंद झरने को, मुग़ल-सम्राट् के इशारे पर, ज्योमित की विभिन्न नालियों में अपना जीवन बहाना और उछालना पड़ा है, तो शालामार-बाग़ में उसे प्राण घोटनेवाले अनेकों नलों के बहुछिद्र-द्वारों पर कूद-कूदकर बेगमों का मनोरंजन करना पड़ा है। आज भी न-जाने कितने सलीम अपनी नूरजहाँओं के साथ, और न-जाने कितने शाहजहाँ अपनी मुमताजों के साथ इन विलास के बाग़ों में विहार करने आया करते हैं। मेरे लिये और मेरी पार्टी के लिये भी इन बाग़ों में काफ़ी आकर्षण था, जिससे खिंचकर दो बार उनकी शोभा देखने के लिये पहुँच गए। पर प्रत्येक रविवार को जाने का आकर्षण हमने अनुभव नहीं किया। हाउस-बोट पर, दो यात्राओं में, १५ दिन बिता ही चुके थे, इसलिये हिमालय के अंतराल में घूमने का विचार किया गया।

विभिन्न उद्देश्यों को लेकर लोग काश्मीर घूमने आया करते हैं। कोई तो पंजाब और यू० पी० की गर्मी से घबराकर इधर आते हैं, तो कोई स्वास्थ्य के विचार से तंदुरुस्त बनने के लिये। अमरनाथ-दर्शन की लालसा भी किन्हीं धार्मिक भाववाले भावुकों को खींच लाती है। पर हम लोग और ख़ासकर मैं तो काश्मीर घूमने, केवल घूमने के लिये आया था। इसलिये किसी स्थान पर बहुत समय ठहरना अच्छा न लगता था। अधिक-से-अधिक स्थान देखने की इच्छा और उत्सुकता हमारी नस-नस में उमंग और उत्साह भर रही थी। सभी प्रकार के कष्ट झेल लेने के लिये हमारे हृदयों में साहस हिलोरें ले रहा था। सौभाग्य की बात इतनी थी कि पार्टी के सभी व्यक्तियों की मनोदशा क़रीब-क़रीब एक ही तल पर थी, यद्यपि उम्र के विचार से हमारी पार्टी में ८ से लेकर ८० वर्ष तक के व्यक्ति थे, और मील या दो मील चलकर थकनेवाली आधुनिक स्त्रियों की प्रतिनिधि भी एक-दो नहीं, चार तक साथ थीं, पर सौभाग्य से १० मील तक चलकर भी न थकनेवाली थीं।

'काश्मीर-गाइड' और अन्य प्राप्त समाचारों के आधार पर हम लोगों ने अपने भ्रमण का प्रोग्राम बनाया। यह क़रीब २४ दिन का था, और बाँदीपुर से प्रारंभ होनेवाला था। एक योग्य पथ-दर्शक भी अपने साथ रखना निश्चय किया, और उसी की सलाह से हमने इस यात्रा की तैयारी प्रारंभ कर दी। दो तंबू, कुर्सी-मेज़, चटाई, मिट्टी का तेल, परेकदार चयली, चमड़े के मोज़े, खाने-पीने का आवश्यक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामान, कुछ दवाइयाँ, काफ़ी ऊनी कपड़े और कुछ नोकदार पहाड़ी छड़ी आदि लेकर हम तैयार हुए। उपर्युक्त सामान लेने में हमने एक ग़लती की। व्यावहारिक जीवन में हम लोग मेज़-कुर्सी से इतने लिपट चुके हैं कि वे अब हमारे जीवन का एक अंग ही बन गई हैं। हम सोचने लगते हैं, इनके बिना हमारा काम कैसे चलेगा? पहाड़ों में घूमने के लिये जब हम लोग तैयारी करने लगे, तो किसी को भी यह ध्यान नहीं आया कि पहाड़ों

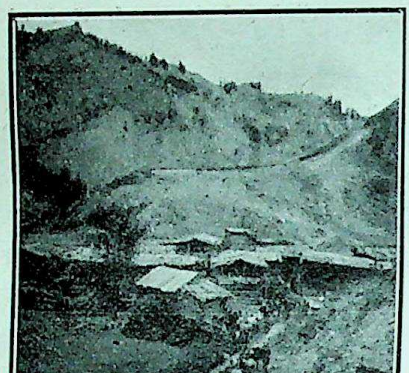

केवल लट्ठों से बने हुए घरों का एक गाँव

की ऊँची-नीची घाटियों में, जहाँ दिन-भर चलना और रात थककर सो जाना ही काम होगा, इन मेज़-कुर्सियों से क्या लाभ उठाया जा सकेगा? चार कुर्सियाँ और एक मेज़ हम व्यर्थ लादे-लादे फिरते रहे, और उनके ढोने में व्यर्थ ही २०) के क़रीब ख़र्च किया। उनका महीने-भर का किराया देना पड़ा, सो अलग।

हाँ, तो ६ जून को ३ बजे हम लोग बाँदीपुर के लिये रवाना हुए। लॉरी झेलम के किनारे सड़क पर अपनी रफ़्तार से जा रही थी। दृश्यों में कोई नवीनता न थी, क्योंकि हाउस-बोट से यह सब देख चुके थे। झेलम को पार कर हम उस मनोरम मानसबल के तट से गुज़रे, जिसे झीलों की रानी ही कहना चाहिए। मानसबल का सौंदर्य उसकी अपनी चीज़ है। निर्मल जल की लोल लहरियाँ और उसके जल-तल के शीशे के नीचे सजी हुई, अपनी ही शोभा पर बलि-बलि जानेवाली, इठलाती और इतराती जल-बेलें और सुंदर पौधे किसे नहीं मंत्र-मुग्ध कर लेंगे। कौन नहीं उनकी शोभा पर सहर्ष न्योछावर हो जायगा?

लॉरी हमें बहुत दूर ले जा चुकी थी। वह हरे-भरे खेतों और बेंत के वृक्षों के बीच में, पहाड़ी सड़क पर, उछलती-कूदती-सी जा रही थी। आगे, सड़क के किनारे, हृदयहारिणी हरियाली से ललित-कलित अनार के मनोरम कुंज शीतल समीरण के मंद-मंद झोंकों में झूम रहे थे। हरियाली के बीच मौन मुसकान से मुखरित, कोमल कुसुम-कलियाँ किस रूप-राशि के अरुण अधरों को लज्जित न करती थीं। अस्ताचल पर उतरते हुए दिनकर की अंतिम किरणों से आलोकित इन सजीव सुषमा के हरित कुंजों का दृश्य ही अनोखा और अद्भुत था।

६½ बजे बाँदीपुर पहुँचे। गाँव के दूसरी तरफ़ पास की पहाड़ी से लगे हुए डाक-बँगले में ठहरे। सामान ठीक-ठाक रखने में ही समय बीत गया। बाहर अंधकार फैल चुका था। पर्वत-मालाओं के चरणों के निकट बीतनेवाली एकांत-शांत यह पहली रात थी। लेटने पर ख़याल आया, घर से दूर, कितनी दूर, काश्मीर-घाटी के इस कोने में, इस छोटे-से डाक-बँगले के बरामदे में, कहाँ लेटा हुआ हूँ। कितना बड़ा देश, कितने ऊँचे पहाड़, कितनी दूर और मैं (एक मनुष्य) कितना लघु, कितना क्षुद्र।

प्रातःकाल जब आँख खुली, तो सामने देखा—थोड़ी दूर पर बादाम का हरा-भरा बग़ीचा लहरा रहा है। और, जब ज़रा दूर पर दृष्टि फेंकी, तो देखा—सूर्योदय की सुनहली किरणों के जाल में फँसकर भी वूलर-लेक का जल हँस रहा है। और,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घाटी की दूसरी तरफ़ की पर्वत-माला धूमिल पर्दे में अस्पष्ट हो रही थी। समीप के प्रति ही ज़्यादा आकर्षण होता है। आँखें अपने आस-पास ही देखने लगीं। बादाम के सिवा न-जाने कितने फलों के वृक्ष देखे। फल सभी कच्चे थे। कई फल तोड़कर चक्खे भी। कोई खट्टा, तो कोई कसैला, और कोई अनोखे स्वाद का। नाम न जानते हुए भी जीभ ने अपना काम चलाया, और मेरा उन विभिन्न फलों से परिचय हो गया।

दूसरे दिन सवेरे उठते ही देखा—बँगले के सामने कुलियों की भीड़ लगी हुई है। इधर-उधर अनेक छोटे-छोटे घोड़े (टट्टू) चर रहे हैं। जल्दी ही सारा सामान बाँधा। सारा सामान १४ घोड़ों पर लादा गया। चार सवारी घोड़े और तीन डाँडियाँ थीं। डाँडियाँ उठाने के लिये १८ कुली खड़े थे। सामान देने और रखने में सभी इतने व्यस्त रहे कि यद्यपि खाना तैयार हो गया था, पर कुछ खा न सके। बादल घिर रहे थे, इसलिये, शीघ्रता के विचार से, हम लोग जल्दी ही चल दिए। हमारी पार्टी काफ़ी बड़ी थी। उसमें १४ घोड़े सामान से लदे हुए चल रहे थे, उनके पीछे हम सब लोग।

बादल तो प्रातःकाल से ही घिर रहे थे। अब धीरे-धीरे पानी भी बरसने लगा। अगला पड़ाव कुर्गबल का था। यह ११ मील का था, अतः चलते ही गए। पर पानी बरसने से मार्ग की तकलीफ़ें भी बढ़ती ही गईं। सड़क पर कीचड़ बढ़ गई थी। पानी गिर ही रहा था। जहाँ ढाल अधिक था, वहाँ चढ़ना बहुत कठिन हो जाता था। लेकिन हम लोग पहाड़ी छड़ियों के सहारे आगे बढ़ते ही जाते थे। कभी पैदल, कभी घोड़े पर, तो कभी डाँडी पर। प्रत्येक पैर हमें उँचाई पर लिए जा रहा था। चीड़ के वृक्षों के नीचे खड़े हो-होकर मैं जब कभी घाटी की ओर निहारता, तो निहाल हो जाता। घाटी की दूसरी तरफ़ ढालों पर चीड़ का जंगल रिम-झिम फुहार में झूम-झूमकर स्नान कर रहा था। बीच में कहीं पर दूध से भी अधिक सफ़ेद झरने झर-झर कर रहे थे, और ऊपर बादल की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ, शून्याकाश में तैरती हुई, आकर वृक्षों की चोटियाँ चूम रही थीं। यद्यपि पेट में भूख, शरीर में सर्दी और पैरों में कीचड़ लग रही थी, फिर भी रिम-झिम वर्षा में इस हरी-भरी घाटी का दृश्य हमें रोमांचित करने के लिये यथेष्ट था। हम लोग काफ़ी ऊँचे चढ़ चुके थे। समय क़रीब ५ के था। बादल फटने लगा।

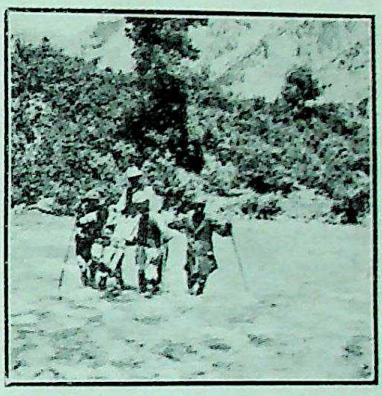

उथली पहाड़ी नदी पार की जा रही है।

मार्ग के एक घुमाव पर खड़े होकर अचानक जो पीछे की ओर देखा, तो देखता ही रह गया। सामने विस्तृत काश्मीर-घाटी थी, जिसके एक कोने में बादलों की द्वार-पटी हटाकर प्रभाकर हँस रहा था, जिसकी सुनहरी दृष्टि का पवित्र प्रसाद पाकर बाईं ओर की हरी-भरी घाटी में प्रकृति-नटी ने इंद्रधनुषी चीर पहन लिया, और उसके सरस अधरों पर मधुर मुसकान थिरकने लगी। प्रकृति-नटी की इतनी सुंदर शोभा आज तक न देखी थी, और न फिर कभी देखने को ही मिली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिवाकर की चंचल - चपल किरणों ने हरित विटपावली का सोता हुआ सौंदर्य जगा दिया था। और, वारिदों ने व्योम से उतरकर उसके पल्लव-दलों के किनारे निर्मल मोती लटकाकर उसे और भी सुंदर बना दिया था। इस मनोहर दृश्य ने मानस में सदैव के लिये अपना स्थान बना लिया।

इस सुहावने दृश्य के साथ-साथ एक और भाव ने मेरे हृदय को छू लिया। उन बेचारे दीन कुलियों की दयनीय दशा भी कम आकर्षक न थी। मैले-कुचैले कपड़ों से शरीर लपेटे, पीठ पर उबले हुए चावलों की पोटरी बाँधे, कीचड़ से भरी, फिसलनी सड़क पर डाँडी का बोझ कंधे पर उठाए, लकड़ी के सहारे आगे बढ़ने का दृश्य भी कम आकर्षक न था। और, यह सारा परिश्रम किसलिये? सिर्फ़ ।=) के लिये, जिसमें से बेचारों को आधा हिस्सा भी मिलने का नहीं! उनकी मज़दूरी का आधे से अधिक हिस्सा उन लोगों की जेब में चला जायगा, जो इन कुलियों को काम दिलाने के ठेकेदार हैं, और जिन्होंने कभी शरद्-ऋतु में, गाढ़े समय में, १ या २ रुपया इन कुलियों को दूने सूद पर क़र्ज़ दिया था। चोटी का पसीना एँड़ी तक बहानेवाले बेचारे कुली अपनी मज़दूरी के हक़दार नहीं! इन कुलियों की मज़दूरी तो ठेकेदार के नियुक्त किए हुए आदमी को दी जाती है, जो इसीलिये इनके साथ इनका नायक बनकर चलता है।

शाम होते-होते हम लोग किसी प्रकार कुर्गबल पहुँचे। इसकी उँचाई क़रीब ९,००० फ़ीट है। गुरेज़ के रास्ते पर बाँदीपुर से यह पहला पड़ाव है। ठहरने का स्थान काफ़ी अच्छा है। कई बँगले हैं। दूध भी मिलता है। दूसरे दिन बहुत जल्दी करनी चाही, फिर भी १० बजे से पहले न निकल सके। ज्यों ही चलने के लिये तैयार हुए, बादल घिरने लगे। पिछले दिन की तकलीफ़ों का ख़याल करके डरे, लेकिन चलने के सिवा और चारा ही क्या था? ज्यों ही कुर्गबल से निकले कि बादलों ने चारो तरफ़ से घेर लिया।

जब कभी घना बादल पास आ जाता, तो थोड़ी दूर पर का कुछ भी नहीं दिखाई पड़ता था। बादलों के संबंध में शिशुओं की जो कल्पनाएँ हुआ करती हैं, उनकी याद कर मुझे हँसी आ गई। जिन बादलों पर बैठकर आकाश में घूमने का विचार मैं अपने शिशुपन में किया करता था, उनका यह वास्तविक रूप देखकर चोट-सी लगी। कहाँ वह सुंदर धुनी हुई रुई के समान, कहाँ यह उनका प्रत्यक्ष रूप, घना कुहरा, घने धुएँ-सा, जिसमें साँस लेना भी अजीब-सा मालूम पड़ता है। वे सुंदर थे, ये असुंदर। पर असुंदर में भी सौंदर्य का दिग्दर्शन हुआ, यह भी मानना ही होगा। बादलों में चलने से कपड़ों की ऊपरी तह कुछ सील-सी गई। साँस में शीतल भाप-सी जाने लगी। ये अनुभाव अभिनव थे। नवीनता में भी एक सौंदर्य है। बादलों में चलकर आज उसी का अनुभव किया।

बादल तो ख़ूब आए, पर बरसे नहीं। हम लोग अभी चढ़ ही रहे थे। काफ़ी उँचाई पर अभी जाना था। मार्ग के दोनो ओर चीड़ के घने जंगल थे। हरा-भरा दृश्य तो रमणीक था ही। स्थान-स्थान पर खड़े होकर हम लोग दम भरते और नीचे का विस्तृत, सुहावना दृश्य भी देख लेते थे। बादल गरजने लगे। वर्षा का भय हुआ, पर उससे भी ज़्यादा भय यह सुनकर हुआ, जब कुलियों ने यह बताया कि ऊँचे स्थानों पर सर्दी के कारण ओले गिरने लगते हैं। उनके कहने में सत्य की संभावना थी, इसलिये भय होना स्वाभाविक था। पर कुशल हुई कि ओले नहीं गिरे, और न वर्षा ही हुई। हम लोग चोटी पर पहुँच गए। वहाँ पहुँचकर नए-नए दृश्य दिखलाई दिए। कहीं-कहीं पास ही बरफ़ पड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई भी दिखाई दी। कुछ और ऊँचे जाने पर तो चारो ओर हिमाच्छादित शैल-माला का अपूर्व दृश्य दिखाई दिया। दूर-दूर पर भी ये हिमावृत गिरि-शृंग एक के पीछे एक इस प्रकार दिखाई दिए, मानो इनका कहीं अंत ही नहीं। हिमालय का नाम आज ही मेरे लिये सार्थक हुआ।

मार्ग के पास फैली हुई बरफ़ देखकर हमारे आनंद की सीमा न रही। उसके ऊपर चले। हाथ से खोदकर, नीचे की बरफ़ निकालकर खाई।

मेरी पार्टी बरफ़ खा रही है।

दोपहर हो चुका था, इसलिये बरफ़-समूह के किनारे एक स्थान पर कुछ भोजन किया गया। बरफ़ से ही हाथ धोए। बरफ़ ही पानी के स्थान पर सेवन की। और, भोजन के उपरांत बरफ़ से ही कुल्ला किया। यह स्थान इन्हीं बातों के लिये सदैव याद रहेगा।

यहीं से उतार प्रारंभ हो जाता है। हमें सामने की ओर घाटी में ही उतरना था। इस ढाल पर एक-दो नहीं, हज़ारों वृक्ष भोजपत्र के खड़े हुए थे, जिनके तने लालिमा लिए हुए बिलकुल सफ़ेद थे, और छाल स्थान-स्थान पर छुटी हुई थी। यही छाल भोजपत्र कहलाती है, जिस पर प्राचीन समय में पुस्तकें लिखी जाती थीं। कुछ भोजपत्र हमने भी ले लिया। चढ़ने में

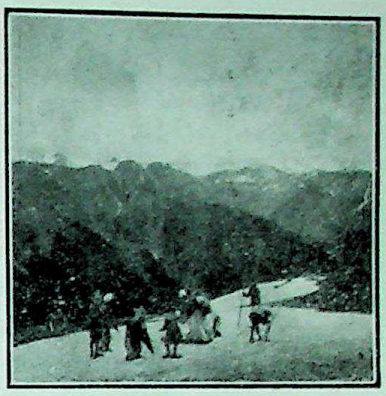

मेरी पार्टी बरफ़ से खेल रही है।

जितनी कठिनाई पड़ती है, उतरने में उतनी ही आसानी होती है। हम लोग मज़े में उतरते चले जाते थे। यों पहाड़ी सड़क से उतरने में उतार अधिक न था, पर जिस छोटे रास्ते (Short cut) से डाँडी के कुली अपना काम करने के लिये उतरे, वह न केवल अधिक उतार का था, वरन् ख़तरनाक भी था। उस बेहद उतार पर, जहाँ कोई ठीक-सा रास्ता न था, सभी शक्ल-सूरत के बेहद पत्थर पड़े थे। उनसे बचकर और कभी उन्हीं पर चलकर उन कुलियों को एक भारी डाँडी का बोझ लेकर उतरना था। रोकने पर भी वे उसी रास्ते से उतरे। उनका साहस अवर्णनीय था। ख़तरनाक रास्तों पर चलने में उनके पैर कितने अभ्यस्त थे, यह देखकर हमें आश्चर्य होता था। इस उतार को पार कर हम अब घाटी में आ गए। हमारा मार्ग घाटी में बहती हुई दूध की नदी के बाएँ किनारे पर से था। हम लोग आगे बढ़ रहे थे कि एकाएक बादल घिर आए। नन्ही फुहार के साथ मटर के बराबर छोटे-छोटे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओले बिखर पड़े। सारी सड़क इन ओलों से सफ़ेद हो गई। भीगते-भागते हम लोग आगे

हिमालय के अंतराल की एक घाटी

बढ़े। मार्ग में हमें एक बरफ़ का पुल मिला। मार्ग के बाईं ओर से एक बड़े झरने का पानी बरफ़ की खोह से नीचे होता हुआ, बरफ़ के पुल से नीचे तेज़ी से बहकर, सामने इठलाती हुई नदी में गिरता था। बरफ़ की खोह और बरफ़ का पुल देखने का नया अनुभव हुआ था। बरफ़ के पुल से होकर हमने झरना पार किया, और आगे का मार्ग लिया। पानी फिर बरसने लगा। मार्ग में कीचड़ हो गई थी। आगे चलकर हम लोग एक मोड़ पर पहुँचे। यहाँ का दृश्य बहुत ही रमणीक था। नदी के बाईं ओर से एक बड़ी नदी गोल-गोल, चिकने पत्थरों से खेलती हुई, उन्हें दूध से नहलाती हुई आ रही थी, और दाहनी ओर कुछ दूर पर काफ़ी ऊँचाई से, हरे-भरे वृक्षों के बीच में, जल की एक निर्मल, उज्ज्वल धारा उतर रही थी। इस प्रपात ने हमें मसूरी के 'कैमटी-फ़ॉल' की याद दिलाई। पर इसका सौंदर्य उस प्रपात की अपेक्षा कहीं अधिक था। इस निर्झर की सुषमा ने इतना आकर्षित किया कि चित्रकूट-विहारिणी श्रीसीताजी का वह मधुर गीत याद आ गया, जो उन्होंने ऐसे ही सुंदर झरने के तट पर गाया था—

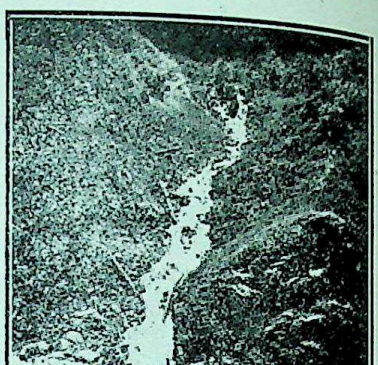

प्रपात

[जो मार्ग में मिला था।]

ओ निर्झर, झरझर नाद सुनाकर झड़ तू;
पथ के रोड़ों से उलझ-सुलझ, बढ़, अड़ तू।
ओ उत्तरीय, उड़, मोद-पयोद घुमड़ तू;
हम पर गिरि-गद्गद भाव सदैव उमड़ तू।
जीवन को तूने गीत बनाया, गाया;
मेरी कुटिया में राजभवन मन भाया।

इस भावुकता के आगे हमें वर्षा की सभी तकलीफ़ें उठानी पड़ीं। कीचड़ से पैर सन रहे थे। सारे कपड़े भीग गए थे, सरदी तो लग ही रही थी। लथ-पथ ट्रागवल के डाक-बँगले में पहुँचे। पर इसे डाक-बँगला न कहकर out-houses कहना ठीक होगा, क्योंकि पहले के out-houses ही आज बँगले का काम दे रहे थे। और ट्रागवल का बँगला पहले 'लहने' से नष्ट हो चुका था। 'लहना' का नाम आज पहली बार नहीं सुना था। पहाड़ के ढालों पर कभी-कभी बरफ़ बहुत पड़ जाती है। गरमी के आरंभ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कभी-कभी शरद्-ऋतु में ही हज़ारों टन बोझवाली बरफ़, ढाल अधिक होने के कारण, खिसकने लगती है। ज्यों-ज्यों यह आगे बढ़ती जाती है, इसकी रफ़्तार बढ़ती जाती है। और, फिर जो कुछ भी इसके रास्ते में आता है, उसे यह समूल नष्ट करती जाती है। दो साल पहले ट्रागवल का बँगला भी इसी का शिकार बन गया था। आज उसका एक-एक पत्थर धूल चाट रहा है, और पुनरुद्धार की आशा लिए अपना अस्तित्व बनाए हुए है।

ट्रागवल के इस छोटे-से 'रेस्ट-हाउस' में कम तकलीफ़ न हुई। भोजन मिल जाने से पेट को तो आराम मिला, पर पीठ को विश्राम न मिला। कष्ट हुआ, पर इन कष्टों में भी एक आनंद मिला। और, आज तो उन कष्टों की स्मृति में दूना आनंद मिलता है।

प्रातःकाल उठकर देखा, आसमान साफ़ था। दोनो नदियाँ कल-कल, घर-घर शब्द करती हुई एक दूसरे में लीन हो रही थीं। प्रातःकाल का भोजन आदि समाप्त हुआ। ९ बजे फिर नदी के बाएँ किनारे चल दिए। दो मील चलने पर नदियों का एक सुंदर संगम मिला। यहीं पास की पहाड़ियों पर कुछ कम हरी घास उग रही थी। यह बहुत अधिक तादाद में थी। कुलियों द्वारा मालूम हुआ कि वह एक रामबाण ओषधि है। रियासत को इससे लाखों रुपए की आमदनी होती है। बच्चों के पेट के कीड़े साफ़ करने की यह अद्वितीय दवा है। वरमूला में इससे दवा बनाई जाती है, जिसे विदेशों में भी भेजा जाता है। घास में एक प्रकार की ख़ुशबू का अनुभव हमने भी किया था। आगे और गुरेज़ से आगे इस घास को बेहद तादाद में पाया।

जिस नदी के किनारे हम लोग पिछले दिन आए थे, वह कृष्णगंगा नदी की सहायक थी। कृष्णगंगा एक बड़ी नदी है, जो 'गुरेज़ वेली' में गुरेज़ की तरफ़ से आ रही थी। अब हमारा रास्ता इसी नदी के किनारे-किनारे था। हम लोग हरे-भरे दृश्यों का आनंद लूटते आगे बढ़ रहे थे कि बादल घिरने लगे, और आज फिर पानी बरसने लगा। ज्यों ही आगे बढ़े, हमारा रास्ता एक जगह पर बहुत ख़तरनाक हो गया। रास्ते में ढाल पर बरफ़ पड़ी थी, और पास ही नदी अपनी उग्र गति से बही जा रही थी। पैर फिसलने पर नदी में गिर जाना स्वाभाविक ही था, और नदी में गिरना मानो मौत के मुँह में गिरना है। किंतु वे पहाड़ी टट्टू कितने होशियार होते हैं। हम लोग मनुष्य होकर भी कभी-कभी आगे का मार्ग न देखकर पैर बढ़ा देते हैं। पर वे घोड़े पहले पैर रखने का स्थान देखते, तब अगले पैर को उस स्थान पर रखते हैं। फिर उसके द्वारा उसकी परीक्षा लेते हैं। तब कहीं उस पर बल देते हैं। और, फिर पिछला पैर उठाते हैं। मनुष्य पशुओं से बहुत-से सबक़ सीख सकता है, यदि सीखना चाहे।

सूरज डूबने के पहले हम गुरेज़ पहुँच गए। गुरेज़ एक छोटा-सा गाँव है, लेकिन यहाँ वह शहर कहलाता है। ६-७ दूकानों का एक बाज़ार पार करके डाकख़ाने से अपनी डाक लेते हुए हम लोगों ने पुल से कृष्णगंगा को पार किया, और उसी के

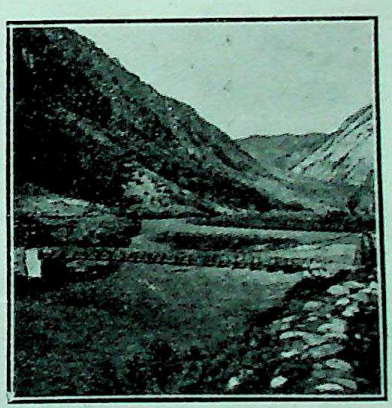

कृष्णगंगा का पुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किनारे पर डाक-बँगले में ठहरे। अभी तक जितनी जगह रातें बिताई थीं, उनसे कहीं अच्छा कलकल-नादिनी कृष्णगंगा का यह कूल था।

गुरेज़ में १-२ दिन ठहरने का विचार किया। कारण कई थे। पिछले तीन दिन लगातार वर्षा होने के कारण काफ़ी परेशान हो गए थे। साथ के सारे कपड़े भीग गए थे, उन्हें सुखाना था। आगे का रास्ता मालूम करना था। नए कुलियों और घोड़ों का प्रबंध करना था। इसलिये गुरेज़ में दो दिन का विश्राम लेना अनिवार्य हो गया था। किंतु यह स्थान इतना रमणीक तथा सुंदर था कि ४-६ दिन भी ठहरना अच्छा ही लगता। डाक-बँगले से १० गज़ की दूरी पर कलकल करती हुई, अपनी वेगवती चाल से इतराती हुई, फणिनी की भाँति सरकती हुई कृष्णगंगा चली जाती थी। उसमें न-जाने कितना मधुर आकर्षण भरा था, जिससे खिंचकर एक बार नहीं, अनेकों बार उसके किनारे चिकने, चमकते हुए पत्थरों पर घूमकर उसकी चंचल शोभा देखने के लिये दिन में पहुँच जाता था। पंतजी की अनुभूति के अनुसार ही कभी मैं भी यही अनुभव करने लगता कि "सरिता के भी है एक हृदय।" फिर क्या था? भावुक हृदय सहृदया से पूछ ही बैठा—

इसी रम्य प्रदेश में जन्म लिया,
इसी अंक में तू सविनोद पली;
युग मंजुल कूल की रक्षता में
अठखेलियाँ कीं कर रंग-रली।
पर आज हुआ क्या, बता तो सही,
तज स्नेह गही यह कौन गली;
गिरि - शृंग अवाक् निहारते हैं,
त्वरिते, सरिते, तू कहाँ को चली?

उत्तर देने को कहाँ अवकाश? समय का अनुपयोग और दुरुपयोग करना प्रकृति नहीं जानती। यह तो मनुष्य का ही कलंक है। कुछ भी हो, उपर्युक्त प्रश्न करने में मैंने समय व्यर्थ नहीं नष्ट किया।

किसी पुण्यतोया सरिता के किनारे सिर-मुंडन शुभ समझा जाता है, इस शुभ लाभ की भावना से तो नहीं, यों ही तीन दिन से बढ़े हुए 'खुदाई नूर' (दाढ़ी) को इसी भागती हुई नदी के किनारे पनामा-ब्लेड की धार से उड़ाने का निश्चय

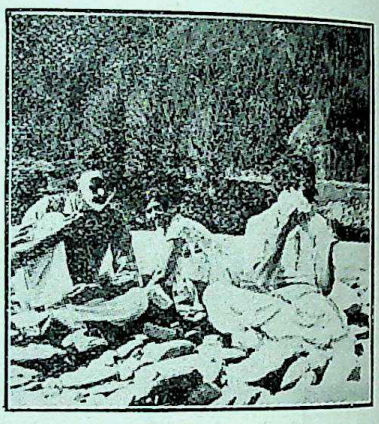

कृष्णगंगा के तट पर दाढ़ी-मुंडन

किया। चिकने पत्थरों पर बैठे हुए सतीश (मेरे मित्र) और मैं अपने-अपने शेविंग ब्रश नदी में ही भिगो रहे थे। हरीश ने तो हम लोगों के इसी रूप में फ़ोटो भी ले लिए। पर इस विनोदानंद का सजीव फ़ोटो स्मृति-पटल पर सदैव के लिये खिंच गया।

सुधा के ग्राहक बनकर और बनाकर उसे अपनाइए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

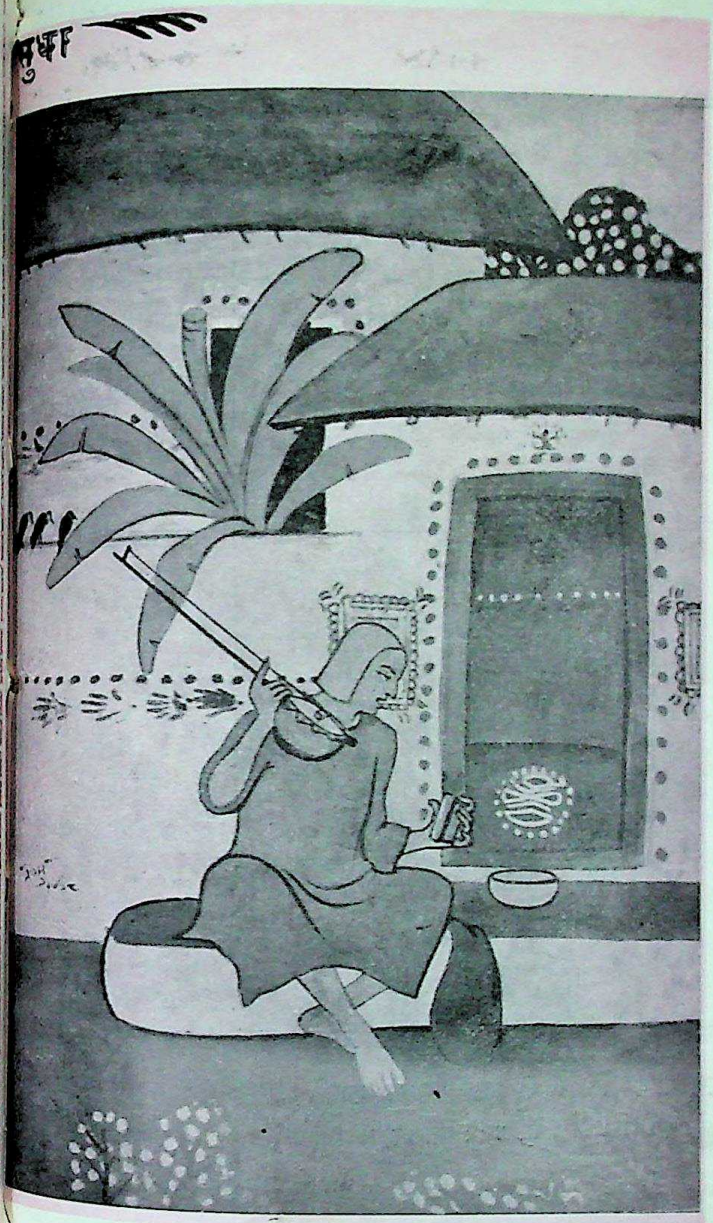

भिखारी
[चित्रकार—श्रीशंभुनाथ मिश्र]

भिखारी

बंगाल-स्कूल के आधुनिक चित्रों की शैली-जिसे ठाकुर-शैली भी कहते हैं, लोगों के मन में घर कर गई है। उसमें रेखा की बारीकी और मिलते-जुलते रंगों की ही विशेषता है। इधर कुछ समय से उस शैली में परिवर्तन हो रहे हैं, और यह कोशिश हो रही है कि भारत की प्राचीन शैली फिर अपनाई जाय, क्योंकि आधुनिक ठाकुर-शैली ठेठ भारतीय नहीं। वह जापान तथा भिन्न-भिन्न देशों का सम्मिश्रण है। यद्यपि इस सम्मिश्रण का मूल्य कम नहीं, फिर भी भारत की निजी विशेषता का ही अधिक प्रचार होना चाहिए। अस्तु।

यह चित्र ग्रामीण कला की ओर संकेत करता है। इसे भीति-चित्र तथा फ्रेस्को-शैली भी कहते हैं। इसके दरवाज़ों में लाल इत्यादि चौक बने हैं। इसे अल्पना कहते हैं। यही अल्पना और विभिन्नरंगों का क्रम ठेठ प्राचीन कला है। चित्रकार श्रीशंभुनाथ मिश्र ने इस चित्र को इसी ढंग पर अंकित करने की चेष्टा की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

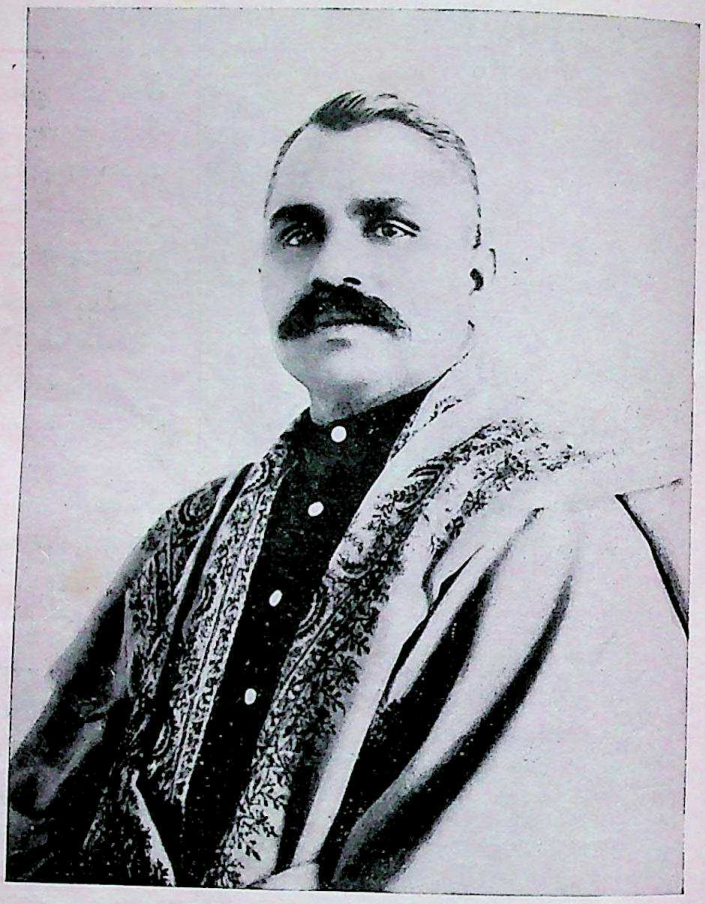

स्वर्गीय विद्यावाचस्पति श्रीपं० शालग्रामजी शास्त्री

[आपके संबंध में एक नोट धारा में, ४३२ पृष्ठ पर, गया है ।]

गंगा-फ्राइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा-रानी

[पु० श्रीप्रतापनारायण 'कविरत्न']

यह दुनिया झूठ - कहानी, तू सुन ले मेरी रानी !
बात छिपाने से क्या होगा, सभी भेद खुल जावेगा ;
मुझ दाई से पेट छिपाकर क्या कोई फल पावेगा।
सत्य - प्रेम को देकर के भी क्यों करती तू नादानी ?
मन पर परदा डाल किया है तूने सबको अज्ञानी।
तेरे हैं सब ही कामी, मेरी ही हो बदनामी ;
कैसी है यह मनमानी, तू सुन ले मेरी रानी ! १ ॥

कोई कहे बड़ा राजा को, कोई कहता रानी को ;
कोई पूर्ण ज्ञान को, कोई बतलाता है ज्ञानी को।
कैसी तड़पन, कैसी उलझन, कैसी विकट पहेली है ;
मैं भी कुछ हूँ, या कि सभी कुछ तू ही एक अकेली है।
तेज बड़ा या तेजोधर, बिंदु बड़ा है या सागर ?
मोती है या है पानी, तू सुन ले मेरी रानी ! २ ॥

तू अंधी होकर उलझाती सबको अपने बालों में ;
नहीं देखती पाप-पुण्य में अंतर गोरे-कालों में।
त्रिभुवन-मक्खी फँसी हुई है तेरे मकड़ी-जालों में ;
पर तू मेरे बिना चलेगी कैसे तीनो कालों में।
घूँघट के पट खोल भला, तू स्वरूप को तो दिखला।
क्यों पिंजरे में है प्राणी, तू सुन ले मेरी रानी ! ३ ॥

तू कंधों पर बैठा रहता, मेरा तन हरदम पिलता ;
कोरी आँखें फाड़ा करता, नहीं एक तिल भी हिलता।
जो मैं होती नहीं, सदा तू पड़ा-पड़ा ही कर मलता ;
अरे पाँगले राजा, कैसे दुनिया का धंधा चलता।
होवें अदल-बदल आ-जा, तू रानी हो मैं राजा।
फिर मत कहना यह वाणी, तू सुन ले मेरी रानी ! ४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगीत की कलाएँ बंधन-मुक्त हैं

[नाट्य-कलाचार्य श्रीयुत राजाराम द्विवेदी 'सुरंग']

संगीत के तत्त्व हैं स्वर, ताल (काल-मापक क्रिया) और साहित्य (गीत)। बस, संगीत का इतना ही भाग वैदिक अथवा classical है। इसलिये जिस संगीत-प्रणाली में हमें तीनो अंग मिलते हैं, वही classical है। स्वर-गान अर्थात् बंदिश की सरगमें, मार्गी अर्थात् स्वर, साहित्य, ताल-युक्त गान, नियमित अंग-हीन गान अर्थात् देशी, स्वर-प्रधान गान, ताल-प्रधान गान इत्यादि संगीत-शिक्षा की सामयिक तथा सामाजिक संगीत-प्रणालियाँ हैं, जिनका व्यवहार होता आया है, और होता रहेगा। परंतु ये सब परिवर्तनशील तथा नित्य हैं। ऊहगान, प्रबंधगान, ध्रुपद, ख़्याल, टप्पा, पद, भजन, धुन, ग़ज़ल, ये सब सामयिक गान के रूपांतर हैं। ये सभी संगीत की सामयिक कलाएँ हैं, अतः परिवर्तनशील हैं। भारत की कोई भी गायकी 'संगीत'-कला विना कारण नहीं चलाई गई। सभी प्रणालियाँ अपना-अपना महत्त्व रखती हैं, इसलिये भारतीयों के लिये सभी आदरणीय हैं।

जो लोग भारतीय संगीत-प्रणालियों में से किसी एक भाग को classical कहकर जनता में अन्य प्रणालियों के प्रति घृणा उत्पन्न करने का उद्योग करते हैं, वे सत्य से दूर तथा स्वार्थ के गर्भ में हैं, और अनंत संगीत को पिंजड़े में बंद करना तथा सूर्य के अनंत प्रकाश को स्वेच्छाधीन करना चाहते हैं।

क्या भारतीय संगीत की किसी एक प्रणाली को classical कहकर संगीत के ग्रंथों का खुला अपमान करना नहीं? भरत मुनि का नाट्यशास्त्र संगीत के कला-विस्तार का मूल है, उसी के आधार पर हमें सामयिक आचार्यों के भिन्न-भिन्न मत-मतांतर के ग्रंथ मिलते हैं, जिन्हें हम सामयिक रचना कह सकते हैं। जिन लोगों ने संगीत-पारिजात, संगीत-सुधाकर, संगीत-कलाधर, संगीत-सारामृतोद्धार, स्वर-मेल-कलानिधि, रागविबोध, अनूप संगीत-विलास, रागमाला, संगीत-रत्नाकर, संगीत-सुदर्शन, संगीत-दामोदर, राग-रत्नाकर, शब्द-कल्पद्रुम, राग - लक्षण, श्रीमल्लक्ष्य - संगीत, रागतत्त्व-विबोध, संगीत-दर्पण, अभिनव-ताल-मंजरी, हलायुध - कोष, भरत - मंजरी, मेदिनी-कोष, राग-तरंगिणी, हृदय-कौतुक, हृदय-प्रकाश, सद्राग - चंद्रोदय, राग - मंजरी तथा और भी संगीत-ग्रंथों का अध्ययन किया है, वे कैसे इस बात को मान सकते हैं कि संपूर्ण ग्रंथ एकमत हैं। सभी कलाकारों ने अपने-अपने अनुभव द्वारा सामयिक, लोक-प्रिय संगीत का उल्लेख भिन्न-भिन्न रूपों में अपनी-अपनी पुस्तकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में किया है। परंतु बहुत-से विषयों में वे एक-मत भी हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि आधुनिक राग, जो सामयिक कलाकारों की नियमित स्वर-रचनाएँ हैं, सब एक ही समय के नहीं। इसलिये साफ़ मालूम होता है कि इन काल्पनिक स्वर-रचनाओं की रक्षा आवश्यक नहीं। यही कारण है कि प्राचीन गायक बराबर नवीन राग-रचनाएँ करते थे। यह प्रथा तानसेन तक बराबर चलती आई, और राग-निर्माण होता रहा। इसके बाद इसका अंत हो गया। यहीं से भारतीय संगीत का पतन प्रारंभ हुआ, और भारतीय संगीत की पावन सरिता गड़हिया बन गई। स्वरों में शक्ति लाना बंद हो गया। भारत में नाद-रूपी मेघ ने नवीन स्वर-शक्ति-रूपी बिंदुओं की वृष्टि बंद कर दी। गड़हिया में दुर्गंधि पैदा हो गई। गीतों के कुभावना-पूर्ण शब्द-कीटाणुओं ने उन्हें और भी भयानक बना दिया। भारत के सभ्य समाज ने उस गड़हिया की ओर जाना बंद कर दिया। यही है भारतीय संगीत का पतन। जब तक हम अंध-परंपरा की रूढ़ियों में अपने को बाँधते जायँगे, तब तक उस संगीत की सड़ी हुई गड़हिया के कीटाणुओं से नहीं बच सकते। क्या मैं classical संगीत-प्रेमियों से पूछ सकता हूँ कि यदि आधुनिक शिक्षा-संगीत उत्तम है, और पुराना होने के कारण हम उसे classical कहते हैं, तो वह पतित संगीत-भाग कहाँ छिपा है, जो तानसेन-जी के बाद बना और माना जाता है? सर्व-मत से तानसेन के बाद ही से संगीत का पतन माना जाता है। अब हम उसे कहाँ ढूँढ़ें? अपनी रक्षा कर सकें। क्या आधुनिक classical संगीताचार्य उस पतित संगीत की कुछ रूप-रेखा हमें दिखाने की कृपा करेंगे? कि वह पतित संगीत कहाँ छिपा है?

मेरे विचार परिवर्तनशील संगीत के पक्ष में हैं—मैं उसे कला ही नहीं मानता, जो परिवर्तन-शील न हो—खासकर ललित कलाएँ, जो सर्वदा नित्य हैं। इसलिये हमारा मुख्य कर्तव्य है कि हम नवीन स्वर-रचना (राग-निर्माण) का कार्य प्रारंभ कर दें। जिस समय भारत में नवीन साहित्य से पूर्ण नवीन राग अपने अद्भुत नामों के साथ जनता प्राप्त करने लगेगी, उसी दिन से भारतीय संगीत का नवयुग प्रारंभ होगा, और वही होगा सत्य संगीतोद्धार। इसलिये यह कार्य हमें शीघ्राति-शीघ्र प्रारंभ कर देना चाहिए। सिनेमा-संसार इसे बड़ी सुगमता से कर सकता और अनावश्यकीय संगीत की अंध-परंपराओं को हटा सकता है, क्योंकि नाट्य ही भारतीय संगीत के सुधार तथा उसे उत्तम बनाने का प्राचीन मार्ग है। सिनेमा-संसार अपना संगीत बड़ी सुगमता से अनंत बना सकता है। अतः उसे नवीनता लानी चाहिए—नवीन राग-नाम, नवीन स्वर-रचनाएँ, नवीन शब्द-साहित्य, नवीन भाव इत्यादि, किंतु पुरानी कृतियों का अनादर करके नहीं। पथ-प्रदर्शक वे ही हैं, इसलिये हमें उनका भी आदर करना ही चाहिए। इसी प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की उदारता उन्हें भी करनी चाहिए, जो संगीत को परिवर्तनशील मानते हैं, परंतु Classical शब्द का भी प्रयोग करना चाहते हैं।

हमें पूर्ण आशा है कि Classical-प्रेमी हमारी गति के सहायक प्रतीत होंगे, न कि बाधक, क्योंकि हम शास्त्र के आज्ञानुसार ही आगे बढ़ना चाहते हैं। यथा—"मेलः स्वर-समूहः स्याद्रागाव्यंजनशक्तिमान्।" अथवा "मनो रंजयतीति रागः।" अतः हमें मिलकर रागों की वृद्धि करनी चाहिए। और, उन नवीन रागों तथा नवीन साहित्य से कभी संतुष्ट न होना चाहिए, जब तक हमारी कला और संगीत से अनभिज्ञ जनता मुग्ध होकर हमारी बड़ाई न करे। यह हमारी भूल होगी कि हम किसी दलबंदी की कृपा पर अपनी उन्नति का भार सौंप दें। ऐसा सोचना बुद्धिमत्ता नहीं। हमारे संगीत-शास्त्रों ने हमारे संगीत की महत्ता पशुओं और संगीत से अनभिज्ञ जनता की प्रसन्नता पर मानी है। अतः हमें कोई कार्य शास्त्रों के प्रतिकूल नहीं करना चाहिए।

हमें हँसी आती है, जब हम पार्टीबंदी-वाले संगीतज्ञों की बातें सुनते हैं, और वे बड़ी प्रसन्नता से एक दूसरे की कला की निंदा करते हैं। इस अंध-परंपरा से क्या हम कभी सत्य संगीत की उन्नति कर सकते हैं, और भारतीय संगीत की कभी नियमित उन्नति हो सकती है? हाँ, इससे कुछ लोगों का स्वार्थ-साधन अवश्य हो सकता है। क्या कोई कल्पना भी कर सकता था कि भारत का अभिनय इतना बृहत् है, इसका पिंड उतना ही बड़ा है, जितना ब्रह्मांड? क्या पंजाब-मेल, बाग़बान, देवदास, स्ट्रीटसिंगर, जवानी की रीत आदि नाट्य लिखनेवाले कालिदास और शेक्सपियर हैं? सोचो, समझो, इसे कहते हैं कला की उन्नतिशील प्रगति। मैं मानता हूँ, इन नाट्यकारों में अभी बहुत-सी त्रटियाँ हैं, किंतु यह भी तो नहीं कह सकता कि ये इन्हें स्थायी बनाना चाहते हैं। वे अपनी प्रगति किसी भी समय बदल सकते हैं। इसी प्रकार हमें संगीत-कला की उन्नति के लिये भी करना पड़ेगा। उसका मार्ग यही है कि सु-स्वर स्त्री, पुरुष, बालक, बालिकाओं को स्वतंत्र संगीत की शिक्षा देनी चाहिए। उन्हें नवीन संगीत तथा साहित्य के साथ-साथ चलाना चाहिए। ऐसा करने से हज़ारों नए मेल के राग हमारे सामने आ जायँगे। मार्ग साफ़ हो जायगा। प्रत्येक गायक अपनी कला का पंडित होगा, तथा इस मंत्र की पूर्ति होने लगेगी—"नादाब्धेः परं पारं न जानाति सरस्वती।" स्वर तथा नवीन स्वर-रचनाओं का सागर उमड़ पड़ेगा, तथा नवीन काव्य-साहित्य संगीत का सहयोग पाकर अपनी भावनाओं से नवयुग लाने में सक्षम होगा। संगीत के जिज्ञासुओं के बंधन मुक्त होंगे, एवं कला सरल तथा सुखद हो जायगी।

हम यहाँ एक बात और कह देना चाहते हैं। जो लोग स्वर-शक्ति को राग-शक्ति मानते हैं, वे भूलते हैं। रागों द्वारा दीपक जलना, पानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरसना आदि बातें मिथ्या नहीं। इनमें सत्य का आभास अवश्य है, किंतु हम उसे राग-शक्ति माने बैठे हैं, यही भूल है। यदि हम विचार-पूर्वक देखें, तो मालूम होगा, जिसे हम राग-शक्ति कहते हैं, वास्तव में वह स्वर-शक्ति है। उदाहरणार्थ तानसेन की स्वर-रचनाओं में कोमल निषाद तथा कोमल गंधार ही अधिक महत्त्व रखता है। मियाँ मलार और दरबारी आदि में उन्होंने इन्हीं दोनो स्वरों का रंग चढ़ाया है। इससे साफ़ मालूम होता है कि ये दोनो स्वर उन्हें सिद्ध थे, अतः वह इनके द्वारा स्वर-शक्ति दर्शाने में सिद्धहस्त माने गए। अनुभव हमें बताता है कि कुछ स्वरों में पूर्ण अधिकार प्राप्त होने पर हम भी शायद उस अंश की पूर्ति कर सकें। किंतु ध्यान रहे, स्वरों को द्रुत गति में व्यवहार करने से हम कभी उस अंश की पूर्ति नहीं कर सकते, जिसके महत्त्व के विषय में हम आज भी रागों को महत्त्व देते हैं। तान-क्रिया कला की दृष्टि से तो सुंदर साबित हुई, परंतु स्वर-शक्ति से हमें उसने हज़ारों कोस दूर कर दिया, जिसकी प्राप्ति हम ख्याल-गायकी द्वारा नहीं प्राप्त कर सकते। स्वर-शक्ति प्राप्त करना तथा स्वरों की लयदारी गति दिखाना, ये दोनो अलग-अलग वस्तुएँ हैं। हम चंचल नेत्रों की चाल से मेस्मेरेज़म नहीं कर सकते, जब तक नेत्रों को स्थिर न करें। इसी प्रकार हम जब तक स्वरों को स्थायी रूप में सिद्ध न करें, तब तक हमें वह पदार्थ प्राप्त करना असंभव है। मुझे पूर्ण आशा है, विद्वत्समाज मेरे टूटे-फूटे शब्दों पर अवश्य विचार करेगा। मैं यह मानता हूँ, जो कुछ मैंने लिखा है, वह पूर्ण नहीं, परंतु वह शास्त्रों से बहिर्मुख भी नहीं।

मैं संगीत-संसार की सेवा के लिये हर समय यथासाध्य तैयार रहूँ, परमात्मा से मेरी यही प्रार्थना है। मुझे पूर्ण आशा है, भारतीय सिनेमा-संसार शीघ्र अपने संगीत में नवयुग लाने का पूर्ण उद्योग करेगा, जिस प्रकार उसने नाट्य के कथानक में किया है। मैं यहाँ आधुनिक नाट्य-कथानक-लेखकों से प्रार्थना करूँगा कि वे नाट्यशास्त्र के इस मंत्र पर ध्यान देकर कथानक की रचना करें, तो जनता के अधिक प्रिय पात्र बन सकेंगे, तथा संसार में अक्षय कीर्ति प्राप्त कर सकेंगे। यथा—

दूराध्वानं वधं युद्धं राज्यदेशादिविप्लवम्।
संरोधं भोजनं स्नानं सुरतं चानुलेपनम्।
अम्बरग्रहणादीनि प्रत्यक्षानि न निर्दिशेत्।

भारतीय नाट्यशास्त्र की महत्ता उपर्युक्त तीन लाइनों में समाप्त होती है। मुझे आश्चर्य है, अभी तक हमारे सिनेमा-संसार ने इस महान् आदर्श मंत्र का कला-रूप में क्यों नहीं अनुसरण किया। मुझे आशा है, सिनेमा-संसार शीघ्र इस ओर ध्यान देने की कृपा करेगा। मैं पूर्ण प्रयत्न करूँगा कि इस लेख का बृहद्रूप कला तथा प्रमाण के साथ यथा-योग्य सेवा में अर्पण करूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंतजी की 'ग्राम्या' *

(आलोचना)

[श्रीमती सावित्री दुलारेलाल एम्० ए०]

प्रस्तुत पुस्तक के प्रसिद्ध प्रणेता पं० सुमित्रानंदन पंत का जन्म कौशानी, ज़िला अल्मोड़ा में, संवत् १९५८ में, हुआ। आपके पूज्य पिता का शुभ नाम पं० गंगादत्त पंत और आपकी ममतामयी माता का श्रीमती सरस्वती-देवी था। आप वास्तव में सरस्वती के सपूत हैं। सन् १९२२ में कॉलेज की शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् आप पूर्णतया गंभीर अध्ययन और काव्य-रचना में लग गए। आपके उत्कृष्ट ग्रंथ 'उच्छ्वास', 'वीणा', 'ग्रंथि', 'पल्लव', 'गुंजन' और 'युगांत' हैं। अब 'ग्राम्या' की भी अवतारणा हुई है। 'उच्छ्वास' वेदना-पूर्ण और कल्पना-प्रधान, 'ग्रंथि' करुण-रसमय भाव और कल्पना-वलित, 'पल्लव' उत्कृष्ट गंभीरता और ऊँची कल्पना-संयुक्त, 'गुंजन' अनुभूति-करंबित और 'युगांत' मानवता का निकटवर्ती है। 'ग्राम्या' में वही मानवता पूर्ण रूप से प्रस्फुटित हुई है। कवि स्वयं लिखता है—

"'युगांत' में 'पल्लव' की कोमल-कांत कला का अभाव है। इसमें मैंने जिस नवीन क्षेत्र को अपनाने की चेष्टा की है, मुझे विश्वास है, भविष्य में मैं उसे पूर्ण रूप में ग्रहण एवं प्रदान कर सकूँगा।" अपने वचनानुसार 'ग्राम्या' द्वारा कवि मानवता में पूर्ण रूप से लीन हो गया है। 'युगांत' में जिस नवीन कलेवर का ढाँचा खींचा था, 'ग्राम्या' में उसी की प्राण-प्रतिष्ठा की है।

पुस्तक के प्रारंभ में ही कवि कल्पना करता है कि ग्राम, नगर, देश और राष्ट्र अब पहले-से नहीं रहे। संपूर्ण संसार ही एक राष्ट्र है, जिसमें समान नील गगन और हरित धरा है। इस प्रकार के नवयुग में मानवता का नया जन्म है—

"ग्राम नहीं वे ग्राम आज,
औ' नगर न नगर जनाकर,
मानव-कर से निखिल प्रकृति जग
संस्कृत, सार्थक, सुंदर।"

❀ ❀ ❀

"देश - राष्ट्र वे नहीं,
जीर्ण जग-पतझर-त्रास-समापन,
नील गगन है: हरित धरा:
नव युग: नव मानव-जीवन।"

इस नवीन युग और नवीन मानव-जीवन में सब दैन्य और दुःख मिट गए हैं—

"आज मिट गए दैन्य-दुख,
सब क्षुधा-तृषा के क्रंदन।"

सारे तर्क डूब गए, सब देशों में युद्ध बंद हो गया, और संपूर्ण विश्व शांतिमय है—

"डूब गए सब तर्कवाद—
सब देशों, राष्ट्रों के रण;
डूब गया रव घोर क्रांति का,
शांत विश्व - संघर्षण।"

विश्व-भर में एकाएक ऐसी शांति किस प्रकार हो गई, इसका कारण है एक मानव-जाति और एक मानव-धर्म—

"जाति-वर्ण की, श्रेणि-वर्ग की
तोड़ भित्तियाँ दुर्धर

* प्रकाशक, भारती-भंडार, लीडर-प्रेस, प्रयाग; छपाई-सफ़ाई सुंदर; मूल्य १।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युग - युग के वंदीगृह से
मानवता निकली बाहर।"

इस नवीन धर्म—मानवता—का व्यापक प्रभाव है। सभी हर्षातिरेक से पागल हैं—

"नाच रहे रवि-शशि दिगंत में,
नाच रहे ग्रह, उड़गण;
नाच रहा भूगोल, नाचते
नर - नारी हर्षित - मन।"

ग्राम, नगर आदि से भूमि सीमित न होकर केवल विश्व-भूमि रह गई है—

"जीवन की क्षुद्रता निखिल
मिट गई मनुज-जीवन से।"

जीवन सामूहिक होकर महान् हो गया है।

इसके पश्चात् कवि आधुनिक काल के ग्राम-कवि का चित्र खींचता है। उसके हृदय में अतृप्त रुदन है। उसके पास लिखने के लिये सामग्री भी वैसी नहीं, जैसी नागरिक कवियों के पास होती है। उसकी हृदय-वीणा से तो रोग-ग्रस्त, नंगे, भूखे और पीड़ित ग्राम-वासियों की करुण झंकार निकलती है—

"जीवन का संगीत बन रहा
यहाँ अतृप्त हृदय का रोदन।"

❀ ❀ ❀

"सुंदरता का मूल्य वहाँ क्या,
जहाँ उदर है क्षुब्ध, नग्न तन?"

❀ ❀ ❀

"जहाँ दैन्य - जर्जर असंख्य जन
पशु - जघन्य क्षण करते यापन;
कीड़ों - से रेंगते मनुज - शिशु,
जहाँ अकाल वृद्ध है यौवन।"

❀ ❀ ❀

"सुलभ यहाँ रे कवि को जग में
युग का नहीं सत्य, शिव, सुंदर;
कँप - कँप उठते उसके उर की
व्यथा - विमूर्छित वीणा के स्वर।"

ऐसा भासित होता है, मानो एक-एक शब्द के साथ कवि का हृदय लिपटा चला आया है। कौन

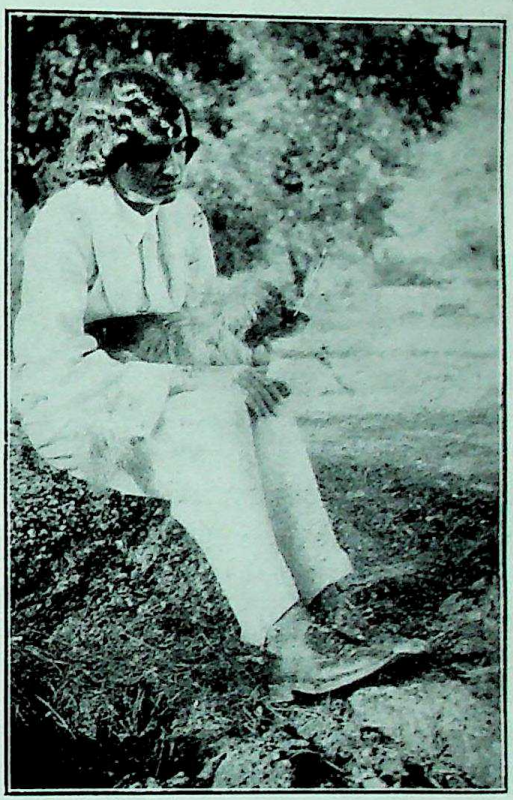

श्रीसुमित्रानंदन पंत

सोच सकता था कि विख्यात छायावादी कवि पंतजी ग्राम-कवि के रूप में ग्रामीण नर-कंकालों का चित्रण करेंगे। ग्रामों की जन-संख्या-वृद्धि और उत्साह-हीन युवकों का कितना सुंदर चित्र है! बच्चे कीड़े-मकोड़ों की तरह रेंगते हैं, और युवक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवावस्था में ही वृद्ध ज्ञात होते हैं। वहाँ जाकर कोई भी कवि ब्रह्म की तीनो विभूतियों 'सत्यं, शिवं, सुंदरम्'—की खोज किस प्रकार कर सकता है? जब मनुष्य का पेट भरा रहता है, तो उसे कला और सौंदर्य में भी रुचि उत्पन्न होती है। बेचारे ग्राम-वासियों को पेट-भर भोजन तक मिलता नहीं, वे सौंदर्य की उपासना करने के लिये शक्ति कहाँ से लावें? उनकी ऐसी दशा देखकर ग्राम-कवि के उर की व्यथा-विमूर्च्छित वीणा के स्वर काँपने लगते हैं, और उसकी समस्त भावनाएँ तदानुकूल हो जाती हैं।

तीसरी रचना (ग्राम) में कवि ग्राम को मानव-जीवन का इतिहास मानता है—

"वृहद् ग्रंथ मानव-जीवन का,
काल - ध्वंस से कवलित,
ग्राम आज है पृष्ठ जनों की
करुण कथा का जीवित!
युग - युग का इतिहास
सभ्यताओं का इसमें संचित,
संस्कृतियों की ह्रास - वृद्धि
जन - शोषण से रेखांकित।"

भारत की प्राचीन सभ्यता और आचार-विचार का थोड़ा-बहुत आभास ग्रामों में ही मिलता है। सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितियों की उथल - पुथल से जो-जो परिवर्तन हुए हैं, उनका पता भी ग्रामों की करुणाजनक दशा देख-कर भली भाँति लगता है। मनुष्य मनुष्य का ही संहार किस प्रकार कर सकता है, इसका स्पष्ट प्रमाण आजकल के ग्राम हैं। जो पहले धन-धान्य-पूर्ण थे, उन्हीं में अब लोग दाने-दाने के लिये तरसते हैं। जिनमें शिक्षा-दीक्षा के लिये गुरुकुल थे, वे ही अब अविद्या और निरक्षरता के शिकार हैं—

"मानव-दुर्गति की गाथा से ओत-प्रोत, मर्मांतक
सदियों के अत्याचारों की सूची यह रोमांचक!"

'ग्राम-चित्र'-शीर्षक कविता में कवि ने ग्राम-वासियों की दीन दशा, असंस्कृत अवस्था तथा असंगठन-प्रियता का बहुत ही स्वाभाविक चित्र खींचा है।

"यहाँ खर्व नर (वानर ?)
रहते युग-युग से अभिशापित,
अन्न - वस्त्र - पीड़ित, असभ्य,
निर्बुद्धि, पंक में पालित।
यह तो मानव - लोक नहीं रे,
यह है नरक अपरिचित,
यह भारत का ग्राम, सभ्यता,
संस्कृति से निर्वासित।
झाड़ - फूँस के विवर, यही
क्या जीवन - शिल्पी के घर?
कीड़ों - से रेंगते कौन ये?
बुद्धि - प्राण नारी - नर?
अकथनीय क्षुद्रता, विवशता
भरी यहाँ के जग में,
गृह - गृह में है कलह, खेत में
कलह, कलह है मग में।"

❀ ❀ ❀

"प्रकृति - धाम यह, तृण - तृण,
कण-कण जहाँ प्रफुल्लित, जीवित;
यहाँ अकेला मानव ही रे
चिर - विषण्ण, जीवन्मृत।"

इसी प्रकार अन्य रचनाओं में गाँव के वृद्ध पुरुषों, लड़कों, स्त्रियों आदि की रूप-रेखा अत्यंत नैसर्गिक है। भाव के अनुसार भाषा भी संगीत और प्रवाह से युक्त है। ग्राम-युवती का कितना यथातथ्य चित्रण है—

"कानों में गुड़हल खोंस—धवल"

❀ ❀ ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चिर-वर्षातप - हिम की पाली
धनि श्यामवरण, अति क्षिप्र चरण—
अधरों से धरे पकी बाली।"

❀ ❀ ❀

"वह हरसिंगार से कच सँवार,
मृदु मौलसिरी के गूँथ हार,
गउओं - सँग करती वन - विहार,
पिक - चातक के सँग दे पुकार।"

एक ग्रामीण युवती के शृंगार का क्या ही रमणीय और सुरुचि-पूर्ण वर्णन है। इसी प्रकार से गाँव के दीन-हीन लड़कों का शब्द-चित्र देखिए—

"कोई खंडित, कोई कुंठित,
कृश बाहु, पसलियाँ रेखांकित;
टहनी - सी टाँगें, बढ़ा पेट,
टेढ़े - मेढ़े, विकलांग, घृणित।

ग्राम-वासियों को स्वास्थ्य-विज्ञान, शरीर-विज्ञान आदि का ज्ञान नहीं रहता, इसी से उनके बच्चे भी सुडौल शरीरवाले नहीं होते। कवि ने बच्चों के नख-शिख का अत्यंत हृदयग्राही वर्णन किया है।

गाँव के बूढ़ों का चित्र खींचने में भी कवि ने कुछ कम पटुता नहीं दिखाई है—

"चिमटी उसकी सिकुड़ी चमड़ी
हिलते हड्डी के ढाँचे पर;
उभरी ढीली नसें जाल - सी
सूखी ठठरी से हैं लिपटी।"

इत्यादि।

कहाँ तक कहें, कवि ने जिस विषय को लिया, उसी में जीवन भर दिया है। इतना सजीव तथा मार्मिक चित्र अंकित कर देना केवल पंतजी-ऐसे भावुक कवियों का ही काम है।

ग्राम-देवी, ग्राम-देवता, संध्या, प्रभात, नदी, गंगा, खेत-खलियान, पुष्प-लता आदि के वर्णन भी यथातथ्य हुए हैं। धोबियों, कहारों और चमारों के नाच पढ़ते समय तो ऐसा भासित होता है, मानो कि नाच आँख के सामने ही हो रहा हो। शब्दमय नृत्य इसी को कहते हैं। एक-एक शब्द अनुरणनात्मक है।

पंतजी का प्राकृतिक सौंदर्य विख्यात ही है। 'ग्राम्या' में भी इसके अनेकों प्रमाण हैं—

"लो, मछरंगा उतर तीर-सा नीचे क्षण में,
पकड़ तड़पती मछली को, उड़ गया गगन में।"

❀ ❀ ❀

"वह, टीले के ऊपर, तूँबी-सा, बबूल भर;
सरपत का घोंसला बया का लटका सुंदर!"

❀ ❀ ❀

"वहाँ गिलहरी दौड़ा करती तरु-डालों पर
चंचल लहरी-सी, मृदु रोमिल पूँछ उठाकर।"

आदि बहुत सीधे-सादे और स्वाभाविक वर्णन हैं। इस पुस्तक में कवि ने मानव-जीवन-संबंधी किसी भी विषय को नहीं छोड़ा। महात्मा गांधी, भारतमाता, संस्कृति, अहिंसा इत्यादि के प्रति अपने विचार बड़ी सरल भाषा में, बहुत स्वाभाविक ढंग से, प्रकट किए हैं।

अंत में कवि वही कामना करता है, जो उसने पुस्तकारंभ में की थी—

राष्ट्रों से राष्ट्र मिलें, देशों से देश आज,
मानव से मानव, हो जीवन - निर्माण-काज।"

❀ ❀ ❀

हो धरणिजनों की, जगत-स्वर्ग, जीवन का घर;
नव मानव को दो प्रभु! भव मानवता का वर।

'ग्राम्या' निस्संदेह आधुनिक युग की समस्याओं की प्रतिक्रिया के रूप में है। इसे पढ़ने के पश्चात् यदि हम पंतजी को आधुनिक काल का प्रतिनिधि कवि कहें, तो कुछ अत्युक्ति न होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-उपवन

[श्रीगंगाप्रसाद 'कौशल']

क्यों भ्रमता है, रे पागल जन !
नंदन-वन यह नहीं स्वर्ग का, यह तो रे ! हिंदी का उपवन।
तुलसी के सुंदर-सुंदर दल
प्रेम-प्रभा प्रकटाते प्रतिपल,
सूर-कुंज-सुषमा में बरबस फँस जाता है निर्मल जन-मन।
नहीं विश्व में इनकी समता,
किसमें इतनी है उत्तमता ?
इतना कामद और कौन है, जितना रे ! हिंदी का कानन।
सरसी - सेनापति के सुंदर
बिलस रहे बहु मुकुर मनोहर,
पद्माकर के पद्म खिले हैं, वारो जन, उन पर तन-मन-धन,
देव देव - तरु शोभा न्यारी,
मधुमय लाल गुलाब बिहारी,
भूषण - भ्रमर वीर-रस-माता, मनोमुग्धकारी, शुचि-गुंजन।
कल केशव - चाँदनी निराली
फूल रही है डाली - डाली,
श्वेत रंग का जादू डाले, छीन रही रसिकों का है मन।
मीरा - जूही महक रही है,
सौरभ - युत आकाश-मही है,
अहा ! चंद शृंगार-हार यह, शशि-सम शोभित हिंदी-उपवन।
श्वेत कबीर - हंस मतवाले
विचर रहे हैं भोलेभाले,
शृंगारिक मतिराम-कोकिला करती उर-उर में मधु-सिंचन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चयन

१. वर्षा

(१)

सींच ताप धरती - वंध्या का
मीठे स्वर सारस चहकाए,
सेमल - सहजन - कुसुम सजाए,
और भाल सतरंगे रँग से रँग आई रानी संध्या का।
अलकों से मुक्ता - मद - कण झर
चले पुलक से मन नभ का भर
मीठी कुछ साधों से आँचल भर आई रजनी-गंधा का।
नाच चले झंझावातों में—
उड़ बगुले पाँतों - पाँतों में,
विद्युन्मय उसके सुहास से चमका शिखर-शिखर विंध्या का।

(२)

रोक रही क्यों मुझको आली ?
राशि - राशि कलियों में सपने
बिखराए पथ पर कामिनि ने,
लहरा बहती, बयार गाती इधर-उधर कुछ झुक-झुक डाली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं निकल चलूँ री ! गिरि, उपवन,
सखि ! चूम - चूम फिर सारा वन
छलका दूँ झर-निर्झर अपने बेसुध - से निजत्व की लाली ।
प्राण बसे नयनों में आ री !
मैं विमुग्ध, जीवन अभिसारी,
युग-युग की रीती अपनी भर लेने दे अलि ! मदिरा-प्याली ।

(कुमारी) रूपकुमारी वाजपेयी (बी० ए०)

× × ×

२. संस्कृत को प्रगतिशील भाषा बनाइए ❀

'संस्कृत-शिक्षा-सुधार-समिति' का मुख्य लक्ष्य यह होना चाहिए कि संस्कृत फिर प्रगतिशील भाषा बन जाय । जिस भाषा में साहित्यिक प्रवाह नहीं, वह मृत भाषा है या मृतप्राय । अख़ीरी साँस खींचती हुई भाषा के विशारदों में ज़िंदा-दिली आ नहीं सकती । उनके मस्तिष्क में ऐसी मुर्दनी छा जाती है कि वे वर्तमान विचार-धारा को नहीं समझ पाते, और न उसके अनुकूल अभिनव, भावमय साहित्य का सृजन ही करते हैं ; सिर्फ़ उस भाषा के उज्ज्वल अतीत की ख़ाम-ख़याली में ही मस्त रहते हैं, जिसका विषैला प्रभाव यह होता है कि उनमें अव्यावहारिकता, एकदेशीयता और परिवर्तन-भीरुता आदि दुर्गुण घर कर लेते हैं, जिससे वे देश, जाति और समाज के लिये निकम्मे साबित होते हैं । सबसे दयनीय बात तो यह है कि जिस भाषा के वे धुरंधर विद्वान् समझे जाते हैं, उसी के 'साहित्य-हीरक' को लोक-रुचि की 'शाण' पर शाणित कर उसका उज्ज्वल प्रकाश साहित्यिक संसार में फैला नहीं सकते ; वरन् अपनी अलौकिक ज्ञान-गुदड़ी में उस बहुमूल्य मणि को लपेटकर उसकी रही-सही प्रभा भी छिपा देते हैं ।

यदि संस्कृत-शिक्षा-सुधार-समिति यह महसूस करती है कि संस्कृत के पंडितों में अव्यावहारिकता आदि दोष आ गए हैं, तो उसे बड़ी दृढ़ता से मौजूदा पाठ्य-प्रणाली में आमूल परिवर्तन कर व्यावहारिक कोर्स बनाना चाहिए । इस रद्दोबदल में प्रसिद्ध-से-प्रसिद्ध किताबें कोर्स से हटानी पड़ें, तो भी उसकी तनिक चिंता न करनी चाहिए, क्योंकि वे ग्रंथ ही संस्कृत-साहित्यार्णव नहीं, बल्कि उसकी कुछ बूँदों के समान हैं । फिर पाठ्य से निकाल देने से उनका विनाश तो होगा नहीं, वरन् संस्कृत के लोक-प्रिय और आमफ़हम बन जाने के बाद वैसी सैकड़ों किताबें बन जायँगी ।

विद्यार्थियों के स्वतंत्र रूप से चिंतन, लेखन और सोचने-समझने की शक्ति के विकास का

❀ 'बिहार-संस्कृत-छात्रा-सम्मेलन' की माँगों के अनुसार 'बिहार-संस्कृत-एसोसिएशन' ने गत वर्ष 'संस्कृत-परिषद्' में स्त्री-प्रतिनिधि की नियुक्ति की है, और प्रथमा तथा मध्यमा-परीक्षा के व्याकरण-विषयक पत्रों में लड़कियों के लिये कुछ सुविधाएँ दी हैं । इधर बिहार-गवर्नमेंट ने 'संस्कृत-शिक्षा-सुधार-कमेटी' क़ायम कर एक प्रश्नावली प्रकाशित की है, जो भारत के सभी भागों में भेजी गई है । इस लेख में उसी के कुछ प्रश्नों पर विचार किया गया है ।—लेखिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख़याल न कर 'ग्रंथ-रक्षण' या 'ग्रंथाभ्यास' पर ज़्यादा ज़ोर देने की दूषित मनोवृत्ति अत्यंत घातक है। शिक्षित होने का यह मतलब नहीं कि व्यावहारिक जीवन से संबंध न रखनेवाली कुछ किताबों को कंठस्थ कर लें, और परीक्षा की कॉपी में हूबहू लिखकर प्रथम श्रेणी में पास हो जायँ, या जब ज़रूरत हो, रेकर्ड की तरह सुना सकें। इस तरह की शिक्षा 'शिक्षा-केतकी' के मधुमय फूल नहीं, बल्कि काँटे हैं, और काँटों से उलझे रहना बुद्धिमानी की बात नहीं।

भाषा प्रगतिशील कैसे बनती है ?

संस्कृत-शिक्षा-प्रणाली में सैकड़ों सुधार करने पर भी यदि सरस्वती की प्रिय पुत्रियों की उपेक्षा की गई, तो संस्कृत - भाषा कभी प्रगतिशील नहीं हो सकती। स्त्रियों ने जिस भाषा को ठुकराया, वह अतुल साहित्य-भांडार और अप्रतिम विद्वानों का हार्दिक सहयोग पाकर भी 'मृत भाषा' बन गई, और जिसे वे अपनाती हैं, वह शत-प्रतिशत विद्वानों के एक स्वर से 'गँवारू भाषा' कहकर विरोध करने पर भी प्रगतिशील भाषा बन जाती है। कारण, माताएँ जो आज बोलती हैं, कल बच्चे उसे तुतलाकर दुहराते हैं, और धीरे-धीरे वही भाषा जन-समुदाय की भाषा बन जाती है। अनंत काल से भाषा के सृजन, पालन, वर्द्धन और नव-नव रूप प्रदान करने में स्त्रियों का ही ज़बर्दस्त हाथ रहा है। यही कारण है कि वेदज्ञ ब्रह्मा प्रभृति तेंतिस कोटि देवताओं को छोड़कर विद्या की अधिष्ठात्री एक देवी बनाई गई हैं।

श्रीमती योगमायादेवी

लड़कियों के लिये अलग कोर्स की आवश्यकता

बालक और बालिकाओं के पाठ्यक्रम में भिन्नता होनी चाहिए, क्योंकि दोनो के कार्य, क्षेत्र, परिस्थिति और आवश्यकताएँ भिन्न-भिन्न हैं। गार्हस्थ्य-शास्त्र आदि कुछ ऐसे विषय हैं, जो लड़कियों के लिये जितने उपयोगी हैं, उतने लड़कों के लिये नहीं। स्त्री - पुरुषों के समानाधिकार और समान-शिक्षा के केंद्र योरप में भी तुल्य-शिक्षा की स्कीम व्यवहारतः सफल नहीं हो सकी। गार्हस्थ्य - शास्त्र, शिशु-पालन, संगीत आदि विषयों को लेकर डिग्रियाँ प्राप्त करनेवाली ९० प्रतिशत स्त्रियाँ ही रहती हैं। फिर भारत में, जहाँ ज़माने से स्त्रियों और पुरुषों के जुदे-जुदे कार्य-क्षेत्र हैं, समान-शिक्षा द्वारा संस्कृत-प्रचार की आशा करना दुराशा-मात्र है। इसका ज्वलंत प्रमाण स्वयं संस्कृत-एसोसिएशन के विगत २५ वर्षों की लज्जा-जनक रिपोर्ट ही है, जिससे पता चलता है कि अब तक एक दर्जन लड़कियाँ मध्यमा-परीक्षा भी पास नहीं कर सकी हैं।

देश का दुर्भाग्य है कि किसी भी वर्तमान शिक्षा-पद्धति में स्त्रियों की प्रवृत्ति और आवश्यकताओं का ख़याल नहीं रक्खा गया। स्त्री-शिक्षा के ज़बर्दस्त हिमायती भी अपनी लड़कियों को बेढंगी आधुनिक शिक्षा दिलाने से हिचकते और घबराते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। इस कमी को सारा देश बड़ी बेचैनी से महसूस कर रहा है। संस्कृत के उन्नायकों को चाहिए कि सुर-भारती के पुनरुज्जीवन का इतना सुनहला मौक़ा हाथ से न जाने दें, और युग-धर्म के अनुसार लड़कियों के लिये संस्कृत-साहित्य के साथ-साथ गार्हस्थ्य-शास्त्र, स्वास्थ्य-विज्ञान, गृहवस्तु-चिकित्सा, रोगी-परिचर्या, सिलाई-बुनाई और संगीत आदि उनके भावी जीवन के उपयोगी विषयों को लेकर सरल, आकर्षक और व्यावहारिक कोर्स बनाएँ; फिर तो अनायास ही घर-घर—स्त्री-शिक्षा के विरोधियों के यहाँ भी—संस्कृत-साहित्य और भारतीय संस्कृति का प्रसार हो जायगा।

(श्रीमती) योगमायादेवी
(सभानेत्री बिहार-संस्कृत-छात्रा-सम्मेलन)

× × ×

३. कृषक-बाला

हो कौन ? शुभे ! यों मीरा-सी,
तुम त्याग सभी सुख-भोग चलीं ;
इन दुसह दिवाकर की किरणों
में आज साधने योग चलीं।

जीर्ण - शीर्ण अंचल, उसमें भी
कई एक पैवंद लगाकर,
करुणा का सागर आँखों में,
उर में हाहाकार छिपाकर—

कर्म - निरत किस सत्यवान की
सावित्री बनकर अयि बाले !
डोल रही हो इस उपवन में
हरने को विधि - लिखित कसाले।

हँसिया है, या कर - पल्लव की
मृदु शय्या में स्नेह लहा है ;
भूतेश्वर का भाल छोड़कर
बाल-चंद्र यह खेल रहा है।

अधरों में टीसों का चुंबन,
चितवन में है मृदुतर कसकन ;
उर की पीड़ा छलक रही है
बन माथे में श्रम के जल-कन।

मुरझे - से, पीले गालों में
रुक्ष केश लहराते देखा ;
यौवन के प्रभात में प्रकटी
है विषाद की तममय रेखा।

भाराक्रांत बालियाँ गेहूँ
की करतीं तेरा पग - वंदन ;
वन की देवी, तुम्हें डालियाँ
झुक - झुक करती हैं अभिनंदन।

स्नेहांचल की शुचि छाया में
हरी - भरी हो क्यारी - क्यारी—
पुष्पित होकर आज फलित है
रानी ! उपवन की फुलवारी।

अरमानों का जगत सुनहला,
तेरी आशा का नंदन - वन
इन खेतों में सजनि ! छिपा है
तेरे उर का कोमल स्पंदन।

अन्न - युक्त कर वसुंधरा को
स्वयं वेदना लेकर बाले !
अन्नपूर्णे ! तुम भर दोगी
रिक्त जगतवालों के प्याले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरा लख उपकार और यह
मूक व्यथा की करुण कहानी—
इस कृतघ्नता पर मानवता
रुदन करेगी बरसों रानी!

उमाशंकर तिवारी 'समीर' (साहित्यालंकार)

× × ×

४. यह भय और आतंक क्यों ?

इसमें संदेह नहीं कि योरप के वर्तमान प्रलयकारी युद्ध का भारतवर्ष पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था, परंतु हमारे देश को प्रत्यक्ष रूप में अभी किसी बड़े ख़तरे का सामना नहीं करना पड़ा। फिर भी यहाँ ऐसा भय और आतंक छाया है कि जिन देशों में भयंकर रूप से युद्ध जारी है, वहाँ भी ऐसी अवस्था देखने में नहीं आती। बम गिर रहे हैं, गोलियाँ बरस रही हैं, घर-बार उजड़ रहे हैं, स्त्री-बच्चों का साथ छूट रहा है, और धन-संपत्ति स्वाहा हो रही है, फिर भी क्या मजाल कि इँगलैंड में किसी प्रकार की अव्यवस्था और अशांति का आभास भी मिलता हो। इतना भारी संकट सम्मुख देखकर भी इँगलैंड - निवासी आज चेतना-रहित और भयभीत नहीं हुए, वरन् प्रत्येक अँगरेज़ स्त्री-पुरुष इस समय देश की रक्षा के लिये अपना सर्वस्व अर्पण करने को उतावला हो रहा है।

इधर भारतवर्ष में ख़तरे की केवल संभावना-मात्र से ही ऐसा भय और आतंक छा गया है, मानो थोड़ी देर में यह संसार ही उलटनेवाला हो। किसी का ख़याल है, हिटलर यहाँ आया ही चाहता है, और उसके आते ही चारो तरफ़ क़त्ले-आम होने लगेगा। कोई समझता है, रूस सीमा तक पहुँच गया है, अब आमक्रण करने ही वाला है, और उसके आने पर सब ओर लूट-मार मच जायगी। कोई कहता है, जापान ताक लगाए बैठा है; अवसर देखते ही समुद्र की ओर से धावा बोल देगा। कुछ व्यक्ति सीमा-पार के पठानों के एकाएक भारत में फैल जाने और अत्याचार करने की शंका से परेशान हो रहे हैं।

यदि थोड़ी देर के लिये यह मान भी लिया जाय कि निकट - भविष्य में ऐसी कोई घटना घटनेवाली है, तब भी इसमें आश्चर्य करने और भयभीत होने की कोई बात है, यह समझ में नहीं आता। संसार में ऐसा प्रायः होता ही आया है। देशों और जातियों का उत्थान और पतन होता ही रहता है। जो कुछ सदा से होता आया है, वह अब भी हो सकता है, वह न पहले रुका है, न अब रुकेगा। फिर, जो होता आया है, और जो अनिवार्य है, उसके लिये भय और डर क्यों ? इससे पहले भारतवर्ष में राज्य बदले, साम्राज्य उलटे, और बड़े-बड़े राजनीतिक परिवर्तन हुए, परंतु ऐसा आतंकवाद तो आज से पहले कभी देखने-सुनने में नहीं आया। तब तो भारतवासी इतने सभ्य, इतने शिक्षित और इतने उन्नत न थे। फिर भी उनकी अपेक्षा आज के भारतीय डर और घबराहट के इतने अधिक शिकार क्यों हो रहे हैं ?

सच बात तो यह है कि भारतवर्ष पर निकट-भविष्य में बाहर से किसी विदेशी शक्ति का आक्रमण करना इतना सुगम नहीं, जितना समझा जाता है। वास्तव में बाहरी आक्रमण की अपेक्षा भीतर की अराजकता और गड़बड़ मुख्य रूप से चिंता का कारण है। सर्व-साधारण समझने लगे हैं कि आक्रमण होने अथवा युद्ध छिड़ जाने पर देश का साधारण प्रबंध और व्यवस्था बिगड़ जायगी, जनता की जान और माल सुरक्षित न रहेगा, और चारो तरफ़ उत्पात और उपद्रव होने लगेंगे। कुछ लोग तो गृह-युद्ध अर्थात् सिविलवार तक के भयंकर स्वप्न देख रहे हैं। दूसरे शब्दों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका अर्थ यह है कि बाहरी शत्रुओं की अपेक्षा घर के शत्रुओं का ध्यान ही यहाँ के लोगों को अधिक भयभीत किए हुए है।

लोगों की यह धारणा बिलकुल निर्मूल भी नहीं। अनेक स्थानों पर सरकार की ढील ने लोगों की आशंका सत्य सिद्ध होने में सहायता दी है। हाल में ही सरगोधा में दिन-दहाड़े हज़ारों देहाती लाठियाँ, कुल्हाड़ियाँ और तलवारें लिए नगर में घुस आए, और जान-माल की हानि तक कर डाली, परंतु सरकार से समय पर कुछ भी करते-धरते न बना। सरगोधा की जनता ने स्थिति की भयंकरता अनुभव करते हुए और अपनी असहाय अवस्था देखकर बराबर आठ दिन तक हड़ताल जारी रक्खी। इस पर भी सरकार यही समझती और कहती है कि सरगोधा-निवासियों का भयभीत होना और अपना कारोबार बंद रखना अकारण और कोरी हठधर्मी है। इससे पहले सरगोधा के एक लोक-सेवक डॉक्टर लहणासिंह पर कुछ व्यक्तियों ने आक्रमण कर उन्हें बुरी तरह घायल कर दिया था। सरकार उस संबंध में भी अपराधियों का अभी तक कोई पता नहीं लगा सकी। इधर, कुछ दिन हुए, पंजाब के एक नगर गोजराँवाला में, दिन के प्रकाश में, एक मुसलमान ने एक सिक्ख बैरिस्टर को मार डाला, और जब कुछ दूसरे सिक्खों पर भी उसने आक्रमण करना चाहा, तो उन्होंने उस मुसलमान को वहीं ढेर कर दिया। इसी समय सिंध में रोहरी-स्टेशन पर हासामल एम्० एल्० ए०-नामक एक कांग्रेसी कार्यकर्ता को रिवाल्वर की गोलियों का निशाना बना डालने का समाचार भी मिला है।

इस तरह की घटनाएँ और बातें ही जनता में भय और आतंक पैदा करने का कारण सिद्ध हो रही हैं। प्रश्न उठता है कि भारतवर्ष में आज से पहले भी तो ऐसी घटनाएँ और दृश्य देखने में आते रहे हैं? इस देश के इतिहास में ऐसे उदाहरण भी मिलते हैं, जब यहाँ लूट-मार और रक्त-पात का बाज़ार ख़ूब गरम रहा। परंतु यह नितांत सत्य है कि ऐसी विकट परिस्थितियों में भी यहाँ के रहनेवालों में ऐसा आतंक और भय देखने में नहीं आया, जैसा इस समय। इसका कारण भी स्पष्ट है। पहले समय में सर्व-साधारण बलिष्ठ थे। उनमें साहस और आत्मविश्वास की प्रचुर मात्रा थी। वे अपनी भुजाओं पर भरोसा रखते थे, और अवसर पड़ने पर अपने प्राणों को संकट में डालने से घबराते न थे। साथ ही उस ज़माने में प्रत्येक व्यक्ति अस्त्र-शस्त्र रख सकता था, और रखता था। परंतु अँगरेज़ी राज्य के डेढ़-दो सौ वर्षों में जहाँ यहाँ के लोग निःशस्त्र और निहत्थे हो गए, वहाँ उनके पराश्रित बनने और आलस्यमय जीवन व्यतीत करने से उनमें बल, साहस और आत्मविश्वास का भी ह्रास हो गया। नगर-निवासियों में तो इन गुणों का प्रायः अभाव ही दिखाई देने लगा है, इसीलिये वे आज ग्राम-निवासियों की अपेक्षा अधिक भयभीत हो रहे हैं। यदि दो-चार फ़सादी भी आकर किसी नगर में गड़बड़ पैदा करते हैं, तो नगर-निवासियों के प्राण सूखने लगते हैं, और फ़सादियों का विरोध अथवा सामना करने की अपेक्षा बहुधा सब भागकर छिप जाते हैं। कहना न होगा, कायरता और भीरुता ही वर्तमान काल में इस देश की जनता—विशेषकर नगरों में बसनेवाली जनता—के डर और घबराहट का कारण बनी हुई है।

अँगरेज़ी राज्य ने इस देश और देश-वासियों पर और चाहे कितने ही बड़े-बड़े उपकार क्यों न किए हों, परंतु उसकी सर्व-साधारण को निःशस्त्र और पंगु बनानेवाली अदूरदर्शिता-पूर्ण नीति केवल हमारे ही लिये नहीं, स्वयं अँगरेज़ी राज्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं अब सनलाइट् साबुन काम में लाती हूं—
यह कपड़े वास्तव में साफ़ करता है ॥

मेरी पड़ोसिन के कपड़े मेरे कपड़ों से सदा ही अधिक साफ़ दिखाई देते थे। तब मुझे पता चला कि वह सनलाइट् साबुन का प्रयोग करती है। उसने बताया कि उसके कपड़े धोने में भेद सनलाइट् के कारण है क्यों कि सनलाइट् अधिक फेन देता है और फेन मैल को दूर करती है। मैं ने भी इस भेदकर गुण का अनुभव किया है। मेरे सफ़ेद कपडे अब वास्तव में सफ़ेद हैं। सनलाइट् साबुन का भला हो!

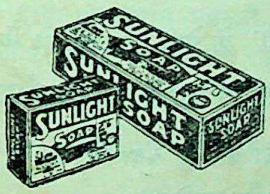

सनलाइट साबुन

भारत वर्ष में केवल शुद्ध वनस्पति तैलों से तैय्यार होता है

S. 14-50—HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसकी आप बहुत दिनों से प्रतीक्षा कर रहे थे

वही

कहानी का विशेषांक

अथवा

अमर कलाकारों की कृतियों का

अनुपम संग्रह

सुंदर व सुसज्जित रूप में प्रकाशित हो गया

भाव-पूर्ण चित्रों से युक्त १५० पृष्ठों के इस विशेषांक में आप रवींद्रनाथ ठाकुर, मैक्सिम गोर्की, डोरोथी कैरस, रैमन देलवाली-इन्क्लान, बंकिमचंद्र, धूमकेतु, चिंचलीकर, हज़ारीप्रसाद द्विवेदी, रामकुमार वर्मा, भदंत आनंद कौशल्यायन, उपेंद्रनाथ अश्क, प्रकाशचंद गुप्त और गुलाबराय आदि ख्याति-प्राप्त लेखकों व साहित्यिक महारथियों की अनूठी व अभिनव कहानियाँ, एकांकी नाटक तथा लेख पढ़िए।

पाठकगण कृपया नोट कर लें—

कथा-साहित्य के इस बहुमूल्य ग्रंथ को तो हम 'कहानी' के प्रेमी ग्राहकों को भेंट करेंगे ही साथ ही जो सज्जन ३१ ऑक्टोबर, ४० तक 'कहानी' के ग्राहक बन जायँगे, उन्हें १॥) मूल्य की 'कोकिला' पुस्तक भेंट करेंगे। 'कहानी' का वार्षिक चंदा केवल २) है। पुस्तकालयों के लिये १॥), भेंट पुस्तक के पोस्टेज के लिये ।=) और चाहिए।

सरस्वती-प्रेस

बनारस-कैंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बेकारी के युग में

अधिक संतानें उत्पन्न करना पाप है !

अधिक संतानोत्पत्ति से स्त्रियों का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। जीवन नीरस और विषम बन जाता है। फिर अधिक संतानों का भरण-पोषण माता-पिता के लिये एक समस्या भी तो है। इसलिये

कम संतानें उत्पन्न करो।

संतान-संख्या सीमित रखने के लिये हिंदी में सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है—

संतान-नियह-विज्ञान

(लेखक—डॉ० रामचंद्र मिश्र एम्० बी० बी० एस्०)

जिन स्त्री-पुरुषों के संतानें अधिक हैं, तथा जो और संतानें उत्पन्न करना नहीं चाहते, तथा जिन रुग्णा स्त्रियों को गर्भधारण करने में जान जोखिम का सामना है, ऐसी स्त्रियों को पुस्तक में वर्णित उपायों के प्रयोग में लाने से गर्भ-स्थिति न होगी। १७ चित्रों और आकृतियों-सहित कपड़े की सुंदर जिल्दवाली पुस्तक का मूल्य केवल १।) है। पट्ठे की जिल्द का ।।।) डाक-खर्च ।=)

आज ही ऑर्डर दीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

रेलवे-स्टेशनों पर व्हीलर की बुक-स्टालों पर भी बिकती है।

पता—'अरुण'-कार्यालय, जीलाल मुहल्ला, मुरादाबाद (यू०पी०)

सचित्र, साहित्यिक, सामाजिक तथा कहानी-प्रधान मासिक पत्र

'अरुण'

रोचक, मौलिक कहानियाँ, विदेशी कहानियों के ललित अनुवाद, मार्मिक कविताएँ, धारावाहिक उपन्यास, हास्य-रस-प्रधान प्रहसन, साहित्यिक तथा सामाजिक लेख, निष्पक्ष समालोचना, 'पांडेजी की टेलीफ़ोन-वार्ता', फूलों की डाली २५०) इनाम की 'अरुण'-पहेली, तिरंगे तथा इकरंगे अनेक चित्र इसकी विशेषताएँ हैं।

'अरुण' पुरस्कार-पहेलियाँ हिंदी-संसार में सर्वश्रेष्ठ हैं।

वार्षिक मूल्य ३)] नमूने की प्रति ।) [एक प्रति ।)

व्हीलर की रेलवे-स्टेशन बुक-स्टालों पर तथा शहरों की अखबार-एजेंसियों में बिकता है।

पता—'अरुण'-कार्यालय, मुरादाबाद (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिक क्रांति—

नेशनल हेराल्ड—२२ मई, १९४० ई०—"यशपालजी की कहानियों का संग्रह 'पिंजरे की उड़ान' समाज के रूढ़िवाद और संस्कारों के बंधनों के विरुद्ध एक कलामय विद्रोह है। यशपाल एक विद्रोही कलाकार हैं। यह संग्रह संसार के ऊँचे-से-ऊँचे आधुनिक साहित्य में स्थान पाने योग्य है।"

श्रीरायकृष्णदासजी—"'पिंजरे की उड़ान' एक आविष्कार है। यह कहानियाँ संसार की अच्छी-से-अच्छी कहानियों का मुक़ाबिला करती हैं। इन कहानियों की हस्त-लिखित प्रतियाँ काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभा के संग्रहालय में सुरक्षित रक्खी जानी चाहिए.....।"

श्रीसियारामशरण गुप्त—"...कहानियाँ प्रायः मिट्टी की प्याली की तरह होती हैं, जिनमें रस-पान कर उन्हें तोड़ दिया जाता है। परंतु 'पिंजरे की उड़ान' की कहानियाँ सोने की प्यालियाँ हैं, जिन्हें अनेक बार रस-पान करने के लिये सुरक्षित रक्खा जाना चाहिए।"

कवि बच्चन (मधुशाला के लेखक)—"एक-एक कहानी को पढ़कर कुछ देर आँख मूँदकर विचार-मग्न हो जाता हूँ...इनमें भरी है गहरी आंतरिकता और मधुर विद्रूप.....।"

न्याय का संघर्ष

आचार्य नरेंद्र देव—"समाजवाद, राजनीति और न्याय क्या है ? ऐसे सूखे विषयों को रोचक और आकर्षक बना देना लेखक का कमाल है। इन लेखों (१९ लेखों) को पढ़कर ओठों पर मुस्कराहट भी आती है, और आँखों में आँसू भी और मनुष्य सोचने लगता है..... क्या किया जाय" इन्हें लेख न कहकर कहानी कहना ही ठीक होगा।

उसी लेखक यशपाल की लेखनी से तीनसौ पृष्ठ की महत्त्व-पूर्ण पुस्तक।

मार्क्सवाद

३१ अगस्त, ४० को प्रकाशित हो रही हैं—पुस्तकों के कुछ शीर्षक ये हैं—

समाजवाद क्या है, संतों का समाजवाद, समाजवाद और साम्यवाद, समाजवाद और कम्यूनिज़्म, समाजवाद और आध्यात्मिकता, समाजवाद और नाज़ीवाद, समाजवाद और गांधीवाद, समाजवाद का मार्ग, समाजवाद के सिद्धांत, समाजवाद में कोई क्यों काम करेगा? सामजवाद और अराजकता।

यह पुस्तक अनुवाद या संकलन नहीं। आठ वर्ष तक अनेक योरपियन भाषाओं में इस विषय का अध्ययन करने के बाद इस विषय पर हिंदी में यह पुस्तक लिखी गई है। इसके जोड़ की पुस्तक हिंदी में ही नहीं, बल्कि अँगरेज़ी में भी कम मिलेगी।

क्रांति की आग लगा देनेवाली इस विचार-धारा से आप का परिचय आवश्यक है।

मूल्य—पिंजरे की उड़ान १), डाक-खर्च =), न्याय का संघर्ष ।।।), डाक-खर्च =); मार्क्सवाद १।।।), डाक-खर्च ।)

मैनेजर—विप्लव-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये भी आज घातक सिद्ध हो रही है। सच तो यह है कि अँगरेज़ी राज्य के इन डेढ़-दो सौ वर्षों में ही यहाँ के रहनेवाले नपुंसक बना दिए गए हैं। शरीर से पराधीन होने के साथ ही परतंत्रता और परवशता उनके दिल और दिमाग़ में भी घर कर गई है। वह शक्ति और साहस के साथ-साथ आत्मविश्वास तक खो चुके हैं। ब्रिटिश सरकार ने अपने भावी हित को दृष्टि में रखकर ही कदाचित् इस घातक नीति का अवलंबन किया था, परंतु आज यही वस्तु उसके मार्ग में रोड़ा सिद्ध हो रही है। आज भारतवर्ष की जनता अँगरेज़ों की सहायता तो क्या, यदि किसी शत्रु का आक्रमण हो जाय, तो अपनी रक्षा करने में भी समर्थ नहीं।

कुछ व्यक्तियों का विचार है कि नवीन वैज्ञानिक आविष्कार और युद्ध के आधुनिक विनाशकारी ढंग ही भारत के लोगों में अधिक भय उत्पन्न किए हुए हैं। परंतु इनमें से तो किसी का अभी तक इस देश में उपयोग नहीं हुआ। पहले ही से भयभीत होना निश्चित रूप से हमारी मानसिक दुर्बलता और भीरुता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इस पर योरप की जातियाँ अपने आपको भीषण काल के मुख में देखकर भी तो घबराहट से एकदम चेतना-शून्य नहीं हो रही हैं। जिन देशों की स्वतंत्रता अपहरण हो चुकी है, वे भी भीतर - ही - भीतर व्यवस्थित रूप से अपनी खोई हुई स्वतंत्रता के लिये प्रयत्नशील हैं। कहना न होगा कि शताब्दियों के परिणाम-स्वरूप भारतवासियों में आ गई दुर्बलता और कायरता ही इस देश की वर्तमान शोचनीय दशा का एकमात्र कारण है। और, उस दुर्बलता और कायरता का उत्तरदायित्व है ब्रिटिश सरकार पर।

आज सरकार को इस देश में हवाई जहाज़ों का कारख़ाना खोलने और भारतीयों को पॉइलट बनाने की चिंता हुई है। आज उन्हें यहाँ की सैनिक शक्ति बढ़ाने और भारतीय युवकों को फ़ौजी शिक्षा देने की सूझी है। परंतु प्रथम तो इन सब योजनाओं के कार्य-रूप में परिणत होने में न-जाने अभी कितना समय लगे, दूसरे, कुछ हवाई जहाज़ तैयार हो जाने, कुछ भारतीय पॉइलट बन जाने, कुछ सेना बढ़ जाने और यहाँ के कुछ इने-गिने युवकों के फ़ौजी ड्रिल सीख लेने से ही क्या हो जायगा? सर्व-साधारण में पाई जानेवाली निर्बलता और भीरुता की समस्या इन सब उपायों से हल होनी संभव नहीं। और, यह सिद्ध है कि जब तक यह मूल-समस्या हल न होगी, तब तक देश की रक्षा का प्रश्न भी हल नहीं हो सकता। सचाई यह है कि यहाँ के लोग अपने ही यहाँ के इने-गिने गुंडों और बदमाशों से अपनी रक्षा करने योग्य नहीं रहे। ऐसी अवस्था में विदेशी शत्रुओं का सामना वे क्या करेंगे।

आवश्यकता इस बात की है कि भारत-सरकार अब भी अपनी भूल अनुभव करते हुए अपनी नीति में परिवर्तन करे। सर्व-साधारण में स्वालंबन और आत्मविश्वास के भाव पैदा करे। उनकी शारीरिक उन्नति और कार्य-कुशलता की ओर व्यावहारिक रूप में ध्यान दे। उन्हें आधुनिक ढंग के शस्त्रों का उपयोग करना सिखाए। अपनी रक्षा करने में समर्थ ऐसी जनता ही समय पड़ने पर सरकार के लिये सहायक और हितकर सिद्ध हो सकती है। इस समय जो भय और आतंक फैला हुआ है, इससे छुटकारा भी ऐसी शक्ति-संपन्न, साहसी और आत्मविश्वासी जनता ही दिला सकती है। परंतु ब्रिटिश सरकार ठोकर खाकर समय पर चेतेगी, और चेतकर भी कार्य-रूप में कुछ करेगी, इसमें भारी संदेह है। कम-से-कम अभी तक ऐसे कोई लक्षण दिखाई नहीं दे रहे।

एम्० पी० केदार

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. शिशु !

(१)

कंपनमय इस जीवन की
हो तुम्हीं एक परिभाषा ;
नैराश्य-गगन की आशा ,
तुम चिर-संचित अभिलाषा ।

(२)

लावण्य-मधुरिमा की तुम
प्रतिमा-सी बनकर आए ;
मुसकान सुधा छलकाते
जीवन घट भरकर लाए ।

(३)

लखकर मुख-चंद्र तुम्हारा
मृदुता-निधि मैंने पा ली ;
प्रतिभासित होती तुममें
मेरे यौवन की लाली ।

(४)

भावी जीवन के गौरव !
तुम हो अतीत की छाया ;
मानस के हंस विमल हो ,
तुम प्रकृति - कल्पना - काया ।

(५)

दाँतों की द्युति किरणों से
उर - कुमुद समोद खिलाते ;
मुख - चंद्र निहार नयन ये
मुसकान - सुधा - रस पाते ।

(६)

मेरे प्रसुप्त शैशव को
तुम आज जगाने आए ;
चिर - विस्मृत अरमानों के
दर्पण सदर्प बन आए ।

(७)

मेरी आशा के अंकुर !
दुखिया मन के जीवन-धन !
नयनों के मंजुल अंजन !
कुसुमित वसंत के उपवन !

(८)

नव - अधर - अरुणिमा मेरी ,
जीवित सौभाग्य - निशानी ,
है अंतर्निहित तुम्हीं में
मेरी भी करुण कहानी ।

लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक'

देश

(युग-प्रवर्तक राष्ट्रीय साप्ताहिक)

पढ़िए और विज्ञापन दीजिए !

वार्षिक मूल्य ३॥)

नमूना मुफ़्त मँगाइए ।

मैनेजर देश, मछुआटोली, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

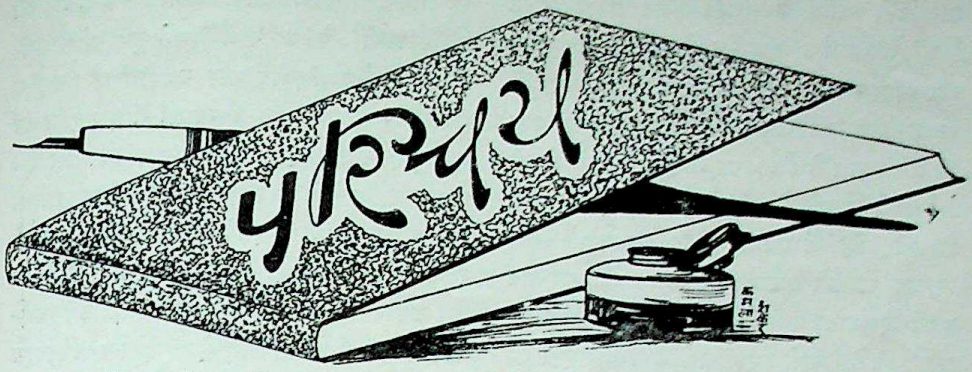

राजपूताने का इतिहास (प्रथम भाग)—लेखक, श्रीजगदीशसिंहजी गहलौत, एम्० आर० ए० एस्०; प्रकाशक, हिंदी - साहित्य - प्रकाशन - मंडल, जोधपुर; मूल्य ५)

प्रस्तुत पुस्तक अपने ढंग की निराली ही है। 'टॉड राजस्थान', कविराजा श्यामलदासजी के इतिहास तथा आचार्य श्रीमहामहोपाध्याय साहित्यिक-वाचस्पति, रायबहादुर डॉक्टर गौरीशंकर-हीराचंदजी ओझा के प्रसिद्ध बृहत् इतिहास आदि अभी तक प्रकाशित पुस्तकों में इस पुस्तक का एक विशिष्ट स्थान है। ओझाजी के समान एकदम विवेचनात्मक पद्धति, टॉड की-सी भाटों की वर्णन - शैली तथा कविराजा की-सी चारणात्मक व्याख्या आदि सभी प्रकार की शैलियों की खिचड़ी आप इसमें पाएँगे। इसीलिये पुस्तक बड़ी रोचक, खोज-पूर्ण तथा घटना-विशिष्ट हो गई है। यह कोरी इतिहास-पोथी ही नहीं रही, अपितु राजपूत राजवंशों तथा राजस्थानी जनता की विगत ऐतिह्य घटनाओं तथा विशेषताओं का एक बृहत् कोष बन गई है। सत्य तो यह है कि यह पुस्तक राजपूताना की भूतकालिक डाइरेक्टरी ही बन गई है। राजस्थान-संबंधी प्रत्येक विषय पर इसमें कुछ-न-कुछ उपयोगी अनुसंधान पाया जाता है। उदयपुर (मेवाड़), बाँसवाड़ा, जैसलमेर, प्रतापगढ़, शाहपुरा आदि प्रसिद्ध सूर्यवंशी रियासतों का इतिहास इसमें वर्णित है। वहाँ की जनता, रहन-सहन, खान-पान, वस्त्रादि तथा भूगोल, वाणिज्य-व्यवसाय आदि विषयों पर भी खूब प्रकाश डाला गया है। पुस्तक अत्यंत खोज - पूर्ण है। और, श्रीयुत के० एन्० दीक्षित डाइरेक्टर जनरल ऑफ़ आर्केयालॉजी की भूमिका ने उसमें चार चाँद लगा दिए हैं। प्रत्येक इतिहास-प्रेमी को इसका संग्रह करना चाहिए।

सुधींद्र वर्मा (एम्० ए०, एल्-एल्० बी०)

× × ×

पुरुष और नारी—लेखक, राजा राधिकारमणसिंह एम्० ए०; प्रकाशक, श्रीराजराजेश्वरी साहित्य-मंदिर, सूर्यपुरा, शाहाबाद (बिहार); मूल्य २॥)

इस सामाजिक उपन्यास का प्रथम संस्करण हमारे सामने है। उपन्यास का प्लाट काफ़ी रोचक और मौलिक है। देश-सेवा के नशे में मतवाले होकर हमारे नवयुवक किस प्रकार आँधी की भाँति राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने लगते हैं, और आंदोलन की नीति बिना समझे - बूझे कोई कार्य कर उठाने पर किस प्रकार उन्हें हतोत्साह होना पड़ता है, कर्तव्य की आड़ में स्वेच्छा-चारिता की वासना किस प्रकार उन्हें पग-पग पर पराजित करती रहती है, स्त्री कहलानेवाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मायाविनी शक्ति के सामने किस प्रकार उनके सिद्धांतों की टेक उड़न-छू हो जाती है, धीरज और साहस का बाँध परिस्थितियों के चक्कर में पड़कर कैसे टूट जाता है, मानवता-जैसी वस्तु भी उनके हाथ से निकलकर उन्हें एक कीड़े से भी गई-बीती ज़िंदगी बिताने को कैसे मजबूर कर देती है, और अंत में उनका भविष्य कल्पनाओं और स्मृतियों का कैसे आवरण-मात्र रह जाता है, यह सब इसमें दिखलाया गया है। देश के सच्चे सेवक का जीवन चित्रित करते हुए लेखक ने उच्च आदर्शों की स्थिरता का दृश्य भी दिखलाया है। नेता कहलाने की हविस रखनेवाले युवकों की स्वार्थ-पूजा का चित्रण भी बड़ी ख़ूबी के साथ लेखक ने किया है। पुरुष कहलाकर अपना अस्तित्व क़ायम रखने के लिये कठिन-से-कठिन परिस्थितियों के जाल को छिन्न-भिन्न करके विजयी होनेवाले नवयुवक का जीवन भी एक ओर है, तथा ममता, स्नेह, सच्चरित्रता और सहनशीलता की परा काष्ठा बनी हुई नारी की कल्पना भी दूसरी ओर। अंतर्द्वंद्व और उद्देश्यों के संघर्ष का दिग्दर्शन भी बड़ी सफलता के साथ किया गया है। कहीं-कहीं भाषा के प्रवाह में आकर लेखक कथानक से दूर निकल गया है, परंतु वह कोई उल्लेखनीय बात नहीं। पुस्तक आदि से अंत तक रोचक और सार-युक्त है। कथानक के निर्वाह में कहीं भी शिथिलता नहीं। आरंभ से अंत तक उपन्यास की घटनाएँ सजीव-जैसी ज्ञात होती हैं। उनमें कृत्रिमता है, सरलता है, और स्वाभाविकता भी है। लेखक की शैली कुछ पुरानी अवश्य है, और संवाद भी कहीं-कहीं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से असंगत हो गए हैं। किसी-किसी स्थान पर संवादों ने भाषण और उपदेश का रूप ले लिया है, परंतु ऐसी त्रुटियाँ कम हैं। उपन्यासकार की प्रतिभा और रचना-सौष्ठव की प्रशंसा किए विना हम कदापि नहीं रह सकते। समय और समाज-प्रगति की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए लेखक की कल्पना सर्वथा वांछनीय और उपयोगी है। राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत उपन्यासों में इस कृति का एक सुंदर स्थान रहेगा, ऐसा हमारा विश्वास है। हम आशा करते हैं कि हिंदी-जगत् इस उपन्यास को अवश्य अपनाएगा। इसके लेखक श्रीमान् राजा राधिकारमणसिंह हिंदी-भाषा के पुराने कलाकार हैं। उनका यह प्रयास उन्हें एक अच्छे उपन्यास-कार के रूप में ला सकेगा, ऐसा हमारा विश्वास है। प्रत्येक हिंदी-भाषा-भाषी को एक बार यह उपन्यास अवश्य अवलोकन करना चाहिए।

× × ×

ज्वर-मीमांसा—लेखक, स्वामी हरिशरणानंद वैद्य; प्रकाशक, पंजाब-आयुर्वेदिक फ़ार्मेसी, अकाली-मार्केट, अमृतसर; मूल्य १॥)

प्रस्तुत पुस्तक में ज्वर-संबंधी अन्वेषण-सामग्री पर्याप्त रूप में पाई जाती है। ज्वर का स्वरूप क्या है, शरीर में ज्वर कैसे प्रकट होता है, इसके कितने भेद हैं, किन कारणों से ज्वर इतनी व्यापक व्याधि हो गई है, आदि-आदि विषयों की मीमांसा बड़े सुंदर ढंग से इस पुस्तक में की गई है। आयुर्वेद-शास्त्र में ज्वर के विषय पर लिखी गई पुस्तकों के सिद्धांतों की लेखक ने विस्तृत आलोचना की है, और उन सिद्धांतों में प्रयोग-संबंधी सत्यता का भले प्रकार विवेचन किया है। यह पुस्तक ज्वर की किसी आंशिक स्थिति पर प्रकाश न डालकर समस्त ज्वर-निदान-विषय पर पूरा प्रकाश डालती है। पुस्तक उपयोगी और संग्रहणीय है, तथा चिकित्सा-संबंधी साहित्य का एक आवश्यक ग्रंथ है। आशा है, हिंदी-संसार इसका समुचित स्वागत करके लेखक की उत्साह-वृद्धि करेगा।

'अरुण'

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दातुलै की धार—रचयिता, पंडित श्यामाचरण-दत्त पंत ; टीकाकार, पंडित देवदत्त त्रिपाठी वेद-भूषण ; प्रकाशक, ए० बी० प्रेस, नैनीताल ; १९४० । पृष्ठ-संख्या २४ ।

प्रस्तुत पुस्तक में ४४ मुक्तक छंद हैं । प्रत्येक छंद 'दातुलै की धार' से प्रारंभ होता है । पहाड़ी-भाषा में इतना सुंदर गीति-काव्य सराहनीय है । भाषा बहुत ही सरल है । हिंदी-भाषा-भाषी विना टीका के ही प्रत्येक छंद समझ सकते हैं । वैसे टीका भी दी हुई है । प्रथम छंद है—

दातुलै की धार । पर्वती कुमार । चलै दिनी बिघन हूँ जाड़ै बै कुठार । मंगलदातार । श्रीगणेश ज्यू हूँ पैल करौ नमस्कार ।

टीका—पर्वत-निवासी श्रीसदाशिव और पार्वती-जी के पुत्र, जो विघ्नों की जड़ों पर हँसिया की धार के समान कुठार चला देते हैं, उन मंगल के देने-वाले श्रीगणेशजी को प्रथम नमस्कार करता हूँ, अथवा प्रथम सब नमस्कार करो ।

इसी छंद की भाँति सभी छंद सरल तथा सरस हैं ।

प्रथम पाँच छंदों में गणेश, सरस्वती, लक्ष्मी और शिवजी की वंदना है । उसके बाद श्रीकृष्ण-जी के लीला-संबंधी कुछ छंद हैं । तत्पश्चात् संसार की असारता, गांधीवाद, प्राकृतिक दृश्यों इत्यादि भिन्न-भिन्न विषयों पर बड़े मनोहारी पद्य हैं । पुस्तक पढ़ने योग्य है । सा०

---

५ घड़ियाँ और १,९७५ सुंदर इनाम केवल १।।।≡) में

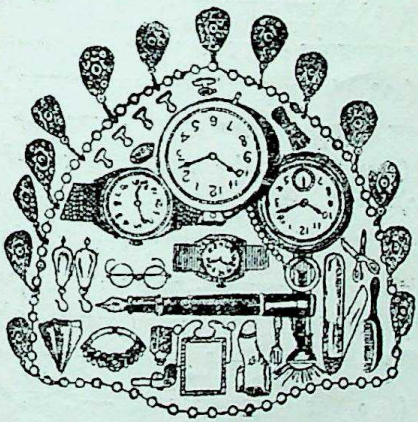

हमारी सुगंधित ओटो रोज़ की १६ शीशी केवल १।।।≡) में लेनेवाले को दो रेलवे टाइम डमी पाकेट वाच, दो रोल्ड गोल्ड गिल्ट डमी रिस्ट-वाच मय फ़ीता के, १ डमी टाइमपीस, १ सेफ़्टी रेज़र, १ चाक़ू, एक साबुन और एक अदद फ़ाउंटेन पेन मय १४ केरिट रोल्ड गोल्ड निब और एक अदद १,५०० फ़ीट रेज की टार्च लाइट इत्यादि मुफ़्त दी जायँगी । पैकिंग पोस्टेज ।।।-), जल्दी मँगवा लें, वरना यह मौक़ा हाथ न आएगा ।

पता—जी० वाच-कंपनी, पोस्टबक्स नं० २७ (S.M.L.) अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं । पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'संस्मरण' (उपन्यास)—लेखक, श्रीसर्वदानंद वर्मा ; मूल्य १॥)

(२) 'मैं भूल न सकूँ' (कहानियाँ)—लेखक, श्रीजयंत ; मूल्य १)

(३) 'नैवेद्य' (काव्य)—लेखक, कुँवर हरिश्चंद्रदेव वर्मा 'चातक' कविरत्न ; मूल्य १)

(४) 'माधवनिदानम्' (वैद्यक)—लेखक, आयुर्वेदाचार्य श्रीभागीरथ स्वामी ; मूल्य ।॥)

(५) 'भावप्रकाशनिघंटु' (वैद्यक)—लेखक, श्रीपं० रामतेज पांडेय साहित्य-शास्त्री ; मूल्य १।)

(६) 'मीराँ की प्रेम-वाणी' (काव्य)—संपादक, श्रीपं० रामलोचन शर्मा 'कंटक' एम्० ए०; मूल्य १।)

(७) 'आँखों-देखा' (कहानियाँ)—लेखक, श्रीमंगलामोहन ; मूल्य ।॥)

(८) 'सुखी समाज' (उपन्यास)—लेखक, श्रीबुद्धिभद्र ; मूल्य ।=)

(९) 'आहुति' (नाटक)—लेखक, श्रीहरिकृष्ण 'प्रेमी' ; मूल्य ॥=)

(१०) 'सेवा-पथ' (नाटक)—लेखक, श्रीसेठ गोविंददास ; मूल्य ।॥)

(११) 'कल्पवृक्ष' (काव्य)—लेखक, श्रीयुत कविराम ; मूल्य १॥)

(१२) 'ज्वर-मीमांसा' (चिकित्सा)—लेखक, श्रीहरिशरणानंद ; मूल्य १॥)

(१३) 'करुण पुकार' (पाँच एकांकी नाटक)—लेखक, श्रीसूर्यनारायण श्रीवास्तव ; मूल्य ।)

(१४) 'पारिजात' (काव्य)—लेखक, श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ; मूल्य ४)

(१५) 'शरीर बीवी' (उपन्यास)—लेखक, मिर्ज़ा अज़ीमबेग चग़ताई ; मूल्य १।)

(१६) 'व्यक्ति और राज' (राजनीतिक)—लेखक, श्रीसंपूर्णानंद वर्मा ; मूल्य १=)

(१७) 'अर्थशास्त्र की रूप-रेखा'—लेखक, श्रीपं० रमाशंकर दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी०; मूल्य ६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. रेडियो-स्टेशनों से कैसी बोली बोली जानी चाहिए ?

हुस्थान में रहनेवाले ज़्यादा-तर अपढ़ या कम-पढ़े हैं। रेडियो सभी का है। इसलिये इसमें ऐसी बोली बोली जानी चाहिए, जो ज़्यादा-से-ज़्यादा लोगों की समझ में, आसानी से, आ जाय। ज़िंदा ज़बान की कसौटी भी यही है कि अधिक-से-अधिक लोग उसे समझ सकें, और उसके द्वारा बड़े-से-बड़ा भाव समझाया जा सके। इसीलिये हर सूबे के रेडियो-स्टेशन अपने सूबे की बोलचाल की भाषा में भी प्रोग्राम ब्रॉडकास्ट करते हैं। लखनऊ-रेडियो-स्टेशन का फैलाव यू० पी०, सी० पी०, बिहार आदि सूबों में है। इन प्रांतों में संस्कृत से निकली बोलियाँ बोली जाती हैं। इसलिये यहाँ के रेडियो-स्टेशन की बोली ऐसी होनी चाहिए, जिसे अधिक-से-अधिक या सब लोग समझ सकें। आज हमें यही सवाल हल करना है कि यह भाषा कैसी होनी चाहिए ?

इन सूबों यानी पुराने मध्य-देश की आठ ख़ास बोलियों को हिंदी-नाम से पुकारा जाता है। इनमें से खड़ी बोली, बाँगरू, व्रज, कनौजी तथा बुंदेली, इन पाँच को भाषा-सर्वे में पश्चिमी हिंदी नाम दिया गया है। बाक़ी तीन अवधी, बघेली तथा छत्तीसगढ़ी को पूर्वी हिंदी कहते हैं। इनमें से खड़ी बोली आजकल की हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी की जड़ है। खड़ी बोली अपने शुद्ध रूप में केवल एक बोली है, पर जब वह साहित्यिक रूप लेती है, तब कभी हिंदी कही जाती है, और कभी उर्दू। जिस भाषा में संस्कृत के तत्सम और अर्द्ध-तत्सम शब्द अधिक आते हैं, वह हिंदी कही जाती है, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसमें अरबी, फ़ारसी के ज़्यादा लफ़्ज़ इस्तेमाल होते हैं, वह उर्दू। जब खड़ी बोली फ़ारसी और अरबी के तत्सम और अर्द्ध-तत्सम शब्दों को इतना अपना लेती है कि कभी-कभी उसकी वाक्य-रचना पर भी कुछ विदेशी रंग चढ़ जाता है, तो उसे उर्दू कहते हैं। जब वह संस्कृत के तत्सम और अर्द्ध-तत्सम शब्दों को अपनाती है, और अपना ही व्याकरण रखती है, तो वह हिंदी कहलाती है। इस प्रकार भाषा-विज्ञान की दृष्टि से हिंदी और उर्दू खड़ी बोली के ही दो साहित्यिक रूप-मात्र हैं। इन दोनो ही का लिटरेचर धड़ल्ले से बढ़ रहा है, और बढ़ना भी चाहिए, पर बोलचाल के लिये—ज़्यादा-से-ज़्यादा लोगों तक अपनी बात पहुँचाने के लिये—एक बोली की पहेली अब भी बनी हुई है। इस कमी को हम हिंदुस्तानी से पूरा करना चाहते हैं। यह हिंदुस्तानी, जैसा ऊपर कहा जा चुका है, खड़ी बोली का ही एक रूप है, जिसे न तो शुद्ध साहित्यिक भाषा ही कह सकते हैं, और न ठेठ बोलचाल।

आख़िर हिंदुस्तानी है क्या? हमारी राय में संस्कृत, प्राकृत, व्रज-भाषा, खड़ी बोली, फ़ारसी, अरबी, अँगरेज़ी, फ़्रांसीसी, पुर्तगाली वग़ैरा के मेल से जो एक नई ज़बान आप-से-आप बन गई है, वही हिंदुस्तानी कहला रही है। जिस तरह उर्दू के रूप में खड़ी बोली ने मुसलमानों की माँग पूरी की है, उसी तरह अँगरेज़ी हुकूमत और तालीम की ज़रूरत पूरी करने के लिये हिंदुस्तानी कोशिश कर रही है। असल में इसे हिंदुस्तानी नाम देनेवाले भी अँगरेज़ अफ़सर हैं। वे जिस बोली में यहाँ के लोगों से बातचीत करते थे, उसे हिंदुस्तानी कहने लगे। और, अब तो इसे इँगलिस्तानी बनाया जा रहा है, क्योंकि इसमें अँगरेज़ी के शब्द ज़्यादा इस्तेमाल होने लगे हैं।

हाँ, तो हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी के झगड़े में तीन बातें सामने आती हैं—(१) लिपि, (२) व्याकरण और (३) शब्द।

लिपि का सवाल रेडियो ने अपने आप हल कर लिया है, क्योंकि जहाँ हवा में बातें की जाती हैं, वहाँ लिखने की बात ही नहीं रहती। व्याकरण की दृष्टि से खड़ी बोली के व्याकरण को ही हिंदुस्तानी को अपनाना चाहिए, क्योंकि एक तो वह खड़ी बोली ही से निकली है, दूसरे, खड़ी बोली का व्याकरण भारतवर्ष की और प्रधान भाषाओं—व्रज-भाषा, बँगला, गुजराती, मराठी आदि—के व्याकरण से मिलता-जुलता है, जिससे इन भाषाओं के बोलनेवालों को भी उसे अपना लेने में आसानी होगी। अगर हिंदुस्तानी को हमें राष्ट्र-भाषा का रूप देना है, तो राष्ट्रीय दृष्टि से यह ज़रूरी है कि उसका व्याकरण ऐसा सहज रक्खा जाय कि हमारे बंगाली, गुजराती, मराठी, मदरासी, पंजाबी, नेपाली, बिहारी, मध्य-प्रांतीय, राजस्थानी भाई भी उसे आसानी से सीख सकें। अब रही शब्दों की बात। बहुत-सी भाषाओं के शब्द उसमें आ ही चुके हैं। हमारी राय में बँगला, गुजराती, मराठी आदि के भी आने चाहिए, तभी हम इसे राष्ट्र-भाषा बना सकेंगे—ऐसी बोली बना सकेंगे, जो भारतवर्ष-भर में बोली और समझी जा सके।

थोड़े में हम नीचे कुछ उपाय बतलाते हैं, जिनसे हिंदी-उर्दू का झगड़ा मिट सकता है, रेडियो की भाषा का प्रश्न हल हो सकता है—

बेसिक इँगलिश की तरह बेसिक हिंदुस्तानी बनाई जाय। घुमा-फिराकर न कहकर सहज शब्दों में, सीधे तौर से, बातें कही जायँ। ऐसी भाषा बने, जो कम-से-कम समय में सीखी जा सके, जिससे सारे हिंदुस्थान का काम चल सके। पर बेसिक इँगलिश की तरह बेसिक हिंदुस्तानी ८५० शब्दों में नहीं बनाई जा सकती। बेसिक हिंदी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबसे बड़ी कठिनाई प्रीपोज़ीशनों का अभाव है। एक ही क्रिया के साथ कई प्रीपोज़ीशन लगाकर, Get up, get in, get away, get out आदि की तरह, तरह-तरह के भावों के शब्द नहीं बनाए जा सकते। हाँ, संस्कृत और फ़ारसी में ऐसा हो सकता है। उनसे मदद ली जाय। अभी हमें कम-से-कम ४,००० शब्दों की एक डिक्शनरी बना लेनी चाहिए। जनता में उसका प्रचार कर दिया जाय, और उसमें दिए हुए शब्दों का ही प्रयोग हमें अपनी रेडियो की टाकों, ख़बरों और सूचनाओं में करना चाहिए। हम एक ऐसी डिक्शनरी तैयार कर भी रहे हैं। यह सूची सारे हिंदुस्थान को नज़र में रखकर तैयार की जाय, हिंदी-उर्दू का झगड़ा मिटाने के लिये नहीं। अभी हमें प्रेसिडेंट, सभापति और सदर, तीनो लफ़्ज़ इस्तेमाल करने पड़ेंगे। बाद को जनता अपने आप इनमें से एक शब्द चुन लेगी, और उसी का प्रयोग होने लगेगा। बेसिक अँगरेज़ी की तरह अभी हम कई पर्यायवाची शब्दों की जगह एक ही शब्द नहीं रख सकते। पानी, जल और आब, तीनो शब्द हिंदुस्तानी के लिये ठीक हैं; पर महाराष्ट्र और बंगाल में 'जल' का ही प्रयोग होता है, इसलिये अभी हम चाहे आब, पानी और जल, तीनो का प्रयोग करें, पर आगे चलकर केवल जल ही रह जायगा। 'तालीम'-शब्द का प्रयोग हिंदुस्तानी और मराठी में होता है, पर मराठी में 'तालीमबाज़' खेलाड़ी को कहते हैं, और 'तालीम-बाज़ी' का मतलब जमनास्टिक है। इसलिये यह शब्द या तो उस डिक्शनरी से हटा देना पड़ेगा, या मरठी में भी तालीम को सही मतलब में चलाना होगा। 'तारीफ़'-शब्द बँगला में नहीं बोला जाता। इसे न बोलना ही ठीक होगा, अगर बंगालियों को भी हमें अपनी बात बतानी है।

अभी उस दिन लखनऊ-रेडियो-स्टेशन के डाइरेक्टर महोदय ने कुछ हिंदी-उर्दू-विद्वानों को दिल्ली से ब्रॉडकास्ट की गई ख़बरें सुनने और उनकी भाषा पर अपनी राय देने के लिये बुलाया। हम दोनो भी निमंत्रित थे। हमें उनमें २५ शब्द ऐसे जान पड़े, जिन्हें हिंदी बोलनेवाली जनता नहीं समझ सकती थी। अगर रेडियो-डिक्शनरी में वे सब शब्द आ जायँ, और वह डिक्शनरी प्रकाशित कर दी जाय, तो रेडियो-स्टेशनों के कार्यकर्ताओं और सुनने-वालों को आसानी हो जाय। उस दिन हमने जो ख़बरें सुनीं, उनमें अरबी-फ़ारसी के अधिक शब्द तो थे ही, साथ ही यह भी दिखाई पड़ रहा था कि हिंदी और संस्कृत के बोलचाल के शब्द भी, जिन्हें हिंदी बोलनेवाले ही नहीं, बंगाली, मराठी, गुज-राती हिंदू-मुसलमान-ईसाई भाई आसानी से समझ सकते हैं, नहीं आने दिए गए थे। रेडियो की लड़ाई की ही नहीं, और सूचनाओं में भी हिंदी के भी प्रचलित शब्द काफ़ी इस्तेमाल होने चाहिए। तभी वे भारतीय जनता में पहुँच सकेंगी। उर्दू की टाकों में हिंदी के शब्द भी आने चाहिए, जैसे हिंदी की टाकों में उर्दू के आ रहे हैं। हमारे अनुरोध पर लखनऊ-रेडियो-स्टेशन ने इस ओर ध्यान दिया है, यह ख़ुशी की बात है, और तारीफ़ की भी। हमारे उर्दू-विद्वान् और और रेडियो-स्टेशन भी ऐसा करने लगें—व्रज-भाषा, अवधी, संस्कृत आदि भाषाओं के चल गए शब्दों का भी काफ़ी इस्तेमाल अपनी टाकों में करें, तो हिंदी-उर्दू का झगड़ा सब मिट जाय, और बोल-चाल के लिये एक राष्ट्र-भाषा तैयार हो जाय। हिंदू भाइयों को उर्दू और मुसलमान भाइयों को हिंदी कुछ-न-कुछ अवश्य सीखनी चाहिए। कम-से-कम उस डिक्शनरी के सब शब्द सबको आने चाहिए। अगर ऐसा हो जाय, तो 'बेगम सीता' का प्रयोग न हो सके। सीता के आगे बेगम-शब्द लगा देने से ऐसा मालूम पड़ता है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीताजी मुग़ल-काल की कोई रानी थीं। इसी तरह रेडियो-स्टेशन से ब्रॉडकास्ट किए गए कितने ही फ़ीचरों में फ़ारसी और अरबी लफ़्ज़ों से लदी ज़बान का इस्तेमाल होने से सारा मज़ा ही किरकिरा हो जाता है। किसी हिंदू-त्योहार पर बोलते समय 'आदाबअर्ज़' से प्रोग्राम शुरू करना क्या भद्दा नहीं लगता? अभी उस दिन नवशक्ति पर एक भाषण देते समय ऐसा ही हुआ था।

रेडियो पर जहाँ तक हो सके, अरबी के शब्द एकदम न बोलने चाहिए। संस्कृत और फ़ारसी के तत्सम और अर्द्ध-तत्सम शब्द भी बचाने चाहिए। 'वत्स' शुद्ध संस्कृत का होने से तत्सम है, और 'बच्छ' प्राकृत होने से अर्द्ध-तत्सम। 'बच्चा' हिंदी है। हमें 'वत्स' और 'बच्छ' न बोलकर बच्चा बोलना चाहिए। ऐसे ही फ़ारसी-शब्दों के बारे में भी करना चाहिए। 'गेहूँ' सब समझते हैं, तब तत्सम शब्द 'गंदुम' बोलना क्या ठीक है? हमें संस्कृत, फ़ारसी और अरबी के उन्हीं आवश्यक शब्दों का प्रयोग करना चाहिए, जो भारत की सभी भाषाओं में प्रचलित हैं—ख़ासकर बँगला, मराठी और गुजराती में। जो शब्द सब प्रांतों में समान रूप में न चल रहे हों, उन्हें बचाना चाहिए। बोलचाल के शब्द अँगरेज़ी, संस्कृत, फ़ारसी, बँगला, गुजराती, मराठी, सभी से ले लेने चाहिए। अंतरराष्ट्रीय प्रचलित शब्द जैसे रेडियो, कोरस, टॉकी, क्लब बिना संकोच इस्तेमाल होने चाहिए। मोटर, रेल, स्टेशन, सिगरेट वग़ैरा लफ़्ज़ चल भी गए हैं। इन्हें इस्तेमाल करते रहना चाहिए। दियासलाई की जगह दीपशलाका लिखना-बोलना अब ठीक नहीं। २ वर्ष के लगभग हुए, हमसे इस सूबे के उस समय के गाँव-सुधार-अफ़सर ने गाँव की जनता के लिये कोई अख़बार की डमी तैयार करके देने को कहा। हमने अपने इन्हीं विचारों को ध्यान में रखते हुए उस अख़बार का नाम 'हल' रक्खा, और डमी के लेखों में ऐसी भाषा लिखी, जो हमारी नज़र में सरल-से-सरल—सबकी समझ में आनेवाली हिंदुस्तानी हो सकती है। हमारे उर्दू-हिंदी, दोनो ज़बानों के अख़बारों में गीत, मज़मून, ज़बान, लफ़्ज, यहाँ तक कि कॉमा-फ़ुलस्टॉप तक सब एक थे। अगर सच्चे दिल से हिंदी-उर्दू वाले चाहें, तो एक ऐसी ज़बान बोलचाल और मामूली व्यवहार के लिये तैयार हो सकती है। पर दोनों को दोनो ही ज़बानों के लफ़्ज़ अपनाने चाहिए।

आख़िर में हमें एक बात और कहनी है। 'हिंदुस्तानी'-शब्द सुनते ही लोगों के सामने हिंदी, उर्दू, हिंदुस्तानी, हिंदी-हिंदुस्थानी और इँगलिस्तानी का झगड़ा आ जाता है। यह नहीं जान पड़ता कि हिंदुस्तानी के बनाने में बँगला, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं का भी कुछ हाथ है। ऐसा मालूम पड़ता है कि उत्तर-भारत की, विशेषकर संयुक्त प्रांत की ही यह भाषा है, क्योंकि कलकत्ते, लाहौर, बंबई, मदरास वग़ैरा में हमारे सूबे को हिंदुस्तान समझा और माना जाता है। हमारी राय में जो भाषा पंजाबी, हिंदुस्तानी, बंगाली, गुजराती, मराठी, मदरासी, राजस्थानी, नेपाली, मध्य-देशी भाई अपने आप गढ़ रहे और गढ़ते रहे हैं, और जिसे अब एक प्रांत (संयुक्त प्रांत) के नाम से हिंदुस्तानी कहा जा रहा है, उसे भारत-देश के नाम पर 'भारती' कहना चाहिए। इस शब्द में प्रांतीयता की झलक नहीं; हाँ, राष्ट्रीयता कूट-कूटकर भरी है। हिंदी-उर्दू के झगड़े का भी इससे अंत हो जाता है, और ऐसी भाषा सामने आती है, जिसे सभी प्रांतों के भाई-बहन आपस में व्यवहार करते हैं, कर सकते हैं, या आगे करेंगे। भारती विद्या की देवी (Goddess of Learning) सरस्वती का भी नाम है। हिंदू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, सिक्ख, जैन, बौद्ध, सभी भारत-निवासियों को विद्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की इसी देवी भारती का श्रृंगार, सेवा और पूजा करनी चाहिए।

प्रेम, संगठन, एकता भाषा ही सों होय;
जागृति बिन भाषा-प्रगति करत न जग में कोय।
राखन चाहत जनम-भू भेद न हममें रंच;
सहज सुलभ आदरस यह भाषा ही के मंच।
इकै जाति, भाषा इकै, इकै जु लिपि-बिसतार—
भारत-भू में होय, तौ हटैं अभाग - पहार।

× × ×

२. भारतीय इतिहास-परिषद् की योजना

भारतीय इतिहास-परिषद् की ओर से उसके मंत्री श्रीजयचंद्र विद्यालंकार ने निम्न-लिखित वक्तव्य निकाला है—

"अपने राष्ट्रीय पुनर्जागरण के साथ ही हम लोग यह अनुभव करने लगे हैं कि भारतीय दृष्टिकोण से, भारतीय संतान द्वारा, लिखे गए भारत के एक विस्तृत और प्रामाणिक इतिहास का न होना हमारे लिये कितनी लज्जा की बात है! इसी भावना से प्रेरित होकर, श्रद्धेय डॉ० राजेंद्रप्रसाद के नेतृत्व में, हमारे बहुत-से देशवासी विद्वानों और देश-भक्तों ने एक ऐसी संस्था क़ायम करने का इरादा बाँधा, जो इस महत्त्व-पूर्ण कार्य को कर सके। सन् १९३७ के अंत में, भारत-माता-मंदिर, बनारस में, सर यदुनाथ सरकार के सभापतित्व में, ऐसे कुछ लोग एकत्र हुए, और उन लोगों ने एक संस्था क़ायम की, जिसे आज भारतीय इतिहास-परिषद् या अंजुमनए-तारीख़ए-हिंद कहते हैं। सन् १९३८ में, राजेंद्र बाबू की बीमारी के कारण तथा अन्य कई कारणों से, आरंभिक अवस्था में, इस संस्था का काम तेज़ी से आगे नहीं बढ़ सका। पर गत वर्ष के मध्य तक राजेंद्र बाबू ने बंबई तथा अन्य स्थानों के कुछ प्रभावशाली सज्जनों से इस काम में सहायता का वचन प्राप्त कर लिया। प्रारंभिक ख़र्च के लिये उन्हीं सज्जनों ने कुछ हज़ार रुपए भी एकत्र कर लिए। इसके बाद ही भारतीय इतिहास-परिषद् की कौंसिल, जिसमें सर यदुनाथ सरकार तथा और लोग शामिल हैं, भारत के राष्ट्रीय इतिहास की योजना तैयार करने में लग गई। यह योजना हाल में २०० से अधिक भारतीय विद्वानों के पास भेजी गई है, और उनसे सहयोग देने की अपील की गई है। जो कोई चाहें, इस योजना को मँगा सकते हैं। जिन विद्वानों को यह योजना अब तक न पहुँच सकी हो, उनसे प्रार्थना है कि वे हमारे दफ़्तर सेवा-उपवन, बनारस से उसे मँगा लें। जिन विद्वानों को लिखा जा रहा है, उनके उत्तर आ जाने पर परिषद् की कौंसिल शीघ्र ही बैठेगी, और तय करेगी कि योजना को अमल में लाने के लिये आगे क्या किया जाय। इस तरह उम्मीद की जाती है कि यह काम अब आख़िरी तौर पर चालू कर दिया जायगा।

"जिस समय यह योजना हमारी कौंसिल के विचाराधीन थी, उसी समय हमारे कुछ दोस्त अलीगढ़ में भी इसी तरह का काम कर रहे थे, जिसका परिणाम यह हुआ कि अलीगढ़ हिस्टॉरिकल-रिसर्च-इंस्टीट्यूट क़ायम की गई, और भारत की अलीगढ़-इतिहास की योजना प्रकाशित हुई। गत जुलाई में इन दोनो संस्थाओं के मंत्री मिले, और उन लोगों ने कार्य-विभाजन तथा सहयोग के आधार पर एक सम्मिलित प्रोग्राम तय किया। इन दोनो की सिफ़ारिशों को अलीगढ़-इंस्टीट्यूट ने स्वीकार कर लिया है, और उम्मीद की जाती है कि भारतीय इतिहास-परिषद् की कौंसिल भी अपनी अगली बैठक में उसे स्वीकार कर लेगी। इस प्रकार आशा है कि ये दोनो संस्थाएँ इस चिर-अभिलषित राष्ट्रीय उद्देश्य की पूर्ति में पूरे सहयोग के साथ काम करेंगी।"

जयचंद्रजी हिंदी के प्रसिद्ध लेखक, इतिहासज्ञ और पुरातत्त्व-वेत्ता हैं। आपने अपना जीवन भार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीय इतिहास के उद्धार के लिये भारत-माता के चरणों में समर्पित कर दिया है। लगन के व्यक्ति हैं, अध्ययनशील, परिश्रमी, आदर्श सम्मुख रखनेवाले। आप - जैसे उदार और उद्योगी सज्जन ही देश के उन्नायक होने की क्षमता रखते हैं। भगवान् करें, आपकी यह योजना सफल हो।

× × ×

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्यजनक ईजाद ! याने—

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात

'गोनोकिलर'

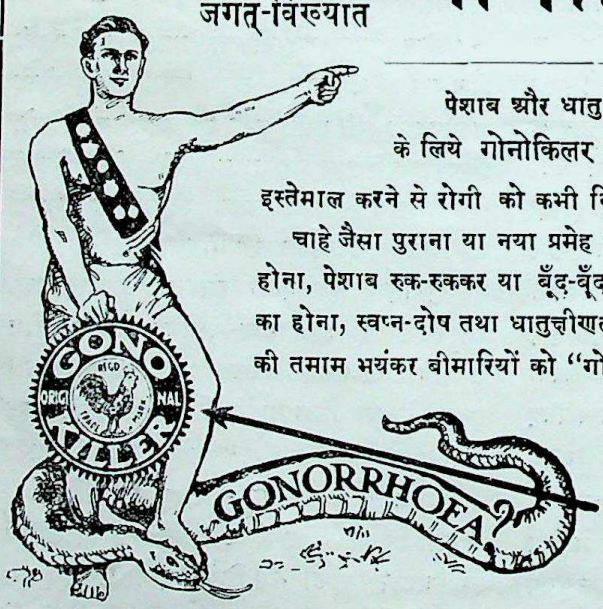

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने व निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर एक ऐसी ही आश्चर्यजनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश होना ही नहीं पड़ता।

चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन का होना, स्वप्न-दोष तथा धातुक्षीणता और औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को "गोनोकिलर" जड़ से नष्ट कर देता है।

नक़ली से सावधान !
ख़रीदने से पहले
दवा का नाम गोनोकिलर
और मुर्ग़ा-छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए

मूल्य ५० गोलियों की शीशी का ३) रु०, वी० पी० डाक-व्यय आठ आना अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी S. L. गिरगाँव, बैंक रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ-स्टाकिस्ट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. हिंदुस्तानी-संगीत-समाज, लखनऊ का वार्षिकोत्सव

लगभग डेढ़ वर्ष हुआ, लखनऊ के संगीत के कुछ विद्यार्थियों ने एक ऐसी सभा खोलने का विचार किया, जिसके द्वारा संगीतज्ञों में संगठन किया जाय, और उनकी आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति के लिये भी प्रयत्न हो। इनमें श्रीरामकृष्ण त्रिपाठी, श्रीरामनारायण त्रिपाठी, श्रीसुशीलचंद्र माथुर, कुमार बुद्धिभद्र दीक्षित, श्रीएस्० एम्० स्वामी और श्रीगंगाप्रसाद मिश्र मुख्य थे। पहले समाज के सदस्य बारी-बारी से एक दूसरे के यहाँ एकत्र होकर प्रतिसप्ताह कुछ गा-बजा लिया करते थे। फिर इसे ठीक-ठीक एक समाज का रूप देने का निश्चय किया गया। गत वर्ष रक्षा-बंधन के दिन इसका प्रारंभिक उत्सव मनाया गया। उसी में यह तय हुआ कि समाज की एक नियमावली बना ली जाय। इसके लिये एक सब-कमेटी चुनी गई, जिसने एक नियमावली तैयार करके सदस्यों की सभा में पेश की, और बहुमत से पास होकर वे नियम कार्य-रूप में परिणत होने योग्य हो गए। जनवरी, ४० में कार्य-कारिणी का चुनाव हुआ, और निम्न-लिखित पदाधिकारी चुने गए—

पं० रामनारायण त्रिपाठी सभापति, श्रीयुत एस्० एम्० स्वामी उप-सभापति, श्रीगंगाप्रसाद मिश्र सेक्रेटरी, श्रीयुत बी० पी० कौशिक ज्वाइंट सेक्रेटरी, श्रीसुशीलचंद्र माथुर कोषाध्यक्ष, कुमार बुद्धिभद्र दीक्षित प्रतिनिधि।

अभी कुछ दिन हुए, रेडियो का प्रतिबंध होने के कारण कुमार बुद्धिभद्र ने पद त्याग कर दिया है, और समाज ने उस स्थान की पूर्ति के लिये श्री-भूराजसिंह को चुना है।

चुनाव के बाद समाज का कार्य सुचारु रूप से चलने लगा। उसके साप्ताहिक जलसों में गायन, वाद्य और नृत्य के प्रोग्राम होते थे, और संगीत के विषयों पर वाद-विवाद होते एवं लेख पढ़े जाते थे। बहुधा बाहर के कलाकार भी इन जलसों में बुलाए जाते थे। श्रीयुत बी० जे० जोशी और श्रीअयोध्याप्रसादजी समाज की उन्नति में प्रारंभ से ही सहयोग देते रहे हैं।

तीन बार सर्व-साधारण जनता के सामने भी समाज ने जलसे किए—पहली बार पं० हरिश्चंद्र वाजपेयी एम्० एल्० ए० के यहाँ उन्नाव में, दूसरी बार बाबू मोहनलाल सक्सेना के यहाँ लखनऊ में, तीसरी बार लखनऊ स्वदेशी-नुमायश के माइक्रोफ़ोन पर।

समाज का वार्षिकोत्सव गंगाप्रसाद वर्मा-मेमोरियल-हॉल में, १५ अगस्त, १९४० को, पं० एस्० एन्० रतनजनकर, चीफ़ डायरेक्टर भातखंडे-युनिवर्सिटी के सभापतित्व में, हुआ।

सभापति ने अपने भाषण में इस प्रकार के समाज का स्वागत किया, और बतलाया कि कैसे इस प्रकार के समाजों के उत्थान से बड़े-बड़े कलाकार पैदा होते हैं। संगीत की प्रचलित पद्धतियों पर कुछ प्रकाश डालते हुए उन्होंने पक्के और कच्चे गाने की व्याख्या की, और संगीत के विद्यार्थियों को सच्ची लगन से स्वर-दर्शन के लिये प्रयत्नशील हो जाने की सलाह दी।

सेक्रेटरी श्रीगंगाप्रसाद मिश्र ने अपने भाषण में बतलाया कि इस समाज के स्थापित करने का उद्देश्य संगीतज्ञों में संगठन क़ायम करना और उनकी गिरी हुई दशा को सुधारना है। इस कार्य में जो कठिनाई पड़ रही है, वह संगीतज्ञों के अशिक्षित होने के कारण है। गानों की बंदिशों और बोलों में प्रगति, जोश और जीवन की जो कमी है, उसके लिये कलाकारों से प्रार्थना की गई कि वे आधुनिक कवियों के गीतों को लेकर उन्हें राग-रागिनियों में बैठाएँ, जिससे वे देश के काम की चीज़ साबित हों। ऐसे समाज की सहायता की अपील करते हुए सेक्रेटरी ने अपना भाषण समाप्त किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रातःकाल ७½ से १२ बजे तक जलसा हुआ। गायन, वाद्य और नृत्य के लगभग १५ प्रोग्राम हुए, जिनमें निम्न-लिखित कलाकारों के प्रदर्शन को जनता ने बहुत पसंद किया—

मुफ़्त ! फ़ैंसी रिस्टवाच बिलकुल मुफ़्त !! मुफ़्त !!!

असली अमेरिकन रिवाल्वर

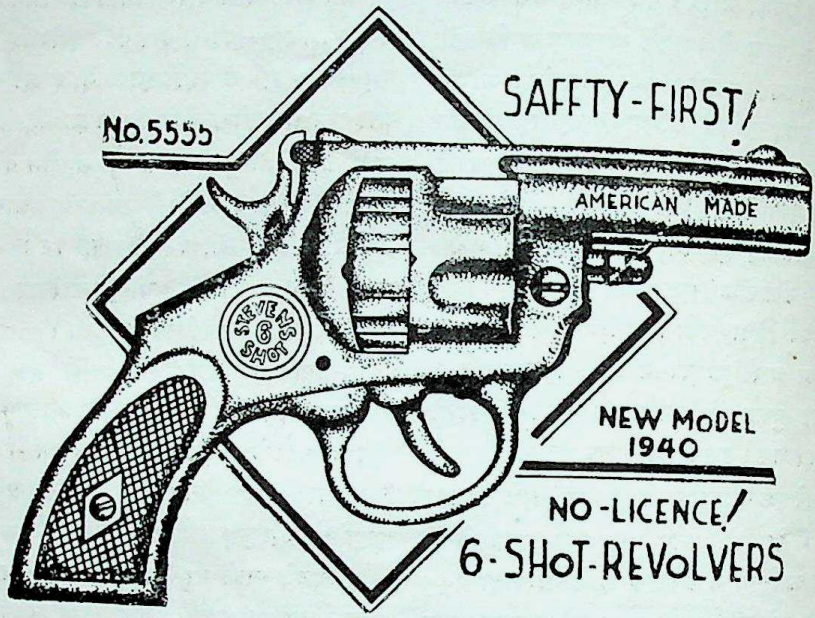

बढ़िया मानिंद असली ६ फ़ायरवाला वज़न १५ आउंस।

इस पिस्तौल की ख़ूबियाँ लिखना मानो सूर्य को दीपक दिखाना है। इसे ख़ास ऑर्डर देकर अमेरिका से मँगवाया गया है, जिसमें असली रिवाल्वर की तरह चरख़ी है, जिसमें छ ख़ाने हैं। इसमें छ कारतूस रक्खे जा सकते हैं। घोड़ा दबाते ही चरख़ी ख़ुदबख़ुद घूमती है। आवाज़ इतनी भयंकर होती है कि चोर-डाकू व शत्रु जान लेकर भागते हैं, और ख़ुद छोड़नेवाला भी दहल उठता है। जानोमाल की रक्षा के लिये इससे बढ़कर पिस्तौल आपको दूसरी जगह न मिलेगी। हरएक मनुष्य विना लाइसेंस रख सकता है। आज के समय में ऐसी उपयोगी वस्तु हरएक मनुष्य के लिये और घर-घर में रखनी चाहिए। मूल्य नं० १—लंबाई ६ इंच असली का ५॥), नं० २—लंबाई ८ इंच चाँदी की तरह चमकनेवाली सफ़ेद का ४॥), नं० ३—फ़ौलादी ४) इन सबके साथ स्पेशल कारतूस १×२ इंच चौड़े २५ मुफ़्त। छ फ़ायरवाली नक़ली मय १०० नक़ली कारतूस के ३), ५० टिकलीवाली २॥), स्पेशल कारतूस प्रति १०० का ३), शाही पेटी व ख़ोल १॥), साफ़ करने का तेल ।=), एक पिस्तौल पीछे ख़र्च ॥।-)। हरएक पिस्तौल के साथ दो फ़ैंसी निहायत उम्दा रिस्टवाच मुफ़्त दी जाती हैं, जिनकी ख़ूबसूरती और मज़बूती की गारंटी १० साल है। गारंटी का इक़रार-नामा हरएक घड़ी के साथ भेजा जाता है। दो पिस्तौल एक साथ मँगाने से ख़र्च माफ़ और चार घड़ियाँ मुफ़्त।

पता—सोल-एजेंट

अमेरिकन पिस्तौल-हाउस, पोस्ट-बॉक्स-नं० १२ (S.M.L.) अमृतसर (इंडिया)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमारी मुक्तादेवी (फ़ोर्थ इयर, भातखंडे-युनिवर्सिटी)—गायन, भैरव।

श्रीयुत एस्० एम्० स्वामी (फ़िफ़्थ इयर, भातखंडे-युनिवर्सिटी)—गायन, भैरवी।

मदरास-निवासी होने पर भी आपने हिंदुस्तानी-संगीत-पद्धति में दक्षता प्राप्त कर ली है।

श्रीयुत राधावल्लभ चतुर्वेदी (फ़िफ़्थ इयर)—गायन, हिंडोल।

उस्ताद शिवबरनलाल (प्रोफ़ेसर भा०-यु०)—शहनाई।

कुमारी राजकुमारी शिवपुरी (फ़िफ़्थ इयर)—सारंग।

पं० नारायण यशवंत पतकी (कान्यकुब्ज-कॉलेज, लखनऊ)—वीणा, टोड़ी।

उस्ताद बरक़तअली—बरक़त-तरंग, भैरव।

श्रीयुत एस्० के० चौबे एम्० ए०, संगीत-विशारद (भा०-यु०, उस्ताद फ़ैयाज़ख़ाँ के शागिर्द)—गायन, टोड़ी।

आपने ख़ाँ साहब के ढंग पर टोड़ी और भैरवी गाकर जनता का बड़ा मनोरंजन किया।

श्रीयुत चंद्रशेखर पंत आचार्य, एम्० ए०, संगीत-विशारद (भा०-यु०)—गायन, असावरी।

आप कई प्रकार की संगीत-पद्धतियों के पंडित हैं, और आपकी कला-पूर्ण असावरी ने जनता का मन मोह लिया।

श्रीअयोध्याप्रसादजी (प्रोफ़ेसर भा०-यु०)—गायन।

श्रीप्रेमकांता पांडेय (भा०-यु०)—आप डॉक्टर उमाशंकर पांडेय की भतीजी हैं। आपने नृत्य-प्रदर्शन द्वारा जनता का मनोरंजन किया।

शाम को ६½ बजे से रात के ढाई बजे तक जलसा हुआ। निम्न-लिखित प्रोग्राम बहुत अच्छे हुए—

कुमारी मुक्तादेवी गायन केदार।

उस्ताद यूसुफ़अलीख़ाँ सितार।

श्रीयुत एस्० सी० आर० भट्ट (प्रोफ़ेसर भा०-यु०)—गायन, शंकरा।

प्रोफ़ेसर मुहम्मदउमर सरोद।

आप प्रसिद्ध सरोदिए सख़ावतहुसैन साहब के सुपुत्र हैं, और बंबई में अपनी कला के बल पर प्रसिद्ध हैं।

श्रीयुत वी० जे० जोशी (प्रोफ़ेसर भा०-यु०)—गायन, दुर्गा, अड़ाना, मालकोश, रागेश्री, भजन।

आपके गायन ने जनता को बेसुध कर दिया। प्रसिद्ध पखावजिए पं० सखारामजी के सुपुत्र सदाशिव राव ने आपके साथ तबले पर अच्छी संगत की।

कुमारी आभारानी नृत्य।

आप शंभू महाराज की शिष्या हैं। आपकी लयकारी देखकर जनता चकित हो गई।

श्रीयुत वी० जे० जोशी (प्रोफ़ेसर भा०-यु०)—वायलिन।

कुमारी यशोधरा काटजू नृत्य।

आप भात खंडे-युनिवर्सिटी-नृत्य-क्लास की छात्रा हैं। आपका नृत्य, विशेषतः झपताल-नृत्य, बहुत ही सुंदर हुआ।

उस्ताद सख़ावतहुसैनख़ाँ साहब—सरोद—कुसुम, पीलू।

आप भातखंडे-युनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर हैं, और योरप-भ्रमण में आपने सरोद बजाने की प्रवीणता के कारण बड़ी ख्याति प्राप्त की।

पं० सखारामजी ने, जो भारत के प्रसिद्ध पखावजिए हैं, सख़ावतहुसैन साहब के साथ पखावज की संगत को सर्वोच्च सीमा तक पहुँचा दिया।

कुमारी अखिलेश्वरी माथुर नृत्य।

आप भातखंडे-युनिवर्सिटी के प्रो-वाइस-चांसलर राय उमानाथबली की सुपुत्री हैं। आपका नृत्य बहुत सुंदर हुआ।

उस्ताद हामिदहुसैन (प्रोफ़ेसर भा०-यु०)—सितार, खम्माच।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके आलाप और गति ने, जिसमें श्रीयुत सी० डी० नागरकर ने तबले पर संगत की थी, जनता को साक्षात् स्वर की झलक-सी दिखा दी।

इसके पश्चात् जलसा समाप्त हुआ। ख़ुशी की बात है, लखनऊ साहित्योन्नति के साथ-साथ संगीत में भी, गत २० वर्ष से, उन्नति कर रहा है।

× × ×

४. अवकाश-प्राप्त व्यक्ति

हमारी पुरानी वर्णाश्रम-धर्म-व्यवस्था के अनुसार मनुष्य जीवन के उत्तर-भाग में सांसारिक बंधनों से मुक्त हो जाता था। तब उसका कार्य ईश्वराराधना, तत्त्व की खोज और प्राणियों का उपकार करना रह जाता था। आजकल यह व्यवस्था प्रायः मिट चुकी है। अब समाज में बहुत थोड़े लोग ऐसे निकलते हैं, जो अपने घर-परिवार को त्यागकर केवल लोक-सेवा में ही अपना शेष जीवन बितावें। बहुत-से आदमी अपनी जवानी-भर नौकरी करते हैं, और बुढ़ापे में पेंशन लेकर शेष जीवन आराम से घर बैठकर व्यतीत करते हैं। जो लोग व्यवसायी हैं, या और स्वतंत्र कार्य करते हैं, वे भी शरीर शिथिल होने पर आराम करना पसंद करते हैं, और शरीर में जितनी शक्ति बाक़ी रहती है, उसे वे अपने काम की देख-भाल में लगाते हैं।

गरमी और बरसात में सेवन करने योग्य धातुपौष्टिक दवा—

* सुधावलेह *

विश्वास करें, यह ओषधि इस भूतल का अमृत है। खाने के २४ घंटे बाद अपना गुण दिखाती है। इसके सेवन से धातु बढ़ती, पतली गाढ़ी होती, कामेच्छा बढ़ती, दिल-दिमाग़ में तरी और ताक़त आती है। दिल की धड़कन, सिर की कमज़ोरी, याद न रहना, आँखों के आगे अँधेरा आना, चक्कर आना, सिर घूमना, हाथ-पैर के तलवे जलना, खुलकर भूख न लगना वग़ैरा आराम होकर मनुष्य का जीवन नवीन हो जाता है। जिन्हें गरमी के कारण स्वप्नदोष होते हैं, मैथुनेच्छा नहीं होती, वे इस अमृत को गरमी के चार महीने ज़रूर खावें। क़ीमत १०) सेर है, पर ग़रीब भी लाभ उठा सकें, इसलिये ५) सेर दिया जायगा। डाक-महसूल पैकिंग १-), कुल ६-) में दवा का फल देखो।

बेलाग प्रशंसा-पत्र

नोंकझोंक-संपादक श्रीदामोदरदासजी चतुर्वेदी महोदय लिखते हैं—

"आपके सुधावलेह ने मेरे लिये तो अमृत का-सा गुण दिखलाया। आज दवा ली और कल से ही सब शिकायतें दूर होकर मेरे जीवन में एक नए वसंत का आगमन आरंभ हो गया। वस्तुतः आपका सुधावलेह सुधा की वह सुंदर स्रोतस्विनी है, जिसका आश्रय लेकर अनेक निराश और निर्बल व्यक्ति नवजीवन तथा नई शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। रोग-संतप्त प्राणियों के उपकार के लिये आपने इस अवलेह का निर्माण कर अत्यंत अनुग्रह किया है। ईश्वर इस जन-सेवा के लिये आपको अखंड यश प्रदान करें।"

पता—हरिदास एंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है कि ये अवकाश-प्राप्त व्यक्ति समाज और सार्वजनिक सेवा के कार्यों में हाथ बटावें, तो इससे दोनो उद्देश्यों की पूर्ति हो जाय—हमारे प्राचीन आदर्श का भी रूपांतर हो जाय, और इन लोगों का जितना समय आराम के नाम पर शतरंज - चौसर खेलने, ख़ाली बातें करने और घर-परिवार तथा बिरादरी के झगड़े निबटाने में व्यय होता है, उसका सदुपयोग भी हो जाय। वित्तैषणा और पुत्रैषणा का कार्य समाप्त होने पर मनुष्य के लिये लोकैषणा का कार्य ही शेष रह जाता है। जिन लोगों का बैंकों में धन जमा है, प्रोविडेंट फ़ंड की रक़म से या पेंशन द्वारा जिन्हें निश्चित आमदनी हो जाती है, जिन्हें अन्य पारिवारिक और आर्थिक चिंताएँ नहीं, उनके लिये समाज-सेवा का विस्तीर्ण क्षेत्र खुला हुआ है। शिक्षा, स्वास्थ्य, समाज-सुधार, हरिजन-सेवा, निरक्षरों को साक्षर बनाना आदि ऐसे कितने ही कार्य हैं, जिनके लिये निःस्वार्थ, योग्य और अनुभव-प्राप्त व्यक्तियों की आवश्यकता है। क्या हमारे बुज़ुर्ग इस ओर कुछ ध्यान देंगे ?

× × ×

सब तरफ़ से इलाज कराकर निराश हुई देवियों

और

वंध्या व संतान-हीन स्त्रियों को शुभ संदेश !

स्त्रियों के सब तरह के रोगों का

शर्तिया इलाज

औरत का इलाज औरत ही ठीक तरह कर सकती है

क्योंकि

औरत एक औरत को ही अपने गुप्त रोगों का पूरा हाल निःसंकोच बता सकती है।

स्त्रियों के प्रदर रोग, पानी पड़ना, गर्भाशय के दोष, योनि-रोग, बच्चेदानी की ख़राबी, नसों व नलों की ख़राबी, मासिक धर्म का ठीक न होना, समय पर न होना, चढ़-उतरकर होना, ख़ून का कम-ज़्यादा जाना, मासिक धर्म के समय पीठ (कमर) में ज़्यादा दर्द होना वग़ैरा कोई भी गुप्त रोग है, और आप इलाज कराकर निराश हो चुकी हैं, तो एक बार नीचे लिखे पते पर ज़रूर मिलें या पत्र-व्यवहार करें।

विश्वास रक्खो

यहाँ से तुम्हें निराश न होना पड़ेगा, शर्तिया आराम हो जायगा। आपका पैसा इराम में नहीं जायगा।

एक बार परीक्षा ज़रूर करें

[सरकार से रजिस्टर्ड]

चपलादेवी वैद्या, चपला-भवन, गली रावलिया, मथुरा (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. विद्यावाचस्पति श्रीपं० शालग्रामजी शास्त्री का निधन !

अत्यंत दुःख की बात है, गत ३१ अगस्त को प्रातःकाल विद्यावाचस्पति श्रीपं० शालग्रामजी शास्त्री का, लखनऊ में, स्वर्गवास हो गया ! हिंदी और संस्कृत-साहित्य के मार्मिक विद्वान् एक-एक करके उठते ही चले जा रहे हैं। शास्त्रीजी भी इहलीला समाप्त कर हमारे साहित्य-जगत् को सूना कर गए। प्रकृति की निर्बाध गति के आगे वश ही किसका है ? विश्व-प्रकृति के तत्त्वान्वेषी, महामनस्क कवि की निम्न-लिखित पंक्ति ही ऐसे अवसर पर हमारे उद्विग्न मन का लघुतम अवलंब रह जाती है—

"मरणं प्रकृतिः शरीरिणां
विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः।"

शास्त्रीजी संस्कृत-साहित्य और आयुर्वेद-शास्त्र के पारदृश्वा विद्वान् थे। वह अच्छे ग्रंथकार, विवेचना-शक्ति-संपन्न लेखक थे। संस्कृत के सिद्धहस्त कवि थे। आपकी संस्कृत-भाषा अतीव प्रांजल-प्रसन्न और प्रवाह-पूर्ण होती थी। आपकी लेख-शैली विवेचना-पूर्ण होते हुए भी विनोद-प्रचुर होती थी। उनके सामयिक लेख इस बात के स्पष्ट उदाहरण हैं कि वह प्राचीन उद्धरणों का आँख मीचकर कभी अनुसरण नहीं करते थे, सर्वदा विवेचना की कसौटी पर कसकर किसी तर्क या सिद्धांत को स्वीकार करना उनका स्वभाव था। संस्कृत के 'साहित्यदर्पण'-नामक अलंकार-ग्रंथ पर विमला नाम्नी हिंदी-व्याख्या की रचना कर शास्त्रीजी ने हिंदी-साहित्य की श्री-वृद्धि तो की ही, साथ ही संस्कृत-साहित्य-प्रासाद का भी घना अंधकार दूर कर दिया। प्रातःस्मरणीय महा-महोपाध्याय श्रीपं० शिवकुमारजी शास्त्री प्रभृति असाधारण विद्वानों ने उक्त व्याख्या की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। आयुर्वेद-जगत् भी शास्त्रीजी की गंभीर एवं वैज्ञानिक गवेषणाओं का चिर-ऋणी रहेगा। 'आयुर्वेद-महत्त्व', 'वेदों में त्रिधातुवाद' आदि उनकी अमर रचनाएँ हैं। लेखनी के समान ही उनकी वाणी भी अतिशय प्रभावोत्पादक थी। भाषण देते समय उनकी मेघ-ध्वनि-गंभीर वाणी, सुसंगठित वाक्य-विन्यास किस विद्वान् को अपनी ओर आकृष्ट न कर लेते थे ? शास्त्रीजी के सदृश प्रभावशील व्यक्तित्ववाले विद्वान् कम देखे गए हैं।

शास्त्रीजी का जन्म वि० सं० १९४२ में, माघ शुक्ला त्रयोदशी को, बरेली-नगर में, हुआ था। आप वशिष्ठगोत्रीय त्रिवेदी-कुलोपाधिक सनाढ्य ब्राह्मण थे। आपके पूज्य पिता दैवज्ञ तथा पितामह पीयूषपाणि चिकित्सक थे। अपने अध्ययन-काल में शास्त्रीजी ने संस्कृत के साहित्य-व्याकरण-दर्शन आदि विषयों का चूड़ांत ज्ञान प्राप्त करने के लिये

एजेंट—माताबदल पंसारी
अमीनाबाद, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल काशी और काश्मीर का ही नहीं, वरंच पंजाब से लेकर बंगाल तक का विशाल पर्यटन किया था। व्युत्पत्तिवाद में आपके गुरु थे स्वर्गीय महामहोपाध्याय श्रीपं० शिवकुमारजी शास्त्री तथा साहित्य-शास्त्र के गुरु थे महामहोपाध्याय श्रीपं० गंगाधरजी शास्त्री सी० आई० ई०। अल्प वय में ही आप काशी और लाहौर की सर्वोच्च संस्कृत-परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर अध्यापन-कार्य करने लगे थे। डी० ए० वी० कॉलेज, लाहौर, ज्वालापुर-महाविद्यालय, गुरुकुल-काँगड़ी आदि विभिन्न शिक्षा-संस्थाओं में पढ़ाए हुए आपके शिष्य इस समय अनेक कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के उच्च पदों पर आसीन हैं। सं० १९७२ से आपका वंश-परंपरा-प्राप्त चिकित्सक-जीवन प्रारंभ हुआ। उस समय आपने लखनऊ में श्रीमृत्युंजय औषधालय की स्थापना की। आप अपने पीछे चार सुयोग्य पुत्र छोड़ गए हैं। आपके ज्येष्ठ पुत्र श्रीपं० श्रीकांतजी शास्त्री, आयुर्वेदरत्न, वैद्य-जगत् के ख्यातनामा विद्वान् तथा कार्यकर्ता हैं। आपने इस वर्ष नि० भा० आयुर्वेद-महासम्मेलन को लखनऊ में निमंत्रित किया है, तथा उसकी स्वागत-कारिणी समिति के प्रधान मंत्री निर्वाचित हुए हैं।

अंत में हम प्रार्थना करते हैं कि परमात्मा शास्त्रीजी की आत्मा को सद्गति एवं उनके शोक-संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

× × ×

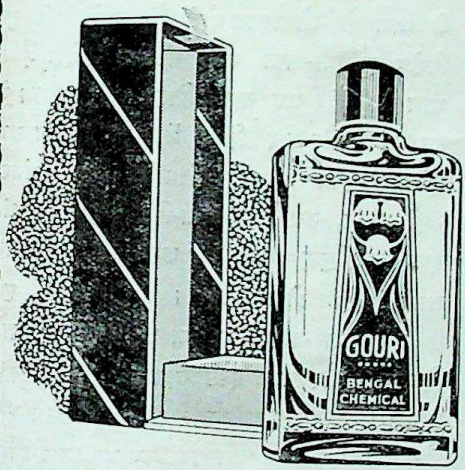

गौरी

नवीनतम सुगंधि

सर्वोत्तम पदार्थों का पूर्ण मिश्रण

—:०:—

मधुर : : स्फूर्तिदायक

टिकाऊ सुगंधि

बंगाल केमिकल एंड फ़र्मास्युटिकल वर्क्स लि०

कलकत्ता : : बंबई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. पर्दा-निवारण-सम्मेलन

सितंबर के द्वितीय सप्ताह के प्रारंभ में, कलकत्ते में, पर्दा-निवारण-सम्मेलन, श्रीमती राधादेवी गोइनका की अध्यक्षता में, हुआ। उसमें कई महत्त्व के प्रस्ताव पास हुए। पर्दा-निवारण के संबंध में यह निश्चय किया गया कि स्त्रियाँ ऐसे विवाहोत्सव में भाग न लें, जिसमें शादी के बाद तुरंत दुलहिन को पर्दा करना पड़े। साथ ही जिन स्त्रियों ने पर्दा छोड़ दिया है, उन्हें बधाई दी गई, और जो अभी तक पर्दे के अंदर बंद हैं, उनसे पर्दा फाड़ फेकने की अपील की गई। सम्मेलन की स्वागताध्यक्षा श्रीमती रुक्मिणीदेवी विड़ला ने अपने व्याख्यान में कहा कि स्त्रियों को यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि चूल्हे और घर के बाहर दुनिया में उनका और कर्तव्य भी है। सम्मेलन की सभानेत्री श्रीमती गोइनका का भाषण महत्त्व-पूर्ण था। आपने महिला-समाज से सामाजिक, कृत्रिम बंधनों को तोड़ने के अतिरिक्त राष्ट्रीय कार्य में योग देने की भी अपील की। इस सम्मेलन में देश के विभिन्न भागों से महिला-प्रतिनिधि आकर शामिल हुई थीं। पर्दे का रिवाज अब हमारे देश में भी पुराना और गया-बीता हो गया है। महिलाओं की जागृति ने उसे उखाड़ दिया है, अतः आजकल महिला-आंदोलन के लिये यह प्रश्न इतना महत्त्व-पूर्ण नहीं रह गया। फिर भी कुछ जातियों में अभी तक पर्दे का रिवाज जारी है। मारवाड़ी-समाज तो इसके लिये ख़ूब प्रसिद्ध है। पर यह पर्दे के कठिन बंधन का ही परिणाम है कि मारवाड़ी-समाज में महिलाओं की जागृति इतने ज़ोरों से हो रही है। प्रत्येक जातीय सम्मेलनों में अब महिलाओं को उचित स्थान दिया जाता है। पहले सभा, उत्सव आदि पुरुषों की चीज़ें समझी जाती थीं, अब स्त्रियाँ बराबर उनमें भाग लेती हैं, और कोई-न-कोई प्रस्ताव भी उनके संबंध में पास होता है। हम चाहते हैं, पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ इस दिशा में और आगे बढ़ें। उनका काम जहाँ पुरुषों के सहयोग और सान्निध्य में रहकर सार्वजनिक कामों में भाग लेना है, वहाँ अपने महिला-समाज के प्रति उनका विशेष कर्तव्य भी है। महिला-समाज का संगठन हमारे देश में अभी तक प्रारंभिक अवस्था में है। अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन के नाम से जो उत्सव होते हैं, उनमें भी कुछ विशेष सुविधा-प्राप्त और संभ्रांत महिलाएँ ही भाग लेती हैं। जब तक अखिल भारतीय रूप में, हर प्रांत और हर ज़िले में, एक केंद्रीय सभा द्वारा महिलाओं की संस्थाओं का संगठन नहीं होता, तब तक छिन्न-भिन्न दशा में और इधर-उधर कुछ सम्मेलन कर लेने से उतना लाभ नहीं हो सकेगा। 'सुधा' के पृष्ठों में हमने बार-बार इस आवश्यकता पर ज़ोर दिया है, और फिर इसी बात को दुहराया जा रहा है।

सफ़ेद बालवालो ! ख़िज़ाब छोड़ो

हज़ारों आदमियों द्वारा परीक्षित तथा सत्य प्रमाणित ख़िज़ाब नहीं, एक तेल है। पक्का बाल खूँटी से काला पैदा होकर यदि स्थायी काला न रहेगा, तो दूना दाम वापस की शर्त। दाम ५) रु० ४० से ऊपर उमर के लिये ठीक।

बाल काला-स्टोर्स, पो० कन्सी मिसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हिंदी' और 'हिंदुस्तानी' के संबंध में सम्मेलन की नीति

[श्रीयुत बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन]

'हिंदी' और 'हिंदुस्तानी'-शब्दों के प्रयोग के संबंध में हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की क्या नीति है, इसके बारे में, मैं देखता हूँ, कुछ लेखों ने भ्रम फैलाया है। मुख्य कारण इसमें यह जान पड़ता है कि इन लेखों के लेखकों ने स्थिति का ठीक पता लगाने का यत्न नहीं किया, और कुछ सुनी-सुनाई बातों को कल्पना के धागे में पिरोकर ऐसी सूरत दे दी, जिसका वस्तुस्थिति से कोई संबंध नहीं।

'भाषा का प्रश्न'-नामक पुस्तक में, जो मेरे मित्र पंडित चंद्रबली पांडे की लिखी हुई है, और जिसमें हिंदी के कार्यकर्ताओं के जानने-योग्य अच्छी सामग्री है, 'राष्ट्रभाषा का नाम'-शीर्षक अध्याय का प्रारंभ इस प्रकार हुआ है—

"हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की नागपुर की बैठक में एक अद्भुत बात यह निकल आई कि हमारी राष्ट्रभाषा का नाम हिंदी या हिंदुस्तानी न रहकर 'हिंदी हिंदुस्तानी' हो गया, और उसने धीरे-धीरे फिर हिंदी-उर्दू-प्रश्न को उभार दिया।"

इस पुस्तक से पहले छपी 'राष्ट्रभाषा क्या हो ?'-नामक पुस्तिका में काँगड़ी-गुरुकुल के एक वेदालंकारजी ने क्रोध-पूर्ण और कटु वाक्यों के बीच में लिखा है—

"इधर पं० जवाहरलालजी ने 'हिंदुस्तानी' के आंदोलन को प्रोत्साहित किया, और उधर महात्माजी ने हिंदी-साहित्य-सम्मेलन द्वारा 'हिंदी हिंदुस्तानी' का प्रस्ताव स्वीकृत करा लिया।"

इसी प्रकार की ध्वनि हाल के कुछ दूसरे लेखों में भी मुझे मिली है।

अपने सार्वजनिक जीवन में मुझे यह अनुभव हो चुका है कि बहुत लोग अपने मत के पोषण अथवा किसी ऐसे व्यक्ति या संस्था के विरोध में, जिससे वे किसी कारण रुष्ट हों, अपने लिखने और बोलने में न केवल औचित्य का विचार छोड़ देते हैं, प्रत्युत जो बात कहते हैं, उसकी नाप-जोख भी ठीक नहीं रख पाते, उनकी हृदय-भावना हाथ में ली हुई तुला की डंडी को अनायास मार देती है। पंडित चंद्रबली पांडे को मैंने इस प्रकार के लेखकों की गिनती में नहीं रक्खा। उनके बारे में मेरा यह विचार है कि वह साधारण रीति से सप्रमाण बातें कहते हैं। किंतु ऊपर उद्धृत किए हुए वाक्य की ओर हाल में ही जब मेरा ध्यान गया, मुझे बहुत अचंभा हुआ।

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की किसी भी बैठक में राष्ट्रभाषा का नाम 'हिंदी हिंदुस्तानी' स्वीकार किया गया हो, इसका मुझे ज्ञान नहीं। यदि हुआ होता, तो मुझे पता लग जाता। मैं स्वयं नागपुर के सम्मेलन में उपस्थित था। मेरी याद में कोई निश्चय इस प्रकार का नहीं हुआ था। फिर भी केवल अपनी याद का भरोसा न कर मैंने नागपुर-सम्मेलन-संबंधी पूरी पत्रावली, जो सम्मेलन-कार्यालय में है, तथा नागपुर के मंतव्यों की छपी प्रतिलिपि देखी। न छपे मंतव्यों में, न किसी कार्यवाही में यह बात मिली कि सम्मेलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने 'हिंदी हिंदुस्तानी' को राष्ट्रभाषा के लिये पर्यायवाची माना हो। इन पुराने काग़ज़ों को निकलवाने और ध्यान से देखने में मेरा समय लगा। किंतु जब पं० चंद्रबली पांडे-ऐसे लेखक ने एक बात लिखी, और उसी प्रकार के विचार की प्रतिध्वनि मुझे दूसरों में दिखाई पड़ी, तो समय देना आवश्यक जान पड़ा। पुरानी पत्रावली देखने में मुझे रस भी मिला। कुछ पुरानी बातें, जो विस्मृति की कंदरा में छिप गई थीं, फिर अपने रूप की लुनाई में सामने आ गईं। पिछले तीस वर्षों का हिंदी-इतिहास समझने में सम्मेलन-कार्यालय की पत्रावली का शायद कभी उपयोग हो सके।

नागपुर-सम्मेलन के अधिवेशन में उसके अंतिम निश्चय से सम्मेलन की नियमावली का संशोधन हुआ था। उस संशोधित नियमावली के दूसरे नियम में सम्मेलन के उद्देश हैं। उनमें उद्देश (ख) इस प्रकार है—

"देशव्यापी व्यवहारों और कार्यों को सुलभ करने के लिये राष्ट्रलिपि देवनागरी और राष्ट्र-भाषा हिंदी का प्रचार बढ़ाने का प्रयत्न करना।"

इससे यह स्पष्ट है कि राष्ट्रभाषा के लिये 'हिंदी'-शब्द का ही प्रयोग करना सम्मेलन को अभीष्ट था। नियमावली-भर में कहीं 'हिंदी हिंदुस्तानी' या 'हिंदुस्तानी' का नाम तक नहीं। नागपुर-सम्मेलन में ही सम्मेलन की ओर से वर्धा को हिंदी-प्रचार के लिये केंद्र बनाने की व्यवस्था पहलेपहल नियमावली में हुई थी। वर्धा से काम करने के लिये 'प्रचार-समिति' भी, सम्मेलन की नियमावली के अनुसार, बनी। उसका नाम 'हिंदी-प्रचार-समिति' पड़ा। देश-भर में हिंदी-प्रचार करने का भार उसके ऊपर डाला गया। इसके लगभग ढाई वर्ष बाद शिमला के अधिवेशन में प्रचार-कार्य के लिये दो समितियों की आवश्यकता दिखाई पड़ी, एक हिंदी-भाषी प्रांतों के लिये और दूसरी अहिंदी प्रांतों के लिये। वर्धावाली समिति का काम केवल अहिंदी प्रांतों में सीमित किया गया, और उसका नाम 'राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति' पड़ा। नियमावली के उपनियम ३८ के अनुसार राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति को सम्मेलन के जिन उद्देशों की पूर्ति का काम सुपुर्द हुआ, उनमें एक उद्देश (ख) है, जिसका स्वरूप ऊपर दिया जा चुका है, और दूसरा उद्देश (छ) है, जो इस प्रकार है—

"सारे देश के युवकों में हिंदी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिये प्रयत्न करना।"

इस वाक्य में भी स्पष्ट है कि राष्ट्रभाषा-समिति को 'हिंदी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने' का काम करना है।

यह हुई सम्मेलन के अधिवेशनों और उसकी नियमावली की बात। सम्मेलन की स्थायी समिति अथवा कार्य-समिति के सामने आज तक कभी यह प्रश्न भी नहीं उठा कि 'हिंदी' के स्थान पर 'हिंदी-हिंदुस्तानी' या 'हिंदुस्तानी' - शब्द का व्यवहार किया जाय। जहाँ तक सम्मेलन का संबंध है, उसकी नीति आरंभ से इस समय तक बहुत स्पष्ट है। उसका नाम है 'हिंदी-साहित्य-सम्मेलन'। उसका एक और काम है—हिंदी-साहित्य की पुष्टि और उन्नति करना और दूसरी ओर नागरी-लिपि और हिंदी-भाषा का प्रचार करना। नागरी-लिपि और हिंदी-भाषा का प्रचार वह राष्ट्रीय दृष्टि से करता है। इसलिये सम्मेलन के शब्दों में राष्ट्रलिपि नागरी है, और राष्ट्रभाषा हिंदी।

जो भ्रम सम्मेलन की नीति के संबंध में कुछ सज्जनों को हुआ है, उसका मुख्य कारण मुझे यह जान पड़ता है कि उन्होंने सम्मेलन से संबंध रखनेवाले कुछ कार्यकर्ताओं के वैयक्तिक विचारों को बिना अनुसंधान किए अपनी कल्पना में सम्मेलन की नीति के साथ बाँध दिया। सभी संस्थाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भिन्न-भिन्न विचारों के लोग रहा करते हैं। किंतु संस्था की नीति वही रहती और समझी जाती है, जो उसके मंतव्यों द्वारा स्वीकृत की गई हो, और उसके व्यवहारों में बरती जाती हो। भिन्न-भिन्न विचारों का समन्वय संस्था के मंतव्यों द्वारा प्रकट होता है। संस्था की परीक्षा उसके निश्चयों और आदेशों की कसौटी पर ही करना न्याय-संगत है। कभी-कभी संस्था के कुछ बहुत ऊँचे व्यक्तियों की भी राय संस्था के कुछ सिद्धांतों से भिन्न होती है। यद्यपि ये संस्था की उपयोगिता मानते हुए उसके कामों और उद्देशों में गहरी सहायता देते हैं, तो भी कुछ बातों में अपनी अलग कार्य-प्रणाली रख सकते हैं। इसी साधारण नियामक प्रथा का ध्यान न रखने से सम्मेलन के संबंध में कुछ ऐसे सज्जनों में भ्रांति उत्पन्न हुई है, जिन्हें सम्मेलन के कार्य का निकट-अनुभव नहीं।

यह भ्रांति कि नागपुर-सम्मेलन के अवसर पर सम्मेलन ने 'हिंदी हिंदुस्तानी' नाम राष्ट्रभाषा के लिये स्वीकृत किया, मुझे इस कारण उत्पन्न हुई जान पड़ती है कि नागपुर में, एप्रिल, सन् १९३६ के अंतिम सप्ताह में, उसी अवसर पर, जब हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का अधिवेशन वहाँ प्रारंभ हो रहा था, सम्मेलन से पृथक् 'भारतीय साहित्य-परिषद्' की स्थापना के लिये एक सभा हुई थी, जिसमें 'हिंदी हिंदुस्तानी' और 'हिंदुस्तानी' के बीच झगड़ा उठा था, और 'हिंदी हिंदुस्तानी'-शब्द 'भारतीय साहित्य-परिषद्' के काम के लिये स्वीकृत हुआ था। इस परिषद् की स्थापना में मुख्य हाथ बंबई के श्रीकन्हैयालाल मुंशी का था। स्वर्गीय श्रीप्रेमचंदजी का भी इसमें विशेष सहयोग था, और 'हंस' भारतीय साहित्य-परिषद् का मुखपत्र था। इसका संपादन ऑक्टोबर, सन् १९३५ से श्रीप्रेमचंदजी और श्रीकन्हैयालाल मुंशी मिलकर करते थे। देश-भर की सब भाषाओं के साहित्यिकों में विचार-विनिमय के लिये भारतीय साहित्य-परिषद् की स्थापना के बारे में 'हंस' में कुछ लेख पहले ही निकल चुके थे। इस विचार के पोषक सज्जनों की प्रेरणा से, सन् १९३५ में, इंदौर के सम्मेलन में, निम्न-लिखित मंतव्य हुआ था—

"देश की प्रांतीय भाषाओं के साहित्यिकों के साथ संबंध स्थापित करने तथा हिंदी-भाषा की वृद्धि में उनका सहयोग प्राप्त करने के अभिप्राय से यह सम्मेलन निम्न-लिखित सज्जनों की एक समिति बनाता है, और उसे अधिकार देता है कि वह अपने साथ अन्य सज्जनों को आवश्यकतानुसार सम्मिलित कर ले।"

इस निश्चय के अनुसार जो समिति बनी थी, उसके संयोजक श्रीकन्हैयालाल मुंशी थे। इस समिति ने दूसरी भाषाओं की कुछ संस्थाओं से सहयोग का आश्वासन प्राप्त किया, और 'भारतीय साहित्य-परिषद्' की स्थापना के लिये जनवरी, सन् १९३६ में, बंबई में, साहित्यिकों को बुलाने का विचार किया। 'हंस' में प्रकाशित एक सूचना से प्रकट होता है कि महात्मा गांधीजी की अस्वस्थता के कारण जनवरी में यह समारोह नहीं हो सका, तब वर्धा में ३ और ४ एप्रिल की तिथियाँ रक्खी गईं। किंतु फिर ये तिथियाँ भी बदली गईं, और यह समारोह नागपुर में हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर २३ और २४ एप्रिल को हुआ। इसके सभापति महात्मा गांधी थे। मुझे इस परिषद् की कोई प्रकाशित कार्यवाही नहीं मिली। किंतु मुझे स्मरण है, इसमें यह प्रश्न उठा था कि इस परिषद् का काम किस भाषा द्वारा किया जाय। इस परिषद् में अन्य भाषाओं के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त उर्दू के प्रतिनिधि मौलाना अब्दुलहक़ मौजूद थे। भाषा का प्रश्न छिड़ने पर नाम का भी प्रश्न छिड़ा। जहाँ तक मुझे याद है, मौलाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब्दुलहक़ की राय थी कि जिस भाषा में भारतीय साहित्य-परिषद् का काम हो, उसका नाम हिंदुस्तानी रक्खा जाय। महात्मा गांधी अथवा अन्य किसी की ओर से 'हिंदी हिंदुस्तानी'-शब्द सामने आया। मौलाना अब्दुलहक़ ने उसका विरोध किया, किंतु वह बहुमत से स्वीकृत हुआ। इसके बाद मौलाना अब्दुलहक़ ने भारतीय साहित्य-परिषद् और गांधीजी पर एक लेख में बहुत कड़ुआ आक्रमण किया। उन्होंने महात्मा गांधी के बारे में यहाँ तक लिखा कि महात्मा गांधी ने "रिया अर्थात् धोखेबाज़ी की चादर उतार फेकी, और असली रंग में नज़र आने लगे। वह शौक़ से हिंदी का प्रचार करें। वह हिंदी नहीं छोड़ सकते, तो हम भी उर्दू नहीं छोड़ सकते।" मौलाना अब्दुल-हक़ के उस लेख का जो उत्तर 'हंस' के संपादकों की ओर से १९३६ के जून-मास के अंक में निकला था, उसका कुछ अंश मैं उद्धृत करता हूँ—

"भारतीय साहित्य-परिषद् ने जब हिंदुस्तान के सभी साहित्यों के प्रतिनिधियों को निमंत्रित किया, तो इसीलिये कि इस साहित्यिक उद्योग में हम सब राजनीतिक मतभेदों को भूलकर शरीक हों, और कम-से-कम साहित्य के क्षेत्र में तो एकता का अनुभव कर सकें। अगर परिषद् के बानियों का उद्देश्य इस बहाने केवल हिंदी का प्रचार करना होता, तो उसे सभी साहित्यों को नेवता देने की कोई ज़रूरत न थी। हिंदी-प्रचार का काम हिंदी-साहित्य-सम्मेलन और नागरी-प्रचारिणी सभा के ज़रिए हो ही रहा है। उस काम के लिये एक नया परिषद् ही क्यों बनाया जाता। हमारे सामने यही और एकमात्र यही उद्देश्य था कि हिंदुस्तान में कोई ऐसी संस्था बनाई जाय, जिसमें सभी भाषाओं के साहित्यकार आपस में मिलें, साहित्य और समाज के नए-नए जटिल प्रश्नों पर विचार करें, साहित्य की नई विचार-धाराओं की आलोचना करें, और इस तरह उनमें एक विशाल बिरादरी के अंग होने की भावना जागे, उनमें आत्मविश्वास पैदा हो, उन्हें दूसरे साहित्यों का ज्ञान हो, और अपने साहित्य में जो कमी नज़र आए, उसे पूरा कराने की प्रेरणा मिले। यह सभी मानते हैं कि अगर हिंदुस्तान को ज़िंदा रहना है, तो वह एक राष्ट्र के रूप में ही ज़िंदा रह सकता है, एक राष्ट्र बनकर ही वह संसार की संस्कृति में अपने स्थान की रक्षा कर सकता है, अपने खोए हुए गौरव को पा सकता है।.....भारतीय परिषद् का उद्देश्य जहाँ साहित्यिक संगठन, सच्चे साहित्यिक आदर्शों का प्रचार और साहित्यिक सहयोग था, वहाँ एक उद्देश्य यह भी था कि उस संगठन और सहयोग के द्वारा हमारी राष्ट्र-भावना भी बलवान् हो। हमारा यह मनोभाव कभी न था कि इस उद्योग से हम प्रांतीय साहित्यों की उन्नति और विकास में बाधा डालें। जब हमारी मातृभाषाएँ अलग हैं, तो साहित्य भी अलग रहेंगे। अगर एक-एक प्रांत रहकर हम अपना अस्तित्व बनाए रह सकते, तो हमें इस तरह के उद्योग की ज़रूरत ही न होती, लेकिन हम यह अनुभव करते हैं कि हमारा भविष्य राष्ट्रीय एकता के हाथ है। उसी पर हमारी ज़िंदगी और मौत का दारमदार है। और, राष्ट्रीय एकता के कई अंगों में भाषा और साहित्य की एकता भी है। इसलिये साहित्यिक एकता के विचार के साथ एक भाषा का प्रश्न भी अनायास ही, बिना बुलाए मेहमान की तरह, आ खड़ा होता है। भाषा के साथ लिपि का प्रश्न भी आ ही जाता है, और परिषद् के इस जलसे में भी ये दोनो प्रश्न आ गए।

"झगड़ा हुआ भाषा पर, यानी साहित्य-परिषद् भाषा के किस रूप का आश्रय ले। 'हिंदी' शब्द से उर्दू को उतनी चिढ़ है, जितनी 'उर्दू' से हिंदी को है। और, यह भेद केवल नाम का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है।.....हिंदी को 'हिंदुस्तानी' चाहे उतना प्रिय न हो, पर उर्दू को 'हिंदुस्तानी' के स्वीकार करने में कोई बाधा नहीं है, क्योंकि उसे वह अपनी परिचित-सी लगती है। मगर परिषद् ने 'हिंदुस्तानी' को अपना माध्यम बनाना न स्वीकार करके 'हिंदी हिंदुस्तानी' को स्वीकार किया।..... जिस सभा में वह (मौलाना अब्दुलहक़) बैठे हुए थे, उसमें हिंदीवालों की कसरत थी। उर्दू के प्रतिनिधि तीन से ज़्यादा न थे। फिर भी जब 'हिंदी हिंदुस्तानी' और अकेले 'हिंदुस्तानी' पर वोट लिए गए, तो 'हिंदुस्तानी' के पक्ष में आधी से कुछ ही कम राएँ आईं। अगर मेरी याद ग़लती नहीं कर रही है, तो शायद पंद्रह और पचीस का बटवारा था। एक हिंदी-प्रधान जलसे में, जहाँ उर्दू के प्रतिनिधि कुल तीन हों, पंद्रह रायों का हिंदुस्तानी के पक्ष में मिल जाना हार होने पर भी जीत ही है।..... जो लोग 'हिंदुस्तानी' का वकालतनामा लिए हुए हैं, और उनमें एक इन पंक्तियों का लेखक भी है, वे भी अभी तक 'हिंदुस्तानी' का कोई रूप नहीं खड़ा कर सके। केवल उसकी कल्पना-मात्र कर सके हैं, यानी वह ऐसी भाषा हो, जो उर्दू और हिंदी दोनो ही के संगम की सूरत में हो, जो सुबोध हो, और आम बोलचाल की हो। ..... हम मौलाना साहब से प्रार्थना करेंगे कि परिषद् से इतनी जल्द बड़ी-बड़ी आशाएँ न रक्खें, और नीयतों पर शुबहा न करें। मुमकिन है, आज जो बात मुश्किल नज़र आ रही है, वह साल-दो साल में आसान हो जाय।"

ऊपर के उद्धरण से उस सभा की कार्यवाही का कुछ हाल मिल जाता है, जिसमें भारतीय साहित्य-परिषद् की स्थापना हुई। यह भी स्पष्ट है कि उसके लेखक (जो 'हंस' के संपादक थे) स्वयं हिंदुस्तानी के पक्षपाती थे। साथ ही यह भी स्पष्ट हो जाता है कि इस भारतीय साहित्य-परिषद् की भाषा के लिये नाम चुनना एक ऐसी बात थी, जिसका हिंदी-साहित्य-सम्मेलन से कोई संबंध न था।

नागपुर में भारतीय साहित्य-परिषद् की स्थापना के बाद फिर उसका कोई अधिवेशन हुआ हो, इसका मुझे पता नहीं। मुझे ऐसा लगता है कि उर्दू की ओर से मौलाना अब्दुलहक़ ने जो विरोध उठाया, उसके कारण यह भारतीय साहित्य-परिषद् की स्थापना के बाद समाप्त-सा हो गया। कम-से-कम मुझे कुछ मालूम नहीं कि उसके बाद क्या काम हुआ। नागपुर के भारतीय साहित्य-परिषद् की कार्यवाही छापकर प्रकाशित की गई हो, इसमें भी मुझे संदेह है।

अस्तु, इस भारतीय साहित्य-परिषद् के किसी मंतव्य को हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के साथ गूँथना कदापि उचित नहीं।

सम्मेलन की राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति में अवश्य हिंदुस्तानी का प्रश्न उठा है। उसके सदस्यों में ऐसे मान्य राष्ट्र-सेवक हैं, जो यह उचित समझते हैं कि राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति के व्यवहार में राष्ट्रभाषा के लिये हिंदी के साथ हिंदुस्तानी नाम को भी स्वीकार करना उचित है। उनकी यह शिकायत है कि हिंदी-साहित्य-सम्मेलन ने हिंदुस्तानी-नाम को कहीं भी स्थान नहीं दिया। परंतु समिति की ओर से सम्मेलन की नीति का जान-बूझकर उल्लंघन, जहाँ तक मुझे मालूम हुआ है, कभी नहीं किया गया।

'सबकी बोलियाँ'-नामक पत्रिका राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति की ओर से निकलती है। उसके अंकों तथा राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति द्वारा प्रकाशित विवरणों को पढ़ने से पता लग सकता है कि काका कालेलकर की देख-रेख में इस समिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने हिंदी के काम को अहिंदी प्रांतों में कितना आगे बढ़ाया है। काका कालेलकर असाधारण निष्ठावान् पुरुष हैं। उनके सहयोग से हिंदी को महती शक्ति मिली है। इस समिति के चलाने में पूज्य महात्मा गांधी का वरद हस्त काका कालेलकर को समय-समय पर मार्ग प्रदर्शित करता रहा है। राष्ट्रीयता की दृष्टि से महात्मा गांधी ने हिंदी को कहाँ तक पहुँचाया है, इसका मुझे भीतरी अनुभव है, क्योंकि महात्माजी को सम्मेलन की ओर लाने में मेरा हाथ, और उससे भी अधिक मेरा हृदय, था। महात्मा गांधी या कालेलकरजी के बारे में जब हम हिंदी के कार्यकर्ता कुछ भी लिखें, हमें सदा उनके कामों का स्मरण रखना उचित है। राष्ट्रलिपि नागरी और राष्ट्रभाषा हिंदी के ये दोनो ही पुजारी हैं। साथ ही ये राष्ट्र और मानवता के और अधिक पुजारी हैं। हमारी कृतज्ञता की यह माँग है, और हमारा गौरव इसी में है कि जब हम उनके विचारों से मतभेद प्रकट करें, तो तुले हुए शब्दों में और विनय के साथ। विनय और दृढ़ता का विरोध नहीं। मेरा तो अनुभव यह है कि ये दोनो गुण प्रायः साथ ही रहते हैं।

काका कालेलकर ने 'सबकी बोली' के पिछले अगस्त के अंक में 'हिंदुस्तानी'-शीर्षक एक लेख लिखा था। उस लेख में काकाजी ने इस मत का कुछ समर्थन किया है कि हिंदी-साहित्य-सम्मेलन 'हिंदुस्तानी'-शब्द को भी राष्ट्रभाषा के लिये ग्राह्य माने। उस लेख का अंतिम अंश यह है—

"जब राष्ट्रीय महासभा ने राष्ट्रभाषा को 'हिंदुस्तानी' कह दिया, तब वही नाम लेकर और अपनी ही व्याख्या को राष्ट्रभाषा-सम्मेलन चलाए, तो उसमें क्या हर्ज है? जब हम कहते हैं कि उर्दू भी हिंदी का एक रूप है, तब हिंदी के उस रूप को, जो हिंदू-मुसलमानों में, शहरों व गाँवों में प्रचलित है, हिंदुस्तानी कहने में क्या डर है? हिंदुस्तानी न तो साहित्यिक हिंदी है, न उर्दू-ए-मुअल्ला है। जब हमने शिमला में साहित्यिक हिंदी की अलग व्याख्या कर दी, तब हिंदी के उस रूप को, जिसे राष्ट्रभाषा के तौर पर हमने इंदौर में तय किया, और जिसे हम भारत-भर में चलाना चाहते हैं, हिंदुस्तानी कहने में क्या हर्ज है? कांग्रेस ने नाम रख दिया। उससे लाभ उठाकर उसी के झंडे के नीचे हम आगे बढ़ें, या नाम से घबराकर हम राष्ट्रीय क्षेत्रों से ही अपने को बहिष्कृत कर लें?"

किंतु अपना मत रखते हुए भी काकाजी ने 'सबकी बोली' के पिछले जनवरी के अंक में यह लिखा था कि "सम्मेलन का राष्ट्रभाषा का अधिकृत नाम तो हिंदी ही है, और रहेगा।"

काका कालेलकर राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति के उप-सभापति और प्राण रहे हैं। श्रीमन्नारायणजी अग्रवाल उसके मंत्री हैं। इन दोनो के साथ जो मेरी बातें हुई हैं, उनसे मुझे स्पष्ट है कि राष्ट्रभाषा के लिये 'हिंदी'-शब्द के साथ 'हिंदुस्तानी'-शब्द के व्यवहार को भी सिद्धांत-रूप से ठीक मानते हुए उन्होंने राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति के काम में सदा 'हिंदी'-शब्द का प्रयोग और सम्मेलन की नीति का शुद्ध सेवा-भाव से पालन किया है।

राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति के कामों में हिंदी-शब्द का ही चलन होते हुए भी यह बात पिछले कुछ महीनों में मुझे मालूम हुई कि समिति के सदस्यों में हिंदुस्तानी-शब्द के व्यवहार के बारे में मतभेद है। इसी आपसी मतभेद के ऊपर बातचीत करने के लिये पिछली ४ और ५ ऑक्टोबर को वर्धा में राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति की एक बैठक हुई थी। उसमें यही निश्चय हुआ कि समिति के कामों में राष्ट्रभाषा के लिये हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की नियमावली के अनुसार हिंदी-शब्द का ही प्रयोग हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है। साथ ही यह भी बात मानी गई कि सम्मेलन से अलग हिंदुस्तानी-शब्द व्यवहार करने की किसी योजना में राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति के कोई सदस्य यदि शरीक होना चाहें, तो हो सकते हैं।

कांग्रेस के कामों में हिंदुस्तानी-शब्द का व्यवहार है। इसी प्रकार गवर्नमेंट तथा कुछ अन्य संस्थाओं में हिंदुस्तानी-शब्द का व्यवहार हिंदी और उर्दू दोनो रूपों को एक शब्द से प्रकट करने के लिये आता है। हिंदी के कार्यकर्ताओं को ऐसे स्थानों पर हिंदुस्तानी-शब्द का भी व्यवहार कभी-कभी करना होता है, यद्यपि अपनी भाषा के लिये ये हिंदी-शब्द का ही प्रयोग शुद्ध समझते हैं। सम्मेलन और उसकी समितियों के कामों में सम्मेलन के उद्देश के अनुसार स्वभावतः हिंदी-शब्द ही बरता जा सकता है। इस नैतिक क्रम के आधार पर राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति के मतभेद का समन्वय किया गया।

काका साहब ने राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति की उपर्युक्त बैठक के बाद और उसके निश्चय के कारण उससे इस्तीफ़ा दे दिया है। उन्होंने अपना इस्तीफ़ा 'सबकी बोली' के ऑक्टोबर के अंक में प्रकाशित भी कर दिया है। उनके इस्तीफ़े के शब्दों में भी उनका सम्मेलन से प्रेम टपक रहा है। उनके इस्तीफ़े से मुझे दुःख होना स्वाभाविक है। किंतु एक ओर सम्मेलन की नीति की रक्षा और दूसरी ओर काका कालेलकर के मत का आदर, इन दोनो के बीच इस समय ऐसा ही समझौता हो सका। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति से इस्तीफ़ा देकर भी काकाजी हिंदी के हित-साधन में लगे रहेंगे, और उनका जो ठोस काम होगा, वह दूसरी रीतियों से हिंदी के प्रचार में सहायक होगा। राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति में न रहते हुए भी सम्मेलन के साथ उनका सहयोग बराबर रहेगा।

मैं आशा करता हूँ, जो बातें मैंने ऊपर लिखी हैं, उनसे 'हिंदी' और 'हिंदुस्तानी'-शब्दों के संबंध में सम्मेलन की नीति स्पष्ट हो गई होगी।

(श्रद्धेय टंडनजी स्वदेश और साहित्य के सर्वमान्य नेता हैं। सुधा के प्रेमी पाठक सभी उनके नाम और काम से परिचित हैं। हम इस लेख को अग्रलेख के रूप में नवंबर की सुधा में देने जा रहे थे, पर इसका और पहले निकलना आवश्यक समझकर ऑक्टोबर की संख्या में ही, संपादकीय नोट रोककर, दे रहे हैं। टंडनजी सम्मेलन के प्राण हैं। इस लेख में उन्होंने सम्मेलन की भाषा-संबंधी नीति स्पष्ट करके कुछ हिंदी-भाषा-भाषियों का भ्रम दूर किया है। इस संबंध में हम टंडनजी का ध्यान सुधा के इसी अंक में दी गई धारा की टिप्पणी नं० १ की ओर आकर्षित करते हैं। क्या हम नवनिर्मित हो रही सरल हिंदी, हिंदुस्थानी या हिंदी हिंदुस्थानी भाषा को 'भारती' नाम से पुकारकर यह सब झगड़ा नहीं मिटा सकते ?—सुधा-संपादक)

सुधा हिंदी-संसार की सर्वोत्तम पत्रिका है।
ग्राहक बनने और बनाने की कृपा कीजिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा के नियम

[सुधा के २ संस्करण निकलते हैं—(१) राजसंस्करण, (२) साधारण संस्करण]

मूल्य

'सुधा' के राजसंस्करण का डाक-व्यय-सहित वार्षिक मूल्य १२), छ मास का ६) और प्रति संख्या का १) है। साधारण संस्करण का वार्षिक ६), छ मास का ३) और एक प्रति का ॥) है। वी० पी० से मँगाने में ≡) रजिस्ट्री के और देने पड़ेंगे। इसलिये ग्राहकों को मनीऑर्डर से ही चंदा भेज देना चाहिए। भारत के बाहर सर्वत्र वार्षिक मूल्य वही है, जो भारत में। सुधा की यह भी एक विशेषता है। वर्षारंभ श्रावण (अगस्त) से होता है। लेकिन ग्राहक चाहे जिस संख्या से बन सकते हैं।

अप्राप्त संख्या

अगर कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे, तो उसी महीने के अंत तक कार्यालय को सूचना मिलनी चाहिए। लेकिन हमें सूचना देने के पहले स्थानीय पोस्ट-ऑफ़िस में उसकी जाँच करके डाकख़ाने का दिया हुआ उत्तर सूचना के साथ आना चाहिए। उन्हें उस संख्या की दूसरी प्रति भेज दी जायगी। लेकिन उक्त तारीख़ के बाद सूचना मिलने से उस पर ध्यान नहीं दिया जायगा, और उस संख्या को ग्राहक १) या ॥) के टिकट भेजने पर ही पा सकेंगे।

पत्र-व्यवहार

उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिए, अन्यथा पत्र का उत्तर विलंब से दिया जाना संभव है। पत्र के साथ ग्राहक-नंबर का भी उल्लेख होना चाहिए। मूल्य या ग्राहक होने की सूचना मैनेजर सुधा, नं० ३६, लाटूश रोड, लखनऊ के पते से आनी चाहिए।

पता

ग्राहक होते समय अपना नाम और पता बहुत साफ़ अक्षरों में लिखना चाहिए। दो-एक महीने के लिये पता बदलवाना हो, तो उसका प्रबंध डाक-घर से ही कर लेना ठीक होगा। अधिक दिन के लिये बदलवाना हो, तो संख्या निकलने के १५ दिन पेश्तर उसकी सूचना देनी चाहिए।

लेख आदि

लेख या कविता स्पष्ट अक्षरों में, काग़ज़ की एक ओर, संशोधन के लिये इधर-उधर जगह छोड़कर, लिखी होनी चाहिए। क्रमशः प्रकाशित होने लायक़ बड़े लेख संपूर्ण आने चाहिए। किसी लेख अथवा कविता के प्रकाशित करने या न करने का, उसे घटाने-बढ़ाने का तथा उसे लौटाने या न लौटाने का सारा अधिकार संपादक को है। जो नापसंद लेख संपादक लौटाना मंज़ूर करें, वे टिकट भेजने पर ही वापस किए जा सकते हैं। यदि लेखक लेना स्वीकार करते हैं, तो उपयोगी और उत्तम लेखों पर पुरस्कार भी दिया जाता है। सुधा में प्रकाशित पुरस्कृत लेखों और कविताओं को पुस्तकाकार या किसी संग्रह में निकालने का अधिकार सुधा के अध्यक्ष को रहेगा। अपुरस्कृत रचनाओं पर लेखकों और सुधा-अध्यक्ष, दोनों का अधिकार होगा। सचित्र लेखों के चित्रों का प्रबंध लेखकों को करना चाहिए। चित्र प्राप्त करने के लिये आवश्यक ख़र्च प्रकाशक देंगे।

लेख, कविता, समालोचना के लिये पुस्तकें और बदले के पत्र इस पते से भेजने चाहिए—

श्रीदुलारेलाल
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
कवि-कुटीर, लखनऊ

विज्ञापन

किसी महीने में विज्ञापन बंद करना या बदलवाना हो, तो एक महीने पहले सूचना देनी चाहिए।

अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। छपाई पेशगी ली जाती है। विज्ञापन की दर नीचे प्रकाशित है—

साधारण	१ पृष्ठ	या	२ कालम	की छपाई	२५)	प्रति मास
,,	½	,, या	१	,, ,, ,,	१५)	,, ,,
,,	¼	,, या	½	,, ,, ,,	१०)	,, ,,
,,	⅛	,, या	¼	,, ,, ,,	६)	,, ,,

कम-से-कम आधा कालम विज्ञापन छपानेवालों को सुधा मुफ़्त मिलती है। विज्ञापनदाता द्वारा छपे हुए सुधा-साइज़ के ८ पृष्ठ क्रोड़-पत्र की सिलाई, बटाई के चार्जेज़ ६०), ४ पृष्ठ के ३५) और २ पृष्ठ के २०) लिए जाते हैं।

सुधा में विज्ञापन छपाने से बड़ा लाभ रहता है। कारण, इसका प्रत्येक विज्ञापन लाखों पढ़े-लिखे, धनीमानी और सभ्य स्त्री-पुरुषों की नज़रों से गुज़र जाता है। हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका होने के कारण इसका प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ रहा है।

कृपया शीघ्र ही अपना विज्ञापन सुधा में छपाकर लाभ उठाइए। कम-से-कम एक बार परीक्षा तो कर लीजिए।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रियों को कौन-सा ग्रंथ सुखी कर सकता है?

चिकित्सा-चंद्रोदय, पाँचवाँ भाग

पृष्ठ-संख्या ६७०, मूल्य ५), डाक-महसूल १)

इस ग्रंथ में स्त्रियों के सभी रोगों—जैसे प्रदर-रोग, सोम-रोग, प्रसूता के रोग आदि—पर विस्तार से लिखा गया है।

बाँझ बनानेवाले और पुत्रवती करनेवाले नुसखे विस्तार से लिखे गए हैं। आजकल इसी ग्रंथ के नुसखे, जो चार पैसे में बन सकते हैं, लोग दो-दो और चार-चार रुपए में बेचकर मालामाल हो रहे हैं। आप इस पुस्तक को खरीदकर खुद ही क्यों नहीं घर में नुसखे तैयार कर लेते? इसी भाग को देखकर अनेकों नारियाँ 'वैद्या' बन बैठी हैं।

पता—हरिदास ऐंड कंपनी, मथुरा

दुलारे-दोहावली

पर

आचार्य पं० रामचंद्रजी शुक्ल की नवीन सम्मति

हिंदी-साहित्य के सर्वश्रेष्ठ समालोचक और इतिहासकार पं० रामचंद्रजी शुक्ल अपने 'हिंदी-साहित्य का इतिहास'-नामक ग्रंथ में, नवीनतम संस्करण में, लिखते हैं—

"कविवर बिहारीलाल की परंपरा के वर्तमान प्रतिनिधि श्रीदुलारेलालजी भार्गव के दोहों की बारीकी साहित्य-क्षेत्र में अपना कमाल खड़ी बोली के इस ज़माने में भी दिखाती रहती है। बिहारी की प्रतिभा जिस ढाँचे की थी, उसी ढाँचे की दुलारेलालजी की भी है, इसमें संदेह नहीं। एक-एक दोहे में सफ़ाई के साथ रस से स्निग्ध या वैचित्र्य से चमत्कृत कर देनेवाली प्रचुर सामग्री भरने का गुण इनमें भी है। कुछ दोहों में देश-भक्ति, अछूतोद्धार, राष्ट्रीय आंदोलन इत्यादि की भावना का अनूठेपन के साथ समावेश करके इन्होंने पुराने साँचे में नया मसाला ढालने की अच्छी कला दिखाई है। आधुनिक काव्य-क्षेत्र में दुलारेलालजी ने व्रजभाषा-काव्य-चमत्कार-पद्धति का एक प्रकार से पुनरुद्धार किया है। इनकी दुलारे-दोहावली पर टीकमगढ़-राज्य की ओर से २,०००) का देव-पुरस्कार मिल चुका है।"

सप्तम संस्करण छपकर तैयार है। मूल्य १), सजिल्द १॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No. A—47

हिंदी-अँगरेज़ी-छपाई

रंगीन तिरंगे चित्र

सर्वश्रेष्ठ जिल्द-बँधाई

सोने की छपाई, चिट्ठी के काग़ज़, लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड, विज़िटिंग-कार्ड, बिल, मिमो, रसीद-बुक, कैलेंडर, नोटिस, निमंत्रण-पत्र, अभिनंदन-पत्र, पुस्तक आदि—

सब प्रकार की छपाई का काम

हमारे यहां सुंदर और सस्ता

साथ ही

ठीक वक़्त पर किया जाता है।

काम संतोषप्रद होने की गैरंटी

आपको छोटा-मोटा, सुंदर, सस्ता, किसी प्रकार का भी छपाई का कोई काम कराना हो, तो उसे तुरंत हमारे पास भेजिए।

अब इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं !

सब प्रकार की छपाई के काम के लिये सुविधा-जनक स्थान

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल (सोल प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित [illegible] प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा

प्रधान संपादक
श्रीदुलारेलाल
श्रीसावित्री

कार्तिक, १९
NOVEMBER, 1940

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय आ गया! सब ऋतुओं में सेवन करने योग्य !! अब न चूकिए !!!

अपूर्व शक्ति पैदा करनेवाली

चंद्रोदय मकरध्वज वटी

यह औषधि बल और वीर्य का राजा है। इसमें चंद्रोदय, कस्तूरी, भीमसेनी कपूर, सोना-चाँदी, मोती आदि संयुक्त है। चंद्रोदय नाम रख लेना सहज है, परंतु असल चंद्रोदय तैयार करना कठिन है। वीर्य-संबंधी कोई भी ख़राबी हो, दूर होकर संतान-उत्पत्ति के योग्य होता है। हर प्रकार की शारीरिक व मानसिक व धातु की निर्बलता दूर होती है। बूढ़ा जवान होता है। मकरध्वज सर्व रोगों को दूर करता है। उचित अनुपान-विधि से प्रत्येक रोग पर बर्ता जा सकता है। राजे-महाराजे सदैव इसे सेवन करते थे। इसी कारण प्रकृति-विरुद्ध बहुत-सी रानियाँ रखने पर भी दुर्बल न होते थे। मरते हुए के मुख में डाल दें एक बार, तो अवश्य ईश्वर की कृपा से उठ खड़ा होगा। हम इसके द्वारा अनेकों निःसंतानों के घर बसा चुके हैं। हर वर्ष ४० दिन खा छोड़ें, तो बस क्या कहना है। उनकी आयु बहुत ही बढ़े। यह दवा स्त्री-पुरुष दोनो के लिये लाभकारी है।

आपका शरीर कैसा ही शुष्क हो गया हो, शक्ति भले ही नष्ट हो गई हो, यौवनावस्था की तेज़ी जाती रही हो, शरीर का रुधिर घूमना बंद हो गया हो, चेहरे की सुर्ख़ी उड़कर मुँह का रंग फीका पड़ गया हो, गाल पिचक गए हों, छाता की अस्थियाँ निकल आई हों, सांसारिक सुख की प्राप्ति न होती हो, ऐसी दशा में "चंद्रोदय मकरध्वज वटी" का केवल ४० दिन विधि-पूर्वक सेवन कर लेना अति आवश्यक है। "यह अनुपम दवा" आपके शरीर को सबल, अस्थियों को सुस्निग्ध, सर्वांग दृढ़, पुष्ट और सुंदर गुलाबी मुख-मंडल, पैरों को सशक्त, नेत्रों को तेजस्वी, मन को उत्साही और आनंदी बनाकर संपूर्ण ऐश्वर्य प्रदान करेगी, तथा स्वप्न-दोष, मूत्रकृच्छ्र, बहुमूत्र, धातु का पानी के समान पतला होना, अनेक प्रकार के प्रमेह, मूत्र के साथ खार गिरना, पाखाने के समय वीर्य का निकलना, पेशाब के पूर्व या पश्चात् धातु गिरना, पेशाब के साथ जलन व सुर्ख़ पेशाब होना, हमेशा स्वप्न-दोष, शीघ्रपतन, नपुंसकता, सुस्ती, अशक्ति आदि रोगों को सिर्फ़ ४० दिन में समूल नष्ट करके शरीर में नया ख़ून, नई ताक़त, नया जोश और नया उत्साह पैदा करेगी। खोए हुए जीवन का दुबारा आनंद मिलेगा। मूल्य ४० गोली यानी १ डिब्बा का २॥), ३ डिब्बा का ७), ६ डिब्बा का १४), डाक-ख़र्च अलग।

पता—आयुर्वेदाचार्य छोटेलाल जैन।

रत्नाकर-औषधालय, इटावा यू० पी० नं० ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा के नियम

[सुधा के २ संस्करण निकलते हैं—(१) राजसंस्करण, (२) साधारण संस्करण]

मूल्य

'सुधा' के राजसंस्करण का डाक-व्यय-सहित वार्षिक मूल्य १२), छ मास का ६) और प्रति संख्या का १) है। साधारण संस्करण का वार्षिक ६), छ मास का ३) और एक प्रति का ॥) है। वी० पी० से मँगाने में ≡) रजिस्ट्री के और देने पड़ेंगे। इसलिये ग्राहकों को मनीऑर्डर से ही चंदा भेज देना चाहिए। भारत के बाहर सर्वत्र वार्षिक मूल्य वही है, जो भारत में। सुधा की यह भी एक विशेषता है। वर्षारंभ श्रावण (अगस्त) से होता है। लेकिन ग्राहक चाहे जिस संख्या से बन सकते हैं।

अप्राप्त संख्या

अगर कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे, तो उसी महीने के अंत तक कार्यालय को सूचना मिलनी चाहिए। लेकिन हमें सूचना देने के पहले स्थानीय पोस्ट-ऑफ़िस में उसकी जाँच करके डाकख़ाने का दिया हुआ उत्तर सूचना के साथ आना चाहिए। उन्हें उस संख्या की दूसरी प्रति भेज दी जायगी। लेकिन उक्त तारीख़ के बाद सूचना मिलने से उस पर ध्यान नहीं दिया जायगा, और उस संख्या को ग्राहक १) या ॥) के टिकट भेजने पर ही पा सकेंगे।

पत्र-व्यवहार

उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिए, अन्यथा पत्र का उत्तर विलंब से दिया जाना संभव है। पत्र के साथ ग्राहक-नंबर का भी उल्लेख होना चाहिए। मूल्य या ग्राहक होने की सूचना मैनेजर सुधा, नं० ३६, लाटूश रोड, लखनऊ के पते से आनी चाहिए।

पता

ग्राहक होते समय अपना नाम और पता बहुत साफ़ अक्षरों में लिखना चाहिए। दो-एक महीने के लिये पता बदलवाना हो, तो उसका प्रबंध डाक-घर से ही कर लेना ठीक होगा। अधिक दिन के लिये बदलवाना हो, तो संख्या निकलने के १५ दिन पेश्तर उसकी सूचना देनी चाहिए।

लेख आदि

लेख या कविता स्पष्ट अक्षरों में, काग़ज़ की एक ओर, संशोधन के लिये इधर-उधर जगह छोड़कर, लिखी होनी चाहिए। क्रमशः प्रकाशित होने लायक़ बड़े लेख संपूर्ण आने चाहिए। किसी लेख अथवा कविता के प्रकाशित करने या न करने का, उसे घटाने-बढ़ाने का तथा उसे लौटाने या न लौटाने का सारा अधिकार संपादक को है। जो नापसंद लेख संपादक लौटाना मंज़ूर करें, वे टिकट भेजने पर ही वापस किए जा सकते हैं। यदि लेखक लेना स्वीकार करते हैं, तो उपयोगी और उत्तम लेखों पर पुरस्कार भी दिया जाता है। सुधा में प्रकाशित पुरस्कृत लेखों और कविताओं को पुस्तकाकार या किसी संग्रह में निकालने का अधिकार सुधा के अध्यक्ष को रहेगा। अपुरस्कृत रचनाओं पर लेखकों और सुधा-अध्यक्ष, दोनों का अधिकार होगा। सचित्र लेखों के चित्रों का प्रबंध लेखकों को करना चाहिए। चित्र प्राप्त करने के लिये आवश्यक ख़र्च प्रकाशक देंगे।

लेख, कविता, समालोचना के लिये पुस्तकें और बदले के पत्र इस पते से भेजने चाहिए—

श्रीदुलारेलाल
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
कवि-कुटीर, लखनऊ

विज्ञापन

किसी महीने में विज्ञापन बंद करना या बदलवाना हो, तो एक महीने पहले सूचना देनी चाहिए।

अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। छपाई पेशगी ली जाती है। विज्ञापन की दर नीचे प्रकाशित है—

साधारण	१ पृष्ठ	या	२ कालम की	छपाई	२५)	प्रति मास
,,	½	,, या	१	,, ,, ,,	१५)	,, ,,
,,	¼	,, या	½	,, ,, ,,	१०)	,, ,,
,,	⅛	,, या	¼	,, ,, ,,	६)	,, ,,

कम-से-कम आधा कालम विज्ञापन छपानेवालों को सुधा मुफ़्त मिलती है। विज्ञापनदाता द्वारा छपे हुए सुधा-साइज़ के ८ पृष्ठ क्रोड़-पत्र की सिलाई, बटाई के चार्जेज़ ६०), ४ पृष्ठ के ३५) और २ पृष्ठ के २०) लिए जाते हैं।

सुधा में विज्ञापन छपाने से बड़ा लाभ रहता है। कारण, इसका प्रत्येक विज्ञापन लाखों पढ़े-लिखे, धनीमानी और सभ्य स्त्री-पुरुषों की नज़रों से गुज़र जाता है। हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका होने के कारण इसका प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ रहा है।

कृपया शीघ्र ही अपना विज्ञापन सुधा में छपाकर लाभ उठाइए। कम-से-कम एक बार परीक्षा तो कर लीजिए।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापार की मंदी होने पर भी

१. ठीक-ठीक लिखे हुए
२. उपयुक्त माध्यम में दिए गए **विज्ञापन**
३. सुंदरता से छपे हुए

हमेशा रुपया खींचते हैं

व्यापार की चाभी
विज्ञापन छपाना
: : है : :

सुधा

१. में दक्ष मनोवैज्ञानिक विज्ञापन-लेखक नियुक्त हैं।
२. विज्ञापन देने के लिये सर्वोत्तम माध्यम है।
३. उसकी टाइपोग्राफी कला-पूर्ण है।

इसीलिये

सुधा में विज्ञापन छपाइए

आपके लाभ की बात

साधारण विज्ञापन की दर **सुधा** में जितने

प्रतिमास	
१ पृष्ठ की छपाई	२५)
½ ,, ,, ,,	१५)
¼ ,, ,, ,,	१०)
⅛ ,, ,, ,,	६)

विज्ञापन छपते हैं, उतने किसी भी हिंदी-पत्रिका में नहीं छपते !

मैनेजर 'सुधा'
[विज्ञापन-विभाग]
नं० ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

	पृष्ठ
१. गीत (कविता)—[लेखक, श्रीपं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	४४३
२. 'हृदय' की बात (सचित्र)—[लेखक, श्रीयुत पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' ...	४४४
३. राज्याभिषेक के समय पृथ्वीराज चौहान की अवस्था—[लेखक, महा-महोपाध्याय, रायबहादुर, साहित्यवाचस्पति डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा डी० लिट्० (ऑनरेरी)	४५१
४. पराधीन (दास) महत्कार्य नहीं कर सकता—[लेखक, अध्यापक श्रीचेतराम शर्मा, कन्या-महाविद्यालय, जालंधर...	४५५
५. दोष-दृष्टि (कविता)—[लेखक, पु० श्रीप्रतापनारायण 'कविरत्न'	४६०
६. नारी-जीवन (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत रमेश वर्मा	४६२

अमृतांजन
सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सरदी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड
बंबई, कलकत्ता, मदरास
पो०बॉक्स नं० ६,८२५

[ई० सन् १९०१ में स्थापित]

च्यवनप्राश-३) सेर अध्यक्ष मथुरा बाबू का मकरध्वज-४) भरी

शक्ति औषधालय-ढाका

आयुर्वेदिक संसार में युगांतर उपस्थित कर दिया है।
कारखाना और हेड ऑफ़िस ढाका, बंगाल। तार का पता 'शक्ति' ढाका।
कलकत्ता हेड ऑफ़िस—५२। १, बीडन स्ट्रीट। चौरंघी
बंगाल से बाहर की शाखाएँ—देहली, कानपुर, इलाहाबाद, पटना, भागलपुर, गया, बनारस, गोरखपुर, बुलानाला, जमशेदपुर, गौहाटी, तिनसुकिया (आसाम), मदरास, कटक, रंगून, वेसिन, मांडले (बरमा), बंबई, लखनऊ ब्रांच—२ श्रीराम रोड, लखनऊ आदि।
ब्रांच भारतवर्ष में सर्वत्र और बरमा में
मृतसंजीवनी सुरा (गवर्नमेंट से लाइसेंसशुदा) भारतवर्ष और बरमा में हमारी सभी ब्रांचों में मिलती है।
अध्यक्षगण—श्रीमथुरामोहन, लालमोहन, फणींद्रमोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती।

प्रोप्राइटर्स—श्रीमथुरामोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती बी०ए०
हिंदू केमिस्ट और फ़िज़िशियन
पत्र और मनीऑर्डर आदि मथुरा बाबू मैनेजिंग प्रोप्राइटर के नाम भेजिए
आयुर्वेदीय चिकित्सा-प्रणाली-संबलित सूचीपत्र मुफ़्त मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

७. जरमनी में आज़ादी—[लेखक, श्रीपृथ्वीपालसिंह एम्० ए० (मिज़ोरी), जे० डी० (लंदन), एल्-एल्० बी० (लखनऊ) ४६७

८. बड़ा पापी कौन ? (सामाजिक नाटक)—[लेखक, श्रीयुत सेठ गोविंददास ... ४७२

९. ईशानवर्मन (आलोचना)—[लेखक, श्रीयुत गोपीचंद्र मिश्र शास्त्री, साहित्याचार्य ४७७

१०. गद्य-काव्य—[लेखिका, श्रीदिनेशनंदिनी चोरड्या ४८४

११. मित्र के नेत्र (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'वचनेश'जी ४८५

१२. मेरी नैनीताल-यात्रा (सचित्र)—[लेखक, श्रीयुत लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' साहित्यरत्न, एम्० ए० ... ४८६

१३. स्वर्गीय प्रोफ़ेसर महेशचरण सिनहा (जीवनी) ... ४९१

१४. स्वप्न-गीत (कविता)—[लेखक, श्रीश्रीनिधि द्विवेदी ४९६

१५. देश की वर्तमान अवस्था और क्षत्रिय—[लेखक, ओयलाधिपति माननीय राजा युवराजदत्तसिंह, मेंबर कौंसिल ऑफ़ स्टेट ५०३

१६. डॉक्टर की फ़ीस (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत एम्० पी० केदार आई० डी० डी० ५१५

१७. गगन-गान (कविता)—[लेखक, श्रीयुत तेजनारायण 'काक' एम्० ए० ... ५२०

१८. सुधा-चित्रावली ५२१

१९. चयन—[लेखकगण, श्रीयुत गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए०, श्रीयुत महंत

विशुद्ध आयुर्वेदिक औषधें

आपको

सुख-संचारक कंपनी लि०, मथुरा ही में मिल सकेंगी। संयुक्त प्रांत-भर में सबसे बड़ी बिजली की मशीन से चलनेवाला यही एकमात्र कारखाना है।

बड़ा सूचीपत्र मँगाकर देखिए

पता—सुख-संचारक कंपनी लिमिटेड

मथुरा, यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

धनराजपुरी और श्रीयुत रामेश्वरनाथ मिश्र एम्० ए०, बी० एस्-सी० ... ५२३

२०. परिचय—[लेखकगण, श्रीयुत गुलाबराय एम्० ए०, श्रीयुत श्रीधरसिंह एम्०ए०, श्रीमती सावित्री दुलारेलाल एम्० ए० और श्रीयुत अजितप्रसाद जैन एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... ५२६

२१. कुसुम ५३४

२२. धारा ५३५

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्यजनक ईजाद ! याने—

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात

'गोनोकिलर' रजिस्टर्ड

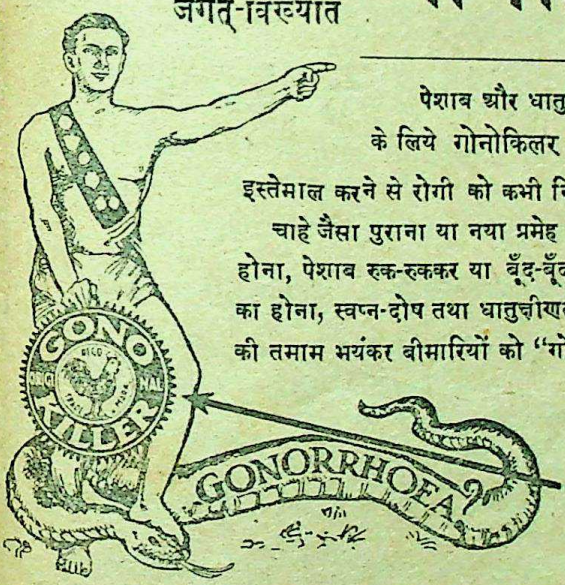

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने व निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर एक ऐसी ही आश्चर्यजनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश होना ही नहीं पड़ता।

चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन का होना, स्वप्न-दोष तथा धातुक्षीणता और औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को "गोनोकिलर" जड़ से नष्ट कर देता है।

नक़ली से सावधान !
ख़रीदने से पहले
दवा का नाम गोनोकिलर
और मुर्ग़ा-छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए

मूल्य ५० गोलियों की शीशी का ३) रु०, वी० पी० डाक-व्यय आठ आना अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी S. L. गिरगाँव, बैंक रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ-स्टाकिस्ट—किंग मेडिकल हॉल अमीनाबाद पार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) तिरंगा

१. चंद्र-पूजा—[चित्रकार, श्रीउत्तमसिंह तोमर बी० ए० ... ...

(ख) सादे

२. श्रीसूर्यनारायण व्यास

३. श्रीपं० रमाशंकर शुक्ल 'हृदय'

४. पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' ... ४४४

५. पु० श्रीप्रतापनारायण 'कविरत्न' ... ४६०

६. श्रीपृथ्वीपालसिंह एम्० ए०, जे० डी०, एल्-एल्० बी० ... ... [illegible]

७. श्रीलक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' एम्० ए० [illegible]

८-१७. मेरी नैनीताल - यात्रा - संबंधी १० चित्र ४८६-४८९, ४९१ और [illegible]

१८. अखिल भारतवर्षीय हिंदू-महासभा की कार्यकारिणी समिति ... ... [illegible]

१९-२०. चाय-संबंधी २ चित्र ... ... [illegible]

२१. श्रीबिंदुसरोवर (सिद्धपुर) ... ... [illegible]

२२. बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर' ... ... [illegible]

हिंदी की सुंदर, सचित्र मासिक पत्रिका

वीणा

संपादक

श्रीकालिकाप्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर'

प्रकाशक

श्रीमध्य-भारत-हिंदी-साहित्य-समिति

डॉक्टर बाबूराम सक्सेना, एम्० ए०, डी० लिट्०, प्रधान मंत्री हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग—'वीणा' हिंदी की उच्च कोटि की पत्रिका है, और मातृभाषा और साहित्य की प्रचुर सेवा कर रही है।

दीवाली के अवसर पर बृहद् विशेषांक

वार्षिक मूल्य ४) **ग्राम-सुधार-अंक** एक प्रति ।=)

नमूने का अंक फ्री नहीं भेजा जाता।

व्यवस्थापक—'वीणा', इंदौर

कुकड़ूँ कूँ

मुस्कराने ! खिलखिलाने !! हिनहिनाने !!!

और

हँसते-हँसते सचमुच लोटन कबूतर बन जाने की इच्छा है, तो 'कुकड़ूँ कूँ' पुस्तक की एक प्रति चुपचाप किसी बुकसेलर से उड़ा लीजिए, नहीं तो सीधे १=) की वी० पी० हमसे मँगाइए। मूल्य १), डाक-खर्च ।=)

पुस्तकालयों को डाक-खर्च माफ़

मैनेजर—मुस्कान-मंदिर ७। १, बाबूलाल लेन (S) कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंगीन जिल्द ।।।=)

सती सावित्री

राज-संस्करण १=)

लेखक, अध्यापक हरिप्रसाद द्विवेदी "श्रीहरि"। इस विषय की और भी पुस्तकें निकल चुकी हैं। पर उनमें सावित्री को देवी-रूप मानकर उनकी जीवनी लिखी गई है, जिसे पढ़कर यह भावना उठती है कि यदि वे देवी हैं, उन्होंने ऐसा अलौकिक काम किया है, तो उसमें उनकी क्या तारीफ़ है। देवी तथा देवताओं को तो कोई काम कठिन ही नहीं। पर यह पुस्तक एक मामूली कन्या किंवा बालक की दृष्टि से लिखी गई है। जिसके पढ़ने से कोमल हृदय पर विशेष रूप से प्रभाव पड़ता है। यह पुस्तक कुमारी कन्याओं और विवाहिता स्त्रियों तथा बड़े-बूढ़ों के पढ़ने के लिये अपूर्व शिक्षाप्रद और सर्वोत्तम है। इसमें सती सावित्री के, जिनके नाम पर घर-घर स्त्रियाँ वट-सावित्री का व्रत करती हैं, पतिव्रत-धर्म का वर्णन है, जिसके आगे स्वयं यमराज को भी हार माननी पड़ी थी। सावित्री ने अपने पति को मौत के पंजे से छुड़ा लिया था। ऐसा कौन भारतीय परिवार होगा, जो अपनी बहू-बेटियों और बनिताओं को सावित्री के पतिव्रत की कथा न पढ़ाना चाहता हो। पुस्तक का तिरंगा कवर आँखों के आगे से हटाने को जी नहीं चाहता। मूल्य ।।=), रंगीन जिल्द ।।।=), राज संस्करण सजिल्द १=)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंद्र-पूजा

[चित्रकार—श्रीउत्तमसिंह तोमर बी० ए०]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Ganga Fine Art Press, Lucknow

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Approved by the Directors of Public Instruction in U. P., C. P., C. I., Bombay, Bihar, Punjab & Sind.

वार्षिक मूल्य प्रतिसंख्या

राजसंस्करण	१२)	१)
साधारण संस्करण	६)	॥)

प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

वर्ष १४ खंड १ | कार्त्तिक, ३१८ तुलसी-संवत् (१९९७ वि०)— नवंबर, १९४० | संख्या ४ पूर्ण संख्या १७२

गीत

[श्रीपं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला']

धूलि में तुम मुझे भर दो।
धूलि-धूसर हुए जो पर,
उन्हीं के वर वरण कर दो।

दूर हो अभिमान, संशय,
वर्ण - आश्रम - गत महाभय,
जाति - जीवन हो निरामय
वह सदाशयता प्रखर दो।

फूल जो तुमने खिलाया,
सदल क्षिति में ला मिलाया,
मरण से जीवन दिलाया
सुकर जो वह मुझे वर दो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हृदय' की बात

[श्रीयुत 'उग्र']

(हृदयजी सचमुच सहृदय सुकवि हैं, परंतु प्रसिद्धि से दूर भागते हैं। वह मालवा-प्रदेश के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं, संकोचशील होने के कारण ही हिंदी-संसार उनसे अभी तक तादृश परिचित नहीं। जब कभी हम उज्जैन गए, उनके मुस्कराते हुए मुखड़े और रस से प्लावित हृदय के बराबर दर्शन हुए। हाँ, पिछली बार हम जब अपने चचेरे भाई चिरंजीव श्रीरामकुमार (अध्यक्ष नवलकिशोर-प्रेस) के शुभ विवाह में उज्जैन गए थे, तब इस सौभाग्य से वंचित रहे। वह बीमार होकर कहीं गए हुए थे। यह जानकर हमें बहुत दुःख हुआ कि वह अब भी बीमार हैं। सुधा-परिवार की ओर से परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उन्हें शीघ्र ही स्वस्थ करें।—सुधा-संपादक)

आज हिंदी के मुख्य-मुख्य सुकवियों में पंडित रमाशंकरजी शुक्ल 'हृदय' की गणना नहीं, यह बात शर्म के साथ मैं महसूस करता हूँ। शर्म इसलिये कि आज तक इस सुकवि की कोई रचना मेरी आँखों के सामने भी न पड़ी, जिससे कम-से-कम कुछ मैं ही लिखे होता। शर्म यों कि अक्सर मैं ऐरे-ग़ैरे, नत्थू-ख़ैरे के बारे में भी राग-विराग से लिखा करता हूँ, मगर 'हृदय' पर मेरी नज़र न पड़ी।

सन् १९३८ के दिसंबर में, बंबई में, गठरियों रुपए रेस में हार जाने—मैं अक्सर जुआ खेलता और हारता ही हूँ—के बाद मैं मालवा में आवारगी करने को निकला था। तभी ज्योतिषाचार्य पंडित सूर्यनारायणजी व्यास के भारती-भवन में—पहले-पहल—'हृदय'जी मुझे नज़र आए। मगर उस मिलन में मैं उनकी सिधाई के अंदर झाँककर कोई कविता न पा सका। दो-तीन दिनों तक मैं ही अपनी रागिनियाँ अलापता रहा। सुना था, वह भी कवि हैं, मगर अपने से बड़ा कवि जब मानता, तब तो अधिक आग्रह से उन्हें सुनता। एकाध

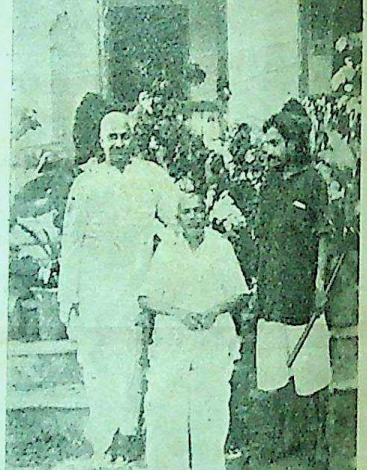

बाईं ओर से—१. श्रीसूर्यनारायण व्यास, २. श्रीपं० रमाशंकर शुक्ल 'हृदय' और ३. पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'

बार गाल से—गले से नहीं—कहा कि कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनाइए; मगर 'हृदय'जी भला "गाल गूल गपत"* पर क्यों लपकते ! और, मैंने सोचा, इनमें दम-ख़म है ही नहीं, बेचारे चीं-चूँ क्या करेंगे।

और, दो-तीन माह मालवा भ्रमण करने के बाद मैं पुनः बंबई आया ; फिर से गठरियाँ कमाईं ; फिर उन्हें रेस में हारा (क्योंकि दूसरा कोई काम ही मुझे नहीं), और एक बार पुनः मालवा ज़रा शांति के लिये मैं आया। मालवा पहली ही यात्रा में मुझे भा गया। यहाँ की रातें—अहाहा ! 'शबे-मालवा'—मशहूर हैं। 'माल' माने अगर 'धन' हो, और 'वा' माने खुला, तो फ़ारसी शब्दार्थ से मालवा का अर्थ होना चाहिए—खुला ख़ज़ाना। बहुत-से लोग इस प्रांत को खुला ख़ज़ाना ही समझते हैं। मगर मुझ-जैसे प्रमत्तों का मालवा यह मालवा नहीं, बल्कि बंबई और कलकत्ता है। हाँ, मालवे—ख़ासकर उज्जैन और इंदौर—में मुझे बनारसी हवा बहती मालूम पड़ती है। अतः बनारस का वासी मैं मालवे में बहुत ताज़गी पाता हूँ। भारत के इस 'पेट' प्रांत को अगर बदहज़मी न हो, तो मैं मालवे में काफ़ी दिन रहना चाहता हूँ। सो.....

हारा-थका मैं पुनः मालवा आया ; पुनः व्यासजी से भेंट हुई, और पुनः 'हृदय' की बात सामने आई। सुना, 'हृदय'जी एक वर्ष से ऊपर से बीमार हैं ; सुना, माधव-कॉलेज, उज्जैन की प्रोफ़ेसरी से उन्होंने छुट्टी ले रक्खी है ; सुना, बीमारी में उन्हें बड़ी तकलीफ़ हुई; सुना, जब वह कुछ चंगे होकर आए, तब तक कई नौजवान गृद्ध्र-प्रोफ़ेसरों की नज़र उनकी कुर्सी पर जम गई थी, फिर उनका स्वास्थ्य थोड़ा बिगड़ गया। और सुना, 'हृदय'जी पत्थर के प्राणी हैं, पहाड़ टूटने पर भी 'उफ़' न करनेवाले। आत्मप्रशंसा या विज्ञापन में बिल कुल कोरे। अरे, जहाँ मालवा और मध्य-प्रांत के कोरे 'छोरे' तक साहित्य-सर्जक बने हुए हैं, और विज्ञापित भी, वहाँ 'हृदय'जी गुलाब की तरह मौन। जैसे गुलाब के दर्शन कर पपीहा पिहिकने लगता है, मैना चहकने, भौंरे गुनगुनाने और कोयल गाने—मगर गुलाब चुप ही रहता है, वैसे ही 'हृदय'जी को देखकर कितने रसीलों के मुखिया बन गए, मगर 'हृदय' स्वयं छिपे ही रहे। और, मुख को सभी देखते हैं ; 'हृदय' को भी कोई देखता है ! जी हाँ, अधिक नहीं, तो लाखों में कम-से-कम एकाध सज्जन ऐसे आज भी हैं, जिनकी नज़र मुख पर पीछे और हृदय पर पहले जाती है। ऐसे लोगों का जब नितांत अभाव हो जायगा, तब यह दुनिया रहेगी नहीं। ऐसे ही लोगों में पंडित सूर्यनारायणजी व्यास भी हैं। कम-से-कम 'हृदय'जी के बारे में उनकी श्रद्धा अपार है। हर किसी से वह हृदय की सहृदयता की चर्चा करते हैं। दो पुस्तकें—महज़ छोटी-छोटी—भी व्यास ही जी के उद्योग से 'हृदय'जी की प्रकाशित हुई हैं, जिनका उद्देश्य 'बाज़ार' बिलकुल नहीं, और साहित्य का समादर ही मात्र है। उनमें 'करुणा-कण' नाम की पुस्तिका, जिसे कवि ने ग्वालियर-नरेश की भगिनी स्वर्गीया सुश्री कमला राजा सिंदे के असमय निधन पर रचा है, बिलकुल पुष्ट और सरस रचनाओं से युक्त है। 'करुणा-कण'* के कई गीत ऐसे हैं, जिन्हें हिंदी के किसी भी कवि की रचना से कम कहना अन्याय होगा। यह पुस्तक विज्ञापन न होने पर भी हिंदी के नव्य कविता-साहित्य में बेजोड़ है।

मगर ये सब फिर भी मामूली बातें हैं; असल कविताएँ अपनी 'हृदय'जी केवल लिखते हैं, और 'फ़ेयर' कर ट्रंक में रख देते हैं। सहस्राग्रहों पर भी किसी को सुनाने को तैयार नहीं होते। अच्छी कविताएँ तो सब उन्हीं के पास हैं, जिन्हें चाहिए किसी ईमानदार प्रकाशक को कि प्रार्थना-पूजा कर

* तुलसीदास, 'विनय-पत्रिका' में।

* 'भारती-भवन', उज्जैन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनसे प्राप्त करे, और प्रकाशित करे। 'हृदय'जी खरे आत्माभिमानी हैं, अपनी ओर से शायद ही अपनी कृति वह किसी प्रकाशक के पास प्रेषित करें। ऐसा करते होते, तो आज इधर के सबसे बड़े कवि वही प्रख्यात होते। मगर 'हृदय'जी को बीसवीं सदी के विज्ञापन का महत्त्व नहीं मालूम। अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि यह नुक़्स ज़बरदस्त है उनके कवित्व में।

मगर 'हृदय'जी के सहृदय मित्र पंडित सूर्यनारायणजी व्यास ज्योतिषाचार्य हैं कि नहीं—दुःख-दोष-दलन-समर्थ। वह 'हृदय'जी की कमज़ोरियाँ जानते हैं, और सच्चे मित्र की तरह उन्हें सुप्रकाशित करने-कराने को सर्वदा तैयार रहते हैं। मुझे ही सारी बातें व्यासजी से मालूम हुईं। 'हृदय'जी के दर्शन भी व्यासजी ही की कृपा से मिले। व्यासजी ही ने अपनी नोटबुक से 'हृदय'जी की अनेक सुरचनाएँ मुझे सुनाईं, और उनकी पुस्तकें पढ़ने को दीं। 'हृदय'जी को दुखी या मुरझाया देख व्यासजी के दिल पर जो आघात लगता है, वह लिखने की नहीं, उनके मुँह से सुनने की—सुनने की भी कहाँ, चेहरे पर देखने की चीज़ है।

अब कविवर 'हृदय'जी की चंद रचनाएँ—व्यासजी की कृपा से प्राप्त कर—मैं बुध जनों के सामने उपस्थित करता हूँ। ये रचनाएँ 'हृदय'जी की सर्वश्रेष्ठ नहीं हैं, उन्हें तो वे किसी को सुनाते भी नहीं। इन रचनाओं को भी श्रेष्ठ पहचानकर व्यासजी ने 'हृदय'जी की कापी से कापी कर लिया था, और व्यासजी की पहचान कहाँ तक पक्की है, इसका पता अब पाठक स्वयं लगावें—

'टूटी क़ब्र पर' नाम्नी एक कविता के कुछ छंद—

इन टूटे टुकड़ों से पूछो—
इन्हें 'प्यार' क्यों भार हुआ?
क्यों ये कण-कण बन बिखरे हैं,
'वह' जब एकाकार हुआ?
धूल-भरा शृंगार धूल भी
आख़िर नहीं सँभाल सकी;
फूट पड़ी क्या 'आह'?
पत्थरों ने या हाहाकार किया?

❀ ❀ ❀

इन्हें धरोहर सौंपी थी किसने,
कब किसको याद रहे?
ये न बताएँगे—पत्थर हैं;
इन्हें न इसकी साध रहे!
ये न कहेंगे, क्या खोकर,
क्या देकर यहाँ पड़ा है क्या?
सब कुछ हो बरबाद, एक
इनकी दुनिया आबाद रहे।

❀ ❀ ❀

प्रेम कह रहा है—"जाने यह
किसका बिछड़ा प्यार पड़ा।"
दर्द रो रहा है—"किसकी
तड़पन का यह आधार पड़ा।"
हूक छिपी है कहीं कह रही—
"कौन जान देकर आया?"
और द्रोह हँसता है—"किसका
यहाँ अरे, अविचार पड़ा।"

❀ ❀ ❀

कौन जानता है, इसके सँग
थे कितने अरमान चले;
जीवन और जगत के शापों
से कितने वरदान चले।
चले देखनेवाले थे—कहते
"देखें यह भी चलना।"
और मिलन को 'उस दिन' थे
सब 'उस दिन के सामान' चले।

❀ ❀ ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहीं चली आई थी उस दिन
सारी दुनिया की ममता;
मिट्टी में मिलने आई थी
यों सम्राटों की क्षमता।
इन प्रस्तर-खंडों में रज-कण
के समूह में फिर-फिरकर
थकित हो गई, अरे! थकित
हो गई विश्व की चंचलता।

❀ ❀ ❀

कुछ तो कहो कि तुममें क्या है,
छिपा यहाँ क्या है रहता?
यह सूना है देश, यहाँ
किससे कोई है क्या कहता?
कौन पूछता होगा आकर
यहाँ कहाँ की बात अरे?
कौन यहाँ पर सुनता होगा
किसकी कितनी मर्म-व्यथा?

इस कविता के अंतिम पद में दर्द-भरे, मीठे स्वर में 'हृदय'जी कहते हैं—

मैं भी चाहूँगा, कोई आ
यहाँ बैठ जाए क्षण-भर;
देखूँ तो, वह यहाँ लगेगा
कितना प्यारा, सुंदरतर?
फिर वह कह दे—"अरे, यहाँ तो
दुखिया 'हृदय' सो रहा है;"
तत्क्षण न्यौछावर हो जाऊँगा
मैं रज के कण-कण पर!

'हृदय'जी की 'तुम मेरे, मैं बनूँ तुम्हारा।' कविता में बाबू मैथिलीशरण का रंग होते हुए भी ढंग कवि का अपना है—

(१)

तुम मेरे, मैं बनूँ तुम्हारा।
द्वंद्वों की दुनिया में होगा
सखे! अंत में एक सहारा।
हुआ अरुण का अस्त समय है,
मंदस्मित - सा चंद्रोदय है;
शोभा भी अति शोभामय है,
कहीं न अब भय है; विस्मय है।
संध्या के शीतल अंचल में
लिया चराचर ने आश्रय है;
यह चंचल क्षण होता लय है,
आओ, इस वेला में जीवन!
हो जाए अभिसार हमारा!
तुम मेरे, मैं बनूँ तुम्हारा!

(२)

विलसित रूप-राशि रस-सागर,
मन उन्मद होता है जिस पर;
मुझे देखने तो दो क्षण-भर
वह छवि, ओ छाया नट-नागर!
क्या डर है? इस रूप-दीप पर
हो जाऊँगा मैं न्यौछावर!
मैं तो लघु सिकता-कण-सा चुप-
चुप ताकूँ हूँ एक किनारा!
तुम मेरे, मैं बनूँ तुम्हारा।

(३)

क्या देखूँ! यह जादू भारी!
एक झलक में हुआ भिखारी;
लघु लालसा आह बेचारी
किधर लुट गई, कहाँ सिधारी?
अब पागल हो मैं फिरता हूँ
नाम सुमिरता याद तुम्हारी!
झोली में हैं आँसू खारी।
देख न सका देखकर प्रिय! अब
तुम्हें सोचने से भी हारा;
तुम मेरे, मैं बनूँ तुम्हारा।

'विवशता'-शीर्षक कविता भाव, भाषा और प्रभाव, प्रत्येक दृष्टि से अनूठी है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ है, वह मुझे बर्दाश्त नहीं। ख़ासकर ऐसे मौक़े पर, जब कि वह बरसों से बुरी तरह बीमार हैं, तरह-तरह से लाचार हैं, और फिर भी मौन मर जाने को तैयार हैं! केवल 'करुणा-कण' लिखने के कारण, मेरी राय में, ग्वालियर-राज्य को 'हृदय'जी को अपना राजकवि बनाना चाहिए था। सो सब तो दूर, अब इस दुरवस्था में उनकी प्रोफ़ेसरी पर भी नौजवान गृद्धों की नज़र देख संसार की स्वार्थ-बुद्धि पर घृणा होती है मन में। 'हृदय'जी प्रायः अच्छे होकर उज्जैन यू० पी० से आए थे, मगर दुष्टों ने उन्हें पुनः बीमार कर दिया। ऐसे ही मौक़े पर मैं उनसे पंडित सूर्यनारायणजी व्यास के साथ जाकर मिला। देखा, कवि अस्थि-चर्मावशिष्ट रह गया है; देखा, उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में करुणा और जीवन छल-छल है; देखा, उसे न तो T. B. है, और न C. B.—उसे गंभीर कोई भी रोग नहीं, वह बेचारा स'हृदय' संसार की नीरसता से शुष्कप्राय हो रहा है! उसे प्रेम, आशीर्वाद और समवेदना का सुरस चाहिए। वह ललककर अपनी रचनाएँ छपवाता भी तो नहीं; वह ललककर किसी से कुछ चाहता भी तो नहीं—और फिर भी उसे कोई जीने देना नहीं चाहता—उस बेचारे कोमल-विमल हंस को! बाप रे बाप!

और, इस बारे में अभी कभी मैं और लिखूँगा 'हृदय'जी की नव्यतम कविताएँ प्राप्त कर लेने पर। फ़िलहाल भगवान् महाकालेश्वर से कविवर 'हृदय'जी को चिरायु देने की प्रार्थना कर मैं 'एवमस्तु' कहता हूँ।

दुलारे-दोहावली पर

आचार्य रामचंद्रजी शुक्ल की नई सम्मति

हिंदी-साहित्य के सर्वश्रेष्ठ समालोचक और इतिहासकार पं० रामचंद्रजी शुक्ल अपने 'हिंदी-साहित्य का इतिहास'-नामक ग्रंथ के नए संस्करण में लिखते हैं—

"कविवर बिहारीलाल की परंपरा के वर्तमान प्रतिनिधि श्रीदुलारेलालजी भार्गव के दोहों की बारीकी साहित्य-क्षेत्र में अपना कमाल खड़ी बोली के इस ज़माने में भी दिखाती रहती है। बिहारी की प्रतिभा जिस ढाँचे की थी, उसी ढाँचे की श्रीदुलारेलालजी की भी है, इसमें संदेह नहीं। एक-एक दोहे में सफ़ाई के साथ रस से स्निग्ध या वैचित्र्य से चमत्कृत कर देनेवाली प्रचुर सामग्री भरने का गुण इनमें भी है। कुछ दोहों में देश-भक्ति, अछूतोद्धार, राष्ट्रीय आंदोलन इत्यादि की भावना का अनूठेपन के साथ समावेश करके इन्होंने पुराने ढाँचे में नया मसाला ढालने की अच्छी कला दिखाई है। आधुनिक काव्य-क्षेत्र में श्रीदुलारेलालजी ने व्रजभाषा-काव्य-चमत्कार-पद्धति का एक प्रकार से पुनरुद्धार किया है। इनकी दुलारे-दोहावली पर टीकमगढ़-राज्य की ओर से २,०००) का देव-पुरस्कार मिल चुका है।"

दुलारे-दोहावली का सातवाँ, सुंदर, सस्ता संस्करण तैयार है। अपनी प्रति मँगा लीजिए। मूल्य ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—**गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्याभिषेक के समय पृथ्वीराज चौहान की अवस्था

[महामहोपाध्याय, रायबहादुर, साहित्यवाचस्पति डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा डी० लिट्०
(ऑनरेरी)]

'राजस्थानी' भाग ३, अंक २ (पृष्ठ १९-२०) में श्रीयुत अगरचंदजी नाहटा ने अपने 'पृथ्वीराज-रासो और उसकी हस्त-लिखित प्रतियाँ'-शीर्षक लेख में लिखा है—

"रासो की सबसे अधिक ऐतिहासिक आलोचना एवं परीक्षा श्रद्धेय ओझाजी महोदय ने की है। वह बहुत ही विद्वत्ता-पूर्ण है। पर हमारे ख़याल से उनका यह लिखना कि 'सोमेश्वर के देहांत के समय (वि० सं० १२३६ में) पृथ्वीराज बालक था', ठीक नहीं है, क्योंकि जिनपतिसूरिजी के शिष्य जिनपालोपाध्याय - रचित 'खरतरगच्छ-गुर्वावली' में पृथ्वीराज की सभा में सं० १२३९ में श्रीजिनपतिसूरिजी एवं पद्मप्रभ का बड़ा शास्त्रार्थ हुआ, उसका विस्तार से वर्णन है। उससे प्रगट है कि उस समय के पूर्व तो महाराजा पृथ्वीराज ने बड़ी भारी सेना के साथ भद्दाणक - देश को विजय किया था, और शास्त्रार्थ के समय में भी उन्होंने जो कुछ संभाषण किया, वह युवावस्था का ही सूचक है, अतः सं० १२३६ में उनको बालक कहना युक्ति-संगत प्रतीत नहीं होता। अतएव हमारी सम्मति में पृथ्वीराज का जन्म-संवत् १२२० माना जाता है, वह ठीक नहीं है। जन्म-सं० १२१५ के लगभग होना चाहिए।"

राज्य-प्राप्ति के समय सम्राट् पृथ्वीराज की आयु क्या थी, इसका निश्चय करना आवश्यक प्रतीत होता है।

पृथ्वीराज के पिता सोमेश्वर के समय के शिला-लेख वि० सं० १२२६ फाल्गुन वदि ३ ❀, वि० सं० १२२८ ज्येष्ठ सुदि १० †, वि० सं० १२२९ श्रावण सुदि १३ ‡ और वि० सं० १२३४ भाद्रपद सुदि ४ § के मिले हैं। पृथ्वीराज के राजत्व-काल के शिला-लेख वि० सं० १२३६ आषाढ़ वदि १२ §, वि० सं० १२३६ (चैत्रादि १२३७) प्रथम आषाढ़ सुदि १० बुधवार +, वि० सं०

❀ बीजोल्यां (मेवाड़) का। जर्नल ऑफ़् दि एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़् बंगाल ; जि० ५५, भाग १, पृष्ठ ४० और आगे।

† धौड़-गाँव (मेवाड़) का। एन्युअल् रिपोर्ट ऑफ़् दि राजपूताना म्यूज़ियम, अजमेर; ई० स० १९२२-२३ ; पृष्ठ २, लेख-संख्या ३।

‡ धौड़-गाँव (मेवाड़) का। एन्युअल् रिपोर्ट ऑफ़् दि राजपूताना म्यूज़ियम, अजमेर ; ई० स० १९२२-२३, पृष्ठ २, लेख-संख्या ४।

§ आमलदा-गाँव (मेवाड़) का। वही ; ई० स० १९२२-२३, पृष्ठ २, लेख-संख्या ५।

§ लोहारी-गाँव (मेवाड़) का। वही ; ई० स० १९२२-२३, पृष्ठ २-३, लेख-संख्या ६।

+ पोकरण फलोदी का। मेरा जोधपुर-राज्य का इतिहास ; प्रथम खंड, पृष्ठ ४३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ है, वह मुझे बर्दाश्त नहीं। ख़ासकर ऐसे मौक़े पर, जब कि वह बरसों से बुरी तरह बीमार हैं, तरह-तरह से लाचार हैं, और फिर भी मौन मर जाने को तैयार हैं! केवल 'करुणा-कण' लिखने के कारण, मेरी राय में, ग्वालियर-राज्य को 'हृदय'जी को अपना राजकवि बनाना चाहिए था। सो सब तो दूर, अब इस दुरवस्था में उनकी प्रोफ़ेसरी पर भी नौजवान गृद्धों की नज़र देख संसार की स्वार्थ-बुद्धि पर घृणा होती है मन में। 'हृदय'जी प्रायः अच्छे होकर उज्जैन यू० पी० से आए थे, मगर दुष्टों ने उन्हें पुनः बीमार कर दिया। ऐसे ही मौक़े पर मैं उनसे पंडित सूर्यनारायणजी व्यास के साथ जाकर मिला। देखा, कवि अस्थि-चर्मावशिष्ट रह गया है; देखा, उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में करुणा और जीवन छल-छल है; देखा, उसे न तो T. B. है, और न C. B.—उसे गंभीर कोई भी रोग नहीं, वह बेचारा स'हृदय' संसार की नीरसता से शुष्कप्राय हो रहा है! उसे प्रेम, आशीर्वाद और समवेदना का सुरस चाहिए। वह ललककर अपनी रचनाएँ छपवाता भी तो नहीं; वह ललककर किसी से कुछ चाहता भी तो नहीं—और फिर भी उसे कोई जीने देना नहीं चाहता—उस बेचारे कोमल-विमल हंस को! बाप रे बाप!

और, इस बारे में अभी कभी मैं और लिखूँगा 'हृदय'जी की नव्यतम कविताएँ प्राप्त कर लेने पर। फ़िलहाल भगवान् महाकालेश्वर से कविवर 'हृदय'जी को चिरायु देने की प्रार्थना कर मैं 'एवमस्तु' कहता हूँ।

दुलारे-दोहावली पर

आचार्य रामचंद्रजी शुक्ल की नई सम्मति

हिंदी-साहित्य के सर्वश्रेष्ठ समालोचक और इतिहासकार पं० रामचंद्रजी शुक्ल अपने 'हिंदी-साहित्य का इतिहास'-नामक ग्रंथ के नए संस्करण में लिखते हैं—

"कविवर बिहारीलाल की परंपरा के वर्तमान प्रतिनिधि श्रीदुलारेलालजी भार्गव के दोहों की बारीकी साहित्य-क्षेत्र में अपना कमाल खड़ी बोली के इस ज़माने में भी दिखाती रहती है। बिहारी की प्रतिभा जिस ढाँचे की थी, उसी ढाँचे की श्रीदुलारेलालजी की भी है, इसमें संदेह नहीं। एक-एक दोहे में सफ़ाई के साथ रस से स्निग्ध या वैचित्र्य से चमत्कृत कर देनेवाली प्रचुर सामग्री भरने का गुण इनमें भी है। कुछ दोहों में देश-भक्ति, अछूतोद्धार, राष्ट्रीय आंदोलन इत्यादि की भावना का अनूठेपन के साथ समावेश करके इन्होंने पुराने ढाँचे में नया मसाला ढालने की अच्छी कला दिखाई है। आधुनिक काव्य-क्षेत्र में श्रीदुलारेलालजी ने व्रजभाषा-काव्य-चमत्कार-पद्धति का एक प्रकार से पुनरुद्धार किया है। इनकी दुलारे-दोहावली पर टीकमगढ़-राज्य की ओर से २,०००) का देव-पुरस्कार मिल चुका है।"

दुलारे-दोहावली का सातवाँ, सुंदर, सस्ता संस्करण तैयार है। अपनी प्रति मँगा लीजिए। मूल्य ॥), सजिल्द १) मिलने का पता—**गंगा-ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्याभिषेक के समय पृथ्वीराज चौहान की अवस्था

[महामहोपाध्याय, रायबहादुर, साहित्यवाचस्पति डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा डी० लिट्०
(ऑनरेरी)]

'राजस्थानी' भाग ३, अंक २ (पृष्ठ १९-२०) में श्रीयुत अगरचंदजी नाहटा ने अपने 'पृथ्वीराज-रासो और उसकी हस्त-लिखित प्रतियाँ'-शीर्षक लेख में लिखा है—

"रासो की सबसे अधिक ऐतिहासिक आलोचना एवं परीक्षा श्रद्धेय ओझाजी महोदय ने की है। वह बहुत ही विद्वत्ता-पूर्ण है। पर हमारे ख़याल से उनका यह लिखना कि 'सोमेश्वर के देहांत के समय (वि० सं० १२३६ में) पृथ्वीराज बालक था', ठीक नहीं है, क्योंकि जिनपतिसूरिजी के शिष्य जिनपालोपाध्याय - रचित 'खरतरगच्छ-गुर्वावली' में पृथ्वीराज की सभा में सं० १२३९ में श्रीजिनपतिसूरिजी एवं पद्मप्रभ का बड़ा शास्त्रार्थ हुआ, उसका विस्तार से वर्णन है। उससे प्रगट है कि उस समय के पूर्व तो महाराजा पृथ्वीराज ने बड़ी भारी सेना के साथ भद्दाणक - देश को विजय किया था, और शास्त्रार्थ के समय में भी उन्होंने जो कुछ संभाषण किया, वह युवावस्था का ही सूचक है, अतः सं० १२३६ में उनको बालक कहना युक्ति-संगत प्रतीत नहीं होता। अतएव हमारी सम्मति में पृथ्वीराज का जन्म-संवत् १२२० माना जाता है, वह ठीक नहीं है। जन्म-सं० १२१५ के लगभग होना चाहिए।"

राज्य-प्राप्ति के समय सम्राट् पृथ्वीराज की आयु क्या थी, इसका निश्चय करना आवश्यक प्रतीत होता है।

पृथ्वीराज के पिता सोमेश्वर के समय के शिला-लेख वि० सं० १२२६ फाल्गुन बदि ३ ❀, वि० सं० १२२८ ज्येष्ठ सुदि १० †, वि० सं० १२२९ श्रावण सुदि १३ ‡ और वि० सं० १२३४ भाद्रपद सुदि ४ § के मिले हैं। पृथ्वीराज के राजत्व-काल के शिला-लेख वि० सं० १२३६ आषाढ़ बदि १२ §, वि० सं० १२३६ (चैत्रादि १२३७) प्रथम आषाढ़ सुदि १० बुधवार +, वि० सं०

❀ बीजोल्यां (मेवाड़) का। जर्नल ऑफ़ दि एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल; जि० ५५, भाग १, पृष्ठ ४० और आगे।

† धौड़-गाँव (मेवाड़) का। एन्युअल रिपोर्ट ऑफ़ दि राजपूताना म्यूज़ियम, अजमेर; ई० स० १९२२-२३; पृष्ठ २, लेख-संख्या ३।

‡ धौड़-गाँव (मेवाड़) का। एन्युअल रिपोर्ट ऑफ़ दि राजपूताना म्यूज़ियम, अजमेर; ई० स० १९२२-२३, पृष्ठ २, लेख-संख्या ४।

§ आमलदा-गाँव (मेवाड़) का। वही; ई० स० १९२२-२३, पृष्ठ २, लेख-संख्या ५।

§ लोहारी-गाँव (मेवाड़) का। वही; ई० स० १९२२-२३, पृष्ठ २-३, लेख-संख्या ६।

+ पोकरण फलोदी का। मेरा जोधपुर-राज्य का इतिहास; प्रथम खंड, पृष्ठ ४३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२३९❀, वि० सं० १२४४ श्रावण†, वि० सं० १२४५‡ और वि० सं० १२४५ फाल्गुन सुदि १२§ के मिले हैं, जिनसे निश्चित है कि वि० सं० १२३४ भाद्रपद सुदि ४ और वि० सं० १२३६ भाद्रपद बदि १२ के बीच किसी समय सोमेश्वर का स्वर्गवास और पृथ्वीराज का राज्याभिषेक हुआ होगा। शंकर पांडुरंग पंडित के 'प्रबंध-कोष' की एक प्राचीन प्रति के अंत की पुष्टिका में चौहानों की हम्मीर तक वंशावली दी है। उसमें पृथ्वीराज के राज्याभिषेक का संवत् १२३६§ दिया है, जो शिला-लेखों से भी मिल जाता है।

वि० सं० १२३६ में पृथ्वीराज की अवस्था क्या थी?

पृथ्वीराज के आग्रह से+ ही वि० सं० १२४८ के आस-पास काश्मीर के महाकवि जयानक ने 'पृथ्वीराज-विजय❀'-महाकाव्य की रचना की, जो चौहानों के इतिहास के लिये परमोपयोगी है। उसमें दी हुई चौहानों की वंशावली आदि शिला-

❀ मदनपुर (मध्य-प्रांत) का। कनिंगहाम; रिपोर्ट ऑफ़ दि आर्कियालॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया; जि० १०, पृष्ठ ९८, प्लेट ३२।

† वीसलपुर (जयपुर-राज्य) का। वही; जि० ६, पृष्ठ १५६, प्लेट २१।

‡ बाजटा (ठिकाना सावर, ज़िला अजमेर) का। एन्युअल् रिपोर्ट ऑफ़ दि राजपूताना म्यूज़ियम, अजमेर; ई० स० १९१२-१३; पृष्ठ २, लेख-संख्या १।

§ आमलदा-गाँव (मेवाड़) का। अप्रकाशित।

§ शंकर पांडुरंग पंडित-संपादित 'गउडवहो' की अँगरेज़ी-भूमिका; पृष्ठ १३६।

+ गतस्पृहोऽप्यादिकविः प्रबन्धं
बबन्ध रामस्य भविष्यतोऽपि;
सम्मान्यमानस्तु नरेश्वरेण
मादृक्कथं काव्यविधावुदास्ताम्।

(पृथ्वीराज - विजय - महाकाव्यम्, प्रथम सर्ग, पृष्ठ १३, श्लोक ३१ (हमारे यहाँ से प्रकाशित संस्करण)।

बाल्येऽपि लीलाजिततारकाणि
गीर्वाणवाहिन्युपकारकाणि;
जयन्ति सोमेश्वरनन्दनस्य
षण्णां गिरां शक्तिमतो यशांसि।

(वही; प्रथम सर्ग, पृष्ठ १४, श्लोक ३५)

❀ ई० स० १८७५-७६ (वि० सं० १९३२) में प्रसिद्ध पुरातत्त्व-वेत्ता डॉक्टर बूलर को काश्मीर में हस्त-लिखित संस्कृत-ग्रंथों की खोज करते समय जोनराज की टीका-सहित पृथ्वीराज-विजय-महाकाव्य की भोजपत्र पर शारदा-लिपि में लिखी हुई एक प्राचीन अपूर्ण प्रति मिली। उसके प्रारंभ के दो पत्रे (३ पृष्ठ) जाते रहे हैं, और बीच में कहीं-कहीं अधिक और कहीं-कहीं कम भोजपत्र के अंश नष्ट हो गए हैं। उसमें केवल १२ सर्ग तक का ही अंश किसी प्रकार बचने पाया है। उसमें कुल सर्ग कितने थे, यह दूसरी कोई प्रति उपलब्ध न होने से ज्ञात न हो सका। इस काव्य का जो कुछ अंश बचने पाया है, वह भी चौहानों के इतिहास की अपूर्व सामग्री है, और हमने जोनराज की टीका-सहित उसका संपादन किया है। मूल-पुस्तक इस समय पूना के भंडारकर ओरियंटल इंस्टिट्यूट में सुरक्षित है। इस अपूर्ण ग्रंथ को भी बहुत उपयोगी समझकर दीवान बहादुर हरविलास सारड़ा ने जर्नल ऑफ़ दी रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, लंदन (ई० स० १९१३, पृष्ठ २५९-२८१ तक) में इसका अँगरेज़ी-सारांश और पं० शिवदत्त शर्मा ने 'नागरी-प्रचारिणी पत्रिका' (नवीन संस्करण, भाग ५, संवत् १९८१, पृष्ठ १३३-१८३) में इसका हिंदी-सारांश प्रकाशित किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखों से भी मिल जाती है। उसके आठवें सर्ग में सोमेश्वर द्वारा बनवाए हुए मंदिरों आदि का उल्लेख करने के अनंतर उसकी मृत्यु के विषय में लिखा है कि (देवालय आदि बनाकर) ऋण (देव-ऋण) से मुक्त होकर परलोक को जीतने-वाला वह (सोमेश्वर) मेरा पिता अकेला स्वर्ग में कैसे रहे, इस विचार से शीघ्र ही पिता का दर्शन करने को गया (मर गया)। साथ में उसको यह भी विचार रहा कि बालक पृथ्वीराज की मैं उपेक्षा कैसे करूँ ? इस वास्ते उस (पृथ्वीराज)को राज्य देकर उसकी रक्षा के लिये अपनी पतिव्रता रानी को नियत कर पितृ भक्ति के कारण वह स्वर्ग को सिधारा❀।

सर्ग नौ के पहले श्लोक में लिखा है कि राजा (सोमेश्वर) की रानी ने अपने पुत्र की राज्यलक्ष्मी को धारण किया†। उसी सर्ग में आगे यह भी लिखा मिलता है कि उसका निपुण मंत्री कादंबवास (कैमास) था, जो राज्य-कार्य चलाता था❀। तदनंतर उस छोटे बालक के कमल-रूपी मुख का यौवन-श्री ने चुंबन किया, अर्थात् वह युवावस्था को प्राप्त हुआ†। इससे यह निश्चित है कि सोमेश्वर के देहांत के समय पृथ्वीराज बालक था, और गद्दी पर बैठने के बाद वह युवा हुआ।

श्रीयुत नाहटाजी लिखते हैं—'खरतरगच्छ-गुर्वावली' में, महाराजा पृथ्वीराज की सभा में, सं० १२३९ में, श्रीजिनपतिसूरि एवं पद्मप्रभ के बीच बड़ा शास्त्रार्थ होने का विस्तृत वर्णन है, जिससे प्रकट है कि उस समय के पूर्व महाराजा पृथ्वीराज ने बड़ी भारी सेना के साथ भद्राणक-देश विजय किया था। उनके अनुसार शास्त्रार्थ के समय पृथ्वीराज ने जो कुछ संभाषण किया, वह उसकी युवावस्था का ही सूचक है। गुर्वावली जैन आचार्यों के गुण-गान का ग्रंथ है, और उसमें दी हुई घटनाएँ धर्म-भावना-प्रधान होने से एवं वह ग्रंथ पृथ्वीराज के समकालीन लेखक का लिखा हुआ न होने से

❀ ऋणशुद्धिं विनिर्माय निर्माणैरीदृशैः पितुः ;
तत्वरे दर्शनं कर्त्तुं परलोकजयी नृपः ॥७१॥
ए[काकिना हि] मत्पित्रा स्थीयते त्रिदिवे कथम् ;
बालश्च पृथिवीराजो मया कथमुपेक्ष्यते ॥ ७२ ॥
[इतीवास्याभिषिक्तस्य रक्षार्थं व्रतचारिणीम् ;
स्थापयित्वा निजां देवीं पितृ(?)] भक्त्या दिवं ययौ॥७३
(सर्ग ८)

ऊपर ब्रैकेट में आए हुए अंश द्वितीय 'राज-तरंगिणी' के कर्ता जोनराज की 'पृथ्वीराज-विजय' की टीका के आधार पर लिखे गए हैं।

† इति हृद्गतेन द[यितेन रु]द्रता-
मुपजग्मुषा मुषितमोहदोहदा ;
अपवर्गपद्धतिमिवानुपप्लवां
तनयश्रियं नृपवधूरशिश्रियत् ॥ १ ॥
(सर्ग ९)

❀ स कदम्बवास इति वासवादिभिः
स्पृहणीयधीर्व्यसनमध्यपातिभिः ;
अवगाहते सहचरस्सुमन्त्रितां
परिरक्षितुं क्षितिधरस्य सद्गुणान् ॥३७॥
(सर्ग ९)

इसके आगे ४४वें श्लोक तक मंत्री कदंबवास का ही वर्णन है।

† सचिवेन तेन सकलासु युक्तिषु
प्रवणेन तत्किमपि कर्म निर्ममे ;
मखपुष्करं शिशुतमस्य यत् प्रभोः
परिचुम्ब्यते स्म नवयौवनश्रिया ॥४४॥
(सर्ग ९)

इसमें पृथ्वीराज के लिये "शिशुतमस्य" व्यवहार किया गया है, जिससे स्पष्ट है कि उसकी अवस्था बहुत छोटी रही होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास के लिये सर्वतोभाव से ठीक ही है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। राजा चाहे बालक हो, तो भी उसके मंत्री आदि कर्मचारी उसी के नाम से राज्य-कार्य चलाते, युद्ध करते और देश विजय करते रहे हैं, जो उसी राजा के नाम से ही अंकित किए जाते हैं। ऐसे कई उदाहरण प्राचीन इतिहास से मिल जाते हैं। गुजरात के सोलंकी राजा कुमारपाल का देहांत वि० सं० १२३० में हुआ। उसके पीछे उसका भतीजा अजयपाल गद्दी पर बैठा, जिसका देहांत वि० सं० १२३३ में हुआ। उसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र मूलराज (दूसरा) हुआ, जो बाल्यावस्था❀ में ही गद्दी पर बैठने के कारण 'बाल-मूलराज' कहलाता है। उसका स्वर्गवास वि० सं० १२३५ में होने पर उसका छोटा भाई भीमदेव गुजरात का राजा हुआ, जिसने सं० १२९८ तक राज्य किया। भीमदेव बालक† ही गद्दी पर बैठा था‡। उपर्युक्त अजयपाल मेवाड़ के गुहिलवंशी राजा सामंतसिंह के साथ की लड़ाई में बुरी तरह घायल हुआ था। उसका बदला लेने के लिये गुजरातवालों ने मेवाड़ पर चढ़ाई कर सामंतसिंह से मेवाड़ छीन लिया, जिससे उसने बागड़ में जाकर नवीन राज्य की स्थापना की, जो इस समय डूँगरपुर-राज्य कहलाता है। वहाँ भी गुजरातवालों ने उसे टिकने न दिया❀, और उसके कुटुंबी विजयपाल के पुत्र अमृतपाल को बागड़ का राजा बनाया, ऐसा उक्त भीमदेव के वि० सं० १२४२ कार्त्तिक सुदि १५ रविवार के अप्रकाशित दान-पत्र से (जो हमें मिला) निश्चित है†। सामंतसिंह को बागड़ से निकाला, उस वक्त भीमदेव बालक था, पर इसका श्रेय उसे ही दिया गया है। ऐसे उदाहरण, जैसा हम ऊपर लिख आए हैं, इतिहास में अनेक मिलते हैं, पर विस्तार-भय से यहाँ केवल एक ही दिया गया है। यही पृथ्वीराज की भद्दाणक की चढ़ाई के बारे में भी कहा जा सकता है, क्योंकि उसका अब तक कोई संवत् उपलब्ध नहीं हुआ। जिनपतिसूरि और पद्मप्रभ के बीच जो शास्त्रार्थ हुआ, उसमें पृथ्वीराज का संभाषण किसी अवस्था-विशेष का सूचक नहीं माना जा सकता।

ऐसी दशा में हम पृथ्वीराज-विजय-महाकाव्य का कथन ही ठीक मानते हैं, क्योंकि वह समकालीन लेखक की रचना है। अतएव यह निश्चय-पूर्वक कहा जा सकता है कि गद्दीनशीनी के समय पृथ्वीराज की बाल्यावस्था ही थी।

❀ धृतपार्थिवनेपथ्ये निष्क्रान्तेऽत्र शतक्रतौ ;
जयन्ताभिनयं चक्रे मूलराजस्तदंगजः।
चापलादिव बालेन रिंखता समरांगणे ;
तुरुष्काधिपतेर्येन विप्रकीर्णा वरूथिनी।
(सोमेश्वर ; कीर्ति-कौमुदी ; सर्ग २, श्लोक ५६-७)

† मन्त्रिभिर्मंडलीकैश्च बलवद्भिः शनैः शनैः ;
बालस्य भूमिपालस्य तस्य राज्यं व्यभज्यत।
(वही ; सर्ग २, श्लोक ६१)

‡ मेरा राजपूताने का इतिहास ; जिल्द १ (द्वितीय संस्करण), पृष्ठ २४६ और २५६ में दिया हुआ गुजरात के सोलंकियों का वंश-वृक्ष।

❀ वही ; जिल्द ३, भाग १ (डूँगरपुर-राज्य का इतिहास ; पृष्ठ ३४-३८ और ४४-५१)

† इसके अधिकांश के लिये देखो मेरा डूँगरपुर-राज्य का इतिहास ; पृष्ठ ५० का टिप्पण १।

सुधा के ग्राहक बनकर और बनाकर उसे अपनाइए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पराधीन (दास) महत्कार्य नहीं कर सकता

[अध्यापक चेतराम शर्मा, कन्या-महाविद्यालय, जालंधर]

विलक्षण प्रतिभा-संपन्न चाणक्य पंडित ने अपने अर्थ-शास्त्र में कुछ अत्यंत उपयोगी सूत्र (संस्कृत में) दिए हैं। इन सूत्रों में राष्ट्र के पतनोत्थान के यथार्थ कारण भली भाँति स्पष्ट कर दिए गए हैं। अपने विषय के अनुकूल कुछ सूत्रों का हिंदी-अनुवाद हम यहाँ उद्धृत करते हैं—'सुख का मूल धर्म है, धर्म का मूल अर्थ, अर्थ का मूल राज्य और राज्य का मूल इंद्रिय-जय है।' इंद्रिय-जय स्वराज्य या राजनीतिक स्वाधीनता का ही कारण नहीं, मुक्ति का भी कारण है। त्रिविध दुःख की अत्यंत निवृत्ति ही पुरुषार्थ है। इंद्रिय-जय से त्रिविध दुःख की निवृत्ति होती है; अतएव इंद्रिय-जय ही परम पुरुषार्थ—मुक्ति का कारण है। इसी पुरुषार्थ से इस लोक में स्वास्थ्य, दीर्घ यौवन और स्वाधीनता एवं लोकांतर में मुक्ति मिलती है। इसके विरुद्ध व्यवहार—इंद्रिय-परायणता, विषय-विलास—से ही पराधीनता फैलती है। पराधीनता सब अनर्थों और पापों का मूल है। विलास से दुर्बलता, दुर्बलता से तृष्णा, तृष्णा से अविवेक और अविवेक से स्वार्थांधता बढ़ती है। अविवेकी—स्वार्थांध—ही दास (ग़ुलाम) होते हैं। दासों में आत्म-सम्मान और आत्मावलंब आदि सद्गुण नहीं होते, आत्मदैन्य होता है। आत्मदैन्य मानसिक रोग (आधि) है। यह रोग मनुष्यों को पशु से भी तुच्छ और नगण्य बना देता है। सैकड़ों पशुओं को जैसे एक ही मनुष्य इधर से उधर खदेड़ देता है, इसी प्रकार आत्मदैन्य-ग्रस्त सैकड़ों नर-पशुओं को एक ही स्वाधीन जन अपनी उँगलियों पर नचाता फिरता है। यद्यपि दासता प्रतिभा की विघातिका होती है, तथापि दासों में भी पूर्व-संस्कार-संचित प्रतिभा का वास पाया जाता है। किंतु दासों की प्रतिभा प्रायः अविकसित ही रहती है; विकसित होने पर भी उससे कोई महत्कार्य नहीं हो सकता। दास महत्कार्य नहीं कर सकते—Slave can do no good.

मुग़ल-काल के तीन हिंदू राजा—मानसिंह, भगवानदास, टोडरमल—बड़े प्रतिभाशाली थे, आस्तिक और निष्ठावान् हिंदू थे; पर इनके ये गुण कुछ भी भला-बड़ा काम न कर सके। इनसे पहले मुग़ल-राज्य की आर्थिक दशा इतनी अच्छी, संपन्न न थी, जितनी इनके कारण, इनके समय से हुई। पहले दूर-दूर से भूमि-कर न आता था। आगरा-दिल्ली के आस-पास और अनति-दूर के छोटे-बड़े किसान ही भूमि-कर देते थे, दूर-दूर के आनंद से रहते थे। इन ग़ुलाम राजाओं ने ऐसी भू-माप-नियमावली बनाई, जिससे देश के कोने-कोने से भू-कर दिल्ली आने लगा। ज़मीन का बंदोबस्त (Settlement) हो गया, कर लग गया। मुग़ल-राज्य की आय और इनके देश की ग़ुलामी बढ़ गई। इन्हें क्या लाभ हुआ? अपनी प्रतिभा से ये कुछ भी महत्कार्य न कर सके। प्रतिभा इनकी और लाभ उनको! ग़ुलामी में ऐसा ही तो होता है। दासता दूरदर्शिता को कुंठित कर देती है।

राजा टोडरमल हिंदी के कवि थे, और हिंदुओं के हितैषी। अकबर के समय तक हिंदी राजभाषा रही। हाँ, मुग़ल-बादशाहों की अपनी भाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ारसी ही थी, इसलिये बड़े-बड़े राजकर्मचारी फ़ारसी अवश्य ही जानते थे। जन-साधारण से संबंध रखनेवाले कार्यों में हिंदी ही बरती जाती थी।

"The Dastur-ul-Amals are unanimous in affirming that from the earliest times up to the middle of Akbar's reign, all Government accounts were kept in Hindi."

(मि० ब्लॉकमैन के एक लेख से)

हिंदू मुग़ल-राज्य और मुग़ल-दरबार में उच्च पद प्राप्त कर सकें, इसलिये राजा टोडरमल ने उनके लिये फ़ारसी जानना आवश्यक कर दिया—विदेशी भाषा और मुग़ल-ऐश्वर्य की माया से मुग्ध हिंदू अपनी भाषा छोड़ फ़ारसी-ग्रस्त हो गए। भाषा-विषयक पहली बड़ी भारी भूल यही हुई। राजा प्रजा के लिये है, प्रजा राजा के लिये नहीं। प्रजा की भाषा ही राजभाषा होनी चाहिए थी। टोडरमल जनतंत्रवाद के इस सिद्धांत से परिचित होते, तो ऐसा अनर्थ न होता। फिर भी फ़ारसी राजभाषा न रही, हिंदी ही राजभाषा हुई। उर्दू हिंदी का ही नामांतर है, फ़ारसी का नहीं। उर्दूवाले कुछ करें, उर्दू राष्ट्र-भाषा कभी नहीं हो सकती। हाँ, वह हिंदी के मार्ग में काँटे अवश्य बखेरेगी। अपनी जाति और देश की भलाई करने की धुन में टोडरमल एक ऐसी बुराई का बीज बो गए, जिससे छुटकारा पाना अब बहुत कठिन हो रहा है। ईश्वर जाने, टोडरमल की उक्त योजना से कितने हिंदुओं को उच्च पद मिले; पर उर्दू-फ़ारसी की आँधी ने हिंदू-समाज-रूपी उपवन को बहुत हानि पहुँचाई, उसे कुछ-का-कुछ कर दिया। उर्दू-फ़ारसी के इस मोह ने हिंदुओं को भारत में ही अरब-फ़ारस का बना दिया। युक्त प्रांत के सप्रू और पंजाब के 'कैफ़ी' हमारे कथन की सत्यता के प्रमाण हैं। दास की विद्या-बुद्धि से और क्या हो सकता है। दासता में एक प्रकार की भीति और क्षुद्रता होती है, जो दास की बुद्धि को चंचल कर उसे गंभीर विवेचन के योग्य नहीं रहने देती।

हिंदीवालों ने अब तक बहुत सहा, अब और अधिक सहने से देश की भारी हानि होने की आशंका है। समय आ गया है कि हिंदी के गुप्त-प्रकट शत्रुओं और उसके मूर्ख मित्रों को खरी-खरी सुना दी जाय। भाषा की दासता अब असह्य हो उठी है।

स्वामी दयानंद के सदुपदेशों से उत्तर-भारत में आत्मीयता की, निजता की एक लहर चली। स्वधर्म, स्वभाषा और स्वराज्य की चर्चा होने लगी। देश में दासता तो थी ही, सर्वत्र विदेशी भाषा का बोलबाला था। अपनी भाषा न जानना, न बोलना, भुला देना गुण-गौरव समझा जाता था। आत्मविस्मृत भारतीय मैकॉले की माया से मंत्र-मुग्ध हो गए थे। दासता में हिताहित और मित्र-शत्रु की पहचान नहीं रहती। पंजाब के कुछ अँगरेज़ी-शिक्षित आर्य-समाजियों ने स्वामी दयानंद के नाम पर लाहौर में एक शिक्षण-संस्था खोली। संस्था के उद्देश्य, देखिए, कितने ऊँचे हैं—

(a) To encourage, improve and enforce the study of Hindi Literature,

(b) To encourage and enforce the study of classical Sanskrit and of the Vedas,

(c) To encourage and enforce the study of English Literature and of Science, both theoritical and applied,

(d) To provide for technical education in the country.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन चार उद्देश्यों में से केवल तीसरे के एक अंश—अँगरेज़ी के प्रचार-प्रसार—की बहुत कुछ पूर्ति अवश्य हुई; उसके दूसरे अंश विज्ञान की कितनी उन्नति हुई, यह संस्था के विधाताओं को छोड़ और कौन बता सकता है। इस संस्था ने दयानंद के नाम पर अँगरेज़ी को इतना प्रोत्साहन दिया, और उसे ऐसा अनिवार्य कर दिया कि उसका कोई कार्य नहीं, जिसमें अँगरेज़ी की प्रमुखता और व्यर्थ, अनावश्यक अधिकता न हो। संस्था के भवनों पर हिंदी में लिखे नाम भी अशुद्ध हैं। संस्था को ५० से अधिक वर्ष हो गए हैं, वह बूढ़ी हो चली; पर उसकी अँगरेज़ी की आसक्ति और हिंदी की उपेक्षा अभी तक वैसी ही बनी हुई है। बुढ़ापे में तो धर्म-प्रवृत्ति बढ़ जानी चाहिए थी। हिंदी में 'ऐङ्गलो' के बदले अब तक 'ऐङ्गलो' ही संस्था के भवन पर विराज रहा है! पंजाब में आर्य-समाजियों के दो दल हैं (ईश्वर की दया है कि आर्य-समाजियों की यह दलादली पंजाब तक ही परिमित रही, अन्य प्रांतों में नहीं घुसी, यद्यपि इसे फैलाने का यत्न निरंतर हो रहा है)। दूसरे दलवाले हिंदी-संस्कृत के कार्यतः भक्त और प्रचारक हैं। इनके भवनों पर शुद्ध हिंदी सुशोभित है। लाहौर का 'गुरुदत्त-भवन' और 'वैदिक पुस्तकालय' देखकर फिर 'हंसराज-हॉल' और 'लालचंद-लाइब्रेरी' देखिए। यदि अँगरेज़ी का टी (t) अक्षर कटा हुआ न होता या आई (i) पर बिंदी न दी हुई होती, तो क्या ये अँगरेज़ी-रँगे आर्य-समाजी इन अशुद्धियों को सह जाते? कभी नहीं। हिंदी-भाषा को प्रचलित, प्रोत्साहित, संस्कृत और अनिवार्य करने का दम भरनेवाले इन अँगरेज़ी-ग्रस्त आर्य-समाजियों को हिंदी में ठीक-ठीक हस्ताक्षर करने भी नहीं आते। जीवन-भर आर्य-समाज के सदस्य रहने पर भी ये हिंदी पढ़ना-लिखना नहीं सीख सके। दयानंद और उनकी आर्य-भाषा पर इनकी कितनी भक्ति, कितनी श्रद्धा है, यह जानना हो, तो इनके व्याख्यान सुनिए, और हिंदू-साहित्य-संस्कृति-विषयक इनके लेख पढ़िए। जो स्वयं संस्कृत-हिंदी नहीं जानते, वे इन भाषाओं को कितना उत्साहित, कितना संस्कृत और कितना अनिवार्य कर सकेंगे। जो अपनी समस्त लिखा-पढ़ी और पत्र-व्यवहार उर्दू-अँगरेज़ी में करते हैं, उनके हिंदी-प्रेम का क्या प्रमाण? प्रेम की कसौटी त्याग है। हिंदी के लिये इन्होंने क्या त्याग किया है? त्याग-रहित प्रेम का क्या मूल्य? इनकी अँगरेज़ी-रँगी संस्थाओं से इतने वर्ष बीत जाने पर भी अब तक हिंदी का कोई अच्छा कवि, अच्छा लेखक नहीं निकला। बात यह है कि इन अँगरेज़ी-रँगी संस्थाओं के संचालक यद्यपि समाज-सेवा-भाव रखते थे, तथापि मानसिक दासता-ग्रस्त थे, मैकॉले के मानस-पुत्र थे—ग़ुलाम थे—अँगरेज़ी का मोह न छोड़ सके। फिर हिंदी का प्रचार कैसे करते। जीवन-भर इन्हें हिंदी की आवश्यकता अनुभव न हुई। अपने वैयक्तिक और सार्वजनिक जीवन में इन्हें स्वामी दयानंद की आर्य-भाषा से काम ही नहीं पड़ा—हिंदी इनके लिये अनावश्यक ही रही। सार्वजनिक धन पर इन्होंने अपनी रुचि को भोगा—अँगरेज़ी जो पढ़ी थी, उसका प्रचार किया। ये यह बात भूल गए कि आर्य-समाज सुधारक संस्था है। लोक-रुचि का अंधानुकरण करना सुधारक के उद्देश्य के विरुद्ध है। ये अब भी समझते हैं कि एक अँगरेज़ी-भाषा जानने से सब कुछ जाना जाता है—"सर्वे पदा हस्तिपदे निमग्नाः।"

दास दो प्रकार के होते हैं—एक मुग्ध और दूसरा सामर्ष। विजेता की माया से मुग्ध दास अपने स्वरूप और गौरव को भूल जाता है। उसे अपनी दासता चुभती नहीं। सामर्ष दास अपने स्वरूप और स्वाभिमान को सदा स्मरण रखता है। उसे अपनी दासता पद-पद पर, बात-बात में चुभती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। वह सदा अशांत रहता है, अपनी अवस्था से खिन्न रहता है। "शागिर्दे-डारविन तो ख़ुदा ही ने कर दिया, 'अकबर' मगर नहीं है मदारी के हाथ में।" सामर्थ दास मदारी की उँगलियों पर नहीं नाचता। मुग्ध दास अपनी अवस्था से संतुष्ट रहता है। वह विजेता स्वामी के संकेत पर नाचता है। उसे पराधीन दास बना रखने के लिये उसका विजेता स्वामी जैसा करना चाहता है, मुग्ध दास अपना तन-मन-धन लगाकर स्वयं ही वैसा करने लगता है। वह स्वयं अपनी दासता के बंधन को उल्लास-पूर्वक कसता है। उसके इस बंधन में अनेक 'आँख के अंधे और गाँठ के पूरे' फँस जाते हैं। मुग्ध दास इसे अपनी सफलता और विजय समझता है। दासता की इस विजय पर उत्सव मनाए जाते हैं। सैकड़ों आत्मस्वरूप-ज्ञान-वंचित दास अपने सर्वनाश के इन उत्सवों में सम्मिलित होते हैं। कोई दोष, कोई बुराई जब सार्वजनिक हो जाती है, तब उसे बुराई कौन कहे—चोर-कुत्ते मिल गए, पहरा कौन दे। पंजाब के कुछ आर्य-समाजियों की दशा मदारी के बंदर की-सी है।

इस देश की भाषा, शिक्षा आदि पर मैकॉले साहब और ऋषि दयानंद महाराज के विचारों का प्रभाव पड़ा है। मैकॉले साहब कुटिल-नीति-निपुण, समर्थ शासक थे, और स्वामी दयानंद मातृभूमि-दुःख-खिन्न, जन-सेवा-परायण, देश-भक्त महात्मा संन्यासी। मैकॉले साहब के पक्ष में समस्त ब्रिटिश साम्राज्य-शक्ति थी, ऋषि दयानंद अकेले, अनेक देश-द्रोही, प्रजा-पीड़कों से घिरे थे। ऋषि दयानंद के पास न राजदंड था, न राजनियम और न विधान बना सकने की क्षमता; पर वह त्याग, तपस्या और परोपकार-वृत्ति-संपन्न अवश्य थे। राजनियम (Rules of State) नहीं, तो धर्म-नियम (Rules of good) वह अवश्य बता गए। मैकॉले ने कहा—अँगरेज़ी पढ़ो। बस, जनता अपनी भाषा भूलकर अँगरेज़ी पढ़ने लगी। अँगरेज़ी पढ़ने-पढ़ाने की सुविधा हो गई। विदेशी भाषा-साहित्य पढ़कर हमारे देश के शिक्षित अपने घर में ही जाति-भ्रष्ट होकर विदेशी बन गए—मैकॉले के मानस-पुत्र हो गए। हमारी सांस्कृतिक और सामाजिक पराजय के नग्न चित्र इधर-उधर फुदकते दिखाई देने लगे—देश की राजनीतिक पराधीनता परिपूर्ण हो गई। इसका भी हमें बहुत दुःख नहीं। दुःख है उनकी विद्या-बुद्धि पर, उनकी जाति-सेवा और देश-भक्ति पर, जिन्होंने अपनी संस्कृति और साहित्य के सर्वनाश में स्वयं सहयोग दिया। स्वामी दयानंद ने आर्य-समाज की स्थापना की, और प्रत्येक आर्य-समाजी के लिये संस्कृत-आर्य-भाषा (हिंदी) का ज्ञान आवश्यक कर दिया। गुजराती होते हुए भी स्वामीजी ने संस्कृत-आर्य-भाषा में ही व्याख्यान दिए, और ग्रंथ लिखे। पर काल की चाल के किंकर आर्य-समाजियों ने स्वामीजी के नाम पर, संस्कृत-आर्य-भाषा की आड़ में, देश की दीन जनता का धन विदेशी भाव-भाषा के प्रचार पर नष्ट किया। अपने परमहितैषी दयानंद की कल्याणकारिणी वाणी सुनकर भी अनसुनी कर दी। दयानंद का उपदेश अरण्य-रोदन हो गया; पर अपनी भाषा-संस्कृति के धूर्त शत्रु का दास बना देनेवाली योजना हमने सर्वतोभावेन स्वीकार कर ली। सच है—

"बूट डॉसन ने बनाया, हमने एक मज़मूँ लिखा;
मुल्क में मज़मूँ न फैला, और जूता चल गया।"

इसीलिये तो कहते हैं, दास महत्कार्य नहीं कर सकता।

कहते हैं, भारतीय प्रेस-ऐक्ट बंगाली कायस्थ सर सत्येंद्रप्रसन्नसिंह के उर्वर मस्तक की उपज है। उक्त ऐक्ट के आविष्कार से सर सत्येंद्र और उनके देश को क्या लाभ हुआ? लॉर्ड बन जाने पर भी वह पराधीनों में ही गिने जाते रहे। सर सत्येंद्र कांग्रेस-जन थे, कांग्रेस के एक बंबई-अधि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेशन के प्रधान रह चुके थे ; पर थे तो दास ही। इसी से कोई ऐसा बड़ा कार्य न कर सके, जिससे देश की स्वाधीनता कुछ भी पास आती। सच है, दास महत्कार्य नहीं कर सकता।

मुफ़्त ! फ़ैंसी रिस्टवाच बिलकुल मुफ़्त !! मुफ़्त !!!

असली अमेरिकन रिवाल्वर

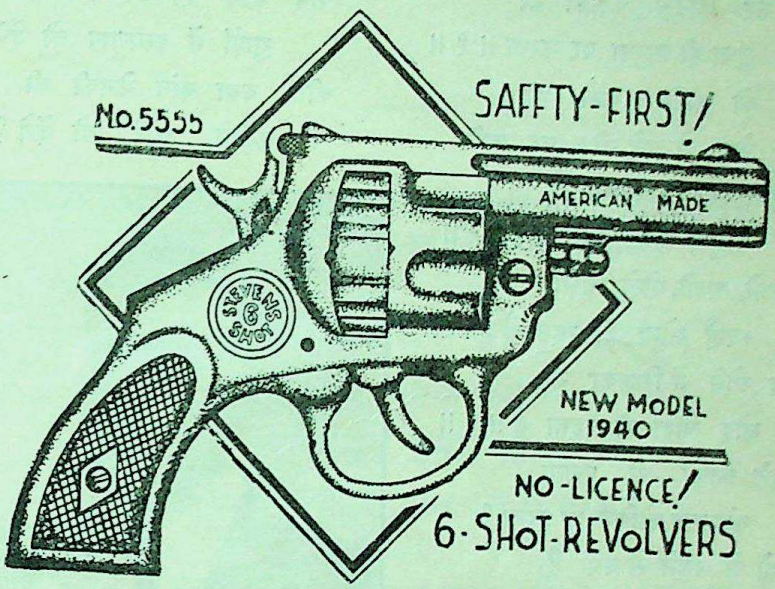

बढ़िया मानिंद असली ६ फ़ायरवाला वज़न १५ आउंस।

इस पिस्तौल की ख़ूबियाँ लिखना मानो सूर्य को दीपक दिखाना है। इसे ख़ास ऑर्डर देकर अमेरिका से मँगवाया गया है, जिसमें असली रिवाल्वर की तरह चरख़ी है, जिसमें छ ख़ाने हैं। इसमें छ कारतूस रक्खे जा सकते हैं। घोड़ा दबाते ही चरख़ी ख़ुद-बख़ुद घूमती है। आवाज़ इतनी भयंकर होती है कि चोर-डाकू व शत्रु जान लेकर भागते हैं, और ख़ुद छोड़नेवाला भी दहल उठता है। जानोमाल की रक्षा के लिये इससे बढ़कर पस्तौल आपको दूसरी जगह न मिलेगी। हरएक मनुष्य विना लाइसेंस रख सकता है। आज के समय में ऐसी उपयोगी वस्तु हरएक मनुष्य के लिये और घर-घर में रखनी चाहिए। मूल्य नं० १—लंबाई ६ इंच असली का ५॥), नं० २—लंबाई ८ इंच चाँदी की तरह चमकनेवाली सफ़ेद का ४॥), नं० ३—फ़ौलादी ४) इन सबके साथ स्पेशल कारतूस १×२ इंच चौड़े २५ मुफ़्त। छ फ़ायरवाली नक़ली मय १०० नक़ली कारतूस के ३), ५० टिकलीवाली २॥), स्पेशल कारतूस प्रति १०० का ३), शाही पेटी व ख़ोल १॥), साफ़ करने का तेल ।=), एक पिस्तौल पीछे ख़र्च ॥।-)। हरएक पिस्तौल के साथ दो फ़ैंसी निहायत उम्दा रिस्टवाच मुफ़्त दी जाती हैं, जिनकी ख़ूबसूरती और मज़बूती की गारंटी १० साल है। गारंटी का इक़रार-नामा हरएक घड़ी के साथ भेजा जाता है। दो पिस्तौल एक साथ मँगाने से ख़र्च माफ़ और चार घड़ियाँ मुफ़्त।

पता—सोल-एजेंट

अमेरिकन पिस्तौल-हाउस, पोस्ट-बॉक्स-नं० १२ (S.M.L.) अमृतसर (इंडिया)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोष-दृष्टि

[पु० श्रीप्रतापनारायण 'कविरत्न']

सर्वदा दोषी रहकर भी
संत में दोष नहीं भरता ;
सुधाकर कुटिल, कलंकी भी
सुधा ही वसुधा पर झरता ॥ १ ॥

ईख को काटो, कूटो भी,
फेंक दो उसे नीम पर कहीं,
छोड़ती पर वह स्वाभाविक
माधुरी अपनी कभी नहीं ॥ २ ॥

तपाओ, ताओ, घोटो, घिसो,
स्वर्ण सोना ही रहता है ;
शुद्ध सोने में मिलकर भी
लोह लोहा ही रहता है ॥ ३ ॥

कलूटे काकों से पलना
कंठ क्या कोकिल का हरता ?
पिकों में रहने से क्या है,
काक तो काँव-काँव करता ॥ ४ ॥

पीसने में, क्षय करने में
प्रशंसा क्या है पाहन की ;
गंध को, शीतलता को वह
नहीं खो सकता चंदन की ॥ ५ ॥

बुराई करते कुमुद, उन्हें
प्रभाकर - प्रभा नहीं भाती ;
उल्लुओं के कहने से क्या
कीर्ति है रवि की घट जाती ? ॥ ६ ॥

जन्म के अंधे शोभा की
बुराई केवल कर सकते ;
बाल की खाल बराबर भी
नहीं यश उसका हर सकते ॥ ७ ॥

दोष होते हैं, पर वे क्या
गुणों में अवगुण बो देंगे ?
कीर्ति क्या कांत केतकी की
कटीले काँटे खो देंगे ? ॥ ८ ॥

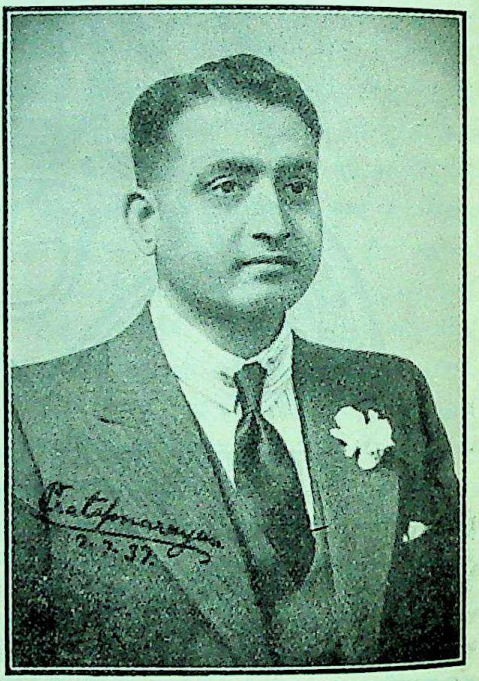

पु० श्रीप्रतापनारायण 'कविरत्न'

पी नहीं सकती है बिजली
मेघ की धाराधरता को ;
हटा सकता क्या खारापन
सिंधु की रत्नाकरता को ? ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़कर काँटों को भौंरे
फूल से रस-सुगंध लेते;
ज़हर से डरनेवाले ही
साँप की मणि को खो देते ॥ १० ॥
आदमी जो जैसा होता,
दीखते सभी उसे वैसे;
धूप पर काली हो सकती
अँधेरे चश्मे से कैसे ॥ ११ ॥
दोष हैं दोष-दृष्टि में ही,
गुणों को गुणी देख पाते;
देखनेवाले दोषों के
स्वयं भी दोषी हो जाते ॥ १२ ॥

सब तरफ़ से इलाज कराकर निराश हुई देवियों

वंध्या व संतान-हीन स्त्रियों को शुभ संदेश !

स्त्रियों के सब तरह के रोगों का

शर्तिया इलाज

औरत का इलाज औरत ही ठीक तरह कर सकती है

क्योंकि

औरत एक औरत को ही अपने गुप्त रोगों का पूरा हाल निःसंकोच बता सकती है।

स्त्रियों के प्रदर रोग, पानी पड़ना, गर्भाशय के दोष, योनि-रोग, बच्चेदानी की ख़राबी, नसों व नलों की ख़राबी, मासिक धर्म का ठीक न होना, समय पर न होना, चढ़-उतरकर होना, ख़ून का कम-ज़्यादा जाना, मासिक धर्म के समय पीठ (कमर) में ज़्यादा दर्द होना वग़ैरा कोई भी गुप्त रोग है, और आप इलाज कराकर निराश हो चुकी हैं, तो एक बार नीचे लिखे पते पर ज़रूर मिलें या पत्र-व्यवहार करें।

विश्वास रक्खो

यहाँ से तुम्हें निराश न होना पड़ेगा, शर्तिया आराम हो जायगा। आपका पैसा हराम में नहीं जायगा।

एक बार परीक्षा ज़रूर करें

[सरकार से रजिस्टर्ड]

चपलादेवी वैद्या, चपला-भवन, गली रावलिया, मथुरा (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी-जीवन

[श्रीयुत रमेश वर्मा]

आज जब कल्पना की दुनिया मिट चुकी थी, और भविष्य के आशो-बिंदु बिखर चुके थे, तब भी वह अपने उस गाने को नहीं भूली थी, जिसे उसने उस वक़्त सीखा था, जब वह उसका अर्थ भी नहीं जानती थी—"अपने पिया की दुलहिन बनूँगी।"

उसकी दो दुनिया थीं—एक वह, जिसे वह आँखों से देखती थी, दूसरी वह, जो उसके मस्तिष्क और हृदय में थी। माया इस दूसरी दुनिया में ही अधिक रहती थी। बाहर के दृश्य देखकर वह अपने मानस-पटल पर कितनी ही रेखाएँ खींचा करती थी। मीरा के 'गिरधर-गुपाल' की तरह उसे भी एक रट लग गई थी—"अपने पिया की दुलहिन बनूँगी।"

एक दिन कला—उसकी भतीजी—दौड़ी हुई आई, और जीजी की गोद में बैठकर उससे गाना सुनने का हठ करने लगी। माया ने कहा—"मैं गाना नहीं गाती।"

कला—"क्यों नहीं गाती?"

माया—"मुझे गाना आता ही नहीं।"

कला—"आता है जीजी! तू रोज़ तो गाया करती है।"

माया—"मैं क्या गाया करती हूँ कला, तू जानती है?"

कला—"हाँ, जानती हूँ—"अपने प्या की दुलैन..."

माया ने कला का मुँह दबा दिया। "पगली! तू इस गाने को सीख गई? मैं तुझे और गाना सुनाऊँगी।"

कला—"नहीं, मैं इसी गाने को सुनूँगी।"

माया—"तो ले, मैं कुछ भी नहीं गाती।" और, वह सोचने लगी—कैसे हैं जीवन के ये दिन? मुझे उस बालपन की चंचलता, नटखट स्वभाव और कभी स्थिर न रहनेवाली गति में इसका ख़याल भी न था कि बादल की परछाईं की तरह शीघ्र ही ये दिन ढल जायँगे। किशोर अवस्था में वह चंचल प्रकृति, वातुलता और खेलने-कूदने का शौक़, कुछ संकोच, लज्जा और शील के रूप में परिणत हुआ—बरसात की नदी का वह वेग शरत्काल की धार के रूप में बहने लगा। तभी किसी ने मेरे दिल में कहा—"अपने पिया की दुलहिन बनूँगी।"

वह गुनगुनाने लगी, और गा उठी—"अपने पिया की दुलहिन बनूँगी।"

कला ख़ुश हो गई। वह ताली पीटते हुए कहने लगी—"जीजी, तू तो कहती थी, मैं गाना नहीं गाऊँगी।"

लड़की की बात पर माया सहम गई। वह उठना ही चाहती थी कि कला का भाई बसंत अपना गुड्डा लेकर आ गया। वह किसी से पढ़कर आया था। कहने लगा—"मेरा गुड्डा बड़ा हो गया है, मैं इसकी शादी कला की गुड़िया से करूँगा।"

कला दौड़ी हुई अंदर गई, और घर से अपनी गुड़िया निकाल लाई। वह बोली—"मेरी गुड़िया कैसी अच्छी है—कैसी चमकती है। बसंत का गुड्डा बुरा है।"

बसंत चिढ़कर कहने लगा—"तेरी गुड़िया रूठनी है, वह बोलती ही नहीं। मेरा गुड्डा कैसी आवाज़ करता है—देख, चीं-चीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माया ने पूछा—"तो बसंत अपने गुड्डे का विवाह कला की गुड़िया से करेगा ?"

बसंत ने अपनी स्वीकृति दे दी। माया ने वही प्रश्न कला से किया, पर कला अपनी गुड़िया का विवाह करने को राज़ी न थी।

माया ने फ़ैसला किया—"गुड़िया राज़ी नहीं, तो गुड्डे का विवाह उसके साथ नहीं हो सकता।"

फिर माया को अपने जीवन के दिन याद आने लगे—मेरे लड़कपन में माता ने मुझे खेलने के लिये गुड़िया दी थी, और पिताजी गुड्डा लाए थे। तभी मानो मुझे इसकी शिक्षा दे दी गई कि यह संसार द्वंद्वमय है, इसमें एक बनकर नहीं रहा जाता। उन गुड़िया-गुड्डा के कृत्रिम संबंध से मानो मुझे यह सिखाया गया कि मेरे जीवन का ताना किसी दूसरे बाने के साथ बुना जायगा। आख़िर वह दिन आया, और मुझे कहना पड़ा—"अपने पिया की दुलहिन बनूँगी।"

वह गुनगुनाती हुई वहाँ से चल दी।

❀ ❀ ❀

दिन ढल चुका था, और संध्या होने को थी। माया अपने मकान की छत पर टहलती हुई इधर-उधर का दृश्य देख रही थी। यह कोई त्योहार का दिन है—हाँ, श्रावणी। तभी इधर-उधर ख़ूब चहल-पहल है। ससुराल से मायके में आई हुई युवतियाँ—भरी-गोद—इधर-उधर घूम रही हैं। माया के पिता की कोठी के निम्न भाग में कुछ ग़रीब लोग किराए की कोठरियों में रहते हैं। इन घरों में भी आज कई तरह के रंग दिखाई दे रहे हैं। लड़कियाँ भाई और पिता से राखी के पैसों के लिये झगड़ रही हैं। दो-दो, एक-एक पैसे के आदान-प्रदान में वहाँ जैसे स्नेह-सूत्र मिल रहे हैं। वह आनंद उस आनंद से कम नहीं, जहाँ अशर्फ़ी और मुहरें लुटाई जाती हैं।

संध्या ने काली चादर डाली, तो दीप-शिखाएँ जगमगा उठीं। माया के पिता का पार्श्ववर्ती कमरा गूँजने लगा। उसके अंदर के वाद्य और गायन की ध्वनि हवा के झोंके के साथ कभी-कभी छत पर भी सुनाई दे जाती थी। छत की एक ओर सबसे ऊँची अट्टालिका में विद्युत्-प्रकाश फैला हुआ था। उसमें माया का भाई और भाभी कला और बसंत की किलकारियों का आनंद ले रहे थे। नीचे की कोठरियों में मिट्टी के दीप जल रहे थे। कहीं तबला-तंबूरा और सितार-सारंगी बज रही थी।

माया का ध्यान इन दृश्यों से हटकर उसके अंदर होनेवाले हृदयोद्वेलन की ओर आकर्षित हो रहा था—दंपति-जीवन की कल्पना में वह कुछ देर के लिये संज्ञा-हीन-सी हो गई। वह उस प्रवाह में बहने लगी, जिसका सजीव अनुभव उसे अब से चार साल पहले हुआ था।

सागर की मानसूनों की तरह दिल में उमंगों की तरंगें उठ रही हैं। गदराए हुए यौवन की सुवास से अंग-अंग महक रहा है। दुनिया की हरएक चीज़ आज अजीब तरह से, नया रंग-रूप और नई ज़िंदगी धारण कर, सामने आई है। मैं कितनी ख़ुश हूँ, इसका पता आज नहीं लग रहा है। एक अजीब परिवर्तन, जो अब तक नज़र नहीं आया, आज मेरे जीवन में हो रहा है। क्या मैं एक चोला बदलकर दूसरा चोला धारण करने जा रही हूँ ? फिर इस लज्जा के भार से क्यों दबी जा रही हूँ ? यह हाथों की मेहँदी और शरीर की हल्दी की ज़र्दी मुझे कहाँ उड़ाए लिए जा रही है। जब कुल-वधुएँ गीत गाती हैं, तो मेरा हृदय भी गूँज उठता है—"अपने पिया की दुलहिन बनूँगी।"

इस तरह उसकी कल्पना उसके चिर-अभ्यस्त राग के रूप में झंकृत हो उठी, तो वह चैतन्य अवस्था में आ पहुँची। उसने देखा—दीपक बुझ चुके हैं, सब चहल-पहल बंद है। छत के कमरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में हरे रंग का धीमा प्रकाश है, और पिता के कमरे का प्रकाश उसके इधर-उधर न फैलकर अंदर बंद हो गया है। यह समय है, जब हरएक प्राणी अपने एकांत जीवन का आनंद लेता है।

ज्यों ही माया को अपनी सुहागरात का स्मरण हुआ, वह फिर विदेह हो गई।

वह कैसी रात थी, जब मेरे कोमल, ठंडे और ढीले-से हाथ से एक कठोर, दृढ़ और गर्म हाथ का स्पर्श हुआ था। उस समय शरीर के नस-तंतु झनझना उठे थे। मेरे बाहर के संकोच और लज्जा से ढके शरीर के अंदर एक तूफ़ान उठ रहा था। मैं उसमें उड़ी जा रही थी। पाँव-तले की भूमि निकल चुकी थी। एक प्रवाह में ग़ोता लगाया, और मैं उसमें डूब गई। चेतनता जाती रही। मैं कहाँ थी, यह पता नहीं रहा। उस दशा का वर्णन नहीं कर सकती—वह अनिर्वचनीय आनंद जीवन में एक बार ही आया। उस दिन जीवन का स्वप्न सच्चा हुआ। मैंने गाया—"अपने पिया की दुलहिन बनी हूँ।"

स्वप्नों की यह लड़ी टूटी, तो उसने अपने को उसी पत्थर की छत पर पड़े हुए पाया। उस नीरव, काली रजनी में उसे अपना जीवन कितना भयंकर मालूम हो रहा था। क्षण-भर पहले वह एक अजीब दुनिया में विचरण कर रही थी। अब उसके चारो ओर ऊँचे-ऊँचे मकानों की डरावनी मूर्तियाँ खड़ी थीं।

वह रात उसने छत पर ही बिताई।

❀ ❀ ❀

कांति माया की भाभी है, पर उन दोनो में सहेलियों-जैसा संबंध है। दोनो बैठकर घंटों बात-चीत करती हैं। माया के जीवन में करुणा और विषाद है, और उसका कारण है उसका वैधव्य। कांति माया के मनोभावों को जानती है। जीवन की सतह पर एक मंज़िल तक वह और माया साथ-साथ चली हैं। पर अब उनके मार्ग भिन्न हैं। माया इस भिन्नता को समझती है, पर कांति इस भिन्नता में भी कहीं एकपन देखती है।

कभी-कभी कांति माया का मनोरंजन करने के लिये उसे कहानी सुनाया करती है। एक दिन जब वे दोनो बैठीं, तो माया ने कहा—"उस दिन की रजनीवाली अधूरी कहानी आगे सुनाओ।"

कांति ने कहना आरंभ किया—"प्रकाश बाबू ने उस देहात की छोकरी को पढ़ा-लिखाकर नई रोशनी की महिला बना दिया। वही रजनी, जो घर के अंदर भी लंबा घूँघट लटकाए रहती थी, ज़ेवरों से लदे रहना ही जिसे पसंद था, अब कटी बाहों की कुर्ती और चुस्त साड़ी पहनकर बाहर घूमती। सभा और समाज के जलसों में शामिल होती। पति के साथ दावत उड़ाती और पार्क की हवा खाती। प्रकाश ने कई संस्थाओं से उसका संबंध करा दिया था, इसलिये कितने ही कामों के लिये लोग उसके घर आते-जाते रहते। रजनी का नाम और उसके फ़ोटो अख़बारों में छपते थे।"

माया—"इस प्रकाश में कहीं धुएँ की रेखा तो नहीं थी?"

कांति—"रजनी के जीवन में यह विशेषता थी कि वह इस चकाचौंध में भी अपने स्वरूप को नहीं भूली थी। मस्तिष्क का इतना विकास हो जाने पर भी उसमें नारी-सुलभ भोलापन था। दुनिया के लोगों के साथ संपर्क बढ़ने पर भी उसकी पति-परायणता हिंदू नारी के समान ही अक्षुण्ण थी। फिर भी वहाँ धुएँ की रेखा मौजूद थी।"

माया—"वह वैसे?"

कांति—"वह रजनी में नहीं, प्रकाश में। रजनी के तमाम कार्यों के साथ प्रकाश का सहयोग था। रजनी को अपने कार्यों में प्रकाश से ही प्रेरणा मिलती थी, पर इस प्रेरणा के साथ एक शंका-शील हृदय भी उसके साथ चलता था। प्रकाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ एक ओर रजनी को स्वतंत्र वातावरण में विचरण करने को प्रेरित करते, वहाँ दूसरी ओर परछाईं की तरह उसके पीछे लगे रहते। वह और रजनी मित्रों की दावत में शामिल होते। वहाँ रजनी अन्य महिलाओं तथा परिचित व्यक्तियों के साथ हास्य-विनोद और वार्तालाप में भाग लेती, तो प्रकाश रजनी की प्रत्येक चेष्टा को बड़े ग़ौर से निरीक्षण करते रहते। रजनी को कई बार उन्होंने अकेले ही पार्क में टहलने की इजाज़त दे दी। पीछे रजनी ने देखा, प्रकाश भी पार्क में अलग टहल रहे हैं। महिला-क्लब से लौटते वक्त रजनी को प्रकाश बाबू क्लब के दरवाज़े पर ही उसे घर ले चलने को तैयार खड़े मिलते।"

माया—"क्या रजनी को यह पता नहीं था कि प्रकाश के हृदय में उसके प्रति इतना प्रेम होते हुए भी उसमें अविश्वास का अंकुर मौजूद है?"

कांति—"रजनी समझती थी कि पति का उसके प्रति अगाध प्रेम है, वह उसकी थोड़ी-सी जुदाई भी सहन नहीं कर सकते। फिर उसे अपने पति के गुणों का पता था। उनके स्वतंत्र विचार, नई प्रगति के प्रति उनका उत्साह, नारी-स्वातंत्र्य के प्रति उनकी भक्ति, इन गुणों को समझती हुई रजनी उनके प्रति किसी तरह का शक नहीं कर सकी। पर आख़िर वह बात खुल गई।"

माया—"किस तरह?"

कांति—"किसी कार्य से प्रकाश बाबू को एक सप्ताह के लिये घर से बाहर जाना पड़ा, पर चार दिन बाद ही वह लौट आए। जिस रात को वह लौटे, उसके दूसरे दिन वह रजनी से शाम तक लौट आने को कहकर बाहर चले गए। लौट आने पर रात को वह रजनी से उसके आज के कार्य के संबंध में देर तक बातें करते रहे। आज किस संस्था के कौन लोग मिलने आए? उन्हें क्या-क्या काम था, किस संस्था का कैसा काम हो रहा है—आदि कितनी ही बातों के संबंध में प्रकाश बाबू ने जानकारी हासिल की। इसके जो उत्तर रजनी की तरफ़ से दिए गए, उस पर आपने संतोष प्रकट किया।"

माया—"इनमें तो कोई ऐसी बात नहीं, जिससे रजनी के ऊपर शक प्रकट होता हो।"

कांति—"बिलकुल नहीं। पर जब दूसरे दिन रजनी को एक नौकर से पता लगा कि कल प्रकाश बाबू दिन-भर रजनी के ऑफ़िस के बग़ल के कमरे में ही रहे हैं, तो रजनी को पहले आश्चर्य, फिर ख़याल और बाद को शक पैदा हुआ। प्रकाश की कई चेष्टाओं को जब उसने इस दृष्टि से देखा, तो उसे विश्वास हो गया कि प्रकाश का हृदय उसके प्रति सच्चा नहीं। इसके बाद प्रकाश की पिछली बातों पर भी उसका ध्यान गया, और तब वह उस निर्णय पर पहुँची, जिसे वह इतने दिनों से नहीं समझ रही थी।"

माया—"ऐसी हालत कब तक रही?"

कांति—"प्रथम मिलन और संतान पैदा होने के बीच का जो समय होता है।"

माया—"संतान पैदा हो जाने पर उनका जीवन कैसा रहा?"

कांति—"न वह रजनी रही, न वह प्रकाश। जब दो हृदयों के बीच में संधि पैदा हो गई, तो जीवन में वह मज़ा नहीं रहा। रजनी ने धीरे-धीरे और सब कार्यों से हाथ खींच लिया; वह घर की बहू बन गई। प्रकाश के प्रेम, उत्साह और आशा-वाद आगे चलकर खीझ, झुँझलाहट और चिंता-शीलता में परिणत हो गए।"

माया—"प्रकाश रजनी के प्रति अब क्या भाव रखते हैं?"

कांति—"एक दिन प्रकाश अपने कमरे में बैठे हुए किसी किताब के पन्ने उलट रहे थे। जब वह बाहर चले गए, तो रजनी उनके कमरे में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँची। उसने मेज़ पर से एक किताब उठाई। उसमें बीच-बीच में कई जगह काग़ज़ के टुकड़े रक्खे हुए थे। रजनी ने एक जगह से किताब खोलकर देखा, अंदर कुछ चौपाइयों पर पेंसिल से निशान बने हुए थे। रजनी ने चौपाइयाँ पढ़ीं—

एकै धर्म, एक व्रत, नेमा—
काय-बचन-मन पति-पद-प्रेमा।

दूसरी जगह उसने पढ़ा—

ढोल, गँवार, सूद्र, पसु नारी;
ये सब ताड़न के अधिकारी।

तीसरी जगह उसे यह चौपाई पढ़ने को मिली—

नारि-स्वभाव सत्य कवि कहहीं;
अवगुन आठ सदा उर रहहीं।

रजनी ने रामायण मेज़ पर रख दी, और कमरे से बाहर हो गई।

माया—"इस दंपति के जीवन का उत्तरार्ध कैसा रहा? उनके कितनी संतानें हुईं?"

कांति—"दो संतानों तक का मुझे हाल-मालूम है, इससे आगे मुझे कहानी याद नहीं रही।"

माया चिंता में पड़कर बड़ी देर तक सोचती रही। फिर कुछ समझने की जिज्ञासा के भाव से उसने कांति की तरफ़ देखा। कांति के चेहरे पर खिन्नता और निराशा झलकती थी। उसने अपना सिर नीचा कर लिया।

उस रात माया यही सोचती रही कि उसमें और कांति में कौन अधिक सुखी है?

❀ ❀ ❀

कुछ दिनों बाद वे दोनो फिर मिलीं।

माया बोली—"पुरुष और प्रकृति दोनो के ही संसर्ग से सृष्टि का विकास होता है। पुरुषत्व और स्त्रीत्व, दोनो अविच्छिन्न और अभिन्न हैं। ईश्वर के तीनो रूपों—ब्रह्मा, विष्णु और शंकर—में सावित्री, कमला और गौरी सबमें स्त्री-तत्त्व मौजूद है। जिस प्रकार विना बीज के फल की उत्पत्ति नहीं हो सकती, उसी प्रकार विना भूमि के भी फल पैदा नहीं हो सकता। इसलिये इन दोनो का अन्योन्याश्रय संबंध है।"

कांति ने प्रश्न किया—"लेकिन प्रकृतिवादी केवल प्रकृति को ही सब कुछ मानते हैं। उनके मत में पुरुष की कल्पना निरर्थक है।"

माया—"वे चाहे जो कहें, पर कला और बसंत की अभिव्यक्ति भैया और भावी दोनो से है—समझीं।"

यह कहकर माया मुस्करा दी।

कांति—"आजकल के भौतिकवादियों ने यह बतला दिया है कि लोगों ने जिसे अलग ईश्वर या पुरुष कल्पित कर लिया है, वह चेतनता प्रकृति में मौजूद है।"

माया—"प्रकृति स्वतः चैतन्य नहीं—वह पुरुष के आश्रित है। एक दिन वह पुरुष में लय हो जायगी। अपने पिया से जाकर मिलेगी।"

कांति ने देखा, माया के नेत्र मुँदे जा रहे हैं, वह अस्फुट स्वर से गा रही है—"अपने पिया की दुलहिन बनूँगी।"

उत्तमोत्तम कहानियों की पुस्तकें हमसे मँगाइए।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिलकुल नया प्रकाशन

संसार के सर्वोत्कृष्ट उपन्यासों की श्रेणी में
निस्संकोच रक्खा जानेवाला

हिंदी का महान् गौरव

दो भागों में

'विकास'

मूल्य प्रत्येक भाग २), २॥)

[सामाजिक उपन्यास]

लेखक

हिंदी के युगांतरकारी उपन्यासकार

श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०

('बिदा' और 'विजय' के यशस्वी रचयिता)

'विकास' की विशेषताएँ—

(१) साम्य तथा समाजवाद का स्पष्टीकरण।
(२) हिंदू-समाज के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन।
(३) कुली-प्रथा की आह और कराह।
(४) पूर्वजन्म के प्रेम की पीड़ा।
(५) चारु चरित्रों का विचित्र विश्लेषण। इत्यादि-इत्यादि।

उच्च कोटि के चरित्र-चित्रण, भाव-व्यंजना और घटना-वैचित्र्य के लिये लेखक का नाम ही पर्याप्त है।

यह अप-टु-डेट उपन्यास आपको सामाजिक और राजनीतिक गुत्थियाँ सुलझाने में सहायता तथा सहयोग प्रदान करेगा।

श्रीवास्तवजी के समस्त उपन्यासों का

एकमात्र मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार
लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाज़ारू कहानियों व गल्पों की मृग-तृष्णा से आपको

'कहानी'

ही बचा सकती है

कथा-कहानी, गल्प-उपन्यास
पढ़ने में भी
परख, विवेक व सतर्कता की आवश्यकता है।

'कहानी'
ही इस आवश्यकता की पूर्ति कर सकती है।

इसकी विशेषताएँ हैं

(१) हिंदी के सुप्रसिद्ध कथाकारों की प्रगतिशील व मौलिक रचनाएँ।

(२) अंतरराष्ट्रीय व अंतप्रांतीय ख्यातिप्राप्त लेखकों की कहानियों का अनुवाद।

(३) कहानी, गल्प, एकांकी नाटक तथा उपन्यासों की रचना, उनकी शैली आदि विषयों पर महत्त्व-पूर्ण विवेचनाएँ।

इतनी उत्कृष्ट और लोकप्रिय पत्रिका का
वार्षिक मूल्य केवल ३) है।
एक प्रति का दाम चार आना है।

नवीन ग्राहकों से निवेदन—

१ नवंबर ४० से हमने 'कहानी' का वार्षिक मूल्य ३) और पुस्तकालयों के लिये २॥) कर दिया है। अभी हमारे पास 'कोकिला'-नामक उपन्यास की, जो गुजराती के सर्वश्रेष्ठ औपन्यासिक श्रीरमणलाल वसंतलाल देसाई की अनुपम कृति है, कुछ प्रतियाँ शेष हैं। जो महानुभाव 'कहानी' के शीघ्र ग्राहक बन जायँगे, उन्हें, ।=) पोस्टेज के लिये लेकर, हम यह पुस्तक भेंट में दे देंगे।

'कहानी' के विशेषांक पर चंद सम्मतियाँ

श्रीजैनेंद्र—
"...विशेषांक के सभी लेख मार्मिक हैं। उनके चुनने में गहरे विवेक की दृष्टि दीखती है।..."

श्रीसुदर्शन—
"...इतना कामयाब नंबर आप इतनी कम क़ीमत में कैसे दे सकते हैं, यह आश्चर्य की बात है।...मैं आपको बधाई देता हूँ।"

श्रीउपेंद्रनाथ 'अश्क'—
"...छ आने में इतनी सामग्री देना तुम्हारा ही काम है। गेट-अप, कहानियों और लेखों और फिर उनकी तरतीब—सब विचार से अंक सर्वांग-सुंदर है।..."

श्रीउषादेवी मित्रा
"...'कहानी'-पत्रिका का विशेषत्व है—अत्यल्प मूल्य में इस प्रकार उच्च कोटि की वस्तुओं को भेंट देना।..."

श्रीदेवराज उपाध्याय—
"...कथा-साहित्य-संबंधी जितनी पत्रिकाएँ निकलती हैं, उनमें 'कहानी' का स्थान सर्वश्रेष्ठ है।..."

श्रीउदयशंकर भट्ट—
"...पढ़कर चित्त उत्फुल्ल हो उठा—इस अंक की संपूर्ण सफलता के लिये आपको बधाई।"

श्रीरवींद्र—
"Cheap Centimental कहानियों से मुझे वैर है, पर इस बार का विशेषांक देखकर तबियत खुश हो गई..."

श्रीपहाड़ी—
"...'कहानी' के विशेषांक में जितनी श्रेष्ठ कहानियों का संग्रह है, उस टक्कर की एक भी कहानी व्यवसायी कहानी-पत्रों की फ़ाइलों में शायद ही मिलेगी।"

कृपया आज ही ३।=) मनीऑर्डर से भेज दें: पुस्तकालय २॥।=) भेज सकते हैं।

सरस्वती-प्रेस, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गया !

साहित्य-संदेश

का

उपन्यास-अंक

उपन्यास-अंक के कुछ लेख और उनके लेखक

उपन्यास— श्रीहजारीप्रसाद द्विवेदी
उपन्यास का शरीर-विज्ञान— श्रीगुलाबराय
उपन्यासों का स्वरूप— श्रीविनोदशंकर व्यास
कथा-साहित्य का जीवन-पृष्ठ— श्रीशांतिप्रिय द्विवेदी
हिंदी का कथा-साहित्य— श्रीपदुमलाल-पुन्नालाल बख्शी
हिंदी-उपन्यासों का प्रवृत्ति-गत विकास— श्रीगोपालप्रसाद व्यास
हिंदी-उपन्यास का भविष्य— श्रीप्रकाशचंद्र गुप्त
हिंदी-उपन्यासों के कुछ अभाव— श्रीताराशंकर पाठक
उपन्यासों का वर्गीकरण— श्रीरामचंद्र शुक्ल
हिंदी-उपन्यासों के तीन अग्रदूत—१. श्रीदेवकीनंदन खत्री, २. श्रीगोपालराम गहमरी, ३. श्रीकिशोरीलाल गोस्वामी
प्रेमचंद— श्रीगोपालप्रसाद व्यास
प्रसादजी के उपन्यास— श्रीकृष्णदेवप्रसाद गौड़
जैनेंद्रकुमार:दोदृष्टि कोणसे-१.श्रीनंदनदुलारे वाजपेयी,२ श्रीप्रभाकरमाचवे
वृंदावनलाल वर्मा : तुलनात्मक अध्ययन— श्रीज्ञानचंद्र जैन
सियारामशरणजी उपन्यासकार के रूप में— श्रीगुलाबराय
उपन्यासकार कौशिकजी— श्रीशर्मनलाल अग्रवाल
भगवतीचरण वर्मा (उपन्यासकार)— श्रीप्रकाशचंद्र गुप्त
श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव के तीन उपन्यास—श्रीचिरंजीलाल एकाकी
पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी के उपन्यास— श्रीउदयशंकर भट्ट
पं० चतुरसेन शास्त्री— श्रीबद्रीप्रसाद सारस्वत
निरालाजी के उपन्यास— श्रीगोपालप्रसाद व्यास
पंच पात्र १. श्रीनाथसिंह, २. उषादेवी मित्रा, ३. पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', ४. अनूपलाल मंडल, ५. राजा राधिकारमणसिंह
प्राचीन कथा-साहित्य— श्रीवासुदेवशरण अग्रवाल
बँगला का आधुनिक उपन्यास-साहित्य— प्रो० निर्मलचंद्र चट्टोपाध्याय
मराठी के राजनीतिक उपन्यास— श्रीप्रभाकर माचवे
गुजराती का उपन्यास-साहित्य— श्रीनटवर
अँगरेज़ी उपन्यासों का विकास— श्रीहरिवंशराय 'बच्चन'
हिंदी के प्रमुख उपन्यासकार—परिचय और उनके अनुभव—
श्रीऋषभचरण जैन, श्रीमती उषादेवी मित्रा, श्रीभगवतीचरण वर्मा, श्रीसियारामशरण गुप्त, श्रीविश्वंभरनाथजी कौशिक, श्रीवृंदावनलाल वर्मा,श्रीप्रतापनारायणश्रीवास्तव,श्रीभगवतीप्रसाद वाजपेयी,श्रीजैनेंद्र

इस अंक का मूल्य १) है। स्थायी ग्राहकों को मुफ़्त। पत्र का वार्षिक मूल्य ३) है। विद्यार्थियों से २) मात्र।

पता—मैनेजर, साहित्य-संदेश, साहित्य-रत्न भंडार, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप रहा है ! छप रहा है !!

जब वह नाम का कुबेर था

तब ?

उसके हृदय था—वह मनुष्य था। और

अब ?

जब वह नाम का कुबेर वास्तव में कुबेर हो गया, तो वह अत्याचार का जीता-जागता नमूना था—उसके हृदय था, किंतु अब वह वह न था।

मानव-मनोवृत्तियों के खिलवाड़—हृदय का हाहाकारी अंतर्द्वंद्व—
धन-कुबेरों का विचित्र अट्टहास

सभी

एक ही पुस्तक में पढ़िए—

कुबेर

[मौलिक, सामाजिक उपन्यास]
(लेखक, श्रीदेवीप्रसाद धवन 'विकल'
स० संपादक 'वर्तमान')

मूल्य लगभग १॥)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरमनी में आज़ादी

[श्रीपृथ्वीपालसिंह एम्० ए० (मिज़ोरी), जे० डी० (लंदन), एल्-एल्० बी० (लखनऊ)]

नादिरशाही

नादिरशाही का दूसरा नाम है हिटलरशाही। जरमनी में नादिरशाही की तूती बोल रही है। वहाँ आज़ादी कहाँ? जरमनी 'लीडर-स्टेट' है। मुल्क की हुकूमत और रक्षा की ज़िम्मेदारी है जरमनी के नाज़ी लीडरों पर, जिनका सरताज है अडोल्फ़ हिटलर। लीडरों का काम है हुक्म जारी करना, और जरमनी के नर-नारियों का फ़र्ज़ है उन हुक्मों पर अमल करना। नुक्ताचीनी और आज्ञा-भंग करनेवाला सहज ही हिटलर के कोप का भागी बनता और जान से हाथ धो बैठता है। ग़ज़ब तो यह कि प्रजा को किसी भी मामले में स्वतंत्रता-पूर्वक विचार प्रकट करने का अधिकार नहीं। नाज़ी लीडर ही मुल्क के असली शासक हैं, और हिटलर उनका सर्वशक्तिमान् राजा है। प्रजा लीडरों की दृष्टि में भेड़-बकरी के समान है।

नागरिकों के जीवन के हर पहलू को नाज़ी ढंग से मनमाना रँगने का अधिकार नाज़ी लीडरों को प्राप्त है। वे क्या सोचें-विचारें, क्या पढ़ें-लिखें, और अपना ख़ाली समय किस प्रकार व्यतीत करें, यह वे अपनी इच्छा के अनुसार नहीं तय कर सकते। नाज़ी लीडर उनके विचारों की उड़ान का रास्ता तय करते हैं, उनके अख़बारों और किताबों का मसाला जुटाते हैं, उनके थिएटर और सिनेमा की कहानियों में रंग भरते हैं। जरमनी के बेबस, बेचारे हिटलर और उसके गिरोहबंदों के इशारों पर ही साँस लेते और हाथ-पैर हिलाते हैं। जरमनी से आज़ादी का अस्तित्व मिट चुका है। आज़ादी का गला तो हिटलर ने उसी दिन घोट दिया था, जिस दिन देश की बागडोर उसके हाथों में आई थी।

हिटलर की नागफाँस में

सन् १९३३ में हिटलर ने जरमन - साम्राज्य का शासन अपने हाथों में लिया। जरमनी की व्यवस्थापिका सभा—'राइशटैग' का—ख़त्मा कर दिया। 'राइशटैग' हिटलर की घरेलू पंचायत बन गई, और उसका काम केवल एक ही रह गया—हिटलर के आज्ञा-पत्रों और फ़र्मानों पर अपनी मुहर लगाना। जरमनी के मज़दूर-संघ तोड़ दिए गए। मिल-मालिकों को मज़दूरों की मज़दूरी, काम करने की शर्तें, समय आदि नियत करने का अधिकार दे दिया गया। मज़दूरों से हड़ताल करने का अधिकार छीन लिया गया। कम्यूनिज़्म और यहूदियों के विरुद्ध जिहाद शुरू हो गया। नाज़ी-वाद के वैरियों का नाश कर दिया गया। जिसके प्रति हिटलर की शासन-प्रणाली के विरुद्ध होने का संदेह भी हो गया, वह मौत के घाट उतार दिया गया, या जेल में सड़ा-सड़ाकर कुत्ते की मौत मारा गया। यहूदियों के विरुद्ध तमाम क़ानून बना दिए गए।

यहूदियों पर वज्राघात

यहूदी हर पेशे से पृथक् कर दिए गए—डॉक्टरी, प्रोफ़ेसरी, इंजीनियरी आदि सभी पेशों के दरवाज़े उनके लिये बंद कर दिए गए। उनकी जायदादें ज़ब्त कर ली गईं। उन पर अनेक नियंत्रण लगा दिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गए। उनके घर-द्वार तक छीन लिए गए। जेलख़ाने यहूदियों से बसा दिए गए।

जरमनी में यहूदियों का बुरा हाल है। विदेशी यात्रियों ने सड़कों के किनारे और मकानों के दरवाज़ों पर इश्तहार लगे हुए देखे हैं—"Jews not wanted here" (यहूदियों की यहाँ ज़रूरत नहीं)। यदि कोई यहूदी यात्री आ फँसे, तो उसे न तो रहने के लिये कोई अपना मकान ही देगा, और न पेट की आग बुझाने को एक टुकड़ा रोटी ही। मर जाने पर कफ़न मिलना भी कठिन हो जायगा। यहूदी प्लेग की बीमारी समझे जाते हैं।

सामाजिक जीवन

यहूदी और आर्य-जरमन आपस में शादी-विवाह भी नहीं कर सकते। क़ानून ऐसे विवाह को रद कर सकता है। शादी की बात दूर रही, यदि यहूदी और जरमन में शारीरिक संबंध हो जाय, और क़ानून को पता लग जाय, तो अपराधियों को जेल की हवा खानी पड़े। चालीस वर्ष से कम आयु की स्त्री किसी यहूदी के यहाँ नौकरी नहीं कर सकती। कैसा ज़ुल्म है! कितनी बेइज़्ज़ती है! ग़रीब यहूदी जिस देश में पैदा हुए, जिस देश में फूले-फले, जिस देश के लिये उन्होंने १९१४ के महायुद्ध में अपना

श्रीपृथ्वीपालसिंह एम्०ए०, जे० डी०, एल्-एल्० बी०

ख़ून बहाया, आज उसी देश में वे बंदियों से बदतर ज़िंदगी बसर कर रहे हैं। बाक़ी ही कितने रह गए हैं! जो हैं, स्वतंत्रता से उठ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठ नहीं सकते, मुहब्बत और प्यार नहीं कर सकते।

आर्य - जरमनों की ज़िंदगी को भी हिटलर ने नियंत्रणों से जकड़ लिया है। बचपन से ही बच्चों को लड़ाका बनाने की तालीम देता है। नन्हे-नन्हे बालक दूध और दलिया से जब सुबह का नाश्ता करते हैं, तो हिटलर के बताए हुए लड़ाई के गाने गाते हैं। स्त्रियाँ रण-संगीत की लोरियाँ सुना-सुनाकर बच्चों को सुलाती हैं। वे ऐसा करने के लिये मजबूर हैं।

जरमनी की स्त्रियों को अपने इच्छानुसार काम करने और देश के शानदार पेशों में हिस्सा लेने की स्वतंत्रता नहीं। हिटलर ने फ़र्मान जारी कर दिया है कि औरतों का काम है बच्चा पैदा करना, चूल्हा-चक्की सँभालना और गिरजाघरों की ख़ाक छानना। बस।

धार्मिक स्वतंत्रता

जरमनी का मज़हब धीरे-धीरे नाज़ीवाद या नेशनल सोशलिज़्म हुआ जा रहा है। धार्मिक मामलों और गिरजाघरों की देख-भाल नाज़ी सरकार करती है। मज़हबी मिनिस्टर हैं डॉक्टर केरेल। उन्होंने एक राइश - चर्च-कमेटी बनाई है, जिसके सदस्य अधिकतर पादड़ी ही हैं। इस कमेटी के सदस्य डॉक्टर केरेल नियुक्त करते हैं। सदस्यों को पृथक् करने का अधिकार भी उन्हें प्राप्त है। डॉक्टर केरेल ने एक बार जरमनी के कैथोलिक पादड़ियों के नाम एक पत्र भेजा था। उसमें लिखा था—

"अगर तुम ख़ुशी से नाज़ी सरकार और उसके लीडर हिटलर के प्रति इज़्ज़त और आजिज़ी का भाव अपने अनुगामियों में पैदा करने को तैयार हो, जिससे वे बिना आनाकानी किए हिटलर की आज्ञाओं का पालन करें, तो जरमनी और प्रशा की सरकारें तुम्हारी धार्मिक स्वतंत्रता का ख़याल रखने को तैयार हैं।"

बैल्डर वान शिराश ने तो यह बात स्पष्ट रूप से कह दी है कि जरमनी का मज़हब नाज़ीवाद या नेशनल सोशलिज़्म है, और उसका मसीहा है हिटलर।

ख़ुद हिटलर आज यह तय करता है कि जरमनी किन मज़हबी उसूलों में यक़ीन लाए, और वे मज़हबी उसूल क्या होंगे। जरमनी का मज़हब आज सिखाता है कि "रक्तपात से ईश्वर मिलता है।" "वैरियों के रक्त से अपनी प्यास बुझाना प्रत्येक जरमन का धर्म है।" "नाज़ीवाद का संसार में प्रचार करना प्रत्येक जरमन का कर्तव्य है।" जरमनी इस नए धर्म के सामने सिर झुकाता है। जो विरोध करता है, वह मार्टिन निमोलर की तरह जरमनी के नरकों में सड़ा-सड़ाकर मारा जाता है। यह है नाज़ी जरमनी का नया धर्म!

जरमनी के अख़बार

हिटलर ने लोगों के मुँह में ताले डाल दिए हैं, और हाथों में हथकड़ियाँ। न वे बोल सकते हैं, और न लिख। बोलने और लिखने का काम डॉक्टर गोबल्स करते हैं।

जरमनी के अख़बारों के मालिक तो अनेक हैं, लेकिन उनकी नीति एक ही है। सभी अख़बार एक स्वर से नाज़ीवाद का गुण-गान करते हैं। नाज़ी सरकार ने एक राष्ट्रीय समाचार-पत्र-संघ बनाया है। अख़बार निकालने या अख़बारनवीसी करने का अधिकार केवल उन्हीं व्यक्तियों को है, जो इस संघ के सदस्य हैं। और, इस संघ के सदस्य वे ही हैं, जिन पर नाज़ी सरकार की कृपा-दृष्टि है। जरमनी के प्रोपेगेंडा मिनिस्टर हैं डॉक्टर गोबल्स, और इन्हीं के हाथों में अख़बारों की कुंजी है। लगभग ३१० अख़बार छपते हैं जरमनी में। ख़बरें, लेख तथा संपादकीय नोट आदि बिना डॉक्टर गोबल्स की आज्ञा के नहीं छप सकते। ख़बरों में उलट-फेर कर देने का,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिलकुल ही बदल देने या दबा देने का डॉक्टर गोबल्स को अधिकार है। संपादकीय नोटों में विचार डॉक्टर गोबल्स के होते हैं, और भाषा संपादकों की। रात को दिन और दिन को रात—काले को सफ़ेद और सफ़ेद को काला बना देना डॉक्टर गोबल्स के बाएँ हाथ का खेल है। इसी का नाम प्रोपेगैंडा है। गोबल्स क़ानून, प्रोपेगैंडा, रेडियो, अख़बार, सिनेमा, थिएटर, संगीत-कला तथा लिखने-पढ़ने, सोचने-विचारने के साधनों पर भी शासन करता है। उसे अधिकार है, किसी भी समाचार-पत्र का प्रकाशन बंद कर दे, किसी भी नाटक का अभिनय रोक दे, किसी को भी रेडियो पर बोलने से वंचित कर दे, बाहर से आनेवाली किताबों और अख़बारों पर नियंत्रण लगा दे, या किसी भी स्कूल, अजायब-घर या अन्य संस्था में ताला डाल दे। वह किसी को भी अपने इच्छानुसार दंड दे सकता है। उसके हुक्म की फ़रियाद नहीं। हिटलर ने उसे बड़े अधिकार दे रक्खे हैं।

प्रचार-कार्य

गोबल्स के निरीक्षण में नाज़ीवाद का प्रचार होता है, और विचारों की स्वतंत्रता का ख़ून। जरमनी के सभी लेखक नाज़ी-उसूलों के प्रचार को लक्ष्य बनाकर नाटक, लेख और कहानियाँ लिखते हैं। उनकी लिखी हुई चीज़ें गोबल्स के आदमी बड़े ग़ौर से पढ़ते और फिर उनके प्रकाशन की आज्ञा देते हैं।

प्रतिवर्ष लगभग ३,००० नाटकों की छान-बीन की जाती है। गोबल्स स्वयं इस बात का अनुमान लगाता है कि उन नाटकों के अभिनय से जनता पर क्या असर पड़ता है। जो नाटक नाज़ीवाद फैलाने में ख़ूबी से कामयाब होते हैं, वे जरमनी के कोने-कोने में खेले जाते हैं। इस प्रकार जरमनी के नर-नारियों के दिमाग़ नाज़ी रंग में रँगे जाते हैं। जरमनी के लोग भले ही ऐसे नाटक और ऐसी कहानियाँ पढ़ना पसंद करते हों, जिनमें उनकी रोज़ाना ज़िंदगी की झलक हो, मुहब्बत और प्यार की चर्चा हो, लेकिन उन बदनसीबों को सिर्फ़ वे ही चीज़ें दी जाती हैं, जिनसे हिटलर की शक्ति और शान बढ़े। लगभग तीस चलती-फिरती थिएट्रिकल कंपनियाँ आज जरमनी के कोने-कोने में नाटकों का अभिनय करके नाज़ीवाद का प्रचार कर रही हैं।

कला और विज्ञान

कला और विज्ञान के हाथ-पैर भी नाज़ीवाद की हथकड़ियों और बेड़ियों से जकड़ दिए गए हैं। जरमनी में कला और विज्ञान का एक ही उद्देश्य है—नाज़ी नीति की उन्नति। वैज्ञानिक अपने इच्छानुसार खोज नहीं कर सकते। जो ऐसा करते हैं, वे 'अनार्य' समझे जाते हैं, और उनका वही हश्र होता है, जो अलबर्ट आइंस्टीन का हुआ। नाज़ी सरकार बेकार की खोजों में विश्वास नहीं करती। जरमनी की जो आवश्यकताएँ हैं, उनकी पूर्ति के लिये ही वैज्ञानिक खोज करते हैं। उदाहरणार्थ—यदि नाज़ी सरकार को घर के घास-कूड़े से ज़हरीली गैस तैयार कराना है, तो वह वैज्ञानिकों को अपनी आवश्यकता बता देगी, और उस घड़ी से वैज्ञानिकों का कर्तव्य होगा कि वे अपनी सारी दिमाग़ी ताक़त घास-कूड़े से ज़हरीली गैस तैयार करने में लगा दें। नाज़ी क़ानून के अनुसार वे अपना समय किसी अन्य उद्देश्य-हीन खोज में नहीं लगा सकते। यही दशा कला और संगीत की दुनिया में भी है।

क्या पढ़ाते हैं ?

जरमनी के स्कूलों और कॉलेजों में अध्यापक और प्रोफ़ेसर केवल डॉक्टर गोबल्स के बताए हुए सबक़ पढ़ाते हैं। गोबल्स को अधिकार है कि लड़कों के कोर्स की जिस किताब को नापसंद करें, बदल,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दें, या बिलकुल ही निकाल दें। जरमनी में जो कुछ भी शिक्षा दी जाती है, उसमें नाज़ीवाद का प्रोपेगेंडा भरा रहता है। प्रोफ़ेसरों को स्वतंत्रता नहीं कि वे विद्यार्थियों को अपने इच्छानुसार सही बातें पढ़ा सकें। इतिहास के अध्यापक के लिये आवश्यक है कि वे विद्यार्थियों को बताएँ—

१—पुराने ज़माने में जरमनी की सभ्यता किस ऊँचे पाए की थी।

२—अंतरराष्ट्रीयता के सपने जरमनी के लिये कितने घातक साबित हुए, और राष्ट्रीयता तथा ख़ून की पवित्रता के भाव जरमनी की उन्नति के लिये कितने आवश्यक हैं?

३—संसार के इतिहास में जरमन-जाति के उन नर-नारियों का क्या स्थान है, तथा उनका जरमनी से कैसा अटूट संबंध है, जो वास्तव में जरमन हैं, और आज संसार के विभिन्न देशों में बसे हैं।

४—जरमन-जाति की वीरता का वह पुराना आदर्श कैसा ऊँचा है, जिसके अनुसार जरमनी सदैव अपने वैरियों से निडर होकर मोर्चा लेता रहा है।

५—दूसरी जातियों के घुल-मिल जाने से और उनके ख़ून की मिलावट से जरमनी की आर्य-जाति का किस प्रकार ह्रास हुआ।

६—जरमनी के लोगों का इटली, फ्रांस और स्पेन आदि देशों में जाकर बसना, आर्य-जरमनों के बहुमूल्य तथा पवित्र ख़ून की मिलावट के कारण उन देशों की उन्नति होना तथा आर्य-जरमनों के पवित्र ख़ून की भेंट से वंचित रह जाने के कारण रूस और बाल्कान देशों में भयंकर कमज़ोरी आ जाना।

७—गत बीस वर्षों में हिटलर के नेतृत्व और नाज़ीवाद की सफलता ने जरमनी की शक्ति का संसार में कैसा दबदबा क़ायम कर दिया।

जरमनी में शिक्षा इस ढंग से दी जाती है—चाहे इतिहास हो या राजनीति, दर्शनशास्त्र हो या अर्थशास्त्र, प्रोफ़ेसर नाज़ीवाद ज़रूर पढ़ाते हैं। जिन प्रोफ़ेसरों और विद्वानों से यह भय था कि वे शिक्षा और ज्ञान को नाज़ियों के नियंत्रण में न आने देंगे, उनके मुँह हिटलर ने हमेशा के लिये बंद कर दिए। ऐसे कितने ही हैं। आप उन्हें ख़ूब जानते हैं—शमसमैन, अलबर्ट आइंस्टीन, रिचर्ड विलसटैटर, फ़्रिट्ज़ हेबर—नोबुल-प्राइज़-विजेता, जैकब वासरमैन, रेमार्के तथा स्टीफ़न ज़्विग—मशहूर चिकित्सक, आगस्ट मेयर और डॉक्टर लिबिग—सुप्रसिद्ध कला-पारखी। एक नाम हो, तो बताऊँ। सैकड़ों डॉक्टर, फ़िलॉसफ़र, इंजीनियर, चित्रकार और संगीत के आचार्य हिटलरशाही के शिकार हो चुके हैं।

एक अवसर पर डॉक्टर गोबल्स ने कहा था—"जिसको अपनी जान न प्यारी हो, और जो जेल जाने से न डरता हो, उसे हमारी नीति के ख़िलाफ़ टीका-टिप्पणी करने की स्वतंत्रता प्राप्त है।" डॉक्टर गोबल्स ने जो कुछ कहा था, सच ही कहा था। जरमनी में बड़ी आज़ादी है—बड़ी स्वतंत्रता है। और, उस आज़ादी या स्वतंत्रता का मूल्य भी ख़ासा है—फाँसी या कारावास!

अंतःपुर का छिद्र

[लेखक, सर्वश्रेष्ठ नाटककार पं० गोविंदवल्लभ पंत]

पंतजी का नया नाटक। बौद्धकालीन। पढ़िए भी, और खेलिए भी। मूल्य ।=)। सजिल्द ॥=)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ा पापी कौन ?

(सामाजिक नाटक)

[श्रीयुत सेठ गोविंददास]

(गतांक से आगे)

चौथा अंक

स्थान—रमाकांत के बँगले का कमरा

समय—संध्या

[कमरा उसी प्रकार सजा हुआ है, जैसा दूसरे अंक में था, परंतु इस समय उसमें कोई नहीं है। नेपथ्य में मोटर खड़े होने का शब्द होता है, और कुछ क्षणों में, दाहनी ओर के दरवाज़े से, रमाकांत और रंगलाल का प्रवेश। दोनो व्यक्ति ठंडे कपड़े की शेरवानी और चूड़ीदार पाजामा पहने हैं। दोनो के सिर पर गोल पगड़ी और गले में चुना हुआ दुपट्टा है। रमाकांत आते ही पगड़ी उतारकर एक टेबिल पर रख देते और सोफ़े पर बैठते हैं।]

रमाकांत—(रूमाल निकालकर गले का पसीना पोंछते हुए) ओह ! एप्रिल के अंत में ही इतनी गरमी हो गई। रंगलालजी, पंखा तो खोल दीजिए।

[रंगलाल उठकर पंखे का स्विच खोलता है, और पंखा चलने लगता है।]

रंगलाल—अभी आप मीटिंग से आ रहे हैं, और वह भी भाषण देकर, इसलिये और भी अधिक गरमी लग रही है। (कुछ ठहरकर) मीटिंग में बहुत भीड़ थी, बाबू साहब ! सारा टाउनहॉल खचाखच भरा था।

रमाकांत—और कल श्मशान में क्या कम भीड़ थी ? सारा नगर-का-नगर उलट पड़ा था।

रंगलाल—ऐसे वेश्यागामी और शराबी का इतना आदर, बाबू साहब !

रमाकांत—वह आदर उनका नहीं, उनके वंश का था, रंगलालजी ! आप जानते हैं, त्रिलोकीनाथजी का घर इस नगर का सबसे प्राचीन रईसी घर है। उसने इस नगर और प्रांत का बड़ा उपकार किया है। मुझे तो दुःख है रंगलालजी, उस घर का अब द्वार ही बंद हो गया। कोई बच्चा भी नहीं, और किसी को उन्होंने गोद भी नहीं लिया। (सिगरेट-केस जेब से निकालकर एक सिगरेट जलाते हुए) अच्छा हुआ.....(माचिस बुझ जाती है, अतः दूसरी बार जलाते हुए) अच्छा हुआ.....(फिर वही होता है, अतः तीसरी बार जलाते हुए) अच्छा हुआ रंगलालजी, मैं यहाँ था। आप नहीं समझते कि कल मेरे श्मशान जाने और आज की सभा के सभापति होने के कारण जगन्नाथ-रामनाथ की कार्यवाही के संबंध में यदि किसी को मुझ पर कोई संदेह भी होगा, तो वह निकल जायगा।

रंगलाल—(सिर और हाथ हिलाते हुए) एक तो संदेह करनेवाले कदाचित् इने-गिने होंगे, और फिर आपके श्मशान तथा सभा में जाने के अतिरिक्त आपने जो भाषण दिया, उससे तो किसी के हृदय में संदेह का लेश भी नहीं रह सकता। ओह ! आप तो भाषण देते-देते रो तक पड़े। आँखें भर आई हों, एक-दो आँसू निकले हों, यह नहीं, यहाँ तक हुआ कि आपको आँखों में रूमाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगाना पड़ा, और उसके पश्चात् भी कुछ क्षणों तक आपके मुख से एक शब्द नहीं निकल सका। जब बाद में भी आपने बोलना आरंभ किया, तब भी आपका गला कितना भारी था !

रमाकांत—आप जानते हैं रंगलालजी, मेरा हृदय कितना कोमल है, किसी का दुःख मैं देख नहीं सकता। आपको मालूम है कि कल श्मशान में बार-बार हृदय को रोके रहने पर भी कितनी बार मेरी आँखों से आँसू निकले ! मैं जानता हूँ, सभ्य समाजों में आजकल इस प्रकार का रोना-गाना अच्छा नहीं समझा जाता, और सार्वजनिक सभा में तो यह और भी भद्दा लगता है, पर मैं क्या करूँ ? (कुछ ठहरकर) मैं सच कहता हूँ रंगलालजी, त्रिलोकीनाथ के प्रति मेरे हृदय का सारा ईर्ष्या-द्वेष निकल गया। कल से ही मेरा हृदय उनके लिये आठ-आठ आँसू रो रहा है।

रंगलाल—पहले भी आपके हृदय में उनके लिये ईर्ष्या-द्वेष कहाँ था ? आप यदि उनके विरुद्ध कुछ कर भी रहे थे, तो चेंबर की प्रतिष्ठा तथा उनके यहाँ धार्मिक संस्थाओं और निर्धन स्त्री-पुरुषों का जो रुपया जमा है, उनके हित के लिये।

रमाकांत—(सँभलकर) हाँ-हाँ, यह तो है ही। परंतु मैं भी मनुष्य ही हूँ, रंगलालजी, देवता तो हूँ नहीं। मैंने यह बात इसलिये कही कि कदाचित् पहले अनजान से उनके लिये मेरे मन में कभी-कभी ईर्ष्या - द्वेष उत्पन्न हो जाता रहा हो, पर अब तो मेरा हृदय उनके प्रति शुद्ध, नितांत शुद्ध है।

[कुछ देर तक निस्तब्धता रहती है।]

रंगलाल—आज बारह बजे रात की गाड़ी से ही आप शिमले जायँगे ?

रमाकांत—जाना ही पड़ेगा, रंगलालजी, परसों वाइसराय की पार्टी में सम्मिलित हुए विना कैसे रहा जा सकता है।

रंगलाल—शक्कर और नमक के सौदों का कुल हिसाब तैयार है।

रमाकांत—हाँ, वह दो दिनों के इस झंझट के कारण देखा ही नहीं जा सका। (हाथ की घड़ी देखते हुए) अभी तो बहुत समय है, अभी देख लेता हूँ।

रंगलाल—छोटा-सा तो हिसाब ही है, बाबू साहब, चार-छ लीक एक ओर हैं, और चार-छ दूसरी ओर।

रमाकांत—अभी देख लेता हूँ। (कुछ ठहरकर) सारा सौदा कट गया न ?

रंगलाल—जी हाँ, सब। एक बोरा भी शक्कर या नमक का जमा या नावें पासे में बालांस नहीं है।

रमाकांत—(सिगरेट को 'ऐशट्रे' में बुझाते हुए) चलिए, तो फिर 'राइटिंग टेबिल' पर ही चला जाय।

रंगलाल—बहुत अच्छी बात है।

[दोनो उठते हैं। रमाकांत ऑफ़िस-चेयर पर बैठकर टेबिल-लैंप जलाते हैं, और रंगलाल उन्हीं के निकट एक दूसरी कुर्सी पर बैठते हैं। रमाकांत चश्मा उतारकर टेबिल पर रखते हैं, और रंगलाल अपना चश्मा लगाकर, जेब से एक काग़ज़ निकाल रमाकांत को देते हैं। रमाकांत कुछ झुककर काग़ज़ देखते हैं। कुछ क्षणों तक निस्तब्धता रहती है।]

रमाकांत—तो अपनी दूकान के नाम पर जो शक्कर बेची गई, और नमक ख़रीदा गया, उसके नुक़सान का लगभग बाईस हज़ार रुपया काटकर दोनो सौदों में पाँच लाख के कुछ ऊपर बचत रही।

रंगलाल—जी हाँ, और यह केवल दो महीने के व्यापार में। इस बार अच्छा पाँसा पड़ गया, बाबू साहब, दो महीने में इतनी बड़ी रक़म कभी नहीं बची।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रमाकांत—भगवान् चाहेंगे, तो अब इसी प्रकार के पाँसे पड़ेंगे, रंगलालजी। (कुछ ठहरकर) इस संबंध में बाज़ार में क्या चर्चा है ?

रंगलाल—साधारण लोग तो यही कहते हैं कि आपने शक्कर और नमक दोनों में नुक़सान उठाया, पर हाँ, चार-छ समझदार लोगों की दूसरी बात है।

रमाकांत—उँह, इन चार-छ समझदारों की मैं क्या परवा करता हूँ।

रंगलाल—(कुछ ठहरकर) क्यों, बाबू साहब, इस बजट में शक्कर पर ड्यूटी बढ़ेगी, और नमक पर कम होगी, यह आपको किसी सरकारी अफ़सर से मालूम हुआ होगा।

रमाकांत—(कुछ चकपकाकर, पर फिर सँभलकर) नहीं-नहीं, रंगलालजी, ऐसा कहीं हो सकता है। मैंने अंदाज़-भर लगाया था।

[रंगलाल रमाकांत की ओर देखता है, पर रमाकांत दृष्टि दूसरी ओर कर लेता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

रमाकांत—सारा सौदा बनवारीलालजी के मार्फ़त ही हुआ न रंगलालजी ?

रंगलालजी—जी हाँ, उन्हीं के।

रमाकांत—उनको तो यथेष्ट दलाली मिल गई होगी।

रंगलाल—लगभग दस हज़ार रुपए के।

रमाकांत—(चेक-बुक निकालकर) पाँच लाख के नफ़े पर दो परसेंट के हिसाब से दस हज़ार होता है, पर सुन्न ठीक नहीं, इसलिये यह लीजिए, ग्यारह हज़ार एक सौ ग्यारह का चेक आपके लिये है। (चेक लिखता है।)

रंगलाल—(प्रसन्न होकर, परंतु प्रसन्नता छिपाते हुए) इतना बड़ा सिरोपाव बाबू साहब !

रमाकांत—(लिखते-लिखते ही) आपने कहा न कि दो महीने में इतनी बड़ी रक़म कभी नहीं बची। (चेक रंगलाल को देते हुए, जो खड़े होकर, दोनों हाथ से अभिवादन कर, चेक ले पुनः कुर्सी पर बैठता है।) रंगलालजी, आपका और मेरा आज दस वर्ष से संबंध है। आपने मेरा काम पूरी ईमानदारी से किया है। यदि आप इसी प्रकार ईमानदार रहे, और मैं करोड़पती हुआ, तो आपको भी लखपती बना दूँगा। (उँगली उठाकर दिखाते हुए) मुझसे किसी का पेट कभी नहीं काटा जायगा।

रंगलाल—यह आपकी मुझ पर अत्यधिक कृपा है।

[कुछ देर तक निस्तब्धता रहती है।]

रमाकांत—और देखिए, इस वर्ष का अपना बजट तो अक्षय तृतीया से बनेगा न ?

रंगलाल—जी हाँ, उसी दिन से।

रमाकांत—गत वर्ष जितना रुपया दान में ख़र्च हुआ था, उससे इस वर्ष के बजट में चौगुनी रक़म रखिए।

रंगलाल—बहुत अच्छा, बहुत अच्छा।

[कुछ देर तक फिर निस्तब्धता रहती है।]

रमाकांत—(उठते हुए) तो अब मैं हाथ-मुँह धोकर कुछ खा लेता हूँ।

रंगलाल—(उठकर) अवश्य, अवश्य।

रमाकांत—देखिए, एक बात मैं भूल गया।

रंगलाल—आज्ञा दीजिए।

रमाकांत—(खड़े-खड़े ही) त्रिलोकीनाथ के गाँव के स्कूल का उद्घाटन करना कमिश्नर साहब ने स्वीकार कर लिया है। तारीख़ १० मई उन्होंने नियुक्त की है। आपका मकान तो तैयार है न ?

रंगलाल—जी हाँ, बिलकुल तैयार है।

रमाकांत—और क़र्ज़े की जो छूट देना है, उसका चिट्ठा ?

रंगलाल—वह पूरा तैयार नहीं है, पर दो-चार दिन में हो जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रमाकांत—इस स्कूल के उद्घाटन-उत्सव की ख़ूब डुग्गी पिटवाइए। चारो ओर के गाँवों में अभी से विज्ञापन बटना और मुनादी होना चाहिए, जिसमें हज़ारों आदमी जमा हों। स्थानीय पत्र और एसोसिएटेड-प्रेस के प्रतिनिधि को भी ले चलने का प्रबंध कर लीजिए। कमिश्नर साहब के लिये रिफ्रेशमेंट की भी बहुत अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए। सारे कार्य में हज़ार रुपए तक ख़र्च कर डालिए।

रंगलाल—सारा प्रबंध आज्ञानुसार ही कर दिया जायगा।

रमाकांत—मैं भी चार दिनों के भीतर ही शिमले से लौट आता हूँ। (कुछ ठहरकर) अच्छा देखिए, आप कुछ देर और ठहर जाइए। हाथ-मुँह धो तथा भोजन कर मैं अभी आता हूँ; कदाचित् और कोई बात स्मरण आ जाय।

रंगलाल—बहुत अच्छी बात है, मैं बैठा हूँ।

रमाकांत—(बाईं ओर जाते-जाते फिर रुककर) हाँ, चैंबर के प्रेसिडेंट का चुनाव १५ मई को है न?

रंगलाल—जी हाँ।

रमाकांत—अब तो मेरे चुनाव में कोई कठिनाई न होगी?

रंगलाल—अब आपके विरुद्ध कोई खड़ा ही न होगा।

[रमाकांत का बाईं ओर के दरवाज़े से प्रस्थान। रंगलाल रमाकांत के जाने के पश्चात् चेक को जेब से निकाल, टेबिल-लैंप के पास ले जाकर ध्यान-पूर्वक देखता है, फिर उलट-पुलट-कर देखता है। बार-बार उलट-पुलटकर देख, उसे जेब में रख टेबिल-लैंप बुझा देता है। फिर प्रसन्नता-पूर्वक मुस्किराता और इधर-उधर घूमने लगता है। फिर एक कुर्सी पर बैठकर धीरे-धीरे ओठों से सीटी बजाने लगता है। दाहनी ओर के दरवाज़े से बनवारीलाल का प्रवेश। वह सफ़ेद सूती कुरता और चुनी हुई धोती पहने है। सिर पर गोल पगड़ी लगाए है, और गले में मोतिया ढंग से चुना हुआ श्वेत दुपट्टा डाले है। उसके मुख पर अत्यधिक उदासी छाई हुई है।]

रंगलाल—(खड़े होकर) आओ, बनवारी-लाल, कहो, एकाएक कैसे?

बनवारीलाल—मैंने सुना, बाबू साहब आज शिमला जा रहे हैं, इसीलिये मिलने चला आया। बँगले पर हैं न?

रंगलाल—हाँ-हाँ, हाथ-मुँह धोने और भोजन करने गए हैं। आते ही हैं। बैठो-बैठो।

[दोनो दो कुर्सियों पर बैठ जाते हैं। कुछ देर तक निस्तब्धता रहती है।]

रंगलाल—(बनवारीलाल की ओर देखते हुए) बहुत ही उदास दिखाई देते हो, बनवारीलाल?

बनवारीलाल—इस नगर का पुराना रहनेवाला आज कौन उदास न होगा, रंगलाल? पुरानी बातों के स्मरण, पुराने रहनेवालों को, आज के-से अवसर पर कितना व्यथित कर देते हैं, इसका अनुभव तुम्हें नहीं हो सकता। इस दृष्टि से तुम्हारी और मेरी लगभग बराबर अवस्था होते हुए भी तुम अपने को तरुण और मुझे वृद्ध कह सकते हो।

रंगलाल—हाँ-हाँ, त्रिलोकीनाथ की मृत्यु के कारण।

बनवारीलाल—उनके स्वर्गवास से आज हमारे नगर के सबसे प्राचीन और प्रतिष्ठित घराने का दरवाज़ा बंद हो गया। रंगलाल, तुम्हें इस कुल का पूरा वृत्त नहीं मालूम।

रंगलाल—हाँ, मैं तो अभी यहाँ थोड़े-ही दिनों से आया हूँ, बनवारीलाल, १२-१३ वर्ष हुए होंगे।

बनवारीलाल—पर मुझे मालूम है, रंगलाल! मैं यहीं पैदा हुआ, यहीं बड़ा हुआ; मेरी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी क्या, मेरे पूर्वजों तक की हड्डियाँ इस कुल के नमक से पुष्ट हुई हैं। इस कुल के भी दिन थे, रंगलाल ! इनकी सभ्यता, इनकी संस्कृति, एक-एक बात के लिये क्या कहा जाय ? एक-एक जन्म और एक-एक विवाह में इनके यहाँ लाखों रुपया ख़र्च हुआ है। परोपकार का भी एक ऐसा काम नहीं, जिसमें इनके वंश से सहायता न मिली हो। चाँदी-सोने का नहीं, जवाहरात तक का इनके घर से दान होता था। और, त्रिलोकीनाथ भी कैसे सभ्य, कैसे सुसंस्कृत, कैसे दयालु, कैसी टेकवाले थे। हमारे नगर के भूषण थे, रंगलाल, सच्चे भूषण !

रंगलाल—अब तक तो तुम उनके वंश की बड़ाई कर रहे थे, इसलिये मैं कुछ न बोला, क्योंकि मैं पुरानी बातें जानता ही नहीं, पर अब जब तुम एक वेश्यागामी और शराबी, पापी त्रिलोकीनाथ की भी बड़ाई करने पर उतारू हो गए, तब तो मुझसे बोले बिना नहीं रहा जाता, बनवारीलाल ?

बनवारीलाल—(चौंककर ग़ौर से रंगलाल का मुख देखते हुए) क्या कहा, पापी ?

रंगलाल—हाँ, तुमसे तो मैं सभी कुछ कह सकता हूँ ?

बनवारीलाल—हाँ-हाँ, पर तुम भूल कर रहे हो रंगलाल !

रंगलाल—कैसी भूल ? क्या तुम वेश्या-गमन और मद्य-पान को पाप नहीं समझते ?

बनवारीलाल—अवश्य समझता हूँ। परंतु उनमें दुर्गुण ही थे, गुण न थे, यह बात तो नहीं है। निर्दोष संसार में कौन है ? इन दोषों का तो उन्होंने पूरा-पूरा फल पा लिया—अपने घर को चौपट कर दिया ; इतनी कम अवस्था में अपना शरीर खो बैठे। परंतु इन दो दोषों के कारण उनके अनेक सद्गुण नहीं भुलाए जा सकते। इन दो दुर्गुणों के रहते हुए भी वह हमारे नगर के भूषण थे, सच्चे भूषण। उनके पश्चात् इस पुराने ढंग का सभ्य, सुसंस्कृत, दयालु और टेकवाला कोई रईस हमारे नगर में नहीं रहा।

रंगलाल—मैं तो उन्हें इस नगर का भूषण न मानकर दूषण मानता हूँ बनवारीलाल, और इन दो दुर्गुणों को संसार के सबसे बड़े पाप, अतः उन्हें सबसे बड़ा पापी।

बनवारीलाल—धर्म और पाप की तो बड़ी सूक्ष्म विवेचना है। कौन दुर्गुण छोटे पाप हैं, और कौन बड़े, यह भी कहना बहुत कठिन है। परंतु यदि तुम त्रिलोकीनाथजी को अनेक सद्गुणों के रहते भी पापी मानते हो, तब तो यह कहना कठिन होगा कि त्रिलोकीनाथ और रमाकांत-जी, दो में से कौन बड़ा.....कौन बड़ा.....कौन बड़ा पापी.....।

यवनिका-पतन

(समाप्त)

सफ़ेद बालवालो ! ख़िज़ाब छोड़ो

हज़ारों आदमियों द्वारा परीक्षित तथा सत्य प्रमाणित ख़िज़ाब नहीं, एक तेल है। पक्का बाल खूँटी से काला पैदा होकर यदि स्थायी काला न रहेगा, तो दूना दाम वापस की शर्त। दाम ५) रु० ४० से ऊपर उमर के लिये ठीक।

बाल काला-स्टोर्स, पो० कन्सी मिसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईशानवर्मन

(आलोचना)

[श्रीयुत गोपीचंद्र मिश्र शास्त्री, साहित्याचार्य]

यद्यपि हिंदी-साहित्य में दृश्य-काव्य के सुव्यवस्थित श्रीगणेश को साठ वर्ष से अधिक नहीं हुए, तदपि इस स्वल्प समयावधि के अंदर इस क्षेत्र में पर्याप्त उन्नति हो चुकी है। संस्कृत के रूपक-साहित्य से प्रेरित होकर महाकवि देव आदि ने भाषा में दृश्य-काव्यों की रचना का प्रयास अवश्य किया, किंतु वह उस समय की साहित्यगोष्ठियों में अधिक पनप न सका। स्वर्गीय भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र के ही कर-कमलों से हिंदी-जगत् में रूपक-प्रासाद का सुदृढ़ शिलान्यास हुआ। काल-क्रम से 'प्रसाद' की 'चंद्रगुप्त'-सरीखी अमर रचनाओं ने रूपक-साहित्य का आधुनिक दृष्टि से अतिशय परिष्कार और परिवर्द्धन कर उसमें नवीन जीवन डाल दिया। इस अभिनव शैली में यद्यपि नाट्यशास्त्र के अनेक प्राचीन नियमों का उल्लंघन हुआ, तब भी उसमें एक ऐसी सजीवता, सहज रमणीयता एवं आधुनिकता थी, जिसके कारण उक्त प्राक्तन सरणि का अतिक्रमण 'भूषणं न तु दूषणम्' हो गया। प्रस्तुत 'ईशानवर्मन'-नामक नाटक इसी अभिनव शैली का एक देदीप्यमान उदाहरण है। इसके लेखक हैं स्वनाम-धन्य मिश्रबंधु-द्वय अर्थात् रावराजा डॉक्टर श्याम-बिहारी मिश्र और रायबहादुर श्रीशुकदेवबिहारी मिश्र बी० ए०।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है, जैसा इसके नाम से स्पष्ट है। प्रथम सहस्राब्दी के मध्यकाल में भारत पर हूणों का आक्रमण हुआ। हूणों की अमानुषिक क्रूरताओं के आगे उस समय न केवल एशिया, वरंच योरप के अनेक देशों ने भी मस्तक टेक दिए थे। किंतु भारतीय सम्राट् स्कंद-गुप्त ने अपने दो लाख सैनिकों के बल पर ही हूणों के तीन लाख सैन्यदल को रौंद डाला। हूणों के सहायक सासानी और कुशान बादशाह भी उस समर में खेत रहे। सम्राट् स्कंदगुप्त उस समय युवराज थे, और उनकी अवस्था केवल १८ वर्ष की थी। इतिहास बतलाता है कि स्कंदगुप्त के अतिरिक्त ऐसा पराक्रमी सारे योरप या एशिया में न हुआ, जो तात्कालिक हूणों को पराजित करता। सम्राट् स्कंदगुप्त की तीसरी पीढ़ी में प्रथम बालादित्य हुए, जिन्होंने बौद्धमत ग्रहण किया। इस मत-परिवर्तन के कारण इनकी हिंदू प्रजा एवं सेना में चिरस्थायी विक्षोभ का बीजारोपण हुआ। फलतः बुधगुप्त के अनंतर मागध गुप्तों में पारस्परिक विघटन होकर इनकी एक शाखा गौड़गुप्त के नाम से उत्तरी बंगाल में स्थापित हुई। गुप्त-वंश के इस विघटन से लाभ उठाकर, त्वरमाण-नामक हूण-सेनानी ने भारत पर पुनः आक्रमण कर ग्वालियर तक के प्रदेश को अपने अधिकार में ले लिया। एक वर्ष पश्चात् उसने मालवे पर आक्रमण किया। गुप्त-सम्राट् द्वितीय बालादित्य उस काल सिंहासनासीन थे। उन्होंने महती हूण-सेना से युद्ध करने में कल्याण की आशा न रख मगध छोड़ बंगाल की ओर प्रस्थान किया। सं० ५११ के लगभग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरमाण वाराणसी में मर गया। तदनंतर उसका पुत्र मिहिरकुल गद्दी पर बैठा। बंगाल भाग जाने पर भी बालादित्य को इसने अपना करद भूपाल बनाया। अपनी पवित्र मातृभूमि में इस असभ्य राजसत्ता के उल्लंग-नृत्य से संतप्त हो कुछ हिंदुओं ने भारतीय स्वतंत्रता का प्रयास आरंभ किया। कान्यकुब्ज - नरेश ईशानवर्मन इसके नेता हुए। इनका वंश मौखरि कहलाता था। 'सशेखरैर्मौखरिभिः कृतार्चनम्' इत्यादि बाण भट्ट का कथन इन्हीं के वंश से संबंध रखता है। इस हिंदू-पुनरुत्थान के कार्य में धर्मदोष-नामक एक मध्यभारतीय क्षत्रप ने ईशानवर्मन को पूर्ण सहयोग दिया। इन दोनो ने मिलकर थानेश्वर के जगत्सेठ विष्णुवर्द्धन वैश्य को इस आंदोलन का अग्रणी नियत किया। इस सशस्त्र आंदोलन के प्रभाव से पहले मालवा-प्रांत स्वतंत्र हुआ। उधर बंगाल में बालादित्य ने कर देना बंद कर दिया। मिहिरकुल उन्हें जीतने ससैन्य बंगाल पहुँचा, किंतु वहाँ के भयंकर जलपूर्ण भाग में उसकी सेना फँसाई गई। अंत में मिहिरकुल बंदी हुआ। संधि होने पर मिहिरकुल का राज्य केवल सागल-प्रांत तक ही रह गया, और बालादित्य मध्य पश्चिमीय तथा उत्तरीय भारत के सम्राट् माने गए। छुटकारा पाकर मिहिरकुल ने अपनी लूट-पाट से पूरा काश्मीर और उसके आस-पास का बहुतेरा प्रदेश पुनः अपने अधिकार में कर लिया। बौद्ध-धर्म में अतिशय आसक्ति होने के कारण सम्राट् बालादित्य कुछ समय बाद भिक्षु हो गए। उनका पुत्र प्रकटादित्य गद्दी पर बैठा। इधर ईशानवर्मन और उसके सहायकों ने आश्चर्य-जनक नीति-पटुता एवं साहस से काम लेकर हूण-राज्य की समग्र प्रजा को अपनी ओर मिला लिया। मध्य भारत के आस-पास इनकी हूणों के साथ एक ज़बर्दस्त मुठभेड़ हुई। उसमें हूण-सेना चारो ओर से घेर ली गई और रक्षत्रियों के खड्गों ने गाजर-मूली की भाँति उसे किनारे लगा दिया। हूणाधिपति मिहिरकुल का राज्य केवल काश्मीर के अंदर सीमित रह गया। ईशानवर्मन के पराक्रम से अब विष्णुवर्द्धन राजाधिराज परमेश्वर की उपाधि के साथ मालवा, दक्षिणी मगध, बंगाल, आसाम और काश्मीर की दक्षिणी सीमा-पर्यंत भूभाग का स्वामी हुआ। ईशानवर्मन ने अब प्रकटादित्य को भी ललकारा। प्रकटादित्य अतिशय शांतिसेवी था। वह युद्ध की संभावना से घबराकर ईशानवर्मन का करद भूपाल बन गया। प्रकटादित्य की इस कादरता से खिन्न हो उसका सेनापति वीरसेन गौड़-नरपति कुमारगुप्त के यहाँ चला गया। दूसरे हूण-युद्ध में ईशानवर्मन के हाथों मिहिरकुल और शेरशिकन की भी इह-लीला समाप्त हुई। मागधगुप्तों के सेनापति वीरसेन से प्रेरित होकर गौड़-नरपति कुमारगुप्त ने ईशानवर्मन के राज्य पर धावा बोल दिया। इस समय विष्णुवर्द्धन मर चुके थे; उनका पुत्र हरवर्द्धन सिंहासनारूढ़ था। कुमारगुप्त से मोर्चा लेने हरवर्द्धन स्वयं चल पड़ा। अंततः हरवर्द्धन रण-कौशल में अनभिज्ञ होने के कारण शत्रु द्वारा बंदी बनाया गया। ईशानवर्मन के पुत्र ने उसे बंदी-गृह से छुड़ाया। इस ग्लानि के कारण हरवर्द्धन ने अपना सम्राट्-पद ईशानवर्मन को सौंपकर जगत्सेठ की पुरानी पदवी फिर धारण की। अंत में ईशानवर्मन के पराक्रम के आगे कुमारगुप्त की सेना भी मैदान छोड़कर भागने लगी। ऐसी दशा में कुमारगुप्त ने अपने लिये अग्नि-प्रवेश ही श्रेयस्कर समझा। तत्पश्चात् युवराज महासेनगुप्त गौड़-गद्दी पर बैठा। वह ईशानवर्मन से संधि कर उन्हें कर देने लगा। इस प्रकार ईशानवर्मन ने पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण की उत्तरी सीमा तक समग्र भारत पर अपना शासन स्थापित कर स्वपौरुषोपार्जित सम्राट्-पद को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुशोभित किया। इसके अनंतर, तत्पुत्र शर्ववर्मन और तदनंतर पौत्र अवंतिवर्मन उस पद पर आसीन रहे। संक्षेप में यही इस नाटक का मूल-कथानक है।

भारत में नाट्य-कला का आविर्भाव अन्य देशों की अपेक्षा बहुत प्राचीन काल में हो चुका था। आजकल की तो बात ही क्या, आचार्य भरत के समय में भी कोई निश्चय-पूर्वक यह नहीं कह सकता था कि यहाँ सर्वप्रथम किस नाटक की रचना हुई। फलतः नाट्य-शास्त्र के प्राचीन ग्रंथों में एक उल्लेख आता है कि किसी समय स्वयं ब्रह्मा ने त्रिपुरदाह-नामक एक डिम की रचना की थी, जिसका अभिनय देखने के लिये समग्र देवता एकत्र हुए थे। स्पष्ट है कि इस पौराणिक गाथा की कल्पना नाट्य-कला की अतिशय प्राचीनता को व्यक्त करने के लिये ही की गई। कथित नाट्य-कला को सुव्यवस्थित बनाए रखने के लिये अनेक आचार्यों ने नाट्य शास्त्र का निर्माण किया। सूक्ष्म रूप से विमर्श करने पर प्रतीत होता है कि प्राचीन आचार्यों के नाट्य-संबंधी अधिकांश मुख्य अनुशासन इतने प्रकृति-सहज हैं कि कोई भी नाटककार ज्ञात या अज्ञात किसी भी रूप से उनका उल्लंघन नहीं कर सकता। वे अनुशासन एक स्वयंप्राप्त सत्य के रूप में प्रत्येक कलाकार के लिये अनिवार्यतया पूर्णीय हो जाते हैं। तथापि इन अंतरंग अनुशासनों के अतिरिक्त जो बहिरंग अनुशासन उन्होंने निर्धारित किए, उनमें कवि एवं अभिनेतागण लोक-रुचि के अनुकूल समय-समय पर परिवर्तन करते गए। उदाहरणार्थ प्राचीन आचार्यों ने नाटक के पूर्वरंग में सूत्रधार के अतिरिक्त एक स्थापक का भी पद नियत किया था; आचार्य विश्वनाथ ने उस पद की विवेचना करते हुए लिखा है—"इदानीं पूर्वरङ्गस्य सम्यक्प्रयोगाभावादेक एव सूत्रधारः सर्वं प्रयोजयतीति व्यवहारः।" (सा० द०) अर्थात् आजकल अभिनेतागण पूर्वरंग का प्राचीन पद्धति के अनुसार प्रयोग नहीं करते, अतः स्थापक आदि के पद की कोई आवश्यकता नहीं, अकेला सूत्रधार ही सब कुछ कर लेता है। तथोक्त परिवर्तन एवं परिष्कार का क्रम समय के साथ-साथ आगे बढ़ता ही गया। फलतः कालिदास के 'शाकुंतल' और 'प्रसाद' के 'चंद्रगुप्त' का समझदार समालोचक स्पष्ट देखेगा कि हिंदी-साहित्य के आधुनिक कलाकारों ने लोक-रुचि का समीचीन अध्ययन करके इस कला के बहिरंग में आमूल-चूल परिवर्तन कर डाला है। अतः ईशानवर्मन के आलोचक का भी यह अनिवार्य कर्तव्य हो जाता है कि वह आधुनिक नाट्य-शैली को दृष्टिकोण में रखकर उक्त नाटक की समीक्षा और परीक्षा करे; अथच यदि इसकी रूप-रेखा में प्राचीन अनुशासनों का भी आनुकूल्य मिलता हो, तो कहना ही क्या।

ईशानवर्मन में कुल तीन अंक हैं, जिनमें सब मिलाकर २२ दृश्य हैं। इसका अंगी रस वीर है। ईशानवर्मन धीरोदात्त नायक है। इसमें वृत्ति सात्त्वती है। सं० ५१० से ५५० तक के मध्य का घटना-क्रम इसके कथानक का मुख्य उद्गम है। इसके अधिकांश ऐतिहासिक कथन आठवीं शताब्दी के बौद्ध-ग्रंथ मंजुश्रीमूलकल्प तथा उसकी टीका चंद्रगर्भपरिपृच्छा के आधार पर अवलंबित हैं। बहुतेरी बातें नाटककारों को अपनी ओर से कल्पित करनी पड़ी हैं। फलतः ईशानवर्मन का कथावस्तु मिश्र कोटि में आता है। बर्बर विदेशियों के आक्रमणों तथा गुप्त-सम्राट् बालादित्य प्रथम के बौद्ध हो जाने से भारत-साम्राज्य की दुर्दशा देखकर ईशानवर्मन का तदुद्धारार्थ उत्साह ही इस नाटक में बीज है। अपनी समर्थ भुजाओं से शत्रु-दल को पीस, भारत की समग्र राजशक्ति को एक सूत्र में बाँधकर ईशानवर्मन का सम्राट्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद को सुशोभित करना ही इसका फलयोग या परिणाम है।

एक विशेष परिणाम पर पहुँचनेवाली अनेक घटनाओं का परस्पर संबंधित अभिनेय चित्रण ही नाटक का स्वरूप है। कहानी और उपन्यास में लेखक स्वयं भी एक पात्र बन जाता है, अथच बहुतेरा कथा-भाग कहानी के पात्रों से न कहलाकर अपने आप ही कह डालता है। पर नाटक में यह गुंजाइश नहीं, क्योंकि इसका प्रधान संबंध अभिनय से है। इस क्षेत्र में तो निर्धारित पात्रों द्वारा ही कवि को वपन से लेकर उच्छ-पर्यंत सब कार्य कराना पड़ता है। फलतः फलयोग या परिणाम को आकर्षक एवं चमत्कृत बनाने में उपन्यास या कहानी-लेखक की अपेक्षा नाटक-लेखक को अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ जाता है। इसी बात को दृष्टि में रखकर कही गई एक प्राक्तन भणिति है—"नाटकान्तं कवित्वम्" अर्थात् नाटक का परिणाम ही कवि की समग्र शक्ति का परीक्षा-स्थल होता है। हम यह देखते हैं कि ईशानवर्मन के लेखक नाटक के परिणाम को आकर्षक बनाने में सफल हुए हैं। नाटक की प्रत्येक छोटी-से-छोटी या बड़ी-से-बड़ी घटना अपना पूरा प्रभाव फलयोग या परिणाम पर डाल रही है। इसके प्रथमांक का प्रथम दृश्य सम्राट् द्वितीय बालादित्य के दरबार का है, और अंतिम दृश्य सम्राट् ईशानवर्मन के दरबार का। पहला दृश्य स० ५११ और दूसरा ५५० के लगभग का है। उपर्युक्त दोनो ही दरबार यद्यपि दो भारतीय सम्राटों के ही हैं, तथापि दोनो की परिस्थिति में आकाश-पाताल का अंतर है। पहले में बर्बर आक्रमणकारियों के सामने जर्जर भारत के शिरोनमन का दृश्य पूर्णतया प्रतिबिंबित हो रहा है, और दूसरे में सबल भारत की स्वतंत्रता-लक्ष्मी का अमल हास अतीत कालुष्य को प्रक्षालित करता हुआ प्रसृत हो रहा है। पहले दरबार में स्वयं सम्राट् का यह निर्णय होता है कि हूणों से युद्ध कर भारतीय स्वतंत्रता की रक्षा नहीं की जा सकती, अतः सपरिवार बंगाल भाग चलना चाहिए। दूसरे दरबार में शरणागत हूणनायक भी भारत-सम्राट् के जय-घोष के साथ हिंदू-धर्म स्वीकार करता है। वहाँ मानो कण-कण से यही घोष उद्बुद्ध हो रहा है—'जय ईशानवर्मन भूप' नाटक के प्रथम दृश्य में ही तात्कालिक भारतीय राज सत्ता की हीन दशा का चित्रण कर लेखकों ने नाटकांत में होनेवाले सम्राट् ईशानवर्मन के दरबार का महत्त्व सहस्रगुणित कर दिया है। जिसने सूर्यास्त में फैलनेवाली कालिमा नहीं देखी, वह सूर्योदय के प्रकाश-पटल का महत्त्व कैसे जानेगा। ईशानवर्मन की विशाल सफलता के महत्त्व का अंदाज़ तभी लग पाता है, जब हम बालादित्य से शक्तिशाली सम्राट् की भीषण असफलता पहले देख लेते हैं। स्पष्ट है कि लेखकों ने फलयोग या परिणाम को चमत्कारी बनाने के लिये नाटक की प्रारंभिक घटना का ही चुनाव अतिशय सूक्ष्म दृष्टि से किया है।

ईशानवर्मन में दृश्य और संसूच्य कथानक का विभाग पूर्णतया प्राचीन नाट्य-शास्त्र के अनुकूल किया गया है। आचार्य भरत का अनुशासन है कि समर, राज्यभ्रंश आदि का प्रदर्शन नहीं कराना चाहिए, ये किसी पात्र द्वारा सूचित करा देना उचित है। प्रस्तुत नाटक में द्वंद्व-युद्ध को छोड़कर सब जगह बड़ी पटुता से समर का सूचन ही किया गया है। दूसरे अंक के पाँचवें दृश्य में महाराज विष्णुवर्द्धन के समक्ष सेनापति हूण-समर का विस्तृत वर्णन करता है; इसे पढ़ते समय 'वेणी-संहार' के चतुर्थ अंक में सुंदरक द्वारा महाराज दुर्योधन को सुनाए गए समर-वृत्तांत का स्मरण हो आता है।

तात्कालिक बौद्ध-धर्म में जहाँ सब अच्छाइयाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं, वहाँ एक बड़ी भारी बुराई भी थी, वह यह कि इसमें आसक्त होकर भारत की राजसत्ता सामरिक दृष्टि से अतिशय शिथिल हो गई थी। इसका साक्षी इतिहास है। 'चंद्रगुप्त' में 'प्रसाद' ने बार-बार इस बात को व्यथित हृदय से स्वीकार किया है कि बौद्ध-धर्म-प्रचार के फल-स्वरूप ही भारत को अनेक बार बर्बर विदेशियों के आगे माथा टेक देना पड़ा है। ईशानवर्मन के विद्वान् लेखकों की लेखनी ने भी इस सत्य को स्पष्ट रूप से चित्रित किया है। एक स्थान पर दक्ष-नामक विद्वान् जनता को संबोधित कर कहता है—"चंद्रगुप्त, चाणक्य, पुष्यमित्र प्रभृति अनुपमेय पुरुषरत्नों को केवल धार्मिक अंतर के कारण हमारे बौद्ध भाई बहुत ही निंद्य समझते हैं। चाणक्य और सम्राट् चंद्रगुप्त को वे गालियाँ तक देते हैं। बेचारे चाणक्य के लिये परलोक में भी नरक ही प्रस्तुत है। इधर शुंग-सम्राट् गोमि हैं, और पुष्यमित्र गोमि मुख्य तथा उसके अनुयायी जंतु। इन बातों से प्रकट है कि हमारे बौद्धों को स्वदेश तथा देशियों से कोई प्रयोजन नहीं। कोई विदेशी चाहे जब भारत पर अधिकृत होकर लाखों-करोड़ों भाइयों का वध तक कर डाले, किंतु यदि वह इन स्वदेश-शत्रुओं के मठों की पूजा कर दे, तो उसके लिये बीस जन्मों तक स्वर्ग प्रस्तुत है, और बेचारा हिंदू देश-रक्षक यदि मठों की पूजा न करे, तो वह जंतु-मात्र है, और नरक को सीधा जायगा।"

अन्य रसों के संक्षिप्त वर्णन द्वारा अंगी रस का परिपोष भी इस नाटक में सफलता-पूर्वक हुआ है। ईशानवर्मन का पुत्र शर्ववर्मन राजकुमारी इंदु पर आसक्त है! प्रथमांक के चौथे दृश्य में वह गंगा-स्नान करती हुई राजकुमारी के सौंदर्य का अतिशय रमणीय वर्णन करता है। उसका मित्र सुभद्र उसके वर्णन में और भी चार चाँद लगा रहा है। उत्प्रेक्षालंकार का ऐसा चमत्कारी प्रदर्शन हिंदी तो क्या, संस्कृत-साहित्य में भी सब कवियों से नहीं बन पड़ा है। साथ ही विशेषता यह कि सारी उत्प्रेक्षाएँ स्थानीय शृंगार-रस के परिपोष में परम उपष्टंभक सिद्ध हो रही हैं। उदाहरणार्थ—

"शर्व वर्मन—उसका लघु नथ तरंगों के कारण ऐसा हिलता-डुलता था, मानो उसका मोती अधर-स्पर्श से प्रवाल बन जाने का भय मानकर बार-बार उससे दूर भागता हो।

सुभद्र—अथवा मौक्तिक मालावाले अपने भाइयों की कला से प्रसन्न होकर उठ-उठकर उन्हें बार-बार बधाई देता हो।"

इसके गद्य में कहावतों और मुहाविरों का भी यथेष्ट अथच औचित्य-पूर्ण प्रयोग हुआ है, ज़बरदस्ती या भरती नहीं की गई है। लेखकों ने कहावतों या मुहाविरों के प्रयोग के ही लिये वाक्य-रचना कहीं नहीं की है, वरंच विवक्षित भावों को प्रभावपूर्ण बनाने के लिये ही कहावतों और मुहाविरों का प्रयोग किया है। तृतीय अंक का तीसरा दृश्य गाँव की एक चौपाल का है। कुछ ग्रामीण परस्पर वार्तालाप कर रहे हैं। यहाँ के वार्तालाप और भाषा में इतनी अधिक स्वाभाविकता है कि बिना दाद दिए नहीं रहा जाता। बीच-बीच में ग्रामीण कहावतों एवं मुहाविरों ने तो और भी नैसर्गिकता पैदा कर दी है। उदाहरणार्थ—

"१—ठाकुर—अरे अकेली जोड़िही ते का होति हइ। घरहू मँ तउ कोई सलूक करइया चही। लरिकऊ चिकनिया बने घूमति हैं, ख्यात सारे क जंतइ नाईं हइँ कि हए कौनी बार?

२—अहिर—इहु तउ महराज हए हइ। खेती तउ मेहँति माँगति हइ। सुंतउ हउ कि—

उत्तम खेती जे हरु गहइँ,
मद्धिम उनकी, जे सँग रहइँ।
जमउ बूड़ि गइ जानेउ तहाँ,
घूर ते पूछइँ हर हइँ कहाँ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३—लोधा—ईतउ दुकान भरे ते मतलबु राखति हइँ । खेते क तउ इनका इहु हालु हइ कि 'रहइँ कुरम्याने, गावइँ चमराने'।"

तात्कालिक भारत की सामाजिक दुरवस्था का अंकन भी निःसंकोच भाव से लेखकों ने किया है। एक स्थान पर हूण-सम्राट् मिहिरकुल अपने मंत्री शेरशिकन से भारत की आंतरिक परिस्थिति पर विचार-विनिमय करता है। वहाँ शेरशिकन के कथन उत्तर भारत की सामाजिक दुर्दशा के दर्पण का काम कर रहे हैं। यथा—

"शेरशिकन—इधर बनिया का यह हाल है कि बस रोज़गार चलता रहे। उसे मतलब नहीं कि मुल्क पर हुक्मरानी कौन करता है? ..... उन काफ़िरों को यह थोड़ा ही समझ पड़ता है कि बाहरवाला आकर हिंद पर हुक्मराँ है या क़ौम पर ज़ुल्म करता है। सबको अपने-अपने माड़े-हलुवे से काम। .....और हुज़ूर, इस क़ौम में बच्चों की शादी भी बहुत कमसिनी में होने लगी है, जिससे शख़्सी ताक़त का कमी ज़रूरी है। ..... हिंदू लोग अपना चारो दरमियानी ज़ातों को मिलाकर खाना-पीना, शादी, रोज़गार वग़ैरा में एक होगा नहीं। इसी से हम लोगों का मुक़ाबिला वह कभी न कर सकेगा। हमेशा आपस के झगड़ों में उलझा रहेगा।"

छठी शताब्दी से संबंध रखते हुए भी उपर्युक्त कथन हमारी आधुनिक सामाजिक दुर्दशा पर कितना चुस्त बैठ रहा है, इसे समीक्षकगण भली भाँति जान सकेंगे।

लेखकों ने ईशानवर्मन को केवल राजनीतिक क्षेत्र का ही उद्धारक न मानकर कथित सामाजिक क्षेत्र का भी पथ-प्रदर्शक चित्रित किया है। उस समय के क्षत्रिय-कुल को अपने अंध-संस्कारों के कारण यह बात सह्य न थी कि यशोधर्मन-नामक वैश्य को सम्राट्-पद पर बैठाया जाय; भले ही उसके सम्राट् बनने से देश का अनल्प लाभ क्यों न होता हो। ईशानवर्मन ने दृढ़ता-पूर्वक उस धर्मांधता पर आक्रमण किया। जब गुप्त-सम्राट् बालादित्य ने उनके ऊपर यह छींटा कसा कि तुमने तो उस नौबढ़िए बनिए को अपने पूर्व-पुरुषों की महनीय उपाधि से विभूषित किया है, तुम्हें कुल-मर्यादा की क्या चिंता? उस समय-वाला ईशानवर्मन का कथन स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है—"मुझे तो गुणी पुरुष के अनुगामी होने का अभिमान है। जो अपने गुणों से बढ़े, वही वास्तव में पूज्य है।.....आप ही आज्ञा कीजिए कि मैं करता ही क्या? हूणों से भारतोद्धार का प्रश्न बड़ा था, या जाति-भेद की कल्पित बड़ाई-छोटाई? क्या शांतिपर्व में भीष्म पितामह ने आज्ञा नहीं दी है कि यदि एक शूद्र तक विदेशियों से भारतोद्धार करे, तो उसका भी राज्य सभी भद्र पुरुषों द्वारा समर्थनीय है। इस मत में कैसा उद्दाम देश-प्रेम कथित है।"

इतिहास बतलाता है कि हूण-जाति मध्य एशिया से आई थी। उसकी बोली तात्कालिक भारतीय लोक-भाषा से भिन्न थी। हूणों ने यद्यपि कोशिश कर यहाँ के बोलचाल से परिचय अवश्य प्राप्त कर लिया था, तथापि वे अपने बोलचाल के शब्दों का मिश्रण कर यहाँ की भाषा को विकृत रूप में ही बोलते थे। ईशानवर्मन के लेखकों के आगे यह एक बड़ी कठिनाई थी कि वे अपने नाटक के हूण-पात्रों को किस भाषा में बोलवाएँ? अफ़ग़ानिस्तान इत्यादि पश्चिमोत्तर से भारत में आनेवाले व्यक्ति आजकल जिस तरह की विकृत हिंदी बोलते हैं, ठीक वैसी ही भाषा में लेखकों ने हूणों का वार्तालाप कराया है। हमारी दृष्टि से उन्होंने हूणों के लिये इस भाषा का चुनाव कर कथावस्तु को प्राकृतिक और सामंजस्य-पूर्ण बना दिया है। नाटक में लेखकों के बनाए कुल बहत्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्य हैं। यद्यपि नाटक का गद्य तथा भरत-वाक्य के पद्य खड़ी बोली में हैं, तथापि शेष पद्यों की भाषा प्राचीन ही है। भारतेंदु बाबू की तरह संभवतः ईशानवर्मनकार भी पद्य-रचना के लिये खड़ी बोली को अपने लिये उपयुक्ततम नहीं समझते। अस्तु। ईशानवर्मन के पद्य उसकी एक बहुत बड़ी विशेषता हैं। इनके संगठन और भाव-विन्यास में रचयिताओं की उदात्त कवित्व-शक्ति का साक्षात्कार होता है। न तो कहीं भावों का दारिद्र्य है, और न शब्दों की खींचा-तानी। सब जगह स्वाभाविक प्रवाह है, एवं प्रांजल विन्यास। राजकुमारी इंदु-विरह-दशा में एक गीत गाती है। सहृदय पाठक देखें कि वह कितना हृदयांदोलक है—

"सखी री हिया धीरज नहिं आवै,
सदा भ्रमन दिशि-विदिशि पिया को
चित चंचल भरमावै ॥ सखी री० ॥
जो जनती परिणाम प्रेम को ऐसी चोट चलावै;
तौ कत वहि मारग पगु धरती;
नहीं कछु अब भावै ॥ सीखी री० ॥"

महाराज विष्णुवर्द्धन के दरबार में कविराज ने जो सेना-संचालन का वर्णन किया है, उसमें महाकवि भूषण की ओज-पूर्ण कवित्व-शक्ति का दर्शन होता है—

"अरजत दीन, लरजत कुंडलीस,
गरजत दिग-सिंधुर चलत जब दीह दल;
कहलत कूरम, दिगीस दहलत,
दिगदंति टहलत पारि जगत में खलभल।
दान दुज पावत सुनावत असीस,
जस गावत करत नहिं चारन चतुर कल;
पूरत प्रताप भूप दस दिसि चूरत
औ' बैरिन के तूरत करेजन धरनि-तल।"

मिहिरकुल के दरबार में मदिरा की व्यापकता पर कविराज ने एक पद्य कहा है, जो हमारे आधुनिक समाज पर भी ख़ूब चुस्त बैठता है—

"मदिरा मुख सों निंद्य बतावैं।
तऊ समै पर कोऊ न चूकै,
छकि - छकि सबै उड़ावैं ॥ मदिरा०
कोऊ खुले, छिपे कोउ पीवैं,
मद सों बाज न आवैं।
प्याले पै प्याले ढरकावैं।
भलेहि मस्त बनि जाय ॥ मदिरा०
खुले बहुत दिन धारन कीन्हीं,
अब ऐसी मन भाव;
त्यागिन में हम हूँ मिलि बैठें,
गहरी चोट चलावैं ॥ मदिरा०"

जिस प्रकार आज जर्मनी अपने पार्श्वस्थ प्रदेशों को उदरस्थ किए ले रहा है, उसी प्रकार जब भारतवर्ष शक्ति-संपन्न राष्ट्र था, तब उसके अधिनायकों ने दूसरे देशों पर आक्रमण कर उन्हें परतंत्रता के निगड़ में क्यों नहीं बाँधा? इस प्रकार के प्रश्न का समाधान कविराज ने कितना सुंदर किया है—

"पै यदि चाहै यही जग तौ,
हमैं कौन सकोच करैं हमहूँ यों;
धाय चढ़ैं पर देसन पै
कै बहाने अनेक उड़ावैं ध्वजा त्यों।
चूर करैं तिनको अभिमान
असभ्य तिन्हैं बतरावैं मवेशी;
तौ हमैं सूर बखानै जहान, पै
सभ्यता भारत की नहिँ ऐसी।"

नाटक के मुख्य-मुख्य दृश्यों में से प्रथमांक के प्रारंभिक दोनो दृश्य भावी कथावस्तु की रमणीयता को शीघ्रता-पूर्वक प्रस्फुटित कर पाठकों और दर्शकों के हृदय में पर्याप्त आकर्षण उत्पन्न कर देते हैं। तीसरे दृश्य का भारतोद्धार-संबंधी गोष्ठी-चित्रण सामाजिक दृष्टि से अतिशय प्रशंसनीय है। द्वितीयांक के प्रथम दृश्य में बालादित्य और ईशानवर्मन का वार्तालाप बहुत ही उच्च भावों से परिपूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। दूसरे दृश्य में हास्य और वीर-रस का समीचीन समावेश है। चतुर्थ दृश्य में तो मूर्तिमान् वीर-रस के दर्शन होते हैं। प्रकटादित्य-पराभव में वीरसेन का उत्साह अनुपमेय है। सातवें दृश्य में श्रृंगार-रस की पर्याप्त छटा है। तृतीयांक में ग्रामीण समाज का प्राकृतिक दृश्य बहुत ही रोचक है। समर तथा हरवर्द्धन के राज्य-त्याग का वर्णन लेखकों की कवित्व-शक्ति और तीक्ष्ण कल्पना-सामर्थ्य व्यक्त करता है। कुमारगुप्त एवं वीरसेन के आत्मत्याग का अंकन अतिशय उच्च भावों से आप्लुत साहित्य का अद्वितीय दृष्टांत है। ग्रंथ में पाँच सम्राटों के कथन हैं, जिनमें तीन को राज्य-त्याग करना पड़ता है। कथावस्तु में इतने उलट-फेर हैं कि सारे नाटक में कहीं भी रोचकता की मात्रा कम नहीं होने पाई है। इसमें कथा-कौशल के साथ-साथ अंगभूत अनेक रसों के समुचित निर्वाह से अंगी वीर-रस का पूर्ण परिपोष हुआ है। फलतः नाटक अत्यंत श्लाघ्य और रंगमंच पर खेलने योग्य है।

यद्यपि आलोचना अब सामान्य से अधिक विस्तृत हो चुकी है, फिर भी यह ईशानवर्मन की सांगोपांग समीक्षा नहीं कही जा सकती। अंत में केवल एक पद्य उद्धृत कर हम इसे यहीं समाप्त करते हैं—

ते धन्यास्ते महात्मानः, तेषां लोके स्थिरं यशः;
यैर्निबद्धानि काव्यानि, ये वा काव्येषु कीर्त्तिताः।

गद्य-काव्य

[श्रीदिनेशनंदिनी चोरड्या]

जब कोई मुझे प्यार करने का अभिनय न कर सका, तो अब तुम क्यों नाहक़ अपने स्नेह से मुझे बहला रहे हो?

तुम—कदाचित् अब भी मुझसे अनजान हो!

सुनो तो—घने अंधकार की घोर कालिमा में मेरा अंतर छिपा है, और जुगनू का क्षणिक प्रकाश भी उसे छू न पाया है; मैं उसी में खो चुकी हूँ, तुमने नाहक़ अपने अनमोल नयनों के दीपद्वय मेरे मानस पर सँजोए हैं। उसी ज्योति से तुम भ्रमित हो गए हो—

अपने दीपक बुझा दो, और मुझे वहीं रहने दो। जो कुछ तुमने मुझे दिया है, मैं प्रयत्न करके भी तुम्हें न दे सकूँगी, और तुम्हें अपनी प्रियतम, अलभ्य वस्तु के खो जाने का वृथा क्षोभ होगा!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्र के नेत्र

[श्रीयुत 'वचनेश' जी]

तुम्हारे मित्र ! अनोखे नैन।
जिनके उन्मीलन-मीलन सों
बनत रहत दिन-रैन।

चितवत ही विकसत सबके मन
द्रुमन सुमन श्री-ऐन;
जाग्रत होत जगत में जीवन,
ज्ञान, चेतना, चैन।

सरसिज का कहिए समता में,
हरि - नाभिजहु तुलै न;
परमानंद-सर प्रेम-पंक बनि
सृजै होय चहैं ऐन।

---

५ घड़ियाँ और १,९७५ सुंदर इनाम केवल १।।।≡) में

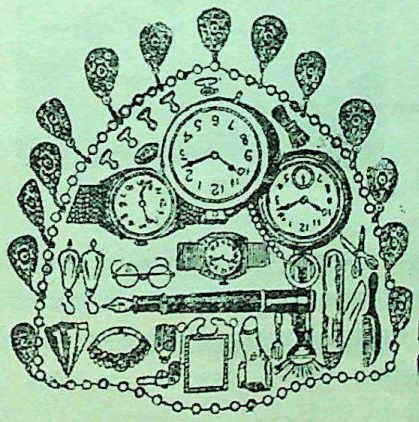

हमारी सुगंधित ओटो रोज़ की १६ शीशी केवल १।।।≡) में लेनेवाले को दो रेलवे टाइम डमी पाकेट वाच, दो रोल्ड गोल्ड गिल्ट डमी रिस्ट-वाच मय फ़ीता के, १ डमी टाइमपीस, १ सेफ़्टी रेज़र, १ चाक़ू, एक साबुन और एक अदद फ़ाउंटेन पेन मय १४ के रिटगोल्ड गोल्ड निब और एक अदद १,५०० फ़ीट रेज की टार्च लाइट इत्यादि मुफ़्त दी जायँगी। पैकिंग पोस्टेज ।।।-)

जल्दी मँगवा लें, वरना यह मौक़ा हाथ न आएगा।

पता—जी० वाच-कंपनी, पोस्टबक्स नं० २७ (S.M.L.) अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी नैनीताल-यात्रा

[श्रीयुत लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' साहित्यरत्न, एम्० ए०]

मैं बारबाग़-स्टेशन से ६-१५ की सायंकाल की गाड़ी (ई० आई० आर०) से नैनीताल चल दिया। १२ बजे रात्रि को बरेली पहुँचा। वहाँ गाड़ी बदली। प्रातःकाल ५ बजे काठगोदाम पहुँचा। स्टेशन बड़े सुंदर स्थान में

श्रीलक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' एम्० ए०

है। इसके चारो ओर पर्वत है। यों तो गाड़ी जब ललकुआँ पहुँचती है, तभी से पर्वतों के दर्शन होने लगते हैं, और पृथ्वी ऊँची-नीची होने के कारण दो एंजिन लग जाते हैं। ट्रेन से पहाड़ों का दृश्य और शोभा बहुत लुभावनी लगती है। गाड़ी काठगोदाम तक ही आती है। यह अंतिम स्टेशन है। इसके बाद नैनीताल जाने के लिये बसें और मोटरें मिलती हैं, जो स्टेशन के बाहर ही खड़ी रहती हैं। स्टेशन के निकट ही काठगोदाम का पुल है। इसकी बनावट धनुषाकार है। पुल के नीचे पहाड़ी नदी कलकल शब्द करती हुई

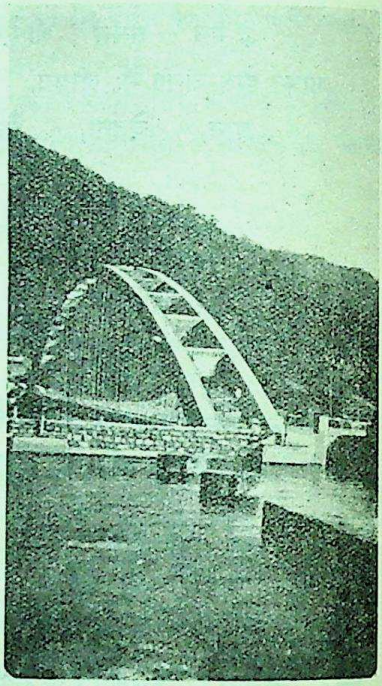

काठगोदाम

बहती है—पत्थर और कंकड़ों के बिछौने पर। यह स्थान बहुत ही सुंदर है। पास ही एक झरना है। प्रकृति के मनोरम क्षेत्र को देखकर हम लोग नैनीताल जाने के लिये बस पर सवार हो गए।

काठगोदाम से नैनीताल २२ मील है। इसकी मोटर की सड़क, उसकी बनावट और मोटर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर से प्राकृतिक शोभा और वहाँ की जल-वायु में धीरे-धीरे परिवर्तन, ये सब प्रायः वैसे ही हैं, जैसा मैं 'मेरी मसूरी-यात्रा'* में लिख चुका हूँ। अतः उसका लिखना दोहराना होगा। वैसे ही टेढ़े-मेढ़े रास्ते, वैसे ही सुंदर प्राकृतिक दृश्य, वैसे ही झरने। आधी दूर के बाद तो हरियाली आदि में बहुत वृद्धि हो जाती है। श्रेणीबद्ध पर्वतीय वृक्षों के शिखर ऐसे लगते थे, जैसे उन पर झाड़-फ़ानूस रक्खे हों। यहाँ की सड़क मसूरी की सड़क से अधिक चौड़ी है। थोड़ी दूर और बढ़कर दो सड़कें हो जाती हैं—एक तो अल्मोड़ा आदि को चली जाती है, और दूसरी नैनीताल को। हमारी मोटर नैनीतालवाली सड़क पर आ गई, और आगे बढ़कर टोल-टैक्स देना पड़ा, और फिर मोटर सीधी नैनीताल-झील के पास ही तल्लीताल में स्थित डाकख़ाने के पास रुकी। हम लोग हिमालिया-होटल में गए, पर बाद में इंपायर-होटल में एक कमरा ले लिया।

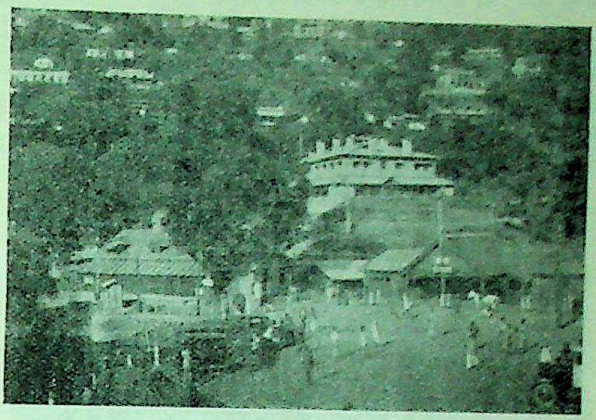

नैनीताल में मोटरों का अड्डा

नैनीताल मसूरी से कुछ नीचा है। यहाँ की मुख्य दर्शनीय वस्तु 'नैनीताल' है। यह झील ½ मील लंबी और ⅓ मील चौड़ी होगी। इसके एक ओर तल्लीताल बसा है, और दूसरी ओर मल्लीताल। तल्लीताल के आगे मोटरें जाने की आज्ञा नहीं। गवर्नर और बहुत ही बड़े-बड़े अफ़सरों की मोटरों को छोड़कर अन्य मोटरें नहीं जा सकतीं। यहाँ भी लोग रिक्शा पर चलते हैं या पैदल। तल्लीताल घना बसा है। यह काफ़ी सपाट है, अतः नीचे का बाज़ार और मकान प्रायः वैसे ही हैं, जैसे मैदानों में होते हैं। यहाँ हिंदुस्तानी बस्ती है, अतः मकान गंदे और छोटे हैं, और दूकानें भी हिंदुस्तानी तथा काफ़ी गिचपिच। मुझे नैनीताल मसूरी की भाँति पसंद नहीं आया।

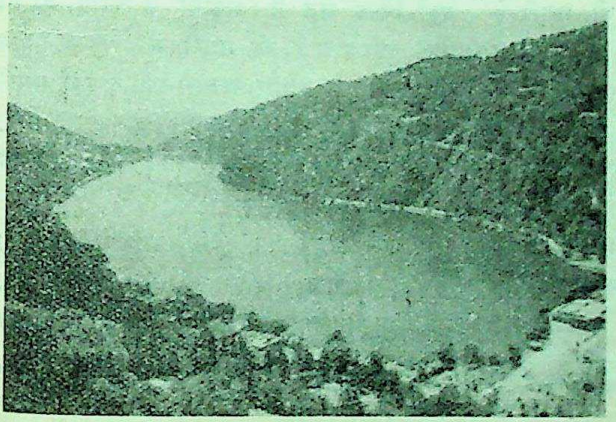

नैनीताल की एक झील

* यह लेख आगामी संख्या में छपेगा।—सुधा-सं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाकख़ाने के नीचे ही गंधक का एक चश्मा है। इसका जल बहुत हाज़िम है, और अधिकतर लोग उसी जल का प्रयोग करते हैं। नैनीताल में बंबे

नैनीताल की झील का एक दृश्य

हैं, जिनमें झील का पानी आता है। कहते हैं, 'लाइम वाटर' होने के कारण उससे पेट ख़राब हो जाता है। नैनीताल की जलवायु भी मसूरी के मुक़ाबिले में अच्छी नहीं, यह भी वहाँ के ही लोगों का कहना है। चहल-पहल यहाँ भी बहुत रहती है, किंतु मसूरी और नैनीताल में भेद यह है कि नैनीताल में गवर्नमेंट सीट होने के कारण अफ़सरों और राजनीति से संबंध रखनेवालों की ही संख्या अधिकता से दिखाई देगी। बड़े-बड़े बुज़ुर्ग, बड़े-बड़े अफ़सर तेज़ी से अपने काम पर जाते दिखाई देते हैं—जैसे उन्हें फ़ुर्सत न हो। यहाँ लोग अपने-अपने कामों से जैसे आते हों। 'एक पंथ, दो काज' हो जाते हैं—पहाड़ी प्रांत की सैर भी और अफ़सरों से मिला-भेंटी भी। वह मस्ती, वह बेपरवाही, वह विनोद, छुट्टी और आराम करने का भाव, जो मसूरी में लोगों के चेहरे पर दिखाई देता है, यहाँ नहीं। यहाँ लोगों के चेहरे गंभीर होते हैं—अपने बड़प्पन में डूबे हुए; जैसे वहाँ के मामूली लोगों से वे लोग कटे-कटे घूमते हों। मसूरी की-सी आत्मीयता, प्रेम और समता का भाव यहाँ कहाँ?

ऐसा नहीं कि यहाँ केवल अफ़सर और 'जीहुज़ूर' लोगों का ही जमाव रहता हो, बल्कि बहुत-से और लोग भी पर्वतीय सुंदरता देखने के लिये आते हैं। उनके चेहरों में आप सब वे ही बातें पावेंगे, जो मसूरी में पावेंगे। भेद इतना ही है कि मसूरी में केवल एक ही 'कैटागेरी' के लोग होंगे, और यहाँ 'दो कैटागेरी' के। मसूरी के मुक़ाबिले में यह स्थान छोटा भी है, और अधिक घना बसा भी। कारण यह कि संयुक्त प्रांत के लोगों के लिये सबसे निकट यही 'हिल-स्टेशन' है, और कदाचित् सबसे सस्ते में लोग यहाँ निपट लेते हैं। मकानों के किराए का तो यहाँ वही हाल है, जो मसूरी में, किंतु खाने-पीने का सामान, फल और तरकारी आदि यहाँ मसूरी के मुक़ाबिले सस्ती है।

नैनीताल में निम्न-लिखित स्थान देखने योग्य हैं—

(१) टिफ़िन टाप, (२) पखानदेवी, (३) लैंड्स एंड, (४) खुरपाताल, (५) सातताल, (६) सूखाताल, (७) चाइना पीक, (८) स्नोव्यू, (९) लढिया-कोटा, (१०) शेर का डंडा, (११) फ़्लांडरस्मिथ-कॉलेज, (१२) काला खान, (१३) गटिया, (१४) सिपाहीधारा, (१५) कृष्णपुर, (१६) शिव-मंदिर, (१७) बीर भट्टी, (१८) जूली कोट, (१९) मनोरा, (२०) गोथा, (२१) सेंट जोसेफ़-कॉलेज, (२२) वेलेजली - गर्ल्स - हाईस्कूल, (२३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डासियंस आल सेंट्स कॉलेज गर्ल्स, (२४) गवर्नमेंट-हाउस, (२५) सेक्रेटरियट, (२६) कौंसिल-हाउस, (२७) टैंक (गवर्नमेंट-हाउस के ऊपर), (२८) सेंट फ्रांसिस कॉलेज, (२९) नैनादेवी का मंदिर, (३०) नैनीताल - झील के बाईं ओर एक पहाड़ के नीचे देवीजी का मंदिर, (३१) आइस - खड्ड (स्नोव्यू के पास), (३२) फ़्लैट (खेल के मैदान) और (३३) सिनेमा - गृह तथा स्केटिंग के लिये बिल्डिंग (फ़्लैट के पास)।

नैनादेवी का मंदिर (नैनीताल)

अब मैं संक्षेप में मुख्य-मुख्य स्थानों का वर्णन करता हूँ। मैं पहले ही कह चुका हूँ कि यहाँ की मुख्य दर्शनीय वस्तु नैनी-झील है। इसके चारो ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं, और यह हर ओर पहाड़ों से घिरी है; हाँ, जिस ओर पोस्टऑफ़िस है, उस ओर पहाड़ नहीं हैं। नैनीताल बहुत नीचे में बसा है। झील के चारो ओर ऊँची पहाड़ियाँ हैं, जिन पर कोठियाँ बनी हैं। कोठियों पर जाने के लिये हर ओर सैकड़ों की संख्या में एलफ़ास्ट की बनी चौड़ी सड़कें हैं। झील की शोभा ऊपर से देखने में बड़ी सुंदर है। विशेषकर रात्रि के समय जब ऊँची-ऊँची पहाड़ियों पर स्थित कोठियों की बिजलियाँ जल जाती हैं, और उनकी परछाईं जल में पड़ती है, तो झलझलाता हुआ शांत जल एक अपूर्व शोभा दिखलाता है। उस समय जल की स्वर्णिम आभा अद्वितीय होती है। दिन में भी झील की शोभा अपूर्व है। पचासों छोटी-छोटी डोंगियाँ झील में हैं, जो इधर-से-उधर चलती रहती हैं। हम लोग अक्सर अपने हाथों से झील में 'बोटिंग' का आनंद उठाया करते थे। झील काफ़ी गहरी है, और जल का ताप-क्रम प्रत्येक स्थान पर एक-सा नहीं है—कहीं कुछ गर्म, कहीं ठंडा और कहीं बहुत ठंडा। लोगों का कहना है कि बहुत-से सोते इस झील के गर्भ में हैं, जिनसे गर्म और ठंडा पानी

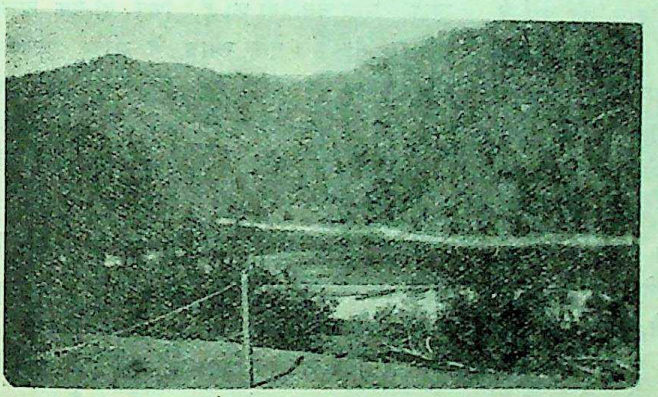

सातताल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकला करता है, और इससे झील में प्रत्येक स्थान का ताप-क्रम असमान है। प्रायः जल ठंडा होता है। किनारे-किनारे लगी सिवार निकालने के लिये सदा आदमी काम करते रहते हैं। बीच में सिवार नहीं। बीच-बीच में लोहे के गोल-गोल बंद हंडे-से पड़े हैं, बिलकुल वैसे ही, जैसे कलकत्ते में गंगाजी में पड़े हैं। नावों की शोभा उस समय अवर्णनीय होती है, जब उनमें 'रेस' होती है। पालदार नावें एक साथ छूटती हैं, तो ऐसा लगता है, जैसे बहुत-सी बड़ी-बड़ी चिड़ियाँ अपने बड़े-बड़े सफ़ेद पर फैलाए पानी की सतह से चिपकी हुई-सी उड़ती चली जा रही हों। झील के दाएँ-बाएँ पक्की सड़कें हैं, जिन पर तिपाइयाँ पड़ी हैं। दर्शक उन पर बैठकर अपनी थकावट मिटा और झील की शोभा निहार सकते हैं। झील के किनारे कई बोट-हाउस हैं, और एक जल-क़ुब भी। तल्लीताल से झील की दाहनी ओरवाली सड़क पर थोड़ी दूर चलिए, तो उसके किनारे बड़ी-बड़ी दूकानें हैं, और उसके किनारे पर स्थित पहाड़ी पर बड़ी-बड़ी कोठियाँ और होटल। यह सड़क मल्लीताल को गई है, और फ़्लैट के पास निकलती है। दाहनी ओर यदि झील के बाईं ओर (तल्लीताल से) चलें, तो किनारे-किनारे बहुत ही सीधी और ऊँची चट्टानें हैं। उस ऊँची पहाड़ी के नीचेवाली सड़क पर दाहनी ओर की सड़क की भाँति चहलपहल नहीं। वह बहुत शांत स्थान है, जैसे वहाँ शांति का निवास हो। अँगरेज़ों के बच्चे अपने स्कूल के मास्टरों के साथ कभी-कभी वहाँ आते, और एक ऊँचे स्थान पर बने हुए चबूतरे से फाँद-फाँदकर तैरा करते हैं—ठंडे जल में। वह कितने परिश्रमशील, अध्यवसायी और साहसी होते हैं। उन्हें वैसा ही बनाया जाता है, और हमें बचपन में ही मा-बाप फूल-पान बना देते हैं। तभी तो फूल के ऊपर पैर पड़ने से हमें ज़ुकाम हो जाता है—यह हमारी नाज़ुकबदनी है, तभी तो वह मालिक हैं, दुनिया-भर में राज्य करते हैं, और हम नौकर और दुनिया-भर के ठुकराए हुए, मगर तो भी न-जाने हम किस बात पर ऐंठते हैं। अस्तु। थोड़ी-थोड़ी दूर पर दोपहर के समय लोग मछली की कटिया डाले किनारे पर लेटे या बैठे दिखाई देंगे। होटल या घरों में न सोए, यहीं बैठे, और पड़े रहे। चलो, एक शग़ल ही सही। धन्नियाँ न गिनीं, प्राकृतिक सौंदर्य के दर्शन ही कर लिए। थोड़ी दूर बढ़ने पर एक देवी-जी का प्राचीन मंदिर पहाड़ी की तलहटी में है। वहाँ भक्तगणों की कमी है—सूट और कालर लगाकर भगवान् और देवी-देवताओं की भक्ति नहीं की जाती। यह सड़क भी आगे चलकर 'फ़्लैट' के पास निकलती है (बाईं ओर)। यह सड़क प्रातः-सायं घूमने के लिये बहुत उपयुक्त है।

झील के इस ओर मल्लीताल कहलाता है। झील के किनारे ही नैनादेवी का मंदिर है, जिसमें दो-एक साधु भी दिखलाई दिए। मंदिर में एक छोटा-सा धर्मशाला भी है। मंदिर प्राचीन है, और उसमें मुख्य मूर्ति नैनादेवी की है, किंतु दो-एक अन्य मूर्तियाँ भी हैं। ऐसे स्थान में मंदिर देखकर आंतरिक आनंद होता है। हिंदुत्व का भाव एक बार हृदय में हिलोरें मारने लगता है। मसूरी में कदाचित् कोई भी मंदिर नहीं, किंतु नैनीताल में दो मंदिर हैं।

इसके पास ही दो बड़ी इमारतें हैं—एक में स्केटिंग होती है, दूसरी में सिनेमा-गृह है। पास ही एक ऊँचे पर काफ़ी बड़ा कटहरेदार चबूतरा है, जिस पर बैठने के लिये तिपाइयाँ पड़ी हैं। यहाँ से झील का दृश्य बहुत सुंदर मालूम पड़ता है।

इस स्थान का नाम 'फ़्लैट' है, और नाम के अनुसार ही यह स्थान बहुत लंबा-चौड़ा मैदान है। इतना लंबा-चौड़ा जिसमें घोड़े दौड़ाए जाते हैं, और फ़ुटबाल तथा हाकी खेलने के लिये कई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ील्ड बनी हैं। सायंकाल खिलाड़ियों का खेल देखने को हज़ारों आदमी जमा होते हैं। एक ओर बहुत ऊँची दीवार है, और उस पर कटहरे लगे हैं। यह 'फ़्लैट' कई ओर कटहरे से घिरा है। इसी पर १२ मई, १९३७, बुधवार को सायंकाल शायद एडवर्ड दि एट्थ (वर्तमान ड्यूक ऑफ़ विंडसर) के 'कारोनेशन' के उपलक्ष में ख़ूब आतशबाज़ी छूटी थी। मैं भी उस दिन वहीं था। बड़ी भीड़ थी, किंतु 'फ़्लैट' सबको स्थान दे सकता था, क्योंकि काफ़ी लंबा-चौड़ा था।

मल्लीताल का बाज़ार तल्लीताल के बाज़ार से कहीं अच्छा और साफ़ है, किंतु जो सफ़ाई, सजावट और अच्छाई मसूरी के बाज़ारों में है, उसका चतुर्थांश भी यहाँ नहीं।

गंदगी यहाँ भी पर्याप्त है। बाज़ार काफ़ी बड़ा है, और हर प्रकार की वस्तुएँ मिल जाती हैं। बड़े-बड़े फ़र्म, कंपनियाँ आदि भी इसी ओर हैं। इस ओर ऊँचे स्थानों पर स्थित कोठियों पर अँगरेज़ भी रहते हैं। और आगे बढ़कर 'सेक्रेटरियट' के भवन हैं। ये बड़े सुंदर और पहाड़ी के नीचे बने हैं। और, यह स्थान ख़ास तौर से चुनकर तय किया गया होगा, ऐसा लगता है। इसके आस-पास कई एक छोटे-बड़े, किंतु सुंदर बाग़ हैं। यहाँ से नैनीताल का दृश्य बहुत मनोहर दिखलाई देता है।

चाइना पीक जाने का इधर ही से रास्ता है। नैनीताल में सर्वोच्च स्थान चाइना पीक ही है। लाल और हरी पत्तियों के पेड़ अलग-अलग पंक्ति में ऐसे खड़े दिखाई देते थे, जैसे दो टीमें (दल) भिन्न-भिन्न रंग की पोशाक पहने 'ड्रिल' (क़वायद) कर रही हों। यहाँ इतने अधिक रंग-बिरंगे फूल दृष्टिगोचर होते हैं कि चित्त प्रसन्नता की सीमा को पहुँच जाता है। कहते हैं, जितनी जड़ी-बूटियाँ इस रास्ते में हैं, उतनी कहीं नहीं। दुनिया-भर की जड़ी-बूटियाँ यहाँ उगती हैं। इस ओर कोई झरना नहीं। झरना तो नैनीताल-भर में नहीं है, जब कि मसूरी में बहुत-से झरने हैं। बड़ी कठिन, सीधी चढ़ाई गई है। हम लोग एक रास्ते से गए, और दूसरे से लौटे। यहाँ से बदरीनाथजी की बरफ़ बहुत साफ़ दिखाई देती है। नैनीताल से यह लगभग १,००० या १,५०० फ़ीट ऊँचाई पर है, अतः वहाँ की हवा का अधिक मधुर और ठंडा होना स्वाभाविक ही है। दूसरा रास्ता छोटा तो अवश्य है, पर बड़ा ऊबड़-खाबड़, ऊँचा-नीचा और कहीं-कहीं कष्ट-

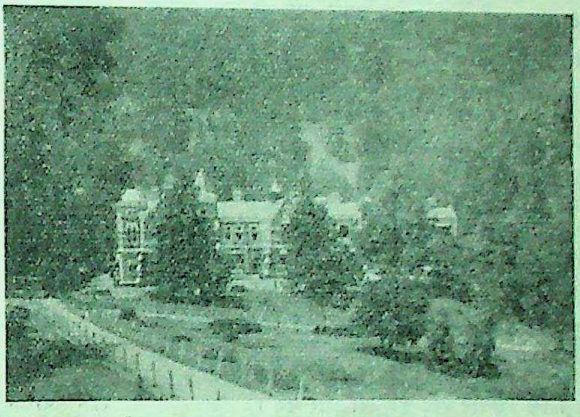

सेक्रेटरियट-भवन—नैनीताल

प्रद है। सड़क के एक ओर बहुत नीचे गड्ढे हैं, और ऊपर से नीचे का दृश्य देखने में बहुत अच्छा लगता है। किंतु इस ओर भी लोहे के सींख़चे नहीं लगे हैं, और सड़क भी कम चौड़ी है, और बराबर भी नहीं। जाते समय हम लोग बंदरों की तरह मुख्य मार्ग छोड़कर short cut (लघु मार्ग) के फेर में पहाड़ी खंडों को पकड़-पकड़कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चढ़ते थे, किंतु मुख्य सड़क के आस-पास ही रहते थे। ऐसा करना ख़तरनाक था, किंतु कितना आनंद इस स्वतंत्रता-सूचक भूमि में आता है—मनुष्य अपनी घर-गृहस्थी, सांसारिक कष्ट आदि भूला, अपने नेत्रों से प्रकृति का सौंदर्य पान करता हुआ, अपनी आत्मा को तृप्त करता हुआ अपने आपे को भूल जाता है। रास्ते-भर तरह-तरह की पत्तियाँ और रंग-बिरंगे फूल तोड़ते हुए हम लोग बढ़ रहे थे। थोड़ी दूर आने पर एक सज्जन, जो वहीं के रहनेवाले एक सभ्य और मध्यम श्रेणी के गृहस्थ थे, घोड़े पर चढ़े चाइना पीक के उस ओर अपने गाँव जा रहे थे। वहाँ के निवासी कितने सहृदय, प्रेमी और निर्मल तथा सात्त्विक भाववाले होते हैं। हम लोगों के साथ बच्चे भी थे बारह-बारह वर्ष के। हम लोगों के लाख कहने पर भी उन ब्राह्मण और ज़मींदार महोदय ने अपने पास बच्चों को बैठा लिया, और रास्ते-भर इधर-उधर की बातें करते रहे। एक हमारे प्रांत के ज़मींदार हैं, जिनमें सहृदयता और प्रेम का जैसे अभाव ही है। बादल घिर आए, पानी की फुहार पड़ने लगी, किंतु वहाँ ठहरने का स्थान कहाँ—हम लोग ऊपर बढ़ते ही गए। पहाड़ों का इतना सुंदर दृश्य जीवन में केवल एक ही बार देखने का अवसर और प्राप्त हुआ था, और वह था सहस्रधारा की यात्रा में। हवा इतनी तेज़ कि किनारे खड़े हों, तो गिर पड़ें।

यहाँ की और शहरों की हवा में वैसा ही अंतर है, जैसे चार दिन का बासी रंगूनी चावल और कालका-भंडार के ताज़े रसगुल्ले के स्वाद में अंतर है। यहाँ लकड़ी टेक-टेककर पहाड़ों पर चढ़ने-उतरने में क्या आनंद आता है—एक सेकेंड में थके, बैठे, थकावट दूर की, और फिर चले। चुंगी-घर के पास एक विशाल वृक्ष है, वहीं बैठकर देखने से नगर का पूर्ण दृश्य दिखाई देता है, और देखने में बहुत मनोरम लगता है। प्रकृतिदेवी का निकेतन नैनीताल टीक के वृक्षों का घर है। कुछ पेड़ों में मुकुट की तरह सजी हुई पत्तियाँ होती हैं। जंगल और नगर का सुंदर सम्मिश्रण यहाँ दिखाई देता है, मानो घनघोर जंगल नगर के ऐशोआराम और तड़क-भड़क से प्रेम-पूर्वक भेंट कर रहा हो।

रात्रि के समय चारो ओर जब ऊँची-ऊँची पहाड़ियों पर स्थित कोठियों की बत्तियाँ जल जाती हैं, तो ऐसा लगता है, जैसे श्याम घन के बीच-बीच में ज्योतिर्मय उडुगण। कोठियों से निकलता हुआ धुआँ एक अलौकिक सुख और सुषमा का प्रादुर्भाव मनुष्य के हृदय में करता है। अपने होटल से भी देखने में यह दृश्य अवर्णनीय होता है। एक ओर हरे-हरे पेड़ों का झुरमुट और लहलहाता जंगल और एक ओर (अलमोड़ा जानेवाली सड़क जिस ओर है, उस ओर) सैकड़ों मील तक नीचे पर स्थित पहाड़ी घाटियाँ और लंबे-चौड़े, ऊँचे-नीचे मैदान। यह नीचे का दृश्य बहुत ही सुंदर दिखलाई देता है।

हमारे होटल से होकर गवर्नमेंट-हाउस का रास्ता था। एक दिन वहाँ गए। पहले सेंट जोसेफ़-कॉलेज पड़ता है। वह उँचाई पर स्थित है, और बहुत काफ़ी घेरे में उसके भवन तथा खेलने के मैदान हैं। गवर्नमेंट - हाउस* देखा। उसके थोड़ा और ऊपर चढ़ने पर टैंक पड़ता है। यह एक तैरने का क्लब है, शायद सिर्फ़ अँगरेज़ों के लिये। पक्का तालाब है, चारो ओर कुरसियाँ पड़ी हैं। फाँदने के लिये जल के ऊपर एक तख़्ता लगा है। यहाँ से थोड़ी और उँचाई पर एक चट्टान है—काफ़ी

* गवर्नमेंट-हाउस के अंदर एक बड़े कमरे में सुंदर Botanical garden (वनस्पति-उद्यान) है। काफ़ी लंबे-चौड़े बाग़ उसमें कई हैं। वहीं एक स्थान पर पास ही बहुत-से पशु-पक्षी बंद थे, शायद वे भी गवर्नमेंट-हाउस के हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊँची और चौड़ी। यहाँ से काठगोदाम और नैनीताल के बीच की भूमि और एलूफ़ास्ट की सड़क पर आते-जाते मोटरों का आनंद लीजिए। नैनीताल से मोटर और बसें एक साथ ऊपर-नीचे आती-जाती हैं, क्योंकि सड़क, जैसा पहले कह चुका हूँ, काफ़ी चौड़ी है। वहाँ से लौटकर कौंसिल - चेंबर था—लखनऊ के मुक़ाबिले बहुत छोटा भवन, किंतु बहुत सुंदर। वहाँ से लौटकर जब होटल आए, तो एक बरात निकल रही थी। उसका वर्णन कर देना भी अप्रासंगिक न होगा। आगे - आगे दो-तीन आदमी अजीब तरह से नाचते हुए जा रहे थे—वे बहुत उचक रहे थे। उनके हाथ-पैर फड़क रहे थे। टाँगें, गरदन, हाथ सब टेढ़े हुए जाते थे। अपनी पोशाक में, जो बहुत सादी थी, अर्थात् पाजामा, कोट और टोपी, बराती थे। एक बाजा बज रहा था—वह भी पहाड़ी ढंग का था। यह थी पहाड़ियों की बरात।

इसके अतिरिक्त 'लैंड्स एंड' भी वहाँ का दर्शनीय स्थान है। इसी ओर से 'टिफ़िन टाप' भी जाते हैं। 'लैंड्स एंड' नाम पड़ने का कारण यह है कि एकाएकी एक स्थान पर सड़क रुक जाती है। वहाँ से हज़ारों फ़ीट नीचे गड्ढे हैं, और एक बिलकुल सीधी पहाड़ी चट्टान के ऊपर 'लैंड्स एंड' स्थित है। कटहरा लगा है, सायबान पड़ा है, और उसके नीचे तिपाइयाँ हैं। वहाँ से खुरपाताल आदि दिखाई देते हैं। उधर से एक रास्ता भी है खुरपाताल जाने का—कठिनता से डेढ़-दो फ़ीट चौड़ी एक पगडंडी है, उसी सीधी चट्टान के ऊपरी भाग में, जिसके नीचे हज़ारों फ़ीट नीचे गड्ढे हैं। हवा का एक तेज़ झोंका आपको पगडंडी से उड़ाकर नीचे गिराने के लिये काफ़ी है—दूसरी ओर पगडंडी के जंगल हैं। इतना भयानक वह रास्ता है। मैं १ या १॥ मील उसी रास्ते से गया, और लौट आया। मेरी बोटी-बोटी काँप रही थी, और प्रत्येक श्वास में ईश्वर का नाम निकलता था।

'स्नोव्यू' भी दर्शनीय स्थान है। प्रातःकाल वहाँ पहुँच जाइए। सैकड़ों मील फैले, बरफ़ से ढके पहाड़ आपको दूर पर दिखाई देंगे। यहाँ का दृश्य अवर्णनीय है। टीनशेड के नीचे तिपाई पर बैठ जाइए, वहाँ का आनंद लीजिए। श्रीधर पाठक का 'प्रकृति-वर्णन' याद आ जाता है। पहले इसी स्थान के पास गवर्नमेंट-हाउस था, किंतु अब वह दूसरी जगह बन गया है। 'स्नोव्यू' के पास ही 'आइस-खड्ड' है। इसी ओर 'लड़िया-कोटा' है।

सिपाहीधारा जाने की सड़क पोस्टऑफ़िस के पास से है—वही सड़क, जिस पर मोटर चलते हैं। यहाँ नहाने से बड़ा ही आनंद आता है। इस सड़क पर दो मील जाने से इसके अतिरिक्त और बहुत-सी दर्शनीय चीज़ें नैनीताल के आस-पास हैं। उनके नाम दिए जा चुके हैं।

नैनीताल कुमायूँ-डिवीज़न के अंतर्गत है। बरेली से रुहेलखंड ऐंड कुमायूँ रेलवे काठगोदाम तक आती है। लखनऊ सिटी-स्टेशन से सीधे काठगोदाम भी आर० के० आर० आती है। यह समुद्र-तट से ६,४००, फ़ीट ऊँचा है। वर्षा यहाँ काफ़ी होती है। वर्ष में जून, जुलाई, अगस्त और सितंबर-महीने में वर्षा अधिकतर होती है। जाड़े में यहाँ बहुत सरदी पड़ती है, और बरफ़ गिरती है। गरमी में यहाँ इतनी ठंडक होती है कि मैदान के रहनेवालों को ऊनी कपड़े पहनने पड़ते हैं।

नैनीताल से कुछ दूर तक निम्न - लिखित स्थान हैं—

(१) भुवाली—यह नैनीताल से सात मील दूर है। मोटर से जाने में बहुत ख़र्च पड़ता है, और काफ़ी चक्कर है, अतः यहाँ से लोग प्रायः घोड़ों, रिक्शा, डाँडी पर या पैदल ही जाते हैं। हम लोग पैदल ही गए। 'लोएस्ट चाइना रेंज'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम की सड़क से होते हुए हम लोग चले। नैनीताल से भुवाली आने में बहुत सुंदर प्राकृतिक दृश्यों के दर्शन होते हैं। कई एक झरने रास्ते

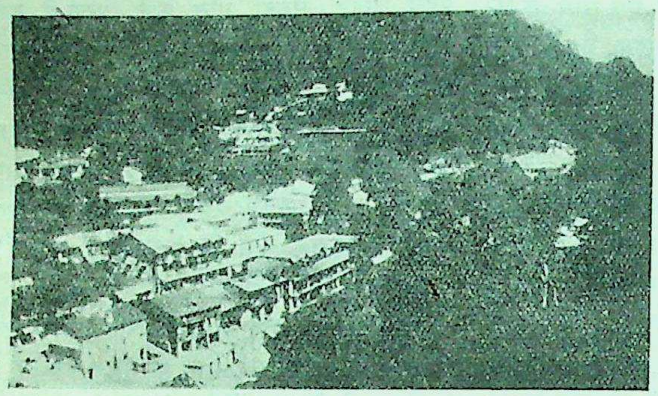

भुवाली बाज़ार

में पड़ते हैं। कहते हैं, उन झरनों का 'आइरन वाटर' बड़ा लाभदायक होता है, जो बिलकुल सच है। पहले हम लोग भूमियाधार गए, जो प्राकृतिक सौंदर्य के मध्य में स्थित है। वहाँ से भुवाली मोटर की सड़क से होकर पहुँचे। यहाँ प्रसिद्ध भुवाली-सैनीटोरियम है, जहाँ तपेदिक़ के रोगी आते हैं। यह स्थान काफ़ी ऊँचे पर है। अस्पताल के पास काफ़ी ज़मीन है। यहाँ का प्रबंध, भवन, रोगियों के कमरे, सफ़ाई, आबोहवा, सभी सराहनीय है। ए, बी, सी, डी क्लास के कमरे रोगियों के देखे। इसे देखकर हम लोग फ़ारेस्ट आए। भुवाली के रोगियों के लिये यह सुंदर स्थान बना दिया गया है—वृक्ष, लतादि से आच्छादित, स्वर्ग-भूमि के समान सुंदर और चित्ताकर्षक। वहाँ से आकर भुवाली का बाज़ार देखा। छोटा है, पर आवश्यकता की सब वस्तुएँ मिल जाती हैं। यहाँ पाइन के पेड़ बहुतायत से हैं, जो तपेदिक़ के रोगियों के लिये बहुत लाभकारी हैं। सड़क के दोनो ओर बहुत सूखी पत्तियाँ पड़ी रहती हैं। पेड़ों में नंबर खुदे हैं, और उनकी छाल कटी है, एवं एक-एक कुल्हड़ उनमें बँधा है, जिनमें तारपीन का तेल जमा होता रहता है। इस लाभदायक व्यवसाय की ओर पहलेपहल अँगरेज़ों का ध्यान गया, और लाखों रुपए की आमदनी इससे होती है।

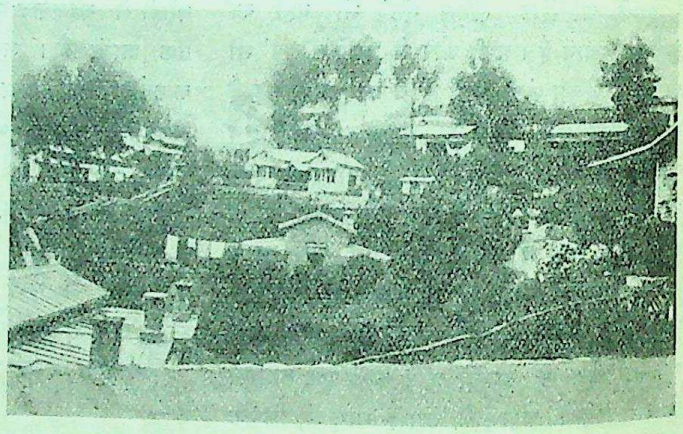

भुवाली-सैनीटोरियम

जिस होटल में हम लोग टिके थे, वह मुख्य बाज़ार ही में था। होटल के पीछे एक झरना सदा कल-कल करके बहता रहता है, जो सुनने में बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छा लगता है। वहाँ से एक पुल पार किया, जिसके नीचे एक छोटी पहाड़ी नदी बह रही थी। फिर एक ऐसे बाग़ में पहुँचे, जहाँ महाराजा बीकानेर की माता की समाधि है। उसी में एक सुंदर उद्यान है।

यहाँ से होटल लौटे, और मच्छीडिग्गी गए। यह भुवाली से ३ मील दूर है। पहाड़ी पुल भी क्या होते हैं। पेड़ के दो-तीन बड़े-बड़े तने रख दिए, लीजिए पुल हो गया। बड़ा सुंदर दृश्य है। वहाँ एक झरना बहता है, और उसका पानी जो कुछ गहरे तालाब बना लिए गए हैं, उनमें

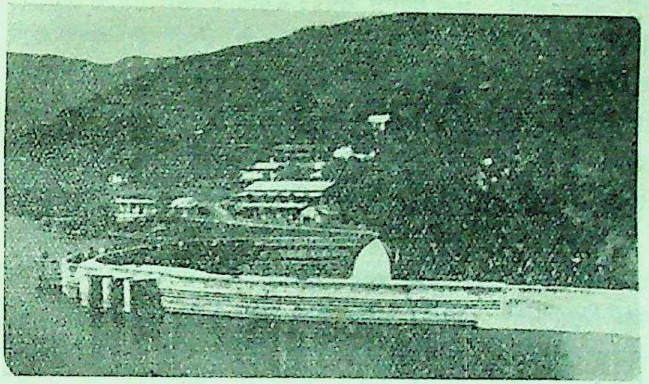

भीमताल—नैनीताल

जमा किया जाता है। उसके अंदर जाने के लिये चार आना टिकट है। चारो ओर लकड़ी और काँटों की चहारदीवारी है। झरने के किनारे-किनारे मीलों हम लोग चले। पहाड़ी ज़मीन पर छोटे-छोटे पत्थर बिछे होते हैं, उन पर मोती-सा निर्मल और अमृत-सा मीठा जल बहा करता है। मच्छीडिग्गी में पानी की चक्की कैसे चलती है, यह अपने हाथ से चलाकर देखी। बहता हुआ पानी जब पहिए पर ऊपर से ज़ोर से गिरता है, तो पहिया नाचने लगता है, और उस पानी को एक पटरा लगाकर रोक दो, तो वह दूसरे रास्ते से बहने लगेगा, और चक्की बंद हो जायगी। यह स्थान बहुत ही सुंदर है।

(२) भीमताल—यह भुवाली से पाँच मील पर है। बहुत नीचे पर है। जितना ही जाओ, उतनी ही गरमी बढ़ती जाती है। अच्छी आबादी है। दूकानों में आवश्यकता की सभी वस्तुएँ सरलता से मिल जाती हैं। यहाँ बड़े लंबे-चौड़े मैदान हैं। बड़ा सुंदर पुल है। बड़ा भारी ताल है, नैनीताल-सा। इस ओर पेड़ तनिक कम, और दूर-दूर पर हैं। ताल में बेशुमार मछलियाँ हैं, और बहुत बड़ी-बड़ी। पुल के पास भीमेश्वर महादेव का मंदिर है। पुल से ही बाँध का काम लिया जाता है। इस ओर साँप बहुत हैं। यहाँ बहुत-से ख़ानाबदोश डेरा डाले पड़े थे। यहाँ एक २-३ इंच लंबा, सहतूत-सा मोटा और हरा कीड़ा मेरे मित्र के ऊपर गिर पड़ा, और धोती में चिपक गया। राजा नैपाली की कोठी इसी ताल के किनारे है।

(३) सातताल—भुवाली से जो रास्ता चलता है भीमताल को, वही रास्ता आधी दूर तक तो सातताल जाने में भी प्रयोग होता है, फिर रास्ते कट जाते हैं। यहाँ सात ताल हैं, इसी से इसका नाम सातताल है। यह बहुत ही मनोरम स्थान है। यह ईसाइयों और अमेरिकन मिशनरी का गर्मियों का अड्डा है। यहाँ फ़िज़िकल ट्रेनिंग के लिये लड़के बहुत-बहुत दूर से विद्यार्थी आते हैं।

(४) रामगढ़—यह भुवाली से ७-८ मील है। यहाँ गए, तो चार-पाँच मील तक तो न कोई झरना है, न कोई दूकान। बहुत नीचे पर एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान पर झरना दिखाई भी दिया, किंतु उस दुर्गम स्थान तक पहुँचना असंभव था। ५ मील चलकर एक दूकान दिखाई दी। वहाँ पानी और दूध पिया। कितना स्वादिष्ट और गाढ़ा दूध यहाँ का होता है। फिर तो बराबर २-३ मील तक कई झरने रास्ते में पड़ते हैं। 'झरना ऊँची भूमि से आ रहा है, और नीची ज़मीन पर पानी जा रहा है, पर बीच में पक्की सड़क पड़ गई थी, इससे उस सड़क के ऊपर से बहकर और होकर पानी नीचे गिरता है। एक अजीब दृश्य है। एक झरना तो यहाँ इतना चित्ताकर्षक है कि हम लोगों ने वहीं बैठकर भोजन किए, और बड़ी देर तक वहाँ लेटे-बैठे रहे—झरने के थोड़ा ऊपर चढ़कर। वे भी जीवन की कितनी सुखमय घड़ियाँ थीं।' इस ओर फल के बाग़ बहुत हैं। कई अँगरेज़ भी अपनी-अपनी भूमि में फल बुवाते हैं, और उनकी अच्छी खपत भी है। यहाँ के फलों में मुख्य फल चेरी, काफल, साद्ध, किल-मोड़ा और पहाड़ी शरीफ़ा आदि हैं। रामगढ़ में अच्छी बस्ती है। छोटा-सा बाज़ार भी है। खाने-पीने तथा आवश्यकता की सभी वस्तुएँ मिल जाती हैं। यह स्थान अपनी स्वास्थ्य-वर्धक जलवायु और अपने फल के बग़ीचों के लिये विशेष रूप से प्रसिद्ध है।

इसके अतिरिक्त छोटे-छोटे स्थान और भी कई हैं (भुवाली के आस-पास), किंतु उनके विषय में लिखने से लेख का कलेवर बढ़ जायगा, अतः उनके विषय में नहीं लिखा जा रहा है। वे स्थान नौकचियाताल, मुखरेश्वर आदि हैं।

नैनीताल के विषय में दो-एक बातें और बताकर मैं इस लेख को समाप्त करता हूँ। है तो यह हमारे प्रांत की (गर्मी के दिनों की) राजधानी या गवर्नमेंट-सीट, किंतु यहाँ की जलवायु बहुत अच्छी नहीं। हम लोगों की नाक और ओठ चिटक गए थे, और रंग काले पड़ गए थे। इससे तो भुवाली की जलवायु श्रेष्ठ है। दूसरे यह कि यहाँ पर 'सदा-सुहागिन' के भी दर्शन हुए—वह भी कई एक। नैनीताल में ऐसा होना अनुचित है। इससे तो मसूरी अच्छा है। वहाँ वेश्याओं के रहने की आज्ञा नहीं, अतः प्रकट रूप में वहाँ ये नहीं हैं, यद्यपि गुप्त रूप से सभ्य और गृहस्थ स्त्रियों का वेष बनाए हैं। मसूरी में भी वेश्याएँ हैं, यह मुझे बताया गया। नैनीताल और मसूरी की यदि हम तुलना करते हैं, तो दोनो ही अपने-अपने स्थान पर सुंदर हैं। इसमें और बातें हैं, और प्रकार का सौंदर्य है, और मसूरी में और बातें और और तरह का सौंदर्य है। किंतु अंत में मसूरी ही मेरे विचार में अधिक उत्तम है। संभव है, इसका कारण रुचिवैचित्र्य हो।

हम लोग भुवाली से उतरकर काठगोदाम पहुँचे। लॉरी द्वारा वहाँ से हलद्वानी गए। यहाँ की जलवायु गरम है—मैदानों की-सी। यह मैदानों में स्थित है, यद्यपि इसके चारो ओर ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ हैं। यहाँ बहुत बड़ी बस्ती है, और काफ़ी बड़ा बाज़ार। पहाड़ से उतरने के बाद गरमी बहुत सताती है, क्योंकि वहाँ तो हम लोग ठंडक के अभ्यस्त हो जाते हैं, और यहाँ गरमी होती है। किंतु पहाड़ी प्रांत के निकट होने के कारण यहाँ भी रात्रि के समय पर्याप्त मात्रा में ठंडक पड़ती है। रात की गाड़ी से वहाँ से चले, और प्रातःकाल लखनऊ सिटी-स्टेशन पहुँच गए।

सुधा का अगला विशेषांक !
फिर बड़ी सज-धज से, फ़रवरी, १९४१ ई० में, निकलेगा !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय प्रोफ़ेसर महेशचरण सिनहा

[श्रीयुत वसंतलाल]

आज देश के प्रसिद्ध विज्ञान-शास्त्री, सामाजिक नेता, प्रोफ़ेसर महेशचरण सिनहा बी० ए०, एम्० एस्-सी०, ए० जी० आर० के सुविख्यात नाम के साथ स्वर्गीय शब्द लगाते हुए लेखनी ठिठक जाती है। ऐसा योग्य विद्वान्, अनुभवी, देश-भक्त, जाति का परम शुभ-चिंतक, प्रतिभाशाली पुरुष-रत्न आज हमारे बीच से उठ गया। छ महीने तक राजयक्ष्मा-रोग से लड़ते-लड़ते प्रोफ़ेसर सिनहा ने २३ जून, १९४० को प्रातः छ बजे अपना जीर्ण-शीर्ण शरीर छोड़ दिया।

स्वर्गीय प्रोफ़ेसर सिनहा का जन्म ६ नवंबर, सन् १८८२ ई० में, लखनऊ के एक प्रसिद्ध कायस्थ-घराने में, हुआ था, जो अपनी दानशीलता, विद्या-प्रेम और जाति-सेवा के लिये प्रसिद्ध था। आपके पितामह राय रतनलालजी नवाबी में चकलेदार थे, लेकिन अँगरेज़ी शासन-काल में उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। फिर भी जब मुंशी कालीप्रसादजी कुल-भास्कर, संस्थापक कायस्थ-पाठशाला, इलाहाबाद, पाठशाला की सहायता के लिये उनके पास आए, तो उन्होंने अपना एकमात्र भूहर ग्राम, जो लगभग पचास हज़ार रुपए के मूल्य का था, दे दिया। आपके पिता पांडे बाज़बहादुर कट्टर आर्य-समाजी विचारों के थे। उन्होंने जाति-सेवा—समाज-सुधार में ही अपना जीवन व्यतीत कर दिया। उर्दू में उन्होंने कई पुस्तकें लिखी थीं। यह परिवार बहुत पहले से ही सुधारवादी था। प्रोफ़ेसर सिनहा के चचेरे भाई ने विधवा-विवाह करके अपने उच्च विचारों का परिचय दिया था। जब आपके पिता का देहांत हुआ, उस समय आपकी आयु १०-११ वर्ष की थी। आपके तीन सगे भाई और थे—एक बड़े, दो छोटे, और विधवा माता के अतिरिक्त कोई न था। आर्य-समाजी होने के कारण सनातनी कायस्थ-बिरादरी ने आपका साथ नहीं दिया, और बॉयकाट कर दिया। आपकी प्रारंभिक शिक्षा लखनऊ में ही हुई थी। तत्पश्चात् आप कायस्थ-पाठशाला, इलाहाबाद चले गए, क्योंकि आपके पितामह द्वारा दी गई जायदाद से, मुंशी कालीप्रसादजी ने वादा किया था, राय रतनलाल के परिवार के तीन लड़के हमेशा पाठशाला से शिक्षा प्राप्त करेंगे।

आप प्रारंभ से ही प्रतिभाशाली थे। आप पाठशाला-बोर्ड्स-यूनियन के सेक्रेटरी रहे। वहाँ से पढ़ाई समाप्त कर चलते समय आपको मानपत्र दिए गए। आपने १५ वर्ष की अवस्था में, १८९७ में, स्कूल-फ़ाइनल-परीक्षा प्रथम श्रेणी में 'विद क्रेडिट' पास की। उसके बाद आपने लखनऊ-रीड-क्रिश्चियन-कॉलेज से, सन् १९०२ में, बी० ए० पास कर इलाहाबाद में लॉ-क्लास ज्वाइन किया। आप डिबेटिंग-क्लब के कई साल तक प्रेसिडेंट और सेक्रेटरी रहे। आप अधिकतर सर सच्चिदानंद सिनहा और सी० वाई० चिंतामणि की संगति में रहे। वहाँ हर जगह और हर हालत में अँगरेज़ियत प्रधान थी।

जिस समय आप वकालत पढ़ रहे थे, जापान की उन्नति का समाचार अख़बारों में बहुत छपता था। एक रोज़ 'ऐडवोकेट' (लखनऊ का अख़बार) में यह ख़बर प्रकाशित हुई कि जापान के सौदागर सेठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वासियामल आसूमल सिंधी ने दो छात्रवृत्तियाँ स्वामी रामजी द्वारा उन विद्यार्थियों को, जो टेक्-निकल ट्रेनिंग के लिये जापान जाना चाहें, देनी स्वीकार की हैं। बाबू गंगाप्रसाद वर्मा से, जो 'ऐडवोकेट' के संपादक थे, आपसे बातचीत हुई, क्योंकि वह छात्रवृत्ति के लिये छात्रों के चुनाव की कमेटी के मेंबर थे। वह आपसे बहुत प्रभावित हुए, और आपको छात्रवृत्ति दिलवाई। इसी छात्रवृत्ति की आशा पर आप वकालत पढ़ना छोड़कर जापान चल दिए। रास्ते में ब्रह्मा, मलाया, चीन आदि देश घूमते हुए योकोहामा तक पहुँच गए। योकोहामा में मि० पूरनसिंह, मि० मुकर्जी, मि० मजूमदार आदि विद्यार्थियों ने आपका बड़ा स्वागत किया। इनमें श्रीगिरींद्रनाथ मुकर्जी, जो इन सबमें हँसमुख और सरल-हृदय थे, बंदर में किश्ती पहुँचते ही हँसकर कहने लगे—"लो जी, ये लोग सेठ आसूमल के भरोसे जापान आए हैं। वाह-वाह, अहा हा! अच्छा हुआ, आ तो गए। देखा जायगा।"

इन वाक्यों का अर्थ प्रोफ़ेसर सिनहा की समझ में उस समय न आया था। सेठ के निवास-स्थान पर जब गए, तो उन्होंने बड़ा आदर-सत्कार किया। जब छात्रवृत्ति की बात चली, तो उन्होंने जवाब दिया—"मैं १५ येन से ज़्यादा नहीं दे सकता", और माफ़ी माँगी। तब तो प्रोफ़ेसर सिनहा बड़े चक्कर में पड़े। आपने जापान से कई अपीलें निकालीं, लेकिन उनकी किसी हिंदुस्तानी ने सुनवाई नहीं की। अब वह क्या करते। पास में पैसा भी नहीं था कि हिंदुस्तान ही वापस आ जाते। विवश होकर वहाँ की फ़र्मों और फ़ैक्टरियों में काम करके धन प्राप्त करते रहे, और टोकियो - युनिवर्सिटी में पढ़ते रहे, और वहाँ से टेक्नो - केमिस्ट की डिग्री प्राप्त की। आप जब तक जापान में रहे, वहाँ के बड़े-बड़े अफ़सरों से मिलते रहे। वे आपसे बहुत प्रभावित हुए। जापान के मिनिस्टर ने आपको चलते समय अमेरिका-स्थित जापानी दूत के नाम एक पत्र दिया था कि जब तक इनका कोई प्रबंध न हो, इनके लिये जापान - ऑफ़िस में ठहरने का प्रबंध कर दिया जाय।

जब आप अमेरिका पहुँचे, एशियाटिक बार तो न था, फिर भी हरएक यात्री के पास एक निश्चित रक़म होना ज़रूरी था, जो लगभग ६००) के होनी चाहिए थी। जहाज़ी अफ़सर ने जब आपसे प्रश्न किया, तो आपने कहा—"मुझे तो कुछ मालूम नहीं था।" तब उसने कहा—"तुम यहाँ 'लैंड' नहीं कर सकते।" आप फिर बड़ी मुसीबत में पड़े। सब यात्री उतर गए, केवल आप अकेले बैठे रह गए। बड़े परेशान थे। तब तक उसी ऑफ़िसर की पत्नी वहाँ आई। उसने देखा, केवल एक यात्री चुपचाप बैठा है। उसके मुख पर दुःख और चिंता की गहरी छाप अंकित है। यह देखकर स्त्री-सुलभ कोमलता उसके हृदय में उदय हो आई। उसने उत्सुकता से पूछा—"तुम क्यों बैठे हो?" प्रोफ़ेसर सिनहा ने विस्तार-पूर्वक सब हाल बताया। तब उसने इनकी नेशनैलिटी (जातीयता) पूछी। जब उसे मालूम हुआ कि आप हिंदू हैं, तो उसने फिर दरियाफ़्त किया कि आपको धर्म के विषय में दिलचस्पी है या नहीं? आपने उत्तर में कहा—"थोड़ी-सी।" फिर उसने बारी-बारी से पूछा—"आप हिंदू-धर्म, इस्लाम, क्रिश्चियैनिटी और बौद्ध-धर्म के बारे में जानकारी रखते हैं?" आपने कहा—"थोड़ी-थोड़ी।" इतना पूछकर वह चली गई। थोड़ी देर बाद वह अपने पति के साथ आई, और इस बार आपको उस अफ़सर ने 'लैंड' करने की आज्ञा दे दी। प्रोफ़ेसर सिनहा बताया करते थे कि उतरते समय मेरी आँखें इधर-उधर कुली की खोज करने लगीं, यद्यपि सामान आपके पास थोड़ा ही था। एक साल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापान में रहने पर भी भारतीय संस्कृति का प्रभाव सर्वथा नष्ट नहीं हुआ था। उस ऑफ़िसर ने आपको असमंजस में पड़ा देखकर कहा—"यह इंडिया नहीं, अमेरिका है।" और उसने स्वयं आपको सामान उतरवाने में सहायता प्रदान की। फिर आपसे पूछा—"आप कहाँ ठहरेंगे, क्योंकि मैं शाम को आपसे मिलना और अपने मित्रों से मिलाना चाहता हूँ।" आपने कहा—"जापान - ऑफ़िस में।" शाम को वह आपके पास गया, और अपने घर लिवा ले गया। वहाँ उसके दस-बारह मित्र भी थे, जिनमें एक ई० एच्० जेम्स थे, जो पीछे, सन् १९३२ में, हिंदुस्थान आए थे, और महात्मा गांधी आदि से मिले थे। उन्होंने कई किताबें लिखी हैं, जिनका हिंदुस्थान के लिये निषेध है। उनमें एक है 'बर्डन ऑफ़ दि ब्राउन मैन', जो उन्होंने हिंदुस्थान में ही लिखी थी, लेकिन जिनेवा से छपी है।

वहाँ प्रोफ़ेसर सिनहा से जिसधर्म के विषय में जो भी प्रश्न किया गया, उसका आपने इस ख़ूबी से उत्तर दिया कि वे सब बहुत प्रभावित हुए। उसके पश्चात् मि० जेम्स ने पूछा—"आपका यहाँ आने का क्या अभिप्राय है?" प्रोफ़ेसर साहब ने कहा—"मैं शिक्षा ग्रहण करने आया हूँ, ताकि उसे अपने देश में फैला सकूँ।" उन लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। सब एक स्वर से कह उठे कि आप तो वर्षों हमें सिखला सकते हैं। मि० जेम्स ने आपको अपने घर बुलवा लिया, और आप वहीं रहने लगे। उन्होंने कई स्थानों पर आपके लेक्चरों का प्रबंध करवा दिया। रोज़ शाम को आपले क्चर देने जाते, और उससे आपको पर्याप्त धन भी प्राप्त हो जाता। आपके खाने-पीने, रहने-सहने का सारा भार मि० जेम्स ने ले लिया। इसी अरसे में एक मज़ेदार घटना घटित हुई। एक दिन जब प्रोफ़ेसर सिनहा थियॉसोफ़िकल सोसाइटी के लेक्चर-हॉल से लौट रहे थे, तो बस में एक अमेरिकन लड़की सामने की सीट पर बैठी थी। न-मालूम उसकी समझ में क्या आया कि उसने एक स्थान पर पुलिस-स्टेशन में रिपोर्ट कर दी—"ऐन इंडियन विद मिस्टिक आइज़ स्टेयर्ड ऐट मी, ऐंड आई एम मच टेरीफ़ाइड।" फिर प्रोफ़ेसर साहब वहीं रोक लिए गए। शाम को खाने के समय जब वह मि० जेम्स के यहाँ न पहुँचे, तो उन्हें बड़ी चिंता हुई। उन्होंने पहले लेक्चर-हॉल में पुछवाया, फिर पुलिस से दरियाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि वह गिरफ़्तार हो गए हैं। तब मि० जेम्स उन्हें ज़मानत पर छुड़ा लाए, और मुक़दमा लड़ा, जिससे आप बरी हुए, और आपको मान-हानि की डिग्री मिली। उस लड़की के पास रुपया न था, तो जजों में से एक ने राय दी कि उसके एवज़ में आप उस लड़की से शादी कर लें। परंतु प्रोफ़ेसर साहब ने रुपया भी छोड़ दिया, और विदेशी लड़की से शादी करना भी स्वीकार नहीं किया। कहा—"हमारे देश में ऐसी शादियाँ पसंद नहीं की जातीं।"

आप जिस समय एम्० एस्-सी० में पढ़ रहे थे, वहाँ के व्यापारी 'कॉफ़ी' में कोई ऐसी चीज़ मिला देते थे कि उसके ज़ायक़े में भी फ़र्क़ न आता था, और वह इतनी सस्ती भी हो जाती थी कि 'कॉफ़ी' पैदा करनेवाले की पैदावार की लागत से भी कम पड़ती थी। लोग बड़े परेशान थे। प्रोफ़ेसर सिनहा ने इसे दरियाफ़्त करके विस्तार-पूर्वक मिलावट के विषय में उसका रूप-रंग, गुण, स्वाभाविक क्रिया का वर्णन, उसका असर, मिलावट की पहचान और उसके पता लगाने के कई साइंटिफ़िक तरीक़े आदि बातें थीसिस में लिख दीं। 'चिकोरी' जो 'कॉफ़ी' में मिलाई जाती थी, उसका परसेंटेज़ भी आपने बता दिया। युनिवर्सिटी बड़ी ख़ुश हुई। अमेरिका के बड़े-बड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रों में प्रशंसात्मक लेख निकले, और सारी अमेरिका में आपका नाम प्रसिद्ध हो गया। व्यापारियों को जब मालूम हुआ कि एक हिंदुस्थानी विद्यार्थी ने यह प्रमाणित कर दिया है कि 'चिकोरी' किस परसेंटेज़ में 'कॉफ़ी' में मिलाई जाती है, तो बहुत बिगड़े, और आपके विरुद्ध प्रोपेगैंडा करना शुरू कर दिया। लेकिन आपके सत्य और अटल प्रमाणों के आगे विरोधी-पक्ष को मुँह की खानी पड़ी।

अमेरिका में रहते हुए आप बराबर पत्रों में लेख आदि भेजते रहे। वहाँ के 'सीटिल', 'वाशिंगटन', 'स्टार' आदि पत्रों में तो आपके लेख छपते ही थे, किंतु आप हिंदुस्थान को भी भूले न थे। 'अमृत-बाज़ार-पत्रिका', 'ऐडवोकेट', 'इंडियन पीपुल', 'हिंदुस्तान रिव्यू' और उर्दू-अख़बारों में भी बराबर लेख आदि भेजते रहे।

कॉलेज में पढ़ने के समय और छुट्टियों में आपको स्वयं जीविकोपार्जन करना पड़ता था। वहाँ प्रत्येक युनिवर्सिटी और कॉलेज में एक विभाग होता है, जो विद्यार्थियों के लिये काम ढूँढ़ता, और उनके जीविकोपार्जन का प्रबंध करा देता है। जब प्रोफ़ेसर सिनहा पहलेपहल उस विभाग के अफ़सर से मिले, तो उसने कहा—"चूँकि आप हिंदुस्थानी हैं, इसलिये बहुत-से ऐसे काम हैं, जो आप करना पसंद नहीं करेंगे।" आपने उत्तर दिया—"मैं वह प्रत्येक काम कर सकता हूँ, जो जापानी या चीनी करता है।" उसने परीक्षा के तौर पर एक होटल में बर्तन साफ़ करने का काम दिलवा दिया। जब ख़ुशी से प्रोफ़ेसर सिनहा कुछ दिनों तक यह काम करते रहे, और वहाँ से आपकी कोई शिकायत नहीं आई, तो वह अफ़सर बहुत ख़ुश हुआ, और फिर उसने फल तोड़ने और अनाज के फ़र्मों में काम करने का प्रबंध करवा दिया। इस तरह आप जीविकोपार्जन कर शिक्षा ग्रहण करते रहे, और अमेरिका के देशों का भ्रमण भी। स्वामी रामतीर्थ-सोसाइटी, थियॉसोफ़िकल-सोसाइटी आदि में अपना ओजस्वी भाषण देते। हिंदुस्थान के पक्ष में ज़ोरों से पब्लिक-प्लेटफ़ार्म पर खड़े होकर बोलते। आपके सार-गर्भित, धारा-प्रवाह व्याख्यान से जनता मुग्ध हो जाती। इस तरह अमेरिका में आपका नाम प्रसिद्ध हो गया। वहाँ के हिंदुस्थानी विद्यार्थियों की आप बराबर सहायता करते, मिलते-जुलते और सलाह देते-लेते। हिंदुस्थानी एसोसिएशन, अमेरिका के सरपरस्त रहे। वहाँ के हिंदुस्थानी विद्यार्थियों की स्थिति हिंदुस्थान के पत्रों में छपवाते रहते। भारत के सुधार के लिये आप बहुत प्रयत्नशील रहे। आप बहुत चाहते थे कि अमेरिका की तरह अपने देश में भी विद्यार्थियों के लिये ऐसे ही स्कूल, कॉलेज और कारख़ाने चलाए जायँ।

अमेरिका के एग्रीकलचर-कॉलेज, कारवैलिस से आपने तीन वर्ष के अध्ययन में दस सार्टीफ़िकेट प्राप्त किए—१. एग्रीकलचर-केमिस्ट्री १९०४, २. बैक्ट्रियालॉजी १९०४, ३. केमिस्ट्री और जियालॉजी १९०५, ४. मिलेटरी टैक्टिक्स १९०५, ५. हार्टीकलचर १९०६, ६. एग्रीकलचर ऐंड वेटरनरी साइंस १९०६, ७. एग्रीकलचर मैशीनरी ऐंड स्टीम एंजिन १९०६, ८. एग्रीकलचर ऐंड फ़ीडिंग ऐंड वीडिंग ऑफ़ स्टॉक १९०६, ९. रोड इंजीनियरिंग १९०६ और १०. मास्टर ऑफ़ साइंस १९०६। युनिवर्सिटी के वार्षिक अधिवेशन पर, ओरिगन के गवर्नर की अध्यक्षता में, आपको मास्टर ऑफ़ साइंस का डिप्लोमा दिया गया।

एम्० एस्-सी० की डिग्री लेने के बाद प्रोफ़ेसर सिनहा ने महाराजा गायकवाड़ बड़ौदा से, जो उस समय न्यूयार्क में ही थे, कुछ सहायता लेनी चाही। महाराजा के सेक्रेटरी ने युनिवर्सिटी के गवर्नर से आपके विषय में पूछ-ताछ की। गवर्नर ने बड़े प्रशंसा-भरे शब्दों में आपकी तारीफ़ लिखी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिससे प्रभावित होकर महाराजा ने आपको लिखा—"हिंदुस्थान जाकर हमारी रियासत के कृषि-विभाग का चॉर्ज ले लो। मैं सफ़र-ख़र्च भेज रहा हूँ।" किंतु प्रोफ़ेसर साहब ने उन्हें लिखा—"मेरी शिक्षा अभी पूरी नहीं हुई है। जब तक मैं योरप में अन्य युनिवर्सिटियों में जाकर यह न जान लूँगा कि वहाँ ये चीज़ें किस तरह पढ़ाई जाती हैं, तब तक हिंदुस्थान न जाऊँगा। आप यदि ख़र्चे का भार उठा सकें, तो मैं उन युनिवर्सिटियों की शिक्षा से लाभ उठाकर आपके यहाँ जा सकता हूँ।"

यह महाराजा गायकवाड़ को स्वीकार न था। इसके उपरांत आप इँगलैंड चले गए।

इँगलैंड जाकर आप वहाँ के पार्लियामेंट के मेंबरों से मिले। हिंदुस्थान के लिये सुधार माँगे। व्याख्यानों से भारत के सुधार के लिये आवाज़ उठाई। इंडियन एसोसिएशन, लंदन के सेक्रेटरी रहे, और हिंदुस्थानी विद्यार्थियों की सहायता और सम्मति में रहे। आपकी प्रबल इच्छा थी कि लंदन से आप बैरिस्टरी का सार्टीफ़िकेट प्राप्त कर लें, लेकिन सरमाया न होने से कोई सहायता न मिली, और आपकी पढ़ाई रह गई। वहाँ लॉर्ड मॉरले (सेक्रेटरी ऑफ़ इंडिया) से आपसे बातचीत हुई। उन्होंने आपके वे लेख, जो आपने पार्टीशन ऑफ़ बंगाल पर अमेरिका के पत्रों में लॉर्ड कर्जन के ख़िलाफ़ लिखे थे, पढ़े। बातचीत में लॉर्ड मॉरले से आपका वाद-विवाद बढ़ गया, और आपके ऊपर नियंत्रण रक्खा जाने लगा। आप इँगलैंड छोड़कर फ़्रांस चले गए।

जो कुछ धन अमेरिका में कमाया था, वह लंदन में ख़र्च हो गया, हिंदुस्थान किस तरह पहुँचें। मुश्किल से फ़्रांस पहुँचे, और पेरिस में मि० श्यामजीकृष्ण वर्मा के पत्र 'इंडियन सोशियालोजी' के संपादन में मदद करते रहे। वह पत्र हिंदुस्थान नहीं आ सकता था। फ़्रांस में रूस, इटली, स्विट्ज़रलैंड में बसे हुए भारतीय लोग आपसे मिले। वहाँ कुछ दिन रहकर आप जर्मनी, इटली, मिस्र आदि देशों के विश्वविद्यालय देखते हुए हिंदुस्थान वापस आए। बंबई में लोकमान्य बाल-गंगाधर तिलक के यहाँ ठहरे। उन्होंने गण्य-मान्य सज्जनों से आपका परिचय कराया।

विदेशों में आपकी कार्यशीलता के कारण हमेशा आपके पीछे सी० आई० डी० लगी रही। जब आप बंबई उतरे, तो वह ख़ुफ़िया पुलिस का ऑफ़िसर, अँगरेज़ जो आपके साथ जहाज़ पर आया था, आपसे कहने लगा—"मिस्टर सिनहा, अब मेरी ड्यूटी ख़त्म हुई। मैंने तुम्हें तुम्हारे भाइयों के हाथ सौंप दिया। लेकिन तुम्हें तजुरबा बतलाएगा कि विदेशी पुलिस और हिंदुस्थानी में क्या फ़र्क़ है। तुम नौजवान आदमी हो। अपने क़ौमी जोश में तुम्हें भले-बुरे का ज्ञान नहीं रहता। तुम्हें हिंदुस्थानी ख़ुफ़िया पुलिस बहुत परेशान करेगी। तुम्हें सतर्क रहना चाहिए। इसीलिये मैंने यह सब तुम्हें बता दिया है। मैं तुम्हारे साथ जहाज़ में बराबर रहा, और तुम्हें ज्ञात भी न हुआ कि मैं तुम्हें 'वाच' कर रहा हूँ। हम लोग दोस्तों की तरह बातचीत करते, हँसते-हँसाते चले आए, लेकिन यहाँ की पुलिस में यह बात न पाओगे।"

प्रोफ़ेसर सिनहा जब लखनऊ पहुँचे, तब आपके ऊपर पुलिस की कड़ी निगरानी होने लगी। एक आदमी सदा आपके साथ रहता, और एक घर पर धरना दिए बैठा रहता। जिसके यहाँ आप जाते, उसी के यहाँ पुलिसवाले जा धमकते, और पूछ-ताछ करने लगते। इसी से आपके बहुत-से संबंधी और देश वासी आपकी शक्ल देखकर घबराते थे।

बंबई से लोकमान्य तिलक के साथ आप सूरत-कांग्रेस के अधिवेशन में गए। सूरत-कांग्रेस के प्रेसिडेंट रासबिहारी घोष थे। जब लोकमान्य तिलक प्लेट-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ार्म पर भाषण देने के लिये खड़े हुए, तो अध्यक्ष ने रोका। नरम दल ने भला-बुरा कहकर चिल्लाना शुरू किया। सर फ़ीरोज़शाह मेहता पास ही बैठे थे। इन पर गरम दलवालों ने जूता फेंका। नरम दल और गरम दल में युद्ध हो गया। कांग्रेस दूसरे दिन के लिये स्थगित हो गई। नरम दल ने सरकारी सहायता चाही। प्रोफ़ेसर सिनहा ने सलाह दी कि पुलिस की सहायता की ज़रूरत नहीं, किंतु ऑनरेबुल फ़ीरोज़शाह मेहता और दूसरों ने न माना, पुलिस को बुला लिया। गरम दल ने बॉयकाट किया। इसमें प्रोफ़ेसर सिनहा ज़ोरों से तिलक-पार्टी के पक्ष में रहे। आप सदा गरम दल के पक्षपाती रहे। आपने हिंदुस्थान पहुँचकर हिंदुस्थानियों को बतलाया कि यदि स्वराज्य चाहते हो, तो ऐसे लीडर को मानो, जो आगे बढ़कर मुक़ाबिला करे—गेरीबाल्डी ने जिस तरह इटली को स्वतंत्र किया, मैजनी ने हॉलैंड को जिस तरह आज़ाद किया, जापान ने जिस तरह विजय पाई। भारत आकर आपने सरकार की ग़ुलामी न करने का प्रण ठान लिया। अच्छी-से-अच्छी सरकारी नौकरियाँ तथा उच्च पद मिले, किंतु आपने सबको ठुकरा दिया। आप इसी धुन में रहे कि अमेरिका और जापान की तरह यहाँ भी स्कूल, कॉलेज तथा कारख़ाने खोले जायँ, जिनमें टेक्निकल इंडस्ट्री की तालीम विद्यार्थियों को दी जाय। इसी प्रयत्न और उद्देश्य के लिये आप राजा-महाराजाओं, ज़मींदारों और ताल्लुक़दारों से मिले, लेकिन किसी से सहायता प्राप्त न हुई।

राजा महेंद्रप्रताप (वृंदावन) के साथ मिलकर आपने एक प्रेम-महाविद्यालय वृंदावन में खोला, जिसके आप सर्वप्रथम प्रिंसिपल हुए। किंतु सरकार के कुछ पिट्ठुओं ने राजा महेंद्रप्रताप को कुछ भय दिखाया कि महेशचरण सिनहा को रखकर आप गवर्नमेंट के विरोधी क्यों बनते हैं। इस तरह आप राजा साहब के यहाँ से अलग हुए, और राजा महेंद्रप्रताप को भी कुछ दिन बाद देश-निकाला हो गया।

उसके बाद लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानंद और रोशनलाल बार-एट-ला के साथ निश्चय किया गया कि आप गुरुकुल में प्रोफ़ेसरी का काम करें, और एग्रीकलचर तथा वनस्पति-शास्त्र के क्लासेज़ खोले जायँ। आपकी प्रबल आकांक्षा थी कि ग़रीब विद्यार्थियों को साधारण शिक्षा के अतिरिक्त ऐसी शिक्षा दी जाय, जिससे वे अपने पढ़ने तथा खाने-पीने का ख़र्च स्वयं पैदा कर सकें, और नौकरी के अभाव में जीविकोपार्जन भी कर सकें।

आप गुरुकुल कांगड़ी में संवत् १९६८ में प्रोफ़ेसर हुए, और संवत् १९७३ में, स्वास्थ्य बिगड़ जाने से, लखनऊ चले आए। स्वास्थ्य ठीक हो जाने पर आपने अपना उद्योग-गुरुकुल लक़ड़मंडी, अयोध्या में खोला। वहाँ के विद्यार्थियों द्वारा साबुन, छुरी, चाक़ू, हालोग्राइंड, अस्तुरे, काली स्याही, क़लम-होल्डर, सीप के बटन, ख़त छापने के डुप्लीकेटर, ख़ुशबूदार विलायती तैल, मंजन, ग्लाइको थाइमोलीन आदि वस्तुओं का निर्माण हुआ। किंतु दैव-दुर्विपाक से कुछ ही दिनों में वहाँ प्लेग बहुत ज़ोरों से फैला, और आपकी दो पुत्रियाँ प्लेग-ग्रस्त हो गईं। इतना ही नहीं, इसी बीच आपके गुरुकुल और घर में, जो मिला हुआ ही था, बहुत बड़ी चोरी हो गई, जिसमें तमाम सामान चला गया। आप उस क्षति की पूर्ति न कर सके, और आपको गुरुकुल छोड़कर लखनऊ चला आना पड़ा।

आपका कार्य-क्षेत्र आर्य-समाज तक ही सीमित न था। आप जिस किसी भी कार्य में लगे, पूरी लगन और योग्यता से उसे किया। किंतु अर्थाभाव ने आपको सफलता न मिलने दी। लगभग सन् १९०८ में, जब अमेरिका से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप भारत वापस आए, आपने अपनी पहली पुस्तक 'हिंदी-कैमिस्ट्री' (रसायन-शास्त्र) लिखकर प्रकाशित कराई। हिंदी में तब तक का तो कहना ही क्या, अब तक विज्ञान-संबंधी वैसी पुस्तकों का सर्वथा अभाव है। हिंदी में ऐसी पुस्तकें लिखने की ओर सर्वप्रथम आपका ही ध्यान आकर्षित हुआ। आपके सिवा तब तक हिंदी में वैज्ञानिक पुस्तकें लिखने का साहस किसी ने नहीं किया था। आपने 'हिंदी-कैमिस्ट्री' (रसायन-शास्त्र), 'हिंदी-इलेक्ट्रिसिटी' (विद्युत्-शास्त्र), 'हिंदी-बाटनी' (वनस्पति-शास्त्र), 'हिंदी प्लांट ऑफ़ फ़िजियालोजी' (वनस्पति-क्रिया-विज्ञान) आदि बेजोड़ वैज्ञानिक पुस्तकों के अलावा कुछ अपने ढंग की बेमिसाल जीवनियाँ तथा अन्य पुस्तकें भी लिखीं, जिनमें 'संतोषू अथवा कृषि-मुनि' यू० पी० के स्कूलों के लिये स्वीकृत है, और 'फ़ूकीजावा अथवा स्वतंत्रता की कुंजी' अर्थात् जापान के विधाता की जीवनी भी प्रकाशित हो गई है। आपकी उपर्युक्त सब पुस्तकें यू० पी० के शिक्षा-प्रसार-विभाग से लाइब्रेरियों के लिये स्वीकृत हैं। आपने उर्दू पढ़ने का एक नया क़ायदा ईजाद किया, जिससे उर्दू पढ़ना बहुत आसान हो गया, और हिज्जे वग़ैरह का झंझट बहुत ही कम हो गया। इस क़ायदे की पहली पुस्तक 'नौरंग उर्दू प्राइमर' छप गई, और यू० पी० के शिक्षा-प्रसार-विभाग ने उसकी सभी प्रतियाँ ख़रीद लीं। पहले भाग का दूसरा संस्करण और दूसरा भाग उसका, जो प्रोफ़ेसर साहब लिख गए हैं, शीघ्र ही प्रकाशित होगा। आपकी लिखी अन्य विविध विषयों की उत्कृष्ट पुस्तकें हैं, जिनमें 'आलोक' पर वैज्ञानिक पुस्तक और स्कॉटलैंड के देश-भक्त बैलेस की जीवनी, फ़्रांस के देश-हितैषी 'कैलेट' की जीवनी, स्वीज़रलैंड के संस्थापक विनक्लफ़ील्ड की जीवनी तथा पुनर्जन्म पर अत्यंत खोज-पूर्ण पुस्तकें शीघ्र ही प्रकाशित होंगी।

अपना समय आप व्यर्थ कभी खोना पसंद नहीं करते थे। जीवन के अंतिम समय तक आप लिखते रहे।

आप लखनऊ में ९ वर्ष तक लगातार म्युनिसिपल-कमिश्नर रहे, और आपने जनता के हितकारी कार्य किए। साथ ही आप भिन्न-भिन्न मैगज़ीन, साप्ताहिक और दैनिक पत्रों का संपादन भी करते रहे, जैसे अँगरेज़ी के 'पोस्टल - यूनियन-बुलेटिन', 'हिंदू - आउटलुक', 'कायस्थ - गज़ट', 'विजय', 'हिंदू', उर्दू के 'आज़ाद' और 'हिंदू' का आपने बहुत दिनों तक संपादन किया।

आप लाला हरदयाल, वीर सावरकर तथा भाई परमानंद के साथ पढ़ने तथा काम करनेवाले थे। आपने भाई परमानंद की एसेंबली की सदस्यता के समय 'हिंदू' (दैनिक पत्र) का संपादन दिल्ली में रहकर किया। यद्यपि भाई परमानंद ने २००) मासिक आपको देने का वादा किया था, किंतु आपने निःशुल्क 'हिंदू' की सेवा की।

आप लखनऊ के सार्वजनिक कार्यकर्ता थे। आप पेपर-मिल, लखनऊ, पोस्टल-यूनियन, लखनऊ, रेलवे-वर्क्समैन, एसोसिएशन, लखनऊ, काटन-मिल्स-यूनियन, लखनऊ, हिंदू-मंदिर-रक्षक-समिति, आर्य-समाज, चौक, लखनऊ तथा हिंदू-लीग आदि संस्थाओं के वर्षों तक प्रेसिडेंट रहे। यू० पी०-एसोसिएशन ऑफ़ दी अनिमप्लायड लखनऊ-ब्रांच के सेक्रेटरी रहे, और बाबा हज़ारा की स्टेट के आप अरसे तक मैनेजर भी रहे। आपने जीवन की अंतिम घड़ी तक सरकारी नौकरी नहीं की।

आपकी लिखने और बोलने की शक्ति अपरिमित थी। आपका भाषण ऐसा युक्ति-पूर्ण, तर्क-संगत तथा रोचक होता था कि जनता मुग्ध हो जाती थी। जिन उत्कृष्ट ग्रंथों का आप प्रकाशन कर गए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, वे जनता के महान् उपकारी होते हुए अपने ढंग के अपूर्व ग्रंथ हैं। आप कार्य की विविध प्रवृत्तियाँ रखते हुए भी हिंदू-सभा के कामों में सर्वाधिक दिलचस्पी लेते थे। हैदराबाद-सत्याग्रह के ज़माने में आपने प्राणपण से आर्य-समाज का प्रतिनिधित्व किया। आपने विधवा-विवाह, अंतरजातीय विवाह, अछूतोद्धार, हिंदू-संगठन आदि का कार्य प्रशंसनीय किया। सन् १९१८ में आपने अपने घर पर एक बृहत् अंतरजातीय भोज किया था, जिसमें अछूतोद्धार पर आपका सार-गर्भित व्याख्यान हुआ था। जब सन् १९२० में, लखनऊ में, गूँगे नवाब की कोठी में, राष्ट्रीय स्कूल का उद्घाटन महात्मा गांधी ने किया, उस समय प्रोफ़ेसर सिनहा और कांग्रेस के विचारों में काफ़ी मतभेद हो चुका था। फिर भी चूँकि यह कांग्रेस का एक क्रियात्मक कार्य था, और आपको प्रत्येक क्रियात्मक कार्य से दिलचस्पी थी, अतएव आपने अपना रात-दिन उसमें लगा दिया, और उसे सफल बनाने के लिये प्रत्येक संभवनीय प्रयत्न किया। आप प्रत्येक सार्वजनिक संस्था में अपना सहयोग ही नहीं देते, प्रत्युत प्राणपण से लग जाते थे।

आप जब विदेश से लौटे थे, तब आपका विचार यह था कि हिंदुस्थान से अँगरेज़ी राज्य समाप्त हो जाय, किसी प्रकार हम स्वतंत्र हो जायँ, तो भारत की अवस्था ठीक हो जाय। हिंदू और मुसलमानों की फूट का कारण अँगरेज़ी शासन ही है। अगर हम लोग देश की स्वतंत्रता का प्रश्न सामने रखकर काफ़ी प्रचार करें, तो हिंदू-मुस्लिम-एकता हो जायगी। परंतु सन् १६ के बाद से, जब हिंदू-मुस्लिम-पैक्ट लखनऊ में हुआ था, और जिसमें प्रोफ़ेसर साहब ने विशेष भाग लिया था, आपका दृढ़मत हो गया था कि मुसलमानों के साथ चाहे जितनी रियायतें की जायँ, वे एक नहीं हो सकते, और राष्ट्रीय कार्य-क्रम में हिंदुओं का साथ नहीं दे सकते। और, तभी से प्रोफ़ेसर साहब हिंदुओं के फ़ौजी संगठन की बात हर समय सोचा करते थे, और उन्होंने उसके लिये बहुत-से सक्रिय प्रयत्न किए। आपके हृदय में इसके लिये आग भरी थी। जिस किसी से, जिस किसी जगह, आप बात करते, हिंदू-संगठन और हिंदू-हितों की बात करते। आप अपने सभी लेखों में हिंदू-तरीक़ों और हिंदू-हितों की वे बातें बता गए हैं, जिनसे हिंदुओं का वास्तविक कल्याण हो।

आपकी बीमारी के समय आपके साथ काम करनेवाले जब आपको देखने आते, और बीमारी की चर्चा करने लगते, तो आप हँसकर टाल देते थे, और उत्सुकता-वश अपने देश की, समाज की, अपने उद्देश्यों और कार्यों के विषय में चर्चा करने लगते। मृत्यु के एक सप्ताह पूर्व आपने पड़े-पड़े अपने विचार पाकिस्तान-स्कीम पर अँगरेज़ी में लिखे, और आप चाहते थे कि आपके वे विचार सिटी आर्य-समाज, लखनऊ की मीटिंग में रक्खे जायँ। आपने अपने मित्रों के पास उस लेख की प्रतियाँ भिजवाईं, परंतु आपके अन्य मित्र आपके विचारों से सहमत न हुए, और बीमारी के कारण आपसे वाद-विवाद भी नहीं करना चाहा, इसी कारण वे विचार जनता के सामने न आ सके। कहने का तात्पर्य यह कि आप अपनी लगन के इतने सच्चे थे कि बड़े-से-बड़ा कष्ट सहते हुए भी अपना कर्तव्य नहीं भूले। यह दूसरी बात है कि आपके विचारों से लोग सहमत न हों। लेकिन आप एक सच्चे राजनीतिज्ञ थे। लखनऊ की जनता आपकी कार्य-दक्षता पर मुग्ध थी। आपका जीवन ही त्याग और तपस्या का जीवन था। आप लाखों में सरल, उदार, सहृदय और धैर्यवान् व्यक्ति थे। आप बड़े दृढ़-चित्त थे। लाख-लाख बाधाएँ आपके सामने आईं, किंतु आपने सबका हँसते हुए मुक़ाबिला किया। यह आपकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेषता थी। सरलता, सहृदयता, निःस्पृहता आपके सहज गुण थे। धन-लोलुपता तो आपको छू नहीं गई थी। सरकारी नौकरियों को आपने पैरों से ठुकरा दिया। यदि आप चाहते, तो, लौकिक दृष्टि में, उच्च-से-उच्च पदाधिकारी होते, किंतु आपने तो अपना जीवन जन-सेवा को अर्पण कर दिया था। आपकी सेवाओं को राष्ट्र भूल नहीं सकता। आपके निधन से देश का एक बहुत बड़ा समाज-सुधारक, देश-सेवक, कार्यशील, परिश्रमी, पुरुष-रत्न खो गया। अभी आप हमारे बीच कुछ दिनों और रहते, तो बड़ा लाभ होता, किंतु फिर भी आपकी उल्लेखनीय और प्रशंसनीय सेवाएँ सार्वजनिक कार्य-कर्ताओं का मार्ग-प्रदर्शन करेंगी।

आप अपने पीछे एक विधवा पत्नी, एक सात वर्ष की पुत्री, एक दस वर्ष का पुत्र छोड़ गए हैं, और तीन पुत्रियों - सुमित्राकुमारी सिनहा, सुविद्या-कुमारी सिनहा, सुशांताकुमारी सिनहा का विवाह कर गए हैं। आपके शोक-संतप्त परिवार को अब केवल आपकी पुस्तकों का ही सहारा है।

अब कोई बेकार न रहेगा

यदि आप (१) अमेरिका के बेकार लोगों की भाँति क़लम-दावात के सहारे केवल डाक की सहायता से बिना पूँजी रुपया कमाना चाहते हैं, (२) योरप की उन फ़र्मों के पते, जो नई-नई वस्तुओं के नमूने मुफ़्त भेजती रहती हैं, (३) अमेरिका की उस फ़र्म का पता, जो केवल पत्र लिखने पर संसार-भर की प्रत्येक चीज़ का आपको पता बता देगी, (४) ५०) से ५००) की पूँजी तक के कारख़ाने लगाने का पूरा विवरण जिनसे ६०) से ३००) मासिक तक कमाया जा सकता है, (५) इँगलैंड व जापान की ताज़ा मालूमात और घर बैठे एजेंसी लेने के ढंग और पते, (६) स्वदेशी चीज़ों से विलायती वस्तुएँ बनाना, ४००) तोला मूल्य की बताई जानेवाली 'फ़ीन-सीन' को अपने देश में पैदा करना और (७) भारत के कच्चे माल से रुपया कमाना चाहते हों, तो इस पुस्तक को अवश्य मँगाकर पढ़ें। इसके अतिरिक्त इसमें सैकड़ों ऐसी दस्तकारियाँ लिखी हैं, जो आज तक सुनने में नहीं आईं, और उनसे साधारण पूँजीवाला आदमी दो-तीन रुपया रोज़ घर बैठे कमा सकता है। २५० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य १।), पोस्टेज ।=)

१०० गुना नफ़े का व्यापार

संसार में सबसे अधिक लाभदायक व्यापार पेटेंट ओषधियों का है। इससे सौगुना नफ़ा कमाया जा सकता है। एक पैसा लागत की दवा के दो-दो रुपए मिलते देखे हैं। अमृतधारा और सुधासिंधु के मालिकों ने एक-एक पेटेंट दवा से करोड़ों रुपया कमाया है। यदि उनकी तरह आप भी भारतवर्ष, जर्मनी, इँगलैंड, अमेरिका की प्रसिद्ध और सर्वप्रिय प्रतिवर्ष करोड़ों रुपए की बिकनेवाली पेटेंट ओषधियों के नुस्ख़े बिना किसी कष्ट के घर बैठे सीखकर साधारण पूँजी से प्रायः सभी प्रचलित पेटेंट ओषधियों को स्वयं तैयार कर के विज्ञापन द्वारा मुक़ाबिले में कम क़ीमत में बेचकर सैकड़ों रुपए मासिक की स्थायी आमदनी पैदा करना चाहते हैं, तो आज ही 'पेटेंट ओषधियाँ और भारतवर्ष'-नामक पुस्तक की १ प्रति मँगाकर कारोबार शुरू कर दें। संभव है, फिर आपको यह पुस्तक किसी मूल्य पर न मिल सके। मूल्य ।॥), पोस्टेज ।-)

पता—रसायन-कार्यालय (सु), संगरिया (बीकानेर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वप्न-गीत

[श्रीश्रीनिधि द्विवेदी]

नित सपनों में आया करतीं।
इस जलते जीवन पर मेरे
स्नेहांचल की छाया करतीं।

सुध-प्रसून-द्रुम सदा सींचतीं
मन-मरु की पीयूषी पावस!
प्रतिनिशि उल्लासों की पूनम
हर लेतीं अवसाद-अमावस।

निखरी नीरसता में आकर
प्राण सरसता लाया करतीं,
सपने बनकर आया करतीं।

छूट गए सब साथ-सहारे,
तुम संगिनि हो सूनेपन में—
सुख-सौरभ-संगीत सलोनी!
दुख-हाहाकारों के वन में।

कोमल कविताएँ बन मरी—
मेरा मन बहलाया करतीं,
कविताएँ बन आया करतीं।

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूर-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से—जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से—बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सरदी, जुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बातल का ।), डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥।-)
२५ " " " ५≡)

श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जितने साबुन मैं जानती हूं उन में से

सनलाइट् साबुन

निःसन्देह कपड़े अधिक साफ़ धोता है ॥

मेरे कपड़े सदा ही धुलाई के पीछे कुछ मैले से और धूसर दिखाई पड़ते थे। तब मेरी एक सहेली ने मुझे सनलाइट् साबुन का समाचार दिया। उसने बताया कि कच्चे साबुन उड़ाऊ होते हैं क्योंकि उन में से मैल काटने वाली फेन बहुत कम निकलती है और कपड़े साबुन की फेन ही से साफ़ होते हैं ॥

सनलाइट् साबुन से बहुत ज़्यादा फेन निकलती है और सनलाइट् से धुले हुए कपड़े वास्तव में साफ़ होते हैं ॥

सनलाइट साबुन

S. 16-50 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अद्भुत पुस्तकें

यदि आप सर्वदा नीरोग, युवा, सुंदर, बलवान् और जीवन्मुक्त रहकर मृत्यु को भी जीत लेना चाहते हैं, तो निम्न-लिखित अद्भुत पुस्तकों को मँगाकर अवश्य पढ़ जायँ—

नीरोग होने का अद्भुत उपाय	मूल्य १)	वेदांत-सिद्धांत	मूल्य २)
शरीर से अमर होने का उपाय	,, १॥)	सृष्टि-विज्ञान-शास्त्र	,, ≡)
वृद्धावस्था दूर करने का उपाय	,, ≡)	शांतिदायी विचार	,, १)
सचित्र योग-साधन	,, २॥)	अत्यंत सत्य व आत्मज्ञान की कथाएँ	,, ।≡)
सत्य, सुंदर और स्वतंत्र विचार	,, २॥)	मेस्मेरिज़्म या भूतविद्या	,, ॥)
योग-सिद्धियों को प्राप्त करने का उपाय	,, ।≡)	आत्मबल, मनोबल और इच्छा-शक्ति	,, १)
		भजन-ज्ञान-गीता	,, ≡)

पता—मैनेजर ज्ञानशक्ति-प्रेस, गोरखपुर

कायाकल्प-सुधा-रस

प्रसिद्ध महात्मा की बताई अमूल्य ओषधि

वीर्य-क्षीणता व निर्बलता, दुर्बलता, वीर्य पानी के समान पतला हो जाना, चूने की तरह सफ़ेद धातु पेशाब के साथ आकर जम जाना, शीघ्रपात, संभोग-शक्ति का नष्ट हो जाना, दिमाग़ की कमज़ोरी, पेशाब लाल-पीला होना, आँखों के सामने अँधेरा छाकर चक्कर आ जाना, स्मरण-शक्ति कम हो जाना, सर्वप्रकार की सुस्ती, नामर्दी, कमज़ोरी आदि को दूर कर शरीर हृष्ट-पुष्ट, बलवान् होकर अपूर्व शक्ति प्राप्त होती, बदन लाल गुलाब के समान खिल जाता है। लाभ न हो, क़ीमत वापस।

क़ीमत फ़ी पैकेट २॥), ४ साथ लेने से एक पैकेट इनाम। डाक-खर्च माफ़

(सु० ल०)

आई साल्व

आँखों के लिये एक सच्ची देन है, तथा कम निगाह और धुंधकेपन का अचूक इलाज है। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि लगाने पर आँखों को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता। हज़ारों आदमी बिना आपरेशन के ही अच्छे हो चुके हैं। नैन-शक्ति-अंजन की प्रशंसा में बिना माँगे हज़ारों प्रशंसा-पत्र प्राप्त हैं।

मूल्य ३॥), छोटा २)

३ य अधिक पर डाक-व्यय माफ़ (एजेंट चाहिए)

पता—दी हरबल मेडीको (सु० ल०) १२ खेतवाड़ी, बंबई ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश की वर्तमान अवस्था और क्षत्रिय*

[ओयलाधिपति माननीय राजा युवराजदत्तसिंह, मेंबर कौंसिल ऑफ़ स्टेट]

पिछले लेखों में हमने देश की प्रमुख राजनीतिक समस्याओं और उलझनों को स्पष्ट करने की चेष्टा की, और उनकी एक रूप-रेखा प्रस्तुत की। हमने देखा, मुसलमान इस देश को अपना देश नहीं समझते, उनके भारतीयेतर संस्कार (Extra-territorial loyalties) देश की राजनीतिक प्रगति और वैधानिक विकास में पग-पग पर बाधाओं की सृष्टि करते हैं। राष्ट्र का बहुमत, उसकी सामूहिक राजनीतिक चेतना ज्यों-ज्यों उसे स्वराज्य और स्वाधीनता-प्राप्ति की ओर ले जाते हैं, मुसलमानों का अल्पमत उसे निरंतर पीछे घसीटता है। देश अपने लक्ष्य के निकट पहुँचकर भी उसे नहीं प्राप्त कर पाता। और, खेद की बात यह कि मुसलमानों के अल्पमत को यह शक्ति, ऐसा प्रभाव, इतना बल कांग्रेस की सर्वथा अराष्ट्रीय और निर्बल नीति से प्राप्त हुआ है। कांग्रेस ने येन केन प्रकारेण मुसलमानों को प्रसन्न करने की नीति का अनुवर्तन करके, हिंदुओं को सब तरह दबाकर मुसलमानों को शह पर शह दी। फलतः वे अपने को आज अल्पमत स्वीकार ही नहीं करते, प्रत्युत अलग राष्ट्र कहते हैं। भारत के मुसलमान एक विश्व-व्यापी इस्लामी महाक्रांति का भी स्वप्न देखते हैं, जिसका प्रारंभ वे शायद इसी देश से करना चाहते हैं। पाकिस्तान उसकी भूमिका है। इस तरह कांग्रेस ने देश की राजनीति को एक पहेली बना दिया है। कांग्रेस के नेता श्रीराजगोपालाचारी केंद्र में बनाई जानेवाली राष्ट्रीय सरकार में मुसलमान को प्रधान मंत्री बनाने को तैयार हैं, तो दूसरी ओर पाकिस्तान-स्कीम के प्रचार में प्रांतों का दौरा करनेवाला मुस्लिम-लीग का डेपुटेशन कहता है कि हमारी पाकिस्तान की माँग कांग्रेस के सत्ताईस महीने के शासन का परिणाम है। उनके आशय को पूर्ण रूप से अस्वीकार करते हुए भी हम उनसे भिन्न दृष्टि से इस कथन की सत्यता स्वीकार करते हैं। कांग्रेस ने अपने सत्ताईस महीने के शासन में किस प्रकार हिंदुओं के राजनीतिक, धार्मिक तथा नागरिक, सभी प्रकार के अधिकारों का अपहरण किया, और मुसलमानों को सर्वथा अवैध सुविधाएँ और अधिकार दिए, यह हम पिछले लेख में स्पष्ट कर चुके हैं। कांग्रेस-सरकारों ने इस प्रकार मुसलमानों को जो बढ़ावा दिया, उसमें निःसंदेह पाकिस्तान-

* 'पाकिस्तान और क्षत्रिय'-नामक पुस्तक का एक अंश।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कीम पनपी, फूली और फली। तथापि कांग्रेस आज वास्तविकता से भागती है, और वस्तुतः वास्तविकताओं से सहज ही मुख मोड़ लेना कांग्रेस की राजनीति का अंग बन गया है। वह मुसलमानों के इस घोर संप्रदायवाद की कभी यह कहकर अवज्ञा प्रदर्शित करती है कि मुस्लिम-जनता का इससे सहयोग नहीं, यद्यपि कितने ही चुनाव लड़कर मुस्लिम-जनता की मनोवृत्ति का भी उसे पता चल चुका है। पुनः वह इस संप्रदायवाद के लिये ब्रिटिश साम्राज्यवाद को दोषी ठहराकर अनायास ही अपने उत्तरदायित्व का बोझ उतार फेकना चाहती है। पर अँगरेज़ों को यदि हम इस सांप्रदायिकता का मूल-स्रष्टा मान लें, तो भी मुसलमानों की सांप्रदायिकता के वर्तमान रूप के लिये कांग्रेस की ज़िम्मेदारी कुछ कम नहीं हो जाती। ऐसी ही कांग्रेस और मुसलमानों की राजनीति के आवर्त में हिंदुओं के भाग्य का जलयान डूबता-उतराता है, उसे किनारा नहीं मिल रहा।

भारतवर्ष हिंदुओं का है, अनादि काल से उनका इससे संबंध है। उनकी सभ्यता, उनका साहित्य, उनका धर्म, उनका आचार-व्यवहार, सबमें यह देश समाया हुआ है, और वे इस देश में समाए हुए हैं। अतः हिंदुओं में देश-भक्ति स्वाभाविक है। कांग्रेस इसी देश-भक्ति के नाम पर हिंदुओं का स्थायी सहयोग और तज्जनित अपनी वर्तमान शक्ति-पूर्ण स्थिति प्राप्त कर सकी है। इसी देश-भक्ति के नाम पर कांग्रेस ने मुसलमानों को सिर पर चढ़ाया, और हिंदुओं को धार्मिक तथा सांस्कृतिक चेतना-विहीन करके पद-दलित करवाया। मुसलमान दुरंगी चालें चलकर अपना उल्लू सीधा करते जाते हैं—असंतोषवाद द्वारा कांग्रेस से ज्यादा-से-ज्यादा अधिकारों और स्वत्वों की प्राप्ति करते तथा आतंकवाद द्वारा हिंदुओं के संगठन के सब प्रकार के प्रयत्नों को आघात पहुँचाते हैं। इधर हिंदू किं-कर्तव्य-विमूढ़ हैं। यदि वे हिंदुत्व के नाम पर, धर्म अथवा संस्कृति के नाम पर जातीय संगठन की कुछ चर्चा चलाते हैं, अपने को हिंदू-मात्र कहने का भी साहस करते हैं, तो कांग्रेसी उन्हें देश-द्रोही कहते और उन्हीं के अपने अन्य लाखों हिंदू भाइयों द्वारा बहिष्कृत और उपेक्षित कराने का प्रयास करते हैं। दूसरी ओर इन स्वधर्म-स्वजाति-प्रेमी हिंदुओं के वक्ष का रक्त पी जाने के लिये कितने ही अब्दुल-रशीदों के छुरे तैयार रहते हैं। इस तरह हिंदुओं के सामने जीवन-मरण की समस्या उपस्थित है। उनके सामने उनके देश के बँटवारे की माँग है, सिंध, सीमांत, हैदराबाद आदि मुस्लिम-प्रधान प्रांतों में उन पर अकथनीय अत्याचार हो रहे हैं, पंजाब और बंगाल में हिंदुओं के आर्थिक और सांस्कृतिक विनाश के लिये क़ानून * बनाए जा रहे हैं, सीमा-

* Land Alienation Bill in the Punjab and Education Bill in Bengal.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदेश में अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित अफ़रीदियों की एक बहुत बड़ी संख्या हिंदुओं पर आक्रमण के उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा में है, भूपाल तथा हैदराबाद आदि मुस्लिम रियासतों में अफ़रीदी और सीमांत के पठान फ़ौजों में भरती किए जा रहे हैं। और, मुसलमान अपनी माँगें अस्वीकृत होने पर सुडेटेनलैंड के जर्मनों का अभिनय करने की धमकी दे रहे हैं। मुस्लिम-लीग विदेशी मुसलमान राष्ट्रों के साथ मुस्लिम-संघ बनाने की प्रकट घोषणा करती है, पर भारतवर्ष में हिंदुओं के साथ संघ की प्रत्येक प्रकार की योजना का विरोध करती है। ऐसी भयावह परिस्थिति में भी हिंदुओं में जो राजनीतिक एकता नहीं हो पाती, वह कांग्रेस द्वारा प्रचारित मिथ्या राष्ट्रीयता (Pseudo-nationalism) के कारण, जिसका कुछ परिचय ऊपर दिया जा चुका है। कांग्रेस यह भूल जाती है कि मुसलमान भारत को तब तक अपना देश नहीं समझ सकते, जब तक यहाँ के सब निवासी मुसलमान नहीं बना लिए जाते, अथवा यहाँ स्थायी मुस्लिम शासन नहीं स्थापित हो जाता। जब तक ऐसा नहीं होता, तब तक भारत उनके धर्म-शास्त्र के अनुसार उनका 'शत्रु-देश' है। मुसलमानों की इस अंध धर्म-भावना को उनके नेता उत्तेजित करते रहते हैं, क्योंकि यह उनके हाथ में अमोघ राजनीतिक अस्त्र है।

देश की ऐसी ही संकट-पूर्ण आंतरिक परिस्थिति में वर्तमान युद्ध भी आ पहुँचा है। इस युद्ध ने मौजूदा उलझनों और समस्याओं को अधिक जटिल बना दिया है, तथा नवीन पेचीदगियों और समस्याओं का सृजन किया है। मुसलमान-जनता में पाकिस्तान की माँग का यों ही काफ़ी प्रचार किया जा रहा है, महात्माजी अपना आशीर्वाद दे ही चुके थे, अब वाइसराय महोदय ने भी उस पर वरद हस्त रक्खा है। यह भारत में युद्ध-प्रसूत परिस्थिति का स्वाभाविक परिणाम है। कांग्रेस के नेतृत्व में हिंदुओं की एक काफ़ी बड़ी संख्या भारत में ब्रिटेन के युद्ध-प्रयत्नों का विरोध करती है, उधर मुस्लिम-लीग ब्रिटेन को पूरा सहयोग देने की घोषणा कर चुकी है। परिणाम-स्वरूप यदि इस संकट के समय मुसलमानों के सहयोग और मैत्री की लालसा में वाइसराय डॉ० मुंजे से यह कह दें कि भारत के भावी विधान पर विचार करते समय पाकिस्तान को छोड़ नहीं दिया जायगा, तो हिंदुओं को इसे अपनी राजनीतिक अपरिणाम-दर्शिता का स्वाभाविक फल समझ लेना चाहिए। यह एंग्लो-मुस्लिम-मैत्री, जो कांग्रेस की अयथार्थ राजनीति का दुष्परिणाम है, पाकिस्तान-षड्यंत्र को कितना भयावह बना रही है, सहज ही सोचा जा सकता है। राजनीतिक सहजबुद्धि (Political Commonsense) का तक़ाज़ा यही था कि इस समय ब्रिटेन के साथ युद्ध के प्रयत्नों में पूरा-पूरा सहयोग किया जाता। इससे राज-नीतिक और वैधानिक लाभों के अलावा देश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सहज ही शस्त्रीकरण और औद्योगीकरण आधुनिक ढंग पर हो सकना भी संभव था। पर कांग्रेस की राजनीति किन्हीं आकाश-कुसुमों की खोज में प्राप्य का भी प्रत्याख्यान कर रही है। काशी-विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध विद्वान् एस्० वी० पुंतांबेकर * ने अपने एक भाषण में ठीक ही कहा है कि भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई भारत में ही नहीं लड़ी जा सकती, यह आज भी योरप में लड़ी जा रही है। यदि रूस अपने हितों और अपनी रक्षा के लिये जर्मनी की सहायता कर सकता है, जो उसका शत्रु बतलाया जाता है, तो फिर भारत ब्रिटेन की सहायता क्यों नहीं कर सकता, जो उसका मित्र ही है। स्पष्ट है, यदि ब्रिटेन की पराजय होती है, तो देश में अव्यवस्था फैल जायगी, भयानक गृह-युद्ध होगा, विदेशी आक्रमण भी हो सकते हैं, जिनके फल-स्वरूप देश में निरंकुश शासन की स्थापना भी हो सकती है। भौगोलिक दृष्टि से युद्ध का क्षेत्र हमारे निकट आता जा रहा है। जो थोड़ी-बहुत स्वतंत्रता, व्यवस्था और सुरक्षा हमें प्राप्त है, वह भी आज इस युद्ध ने ख़तरे में डाल दी है। पूर्व में जापान का पीला ख़तरा स्पष्ट है, उत्तर में रूस की भयावह रक्तिम छाया हमारे ऊपर है, और पश्चिम में इटली और जर्मनी हैं ही। यद्यपि ब्रिटेन की छत्रच्छाया में अभी ये ख़तरे छाया-मात्र ही हैं, तथापि ऐसी दशा में भारतीय मुसलमान जो भयंकर खेल खेल रहे हैं, उसकी उपेक्षा हम नहीं कर सकते। उनकी इन चालों के पीछे हम सीमांत में बसनेवाली बर्बर जातियों और पड़ोसी मुसलमान राष्ट्रों की अवस्थिति भूल नहीं सकते। तभी हमने देश में क्षत्रियों के सुदृढ़ संगठन की आवश्यकता बतलाई है। तब यह प्रश्न उचित ही होगा कि क्या क्षत्रियों का संगठन हिंदू-स्वत्वों की रक्षा कर भारतीय राजनीति की समस्या सुलझा सकता है? और, हम कहेंगे कि वस्तुतः क्षत्रियों का संगठन ही भारतीय राजनीति की समस्या का एकमात्र हल है।

हम पहले ही कह चुके हैं कि राजनीति की समस्या अब बातों से नहीं सुलझ सकती। कारण, मुसलमान किसी प्रकार के समझौते के लिये तैयार नहीं। हिटलर को संतुष्ट करने और युद्ध से बचने के लिये ब्रिटेन के राजनीतिज्ञों ने क्या नहीं किया? नाज़ियों की प्रसन्नता के लिये उन्होंने छोटे-छोटे, निर्बल राष्ट्रों की स्वतंत्रता का बलिदान होने दिया, अंतरराष्ट्रीय न्याय और नीति का गला घुटने दिया, पर फल क्या हुआ? युद्ध ब्रिटेन के लिये दुगुना-तिगुना भयावह होकर आज उसे ग्रस्त कर बैठा है। कांग्रेसवाले भी मुसलमानों के साथ बरती जानेवाली अपनी नीति में वैसी ही ग़लती करते रहे हैं। उन्होंने मुसलमानों को संतुष्ट करने के लिये क्या उठा रक्खा? पर मुसलमान संतुष्ट क्यों होते, उन्हें तो भारत में मुस्लिम-राज्य की स्थापना ही एकमात्र साध्य

* गणेशोत्सव के अवसर पर हिंदू-विश्वविद्यालय में दिया हुआ भाषण।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। उनमें राजनीतिक ध्येय की एकता है, और अपने साधनों पर अपरिमित विश्वास। उनके प्रमुख साधनों का यथास्थान उल्लेख हो चुका है। वे हैं सीमा-प्रांत के सशस्त्र अफ़रीदी, सीमा से जुड़े हुए अफ़ग़ानिस्तान और ईरान प्रभृति स्वतंत्र मुस्लिम राष्ट्र तथा खाकसार-सरीखी आंतरिक अर्द्ध - सैनिक संस्थाएँ, जिनके बल पर मुसलमान भारत में गृह-युद्ध और सफल आक्रमण तक का स्वप्न देख रहे हैं। इसीलिये क्षत्रियों के एक सुदृढ़ संगठन की आवश्यकता है, और यही संगठन भारत की अन्य हिंदू सैनिक जातियों के सहयोग से इस संकट का सामना करने में सफल होगा। इस प्रकार के संगठन के लिये क्षत्रियों के पास सब संभव साधन और सुविधाएँ हैं। हिंदुओं की समाज-व्यवस्था में देश और धर्म की रक्षा का भार क्षत्रियों पर ही रहा है। त्याग, बलिदान और शौर्य की जिस परमोदात्त भावना के साथ क्षत्रियों ने अपने इस 'पवित्र भार' को वहन किया है, उसका साक्षी इतिहास है। क्षत्रियों के भीतर आज उनके पुराने संस्कार जीवित और जाग्रत् हो रहे हैं, और उनकी पुरानी परंपराएँ उनमें संस्कार होती दिखाई पड़ती हैं। यह असंदिग्ध है कि जिस निःस्वार्थ सेवा-भाव से अब तक क्षत्रिय देश, जाति और धर्म की रक्षा करते रहे हैं, उसी से प्रेरित प्रबुद्ध क्षत्रियों की शक्ति देश और धर्म को इस आसन्न संकट से भी मुक्त करेगी।

कहा जा चुका है, इस प्रकार के देशव्यापी संगठन के लिये क्षत्रियों को सब संभव साधन प्राप्त हैं। एक तिहाई से अधिक देश पर आजजी क्षत्रियों का शासन है। अपने महान् पूर्वजों के उच्च आदर्शों से अनुप्राणित वर्तमान क्षत्रिय शासक इस भयावह संक्रांति-काल में अपने आपको अपनी प्रजा पर न्योछावर करेंगे, इसमें संदेह नहीं। इस प्रकार घोर अराजकता और अव्यवस्था के गहन अंधकार में भटकता संसार फिर भारत के प्राचीन शासनादर्श का प्रकाश प्राप्त करेगा। संतुष्ट, राजभक्त प्रजाजनों का यह विशाल लोक-समूह देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिये क्षत्रियों के हाथ में कितना अव्यर्थ साधन होगा, सहज ही सोचा जा सकता है। इस चट्टान पर भारतीय संस्कृति के विरोध में आज जितने भी आदर्श अथवा तंत्रवाद सिर उठा रहे हैं, सब चूर-चूर हो जायँगे। भारत-भर के क्षत्रिय इस विशाल लोक-समूह की अनुवर्तिता प्राप्त कर सब प्रकार अजेय होंगे। देश की रक्षा के कार्य में क्षत्रियों के साथ सभी सैनिक जातियाँ—मराठे, सिक्ख, जाट, गूजर, अहीर—सहयोग करेंगी, जो निःसंदेह कर्मणा क्षत्रिय हैं। समय पड़ने पर इसमें अन्य जातियों को भी सहयोग के लिये आह्वान किया जा सकता है, क्योंकि शास्त्र का आदेश है—"शस्त्रैर्द्विजातिभिर्ग्राह्यं धर्मो यत्रोपरुध्यते।" अर्थात् धर्म पर संकट के काल में सभी जातियाँ शस्त्र धारण करें। यह हिंदू-धर्म का संगठित सैन्य-दल राष्ट्रीयता को रक्षा के लिये सभी प्रतिक्रियावादी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिगामी शक्तियों से लोहा लेगा। इस संगठन से देश की राजनीति में नव-जीवन और स्वास्थ्य का संचार होगा। मुसलमान इसी देश की जल-वायु में पले हैं, भारतमाता का स्तन्य पान कर वे बढ़े हैं। हम् उन्हें अपना भाई ही मानते हैं, उन पर हमारा स्नेह है। परंतु उनमें जो धार्मिक अंध-विश्वास, हठवाद, कट्टरता और देश-द्वेष है, राष्ट्रीयता की रक्षा और देश में सुव्यवस्था तथा शांति के स्थायी स्थापन के लिये उसका उन्मूलन आवश्यक है। क्षत्रियों के जिस प्रकार के संगठन का हम ऊपर उल्लेख कर चुके हैं, वही उसका एकमात्र श्रेष्ठ उपाय है। कांग्रेस के उस दिशा में सभी प्रयत्न विफल हो चुके हैं। कांग्रेस के इन प्रयत्नों से देश की राजनीति में जो अकर्मण्यता, हिंदुओं में निर्बलता तथा असहायावस्था फैल गई थी, उसका भी इस संगठन से तिरोभाव हो सकेगा। हिंदू-महासभा को अपने उद्देश्यों की सफलता के लिये जिस कर्मण्यता और शक्ति की आवश्यकता है, वह उसे क्षत्रियों के इस संगठन से ही मिलेगी। देश की राजनीति में स्वास्थ्य और चेतना के संचार के लिये हम नए नेतृत्व की आवश्यकता बताते आ रहे हैं। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भूतपूर्व अध्यक्ष श्रीएस्० श्रीनिवास आयंगर ने भी अलन्ट्र (मदरास) की एक साहित्य-परिषद् में इसी आशय की बातें कही हैं। उन्होंने कहा है—"अहिंसा कायरों का धर्म है। अगर कुछ बहादुर आदमी अहिंसा-धर्म को अपनाते हैं, तो बहुत-से कायर भी अपने को उसके अंदर छिपा लेंगे। इस धर्म को स्वीकार करना देश-भक्ति नहीं। इसका प्रत्यक्ष रूप से मतलब अन्य देशों को यहाँ आक्रमण तथा लूट-पाट करने के लिये निमंत्रण देना है। हमें इस समय साहस-पूर्ण नेतृत्व की आवश्यकता है।" कहना न होगा, कांग्रेस के एक भूतपूर्व अध्यक्ष देश के लिये जिस 'साहस-पूर्ण नेतृत्व की आवश्यकता बतलाते हैं, वह निःसंदेह क्षत्रियों के संगठन से ही प्राप्त होगा।

हम निर्देश कर भी चुके हैं, क्षत्रियों का यह संगठन पूर्ण रूप से जन-सत्तात्मक होगा। सब क्षत्रिय, राजा हों या किसान, ग़रीब हों अथवा अमीर, देश की रक्षा के मामले में एकमत हैं। पुनश्च, क्षत्रिय राजा-नरेशों की प्रजा का विशाल लोक-समूह उनके साथ होगा। अहिंसा अथवा अन्य किसी मिथ्या आदर्श के वाग्जाल से भ्रांत होकर क्षत्रिय देश और धर्म की रक्षा का अपना परम कर्तव्य और उत्तरदायित्व छोड़ नहीं सकते। क्षत्रियों की वंश-परंपरा, उनके संचित समस्त संस्कार, उनके पूर्वजों की कीर्ति, उनका धर्म उन्हें देश-रक्षा की ज़िम्मेदारी अपने कंधों पर लेने को आह्वान कर रहा है। भगवान् का पांचजन्य जगा रहा है—"सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम्।" (गी० अ० २, श्लोक ३२) अर्थात् हे अर्जुन ! ऐसा युद्ध भाग्यवान् क्षत्रियों को ही प्राप्त होता है।

पर हम यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझते हैं कि क्षत्रियों के इस संगठन का आधार, उद्देश्य और कार्य-क्रम, सभी सर्वथा नैतिक हैं। क्षत्रियों का संगठन नाज़ियों अथवा खाकसारों का अनुकरण नहीं, जो दुर्बलों की असहायावस्था से लाभ उठाते, उनका शोषण करते, और उनका अस्तित्व मिटा देने के लिये ही अपनी संस्थाओं को संगठित करते हैं। अपने देश की रक्षा के लिये संगठित होते हुए भी प्रत्येक क्षत्रिय धर्म, संस्कार और स्वभाव से विश्व-मैत्री की भावना से ओत-प्रोत रहेगा। "क्षत्रियैर्धार्यते चापो नार्त्तिशब्दो भवेदिति।" अर्थात् कहीं किसी ओर किसी प्रकार की करुण पुकार न सुनाई पड़े, यही क्षत्रियों के शस्त्रास्त्र-धारण का प्रयोजन है। "धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत् क्षत्रियस्य न विद्यते।" अर्थात् धर्म-युक्त युद्ध से बढ़कर दूसरा कोई कल्याणकारक कर्तव्य क्षत्रिय के लिये नहीं। परंतु यही धर्म क्षत्रिय को आदेश देता है—"युध्यस्व विगतज्वरः" अर्थात् युद्ध अवश्य करो, परंतु विगत-ज्वर होकर। इसका तात्पर्य यह कि क्षत्रिय युद्ध में प्रवृत्त होता है, रक्त से खेलता है, कृतांत का अभिनय करता है, परंतु राग, द्वेष, क्रोध आदि की भावनाओं से नितांत विरहित, समाधि-बुद्धि से। उसे अपने-पराए, शत्रु-मित्र, सुकृत-दुष्कृत की कोई चिंता नहीं होती, वह धर्म तथा कर्तव्य को ही जानता और पहचानता है। अहंकार, काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग-द्वेष, सबको छोड़कर क्षत्रिय अपने खड्ग का संचालन करता है, क्षत्रियों के संगठन का यही आदर्श है। आज संसार में नाज़ियों के ढंग के सैनिक अथवा अर्द्ध-सैनिक संगठन प्रचलन प्राप्त कर रहे हैं। उनके उद्देश्य और साधन आएदिन निरीह स्त्री-बच्चों और असहाय प्रजा के निर्दय वध के कारण बन रहे हैं। अस्तु। क्षत्रियों के इस आदर्श को सम्यक् समझना इस ऐहिक और भौतिक भोगवाद की तमिस्रा में असंभव ही है। पर वस्तुतः हम क्षत्रियों का संगठन बल और शक्ति के इस व्यभिचार के युग में अत्यंत उच्च आदर्श लेकर पुनर्विकास प्राप्त कर रहा है। भारतवर्ष हिंदुओं का है, हिंदू-राष्ट्र है, और क्षत्रिय प्रारंभ से ही अखिल हिंदू-जाति की ओर से देश की रक्षा और सुव्यवस्था के लिये सर्व-सम्मति से उत्तरदायी निर्वाचित हैं। इसलिये क्षत्रियों के इस संगठन का उद्देश्य उन प्राचीन आदर्शों और परंपराओं को पुनर्जीवित करना है, जिनका हम ऊपर उल्लेख कर चुके हैं। उनके प्रकाश में सहज देखा जा सकता है कि क्षत्रिय की हिंसा और महात्मा की अहिंसा में तत्त्वतः कोई अंतर नहीं। विगत-ज्वर होकर युद्ध में प्रवृत्त क्षत्रिय आध्यात्मिक दृष्टि से उसी स्थिति पर है, जिस पर समाधि-स्थित योगी। अस्तु। क्षत्रियों के संगठन का सार्वभौम कैसा महत्त्व है, यह स्पष्ट है। इस संकट के समय ब्रिटेन के साथ हमारी समवेदना है। क्षत्रिय इस समवेदना को क्रियात्मक रूप देने के लिये तैयार हैं। भारत-सरकार को उचित है कि क्षत्रियों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध के वर्तमान सभी प्रकारों में दीक्षित करे, और सब साधनों से सजाए। धर्म-प्राण, युद्ध-जीवी क्षत्रियों के सहयोग का मूल्य भारत-सरकार को आँकने की चेष्टा करनी चाहिए। प्रबुद्ध क्षत्रियों की शक्ति अजेय होगी। ब्रिटेन को उसके धर्म-युद्ध में हम अपनी सब शक्तियाँ अर्पित करते हैं, और बदले में माँगते हैं केवल युद्ध के साधन। आशा है, भारत-सरकार इस ओर ध्यान देगी।

गरमी और बरसात में सेवन करने योग्य धातुपौष्टिक दवा—

* सुधावलेह *

विश्वास करें, यह ओषधि इस भूतल का अमृत है। खाने के २४ घंटे बाद अपना गुण दिखाती है। इसके सेवन से धातु बढ़ती, पतली गाढ़ी होती, कामेच्छा बढ़ती, दिल-दिमाग़ में तरी और ताक़त आती है। दिल की धड़कन, सिर की कमज़ोरी, याद न रहना, आँखों के आगे अँधेरा आना, चक्कर आना, सिर घूमना, हाथ-पैर के तलवे जलना, खुलकर भूख न लगना वग़ैरा आराम होकर मनुष्य का जीवन नवीन हो जाता है। जिन्हें गरमी के कारण स्वप्नदोष होते हैं, मैथुनेच्छा नहीं होती, वे इस अमृत को गरमी के चार महीने ज़रूर खावें। क़ीमत १०) सेर है, पर ग़रीब भी लाभ उठा सकें, इसलिये ५) सेर दिया जायगा। डाक-महसूल पैकिंग १-), कुल ६-) में दवा का फल देखो।

बेलाग प्रशंसा-पत्र

नोंकझोंक-संपादक श्रीदामोदरदासजी चतुर्वेदी महोदय लिखते हैं—

"आपके सुधावलेह ने मेरे लिये तो अमृत का-सा गुण दिखलाया। आज दवा ली और कल से ही सब शिकायतें दूर होकर मेरे जीवन में एक नए वसंत का आगमन आरंभ हो गया। वस्तुतः आपका सुधावलेह सुधा की वह सुंदर स्रोतस्विनी है, जिसका आश्रय लेकर अनेक निराश और निर्बल व्यक्ति नवजीवन तथा नई शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। रोग-संतप्त प्राणियों के उपकार के लिये आपने इस अवलेह का निर्माण कर अत्यंत अनुग्रह किया है। ईश्वर इस जन-सेवा के लिये आपको अखंड यश प्रदान करें।"

पता—हरिदास एंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल-काँगड़ी-फ़ार्मेसी

की

प्रसिद्ध ओषधियाँ

च्यवनप्राश

हिमालय की ताज़ी जड़ी-बूटियों से तैयार किया जाता है। स्वादिष्ट बल-वर्धक उत्तम रसायन है। मूल्य १=) पाव, २=) पौंड, ४) सेर

भीमसेनी मकरध्वज
(स्वर्ण-कस्तूरी-मिश्रित)

सब प्रकार की कमज़ोरियों को दूर कर बल बढ़ाता है, नया ख़ून पैदा करता है। मूल्य १४) तोला

चंद्रप्रभा

पेशाब-संबंधी बीमारियों में विशेष लाभदायक है। कमज़ोरी दूर करती है। मूल्य ।।।) तोला

सुपारी-पाक

स्त्रियों के जिरियान-रोग की प्रसिद्ध ओषधि है। कमज़ोरी दूर करके ताक़त देती है। मूल्य १।।) पाव

सत शिलाजीत

प्रमेह व पेशाब के रोगों में अकसीर है। कमज़ोरी दूर करके नई ताक़त व ख़ून पैदा करती है। मूल्य ।।।-) तोला

अन्य सब प्रकार की आयुर्वेदिक ओषधियों
के लिये सूचीपत्र मँगाइए।

पता—गुरुकुल-काँगड़ी-फ़ार्मेसी, गुरुकुल-काँगड़ी (सहारनपुर)

एजेंसी

लखनऊ	श्रीराम-रोड
इलाहाबाद	१६ जॉन्सटनगंज
आगरा	श्रीकेशवदेव सत्यपाल रावतपाड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिरीज़ का प्रकाशन
पहली जनवरी से आरम्भ

हमारी प्रथम योजना १०० पुस्तकें प्रतिवर्ष के हिसाब से ५ वर्ष में ५०० पुस्तकें निकालने की है। ये पुस्तकें सभी मुख्य-मुख्य विषयों पर होंगी और इनसे एक सुन्दर

सरल-पुस्तकालय

बन जायगा। प्रत्येक पुस्तक की पृष्ठ-संख्या २००-२५०, गेट-अप सुन्दर और मूल्य आठ आना होगा।

ग्राहक बनने के नियम

प्रत्येक पाठक (क) सिरीज़ की कुल पुस्तकों के लिए, (ख) कुछ विभागों की कुल पुस्तकों के लिए या (ग) चुनी हुई किन्हीं २० पुस्तकों के लिए ग्राहक बन सकता है।

पेशगी चंदा १) है।

२० पुस्तकें मिल जाने के बाद यह फिर से जमा होगा। पोस्टेज-पैकिंग माफ़ रहेगा। चुनने के लिए पूरी पुस्तकों की सूची फ़ार्म भर कर आने पर भेज दी जायगी।

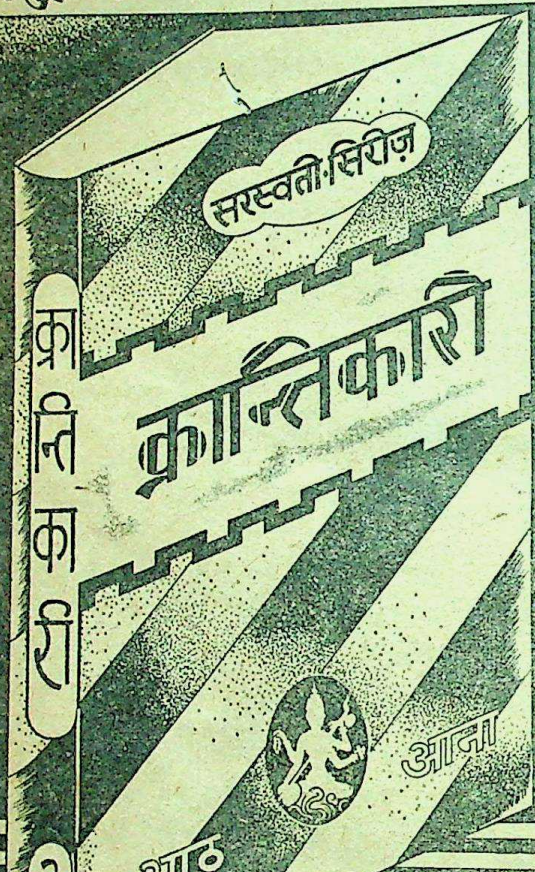

निम्नलिखित १० पुस्तकें पहली जनवरी को तैयार हो जायँगी।

१ दैनिक जीवन और मनोविज्ञान २ क्रान्तिकारी ३ समरक़ंद की सुन्दरी ४ चक्रभेद ५ रूसी कहानी-संग्रह ६ सूर-संदर्भ ७ रामकृष्ण चरितामृत ८ आधुनिक जापान ९ पृथ्वी का इतिहास १० मेरा संघर्ष (हिटलर)

दस पुस्तकें पहली जनवरी को तैयार

५०० पुस्तकें निम्न प्रकार से १० विभागों में निकलेंगीं—

विचारधारा	५०	विश्व उपन्यास	५०	आधुनिक उपन्यास और नाटक	५०
कहानी-संग्रह	५०	रहस्य-रोमांच	१००	ऐतिहासिक विचित्र कथा	५०
विज्ञान	३०	जीवनचरित्र	२०	हिन्दी-साहित्य	६०
धर्मग्रन्थ	५०				

सरस्वती-सिरीज़, इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

मेरा नाम पूरी सिरीज़ के / विभाग के / २० पुस्तकों के ग्राहकों में लिख लीजिए।

चन्दा वी० पी० भेजकर वसूल कर लीजिए। / मनीआर्डर से भेज रहा हूँ।

नाम _____

पता _____

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉक्टर की फ़ीस

[श्रीयुत एम्० पी० केदार आई० डी० डी०]

(केदारजी हिंदी के उदीयमान, उत्साही लेखक हैं। अब उन्होंने कहानियाँ लिखना भी शुरू किया है। इस कहानी में उन्होंने मातृत्व का मार्मिक चित्रण किया है। कहानी पढ़कर हृदय में कोमल भावों का उदय होता है। ईश्वर करे, केदारजी की लेखनी से और भी सुंदर कहानियाँ निकलें।—सुधा-संपादक)

डॉक्टर रामलाल ज़बान के बड़े ही मीठे थे, परंतु व्यवहार में उससे कहीं अधिक कड़ुए। फ़ीस के प्रश्न पर उनका कोमल, करुणामय हृदय निर्जीव पाषाण का रूप धारण कर लेता, जो न किसी की अनुनय-विनय से पसीजता, न किसी की ग़रीबी और बेबसी देखकर पिघलता। जिनके पास धन होता, वे तो आते ही, परंतु जिनके पास न होता, वे भी उनके यहाँ आते, और आने से पूर्व किसी से माँग-जाँचकर, कुछ दे-दिलाकर अथवा रख-रखाकर उनकी फ़ीस लेकर आते। आते भी क्यों न? सब जानते थे, डॉक्टर रामलाल के हाथों में शफ़ा है। जिस रोगी का केस हाथ में लेते, वह एक बार तो अवश्य ही जी उठता।

डॉक्टर रामलाल फ़ीस के मामले में जितने कठोर थे, उससे कहीं अधिक उनकी स्त्री सुशीला रुपए-पैसे के संबंध में बेपरवा थी। उसके हाथों में जैसे छेद थे, रुपया-पैसा टिकता ही न था। द्वार पर कोई भी चला जाय, ख़ाली हाथ कभी न लौटता। साधु-संत घर पर डेरा डाले रहते। कितनी ही संस्थाओं का मासिक बँधा था। डॉक्टर रामलाल जहाँ एक-एक पैसे को दाँतों से पकड़ते, वहाँ सुशीला उनकी कमाई दोनो हाथों से, बड़ी उदारता और दरियादिली से, लुटाती।

डॉक्टर साहब यह सब कुछ प्रत्यक्ष रूप से देखते, परंतु मुख से एक शब्द न निकालते। वह जानते थे, सुशीला के मुरझाए हृदय की उनके पास कोई चिकित्सा नहीं। उनका विवाह हुए दस वर्ष से अधिक बीत चुके थे, परंतु सुशीला की गोद अभी तक सूनी थी। दांपत्य-तरु हरा-भरा, लहलहा होने पर भी फल-रहित था। वात्सल्य की सुंदर फुलवारी में किसी की मधुर चहक सुनाई न देती थी। डॉक्टर रामलाल सुशीला के जीवन के इस अभाव और निराशा तथा उसके परिणाम-स्वरूप उत्पन्न होनेवाली मूक वेदना को समझते थे, इसी से पत्नी के हाथ रोकने की कभी चेष्टा न करते। सुशीला यदि घी का घड़ा गिरा देती, या गले का जड़ाऊ हार उतारकर दे डालती, तब भी वह उसके मुख पर एक दृष्टि डालकर चुप्पी साध लेते।

❀ ❀ ❀

मालती सुशीला के पड़ोस में ही एक मामूली मकान में रहती थी। पति एक स्थानीय स्कूल में अध्यापक थे। दो वर्ष हुए, उनकी मृत्यु हो गई थी। तीन वर्ष का अबोध रमा बस उनकी एकमात्र स्मृति के रूप में विद्यमान था। उसी पर मालती की सारी भावी आशाएँ केंद्रित थीं। वह उसके पावन प्रणय का जीता-जागता, सुंदर स्वरूप था, उसके वात्सल्य-वृक्ष की हरी-भरी शाखा पर खिलता हुआ सुगंधित पुष्प था, और था उसके कठोर सतीत्व और साधनामय पातिव्रत्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का अमर तत्त्व। वह उसी के सहारे जीती थी। अड़ोसियों - पड़ोसियों के कपड़े सीकर अपनी और रमा की उदर-पूर्ति कर लेती। दिन-रात बालक को छाती से चिपटाए रखती, एक क्षण के लिये भी उसे दृष्टि से ओझल न होने देती।

रमा आज दस दिन से ज्वर-पीड़ित पड़ा है। मालती के लिये दुनिया अँधेरी हो गई। खाना-पीना सब छूट गया। काम-धंधे का भी कुछ ध्यान न रहा। मामूली वैद्य - हकीमों की दवा लाकर दे चुक, कुछ लाभ न हुआ। डॉक्टर रामलाल के हाथों की शफ़ा में उसे भी विश्वास था, परंतु फ़ीस की जटिल समस्या उपस्थित थी। एक तो उसके पास था ही क्या? सिलाई की आय भर-पेट खाने को पूरी न होती थी। जो दो-चार रुपए बचे थे, वे अब तक दवा-दारू में ख़र्च हो चुके थे। कपड़े सीने की एक मशीन थी, जो पति की मृत्यु पर उसने अपने आभूषण बेचकर ख़रीदी थी। वही उसकी आजीविका का एकमात्र आधार थी। सोचती, इसे बेच डालूँ, तो कल को गुज़ारा कैसे चलेगा। परंतु फिर बच्चे के रक्त-हीन, मुरझाए मुख पर दृष्टि डालती, तो मन-ही-मन कह उठती—नहीं, इसे अब बेचना ही होगा। और नहीं, तो किसी के यहाँ बरतन माँजने की नौकरी कर लूँगी। फिर मशीन की तरफ़ देखती, तो उसका मोह मानो उसके निर्णय को बदल देता। इसी उधेड़-बुन में दो दिन और गुज़र गए। रमा की हालत में कोई परिवर्तन न हुआ। अंत में ममता ने मोह पर विजय पाई, और मालती अगले दिन सबेरे ही मशीन लिए डॉक्टर रामलाल के घर पहुँच गई।

❀ ❀ ❀

सुशीला मालती को जानती थी। उसकी अवस्था से भी भली भाँति परिचित थी। यह समाचार भी उसे किसी से मिल चुका था कि मालती का लड़का कई दिनों से बीमार है। परंतु वह इस बीच में एक बार भी उसे देखने नहीं गई। उसका दयार्द्र और कुछ उदार हृदय, जहाँ तक मालती का संबंध था, शुष्क और नीरस हो चुका था, और इसका कारण था सुशीला का आत्मगौरव और नारी-अभिमान। एक बार सुशीला गली में खेलते हुए रमा को अपने घर ले गई थी। रमा देखने में सुंदर और प्यारा था। सुशीला ने उसे गोद में लेकर इतना प्यार और दुलार किया कि वह कुछ सहम-सा गया। इतने में मालती उसे ढूँढ़ती हुई वहाँ आ निकली। बच्चा दौड़कर मा की टाँगों से लिपट गया। उसका सहमा हुआ मुख देखकर मालती को कुछ आशंका हुई, और वह लाल-पीली आँखों से सुशीला को देखती हुई, रमा को गोद में उठाकर, शीघ्रता से चल दी। तब से अपने बच्चे पर वह सुशीला का साया भी न पड़ने देती। सुशीला उसी दिन से मालती की ओर से अनमनी-सी हो गई। वह निर्दोष थी, और साथ ही अपने निःसंतान होने के दुख से दुखी भी। कभी-कभी अपने दुर्भाग्य पर मौन रूप से रोती, और अनेक बार ईर्ष्याग्नि के ताप से झुँझला उठती। मालती की सतर्कता ने उसके नारी-हृदय को और भी ठेस पहुँचाई, और वह मालती को अपना परम शत्रु समझने लगी।

❀ ❀ ❀

सिलाई की मशीन मालती के हाथों में देखकर सुशीला कुछ चकित अवश्य हुई, परंतु सारी स्थिति समझने में उसे देर न लगी। आज उसे मा की सच्ची और निःस्वार्थ ममता पर ईर्ष्या हुई। उसके हृदय से जैसे वात्सल्य का सोता बरबस बह निकला। परंतु कुछ सँभलकर मालती से बोली—"कहो मालती, कैसे आना हुआ? और साथ में यह मशीन कैसी?"

मालती भी रमणी थी। अपनी वर्तमान असहाय अवस्था में भी आत्मसम्मान का उसे पूरा-पूरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान था। बोली—"सिलाई के काम से मेरे मस्तक में पीड़ा रहने लगी है, इसलिये मैंने यह काम छोड़ देने का निश्चय कर लिया है। मशीन नई है, मैंने सोचा, कदाचित् आप लेना पसंद करें, इसी विचार से इधर आ निकली।"

सुशीला ने कुछ ठहरकर कहा—"अच्छी बात है, मशीन यहाँ छोड़ जाओ, और जो कुछ तुमने इसका मूल्य दिया था, वह अगले सप्ताह आकर ले जाना।"

मालती के सम्मुख इस समय एक ही लक्ष्य था—डॉक्टर रामलाल की फ़ीस। मशीन के पूरे दाम प्राप्त करने की उसे चिंता न थी। परंतु इस समय वह अपनी ही पैदा की हुई उलझन में उलझ गई थी। यदि मालती अब भी स्पष्ट रूप में सब कुछ कह देती, तो कदाचित् उसे मशीन बेचने की भी आवश्यकता न पड़ती। परंतु भिक्षा द्वारा अपने बच्चे की प्राण-रक्षा उसे गवारा न हुई। कुछ रुक-रुककर सुशीला से कहा—"नहीं, यदि आपको आवश्यकता न हो, तो न सही। चंपा की मा ने भी मुझसे एक बार सिलाई की मशीन का उल्लेख किया था, उससे पूछ लेती हूँ।"

सुशीला के हृदय में सुषुप्त मातृत्व को ठेस लगी। वह जानकर भी अनजान नहीं बनी रह सकती थी। उसकी आत्मा ने उसे एक मा के व्यथित हृदय के साथ खेलने के प्रयास के लिये धिक्कारा। वह मालती से बोली—"तुमने यह मशीन कितने में ली थी?"

मालती ने खड़े-खड़े ही उत्तर दिया—"एक सौ बीस में। परंतु इस समय उतने मिलने की आशा थोड़े ही की जा सकती है। आपको रखनी हो, तो जो ठीक समझें, दे दें।"

सुशीला भीतर गई, और दस-दस रुपए के बारह नोट लाकर मालती के हाथ में दे दिए। मालती ने गिने, और सुशीला के मुख की ओर एकटक देखने लगी। सुशीला ने कहा—"मुझे नई मशीन ख़रीदनी थी, इससे कम में कदापि न मिलती, और यह मशीन भी तो नई ही है। इसी से पूरी क़ीमत देने में भी मुझे कोई घाटा नहीं।"

मालती ने एक बार फिर सुशीला को सिर से पैर तक देखा, और नोट लेकर चुपचाप चली गई।

❀ ❀ ❀

कंपौंडर ने एक साधारण-सी स्त्री को डिस्पेंसरी के द्वार पर खड़े देखकर पूछा—"क्या चाहती हो?"

मालती ने उत्तर दिया—"डॉक्टर साहब को अपना बच्चा दिखाने के लिये घर ले जाना है।"

कंपौंडर ने तुरंत कहा—"फ़ीस लाई हो?"

मालती ने सिर हिला दिया, जिसका अर्थ था हाँ, लाई हूँ।

कंपौंडर भीतर गया, और थोड़ी ही देर में आकर मालती को भी साथ ले गया। डॉक्टर रामलाल ने स्त्री के चेहरे पर दृष्टि दौड़ाई, फिर सहानुभूति-पूर्ण शब्दों में कहा—"मैं अभी कुछ मिनटों में तुम्हारे साथ चलता हूँ, परंतु मेरी फ़ीस का नियम तो तुम्हें विदित ही है न?"

मालती ने आँचल से दस-दस के बारह नोट खोलकर डॉक्टर की मेज़ पर रख दिए, और हाथ जोड़कर बोली—"आप ये सब रख लें, और जैसे भी हो, मेरे बच्चे की रक्षा करें।"

डॉक्टर ने नोट गिने, कुछ समझ में न आया। कभी मालती की ओर देखते, कभी नोटों की ओर। फिर नोट उठाकर जेब में डालते हुए कंपौंडर से कहा—"चलने के लिये बेग तैयार करो।"

कुछ मिनटों में ही डॉक्टर रामलाल मालती के साथ हो लिए।

घर में प्रविष्ट होते ही वहाँ की स्थिति देखकर नोटों की समस्या और भी जटिल हो गई। उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रमा को भली भाँति देखा, और 'टाइफ़ायड' का निश्चय करने के बाद मालती को तसल्ली देकर लौट गए। डिस्पेंसरी पहुँचकर कंपौंडर को दवा ले जाने और मालती को आवश्यक उपचार समझाने के लिये भेज दिया।

नियत समय पर डॉ० रामलाल घर पहुँचे। नित्य के नियमानुसार सुशीला ने उनकी जेब टटोली, तो कुछ रुपए और नोटों के साथ ही दस-दस के बारह नोट भी मिले। वह प्रश्न-सूचक दृष्टि से पति की ओर देखने लगी। डॉक्टर साहब ने तुरंत कहा—"ये रुपए अलग रख देना, किसी की अमानत है।"

यह कहकर वह कपड़े उतारने लगे। अकस्मात् उनकी दृष्टि सिलाई की मशीन पर जा पड़ी, और सुशीला की ओर देखकर पूछा—"यह कब और किसलिये ली है?"

सुशीला ने मुस्कराकर कहा—"किसी की अमानत है।"

❀ ❀ ❀

डॉ० रामलाल ने रमा की चिकित्सा में कोई बात उठा न रक्खी। दिन में नित्य दो बार स्वयं जाकर देखते। अपने कंपौंडर के हाथ दवा इत्यादि भेजते। पौष्टिक पदार्थों का भी अपने पास से ही प्रबंध किया। इधर मालती ने भी दिन-रात एक कर दिया। इक्कीसवें दिन रमा का ज्वर उतर गया, और धीरे-धीरे वह शक्ति पकड़ने लगा, यहाँ तक कि एक सप्ताह के पश्चात् उठने-बैठने लगा। उसे पूर्ण रूप से स्वस्थ हुआ देख डॉ० रामलाल को असीम और सच्चा हार्दिक आनंद हुआ। आख़िर एक दिन दस-दस के बारह नोट उन्होंने सुशीला से लिए, और रमा को अंतिम बार देखने के बाद वे नोट मालती को देते हुए कहा—"अभी रमा की देख-भाल की बहुत आवश्यकता है। तुम जब तक काम करने योग्य बनो, तब तक इन रुपयों से काम चलाओ।"

मालती ने सिर झुकाए हुए कहा—"यह तो आपकी फ़ीस है, मैं कैसे वापस ले सकती हूँ?"

डॉ० रामलाल ने कुछ आकुल होकर कहा—"नहीं, मेरी फ़ीस इस रक़म से बहुत अधिक है, और तुममें वह देने की कदाचित् सामर्थ्य नहीं।"

मालती ने देखा, डॉक्टर साहब रमा को स्नेह की दृष्टि से निहार रहे हैं। जिस तत्परता से डॉ० रामलाल रमा की चिकित्सा कर रहे थे, उससे पहले ही मालती को रमा पर उनके हार्दिक अनुराग का संदेह हो रहा था। आज उसे पूर्ण विश्वास हो गया। रमा को उठाकर डॉक्टर साहब की गोद में देते हुए वह बोली—"निःसंदेह इससे बढ़कर आपकी सेवा में कुछ अर्पण करना मेरी सामर्थ्य से बाहर है!"

डॉ० रामलाल ने रमा का मुख चूम लिया, और उसे गोद में लिए हुए घर पहुँचे। सुशीला दूर से ही बच्चे को देखकर लपकी, और उसे गोद में लेकर बोली—"यह अनमोल रत्न कैसे चुरा लाए?"

डॉ० रामलाल ने हलकी हँसी हँसते हुए कहा—"यह मेरे डॉक्टरी परिश्रम की फ़ीस है।"

"परंतु अमानत तो नहीं, जो लौटा देनी पड़ेगी?" सुशीला ने खिलखिलाकर कहा।

डॉ० रामलाल ने उत्तर दिया—"मालती आज से इसी घर में घर की एक सदस्या के रूप में रहेगी, तब रमा पराई अमानत न होकर घर का ही प्रिय जीव होगा।"

इतने में मालती वहाँ आ पहुँची, और सुशीला का हाथ पकड़ते हुए कहा—"पराई अमानत क्यों, यह तो डॉक्टर साहब की फ़ीस है, जिस पर सोलह आने इन्हीं का अधिकार है। मैं धाय के रूप में इसका पालन करूँगी, क्योंकि मेरे लिये अब यह पराई अमानत है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुशीला ने मालती को गले लगाते हुए कहा—"इस पराई अमानत की रक्षा तुमसे अधिक भला कौन कर सकता है।"

मालती ने होठों पर अर्ध-मुस्कान लिए हुए कहा—"डॉक्टर साहब!"

"और फ़ीस लेने में भी कितने कठोर!" सुशीला ने डॉक्टर साहब को कनखियों से देखते हुए कहा।

"कठोर नहीं, चतुर कहो।" डॉक्टर रामलाल बच्चे को हवा में उछालते हुए बोले।

टायफ़ाइड (विषम ज्वर)

के आक्रमण के पश्चात् आपके सिर के बाल बड़ी मात्रा में झड़ने लगते हैं। टायफ़ाइड ही क्यों? हर प्रकार की बीमारी में बालों को बहुत नुक़सान पहुँचता है। ऐसी हालत में केशवर्धिनी बालों को झड़ने से बचाती है, और उनकी जड़ों में नई ताक़त पैदा करती है।

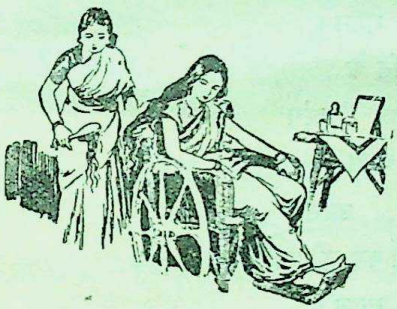

पुरुषों के बालों की रक्षा 'केशवर्धिनी क्रीम' से कीजिए। अपने बालों में स्वच्छता और चमक लाने के लिये 'केशवर्धिनी शंपू' का उपयोग कीजिए।

इस स्वास्थ्यवर्धक **केशवर्धिनी** का उपयोग आज से ही आरंभ कीजिए।

केशवर्धिनी ।।।) केशवर्धिनी शंपू ।।।) केशवर्धिनी क्रीम १)

पैकिंग-पोस्टेज इसके अलावा

साउथ इंडिया केमिकल्स, मयलापुर, मदरास

एजेंट्स:—

मणिलाल वल्लभजी इलगिन-रोड, कलकत्ता। गांधी व्रजलाल मणिलाल बाँकीपुर, पटना।

मेसर्स कलाधरप्रसाद ऐंड संस, नीचीबाग़, बनारस। एस्० मंज़ूरहसन चौक, इलाहाबाद।

दि टंडन स्टोर्स, लश्कर, गवालियर। छिदम्मीलाल ऐंड को०, किनारी बाज़ार, आगरा।

मेसर्स बर्दराज ऐंड को०, विसोपुर बाज़ार, जमशेदपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गगन-गान

[श्रीयुत तेजनारायण काक एम्० ए०]

देव, बनूँ मैं नील गगन।
मेरे उर में बसें जगत के सुख-दुख दिवा-निशा बन।
देव, बनूँ मैं नील गगन।
उमड़े ऊषा के प्रकाश में
जग का सब आह्लाद;
संध्या की छाया में छिपकर
सो जाए अवसाद।
खो जाए मेरे उर में आ जग की करुणा बन घन।
देव, बनूँ मैं नील गगन।
शीतल करने को संसृति के
पीड़ित, व्याकुल अंग
ज्योत्स्ना-सी जगती पर बरसे
मेरी अमित उमंग।
क्षितिज-करों में बाँध धरा का मैं कर लूँ आलिंगन।
देव, बनूँ मैं नील गगन।

अशक्ति का कट्टर दुश्मन
आतंक-निग्रह गोलियाँ
शरीर में खरा जोश पैदा करके कैसा भी अशक्त पुरुष हो, उसे नौजवान बना देती हैं। ३२ गोलियों की डिब्बी की क़ीमत १)
आतंक-निग्रह-औषधालय
जामनगर, काठियावाड़
लखनऊ-एजेंट—
मेसर्स इंदरचंद ऐंड कंपनी, चौक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा-चित्रावली

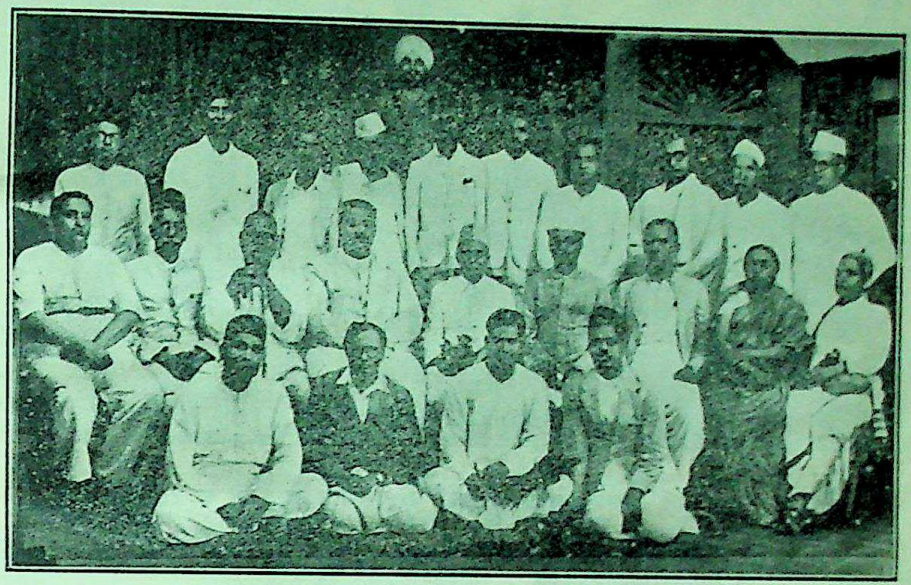

अखिल भारतवर्षीय हिंदू-महासभा की कार्यकारिणी समिति

[बंबई-अधिवेशन के समय लिया गया चित्र]

पहली पंक्ति (बैठे हुए, बाईं ओर से)—१. श्रीएस्० बी० जौहरी (प्रयाग), २. डॉ० एन्० डी० सावरकर (बंबई), ३. श्रीइंद्रप्रकाश (दिल्ली) और ४. श्रीजी० वी० केतकर (पूना)

दूसरी पंक्ति (बैठे हुए, बाईं ओर से)—१. कैप्टन केशवचंद (लाहौर), २. श्रीवी० जी० खापरडे एम्० एल्० ए० (सी० पी०), ३. श्रीपद्मराज जैन (कलकत्ता), ४. डॉ० श्यामाप्रसाद मुकर्जी (कलकत्ता), ५. वीरवर वी० डी० सावरकर (सभापति), ६. श्रीचाँदकरणजी शारदा, ७. श्रीआशुतोष लाहिरी (कलकत्ता), ८. श्रीमती सुमतिबाई देव (नागपुर) और ९. अज्ञात

तीसरी पंक्ति (खड़े हुए, बाईं ओर से)—१. श्रीएम्० एन्० मजूमदार (अहमदाबाद), २. श्रीरामकृष्ण पांडेय (जबलपुर), प्रधान मंत्री बंबई, ३-४. अज्ञात, ५. श्रीरघुवंशीलाल वर्मा (लखनऊ), ६. श्रीजगन्नाथप्रसाद वर्मा (प्रधान मंत्री, नागपुर), ७. स्वामी नयनासरी ओगायन, ८. श्रीलाला दुर्गाप्रसाद (अजमेर), ९. अज्ञात और १०. श्रीबरवे (लखनऊ)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैदराबाद में इंडियन टी-मार्केट-एक्सपेंशन-बोर्ड घर-घर चाय का प्रचार कर रहा है।

सिकंदराबाद के एक गाँव की औरतें और बालिकाएँ चाय से बहुत प्रेम करती हैं।

श्रीबिंदुसरोवर (सिद्धपुर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

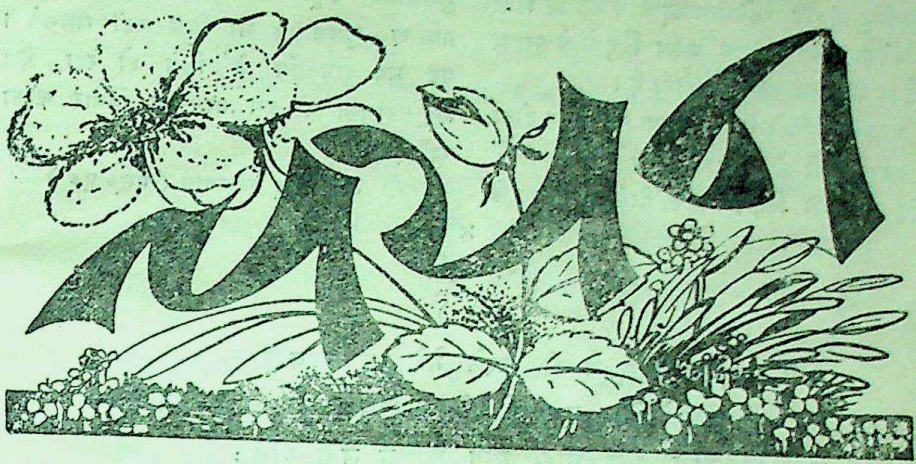

१. जन-गणना और उर्दू

आर्य-सार्वदेशिक सभा ने यह तो निश्चय कर ही दिया है कि आर्यों को अपनी भाषा 'हिंदी' लिखानी चाहिए। परंतु एक बात रह जाती है। जो लोग हिंदी को गिराना चाहते हैं, उनके तीन हथियार हैं—एक तो यह सिद्ध किया जाय कि हिंदी-भाषी उर्दू-भाषियों की अपेक्षा कम हैं, दूसरे यह कि हिंदी-भाषी अधिक भी हों, तो उर्दू समझनेवाले हिंदी समझनेवालों की अपेक्षा अधिक हैं। कुछ लोग अपनी भाषा हिंदी लिखाते हुए भी अपने को बहु-भाषा-विज्ञ जताने के लिये अन्य भाषाओं में अँगरेज़ी, उर्दू आदि लिखा देते हैं। मुसलमान केवल उर्दू लिखाते हैं, और यह प्रकट नहीं करते कि हम हिंदी भी जानते हैं। हिंदू यदि 'हिंदी' लिखाते भी हैं, तो साथ ही यह भी लिखा देते हैं कि हम 'उर्दू' भी जानते हैं। इस प्रकार उर्दू जाननेवालों की संख्या अधिक हो जाती और राजनीतिक झगड़ों में उर्दू की विजय हो जाती है। इसलिये लोगों को चाहिए कि अन्य भाषाओं में उर्दू को स्थान न दें। साफ़ कह दें कि हम "उर्दू नहीं जानते।" क्योंकि उनकी परिभाषा में उर्दू कोई अलग भाषा है ही नहीं। वस्तुतः उर्दू कोई अन्य भाषा है भी नहीं। हिंदी में ही अधिक फ़ारसी या अरबी-शब्दों का प्रयोग करने से उर्दू हो जाती है। यदि हमारे मुसलमान भाई उदार होते, और अलग भाषा का झगड़ा पेश न करते, तो कोई विशेष बल देने की आवश्यकता न थी। परंतु आजकल राजनीतिक वायुमंडल इतना विषैला हो गया है कि छोटी-छोटी बातों में भी सावधान न रहने से भारी हानि उठानी पड़ती है। वास्तव में भारतवर्ष में हिंदी जाननेवाले भी सबसे अधिक हैं, और हिंदी समझनेवाले भी। परंतु मुसलमान तो हिंदी जानते हुए भी अपने को हिंदी से परिचित नहीं लिखाते। हिंदू अपनी विद्या के घमंड में 'उर्दू' भी लिखा देते हैं, जिससे उनकी परिचित भाषाओं की संख्या में वृद्धि हो जाय। तीसरे, तिलगू, तामिल, कनारी, मराठी प्रांतों के मुसलमान तो 'उर्दू' लिखाते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और हिंदू प्रांतीय अभिमान का प्रश्न उठाकर हिंदी की उपेक्षा करते हैं। इस प्रकार हिंदुओं के परस्पर अनैक्य से दूसरों को लाभ होता है।

आजकल रेडियो में जिस भाषा का प्रयोग होता है, वह गुरुजनों की परिभाषा में तो हिंदोस्तानी है, परंतु वह ऐसी हिंदोस्तानी है, जिसे गरम दल के मुसलमान 'उर्दू' कहते हैं, और हिंदू तो क्या, ग्रामीण मुसलमान भी जिसे नहीं समझते। यह सब राजनीति के लिये हो रहा है। हिंदू-महासभा को इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए।

गंगाप्रसाद उपाध्याय (एम्० ए०)

× × ×

२. अतृप्ति

(१)

कभी उमड़कर आँसू ने ही, करके मेरे दृग में वास—
लखने दिया न तुझको जी-भर, किया कार्य का सत्यानास।
कभी मोह-माया घिर आई, लगा खींचने लंबी साँस;
बहुत बार तुझको देखा, पर मिटी न मेरे मन की प्यास।
जब-जब देखा, तब-तब होते गए विघ्न ही सिंधु अथाह!
जाने कब तक तुझे देखने की यह मिट पावेगी चाह।

(२)

उस दिन, जब वे दुखिया दंपति भोग रहे थे कारागार,
काली घटा, रात थी काली, काला था सारा संसार।
लिया जन्म कारागृह में, वे दंपति दबे और पा भार;
तुझे छिपाने को जब रो-रो लगे ढूँढ़ने कोई द्वार,
तब उनका दुख देख दृगों में मेरे उमड़ा अश्रु-प्रवाह;
यों उस दिन भी तुझे देखने की यह रही अधूरी चाह।

(३)

उस दिन भी, जब मिट्टी खाकर तूने घर में किया प्रवेश;
धूलि धूसरित तन था तेरा, आनन पर बिखरे थे केश।
लगे खिलाने दौड़-दौड़कर मा को कर की मिट्टी शेष;
हँसने लगीं यशोदा तेरा जब यह देख अलौकिक वेश,
तब मेरे ये नेत्र बंद थे, उमड़ा उर में हर्ष-उछाह;
तरस गया जी-भर लखने को, पूरी हुई न मेरी चाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४)

उस दिन भी, जब गेंद गिरा जा रवि-तनया-धारा के बीच,
जहाँ बनाता प्रतिपल जल को विषमय था वह विषधर नीच।
कूद पड़ा हँसकर तू जल में पीतांबर की कछनी खींच;
तेरे साथी ग्वाल-बाल वे रोने लगे नेत्र जब मींच,
तब झिंप गए हमारे भी दृग, कढ़ी हृदय से केवल आह;
तुझे न देखा जी-भर मैंने, रही मचलती मेरी चाह।

(५)

उस दिन, जब थे लोग निरखते तुझको अपनी आँखें फाड़;
तू था कोमल, तेरे तन में मांस न था, था केवल हाड़।
किंतु कंस के मतवाले उस करि को तूने दिया पछाड़;
और लिया उस गज के दाँतों को तूने जब तोड़ उखाड़,
सजल नेत्र हो गए हमारे, निकली मुँह से यद्यपि वाह;
जी-भर देखा तुझे न उस दिन, प्यासी रही हमारी चाह।

(६)

उस दिन भी, जब रण-भेरी की गूँजी भारत में आवाज़;
कुरुक्षेत्र में पार्थ-संग तुम आए सजकर रण का साज।
पर अर्जुन ने कहा धनुष रख—गिरी वीरता पर जा गाज—
क्या दादा-बाबा को मारूँ, जिन पर रहा आज तक नाज़?
तब दृग मूँद लगा मैं सुनने, तूने दी जो नेक सलाह;
इधर निगोड़ी रही तड़पती, शीश पीटती मेरी चाह।

(महंत) धनराज पुरी

× × ×

३. हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी या राष्ट्र-भाषा का प्रश्न

हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी, इन तीन विकृत ध्वनियों ने जन-हित-चिंतक विचारवानों का मस्तिष्क आंदोलित कर रक्खा है। कम-से-कम पाँच वर्षों से यह समस्या, जो इन शब्दों के रूप में हमारे सम्मुख आती है, अग्नि-वमन कर रही है। हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी, यद्यपि इनका संघर्ष—इनके पिट्ठुओं का संघर्ष कहना अधिक उचित है—अकारण प्रतीत होता है, वास्तविक रूप में मनचले राजनीतिज्ञों के नारों (Slogans) और मनोवैज्ञानिक शब्द-जालों (Catchwords) का काम देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनका प्रयोग करने में ये महाशयगण सिद्ध होते हैं। एक श्रीजिन्ना—इसकी कोई चिंता नहीं कि वह उर्दू में अपने को व्यक्त तक नहीं कर सकते—उर्दू के झंडे को ऊँचा करते हैं, और उसके संरक्षक बनकर चिल्लाते हैं—"परिचम ऊँचा रहे हमारा", और अपने विचार-मित्रों (Partners of opinion) को चेतावनी देते हैं कि काफ़िर उर्दू को मिटाने में प्रयत्नशील हैं, इसकी प्राण-पण से रक्षा करनी होगी। उधर श्रीराजगोपालाचारी-जैसे व्यक्ति अनमने जनों के गले के नीचे, दंड ग्रहण करके, हिंदुस्तानी, जो उनके लिये यूनानी है, उतारना चाहते हैं। परंतु हिंदी ही, कहे बिना नहीं रहा जाता, ऐसी अभागिनी है, जिसके संरक्षक या तो मृतप्राय हैं, या गर्भ में हैं, यद्यपि उसकी माता परम ऐश्वर्यवान् संस्कृत है।

ये शब्द—हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी यद्यपि हमारे कानों में अनिच्छित रूप से प्रतिदिन प्रवेश करके प्रतिध्वनित होते और नाना प्रकार के विचारों को प्रतिबिंबित करते हैं—यहाँ कुछ स्पष्ट किए जा सकते हैं। उर्दू वह भाषा है, जो फ़ारसी-लिपि में लिखी हो, जिसमें अरबी और फ़ारसी के शब्द विशेष रूप से ध्वनित हों, और जिसका विन्यास मध्यकाल की हिंदी और फ़ारसी के अशुभ समागम का प्रतिरूप हो। 'हिंदी' नाम बहमनी-राज्य में उस भाषा का था, जो दिल्ली में उर्दू कहलाती थी, अथवा उर्दू हिंदू-मुसलमानों की एकता का निशान है। इससे हमसे संबंध नहीं। आज तो वास्तविकता यह है कि वह भाषा, जो आज उर्दू कहलाती है, उसका इतिहास कुछ भी रहा हो, आज मुसलमानों के कानों में रस घोलती है, चाहे उनके मस्तिष्क में वह कोई चित्र खींचे या न खींचे, यह तो उनकी प्रांतीयता पर निर्भर है। एक बंगाली मौलवी साहब की अस्पष्ट और विकृत उर्दू पर एक युक्त प्रांतीय महाशय ने चुटकी ली—"आप मौलवी साहब, इतनी नफ़ीस उर्दू कैसे जान गए?" मौलवी साहब फूलकर बोले—"जानेगा केयों नेई—आमारा नबी का जो जोबान हाय!"

हिंदी, जो आज परिभाषा और स्पष्टीकरण के सारे प्रयत्नों का प्रतिकार करती है, प्रसन्नता की बात है, उस विराट् जन-समूह की भक्ति और मत आकर्षित करने लगी है, जिसके जन अपने को हिंदू पुकारते हैं। संस्कृत ने आर्यावर्त के निवासियों द्वारा अपना अव्यवहार और निर्वासन, साथ ही उनकी संस्कृति और सभ्यता का पतन और उसके परिणाम-स्वरूप उनके इतिहास—सत्य इतिहास का नाश देखा, और भी देखा व्यथित नेत्रों से चेतन-संसार के इतिहास से आर्यावर्त के आर्यों का क्रमशः निर्वासन। किन्हीं जनों की भाषा और साहित्य इतिहासकार के सम्मुख उनकी संस्कृति की चेतनता और सभ्यता के विकास का दर्पण होता है। इतिहास—सत्य इतिहास आफ़्रिका के हब्शियों, राजस्थान के भीलों और सुंदरवन के चीतों के युद्धों और उनकी मैत्री का विवरण संग्रह नहीं करता, वह मुट्ठी-भर यूनानियों की सभ्यता का वर्णन हृदय खोलकर करता है, और उनकी भाषा और साहित्य योरपीय महासमुद्र के पथ-हीन बर्बरों के लिये प्रकाश-गृह हो जाता है। संस्कृत के व्यवहार की शिथिलता और फिर भारतीय आर्यों का त्रिशंकु के समान पतित होकर प्राकृत, फिर अपभ्रंश, उसके पश्चात् हिंदी और आज ग्रामीण बोलचाल की भाषा को, जिसमें ८०० से अधिक शब्द नहीं, अपनाना हमारी हीन स्थिति का द्योतक है। इस अंतिम भाषा को हिंदी (हिंदुस्तानी) कहने और राष्ट्र-भाषा घोषित करने का प्रयत्न पतन की अंतिम सीमा है। संस्कृत के साथ संस्कृति भी निर्वासित हो गई, और आर्य-चरित्र की विशेषताएँ आर्यावर्त से विदा हो गईं।

प्रांत स्थिर हुए, और आर्य-संस्कृति के शिथिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सभ्यता के सुमूर्पु होने से संतति-स्वरूप प्रांतीय भाषाएँ हिंदी, राजस्थानी, गुजराती, बंगाली, मैथिली इत्यादि अस्तित्व में आईं। वहाँ की भाषाओं ने निवासियों के कंठ के सुविधानुसार आकार और प्रकार धारण किया, परंतु उनके संस्कृत से आविर्भूत होने के चिह्न-स्वरूप कितने ही संस्कृत के शुद्ध और विकृत शब्द उनमें उपस्थित रहे। युक्त-प्रांत, बिहार और मध्य-प्रांतों में व्यवहृत भाषा-समूह हिंदी कहलाया, परंतु हिंदी अत्यंत परिवर्तनशील रही है। आज कोई दशक (Decade) हिंदी के जन-प्रिय आदर्श में कुछ परिवर्तन किए बिना नहीं बीतता। हिंदी के व्याकरण के उदार नियम उसके विकास की गति तीव्र करने में सहायक होते हैं।

हिंदुस्तानी के जन्मदाता और समर्थक उसे युक्त-प्रांत, बिहार और पंजाब में व्यवहृत भाषा घोषित करते हैं, परंतु डॉ० सैयद महमूद और ऑल इंडिया रेडियो-जैसे प्रेमियों के कंठ-स्वर में वह विशुद्ध उर्दू हो जाती है, जो उर्दू-प्रेमियों के भी चित्त चुराने में समर्थ है। सत्य तो यह है कि हिंदुस्तानी का असामयिक गर्भपात इंडियन नेशनल कांग्रेस के हिंदू-मुस्लिम-ऐक्य के विराट् प्रयत्न का सूखा हुआ, प्राण-हीन फल है। मुसलमानों के हम्मीर-हठ ने कांग्रेस के प्रयत्न की ही चिता तैयार कर दी, फिर भी इन नेशनलिस्टों का अपनी दयनीय असफलता की प्रतिच्छाया हिंदुस्तानी से मोह बना हुआ है। हिंदुस्तानी में एक विशेष गुण है निर्लज्जता। वह अपने 'सैयाँ की गोदी में गेंदा' इत्यादि विभिन्न कलाओं में अवतरित होती है। महात्मा गांधीजी के मुख में वह विशुद्ध हिंदी हो जाती है, और मौलाना आज़ाद के मुख में विशुद्ध उर्दू।

किसी भाषा का किसी प्रदेश-विशेष में जन्म और वहाँ के नैतिक जीवन का एक अंग बन जाना ऐसा कांड है, जिसमें मनुष्य का हाथ कम रहा है। परंतु आज तो हम जैसे विश्व-विजय करने निकले हैं, और जो-जो घटनाएँ दैव और प्रारब्ध के प्रभाव-राज्य में थीं, एक-एक करके मानव अपने अधिकार-चक्र में लाने का निश्चित प्रयत्न कर रहा है। हम अपनी भाषा का भाग्य निर्धारित करने का साहस करते हैं, उसकी लिपि परिवर्तित करने की क्षमता रखते हैं। उदाहरणार्थ—मुस्तफ़ा कमाल ने टर्की में रोमन-लिपि का प्रचार दंड ग्रहण करके किया, और डी० वेलेरा ने 'आयर' में से अँगरेज़ी-भाषा का मुँह फेर दिया, और वहाँ की प्राचीन आयरिश-भाषा को पुनर्जीवित किया। अपनी राष्ट्र-भाषा के प्रश्न को यदि हम अधिक सूक्ष्म दृष्टि से देखें, तो स्पष्ट हो जाता है कि यह फ़ारसी-लिपि का आर्यावर्त में पटरानी होकर स्थिर होने का दुस्साहसी दाँव है; परंतु फिर कोई भी लिपि क्यों न हो, वह अपने प्रेमिकों के जाग्रत् प्रयत्नों को अपने उद्गम की ओर प्रवाहित करती है, और यह प्रवाह अशांति-सामूहिक चेतना और ज्ञानोन्मेष के अरुणोदय में, जिन परिस्थितियों में हमारा काल व्यतीत हो रहा है, अधिक स्पष्ट और वेगवान् हो जाता है। उर्दू भारतीय चेतन-जगत् से दूर मक्का की ओर प्रस्थान कर रही है, और साथ में अपने प्रेमिकों को लिए जा रही है। इसी कारण हिंदीवाले चौंकते हैं। यह उनकी प्रेयसी नहीं हो सकती, जिनके मन में आर्यावर्त की प्राचीन वेदकालीन संस्कृति के ध्रुव-नक्षत्र का प्रकाश और उसकी स्मृति है, जिनके हृदय में भरतखंड की सार्वभौम सभ्यता, जो आज भी पुरातन और नूतन सभ्यताओं की मुकुटमणि है, उसका प्रेम, उसकी आत्मीयता शेष है। उनके लिये उर्दू का मरुस्थली प्रवाह आपत्ति की सूचना देता है।

संस्कृत की पुत्रियाँ हिंदी, बँगला इत्यादि इसी प्रकार आज अपनी माता की ओर सहारे के लिये झुकती हैं, और उसकी गोद में निमग्न हो जाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहती हैं। आज की हिंदी संस्कृत से ओत-प्रोत है, और उसका यह संस्कृतोन्मुखी प्रवाह थमता दिखाई नहीं देता, यद्यपि कुछ बुद्धि के शत्रुओं को यह अत्यंत अरुचिकर है, और 'हिंदुस्तानी' का, जिसका कोई इतिहास नहीं, कोई साहित्य नहीं, और भारतीय जनता का जिसके पक्ष में मत नहीं, उसके मार्ग में कीचड़ करना कुछ रुकावट डालता है।

वास्तव में हिंदुस्तानी का अस्तित्व नहीं, हिंदी और उर्दू का है। उनके पास इतिहास भी है, और साहित्य भी। आज पंचनद, काश्मीर और सीमांत-प्रदेश में व्यवहृत भाषा सकारण उर्दू कहलाई जा सकती है, परंतु उर्दू का फ़ारसी की ओर अनवरत और तीव्रतर प्रवाह इन प्रदेशों में भी अमुस्लिम भारतीय जनों को सशंकित कर रहा है, और वे उर्दू से खिंच रहे हैं। इन प्रवाहों में एक समय वह आ सकता है, जब उर्दू हिंदी के व्याकरण के प्रभाव से भी स्वतंत्र होकर निर्मल फ़ारसी या अरबी हो जाय। इसी प्रकार हिंदी भी संस्कृत के अत्यंत निकट आ जाय, और आर्य-भारत का मुख पुनः वैदिक संस्कृति की ओर कर दे।

यह प्रवाह यदि सत्य (Genuine) है, तो इसका मंगल हो। हम इसका स्वागत करते हैं। यद्यपि इससे राजनीतिक घटना-धारा में मरोड़ आ सकता है, परंतु एक चेतनजन-समूह के सत्य इतिहास में राजनीतिक घटनाएँ उतने महत्त्व की नहीं, जितना उन जनों के सांस्कृतिक विकास का जल-चिह्न (Watermark) और उनकी सभ्यता का आदर्श आज आर्यावर्त के आर्य जन न्यूनाधिक सांस्कृतिक अराजकता में समाधिस्थ हैं, जिसके फल-स्वरूप चेतन इतिहास में हमारे अस्तित्व का महत्त्व न्यूनतम हो गया है। हम सांस्कृतिक अराजकता के, बर्बरता के गर्त में डूबे हुए प्रकाश के लिये झाँकते हैं। हमें एक ऐसी संस्कृति को जन्म देना और विकसित करना है, जो हमारा खोया हुआ स्थान पुनर्विजय कर ले। वैदिक संस्कृति की ओर एक विश्वास-प्रेरक (Confidence-inspiring) ध्वनि (Watchword) है। आँकड़े उपस्थित करके हिंदी या उर्दू की भारत में व्यवहार की प्रधानता दर्शाना निस्संदेह विरोधी वादियों और प्रतिवादियों की एक प्रणाली है। परंतु अधिक उत्तम हो, यदि हम औचित्य की ओर अधिक ध्यान दें। चेतन इतिहास में अपना टूटा हुआ सूत्र पुनर्निर्मित करने के लिये हम एक ऐसी जीवित भाषा और साहित्य के महत्त्व की उपेक्षा नहीं कर सकते, जो शक्ति और विद्युत् से स्पंदित हो, कंपित हो, जिसमें औपनिषदिक विचारों की महानता और सूक्ष्मता हो, जो आर्यावर्त के जनों पर गर्व-पूर्ण अधिकार रखती और श्रमियों तथा कृषकों की कुटियों से भी प्रतिध्वनित होकर अपना स्फूर्तिदायक पराग बिखेरती हो, शिक्षित-वर्ग का तो कहना ही क्या, और इस प्रकार जो सांस्कृतिक जल-चिह्न ऊँचा करके मानव और परमात्मा की दृष्टि में अपने वास्तविक इतिहास का पुनर्निर्माण कर सके।

रामेश्वरनाथ मिश्र
(एम्० ए०, बी० एस्-सी०)

सुधा सस्ती और उपयोगी पत्रिका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

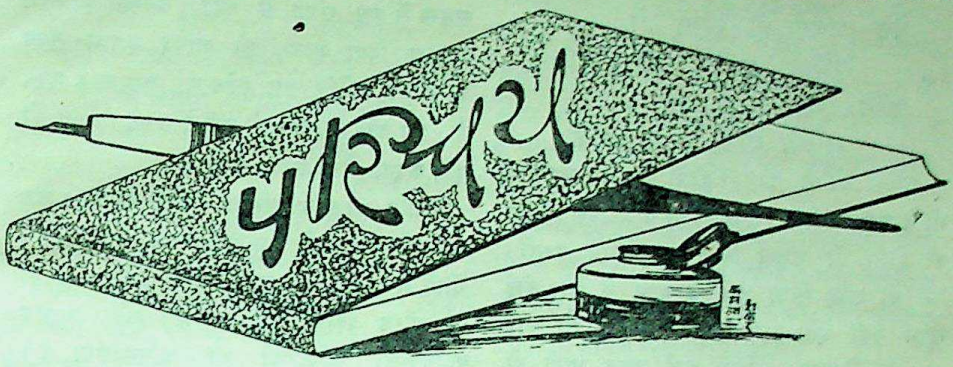

पारिजात—रचयिता, साहित्यवाचस्पति, साहित्य-रत्न, कवि-सम्राट् पंडित अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'; प्रकाशक, पुस्तक-भंडार, लहेरिया-सराय; मूल्य ४)

पुस्तक का नाम पारिजात है। पारिजात कल्प-वृक्ष को कहते हैं। यह पुस्तक विषय-विस्तार के विचार से वास्तव में कल्पवृक्ष है। अंतः और बाह्य सृष्टि के प्रमुख विषयों को, जिनमें स्वर्ग और प्रलय की कल्पनाएँ भी शामिल हैं, कवि ने अपने प्रकाश से आलोकित किया है। किंतु इसे महाकाव्य कहना शब्द का दुरुपयोग होगा। अभी तक जो महाकाव्य रचे गए हैं, उनमें कोई कथानक अवश्य रहा है। कथानक-हीन महाकाव्य शायद इस युग का शिल्प-विधान (Technique) हो, तो दूसरी बात है। हम यह समझते हैं कि महा-काव्य की विडंबना कवि-सम्राट् की ओर से नहीं, वरन् प्रकाशक महोदय के उत्साहाधिक्य का नमूना है।

खैर, यह तो ऊपरी बात है। इसमें विषयों की विविधता के साथ छंद और शैलियों की विविधता के दर्शन होते हैं। उपाध्यायजी ने जिन शैलियों को अपनाया है, उन सभी की इसमें बानगी मिलेगी। 'रूपोद्यानप्रफुल्लप्रायकलिका, राकेंदु-बिंबानना' की-सी संस्कृतप्राय शैली के साथ 'चुभते चौपदों' और 'बोल-चाल' के उर्दूप्राय मुहावरों पर बल देनेवाली शैली भी है। सभी शैलियाँ अपना अलग-अलग महत्त्व रखती हैं। गोस्वामी तुलसी-दासजी ने भी अपने समय की सभी शैलियों को अपनाया था। शैलियों की विविधता तो एक गुण है, किंतु जहाँ एक ही साथ शैलियों और भाषाओं का मिश्रण हो जाता है, वहाँ खद्दर और रेशम का बेजोड़ संयोग हो जाता है। मन और अलबेली आँखों के शीर्षक में एक शार्दूलविक्रीड़ित छंद आता है। उसमें एक ओर तो पौने सोलह आने संस्कृत-भाषा है, दूसरी ओर, उसी छंद का अंत होने से पहले, ठेठ हिंदी का ठाठ मिल जाता है। देखिए—

लीला मूर्तिमती अतीव ललिता उल्लासिता रंजिता,
नाना नर्तन-कला-केलि-कलिताआलोक-आलोकिता;
मंदादोलित सिंधु-तुल्य मन की कांता तरंगावली।

दूसरा नमूना—

क्यों चालें चलते,बला-पर-बला लाते दिखाते फिरे,
जो मानी मन मानता,नयन तो कैसे नहीं मानते?

कहीं-कहीं तुकबंदी के लोभ से विषय-विवेचन में भी बड़ी शिथिलता आ गई है, और उसमें काव्य-भाषा का गौरव जाता रहता है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेट जलता ही रहता हो,
पूरियाँ खाएँगे घी की;
करेंगे गँठ-जोड़ा, तो भी
खुलेगी गाँठ नहीं जी की।

पूरियाँ तो घी की ही होती हैं, और नुक़सान भी वे कम करती हैं। तेल की या वेजिटेबिल प्रोडक्ट की होतीं, तो शायद अधिक नुक़सान करतीं। 'घी की'-शब्द सिवा तुक के लाभ के और कोई लाभ नहीं देता। 'बाज़ार की' कहते, तो चाहे तुक न मिलता, लेकिन अर्थ ज़रूर भारी हो जाता।

ये बातें तो हुईं आकार और शैली की। पुस्तक में विषयों का बाहुल्य है। उनमें से कुछ में नवीनता और मौलिकता है, और कुछ में मध्य-युग की-सी शब्दों की कलाबाज़ी। उन कलाबाज़ियों में कहीं-कहीं कवित्व भी आ गया है। देखिए—

जलन जी की कैसे जाती,
जो न आँखों का जल होता।

मध्य-युग की रुचि रखनेवाले लोगों को आँख के संबंध में बड़ा चटपटा मसाला मिल सकेगा। इन वर्णनों में काव्य के सौंदर्य के साथ उर्दू-शायरी की बीभत्सता भी आ गई है—

कलेजे छिले, पड़े छाले,
हो रही है बेतरह जलन।

इस आलोचना से यह न समझना चाहिए कि पुस्तक में इस तरह की ख़ुराफ़ात बातें ही भरी हैं। यदि सब बातों के समावेश करने का मोह संवरण किया जाता, तो पुस्तक का मूल्य भी सुलभ हो जाता, और कवि के यश की भी रक्षा होती। इन कविताओं के नीचे सन्-संवत् दे दिए जाते, तो मानसिक क्रम-विकास का भी पता चलता। इस संग्रह में तो राजा भोज और धन्नू तेली साथ बिठला दिए गए हैं। है भी तो यह शेर-बकरी के एक घाट पानी पीने का युग। मेरी समझ में इस संग्रह से कांत कल्पना का स्तंभ निकाल दिया जाता, तो शायद इसका मूल्य बढ़ जाता, क्योंकि इस स्तंभ का कुछ ऋण मूल्य है। हम कवि को दोष भी नहीं दे सकते। पिता को पूत, कपूत, सभी अच्छे लगते हैं।

यद्यपि आजकल संस्कृत-शैली का मूल्य कुछ कम हो चला है, तथापि पुस्तक के प्रारंभिक गीतों में 'उमंग-भरे युवक'-वाली कविता युवकों का गौरव बढ़ाएगी। ऐसी आशा और उत्साह बढ़ानेवाली कविताओं की आवश्यकता है। देखिए—

हैं भव-भय-भंजन, मन-रंजन ए
बंधन-मोचन-हेतु अवनि में अवतरे,
हैं अनुपम यश-अंकित, अकलंकित ए
लोक अलौकिक लाल मराल विरद वरे;
हैं दानव-दल-दंडन, खल-खंडन ए
अरि-कुल-कंठ-कुठार अकुंठित व्रत धरे,
हैं नर-पुंगव नागर, सुख-सागर ए
मनुज-वंश-अवतंस सरस रुचि सिर धरे।

दृश्य जगत् के संबंध में प्राकृतिक शोभा के गीत भी अच्छे हैं। दृश्य जगत् के विषय में बहुत कुछ परंपरागत कल्पनाएँ हैं, लेकिन कुछ में मौलिक नवीनताएँ भी हैं। 'हरिऔध'जी के प्राकृतिक वर्णनों में प्रकृति आलंबन रूप से ही ली गई है। उसका मानवीकरण कम है। कहीं-कहीं उसमें ईश्वर की कल्पना भी देखी गई है। अंतर्जगत् के संबंध में भी बड़ी सूक्ष्म कल्पनाएँ हैं। कर्तव्य-विधान पर भी कुछ अर्ध-दार्शनिक (कविता पूर्णतया दार्शनिक हो भी नहीं सकती) विवेचनाएँ हैं। युद्ध के संबंध में नीचे का छंद देखिए—

जो शिव शंकर कहलाते हैं,
कार्य उन्हीं का है संहार;

❀ ❀ ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वायु-यान - गोला - वर्षण से
जो होता है हाहाकार ;
देखे नगर-ध्वंसिनी तोपों
की वसुधा - तल में भरमार।
कैसे कह सकता है कोई,
दानव - युग था महा दुरंत ;
सच तो यह है, दुर्जनता का
होता नहीं दिखाता अंत।

प्रलय और स्वर्ग की कल्पनाओं में जान है, किंतु ये वर्णन 'प्रसाद'जी के प्रलय - वर्णन के आगे फीके पड़ जाते हैं। फिर भी इनसे नए कवियों को बहुत कुछ प्रेरणा मिल सकती है। वे अपने हृदय की उमंग से इन विषयों को और भी सरस और शक्तिशाली बना सकते हैं। यह हर्ष की बात है कि उपाध्यायजी इस उम्र में भी लिखते रहते हैं। यदि वह और भी लिखना चाहें, तो जीवन में उत्साह भरनेवाला कोई दार्शनिकता-पूर्ण काव्य लिखें।

गुलाबराय (एम्० ए०)

× × ×

निबंध-मंजरी—लेखक, श्रीमीनाराम रंगा एम्० ए० ; प्रकाशक, श्रीमक्खनलाल दम्माणी, बीकानेर ; मूल्य १)

प्रस्तुत पुस्तक श्रीमीनारामजी के ९ निबंधों का संग्रह है, जिनमें से अधिकतर हिंदी की भिन्न-भिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। निबंधों के विषय ही—मानव - जीवन और शक्ति - पूजन, शक्तिवाद और विकासवाद इत्यादि—लेखक के पांडित्य तथा विस्तृत अध्ययन के परिचायक हैं। भाषा की तत्समता तथा भावों की जटिलता के कारण निबंधों में कहीं-कहीं दुरूहता आ गई है। उद्धरणों का अत्यंत बाहुल्य यदि रचना का दोष माना जा सकता है, तो यह पुस्तक भी निर्दोष नहीं कही जा सकती। मेरी सम्मति में उद्धरण ज्यों - के - त्यों अँगरेज़ी अथवा संस्कृत में न देकर यदि केवल उनका सारांश ही हिंदी में दे दिया जाता, तो निबंधों की उपयोगिता और बढ़ जाती। फिर भी, आशा है, ऊँची कक्षा के विद्यार्थी, जिन्हें ध्यान में रखकर ये निबंध लिखे गए हैं, इनसे समुचित लाभ उठावेंगे।

पुस्तक की पृष्ठ-संख्या (८८) देखते हुए मूल्य १) भी कुछ अधिक ज्ञात होता है। यदि प्रकाशक महोदय इसमें कुछ कमी कर सकते, तो पुस्तक-प्रचार में अधिक सहायता मिलती।

श्रीधरसिंह (एम्० ए०)

× × ×

The Divine Name and Its Practice—लेखक, श्रीहनुमानप्रसाद पोद्दार; प्रकाशक, गीता-प्रेस, गोरखपुर ; पृष्ठ-संख्या ९६ ; मूल्य ≋)

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने वेद, उपनिषद्, दर्शन, गीता, पुराण, संत-साहित्य, भक्ति-साहित्य आदि का गंभीर अध्ययन करके प्रभु का नाम और उसके महत्त्व पर संक्षेप में प्रकाश डाला है। पुस्तक की छपाई-सफ़ाई, विषय, भाव, शैली आदि तो सराहनीय हैं ही, साथ ही इसकी उपयोगिता भी कुछ कम नहीं। जो बहुत-से भारतीय अपनी मातृभाषा संस्कृत और हिंदी से अनभिज्ञ हैं, उनके लिये अँगरेज़ी की यह पुस्तक विशेष लाभप्रद है। अँगरेज़ी जाननेवाले हिंदी-भाषा-भाषियों को भी यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

इस पुस्तक में लेखक ने उन आक्षेपों का भली भाँति खंडन किया है, जो ढोंगी तथा नास्तिक लोग नाम-स्मरण पर लगाते हैं। जो लोग नाम-स्मरण को व्यर्थ समझते हैं, वे या तो भगवान् पर विश्वास नहीं करते, या नाम-स्मरण करते समय फल-प्राप्ति का ध्यान रखते हैं, या नाम-स्मरण के साथ-साथ त्याज्य कर्म करते रहते हैं। जिन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् की सत्ता पर ही विश्वास नहीं, वे उनके नाम और रूप पर ही कैसे विश्वास कर सकते हैं। जो लोग फल के इच्छुक रहते हैं, उन्हें भी दुविधा लगी रहती है कि फल प्राप्त होगा या नहीं। इसलिये वे भी सच्चे हृदय से भगवान् का नाम नहीं लेते। ज़बान से भले ही राम-नाम रटें, पर हृदय दृढ़ नहीं रहता। जो लोग एक ओर तो पाप-कर्म करते हैं, और दूसरी ओर हरि-नाम रटते हैं, उन्हें कुछ फल नहीं मिलता अथवा उनकी आत्मिक उन्नति नहीं हो पाती। जिनका हृदय शुद्ध है, जिन्हें परमात्मा में विश्वास है, जो कण-कण में ब्रह्म की सत्ता का आभास पाते हैं, वे ही नाम-स्मरण के अधिकारी हैं। नाम और रूप ब्रह्म की उपाधियाँ हैं। निराकार ब्रह्म की उपासना करते समय ध्यान को किसी वस्तु विशेष पर जमाना पड़ता है, क्योंकि विना ध्येय के ध्यान हो ही नहीं सकता। ध्याता जिसका ध्यान करता है, उसके नाम-रूप की कल्पना करनी पड़ती है। इसलिये नाम-स्मरण ब्रह्म-प्राप्ति का साधन है।

नाम-स्मरण अत्यंत सरल तथा सर्व-साधारण के लिये बोधगम्य है। इसी से सभी संत, ऋषि, मुनि इत्यादि नाम-स्मरण या कीर्तन पर विशेष ध्यान देते हैं। कीर्तन कितने प्रकार का होता है, प्रत्येक से कितनी शांति मिलती है, इत्यादि बातें पुस्तक में बड़ी सुंदरता से सुलझाई गई हैं। प्रत्येक हिंदू को यह पुस्तक निश्चय ही पढ़नी चाहिए। विज्ञान के इस युग में लेखक ने वैज्ञानिक ढंग से नाम-स्मरण की व्याख्या करके हमारे मन में नाम-स्मरण की वैज्ञानिक उपयोगिता भर दी है। पुस्तक केवल पढ़ने ही योग्य नहीं, प्रत्युत इसमें लिखी बातें करने योग्य हैं। इतनी उपयोगी पुस्तक तो हिंदी में भी निकल जानी चाहिए।

सावित्री

× × ×

तत्त्वार्थ-सूत्र—विवेचनकर्ता, पंडित सुखलालजी संघवी शास्त्री, प्रधानाध्यापक जैनदर्शन, हिंदू-विश्व-विद्यालय, बनारस; प्रकाशक, श्रीआत्मानंद-जन्म-शताब्दी-स्मारक-ट्रस्ट-बोर्ड, बंबई; मूल्य १॥); पृष्ठ-संख्या ६६०; जिल्द पक्की।

तत्त्वार्थ-सूत्र को श्रीजुगमंदिरलाल जैन एम्० ए०, बैरिस्टर, हाईकोर्ट-जज, इंदौर ने जैन-बाइबिल की संज्ञा दी है। उन्होंने इसे अँगरेज़ी-अनुवाद, भाष्य, उमा स्वामी आचार्य का परिचय, सूत्रांतर, शब्दानुक्रमणिका या पारिभाषिक शब्द-कोष-सहित तैयार किया, और स्वर्गीय श्रीकुमार देवेंद्रप्रसाद ने इसे Sacred Books of the Jainas Series की द्वितीय पुस्तक के रूप में, सन् १९२० में, छपाकर प्रकाशित किया।

हमने तत्त्वार्थ-सूत्र की अनेक आवृत्तियाँ देखी हैं, और यह देखकर हमें हर्ष होता है कि सुंदरता, विद्वत्ता और उपयोगिता में प्रस्तुत आवृत्ति सबसे बढ़ी-चढ़ी और दाम में सस्ती है। जैन-सैद्धांतिक विषयों की और विशेषतः चारित्र-मीमांसा की जो गवेषणा-पूर्ण तुलना अन्य दर्शन-सिद्धांत से की गई है, वह और अभ्यास-विषयक सूचन इस आवृत्ति की अत्यंत उपयोगी विशेषताएँ हैं। पंडित सुखलालजी ने लिखा है—ज्ञान के मार्ग, जिज्ञासा और सत्यान्वेषण के क्षेत्र में दृष्टि-संकोच और सांप्रदायिक मोह करनेवाले या तो तुलना के विचार-मात्र से ही डरते हैं, या अपने पक्ष की प्रामाणिकता तथा सबलता के विषय में उन्हें शक है, या उनमें इतर पक्ष के सामने खड़े होने की शक्ति नहीं, या वे असत्य को छोड़कर सत्य को स्वीकार करने में हिचकिचाते हैं।

भूगोल, खगोल, स्वर्ग-पाताल-विद्या के तीसरे और चौथे अध्याय का शिक्षण देने के विषय में एक पक्ष उसे शिक्षण में रखने को मना करता है, जब कि दूसरा पक्ष उस शिक्षण के विना सर्वज्ञ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शन का अभ्यास अधूरा मानता है। पंडित सुखलालजी का कहना है, ये दोनों एकांत की अंतिम सीमा हैं। एक समय आर्य-दर्शनों में स्वर्ग-नरक, भूगोल-खगोल के विषय में कैसी-कैसी मान्यताएँ प्रचलित थीं, और इन मान्यताओं में जैन-दर्शन का क्या स्थान है?—इस ऐतिहासिक दृष्टि से यदि इन अध्यायों का अध्ययन किया जाय, तो उपयोगी होगा।

तत्त्वार्थ-सूत्र-रचयिता जैनाचार्य का नाम उमा स्वामी था या उमा स्वाति, वह दिगंबराम्नाय के थे या श्वेतांबरीय के, श्वेतांबर-सिद्धसेनीय 'भाष्य' उससे पहले की दिगंबरीय आचार्य पूज्यपाद स्वामी-विरचित सर्वार्थसिद्धि और भट्टाकलंकदेव-रचित राजवार्तिक को देखकर लिखा गया है, या स्वतंत्र रचना है?—इन प्रश्नों पर पंडित सुखलालजी ने बड़ी खोज और परिश्रम के साथ विवेचन किया है। हमारी समझ में ऐसे प्रश्नों पर अलग ही 'अनेकांत' या 'जैन-सत्य-प्रकाश'-जैसी सिद्धांत-विषयक मासिक पुस्तकों में चर्चा चलानी थी। इस पुस्तक में इन प्रश्नों का विवेचन उपयोगी नहीं जँचता। 'अनेकांत' में इस विषय पर चर्चा चल भी रही है।

पंडित सुखलालजी यह तो मानते ही हैं कि दिगंबर, श्वेतांबर, स्थानकवासी, सभी जैन-मात्र में श्रीतत्त्वार्थ-सूत्र की प्रमाणता बराबर है, और उसे जैन-सिद्धांत का प्रधानागम माना गया है। राजवार्तिक और श्लोकवार्तिक सांप्रदायिक होने पर भी अनेक दृष्टियों से भारतीय दार्शनिक साहित्य में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने की योग्यता रखती हैं, और जो भाषा का प्रसाद, रचना की विशदता तथा अर्थ का पृथक्करण सर्वार्थसिद्धि और राजवार्तिक में है, वह सिद्धसेनीय वृत्ति में नहीं। ३५७ सूत्रों में से केवल ३ सूत्रों में आम्नाय-भेद हैं, तत्त्वज्ञान के मौलिक विषयों पर कुछ भी भेद नहीं, और जो कुछ थोड़ा-बहुत भेद है भी, वह बिलकुल साधारण-जैसी बातों में, और वह भी ऐसा नहीं, जिसमें समन्वय को अवकाश ही न हो, अथवा पूर्व-पश्चिम-जितना अंतर हो।

श्रीतत्त्वार्थ-सूत्र की प्रस्तुत आवृत्ति प्रत्येक जैन को नियमित रूप से, स्वाध्याय-धर्म समझकर, पढ़नी चाहिए, और अन्य धर्म-जिज्ञासुओं को भी जैन-सिद्धांत की जानकारी प्राप्त करने के वास्ते यह पुस्तक अत्यंत सरल, संक्षिप्त, विशद और प्रामाणिक है।

अजितप्रसाद
(एम्० ए०, एल्-एल्० बी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'प्रेम और जीवन' (सामाजिक साहित्य)—लेखक, श्रीदेवकीनंदन बंसल; मूल्य १।)

(२) 'मौत के सुरंग की कहानी' (कहानी)—लेखक, श्रीरामनरेश त्रिपाठी; मूल्य ।=)

(३) 'दिमाग़ी ऐयाशी' (प्रहसन)—लेखक, श्रीरामनरेश त्रिपाठी; मूल्य ।।)

(४) 'अंतःपुर का छिद्र' (नाटक)—लेखक, पं० गोविंदवल्लभ पंत; संपादक, श्रीदुलारेलाल ; मूल्य ।=), सजिल्द ।।।=)

(५) 'बिहारी-सुधा' (बिहारी के सर्वश्रेष्ठ दोहों का संग्रह)—संग्रहकर्ता तथा संपादक, श्रीमिश्रबंधु; मूल्य ।=), सजिल्द ।।।)

(६) 'आरती के दीप' (जीवन-चरित)—लेखक, श्रीमोहनलाल महतो; मूल्य १।)

(७) 'भारतीय शासन-व्यवस्था' (राजनीतिक)—लेखक, श्रीकांत ठाकुर विद्यालंकार; मूल्य १।।।)

(८) 'हवाई युद्ध' (युद्ध)—लेखक, डॉक्टर सत्यनारायण पी-एच्० डी०; मूल्य ।।)

(९) 'टैंक-युद्ध' (युद्ध)—लेखक, डॉक्टर सत्यनारायण पी-एच्० डी०; मूल्य ।।)

(१०) 'हवाई हमला' (युद्ध)—लेखक, डॉक्टर सत्यनारायण पी-एच्० डी०; मूल्य ≡)

(११) 'पड़ोसी' (कहानी-संग्रह)—लेखक, श्रीयुत श्रीनाथसिंह; मूल्य १।=)

(१२) 'चिता की चिनगारियाँ' (कहानी)—लेखक, कुँवर मोहनसिंह सेंगर; मूल्य १)

(१३) 'मानव' (काव्य)—लेखक, श्रीभगवतीचरण वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी०; मूल्य १।।)

(१४) 'सेठ गोविंददास' (जीवनी)—लेखिका, श्रीरत्नकुमारीदेवी; मूल्य १।)

(१५) 'दीर्घायु और दीर्घजीवियों के अनुभव' (स्वास्थ्य)—लेखक, श्रीविनयमोहन वर्मा; मूल्य ।।।)

(१६) 'सफ़ाचट' (कहानियाँ)—लेखक, श्रीबैजनाथ केडिया ; मूल्य ।)

(१७) 'हिंदी के सामाजिक उपन्यास' (आलोचना)—लेखक, श्रीताराशंकर पाठक ; मूल्य १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

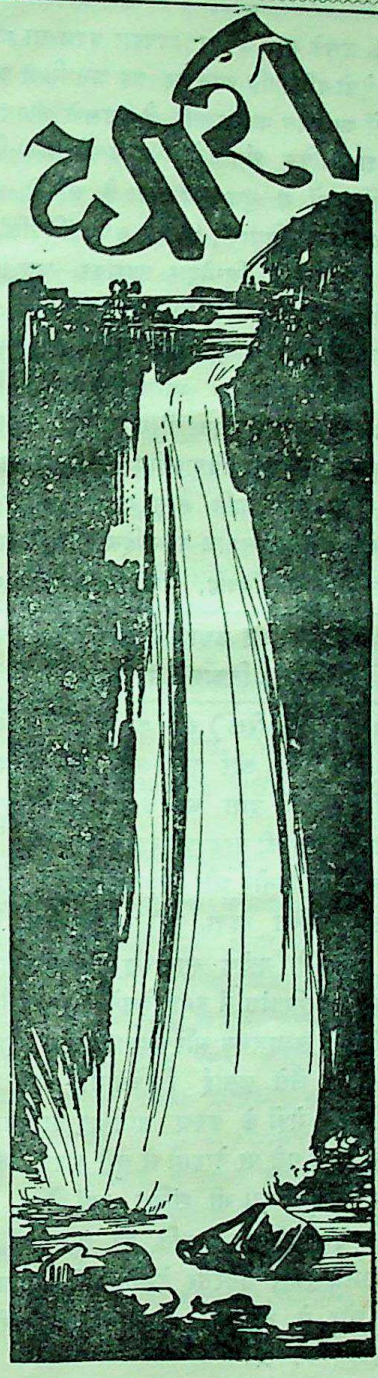

१. देश की नारी-शक्ति

बहुत-सी बातों में हम लोग भी विचित्र हैं, और हमारी व्यावहारिक नीति, रीति-रिवाज तथा उनसे उत्पन्न होनेवाली व्याधियाँ भी विचित्र हैं।

हम प्रतिदिन अख़बारों में पढ़ते हैं कि अमुक हिंदू-कन्या ने आत्महत्या कर ली—फाँसी लगाकर, कुएँ में डूबकर अथवा कपड़ों में आग लगाकर; क्योंकि उसका पिता उसके विवाह के लिये समुचित दहेज़ एकत्र करने में असमर्थ था, और इसी कारण उसका ब्याह होना असंभव हो रहा था। हमारे समाज की प्रायः प्रत्येक जाति में दहेज़ की समस्या प्रायः किसी-न-किसी रूप में मौजूद अवश्य है, और उसका घातक एवं विनाशकारी परिणाम आएदिन हमारी आँखों के सामने आता रहता है। भारत का कोई भी प्रांत इस संक्रामक व्याधि से मुक्त नहीं। नीची जातियों की अपेक्षा ऊँची जातियों में यह प्रथा अधिक व्यापक है। क्या हम अपनी नारी-जाति के प्रति न्याय कर रहे हैं? यह प्रश्न पहले भी समाज-सुधारकों और प्लेटफ़ार्म पर खड़े होकर लंबी-चौड़ी वक्तृता देनेवालों के मुँह से सुना गया है, पत्रों में आंदोलन के रूप में भी आ चुका है। सभा-सोसाइटियों एवं महिला-समाज के प्रस्तावों में भी इसकी चर्चा हो चुकी है, परंतु इसके उत्तर में मौखिक सहानुभूति, ज़बानी वायदा तथा भविष्य में इसका प्रतिकार करने की चेष्टा का वचन-मात्र हमारे समाज से—पुरुष-समाज से—बराबर मिलता रहा है। परंतु यथार्थता क्या है, इसे हम प्रतिदिन अपनी आँखों देखते तथा कानों सुनते हैं। नव-युवतियों का बलिदान—दहेज़ की चिता पर उनका भस्म होना—क्या कम हो सका है?

ऐसी घटनाएँ किसी भी सभ्य देश में—इँगलैंड,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ्रांस, जर्मनी, इटली या अमेरिका, यहाँ तक कि आफ्रिका के न्यूगिनी-जैसे जंगली प्रदेश में भी—सुनी गई हैं कभी ? यह कलंक अकेले भारत का ही कलंक है, जिसकी विनाशकारी कालिमा एक युग से हमारे हिंदू-समाज को पतन की ओर बरबस खींचे लिए जा रही है।

परिस्थिति को ज़रा ध्यान से देखिए—ऐसे कारणों और प्रतिकूल वातावरण की उत्पत्ति का रहस्य क्या है ? हमारे समाज की भावना—उसे सिद्धांत कहना भी ठीक ही होगा—अधिकांश यही रहती है कि बहुत-से-बहुत बीस वर्ष की आयु होने के पूर्व ही लड़की का व्याह कर डाला जाय। यदि ऐसा नहीं हुआ, तो लड़की की बदनामी के साथ ही पूरे कुटुंब की बदनामी है, और पिता की मुक्ति होना असंभव। वर की तलाश करते, उसके साथ उनका व्यवहार बदल-सा जाता है, ऐसी परिस्थिति आने पर वह अभागिनी अपने प्राणों का अंत कर डालती है। उसके जीवन का यह असामयिक अंत उसे तथा उसके माता-पिता को चिंताओं से मुक्त कर देता है, और वे लोग 'विधाता के विधान', 'होनी' तथा 'नियति' को इस दुर्घटना का ज़िम्मेदार ठहराकर, कुछ दिनों रो-पीटकर शांति से बैठ जाते हैं। एक प्राणी का अभाव क्या ऐसा तुच्छ, ऐसा वांछनीय, ऐसा स्वल्प है ? और हमारा देश भारतवर्ष—हमारा हिंदू-समाज—क्या इसे अपना गौरव समझता है ?

दूसरा पहलू भी विचारणीय है—हमारे समाज में महिलाओं के प्रति कैसा व्यवहार होता है। सबसे पहले हिंदू-समाज ने महिलाओं की प्रगति के सारे मार्ग (विवाह, संतानोत्पत्ति और घरेलू

रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र—अनेकानेक विषयों के उच्च कक्षावाले लेख, जो विशेषज्ञों द्वारा लिखे गए हैं, द्रष्टव्य हैं। हम संपादकद्वय को ऐसा बढ़िया विशेषांक निकालने पर बधाई देते हैं !

पूरी सरगर्मी के साथ की जाती है, परंतु पढ़े-लिखे लड़के और उनके अभिभावक जब दहेज़ का प्रश्न सामने लाते हैं, तब लड़कीवाले की दशा बलिदान के पशु-जैसी हो जाती है। अंत में लड़कीवाले को अपने दुर्भाग्य और अपनी संतान को ही कोसते हुए निराश लौटना पड़ता है, क्योंकि पैसे की समस्या ऐसी टेढ़ी है कि इने-गिने लोगों को छोड़कर मध्यम या निम्न श्रेणी के नागरिकों को आजदिन अपना ही पेट पालना कठिन हो रहा है।

और फिर अभागिनी लड़की—बेचारी अपने अभिभावकों की बातें सुनकर या उनकी मुखाकृति से उनके हार्दिक भावों को पहचान लेती है, तब अपने को इस आपत्ति एवं चिंता का मूल-कारण जानकर व्यग्र हो उठती है, और जब उसकी व्यग्रता चरम सीमा को पहुँच जाती है, कुटुंब के लोग उसे भार-रूप समझकर उससे ठीक से बात तक नहीं दासता के अतिरिक्त) बंद कर रक्खे हैं। विवाह के बाद ननँद और सास-ससुर का दुर्व्यवहार, कभी-कभी पति द्वारा अवहेलना और तिरस्कार, दिन-रात बैल की तरह जुते रहकर गृहस्थी का कार्य करना, मनोविनोद और दिलबहलाव के साधनों से सदा वंचित रहना, यही महिलाओं के हिस्से में आता है। प्रत्येक साधारण हिंदू-गृहस्थी का यही रूप अधिकांश में हमारे देखने में आता है।

कितनी लज्जाजनक और बदनामी का उदाहरण है यह ! जैसे क़साई चिचियाती-रोती बकरियों और भेड़ों के करुण आर्तनाद पर ध्यान न देकर उनके गले पर बेरहमी से छुरी चला देता है, और मन में ज़रा भी शंकित नहीं होता, उसी भाँति हम भी नारी-जाति की यातनाएँ और दुख-भरी पुकारें निरंतर देखते-सुनते रहने पर भी उस ओर से उदासीन और निश्चिंत रहते हैं !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी नारियाँ भले ही अपना बलिदान करती रहें, भले ही समाज की निरंकुश चक्की में पीस डाली जायँ, भले ही उनका अस्तित्व मिट जाय, मगर हमारे कानों पर जूँ नहीं रेंगती !

भारतवर्ष ने महिलाओं के प्रति इस दुर्व्यवहार का परिणाम एक भयंकर अभिशाप के रूप में भुगता है, और भुगत रहा है, क्योंकि जो समाज समाज की जननी—नारी—के विनाश को नहीं देखता, वह मानो अपने ही विनाश को नहीं देखता। बेचारी अबला, असहाय, गृहस्थी के भार से दबी हुई, पीड़ित और अवहेलित नारी, जो अपनी दुःख-गाथा प्रकट करने का साहस भी नहीं कर सकती, वैसी ही निर्बल, कायर, उत्साह-हीन, क्षीण-मस्तिष्क, क्षीण-हृदय और निकम्मी संतान को जन्म देती है, जो राष्ट्र, देश या समाज के लिये कलंक-रूप बनकर केवल 'गुलाम' कहलाने का गौरव प्राप्त कर सके।

इस युग के बड़े-बड़े ख्यातनामा वैज्ञानिकों और विद्वानों का निर्णय है कि समाज में महिलाओं का स्थान जितना ही ऊँचा होगा, उतना ही वह समाज उन्नतिशील समझा जायगा। पाश्चात्य वैज्ञानिकों और विद्वानों के इस कथन को भी न मानकर यदि हम केवल अपने प्राचीन ग्रंथों को ही सत्य मानकर उनका अवलोकन करें, तो हमें ज्ञात होगा कि समाज की गालियाँ खानेवाले हमारे मनु महाराज ने अपने न्याय-शास्त्र में क्या लिखा है। यह सत्य है कि मनु के कथन को लोगों ने इतना लीप-पोत और बढ़ा-घटाकर दूषित कर दिया है कि बहुत-सी बातें जो बेचारे मनु-जैसे आचार्य ने स्वप्न में भी न सोची होंगी, वे भी उनके नाम से प्रचलित हैं। फिर भी उनकी मनुस्मृति का सार-रूप एक ही श्लोक पर्याप्त है, जिसमें उन्होंने कहा है—"जहाँ नारियों का आदर और सम्मान होता है, वहीं देवताओं का निवास रहता है, तथा इसके विपरीत जहाँ स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार होता है, वहाँ देवताओं का सदा कोप रहता है।" जिस महान् आत्मा के ऐसे उद्गार थे, उसने कभी स्त्रियों को परतंत्रता और रूढ़ियों के बंधन में जकड़कर बेबसी से रखने का उपदेश कदापि नहीं दिया, और जो लोग उसके कथन को इसके प्रतिकूल रूप में पेश करते हैं, उन्हें यह नहीं मालूम कि मनु के बाद भी उनके शास्त्र को अन्य लोगों ने काट-छाँटकर और कहीं-कहीं बढ़ा-घटाकर अपनी अनुकूलता और महत्त्व की रक्षा के लिये मनु के नाम से बहुत कुछ अन्याय कर डाला है। जन-साधारण को भ्रांति में डालनेवाले ऐसे एक ही विषय के अनुकूल और प्रतिकूल कथन हमारे प्राचीन आचार्यों और विद्वानों की भूल कदापि नहीं माने जा सकते। स्वार्थ-वश किसी ने बाद में यदि किसी महत्त्व-पूर्ण कृति को बढ़ाया-घटाया हो, तो उसका अपवाद ग्रंथकर्ता के सिर मढ़ने के पहले हमें अपनी बुद्धि से, तर्क से एवं विवेचना-शक्ति से काम लेना चाहिए।

यदि हम एक सुसंगठित राष्ट्र के रूप में जीवित रहना चाहते हैं, यदि हमें अपना अस्तित्व संसार में क़ायम रखना है, तो हमें वर्तमान प्रगतिशील विधानों को समझकर उनका अनुकरण करना ही

पं० सोहनलाल द्विवेदी एम्० ए०, एल्-एल्० बी०—महायुद्ध के समय, जब कि काग़ज़ की महँगी के कारण पत्र चलाना कठिन हो गया है, इतना बृहद् विशेषांक निकालना आपका ही दम है। सभी पाठ्य-सामग्री सुपाठ्य, सुरुचि-पूर्ण एवं सुसंपादित है। भरती एक भी नहीं। सभी लेख सचित्र हैं। इस स्टैंडर्ड विशेषांक के लिये मेरी बधाई स्वीकार कीजिए !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा। यदि हमारे सामने एक दृढ़, संगठित, उन्नतिशील और क्रियात्मक राष्ट्र-निर्माण का भविष्य है, तो हमें नारी-जाति के प्रति अपना सामाजिक व्यवहार अवश्य बदलना पड़ेगा।

कुटुंब में कन्या का जन्म एक अभिशाप न मानकर उसे एक वरदान के रूप में सहर्ष स्वीकार करते हुए हमें गौरव करना होगा। कन्या को शुरू से ही ऐसी शिक्षा देनी होगी, जिससे वह कुटुंब के लिये एक असुविधा-जनक भार-रूप न बनकर, शीघ्र-से-शीघ्र ब्याह करके छुटकारा पाने की वस्तु न मानी जाकर एक सजीव शक्ति बन सके—नवराष्ट्र की जननी बन सके। उसे शिक्षित बनाकर विवाह - बंधन में बाँधा जाय, यदि उसकी इच्छा के अनुकूल हो, तो उसे स्वतंत्र जीवन - यापन में समर्थ बनाने योग्य शिक्षा दी जाय—कला-कौशल, शिल्प आदि रुचि के अनुकूल सभी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने का अवसर दिया जाय। पैसे का अभाव बतलाकर उसे उसकी उन्नति के मार्ग से खींच लेने का प्रयास न किया जाय।

विवाहिता या अविवाहिता, सभी स्त्रियों के लिये प्रगतिशील होना आवश्यक है, और समाज को इसमें बाधा नहीं डालनी चाहिए। हाँ, आंशिक नियंत्रण रखते हुए उनकी शिक्षा और ज्ञान की साधना पूर्ण करने का प्रयत्न करना चाहिए, जिसके द्वारा उनका जीवन स्वतंत्रता और उत्साह की भावनाओं से सदैव जाग्रत् रहे। और फिर, यह मानी हुई बात है कि इस नए युग का स्त्री-आंदोलन शीघ्र ही ऐसा सुसंगठित और व्यापक रूप धारण कर लेगा, जिसके एक ही प्रवाह में सदियों की हानिकर रूढ़ियाँ तथा समाज के अपवाद-रूप, विनाशकारी रीति - रिवाज एकबारगी नष्ट हो जायँगे।

नारी-जाति को ही नहीं, वरन् परिणामतः हिंदू-समाज को विनाश से बचाने का यही एकमात्र उपाय है, जिसका अवलंबन करने से हमारे देश की अगणित निरपराध लड़कियाँ असामयिक मृत्यु और आत्महत्या-जैसे जघन्य पाप से बचाई जा सकती हैं। स्वतंत्रता की पुकार उठानेवाली संस्थाओं को देश की स्वतंत्रता का कार्य पीछे रखकर सबसे पहले समाज की जननी, राष्ट्र की माता, नारी को स्वतंत्र बनाना होगा, तब उन्हें अपने प्रयत्न में सफलता मिल सकेगी, अन्यथा नहीं।

× × ×

पं० गिरिधर शर्मा नवरत्न—विशेषांक आया बड़ा सुंदर है! चुने हुए लेखकों के चुने हुए लेख और कविताएँ हैं। 'सुधा' की यह विशेषता है। सौ० सावित्रीदेवी के ब्रॉडकास्ट किए हुए भाषण मैंने बड़ी उत्सुकता के साथ सुने हैं। इनके लिये उन्हें आप मेरी ओर से बधाई दे दीजिए! यदि ऐसी ही सुंदर भाषा का प्रयोग रेडियो पर किया जाय, तो हिंदी-प्रचार में बड़ी सुगमता पड़े।

२. 'रत्नाकर'जी और उनकी कविता

सन् १९२२ की बात है। महीना ठीक याद नहीं। शरद्-ऋतु के दिन थे। काम बहुत ज़्यादा था, और हम अपनी मेज़ पर बैठे 'माधुरी' के प्रूफ़ देख रहे थे। एक भारी-भरकम सज्जन ने कमरे में प्रवेश किया। छोटी बाढ़ की टोपी, चुस्त पैजामा, उस पर शू, लखनऊ-कट की शेरवानी, लंबा-चौड़ा शरीर, तेज-भरी आँखें और कुछ संदेश-सा देते हुए, संपुट ओष्ठ देखते हुए एक संभ्रांत तथा असाधारण व्यक्ति मालूम हो रहे थे। आदर-पूर्वक हमने बैठने को कहा। जब परिचय पूछा, तो मालूम हुआ, बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर' हैं।

'रत्नाकर'जी के शरीर से ही हम अपरिचित थे, नाम और काम से नहीं। निश्चय-पूर्वक कहा जा सकता है कि आधुनिक युग में 'रत्नाकर'जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्रजभाषा की प्राचीन शैली के प्रतिनिधि और अप्रतिम कवि थे। उन्हीं सुकवि और सहृदय पुरुष को सामने देखकर हमने जितना हो सका, शिष्टाचार और आदर प्रकट किया। किंतु देखा, वह कुशल कवि ही नहीं, कुछ और भी हैं। कुछ ही मिनट की मुलाक़ात में हमें ऐसा मालूम पड़ा कि हम लोग बहुत पुराने दोस्त हैं, और यह हमारी पहली मुलाक़ात नहीं। जो आदमी देखने में राजदरबारी - जैसा गंभीर मालूम हो, वह व्यवहार में ऐसा ज़िंदादिल निकलेगा, इसकी बहुत कम कल्पना की जा सकती है। कुछ ही देर में उनकी बात-चीत में ऐसा मज़ा आया कि ज़रूरी काम, ज़रूरी डाक तथा सारे ज़रूरी प्रोग्राम हम भूल गए, साथ ही शिष्टाचार-प्रदर्शन भी। हम लोग उसी पहली भेंट में सुपरिचित और विश्वस्त मित्र बन गए। इसके बाद तो बार-बार भेंट हुई। प्रत्येक भेंट में हमारा प्रेम और मित्रता बढ़ती गई। जब-जब वह कवि-कुटीर में पधारते, आनंद और उल्लास का स्रोत उमड़ आता। उनमें बहुत गुण थे। सब गुण बहुत कम लोगों में होते हैं। वह जितने ज़िम्मेदार व्यक्ति थे, उतने ही मसख़रे भी।

स्वर्गीय कविवर बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर' बी० ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुदर्शी थे। जिस विषय की बात कीजिए, उसी में उन्हें पारंगत पाइए। स्वभाव बहुत मधुर था। याददाश्त बहुत तेज़ थी। एक बार कुश्ती और कसरत की बातें चल रही थीं, ऐसे-ऐसे दाँव-पेंच बयान करने शुरू किए, मानो बहुत बड़े पहलवान हों। देखने में ४५ साल के मालूम होते थे, और बातचीत नौजवानों के ढंग पर करते थे, लेकिन उम्र उस समय ५६ साल की थी।

एक बार ऐसा हुआ कि जब हम लोग कविता के संबंध में इधर-उधर की बातें कर रहे थे—नए और पुराने कवियों की तुलनात्मक आलोचना कर रहे थे (यह उन दिनों की बात है, जबकि पं० पद्मसिंह शर्मा की आलोचना का ढंग हिंदी-संसार में एक चर्चा का विषय बना हुआ था)—हिंदी, अरबी, फ़ारसी, उर्दू और संस्कृत की कविताओं का आपस में कहाँ-कहाँ मिलान है, इस पर गंभीर विवेचना चल रही थी, और उनका असाधारण ज्ञान देखकर उनके प्रति आदर का भाव बढ़ रहा था, तब हमारे पूज्य पिताजी कमरे में आए। 'रत्नाकर'जी ने देखा, तो उठकर खड़े हो गए। जब इसका कारण पूछा, तो कहा—"दोस्ती हमारी-आपकी है, और इसलिये आपके पिता मेरे लिये भी पिता-समान हैं।" वह ऐसे ही शिष्टाचार के

माताओ और भावी माताओ !!

सामयिक चिकित्सा कराने में मत झिझकिए और न चिरकालीन वेदनाएँ सहन कीजिए। यह मत भूलिए कि आपके बच्चों—आपके देश की भावी आशाओं—का स्वास्थ्य आपके गर्भाशय-संबंधी स्वास्थ्य को पूर्ण रूप से सुरक्षित रखने पर ही अवलंबित है।

सुप्रसिद्ध गर्भाशय-संबंधी बल-वर्द्धक और अचूक टॉनिक

यूटेरोन

(बी० सी० पी० डब्ल्यू० मार्का विब्रो-अशोक)

आपके सब कष्टों और दुर्बलताओं को दूर करेगा। यह मासिक धर्म के कष्टों और व्यतिक्रमों, रक्त के पुराने जमाव, आमाशय व गर्भाशय में सूजन व जलन तथा स्त्रियों के अन्य सब विशेष रोगों के लिये अत्यंत लाभदायक है।

अनुभवी और योग्य डॉक्टरों ने इसको प्रयोग करने की सलाह दी है।

वेंगल केमिकल ऐंड फ़र्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड

कलकत्ता :: बंबई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्यस्त थे, यद्यपि अवस्था में वह हमारे पिताजी से १३ साल बड़े थे।

दुनियादारी के मामले में 'रत्नाकर'जी की ख़ूब ठाट से बीती। यह दिल्ली के रहनेवाले अग्रवाल वैश्य थे। इनके पुरखे पानीपत-ज़िले में किसी गाँव के रहनेवाले थे। पानीपत की दूसरी लड़ाई के बाद दिल्ली चले आए, और बादशाह अकबर के दरबार में अपनी प्रतिभा और योग्यता के बल पर उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो गए। जब मुग़ल बादशाहत ख़त्म हुई, तो काशी चले आए, और वहीं बस गए। काशी में ही 'रत्नाकर'जी का जन्म हुआ। इनके पिता बाबू पुरुषोत्तमदास फ़ारसी के बड़े विद्वान् और उर्दू के अच्छे कवि थे। हिंदी-कविता पर भी उनका प्रेम था। अच्छे-अच्छे कवियों का उनके मकान पर जमघट बना रहता था। उस ज़माने के बड़े-बड़े कवि उनके यहाँ आकर ठहरते थे। भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र उनके रिश्तेदार थे, और मित्र भी, इसलिये उनका उनके यहाँ आना-जाना अक्सर हुआ करता था। 'रत्नाकर'जी अपने बचपन में कवियों और विद्वानों की इसी मंडली में खेलते, बैठते और कभी-कभी कुछ बोल भी उठते थे। इनकी कृतियाँ देखकर एक बार भारतेंदुजी ने कहा—"ईश्वर इस लड़के की उम्र लंबी करे, यह कभी अच्छा कवि होगा।" उनकी यह भविष्य-वाणी सोलहो आने ठीक निकली, और वह अपने समय के श्रेष्ठ कवि होकर जिए। बी० ए० में आपकी दूसरी भाषा फ़ारसी थी। सन् १९०० के लगभग जब आप आवागढ़-राज्य में एक ज़िम्मेदार अफ़सर नियुक्त होकर गए, तो वहाँ ऐसी योग्यता प्रकट की कि रियासत में उनकी धाक जम गई। परंतु दुर्भाग्य से स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण वहाँ से लौट आए। इसी समय हिंदी के महान् प्रेमी अयोध्या के महाराज स्वर्गीय महामहोपाध्याय सर प्रतापनारायणसिंह बहादुर के० सी० आई० ई० की दृष्टि आप पर पड़ी। उन्होंने आपको बुलाकर अपना निजू मंत्री बना लिया। यह सन् १९०२ की बात है। थोड़े ही समय में आप अपनी योग्यता और परिश्रम के कारण स्टेट के प्रधान मंत्री हो गए। और, जब दुर्भाग्य से महाराज का असमय में ही स्वर्ग-वास हो गया, तो श्रीमती महारानी साहबा ने आपको अपना निजू मंत्री नियुक्त कर लिया। तब से आप अपने जीवन के अंत तक इसी पद पर रहे। राज-काज की इस खटपट में इस आनंदी साहित्यिक को बड़े ऊँच-नीच देखने पड़े, और राजनीति की बड़ी-बड़ी टक्करें झेलनी पड़ीं। लेकिन इन तमाम झंझटों के रहते हुए भी सरस्वती के इस वर पुत्र ने सरस्वती की आराधना जारी रक्खी, और भारती-भाषा (हिंदी) को बहुत कुछ दिया।

'सरस्वती'-जैसी हिंदी की प्रख्यात पत्रिका के प्रारंभिक संपादक-मंडल में 'रत्नाकर'जी का एक विशेष स्थान था। उस समय तक द्विवेदीजी प्रकट नहीं हुए थे, और न हिंदी-लेखकों का वह समूह, जिनकी रचनाओं से आज हिंदी का भांडार भरा पड़ा है। काव्य-निर्माण के संबंध में हमारी उनकी बराबर लाग-डाट लगी रहती थी। उनके कई प्रसिद्ध ग्रंथ—जैसे 'उद्धव-शतक', 'गंगावतरण' और 'बिहारी-रत्नाकर'—हमने तक़ाज़े-पर-तक़ाज़े करके लिखवाए। जैसे साधारणतया कवि आलसी हुआ करते हैं, वैसे ही 'रत्नाकर'जी भी थे। कभी-कभी तो झुँझला भी पड़ते थे, खरी-खोटी सुनाते थे, लेकिन अंत में झुक जाते थे। एक बार तुलसीदास के संबंध में 'सुधा' के 'तुलसी-जयंती-अंक' के लिये हमने कविता माँगी। जैसी उनकी आदत थी, उसी के अनुसार सन्नाटा खींच गए। लेकिन जब यहाँ से तक़ाज़े-पर-तक़ाज़े गए, तब निम्न-लिखित पत्र और कविता भेजी—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"प्रियवर,

आपके कृपा-पत्रों के मारे मौनावलंबन असंभव हो गया। अस्तु। जो इस समय हो सका, वह अर्पित करके विशेष के लिये क्षमा-प्रार्थी हूँ। लीजिए—

साधन की सिद्धि, ऋद्धि सगुन अराधन की,
सुभग समृद्धि-वृद्धि- सुकृत-कमाई की;
कहै 'रतनाकर' सुजस-कल - कामधेनु,
ललित लुनाई राम-रस-रुचिराई की।
सबदनि की बारी, चित्रसारी भूरि भायनि की,
सरवस सार सारदा की निपुनाई की;
दास तुलसी की कल कविता उदार चारु,
जीवन-अधार औ' सिंगार कविताई की।

भवदीय—

जगन्नाथदास"

जीवन के अंतिम दिनों में हमने उन पर कुछ वीर-रस भी लिखने के लिये बहुत ज़ोर डाला, और वीर-रस के जो छंद उन्होंने लिखे, वे भी ऊँची श्रेणी के हैं। पर खेद है, इस क्षेत्र में अधिक कुछ लिखने के लिये वह जीवित न रहे!

वह ग्रैजुएट थे, और एक बड़े राज्य के सब प्रकार के साधनों से संपन्न, तो भी उन्होंने अपना जीवन बहुत सादगी से बिताया। वह सनातन-धर्म के पक्के अनुयायी और अपनी सभ्यता के पूरे समर्थक थे। आपको अपने प्रसिद्ध होने की कोई परवा न थी, इसीलिये सन् १९२२ ई० तक सर्वसाधारण से प्रायः अज्ञात ही रहे। आपकी कविताएँ प्रभावशालिनी होती थीं, और पद्माकर की कविताओं की याद दिला देती थीं। ऐसी परिमार्जित भाषा लिखने में वर्तमान युग के बहुत कम कवि समर्थ हुए हैं। आपको प्राकृत का भी अच्छा ज्ञान था। शिला-लेख और प्राचीन शोध के संबंध में आपकी बड़ी रुचि थी। कानपुर में कांग्रेस के अवसर पर जब सबसे पहली बार अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन हुआ, तब आपने उसमें सभापति का आसन ग्रहण किया था। इसके बाद जब कलकत्ते में अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन हुआ, तब भी आपने उसके सभापति-पद को गौरवान्वित कर सुशोभित किया।

बिहारी की बहुज्ञता विख्यात है, परंतु 'रत्नाकर'-जी भी कुछ कम बहुज्ञ न थे। वैद्यक, रसायन-शास्त्र, मनोविज्ञान, वेदांत, तर्कशास्त्र, योग-दर्शन, विज्ञान, ज्योतिष आदि के सिद्धांतों का समावेश काव्य में करके आपने अपनी व्यापक प्रतिभा का परिचय दिया है। 'गंगावतरण', 'उद्धव-शतक' और 'हरिश्चंद्र' में इनके बहुत-से उदाहरण हैं। 'उद्धव-शतक' में कवि गोपियों के वियोग की गंभीरता दरसाने के लिये हमारे सामने वैद्यक से एक व्यापार प्रस्तुत करता है—

"रस के प्रयोगनि के सुखद सुजोगनि के
जेते उपचार चारु, मंजु सुखदाई हैं,
तिनके चलावन की चरचा चलावै कौन,
देत ना सुदर्सन हूँ, यौं सुधि सिराई हैं।
करत उपाय ना सुभाय लखि नारिनि कौ,
भाय क्यों अनारिनि कौ भरत कन्हाई हैं;
ह्याँ तौ विषमज्वर-विजोग की चढ़ाई, यह
पाती कौन रोग की पठावत दवाई हैं?"

यहाँ 'रस', 'सुजोगनि', 'उपचार', 'सुदर्सन', 'नारिनि', 'विषमज्वर', 'पाती' आदि श्लिष्ट शब्द हैं। जिसप्रकार विषम-ज्वर में सुदर्शन-जड़ी ही लाभ-प्रद होती है, साधारण पत्ती नहीं, उसी प्रकार गोपियों की विरह-वेदना निवारण करने के लिये श्रीकृष्ण के सुंदर दर्शन की अपेक्षा है, उनके पत्र की नहीं। अभिप्राय यह कि श्रीकृष्ण द्वारा प्रेषित पत्र से ही गोपियाँ संतुष्ट नहीं, प्रत्युत उनके दर्शन के लिये व्याकुल हैं। उसी व्याकुलता की गहराई दिखाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये कवि उसकी तुलना विषमज्वर से करता है।

'उद्धव-शतक' में एक स्थान पर गोपियाँ तार्किक ढंग से सांख्य और वेदांत का प्रतिपादन करती हैं—

"कान्ह-दूत कैधों ब्रह्म-दूत ह्वै पधारे आप,
धारे प्रन फेरन कौ मति ब्रजबारी की;
कहै 'रतनाकर' पै प्रीति-रीति जानत ना,
ठानत अनीति आनि नीति लै अनारी की।
मान्यौ हम, कान्ह-ब्रह्म एक ही, कह्यौ जो तुम,
तौहूँ हमैं भावति ना भावना अन्यारी की;
जैहै बनि-बिगरि न बारिधिता बारिधि की,
बूँदता बिलैहै बूँद बिवस बिचारी की।"

शांकर सिद्धांत में ब्रह्म और जीव एक दूसरे से अभिन्न हैं, परंतु व्यावहारिक रूप में जीव अपने को ब्रह्म से भिन्न मानता है, और भिन्न मानकर ही उपासना करता है। यदि वह भिन्न न माने, तो उपास्य और उपासक एक ही हो जायँ, और इस प्रकार उपासना का अंत ही हो जाय। गोपियाँ भी सिद्धांत-रूप से अपने को कृष्ण से अभिन्न मानकर व्यवहार-क्षेत्र में भिन्न ही मानती हैं। वे कहती हैं, समुद्र और उसकी बूँद एक ही वस्तु है, परंतु यदि बूँद को समुद्र का ही रूप मान लें, तो उसका अस्तित्व ही नष्ट हो जाय। इसी प्रकार अगर जीव को ब्रह्म मान लें, तो जीव-नाम की सत्ता का लोप हो जाय। यहाँ भिन्न-भिन्न वस्तुओं के व्यक्तित्व का बहुत सुंदर प्रदर्शन है।

इसी प्रकार विज्ञान द्वारा भावों की अति मनोहारी व्यंजना की गई है—

"टूक-टूक ह्वैहै मन-मुकुर हमारौ हाय,
चूकिहूँ कठोर बैन-पाहन चलावौ ना;
एक मनमोहन तौ बसिकै उजारयौ मोहिं,
हिय मैं अनेक मनमोहन बसावौ ना।"

गोपियाँ उद्धव से कहती हैं, हमारे मन-रूपी शीशे पर अपने वचन-रूपी प्रस्तर मत चलाओ। जिस प्रकार शीशे के टुकड़े हो जाने से उनमें अलग-अलग प्रतिबिंब पड़ने लगता है, उसी प्रकार मन के खंड-खंड हो जाने से प्रत्येक खंड पर श्रीकृष्ण की प्रतिच्छाया पड़ने लगेगी। श्रीकृष्ण की एक प्रतिच्छाया ने तो गोपियों की यह दशा कर दी है, तो अनेक प्रतिबिंब पता नहीं, क्या करें। अतएव गोपियाँ उद्धव के कठोर वचनों से अपने मन को छिन्न-भिन्न नहीं कराना चाहतीं। यहाँ एक वैज्ञानिक व्यापार द्वारा मनोवैज्ञानिक दशा का प्रत्यक्षीकरण है।

कहाँ तक कहें, 'रत्नाकर'जी की बहुज्ञता दरसाने के लिये अनेकों उदाहरण भरे पड़े हैं। इनको प्रत्येक रस, भाव, अलंकार, सात्त्विक, संचारी इत्यादि में पूर्ण दक्षता प्राप्त थी। 'उद्धव-शतक' में शृंगार-रस, 'गंगावतरण' में वीर, रौद्र और हास्य,

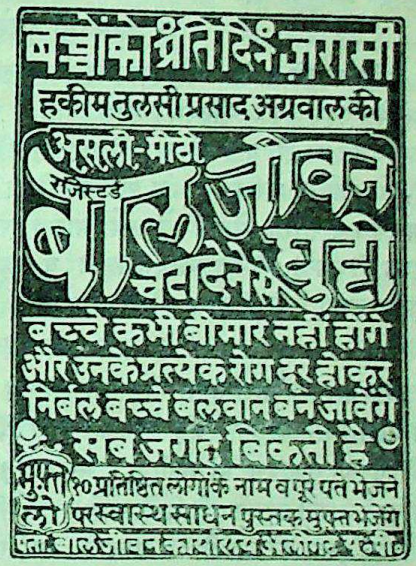

एजेंट—माताबदल पंसारी

अमीनाबाद, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हरिश्चंद्र' में भयानक, करुण और बीभत्स, द्रौपदी-चीर-हरण के प्रसंग में अद्भुत और भक्ति-भावना के संबंध में शांत-रस का प्रतिपादन अत्यंत स्वाभाविक रीति से किया गया है। समयाभाव के

दस हज़ार रुपए की घड़ियाँ इनाम में !

हमने नीचे लिखी तीन चमत्कारी दवाओं की मशहूरी के लिये अपने ग्राहकों को दस हज़ार रुपए की घड़ियाँ इनाम में मुफ़्त देने का फ़ैसला किया है। जल्दी कीजिए !

※ काला तेल ※

यह बार-बार लगानेवाला ख़िज़ाब नहीं, एक अद्भुत चमत्कारी तेल है, जो मामूली तेलों की तरह इस्तेमाल किया जाता है, और इसकी ख़ूबी यह है कि इसका व्यवहार करनेवाले दंग रह गए। इससे सफ़ेद बाल एकदम काले हो जाते हैं, और फिर हमेशा काले ही पैदा होते हैं। यह हमारे पूज्य स्वामीजी की एक अमूल्य भेंट है, जो दिमाग़ को भी हर तरह की ताक़त पहुँचाता है, आँखों की ज्योति को बढ़ाता है, और सर में ठंडक पहुँचाता है, बालों की यह ख़ूराक है। मूल्य फ़ी शीशी १॥), ३ शीशी ३॥।) और हरएक शीशी के साथ एक फ़ैंसी म्यूट रिस्टवाच मुफ़्त भेजी जाती है, जिसकी मज़बूती और ख़ूबसूरती की गारंटी १० साल है। गारंटी का इक़रारनामा घड़ी के साथ भेजा जाता है। डाक-ख़र्च अलग, ३ शीशी मँगाने से ख़र्च माफ़।

※ काले भी गोरे कर दिखाए ※

यदि आपके शरीर और मुख का रंग काला पड़ गया हो, तो इस दवा का व्यवहार कीजिए। इससे चेहरे की झाँइयाँ, काले दाग़, कील, फुंसियाँ, चेचक के दाग़ वग़ैरा मिटकर चमड़े का रंग फूल की तरह निखर आता है। हमारी यह 'पेरिस-ब्यूटी' एक आज़मूदा वस्तु है, जो शर्तिया शरीर का रंग पलटकर दिखा देती है। मूल्य फ़ी शीशी १॥), ३ शीशी ३॥।), ख़र्च अलग। ३ शीशी मँगाने से ख़र्च माफ़। हरएक शीशी के साथ एक फ़ैंसी म्यूट रिस्टवाच मुफ़्त दी जाती है, जिसकी मज़बूती व ख़ूबसूरती की गारंटी १० साल है। गारंटी का इक़रारनामा घड़ी के साथ भेजा जाता है।

※ बाल उम्र-भर नहीं उगते ※

यह बाज़ारी चीज़ नहीं, वैज्ञानिक ढंग से बनाई गई है। इसका व्यवहार करने से नरम-से-नरम स्थान के बाल जड़ से उखड़ जाते हैं, और फिर कभी पैदा नहीं होते। चमड़ी रेशम की तरह मुलायम हो जाती है। मूल्य १॥), ३ शीशी का ३॥।), ख़र्च अलग। ३ शीशी मँगाने से ख़र्च माफ़। हरएक शीशी के साथ एक फ़ैंसी म्यूट रिस्टवाच मुफ़्त दी जाती है, जिसकी मज़बूती और सुंदरता की गारंटी १० साल है। गारंटी का इक़रारनामा घड़ी के साथ भेजा जाता है।

नोट—इन दवाओं के नापसंद होने से दाम वापस दिया जाता है।

हिमालय मेडिकल स्टोर, पोस्टबॉक्स नं० १२ (S. M. L.), अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण इन प्रसंगों को उद्धृत करने में हम असमर्थ हैं। 'रत्नाकर'जी संचारी और अनुभावों की माला-सी गूँथ देते हैं—

"सुनि-सुनि ऊधव की अकह कहानी कान
कोऊ थहरानी, कोऊ थानहिं थिरानी हैं;
कहै 'रतनाकर' रिसानी, बररानी कोऊ,
कोऊ बिलखानी, बिकलानी, बिथकानी हैं।
कोऊ सेद-सानी, कोऊ भरि दृग पानी रहीं,
कोऊ घूमि-घूमि परीं भूमि मुरझानी हैं;
कोऊ स्याम-स्याम कै बहकि बिललानी, कोऊ
कोमल करेजौ थामि, सहमि सुखानी हैं।"

'रत्नाकर' पिष्ट-पेषित भावनाओं में भी नवीन शक्ति भर देते थे। सूरदासजी द्वारा रचित सूरसागर के अंतर्गत भ्रमरगीत के पश्चात् हिंदी-साहित्य में भ्रमरगीतों की बाढ़-सी आ गई थी। राम-भक्त श्रीतुलसीदासजी ने भी 'श्रीकृष्ण-गीतावली' में भ्रमर-गीत की रचना की है। 'रत्नाकर'जी ने भी इसी परंपरा से चले आते हुए प्रसंग को 'उद्धव-शतक' के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें उक्त प्रसंग इतने नवीन ढंग से वर्णित है कि पढ़ते समय हमारा जी बिलकुल नहीं ऊबता। इसका अनुमान भी नहीं होता कि यह किसी पुराने प्रसंग की अवतारणा है।

अस्तु। 'रत्नाकर'जी में कल्पना, अनुभूति और शैली, तीनो का सुंदर समन्वय है। आज 'रत्नाकर'-जी भौतिक रूप से हमारे सामने नहीं, किंतु अपनी अमर कृतियों द्वारा वह हमारी रग-रग में व्याप्त हैं। आज हम उनकी ७५वीं वर्ष-गाँठ मना रहे हैं। आज ही के दिन, काशी में, संवत् १९२३ में, इस महाकवि ने जन्म लिया था*।

× × ×

* लखनऊ-रेडियो-स्टेशन से विस्तृत।—सुधा-संपादक

३. स्पेन और योरपीय महायुद्ध

एक स्थानीय समाचार पत्र में श्रीयुत जेफ़री कॉक्स का एक महत्त्व-पूर्ण लेख प्रकाशित हुआ, जिसमें योरपीय महायुद्ध की प्रगति के विषय में अपने विचार प्रकट करते हुए जनरल फ़्रांको और स्पेन की नीति तथा उसके परिणाम का उल्लेख किया गया है। हम संक्षेप में उस लेख का आशय दे रहे हैं—

श्रीयुत कॉक्स का कथन है—"'धुरी राष्ट्रों' का सहयोग स्पेन के साथ हो जाने पर भी स्पेन का अपना महत्त्व कुछ भी नहीं। जर्मनी और इटली के बल पर उछलने-कूदने से ही स्पेन के तानाशाह फ़्रांको झूठी धमकियों से अपना प्रभाव जताना चाहते हैं। फ़्रांको पर यह अच्छी तरह प्रकट है कि युद्ध-घोषणा कर देने के बाद ब्रिटिश राष्ट्र के हाथ में एक ऐसा भयंकर शस्त्र आ जायगा, जो फ़्रांको के शासन को एक क्षण में उखाड़ फेंकेगा, और 'धुरी राष्ट्रों' के साथ उनके इस संगठन को नष्ट कर देगा। वह शस्त्र क्या है, और कैसा है, इसे समझने के लिये हमें स्पेन की वर्तमान परिस्थिति पर ग़ौर करना पड़ेगा। सच पूछा जाय, तो वह शस्त्र दस लाख शस्त्रों का संचालक है। और वे दस लाख शस्त्र हैं—दस लाख प्रजातंत्र-राष्ट्र के क़ैदी! वे क़ैदी आजदिन स्पेन के जेल-कैंपों में नाना प्रकार की विपत्तियाँ और यातनाएँ सहते हुए बग़ावत करने का अनुकूल अवसर ताक रहे हैं। उन क़ैदियों के पीछे है स्पेन के जन-समुदाय की असाधारण शक्ति, जिसे फ़्रांको ने इटली और जर्मनी से माँगे हुए सैनिकों की तलवारों के नीचे दबा रक्खा है। तीन वर्ष तक निरंतर लड़ने के बाद विदेशियों के आक्रमण से त्रस्त होकर दब जानेवाली वह महती शक्ति अभी मरी नहीं। वह आग भीतर-ही-भीतर सुलग रही है। फ़्रांको ने अपने शासन की नीव प्रजातंत्र के प्रतिशोध के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वालामुखी पर रक्खी है, जो किसी समय भी अपने भयंकर विस्फोट द्वारा उसे और उसके शासन को छिन्न-भिन्न कर सकती है। मार्च सन् १९३९ में अंत होनेवाले प्रजातंत्र-शासन की पुनः स्थापना का स्वप्न शीघ्र ही सत्य के रूप में परिणत हो सकता है। फ़ैसिज़्म की ज़ंजीर में स्पेन एक सबसे कमज़ोर कड़ी है, जो किसी समय भी टूट सकती है।"

श्रीयुत कॉक्स लिखते हैं—"नवंबर, १९३६ में एक रात को स्पेन-प्रजातंत्र के एक प्रमुख नेता से मेरी बातें हो रही थीं, और जिस स्थान पर उस समय मैं था, वह स्पेन की राजधानी मैड्रिड का टेलीफ़ोन-दफ़्तर था, जिसे गोला-बारी द्वारा नष्ट कर दिया गया था। उस नेता ने, टूटी-फूटी इमारत की ओर संकेत करते हुए कहा—'यही एक वस्तु है, जिसके सहारे हम प्रगतिशील बने हुए हैं। यही अनुभव, यही ज्ञान कि फ़्रांको द्वारा शासित स्पेन-राज्य सारे फ़ैसिस्ट-राज्यों में सदैव सबसे रद्दी और दुर्बल राज्य समझा जायगा, हमारी पराजय हो जाने पर भी हमें उत्साहित करता रहेगा। इसका मुख्य कारण यह है कि फ़्रांको द्वारा शासित स्पेन बाहरी विजय का परिणामात्मक रूप है, किसी आंतरिक आंदोलन का निर्णयात्मक रूप नहीं। इसीलिये स्पेन सदैव फ़ैसिस्ट - विरोधी आंदोलनों की जन्मभूमि बना रहेगा, यह मेरा विश्वास है।' उस नेता को यह ज्ञात था कि फ़्रांको के शासन में स्पेन 'धुरी राष्ट्रों' के हाथ का खिलौना बना रहेगा, और इसीलिये उसे ब्रिटिश-साम्राज्य का विरोध करने को बाध्य किया जा सकता है।

"अंत में वह दिन आ ही गया, परंतु साथ ही फ़्रांको की शक्ति-परीक्षा का अवसर भी उपस्थित है। यदि हम ध्यान से देखें कि ब्रिटिश राष्ट्र के हाथों में कितनी असाधारण क्षमता है, और उसे कितनी सुविधाएँ प्राप्त हैं, तो हमें पता चलेगा कि ऑस्टारियस की खाड़ी में किसी समय ब्रिटिश बेड़ा पहुँच सकता है, जो अत्यंत भयानक सिद्ध होगा। वायुयानों द्वारा पर्चे फेंककर नागरिकों को विद्रोह के लिये भड़काने में कुछ भी समय न लगेगा, स्पेन के कनॉरी तथा अन्य द्वीप-समूहों पर बड़ी सरलता से क़ब्ज़ा करके वहाँ प्रजातंत्र-राज्य की घोषणा कर देना कोई कठिन कार्य न होगा। परंतु यह तभी संभव है, जब स्पेन-प्रजातंत्र के क्रांतिवादी दल सामूहिक और संगठित रूप में विद्रोह कर दें। ब्रिटिश राष्ट्र प्रजातंत्र का समर्थक है, तथा रहेगा, और साथ ही उसे स्पेन की पिछली सरकार के प्रतिनिधि सोशलिस्ट, कम्युनिस्ट, अनार्किस्ट, लिबरल और रैडिकल आदि सभी समुदायों के सहयोग से कार्य करने की नीति पर भी विचार करना होगा। रंग-भेद, जाति-भेद, धर्म-भेद और राष्ट्र-भेद को दूर करके स्पेन की राष्ट्रीय शक्ति से सम्मिलित होना भी उसके लिये उस दशा में संभव हो जायगा। एक कारण यह भी है कि वर्तमान परिस्थिति में केवल प्रजातंत्र-स्थापना करने में सहयोग देने की घोषणा करके ही स्पेन को नवराष्ट्र-निर्माण की ओर अग्रसर किया जा सकता है, और कोई भी उपाय उतना प्रभावशाली नहीं होगा। विदेशियों की सहायता से अधिकार प्राप्त करनेवाला फ़्रांको स्पेन में अपना कोई अस्तित्व और प्रभाव नहीं रखता। आतंक और भय का साम्राज्य कदापि बहुत दिनों नहीं चल सकता। यदि कोई यह समझे कि स्पेन में ऐसे रूढ़िवादी पूँजीपति मिल जायँगे, जो आंतरिक क्रांति की योजना में सहयोग दे सकें, तथा ब्रिटिश राष्ट्र के समर्थन में फ़्रांको के विरुद्ध खड़े होकर उसे और उसकी सत्ता को स्पेन से निकाल फेंकें, तो ऐसा समझना बड़ी भारी भूल होगी। सैकड़ों पूँजीपतियों और प्रगतिशील नेताओं ने फ़्रांको के सैनिकों की गोलियों से अपने प्राण गँवाए हैं, और अपनी प्रजातंत्र की भक्ति का गीत गाते हुए...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश के लिये मर मिटे हैं। विद्रोही फ्रांको, इटली और जर्मनी की सहायता पर जीता हुआ, आज भी स्पेन पर अपना आतंक जमाए हुए है, भले ही उसे स्थिरता और स्थायित्व न मिले।

"यह निश्चित है कि ब्रिटिश राष्ट्र स्पेन के आगे सहयोग की भीख नहीं माँगेगा। उसके पास यही साधन पर्याप्त है कि जेलों में पड़े हुए असंख्य प्रजातंत्रवादी स्पेन के सैनिकों को, जो डनकिर्क के युद्ध में फ्रांस की सेनाओं के साथ लड़ते रहे हैं, एक बार पुनः विद्रोह के लिये प्रेरित कर दे। यह तभी हो सकेगा, जब ब्रिटिश राष्ट्र खुल्लमखुल्ला तैयार होकर उस क्रांति में सहयोग देना निश्चय कर ले। पिछले योरपीय महायुद्ध में ऐसा ही हुआ था। ब्रिटिश आंदोलन के फल-स्वरूप जर्मनी में गृह-युद्ध और विद्रोह छिड़ गया था, और उस आघात के कारण जर्मनी पर विजय प्राप्त करने में ब्रिटेन को कुछ भी समय नहीं लगा। फिर भी ये सब बातें अवसर और अनुकूल परिस्थिति आने पर हो सकेंगी। ब्रिटिश राष्ट्र की नीति की आलोचना करने का समय नहीं। उसकी सत्ता और महत्ता एवं शक्ति अजेय तथा अपरिमित है। फ्रांको ने यदि किसी प्रकार भी ब्रिटिश राष्ट्र का विरोध किया, तो निश्चय ही उसे मुँह की खानी पड़ेगी। फ्रांको का बार-बार यह कहना कि उसका देश युद्ध के लिये तैयार नहीं, एक भुलावा-मात्र है, जो इटली और जर्मनी के तानाशाहों के परामर्श का परिणाम है। ब्रिटिश राष्ट्र उससे पूर्णतः सतर्क है, और फ्रांको की गति-विधि का भले प्रकार निरीक्षण किया जा रहा है। विरोध में एक क़दम भी आगे बढ़ाने पर फ्रांको और उसकी सत्ता का क्या हाल होगा, इसे देखकर संभवतः कोई भी राष्ट्र उसके साथ सहानुभूति रखने का स्वप्न में भी ध्यान न लाएगा। हिटलर और मुसोलिनी, दोनो को चेतावनी देने के लिये फ्रांको एक ऐसा उदाहरण है, जो किसी समय भी ब्रिटिश राष्ट्र के आगे सिर नहीं उठा सकता।"

× × ×

४. बच्चों को रोने मत दो

गोद में खिलाने से बच्चे अधिक स्वस्थ और चैतन्य रहते हैं। 'पुराने ढंग की' माताएँ, जो अपने बच्चों को उठाकर गोद में ले लेती, खिलाती और अपने ही दूध पर उन्हें जीवित रखती हैं, वास्तव में उन बच्चों को स्वस्थ और चैतन्य बना सकती हैं, ऐसा एक विलायती पत्रकार का वक्तव्य है। माताओं की यह शिशु-पालन-प्रणाली बहुत ठीक और उपयोगी प्रमाणित हुई है। जो लोग इसके विरोध में अपनी सम्मति देते और कहते हैं कि माताओं को ऐसा न करना चाहिए, वास्तव में ग़लती करते हैं। शिशु-पालन के एक विशेषज्ञ का कहना है कि बच्चों को गोद में खिलाना उनके जीवन में नई स्फूर्ति का संचालन करना है।

शिशु को एक निर्भय आश्रय-स्थान और रक्षा की आवश्यकता होती है, और वह आश्रय उसे मा की गोद में ही मिलता है। उसकी अनुभूति उसे स्वस्थ और नीरोग बनाने में सहायक होती है, यदि उसकी माता प्रकृति के नियमों के अनुकूल रहकर, उसका पूरा-पूरा ध्यान रखकर लालन-पालन-कार्य को अपना परम धर्म समझती रहे। डॉक्टर कैरोलिन ज़ाकरी, जो 'प्रगतिशील शिक्षा-समिति' की प्रधान अध्यक्षा हैं, 'मिडिल-स्टेट्स-कॉन्फ्रेंस' के अवसर पर एक भाषण में इस विषय पर काफ़ी प्रकाश डाल चुकी हैं। न्यूयार्क शहर के एक शिशु-गृह का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा है कि शिशु-पालन के विशेषज्ञ विद्वानों ने अनुभव और निरीक्षण द्वारा मालूम किया है कि जो बच्चे कभी गोद में नहीं खिलाए जाते और बोतलों का दूध पीकर पलते हैं, कम मुस्कुराते हैं, उनमें स्फूर्ति नहीं होती और वे चैतन्य नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय 112581 गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

रहते। उन्हीं बच्चों को जब धात्रियों या माताओं की गोद में रखकर स्तन-पान कराया जाता है, तब कुछ दिनों बाद उनका वज़न बढ़ने लगता है, और उनमें चैतन्यता स्वाभाविक रूप में आने लगती है।

डॉक्टर-कैरोलिन का यह कथन हमारी नव-जाग्रत् महिलाओं के लिये उदाहरण बनना चाहिए, और अपने मातृत्व के कर्तव्य-पालन में उन्हें त्रुटि न करनी चाहिए। फ़ैशन और प्राच्य सभ्यता के आश्रय में उन्हें राष्ट्र की भावी संतान को प्रगतिशील बनाने का कर्तव्य नहीं भूलना चाहिए।

× × ×

५. वाह रे हिटलर !

एक मद्रासी पत्रकार ने अपने पत्र में हिटलर के विषय में बड़ा ही मनोरंजक समाचार प्रकाशित किया है। उसकी सत्यता पर विश्वास न करते हुए भी हमें उसका उल्लेख करना ही पड़ता है, क्योंकि उसका तात्पर्य भी बड़ा ही मनोरंजक है। ख़बर है कि एक बार हिटलर 'ब्रेनर-पास' से होकर मोटर पर गुज़र रहा था। अचानक रास्ते के किनारे चरता हुआ एक सुअर का बच्चा उसकी मोटर से दबकर मर गया। हिटलर ने मोटर रुकवाकर अपने सेक्रेटरी को पास के गाँव में जाकर, सुअर के मालिक को ढूँढ़कर उसे सुअर के मरने का हर्जाना अदा कर देने की आज्ञा दी। सेक्रेटरी तुरंत रवाना हो गया, और गाँव में पहुँचकर ज़ोर से चिल्ला उठा—"हिटलर की जय हो ! सुअर का बच्चा मर गया !"

थोड़ी देर बाद जब सेक्रेटरी वापस आया, तो हिटलर ने देखा कि वह अपने हाथों में ढेर-के-ढेर तोहफ़े लिए हुए चला आ रहा है। हिटलर क्रोध से आग-बबूला होकर बोला—"मूर्ख कहीं का ! मैंने तुझे सुअर का हर्जाना अदा करने को भेजा था, न कि तरह-तरह के तोहफ़े लाने को ?" सेक्रेटरी बेचारा सिटपिटाकर धीरे से कहने लगा—"हुज़ूर ! मैंने तो गाँव में जाकर सिर्फ़ इतना ही कहा था कि 'हिटलर की जय हो ! सुअर का बच्चा मर गया !' बस, इतना सुनते ही सब गाँववाले जमा हो गए, और मुझ पर तरह-तरह के तोहफ़े बरसाने लगे। इनको न लाता, तो क्या करता ! यह सब आप ही का इक़बाल है !"

× × ×

६. ब्रिटेन के थिएटर और नग्नता

ब्रिटेन में स्टेज पर नर्तकियों का नग्न नृत्य बड़े ज़ोरों के साथ प्रचलित है, यद्यपि अधिकारिवर्ग बड़ी सख़्ती के साथ उसे रोकने के लिये प्रयत्नशील है। वहाँ के 'पीपुल'-नामक पत्र में इस विषय को लेकर पर्याप्त आंदोलन किया जा चुका है। ब्रिटेन की एल्० सी० सी०-नामक संस्था इस कलंक को यथाशक्ति दूर करने के लिये थिएटरों के मालिकों पर काफ़ी सख़्ती कर रही है।

एल्० सी० सी० कमेटी के प्रधान श्रीयुत रेनाल्ड स्टैंप ने लाइसेंसिंग संस्था की मीटिंग में कहा कि यह दूषित वातावरण पहले इतने अधिक विरोध का कारण न था, परंतु वर्तमान समय में अधिकांश थिएटर देखनेवाली जनता ऐसे नृत्य को अच्छा नहीं समझती, और इस विषय का पर्याप्त प्रमाण मिल चुका है। कुछ दिनों तक लुके-छिपे कला-पूर्ण नृत्य के नाम पर थिएटरवाले धीमी रोशनी में स्टेज पर नग्न और अर्ध-नग्न पोशाक में नर्तकियों को निकालते रहे। व्यावसायिक दृष्टि से वे ऐसा करने को मजबूर थे, क्योंकि निम्न श्रेणी के दर्शक उसे ही पसंद करते थे। श्रीयुत रेनाल्ड स्टैंप का कहना है कि ऐसे नृत्यों में कला का अंश ज़रा भी नहीं पाया जाता, इसके विपरीत वे वासना के उत्तेजक-मात्र प्रतीत होते हैं। पंखे का नृत्य करनेवाली और एक-एक कर शरीर के सारे वस्त्र नाचते-नाचते उतार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

. Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फेकनेवाली नर्तकियों की ओर श्रीयुत स्टैंप का विशेष संकेत है, और वे ही जन-रुचि को बिगाड़ने की अपराधिनी हैं। स्टेज पर एकदम नग्न होकर मुस्कराते हुए विचित्र कटाक्ष और उत्तेजक हाव-भाव दिखाकर, निम्न कोटि की जनता का मनोरंजन करके पैसे कमाना ही ऐसी नर्तकियों का मुख्य कार्य है। स्टेज के मालिक लोग व्यापार की दुहाई देते हुए सरकार से दया की भीख माँगा करते हैं। इसके अतिरिक्त भिन्न-भिन्न थिएटरों और नाच-घरों की पारस्परिक प्रतिद्वंद्विता भी उन्हें नग्न नृत्यों की योजना उपस्थित करने को बाध्य करती है। उन्हें प्रत्येक दृश्य में निम्न श्रेणी की जनता का ध्यान रखना ही पड़ता है, क्योंकि उसकी रुचि के अनुकूल प्रोग्राम देकर ही वे अच्छे पैसे पैदा कर सकते हैं।

इसके अतिरिक्त नर्तकियों का कहना यह है कि यदि वे नग्न नृत्य करने को सहमत न हों, तो थिएटर और नाच-घरों के मालिक उन्हें वेतन कम देते हैं, जिसमें उनकी जीविका चलना भी कठिन हो जाता है। उनके वेतन का निश्चय उनकी नग्न नृत्य की तत्परता पर ही निर्भर रहता है। १२ पौंड से लगाकर २० पौंड तक प्रतिसप्ताह उनको वेतन मिल जाया करता है। ब्रिटेन के संगीत-गृह भी इस व्याधि से मुक्त नहीं। ऐसा अनुमान है कि लगभग २१ संगीत-गृहों में ऐसे नग्न नृत्यों का प्रचार है, और कम-से-कम ऐसी ६० लड़कियाँ अकेले लंदन शहर के नाच-घरों और थिएटरों में इन नृत्यों में भाग लेनेवाली मौजूद हैं, जो अपनी लाज को तिलांजलि देकर पेट के लिये ऐसा पाप करती हैं। एक प्रेस-रिपोर्टर से बातचीत के सिलसिले में श्रीयुत स्टैंप महोदय ने बतलाया कि यदि सच पूछा जाय, तो नर्तकियाँ स्वयं वस्त्र-हीन होना पसंद नहीं करतीं, नग्न नृत्य करने में उन्हें अपमानित होना पड़ता है, परंतु जीविका के प्रश्न के आगे वे मजबूर हैं। उन नर्तकियों में बहुत-सी ऐसी भी हैं, जिनका जीवन सीधा-सादा और दोष-रहित है, और वे परिश्रम करने से मुँह नहीं मोड़तीं, परंतु अपने आश्रित कुटुंब के भरण-पोषण के लिये उनको नाच-घरों और थिएटरों के मालिकों के इशारों पर काम करना पड़ता है। एक नर्तकी का बयान है—"संभ्रांत और सरल बनकर जनता में इज़्ज़त पाना और घर जाकर भूखों मरना हमारा भविष्य होगा, यदि हम आज अपने कार्य को छोड़ दें। नग्न या अर्ध-नग्न नृत्य के लिये थोड़ी देर अपने को भूलकर जनता का मनोरंजन करके कम-से-कम १२ पौंड प्रतिसप्ताह तो कुटुंब के भरण-पोषण के लिये हमें मिल ही जाता है, अन्यथा हम अबलाओं को पूछनेवाला कौन है?" इस कथन की सत्यता विचारणीय है।

× × ×

७. लखनऊ-रेडियो-स्टेशन और 'प्रसाद'-जयंती

'प्रसाद'जी हिंदी के श्रेष्ठ नाटककार, कवि, कहानी-लेखक, औपन्यासिक, निबंध-लेखक और पुरातत्त्व-वेत्ता थे। अभी उनकी जयंती लखनऊ-रेडियो-स्टेशन ने उनकी निधन-तिथि पर मनाई। हमारी राय में जयंती जन्म-तिथि पर मनाई जानी चाहिए। जन्म-तिथि माघ-शुक्ल १०, संवत् १९३७, तदनुसार ६ फ़रवरी, सन् १८८१ को पड़ती है। हम लखनऊ-रेडियो-स्टेशन के डाइरेक्टर महोदय का ध्यान इस तिथि की ओर आकर्षित करके निवेदन करते हैं कि ६ फ़रवरी को 'प्रसाद'जी के बारे में सुंदर बातचीत कराएँ, और उनकी किसी सुंदर कहानी या नाटक पर एक फ़ीचर भी रक्खें। लाहौर और दिल्ली-रेडियो-स्टेशन के कार्यकर्ताओं को भी इस ओर ध्यान देना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बतलाइए ! करें तो क्या करें ?

आजकल चारो ओर देशी, अँगरेज़ी, जर्मन इत्यादि ऐसी ओषधियों के विज्ञापन निकल रहे हैं, जो कि मिनटों, घंटों या दिनों में सदैव के लिये नपुंसकता आदि दूर कर देती हैं। हम झूठ लिख नहीं सकते और लोगों पर अब इसके विना प्रभाव होता नहीं। अब विचार करते हैं कि करें तो क्या करें ? निर्णय यही हुआ कि चाहे कोई माने या न माने, सत्य का ही प्रकाश किया जावे। इतना बतला देते हैं कि हमारा इस विषय में बहुत अनुभव है और हमारी ओषधियाँ यदि सर्वोत्तम नहीं, तो सैकड़ों से उत्तम अवश्य आप पावेंगे। इसलिये इस शीत—काल में—

अपनी दशा के अनुसार

निम्न-लिखित ओषधियों में से कोई भी सेवन करके सर्दियों में अपने अंदर पुंस्त्व-शक्ति, जीवन-शक्ति, उत्तेजना और स्वास्थ्य को भरिए। जो स्वयं तजवीज़ न कर सकें, वह हाल लिखकर १) फ़ीस साथ भेज दें, उनको तजवीज़ करके इनमें से या और ओषधि भेज दी जावेगी।

अक्सीर नं०—५० पुरुष-संबंधी सब निर्बलताओं को दूर करके पुनः नई शक्ति प्रदान करती है। शिथिलता को स्फूर्ति से बदलती है और कुछ ही दिनों में इसका प्रभाव प्रकट होता है। शीघ्रपतन को भी लाभदायक है। रग-रग में यौवन की लहर दौड़ने लगती है। मूल्य ३० गोली १४) १५ गोली ७)। बहुमूल्य होने से अमीर लोगों के लिये है। दूसरे लोग इन्हीं गुणों के लिये अक्सीर नं० १ का सेवन करें, जिसका मूल्य ६४ गोली ४), ३२ गोली २)। नमूना ॥) है।

अक्सीर नं० ७५—इसका प्रभाव वही है, पर कुछ देर में होगा। इसमें सोना, कस्तूरी, अंबर आदि नहीं हैं। सर्दियों में ७ दिन हद्द १४ दिन सेवन करने से चिरकाल तक इसका प्रभाव रहता है। मूल्य १४ मात्रा ५), ७ मात्रा २॥)।

किरण जवानी—इसके खाने से हृदय, मस्तिष्क, आमाशय, यकृत, वृक्क, वस्ति, तिल्ली, आंत तथा पुंस्त्व पर अच्छा प्रभाव होने लगता है। जुकाम, नज़ला, खाँसी दूर होती है। भूक बढ़ती है। शुक्र-मेह, स्वप्नदोष, शुक्र तारल्य इत्यादि दूर होकर पुंस्त्व शक्ति बढ़ने लगती है। बुढ़ापे में भी जवानी की उमंगें उठने लगती हैं, युवकों को वास्तविक युवावस्था प्राप्त होती है, बंदरों के गद्द खाने की आवश्यकता नहीं। जवानी में पके बाल स्याह हो जाते हैं। मूल्य २४ गोली १), १०० गोली ४) है। दर्जा ख़ास १०० गोली १२), २४ गोली ३)।

अक्सीर नं० ६५ (ख)—यह स्वप्नदोष, शीघ्र-पतन, शुक्रमेह तीनों के लिये अद्भुत ओषधि है मूल्य एक पाव २), आध पाव १) है।

बाह्य विकारों के लिये निम्न-लिखित तिलाओं में से कोई एक तिला अपनी दशा के अनुसार मँगवाओ

तिला नं० १—हस्तकारों तथा बूढ़ों के लिये विशेष हितकर है। रगों और पट्ठों को बल देता है। सब बाह्य विकारों को दूर करता है। मूल्य ४ ड्राम ५), नमूना १ ड्राम १।)।

तिला नं० १४—यों तो तिलाओं के सैकड़ों विज्ञापन निकलते रहते हैं तथा उभारने के लिये मन मानी प्रशंसा कर देते हैं, परंतु सच यह है कि इस समय तक इस तिला के बराबर सब विकारों को दूर करके अंदर शक्ति पहुँचानेवाला अन्य कोई तिला नहीं देखा गया। मूल्य ६) प्रति शीशी, अर्द्ध ३)।

"पुरुषों के विशेष रोग और उनकी चिकित्सा" पुस्तक मुफ़्त

इसमें पुरुषों की जननेन्द्रिय-संबंधी रोगों का वर्णन, निदान, कारण और चिकित्सा अंकित है। यदि नियमानुसार औषध कराने की आवश्यकता है, तो नियम-चिकित्सा मुफ़्त मँगवाएँ।

पत्र-व्यवहार तथा तार का पता—अमृतधारा ११ लाहौर

विज्ञापक—मैनेजर अमृतधारा औषधालय, अमृतधारा भवन, अमृतधारा रोड, अमृतधारा डाकख़ाना, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मँगा लीजिए ! शीघ्रता कीजिए !! बनकर तैयार हो गई !!!

महाबाजीकरण अद्भुत रसायन

इसके सात दिन के ही सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता नजर आता है। २१ दिन में चेहरा सुर्ख हो जाता है, तथा ४० दिन में वह शक्ति आती है कि रुकना कठिन हो जाता है। कैसा ही नामर्द क्यों न हो, मर्द बन जाता है। इससे स्त्रियों के हर प्रकार के प्रदर जल्द दूर होकर गर्भधारण करने की शक्ति आती है। यह क़ब्ज़ नहीं करता, बल्कि क़ब्ज़ को दूर कर जिगर, मेदे को ताक़त देता है। कफ, खाँसी, नज़ला, बदन का दुखना व ख़ून का पतला होना, जिगर और तिल्ली की खराबी, आँखों का पीलापन, गले की खरखराहट, गला बैठना, बराबर थूक गिरना, बवासीर आदि को बहुत लाभ पहुँचाती है, तथा हर मिज़ाजवाले को एक-सा लाभ होता है।

कल्लाती पहाड़ी के रत्नगिरि साधू ने इसी दवा की ४-५ मात्राएँ एक ग्वाला को दे दी थीं। वह वृद्ध ग्वाला अज्ञानता से सब एक बार में खा गया था, जिससे उसकी जो हालत हुई, यदि उसे लिखें, तो सभ्यता का दिवाला ही निकल जावे। बस, इससे ही समझ लें कि साधू के इलाज करने पर भी उस ग्वाले ने बुढ़ापे में तीन विवाह किए थे। इस समाचार को सुन खलीफा हाजी हयातमोहम्मदखाँ साहब नवाब बहावलपुर के ससुर ने बहुत-सा धन खर्च कर तथा सेवा कर महात्माजी से यह योग प्राप्त किया था। फिर आपसे कवि-विनोद वैद्य-भूषण पं० ठाकुरदत्त शर्मा को मिला। शर्माजी ने परीक्षा कर इसे देशोपकारक में छपाया था, और इससे उत्तम प्रयोग बतलाने के लिये उन्हें अपने तीन योगों के लिये १०००) इनाम मय सार्टीफिकेट के देने का वादा किया था। अब आप सोचिए, यह योग कैसा होगा, जिस पर इतना बड़ा इनाम हो। पंडितजी की कृपा से यह योग हमें मिला है, जो भली भाँति सैकड़ों बार परीक्षा कर संसार के हितार्थ अखबारों में छप चुका है। आप एक बार इसे अवश्य बनाएँ, यदि प्रतिवर्ष इसका सेवन कर लिया जाय, तो ८० वर्ष तक बुढ़ापा पास न आए। हमारा दावा है कि सेवन करनेवाला इसके चमत्कारिक गुणों से चकित होकर अवश्य इसका दास बन जायगा। मगर ध्यान रहे कि वह योग किसी अनाड़ी से न बनवाएँ। योग यह है—

बुरादा फ़ौलाद शुद्ध २० तोला, संखिया सफ़ेद शुद्ध १तोला, कपूर शुद्ध १॥ माशे को एक घंटा तक घृतकुमारी के रस से घोंट मिट्टी के कुज्जे में मज़बूत बंद कर ५ सेर कंडों में फूँके, ठंडा होने पर निकाल दुबारा १ तोला हरताल बर्की शुद्ध १॥ माशा, कपूर शुद्ध तीसरी बार गंधक आँवलासार शुद्ध १ तोला, कपूर शुद्ध १॥ माशा, चोथी बार पारा संस्कारित शुद्ध १ तोला, कपूर १॥ माशा लेकर ऊपर की भाँति आँच दें। इसी क्रम से १६ आँचें देकर फिर भस्म निकाल लें, तथा भस्म काम में लावें।

सेवन-पत्र—मात्रा ४ चावल १ तोला मक्खन या मलाई में सुबह-शाम खावें, ऊपर से घी-दूध, बादाम, अनार, सेब, मीठे पौष्टिक फल खावें, भोजन में दाल, भात, घी-शक्कर, हलुवा, पूरी, लौकी का शाक खावें, गरम, बादी चीज़ें न खावें तथा नमक, लालमिर्च, खटाई और मैथुन से परहेज़ रक्खें। सेंधा नमक, कालीमिर्च खा सकते हैं। यह दवा हमारे पास भी मिलती है। जो न बना सकें, और गुण देखना चाहें, वह हमसे मँगा लें। ४० दिन के लिये ८० खूराक दवा छ माशे की शीशी का दाम ५), डाक-व्यय आदि ॥) यदि कुछ पूछना हो, तो जवाबी पत्र भेजकर उत्तर मँगा सकते हैं।

पता—आयुर्वेदाचार्य छोटेलाल जैन

रत्नाकर-औषधालय, इटावा यू० पी० नं० ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered No. A—473

हिंदी-अँगरेज़ी-छपाई

रंगीन तिरंगे चित्र

सर्वश्रेष्ठ जिल्द बँधाई

सोने की छपाई, चिट्ठी के काग़ज़, लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड, विज़िटिंग-कार्ड, बिल, मिमो, रसीद-बुक, कैलेंडर, नोटिस, निमंत्रण-पत्र, अभिनंदन-पत्र, पुस्तक आदि—

सब प्रकार की छपाई का काम

हमारे यहाँ सुंदर और सस्ता

साथ ही

ठीक वक़्त पर किया जाता है।

काम संतोषप्रद होने की गैरंटी

आपको छोटा-मोटा, सुंदर, सस्ता, किसी प्रकार का भी छपाई का कोई काम कराना हो, तो उसे तुरंत हमारे पास भेजिए।

अब इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं!

सब प्रकार की छपाई के काम के लिये सुविधा-जनक स्थान

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल (सोल प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

11258/

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri